Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112534

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह अयोग्य और अनुचित बात है कि हिन्दीके बदले १५ वर्षों तक और अंग्रेजी कायम रहे तथा नागरी लिपिमें अंग्रेजोंके अंक चलाये जायँ। हमारे नेता भ्रममें पड़े हैं। यह ठीक नहीं कि हम अपनी बुद्धि को भी अपने नेताओंके हाथ गिरवी रख दें।"

वर्धा, ३०-१०-४९

—राजर्षि टंडन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

विषय				पृ०
१. वेदका संदेश	...	...	...	२
२. जीवन-पाथेय	...	...	...	४
३. हिन्दीके लिये नया युग	...	...	...	६
४. वर्धामें अखिल-भारतीय हिन्दी-दिवस		...	....	८
५. अंग्रेजीको हटानेकी दस-सूत्री योजना		...	....	१
६. राष्ट्रभाषा-संसार		...	....	१८
७. प्रांतीय हलचलें		...	...	३१
८. हमारी नजरोंमें		...	...	३६
९. परीक्षा-विभाग		...	...	३८
१०. आल-इंडिया रेडियोका बहिष्कार		...	...	४७
११. नींदमें कैसे रहूँ मैं ! (कविता)		...	...	४८

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है । वी. पी. अंक नहीं भेजा जाता । मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही राष्ट्रभाषा भेजा जा सकेगा ।

२. 'राष्ट्रभाषा'का प्रत्येक अंक हर महीनेकी १६तारीखको कार्यालयसे अच्छी तरह जाँचकर भेजा जाता है । अस्थायी पतोंके परिवर्तनके संबंधमें स्थानीय डाकखानेसे व्यवस्था की जानी चाहिये । अंक न मिलनेपर हमें डाकखानेसे पूछें ।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक-नम्बर साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये ।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि राष्ट्रभाषामें प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा । लेख प्रति मासकी १० तारीख तक हमारे पास आ जाना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112534

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ९] वर्धा, नवम्बर— १९४९ [अंक १

वेदका संदेश

चरैवेति ! चरैवेति !!

ना ना श्रान्ताय श्रीरस्ति । पापो निषद्वरो जनः ।
इन्द्र अुच्चरतः सखा । चरैवेति ! चरैवेति !!

(पुरुषार्थहीनको लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती । निठल्ला रहनेवाला पापी है । अुद्यमीका मित्र परमेश्वर है । चले चलो ! चले चलो !!)

पुष्पिण्यौ चरतो जंघे । भूष्णुरात्मा फलग्रहिः ।
शेरेऽस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हताः । चरैवेति ! चरैवेति !!

(चलनेवालेकी जाँघें पुष्ट होती हैं । फल-प्राप्तिमें अुसकी आत्मा संतुष्ट होती है । पुरुषार्थीके पाप पसीने द्वारा बह जाते हैं । चले चलो ! चले चलो !!)

आस्ते भग आसीनस्य । ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः ।
शेते निषद्यमानस्य । चराति चरतो भगः । चरैवेति ! चरैवेति !!

(बैठनेवालेका भाग्य भी बैठ जाता है । खड़े होनेवालेका भाग्य भी खड़ा हो जाता है । सोनेवालेका भाग्य भी सो जाता है । पुरुषार्थीका भाग्य भी गतिशील हो जाता है । चले चलो ! चले चलो !!)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलिः शयानो भवति । संजिहानस्तु द्वापरः ।
अुत्तिष्ठंस्त्रेता भवति । कृतं संपद्यते चरन् । चरैवेति ! चरैवेति !!

(सोनेका नाम कलियुग है । अूँघना द्वापर है । अुठ बैठना त्रेता है । पुरुषार्थ करनेका नाम सतयुग है । चले चलो ! चले चलो !!)

चरन् वै मधु विन्दति । चरन्त्स्वादुमुदुम्बरम् ।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं, यो न तन्द्रयते चरन् । चरैवेति ! चरैवेति !!

(मधु-मक्षिका पुरुषार्थसे मधु संचय करती है । पक्षी पुरुषार्थके द्वारा ही मधुर फल खाते हैं । सूर्यके पुरुषार्थको देखो, चलते-चलते थकता ही नहीं । पुरुषार्थ करो ! पुरुषार्थ करो !! अपने लक्ष्यकी ओर चले चलो ! चले चलो !!)

('नया जीवन' से)

अनु. श्री यशपालसिंह कुँवर

जीवन-पाथेय

"व्रत लेना दुर्बलताका परिचायक नहीं, वह बलका ही परिचायक है । कोअी कार्य यदि अुचित है तो अुसे करना ही चाहिये, अिसीका नाम व्रत है और अिसीमें शक्ति है । किंतु 'जहाँ तक हो सकेगा करूँगा' अिस तरहकी बात जो करता है वह अपनी दुर्बलता या अभिमानका परिचय देता है । शुभ संकल्पके सम्बन्धमें 'जहाँ तक हो सकेगा,' अिस तरहका वाक्य विषकी तरह है । 'जहाँ तक हो सकेगा, सत्यका पालन करूँगा' अिस प्रकारके वाक्यका कोअी अर्थ नहीं होता ।"

—म. गांधी

"वही वास्तवमें सच्ची जिंदगी व्यतीत करता है जो अपनी जीवन-शक्तिको भावी सन्तानके लिये व्यय कर देता है, और जो अुसे भविष्यको अर्पित कर देता है ।

"और जीवनको वही समझता है जो प्रेम करता है और जो दान करता है ।"

—स्टाफन ज्विग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीके लिये नया युग—
विरोध, बाधाएं अेवं भावी कार्यक्रम

: महापंडित राहुल सांकृत्यायन :

विगत २९ सितंबरको कलकत्तेमें हिन्दी-प्रचार-सम्मलनके अधिवेशनके अवसरपर अध्यक्ष-पदसे महापंडित राहुल सांकृत्यायनने नीचे लिखा भाषण दिया था। अेक अधिकारी विद्वान द्वारा दिया गया यह भाषण अुचित आलोचनाओं अेवं रचनात्मक सुझावोंसे भरा हुआ है। जगहकी कमी रहते भी संक्षेप न किया जा सका। राष्ट्रभाषा-प्रचारकों अेवं प्रेमियोंकी जानकारीके लिये अुसे ज्यों-का-त्यों प्रकाशित किया जा रहा है। —संपादक)

हिन्दीके लिये अब नया युग आरम्भ हुआ है। स्वतन्त्र भारतकी राष्ट्र-भाषा कौन हो अिसके लिये अन्तिम युद्ध १४ सितम्बर १९४९ को होकर हिन्दीके पक्षमें निर्णय हो गया, किन्तु अभी विरोधियोंने अपने हथियार डाल नहीं दिये हैं, आखिरी समय तक अुन्होंने लड़ाअी लड़ी और यह नहीं कहा जा सकता कि वह बिल्कुल असफल रहे। वस्तुतः, जहाँ अंग्रेजीको कलसे ही सिंहासनच्युत होना चाहिये था, वहाँ अुसके स्थानको १५ वर्षके लिये अचल बना दिया गया और भारतीय अंकोंका अन्तर्राष्ट्रीय रूप कहकर अंग्रेजी अंकोंको भी हिन्दीपर लाद दिया गया। शायद विरोधियोंने यहभी सोच रखा है "अुत्पत्स्यते तु मम कोऽपि समान-धर्मा" और यहाँ अेक नहीं सैकड़ों-हजारों समानधर्मा अभी भी प्रयत्नपूर्वक पैदा किये जा रहे हैं। अंग्रेजीको सरकारी भाषा बनानेका लाभ अेक वर्ग अिण्डो-आंग्लियनको यह हुआ, कि सभी सरकारी नौकरियाँ अुनकी और अुनकी आने-वाली पौधकी बपौती हो गयीं। क्या आअी० सी० अेस० जैसा दिमाग गरीबोंकी झोपड़ियोंमें नहीं पैदा होता? लेकिन गरीबोंके लड़कोंके लिये तो अपनी मातृ-भाषामें मिडलतक भी पहुँच पाना मुश्किल है। अुनके पास फीस और किताबका पैसा कहाँ? जो कुछ लोग पढ़ भी जाते, अुन्हें भी कानवेन्ट था। यूरोपियन स्कूलोंकी खर्चीली पढ़ाअीसे अंग्रेजोंको मातृभाषा समान बोलनेका सुभीता कहाँ था? हमारे पब्लिक-सर्विस-कमीशन केवल ज्ञान नहीं देखते, बल्कि वहाँ "गुडब्रीडिंग" भी देखी जाती है, और गुड-ब्रीडिंगका अर्थ है, रहन, सहन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल-चाल, कपड़े-लत्तेमें पूरा साहब होना। यह सब सुभीता अुसी वर्गने प्राप्त किया। वह वर्ग केवल मालाबारमें नहीं है न केवल बंगालमें, कहीं अधिक और कहीं कम वह वर्ग अंग्रेजोंकी दयासे सारे भारतवर्षमें पैदा हुआ। वह अंग्रेजोंके औरस-पुत्रके समान था, अिसलिये अुसे परम राजभक्त होना ही चाहिये था। अिसमें शक नहीं कि कभी-कभी अुनमेंसे भी हिरण्यकशिपुके यहाँ प्रहलाद पैदा हो जाते थे, किन्तु वह अपवाद स्वरूप ही। अिस वर्गका अपना निहित स्वार्थ था, जिसके लिये वह आज हिंदीका विरोध करता है और अुसने अंग्रेजीके स्थानको १५ सालके लिये अक्षुण्ण बना के छोड़ा। यह वर्ग केवल हिन्दीका ही शत्रु नहीं है, वह वस्तुत अपने-अपने प्रदेशोंमें वहाँकी भाषाओंका भी अुतना ही विरोधी है। यदि बङ्गला ही योग्यताकी कसौटी रही तो, कानवेन्टमें दूध पियें, यूरोपियन स्कूलमें शिक्षा पाये, "गरम-घर"के पोसे अिनके बच्चोंको कौन पूछेगा? अिस वर्गकी कृपासे कानवेन्ट, यूरोपियन स्कूल, जुनियर केम्ब्रीज, सिनियर केम्ब्रीज को भी १५ सालका और जीवनदान मिल गया। अिसी बीचमें हमारे अिण्डो-आंग्लियन साहबोंकी अगली पौध तैयार होके निकल आयेगी, क्या अिनके लिये वह कुछ करना नहीं चाहेंगे? अुस दिन अिन्हींमेंसे अेक गोपालस्वामी आयंगरने राष्ट्रभाषापर बहस करते समय संविधान-सभामें कहा था :—

"देश अंग्रेजी भाषाको तुरन्त नहीं छोड़ सकता। कितने ही वर्ष तक हमें अंग्रेजीको जारी रखना होगा...अंग्रेजीका छोड़ना संभव नहीं होगा। अिसलिये करीब १५ सालोंतक अंग्रेजी अुन सभी कामोंके लिये प्रयुक्त होती रहेगी जिनके लिये वह आज प्रयुक्त होती है। जहाँ तक मेरा विचार है अंग्रेजी आगामी बहुत वर्षोंतक यहाँ रहेगी, अुसको रहना है क्योंकि हम मानते हैं कि संबंध या राज्यके कामके लिये हिन्दी अितनी काफी विकसित नहीं हुअी है कि न्यायालयोंके द्वारा कानून या कानूनकी व्याख्याके लिये निश्चित भाव व्यक्त कर सके हम संघकी राजकीय भाषाकी तरह हिन्दीको स्वीकार कर सकते हैं, किन्तु हमें मानना पड़ेगा कि आज वह भाषा अितनी पर्याप्त विकसित नहीं हुअी है।"

हिन्दीके विकासमें बाधा पैदा करनेके सन्देहका अेक यह भी कारण है कि अिंडो-आंग्लियनशाही हमारे यहाँ अब भी सर्वेसर्वा है। क्या आप आशा रखते हैं कि जिस वर्गका अितना स्वार्थ अंग्रेजीके भीतर निहित है और जो आज वस्तुतः हमारे अूपर शासन कर रहा है, वह कभी भारत-संघमें हिन्दी और आसाममें आसामी, बंगालमें बङ्गला, आन्ध्रमें तेलगु, अुड़ीसामें अुड़िया, तमिलनाडमें तमिल, केरलमें मलयालम, महाराष्ट्रमें मराठी, गुजरातमें गुजराती, पंजाबमें पंजाबीको अपना सिंहासन सम्भालने देगा? अिसलिये हिन्दीको अब भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान रहनेकी आवश्यकता है। हमें यह नहीं समझ बैठना चाहिये कि नाबालिगीके कारण छिना हुआ हिन्दीका सिंहासन १९६६ अी० में अपने-आप अुसे मिल जायगा। कितने ही अहिन्दी-भाषी हिन्दीकी स्थितिको गलत समझते रहे थे, कि हिन्दी सिर्फ अपने स्वार्थके लिये लड़ रही है, किन्तु वास्तविकता यह थी कि हिन्दीने भारतकी सभी प्रादेशिक भाषाओंकी लड़ाअी लड़ी। यदि आज संविधानमें मंजूर करना पड़ा—"कोअी राज्य (प्रदेश या प्रांत) कानून द्वारा राज्यके भीतर प्रयुक्त होनेवाली भाषाओंमेंसे किसी या हिन्दीको अुस राज्यके सभी या कुछ राजकीय कामोंके लिये प्रयुक्त की जानेवाली भाषा या भाषाअें स्वीकृत कर सकता है...राष्ट्रपतिकी सहमतिसे निर्णय, डिग्री या आदेशके अतिरिक्त कोअी राज्य अपने राज्यके अुच्च न्यायालयकी कारवाअी तथा सरकारी कामके लिये हिन्दी भाषा या किसी और भाषाको स्वीकृत कर सकता है", और अिस प्रकार व्यवस्थापिका सभासे हाअीकोर्ट तक तथा दूसरे सरकारी कामोंमें जहाँ हिन्दी-प्रदेशोंमें हिन्दीका अधिकार स्वीकार करना पड़ा, वहाँ हिन्दीके अिस युद्धमें बंगालमें बङ्गला, अुड़ीसामें अुड़िया और तमिलनाडमें तमिलको भी स्थान अनायास ही प्राप्त हो गया। हिन्दीके विरुद्ध जितना जोर शोरसे प्रचार और आँखोंमें धूल-झोंकाअी चल रही थी अुसके कारण हिंदीके पक्षको जो नहीं समझ पाते थे, वह भी आज अुसके कृतज्ञ होंगे।

हिन्दीके आगामी प्रोग्रामके बारेमें कुछ कहनेके पहले अभिनव महाभारतके अन्तिम दिनोंकी बातोंका सिंहावलोकन कर देना व्यर्थ नहीं होगा, क्योंकि वहाँ कितनी ही बातें अैसी कही गयीं जिनपर हमें आगे ध्यान रखकर चलना होगा।

अंग्रेजीका स्तुति-गान

पंडित जवाहरलालने अंग्रेजीकी अंधभक्ति नहीं दिखलाअी। अुन्होंने सिर्फ कहा—"अंग्रेजीने जो हमें सिखलाया, अुसके लिये हम कृतज्ञ रहेंगे... हमारे लिये अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें अंग्रेजीका महत्व अवश्य बना रहेगा!" मेरी समझमें यदि नेहरूजीके अिस विचारको स्वीकार किया जाय, तो हमें अंग्रेजीकी दासताका भी कृतज्ञ रहना पड़ेगा और क्लाअिव-हेस्टिंगससे लेकर डायर-ओडायर तकका, क्योंकि अुनकी कृपासे अंग्रेजी जैसा हीरा मिला! यदि अंग्रेजी न मिली होती तो, हम अंधकार युगमें रहते, गुहा मानवकी स्थितिसे अूपर न अुठ पाते! फिर मेकालेसे हमें रुष्ट होनेकी आवश्यकता नहीं, जो कि अुसने भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओंके विरुद्ध अंग्रेजीको शिक्षाका माध्यम बनवाया और जिसको दुनियाके योग्यतम शिक्षा-विशेषज्ञ हमारे मौलाना आजाद अभी १५ सालोंतक और रखना चाहते हैं। अुनका कहना है :—

"पटना-विश्वविद्यालयके भाषणमें मैंने जोर दिया था कि शासन-प्रबन्ध और शिक्षाके क्षेत्रमें अंग्रेजीको तुरंत अुठा नहीं देना चाहिये और यह भी कहा था कि पाँच वर्ष अंग्रजीको शिक्षाका माध्यम बना रहना चाहिये। किन्तु अब मैं अिस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि पाँच वर्षका समय काफी नहीं है। मैं अय्यंगारजीसे सहमत हूँ कि अंग्रेजीको १५ वर्षतक और जारी रखना चाहिये। जिन प्रांतों और विश्वविद्यालयोंने मनमाने तौरपर अंग्रेजीको हटा देनेका निश्चय किया है, अुनका निश्चय गलत है। अिस तरहकी जल्दबाजी शिक्षाके अुद्देश्यको हानि पहुँचायेगी और देशके शिक्षातलको गिरायेगी। कचहरियोंमें भी वही कठिनाअी है। यह अफसोसकी बात है कि देशकी कोअी भाषा अैसी नहीं है, जिसके पास कानूनी शब्द हो तथा जो न्यायालयकी भाषाके तौरपर काम दे सके।"

हमें अंग्रेजी भाषाके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनेकी आवश्यकता नहीं है। रूस, जापान, जर्मनी, सबने अंग्रेजी भाषाके माध्यमसे ज्ञान-विज्ञान नहीं सीखा, जिस देशको अवसर मिला, अुसने अपनी भाषाको समृद्ध किया। यदि अंग्रेजी हमारे अूपर लादी न गयी होती, तो हमारी भाषाअें जिनके बोलनेवाले करोड़ोंकी संख्यामें हैं और जिनका दिमाग किसीसे कम नहीं है—वह कबकी आगे बढ़ गयी होती। अगले कुछ ही सालोंमें हम देखेंगे कि वह किसी भाषासे पीछे नहीं है।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें हमारे लिये अंग्रेजीका महत्व जो नेहरूजी बतलाते हैं वह तभी हो सकता है जबकि हमारा अन्तर्राष्ट्र केवल अिङ्गलैण्ड तथा अमेरिकातक ही सीमित हो। अंग्रेजीका स्थान अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका अस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडतक सीमित है, जिसकी आबादी मुश्किलसे २० करोड़ होगी। हमारे कुछ देशी भाअियोंका भी विचार है कि अन्तर्राष्ट्रीयता या विश्व वहीं तक सीमित है। कुछ समझते हैं, कि अंग्रेजी और डालर पर्यायवाची शब्द हैं, अिसलिये जहाँ तक डालर वहाँ तक अंग्रेजी अिस तर्कको समझना बहुत मुश्किल है। लेकिन आजकलका डालर-राज्य क्वारके बादलोंकी छायासे बढकर नहीं मालूम होता। ४५ करोड़का चीन हमारी आँखोंके सामने किस तरह डालरकी छायासे बाहर निकल रहा है, अिसे हम आज अपनी आँखों देख रहे हैं। यदि हम ३४ करोड़की राष्ट्रभाषा हिन्दीको अकिंचन मान भी लें, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ वर्ष बाद भी चीनी-भाषाको नगण्यकी श्रेणीमें गिनें, तो भी विश्वमें अेक अंग्रेजी ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषा नहीं। रूसी भाषा पोलैंड और चेकोस्लावाकियासे प्रशान्त महासागरके द्वीपोंतक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा स्वीकृत की जाती है, और अब लाल चीन भी अुसीको अन्तर्राष्ट्रीय मानेगा। यह आसानीसे समझी जानेवाली बात है, कि विश्वके दो ब्लाकोंकी भाँति अन्तर्राष्ट्रीय भाषायें भी दो हैं, अिसलिये केवल अंग्रेजीको अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रका सर्वे-सर्वा मानना भूल है, और हमारे लिये केवल अङ्गरेजीके झरोखेसे विश्वको देखना और खतरनाक तथा अेकांगिताका शिकार होना है। अिसका यह अर्थ नहीं कि हम अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें अंग्रेजीकी अुपयोगिताको नहीं मानते। रूसी और अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्रकी दो सबसे अधिक महत्व रखनेवाली भाषाएँ हैं और अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञानके क्षेत्रमें जर्मन और फ्रेञ्चका अुनसे कम महत्व नहीं है।

लेकिन हमारे अिन्दो-आंग्लियन अय्यंगार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें ही नहीं, राष्ट्रीय क्षेत्रमें भी अंग्रेजीके महत्व और अनिवार्यताकी बात करते हैं।

हिन्दी-विरोधियोंकी अज्ञानता

"हिन्दी अेक प्रादेशिक (प्रांतीय) भाषा मात्र है"—अय्यंगार।

"यह मानी हुअी बात है कि हिन्दी अेक प्रादेशिक भाषामात्र है।"
—गाडगिल।

प्रादेशिक या प्राविंसियल भाषा के दो अर्थ हैं, (१) अेक प्रदेश (प्रांत)-की भाषा, तथा (२) फ्रांसीसी प्रयोगके अनुसार ग्रामीण भाषा। हिन्दीके लिअे अिन दोनों अर्थोंमें प्रादेशिकका प्रयोग अयुक्त है। हिन्दी अेक प्रदेश नहीं, अनेक प्रदेशोंकी भाषा है। आज भी (१) युक्त प्रदेश, (२) बिहार, (३) मध्य प्रदेश, (४) विंध्य प्रदेश, (५) मालवा (मध्यभारत), (६) राजस्थान, (७) हिमांचल प्रदेश, तथा (८) आधा पंजाब अिन आठ प्रदेशोंकी वह स्वीकृत राज्यभाषा है। वस्तुतः हिन्दीका राष्ट्रभाषा स्वीकृत होनेका यह भी कारण हुआ कि वह सिरोही जैसलमेरसे लेकर कठिहार-पुर्णिया तक तथा हिमालय-मानसरोवरके पाससे लेकर वरतर-रतलाम तक पहिले ही व्यापक थी। यह वह विशाल भूभाग है जिसमें पुराने वैभवशाली १६ जनपदोंके अुत्तराधिकारी (१) मगध, (२) मैथिल-अंग, (३) भोजपुरी, (काशी-मल्ल), (४) कोसल (अवध), (५) पचाल, (६) कुरु, [७] यौधेय, [८] ब्रजवासी, [९] मत्स्य [१०] मरु [मारवाड़] [११] बागड़, [१२] मालव, [१३] निमाड़ी, [१४] बुंदेले [दशार्ण] और [१५] खश (हिमांचलीय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हैं, जिनकी मैथिली, मगही, अवधी, व्रज तथा मरु [डिंगल] भाषाओंके पास बड़ा यशस्वी लिखित साहित्य है, और दूसरोंके पास भी लिखित या अलिखित साहित्यका अभाव नहीं है। हिन्दी-भाषियोंपर आक्षेप किया जाता है कि वह भाषाके सम्बन्धमें पक्षपाती, संकीर्ण-हृदय तथा मदांध होते हैं। मैं हिन्दी भाषाका समर्थक हूँ किन्तु मेरी मातृभाषा 'भोजपुरी' कुरुदेशिया [मेरठ कमिश्नरीकी हिंदी] की अपेक्षा बंगलाके नजदीककी भाषा है। दोनोंके प्राचीन मागधीकी सन्तान होनेसे ऐसा होना स्वाभाविक है। बंगाली भाभी हिन्दी पढ़नेमें जो कठिनाइयाँ पाते हैं, भोजपुरी बालकोंको उस सारी कठिनाइयोंसे गुजरकर हिन्दीपर अधिकार प्राप्त करना पड़ता है। यही हिन्दीके सम्बन्धमें जो अवस्था हमारी है वही मैथिलों-मगहियोंकी भी है। विशाल हिन्दी-भाषी भूभागकी चौदह भाषा-भाषियोंने अपनी मातृभाषाका मोह छोड़कर उसकी सीमाओंको तोड़कर हिन्दीको अपनाया है, उसे मातृभाषा कहनेमें भी संकोच नहीं किया और उसपर उतना ही अधिकार प्राप्त किया, जितना कि कुरुवासियोंको मातृभाषा होनेके नाते हिन्दी पर है। फिरपर भी हमारे ऊपर अशक्त आक्षेप क्या उचित हो सकता है?

हिन्दीको ग्रामीणके अर्थमें प्रादेशिक कहना तो अत्यन्त हास्यास्पद और सत्यका अपलाप करना है। उसे वही कह सकते हैं, जिन्होंने हिन्दी और उसके आठवीं सदीसे लेकर आज तकके विशाल वर्तमान साहित्यका जरा भी परिचय नहीं प्राप्त किया। हिंदी कविता-साहित्य दुनियाके किसी भी साहित्यका मुकाबला कर सकता है। सरह, स्वयंभू, पुष्पदंत, अब्दुर्रहमानसे लेकर कबीर-जायसी सूर-तुलसी, मीरा-बिहारी होते निराला-पन्त, प्रसाद तक बहती हिन्दी काव्य-सरिता अपनी पावन गंगाकी भांति ही प्रांजल और विशद गम्भीर और विशाल सुंदर और मधुर है, और उसका आधुनिक गद्य-साहित्य भारतकी किसी भाषासे सब विषयोंमें पीछे नहीं है, तो भी अभी कितने ही भाभी ३० बरस पहलेकी बात दुहराये जा रहे हैं, कि हिंदीसे अमुक और अमुक भाषाका साहित्य बहुत आगे बढ़ा हुआ है। श्री नजीरुद्दीन अहमद (पश्चिम बङ्गाल) ने तो यहांतक कह डाला "हिंदी अत्यन्त आरम्भिक अवस्थामें [रुडीमेंटी] है।" बिना कुछ देखे-सुने ऐसी अनगल बात कह डालना शोभा नहीं देता। साहित्यके बारेमें रूस कोई पिछड़ा देश नहीं है और भारतकी नयी-पुरानी भाषाओं, यहांके साहित्य और संस्कृति की जानकारीमें रूसी विद्वान दुनियाके किसी देशसे भी पीछे नहीं। वहांपर आधुनिक भारतके महान साहित्य-निर्माताओंमें रवीन्द्र और प्रेमचन्दको बहुत ऊँचा माना जाता है। लेनिनग्राद विश्वविद्यालयमें दोनोंकी जयंति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनायी जाती हैं। अिसलिअे नजीरुद्दीन साहेबका हिंदीको "रुडिमेंटी" कहना अुनकी अज्ञानताका ही परिचायक है।

अय्यंगार महाशयका यह भी कहना गलत है --"हम जानते हैं कि संघ या राजकीय कामके लिये हिंदी अितनी काफी विकसित नहीं हुअी है।" विकसित भाषा वह है, जिसमें सभी भावोंको प्रगट किया जा सके, यदि सभी पारिभाषिक शब्द मौजूद हों। २२ वीं सदीके लिये आवश्यक लाखों पारिभाषिक शब्दोंके आज न होनेसे अंग्रेजी अविकसित भाषा नहीं है। हिंदी भाषा और हमारी बाकी ११-१२ भाषाअें भी पूर्णतया विकसित हैं। अुनमें सभी तरहके भावोंको प्रगट करने की क्षमता है। मैं तो समझता हूँ हाअीकोर्टका कोअी भी जज, जो अपनी भाषा और साहित्यको अच्छी तरह जानता है, कलसे अपने फैसलेको परिभाषाओंको अंग्रजीमें रखकर अपनी भाषामें द्रुतलिखित करा सकता है। परिभाषाओंका कोष काफी तैयार हो चुका है, प्रयत्न किया जाय तो अगले छः महीनोंमें वह पूर्णतया तैयार हो सकता है। यदि हमारे बूढ़े जज नयी परिभाषाओंको सीखना नहीं भी चाहें, तो भी वह अंग्रेजी परिभाषाओंके साथ अपने फैसलेको डिक्टेट करा सकते हैं। अुनका क्लर्क वैधानिक-परिभाषाओंको बैठा सकता है। मैं यह बात सिर्फ हिंदीके पक्षमें ही नहीं बल्कि सबके लिये कह रहा हूँ, क्योंकि संस्कृतसे लिअे जानेके कारण अुर्दूको छोड़कर भारतकी सभी भाषाओंकी परिभाषाअें अेक रहेंगी।

पण्डित जवाहरलालजीने राष्ट्रभाषामें दो गुणोंका होना आवश्यक बतलाया है --"यदि हिन्दीको बहुत बड़ी भाषा बनाना है तो दो बातें मनमें रखनी होंगी। प्रथम अुसे ग्राहिका भाषा होना चाहिये, और दूसरे त्याजिका नहीं होना चाहिये।" हिंदी ग्राहिका भाषा रही है और सदा रहेगी। यदि तुलसीकी अेक-अेक पंक्ति हमारे लिये अमर है, तो सारी जड़ता और कूपमंडूकताके जोर डालनेपर भी हम तुलसीकी पंक्तियोंमें आये 'गरीब-नेवाज' 'लायक' आदि सैकड़ों विदेशी शब्दोंको नहीं छोड़ सकते। जो शब्द किसी देशकी भी साधारण जनताकी भाषामें घुलमिल गये हैं, अुनके परित्याग करनेका प्रयत्न बेकार है। लेकिन ग्राहिका भाषाका यह अर्थ नहीं हो सकता, कि संविधान-सभाकी सूचीमें अुल्लिखित १२ भाषाओंमें जो शब्द प्रचलित और अेकसे हैं, किन्तु संस्कृतका होनेकी वजहसे अुन्हे त्याग दिया जाये और अुनकी जगह अुर्दूवालोंके आग्रहके कारण अरबीके शब्दोंको भरा जाये। अिसी तरह ग्राहिकाका अर्थ यह नहीं हो सकता, कि अंग्रेजीपढ़े हुओं के लिये अंग्रेजी शब्दोंको हिन्दीमें भर दिया जाय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि अंग्रेजी वाले हिन्दी परिभाषाओंको सीखनेके लिये तैयार नहीं हैं । हम वर्तमान पीढ़ीके बूढ़ोंको रियायत दे सकते हैं कि वह अपने व्यवहारमें कितने ही अंग्रेजी शब्दोंका प्रयोग करें, किन्तु अुनके लिये आने वाली पीढ़ीका रास्ता बिगाड़ना अच्छा नहीं है । अुन्हें तो नय परिभाषायें पढ़नी ही चाहिये । हिन्दी केवल अंग्रेजी फारसी और अरबी जैसी विदेशी भाषाओंके सम्बन्धमें ही अुचित रूपसे ग्राहिका नहीं रहेगी बल्कि प्रादेशिक भाषाओंसे भी हिंदीको बहुत कुछ लेना है । जैसे हिन्दी मातृभाषा न रखने वाले हम भोजपुरी, मालव या मागध हिन्दीको अपनी मातृभाषाओंके देनसे विकसित करते रहे हैं, अब वही काम आसामी, बङ्गला, अुड़िया गुजराती और मराठी ही नहीं बल्कि तमिल, तेलगु, मलयालम और कन्नड़ वाले भी करने जा रहे हैं । क्योंकि अब हिंदी अुनके लिये परायी भाषा नहीं रही । हिन्दीने तमिल भाषाके शब्द 'पंदल'को 'पंडाल'के रूपमें ले लिया है । अैसे ही कितने ही शब्द दूसरी भाषाओंसे भी आयेंगे । हम भाषाके सम्बन्धमें कभी शुद्धवादी नहीं हो सकते प्रादेशिक भाषाओंका प्रभाव पड़ेगा, अुनसे हिन्दीका शब्द-भंडार समृद्ध होगा । कितनी जगहपर हिन्दीके व्याकरणका सरलीकरण भी होगा, किन्तु जिनको सीखनेमें आलस्य है, अुनके लिये हिन्दीमें परिवर्तन कर दिया जाय, अैसा किसी भाषामें नहीं हुआ है । हम संधिकालमें श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी जैसे बड़े बूढ़ोंसे यह आग्रह नहीं करेंगे कि वह कलकत्ताके बाजारोंकी हिन्दीको छोड़कर शुद्ध हिन्दी बोलें, लेकिन आगे आने वाले तरुणोंसे तो अवश्य आशा रखते हैं, कि वह हिन्दीके सीखनेमें अुसका दशांश समय तो अवश्य देंगे, जितना कि अंग्रेजीके लिये दिया जाता था ।

अतीतकी दुहाअी और संस्कृतिकी माँग

नेहरूजीने अपने भाषणमें कहा था, "हमारे देशमें आजकल अत्यधिक पुरातनकी ओर देखनेकी आदत पायी जाती है । जब देश नवयुगके अधिकालमें हो, तो सदा अतीत और अतीतयुगकी बातें करना युग-प्रवेशके लिये सहायक नहीं हो सकता । राष्ट्र और जनताकी संस्कृति होती है, किन्तु साथही युगकी संस्कृति और युगधर्म भी होता है ।" अिस वचनमें तथ्य है, अिसे मानना पड़ेगा । चरम श्रेणीकी प्राचीन-पंथिताको ही कुछ लोग परम कल्याणका मार्ग समझते हैं, किन्तु यही लोग थे जिन्हें कलके अंग्रेज शासक धर्मावतार मालूम होते थे । वह अिसी प्राचीन-पंथिताके कंचुकसे अपने हजारों काले कर्मोंको छिपाना चाहते थे । बाकी रहा अपने प्राचीन अितिहास और संस्कृतिके प्रति सम्मान तथा अुससे अुत्प्रेरणा लेनेकी बात, तो अुससे कौन अिनकार करता है ? नेहरूजी भी अुसे स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। अपने अतीतसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेका कोअी प्रश्न नहीं है। अैसा करना निरर्थक ही नहीं अत्यन्त हानिकारक होगा। क्योंकि हमारा निर्माण अतीत द्वारा हुआ है. हमारी जड़ें अतीतमें हैं। यदि हम अतीतसे अपनेको विच्छिन्न कर लें तो हम बेजड़के हो जायेंगे। निस्संदेह राष्ट्रकी संस्कृतिकी स्थापनाके लिये सुदृढ़ नींवकी आवश्यकता है।

अिसी बातको डाक्टर राजेन्द्रप्रसादने भी हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिये जानेपर अपने हर्षोद्वेगको प्रकट करते हुये कहा था—"केन्द्रमें प्रयोग की जानेवाली यह भाषा (हिन्दी) हमें अेक दूसरेके और समीप लायेगी। अगर अंग्रजीके स्थानमें हमने अेक भारतीय भाषाको स्वीकार किया है. तो यह अवश्य हमें अेक दूसरेको और भी समीप लायेगी क्योंकि हमारी परम्परा अेक है, हमारी संस्कृति अेक है। जो बड़ीसे-बड़ी महत्वकी बात हो सकती थी, अुसे हमने आज संपादित किया। आज मुझे बड़ी प्रसन्नता और आनन्द है, मुझे विश्वास है, आनेवाली पीढ़ियाँ हमें आशीर्वाद देंगी।' आनेवाली पीढ़ियाँ सारी संविधान-सभाको आशीर्वाद नहीं देंगी, विशेषकर अुन लोगोंको, जिनका पूरा-पूरा प्रयत्न अुस बातके लिये था, कि जैसे भी हो अंग्रजीके स्थानको अक्षुण्ण रखकर अपने वर्गके स्वार्थको बचाया जाये। हाँ, आनेवाली पीढ़ियाँ जिनको सबसे अधिक आशीर्वाद देंगी अुनमें सर्वप्रथम नाम बाबू पुरुषोत्तमदास टंडनका होगा जिनके दृढ़ नेतृत्वने विरोधियोंको झुकाया। दूसरे जिस व्यक्तिको सबसे अधिक आशीर्वाद मिलेगा, वह हैं डा. राजेन्द्रप्रसाद। कितनी ही सीमाओंसे बद्ध होनेपर भी हिन्दीका हित अुनके हृदयमें सदा रहा और हिन्दीको जल्दी जल्दी राष्ट्रभाषाके योग्य सभी नवीन शब्दावलियोंसे अलंकृत करनेमें जिन व्यक्तियोंसे अधिक आशा है वह भी बाबू राजेन्द्रप्रसाद हैं।

आजाद साहबका विलाप

अेक ओर संस्कृतियोंकी अेकता और महिमाकी बात चल रही थी, स्वतन्त्र भारतकी अपनी राष्ट्रीय भाषाके स्वीकार करनेका आनन्द मनाया जा रहा था, तो वहीं कुछकी छाती पर साँप भी लोट रहा था, जिनकी कि मर्मवेदना मौलाना आजादके मुँहसे फूट निकली– "मैंने कांग्रेस असेम्बली पार्टीसे कहा था कि राष्ट्रभाषाकी लिपि देवनागरी हो, किन्तु सरकारी सूचनाके लिये अुर्दू लिपिका भी प्रयोग होना चाहिये। यह मध्यका रास्ता था, और मैंने समझा था कि अिसे सब स्वीकार करेंगे, लेकिन मैं अपने भावोंको छिपाना नहीं चाहता। मुझे यह देखकर बहुत निराशा हुअी, कि पार्टीने अुसे स्वीकार नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अगर सदस्योंके २० वीं सदीके मस्तिष्क अिस तरहके हैं, तो स्वाभाविक तया यह प्रश्न अुठता है कि हम कहाँ जा रहे हैं ? यहाँ हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीका करनेका अुतना प्रश्न नहीं है, जितना कि अिस बातका कि अिस कामको असहिष्णुता पूर्ण संकीर्ण भावनाके साथ किया जा रहा है। वैसे वातावरणमें आगेके लिये य सोचना बहुत कठिन है, कि राष्ट्रभाषा कभी भी सभी तरहके प्रभावोंको आत्मसात् कर सकेगी, दूसरी भाषाओंको अपनायेगी और देशकी सामूहिक संस्कृति प्रतिनिधित्व करेगी —सरकारी सूचनाओंके प्रकाशनके लिये भी अुर्दू लिपिको मानते हुअे हिन्दीके पक्षमें कांग्रेस-असेम्बली पार्टीने जो निश्चय किया औ अुसका जो धक्का मेरे हृदयपर लगा, अुसे मैं सहन नहीं कर सकता।"

राजेंद्र बाबूके अुद्गार और मौलानासाहेबके अिस विलापमें कितना अंत है ? मौलानासाहेबको सदस्योंके २० वीं सदीके मस्तिष्कपर खेद है। लेकिन अिस अुद्गारसे पता लग जाता है कि मौलानाका मस्तिष्क अवश्य अब भी सातवीं सदीसे आगे नहीं बढ़ा। किसी अीसाअीको तो वैसा क्षोभ नहीं हुआ. न अुसने अपनी किसी अलग भाषाका आग्रह किया। अेंग्लो अिंडिअन नेता श्री फ्रैंक अन्थोनीने हिन्दीके विलष्ट रूपकी शिकायत की, रोमन लिपिकी सिफारिश की, किन्तु हिन्दीके स्वीकृत हो जानेपर अुन्होंने कोअी विलाप नहीं किया। संविधान सभाके अुप-प्रधान अीसाअी होते भी भारतीयता, हिन्दी और अपनी मातृभाष बंगलाके पक्षपाती हैं। आखिर अुर्दू क्या बला है ? क्या वह अिस्लामिक जहादियोंके भारत-विजयके अुपलक्षमें खड़ा किया कीर्तिस्तम्भ नहीं है ? क्या स्वदेश शब्दोंकी जगह अरबी शब्दोंको भाषामें भरना देशमें दुर्राष्ट्रीयताका बीजारोप करना नहीं था ? हम मानते हैं कि अुनके लिये भारतमें यह कोअी नयी चीज नहीं थी। अिस्लामने जो भी कहा हो, किन्तु मुसलमानोंने जो अपनेको देशकी धारा अंग बननेसे सदा अिनकार किया, अिसीके कारण दो राष्ट्रोंका अंकुर अुत्पन्न हुआ और अुसीके कारण अन्तमें भारतका विभाजन होके रहा। मौलानासाहबके मनोभा को देखनेसे पता लगता है कि वह अुक्त साधारण मनोभावसे अूपर नहीं अुठ सके सच्ची जातीयता, धार्मिक संकीर्णता से अूपर अुठनेकी माँग करती है। आखि किस सिद्धान्तके आधारपर मौलाना अुर्दूकी माँग कर रहे थे ? सरकारी सूचनाओं में अुर्दूकी माँगका अर्थ था। अभी तक अुर्दूमें सरकारी सूचनाअें हिन्दीभाषा-भा कुछ प्रदेशों तक ही सीमित थी, किन्तु अब अुन्हें सारे भारतके लिअे निका जाय। असलमें तो मौलाना साहब समझ रहे थे, स्वतन्त्र भारत अिस प्रकार अप टूटी हुअी अितिहास-शृंखला और सांस्कृतिक-परम्पराको फिरसे जोड़कर अु अुज्जीवित कर रहा है। जिन विषमताओंने भारतको राजनीतिक परतन्त्रता दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन विषमताओंके कारण पश्चिमी जेहादियोंको फलने-फूलनेका मौका मिला, और अन्तमें अंग्रजोंकी सहायतासे जिसने भारतके दो टुकड़े करनेमें सफलता पायी, अुसे दूर होते देखकर जेहादी जैसे विचलित हुये बिना नहीं रह सकता था। असे तो अभी और अपने धर्मके फैलाये कितने ही जालों द्वारा भारतमें आगे बढ़ना था। अुसे आशा थी, कि सात सौ वर्षमें यदि कुछ हजारसे १० करोड़ बनकर हमने भारतके पंचमांशको काटकर अपना कर लिया, अुन्हींके द्वारा हम अभी और काफी आगे बढ़ेंगे, किन्तु यदि भारतमें भारतीयता सर्वेसर्वा हो गअी तो हमारी हालत चाँदनीमें चोर जैसी होगी।

अिसका यह अर्थ नहीं है कि हम अिस्लाम या किसी धर्मके साथ किसी प्रकारकी कड़ाअी या असहिष्णता दिखलाना चाहते हैं। किसी भी धार्मिक विचारके लिअे हरअेक व्यक्तिको स्वतन्त्रता रहनी चाहिअे। अरबों द्वारा अुत्पीड़ित पारसियोंको किसने अपनाया? यहूदियों और सिरियन अीसाअियोंको किस अुदार भावनासे शायद भारतने अपनी गोदमें लिया? यहाँ बौद्ध और जैन जैसे अीश्वर-विरोधी धर्म पैदा हुअे, फले-फूले, अुनका सम्मान हुआ। अिस्लामके लिअे भी कोअी डर नहीं है। किन्तु जो भाव मौलानाकी वाणीसे फूट निकले, वही यदि अिस्लामके हैं, तो अिससे अुस धर्मके अनुयायियोंको लाभ नहीं होगा। भारतके मुसलमान अिस वक्त चौरस्तेपर खड़े हैं। यहाँ अुन्हें स्पष्ट निश्चय करना होगा कि वह भारतीयताको अपनायेंगे, या अपना प्रेम और आदर्श भारत-भूमिसे बाहर रखेंगे। भारतीयताको अपनानेका यह अर्थ नहीं है कि वह हिन्दुओंकी देव-मालाको मानें, हिन्दू बनें। वह भले पाँच बार नमाज पढ़ें, लेकिन क्यों अीश्वरदत्तकी जगह फारसीके खुदाबख्शको तो पसन्द करेंगे, किन्तु भारतीय नामको नहीं? आखिर ११ वीं शताब्दीसे १५ वीं शताब्दी तक अब्दुर्रहमान (मुल्तानी), मलिक मुहम्मद जायसी और कबीर जैसे हिन्दीके महान् कवि मुसलमानोंमें हुअे थे। भारतीयताका मुसलमानोंसे आग्रह है कि वह अुसको अपनी चीज समझें।

अपने भाषणमें मौलाना साहबने यह भी कहा:—"व्यक्तिगत तौरसे मैं अनुभव करता हूँ कि भारतके लिअे रोमन लिपि सबसे अुपयुक्त है। अिस समस्यापर मैंने ३० बरस पहिले ही विचार किया था, और अिस परिणामपर पहुँचा था कि अिस अन्तर्राष्ट्रीय लिपिको यहाँ अिस्तेमाल करना चाहिये। मुझे मालूम है, अैसा समय आयगा जब कि परिस्थितियाँ भारतको रोमन लिपिको स्वीकार करनेके लिअे मजबूर करेंगी।' मौलानासाहेबकी अिस 'रोमन-लिपि-भक्ति'में भी नागरी-लिपिके प्रति विरक्ति काम कर रही है। अपनी नाक कटे तो कटे, दूसरोंका असगुन तो हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी जय

आजाद साहबके विलाप और कितनोंके प्रलापके बाद संविधान-सभाने हिन्दीको राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया। मौलाना हिफ्जुर्रहमानने हिन्दुस्तानीके लिअे १४ वोट प्राप्त किये और मुहम्मद ताहिरने अुर्दूके लिअे ।२ । श्री रामलिंगम चेट्टियारने पाँच बरस बादवाले कमीशनको हटानेका संशोधन रखा था, जिसमेंसे ९ वोट मिले। संविधान-सभाने राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें जो निर्णय किया, अुसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं:—

संशोधित अनुच्छेद, ३०१ क.

"(१) संघकी राजकीय भाषा देवनागरी लिपिमें लिखी हिन्दी होगी। संघके राजकीय प्रयोजनोंके लिये प्रयुक्त होनेवाले अंक भारतीय अंकोंके अन्तर्राष्ट्रीय रूपमें होंगे।

(२) .. अिस संविधानके प्रारंभ होनेके बाद पंद्रह वर्षों तक अंग्रेजी संघके अुन सभी सरकारी प्रयोजनोंमें परियुक्त की जायेगी, जिनके लिये कि वह संविधानके आरंभ होते समय की जा रही थी।

परंतु, अुक्त समयके भीतर भी राष्ट्रपति आज्ञा द्वारा संघके किसी भी राजकीय प्रयोजनके लिये अंग्रेजी भाषाके अतिरिक्त हिन्दी भाषा और भारतीय अंकोंके अन्तर्राष्ट्रीय रूपके अतिरिक्त अुनके देवनागरी रूपको भी प्रयोग करनेका अधिकार दे सकेगा।

(३)... अुक्त पंद्रह वर्षकी अवधिके बाद पार्लामेन्ट विधान द्वारा :

(क) अिंगलिश भाषा, या,

(ख) अंकोंके देवनागरी रूपको निश्चित प्रयोजनके लिये प्रयोग करनेका बंधान कर सकेगी।

(अंग्रेजी अंक नागरी सुलेखमें हिन्दी कलमसे कैसे लिखे जायेंगे, अिसपर भी ध्यान दिया होता, तो कठिनाअी और अस्वाभाविकताका पता लग जाता।)

पाँच साल बाद राष्ट्रपति अेक कमीशन नियुक्त करेगा :

३०१. ख "(२). कमीशनका कर्त्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपतिके सामने (अिन बातोंकी सिफारिश करे):

(क) संघके राजकीय कार्यके लिये हिन्दी भाषाका क्रमशः अधिक अुपयोग करना;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) संघके सभी या कुछ राजकीय कामोंके लिये अंग्रेजी भाषाके अुपयोग-पर प्रतिबंध लगाना।"

...३०१. ग. "राजकीय भाषा या भाषाअें (कुछ प्रतिबंधोंके साथ):— कोअी राज्य कानून द्वारा राज्यके भीतर प्रयुक्त होनेवाली भाषाओं-में से किसी या हिन्दीको अुस राज्यके सभी या कुछ राजकीय कामोंके लिये प्रयुक्त की जानेवाली भाषा या भाषाअें स्वीकृत कर सकता है;

परन्तु, जब तक राज्यकी व्यवस्थापिका सभा कानून द्वारा दूसरा बंधान नहीं करती, तब तक अंग्रेजी भाषा अुन राजकीय प्रयोजनोंके लिये राज्यके भीतर प्रयुक्त की जाती रहेगी, जिनके लिये कि वह अिस संविधानके प्रारंभ होनेके समय की जा रही थी।

.... परन्तु, यदि दो या अधिक राज्य सहमत हों कि अुनके बीचके व्यवहारके लिये हिन्दी भाषा राजकीय भाषा हो, तो अैसे व्यवहारके लिये अिस भाषाका प्रयोग किया जा सकता है।"

३०१. च. "(१, ३) सभी आदेश, नियम, आज्ञाअें और अुपनियम जो अिस संविधान या पार्लामेन्ट, अथवा राज्यकी व्यवस्थापिका द्वारा बनाये जायेंगे, अंग्रेजी भाषामें होंगे।

(२). अिस अनुच्छेदके अनुसार कोअी बाधा नहीं होगी, यदि राष्ट्र-पतिकी सहमतिसे कोअी राज्य निर्णय, डिग्री और आज्ञाके अतिरिक्त अपने राज्यके अुच्च न्यायालयकी कार्रवाअी या सरकारी कामके लिये हिन्दी भाषा या किसी और भाषाको स्वीकृत करें।

(३)...जब किसी राज्यकी व्यवस्थापिका विधेयक, कानूनी, शक्ति प्रयोग रखनेवाली आज्ञा...के लिये किसी भिन्न भाषाके प्रयोगको विहित करें, तो अुसके अंग्रेजी अनुवादको राज्यके गवर्नरके प्रमाणीकरणके साथ प्रकाशित किया जायेगा और वही अिस अनुच्छेदके अनुसार अंग्रेजीका प्रामाणिक लिखितम समझा जायेगा।

३०१. झ. हिन्दीके विकासके लिये आदेश:—संघका कर्तव्य होगा कि हिन्दीके प्रचारको बढ़ाये और अुसका अिस तरह विकास करे, जिसमें वह भारतकी सामूहिक संस्कृतिके सभी तत्वोंके प्रकटनकी माध्यम बन सके और अपनी स्वाभाविकतामें बिना हस्तक्षेपके हिन्दुस्तानी तथा दूसरी भारतीय भाषाओंमें प्रयुक्त होनेवाले रूप, शैली और प्राकटनको हजम करने अेवं जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो अपने शब्द-कोशके लिये मुख्यतः संस्कृत और गौणरूपेण दूसरी भाषाओंसे लेकर भाषाको समृद्ध बनानेकी कोशिश करे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-निर्माण

अब प्रोपेगंडाका युग खतम हो गया, प्रचारका लक्ष्य पूरा हो गया अब हिन्दीके साहित्यको अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी भाषाओंकी श्रेणीमें लाने लिये अुसके विशाल और सर्वतोमुखीन साहित्यका निर्माण करना है। अिस साहित्यकारों, पाठकों, प्रकाशकोंका सहयोग आवश्यक है। "थिंकर्स लाअिब्रेरी" "अेवरी मैन्स लाअिब्रेरी", 'पेंगुअिन', 'पेलिकल' अंग्रेजीकी जैसी ग्रंथमालाओं भाँति हम भी अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखी गम्भीर कृतियोंको सस्ती प्रकाशि करके कुछ सालोंके भीतर विश्वकी ज्ञानराशिसे अपने कोषको भर सकते हैं।

परिभाषा-निर्माण

किन्तु आजके साहित्यका सबसे महत्वपूर्ण भाग वैज्ञानिक साहित्य है अिसकी रचना तथा अध्ययनाध्यापनके लिये सबसे पहली आवश्यकता है हिन्दी वैज्ञानिक परिभाषाओंकी। हमें सभी विज्ञानोंको हिन्दीमें लानेके लिये पाँच लाख पारिभाषिक शब्दोंकी आवश्यकता है। हम जितनी जल्दी अुनका निर्माण कर सकें अुतनी ही जल्दी अंग्रेजीके जूअेसे मुक्त हो सकेंगे। परिभाषाओंकी संख्या पाँच लाख कहनेसे घबड़ानेकी आवश्यकता नहीं है। यदि राष्ट्रीय सरकारको हमारी सा प्रादेशिक भाषाओंके विशेषज्ञों तथा प्रादेशिक भाषा-संस्थाओंका पूरा सहयोग मिले और पचास विद्वान काममें लग जायें तो पाँचों लाख परिभाषायें १९ के अन्ततक बन सकती हैं। १९५२ तक अुन्हें बना डालना तो बिल्कुल आसान है किन्तु परिभाषाअें अेक विद्वानकी बूतेकी चीज नहीं है, न किसी अेक भाषा ज्ञानकी। हाँ, हिन्दी ही अकेली अिस कामको ठीकसे नहीं कर सकती। वैज्ञानि परिभाषायें हमें सिर्फ हिन्दीके लिये नहीं बल्कि सारी भारतीय भाषाओंके लि अेकसी बनानी है। संस्कृतसे बनानेके कारण हमारा कार्य आसान है। जिस त वेदान्तकी परिभाषाअें, हिन्दी, आसामी, बङ्गला, अुड़िया, तेलगु, तमिल मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, पंजाबीमें अेक है, अुसी तरह जीव, र यन, प्रत्यक्ष शरीर-शास्त्रकी परिभाषायें भी अेक बनायी जा सकती हैं, बना जानी चाहिये। यह तभी हो सकता है जब कि परिभाषा-निर्माणमें सभी भा भाषी विद्वानोंका हाथ हो। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन अिसी नीतिपर अपने परिभा निर्माणका काम कर रहा है। अुसके "शासन-शब्द कोष"में बंगाली तथा अुड़िय सहयोग लिया जा सका था। आजकल जो कोष बन रहे हैं, अुनमें सभी भा भाषाओंका सहयोग लिया जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ा हो गया न्यायालय, शिक्षालय तथा सरकारी कार्यालयमें ही हिन्दीको बैठा
ीमें लाने देनेसे काम नहीं चलेगा। हमें पत्र तथा पत्रकार क्षेत्रमें भी हिन्दीको प्रभुत्व
है। अिसे लाना है। हिन्दी-भाषा-भाषी पाठक अिच्छा न रहते भी अंग्रेजी पत्रोंको पढ़नेके
लाअिब्रेरी लिये बाध्य होते हैं, क्योंकि हमारे हिन्दी पत्र अुतनी पाठ्य-सामग्री नहीं दे पाते।
मालाओं जबतक यह दृष्टि रहेगी, तबतक हिन्दी पत्र अंग्रेजी पत्रोंको अपने रास्तेसे हटा
ी प्रकाशि नहीं सकते। हिन्दीके किसी दुअन्नियां पत्रसे मिलाअिये, आपको अुसमें अंग्रेजी
ते हैं। पत्रकी चौथाअी भी पाठ्य-सामग्री नहीं मिलेगी। अधिक सामग्री देनेके लिये
हमारे टाअिपमें थोड़ा-सा सुधार करनेकी आवश्यकता है। टाअिपके रूपोंका
बिना परिवर्तन किये यदि अूपर-नीचेकी मात्राओंको हम अगल-बगलमें रख दें तो
साहित्य टाअिपोंकी संख्या कम होकर डेढ़सौ हो जायगी। वह दूसरे अक्षरोंपर लटकेंगे
है हिन्दी नहीं जिसके कारण टूटेंगे नहीं, साथ ही अपने बलपर अपने स्थानमें खड़े होनेके
पाँच लाकारण अुनके अंग्रेजीसे भी छोटे टाअिप बन सकेंगे। अिस सुधारको स्वीकार कर
ण कर सकनेपर १२ प्वाअिंटके फेसके टाअिपको हम ७ प्वाअिंट जगह घेरनेवाला बना
संख्या पा सकते हैं, और अुतने ही मोटे टाअिपमें हमारे पत्रोंके ६ पृष्ठोंमें छपनेवाली सामग्री
हमारी सा साढ़े तीन पृष्ठोंमें छापी जा सकेगी। टाअिप छोटा करनेपर तो अंग्रेजी पत्रसे भी
रा सहयो दुगुनी सामग्री अुनके दूने फेसके टाअिपमें हम दे सकते हैं। अिस तरहका टाअिप
ायें १९ कैलाश फौंड्रीने बना भी लिया है, किन्तु अुनके आलस्यके कारण अुस टाअिपमें
ल आलोचपी कोअी पुस्तक आपको नहीं दिखा सकता। हाँ, पत्र-स्वामियोंको तब अधिक
अेक भाग पाठ्य-सामग्री देनेके लिये सम्पादकीय विभागको बढ़ाना पड़ेगा, जिससे वेतन-
। वैज्ञानिक व्यय बढ़ेगा, किन्तु साथ ही तब ग्राहक-संख्या भी तो बढ़ेगी, और अिस प्रकार
ाओंके लि स्वतंत्र देशके लिये लज्जाकर अंग्रेजी-पत्रसे हमारा पिंड छूटेगा।

। जिस त
गु, तमिल अब प्रचार नहीं साहित्य-निर्माण हमारा लक्ष्य है। मुझे आशा है हम
जीव, रा अपने लक्ष्यको पूरा करके छोड़ेंगे, और अगले दस वर्षोंमें दो सौ वर्षोंकी कमियों-
हैं, बना को पूरा करेंगे।

सभी भा

ने परिभा "तुम अतीतका चिन्तन मत करो देशके भाग्यविधाता नवयुवको! तुम
ा अुड़िय भावी भारत और भावी विश्वके सपने देखो और वर्तमानका निर्माण करो। तुम
भी भार स्वाधीनताके पालक, पोषक और सन्देश-वाहक बनो। मानव-मानवके बीचकी
दूरीको दूर करके देशको समानताके आधारपर सूत्रबद्ध करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धामें अखिल-भारतीय हिन्दी-दिवस

नागरिकोंकी विशाल सभामें राजर्षि टंडन द्वारा विधान-सभाके भाषा-सम्बन्धी निर्णयपर प्रकाश

वर्धा, ३०अक्टूबर। आज अखिल-भारतीय हिंदी-दिवसके अुपलक्ष्यमें राजर्षि पुरुषोत्तमदासजी टंडन १० बजे प्रातः कलकत्ता-बम्बअी-मेलसे वर्धा पधारे। स्टेशनपर वर्धा-नगर-कांग्रेस-कमेटीके अध्यक्ष, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धाके कार्यकर्ता, विदर्भ-कांग्रेसके अध्यक्ष श्री कन्नमवारजी, स्थानीय स्कूल-कालेजके छात्र और नगरकी जनताने बड़ी संख्यामें अुपस्थित होकर टंडनजीका स्वागत किया। अिस अवसरपर गुजरातसे श्री जेठालालजी जोशी, विदर्भ-नागपुरसे पं. हृषीकेशजी शर्मा, प्रो. शुकदेव प्रसादजी तिवारी, बंबअीसे श्री कांतिलालजी जोशी, महाराष्ट्रसे श्री. प्र. रा. भूपटकर, श्री पं. मु. डांगरे, श्री ह. कृ. कुलकर्णी आदि अुपस्थित थे।

अिसके बाद स्थानीय सेवाग्राम, महिलाश्रम आदि संस्थाओंके निरीक्षणके अुपरांत टंडनजी २ बजे दिनको राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धाके कार्यालयमें पधारे। समितिके कार्यकर्ताओं अेवं नगर तथा बाहरके छात्रोंके साथ परिचयके पश्चात् टंडनजीने अुनके पूछे हुअे प्रश्नोंका अुत्तर दिया। फिर शामके ४॥ बजे समितिके कार्यकर्ताओं, अुपस्थित प्रांतीय संचालकों अेवं राष्ट्रभाषा-प्रचारकों तथा नगरके संभ्रांत व्यक्तियोंके साथ टंडनजीका सामूहिक फोटो लिया गया।

वर्धा-निवासियोंकी ओरसे स्थानीय गांधी-चौकमें ८ बजे रातको अेक विराट सार्वजनिक सभा हिन्दी-दिवसके अुपलक्ष्यमें हुअी। नगर-कांग्रेस-कमेटी, जमनालाल-सेवाट्रस्ट, भारत-जैन-महामंडल, कांग्रेस-सेवादल, जनपद-सभा, हिन्दी-मंदिर, महिला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम, आदि संस्थाओंकी ओरसे श्री टंडनजीको मालाएँ पहनाई गईं।

सभापतिके पदको सुशोभित करते हुए स्थानीय कामर्स कालेजके आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवालजीने राजर्षि टंडनकी हिन्दी-सेवा एवं तपस्याकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। अुसके बाद आपने तीव्र शब्दोंमें अिस बातका विरोध किया कि अभी १५ वर्षों तक देशका सारा काम अंग्रेजीमें ही चलेगा। आपने बतलाया कि कुछ लोगोंके स्वार्थवश अंग्रेजी १५ वर्षों तक हमारे सिरपर बिठाई गई है। आपने नागरी अंकके बदले अंग्रेजी अंकोंको स्वीकार किये जानेका भी घोर विरोध किया।

करतल-ध्वनिके बीच हिन्दी-प्रचारके प्राण राजर्षि पुरुषोत्तम-दास टंडनने अपने भाषणमें हिन्दी-आन्दोलनके अितिहासपर प्रकाश डालते हुए विधान-परिषदकी घोषणाकी तीव्र आलोचना की।

आपने बतलाया कि कांग्रेसके जन्मकालसे पूर्व ही विभिन्न प्रांतोंके मनीषियोंने अेक-स्वरसे हिन्दी-नागरीको राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपिके लिये स्वीकार किया था। अिस संम्बधमें आपने महर्षि-दयानन्द, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, केशवचन्द्र सेन आदिके नाम अुल्लेख किये।

पूज्य बापूसे अुन्होंने राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर कब क्या परामर्श किया था, अुसका भी अुन्होंने अुल्लेख किया। आपने मार्मिक शब्दोंमें अहिन्दी-भाषी जनतासे अनुरोध किया कि वे हिन्दी-आन्दोलनको कुछ हिन्दी-भाषियोंका प्रचारमात्र ही न समझें। अुसके पीछे जो विराट राष्ट्रीय भावना छिपी है अुसके महत्वको समझें।

आपने जोरदार शब्दोंमें बतलाया कि जो कुछ बंकिम, अरविंद, दयानन्द, और केशवचन्द्रने हिन्दीके संबंधमें कहा है अुसीको रचनात्मक रूप देनेके लिये हम लोगोंने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी स्थापना की।

राजर्षिने गद्गद कंठोंसे अुन दिनोंका अुल्लेख किया जब अुनसे पूज्य बापूने कहा था "मेरे लिये हिन्दीका प्रश्न स्वराज्यका प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।" हिन्दी-हिन्दुस्तानीपर बापूके साथ अपने मतभेदकी चर्चा करते हुअे आपने बतलाया कि हिन्दी शब्द ही हमारी संस्कृतिका द्योतक है। यह नाम कवि खुसरोका दिया हुआ है। अिसमें किसी प्रकारकी साम्प्रदायिकता नहीं। अिसके पीछे जो अैतिहासिक और साहित्यिक परंपरा है अुसके निर्माणमें हिन्दू-मुसलमान दोनोंका समान हाथ है। हिन्दुस्तानीका कोअी अर्थ नहीं। अुस नामकी कोअी भाषा यूनिवर्सिटियोंमें भी पढ़ाअी नहीं जाती। हिन्दुस्तानी शब्द भारतीयताका द्योतक नहीं। भारतीयताका द्योतक तो हिन्दी ही है।

देश-विभाजनके प्रश्नपर प्रकाश डालते हुअे अुन्होंने बतलाया कि देश-विभाजनमें भाषाका भी प्रमुख हाथ था। जिना साहब और अुनके अनुयायियोंने कहा कि हम (हिन्दू-मुसलमान) दो हैं। हमारी पृथक-पृथक संस्कृतियाँ हैं। जिस प्रकार १९१६ के पृथक्-निर्वाचन द्वारा हिन्दू-मुसलमान आपसमें अेक दूसरेसे पृथक् होते गये, अुसी प्रकार अुर्दू भाषाने भी मुसलमानोंको भारतीय संस्कृतिसे अलग करनेमें हाथ बँटाया।

अुर्दू यद्यपि निकली तो हिन्दीसे ही, पर वह मुसलमानोंको हिन्दुओंसे अलग करती रही। अुसकी शब्दावली, रंगत, अुपमाअें, आदि सभी विदेशी थीं। अुसमें हिमालयके स्थानपर कोहकाफ, भीमके बदले रुस्तम और गंगा-यमुनाके बदले दजला-फरातके गीत गाये जाते रहे हैं। अिस सिलसिलेमें अुन्होंने अुर्दू-लेखकों द्वारा 'मतरूक' अर्थात् देशी शब्दोंके बहिष्कार किये जानेवाले आन्दोलनका भी अुल्लेख किया जिसके चलते सरूर साहबने कहा था:—

"बुलबुले शीराजको है रश्क नासिखका सरूर;
अस्फहाँ अिसने किये हैं कूचहाअे लखनअू।"

हिन्दी-हिन्दुस्तानीके अिस अप्रिय नाटकका पटाक्षेप होते-होते किस भाँति १५ वर्षोंके लिये हमारे अूपर अंग्रेजी लाद दी गअी है तथा हिन्दी अंकोंके स्थानपर अंग्रेजी अंकोंको रखकर देवनागरी-लिपिका विरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रनेका प्रयत्न किया गया है। आपने विधान-परिषदके अिस निर्णयको
ड़ी दृढ़ताके साथ अनुचित बताया कि हिन्दीके बदले १५ वर्षों तक और
ग्रेजी कायम रहे और नागरी लिपिमें अंग्रेजीके अंक चलाये जायँ।
आपने आगे कहा कि मद्रासियोंने तो अंग्रेजियतके हामी होनेके कारण
ग्रेजी अंकोंका समर्थन किया, पर हमारे जिन हिन्दी-भाषियोंने
रकारी दबावमें आकर अंग्रेजी अंकोंका समर्थन किया है, वे सच्चे
र्थोंमें हमारी जनताका प्रतिनिधित्व नहीं कर सके।

अिस संबंधमें कांग्रेस-पार्टीसे आपने जो त्यागपत्र दिया था,
सका अुल्लेख करते हुअे बतलाया कि जब विधान-परिषद्की कांग्रेस-
र्टीमें दो-दो बार यह निश्चय किया गया था कि भाषाके प्रश्नपर
भीको स्वतंत्र रूपसे मत दिये जानेका अधिकार है, तब पार्टीकी
तिको पुनः सर्वोपरि बनाये जानेका कोअी प्रश्न ही नहीं अुठता।
सलिये मैंने कांग्रेस-पार्टीसे त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र देकर मैं
ह नहीं चाहता था कि मैं कोअी दूसरी पार्टी खड़ी करूँ। पर जनताका
तिनिधित्व करनेके लिये ही मैंने अैसा किया था।

गुजरात और महाराष्ट्रके जिन व्यक्तियोंने अुनका साथ देकर
धान-परिषदमें १५ वर्षकी अवधि और अंग्रजी अंकोंका विरोध किया
अुसका अुल्लेख करते हुअे आपने बतलाया कि हमें अपने आन्दो-
नको चालू रखना चाहिये। मद्रासमें भी हमें अिन प्रश्नोंपर सहायक
लेंगे। मेरा विश्वास है कि मद्रासकी अधिकांश जनता हमारे साथ
गी। हमारे नेता भ्रममें पड़े हैं। अुनपर अंग्रेजीका जादू है।
भी-कभी बड़े-बड़े नेताओंसे भी बड़ी-बड़ी भूलें हुआ करती हैं। संवि-
न-परिषदने जो यह अकार्य किया है अुसे हटानेके लिये मैं तो प्रतिज्ञा
र ही चुका हूँ। जनतासे भी मेरी प्रार्थना है कि वह दृढ़तापूर्वक
सका विरोध करे। यह ठीक नहीं कि हम अपनी बुद्धिको भी अपने
ताओंके हाथ गिरवी रख दें। कोअी भी सरकार जनताकी अिच्छाके
ना अुसपर कोअी भाषा लाद नहीं सकती। भाषाका प्रश्न आपकी
क्तिका प्रश्न है। नैतिकताके साथ आप विधान-परिषदके अिस
योग्य निर्णयका विरोध करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमुल हर्षध्वनिके बीच राजर्षि टंडनने अपना भाषण समा
किया। अिसके बाद भदन्त आनन्द कौसल्यायनने नीचे लिखा प्रस्
अुपस्थित किया जो महिलाश्रम, वर्धाके प्रधान अध्यापक श्री थत्ते
अेक साधारण संशोधनके बाद सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

प्रस्तावका रूप :—

"भारतीय संघकी विधान-सभाने हिन्दीको राज्यभाषा
देवनागरीको राज्यलिपि स्वीकारकर जनमतका आदर किया है। अि
पर अिस सभाको संतोष है। किन्तु, हार्दिक खेद और दुःखका वि
है कि हमारी विधान-सभाने सिद्धान्त रूपसे हिन्दी और देवनागरी
अपनी राज्यभाषा और राज्यलिपि स्वीकृत कर लेनेके बाव
व्यवहारमें अुसे पंद्रह वर्षकी दूरीपर ढकेल दिया है।

"अिस सभाको अिस बातका भी हार्दिक खेद है कि अुस
देवनागरी लिपिको तो स्वीकार किया है, किन्तु देवनागरी लिपिके
अंतर्गत गिने जानेवाले अंकोंको स्वीकार न कर अुनके स्थान
'भारतीय अंकोंके अंतर्राष्ट्रीय रूप' के नामसे अंग्रेजी अंकोंको हम
सिरपर लादनेका प्रयत्न किया है।

"अिस सभाकी राय है कि विधान-सभा अपने निर्णय
यथाशीघ्र पुनः विचार करे और नागरी लिपिके अंतर्गत गिने जानेव
नागरी अंकोंको ही स्वीकार करे। साथ ही वह सरकारी कारोबा
हमारी राज्यभाषा हिन्दी और राज्यलिपि देवनागरी लिपिके व्य
हारकी अैसी व्यवस्था करे कि वह अंग्रेजीको पंद्रह वर्षके भीतर
राज्यभाषाके पदसे सर्वथा च्युत कर सके।"

सूर्यसे रात्रि कहती है—'चन्द्रमाके द्वारा तुम मुझे प्रेमपत्र भेजा
हो। मैं तुम्हारे अुन पत्रोंके अुत्तर घासपर अपने आँसुओंमें छोड़ जाती हूँ।'

—रवीन्द्रनाथ ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजीको हटानेकी दस-सूत्री योजना

(साहित्य-वाचस्पति श्री वियोगीहरि)

(श्री वियोगीहरिजीका हिन्दी-संसारमें महत्वपूर्ण स्थान है। आप अ. भा. हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके भू. पू. अध्यक्ष हैं। राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धाके संस्थापक सदस्य रह चुके हैं। आरम्भमें गांधीजी द्वारा संरक्षित 'हरिजन-सेवक' के संपादक थे। अंग्रेजीको हटाकर अुसकी जगह राष्ट्रभाषा हिन्दीको प्रतिष्ठित करनेकी आपकी दस-सूत्री योजनाकी जानकारी राष्ट्रभाषा-संसारके लिये अुपयोगी सिद्ध होगी।

—संपादक)

हमने फिर हिन्दी-दिवस मनाया है। हमने अिससे पहले भी हिन्दी-दिवस मनाये थे और अब फिर मनाया है। किन्तु अुन पहलेके दिवसोंमें और अब मनाये गये हिन्दी-दिवसमें अन्तर है। तब हम हिन्दीको अुसका जन्मजात अधिकार दिलानेके अर्थ सोये हुअे राष्ट्रको जगानेके लिअे हिन्दी-दिवसोंकी आयोजना किया करते थे। अब कम-से-कम वैधानिक घोषणाके रूपमें राष्ट्रभाषा-हिन्दीको राज्यभाषाका पद मिल गया है। पर, साथ ही, १५ वर्षकी लम्बी अवधि-के बाद अंग्रेजीका अिस देशसे हटना और देवनागरी लिपिमें तथाकथित 'अन्त-र्राष्ट्रीय' अंकोंका अवांछित प्रवेश, ये दो बातें अैसी हैं जिन्होंने अिस सुन्दर घोषणाको बुरी तरहसे विरूप बना दिया है।

हालमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनने अिस सम्बन्धमें जो प्रस्ताव स्वीकार किया है, अुसपर मैं समस्त देशका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। १५ वर्षतक अंग्रेजीको यथास्थान बनाये रखकर हिन्दीकी योग्यता और अभिव्यंजना-शक्तिको जो ललकारा गया है अुस ललकारका हमें दृढ़ता किन्तु नम्रताके साथ जवाब देना है। अधिक से-अधिक ५ वर्षके भीतर हमें प्रतिज्ञापूर्वक अंग्रेजीको अुन तमाम स्थानोंसे, जिन्हें अुसने अनुचित रूपसे निलज्जतापूर्वक अपना रखा है, निकाल बाहर कर देना है। अिसके लिअे नीचे लिखी दस-सूत्री योजनापर मैं अपने देशका ध्यान और बल आकृष्ट करना चाहता हूँ।

१–सरकारी विभागों, डाकखानों और बैंकोंकी सारी लिखा-पढ़ी हम अपनी ओरसे हिन्दीमें ही करें, भले ही जवाब अंग्रेजीमें आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२-जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते हैं वे अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगोंके बीचमें स्वभावतः न तो अपने-आपको हीन समझें और न अपनी अंग्रेजीकी अयोग्यता पर लज्जित हों, क्योंकि बात तो अिससे बिल्कुल अुलटी है। हिन्दी जानते हुअे भी यदि कोअी सज्जन अंग्रेजीमें बोलें तो या तो हम अुनकी बातका जवाब ही न दें या हिन्दीमें दें।

३-हिन्दी-सेवकोंका यह तात्कालिक कर्तव्य हो कि दूकानों, भोजनालयों, सिनेमा-घरों आदिके मालिकों और संचालकोंसे अंग्रेजीके बोर्ड हटाकर हिन्दीमें लिखानेका अनुरोध और आग्रह करें।

४-सार्वजनिक संस्थाओंका काम अंग्रेजीको हटाकर हिन्दीमें ही करानेके लिअे घोर प्रयत्न किया जाय।

५-हिन्दी-पत्र-पत्रिकायें सार्वजनिक संस्थाओंकी ओरसे प्राप्त अंग्रेजीमें लिखी सूचनाअें और कार्य-विवरण प्रकाशित न करें।

६-विश्वविद्यालयों और शिक्षा-मंत्रियोंपर हम हर तरहसे जोर डालें कि ५ वर्षके भीतर शिक्षाका माध्यम हिन्दीको बना दें और अहिन्दी-भाषी प्रान्तोंकी शिक्षण-संस्थाओंमें हिन्दीको अनिवार्य भाषाके रूपमें यथाशीघ्र स्थान दे दें।

७-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी अुच्च परीक्षाओंको विश्वविद्यालयों तथा प्रान्तीय सरकारों द्वारा अनुरोधपूर्वक शीघ्र मान्यता दिलाअी जाये।

८-केन्द्रीय सरकार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन तथा अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओंकी सलाहसे विधान आरम्भ होते ही अेक अैसी अुच्च संस्थाका निर्माण करे, जो शासन तथा वैज्ञानिक क्षेत्रोंमें अपयोगके लिअे सामान्य साहित्यका ५ वर्षके भीतर निर्माण कर दे।

९-हिन्दी-भाषियोंको कम-से-कम अेक अन्य प्रान्तीय भाषा सीखनेके लिअे प्रोत्साहित और प्रेरित किया जाय।

१०-हिन्दीके लेखक तथा प्रकाशक ५ वर्ष तक व्यवहारोपयोगी राष्ट्र-निर्माणके साहित्यको तैयार करें—अच्छा हो कि कविता, कहानी, अुपन्यासके लिखने और प्रकाशनको तब तकके लिअे स्थगित कर दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112534

राष्ट्रभाषा संसार

अखिल-भारतीय रेडियोमें हिन्दी-विरोधी षड्यंत्र

अखिल-भारतीय रेडियोकी हिन्दी-समितिसे पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्री वियोगी हरि और पं. मौलिचन्द्र शर्माने त्यागपत्र दे दिया है। त्यागपत्रके कारणका सारांश निम्नलिखित है :—

"सन १९४८ में समय-समयपर रेडियोके सांस्कृतिक अुत्थानके लिये हिन्दी समिति द्वारा दिये गये सुझावोंकी अुपेक्षा की गअी। हिन्दी शब्दोंके शुद्ध अुच्चारणपर ध्यान नहीं दिया जाता। हिन्दी न जाननेवाले कर्मचारियोंके लिये विशेष परीक्षा चलानेकी सलाहपर कोअी निश्चित विचार नहीं किया गया।

"मनोरंजन-कार्यक्रमोंको जनताकी शिक्षामें अुपयोग न कर अुनमें भद्दे अश्लील गाने प्रसारित किये जाते हैं। सूर, तुलसी तथा मीराको भी अिसी स्तरपर लाया जाता है। रामायण तथा गीताका पाठ बंद करवा दिया गया जब कि कुरानका पाठ किया जाता है।

"हालकी हुअी नअी नियुक्तियोंमें ४० प्रोग्राम-अिस्टेंटोंमें अेक भी हिन्दी नहीं जानता। १३ स्टेशन-डायरेक्टरोंकी भी वही हाल है। अिलाहाबाद, पटना तथा नागपुरमें भी हिन्दीवाले नहीं रखे गये।"

अिस त्यागपत्रका हिन्दी-संसारपर बड़ा प्रभाव पड़ा है। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्तजीने अ. भा. लखनअू-रेडियोसे अपना सम्बन्ध त्यागते हुअे डायरेक्टर महोदयको नीचे लिखा पत्र भेजा है :—

"सुना है संप्रति हिन्दीके तीन विद्वानोंने आल-अिंडिया-रेडियोसे अपना संबन्ध त्याग किया है। अुनके नाम हैं श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' श्री वियोगी हरि और श्री मौलिचन्द्र शर्मा।

"सम्बन्ध त्यागनेके जो कारण बताये गये हैं वे चिंतनीय हैं। अैसी परिस्थितिमें मैं भी आल अिंडिया-रेडियोसे सहयोग नहीं करना चाहता। मैंने अपने गीत प्रसारित करनेकी जो स्वीकृति आपको दी थी अुसे अिस पत्रके द्वारा समाप्त कर रहा हूँ। कृपया आगेसे मेरे गीतोंका प्रसार रोक दीजिये।"

अिसके बाद लखनअूमें गत ३० अक्तूबरको हिन्दी-दिवसके प्रसंगमें लखनअू-रेडियोके सामने चार सौ से अधिक हिन्दी-सेवियोंने काले झंडोंका प्रदर्शन किया। अिसी प्रकार काशी, बरेली, मुरादाबाद, बहराअिच, बस्ती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरा, अलीगढ़ आदि स्थानोंमें रेडियोकी हिन्दी-विरोधी नीतिके विरोधमें प्रदर्श हुअे।

हिन्दी लेखकों व पत्रकारोंका असहयोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा। बिहारके श्री रामधारीसिंह 'दिनकर', श्री शिवपूजन सहाय, श्री हंसकुमार तिवारी श्री व्रजकिशोर नारायण तथा श्री रामगोपाल शर्माने भी सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। यह भी ज्ञात हुआ है कि आल-इंडिया-रेडियोके कार्यालयमें देश अनेक हिन्दी कवियोंने अिस प्रकारके पत्र भेजे हैं।

बादका समाचार है कि अिस सामूहिक विरोधका प्रभाव भारत-सरकार पर भी पड़ने लगा है। अिस सम्बन्धमें तीन कार्य किये गये हैं—(१) समाचारोंकी भाषाका नाम 'हिन्दुस्तानी' से बदलकर 'हिन्दी' कर दिया गया है, (२) पी. टी. आअी. द्वारा यह समाचार प्रसारित किया गया है कि आगामी १ जनवरीसे रेडियोकी भाषा-नीति बदल जायगी और (३) कर्मचारियोंके लिये अेक परीक्षा देना अनिवार्य होगा।

राहुलजीकी प्रतिज्ञा :—रेडियोकी भाषा-नीतिके संबंधमें महापंडित राहुल सांकृत्यायनने अपने अेक वक्तव्यमें कहा है:—"मुझे पिछले दो वर्षोंमें कअी बार रेडियोपर बोलनेके लिये आग्रह किया गया और कभी कभी यह आग्रह मेरे घनिष्ठ मित्रों द्वारा दुहराया गया। मैंने कह दिया कि जब-तक भाषाके संबंधमें रेडियोकी नीति ठीक नहीं होती तब तक मैं भारतके रेडियोपर नहीं बलूँगा।"

हिन्दी पत्रोंका निश्चय :—लखनअूमें २ नवम्बरको प्रांतके कतिपय प्रमुख समाचार-पत्रोंके संपादकों और प्रतिनिधियोंकी बैठक कौंसिल हाअुसमें हुअी थी। अखिल-भारतीय रेडियोकी हिंदी-विरोधी नीतिके विरोधमें आगामी ७ नवम्बरसे हिंदीके समाचार-पत्रोंमें रेडियो-कार्यक्रम प्रकाशित न करनेका फैसला किया गया। बैठकमें विश्वमित्र, आज, भारत, संसार आदि प्रांतके कई पत्रोंके सम्पादक अुपस्थित थे।

न्यायालयोंमें आवेदन-पत्र हिन्दीमें लिये जायें

लखनअू, ३१ नवम्बर। ज्ञात हुआ है कि युक्तप्रांतीय सरकारने न्यायालयोंको अेक परिपत्र द्वारा आदेश दिया है कि अदालतोंमें दी जाने वाली अर्जियाँ केवल हिंदी भाषामें ग्रहण की जायें, परन्तु अुचित स्थितिमें अंग्रेजी में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण की जा सकती हैं। अुर्दूमें आने वाली अर्जियां केवल विशेष स्थितिमें ही ग्रहण की जायें।

अदालतोंमें हिन्दी

गत १ नवम्बरसे दिल्लीकी अदालतोंमें हिन्दीका पदार्पण हुआ है और अदालतके कामकाजके लिये हिन्दीको 'अतिरिक्त भाषा' का स्थान मिला है अभीतक दिल्लीकी अदालती भाषा अुर्दू ही थी।

दो राष्ट्रगीत

ज्ञात हुआ है कि भारत-सरकारने राष्ट्रगीत तय करने के लिये जो समिति नियुक्त की थी अुसने राष्ट्रगीतके तौरपर 'वन्दे मातरम्' और 'जन गण मन' दोनोंके लिअे सिफारिश की है। सेनाके लिअे 'जन गण मन' रहेगा और 'वन्दे मातरम्' विशेष अवसरके लिअे और सामाजिक अवसरके लिअे।

५ लाख नये हिन्दी शब्द

कटिहार, २ नवम्बर। तिलक-पुस्तकालयके वार्षिक समारोहके सभापतिके पदसे भाषण करते हुअे महापण्डित राहुल सांकृत्यायनने कहा कि विधान-परिषद द्वारा गठित अुपसमितिने, जिसका मैं भी सदस्य हूँ, अबतक २४ हजार शब्द तैयार कर लिअे हैं। अिस समितिपर हिंदीके नये नये शब्दोंके गठन का भार दिया गया है। आशा है अिस वर्षके अन्त तक ५ लाख शब्द तैयार हो जायेंगे।

प्रमुख भाषाओंमें विधानका अनुवाद

नअी दिल्ली, ३० अक्तूबर। आज विधान-परिषद्के सचिवालयकी अेक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद द्वारा बुलाये गये भाषा सम्मेलनमें वैधानिक न्याय तथा भाषा-सम्बन्धी शब्दोंके निर्माणका निर्णय किया गया। अपने पथ-प्रदर्शनके लिये कअी व्यापक सिद्धान्तोंको निर्धारित कर सम्मेलनने अपनेको अेक समितिके रूपमें परिणत करनेका निश्चय किया। यह समिति अनुवाद-विशेषज्ञ समिति द्वारा भेजे गये शब्दोंपर विचार करेगी।

प्रथम दिनकी बैठकमें विभिन्न भाषाओंके ३३ प्रतिनिधियोंने भाग लिया। ये लोग विशेष रूपसे आमंत्रित किये गये थे। अिसमें विधानका संस्कृत अनुवाद भी जल्दसे जल्द करानेका निश्चय किया गया। यह भी निश्चय हुआ कि क्षेत्रीय भाषाओंमें अनुवाद करानेका भार अेक नयी समितिको दिया जाय। अिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी समितिके सदस्य सम्मेलनमें अनुपस्थित क्षेत्रीय भाषाके प्रतिनिधि तथा प्रांतीय सरकार द्वारा नियुक्त व्यक्ति ही होंगे।

सम्मेलन २९ अक्तूबरसे २ नवंबरतक होता रहा। अिन पाँच दिनों जो विचार-विनिमय हुआ और परिभाषाओंके सन्बन्धमें ९५ प्रतिशत अैकमत्य रहा वह हिन्दीके द्वारा ही।

स्थान-स्थानपर हिन्दी-दिवस

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयागके निर्देशानुसार विगत ३० अक्टूबरको देशके विभिन्न भागोंमें हिन्दी-दिवस' मनाया गया।

अिसी अवसरपर **जबलपुरमें** मध्यप्रांत-विदर्भके गृहसचिव मा. पं. द्वारका प्रसाद मिश्रने कहा—"विधान-सभा द्वारा हिन्दी-नागरी राज्य-भाषा और राज्य-लिपि स्वीकार कर ली गअी यह समस्त राष्ट्रकी पहली विजय है। अब आंदोलनमें अपने समयको न लगाकर हमें हिन्दीमें अुत्कृष्ट साहित्य अेवं परिभाषिक शब्दोंका निर्माण करनेमें लगाना चाहिये।" सेठ गोविंददास अेवं प्रो. चन्द्रप्रकाश वर्मा आदिने भी अपने विचार व्यक्त किये।

बनारसमें नागरी प्रचारिणी सभाकी ओरसे हिन्दी-दिवस मनाया गया, जिसमें हिन्दी-नागरीको राज्यभाषा अेवं राज्यलिपि स्वीकार करनेपर विधान सभाको बधाअी दी गअी तथा अंग्रेजी जारी रहनेकी अवधि १५ वर्षसे कम करनेके प्रश्नपर पुनः विचार करनेकी प्रार्थना की गअी।

अिसी प्रकार **बरेली, मुरादाबाद, बहराअिच, बस्ती, मथुरा, अुन्नाव, लखनअू, अजमेर, अिम्फाल (मणिपुर), वर्धा** आदि स्थानोंमें हिन्दी-दिवस मनाया गया।

गत ३० अक्तूबरको सायंकाल ७ बजेसे **जालना** माहेश्वरी आनन्द भवनमें पं भीमरावजी देशपांडे बी अे. अेल. अेल. बी. की अध्यक्षतामें हिन्दी दिवस मनाया गया। पं शिवकुमारजी शास्त्री, श्री चन्दुलालजी, श्री माधा राधाकृष्णजी आदिके भाषण हुअ।

भारतीय अंकोंके स्थानमें अन्तर्राष्ट्रीय अंकोंके व्यवहार तथा हिन्दी केन्द्रीय सरकारके व्यवहारके लिये १५ वर्षका दीर्घकालकी अड़चनके प्रति विरोध प्रकट किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय हलचलें

गुजरात

अहमदाबादः—अहमदाबाद-राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिके तत्वावधानमें पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजीके सभापतित्वमें ता. २५। ६। ४६ को महिला-पाठशालाके भवनमें वार्तालाप रखा गया था। अिस अवसरपर शहरके सुयोग्य विद्वान् तथा प्रचारक अुपस्थित थे। वार्तालापके सिलसिलेमें पंडितजीने बतलाया कि अुच्च शिक्षाका माध्यम हिन्दी ही होनी चाहिये। अिससे प्रांतीय भाषाओंकी कुछ हानि न होगी। हिन्दीका भविष्य अुज्वल है। हिन्दी-प्रेमियोंको अब सर्जनात्मक कार्योंमें लग जाना चाहिये।

राष्ट्रभाषा-प्रचारके नूतन वर्षके अुपलक्ष्यमें गु. प्रां रा. भा. प्र. समितिके संचालक श्री जेठालालजी जोशी 'राष्ट्रभाषा' के द्वारा गुजरातके समस्त केन्द्र-व्यवस्थापकों तथा प्रचारकोंको हार्दिक बधाअी भेजते हुअे राष्ट्रभाषा-प्रचार-संबंधी अुनकी सेवाओंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

बम्बअी

गांधी-जयंतीः— बम्बअीप्रान्तीय राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभाकी ओरसे गांधी-जयंतीके अुपलक्ष्यमें वाक्-स्पर्धा तथा निबन्धस्पर्धाका कार्यक्रम रखा गया था। निबन्ध-स्पर्धा ता. १ अक्टुबर '४६ को हुअी। अिसमें कुल ३७ विद्यार्थी सम्मिलित हुअे। वाक्-स्पर्धा ता. २ अक्टुबरको फेलोशिप स्कूलके हॉलमें प्रोफेसर न. र. फाटककी अध्यक्षतामें हुअी। कुल ३७ विद्यार्थी सम्मिलित हुअे। नीचे अनुसार पुरस्कार दिये गयेः—

निबंधस्पर्धा—पुरस्कार

क—समूह (प्रारंभिक प्रवेश)

श्री अेच. डी. कात्रक, पहला पुरस्कार
,, सुरेश जोशी दूसरा ,,
,, मनुज संपट तीसरा ,,

ख—समूह (परिचय-कोविद)

श्री रमेश काजी पहला पुरस्कार
,, शांतिलाल मिसर दूसरा ,,
,, हंसराज गांधी तीसरा ,,

वाक्स्पर्धा—पुरस्कार

क—समूह (प्रारंभिक प्रवेश)

श्री अेच. डी. कात्रक पहला पुरस्कार
,, निर्मला परसराम दूसरा ,,
,, सुरेश पण्डया तीसरा ,,

ख—समूह (परिचय-कोविद)

श्री फ्रेनी. सी. सेठना पहला पुरस्कार
,, अिंदिरा राघवाचार्य दूसरा ,,
,, केशवचंद्र दळवी तीसरा ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वश्री पद्मावती कीर्तिकर नैथानी (प्रो. सेंट झेवीयर कालेज, बंबअी तथा प्रभाकरजीने निर्णायकके रूपमें कार्य किया था।

विदर्भ-नागपुर

खामगाँव :— गत ४ सितंबरको खामगाँव हिन्दी-हाअीस्कूलके शिलान्यासके बाद सायंकाल तिलक-राष्ट्रीय-विद्यालयमें श्रीमान पकवासा साहब पधारे। खामगाँव केंद्रसे गत फरवरी की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके महामान्य गवर्नर साहबके हाथों प्रमाणपत्र दिलानेके अुद्देश्यसे प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया। तिलक-राष्ट्रीय-विद्यालयके प्रत्येक कार्य-क्रमको गवर्नर साहबने बड़े अनुरागसे देखा और अुसमें दिलचस्पी प्रकट की अुन्होंने सामुदायिक सूत्रयज्ञमें भाग लिया, संध्याकी आश्रम-प्रार्थनामें सम्मिलित हुये और राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र दिये।

प्रमाणपत्र लेनेवालोंमें खामगाँवके कांग्रेसी नेता और धारासभाके (अेम. अेल. अे.) सदस्य डा. अेकबोटे और अुनकी धर्मपत्नी दोनों थे। डा. अेकबोटेने जब परिचयका प्रमाणपत्र लिया तो माननीय गवर्नर साहबने हँसते हुअे अुनकी पीठ ठोकी।

हमारे प्रांतीय संचालक पं. हृषीकेश शर्माने तिलक-विद्यालयके आचार्य श्री पंधे गुरूजी, श्री भँवरलाल सेवक तथा विद्यालयके कार्यकर्ताओंका श्रीमान पकवासाजीसे परिचय कराया। विद्यालयके कला-भवनको देखकर श्रीमान पकवासा साहब बहुत ही प्रसन्न अेवं प्रभावित हुअे।

दूसरी प्रसन्नताकी बात यह है कि खामगाँवकी म्युनिसिपालिटीने जिला-राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिके प्रचार-कार्यसे खुश होकर अुसे अिस वर्ष (१९४९) ५००) रुपयेकी सहायता दी है। गत वर्ष भी अुसने समितिको १००) रुपयेकी सहायता दी थी। १०१) रु. जनपद-सभासे भी अिस वर्ष मिले हैं।

नये प्रचार-केन्द्र:—गत अक्टूबरमें हमारे प्रमाणित प्रचारक श्री भास्कर शास्त्रीजीने (१) पिंपलोद, (२) कोकर्डा, (३) खोलापुर और (४) शिगणापुर अिन चार मराठी मिडल स्कूलोंमें प्रचार-केन्द्र स्थापित किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल

कर्सियांगः— गत ३० सितंबरको सायं ५ बजे राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति कर्सियांग (प. बंगाल) कार्यालयमें सरस्वती-पूजाके अपरान्त गांधी-जयंती समारोहपूर्वक मनाअी गअी।

सर्वश्री जानार्दन चतुर्वेदी (राष्ट्रभाषा प्रचारक), दीपचंद अग्रवाल, गौरीशचन्द्र चतुर्वेदी, कामता प्रसाद गुप्त, दयानन्द अग्रवाल, कार्त्तिक प्रसाद गुप्त आदि सज्जनोंने बापूकी तपस्या, साधना और हिन्दी-सेवापर पूर्ण प्रकाश डाला।

मणिपुर (असम)

मणिपुरके नोगमैबुँक तथा लाअिरेनजम नामक दो गाँवोंमें राष्ट्रभाषाके दो स्कूल खोले गये हैं। यहाँके छात्र-छात्राओंका हिन्दी-प्रेम प्रशंसनीय है। ये छात्र आगामी अप्रीलमें होनेवाली प्रचार-परीक्षाओंमें सम्मिलित होंगे। मणिपुर-राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिके श्री छत्रध्वज शर्माने हिन्दीकी अुपयोगिता और महत्तापर प्रकाश डाला।

महाराष्ट्

पुणेः—पुणे-केन्द्रके कोविद-अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका स्नेह-सम्मेलन प्रान्तीय समितिके कार्यालयमें ता. १९-६-४९ को श्री व. अ गद्रेजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अुस समय संभाषण-शक्ति बढ़ानेके अुद्देश्यसे 'भारती वाग्वर्धिनी सभा, पुणे' की स्थापना हुअी।

'राष्ट्रभाषा-सेवा-मंदिरकी राष्ट्रभाषा-व्याख्यानमाला' का पुणेमें सर्वप्रथम आयोजन श्री सज्जनराम केणीजी और श्री ह. कृ. कुलकर्णीजीने किया। व्याख्यान-मालामें स्थानीय विद्वान व्याख्याताओंके कुल १८ व्याख्यान प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय और कोविदके विद्यार्थियोंके लिये अत्यंत लाभदायक हुअे। ता १६-९-४९ को सायं ६ बजे श्री पं. ग र. वैशंपायनजीके सभापतित्वमें व्याख्यानमाला और भाषा-सम्बधी विधान-परिषदके निर्णयपर सभा हुअी। अुसमें श्री पं. मु. डांगरेजी, आचार्य दांडेकरजी, पं. जैतलीजी और प्रा. चितलेजीने अपने भाषणमें विधान-परिषदके सदस्योंका अभिनन्दन किया।

१८-९-४९ को नूतन मराठी-विद्यालयके प्रांगणमें श्री प्रा, शं. दा. चितलेजी-की अध्यक्षतामें सभा हुअी। अेक प्रस्तावके द्वारा बम्बअी सरकारसे अनुरोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया कि वह विधान-सभा के निर्णयको ध्यानमें रखते हुअे हिंदुस्तानी-बोर्डमें शीघ्रातिशीघ्र अुचित परिवर्तन करे।

बालचंदनगरः—दि. १७-८-४९ को केन्द्रका प्रमाणपत्र-वितरण-समारोह श्री सेठ बाहुबलीजी गुलाबचंदकी अध्यक्षतामें संपन्न हुआ। प्रान्तीय संचालक श्री पं मु. डांगरेजीका राष्ट्रभाषा हिंदीके समर्थनमें सुन्दर भाषण हुआ। श्री तु. शं. कुलकर्णी तथा व्य. श्री प्र.बा. वर्तकजीके अथक परिश्रमोंसे यहाँका कार्य सुचारुरूपसे चल रहा है।

कोल्हापुरः— दक्षिण-महाराष्ट्रके संगठक श्री श्रीराम अट्रावलकरजी और कोल्हापुर-ज़िला-राष्ट्रभाषा-प्रचार-मंडलके प्रधान मन्त्री श्री. द्रविड़जी, प्रचार-मन्त्री श्री. ओतारीजी तथा अन्य पदाधिकारी श्री घोटणेजी, श्री. तेरवाड करजी आदि प्रभृतियोंका दौरा अगस्त ४९ के अंतिम सप्ताहमें हुआ। जयसिंगपुर, पन्हाला, अिचलकरंजी, शिरोल आदि गाँवोंमें श्री ल. क. अक्किवोट, श्री. हर्डिकर, श्री पाटील, श्री दा. वि. कुलकर्णी, श्री माने और श्री गो. रा. चोलकरजी राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचारमें पर्याप्त हाथ बँटा रहे हैं।

सांगलीः— दक्षिण महाराष्ट्रके संगठक श्री श्रीराम अट्रावलकरने ता. १३-१४-१५।८।४९ को सांगली-विभागकी परिस्थितिका अवलोकन किया। अुन्होंने रा. भा. वर्गोंको सुचारुरूपसे चलाने और परीक्षार्थियोंकी अच्छी तैयारी करा लेनेकी आवश्यकतापर जोर दिया।

ठाणे-कल्याणः— स्त्री-संघटना-समिति, कल्याणकी ओरसे श्री. शां. का. पाठकजीकी अध्यक्षतामें प्रान्तीय संचालक श्री पं. मु. डांगरेजीका 'राष्ट्रभाषा' विषयपर व्याख्यान हुआ। अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र और पुरस्कार दिये गये।

विजापुरः— केन्द्रका प्रमाणपत्र-वितरण-समारोह श्री मृत्युंजय देव, वेदांताचार्यके शुभ हाथों हुआ।

जुन्नर-पुणेः— दि. २७-७-४९ को श्री. पं. मु. डांगरेजीकी अध्यक्षतामें अप्रैल १९४९ की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। केन्द्रका प्रचारकार्य सर्वश्री. वा. ज्यो. देशपांडे, पां. सी. परांजपे, खान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौरके प्रयत्नोंसे सुचारुरूपसे चल रहा है। ता. २१-७-४९ को 'दुलहन' नाटक खेला गया था।

भालोद:— ता. २१-९-४९ को वर्धाके श्री पं. कृपाल द्विवेदीजी और जलगांवके श्री वामनराव फेगडेजीका परीक्षोपयोगी भाषण केन्द्रके कार्यालयमें हुआ।

कुर्डुवाडी:— 'सोलापुर-महिला-परिषद' के दूसरे अधिवेशनके सभापति, श्री. सौ. अिन्दिराबाअी देवधरके सभापतित्वमें, यहाँ, अप्रैल मासकी राष्ट्रभाषा-परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण महिला परीक्षार्थियोंका प्रमाणपत्र-वितरण-समारोह दि. १० सितम्बर १९४९ को स्थानीय "मोतीलाल-नाट्यगृह" में मनाया गया।

लंकामें हिन्दी-प्रचार

लंकामें प्राचीन परीक्षाओंमें हिन्दी विषय लेकर सम्मिलित होनेवालोंकी संख्या दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। पिछले वर्ष संपूर्ण द्वीपसे कुल ८० या ८५ छात्र हिन्दी लेकर परीक्षामें शामिल हुअे थे। हिन्दी-प्रचार-कार्यका प्रमुख स्थान विद्यालंकार-विद्यालय है। हमें संतोष है कि अिस विद्यालयसे हिन्दीमें ज्यादासे ज्यादा छात्र परीक्षाओं (हिन्दी) में अुत्तीर्ण होते हैं। हमें लिखते प्रसन्नता होती है कि अिस वर्ष परीक्षार्थियोंकी संख्या अपेक्षासे अधिक बढ़ गअी है। लगभग २०० छात्र परीक्षाओंमें शामिल हुअे हैं।

विद्यालंकार-विद्यालयमें शास्त्राचार्य भिक्षु श्री बी. सीवलीजी तथा भिक्षु सुशीलजी बड़ी ही कुशलतासे कार्य-संचालन कर रहे हैं। अिस विद्यालयके अतिरिक्त अन्य स्थानोंमें भी हिन्दी पढ़नेवाले छात्र हैं।

—गिरीशकुमार (केलानिया)

"कल शाम मैंने मंदिरकी संगमरमरकी सीढ़ियोंपर अेक स्त्रीको बैठे देखा। अुनके दोनों तरफ दो मनुष्य बैठे हुअे थे। अिस स्त्रीका अेक गाल पीला पड़ रहा था और दूसरेपर लाली दौड़ रही थी।" —खलील जिब्रान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

(१) हमारी बा, (२) गो-सेवा, (३) जीवनका सद्व्यय

प्रकाशक— नवजीवन-प्रकाशन-मन्दिर, अहमदाबाद।

(१) हमारी बा— अिस पुस्तककी लेखिका श्रीवनमाला परीख श्री सुशीला नैय्यर हैं। अिसमें राष्ट्र-माता कस्तूरबाके जीवनकी निकटतम झाँकी क्योंकि लेखिकाओंको 'बा' के निकटतम संपर्कमें रहनेका सौभाग्य प्राप्त हो चुका। बा के आचार-विचारका किया गया चित्रण वास्तविक, स्वाभाविक अेवं कलापूर्ण पुस्तक पढ़नेमें किसी अुत्तम अुपन्यास जैसा रसबोध होता है। पुस्तकका वह स्थल ही करुण और मार्मिक है जहाँ कटनी-स्टेशनपर गांधीजीके ज्येष्ठ पुत्र हरिलालभाअी 'मा कस्तूरबाकी जय' कहते फटेहाल खिड़कीके सामने आ खड़े होते हैं। पथभ्रष्ट पि पुत्रकी दशा देख माँकी आँखें गीली हो जाती हैं, और पुत्र अपने विश्ववंद्य पिता अुपेक्षाकी दृष्टिसे देखता हुआ माँकी ओर अपनी श्रद्धा और प्रेमकी प्रतीक मोसंबीको बढ़ाकर कहता है,—"लो बा यह मोसंबी!"...और अंतमें—"बा यह मोसं तो तुम ही खाना, भला!"

सरल और सरस हिन्दी अनुवादके लिये पुस्तकके अनुवादक श्री काशिना त्रिवेदी वधाअीके पात्र हैं। पृष्ठसंख्या सोलहपेजी क्राअुन—२२८, मूल्य २)।

(२) गो-सेवा— अिसके लेखक स्वयं म. गांधी हैं। गो-सेवा अेवं गोरक्षा संबन्धमें समय-समयपर अुनके द्वारा दिये भाषणों और लिखे लेखोंका संग्रह अि पुस्तकमें है। भारत गो-पूजक देश है, पर यह पूजा भावनातक ही सीमित है जब कर्तव्यमें सर्वथा अुपेक्षित। विदेशोंमें यह पूजा भावना-निहित न होकर कर्तव्य-नि है जिसका परिणाम अुन देशोंकी आर्थिक और सामाजिक खुशहाली है। पुस्तक गो-सेवाके आर्थिक पहलूपर विशद विवेचन किया गया है।

अनुवादक श्री रामनारायण चौधरी हैं। क्राअुन सोलहपेजी पृष्ठसंख्या १८ मूल्य १॥)।

(३) जीवनका सद्व्यय— (Economy of Human Life का हि अनुवाद)। हिन्दी साहित्यके यशस्वी लेखक अेवं अनुवादक श्री हरिभाअू अुपाध्याय अिसका अनुवाद किया है। अिस पुस्तककी अुपयोगिता अिससे सिद्ध है कि अबत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रेंच, लैटिन, जर्मन, अिटालियन और वेल्स आदि युरोपकी समस्त भाषाओंमें अिसका अनुवाद हो चुका है। जिस मूल पुस्तकसे यह अनुवाद किया गया है अुसके मुख पृष्ठपर सद्द्य लिखा है— Written by an ancient Brahmin (प्राचीन युगके अेक ब्राह्मण द्वारा लेखित)। महामना मालवीयजी अिस पुस्तकके पीछे पागल रहा करते थे, और बाबू राजेन्द्रप्रसादजी अिसे मानव-चरित्र-संगठनमें प्रबल सहायक मानते हैं।

पृष्ठ-संख्या क्राअुन सोलहपेजी १३२, मूल्य १)।

विराट:— मूल लेखक स्टीफन ज्विग, हिन्दी अनुवादक श्री यशपाल जैन। प्रकाशक—नवयुग साहित्य सदन, अिन्दौर। पृष्ठ-संख्या (क्राअुन सोलहपेजी) सौके करीब। मूल्य —१)।

अिस अुपन्यासके लेखक स्व. स्टीफन ज्विग आस्ट्रियन यहूदी थे। विचार-स्वातंत्र्यका झंडा अूँचा करनेवाले युरोपियन लेखकोंमें रोम्याँ रोलां और स्टीफन ज्विग अग्रगण्य थे। अिसका दुष्परिणाम भी अुन्हें भुगतना पड़ा और दोनों ही हिटलरशाहीकी बलिवेदीपर बलिदान हो गये!

प्रस्तुत पुस्तक भारतीय पृष्ठभूमिपर लिखी गअी है। अिसका 'विराट' नाम स्वयं लेखकका दिया हुआ है। कर्म अनिवार्य है, चाहनेपर भी कोअी कर्मसे बच नहीं सकता—यही अिस अुपन्यासका सार है।

स्टीफन ज्विगके ग्रन्थोंके अनुवाद विश्वकी तीस प्रमुख भाषाओंमें हो चुके हैं। अेक बार 'लीग आफ नेशन्स' (राष्ट्रसंघ) की 'अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक सहयोग' नामक संस्थाने जाँच करके अपनी रिपोर्टमें लिखा था—'अिस समय संसारमें सबसे अधिक अनुवादित ग्रन्थकार स्टीफन ज्विग हैं।' पुस्तककी महत्ता अिसीसे प्रगट है। अनुवादकी भाषा सरल अेवं सुबोध है।

पुस्तकालय, अुसका संचालन:— ले. छविनाथ पांडेय, प्रकाशक—किताबघर, कदमकुआँ, पटना। पृष्ठ-संख्या—१०३, मूल्य १॥)।

पुस्तकालय-संचालनके सम्यक् ज्ञानके लिये पुस्तक अुपयोगी है।

—बलभद्र ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ परीक्षा-विभाग ★

अलग-अलग प्राप्तांकः—

जो उत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने प्रश्नपत्रोंके अलग-अलग प्राप्त मँगाना चाहेंगे, उन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। शुल्क भेजते स अपना पूरा नाम, परीक्षा-नाम तथा क्रम-संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिख भेजें।

अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे अलग-अलग प्राप्तांक मँगानेका शु नह लिया जाता।

पुनर्निरीक्षणः—

जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी उत्तर-पुस्तकोंका पुनर्निरीक्ष कराना चाहेंगे, वे तारीख ३० नवम्बर तक प्रत्येक उत्तर-पुस्तकके लि आठ आना निरीक्षण-शुल्क भेजते हुअे अपना पूरा नाम, परीक्ष क्रम-संख्या तथा प्रश्नपत्र-संख्या देकर प्रार्थनापत्र भेजें।

निरीक्षणमें केवल अितना ही देखा जावेगा कि प्रत्येक प्रश्न उत्तरको अंक दिये गये या नहीं और जोड़ आदि ठीक हैं या नहीं।

उत्तर-पुस्तकोंका दुबारा जाँचनेका नियम हटा दिया गया है

रत्न-परीक्षाः—

(अलग-अलग प्राप्तांक)

रत्न-परीक्षाके उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी १) रु. भेजने ही अपने प्राप्तांक मँगा सकेंगे।

दुबारा जाँचः—

रत्न-परीक्षाके जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी उत्तर-पुस्तकों दुबारा जाँच करवाना चाहें, उनको तारीख ५ दिसम्बर तक प्रत्ये उत्तर-पुस्तकके लिये २) रु. जाँच-शुल्कके साथ अपना पूरा न क्रम-संख्या तथा प्रश्नपत्र-संख्या लिखकर भेजना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगामी ($\frac{\text{फरवरी}}{\text{अप्रैल}}$ १९५०) परीक्षाओंकी परीक्षा-तिथिः—

राजस्थान, विदर्भ-नागपूर, अुत्कल, हैदराबाद रियासत, आंध्र तथा दक्षिण अफ्रिकाके लिये—

आगामी प्रचार-परीक्षाअें ता. १८, १९ फरवरी ५० को होंगी।

आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख १८ दिसम्बर है।

आसाम, बंगाल, मध्यभारत, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बअी, कर्नाटक, तथा लंकाके लिये—

आगामी प्रचार-परीक्षाअें तारीख १५, १६ अप्रैल ५० को होंगी।

आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम ता. २९ जनवरी ५० है।

आगामी 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा:— ता. १५, १६ और १७ अप्रैल ५० को होगी।

आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख २९ जनवरी ५० है।

सीधे-प्रार्थना पत्र— सीधे परिचय, कोविद तथा राष्ट्रभाषा रत्नमें सम्मिलित होनेके लिये प्रार्थना-पत्र परीक्षा-तिथिके तीन माह पूर्व केन्द्र-व्यवस्थापकके पास दे देना चाहिये।

[$\frac{\text{फरवरी}}{\text{अप्रैल}}$ ५० की परीक्षाओंकी पाठ्य-सूची]

१. राष्ट्रभ प्रारंभिक परीक्षा

शुल्कः— १-८-० (प्रश्नपत्र १) अंक १०० समय ३ घंटे

(१) प्रारंभिक बोधिनी	(परिवर्तित संस्करण, रा. भा. प्र. स.)	०-६-०
(२) राष्ट्रभाषाकी पहली पुस्तक	(रा. भा. प्र. समिति)	०-६-०
(३) ,, दूसरी पुस्तक	,,	०-७-६
(४) अुड़ते जुगनू	,,	०-८-०
(५) रा भा. का सरल व्याकरण भाग १	,,	०-१०-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२–राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षा

शुल्कः— २–८–० (प्रश्नपत्र २) प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पूर्णांक १००

पहला प्रश्नपत्रः— गद्य पद्य

(१) राष्ट्रभाषा तीसरी पुस्तक (रा. प्रचार समिति, वर्धा) ०–७–६

(२) गुलदस्ता भाग १ ,, ०–६–०

नीचे लिखी कविताएँ छोड़करः—

१. धीर नर, २. बालककी कल्पना, ३. चाह, ४. अठो जागो, ५. तेरी छवि, ६. हमेशा प्रेमकी रट हो जबांपर।

दूसरा प्रश्नपत्रः— (कहानी, पत्र, निबन्ध, व्याकरण, मुहावरे तथा अनुवाद) पूर्णांक १००

(१) कहानी संग्रह भाग १ परिवर्तित संस्करण, १९४९

अथवा

,, ,, ,, पुराना संस्करण ०–६–०

(२) सरल रचना और पत्रलेखन ,, ०–६–०

(३) राष्ट्रभाषाका सरल व्याकरण भाग १ ,, ०–१०–०

(४) मुहावरे और कहावतें ,, ०–१२–०

३–राष्ट्रभाषा परिचय परीक्षा

(प्रश्नपत्र ३ और मौखिक परीक्षा)

शुल्कः—३–८–० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे

पूर्णांक १००

पहला प्रश्नपत्रः—पद्य—

(१) पंचवटी (श्री मैथिलीशरण गुप्त) ०–६–०

(२) गुलदस्ता भाग २ (रा. प्रचार समिति, वर्धा) ०–८–०

नीचे लिखी कविताएँ छोड़कर—

१. प्रार्थना, २. प्रियतम, ३. आप बचा लूँ अपने तईं, ४. परिचय, ५. सरसोंका सौजन्य, ६. कुतुबमीनार, ७. मेरा निश्चय, ८. जननी, ९. अभिलाषा।

दूसरा प्रश्नपत्रः— गद्य, नाटक तथा कहानी पूर्णांक १००

(१) चलती हिन्दी (रा. प्रचार समिति, वर्धा) ०–१२–०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) रक्षा बंधन (श्री हरिकृष्ण प्रेमी) १-१-०
(३) कहानी संग्रह भाग २, परिवर्तित संस्करण, १९४९ ०-१२-०

अथवा

,, ,, ,, पुराना संस्करण ०-९-०

तीसरा-प्रश्नपत्र :--(निबंध, व्याकरण, मुहावरे, अनुवाद और पत्र-लेखन)

सहायक पुस्तकें

(१) मुहावरें और कहावतें (रा. प्रचार समिति, वर्धा) ०-१२-०
(२) रा. भा. का सरल व्याकरण भाग २ ०-१२-०
(३) निबंध प्रबोध २-४-०

मौखिक परीक्षा ५० अंककी होगी।

[पुस्तकीय और हस्तलिखित पठन, वाचन २० अंक और मौखिक बातें ३० अंक]

४-राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा

(प्रश्नपत्र ४, लेखन-कार्य और मौखिक परीक्षा)

शुल्कः— ६-०-० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे पूर्णांक १००

पहला प्रश्नपत्रः— पद्य

(१) जयद्रथ-वध (श्री मैथिलीशरण गुप्त) ०-१२-०
(२) गुलदस्ता भाग ३ (रा. प्रचार समिति, वर्धा) ०-१२-०

नीचे लिखी कविताएँ छोड़कर—

१. कबीरदासजीका तीसरा पद, 'झीनी झीनी बीनी चदरिया'।
२. तुलसीदासजीका 'विजय-रथ', ३. 'जय जय प्यारा भारत देश',
४. विधवा, ५. जगत् अुबारो, ६. ग्राम, ७. अुर्दू पद्यमेंसे 'चुने फूल'

दूसरा प्रश्नपत्र :— (गद्य, नाटक और कहानी) पूर्णांक १००
(१) कहानी संग्रह भाग ३, परिवर्तित संस्करण ०-१२-०

अथवा

पुराना संस्करण (रा. प्रचार समिति, वर्धा)
(२) शाहजहाँ (श्री द्विजेन्द्रलाल राय) १-८-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) पाँच अेकांकी (रा. प्रचार समिति, वर्धा) १-०-

(४) आधुनिक गद्य संग्रह ,, ,, ,, १-८-

अथवा

हिन्दी गद्यमाला (श्री पदुमलाल बख्शी) १-१२-

हिन्दी गद्यमालामेंसे सिर्फ ये पाठ रहेंगे :—

१. स्मृतिज्ञानकीर्ति, २ वैशाली, ३.तुम हमारे कौन हो ?, ४. पंचपरमेश्वर ५. आन्दोलन, ६. हिन्दू धर्म क्या है ?, ६. अबसे सौ बरस बाद, ७. दादा और पोतेकी चिट्ठी, ९. अहिंसाकी विजय, १०. कुत्ते, सदाचार और प्राकृतिक चुनाव।

तीसरा प्रश्नपत्र :—(शीघ्रवाचन, मुहावरे, व्याकरण, निबन्ध, अनुवाद) पूर्णांक १०

(१) गोदान (श्री प्रेमचंद : संक्षिप्त संस्करण) ४-०-

अथवा

(२) त्यागपत्र, (जैनेन्द्रकुमार) १-४-

(३) आत्मकथा [गांधीजी : संक्षिप्त संस्करण] १-८-

(४) मुहावरें और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा) ०-१२-

(५) संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण १-८-

चौथा प्रश्नपत्र:—(हिन्दी भाषा तथा साहित्यका अतिहास, समालोचना और सामान्य ज्ञान) पूर्णांक १०

(१) हिन्दी भाषा और लिपि (श्री धीरेन्द्र वर्मा) १-०-

(२) हिन्दी साहित्यका अतिहास (नन्ददुलारे वाजपेयी) १-०-

अथवा

,, ,, ,, (ब्रजरत्नदास) १-४-

समालोचना-ज्ञानके लियेः—

साहित्यका साथी (रा. भा. प्र. समिति) १-८-

अथवा

'साहित्य-शिक्षा' २-०-

नीचे लिखे पाठोंसे सहायता ली जा सकती है।

१. साहित्य क्या है ? २. साहित्यका अुद्देश्य,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. साहित्य और समाज, ४. कला और अुसका प्रयोजन, ५. कहानी, ६. अुपन्यास, ७. अुपन्यासका विषय, ८. अैतिहासिक अुपन्यास, ९. नाटक, १०. कविता और कवि।

सामान्य-ज्ञानके लिये नीचे दिये साहित्यसे सहायता ली जा सकती है—

१–हिन्दुस्तानकी समस्याअें (जवाहरलाल नेहरू) ३-०-०
२–आजकी समस्याअें (राहुल सांकृत्यायन) ०-१२-०

३–हिन्दीके साप्ताहिक समाचारपत्र, मासिक पत्र-पत्रिकाअें, समितिका मुखपत्र 'राष्ट्रभाषा'।

मौखिक परीक्षा १०० अंककी होगी।

(हस्तलिखित पठन वाचन ३० अंक, कंठस्थ गद्य-पद्य २० अंक और मौखिक बातें ५० अंक)

कोविद परीक्षाके लिये लेखन-कार्य स्वतंत्र रूपसे ५० अंकका रहेगा अुसमें १८ अुत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य है। परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें कोविदके अुपयुक्त, आठ निबंध लिखेंगे। प्रत्येक निबन्ध कम-से-कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुसे अपने शिक्षकसे जँचवाना चाहिये। परीक्षार्थी अिन आठ लेखोंको अपनी क्रम-संख्याके साथ अपने मौखिक परीक्षकके पास देंगे। निम्न-लिखित सूचीसे कोअी भी ८ निबन्ध लिखें—

निबंध-सूची:—

(१) शिक्षाका माध्यम मातृभाषा या राष्ट्रभाषा ?
(२) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
(३) स्त्रियोंकी अुच्च शिक्षा
(४) सहशिक्षा
(५) विधान-परिषदमें राष्ट्रभाषा हिन्दी कैसे स्वीकृत हुअी ?
(६) वसंत ऋतु
(७) साहित्यका अितिहाससे सम्बन्ध
(८) नागरिकके कर्तव्य
(९) अन्न-समस्या और अुसका हल
(१०) अैतिहासिक स्थलका सफर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा 'रत्न' परीक्षा-फल

गत सितम्बरकी राष्ट्रभाषा 'रत्न' परीक्षामें ३९ परीक्षार्थी सम्मिलित हुअे थे। अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका परीक्षा-फल नीचे दिया जा रहा है। अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको हार्दिक बधाअी।

पुराने पाठ्य-क्रमके अनुसार

द्वितीय श्रेणी

	नाम	केन्द्र
१	कु. नीहार पात्र	कटक

तृतीय श्रेणी

२	श्री	यशवन्त नामदेव महाजन	जलगाँव
३	,,	शरदकुमार शान्ताराम रांगणेकर	बम्बअी
४	,,	जयन्तीलाल नरोत्तमदास ध्यानी	सूरत
५	,,	सौ. शालिनी अलोणी	धन्तोली-नागपुर

नये पाठ्य-क्रमके अनुसार

द्वितीय श्रेणी

१	श्री	बाबूलाल त्रिलोकचन्द्र परमार	बम्बअी
२	,,	पै. अनन्त बंकट राव	,,
३	,,	विजय द्वारकानाथ पानसरे	,,
४	,,	सिन्धू ज्ञानेश्वर भिंगारकर	,,

तृतीय श्रेणी

५	,,	भास्कर शास्त्री गुरुवा	जलगाँव
६	,,	देवेन्द्रनाथ कोछड़	धन्तोली-नागपुर
७	,,	सिद्धनाथ माधवराव धमोरीकर	,,
८	,,	ठाकुरभाअी लल्लुभाअी मिस्त्री	बम्बअी
९	,,	वासुदेव रघुनाथ वर्त्तक	,,
१०	,,	कु. भारती अीन्द्रविजय देसाअी	,,
११	,,	कु. सुशीला विनायक कुलकर्णी	,,
१२	,,	अेकनाथ रामजी भाटकर	,,
१३	,,	नरेन्द्र नरोत्तमदास शाह	,,
१४	,,	नारायण वेंकटराव हंचाटे	,,
१५	,,	बालमुकुन्द रमणलाल भट्ट	सूरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
अुत्कल	श्री० भागीरथी महान्ति	१८३७	बमकोअी
,,	,, श्रीराम महापात्र	१८३८	पार्लाखिमिढ़ी
राजस्थान	,, अनार देवी वर्मा	१८३९	नीमच
गुजरात	,, मणिलाल जेठालाल शाह	१८४०	दरियापुर
,,	,, शिवसिंग कहानजी महीड़ा	१८४१	धोलका
,,	,, यदुनाथ रमणनाथ पाठक	१८४२	खेड़ा
,,	,, निर्मला हरिश्चन्द्र व्यास	१८४३	खाड़िया
,,	,, रमणभाअी जी. भाअी पटेल	१८४४	कोठिया
,,	,, रतनलाल अम्बालाल मोदी	१८४५	चांदोद
,,	,, दौलतराय डाह्याभाअी नायक	१८४६	सूरत
,,	,, खंडुभाअी गुलाबभाअी देसाअी	१८४७	अम्रामा
,,	,, अरविन्दप्रसाद हरिलाल भट्ट	१८४८	वाघोड़िया
,,	,, अम्बालाल देवशंकर दवे	१८४९	दरियापुर
,,	,, कान्तिलाल लक्ष्मणदास वाघेला	१८५०	कालपुर
आन्ध्र	,, राल्लबन्डि दुर्गा नागेश्वरराव	१८५१	गुडीवाड़ा
बम्बअी	,, रामाधार शुक्ल	१८५२	बम्बअी
,,	,, दूधनाथसिंह	१८५३	बम्बअी
वि.-नागपुर	,, गिरधारीलाल बि. चन्दन	१८५४	काटोल

हमारे नये केन्द्र

प्रांत	केन्द्र	क्रमांक	प्रांत	केन्द्र	क्रमांक
गुजरात	नबीपुर	१३६	गुजरात	अंगाडी	१५१
,,	पगुथण	१३९	,,	तलाजा	१५४
,,	औरान	१४०	,,	गजेरा	१७३
,,	ओच्छण (दायमा)	१४१	,,	किन्खलोड	१७४
,,	मोटी मारड	६३५	,,	कालावड	१७९
,,	बागीदौरा	१४२	,,	कीम	१८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांत	केन्द्र	क्रमांक	प्रांत	केन्द्र	क्रमां
गुजरात	सुल्तानपुरा	१४४	वि.नागपुर	चकरभाटा	२
,,	वाघेथा	१४३	,,	वोरी अरब	८
,,	पांथावाडा	१४५	,,	शिंगणापुर	२६
,,	करणेट	१४६	,,	पिंपलोद	२६
,,	सरी स्टेशन	१४७	,,	कोकर्डा	२७
,,	कोडीनार	१४८	महाराष्ट्र	गारगोटी	१२
,,	अिसनपुर मोटा	१४९	राजस्थान	डूंगरपूर	१२
,,	सीली	१५०		डेह	१९

सितम्बर ४९ की परीक्षामें अनुचित लाभ अुठानेवाले परीक्षार्थियोंके परीक्षावार क्रम-संख्याअें :—

प्रारंभिकः— २२७, २२८, ४९२५, ४९२६, ७५१४, ७५२१, ८५१७, ८७९३, ८७९४, ८७९५, ८७९६, ११८४३, ११८४४, १३५८, १३६०५, १५७१९, १५७२१, १८३२६, १८३६७, १८३६९, १८३७, १८३७४, १८३७७, १८३७८, १८३८३, १८३८४, १८३८६, १८४६, १८४६२, २६३५२, २७२८२, २७२८३, २७२८४, ३०१७४, ३०१७, ३०१७६, ३०१७७, ३०५३६, ३०५३९

प्रवेशः— ३४२, ५५८३, ८८५३, ८८५४, ८८६७, ८८६८, ८८६, ८९१८, ८९१९, ८९२१, ८९२२; १०१२९, १०१३०, १०१३१, १०१३, १०१३३, १०१३४, १०१३५, १०१३६, १०१३७, १०१३९, १०१४, १०१४२, १०१४३, १०१४४, १०१४५, १०१४६, १०१४७, १०१४, १०१५०, १०१५३, १०७११, १०७१४, १३६०१, १३६०६, १३६१, १३६१३, १३६१४, १३६२२, १३६२४, १३६२७, १३६२८, १३६२९, १३९६, १३९६९, १३९७२, १३९७३, १३९७४, १५५२५, १५५२६, १५६८, १५६९०, २३८४४, २४७६५, २४७६६, २४७६७

परिचयः— ५७६६, ५७७९, ५७८०, ५७८२, ५७८३, ५७, ७५५२, ७५५३, ७५५४, ७५५६, ७५५७, ७५५९, ७५६०, ७५६१, ७५६, ७५६४, ७५६६, ७५६७, ७५७१, १०२७५, १०२६८, १०३७३, १०७, १०७२८, १०९९३, १०९९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल इंडिया रेडियोका बहिष्कार

सरकारी विभागमें यदि कोअी अैसा विभाग है, जिससे जनताको कभी संतोष नहीं रहा तो वह है आज अिन्डिया-रेडियो-विभाग रेडियो-विभागमें जनताको अज्ञ और विज्ञ, असंस्कृत और सुसंस्कृत सब कुछ बना देनेकी सामर्थ्य है। अिसलिये स्वाभाविक है कि रेडियोके विषयमें जनता विशेष रूपसे जागरूक और सावधान रहे कि वह क्या है और अुसे क्या होना चाहिये।

आजसे पाँच वर्ष पहले जनताने जयपुर-हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके अवसरपर आल अिन्डिया रेडियोके बहिष्कारके निश्चय द्वारा अपनी भावनाओंको व्यक्त किया था। स्वराज्यकी घोषणाके बाद पिछले दो वर्षोंमें हिन्दी साहित्य-कोने आल अिन्डिया रेडियोको हर तरहसे अिस आशासे सहयोग दिया कि अुसके अधिकारियोंको हिन्दी साहित्यिकों तथा कलाकारोंसे किसी प्रकारकी शिकायत न रहे। खेद है कि सरकारने अिस अवसरसे कुछ भी लाभ नहीं अुठाया।

अंग्रेज गये, अंग्रेजी बनी रही! हिन्दू-अुर्दू-हिन्दुस्तानीमें बन्दर-बाँटकी नीतिके आधारपर बनी हुअी आल अिन्डिया-रेडियोकी भाषा-संबन्धी सरकारी नीति आज तक ज्योंकी त्यों बनी है। दिल्ली और लखनअूके लिये हिन्दी संसारके प्रतिनिधियोंकी दो दो सलाहकार समितियाँ बनाअी गअीं किन्तु सरकारी नीति यही रही है कि अिन सलाहकारोंसे अपने नीतिका समर्थन कराया जाय, किन्तु अुनकी सलाहोंको कभी कुछ भी महत्व नहीं दिया जाय। अुनकी अुपेक्षा ही नहीं की गअी, निरादर भी किया गया।

हिन्दी सेवियों द्वारा आल अिन्डिया-रेडियो-बहिष्कारका वर्तमान आन्दोलन किसी संस्था द्वारा संचालित न होकर जनताकी भावनाओंका स्वाभाविक प्रदर्शन है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, प. सुमनलाल चतुर्वेदी, श्री दिनकर आदि राष्ट्रभारतीके सेवकोंने अिसका नेतृत्व किया है।

अभी ९ नवंबरको मध्यप्रांत-विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी कार्य-समितिने भी २० नवंबरको होनेवाली अ. भा. हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी स्थायी-समितिसे अिस संबन्धमें मार्ग-दर्शनकी आशा की है। और अुसे विश्वास दिलाया है कि अुसकी आज्ञाका अक्षरशः पालन किया जायगा।

हम आशा करते हैं कि श्री दिवाकर और अुनका विभाग समयसे पूर्व ही चेत जायेंगे। अन्यथा वे शीघ्र ही देखेंगे कि राष्ट्र भारतीके हर सेवकके सह-योगसे अुन्हें हाथ धोना पड़ेगा।

—आनंद कौसल्यायन
अध्यक्ष, मध्यप्रांत-विदर्भ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

नीडमें कैसे रहूँ मैं ?

नीड़ यह तृणका बना है,
घोर तम अिसमें घना है,
किन्तु नभमें मधु छना है,
आज क्यों लघु कीटसा मैं
नीड़के बन्धन सहूँ ?

नातियोंके थाल ढुलके,
पितलियोंके पंख, पुलके,
रंग रसके लाल छलके,
क्यों न मैं पर खोल मंगल
गान जीवनके कहूँ ?

सजग पंछी अुड़ रहे सब,
प्रगति-पथपर बढ़ रहे सब,
मुक्तिके हित जुड़ रहे सब,
क्यों न विजयी बन मुकुट सबके
प्रथम जयका गहूँ ?
नीड़में कैसे रहूँ मैं ?
नीड़में कैसे रहूँ ?

—आसाराम वर्मा

सम्पादक: गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार U.P.

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ८
अंक १

नवम्बर
१९४८

राष्ट्रभाषा

मैं राष्ट्र हूँ, जनको जोड़ती हूँ मैं,
मैं भावनाका केन्द्र हूँ, शक्तिका स्रोत हूँ मैं,
मैं बोलती हूँ कोटि-कोटि सुकंठ-रवसे,
मैं 'हिन्दी' हूँ, 'हिन्द'की 'राष्ट्रभाषा' हूँ मैं।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. विश्वासकर आगे बढ़ !	... ...	३
२. क्रान्तिका मूल-मंत्र	... ...	४
३. लोकसेवाका पुरस्कार	... ...	४
४. स्वतंत्र भारतमें भी हिन्दुस्तानी ?	... ...	५
५. हिन्दी पत्र कैसे आगे बढ़ें ?	... ...	९
६. हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनाना ही होगा	... ...	१३
७. हैदराबाद (दक्षिण)में हिन्दीकी प्रगति	... ...	१४
८. सत्य, शिव और सुन्दर	... ...	१७
९. महाकवि खलील जिब्रानकी सूक्तियाँ	... ...	१८
१०. राष्ट्रभाषा-संसार	... ...	२१
११. हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन	... ...	२४
१२. विदेशोंमें हिन्दी-प्रचार	... ...	२५
१३. हमारी नजरोंमें	... ...	२८
१४. प्रान्तीय हलचलें	... ...	२९
१५. परीक्षा-विभाग	... ...	३३

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिका ।) है । वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता । मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही राष्ट्रभाषा भेजा जा सकेगा ।

२. 'राष्ट्रभाषा' का प्रत्येक अंक डाकखानेसे अच्छी तरह जांचकर भेजा जाता है । अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें ।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक नम्बर स्पष्ट लिखना चाहिये ।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि राष्ट्रभाषामें प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें । अस्वीकृत लेखोंको टिकिट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा । लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाने चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका मुखपत्र]
सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ८] वर्धा, नवम्बर—१९४८ [अंक १

विश्वासकर आगे बढ़! ....सफलता निश्चित है।

: रवींद्रनाथ ठाकुर :

यदि तेरी पुकार सुनकर कोओ नहीं आता तो तू अकेला ही चल!
अकेला चल, अकेला चल, अकेला ही चल!
यदि किसीके मुखसे शब्द न निकले। अरे अरे, ओ अभागे!

यदि सभी मुँह मोड़ लें, सभी भयभीत हों,
तब अपने प्राणोंको अुन्मुक्तकर तू स्वयं ही अपनी तान छेड़ दे,
अकेला ही तान छेड़ दे।
यदि तेरे संगी-साथी सभी लौट जायँ, अरे अरे, ओ अभागे!

यदि दुर्गम पथमें कोओ तेरा साथ देनेका अिच्छुक न हो,
कंटकाकीर्ण मार्गमें .....
रक्त-रंजित चरणोंसे ओ भाओ, तू अकेला ही चल!

यदि प्रकाशके लिये कोओ दीप नहीं रखता,
यदि मेघाच्छन्न अंधकार रात्रिमें कोओ घरका द्वार बंद कर दे,
तब विद्युत् बनकर
सबका तू अकेला ही दीपक बनकर जल।

('प्रहरी' से)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रांतिका मूलमंत्र

साबरमती-आश्रममें गाँधीजी सप्ताहमें अेक दिन गीताका क्लास लिया करते थे। पढ़नेवालोंमें पढ़े-लिखे बहन-भाअियोंके साथ अेक ६० वर्षीया निरक्षर वृद्धा भी थी। अुसे गीताके अेक श्लोकका अुच्चारण सिखानेमें बापूको कभी-कभी पूरा अेक घंटा लग जाता था। अुन्हें अैसा करते देखकर दूसरे लोग अूब, और कभी-कभी खीझ भी जाते थे। अुनमेंसे कुछने तो कअी बार स्पष्ट कहा कि अुसे छोड़ ही क्यो न दें। अेक निरक्षर व्यक्तिके लिये अितने लोगोंका समय नष्ट करना क्या अुचित है?

बापूको लोगोंकी अिस प्रतिक्रियाका आभास मिला और अुन्होंने अेक दिन कह ही दिया—"हमें बिल्कुल पिछड़े हुओंको भी साथ लेकर चलना चाहिये, तभी देशका अुद्धार होगा। मैं जड़से समाजको सुधारना चाहता हूँ, केवल अूपरसे नहीं। मैं अिसीको क्रान्तिका मूलमंत्र मानता हूँ।"

('नया समाज'से)

❀ ❀ ❀ ❀

लोक-सेवाका पुरस्कार—मौत!

दासत्व-भावनाका विष मिटानेके लिये, अेक स्वाधीन मानवकी तरह साहस-पूर्वक चिंतन करनेके लिये, चाहिये कल्पना, सूझ और दृष्टिकोण। अैसा होनेपर ही स्वतंत्र भारतवासी अपने देशकी अुचित सेवा कर सकते हैं, और सभ्य तथा सुशिक्षित आदमीकी तरह स्वाधीन जीवनका श्रीगणेश कर सकते हैं।

अिस पथपर करारी ठोकरें ही मिलेंगी, पुरस्कार तो क्वचित् अथवा बिलकुल ही नहीं। तब लोक-सेवा-व्रती क्या करें?

वे गेरीबाल्डीके अुस अग्नि-मंत्रकी याद करें, जिसके द्वारा अुसने अपने स्वयंसेवकोंको आमंत्रित किया था—"खानेके लिये तुम्हें भूख मिलेगी, सोनेके लिये गीली सर्द जमीन, और पुरस्कारमें मौत!"

—बर्नार्ड हौटन ('कर्मवीर'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्र भारतमें भी हिन्दुस्तानीकी चर्चा?

प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र अम्. ए., बी. एल.

यह दुःखकी बात है कि हमारे देशमें आज भी कुछ लोग अैसे हैं जो राष्ट्रभाषाके प्रश्नको लेकर व्यर्थ ही हमारे सामने अेक समस्या, अेक अुलझन पैदा करना चाहते हैं। अिधर अेक सालके अन्दर देशके मानचित्रमें अुसके राजनीतिक स्वरूप अेवं आकृति--प्रकृतिमें अितना बड़ा परिवर्तन हो गया है कि मेरे विचारसे राष्ट्रभाषाके प्रश्नको लेकर अुलझन पैदा करना राष्ट्रीयताके मौलिक सिद्धान्तके साथ, देशकी सांस्कृतिक अुन्नतिके साथ खेलवाड़ करना है। देशका बहुत बड़ा जनमत राष्ट्रभाषाके रूपमें हिन्दीको स्वीकार कर चुका है। भारतके कअी प्रान्तों और राज्योंमें हिन्दीको राजभाषाका स्थान प्राप्त हो चुका है। अपने देशव्यापी प्रचार और प्रसार तथा अपने स्वाभाविक गुणोंके कारण हिन्दी बहुत पहलेसे ही राष्ट्रभाषाके रूपमें मान्य अेवं प्रचलित रही है। अुसके साहित्यको समृद्ध बनानेमें हिन्दू और मुसलमानोंने समान रूपसे भाग लिया है। फिर भी आज हिन्दी नाममें हमारे देशके कुछ शिक्षित बन्धुओंको साम्प्रदायिकता अेवं संकीर्णताकी गन्ध आती है और वे अुसके स्थानपर वर्णसंकरी भाषा हिन्दुस्तानीको प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। हिन्दी और अुर्दू नामकी दो भाषाओंके भेदको हम समझ सकते हैं, किन्तु हिन्दुस्तानीके नामसे अेक तीसरी भाषाकी सृष्टिका प्रयास तो हमें सर्वथा असंगत अेवं हास्यास्पद जान पड़ता है। किसी भी देशके अितिहासमें अिस प्रकार राष्ट्रभाषाका गठन कृत्रिम रूपमें नहीं हुआ है। राष्ट्रभाषा स्वतः अपने गुणोंके कारण विकसित अेवं सर्वजनग्राह्य हुअी है। अिसलिये कृत्रिम हिन्दुस्तानीको हम राष्ट्रभाषाके रूपमें कदापि ग्रहण नहीं कर सकते जिसके पीछे न कोअी अितिहास है और न कोअी सांस्कृतिक परम्परा। हम हिन्दीको राष्ट्रभाषाके रूपमें अिसलिये ग्रहण करना चाहते हैं कि हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा और हमारी जातीय प्रतिभाके साथ अुसका पूरा मेल है। अुसके आधारपर ही हम सारे देशमें अेक संस्कृतिका निर्माण करना चाहते हैं—जो संस्कृति किसी जातिविशेषकी संस्कृति न होकर भारत-संघमें बसनेवाली सभी जातियों और सम्प्रदायोंकी संस्कृति होगी। वह हमारी सच्ची जातीय संस्कृति होगी। अुसके अूपर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अीसाअी सभी धर्मोंकी, अिन सब सम्प्रदायोंके आचार-विचार और अुनके साहित्यकी छाप होगी। अिस संस्कृतिको धारण करनेवालोंके हृदयमें स्वदेशकी मिट्टी, स्वदेशकी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल-वायु, वहांके वन, पर्वत, और कानन, वहाँके नद--नदी, पशुपक्षी, शश्य-श्यामल प्रदेश, धान और गेंहूके लहलहाते हुये खेत, गंगा, यमुना, सरयू, गोदावरी, नर्मदा, कृष्णा, कावेरी अुस देशके अतीत गौरव, अुसके प्राचीन अितिहासके अशोक, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, अकबर जैसे महामना सम्राटों; कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, रहीम, रसखान जैसे कवियों तथा वीर पुरुषों अेवं देशभक्तोंके लिये गर्व होगा। अिस प्रकारकी संस्कृतिके निर्माणके लिये हम कल्पित हिन्दुस्तानी भाषाको साधन नहीं बना सकते। हम चाहते हैं कि देशमें रहनेवाले विभिन्न सम्प्रदायोंके लोग अपनेको राष्ट्रीयताके रंगमें अिस प्रकार रंग डालें ताकि अुनके विजातीय भाव सर्वथा दूर हो जायँ और देश अेवं राष्ट्रके लिये अुनके हृदयमें सच्ची ममता जाग अुठे।

हिन्दी और हिन्दुस्तानीके वाद-विवादमें प्रश्नका यह पहलू ही मेरी दृष्टिमें विशेष महत्वपूर्ण है। अिस दृष्टिसे विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जो लोग हिन्दीका समर्थन और हिन्दुस्तानीका विरोध करते हैं वे किसी संकीर्ण साम्प्रदायिक भावनासे प्रेरित होकर अैसा नहीं करते। किसी सम्प्रदायके प्रति वैर या विद्वेषका भाव अुनके मनमें नहीं है। वे तो सारे भारत--संघमें अेक विशुद्ध भारतीय संस्कृतिकी नींव डालना चाहते हैं जो आगे चलकर हमारी राष्ट्रीयताके विकास और अुसकी पुष्टिमें सहायक सिद्ध हो। हमारा अुर्दू या फारसीके प्रति कोअी विद्वेष नहीं। हमने अुदारतापूर्वक अुसके शब्दोंको अपनाया है और फारसी, अरबीके जो शब्द हमारी भाषामें प्रचलित हो गये हैं अुन्हें छोड़नेके लिये भी हम तैयार नहीं हैं। अपनी भाषामें विदेशी शब्दोंको ग्रहण करनेमें हमने जिस प्रकार अुदारतासे अब तक काम लिया है अुसी प्रकार आगे भी लेते रहेंगे। यदि हिन्दुस्तानीका अर्थ है सरल भाषाका—बोलचालकी भाषाका प्रयोग, तो अिसमें किसीको आपत्ति नहीं हो सकती। निस्सन्देह राजकार्य्यकी भाषा सरलसे सरल होनी चाहिये और यथा-संभव अैसे ही शब्दोंका प्रयोग किया जाय जो सबके लिअे बोधगम्य हों। अिसके लिअे बिना किसी हिचकके फारसी, अरबी और अँगरेजीके प्रचलित शब्दोंका प्रयोग किया जाय। किन्तु गूढ़ शास्त्रीय विषयों—दर्शन, विज्ञान, आलोचना, साहित्य, कला, शासन-विधान आदिको लेकर जब ग्रन्थोंकी रचना होने लगेगी और हमें हिन्दीमें अुपयुक्त शब्दोंका जहाँ अभाव जान पड़ेगा वहाँ तो हमें शब्दोंका निर्माण करनेके लिअे संस्कृतका आश्रय ग्रहण करना ही होगा। संस्कृतका विशाल वाङ्मय हमारे लिअे खुला पड़ा है। अुसका शब्द-भंडार अजस्र है। अैसी स्थितिमें हमारे लिअे किस साहित्यके स्रोतसे शब्द ग्रहण करना युक्तिसंगत होगा? संस्कृतसे या अरबी फारसीसे? अँगरेजीसे ग्रहण करनेकी तो बात ही नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हम तत्सम शब्दोंके रूपमें या अुनकी धातुओं और प्रत्ययोंसे नये शब्द बनाकर ग्रहण करते हैं तो अिस प्रकारकी राष्ट्रभाषामें रचित हमारा साहित्य बंगला, मराठी, गुजराती अुड़िया, आसामी तथा कुछ अंशोंमें द्राविड़ भाषाभाषियोंके लिअे भी ग्राह्य होगा, क्योंकि ये सब भाषाअें संस्कृतके सन्निकट हैं और अुनमें अधिकांश संस्कृतके शब्दोंसे ओतप्रोत हैं। अिसके विपरीत यदि हम अरबी, फारसीके अप्रचलित शब्दोंको ग्रहण करते हैं या अुनके व्याकरणकी सहायतासे नये शब्द बनाते हैं तो अिस प्रकारकी भाषामें रचा गया साहित्य अिस देशके अेक विशाल जनसमुदायके लिअे सर्वथा दुर्बोध होगा। यह अेक अैसा ज्वलन्त सत्य है जिस पर पर्दा नहीं डाला जा सकता। जहाँ तक बोलचाल या रोजमर्रेके कामोंके लिये भाषाके प्रयोगका प्रश्न है हम सरल भाषाका प्रयोग आगे भी करते ही रहेंगे। नौकरके बदले सेवकका, पानीके बदले तोय या अम्बुका, हवाके बदले वायु या पवनका, आगके बदले अग्नि या बह्निका, दिनरातके बदले दिवारात्रिका, मेघ या बादलके बदले वारिवाह या जीमूतका आज भी कोअी व्यवहार नहीं करता और आगे भी नहीं करेगा।

भाषा सरल हो और सरलताके ख्यालसे अुसमें सब भाषाओंके—अँग्रेजीके भी प्रचलित शब्द लिअे जायँ अिसमें किसी भी विचारवान व्यक्तिको आपत्ति नहीं हो सकती किन्तु सरलताका अर्थ यदि यह हो कि माँ-बापकी जगहपर अब्बा और अम्मीका सूर्य या सूरजकी जगहपर आफताबका, पश्चिमकी जगहपर मगरिबका, रानीकी जगहपर बेगमका पढ़ाअी या शिक्षाकी जगहपर तालीमका, देश या मुल्ककी जगहपर वतनका व्यवहार किया जाय तो अिसे हम घोर साम्प्रदायिकताके सिवा और कुछ नहीं समझते। मेरे विचारसे हिन्दुस्तानीके नामपर अिस प्रकारकी राष्ट्रभाषाको देशके अूपर लादना सरासर अन्याय है।

सज्जनो ! हिन्दी और हिन्दुस्तानीके सम्बन्धमें अधिकारी विद्वानोंद्वारा बहुत कुछ लिखा जा चुका है। अकाट्य युक्तियों द्वारा अुन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि आरम्भमें हिन्दी और अुर्दू दो भिन्न-भिन्न भाषाअें न होकर विभिन्न शैलियाँ थीं और अुर्दूका हिन्दीसे अलगाव तभीसे होने लगा जबसे कुछ शिक्षित मुसलमानोंमें यह धारणा बद्धमूल होती गयी कि अुनकी सभ्यता अेवं संस्कृति भारतीय सभ्यता अेवं संस्कृतिसे सर्वथा भिन्न है। जिस दिन अुन्होंने राष्ट्रीयता विरोधी अिस दृष्टिकोणको अपनाया अुस दिनसे ही अुन्होंने आम मुस्लिम जनतामें अिस विषाक्त मनोभावका प्रचार करना शुरू किया और तभीसे अुर्दूके आचार्योंने अुर्दू शैलीको अरबी-फ़ारसीके शब्दों और मुहावरोंसे, अुसकी अुपमाओं और अलंकारोंसे अलंकृत करना शुरू किया। विदेशी शासक द्वारा भेदमूलक साम्प्रदायिक आन्दोलनोंको पर्याप्त प्रोत्साहन मिलता रहा जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिके विषाक्त वातावरणमें अुर्दूको पनपनेका मौका मिला और वह क्रमशः हिन्दीसे बहुत दूर जा पड़ी। अिस प्रकार अुर्दूको देशी शब्दोंके बदले अरबी-फारसीके कठिन शब्दोंसे लादनेकी भावनाके पीछे जो साम्प्रदायिक राजनीति काम कर रही थी वह स्पष्टतया राष्ट्रीयता विरोधी थी और अुसका कुफल देशको किस प्रकार भयंकर रूपमें भोगना पड़ा है यह किसीसे छिपा नहीं है। क्या हम अब भी अिस राष्ट्रीयता-विरोधी नीतिको प्रश्रय देते रहेंगे?

जहाँतक लिपिका प्रश्न है मेरी समझमें नागरी-लिपिकी सरलता अेवं सुबोधता सर्वजन-सम्मत है। संसारकी अन्यान्य लिपियोंकी अपेक्षा यह अधिक वैज्ञानिक और सरल है, यह बात भी देशी और विदेशी विद्वानों द्वारा मान्य हो चुकी है। नागरी ही राष्ट्रलिपि हो सकती है, अिसके पक्षमें सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि संपूर्ण संस्कृत साहित्य अिस लिपिमें ही है और संस्कृत साहित्यके नाते अिस लिपिके जानकार प्रायः सभी प्रान्तोंमें हैं। अुत्तर भारतकी बहुत-सी लिपियाँ नागरीसे ही निकली हैं और कअी प्रान्तोंमें आज भी जहाँकी भाषा भिन्न है—नागरी-लिपिका ही व्यवहार होता है। जिन प्रान्तोंमें नागरी-लिपि नहीं है वहाँके लोगोंके लिअे भी फारसीकी अपेक्षा नागरी-लिपि सीखनेमें सुगम होगी, यह तो स्पष्ट ही है। अैसी स्थितिमें क्या वैज्ञानिक और क्या सरलता, सुगमता अेवं देश-व्यापी प्रचारकी दृष्टिसे राष्ट्रलिपिके लिये नागरी लिपिकी अुपादेयता अेवं अुपयुक्तामें किसीको सन्देह नहीं हो सकता। राष्ट्रलिपिके रूपमें अिसे ग्रहण करके हम विभिन्न प्रान्तोंके बीच राष्ट्रीयताके संयोगसूत्रको दृढ़से दृढ़तर बना सकते हैं।

वर्त्तमान युग गणतंत्रका है। हमने अपने देशके लिये शासन-विधानकी मूल प्रस्तावनामें गणतन्त्रके सिद्धान्तको स्वीकार कर लिया है और अिसके आधार पर ही हमारा शासन-विधान निर्मित हुआ है। अिस युगमें सब प्रश्नोंका निर्णय जनमत द्वारा ही हुआ करता है। भारतीय संघका विशाल जनसमूह हिन्दी भाषा और नागरी लिपिके पक्षमें है। अुसका यह निश्चित मत पत्र-पत्रिकाओं द्वारा असंख्य बार व्यक्त हो चुका है। अिसलिअे हम अपनी जनप्रिय राष्ट्रीय सरकार और विधान परिषद्के सदस्योंसे यही आशा करेंगे कि वे देशके अिस विशाल जनमतकी अुपेक्षा न करके राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके लिये हिन्दी और नागरीके पक्षमें ही अपना निर्णय देंगे। अैसा करके ही वे सच्चे अर्थमें लोकमतका प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

[बिहार-प्रादेशिक साहित्य-सम्मेलनके अध्यक्षपदसे]

('स्वदेश' से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्र कैसे आगे बढ़ें

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

पार्लियामेंट, न्यायालय और शिक्षणालय सभी जगह विदेशी भाषाको हटाकर हिन्दी अपना स्थान लेने जा रही है। शताब्दियाँ और दशाब्दियाँ नहीं बहुत ही थोड़े समयमें हिन्दी-भाषा-भाषी महाप्रदेश (युक्तप्रांत, बिहार, महाकोसल, विन्ध्यप्रदेश, मालव-संघ, राजस्थान-संघ, मत्स्य-संघ, हिमांचलप्रदेश और पूर्वी पंजाब) में चारों ओर हिन्दी ही हिन्दी दिखलाअी देगी। सभी बातोंमें हिन्दीका स्थान निश्चित दिखलाअी पड़ता है। किन्तु प्रश्न है, अँगरेजी दैनिकोंका स्थान हिन्दी कैसे ले? यह कानूनसे होनेवाली बात नहीं है। लोग क्यों हिन्दीको जानते, हिन्दीसे प्रेम रखते भी, अँगरेजी दैनिक पढ़ते हैं या पढ़नेके लिअे मजबूर होते हैं? हिन्दी दैनिकमें किसी बातका अभाव है और अँगरेजीमें अुसका सद्भाव है, तभी तो अैसा होता है।

अेक और बात है, जिसके बारेमें भी यहाँ कुछ कह देना आवश्यक है। वेतन, प्रभाव और स्थितिमें हिन्दी-पत्रकार अँगरेजी पत्रकारसे हीन समझा जाता है। कहा जाता है कि हिन्दी पत्रकारकी योग्यता कम होती है, लेकिन अिस बातको कैसे माना जा सकता है? आज अैसे बहुतसे तरुण पत्रकार हैं, जो अँगरेजीसे कम हिन्दीके पत्रकार नहीं हैं। वह अँगरेजी पत्रोंमें अिसीलिअे चले गये हैं, क्योंकि वहाँ वेतन और कार्यका अधिक सुभीता है। यदि हिन्दी पत्रोंकी स्थिति अच्छी हो तो वे सब अँगरेजी छोड़कर हिन्दीकी तरफ चले आवेंगे। यह बात हम यूनिवर्सिटी और कालेजोंमें देख रहे हैं! पहले कितने ही हिन्दीके अच्छे विद्वान् वहाँ अँगरेजी पढ़ाते थे। अँगरेजोंके जानेके साथ अँगरेजी पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी संख्या घोर रूपसे कम हो गअी और अँगरेजी अध्यापकोंको हटानेकी नौबत आअी; अिसका परिणाम हो रहा है अध्यापकोंका हिन्दी-अध्यापनकी ओर झुकाव। अिसलिअे हिन्दी-पत्रकारोंकी योग्यता-अयोग्यताका प्रश्न नहीं है। यदि हिन्दी पत्रोंका तल अूँचा होगा, तो हिन्दी-पत्रकारोंके वेतनका मान अूँचा होगा, फिर योग्यसे योग्य पत्रकार हिन्दी पत्रोंके पास होंगे।

हिन्दी-पत्रोंको अँगरेजी भाषाविज्ञ गम्भीर पाठक अिसलिये नहीं लेते कि अुसमें पाठ्य-सामग्री अँगरेजी पत्रोंकी अपेक्षा अत्यन्त कम होती है। आप किसी भी दो आनेके अँगरेजी पत्र और डेढ़ आनेके हिन्दी पत्रको लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलाअिये: वहाँ सामग्री मुश्किलसे तिहाअीसे भी कम मिलेगी। आज हिन्दी पत्रोंके लिये ग्राहक-संख्याका प्रश्न नहीं है। अेक ही प्रेससे निकलनेवाले हिन्दी और अँगरेजी दैनिकोंमें ड्योढ़े और दूनेका अन्तर रहता है। यदि हिन्दी-पत्र अँगरेजीके बराबर सामग्री दें और रातके तीन बजे छपकर निकलनेवाले संस्करणमें पन्द्रह मिनट पहलेतककी खबर दे सकें, तो हिन्दी पत्र चारों ओर छा जायेंगे और अँगरेजी दैनिक अनिवार्य नहीं केवल शौककी चीज रह जायेंगे।

अिस प्रकार हमारे सामने अधिक पाठ्य-सामग्री और अल्पतम समयमें मुद्रण ये दो बड़ी समस्याअें हैं। अिनमें भी पाठ्य-सामग्रीके परिमाणको अँग्रेजी पत्रोंके बराबर करना सबसे पहली और अत्यन्त आवश्यक बात है। अिस समस्याको हमें जल्दीसे जल्दी हल करना है। अिसके बिना न हम हिन्दी दैनिकोंको अूँचे स्थानपर ला सकते हैं, न हिन्दी पत्रकारोंको अूँचे अठा सकते हैं, न हम अपने महानेताओं और मंत्रियोंको हिन्दीमें वक्तव्य देनेको मजबूर कर सकते हैं। अधिक पाठ्य-सामग्री अुतने ही स्थानमें तभी आ सकती है, यदि टाअिप छोटा हो। हिन्दी पत्रोंमें जहाँ बारह प्वाअिंटके टाअिप लगते हैं वहाँ अँग्रेजी दैनिक अपने बहुतसे स्थानोंमें छ प्वाअिंटका टाअिप लगाते हैं। हिन्दीमें छ प्वाअिंटका टाअिप बनाना कठिन नहीं है, किन्तु वैसा करनेपर वह बहुत छोटा हो जाता है और पढ़ने-वाले आँख दुखनेकी शिकायत करने लगते हैं, जो अनुचित नहीं है।

हिन्दी दैनिकोंको देखनेसे मालूम होगा कि अुनमें अूपर-नीचेकी मात्राअें बहुत टूटती हैं। बारह प्वाअिंटके टाअिपमें वह जितना टूटती हैं, छः प्वाअिंटमें अुससे भी ज्यादा टूटेंगी। अिससे हमारे टाअिपोंके वर्तमान रूपको रखते हुअे बारीक टाअिप देना व्यवहार्य नहीं मालूम होता। अिसका अेक ही अुपाय है, कि हम वर्तमान टाअिपकी आकृतिमें हलकासा परिवर्तन कर दें। अिसके लिअे हिन्दीके पौने सात सौमें चौदह टाअिपोंमें हमें थोड़ासा स्थान परिवर्तन करना पड़ेगा और जो मात्रा या हलन्त अक्षर दूसरे अक्षरोंके नीचे अूपर लगते हैं अुन्हें अगल-बगलमें रख देना होगा। अुदाहरणार्थ कि, की, को, कौ में अूपर रक्खी जानेवाली मात्राअें आकारमें परिवर्तन किये बिना संकुचित करके अितनी छोटी बना देनी पड़ेंगी, कि वह 'क'की अगल--बगलमें बिना अूपरी पाअीसे अूपर गये रक्खी जा सकें। अिसी तरह के, कै, कं, कँ में अूपरकी मात्रायें, और कृ, लृ, कु, कू, कॅ में नीचे लगनेवाली मात्राअें अुठाकर दाहिनी ओर बगलमें रख दी जायँ। स्मरण रहे कि अ की मात्रा रू में बगलमें ही लगाअी जाती है, अुसी नियमको हमें व्यापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देना है। यदि लिपिमें अितने सुधारोंको मान लिया जाय, तो हिन्दी दैनिकोंमें आजकल आमतौरसे व्यवहार होनेवाले बारह प्वाअिंटके टाअिप ही छः प्वाअिंटके हो जायेंगे; क्योंकि अक्षरोंका जितना बड़ा शरीर होता है, अूपर नीचे मात्रा लगाने पर वह अुतना ही और बढ़ जाता है। अिस तरह हम छः प्वाअिंट ही नहीं तीन प्वाअिंटके सुपाठ्य टाअिप हिन्दीको दे सकेंगे और हमारे पत्रोंमें अधिक पाठ्य-सामग्री देनेकी कोअी कठिनाअी नहीं रह जायगी। अिससे केसोंमें भी सुविधा होगी।

बारीक टाअिप-मात्राओंके टूटने और छपाअीके दुष्पाठ्य होनेकी समस्या भी अिसी सुधारमें थोड़ीसी और बातें जान लेने पर दूर हो जायगी। हिन्दीकी तरह मराठी भी नागरी लिपिमें लिखी जाती है, किन्तु लिपिके बारेमें जितने पुराण-पंथी हम हैं, अुतने हमारे मराठी बन्धु नहीं हैं। किरलोस्कर बाड़ीका बिजापुरे टाअिप अिस बातका ज्वलन्त अुदाहरण है। बिजापुरे-टाअिपमें अखंड टाअिपके छः सौ तिरासी संख्याको कम करके अुसे दो सौ बासठ ही नहीं कर दिया गया है, बल्कि वहाँ कोअी मात्रा दूसरे अक्षर पर लटकती नहीं है, जैसे 'कि' में अि की मात्रा क पर लटक रही है। अिसकी जगह वह क के अूपरसे हटकर आड़ी पाअीके अूपरतक ही सीमित रक्खी गअी है। अिस तरह हर अेक टाअिप अपने जड़से अूपर तक ठोस होनेके कारण टूटता नहीं है। यदि हम अूपर-नीचेकी मात्राओंको बिजापुरे-टाअिपकी बगलमें लगाकर अिस्तेमाल करें, तो हमारी सारी कठिनाअी दूर हो जाती है। अुस वक्त हमारे दैनिक अुतनी ही फुर्तीसे छप सकेंगे, जितने कि अंगरेजीके।

पत्रके छपकर निकलनेतकके पन्द्रह मिनट पहलेतककी खबरें हिन्दी दैनिकोंमें देनेमें अेक और भारी अड़चन है, वह है तार और दूर-मुद्रककी भाषाका अंगरेजी होना जिसके कारण हर अेक समाचार और वक्तव्य जहाँ अंगरेजी पत्र सीधे छाप देते हैं, वहाँ हिन्दीवालोंको अनुवाद करना पड़ता है। हाल ही में भारतके पत्र-मालिकोंके ब्रिटिश साम्राज्यवादके परम प्रचारक राअिटरके भागीदार बननेपर बड़ी खुशियाँ मनाअी गअीं। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिसे यह कितनी खतरनाक भूल है, अिसपर किसीने ध्यान नहीं दिया। हर अेक समाचार अेजेन्सी समाचार भेजते वक्त अुसमें अपना रंग देती है। राअिटर अुसी तरह दुनियाके कोने-कोनेसे ब्रिटिश साम्राज्यवादी रंगमें रंगकर छोटा-बड़ा करके हमें समाचार देता रहेगा, जैसे कि आजतक देता रहा है। अन्तर अितना ही होगा कि अब हम अुसे अपना कहकर स्वीकार करेंगे। जान पड़ता है, हमारे कितने ही देश-भाअियोंको ब्रिटिश साम्राज्यका भारी मोह है, और वह हानि-लाभकी परवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये बिना अुस टूटे वृक्षकी छत्र-छाया अपने अूपर बनाये रखना चाहते हैं। यह अत्यन्त लज्जाकी बात ही नहीं है, बल्कि राअिटरके साम्राज्यवादी चश्मेसे दुनियाको देखकर हम कभी वस्तु-स्थितिको ठीकसे जान नहीं सकेंगे।

लेकिन अभी हम राअिटरके अुस राजनीतिक हानिके पहलूपर बहस नहीं कर रहे हैं। हमें देखना है, कि कैसे तार और दूर-मुद्रक हमारी अपनी भाषामें समाचार हमारे पत्रोंतक पहुँचायें जिसमें कि हमें अनुवाद करनेमें समय लगाना न पड़े, तथा प्रत्येक पत्रके अलग अलग अनुवाद न होकर अेकसे ही समाचार सभी पत्रोंमें छपें। यह तभी हो सकता है, जब कि तार और दूर-मुद्रक (टेली प्रिन्टर) हिन्दीमें हमारी खबरें हमारे पास दें। हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तोंकी सोलह-सत्रह करोड़ जन-संख्या, संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी जन-संख्यासे भी अधिक है, फिर पृथ्वीके कोने कोनेसे हिन्दीमें हमारे समाचार और संदेश आयें यह हर तरहसे अुचित और स्वाभाविक है। राअिटरके बन्धनसे बाँधकर हम अपने हिन्दी दैनिकोंको अंगरेजीकी दयापर छोड़ रखना चाहते हैं। हो सकता है, अँगरेजीके करोड़पति पत्र-स्वामियोंको देशके मान-अपमान और हितसे कोअी मतलब नहीं हो; अुन्हें तो खूब टका मिलना चाहिये, पाठकोंकी अँगरेजी पत्रोंके लिये अिजारा-दारी चाहिये, जो कि राअिटरके गठबन्धनसे सिद्ध होता है। लेकिन, हमारे राष्ट्र-नेता भी क्या सारे भाँग खा गये हैं, कि न वह राष्ट्रके हित और सम्मान-पर ध्यान देते हैं न भारतीय संघकी शीघ्र ही राष्ट्र-भाषा होनेवाली हिन्दीपर ध्यान देते हैं। औरोंसे हम वैसी आशा नहीं कर सकते थे, अुनकी भारतीयता कितनी गहरी है अिसे कहनेकी आवश्यकता नहीं है; किंतु डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद और सरदार वल्लभभाअी पटेलसे अैसी आशा नहीं हो सकती।

दूर-मुद्रक और तारमें हिन्दीका सवाल विधान सभाके हिन्दीके राष्ट्रभाषा बनाने न-बनाने पर निर्भर नहीं करता। महाप्रदेशके दशों प्रांत और वहाँकी सोलह-सत्रह करोड़ जनताको निश्चय करना है कि वह क्या स्वतंत्र होनेके बाद भी अँगरेजीके अँचलेमें बँधी रहना चाहती है।

हिन्दी पत्रों और पत्रकारों तथा पाठकोंसे मैं आशा रखता हूँ कि वह अपने दैनिकोंको अुच्च तलपर पहुँचानेके लिये नागरी टाअिपमें शीघ्र सुधार करेंगे। सुधार करना होगा, केवल [illegible]

अिन पंद्रह ही टाअिपोंमें और ु को छोड़ दूसरोंकी आकृतिमें परिवर्तन करनेकी भी आवश्यकता नहीं होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनाना ही होगा

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

पिछले तीस बरसोंमें हिन्दी-साहित्यकी अभूतपूर्व वृद्धि हुअी है। और आज यह निर्विवाद है कि अुसके भण्डारमें प्रायः सभी विषयोंके अुच्च कोटिके ग्रन्थ पाये जा सकते हैं। जो कठिनाअी पाठ्य-पुस्तकोंके सम्बन्धमें अनुभव की गअी थी, वह बहुत हदतक दूर हो चुकी है। और जो कमी अभी है, वह आसानीसे और शीघ्र दूर की जा सकती है।

अुर्दूका साहित्य हिन्दीके साहित्यसे अधिक अुन्नत या पौढ़ नहीं कहा जा सकता है। तो भी अुसमानिया यूनिवर्सिटीमें कअी बरसोंसे अुर्दूको माध्यम मान लिया गया है और जिन विषयोंमें मौलिक ग्रन्थ नहीं हैं, अुन विषयोंके मौलिक ग्रन्थोंको अनुवादित कर सहज और सुलभ बना दिया गया है। कोअी कारण नहीं कि हिन्दीमें भी वैसा ही क्यों न किया जाय।

हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनानेका यह अर्थ नहीं है कि अंग्रेजी अथवा कोअी दूसरी विदेशी भाषा नहीं सिखलाअी जायगी। विदेशी भाषाओंको कुछ लोगोंको सीखना अनिवार्य है। विदेशोंके साथ भारतवर्षका सम्पर्क बढ़ता जायगा। विदेशी भाषाओंमें अच्छे प्रभावशाली ग्रन्थ लिखे जाते हैं। अुनसे हिन्दी-भाषियोंका परिचय करा देना विद्वानोंका काम है। बहुतेरोंको व्यापार अथवा विद्याभ्यासके लिअे विदेशोंमें जाना आवश्यक होगा। अिन सब कारणोंसे कुछ विदेशी भाषाओंका ज्ञान कुछ लोगोंको प्राप्त करना ही होगा, पर अैसे लोगोंकी संख्या थोड़ी होगी। और अुनके यह ज्ञान प्राप्त करनेका साधन विश्वविद्यालयोंमें अुपलब्ध होना चाहिअे। पर देशके सभी लोगोंके लिअे विदेशी भाषाका माध्यम होना अनावश्यक ही नहीं, हानिकर भी है। अिसलिअे माध्यम तो हिन्दीको ही होना चाहिअे और प्रौढ़ विद्यार्थी जो विशेष ज्ञान लाभ करना चाहते हैं, अथवा अैसे लोग जो विदेशी भाषाओंके भण्डारसे सुन्दर ग्रन्थोंको लेकर हिन्दी-भाषियोंके लिअे अल्था करना चाहते हैं, अथवा जो व्यापार या सफरके लिअे विदेशोंमें जाना चाहते हैं वे भले ही विदेशी भाषा सीख लें। विज्ञान नित्य नये आविष्कारोंसे संसारको चकित करता रहता है। अुनको जानना, अुनसे लाभ अुठाना हमारे देशके लिअे भी जरूरी है। अुसके लिअे भी विदेशी भाषाओंसे परिचय आवश्यक है, पर विदेशी भाषाका माध्यम आवश्यक नहीं है।

('स्वदेश'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद (दक्षिण) में हिन्दीकी प्रगति

रामेश्वर दयाल दुबे, अेम० अे०

भारतके मानचित्रमें हैदराबादका अेक विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है। क्षेत्रफलकी दृष्टिसे देशी राज्योंमें वह सबसे बड़ी रियासत है। अैतिहासिक दृष्टिसे भी अुसका अेक विशिष्ट स्थान है। हैदराबादके निज़ाम साहब संसारके महान् धनी व्यक्तियोंमेंसे अेक हैं। राजनीतिकी दृष्टिसे रियासतकी जो महत्ता है वह किसीसे छिपी नहीं है।

हैदराबाद रियासतकी मुख्य जनता मराठी, तेलगू और कन्नड़ी बोलने वाली है। अुर्दू वहाँकी राजभाषा बनाअी गअी है जिसे बाहरसे जाकर वहाँ बसनेवाले मुसलमान बोला करते हैं। रियासतके कदीमी मुसलमान भी मराठी, तेलगू अथवा कन्नड़ी बोलते हैं। किन्तु सदियोंसे राजभाषा अुर्दू होनेके कारण हैदराबाद शहर और आसपासके मुसलमान अुर्दू ही बोलते और लिखते-पढ़ते हैं। मुसलमान ही क्या अन्य जातिवाले भी अुर्दू सीखते हैं, क्यों कि राजभाषा अुर्दू होनेके कारण अुसके बिना काम चलना कठिन होता है।

वास्तवमें जनताकी भाषा, जैसा अूपर कहा जा चुका है, तीन प्रान्तीय भाषायें हैं किन्तु राज्यने अुर्दूको राजभाषा बनाकर अेक अस्वाभाविक बात तो की ही है, प्रान्तीय भाषाओंके साथ अन्याय भी किया है।

हैदराबाद रियासतमें हिन्दीका अेक अपना स्थान है।

जैसा कि सब अहिन्दी प्रान्तोंमें पाया जाता है हैदराबाद रियासतमें भी अेक बहुत बड़ी संख्यामें हिन्दी-भाषी पहुँचे हुअे हैं और वहाँ स्थायी रूपसे रहने लगे हैं। खुद हैदराबाद शहरमें हिन्दी-भाषा-भाषियोंकी अेक बहुत बड़ी संख्या है।

राजभाषा अुर्दू होनेके कारण जिस प्रकार मराठी, तेलगू और कन्नड़ी भाषा-भाषियोंको विवश होकर अुर्दू सीखनी पड़ती है, अुसी तरह हिन्दी-भाषा भाषियोंको भी। राज्यकी ओरसे हिन्दी पढ़ानेकी कोअी भी व्यवस्था नहीं है। अितना ही नहीं, सदासे हिन्दी-विरोधी नीति रखनेके कारण निजाम सरकार हमेशा हिन्दीके किसी प्रकारके प्रचारमें सब प्रकारकी अड़चनें डालती रही है। जहाँ-जहाँ और जब-जब हिन्दी-भाषा-भाषी जनताने अपने बच्चोंके लिये हिन्दीकी पाठशालायें खोलनेका प्रयत्न किया और खोली, अनेक प्रकारसे अिन पाठशालाओंके मार्गमें कठिनाअियाँ पैदा की गअीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजाम सरकारकी दृष्टिमें हिन्दी अेक विदेशी भाषा रही है, अिसलिये वह अुसके प्रचार और प्रसारका समर्थन न कर छिपे-छिपे घोर विरोध करती रही है। अिसीलिअे रियासत-भरमें हिन्दीका कोअी भी समृद्ध पत्र-पत्रिका नहीं है। हिन्दी-पत्रिकाओंको प्रकाशित करनेके लिये अनुमति नहीं दी जाती। लगभग दो वर्ष पहले, जब सर मिरजा अिस्माअिल हैदराबादके प्रधान मंत्री थे, दो-तीन पत्रोंको प्रकाशित करनेकी अनुमति दी गअी थी। हैदराबादके अितिहासमें हिन्दीके प्रति अुदारताका यह पहला अवसर था, परन्तु सर मिरजा अिस्माअिलके हटते ही अिन पत्रों पर तरह-तरहसे प्रहार होने लगे और अिसीलिये दो-अेक पत्र बन्द हो गये।

यों तो हैदराबाद रियासतमें हिन्दीका प्रचार हैदराबाद रियासतसे बाहरकी कुछ हिन्दी संस्थाओंने किया है, किन्तु अिस दिशामें विशेष काम 'हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा' ने किया है।

यह सभा सन् १९३५ में हैदराबाद राज्यमें राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा हिन्दी-भाषा-भाषी जनताकी साक्षरता तथा शिक्षाकी दृष्टिसे स्थापित हुअी थी। पिछले १३ वर्षोंमें अपनी विभिन्न प्रवृत्तियों द्वारा सभाने रियासत भरमें हिन्दीका स्तुत्य प्रचार किया है। अिस अवधिमें सभाने अपनी स्वतन्त्र परीक्षाओंके द्वारा लगभग १० हजार व्यक्तियोंको नागरी-लिपि और हिन्दीका ज्ञान कराया है। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग, दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा और राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धाकी परीक्षाओंके संचालनमें भी हाथ बँटाकर हिन्दीके प्रचारमें प्रशंसनीय कार्य किया है।

नगर और प्रान्तोंमें मिलाकर लगभग ४० परीक्षा-केन्द्र हैं जहाँ सभाकी परीक्षायें ली जाती हैं। सभा द्वारा पाँच परीक्षायें चलाअी जाती हैं—प्रथमा, मध्यमा, अुत्तमा, भूषण और विशारद। गत वर्षसे सभाने अपना सम्बन्ध अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिसे विशेष रूपसे जोड़ लिया है, और नवीन निर्णयके अनुसार सभा अब केवल तीन प्रारम्भिक परीक्षायें चलाती हैं। भूषण और विशारदके स्थानपर राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिकी परिचय और कोविद परीक्षाको स्वीकार किया है। अिस नये सम्बन्धसे हैदराबादमें हिन्दीके प्रचारको अेक विशेष गति मिलनेवाली है। अनुकूल परिस्थिति प्राप्त होनेके कारण अब हिन्दीका प्रचार अत्यन्त व्यापक रूपसे होगा, क्योंकि न केवल हिन्दी भाषा-भाषियोंमें वरन् मराठी, तेलगू और कन्नड़ी भाषा-भाषियोंमें भी राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेकी प्रवृत्ति और अिच्छा विशेष रूपसे जाग्रत हो चुकी है।

परीक्षाओंके अलावा हैदराबाद-हिन्दी-प्रचार-सभा अन्य अुपायोंसे भी हिन्दीका प्रचार करती है और रियासतमें हिन्दी वातावरण पैदा करनेका प्रयत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती है। सभाके अधीन अेक साहित्य-गोष्ठी है जिसमें स्थानीय विद्वानोंके निबन्ध और कविजनोंके कविता-पाठ हुआ करते हैं। अिस गोष्ठी द्वारा हैदराबाद शहरमें हिन्दीका साहित्यिक वातावरण कायम रखनेमें सभा सफल हुअी है।

अिस सभाके शिक्षा-मंडल द्वारा राज्यभरकी हिन्दी प्राअिवेट पाठशालाओंका संगठन करके अुन सबमें अेक ही तरहका पाठ्यक्रम और अेक ही बोर्डके द्वारा कुछ कक्षाओंकी परीक्षाओंका प्रबन्ध किया जाता है। अबतक लगभग ४० पाठशालायें सभाके शिक्षा-मंडलसे अपना सम्बन्ध जोड़कर कार्य कर रही हैं।

अुक्त सभाका अेक प्रचार-विभाग भी है जिसके द्वारा हैदराबाद राज्यके विभिन्न प्रान्तोंमें स्थान-स्थानपर शाखायें खोली गअी हैं और हिन्दीकी सुन्दर पुस्तकोंकी विक्रीकी व्यवस्था की गअी है।

सभाकी ओरसे अेक हिन्दी कालेज खोलनेकी योजना भी है जिसके द्वारा अैसा प्रबन्ध किया जानेवाला है कि परीक्षार्थी हिन्दी माध्यमके द्वारा मैट्रिकसे अूँची परीक्षाओंके लिये अपनेको तैयार कर सकें।

अिस सभाका सबसे महत्वपूर्ण कार्य तो यह है कि वह हैदराबाद रियासतके लाखों हिन्दी-भाषी जनताकी हिन्दी तथा करोड़ोंकी राष्ट्रवाणीको राज्यकी शिक्षा-प्रणालीमें अुचित स्थान प्राप्त करा दे तथा अुस्मानिया विद्यापीठमें हिन्दीको अनिवार्य या वैकल्पिक विषयके रूपमें स्थान दिला दे।

जो देश गुलाम होता है अुसमें राजनीतिका महत्व सबसे अूँचा होता है। यह कहनेकी आवश्कता ही नहीं कि देशी राज्योंमें और खासकर हैदराबादमें जनताको गुलामीके जो कटु अनुभव प्राप्त करने होते थे अुनके सम्बन्धमें कुछ कहना व्यर्थ है। अपने राज्यकी जनताकी अिच्छाओंको दमन करनेके लिये हैदराबाद बहुत पहलेसे बदनाम रहा है। अिसलिये हैदराबाद रियासतमें अेक हिन्दीका प्रचार ही क्या, जनताकी अिच्छाओंसे सम्बन्ध रखनेवाला कोअी भी काम प्रगति नहीं कर सकता था।

किन्तु अब विषम परिस्थितियाँ बीत चलीं। वहाँकी राजनीतिक समस्या बहुत कुछ हल हो चुकी, और अब आशा है कि जन-हितका कोअी भी काम रुकेगा नहीं, और तब, यह निश्चित है कि राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार सम्पूर्ण रियासतमें शीघ्रतासे होगा। हिन्दीके प्रति जनताका विशेष अनुराग है, और वह क्यों न हो, क्योंकि वह जानती है कि हिन्दी अब केवल रियासतके कुछ लोगोंकी मातृभाषा ही नहीं, सम्पूर्ण भारतकी राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन होने जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य, शिव और सुन्दर

आचार्योंका कहना है कि कला-साधनाका मूल है सत्य, शिव और सुन्दर, अर्थात् साधन सत्य और सुन्दरके ही ऊपर प्रतिष्ठित हो तथा उसका फल हो कल्याणकारी। जो विज्ञानके साधक हैं, (तत्त्व-ज्ञानकी बात नहीं कहता, बल्कि साधारण-सांसारिक अर्थमें) अर्थात् जो वैज्ञानिक हैं, उनका अेकमात्र मंत्र है सत्य। साधनाका फल सुन्दर हो, असुन्दर हो, कल्याणकारी हो, अकल्याणकारी हो, किसीसे भी मतलब नहीं। हो, अच्छा ही है, न हो, अपराध नहीं।

किन्तु साहित्य-साधनाका अेक पुराना पथिक होकर निरन्तर मैं यही अनुभव करता आ रहा हूँ कि अिस मार्गमें सत्य और सुन्दरके बीच पद-पदपर विरोध है। संसारकी जिस घटनामें हम सत्य पाते हैं, वह हो सकता है, साहित्यमें सुन्दर न हो। और जो सुन्दर है, वह साहित्यमें अेक बार ही मिथ्या हो सकती है। जिसे सत्यके नामसे जानता हूँ, अुसे मूर्त्तिमान् करनेकी चेष्टामें देखा है, या तो बीभत्स हो जाता है या कदाकार, अेवं सत्यको छोड़कर भी सुन्दरका रूप-दर्शन नहीं पाया। ठीक अिसी प्रकार मंगल और अमंगलकी बात भी।

पूछता हूँ, सत्य यदि सुन्दरका परिपंथी है, और कल्याण-अकल्याण गौण, तो फिर साहित्यकी साधनामें अिस समस्याका निदान क्या है ?

(शरत्चन्द्रके अेक पत्रसे)—अनु० ब्रजनन्दनसिंह 'साहित्य-रत्न'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि खलील जिब्रानकी सूक्तियाँ

खलील जिब्रानका जन्मस्थान लेबनन पर्वत था। अिस संसारसे कूच किये अुन्हें सोलह साल हो गये, लेकिन अुनकी वाणी अजर-अमर बनकर मानवको सदा शाश्वत् सत्यकी ओर अुन्मुख करती रहेगी। अुनकी रचनाओंका विश्वकी अनेक भाषाओंमें अनुवाद हो चुका है। अुनकी कुछेक सूक्तियाँ, जो गहरी अनुभूति और सत्यके अतल तलको छूतीसी दीखती हैं हम यहाँ अुद्धृत कर रहे हैं।

—संपादक

मनुष्यता

"मैं अपना सर्वस्व देकर अिस धरतीको प्यार करती हूँ, क्यों कि यही मानवताका स्वर्ग-राज्य है—अीश्वरकी सत्ताका व्यक्त रूप है।...किंतु मनुष्यके छोटे-छोटे बच्चे अपनी-अपनी जातियोंके यशोगानमें खोये हुये हैं, वे अपनी-अपनी तलवारोंको तेज करनेमें अिस तरह भूले हैं कि अुनकी माताओंका क्रन्दन अुनके कानोंतक नहीं पहुँचता।"

वर्षा

"मैं समुद्रकी लंबी साँस हूँ, खेतोंकी प्रसन्न हँसी हूँ, स्वर्गकी आँखोंका नीर हूँ। यही अितिहास, प्रेमके समुद्रसे निकली हुअी लंबी साँसों, आत्माके रंगीन खेतोंसे निकले हुये हास और स्मृतियोंके अशेष स्वर्गसे झरे हुअे आँसुओंका भी है।"

वस्त्र

अेक दिन सुन्दरता और कुरूपताकी समुद्रके किनारे भेंट हुअी। दोनोंने परस्पर कहा—"आओ, समुद्रमें स्नान करें।"

तब दोनोंने अपने कपड़े अुतार दिये और दोनों समुद्रकी लहरोंपर तैरने लगीं।

थोड़ी देरमें कुरूपता किनारे पर आअी और सुन्दरताके वस्त्र अपने शरीरपर सजाकर चलती बनी।

जब सुन्दरता समुद्रके बाहर आअी तो अुसने देखा कि अुसके कपड़े गायब थे। नंगे रहनेमें वह लज्जाका अनुभव कर रही थी। विवश होकर अुसने कुरूपताके ही कपड़े पहन लिये और अपनी राह ली।

आजतक संसारके लोग कुरूपताको सुन्दरता और सुन्दरताको कुरूपता समझनेकी भूल कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोज

अेक हजार वर्ष पूर्वकी बात है।

पूर्वके अेक शहरकी सीमापर दो दार्शनिक आ मिले।

अेकने दूसरेसे पूछा—"कहाँ जा रहे हो तुम ?"

दूसरेने अुत्तर दिया—"मैं तो यौवनके निर्झरकी तलाशमें जा रहा हूँ। मेरे ध्यानमें अिन्हीं पहाड़ियोंकी सीमामें कहीं-न-कहीं अुसका स्रोत प्रस्फुटित होता है। मुझे कुछ अैसे लिखित प्रमाण मिले हैं जो अुसका अुद्गम पूर्वकी ओर बताते हैं। पर तुम, तुम क्या सोच रहे हो ?"

पहले दार्शनिकने अुत्तर दिया—"मैं तो मृत्युके रहस्यकी तलाशमें हूँ।" तब दोनों दार्शनिकोंने अेक दूसरेके प्रति यही धारणा बना ली कि दूसरा अुसकी महान जिज्ञासे नितान्त अपरिचित है। वे आपसमें लड़ने-झगड़ने और अेक दूसरेके आध्यात्मिक अध-विश्वासकी आलोचना करने लगे।

दोनों दार्शनिकोंके शोरसे सारा वायुमंडल गूँज अुठा। अिसी समय वहाँ अेक अजनबी आ निकला। वह अजनबी अपने गाँवमें महामूर्ख समझा जाता था। जब अुसने दोनोंको गरमागरम बहस करते हुअे देखा तो वह थोड़ी देर खड़ा-खड़ा अुनके तर्कोंको सुनता रहा।

अुसके बाद वह अुनके निकट आकर बोला—"भलेमानसो! अैसा ज्ञात होता है कि तुम दोनों वास्तवमें अेक ही सिद्धान्तके माननेवाले हो और तुम दोनों कह भी अेक ही बात रहे हो; अंतर तो केवल शब्दोंका है। तुममेंसे अेक तो यौवनके निर्झरकी तलाश कर रहा है और दूसरा मृत्युका रहस्योद्घाटन करना चाहता है, पर हैं तो दोनों अेक ही और दोनों ही अेक रूप होकर तुम दोनोंमें बसते हैं।" अितना कहकर वह अजनबी "महात्माओंसे" बिदा लेकर आगे चल दिया। जाते समय वह खूब हँसा।

दोनों दार्शनिकोंने चुपचाप कुछ क्षणोंके लिअे अेक दूसरेकी ओर देखा और तब वे दोनों भी हँस पड़े। और अुनमेंसे अेक ने कहा—"अच्छा तो अब हम दोनों मिलकर खोज करें न!"

शत्रु

आवाजने विचार किया, अुसका अेकमात्र शत्रु है स्तब्धता!

स्तब्धताको नष्ट करनेका प्रयत्न करते हुअे थक गया और वहीं स्तब्ध हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सागरने विचार किया कि गगन-विहारी मेघ मुझ-जैसे पृथ्वीपर रेंगने वाले प्राणीको हँसते हैं। क्रोधित हो वह आकाशकी ओर दौड़ने लगा कि तभी अुसकी भाप बन गअी और वह मेघ बन गया ।

छायाका तिरस्कार करते हुअे प्रकाश अितना काला पड़ गया कि अुसकी छाया बन गअी !

झगड़ा

नदीने सोचा, मैं ही क्यों हर बार सागरके पास जाअूँ ? मुँह फुलाकर अुसने सागरसे कहा—"मैं तुम्हारे पास नहीं आअूँगी । तुम्हीं आओ न अेक बार मेरे पास !"

हँसकर सागरने कहा,—"अच्छी बात है ।" और वह सर्-सर् करता आगे बढ़ने लगा। नदीके अुद्गम--स्थानतक वह जा पहुँचा । सागर.....सागर .....सागर.....सर्वत्र सागर ही सागर हो गया। और अुससे भेंट करनेके लिये नदी रह ही नहीं गअी !

प्रश्नोत्तर

'सब प्राणियोंमें दुखी कौन ?'

'मछली'—क्योंकि दुखसे आये हुये आँसू जलमें किसीको नहीं दिखते और अिसीलिये अुसे अधिक दुख होता है ।

'सब प्राणियोंमें सुखी कौन ?'

'तोता'—क्योंकि वह क्या बोलता है, वह स्वयं भी नहीं समझ पाता और दूसरे लोग भी अुसके बोलनेपर कभी ध्यान नहीं देते ।

'सब प्राणियोंमें परोपकारी कौन ?'

'रेशमका कीड़ा'—क्योंकि दुनियाको वह कितनी मूल्यवान् चीज दे रहा है अिसकी अुसे कल्पना भी नहीं होती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-संसार

हिन्दी ही भारतकी राजभाषा बनेगी--टंडनजी

माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडनने अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मुद्रणालय भवनका अुद्घाटन करते हुअे कहा कि मुझे पूर्ण आशा है कि विधान परिषद् नागरी-लिपिमें हिन्दीको भारतकी राजभाषा मान लेगी। अिसके बाद सम्मेलनका मुख्य कार्य हिन्दीमें अच्च साहित्यके निर्माण और प्रकाशनकी ओर विशेष ध्यान देना होगा और अिसमें सम्मेलनको अपने मुद्रणालयसे बहुत सहायता मिलेगी।

टंडनजीने कहा कि काशी-नागरी-प्रचारिणी सभाने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी स्थापना की थी। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन तथा अन्य हिन्दीकी संस्थाओंने हिन्दीके प्रचारके विषयमें बहुत कार्य किया है। आरम्भिक वर्षोंमें सम्मेलन कच्चे धागेके समान था। मैंने आशा की थी कि यह कच्चा धागा पुष्ट होगा और देशको अेक सूत्रमें बाँधनेमें समर्थ होगा। मुझे आज सम्मेलनकी अर्द्ध-सफलतापर सुख हो रहा है। सम्मेलनकी और अुसकी शाखा राष्ट्रभाषा प्रचार-समितिकी परीक्षाओंका अद्भुत रीतिसे प्रचार बढ़ा है। राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिका कार्य भदन्त आनन्द कौसल्यायनके मन्त्रित्वमें चल रहा है।

टंडनजीने महापण्डित राहुल सांकृत्यायनकी प्रशंसा करते हुअे कहा कि अुन्होंने शासन-शब्द-कोषका कार्य बहुत थोड़े समयमें पूरा किया है। राहुलजी अिसी वर्षतक सम्मेलनके सभापति रहेंगे लेकिन मुझे आशा है कि वह सम्मेलनका कार्य सदा ही करते रहेंगे।

टंडनजी भारतके शासन-विधानके हिन्दी-अनुवादकी ५०० प्रतियाँ नअी दिल्ली ले जा रहे हैं और अुन्हें विधान परिषदके सदस्योंको भेंट करेंगे। महापण्डित राहुल सांकृत्यायनने यह अनुवाद किया है।

हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती

विधान-परिषद्के सदस्य डाक्टर सच्चिदानन्द सिन्हाने लखनअूमें हुअे 'हिन्दुस्तानी सम्मेलन'के अध्यक्षको अेक संदेशमें कहा कि अुन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान-परिषद्की आगामी बैठकमें अिस संशोधनकी सूचना दी है कि देवनागरी तथा फारसी लिपिमें लिखित हिन्दुस्तानी देशकी राष्ट्रभाषा रहे।

डाक्टर सिन्हाने सन्देशमें यह भी बताया कि अुपर्युक्त संशोधन भेजनेके पूर्व अुन्होंने पंडित नेहरूसे अिस विषयपर परामर्श किया था। नेहरूजीने सफलताकी कामना प्रकट की थी परन्तु कहा था कि 'संशोधन' स्वीकृत नहीं हो पायेगा, क्यों कि औसत हिन्दू अुर्दू, फारसी तथा अरबीके बहुत विरुद्ध हो गया है।

भारतकी राष्ट्रभाषा होनेका हिंदीको ही अेकमात्र अधिकार

गत मास दरभंगेमें हुअे अखिल भारतीय प्राच्य महासम्मेलनमें सर्वसम्मतिसे अेक प्रस्ताव पास हुआ, जिसमें भारतीय विधान-परिषदसे अनुरोध किया गया है कि वह हिन्दीको भारतकी राष्ट्रभाषा तथा देवनागरीको देशकी लिपि स्वीकार कर ले। कलकत्ता-विश्वविद्यालयके श्री सुनीतिकुमार चटर्जीने अिस प्रस्तावको पेश किया और मद्रास-विश्वविद्यालयके डा० वी० राघवनने अिसका अनुमोदन करते हुअे कहा कि राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन होनेका हिन्दीके सिवा अन्य किसी भाषाको अधिकार भी नहीं है।

हिन्दी अन्तर्राष्ट्रभाषा बनेगी—श्री राहुलजीका भाषण

अिलाहाबाद, २६ अक्टूबर—आज ३ बजे दिनको यूनियन-हालमें प्रयाग-विश्वविद्यालयमें हिन्दी परिषद्का अुद्घाटन महापंडित राहुल सांकृत्यायनने किया। हिन्दी-विभागके अध्यक्ष डा० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा स्वागतके पश्चात् राहुलजीने भाषण देते हुअे हिन्दीका राष्ट्रभाषा-पदके लिये समर्थन किया। अुन्होंने कहा कि अंग्रेजीभाषा रूसी, जर्मन, फ्रेंचके समान अेक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मानी जा सकती है, जो पद निकट भविष्यमें हिन्दी भी ग्रहण कर लेगी। विज्ञान आदिके लिअे अेक शब्द गढ़नेके समय बीचका भाग ग्रहण करनेका आदेश देते हुअे राहुलजीने डा० रघुबीरके कोषकी आलोचना की। अन्तमें राहुलजीने हिन्दी-साहित्यके तलको अूपर अुठानेको नौजवानोंसे अपील की तथा बताया कि ६ माहमें ही विभिन्न विषयोंके चालीस विद्वान् मिलकर १९५० अी० तक विज्ञान आदिके सारे पारिभाषिक शब्द हिन्दीमें तैयार कर सकते हैं।

विधानका प्रामाणिक हिंदी अनुवाद

महापंडित राहुल सांकृत्यायनने दो-तीन विद्वानोंकी सहायतासे भारतीय संघके विधानका अेक प्रामाणिक हिंदी अनुवाद तैयार किया है। अनुवाद छप चुका है। विधान-परिषदमें अुसे विचारार्थ पेश किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान-परिषदके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, माननीय बाबू पुरुषोत्तम-दासजी टंडन तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलनसे संबंध रखनेवाले कुछ अन्य प्रमुख व्यक्तियोंने प्रस्तावित विधानके अेक सुंदर हिंदी अनुवादकी आवश्यकता महसूस की। श्री राहुलजीने अुन्हींके अनुरोधपर यह प्रामाणिक अनुवाद सम्पन्न किया है।

रिपोर्ट हिंदीमें ही तैयार होगी

युक्त प्रांतीय असेम्बलीने जनतापार्टीको असेम्बलीमें भाषा-विषयक जो विशेष सुविधायें दी थीं अुन्हें अब समाप्त कर दिया है। पहले अुक्त पार्टीके सदस्योंको विशेष रूपसे अुर्दूमें कार्यक्रम आदि वितरित किये जाते थे। अिसके अतिरिक्त अिस पार्टीके भाषणोंको जब सरकारी रिपोर्टर तैयार करते थे तो अुसका अनुवाद अुर्दूमें केवल अिसीलिये किया जाता था कि भाषणकर्ता अुसे देखकर सही कर दे तब वह हिन्दीमें कार्यवाही-पुस्तकमें छपनेके लिये भेज दी जाय। पता चला है कि असेम्बलीके अध्यक्षने अिस बार अिस सुविधाको भी खतम कर दिया है और प्रत्येक भाषणकर्ता सदस्यको अुसके भाषणकी रिपोर्ट देवनागरी लिपिमें ही लिखकर दिखलाअी जाती है।

हिंदी पत्र-पत्रिकाओंकी बृहत् सूचिका

'हिन्दी साहित्य समिति' (बिड़ला कालेज) पिलानीके तत्वावधानमें 'हिन्दीके पत्र और पत्रिकायें' पुस्तक श्री अखिल विनयके संपादकत्वमें शीघ्र ही प्रकाशित होगी जिसमें आजकी हिन्दीकी समस्त पत्र-पत्रिकाओंका परिचय रहेगा। हिन्दी-प्रेमियों, साहित्यिकों अेवं पत्रकारोंका अुचित सहयोग, सम्मति व सुझाव प्रार्थित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

सेठ गोविंददासजी सभापति निर्वाचित

हिन्दीके सुप्रसिद्ध नाटककार, महाकोशल कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष और भारतीय विधान-परिषदके सदस्य श्री सेठ गोविंददासजी मेरठमें आगामी ९, १०, ११ तथा १२ दिसंबरको होनेवाले अ० भा० हिंदी-साहित्य-सम्मेलनके ३६ वें अधिवेशनके सभापति चुन लिये गये हैं।

आपने गत वर्ष विधान-परिषदमें हिंदीके लिये प्रबल आंदोलन किया था और अुसके सदस्योंसे हिंदीको राष्ट्रभाषा बनानेके पक्षमें बड़ी संख्यामें हस्ताक्षर कराये थे। आपके चुनावसे विधान-परिषदमें हिन्दी-आन्दोलनको बल मिलेगा।

परिषदोंके सभापतियोंका चुनाव

सम्मेलनकी विविध परिषदोंके अध्यक्षोंका चुनाव भी नीचे लिखे प्रकार घोषित हुआ है:—

राष्ट्रभाषा-परिषद—श्री अनंतशयनम् आयंगर
साहित्य-परिषद—श्री गिरीशजी
समाजशास्त्र-परिषद—श्री व्योहार राजेंद्रसिंह
दर्शन-परिषद—डॉ अुमेश मिश्र
विज्ञान-परिषद—श्री भास्कर गोविंद घाणेकर

नये साहित्य वाचस्पति

अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनने अिस वर्ष मेरठ अधिवेशनके अवसरपर नीचे लिखे विद्वानोंको 'साहित्य-वाचस्पति'की अुपाधिसे सम्मानित करनेका निश्चय किया है:—

(१) डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी, (२) डॉ. अमरनाथ झा, ३) श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, (४) श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, (५) श्री रामनारायण मिश्र, (६) श्री लोचनप्रसाद पाण्डेय, (७) श्री वियोगी हरि, (८) डॉ. शिवकुमारसिंह।

मध्यप्रांत-विदर्भ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका आगामी अधिवेशन

प्रधान मंत्री श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री सूचित करते हैं कि सम्मेलनका आगामी अधिवेशन ता १४, १५, १६ जनवरी १९४९ को राजनाँदगाँवमें होने जा रहा है। प्रांतके साहित्य-प्रेमियोंसे निवेदन है कि वे अिस दिशामें अपने आवश्यक सुझाव श्री राधेश्याम अग्रवाल, प्रधान-मन्त्री स्वागत-समिति, प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन राजनाँदगाँवको भेजनेका कष्ट करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशोंमें हिंदी-प्रचार

लंकाकी चिट्ठी

ता. ७-१०-४८ को विद्यालंकार-परिवेणमें हिन्दी वर्गोंका पुनः संगठन हुआ। हिन्दी-प्रेमियोंको आशीर्वाद देते हुअे परिवेणके प्रधानाचार्यने भारत और लंकाके प्राचीन सम्बन्धपर प्रकाश डालते हुअे कहा—

"हम लंका-निवासियोंको भारतीय संस्कृतिसे, भाषासे तथा हर प्रकार भारतसे ही सम्बन्ध रखना है। हमारा भारतसे धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक सम्बन्ध है और वह सदा रहेगा ही। हमें गर्व है कि आज तीन वर्षसे हमारे परिवेणमें हिन्दीमें पढ़ाअी हो रही है। अिस साल प्राचीन परीक्षाओंमें हिन्दी विषय लेकर ज्यादा विद्यार्थी हमारे परिवेणसे ही अुत्तीर्ण हुअे हैं। आज हिन्दी-प्रेमियोंकी अिस बढ़ती संख्याको देख मुझे अिस बातका संतोष है कि हमारे प्रयत्न निष्फल नहीं हुअे। हिन्दी पढ़नेसे और अेक लाभ है। हम संस्कृत ग्रंथोंके अनुवाद हिन्दीमें पढ़ सकते हैं। संस्कृत जाननेवाला हिन्दी और हिन्दी जाननेवाला संस्कृत बड़ी ही आसानीसे पढ़ सकता है।

"हमें भारतसे प्यार है। हम सदा अुसका आदर करते हैं। अेक दिन फिर हमें भारतमें बौद्ध धर्मका वह हराभरा वृक्ष देखना है जिसका बीज सिंहल द्वीपमें आज काफी फलाफूला पाते हैं। तो क्या अुस देशकी भाषाके बगैर हमारी आशा सफल होना संभव है? कदापि नहीं। तो हमें आजसे ही अिस मीठी सरल भाषाको पढ़ना शुरू कर देना चाहिये।"

हिन्दी प्रचार-समितिके अध्यक्ष श्री भदन्त सीवलीजीने भी अिस अवसरपर "लंका द्वीपमें हिन्दीके महत्व"पर रोशनी डाली।

छात्रगण अुत्साही हैं। अिस अुत्साहके दिनोंदिन बढ़नेकी आशा है। प्राचीन परीक्षाओंके लिये विद्यार्थी हिन्दी पढ़ना पसंद करते हैं, फिर भी राष्ट्रभाषा-परीक्षाओंकी पढ़ाअी भी साथ-साथमें करनेका अुपदेश अुन्होंने दिया। आशा है छात्रगण अधिकाधिक संख्यामें हमारी परीक्षाओंसे लाभ अठायेंगे। राष्ट्रभाषाके वर्ग भी शुरू हो गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस शुभ अवसरपर विद्यालयके विद्वान् पंडित भिक्षु-प्रज्ञाकीर्तिजी, भिक्षु प्रज्ञाश्रीजी, पञ्ञालोकजी तथा अन्य आचार्यगण अुपस्थित थे। भदन्त श्री सिद्धार्थजीने अिसी साल 'प्राचीन परीक्षा' की 'पंडित' अुपाधि हिन्दी विषय लेकर प्राप्त की है।

अबतक "प्राचीन भाषोपकार समिति" की परीक्षाओंमें निम्नलिखित व्यक्ति अुत्तीर्ण हुअे हैं :—

भिक्षु बी. सिद्धार्थ	'पंडित'	भिक्षु के. धर्मानन्द	'प्रथमा'
,, अेम. चंदविमल	'मध्यमा'	,, पी. रतनज्योति	,,
,, डब्ल्यू प्रज्ञाराम	,,	,, अे. प्रेमवंश	,,
,, टी. चंदरतन	,,	,, अे. सोमानन्द	,,
,, के. धर्मपाल	,,	,, डब्ल्यू. सारानन्द	,,
,, डी. बोधिसिंह	,,		

अध्यापक—भिक्षु सींवलीजी तथा भिक्षु सुशीलजी

—श्री गिरीशकुमार

द० अफ्रिकामें हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

हिन्दी शिक्षा--संघ, नातालके आश्रयमें काठियावाड़ सेवा-समाजके भवनमें ता० १७--१०--४८ को प्रथम "नाताल प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन" हुआ। सम्मेलनका सभापति पद यहींके सुप्रतिष्ठित अग्रिणी श्री बी. अेम. पटेलने ग्रहण किया। श्री बी. परमेश्वरके शुभ कर-कमलोंसे सम्मेलनका अुद्घाटन हुआ। सम्मेलनकी सफलताके अनेक सन्देश आये थे। जिनमें भारतके मा. गवर्नर-जनरल श्री राजगोपालाचार्य, श्री बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन, श्री सम्पूर्णानन्दजी, श्री भदन्त आनन्दजी कौसल्यायन तथा स्वामी श्री भवानी दयालजी संन्यासीके मुख्य थे।

सम्मेलनमें तीन मुख्य प्रस्ताव स्वीकृत हुअे। प्रथम प्रस्ताव हिन्दी-भाषियों और हिन्दी पाठशालाओंके संगठनका था। पं. द्वारिका महाराज सभापति-सनातन धर्म सभा, नातालने यह प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव द्वारा सभी पाठशालाओंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेकीकरण तथा पाठविधि और परीक्षा-प्रणालीमें अेकता लानेपर जोर दिया गया। दूसरा प्रस्ताव डा. नगीनदास देसाअीने राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें रखा। अिसमें दक्षिण अफ्रिकाके सभी हिन्दुस्तानियोंको परस्पर व्यवहारकी भाषाके रूपमें हिन्दीको अपनानेके लिये कहा गया है। तामिल-भाषी वर्गकी तरफसे श्री. सी. अेम. नायकर तथा तेलगू-भाषी वर्गकी तरफसे श्रीमती कृष्ण वेणी रेड्डीने अिस प्रस्तावका समर्थन किया। डा० देसाअी गुजराती वर्गका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। तीसरा प्रस्ताव पं. नरदेवजी वेदालंकारने हिन्दी साहित्यके अध्ययनके सम्बंधमें रखा। आपने हिन्दी-साहित्यका विहंगावलोकन करानेकेसाथ साहित्यके अध्ययनके लिअे पुस्तकालय और वाचनालय चालू करनेपर जोर दिया।

अिस सम्मेलनमें हिन्दी शिक्षा संघ, नातालकी नियमावली मंजूर हुअी। अिसी संघके द्वारा हिन्दी पाठशालाओंका संगठन तथा राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचारका आयोजन होगा। सम्मेलनमें श्री रामावतार शुक्ल, स्ना. कमला बहिन, श्री. अेस. अेल. सिंह, श्री सत्यदेव आदिके भी सारगर्भित व्याख्यान हुअे। श्री हरिसिंह तथा पाठशालाके विद्यार्थियोंके संगीत-संवाद आदिका कार्य-क्रम भी सम्पन्न हुआ।

—श्री नरदेव वेदालंकार

❀ ❀ ❀

हिन्दी भाषा जोरदार भाषा है। सचमुच मर्दानी जबान या पुरुषकी बोली है। शुद्ध या ठेठ हिन्दी शब्दोंके साथ-साथ संस्कृतसे शब्द—अिससे अिसका शब्द-भंडार अनंत बना है। अिसमें और भी आये हैं—अरबी और फारसीके टकसालके सिक्के। हिन्दीकी अभिव्यंजना-शक्ति अपूर्व है।

—डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

हर्षचरित— अनु०- सूर्यनारायण चौधरी, प्रकाशक- संस्कृत-भवन, कठौतिया, पो० काझा (पूर्णियाँ) । पृष्ठ-संख्या १८०+८; मूल्य २॥)

प्रस्तुत पुस्तक संस्कृतके प्रसिद्ध कवि बाणके हर्षचरितका ५ से ८ अुच्छ्वास तकका हिन्दी रूपान्तरमात्र है । " मूलके समीप रहनेकी अिच्छाके कारण" अनुवाद कहीं-कहीं वास्तवमें दुर्बोध हो गया है । सिर्फ हिन्दी जाननेवाले पाठकको थोड़ी निराशा अिस बातसे भी होगी कि अेकसे चार अुच्छ्वास तकके कथानकसे अपरिचित होकर ही अुसे यह पुस्तक पढ़ना होगा । अच्छा होता कि संक्षेपमें शुरूके चार सर्गोंका कथानक दे दिया जाता । फिर भी अनुवादकका प्रयत्न सराहनीय है । आशा है, संस्कृतानुरागी विद्यार्थी अिस पुस्तकसे पूरा लाभ अुठावेंगे ।

नया संसार—ले०—स्वामी सत्यभक्त; प्रकाशक-सत्याश्रम, वर्धा, पृष्ठ-संख्या १४४+६, मूल्य १।)

स्वामी सत्यभक्तजीसे हिन्दी-पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे । 'नये संसारका' वर्णन अेक यात्रीके भ्रमण-वृत्तांतके रूपमें होनेके कारण अत्यंत रोचक बन गया है । श्री स्वामीजी अेक स्वतंत्र विचारक हैं । प्रस्तुत पुस्तकमें अुनकी कल्पनाको अुन्मुक्त वायुमंडल मिला है । अतः आनेवाले संसारका अेक काल्पनिक चित्र तैयार करनेमें वे पूर्ण सफल हुअे हैं । संकुचित दायरेमें पलनेवाले भारतीय तरुण और तरुणियोंके लिये 'नया संसार' सर्वथा नया है ।

—सुमन वात्स्यायन

संध्या—संध्या-कार्यालय, नागनाथकी गली, अुज्जैनसे श्री महेन्द्र भट-नागर तथा डॉ बी. के. प्रधान द्वारा संपादित मासिक 'संध्या'का हम हृदयसे स्वागत करते हैं । जन्मकालमें ही देशके प्रतिभावान् साहित्यिकोंका सहयोग अिसके अुज्ज्वल भविष्यका द्योतक है ।

(१) '**वाणी-निबंध मणिमाला**' (२) '**संस्कृतम्**'—प्रथम पुस्तक पं. कर्मवीर नागेश्वरराव द्वारा संस्कृत भाषामें रचित छोटे-बड़े पन्द्रह निबंधोंका संग्रह है । द्वितीय पुस्तकमें संस्कृतमयी छन्दोबद्ध भाषाके द्वारा संस्कृत भाषाकी महिमा और अुपयोगिताके गीत गाये गये हैं । आशा है, संस्कृतानुरागी जन अिसका स्वागत करेंगे । पुस्तक-प्राप्ति-स्थान—पं. कर्णवीर नागेश्वरराव, आन्ध्रराष्ट्र संस्कृत-प्रचार-समिति-संचालक, चीराला (गुंटूरु जिला) ।

—बलभद्र ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय हलचलें

महाराष्ट्र

सांगली—विजया दशमीके अवसरपर पी. अेम हाअि स्कूलके प्रिंसिपल श्री बा. गो. नाअीककी अध्यक्षतामें वर्धा-परीक्षाके केंद्र-व्यवस्थापकों, प्रचारकों और सदस्योंकी अेक सभा हुअी जिसमें 'सांगली विभाग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' नामक अेक कार्यकारी-मंडलकी स्थापना की गअी। मंडलका अुद्देश्य विभिन्न स्थानोंमें प्रचार-समितिके केंद्र तथा हिंदी वाचनालयका प्रसार करना है। अुक्त मंडलमें अभी मिरज, सांगली, माधवनगर और जयसिंगपुरके केंद्र-व्यवस्थापक अेवं प्रचारक शामिल होंगे।

सिन्नर— दशहरेके शुभ मुहूर्तपर 'सिन्नर तालुका राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना हुअी। कार्यकारी समितिका संगठन नीचे लिखे अनुसार किया गया :—

श्री शांताराम काशीनाथ खारकर वकील (अध्यक्ष), श्री दत्तात्रेय गणे माल पाठक वकील (अुपाध्यक्ष), कु० नलिनी ब्रह्म (कोषाध्यक्ष), श्री मधुकर भाअुसेठ भावसार (संचालक), श्री ह्री. ह्री. ब्रह्म (स संचालक)।

सदस्य—सर्वश्री ···रंगनाथ, श्रीराम काले, पुरुषोत्तम जोशी, बिट्ठल केशव सोनार, विश्वनाथ अमृतजी पाटील, सौ० कस्तूरबाअी गुजर, सौ० कमलाबाअी गुजर।

सतारा शहर—राष्ट्रभाषा विद्यालय, सतारा के कार्यकारी-मंडलमें नीचे लिखे अनुसार परिवर्तन हुआ है :—

रा० सा० नानासाहेब माजगांवकर, चेअरमैन न्यु० स्कूल बोर्ड सतारा (अध्यक्ष), श्री शं. कृ. वेलमकर 'कोविद' (प्रधान मंत्री), श्री का. म. जोशी 'कोविद' (परीक्षा-मंत्री), श्री ग. ब. अरेकर 'प्रवीण, (शिक्षा-मंत्री), श्री मि. द. मारुलकर 'कोविद' (प्रबन्ध-मंत्री), पं. दा. गोले 'प्रवीण' (अर्थ-मंत्री), सौ. कमल कुलकर्णी 'कोविद' (वाचनालय-मंत्री)—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलाहकार मंडल—सर्वश्री··· ल. दा जवरें 'विशारद' (संस्थापक राष्ट्रभाषा विद्यालय सतारा), भा. के. वोकील 'पंडित' सौ. सुशीला-बाओ रोडे 'कोविद', कु० कमल सोमण 'कोविद'।

—ता. २-१०-४८ को विद्यालयके प्रधान-मंत्री शं. कृ. वेलमकरकी अध्यक्षतामें 'गांधी दिन' तथा ८-१०-४८ को श्रीराम अट्रावलकरजीकी अध्यक्षतामें 'प्रेमचंद दिवस' मनाया गया।

कोल्हापुर—विजया दशमीके अवसरपर श्री वि. द. धोरणेजीकी अध्यक्षतामें हिन्दीके प्रचार-वर्ग चलानेके अुद्देश्यसे 'हिन्दी शिक्षा प्रचारिणी' नामक संस्थाकी स्थापना हुअी। कार्यकारी-मंडलका चुनाव नीचे लिखे अनुसार हुआः—

श्री वि. द. धोरणेजी (अध्यक्ष), श्री वा. शा. नेखाड़करजी (मंत्री), तथा श्री सि. ग. अष्टेकरजी, बगु-नायक, श्री. प. के. ओतारीजी (सदस्य)।

टींटोदण—फरवरी '४८ की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सव श्री वासुदेव रामचंद्र कवेंजीके सभापतित्वमें मनाया गया। अिस केंद्रके अुत्साही प्रचारक श्री शंभुप्रसादजी तथा केंद्र-व्यवस्थापक श्री बृजलालजीका अभिनंदन किया गया।

मटरगांव—मटरगांव केंद्रका प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सव स्थानीय हिंदी हाअीस्कूलके मंत्री श्री अग्रबालजीके कर-कमलोंसे संपन्न हुआ। अुत्सवकी सारी व्यवस्था श्री मन्नाप्रसादजीने की थी। छोटासा गाँव होनेके बावजूद अुत्सवमें ११३ विद्यार्थी शामिल हुअे थे।

राजस्थान (म. भारत)

कुशलगढ़—ता. २१-९-४८ को श्री केशवलालजी जैन बी अे. की अध्यक्षतामें कुशलगढ़ केंद्रका वार्षिकोत्सव मनाया गया। 'राष्ट्रभाषा हिंदी हो' अिस विषयपर सर्वश्री...सुखदयालजी, सुंदरलालजी व्यास, कांतिलालजी ओझा (मजिस्ट्रेट) तथा डिपुटी कलेक्टर श्री अकबर महमूदके जोरदार और सप्रमाण भाषण हुअे। अिसके बाद श्री सोहनसिंह प्रचारकने कुशलगढ़ केंद्रमें राष्ट्रभाषा-प्रगतिकी वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाअी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल

सूरी (बीरभूम) यहां राष्ट्रभाषा-वर्ग तथा शिक्षण-केंद्रका अुद्घाटन क्रमशः बीरभूम जिला-बोडके चेअरमैन तथा 'बार असोसियेशन'के सभापति श्री अविनाशचन्द्र मित्रके सभापतित्वमें बड़ी सफलतासे हुआ। सूरीके विशिष्ट नागरिक तथा नर नारी बड़ी संख्यामें अुपस्थित थे। प्रांतीय समितिके मंत्री श्री रेवतीरंजनसिंहने राष्ट्रभाषा हिंदी तथा देवनागरी लिपिकी अुपयोगिता पर बड़ा प्रभावशाली भाषण दिया।

आसाम

मणिपर—रामपाल हाअिस्कूल (अिम्फाल) में कन्याओंके लिये 'राष्ट्रभाषा वर्ग' खोला गया है। दो अध्यापिकायें हैं। छात्राओंकी संख्या संतोषजनक है। यहाँ राष्ट्रभाषा हिंदीकी शिक्षाके साथ कताअी बुनाअी आदिकी शिक्षा भी दी जाती है।

मणिपुर स्टेट कांग्रेसने अेक प्रस्ताव पास करके निश्चय किया है कि मणिपुरमें अेक राष्ट्रभाषा कालेज खोला जाय तथा स्टेट सरकारसे अिम्फालमें अेक अुपयुक्त स्थान तथा कमसे-कम तीनसौ रुपये मासिक सहायता देनेको अनुरोध किया जाय।

—विगत १५ अक्टूबरको 'निंडोमथों हिन्दी स्कूल'के भवनका अुद्घाटन-समारोह मनाया गया। समारोहके प्रारंभमें श्री वीरेंद्रसिंहजीने 'जन-गण-मन' गीत गाया। जिला-प्रचारक श्रीछत्रध्वज शर्माजीने अपने भाषणमें हिन्दी-हिन्दुस्तानीका दिग्दर्शन कराते हुअे मणिपुर-वासियोंसे राष्ट्रभाषा हिंदीको अपनानेकी अपील की। अिसके बाद पं. श्री शिवदत्त शर्मा तर्क-तीर्थ और श्री अतुलचंद्रसिंहजीके भाषण हुअे। अिस अवसरपर नीचे लिखे सज्जन अुपस्थित थे।

सर्वश्री...अेल. अिंबुडोहलसिंहजी (बी. अे. बी. अेल.) जार्ज चि. पशकसिंहजी (अेम अेल अे.), अतुलचंद्रसिंहजी डाक्टर, पं. शिवदत्त शर्मा (तर्कतीर्थ), श्री छत्रध्वज शर्मा राष्ट्रभाषा-जिला-प्रचारक आदि।

विदर्भ नागपुर

वर्धा जिला-समिति-संगठन—ता. ८-११-४८ को वर्धामें श्री र. वि. करंदीकर बी. अे, अेल. अेल-बी 'कोविद' की अध्यक्षतामें वर्धा जिलेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-प्रचारका संगठन संपन्न हुआ। श्री करंदीकरजी वर्धा-केंद्रीय-समितिके पुराने हितैषी और राष्ट्रभाषा-प्रेमी हैं। प्रांतीय संचालक पं. हृषीकेशजी शर्माने अपने वक्तव्यमें संगठनका महत्व और प्रांतमें राष्ट्रभाषा-प्रचारकी प्रगतिका निर्देश किया। बैठकमें नीचे लिखे सज्जन उपस्थित थे :—

सर्वश्री ···सेठ श्रीरामजी टिवड़ीवाले, उमाशंकरजी शुक्ल (पत्रकार); मा. मा. ठाकोर (बैंक आफ नागपुरके अेजेंट), रामेश्वर दयाल दुबे (परीक्षा-मंत्री), ब. रा बनमालीजी, उषाताअी देशमुख।

निश्चय हुआ कि समितिमें कुल २१ सदस्य रहें:—हिंगणघाट ३, देवली १, सिंदी २, आर्वी ३, पुलगाँवसे २, नागपुर प्रांतीय संचालक १, तथा वर्धासे ९— (श्री दुबेजी, करंदीकरजी, वनमालीजी , श्रीराम टिवड़ीवाले, या. मा. ठाकोर, उमाशंकर शुक्ल, उषाताअी देशमुख, कु. मालती नागले तथा सौ. प्रतिभा वनमाली।

❀ ❀ ❀

क्या आप जानते हैं ?

१. हिन्दी साहित्यके सर्वश्रेष्ठ कथाकार श्री प्रेमचंद्रने अपनी सब पहली कहानी 'संसारका सबसे अनमोल रत्न' १९०७ में लिखी थी।

२. बंगला-साहित्यके अमर उपन्यासकार श्री शरत्चंद्र फीसके पैसे जुटनेके कारण अेफ. अे. परीक्षामें प्रविष्ट न हो सके, और अिस प्रकार उनकी अगली कालेजी पढ़ाअी सदाके लिये रुक गअी !

३. ब्रिटेनमें साढ़े सात हजारसे अधिक स्त्रियाँ चिट्ठी बाँटनेका काम करती हैं।

४ सोवियत रूसकी पुलिस-फौजमें ८० प्रतिशत औरतें काम करती

५. नार्वेका समुद्र-तट डेढ़ लाख द्वीपों और अुपद्वीपोंसे अंकित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-फल–

परीक्षार्थी अपना परीक्षा-फल अपने केन्द्र-व्यवस्थापकसे प्राप्त करें। परीक्षार्थी अपना परीक्षा-फल जाननेके लिये वर्धा-कार्यालयको न लिखें। ऐसे पत्रोंका अुत्तर वर्धा कार्यालयसे न दिया जा सकेगा।

अलग-अलग प्राप्तांक––

जो अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने प्रश्नपत्रोंके अलग-अलग प्राप्तांक मँगाना चाहेंगे, अुन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। शुल्कके साथ अपना पूरा नाम, परीक्षा-नाम तथा क्रम-संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखकर भेजें। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे अलग-अलग प्राप्तांक मँगानेका शुल्क नहीं लिया जाता।

पुनर्निरीक्षण :

जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण कराना चाहें, वे ५ दिसम्बरतक प्रत्येक अुत्तर पुस्तकके लिये आठ आना निरीक्षण शुल्क भेजते हुअे अपना पूरा नाम, परीक्षा, क्रम-संख्या तथा प्रश्नपत्र संख्या देकर प्रार्थना-पत्र भेजें।

निरीक्षणमें केवल अितना ही देखा जाता है कि प्रत्येक प्रश्नके अुत्तरको अंक दिये गये हैं या नहीं, और जोड़ आदि ठीक है या नहीं।

अुत्तर-पुस्तकोंको दुबारा जाँचनेका नियम हटा दिया गया है। अिस सम्बन्धमें किसी प्रकारके पत्र-व्यवहारकी आवश्यकता नहीं है।

रत्न-परीक्षा—

अलग-अलग प्राप्तांक––

रत्न-परीक्षाके अुत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी १) रु. भेजनेपर अपने प्राप्तांक मँगा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुबारा जाँच—

रत्न-परीक्षाके जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी उत्तर-पुस्तकोंकी दुबारा जाँच करवाना चाहें उनको ११ दिसम्बरतक प्रत्येक उत्तर-पुस्तकके लिये २) रु. जाँच शुल्कके साथ अपना पूरा नाम, क्रमसंख्या तथा प्रश्न-पत्र संख्या लिखकर भेजना होगा।

आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा प्रचार परीक्षाओंके साथ होगी। अब ८ की जगह सिर्फ ६ ही प्रश्नपत्र रहेंगे। विस्तृत जानकारीके लिये तीन आनेकी टिकट भेजकर रत्न-विवरण-पत्रिका मँगावें।

आगामी परीक्षा पाठ्यक्रम—

प्रारंभिक प्रवेश और परिचय परीक्षाका पाठ्यक्रम पूर्ववत् रहेगा। कोविदके तीसरे प्रश्नपत्रमें **त्याग-पत्र** (श्री जैनेन्द्र) **गोदान**के विकल्पमें रहेगा। परीक्षार्थीको **त्याग-पत्र** या **गोदान** मेंसे किसी अेकका अध्ययन करना होगा।

❀ ❀ ❀ ❀

भूल-सुधार—

पाठ्य-सूचीके तीसरे पृष्ठपर १३ वीं पंक्तिमें 'छोड़कर' यह शब्द छूट गया। पाठक १३ वीं पंक्तिमें 'नीचे लिखी कविताअें छोड़कर' अिस प्रकार पढ़ें।

आगामी प्रचार परीक्षाअें—

आगामी प्रचार परीक्षाअें ता. १६, १७ अप्रैल ४९ को होंगी।

आवेदन-पत्र **केन्द्र-व्यवस्थापक**के पास देनेकी अन्तिम तारीख अिस प्रकार हैं—

सीधे प्रार्थना-पत्र	१० जनवरी ४९
सशुल्क आवेदन-पत्र	१० फरवरी ४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापककी ओरसे सशुल्क आवेदन-पत्र वर्धा कार्यालयको क्रमशः ता. १७ जनवरी तथा १७ फरवरीतक मिल जाने चाहिये।

विदर्भ-नागपुर तथा अुत्कल प्रान्तके लिये

विदर्भ-नागपुर तथा अुत्कल प्रान्तोंमें आगामी प्रचार परीक्षाअें ता. १२, १३ फरवरी ४९ को होंगी।

अिन परीक्षाओंके लिये **केन्द्र-व्यवस्थापकके** पास आवेदन-पत्र देनेकी अन्तिम तारीखें अिस प्रकार हैं —

सीधे प्रार्थना-पत्र	३० नवम्बर ४८
सशुल्क आवेदन-पत्र	१५ दिसम्बर ४८

केन्द्र-व्यवस्थापककी ओरसे सशुल्क आवेदन पत्र वर्धा-कार्यालयको २० दिसम्बरतक प्राप्त हो जाने चाहिये।

विलम्ब-शुल्क—

विलम्ब-शुल्कका नियम बिलकुल हटा दिया गया है। निश्चित तारीखोंके बाद किसी भी दशामें आवेदन-पत्र स्वीकृत न हो सकेंगे।

परिचयमें सीधे बैठनेपर पूर्ण प्रतिबन्ध

परिचय परीक्षामें बैठनेके लिये प्रवेश परीक्षा अुत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

किसी युनिवर्सिटीके ग्रेजुयेटको छोड़कर साधारणतया अन्य कोअी व्यक्ति परिचय परीक्षामें सीधे न बैठ सकेगा।

कोविद परीक्षा-फलमें श्रेणी

को. परीक्षा-फलमें दिये हुअे लिखित प्राप्तांकमें मौखिक परीक्षाके अंक सम्मिलित नहीं हैं। कोविद परीक्षामें श्रेणी लिखित-प्राप्तांक और मौखिक-प्राप्तांकके योगके अनुसार दी जाती है। अतः सिर्फ लिखित प्राप्तांकके आधारपर श्रेणीका विचार न किया जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-समितिकी बैठक

गत ता. ७ नवम्बरको वर्धा कार्यालयमें परीक्षा-समितिकी बैठक हुअी। बैठकमें निम्नलिखित सज्जन अुपस्थित थे—

१ श्री अुदयनारायण तिवारी, अेम्. अे. डी. लिट्. प्रधान-मंत्री, सम्मेलन प्रयाग
२ श्री संतप्रसाद टण्डन, अेम्. अेस्. सी. डी. फिल्. परीक्षा-मंत्री, सम्मेलन प्रयाग
३ श्री जेठालाल जोशी, प्रान्तीय-संचालक, गुजरात
४ श्री कान्तिलाल जोशी, अेम्. अे. प्रान्तीय-संचालक, बम्बअी
५ श्री प्र. रा. भूपटकर, अेम्. अे. पूना
६ श्री व. अ. गद्रे, बी. अे. साहित्य-रत्न, पूना
७ श्री हृषीकेश शर्मा, प्रान्तीय-संचालक, मध्यप्रान्त
८ श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन प्रधान मन्त्री वर्धा
९ श्री अनुसूयाप्रसाद पाठक, प्रान्तीय-संचालक, अुत्कल
१० श्री रेवतीरंजन सिन्हा, प्रान्तीय-संचालक, बंगाल
११ श्री रामेश्वर दयाल दुबे, परीक्षा-मन्त्री, वर्धा

विशेष रूपसे निमंत्रित

१ श्री प्रो. शुकदेव प्रसाद तिवारी, अेम. अे. नागपुर
२ श्री पं. मु. डांगरे, प्रान्तीय-संचालक, महाराष्ट्र
३ श्री प्रो. रंजन, अेम. अे., वर्धा
४ श्री हरिदत्त मिश्र, अेम. अे., सा. र., वर्धा

अिस बैठकमें अनेक महत्वपूर्ण निर्णय हुअे हैं। अुनमेंसे कुछ निर्णय अिसप्रकार है:—

(१) परिचय परीक्षामें सीधे बैठनेपर लगभग पूर्ण रूपसे प्रतिबंध लगाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आवेदन-पत्र स्वीकार करनेकी अन्तिम तारीख और परीक्षा तारीखमें २ महीनेका अंतर रखा गया है।

(३) विलम्ब शुल्कका नियम हटा दिया गया है।

(४) बढ़े हुअे केन्द्र-व्यवस्था खर्चकी पूर्ति करनेकी दृष्टिसे आवेदन-पत्रका मूल्य अेक आनेके स्थानपर दो आना किया गया है। यह रकम केन्द्रोंमें ही रखी जायेगी।

(५) अुत्तर-पुस्तकोंके जाँच-पारिश्रमिक दरमें वृद्धि की गयी है।

प्रारंभिक	=)	परिचय	≡)
प्रवेश	=)	कोविद	।)

(६) सभी प्रकारके बढ़े हुअे खर्चोंको पूरा करनेके लिये और प्रान्तोंको अुचित सहायता देनेकी दृष्टिसे परीक्षा-शुल्कमें भी वृद्धि की गयी है, जो अिसप्रकार है--

प्रारंभिक	१॥)	परिचय	३॥)
प्रवेश	२॥)	कोविद	६)

(७) समितिद्वारा प्रकाशित अनेक पाठ्य-पुस्तकोंका संशोधन करना निश्चित हुआ है। आशा की जाती है कि अैसे संशोधित संस्करण मार्च ४९ तक तैयार हो जायेंगे। सितम्बर ४९ की परीक्षाओंके लिये ये नयी संशोधित पाठ्य पुस्तकें चालू हो जावेंगी, पुरानी पुस्तकें विकल्पमें रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
महाराष्ट्र	गोकाक फॉल्स	१२९९
	नायगाँव	१३००
	डुबेरा	१३०१
	मनेगाँव	१३०२
	वालवे	१३०३
	लञुल	१३०४
	कसाल	१३११
	मालेगाँव	१३१२
गुजरात	पालीयाद	१३०५
	किल्ले सोनगढ	१३०६
	करचलिया	१३०७
	जूनागढ	१३०८
	कल्याणा	१३०९

करनेपर भी
कागजका अ
अिसकी कम
निकाल सके
आदि स्थान
सकी थी; दे
अेक दूसरी
अधिक चाउ
प्रसन्नता तो
है। कुछ दि
फरसे शीघ्र
और दुबारा
परीक्षार्थियो
अभी पुस्तकें
अिसकी हमें
चुकी हैं।
पहुँच सकी
कठिन परिस्थि
सकें, यही ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने परीक्षार्थियोंसे

[प्रकाशन-विभाग]

क्रमांक

१२९९ पिछले आठ-नौ महीने हमें कागजकी बड़ी दिक्कत रही। कोशिश
करनेपर भी हमें अपने स्वीकृत 'कोटे' का पूरा पेपर नहीं मिल सका। यह
१३० कागजका अभाव यहाँ वर्धा या नागपुरमें रहा हो सो बात नहीं। सारे देशमें
अिसकी कमी रही और अब भी है।

१३० कागजकी अिस कमीके कारण हम अपनी कुछ पुस्तकें समयपर नहीं
१३० निकाल सके। कुछ पुस्तकें कलकत्ता, अिलाहाबाद, अहमदाबाद और जबलपुर
आदि स्थानोंमें छपनेके लिये दी थीं, क्योंकि वहाँ कागजकी कुछ व्यवस्था हो
१३० सकी थी; लेकिन वहाँ छप जानेपर फिर अुन पुस्तकोंके हमारे पास तक पहुँचनेमें
१३० अेक दूसरी कठिनाअी रेलवे बुकिंगकी आ खड़ी हुअी। जैसे-तैसे कोशिश करके,
अधिक चार्ज देकर भी, अुन्हें मँगवाया गया और अपने ग्राहकोंको भेजा गया।

१३१ तीसरी बात है परीक्षार्थियोंकी अप्रत्याशित वृद्धि। अिससे हमें
१३१ प्रसन्नता तो है, लेकिन साथही अुन्हें पूरी पुस्तकें पहुँचानेकी चिन्ता भी बढ़ गअी
है। कुछ किताबें अिसीलिये आखिरमें कम पड़ गअीं और हमें अुन्हें भी
१३० फिरसे शीघ्र छपानेकी व्यवस्था करनी पड़ी।

१३० कछ किताबें बाहरके प्रकाशकोंकी हैं। अुनके यहाँ वे समाप्त हो गअीं
१३० और दुबारा छपनेके लिये कुछ विलंब हुआ। जैसे-जैसे वे आती गअीं,
परीक्षार्थियोंके पास अुन्हें भेजनेकी व्यवस्था की गअी।

१३० अिन तमाम कठिनाअियोंके होते हुये भी हम अपनी प्रकाशित प्रायः
१३० सभी पुस्तकें अिस सितम्बर, '४८ की परीक्षाके पहले ग्राहकोंके पास भेज सके,
अिसकी हमें खुशी है। बाहरकी प्रकाशित पुस्तकें भी बहुत-सारी भेजी जा
चुकी हैं। फिर भी यह सम्भव है कि कुछ लोगोंके पास कुछ किताबें समयपर न
पहुँच सकी हों। अुनसे हमारा यही नम्र निवेदन है कि अिस कठिन समयकी
कठिन परिस्थितियोंको ध्यानमें रखकर वे अधिक नाराज़ नहीं होंगे।

हम शीघ्र-से-शीघ्र अपने परीक्षार्थियोंतक अुनकी पाठ्य-पुस्तकें भिजवा
सकें, यही हमारा सतत प्रयत्न है।

—मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका प
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

आवश्यक सूचनाएँ

[पुस्तक-विभाग]

पुस्तकें मँगाते समय कृपया नीचे लिखी बातोंका अवश्य ध्यान रखें—

१. **पुस्तकोंका ऑर्डर देते समय अुनकी कुल कीमतका कम-से-क अेक चौथाअी पेशगी ज़रूर भेज दें।** जिन आर्डरोंके साथ पेशगी न आयेगी, अुन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

२. पत्र-व्यवहार करते समय **अपना पूरा पता हिन्दीमें स्पष्ट लिख की कृपा करें।** बहुत-से पते अैसी लिपिमें लिखे आते हैं कि जिनसे न अुनके नामका ही पता चलता है और न पोस्ट-आफिस आदिका। जो हिन्द नहीं जानते हैं वे अंग्रेजीमें ही लिख भेजें। लेकिन अस्पष्ट न लिखें।

३. पुस्तकोंके लिये **अलगसे मनीआर्डर भेजें।** अुसे आवेदन-पत्र, परीक्ष शुल्क या राष्ट्रभाषा-शुल्कके साथ भेजनेसे बहुत गड़बड़ी हो जाती है और कभी-कभी समयपर पुस्तकें भी ग्राहकोंको नहीं मिलतीं।

४. मनीआर्डर भेजते समय म. आ. कूपनपर भी अपना पूरा पता साफ स लिखें, **मनीआर्डर किसलिये भेजा है** अुसका भी खुलासा अवश्य कर पीछे कोअी आर्डर दिया हो तो अुसकी तारीखका अवश्य अुल्लेख करें।

५. अेक बार आर्डर देनेके बाद यदि अुसके साथ पेशगी नहीं आती पेशगी भेजते समय दुबारा फिर आर्डर दें, नहीं तो कार्रवाअीमें अधिक विलंब जाता है और कभी कभी तो ग्राहकोंको बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ती है। भी अुससे दिक्कत होती है।

६. पत्र भेजनेके दस दिन बादतक कोअी अुत्तर न मिले तो तुरन्त दूसरा भेजें। पिछले पत्रों और म. आ. के बारेमें लिखते समय अुनकी तारीख, न आदि अवश्य लिखें, नहीं तो कार्रवाअी न हो सकेगी।

७. मनीआर्डर हमारे पासतक पहुँचनेमें अक्सर काफी दिन लग जाते कभी कभी दस-दस दिनके अूपर भी हो जाते हैं और मनीआर्डर कूपन नहीं मिलता। ग्राहकोंसे निवेदन है कि म. आ. की रसीद अुनके पास पहुँच समयसे अेक सप्ताह तक प्रतीक्षा करनेके बाद यदि पुस्तकें न मिलें तो वे मँ लिखें, अुसके पहले नहीं।

८ कुछ किताबें प्रवेश, परिचय, कोविदमें अेक ही हैं। सेट्स मँगवाते वे यदि नहीं चाहिये तो स्पष्ट अुल्लेख कर दें, नहीं तो फिर वापिस न हो सकें

९. जो पुस्तकें आर्डरमें न जायँ अुन्हें अिस समय अप्राप्य समझें।

१० मँगाअी हुअा वी. पी. अवश्य छुड़ा लें। अुसे वापिस करनेपर ह कठिनाअी बहुत बढ़ जाती है। पहलेसे ही सोच-समझकर मँगाअें।

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ७
अंक ११

सितम्बर
१९४८

राष्ट्रभाषा

हिन्दीको राजभाषाके पदसे हटाना असम्भव

"हमें हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानीकी आड़में अंग्रेजीके हिमायतियोंसे यही कहना है कि भारतीयोंने स्वतंत्रताको प्राप्त करनेमें जो सफलता प्राप्त की है उसका प्रभाव बहुत गम्भीर और दूर तक होकर रहेगा.....अब अंग्रेजी अपने खोये स्थान को नहीं प्राप्त कर सकती है। .....हिन्दी अपने स्थानमें अचल रूपसे प्रतिष्ठित हो चुकी है। क्या किसीकी मजाल है जो हिमाचल प्रदेश, युक्त प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश (हिन्दी), मालव संघ, राजस्थान संघ, विन्ध्यप्रदेश, मत्स्य संघ और पूर्वी पंजाबसे हिन्दीको राजभाषापदसे हटा दे? यह असम्भव है। ऐसा प्रयत्न चट्टानसे सिर टकराने जैसा होगा।"

—महापंडित राहुल सांकृत्यायन

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. देशगीत	... ...	५९३
२. स्वराज्य, राष्ट्रभाषा और साहित्य	...	५९५
३. राष्ट्रभाषा-संसार	... ...	६०२
४. श्रीलंकाका अेक पत्र	... ...	६०५
५. हमारी नजरोंमें	... ...	६०६
६. महाकवि वल्लत्तोल	... ...	६०८
७. प्रांतीय हलचलें	... ...	६०९
८. परीक्षा विभाग	... ...	६१४

'राष्ट्रभाषा'के नियम

१. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य ३) और अेक प्रतिकी कीमत ।) है। वी. पी. से अंक नहीं भेजा जाता। मनीआर्डर द्वारा वार्षिक चन्दा आनेपर ही राष्ट्रभाषा भेजा जा सकेगा।

२. 'राष्ट्रभाषा' का प्रत्येक अंक डाकखानेसे अच्छी तरह जांचकर भेजा जाता है। अंक न मिलनेपर सीधे डाकखानेसे पूछें।

३. पत्र-व्यवहार करते या चन्दा भेजते समय अपना पूरा पता तथा ग्राहक नम्बर स्पष्ट लिखना चाहिये।

लेखकोंसे

सविनय निवेदन है कि राष्ट्रभाषामें प्रकाशनार्थ लेख आदि सुन्दर अक्षरोंमें कागजके सिर्फ अेक ओर ही लिखकर भेजें। अस्वीकृत लेखोंको टिकिट आनेपर ही लौटाया जा सकेगा। लेख प्रति मासकी २० तारीख तक हमारे पास आ जाने चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]
सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, सितम्बर—१९४८ [अंक ११

देश गीत

: श्री अुदयशंकर भट्ट :

मेरा देश महान बने,
अेक ध्येय हो, अेक ज्ञेय हो, अेक महान विधान बने,

अेक देश हो, अेक वेश हो,
प्राणवान हो, सदुद्देश हो,
अेक ध्यान हो, निज गुरुता का,
अेक हिमालय सी, अुठान हो,
मरण अेक हो, वरण अेक हो, जीवन अेक समान बने,
मेरा देश महान बने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहोंसे लड़ने वाले हों,
न्याय हेतु अड़ने वाले हों,
हंसते हंसते मौत मसल कर,
आसमान चढ़नेवाले हों,
बज्र बने दुश्मन को, प्रिय को फूलों की मुसकान बनें,
मेरा देश महान बने

उठें देशके लिये उठें हम,
जियें, देशके लिये जियें हम,
गलें देशके लिये गलें हम,
मरें, देशके लिये मरें हम
तनमें, मनमें यही ध्यान हो भारत महिमावान बनें
मेरा देश महान बने

राजे अुषा हंसकर कहती है
रोज निशा हंसकर कहती है
महासृष्टिमें वही स्वर्ग है
भागीरथी जहां बहती है
तीस कोटि कल कल कण्ठोंसे ध्रुव भेदी यह गान बने
मेरा देश महान बने

'प्रदीप'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य, राष्ट्रभाषा और साहित्य

: श्री. मन्मथनाथ गुप्त :

यद्यपि वैधानिक रूपसे हिन्दीको राष्ट्रभाषाके रूपमें स्वीकृत होते होते, कुछ दिन लगेंगे, पर व्यवहारिक दृष्टिसे यह मान लिया जाता है कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा हो चुकी। अिधर अुधर जो दूसरी तरह की बातें हो रही हैं—कहीं हिन्दुस्तानीकी बात अुठ रही है, तो कहीं अन्य प्रान्तीय भाषाओंको राष्ट्रभाषा बनाने की बातें अुठ रही हैं–वे स्वाभाविक हैं, अुतना ही जितना कि अंततोगत्वा सब बाधाओंको पार कर हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना।

राष्ट्रभाषा शब्द विभिन्न अर्थोंमें व्यवहृत हो रहा है। कोअी तो अिस शब्दसे यह मतलब लगाता है कि हिन्दी अुन सब स्थानोंकी पूर्ति करेगी जिनम अब तक अंग्रेजी थी, याने अैसे लोगोंके मतानुसार अन्य भाषा-भाषियोंकी मातृ-भाषायें वहीं पड़ी रहेंगी, जहां वे साम्राज्यवादकी अधीनताके युगमें थीं। अैसा हो जाता तो शायद कअी दृष्टिसे अच्छा होता, पर मैं समझता हूँ कि वह द्रोह तथा कलहका कारण हो सकता है। यूरोपमें क्यों कोअी राष्ट्रभाषा नहीं बनी, और अन्त तक अेस्पेरेंटी, अिडो आदि कृत्रिम भाषाओंकी सृष्टिकी गअी। अिन बातोंका अितिहास जिन्हें मालूम है, वे अिस मामलेमें धीरे चलनेकी बात करेंगे।

प्रांतीय भाषाअें

मेरा ख्याल है कि भाषाके संबंधमें सोवियत रूसके नेताओंकी नीति बहुत सुन्दर रही है। जारशाहीने रूसके अन्य भाषा भाषियोंपर रूसी भाषाको लादनेकी चेष्टा की, पर सफल नहीं रही। अिसके विपरीत सोवियतके नेताओंने रूसकी अैसी भाषाओंको पहले पहल लिपि देकर लिखनेका अिन्तजाम किया जिनमें कभी लिखावट थी ही नहीं। नतीजा यह हुआ कि यद्यपि नअी भाषायें बनी फिर भी रूस तथा वृहत्तर जगतके साथ संबंधके लिये रूसी भाषा स्वीकृत हो गअी। स्मरण रहे रूसी प्रजातंत्र भाषाके आधारपर प्रजातंत्रोंमें बंटा है और अिनकी सरकारों का सब आभ्यान्तरिक कार्य मातृभाषामें होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं समझता हूँ कि यदि भारतकी प्रान्तीय भाषायें बढ़ें और अुनकी अुन्नति हो, तो राष्ट्रभाषाके रूपमें हिन्दीको कोअी भी खतरा नहीं है क्योंकि किसी भी हालतमें अन्तर्प्रान्तीय भाषाके रूपमें हिन्दीका स्थान सुरक्षित रहेगा। सच तो यह है कि हिन्दीको यह स्थान बहुत पहले ही प्राप्त हो चुका है। अेक अुदाहरण लीजिये। सभी भाषाओंमें फिल्म बन रहे हैं, पर अन्य भाषाओंके फिल्म अपने ही लोगोंमें चलते हैं, पर हिन्दी फिल्म सारे भारतमें चलते हैं।

तो हिन्दी तथ्य रूपमें राष्ट्रभाषा है, भले ही कानूनी रूपमें अभी न मानी गअी हो। मुझे हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषा बनानेका प्रश्न कुछ भी विचलित नहीं करता, क्योंकि मेरे नजदीक हिन्दुस्तानी हिन्दीकी अेक विशेष शैली मात्र है। रहा अुसका अुर्दूमें भी लिखा जाना, अिसमें मुझे कोअी परेशानी नहीं मालूम होती। भाषाका सार भाग लिपि नहीं है। वैज्ञानिक दृष्टिसे अुर्दूकी लिपि बिल्कुल लचर है। हिन्दी अेक बहुत बड़े भूभागमें बोली जाती है, अिसलिअे अुसमें कअी शैलियोंका होना आश्चर्यजनक नहीं, अेक हिन्दुस्तानी भी सही। यदि हिन्दीके भक्त हिन्दुस्तानीके प्रति यह दृष्टिकोण ग्रहण करें, तो हिन्दुस्तानीका कहीं शोर नहीं सुनाअी पड़ेगा।

हिन्दी साहित्यकी अुन्नति हो

अिसलिअेमैं मान लेता हूँ कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है। अब मैं अिसीसे संबंध एक दूसरे प्रश्नपर आता हूँ। यद्यपि हिन्दी अेक सुवृहत भूभागकी मातृभाषा रही है, फिर भी यह अेक अजीब बात है कि हिन्दीका साहित्य अन्य कअी प्रान्तीय भाषाओंके साहित्यसे पिछड़ा हुआ है। यदि हमें हिन्दीको केवल अेक अन्तर्प्रान्तीय सरकारी गश्ती चिट्ठियों आदिकी भाषासे अूपर अुठाना है, तो हमें हिन्दी साहित्यकी अिस कमीकी ओर जल्दीसे जल्दी ध्यान देना पड़ेगा।

केवल सरकारी कागजोंके क्षेत्रमें नहीं साहित्यके क्षेत्रमें भी यदि हिन्दीको अन्तर्प्रान्तीय भाषा बनाना है तो हमें हिन्दीके अनुवाद साहित्यको अैश्वर्यशाली बनाना पड़ेगा, अितना अैश्वर्यशाली कि यदि कोअी तामिल, बंगला साहित्यके संबंधमें जानना चाहे तो वह हिन्दीमें ही सब मोटी बातोंको, सब मुख्य लेखकोंकी रचनाओंसे परिचय प्राप्त कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक युगमें हिन्दीमें अनुवादोंकी बाढ़ आअी थी। अुस युगमें हिन्दी का—मेरा मतलब आधुनिक हिन्दी का—अपना कुछ नहीं था, याने जो था, वह बहुत नगण्य था। अुस युग में स्वाभाविक रूपसे अनुवादोंके विरुद्ध प्रतिक्रिया हुअी, और अनुवादोंमें कमी हो गअी। अिस समय तो हिन्दीमें अनुवादित पुस्तकोंकी बहुत कमी है। मैं समझता हूं कि बजाय चौथे और पांचवे दर्जेकी मौलिक रचनाओं को प्रकाशित करनेके अन्य भारतीय भाषाओंकी प्रथम श्रेणी की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित करना चाहिये। मैं तो चाहता हूँ कि अभारतीय भाषाओं का भी हिन्दीमें खूब अनुवाद हो। हिन्दीमें ही सब कुछ मिले तभी हिन्दी पढ़नेमें लोगोंकी रुचि बढ़ेगी।

अन्य भाषाभाषियोंमें जो लोग हिन्दीके राष्ट्रभाषा होनेके विरोधी हैं, अुनका पहला प्रश्न यही होता है कि हिन्दीमें है क्या? अतः लेखक, प्रकाशक, पाठक सबको जुटकर हिन्दी साहित्य की अुन्नतिमें लग जाना है। पर अच्छा तो यह हो कि इस संबंधमें योजना बनाकर काम किया जाय। आजकल योजना बनाकर काम करना सभी क्षेत्रमें अुत्तम माना जाता है, फिर अिसी क्षेत्रमें अुसका व्यतिक्रम क्यों हो?

निम्नलिखित सरकारें प्रत्यक्ष रूपसे हिन्दीसे संबद्ध हैं:—

(१) भारतीय यूनियन की सरकार
(२) संयुक्त प्रान्त की सरकार
(३) बिहार की सरकार
(४) मध्यप्रान्त की सरकार
(५) पूर्वी पंजाब की सरकार

हिंदी अेक तथा अविभाज्य है

ये सब मिलकर हिन्दी साहित्य की कमियोंकी पूर्तिके लिअे अेक योजना बना सकती हैं। पर मैं अेक विषयमें चेतावनी देना चाहता हूं, वह यह कि सरकारोंमें लाल फीतावाद बहुत है। यद्यपि अूपरसे सारा हिन्दी साहित्य अेक और अविभाज्य है, पर भीतर भीतर प्रान्तों में विशेषकर अुनके लेखकोंमें बड़ी स्पर्धा है। हम अिनसे अूपर अुठकर ही कुछ कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरोंकी अच्छी चीजोंको ग्रहण करनेमें आनाकानी नहीं करनी चाहिये। यदि हिन्दीके ७५ फी सदी अच्छे लेखक संयुक्तप्रान्तमें हैं, तो अिससे दूसरे हिन्दी प्रान्तोंको कोअी जलन नहीं होनी चाहिये। यदि अैसा है तो अिसके अैतिहासिक कारण हैं। मैंने सुना है कि कमसे कम अेक हिन्दी प्रान्तमें किसी पुस्तक को सरकारी पृष्ठपोषण मिलनेके लिअे यह जरूरी है कि वह वहीं प्रकाशित तथा लिखित हुअी हो। हिन्दीके अन्दर अलग अलग नाकेबन्दी हो, यह दुखकी बात है। क्या हिन्दी अेक तथा अविभाज्य नहीं है? क्या अेक मातृभाषाका होना अितनी बड़ी शक्ति नहीं है कि सभी राजनीतिक हदबन्दियोंको कमसे कम साहित्यके क्षेत्रके लिये भुलाया जा सके?

साहित्यके क्षेत्रमें हिन्दी राष्ट्रभाषाके रूपमें अपना झंडा तभी अूंचा कर सकेगी जब अुसको मातृभाषाके रूपमें माननेवाले सब लोग अपनी सृजनशक्तिको अिस प्रकार संगठित करें कि अेक ही क्षेत्रमें कअी बार बेकारमें शक्तिका क्षय न हो। हमारा कोअी कवि बिहारी कवि या यू० पी० का कवि नहीं, बल्कि सब हिन्दीके कवि हैं। प्रेमचन्द्र यू० पी० के नहीं हिन्दीके हैं, अिसी प्रकार दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन यहां तक कि जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, पर फिरभी जो हिन्दीमें लिखते हैं, वे सब हिन्दीके हुअे। हिन्दी साहित्यके क्षेत्रमें राजनीतिक प्रान्तोंके आधारपर संकुचित मनोवृत्ति हिन्दीके लिये घातक ही हो सकती है। यह मैं मानता हूं कि हिन्दी साहित्यकी दृष्टिसे जो हिन्दी प्रान्त पिछड़े हुअे हैं, अुनमें लेखकोंको विशेष प्रोत्साहन मिलना चाहिये, पर प्रान्तीयताके आधार पर साहित्यका मूल्यांकन तथा सरकार द्वारा पृष्ठपोषण बहुत ही गलत बात होगी, और यदि कहीं किसी प्रान्तमें अैसी प्रथा प्रचलित है, तो अुसे रोकना पड़ेगा।

मुझे यह बताया गया है कि अिंगलैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका सभी जगह अंग्रेजी बोली जाती है, पर वहांकी सरकारें अपने ही देशके लेखकोंका पृष्ठपोषण करती हैं, अिसी प्रकार हिन्दीमें हो तो क्या हर्ज है? मैं समझता हूं कि यह अुपमा गलत है। अुक्त देशोंकी भाषा अेक होनेपर भी अेक तो भौगोलिक दृष्टिसे वे बहुत दूर दूर है, दूसरे, अुनकी सरकारें अलग अलग है, और वे अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग राष्ट्र हैं। बिहार, पूर्वी पंजाब, कोशल आदिके संबंधमें अैसा नहीं कहा जा सकता। ये यदि प्रान्तोंमें बंटे है तो केवल व्यवहारिक सुविधार्थ, नहीं तो अेक ही हैं।

हिन्दी समर्थक सरकारें क्या करें?

पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण ही नहीं, योजनात्मक रूपसे हिन्दी साहित्यके निर्माणके लिये अुक्त सरकारोंकी कमेटी होना चाहिये। पर अिस संबंधमें यह भी साफ कर दिया जाय कि ये सरकारें स्वयं साहित्यसृष्टिके प्रयत्नमें न पड़ें। वे योजना बना दें, पर स्वतंत्र व्यक्तियोंके हाथोंमें ही साहित्य-सृष्टिका कार्य छोड़ दें। यह अिस कारण कि सरकारोंकी प्रत्यक्ष देखरेखमें जिस साहित्यकी सृष्टि होगी, वह पार्टीबाज साहित्य, अेक विशेष किस्मका पार्टीबाज साहित्य होनेके लिये बाध्य है।

हिन्दीको अुन्नत करनेके लिये अुक्त सरकारें अिन कामोंको अच्छी तरह कर सकती हैं--

(१) पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण और अुन्हें लागू करना।

(२) प्रकाशकों अथवा लेखकोंकी संस्थाओंको अिस प्रकार धनसे सहायता देना जिससे वे पुस्तकोंको सस्ती बेच सकें।

(३) स्थानीय पारितोषिकोंके अलावा जिन जिन विषयोंकी हिन्दीमें कमी है, अुनकी पूर्तिके लिये अखिल भारतीय पारितोषिकोंका प्रवर्तन।

(४) अन्य भारतीय भाषाओंसे पुस्तकोंके अनुवादकी व्यवस्था। प्रत्येक समृद्ध भाषासे कमसे कम १०,००० पृष्ठ सालाना अनुवाद होना चाहिये।

(५) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जैसी हिन्दी प्रचारक संस्थाओंको यथेष्ट कोष देना जिससे वे अपने कामको बढ़ा सकें।

(६) पाठ्य पुस्तकोंकी रचना तथा प्रकाशन सम्पूर्ण रूपसे सरकारी हाथों रहे, जिससे पूंजीपतियोंको मुनाफा न होकर सरकारको हो, और वह धन हिन्दीकी अुन्नतिमें खर्च हो सके।

(७) हिन्दीके लेखकोंको अन्य भारतीय भाषाओंमें जनप्रिय बनाया जाय और अिसके लिये बंगला-हिन्दी, मराठी-हिन्दी, तेलगू-हिन्दी आदि सांस्कृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लबोंकी स्थापना हो जिससे बंगलावाले और मराठीवाले हिन्दीवालोंको फोरन जान सके।

जनताका कर्तव्य

यह तो सरकारोंका कर्तव्य हुआ, पर अिस संबंधमें जनताका भी कुछ कर्तव्य है सच तो यह है कि यदि जनता अपना कर्तव्य न करे, तो सरकारें सब कुछ करके भी कुछ नहीं कर सकतीं। मुझे भारतके कअी प्रान्तोंका अनुभव है, पर मुझे यह मालूम होता है कि हिन्दी भाषा भाषीगण पुस्तक तथा पत्र सबसे कम खरीदते हैं। यह बहुत ही शोचनीय है। यदि यह कहा जाय कि अिसका कारण हमारी गरीबी है, तो यह बात बिल्कुल गलत है। यह सिनेमाघरोंके सामने लगी हुई लम्बी कतारोंसे पता लगेगा। लोग दो घंटा सिनेमा देखकर दो रुपये खर्च कर देंगे, पर अेक अच्छी पुस्तक नहीं खरीदेंगे जिसे वह तो पढ़ ही सकता है, अुसके बाद अेक पीढ़ी तक अन्य लोग पढ़ सकते है। लोग हिन्दी हिन्दी चिल्लायेंगे, हिन्दी राष्ट्रभाषा हो अिसपर लड़ने को तैयार हो जायेंगे, पर सबेरे अुठकर पहला काम यह करेंगे कि अंग्रेजी अखबार खरीदेंगे यद्यपि यह जानते हैं कि हिन्दी में भी अुतनी ही खबरें मिलेंगी।

हिन्दी प्रकाशकों की पुस्तकें नहीं बिकती, हिन्दी लेखक भूखे रहते हैं अिसका कारण जनता की अुदासीनता है। हमारे राजनीतिज्ञोंने जनताका सारा ध्यान अपनी ओर खींच रखा है, यह तब तक स्वाभाविक भी था और अपरिहार्य भी, जब तक भारत पराधीन था, पर अब अिस लहर को बदलने की जरूरत है। पत्रोंको अब शक्ति-आरूढ़ नेताओंकी तारीफके पुल बांधनेसे समय निकाल कर हिन्दीके मृत तथा जीवित लेखकोंके सम्बन्धमें लिखना चाहिये। जनता तभी तो अिनके साहित्यको खरीदेगी।

अंग्रेजी दैनिक बन्द किअे जांय

मैं केवल हिन्दी प्रान्तों की सरकारों का नहीं संघ की सब सरकारों का ध्यान एक बहुत ही क्रान्तिकारी प्रस्ताव की ओर खींचना चाहता हूं। वह प्रस्ताव यह है कि अब स्वराज्य हुअे अेक वर्ष हो रहा है, पर यह क्या तमाशा है, कि हम खबरें अब भी अंग्रेजी में पढ़ते हैं। मैं समझता हूं कि अेक स्वतंत्र जाति की मर्यादामें इस बात से बट्टा लगता है कि यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक हमारे भूतपूर्व शासक तथा शोषकों की भाषामें हैं। मेरी सुचिन्तित राय है कि फौरन तीन महीने का नोटिस देकर अंग्रेजीके सब दैनिकों को बन्द कर दिया जाय। यह अितना जरूरी है कि अिसके बगैर न हिन्दी की ही अुन्नति होगी, न अन्य किसी प्रान्तीय भाषा की।

मैंने यह प्रस्ताव पहले भी अेक लेखमें रखा था, पर अुसपर ध्यान नहीं दिया गया। मैंने अिस बातको भारतीय पार्लियामेंटमें अुठानेके लिये कअी सदस्यों से कहा भी है, और अुन्होंने मुझे आश्वासन भी दिया था। अंग्रेजीमें अर्ध साप्ताहिक निकलें, साप्ताहिक निकलें, मासिक निकलें, पर दैनिक पांच साल तक न निकलें। मैं समझता हूं कि नीचेसे अिस आवाज को बुलन्द किया जाय, और साहित्यिक संस्थायें अिस प्रस्तावको अुठाकर अुसकी रिपोर्ट अखबारोंमें भेजें। जब चुनाव हो तो अिसपर जोर दिया जाय।

हिन्दी पत्रकार चाहते हैं कि पाठकोंको ठोस चीजें दें, पर हिन्दी पत्रोंकी बिक्री अितनी अधिक नहीं है, न अंग्रेजी पत्रोंके मुकाबलेमें अुन्हें अितना विज्ञापन ही मिलता है कि वे लेखकोंको अच्छे पैसे दे सकें। अिस कारण लेखक भी घसीटते रहते हैं। दोयम दर्जेकी चीजें देते हैं। अिसलिअे सरकारोंके साथ साथ जनताका भी भारी कर्तव्य है, पर जैसा कि मैंने बताया कअी काम अैसे हैं जिनको सरकारें ही कर सकती हैं।

क्या मैं आशा करूं कि जब हम अगली बार १५ अगस्त मनायें, तब हिन्दी कमसे कम पत्र-साहित्यकी दृष्टिसे हमारी गुलामीकी द्योतक अंग्रेजीके बाद दोयम दर्जे पर न होगी, तथा अन्य बाकी सुझावोंको अिस बीचमें कार्य रूपमें परिणत करना शुरू हो जायगा? अभी तो अेक साल का लेखा यही है कि संयुक्त प्रान्त तथा बिहारकी सरकारोंने हिन्दीको राजकार्यकी भाषा मान लिया है, अिसके लिये श्री पन्त तथा श्री श्रीकृष्णसिंह और अुनके साथी बधाअीके पात्र हैं। पर अब भी अिन प्रान्तोंमें अंग्रेजीका स्थान सबसे अूंचा है। यह असह्य है। अिसे दूर करना ही पड़ेगा। अितनी विराट जनता तथा अितनी प्रान्तीय सरकारें जिस काम पर जुटेंगी, वह कभी व्यर्थ नहीं हो सकता। पर हमें बैठे रहना नहीं है।

'भारत'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा—संसार

हिन्दीकी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा

अभी हाल ही में पेरिसमें अन्तर्राष्ट्रीय भाषा विज्ञान विशारदोंका जो सम्मेलन हुआ था अुसमें भारतवर्षके प्रतिनिधि डा० सुनीतिकुमार चटर्जीने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रोंमें संस्कृतके आधारपर पारिभाषिक शब्दोंके निर्माणके सम्बन्धमें चर्चा की और संसारकी तृतीय भाषा हिन्दीकी प्रगतिशीलताके बारेमें भी लोगों को अवगत कराया। सम्मेलनमें अुपस्थित अन्य देशीय विद्वानोंने हिन्दी के प्रति विशेष उत्कंठा दिखाअी।

भारतीय संविधानका प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

कअी माससे डा० रघुवीरके कुशल निरीक्षणमें भारतीय संविधान का जो प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद हो रहा था, वह अब प्रकाशित हो गया है। अिसमें अेक नवीन वैज्ञानिक शैलीको अपनाया गया है जो हिन्दी को न्यायालयों और प्रशासन की भाषा बनानेमें समर्थ होगा।

सरस्वती विहार की ओरसे डा० रघुवीर द्वारा निर्मित अेक वृहत्-आंग्ल भारतीय महाकोष छप रहा है जिसमें अेक लाखके लगभग भिन्न भिन्न वैज्ञानिक शब्दोंके पर्याय मिलेंगे।

हिन्दुस्तानीका प्रचार अुर्दूका प्रचार है

विद्यार्थियोंकी अेक सभामें भाषण देते हुअे हिंदीके सुप्रसिद्ध साहित्यिक पं. माखनलाल चतुर्वेदीने कहा कि साहित्य ज्ञानकी धारा को बढ़ाने की शक्ति है। भाषाके संबंधमें आपने बतलाया कि यदि किसी भाषाके द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है, तो अुसका विरोध नहीं करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्न परीक्षाके पाठ्यक्रममें परिवर्तन

राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा वर्षमें अब प्रचार परीक्षाओं के साथ दो बार हुआ करेगी। आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा अप्रेल ४९ में होगी।

रत्न-परीक्षामें अब ८ प्रश्नपत्रकी जगह केवल ६ प्रश्न-प्रत्र रहेंगे।

जो परीक्षार्थी खंड प्रणालीके अनुसार अेक खंड अुत्तीर्ण हो चुके हैं, वे सितम्बर ४९ की 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षा तक अपना दूसरा खंड अुत्तीर्ण करलें। अिनके लिअे पुराने पाठ्यक्रमके अनुसार ही सितम्बर ४९ तक ८ प्रश्न-पत्र रहेंगे।

रत्न-परीक्षाके नियमोंमें अनेक परिवर्तन हुअे ह।

परिवर्तित नियमावली अक्टूबरके प्रथम सप्ताह तक प्राप्त हो सकेगी। मूल्य ३ आना है।

शुल्क-माफीका नियम हटा दिया गया है। अतः अिस सम्बन्धमें पत्र-व्यवहार न करें।

आपका
रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर आपने कहा कि अिसके लिअे प्रत्येक नागरिकका मत लिया जाना चाहिअे। हिन्दुस्तानी कोअी भाषा नहीं है और अिसका प्रचार करना अेक प्रकारसे अुर्दूका ही प्रचार करना है। देशकी भाषाओंका विभाजन नहीं हो सकता।

भारतीय साहित्यमें रूसी विद्वानोंकी दिलचस्पी

भारतके संबंधमें रूसी विद्वानोंके मनन और अध्ययनका अितिहास श्री एलेक्स बारनीकोवने लिखा है।

श्री बारनीकोवने बताया है कि रूसी विद्वान भारतीय अितिहास, अर्थ शास्त्र तथा साहित्यका अध्ययन करनेमें व्यस्त हैं और हिन्दी, अुर्दू, बंगला और मराठी आदि भाषाओंके कोष तैयार कर रहे हैं। हिन्दू दर्शनपर अुन्होंने विस्तृत खोज की है। विभिन्न भारतीय साहित्योंके अितिहास प्रकाशित किये गये हैं और साहित्यकी प्रसिद्ध पुस्तकोंका रूसी भाषामें अनुवाद किया गया है। श्री शरबाटस्कीने बौद्ध तर्क तथा दर्शनपर अेक बड़ी पुस्तक लिखी है।

श्री बारनीकोवने यह भी बताया कि रामायणका मेरा अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होगा। कौटिल्यके अर्थशास्त्रका कअी व्यक्तियोंने मिलकर अनुवाद किया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दीका महत्व

केन्द्रीय सरकारकी हिन्दी विरोधी तथा देवनागरी विरोधी नीतिपर अपने विचार प्रकट करते हुअे हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्राण बाबू पुरुषोत्तमदास टंडनने कहा कि देशकी परस्पर विरोधी और विभिन्न दिशाओंमें जानेवाली शक्तियोंको अेक साथ लाना केवल अेक अुपायसे सम्भव है—और वह अुपाय है हिन्दीको राष्ट्रभाषा घोषित करना। हिन्दीको राष्ट्रभाषा और देवनागरीको राष्ट्रलिपि घोषित करनेका प्रश्न कोरा भाषा सम्बन्धी प्रश्न नहीं है। यदि आप भारतको भी पाकिस्तान बनाकर रक्तकी नदियाँ बहाना नहीं चाहते तो देश भरकी अेक संस्कृति और अेक भाषा रखना आवश्यक है। यदि सरकार जनताकी अिच्छानुसार हिन्दीको भारतकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा बनानेमें आनाकानी करती है तो जनताको अधिकार है कि अैसी सरकार के विरुद्ध आवाज अुठाये।

हिन्दी जनभाषा बने

समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेवने प्रेस प्रतिनिधियों की अेक सभामें कहा कि भारतकी राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानी और राष्ट्रलिपि देवनागरी ही हो सकती है। आपने कहा कि अन्तर्प्रांतीय मेलजोल बढ़ानेके लिअे अेक दूसरे की भाषा व साहित्य का ज्ञान होना अति आवश्यक है। भाषा व लिपिमें कोअी संगठित सम्बंध नहीं है। इसलिए प्रांतीय भाषाओं की लिपियोंके स्थानपर देवनागरी को स्थान मिलना चाहिअे। मैं तो सभी प्रांतीय लिपियोंको समाप्त करने का पक्षपाती हूँ। अिस प्रकार अेक दूसरे की भाषा को समझनेमें बड़ी सुगमता होगी।

आचार्यजीने आगे कहा कि हिंदी आजकल संस्कृत शब्दोंकी ओर अधिक अग्रसर हो रही है यह ठीक नहीं है। हमें अिसे जनताकी भाषा बनानेका प्रयास करना चाहिअे।

हिन्दी अेकेडमी

श्री. कमलाकान्त वर्माके सभापतित्वमें युक्तप्रान्तीय हिन्दुस्तानी अेकेडमीकी कौन्सिलकी बैठक हुअी, जिसमें यह निश्चय किया गया कि अेकेडमीका नाम परिवर्तनकर युक्तप्रान्तीय हिन्दी अेकेडमी रख दिया जाय। यह भी निश्चय हुआ कि भविष्यमें अेकेडमी द्वारा केवल हिन्दीकी प्रगतिके लिये अुद्योग होगा।

अंग्रेजी धीरे धीरे हटेगी

भारत सरकारके शिक्षा सचिवालयने प्रान्तीय सरकारों और विश्वविद्यालयोंसे प्रार्थना की है कि वे शिक्षा प्रान्तीय भाषामें धीरेधीरे कर दें। अिस अन्तरकालमें विश्वविद्यालय और प्रान्तीय सरकारोंको चाहिये कि वे अेंग्रेजी भाषाको आवश्यक शिक्षाके रूपमें रखें। विश्वविद्यालयोंको यह भी कहा गया है कि डिगरी पाठ्यक्रममें भारतीय संघ भाषाका भी पाठ्यक्रम हो और अिसे अैच्छिक विषयके रूपमें लिया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीलंकाका अेक पत्र

(भिक्षु सुशीलजीके लंकामें हिन्दी प्रचारके प्रयत्न सफल हो रहे हैं। नीचे का पत्र अुसका साक्षी है । पत्रमें राष्ट्रभाषाकी पाठ्यपुस्तकोंके बारेमें जो कुछ लिखा गया है, वह अंशत: सही ही है। पुस्तकोंके पुनर्मुद्रणके समय अिस पत्रकी बात ध्यान में रखनी होगी—सं)

विद्यालंकार पिरिवेन
केलनिय

माननीय भदन्तजी,

मैं आपको पहचानता हूं और आप जो विशिष्ट सेवा कर रहे हैं वह भी। आप लोगोंकी सहायतासे और लंकामें हिन्दी प्रचार करनेवाले मेरे गुरु भिक्षु सुशीलकी सहायतासे पीछे हुअी 'प्रवेश' परीक्षा मैंने पास कर ली है। अब 'परिचय' परीक्षाके लिये तैयार हो रहा हूं। लंकामें हिन्दी जाननेवाले बहुत कम हैं। अिसलिये सब परीक्षाअें अुत्तीर्ण होकरके लङ्कामें लोगोंको हिन्दीका महत्व बताना और सिखाना मेरी मर्जी है।

पिछले सालसे सरकारी प्राचीन-भाषा-परीक्षा अपेक्षा करनेवालोंको हिन्दी भी अेक विषयके रूपमें लेनेके लिये आज्ञा मिली तो भी हिन्दी सीखनेवाले और सिखानेवाले बहुत कम हैं।

राष्ट्रभाषा परीक्षाकी पाठ्य पुस्तकों[१] की अेक विशेषता है कि अुर्दू शब्द ज्यादा हैं। राष्ट्रभाषा किताबोंके विषयमें भदन्तजीसे कहना चाहता हूँ कि अुर्दू शब्द प्रयोग करनेसे छात्र लोग आफतमें पड़ते हैं, और रमणीय हिन्दी भाषा मलिन हो जाती है।

लंका, बरमा, नेपाल आदि राष्ट्रोंमें संस्कृत ही फैली है। अगर अुर्दू शब्दके सिवाय संस्कृत शब्द प्रयोग करते तो हिन्दी भी बहुत आसानीसे समझमें आती। जो अुर्दू शब्द किताबोंमें हैं अुनके अर्थ शब्द कोषोंमें भी बहुत कम ही मिलते हैं। अिसलिये मैं बहुत नम्रता पूर्वक भदन्तजीसे कहना चाहता हूं कि छात्र लोगोंको अिस तंगीसे बचाना चाहिये। आशा है आप अिस पत्रका अुत्तर अवश्य देंगे।

आपका नम्र परीक्षार्थी
भिक्षु मादिवल चन्दविमल

१ परीक्षामें बैठनेकी अिच्छा रखनेवालोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

हिमालय की यात्रा-लेखक–श्री दत्तात्रय बालकृष्ण कालेलकर (काका कालेलकर) अनुवादक, दादा धर्माधिकारी, प्रकाशक–नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद ।

आकाश को चूमता हुआ हिमालय हमारे देश का प्रहरी है जिसने अुसके अनेक परिवर्तनोंको अपनी आंखों देखा है; न जाने कितनी अुल्लास लहरियां, न जाने कितने करुण चीत्कार वह अपनी छातीमें छिपाअे हुअे है । वह आशीर्वाद और अभिशापसे भरा हुआ अेक रहस्य है । अुसके दर्शन मात्रसे हमारा अतीत हमसे बोलने लगता है । लेखकने अैसे ही अमानव गिरिराजकी आस्तिक भावना के साथ यात्रा वर्षों पूर्व की थी । 'यात्रा' में अुसे जो जो अनुभव प्राप्त हुअे बड़ी रोचक शैलीमें अनुबद्ध किअे गअे हैं । सृष्टि-प्रकृति और मानव-प्रकृतिके सूक्ष्म चित्र भी यत्र-तत्र अंकित हैं, जो मनको मुग्धही नहीं करते, अुसे सजग भी बनाते हैं । यद्यपि यात्रा सन १९१२ में हुई, और सन १९३० में ग्रंथका लेखन समाप्त हुआ तथा प्रकाशन १९४५ में संभव हुआ, तो भी अुसकी ताजगी में कोअी कमी नहीं आने पाअी है । यात्रा प्रेमियों को अिसे अवश्य पढ़ना चाहिये ।

—विनयमोहन शर्मा

जिंच–लेखक–श्री मन्मथनाथगुप्त; प्रकाशक—किताब महल अिलाहाबाद, पृष्ठ संख्या १२०, मूल्य–१।) ।

'जिंच' सन् १९४२ की क्रांतिसे सम्बन्धित अुपन्यास है । अिसमें श्री मन्मथनाथगुप्तने आतंकवाद और जन आन्दोलनकी सूक्ष्म विवेचना की है । अुपन्यासमें प्रेमचन्दजीकी तरह अनेक स्थलोंपर अपने ढंगकी सुन्दर अुक्तियां कही गअी हैं (१) कोअी स्त्री किसी पुरुषसे प्रेम करेगी अुसमें दोषकी क्या बात है ? (२) देशभक्ति और क्रांतिमें भिन्न भिन्न व्यक्ति भिन्न भिन्न अुद्देश्य लेकर आते हैं । (३) क्या शांति केवल अशान्तियोंके अभावकी अवस्थाका नाम है ? शायद नहीं !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुपन्यासको पढ़नेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि 'जिच' अेक प्रतिभावान लेखक की प्रभावशाली कृति है। अिसकी भाषा गतिशील और विचारोंमें विशेष अुलझन नहीं है। कला प्रदर्शनके लिअे शायद यह अुपन्यास लिखा नहीं गया है। अतः अुसकी चर्चा निरर्थक है। हिन्दी साहित्यको गुप्तजीसे बड़ी बड़ी आशाअें हैं। अेक बंगला भाषा भाषी होते हुअे भी आपने राष्ट्रभाषामें डेढ़ दर्जनसे अूपर पुस्तकें लिखी है।

—सुमन वात्स्यायन

अशोकके फूल-लेखक—पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक सस्ता-साहित्य मण्डल, नअी दिल्ली, पृष्ठ संख्या—२२४, मूल्य २॥)।

'अशोकके फूल' हिन्दी संसारके विख्यात समालोचक पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदीके अैतिहासिक, साहित्यिक, सामाजिक अेवं ज्योतिष सम्बन्धी निबन्धोंका संग्रह है। सभी निबन्ध विचारोत्तेजक हैं और अुनमें अेक स्वस्थ दृष्टिकोणसे प्राचीन मूल्यों अेवं मान्यताओंपर प्रकाश डाला गया है।

द्विवेदीजी अुच्चकोटिके विद्वान हैं। शिक्षा और साहित्यके सम्बन्धमें अुनके विचार स्पष्ट और सुलझे हुअे हैं। अुनकी पैनी दृष्टिसे छोटीसे छोटी वस्तु भी नहीं बच पाअी है। दैनिक जीवनमें अुपेक्षित बहुतसी बातोंने भी अुन्हें कुछ सोचनेके लिअे मजबूर कर दिया है। 'वसन्त आ गया' तथा 'अेक कुत्ता और अेक मैना' अिसका प्रमाण है।

द्विवेदीजीकी भाषामें ओज और प्रवाह है। विषयकी गम्भीरताको देखते हुअे कहीं कहीं पुस्तकमें क्लिष्टता भी आ गअी है। हम अपने पाठकोंसे अिन निबन्धोंको पढ़नेकी सिफारिश करते हैं।

—प्रशान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि वल्लत्तोल

: श्री. पी. गोविन्दन रा. भा. विशारद :

आगामी अक्टूबरमें केरलके महाकवि वल्लत्तोलकी सत्तरवीं वर्षगांठ मनाअी जा रही है। महाकवि वल्लत्तोल केरलके सबसे अधिक लोकप्रिय कवि हैं। आपने अपनी बहुमुखी प्रतिभासे मलयालम साहित्यके सभी अंगोंका अुन्नत और विकसित किया।

श्री. वल्लत्तोलकी प्रारम्भिक रचनाअें बिल्कुल पुराने किस्म की हैं। जीवनसे दूर होनेके कारण अुनका केरलवासियोंपर कोई प्रभाव न पड़ सका। किन्तु असहयोगके जमानेमें देशप्रेमकी जो आंधी आअी अुसने श्रीवल्लत्तोलकी आंखें खोल दी। अुनकी वास्तविक प्रतिभा जाग अुठी और अिसी समयसे आपने राष्ट्रीय कविताअें लिखना शुरू किया। ओज प्रधान होनेके कारण जनताने अुन्हें शीघ्र ही अपना लिया।

महाकवि वल्लत्तोल महात्मा गांधीके परमभक्त हैं। आपने अपने जीवनको गांधीवादके अनुसार ढालनेका प्रयत्न किया है। 'मेरे गुरुदेव' महात्माजीपर लिखी गअी आपकी प्रसिद्ध रचना है। अहिंसात्मक सत्याग्रहके अतिरिक्त समाज सुधार सम्बंधी प्रत्येक आन्दोलन का आपपर प्रभाव पड़ा। आपकी प्रायः सभी रचनाअें राष्ट्रीयता तथा विश्वप्रेमकी भावनाओंसे ओतप्रोत हैं। संकुचित प्रान्तीयतासे आपने अपनेको बिल्कुल मुक्त रखा है।

महाकवि वल्लत्तोल को केरलकी जनता अत्यन्त श्रद्धा अेवं सम्मान की दृष्टिसे देखती है। आपकी साहित्यिक सेवाओंके महत्वको सभीने स्वीकार किया है तथा अनेक बार आपको पुरस्कृत भी किया जा चुका है। आपकी काव्यधारा जनताको आकर्षित करती हुअी गंगाकी निर्मल धाराकी तरह अबाध गतिसे बढ़ती चली जा रही है।

आजकल महाकवि वल्लत्तोल प्राचीन साहित्यके अुद्धारके लिअे अथक परिश्रम कर रहे हैं। प्राचीन कला अेवं संस्कृतिके विकासके हेतु आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'केरल कला मंडलम्' नामक अेक संस्थाकी स्थापना की है। अिस मंडलने श्री. अुदय शंकर जैसे अनेक भारत विख्यात कला प्रेमियोंको पैदा किया है।

भारतीय संस्कृति रूपी अगाध सागरकी थाह लेनेवाले अिस महाकविने अपनी कठोर साधनासे मलयालम साहित्यमें युगान्तर अुपस्थित किया। महाकवि वल्लत्तोल की सत्तरवीं वर्षगांठके अवसरपर हम अुनके दीर्घजीवी होनेकी कामना करते हैं।

प्रांतीय हलचलें

महाराष्ट्र प्रांत

पूना—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे श्री. डांगरेजीने सूचित किया है कि श्रीयुत श्रीराम अट्टावलकर हमारे निष्ठावान कार्यकर्ताओंमें से अेक हैं। आप जिला प्रचारकके रूपमें आठ सालसे राष्ट्रभाषा कार्य कर रहे हैं। आपने क्रमशः वर्धा, बुलढाना और पूर्व खानदेश जिलेमें कार्य किया है। जून ४८ से आपको सातारा, रत्नागिरी जिलेका काम सौंपा गया है। आप दक्षिण महाराष्ट्रके हमारे अधिकृत संगठक है। आशा है, दक्षिण महाराष्ट्रकी जनता और कार्यकर्ताओंका आपको भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

सातारा—दक्षिण महाराष्ट्रके संगठक श्री. श्रीराम अट्टावलकरके सातारा पहुँचनेपर गत ५-९-४८ को सातारा शहरके कें. व्य और प्रचारकोंकी अेक सभा हुअी। सभामें रा. भा. प्रचार कार्य सुव्यवस्थित करनेके सम्बन्धमें विचार विनिमय हुआ तथा सातारा शहर और सातारा जिला समितियाँ स्थापित की गअी।

कोल्हापुर—श्री. श्रीराम अट्टावलकरके कोल्हापुर पहुँचनेपर श्री. पं. नारायण शास्त्री वालावलकरजीसे रा. भा. प्रचारकी कअी समस्याओंपर विचार विनिमय हुआ। स्थानीय रा. भा. प्रचारकोंकी सभा हुअी जिसमें कोल्हापुर केंद्रकी परीक्षा व्यवस्था तथा संस्थान विभागके केंद्रोंका कार्य सुव्यवस्थित करनेके संबंधमें विचार हुआ। कार्य करनेकी अेक योजना भी निर्मित हुअी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटाणा—स्थानीय राष्ट्रभाषा विद्यालयका अुद्घाटन समारोह मनमाड़की श्रीमती दांडेकरकी अध्यक्षतामें मनाया गया। श्री. चान्दोरकरजीने अपने अुत्साहवर्धक भाषणमें विद्यार्थियोंके कर्तव्यपर प्रकाश डालते हुअे राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखनेकी अुपयोगिता बतलाअी। अिस अवसरपर अनेक मनोरंजक कार्यक्रम भी हुअे तथा छात्र और छात्राओंको पुरस्कृत भी किया गया। अुपस्थिति बहुत अधिक थी।

गुजरातप्रांत

मोरवी—यहां स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने अेक सार्वजनिक सभाका आयोजन किया जिसमें श्री नाना भाअी भट्टने (आरोग्य और शिक्षा सचिव सौराष्ट्र सरकार) राष्ट्रभाषा तथा अन्य रचनात्मक कार्यक्रमोंपर जोरदार भाषण दिया। आपने अुपस्थित जनतासे राष्ट्रभाषा सीखने की भी अपील की।

स्थानीय समितिके पदाधिकारी अिस प्रकार चुने गअे हैं:— श्री. कान्तिलाल मु. घोलकिया अेम. अे. प्रमुख. श्री. लाभशंकरभाअी वेदान्त शास्त्री अुपप्रमुख. श्री. अमृतलालजी गणात्रा, मंत्री और केंद्र. व्यवस्थापक श्री. दुर्लभजी कानाबार, कोषाध्यक्ष. श्री. वृजलाल शेठ बी. अे. श्री. नवलचन्द कारिया, बी. अे. अेल अेल बी. श्री. लक्ष्मीचन्द कारिया, श्री. फूलचन्द पंडित, श्री. कान्तिलाल दोसी, श्री. धीरजलाल ठाकर, श्री. शांतिलाल बी. अे. श्री. वृजलाल मीरा श्री. पुंडरिक बुच अेम. अे. श्री. रतिलाल नगवाडिया, श्री. मोहनलाल ठाकर बी. अे. श्री. रमेश घोलकिया बी. अे.--सदस्य।

वडिया—वडिया केंद्रके परीक्षार्थियोंका प्रमाण पत्र वितरणोत्सव हडा दरबार श्री. वाजसुरवाला साहबकी अध्यक्षतामें मनाया गया। प्रारम्भमें केंद्र व्य स्थापक महोदयने पिछला कार्य विवरण पढ़ सुनाया। बादमें अध्यक्षका भाष हुआ और आभार प्रदर्शनके पश्चात् अुत्सव समाप्त हुआ।

शेवणी—अिस केंद्रने अुत्साही प्रचारकोंके सद्प्रयत्नसे अच्छी उन्नति है। अिस बार यहांसे ११६ विद्यार्थी राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें बैठ रहे

अहमदाबाद—स्थानीक ठाकर्स हाअी स्कूलसे राष्ट्रभाषा की विभिन्न परी ओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण पत्र वितरणोत्सव गुजरात प्रांतीय राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार समितिके संचालक श्री. जेठालाल जोशीकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। श्री-जोशीजीने अपने ओजस्वी भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी अुपयोगितापर भलीभांति प्रकाश डाला।

नवचेतन हाअीस्कूलमें भी श्री जेठालालजोशीके कर कमलोंसे प्रमाणपत्र वितरित किअे गअे। आपके व्याख्यानका श्रोताओंपर अच्छा प्रभाव पड़ा।

गत ७ अगस्तको शाहपुर व्यायाम मंदिर द्वारा संचालित राष्ट्रभाषा वर्ग के अुत्तीर्ण भाई बहिनोंको श्री. गोपीकिसनजीने प्रमाणपत्र प्रदान किए। श्री. गोपीकिसनजी काश्मीरसे यहां आये हुए हैं। आपने अपने भाषणमें काश्मीर की स्थितिपर सुन्दर ढंगसे प्रकाश डाला।

मंत्रीका दौरा—गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री जेठालाल जोशीने राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यके सिलसिलेमें काठियावाड़ (सौराष्ट्र) का दौरा किया। मोरबीमें आपने १५ अगस्तके स्वतंत्रता-समारोहमें भाग लिया। अिसके बाद राजकोटमें श्री. जोशीजी माननीय नाना भाअी भट्ट (शिक्षा सचिव) से मिले और राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें अुनसे काफी देर तक बातें की। अेक सार्वजानिक सभामें भी आपका भाषण हुआ।

विदर्भ नागपूर प्रान्त

अमरावती—अिस बार यहां वर्धा रा. भा. प्र. समितिकी परीक्षाओंमें लगभग १००० से अूपर परीक्षार्थी बैठ रहे हैं। प्रचार कार्यकी दृष्टिसे अमरावती केंद्र विदर्भ नागपूर प्रान्तमें सबसे अव्वल रहता है।

नागपूर—अमरावतीके बाद नागपूर का दूसरा नम्बर है। यहां से भी ९०० से अूपर विद्यार्थी बैठ रहे हैं। कोविदमें ५२, परिचय में १७० शेष प्रारंभिक, प्रवेशमें। अिसके अलावा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागकी नवंबरमें होनेवाली 'साहित्यरत्न' परीक्षामें २५, 'विशारद' में ७६, प्रथमामें १८ परीक्षार्थी हमारी व्यवस्थाके अन्तर्गत बैठने जा रहे हैं।

खामगांव—यहां भी लगभग ६०० परीक्षार्थी बैठ रहे हैं। ता. २९ अगस्त को गवर्नमेंट हाअीस्कूलके भवनमें प्रातः ९ बजे स्थानीय राष्ट्रीय तिलक विद्यालयके कलाचार्य श्री पन्धे गुरुजीकी अध्यक्षतामें गत फर्वरी परीक्षाओंका 'प्रमाणपत्र वितरण' समारोह सम्पन्न हुआ। दानशूर मोहनलालजीने प्रमाणपत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांटे। अिस अवसरपर राष्ट्रकर्मी डॉ. एकबोटे, जिला कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष झुनझुनवाला, नगराध्यक्ष भाटेजी, गवर्नमेंट हाअीस्कूलके मुख्याध्यापक सहस्र बुद्धेजी और सरकारी कन्या हाअीस्कूल की आचार्या श्रीमती चाफेकरके राष्ट्रभाषा पर महत्वपूर्ण भाषण हुअे।

सिन्धी—यहाँ भी गत मास में, वि. ना. प्रान्तीय रा. भा. प्रचार समिति नागपूरके संचालक श्रीयुत हृषीकेश शर्माजीकी अध्यक्षतामें "प्रमाणपत्र वितरण" समारोह मनाया गया। स्थानीय अध्यापक—अध्यापिका वर्ग, राष्ट्रभाषा-प्रेमी नागरिकोंकी—अच्छी अुपस्थिति थी। नया नया केंद्र है, फिर भी परीक्षार्थी केंद्र व्यवस्थापक वयोवृद्ध मुख्याध्यापकजी, प्रमाणित प्रचारक श्री धनुष्कर और सिंधीके अुत्साही तरुण श्री वसंत गांधी, अिनके प्रयत्न तथा अुत्साहसे यहां प्रचार कार्य बढ़ रहा है।

यवतमाल—यहां भी गवर्नमेंट नार्मलस्कूलमें प्रमाण-पत्र वितरण अुत्सव श्रीमती विमलाबाई देशपांडे एम्. ए. एम्. एल्. ए. पार्लमेंट सेक्रेटरी, शिक्षामंत्री, प्रांतीय सरकार की अध्यक्षतामें अुत्साहपूर्वक मनाया गया। श्रीमती देशपांडे ने राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर सारगर्भित भाषण दिया। नार्मल स्कूलके मुख्याचार्यद्वय राष्ट्रभाषा प्रेम प्रशंसनीय है।

विशेष सूचना—विदर्भ नागपूर प्रान्तके समस्त प्रमाणित प्रचारक बन्धुओं तथा केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि अपने अपने केंद्रोंके समाचार "राष्ट्रभाषा" पत्रिकामें प्रकाशनार्थ सीधे वर्धा न भेजकर, श्री. हृषीकेश शर्मा, प्रांतीय संचालक, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नागपूर—अिस पतेपर भेजा करें तो अुन्हें प्रकाशित किया जायगा।

बम्बअी

दादर (बम्बअी)—राष्ट्रभाषा प्रचार सभा दादरका कार्य संतोषजनक ढंगसे चल रहा है। सभाके पुस्तकालयका संचालन श्री. मधुसूदन शेजवलकर कर रहे हैं। आपकी कार्यक्षमता तथा लगनसे पुस्तकालयकी दिनों दिन तरक्की हो रही है। सभाकी ओरसे कु० सुशीला यादव बी. अे. के सम्पादकत्वमें 'दीपक' नामक अेक हस्तलिखित पत्रिका भी निकलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी सत्रमें निम्नलिखित १२ केंद्रोंके चालू होनेकी आशा है १. सभा कार्यालय केंद्र २. प्रीमियर हाअी स्कूल दादर केन्द्र ३. ओरियेन्ट हाअी स्कूल केंद्र ४. दादर विद्यामंदिर केंद्र ५. गोपीटैंक म्यू. गर्ल्स केंद्र ६. कस्तूरबा महिला मंडल केंद्र ७. राष्ट्रसेवा दल दादर केंद्र ८. प्रीमियर हाअी स्कूल माटुंगा केंद्र ९. गुजराती स्त्री मंडल केंद्र १०. कांग्रेस सेविका दल दादर केंद्र ११. हरिजन कालनी दादर केंद्र १२. ठाणा केंद्र ।

सभाकी वर्तमान कार्यसमिति निम्न प्रकार है:—अध्यक्ष श्री. वी. टी. परमार वी. एस सी. अुपाध्यक्ष श्री. वसंतराव देसाअी बी. अे. अेल अेल. बी. श्री. अुमाकान्त नारिंगे मंत्री श्री. कान्तीश पंड्या बी. अे. प्रचार-मंत्री श्री. हर्षद भट्ट प्रबंध मंत्री कु० सुशीला कर्णिक बी. अे. खजांची श्री. चन्द्रकान्त । सामान्य सदस्य. कु. वासंती पाटकर बी. अे. अेस. टी. सी. श्री. विठ्ठल रा. कारखानीस अेस. टी. सी. श्री. परशुराम पुराणिक श्री. रतिलाल भोजक श्री. शरद रांगणेकर सुशीला नोंगवेकर कु. लालिता नेरुरकर कु. सुनन्दा कलवाग ।

नव गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार केंद्र अंधेरी (बम्बअी) का ४ था प्रमाण पत्र वितरण समारोह श्री. हंसराज मोरारजी पाब्लिक स्कूलमें शालाके आचार्य श्री. धीरुभाअी देसाअीकी अध्यक्षतामें गत २४ जुलाअीको सानंद संपन्न हुआ । सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक पण्डित सुदर्शनजीके कर कमलों द्वारा अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र वितरण किअे गये । पण्डितजीने अपने विद्वतापूर्ण भाषणमें राष्ट्रके लिये अेक भाषाकी आवश्यकतापर जोर देते हुअे देवनागरी लिपिके महत्वपर प्रकाश डाला । अिस अवसरपर नगरके प्रसिद्ध विद्वान श्री अवधनारायण द्विवेदी साहित्यरत्नने भी व्याख्यान दिया ।

येल्लूर-बेलगांव (बंबअी)–श्री. नारायणरावने अपने स्वर्गीय पिताकी स्मृतिमें येल्लूर केंद्रसे राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षामें सर्वप्रथम अुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थीको जोतीबा पारितोषिक प्रदान करनेका निश्चय किया है । यह पारितोषिक प्रत्येक परीक्षाके लिअे दिया जायगा ।

हिन्दीकी शिक्षाके लिअे श्री. लक्ष्मणराव पाटीलने "राष्ट्रभाषा विद्यालय" नामक संस्था यहां स्थापित की है । श्री. लक्ष्मणरावजीके प्रयत्नसे हिन्दी-प्रचारका कार्य अुत्साहपूर्वक हो रहा है । येल्लूर ग्रामकी जन संख्या दिनों दिन बढ़ रही है ।

गत ११ अगस्तको यहां 'तुलसी जयन्ती' तथा 'हिन्दी दिवस' समारोह पूर्वक मनाअे गअे । सर्व श्री. लक्ष्मणराव पाटिल, बाबूराम साम्बरेकर रामचन्द्रराव पाटिल आदि सज्जनोंने अिस अवसरपर भाषण दिअे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

परीक्षा-फल—

सितम्बर ४८ की परीक्षाओंका परीक्षाफल ता० १५ नवम्बर ४८ को प्रकाशित होगा ।

केन्द्र व्यवस्थापकोंसे निवेदन

चारों समयकी परीक्षाओंकी अुत्तर-पुस्तकोंके बंडल कृपया सोमवारको अवश्य भेजें । साथही परिचय, कोविद—मौखिक प्रातांक' अुपस्थिति-पत्रक, केन्द्र-खर्च-व्यौरा (मनीआर्डर कूपनपर सिर्फ पता लिखकर मनीआर्डर फॉर्म) लेखन-कार्य प्रातांक, निबन्धकी वहियाँ भी सोमवारको भेजना न भूलें ।

परीक्षकोंसे विशेष निवेदन

आगामी सितम्बर ४८ की परीक्षाओंमें लगभग ७४ हजार परीक्षार्थी सम्मिलित हो रहे हैं । अिस अनपेक्षित संख्या-वृद्धिके साथ—साथ कार्यालयकी जिम्मेवारी भी बढ़ी है । परीक्षाओंका परीक्षा-फल समयपर निकालना तभी सम्भव हो सकेगा जब कि परीक्षकोंसे हमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हो, अुत्तर पुस्तकोंका बंडल प्राप्त होतेही परीक्षक गण कृपया निम्न बातोंकी ओर ध्यान दें ।

१ अुत्तर पुस्तकोंकी संख्याकी जाँचकर पत्रक नं. ८९ भरकर तुरन्त भेज दें ।

२ प्रातांक विवरणपर आदि और अन्तकी संख्या लिख दी गयी है बीचकी क्रम-संख्या कृपया लिख लें । जिस क्रम-संख्याकी अुत्तर-पुस्तक न मिले अुस क्रम-संख्याको काट दें ।

३ अुत्तर पुस्तकें और प्रातांक अेक साथही भेजें ।

४ प्रातांकोंके जोडनेमें सावधानी रखी जावें ।

५ अुत्तर पुस्तकोंका बंडल प्राप्त होनेके बाद जाँचकर शीघ्रातिशीघ्र भेजनेका प्रयत्न करें ।

६ जाँच-पारिश्रमिक विवरणके साथ भेजे हुअे मनीआर्डर फार्मपर सिर्फ अपना पता लिख भेजे रकम न लिखें ।

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
अुडिसा	भटली	१२८८
गुजरात	बाँटवा	१२८७
महाराष्ट्र	जामखेड	१२८५
,,	मांडवगण	१२८६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदर्भ नागपूर	धानोरा बु।।	१२८९
,,	देवली	१२९०
,,	नवरगांव	१२९५
पूर्व अफ्रिका	मैंगो	१२९१
,,	लीन्डी	१२९२
दक्षिण आफ्रिका	डरबन	१२९३
,,	पीटरमेरित्सबर्ग	१२९४

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त		प्रचारकका पूरा नाम	क्रमांक	केन्द्र
उत्कल	श्री०	हरिकृष्ण प्रधान	१३६१	कटक
,,	,,	रामचन्द्रदास शर्मा साहित्याचार्य	१३६२	बरहमपुर
गुजरात	,,	अम्बालाल दे. भाअी पटेल	१३६३	कोसिन्द्रा
,,	,,	रामसुमन सूर्यनारायण पांडे	१३६४	अहमदाबाद
,,	,,	प्राणशंकर रे. दवे	१३६५	डाकोर
,,	,,	शाह मोहम्मद हुसेन मल्लिक	१३६६	अहमदाबाद
,,	,,	किरीटसिंह रणजीतसिंह झाला	१३६७	सोनगढ़
,,	,,	सावित्री छगनलाल त्रिवेदी	१३६८	अहमदाबाद
,,	,,	जेठालाल वहेचरभाअी सुधार	१३६९	सिहोरा
,,	,,	अुमेदभाअी कालीदास पटेल	१३७०	आंकलाव
,,	,,	पटेल रुदोत्तमभाअी नरोत्तमदास	१३७२	अुमता
,,	,,	जगन्नाथ रामनारायण पांडे	१३७३	रायपुर (अहमदाबाद)
महाराष्ट्र	,,	नारायण झगडू वाणी	१३९३	पिंपळनेर
,,	,,	विष्णु लालजी वाघुळदे	१३७४	पाडळसा
,,	,,	भिकाजी दत्तात्रय मारुळकर	१३७५	सातारा
,,	,,	विठ्ठल तानाजी शिंपी	१३७६	कळवण
,,	,,	महेन्द्रकुमार गुलाबचन्द्र मर्चेन्ट	१३७६	पुर्णे
,,	,,	चिन्तामन शंकर नागनाथ	१३७७	,,
,,	,,	अिन्दिराबाअी पंडित	१३७८	,,
,,	,,	गिरजाबाअी रानडे	१३७९	,,
,,	,,	केशव लक्ष्मण पाटील	१३८०	,,
,,	,,	शंकर केशव गोखले	१३८१	जामनेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

,,	,,	पुरुशोत्तम नरहर जोशी	१३८२	पुणें
,,	,,	मिस मधुरिका डा. पडाले	१३८३	अहमदनगर
,,	,,	शंकर कृष्णाजी वेळमकर	१३८५	साताराशहर
,,	,,	सदाशिव गोविन्द पराड़कर	१३८६	करुन्दवाड़
,,	,,	देवेन्द्र भाउराव चौगुले	१३८७	तुपेवाड़ी
,,	,,	बळवन्त नागोराव हिरवे	१३८८	सातारा शहर
,,	,,	त्रिवेणी यशवन्त जोशी	१३८९	नासिराबाद
,,	,,	भानुदास दुला सरोदे	१३९०	,,
,,	,,	रामदास गंगाराम अत्तरदे	१३९१	,,
,,	,,	अेकनाथ दादू काम्बले	१३९२	सांगली
,,	,,	चांदअली साहब मुल्ला	१३९३	त्रिरगुपी
,,	,,	राघवेन्द्र श्री निवासना पुरोहित	१३९४	शाहपुर
,,	,,	कमलाकर पीताम्बर सत्तेगिरी	१३९५	शाहपुर
बंबअी	,,	बद्रीप्रसादसिंह	१३९६	बम्बअी
,,	,,	सत्यनारायण मिश्र	१३९७	,,
,,	,,	चिन्ताहरण पन्नालाल अग्रवाल	१३९८	,,
,,	,,	आत्माराम एशवन्त नाअिक	१३९०	,,
,,	,,	कृष्णप्रसाद बाळकृष्ण उपा०	१४००	,,
हैद्राबाद	,,	नागेश गणेश दिवाण	१४०१	हैद्राबाद
,,	,,	दत्रात्रय य. व्यवहारे	१४०२	नारायणखेड
,,	,,	लक्ष्मी बाअी	१४०३	रायचूर
,,	,,	मल्लेला वेंकटेश्वरलु.	१४०४	गुडीवाड़ा
,,	,,	हरि वेंकटेश्वर लु.	१४०५	,,
,,	,,	कर्णवीर नागेश्वरराव	१४०६	जाण्ड्रेगेट
,,	,,	वारनासि गुरुमूर्त्ति दीक्षितुलू	१४०७	अेरन्डलेप
,,	,,	सुसुर्ल कनक सुब्रह्मण्य	१४०८	तेनाली
,,	,,	आ. वेंकट रामय्या चौधरी	१४०९	चन्दोलू
विदर्भ-नागपुर	,,	वासुदेव देवीदास भदे	१४१०	अमराव
,,	,,	नन्दलाल भगवानजी राजगुरु	१४११	अकोला
,,	,,	सौ. धर्मा नारायणन्	१४१२	अकोट
,,	,,	सौ. नलिनी नारायणकट्टी	१४१३	अमराव
आफ्रिका	,,	श्रीमती सुशीलादेवी शर्मा M. A.	१४१४	कम्पाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिसे संचालित

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाएँ

१८, १९ सितम्बर १९४८ की परीक्षाओं के केन्द्र

और

परीक्षावार परीक्षार्थियोंकी संख्या

भिन्न भिन्न प्रांतोंके केन्द्रोंसे नीचे दिये विवरणके अनुसार आवेदन-पत्र आये: —

प्रांत	केन्द्रसंख्या	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०	कुल
आसाम	१०	६०५	२८२	११८	१४		१०१९
बंगाल	८	५७३	१९१	८०	३		८५०
कुर्ग	६३	१९३२	८३३	२३३	२९		३०२७
राजस्थान,म.भारत.	१५	४६७	२९५	६६	२९		८५७
गुजरात	२६४	१६७३	९८६७	३५९४	४६६		३०६९०
महाराष्ट्र	१७५	१०१८४	६७१७	२६७३	५६७	६	२०१२७
बम्बअी	१९	३६६०	३१४५	१२७७	२९६	२	८३८०
कर्नाटक	६	२३८	७०	३४	१६	४	३६२
आंध्र	८			४३	१३	२	५८
हैदराबाद(द)	६	९	४	३६	२६		७५
वि. नागपुर	६३	३९५३	३०५१	९११	१२९	१	९७४५
फुटकर		३४१	१६७	७८	२३		६१२
६६७ जोड़	३८४२८	२४६२२	९१४३	१६१४	१५७३८२२		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंकी संख्या

केन्द्र क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अतिः
१	अंफाल	४३९	१८९	८२	५	
४	गष्वेशवाडी	६				
६	गौहाटी	१०	९	७	२	
८	अ. गौहाटी	१	२	३	४	
१२	जलजली	१०	१७	२		
२०	नौगांव	३७	२६	१८	३	
२३	पुबथरिया	१६	१३	५		
२५	बलमा	१२	२			
२७	रहा	१२	१९			
३०	शुवालकुछी	६२	५	१		
१०	जोड़	६०५	२८२	११८	१४	१०१९

बंगाल

३६	कर्सियांग	४८	५५	३	२	
३७	द. कलकत्ता	२८२	६५	४५	१	
३८	अ. कलकत्ता	९६	२३	१६		
३९	कांथी	३६	८	११	३	
४४	जोड़ बंगला	२२	१			
४६	दार्जिलिंग	३०	१४	५		
४७	दुर्गापुर	२७	७			
५५	सिलचर	३२	१८			
८	जोड़	५७३	१९१	८०	६	८५०

उत्कल

५८	अलनाहट	१९			
५९	असुरेश्वर	१३	१८		
६०	आठगड़	३५	२		
६१	आस्का	२४	२६	६	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
६२	अिन्दुपुर	५५	३३	३		
६३	अिरदा	३५	१७	१		
६४	कटक	२२२	१००	४२	१०	
६६	कंटिलो	११	१०			
६७	कलापथर	१४		१		
६८	कप्टिपदा	१५	६			
६९	कंटगडिया	२२				
७०	कुदियारी	३३	१			
७२	कुशुपुर	३६	३१	५		
७३	केन्द्रापाडा	११	१७	२		
७३ क	केन्दुझरगढ़	३३	३९			
७५	खडसाही	२०				
७६	खलीकोट	१८	१७			
७७	गुरांडी	२६	१०	१		
७९	घंटेश्वर	२५	३			
८०	चम्पापुर	२४	४	१		
८२	चौद्वार	१५				
८३	छत्रपुर	५		१		
८४	जगतसिंहपुर	४८	१६	३		
८५	जगन्नाथप्रसाद	१६	५			
८६	जगाअी	१६				
८७	जयपुर	३३	३५	९	२	
८९	जरड़ागढ़	१०	११	५		
९०	जाजपुर	१०	३			
९१	जाजपुर रोड़	२६	२	१		
९२	ढांगी	२९	२६	७		
९३	डुरा	१५	१७	११		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
९४	तिर्तिल	१८	१४			
९५	दिगपहंडी	१३	४			
९७	दोलसाही	१४	१०			
९८	नयागढ़	२१	२	३		
९९	नवरंगपुर	४५	६	१		
१०२	प्रतापपुर	१२	१२	४		
१०४	पात्रपुर	२०	३			
१०५	पार्लाखिमडी	३३	११	६		
१०६	पुड़ामारी	२३	१३			
१०७	पुरी	९३	५८	१९		
१०८	पुरुषोत्तमपुर	१८	३			
१०९	बरहमपुर	१०८	५८	२७	१०	
११०	बांकी	२१	१			
११२	बागलपुर	२५	१४			
११३	बारिपदा	१६	१३	४	२	
११५	बालिकुदा	२७	७			
११६	बालेश्वर	३६	१८	१०		
११७	बासुदेवपुर	३६	७	१		
११८	बुगुडा	८	१२	२		
११९	बुरकेल	१०	१			
१२१	बोअीरानी	२८	१६	१०		
११२	बोनाअीगढ़	३६		१		
१२३	भद्रक	५३	४१	२१		
१२५	भेड़ा	१३	७	५		
१२८	राजकनिका	३९	१५			
१३०	शेरगढ	११	६			
१३१	सँअरा	४५	६			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि	को.	अति.
१३२	संबलपुर	१७				
१३३	सालीपुर	१०४	४	२		
१३४	सुन्दरग्राम	३०	१			
१३७	हलदियागढ़	३०				
१३८	हिंजलीकाटु	२३	११	१३		
६३	जोड़	१९३२	८३३	२३३	२९	३०२७

राजस्थान, मध्यभारत तथा अन्य

१४०	अजमेर	२९०	१३७	४१	७	
१४१	अुदयपुर	५८	३१	३		
१४२	कुशलगढ			५	१०	
१४४	चांदारूण	१२	१२			
१४५क	जोधपुर	१०	२	१		
१४६	तिलस्वां	७	१६			
१४८	नसिराबाद		६			
१५०	पुष्कर	१६	३	२		
१५१	ब्यावर	६	१०			
१५५	जावरा	२४	१८	४		
१५६	नीमच	३	२	८	१२	
१५८	भोपाल	४	१२			
१६२क	कोअिंबतूर	२५				
१६३	केलानिया			१		
१६४	कानपुर	१२		१		
१५	जोड़	४६७	२५९	६६	२९	८२१

गुजरात

१६९	अंकलेश्वर	७९	६५	३६		
१७०	अंचोली	७	६	७		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
१७१	अंजार	५१	१३			
१७२	अडादरा	१५	३१	१२		
१७३	अडास	३१	१८			
१७५	अमरेली	७	१३	६		
१७६	अमोल	३१	२८	२०		
१७७	अलकपुरी	४	१	१		
१७८	अविधा	२३	२६	१५		
१७९	अहमदाबाद	२३४१	१६७७	६८७	१४५	
१८०	आकलाव	१७	२२	२		
१८४	आणन्द पा.	८४	७७	२३	२	
१८५	काणन्द शा.	१८४	१०४	३६	९	
१८६	आभरण	१६	२	१		
१८७	आमोद	१२०	७१	२१		
१८८	आशी	१३	१६	१		
१८९	आस्ता	५	९	६		
१९०	अिटोला	१९	१२	५		
१९२	अीसन्ड	१२	७	८		
१९५	अुनावा आ.	६९	२५	७		
१९६	अुनावा नया	१३	८	३		
१९७	अुदवाडा	३४	११			
१९९	अुमता	३२	२४	७		
२००	अुमरेठ	९४	४३	६		
२०३	ओड	२७	१३	१३		
२०५	कच्छ मांडवी	९०	३९	१५		
२०६	कंजरी	१५	८			
२०८	कठोर	६५	५८	१६		
२०९	कड़ी	१०१	११४	५८	७	
२१०	कडोद	५८	३४	१०	५	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	ग्र.	परि.	को.	अति.
२११	कंथारिया	३३	६	११	३	
२१२	कपडवणज	१०९	५४	२६	१	
२१३	करजण	९५	६८	१५		
२१४	करमसद	१२३	६९	२७	२	
२१६	कलोल	११	१५	१२	८	
२१७	कविठा	२६	१९	२१		
२१८	कांकणपुर	१२	५	३		
२१९	कामरेज	१५	४	७		
२२०	कामली	१८	७	६		
२२१	कालण	२२	१०	४		
२२२	कारेली	३४	१३	४		
२२३	कालोल पं.	५४	३०	९		
२२४	कासंद्रा	११	६			
२२६	कुकरवाड़ा	६१	२३	११		
२२७	कुरचण	३५	२१	२		
२२८	कुवादर	१०	७	३		
२३१	कोटड़ी कच्छ	८	५	२		
२३२	कोलीआक	२०	११			
२३३	कोसम्बा	२०	१०	५		
२३४	कोसिन्द्रा	५९	३४	१८		
२३६	खड़सूपा	६३	२०	१०		
२३८	खानपुर	२०	२६	१४		
२३९	खाराघोड़ा	१७				
२४०	खेड़ा	३७	१९	४	१	
२४१	खेरवा	३२	१५	६		
२४२	गढडा	६२	२०	१		
२४४	गढ़	१८	४			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति.

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
२४५	गणदेवा	४७	३०	४		
२४६	गणदेवी	३०	३६	४		
२४७	गणेशपुरा	२४	३१	१०	९	१
२४८	गवाडा	७७	२०	१४	१०	
२५०	गांगपुर	२५	२८	५		
२५१	गुरुकुलसूपा.	२४	९	३	१	
२५२	गोझारिया	१५	५			
२५५	गोधरा	७१	२४	१६	२	
२५६	गोधा	१८				
२६०	चंडीसर	२१	४			
२६१	चराड़ा	४५	१९	४		
२६२	चांगा	७	१४	७		
२६३	चाणसद	१३	१२	१२		
२६४	चाणस्मा	४३	२२	१८		
२६५	चांदोद	२१	२२	४	१	
२६५क	चीखली	१६४	४७	६		
२६७	चोरंदा	१६	१०	३		
२६८	छत्राल	१५	१६	४		
२६९	छाणी	१७	१८	७		
२७०	छोटा अुदयपुर	१०८	७७	६		
२७१	जंत्राल	१२	१३	४		
२७२	जनोर	१३	१८	२		
२७३	जाफ़राबाद	२४	६	२		
२७५	जामखमालिया	५७	२६	९		
२७६	जामनगर	१६०	१०६	२५	५	
२७८	जितोडिया	२३	१२	२		
२७९	जूनाडीसा	२१				
२८०	जेतपुर	४८	१५	४		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
२८१	जेतलपुर	६४	६२	१६		
२८२	जोटाणा	३९	१			
२८३	जोडिया	४७	९			
२८५	जोशीकुवा	२८	१३	५	१२	
२८५क	झगडिया	८०	१५	१		
२८६	झांझड़	४०				
२८६क	झालोद	३४	१४	२		
२८७	झुलासन	१२	९	२		
२८९	टिन्डोदण	२९	१८	८	१५	
२९०	टुन्डज	३५	२४	९		
२९१	टुन्डाव सया	१९	११	१		
२९१क	टुन्डाव सि.	१५	११	१		
२९२	टासरा	२९	२७	७		
२९३	डभार्सी	११	११	१		
२९४	डभोआं	७५	५८	३		
२९४क	डभोआ	४५	२९	७		
२९५	डाकोर	८७	७३	१२	५	
२९७	डुमरा	२५	५	४		
२९८	त्रासंद	१४	२			
२९९	तलोद	४७	२१	७		
३००	तेनतलाव	२६	८	१		
३०१	तोरणा	९२	२४	९		
३०३	दावोल	५०	२८	१०		
३०४	दुधवाडा	१९	३५	१४	११	
३०५	देलोल	५	९	२		
३०६	देवड़ा	१६	१०			
३०८	दोरा	१०	१२	४		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र	परि.	को.	अति.
३०९	दोहद	५०	१७	११		
३१०	धंधुका	१३	१५	५		
३११	धनसुरा	११	२५	१		
३१२	धर्मज	१०	५४	३३	१०	
३१४	धरमपुर	५२	३७	२२		
३१५	धांगध्रा	४१	१३	२		
३१७	धिनोज	२७	१४	१५		
३१८	धोरणपारडी	२०	७	२		
३१९	धोळ	२६				
३२०	धोलका	२१५	९५	५१		
३२१	धोलीकुआ	१०	९	६		
३२२	नडियाद	४९७	४२३	१३०	२२	
३२४	नयाडिसा	३६	३१	८	५	
३२५	नवसारी	४२७	१४७	४३	५	
३२७	नारदीपुर	३२	१२	५		
३२८	नार	७५	२७			
३२९	पत्री	१७	३			
३३०	प्रांतिज	७०	३३	१४		
३३१	पलसाना	३७	३३	२		
३३२	पाटडी	३९	१६	७		
३३३	पाटण	९०	३१	१३	१०	
३३४	पादरा	७१	३७	११		
३३५	पानवड	९				
३३६	पारडी	७२	६५	१५		
३३८	पालनपुर	११	२२	१४		
३३९	पालीताणा	१८	६	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
३४०	पालेज	३१	२७	१९		
३४१	पीपलाव	३४	११	१५		
३४२	पिलवाओ	५५	४८	२९	८	
३४४	पीपलाता	४७	८	४		
३४५	पेटलाद	१०१	४०	१४		
३४६	पोर	४०	१४	४		
३४७	पोरबन्दर पु.	१०६	१०७	२८		
३४८	पोरबन्दर स्त्री.	११	२०	१९	११	
३५२	बरवाला	१४६	५			
३५३	बेचराजी	३६	१५	२		
३५४	बहेरा	५	१६	७		
३५४क	बांटवा	१९	२	४		
३५५	बाकरोल	१०	६	७		
३५६	बाकानेर	४	२५	३		
३५७	बांच	२७	३			
३५८	बांधणी	१२	१३	१४	१०	
३५९	बालासिनोर	४९	२७	१०		
३६१	बावला	७३	२६	१६		
३६२	वांसद	२५	४२	१५		
३६४	बुहारी	३३	४	१		
३६५	बोदाल	४९	१८	४		
३६६	बोरसद	७६	६८	३०	१२	
३६८	भरुच	२३३	२२९	८२	६	
३६८क	भचाऊ कच्छ	१८	११	१		
३६९	भाटपुर	५४	५४	२८	१५	
३७१	भादरवा	१३	१७			
३७२	भालेज	११७	१२९	७		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	ग्रा.	प्र.	परि.	को. अति.
३७४	भालोद	१०२	६०	८	१०
३७५	भावनगर	१२६	७६	६१	११
३७६	भुज	१६९	११८	१२	६
३७७	माढ़ी	१०	१७		
३७८	मंडाला	१५	२४		
३७९	मणुंद	१३	२	३	
३८०	महेमदाबाद	७७	३५	१०	
३८१	महिज	२२	२१	१२	
३८२	महिसा	१४	१०	४	
३८३	महुवा	१८	२४	१७	
३८४	महेलोल	५१	९	११	
३८५	महेसाना	१२६	१११	२७	१०
३८६	महोलेल	३५	१८	६	
३८९	मांडवी	३१	१९	७	
३९०	माणसा	७४	११	५	
३९१	मानावदर	१९			
३९२	मानेकपुर	१८	१०		
३९५	मालपुर	९२	१६	९	
३९६	मालवणा	२८	१५		
३९८	मियासरभाण	६५	४७	२३	१७
३९८क	मूली	२८	१८		
४०१	मोटाकरोला	४१	१५		
४०२	मोडासा	११९	५७	१५	
४०३	मोभा रोड	४७	१५	९	
४०४	मोर्वी	१००	२७	१०	
४०५	रणापुर	२	१५	१	
४०६	रणु	४४	३	२	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
४०७	रणुंज	१६	३	५		
४१०	राजकोट	३२७	१७७	५८	८	
४११	राजपारडी	७०	३	१		
४१२	राजपीपला	२६०	१४५	२०		
४१३	राणपुर	२३	११	६		
४१४	रामनगर	५४	४४	२५		
४१५	रायम	३७	२३	१३		
४१७	लांधणज	२८	९			
४१९	लाडोल	१८	४			
४२०	लिम्बडी	५६	१९	४		
४२१	लिम्बासी	७१	२१	६		
४२२	लुणावडा	२८७	६४	८		
४२३	लोदरा	२८	२५	१४		
४२४	वधाशी	४३	२१	१३		
४२५क	वडोद	१०९	७९	२३		
४२६	वडिया	३२	१३	४		
४२७	वडू	२८	१६	९		
४२८	बडौदा	६३३	४०२	१६६	४५	
४३०	बटवातशहर	८०	२६	४		
४३२	वरणामा	२१	१२	७		
४३३	वलणपरब	२२	१२	२		
४३६	वसाओ	४१	२१	१३		
४३७	वसो	६८	९५	४२	१२	
४३८	वाघणिया	२३	९			
४३९	वाघोडिया	५१	८	२		
४४१	व्यारा	३३	६८	१८		
४४२	वालोड	१५	७	७		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	ग्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
४४३	वासन	१९	४	१		
४४४	वासद	४३	७	३		
४४५	विरोल	१२	४	१		
४४६	विलोदरा	१८	७	१		
४४७	विसनगर	१७९	१६१	६६	९	
४४८	विहान	८	१५	१४	१०	
४४९	वीरपुर	३५	१०			
४५०	विरमगाम	७५	६२	१६	१	
४५१	वीरसद	२१	१८	८	१	
४५२	वेजपुर	२१	९			
४५३	वेजलपुर पं.	१९	१३			
४५४	वेजलपुर भ.	८६	३६	४२	८	
४५५	वेडा	१७	१२	१		
४५६	शहेरा	१२	३			
४५७	शामपुरा	२०	३	२		
४५८	शिहोर	१५	२			
४५९	शुक्लतीर्थ	३८	२३	१४		
४६०	शेवणी	८१	२०	११		
४६१	सखेडा	९	८	१		
४६३	संडेर	२१				
४६४	सरखेज	३९	१८	२		
४६७	सरढव	१४	१४	२		
४७०	सांडासाल	२०	७			
४७१	साणंद	८०	३०	४		
४७२	साधी	२७	२४	१६		
४७३	साधली	५५	३७	३६		
४७६	सावली	१३	१२	५		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
४७७	सिद्धपुर	३५	२०	१		
४७८	सिनोर	१३७	५७	१७		
४७९	सिहोल	१५	३	२		
४८०	सुंठिया	१५	१६			
४८१	सुणाव	५४	२७	१७		
४८२	सूरत	६०४	५८३	२३५	६६	
४८३	सैज	११	३	१		
४८४	सोजित्रा	१४३	३२	७		
४८५	सोनगढ	४०	२८	७		
४८६	सोनासन	३७	४	१		
४८७	हलधरवास	१९	४	३		
४८८	हालोल	२१	१८	८		
४८९	हासोट	६१	२२	११		
४९०	हलबद	८९	२२	८		
२६४	जोड़	१६७६३.	९८६७	३५९४.	४६६	३०६९०

महाराष्ट्र

४९१	अकलूज	३९	३१			
४९४	अजमेर सौदाणे	२१	४	२		
४९५	अट्टावळ	३०	२०	१५		
४९०	अभोना	१९	९			
५०२	अमलनेर	१२४	९४	५२	८	
५०४	अवसरी खुर्द	२४	२	१		
५०५	अष्टे	२८	१४	१२	५	
५०६	असोलना	२१	५	१		
५०७	अहमदनगर	४०३	३५६	१४६	३२	
५०८	आचेगांव	८	७	६		
५०९	आजरा	९	९			
५११	आटपाडी	६९	३३	३		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
५१२	आंबप	१०	९	२		
५१३	आमोदे	६२	३३	१५		
५१८	अिगतपुरी	२७	३	१		
५१९	अिचलकरंजी	१२६	५९	७		
५२०	अिन्दापुर	४४	५८	१४		
५२१	अिस्लामपुर	४६	४१	१९	२	
५२५	अुम्बरगांव	१९	३५	४		
५२९	अुरण	८०	५३	२		
५३४	ओतुर	३९	१०	१८		
५३५	औन्ध	४०	६	१		
५३७	कर्जत	२८				
५४३	करजअी	२७	३			
५४४	करमाला	१८	१३	१२		
५४६	कल्याण	२६	२४	९		
५४७	कलवण	३४	३१	७		
५५३	कागार	६९	२१			
५५७	कासारे	३०	२			
५५८	कांसावली	२०	१४			
५६१	किनगांव	१०	८	३		
५६४	कुडचडे	४६	२४			
५६५	कुर्डूवाडी	५८	२१	१०		
५६७	कुपवाड	६५	५			
५६८	कुरुंदवाड	२४	४	१०		
५७३	कोपरगांव	२१	६	१६		
५७४	कोरेगांव	३०	२७	८		
५७५	कोल्हापुर	५४६	३२१	१२५	२६	
५८१	खरसुंडी	३२	६			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
५८२	खाकुर्डी	२०	०	१		
५८४	खोरपाटण	१६	१५	१		
५८५	खिर्डी	४६	३३	२	३	
५९५	गुहागर	३७	२६	१	३	
५९७	घोसपुरी	२२	२			
६०	चांदवड	५४	३६	१	४	
६०६	चिकुर्डे	३६	२			
६०७	चिखली	३२	१२		३	
६०८	चिचणी	६२	७		१	
६१४	चिनावल	३४	१६		१२	
६१५	चिपळूण	८५	६५		१४	
६१८	जत	४१	१२		३	
६१९	जमखंडी	८१	४४		३	५
६२१	जयसिंगपुर	३४	३७		१	
६२२	जळगांव	२२९	१३९		९९	५३
६२६	जानोरी	१९				
६२८	जामनेर	६	०१		१	
६२९	जुन्नर	७१	३९		१२	६
६३२	ठेकवाडे	१२	०२		१	
६३३	थाना	१२	१९		११	१
६३५	ढेकु खुर्द	१३	१२		२	
६३७	त्र्यंबकेश्वर	८	४			
६३९	तळेगाव	४१	४१			
६४६	तुपेवाडी	१२	१९			
६४८	थळ	२४	१२			
६५०	थोरगव्हाण	४१	३८		१४	
६५१	द्याने	२३	२३			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
६५४	दहिवद	२४	९	५		
६५५	दहिवेल	८	७	४		
६५६	दापोली	६२	४४	५		
६५८	दुधगांव	४३	२			
६६१	देवरुख	२२	६			
६६२	देवला	२८	३६			
६६३	देवलाली कँप	१२८	१००	३४	१०	
६६६	धायरी	१६				
६६७	धुलिया	१७५	२२९	१००	२५	
६७०	नगांव	२५	९	१		
६७२	नंदुरबार	१११	९५	५०	६	
६७४	नवागोवा	२०	१८	७		
६७६	नसिराबाद	१०५	४४	४६	१३	
६७७	न्हावी	५२	४४	१४		
६७८	नाडगाव	२३	६	१		
६७९	नांदगांव	५६	२३	१०		
६८१	नामपुर	३८	२२	१५		
६८४	नारायणगांव	२	३६	२१		
६८५	नासिक शहर	५४	२२	२५	२१	
६८६	नासिक रोड	७४	७७	१८	३	
६८९	निंभोरे	२०	४	३		
६९२	निरा स्टेशन	३२	३			
६९३	निवाणा	११	४	४		
६९४	निहालोद	६	१३			
६९६	पंढरपुर	१४८	९९	२६	३	
७०१	पांचगणी	२०	१४	७	६	
७०२	पाचोरा	१३	८	१०		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि. को.	अति.
७०४	पाडलसा	३०	२४	१७	१६
७०५	पाथर्डी	८४	५३	१४	३
७१०	पालघर	४१	१९	११	
७१४	पाळे खुर्द	२१	४		
७१७	पिंपलनेर	६८		३	
८२१	पिलोदे	११	१२	६	
७२३	पूना	६६५	५८९	३५५	१३५
७२६	पेठ	१९	१४		
७२८	पोयनाड़	१९	३	२	
७३२	फेकरी	९	१८	९	
७३३	फैजपुर	७६	१०५	७१	२८
७३४	फोंडागोवा	२१	८	५	
७३९	बामणोद	१०	५	१५	
७४०	बार्शी	११८	७६	३८	४
७४१	बारामती	१९३	१३४	३८	२२
७४३	बालचन्दनगर	८०	४९	१४	४
७४७	बेज	१६	१०	२	
७५१	बोदवड		२६	१७	
७२३	भअुर	८१	१	१	
७५५	भादली बु॥	३०	३२	१८	
७५६	भानसहिवरा	२६	१३		
७५७	भालोद	३७	५९	५	
७५९	भुसावळ	१०	३६	५	
७६३	मडगांव	२२	१०	४	२
७६४	मनमाड	६४	११६	२४	८
७६७	मलकापुर	३०		१	
७७२	म्हादोंळ	६	७	५	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
७७५	माखजन	२८	२			
७७६	मांगी	८	१५	२		
७७८	माढा	१४	१४	४		
७७ .	मातेरे वाडी	३१	४			
७८१	माधवनगर	५८	३२	१०		
७८६	माली नगर	३४	१५			
७८८	मिरज	१४०	६२	१४		
७९२	मोर्शी	६७	४२	१४		
७९३	यावल	९७	९३	४२		
७९४	येल्लूर	४७	३५	३		
७९५	येवला	७४	८१	३२	३	
७९६	रनाला	६	७	२		
७९७	रत्नागिरी	१७	२	४	६	
८०१	राजापुर	८३	३४	२३	५	
८०३	रानवड	२२	४			
८०४	रामदुर्ग	७९	३३	७		
८०५	रावळगांव	९५	३२	१८	१०	
८०६	रावेर	४३	३६	११		
८०७	राहुरी	५२	३२	१७		
८०८	रुकडी	१२७	१३	७		
८०९	रोहा	७५	४७	६		
८१०	लक्ष्मी दहिवडी	२२	१३	४	१	
८११	लासलगांव	१३	१			
८१७	लोणी काळभोर	१४	१			
८२९	वसई	१२१	८७	४२	८	
८३०	वाई	२५	९७	१२		
८३२	वांबोरी	३१	१			
८३५	विंचूर	३४	३१	८		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
८३६	विसापुर	११				
८३९	विवरा (विवरे)	३१	७	६		
८४२	वेंगुर्ला	१२३	७७	३६		
८४३	वैराग	२६	२४	१		
९०२	शहापुर	७६	३६	६	२	१
८४७	शिरपुर	६८	४८	९		
८४८	शिरवळ	८९	११			
८५१	शिरुड	७	१९	२		
८५४	शेंदुर्णी	४१	१७	९		
८५६	शेरे	२०				
८५९	संगमनेर	१८१	१४१	२१	७	
८६०	सटाणा	१७३	५०	४०	९	
८६६	सांगली	२३४	६३	१६	७	१
८६७	सांगवी	२५	३६	२३		
८६९	सातारा	७५	२४२	११६	४१	३
८६९क	सातारा कॅंप	५८	२२	२		
८७०	सातोदकोळवद	३०	२४	६		
८७६	सावदा	९२	८१	५१	३	
८७८	शिंदखेडा	३५	३२	४		
८७९	सिन्नर	१९२	९६	२५		
८८१	सोलापुर	५१०	३५२	१५२	२०	
८८२	हडपसर	५	७	३		
८८३	हम्बर्डी	२२	९	८		
८८४	हलकर्णी	३२	१७	२		
८८५	हातनूर	१४	३	१		
८८६	हिंगणे बु॥	५९	४६	१६	६	
८८७	हिंगोणे	३६	६४	३६	१४	
१७५	जोड़	१०१८४,	६७१७,	२६७३,	५६७,	६, २०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. क्र.	केन्द्र	ग्रा.	प्र	परि.	को	अति.
	बम्बई					
	अन्धेरी	१८	३२			
	,, नव	४८	७०	२८		
	कांदिवली	३६	४३	१३		
	कालबादेवी	१९९	१९८	५७		
	कोट	१७३	९२	१५		
	खार	१९	६९	२८	१०	२
	गिरगांव	६९०	६८१	३३१	९६	
	घाटकोपर	८१	९७	४८		
	डोंगरी	१५९	१०७	३१		
	दादर	१०६३	९२३	३८२	८७	
	परेल	३९०	१६०	८४	१७	
	बान्द्रा	३४	११			
	बोरवली	९३	५०			
	माटुंगा	३२६	२९८	१०९	४६	
	मांडवी	१८	२१	२१		
	मालाड	१५०	७४	५६	११	
	विलेपार्ले	१००	१४३	५८	२९	
	शांताक्रुझ	४५	६८	१६		
	शीव	१८	८			
१९	जोड़	३६६०	३१४५	१२७७	२९६,	२, ८३७८
	कर्नाटक					
८९१	अनगोल	९९	२५	१३		
८९३	गदग	२२	३			
८९७	बागलकोट	१७	१			
८९८	बेलगांव (शहापुर)	२९	१२	१२	१०	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
९००	रचकची	४४	४			
९०३	हुबली	२७	२५		८	
६	जोड़	२३८	७०	३४	१६	३६४

आंध्र

९२५	अनकापल्ली				६	
९२६	काकिनाड़ा				९	
९२८	कोमरिपालेम				७	
९३१	चन्दोलु			६	११	
९३३	जान्ड्रपेट			१७	५	
९३५	ब्राम्हणकोंडुर			३	३	
९३७	विजयवाड़ा(बेजवाड़ा)			३	३	
९३९	मण्डुरू			१४	१३	
८	जोड़			४३	५७	१००

हैद्राबाद दक्षिण

९४२	गुलबर्गा	९	४	३	३	
९४३	गुडिवाड़ा			२	१३	
९४४	जालना			३		
९४७	रायचूर			६		
९४७क	वनपर्ति			४		
९४८	हैदराबादद.			११	१०	
६	जोड़	९	४	३६	२६	७५

विदर्भ नागपूर

९४९	अकोला	२६४	१३७	३९	५
९५१	अंजनगांव	५१	४८	९	
९५२	अन्त्री	५	७	३	
९५३	अमडापुर	३	५	२	
९५४	अमरावती	१९३	३७२	१०९	१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	का.	अति.
९५५	अमरावती कैंप	११८	१८५	१८		
९५६	आकोट	२५	२६	९		
९५८	आरमोरी	११	६	२		
९५९	आर्वी	८३	५१	१		
९६०	अिटकी	१४	१३	५		
९६१	अिलीचरपुर कैं.		१३	१		
९६१(क)	अिलीचपुर सिटी	११	११			
९६२	अुमरेड	४४	१९	१		
९६४	करजगांव	९	८	१		
९६५	कलाशी	२०	१			
९६६	काकडा	१४	६			
९६९	कारंजा	५७	४२	२४		
९७०	कुही	२५	१३			
९७४	खापा	२७	८	१		
९७५	खामगांव	३६५	२०८	५०	११	
९७६	खेड्डी पान्हेरा	१३	२			
९७७	गडचिरोली	१२	१५	३		
९७८	घाटलाडकी	६	१५	८		
९७९	घार्णी	१२	५	३		
९८१	चांदस वाठोड	१	११	११		
९७२	चांदा	३४	३७	११		
९८४	चांदुर वि.	३६	४			
९८४(क)	चिखली	४२	१३			
९८५	जरुड	४०	१८	८		
९८६	जलगांव (जामोद)	७७	३१	८		
९८७	जवला (बु)	११	७			
९८८	जानेफल	१९		१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
९९०	डोणगांव	९	१४	४		
९९१	तलेवेल	६	५	४		
९९२	तुमसर	१५	८			
९९३	दर्यापुर	१८२	८७	७		१
९९४	दात्ताळ	१८	५	६		
९९५	देवधावा	९	२	४		
९९५(क)	देवली	२०	४			
९९६	देऊलगांव माली	५	४	२		
९९७	देऊलगांव राजा	३२	५	२		
९९८	धंतोली	१९२	३७१	१६१		४८
९९८(क)	धोत्रा	२७	८			
१००१	धामनगांव	९८	७०	११		
१००६	नांदोगोमुख	२७	१५	७		
१००७	नांदुरा	५०	१८	४		
१००८	नेर पिंगलाओ	४५	२३	४		
१००९	परासिया	१०	१			
१०१०	पहुरजिरा	९	४	८		
१०११	पांढरी	२०	१७	४		
१०१२	पिपलगांव	२५	७	४		
१०१४	पवनार	४	५	१०		
१०१५	बालापुर	६३	२२			
१०१८	बुलढाना	१०८	८२	१७		
१०१९	बेला	११	१२	४		
१०२३	भंडारा	१३	२६	१३		
१०२४	भद्रावती	२०	७	२		
१०२५	भिसी	१६	३			
१०२७	मलकापुर	३६	२८	१३		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को	अति.
१०२८	महाल (ना.)	६०	९५	३०		६
१०२९	माटरगांव	४७	४३	१२		
१०३०	माधान	१८	९	४		
१०३१	माना	१५	११	२		
१०३२	मारडी	१५	३			
१०३४	मूल	१३	६	२		
१०३५	मेहेकर	३९	१०	८		
१०३९	यवतमाल	७८	१४७	५७		
१०४०	रामटेक	४	१२	६		
१०४४	लोधीखेडा	१६	२			
१०४४	लोणार	४०	२९	१०		
१०४५	वनोजा	२०	११	२		
१०४५क	वर्धा	८४	१२६	५०		२१
१०४६	वरुड	२२	३९	१२		१०
१०४७	वरोरा	४५	२			
१०४८	वाडेगांव	६	११			
१०४९	वाशिम	५३	३०	४		
१०५०	विश्वी	१७				
१०५३	शिरखेड	१४	७	३		
१०५४	सिंदी (बु॥)	५	१६	१६		९
१०५५	शिराला	६	९	६		
१०५६	शेगांव	७१	१६	१		
१०५७	शेंदुरजना	११	६			
१०५८	शेम्बा	१७	९	२		
१०५९	शेलापुर (खुर्द)	१४	१२	१		
१०६०	साअूर	८	६	८		
१०६३	सावनेर	९	१६	५		
१०६४	सावरा	२३	१२	४		
१०७०	सेवाग्राम	२	११	६		२
१०७२	हिंगणघाट	११६	७६	३४		८
१०७२	हिवरखेड	२०		३		
९०	जोड़	३६५३,	३०४९,	९०२,	१२९०,	१, ७७३४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के. क्र.	केन्द्र	प्रा.	प्र.	परि.	को.	अति.
	बेलगुंठा	६	३			
	बेतनटी	१२				
	सोरो	४५	१४			
	जोधपुर	५०	३३	५		
	कम्पाला	३९	४			
	अहमदाबाद			१७	२	
	अँझा	४१	२१	२		
	डाकोर				१	
	बाटवा	२		१		
	सोनासन	१	२	१		
	अहमदनगर				२	
	गिरगांव	१	१	६		
	दोइइ				१	
	आरमोरी		१			
	अलिचपुरकँप			१		
	पांढरी			१		
	वनोजा	२				
	शिन्दी बु॥				१	
	धंतोली				२	
	नयी दिल्ली	१३				
	कारवण	४				
	घ्याने	३				
	सातारा			१		
	नीमचसटी			१	४	
	बारिपदा	२			१	
	जोड़	३४४	१६७	७८	२३	६११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने परीक्षार्थियोंसे

[प्रकाशन-विभाग]

पिछले आठ-नौ महीने हमें कागजकी बड़ी दिक्कत रही। कोशिश करनेपर भी हमें अपने स्वीकृत 'कोटे' का पूरा पेपर नहीं मिल सका। यह कागजका अभाव यहाँ वर्धा या नागपुरमें रहा हो सो बात नहीं। सारे देशमें अिसकी कमी रही और अब भी है।

कागजकी अिस कमीके कारण हम अपनी कुछ पुस्तकें समयपर नहीं निकाल सके। कुछ पुस्तकें कलकत्ता, अिलाहाबाद, अहमदाबाद और जबलपुर आदि स्थानोंमें छपनेके लिये दी थीं, क्योंकि वहाँ कागजकी कुछ व्यवस्था हो सकी थी; लेकिन वहाँ छप जानेपर फिर अुन पुस्तकोंके हमारे पास तक पहुँचनेमें अेक दूसरी कठिनाअी रेलवे बुकिंगकी आ खड़ी हुअी। जैसे-तैसे कोशिश करके, अधिक चार्ज देकर भी, अुन्हें मँगवाया गया और अपने ग्राहकोंको भेजा गया।

तीसरी बात है परीक्षार्थियोंकी अप्रत्याशित वृद्धि। अिससे हमें प्रसन्नता तो है, लेकिन साथही अुन्हें पूरी पुस्तकें पहुँचानेकी चिन्ता भी बढ़ गअी है। कुछ किताबें अिसीलिये आखिरमें कम पड़ गअीं और हमें अुन्हें भी फिरसे शीघ्र छपानेकी व्यवस्था करनी पड़ी।

कछ किताबें बाहरके प्रकाशकोंकी हैं। अुनके यहाँ वे समाप्त हो गअीं और दुबारा छपनेके लिये कुछ विलंब हुआ। जैसे-जैसे वे आती गअीं, परीक्षार्थियोंके पास अुन्हें भेजनेकी व्यवस्था की गअी।

अिन तमाम कठिनाअियोंके होते हुये भी हम अपनी प्रकाशित प्रायः सभी पुस्तकें अिस सितम्बर, '४८ की परीक्षाके पहले ग्राहकोंके पास भेज सके, अिसकी हमें खुशी है। बाहरकी प्रकाशित पुस्तकें भी बहुत-सारी भेजी जा चुकी हैं। फिर भी यह सम्भव है कि कुछ लोगोंके पास कुछ किताबें समयपर न पहुँच सकी हों। अुनसे हमारा यही नम्र निवेदन है कि अिस कठिन समयकी कठिन परिस्थितियोंको ध्यानमें रखकर वे अधिक नाराज़ नहीं होंगे।

हम शीघ्र-से-शीघ्र अपने परीक्षार्थियोंतक अुनकी पाठ्य-पुस्तकें भिजवा सकें, यही हमारा सतत प्रयत्न है।

—मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukúl Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

आवश्यक सूचनाएँ

[पुस्तक विभाग]

पुस्तकें मँगाते समय कृपया नीचे लिखी बातोंका अवश्य ध्यान रखें—

१. पुस्तकोंका ऑर्डर देते समय अुनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक चौथाअी पेशगी ज़रूर भेज दें। जिन आर्डरोंके साथ पेशगी नहीं आयेगी, अुन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

२. पत्र-व्यवहार करते समय अपना पूरा पता हिन्दीमें स्पष्ट लिखने की कृपा करें। बहुत-से पते अैसी लिपिमें लिखे आते हैं कि जिनसे न तो अुनके नामका ही पता चलता है और न पोस्ट-आफिस आदिका। जो हिन्दी नहीं जानते हैं वे अंग्रेजीमें ही लिख भेजें। लेकिन अस्पष्ट न लिखें।

३. पुस्तकोंके लिये अलगसे मनीआर्डर भेजें। अुसे आवेदन-पत्र, परीक्षा-शुल्क या राष्ट्रभाषा-शुल्कके साथ भेजनेसे बहुत गड़बड़ी हो जाती है और कभी कभी समयपर पुस्तकें भी ग्राहकोंको नहीं मिलतीं।

४. मनीआर्डर भेजते समय म. आ. कूपनपर भी अपना पूरा पता साफ साफ लिखें, मनीआर्डर किसलिये भेजा है अुसका भी खुलासा अवश्य करें। पीछे कोअी आर्डर दिया हो तो अुसकी तारीखका अवश्य अुल्लेख करें।

५. अेक बार आर्डर देनेके बाद यदि अुसके साथ पेशगी नहीं आती तो पेशगी भेजते समय दुबारा फिर आर्डर दें, नहीं तो कार्रवाअीमें अधिक विलंब हो जाता है और कभी कभी तो ग्राहकोंको बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ती है। हमें भी अुससे दिक्कत होती है।

६. पिछले पत्रोंके बारेमें लिखते समय अुनकी तारीख, नम्बर आदि अवश्य लिखें, नहीं तो कार्रवाअी न हो सकेगी।

७. मनीआर्डर हमारे पास तक पहुँचनेमें अक्सर काफी दिन लग जाते हैं, कभी कभी दस-दस दिनके अूपर भी हो जाते हैं और मनीआर्डर कूपन हमें नहीं मिलता। ग्राहकोंसे निवेदन है कि म. आ. की रसीद अुनके पास पहुँचनेके समयसे अेक सप्ताह तक प्रतीक्षा करनेके बाद यदि पुस्तकें न मिलें तो वे मंत्री को लिखें, अुसके पहले नहीं।

८. कुछ किताबें प्रवेश, परिचय और कोविदमें अेक ही हैं। सेट्स मँगाते समय वे यदि नहीं चाहिये तो स्पष्ट अुल्लेख कर दें, नहीं तो फिर वापिस नहीं हो सकेंगी। जो पुस्तकें आर्डरमें न जायँ, अुन्हें अिस समय अप्राप्य समझें।

९. मँगाअी हुअी वी. पी. अवश्य छुड़ा लें। अुसे वापिस करनेपर हमें कठिनाअी बहुत बढ़ जाती है। पहलेसे ही सोच-समझकर मँगाअें।

—मंत्री

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी.

राष्ट्रभाषा

गुरुकुल काँगड़ी. जून १९४८

श्री. जयशंकर प्रसाद

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख		पृष्ठ
१. वीणाके तार (कविता)	...	४९३
२. हिन्दीमें पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण	...	४९५
३. दक्षिण आफ्रिकामें राष्ट्रभाषा प्रचार	...	४९९
४. श्री जयशंकर प्रसाद	...	५०४
५. मुहावरों और कहावतोंका प्रयोग	...	५०८
६. हमारी नजरोंमें	...	५११
७. प्रांतीय हलचलें	...	५१३
८. परीक्षा विभाग	...	५१६

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है।

प्रारम्भिक, प्रवेश परिचय तथा कोविदके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं।

ऊपर लिखी चारों परीक्षाओंके अंक अंक समयके प्रश्नपत्रोंके सेट तैयार किये गये हैं। प्रत्येक सेटका दाम पाँच आना है। प्रश्नपत्रोंका सेट मँगाते समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये।

प्रत्येक फुटकर प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है।

सूचना:—नीचे लिखी पुस्तकें छपकर तैयार हैं।

(१) गुलदस्ता— ३, (२) कहानी संग्रह— १, (३) कहानी-संग्रह— १
(४) कहानी संग्रह— ३, (५) राष्ट्रभाषा दूसरी पुस्तक —

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, जून—१९४८ [अंक ८

वीणा के तार

: सुश्री शैलबाला :

टूट गये हैं यदि सुख सपने, ये सांसे हैं भार न कहना;
दुख की अग्नि परीक्षामें प्रिय, जीवन है निस्सार न कहना।

देखो फूलोंका लघु जीवन,
पल भर को खिलते मिट जाते
पर पत्थर की कठोरतामें—
युगके युग भी सिमट समाते।
पर क्या लघुता असफलता है?
और दीर्घता क्या अनन्त है?
ग्रीष्म और हिमसे रुंधकर भी।
भूला जाता क्या वसंत है!

जगमें असफल है फूलोंका लघुजीवन व्यापार न कहना;
अुनके पल भर के सौरभपर, विजयी प्रस्तर भार न कहना।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुका यह सिकता प्रसार भी,
न्योछावर है ओसकणों पर,
युग जीवी बबूल क्या भारी—
हो सकता अिन क्षुद्र तृणों पर ?
ओस सूख जाये सिकता में
पर अिससे क्या वह असत्य है ?
तृषा जल जायें तो क्या अुससे
कंटक बन जाता स्तुत्य है ?

दुख रजनीमें भूल गया वह युग बीता अभिसार न कहना;
दुख सागरमें डूब गया जो झूठा था वह प्यार न कहना।

यदि दिन आज समाप्त हो गया,
तो निशि भी कल बीत चुकेगी,
बाधायें जो आज अुठी हैं,
कल अपने ही आप झुकेंगी
जीवनके आंगनमें प्रतिदिन
सांझ अुषा आलिंगित होते
सुखके दुखसे, दुखके सुखसे,
प्रति दिन प्रतिपल अिंगित होते।

जीवनको बेसुरी बीनके तारोंकी झंकार न कहना;
दहला देती जो जड़ चेतन, अैसी रण हुंकार न कहना।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीमें पारिभाषिक शब्दोंका निर्माण

: महापंडित राहुल सांकृत्यायन :

स्वतंत्र भारतकी शिक्षा अपनी भाषामें हो, यह कहनेकी आवश्यकता नहीं। अैसा कोअी भी स्वतंत्र देश नहीं जिसकी अपनी स्वतंत्र भाषा न हो, या कि जो दूसरी भाषामें शिक्षा देता हो। हमारे लिये अैसी भाषा हिंदी है यह निर्विवाद है।

परंतु हिंदी प्रांतीय भाषाओंका स्थान नहीं लेना चाहती। सब प्रांतोंमें अपनी-अपनी भाषाओंमें अुच्च विश्वविद्यालयीन शिक्षा देनी चाहिये। हिंदी भाषाका तो हिंदी भाषी प्रांतोंके अतिरिक्त, सारे भारतकी राष्ट्रभाषा होनेके कारण कर्तव्य और भी बढ़ जाता है। हिंदी अुच्च अध्ययनके लिये पारिभाषिक शब्दोंकी कमीको पूरा करके अपनी ही नहीं परंतु सभी भारतीय भाषाओंकी सहायता कर सकती है। अिस काममें सभी प्रांतीय भाषाओंको भाअी चारेसे काम लेना चाहिये।

परंतु यह काम बहुत बड़ा जान पड़ता है कि समूचे ज्ञान-विज्ञानको हिंदीमें लाया जाये। जिस कामको दूसरे देशों ने २००-३०० वर्षोंमें किया है अुसे हमें बहुत थोड़े समयमें करना है। परंतु यह काम हमें जल्दीसे जल्दी करना है। हिंदी साहित्य सम्मेलनने अिस कामको अपने हाथमें लिया है। शासन-शब्द कोष १०००० से अूपर शब्दोंका बनकर तैयार है, जो प्रेसमें जाने तक १५००० शब्दोंका हो जावेगा। शुद्ध विज्ञान और कलाके अन्य विषयोंपर पारिभाषिक शब्द निर्माण-कार्य अन्य संस्थाअें कर रही हैं; अिसलिये सम्मेलनने पहिले व्यावहारिक विज्ञानकी २३ शाखाओंके शब्दोंका काम हाथमें लिया है अिसमें करीब सवा लाख शब्द होंगे। यदि सबका सहयोग मिले और पर्याप्त परिश्रम किया जाये तो यह काम अेक सालमें हो सकता है। यह वैज्ञानिक पारिभाषिक कोष छः जिल्दोंमें तैयार होगा—चिकित्सा, विज्ञान, अिंजीनियरिंग, भूगर्भ, नौ-विमान, रसायन, कृषि।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिभाषिक शब्द बनानेमें हमने कुछ नियम रखे हैं। हिंदी-साहित्य सम्मेलनकी ओरसे जो शासन-विषयक तथा अन्य व्यावहारिक विज्ञानोंके लिये पारिभाषिक शब्दावली और कोष बन रहे हैं, अुनमें भाषा-विषयक नीति नीचे दिये सिद्धान्तों पर आधारित होगी, जिसके अनुसार शब्दोंका चुनाव तथा निर्माण किया जावेगा।

प्रचलित शब्द

जन प्रचलित शब्द रखनेकी पूरी कोशिशकी जायेगी। पारिभाषिक शब्दभी आखिर जनसाधारणके प्रयोगके लिये ही तो बन रहे हैं। वह केवल विशेषज्ञोंके लिये ही तो नहीं है। बढ़ती हुअी साक्षरता और अुद्योगीकरणके साथ साथ जनता व्यावहारिक विज्ञानको अपनी ही भाषामें समझेगी और समझावेगी। और अैसे समय किसी भी जनप्रचलित शब्दको केवल वह विदेशी है अथवा अपभ्रंश है अिसलिये त्याज्य मानना, भाषाके मूल अुद्देश्य जन-सुलभता और जन-सुगमताके विरुद्ध होगा। अतः कोअीभी शब्द, चाहे वह अहिंदी प्रांतोंका हो, अंग्रेजीका हो या अन्य विदेशी भाषाका, यदि वह बहुप्रचलित है और वह यथार्थ परिभाषा दे सकता है तो अुसे यथा संभव लेना चाहिये।

परन्तु अिन जनप्रचलित शब्दोंके लेने में यह ध्यान रखा जाये कि ये शब्द सारे भारतकी दृष्टिसे लिये जाँय। पारिभाषिक शब्द कुछ अैसे भी हो सकते हैं जो भिन्न-भिन्न प्रांतोंमें भिन्न-भिन्न अर्थोंमें प्रयुक्त होते हैं। अुनमेंसे कअी संस्कृतके तत्सम रूप भी हैं—वहाँ प्रधानता अैसे रूपोंको दी जाये जो अधिकाधिक प्रान्तोंमें बोले जाते हों। यदि कुछ शब्द नये भी बनाने पड़े तो तीसरे कालममें, यानी दूसरे विकल्प देते समय, सर्व-भारतीय शब्द ही दिये जाँय।

अप्रचलित शब्द

सभी अप्रचलित नये शब्द संस्कृतसे लिये जांय। क्योंकि वही हमारे प्रांतीय भाषाओंकी ही नहीं बल्कि वृहत्तर भारतीय भाषाओंकी मूलभाषा है। परन्तु अुसमें भी अुच्चार- सौकर्यका ध्यान रखा जाये। साथ ही अर्थकी अलग बारीकियोंको भी व्यक्त करनेकी सुविधा संस्कृतसे ही मिल सकेगी। शब्दोंकी व्युत्पत्तियाँ भी संस्कृतसे सहज साध्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये शब्द बनाते समय दो पद्धतियाँ-सुझाओ जाती हैं—अेक अंतर्राष्ट्रीय शब्दोंको ज्यों-का त्यों ले लिया जाये, और दो, सब शब्द केवल संस्कृतसे लिये जाँय। दोनों पद्धतियोंकी चरम सीमा तक पहुँचना ठीक नहीं। दोनों विचारोंमें ग्राह्य अंश है उसे लेकर तीसरा नया, मध्यममार्ग स्वीकार करना होगा।

(अ) अंतर्राष्ट्रीय शब्द कहकर जिन अंग्रेजी, जर्मन या फ्रेंच शब्दोंकी दुहाअी दी जाती है, वे केवल पश्चिमी यौरप तक सीमित शब्द हैं। पूर्वी यौरुप, रूस, चीन, जापान और दक्षिण-पूर्वी अेशियामें वे शब्द प्रचलित नहीं। वहाँ अनुवादित शब्द प्रचलित हैं।

(आ) परंतु जो अंतर्राष्ट्रीय शब्द वस्तुओंके साथ जनता तक पहुँच गये हैं, अुन्हें लेना है, जैसे टेलीफोन रेडियो, अिंजीनिया, डाक्टर, सन्मैरीन, विज़ा, फौजके पद (लेफ्टनेंट, मेजर कमिसार) आयुधनाम (मशीनगन, ब्रेनगन, टारपीडो) आदि। परंतु निराकर भाववाचक शब्द या अप्रचलित साकार वस्तुओंके व्यंजक शब्द संस्कृतसे लिये जांय।

(अि) जो शब्द वस्तुओंके साथ जनता तक पहुँच गये हैं, अुनके लिये संस्कृत शब्द गढ़ना अनावश्यक है, जैसे रेल, टाअिपराअिटर, टिकिट, सिग्नल आदि। परंतु जहाँ संस्कृत शब्द और देशज शब्दकी स्पर्द्धा हो, देशज शब्दको प्रधानता दी जाये।

(अी) संस्कृत शब्द जो तत्समके रूपमें शिक्षित जनताके सामने पहुँच गये हैं अुनसे संस्कृतके मूल शब्द लिये जायँ। वही नये शब्द गढ़नेका मूल अुपादान होगा।

अिस प्रकार अैसे अंतर्राष्ट्रीय या संस्कृत शब्द जो कि अप्रचलित हों या केवल विशेषज्ञोंमें प्रचलित हों, अग्राह्य हैं। सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक विज्ञानमें निश्चय ही संस्कृत-मूलक शब्द अधिक आवेंगे।

परिभाषा निर्माण-पद्धति

किसीभी अंग्रेजी या अन्य पारिभाषिक शब्दका पर्यायवाची पहिले प्रचलित, देशज शब्दोंमें देखें। यदि न हो तो फिर नया शब्द बनाया जाय, जिसमें शब्दको प्रयोगमें लाने वाले वर्ग या जनसाधारणका ध्यान रखा जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ केवल सैद्धान्तिक अथवा विभाजन-विषयक शब्दावली हो (जैसे वनस्पति-विज्ञान, प्राणी-विज्ञान आदिमें) वहाँ संस्कृतसे सहायता लेना आवश्यक है। अिसमें अिन बातोंका ध्यान रखा जावे—

(अ) शब्दोंके समान व्युत्पत्तिक-ग्रहणमें अेकताका ध्यान रखा जाये परंतु वह अेकता यंत्रिक न होकर भाषाके विकासमें जैसी विकासकी स्वतंत्रता देखी जाती है, वैसा ही ध्यानमें रखकर हो।

(आ) शब्दोंके निर्माणमें समासमें संस्कृत-असंस्कृतका कोअी विचार न रखा जाये। केवल यह ध्यान अवश्य रखा जाये कि वह जनसाधारणको खटकनेवाला न हो।

(अी) बड़े, सामासिक, अुच्चारण-क्लिष्ट शब्दोंकी अपेक्षा समानार्थी, सरल शब्द सदा अधिक अुपयोगी होंगे।

हम सभी शिक्षा-प्रेमियों, टेकनिकल शिक्षा-विशारदों, वैज्ञानिकों, भाषा-शास्त्रविदों तथा साहित्यिक वैज्ञानिक औद्योगिक संस्थाओंसे आशा रखते हैं कि हमारे अिस काममें वे पूरा सहयोग देंगे। अिस विषयमें जो भी परिभाषा निर्माण-कार्य कहीं भी, भारतीय भाषामें हुआ हो और हो रहा हो अुसकी भी हमें सूचना दें। जो भी व्यक्ति अिस कामको करना चाहे, या जो कर रहें हों या कर चुके हों वे कृपया अपने नाम और पते और कार्यका विवरण हमें दें और अिस महान अनुष्ठानको सफल बनायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण आफ्रिकामें राष्ट्रभाषा प्रचार

: श्री. नरदेव वेदालंकार :

पंडित नरदेव वेदालंकार और अुनकी राष्ट्रभाषा प्रचारके क्षेत्रमें की गअी सेवाओंसे कौन अपरिचित होगा ? वे अितने अधिक वर्षों तक सूरत (गुजरात) में कार्य करते रह कर अब डर्बन (दक्षिण आफ्रिका) पहुंचे हैं। हमें विश्वास है कि अुनके हाथों दक्षिण आफ्रिकामें भी राष्ट्रभाषा प्रचारका बहुत कार्य हो सकेगा। राष्ट्रभाषा परिवारकी मंगल कामनाअें अुनके साथ हैं।

—सम्पादक

सूरतमें राष्ट्रभाषा प्रचारके क्षेत्रमें करीब दस साल गुजारनेके अुपरान्त जब मैं वहांसे डर्बन (दक्षिण आफ्रिका) के लिये चला तो मुझसे अिस बातकी आशा की गअी थी कि मेरा हिन्दी प्रचारका कार्य दक्षिण आफ्रिकामें भी चालू रहेगा। स्थानीय लोगोंने भी आशा प्रकट की और वर्धा समितिके पदाधिकारियोंने भी, मेरे दिलमें भी अिस बातकी अिच्छा होना स्वाभाविक थी। दूसरे कार्योंके साथ राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचारका कार्य भी मेरे जीवनका अेक अंग बन चुका है।

बम्बअीसे विजयादशमीके शुभ दिन मातृभूमिका तट छोड़ा। दस रोजकी व्याकुलता तथा अधीरताके अुपरान्त पुनः जमीनके दर्शन हुअे। खंडाला स्टीमरने हमें अेक खण्डसे दूसरे खण्डपर ला रख दिया था। मुंबासाके बन्दर-गाहपर पहुँचते ही सबसे अधिक आश्चर्य तो हमें तब हुआ जब अंग्रेजीके साथही जाहिर सूचनाओंमें अपनी मातृभाषा गुजरातीको भी देखा। शहरमें भी यही हाल था। अेक गुजराती कविने अिस आशयका गीत बनाया है, जहां गुजराती बसता है वहीं गुजरात है यह देख मुझ मातृभाषा प्रेमीको अपार हर्ष हुआ। पर अुसी समय दूसरा ख्याल यह भी मनमें अुठा कि यहां राष्ट्रभाषा हिन्दीका क्या स्थान है ? हिन्दुस्तानके बाहर हम सब कौन ? पर साथ ही यह भी सोचा कि क्या मेरा राष्ट्रभाषा प्रेमी हृदय मातृभाषाके प्रति द्रोह या अीर्षा तो नहीं कर रहा ? गुजरातियोंकी महागुजरातकी कल्पना बड़ी प्रबल है। आफ्रिका-खण्ड भी अुसमें शामिल है। और सचमुच आफ्रिकाके पूर्वी और दक्षिणी तट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बसे हुअे भारतीयोंमें प्रधानतः गुजराती ही हैं। अिन लोगोंने यहां अपनी भाषा और संस्कृतिको अन्य भारतीयोंकी अपेक्षा अधिक सुरक्षित रखा है।

डर्बन पहुँचनेपर मेरे सामने जो दृश्य अुपस्थित हुआ वह मुंबास (पूर्वी आफ्रिका) से अेकदम अुल्टा था। यहां की भाषा-संबंधी स्थिति सा अुत्साहको मन्द कर देनेवाली है। पूर्वी आफ्रिकासे दक्षिण आफ्रिका की परिस्थिति भिन्न है। पूर्वी आफ्रिकाके निवासी सजग हैं। भारतके समीप होनेके कारण वहांके हिन्दुस्तानी संस्कृति और भाषाकी दृष्टिसे भारतीय हैं। पूर्व आफ्रिका--जिसके युगांडा, केनिया, टांगानिका और जंजीबार मुख्य हिस्से हैं शहरोंमें आपको यह नहीं लगेगा कि आप हिन्दुस्तानके बाहर कहीं आ पहुँचे हैं यहांपर गुजराती बहुत बड़ी तादादमें बसे हुअे हैं। पोस्ट आफिस, बैंक स्कूल आदिमें गुजराती नवयुवकोंका जोर है। मुंबासा तो गुजराती नवयुवकोंका शहर मालूम होता है। (नवयुवक अिसलिअे अधिक हैं कि वृद्ध आरामकी जिन्दगी बितानेके लिअे स्वदेश चले जाते हैं) यहां आनेवाले लोग अधिक सुसंस्कृत थे। आज भी ग्रांटेड भारतीय स्कूलोंमें ही नहीं सरकारी भारतीय स्कूलोंमें भी गुजराती आदि भारतीय भाषाओंका स्थान है। प्रारम्भिक पढ़ाअीका माध्यम भी देशी भाषाअें हैं। यद्यपि यहां की राजभाषा अंग्रेजी है और अुसीकी प्रधानता है। फिर भी हिन्दुस्तानियोंकी अपनी मातृभाषाके अधिक रुचि है। परस्पर व्यवहार भी अिसीमें होता है। यहां तक कि पूर्व आफ्रिकाके प्रत्येक प्रांतसे दैनिक या साप्ताहिक गुजराती समाचार पत्र भी प्रकाशित होते हैं।

दक्षिण आफ्रिकाकी परिस्थिति अिससे ठीक विपरीत है। यहां हिन्दुस्तानके चार भाषाओंके बोलनेवाले बसे हुअे हैं। हिन्दी, गुजराती, तामिल और तैलगू भाषा--भाषियोंकी संख्या साअुथ यूनियनमें करीब दो लाख है जिनमें प्रधानतः मद्रासी हैं। गुजराती अिनके १० प्रतिशत भी नहीं होंगे। यहां की भारतीय बस्ती प्रायः गिरमिटिया लोगोंकी है जो कि हिन्दुस्तानसे एग्रिमेंटके द्वारा कुली रूपमें लाअे गअे थे। अुस समय ये लोग बिल्कुल अशिक्षित ही थे। गुजराती यहां मुख्यतः व्यापारके लिअे आये थे। अिसलिये अिनकी संख्या कम होनेपर भी प्रमुख व्यवसायोंमें अिन्हीं की प्रधानता दिखाअी देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी--भाषी और मद्रासी लोग यहीं बस गये हैं। अिनकी तीन चार पीढ़ियां यहां गुजर चुकी हैं। अिससे प्रायः सभी देशको--अपनी मातृभूमिको भूल चुके हैं। सगे और रिश्तेदारोंसे भी सम्बन्ध टूट चुका है। आज तो स्थिति यह है कि अंग्रेजी भाषा और रीति रिवाज अिनमें घर कर गया है। अंग्रेजोंके सद्-गुणोंका अिनमें बिल्कुल अभाव है किंतु अुनके दुर्गुणोंको अिन भारतीयोंने अपना लिया है। ये किसी प्रकार हिन्दू रह सके और अपनेको हिन्दुस्तानी समझते हैं। यही गनीमत है। अिनका बहुत बड़ा वर्ग न रामको जानता है और न कृष्णको। ये न अपने पर्व और त्योहारोंसे परिचित हैं और न संस्कारोंसे। अिन्हें न भाषाका ज्ञान है और न देशके अितिहासका। हां, समय-समय पर आर्य-समाजके प्रचारक आते रहे हैं। अिससे हिन्दुस्तानियोंके अेक छोटेसे समुदायमें कुछ चेतना है।

यहां प्रायः अपढ़ लोग ही आअे थे। प्रारम्भमें अिन्होंने अपनी मातृभाषाओं हिन्दी तामिल तैलगूको थोड़ा बहुत संभाल रखा था। अिनके लिअे शिक्षाका कोअी प्रबन्ध नहीं हुआ था। जब धीरे धीरे शिक्षाका प्रचार होने लगा तो वे शुरूसे ही अे बी. सी. डी. द्वारा पढ़ने लगे। भारतीय बच्चोंके स्कूलोंमें भारतीय भाषाओंको विषयके रूपमें स्थान न था। अिसका परिणाम यह हुआ कि नयी पीढ़ीके लोग अपनी घरेलू भाषा भी भूल गअे और आज यह हालत है कि ८.१० वर्षका भारतीय बच्चा अपना सामान्य घरेलू व्यवहार भी अंग्रेजी द्वारा ही करता है। ८. १० वर्षके बच्चे खेलते हैं तो अपनी भाषामें परस्पर बोल भी नहीं सकते। कन्याओंमें भी शिक्षाका जो कुछ नगण्यसा प्रचार हो रहा है वह भी अंग्रेजी शिक्षाके द्वारा। सो वे भी हिन्दी आदिको भूलकर अंग्रेजीमें ही व्यवहार करने लगी हैं। यदि यही परिस्थिति रही तो अगले १५-२० वर्षोंमें दक्षिण आफ्रिकाके भारतीयोंमें हिन्दी आदि भाषाओंको समझनेवाले ढूंढ़ने पर ही मिलेंगे। हां, गुजरातियोंकी हालत अिस सम्बन्धमें कुछ अच्छी है। यहां कुछ शिक्षित गुजराती आअे थे जिन्होंने यत्न करके अपने बच्चोंके लिअे गुजराती स्कूल चालू किअे और अुनके लिअे भारतसे अध्यापक बुलाते रहे। सबसे अुल्लेखनीय बात यह है कि अिन लोगोंने देशसे अपना सम्बन्ध बराबर बनाअे रखा।

अैसी स्थितिमें राष्ट्रभाषाका प्रचार कैसे हो? यहां तो अभी राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता ही नहीं समझी जा रही। राष्ट्रभाषा तो अंग्रेजी ही है। पर स्वभाषाके रूपमें भारतीयोंकी कोअी अेक भाषा नहीं है। हिन्दीको यह स्थान दिया जाये अिस बातको भी अंगीकार नहीं किया जा रहा है। अेक बार सवाल अुठा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहांके भारतीय बच्चोंके स्कूलोंमें अेकाध घंटा भारतीय भाषाकी पढ़ाअीके लिअे दिया जाय। पर लोग अिस बात पर अेक मत नहीं हो सके कि कौनसी भाषा पढ़ाअी जाय। स्कूलोंमें हिन्दी, तामिल, तेलगू, गुजराती सभी भाषा भाषी बच्चे अिकट्ठे पढ़ते हैं और दुःख तो अिस बातका है कि भारतीय अध्यापकोंने ही अिस बातका सबसे अधिक विरोध किया। क्योंकि वे अिसकी कोअी योग्यता नहीं रखते थे। वे अिस बलाको क्यों अपने सिरपर लेते?

अभी कुछ दिन पूर्व हमने यहां अेक अीसाअी परिवारकी शुद्धि करवाअी। सारा कार्य हिन्दीमें हुआ। शुद्धि समारोह हिन्दू महासभाके आश्रममें सम्पन्न हुआ था फिर भी यह सवाल अुठाया गया कि शुद्धिका कार्य हिन्दीमें क्यों हुआ? अंग्रेजीमें क्यों नहीं?

अैसी हालत है। अिसपर भी काम तो करना ही है। दक्षिण आफ्रिकामें तो अभी हिन्दी भाषा भाषी लोगोंका ही संगठन करना है। हिन्दी सीखनेके लिअे कहीं कहीं खानगी वर्ग भी अेकाध घंटेके लिये चलते हैं पर वे सब भी बिल्कुल अव्यवस्थित हैं। कहीं कोअी वर्ग चालू करना चाहते हैं तो योग्य अध्यापक ही नहीं मिलते। अिसलिअे सबसे पहिले हिन्दीके अध्यापक तैयार करने पड़ेंगे। अहिन्दी भाषा भाषी भारतीय अपनी मातृभाषा ही नहीं पढ़ रहे हैं तो फिर हिन्दी कब और कैसे पढ़ेंगे? यहां गुजराती सहस्त्रोंकी संख्यामें हैं पर सामान्य गुजराती कविताको समझने वाले अुंगलीपर गिने जा सकते हैं।

हम लोग यहां शीघ्र ही अेक हिन्दी परिषद बुलानेका विचार कर रहे हैं। अुसके द्वारा हिन्दी भाषा-भाषियोंका संगठन कर अुनमें ही पहिले राष्ट्रभाषा प्रचार करनेकी अिच्छा है और हिन्दी भाषियोंमें जगह जगह हिन्दीके खानगी वर्ग चालू कर देने हैं। संभव है अगली परीक्षाके समय तक कुछ अध्यापकोंको 'परिचय' परीक्षाके लिअे तैयार किया जा सके। पोर्तुगीज पूर्व आफ्रिका तथा रोडेशियामें भी भारतीयोंकी अच्छी संख्या है। दक्षिण आफ्रिकाके साथ ही अिन लोगोंका भी संगठन किया जा सकता है। पर अिसमें अभी समय लगेगा। काफी रुपयोंकी भी आवश्यकता होगी।

पूर्व आफ्रिकाकी स्थिति जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है कुछ अच्छी है। हिन्दुस्तानमें होनेवाली घटनाएं वहांके भारतीयोंको आन्दोलित करती रहती है। भारतीय संस्कृतिका अच्छा प्रचार है। अतअेव वहां राष्ट्रभाषा प्रचार करनेमें विशेष सुविधा है। वहांके कार्यको संगठित रूप दिअे जानेके सम्बन्धमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्न चला हुआ है। हर्षकी बात है कि पूर्व आफ्रिकामें अेक अत्यन्त अुत्साही और अनुभवी प्रचारक श्रीरणधीर वेदालंकार पहुंच चुके हैं। अुन्होंने वहां संगठन और प्रचार कार्यको गति दी है। जगह जगह राष्ट्रभाषा केन्द्र स्थापित करनेका अुनका विचार है। जनता और विद्यार्थियोंमें पर्याप्त अुत्साह है। शीघ्रही वहां राष्ट्रभाषा हिन्दीके परीक्षार्थी तय्यार हो सकेंगे।

हिन्दी संसारकी चार महान भाषाओंमें है। भारतकी स्वतंत्रताके साथ अिसका महत्व और भी बढ़ गया है। यदि हमने दूरदर्शिता और अुदारतासे काम लिया तो शीघ्र ही हिन्दी विश्वकी समृद्ध भाषाओंमें अेक हो जायगी। हिन्दी भारतकी राष्ट्रभाषा है ही। अुर्दू शैली अुसकी अपनी है और हमें आशा है कि राष्ट्रभाषा हिन्दीके रहनेपर भी अुसकी अुर्दू शैलीका बहिष्कार नहीं होगा और अैसा होनेपर वह पाकिस्तानमें भी बखूबी समझी जायगी तथा पश्चिमोत्तर देशोंकी ओर भी अपनी भुजाअें फैला सकेगी, और दूसरी ओर सीलोन, बर्मा मलाया, श्याम और जावा सुमात्रा-वाली द्वीपमें भी बसे हुअे लाखों हिन्दुस्तानियोंकी राष्ट्रभाषा होगी। यदि हमने बुद्धिमत्ता और थोड़ी सहिष्णुतासे काम लिया तो सभी निकटवर्ती देशोंको हिन्दी सरल पारिभाषिक शब्दावली दे सकेगी। जहां डाक्टर सुकर्ण (सोकार्नो) और सेनानायकम जैसे नाम हो सकते हैं। वहां अैसी आशा करना अतिशयोक्ति नहीं है। नागरी लिपि और वर्णमाला अितनी सम्पूर्ण है कि अुसकी ओर आकर्षण बढ़ता ही जायगा। आफ्रिकाके सहस्त्र मीलोंके तटपर बसे हुअे लाखों हिन्दुस्तानियोंकी तथा मारीशस, फिजी, ट्रिनीडाड, गायना आदि प्रदेशोंके भारतीयोंकी भाषा हिन्दी ही होगी। तो क्या विश्व-संघकी भाषाओंमें हिन्दीका स्थान दूसरी भाषाओंके समकक्ष होनेमें कोअी सन्देह हो सकता है? आवश्यकता है सही दिशामें प्रयत्न करनेकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. जयशंकर प्रसाद

हिन्दी साहित्यको जिन व्यक्तियोंने अपनी साधनासे अुन्नत और विकसित कर अेक नवीन दिशा प्रदान की अुनमें श्री. जयशंकर प्रसाद अग्रगण्य हैं। श्री. जयशंकर प्रसाद अुच्च कोटिके मेधावी साहित्यकार थे। कठोर अध्यवसाय और अनुपम लगनसे आप जीवनभर साहित्य-सृजन करते रहे और हिन्दीके भण्डारको अमोल रत्नोंसे परिपूर्ण कर अुसे अन्य समृद्ध भाषाओंके योग्य ले जानेमें समर्थ हुअे।

श्री. जयशंकर प्रसादका जन्म काशीके अेक सम्पन्न घरानेमें हुआ था। आपकी स्कूली शिक्षा केवल ८ दर्जे तक ही हो पायी और घरपर ही रहकर आपने हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी आदि भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया। बचपनमें ही आपकी काव्य प्रतिभा जाग अुठी थी। केवल पन्द्रह वर्षकी अुम्रसे ही आप कविता करने लगे थे आपकी सर्व प्रथम रचना 'भारतेन्दु'में प्रकाशित हुअी थी। किशोरावस्थामें आपने काशीके कतिपय साहित्यिकोंके सहयोगसे 'अिन्दु' नामका अेक मासिकपत्र निकाला। अिसी समय हिन्दीके अन्य विद्वान आपकी ओर आकर्षित हुअे।

प्रसादजीके हिन्दी साहित्य-क्षेत्रमें प्रवेश करते ही अेक हलचल मच गअी। अुस समय हिन्दीमें द्विवेदी स्कूलका बोलबाला था। द्विवेदीजीके अनुयायी पुरानी परिपाटीको माननेवाले थे और नवयुगकी क्रांतिकारी भावनाओंको अपनानेमें असमर्थ हो रहे थे। हिन्दीमें जिन नवीन शक्तियोंका आविर्भाव हो रहा था अुनका नेतृत्व करना द्विवेदी-स्कूलके लेखकोंके वशके बाहर था क्योंकि वे युगका साथ देनेमें हिचकिचाते थे। अैसे समय श्री जयशंकर प्रसाद साहसपूर्वक आगे बढ़े और हिन्दी साहित्यकी अेक स्पष्ट रूपरेखा निर्धारित करनेमें सफल हुअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीमें छायावादको जन्म देनेका श्रेय प्रधानतः प्रसादजीको ही है । निराला और पन्तने बादमें अिसमें योग दिया । छायावाद साहित्यकी पुरानी प्रचलित मान्यताओं, मापदण्डों तथा धारणाओंके विरुद्ध जाग्रत साहित्यकारोंका सक्रिय विद्रोह था । आज भले ही छायावाद ध्वस्त हो चुका हो पर अेक समय अुसने 'प्रगतिशील पार्ट' अदा किया था और प्रसादजीके नेतृत्वमें साहित्यमें नअे तरहके प्रयोगों तथा अभिव्यंजनाओंकी सृष्टि की थी ।

छायावादी कविताको पूंजीवादी युगकी कविता कहा जा सकता है । सामन्तवादके अवशेषोंपर नअी समाज-व्यवस्थाका निर्माण कर पूंजीवादने मानव प्रगतिमें अैतिहासिक कार्य किया । प्रारम्भिक अवस्थामें पूंजीवादका स्वरूप सदैव क्रांतिकारी होता है पर बादमें सामाजिक असंगतियोंके कारण वह पलायनवादी जन विरोधी रुख ग्रहण कर प्रतिक्रियावादी जामा पहिन लेता है और अिस तरह समाजके साहित्यिक-सांस्कृतिक विकासके मार्गमें रोड़े अटकाता है ।

हिन्दीमें छायावादी कविता पूंजीवादके अिसी आरम्भिक युगकी अुपज है । तात्कालीन स्वस्थ साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा अंतर्धाराओंको आत्मसात कर अिसने नवयुगकी सृष्टि की । प्रसादजीने अपने काव्यमें छायावादका सफल प्रतिनिधित्व किया । जिस समय आपकी प्रथम काव्य-रचना 'चित्राधार' प्रकाशित हुअी थी अुसी समयसे हिन्दीमें नवीन युगका श्रीगणेश समझना चाहिअे । 'चित्राधार'के अुपरान्त आपकी काव्य-प्रतिभाका निरंतर विकास होता गया और 'कामायनी'में अुसकी अंतिम परिणति हुअी ।

'कामायनी' विश्व-साहित्यकी अनुपम निधि है । दार्शनिक प्रसादके जीवनभरके अध्ययन और चिन्तनका निचोड़ हमें अिसमें मिलता है । कामायनीने सिद्ध कर दिया कि प्रसादजी सर्व प्रथम कवि थे बादमें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ । प्रसादकी काव्य-प्रतिभाके पूर्ण विकसित रूपका दर्शन हमें कामायनीमें होता है । अिसमें अेक सफल महाकाव्यके सभी गुण विद्यमान हैं ।

श्री. जयशंकर प्रसाद प्राचीन भारतीय संस्कृतिके निष्णात विद्वान थे । भारतके गौरवमय अुज्ज्वल अतीतसे आपको अगाध प्रेम था । अुनके बौद्धकालीन अैतिहासिक अनुसन्धानोंके महत्वको पुरातत्वके विद्वान भी स्वीकार करते हैं । प्रसादके अितिहास-चिन्तनकी मौलिकताका प्रमाण अुनके नाटक हैं । अपने नाटकोंमें अुन्होंने बौद्धकालीन भारतके सामाजिक वातावरणका सजीव चित्र अुपस्थित किया है । प्रसादजीने अुच्च कोटिकी कहानियां और अुपन्यास भी लिखे हैं । अिस क्षेत्रमें भी अुनकी देनोंको भुलाया नहीं जा सकता ।

प्रसादजीके जीवनपर राष्ट्रीय आन्दोलनोंका प्रभाव प्रचुर मात्रामें पड़ा था । सक्रिय राजनीतिमें भाग न लेते हुअे भी अुनकी सहानुभूति सदैव अुस ओर रही । महात्मा गांधीके नेतृत्वमें भारतमें जो अभूतपूर्व जन-जागरण हुआ अुसका व्यापक प्रभाव हमारे साहित्यपर पड़ा । प्रेमचन्द्रका साहित्य अिसका सबसे बड़ा प्रमाण है । प्रसादजीका साहित्य भी अिससे अछूता नहीं कहा जा सकता । अुनका हृदय स्वदेश प्रेमकी भावनाओंसे परिपूर्ण था । यह देश प्रेम अत्यन्त अुज्ज्वल और दिव्य रूपमें अुनके काव्यमें वर्तमान है । अुनका अेक ओजस्वी गीत है—

हिमाद्रि तुंग शृंगसे प्रबुद्ध-शुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती ।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है—बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
असंख्य कीर्ति रश्मियां, विकीर्ण दिव्य- दाहसी,
सपूत मातृभूमिके-रुको न वीर साहसी !
अराति सैन्य सिन्धुमें-सुबाडवाग्निसे जलो,
प्रवीर हो जयी बनो- बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर लिखा जा चुका है कि प्रसादजीकी बहुमुखी प्रतिभाका चमत्कार 'कामायनी'में दिखाअी दिया है। खेद है कि अुनकी मृत्यु अैसे समय हुअी जबकि हिन्दीको अुनसे बड़ी आशाअें होगअी थी और अुनका विकास अपने अुच्चतम शिखरपर पहुंच चुका था। आप आजीवन सांस्कृतिक-तपस्यामें लीन रहे और साहित्य–चिन्तनमें आपने अपने आपको बिल्कुल भुला दिया था। संसारके कोलाहलसे दूर, रागद्वेषसे रहित प्रसादजीके जीवनसे हमारे वर्तमान साहित्यिक अखाड़ेबाजोंको शिक्षा लेना चाहिअे।

प्रसादजीने हिन्दीको जो कुछ दिया है अुसके लिअे हिन्दी भाषा-भाषी अुनके चिरऋणी रहेंगे। वे साहित्याकाशके जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। अुपयुक्त अवसर आनेपर विश्वके अमर कलाकारोंमें अुनकी गणना होगी और हिन्दीको अंतर्राष्ट्रीय गौरव प्रदान करनेका श्रेय अुन्हें दिया जायगा।

– प्रशान्त

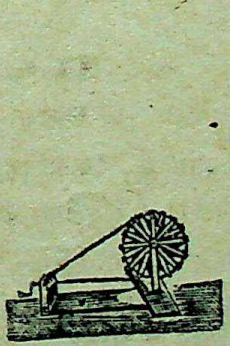

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी

मुहावरों और कहावतोंका प्रयोग

: पं० हृषीकेश शर्मा :

'प्रवेश' से लेकर 'कोविद' तकके प्रश्नपत्रोंमें अेक-दो प्रश्न अैसे भी रहते हैं, जिनमें परीक्षार्थियोंसे कुछ मुहावरों और कहावतोंका अर्थ तथा अुनका अपने वाक्योंमें प्रयोग पूछा जाता है।

अक्सर हमारे देखनेमें आता है कि 'परिचय' और 'कोविद' जैसी अुच्च श्रेणीकी परीक्षाओंमें बैठनेवाले विद्यार्थी भी मुहावरों और कहावतोंका ठीक ठीक प्रयोग करना नहीं जानते। वे पूछे हुअे मुहावरों और कहावतोंका अटकल-पच्चू बे-सिर पैरका अर्थ और अशुद्ध प्रयोग करते हैं। जैसे-तैसे अंक पाकर परीक्षा पास कर लेना और बात है, और राष्ट्रभाषा हिन्दीके शुद्ध लिखने और बोलनेमें मुहावरोंकी अुपयोगिता तथा प्रयोग-शुद्धिको भली-भाँति समझ लेना और अमलमें लाना दूसरी बात है। हमें चाहिये कि शुद्ध बामुहावरा भाषा लिखने व बोलनेकी आदत डालें। 'मुहावरा' का अेक अर्थ आदत या अभ्यास भी होता है। लोग किसी बातको जिस ढंगसे लिखते, कहते या बोलते हैं, अुसमें मुहावरा जरूर रहता है। सच मानिये, मुहावरा ही भाषाकी जान है। बे-मुहावरा भाषा बे-जान होती है। सिद्धहस्त लेखक प्रभावशाली वक्ता और बोल-चालमें कुशल व्यक्ति अपनी भाषामें मुहावरोंका प्रयोग बड़े खुशनुमा ढंगसे, बड़ी सफाअीके साथ करते हैं। वे मुहावरेको अुठाकर अपने वाक्यमें अैसा जड़ देते हैं—फिट कर देते हैं—जैसे कोअी चतुर रत्नपारखी जड़िया सोनेकी अँगूठीमें कीमती नग जड़ देता है, जिसे देखते, पढ़ते या सुनते ही हमारी तबीअत फड़क अुठती है। प्रेमचंदजी आदि प्रसिद्ध लेखकोंकी रचनाओंको अुठाकर पढ़िये, आप अुनके मुहावरोंका मजा चखकर अुनकी कलमको चूम लेंगे और अुनकी भाषा शैली और भावोंके आनन्द सागरकी लहरोंपर तैरने लगेंगे।

विद्यार्थियों—परीक्षार्थियों—की भाषाको शुद्ध तथा साफ-सुथरी बनानेमें अुनके शिक्षकों और प्रचारकोंको भी मुहावरोंका अुचित प्रयोग सिखानेमें काफी सावधानी और दिलचस्पी रखनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी समझ लेना चाहिये कि 'मुहावरा' और 'रोजमर्रा' में अन्तर है। रोजकी बोलचालमें जिस ढंगसे जिस सिलसिलेसे, शब्दोंका प्रयोग होता है, अुसे 'रोजमर्रा' कहते हैं। जैसे—'श्रीनिवासजी नासिकसे सात-आठ दिनमें यहाँ आयेंगे।' यहाँ 'सात आठ' के बदले अगर कोअी 'छः-आठ' या 'सात-नौ' का प्रयोग करे, तो स्मरण रहे बोलचालमें वैसा प्रयोग कभी नहीं होता।

'मुहावरा' अेक अैसा 'वाक्यांश' है, जो अपने प्रचलित साधारण अर्थको बिलकुल छोड़ देता है और अेक खास—विलक्षण—चमत्कारी अर्थको प्रकट करता है। मुहावरोंकी रचना बड़ी विचित्र होती है, अुनके विशेष अर्थ होते हैं और अुनके प्रयोगसे भाषामें आकर्षण अेवं सौन्दर्य आ जाता है और अर्थमें चमत्कार। अैसी भाषा अपने भावोंको प्रकाशित करनेमें समर्थ बन जाती है। यह जो कुछ होता है, लक्षणा-शक्तिके प्रतापसे होता है।

नीचे परीक्षार्थियोंके लाभार्थ सूचना रूप कुछ चुने हुअे मुहावरों और कहावतोंके प्रयोगके नमूने दिये जाते हैं, जिनसे अुन्हें अभ्यासमें कुछ सहायता पहुँचेगी, अैसी आशा है। मिसालके तौरपर स्थानाभावके कारण चार-पाँच मुहावरोंको ही ले लीजिये :—

'लाठी खाना', 'दम भरना', 'मुँहकी खाना', 'चूड़ियाँ पहनना' और **'अुसने भण्डा फोड़ दिया'** ये बड़े मजेदार मुहावरे हैं। लाठी क्या कभी खायी जाती है? क्या वह कोअी चटपटी स्वादिष्ट खाने-पीनेकी चीज है या आपने कभी किसीको लाठी खाते और अुसे अपने दाँतोंसे चबाते देखा है? आप कह अुठेंगे—'जनाब, कभी नहीं।' जब 'लाठी खाना' का साधारण अर्थ ठीक न बैठा, तो व्यवहारमें, बोलचालमें वह मुहावरा बन गया, जिसका अर्थ हुआ—'लाठीका प्रहार या अुसकी चोटको सहना।' १९३०-३२ तथा ४२ के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-सत्याग्रह-आन्दोलनमें हजारों भारतीय वीर नर-नारियोंने लाठी खायी अिसे कौन नहीं जानता। 'चूड़ियाँ पहनना' औरतें ही शोभा-शृंगारके लिये अपने हाथोंमें चूड़ियाँ पहनती हैं, मर्द कभी चूड़ियाँ नहीं पहनते। परन्तु जब मर्द कायर होते हैं और अपने कर्तव्य पालनसे पीछे हटते हैं, तब यह मुहावरा काममें लाया जाता है। 'चूड़ियाँ पहनना' यानी अपनी नामर्दी या कायरता दिखाना. जैसे,—'अगर तुम कांग्रेसके आदेशानुसार कोअी राष्ट्रीय रचनात्मक कार्य नहीं कर सकते, तो घर जाकर चूड़ियाँ पहन लो।' अिसी तरह 'अुसने भंडा फोड़ दिया' का अर्थ बर्तन फोड़ दिया' नहीं; बल्कि "भेद गुप्त बात अथवा रहस्य प्रकट कर दिया" होता है। 'दम भरना' का अर्थ होगा—किसीकी शक्ति, ताकत, प्रेम-मुहब्बत, दोस्ती या हस्तीका पूरा पक्का विश्वास रखना। जैसे, 'हिन्दुस्तानके नौजवान पंडित जवाहरलाल नेहरूका खूब दम भरते हैं।' 'मुँहकी खाना' का अर्थ पराजित, अपमानित होना या अपनी बुराअीका ठीक ठीक बदला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाना होता है। जैसे—शाअिस्ताखाँ शिवाजी महाराजसे बुरी तरह मुँहकी खाकर लौट आया। 'पत्थरकी लकीर' अिस मुहावरेका अर्थ दृढ़ बात होता है। अुदा०—सरदार पटेल जो अेक बार कह दें, अुसे तुम 'पत्थरकी लकीर' समझो। 'लकीरका फकीर' का अर्थ होगा दकियानूसी या पुरानी चाल-ढालपर चलनेवाला कट्टर विचारोंका व्यक्ति। जैसे — 'वाह आप भी अच्छे लकीरके फकीर हैं! भला अछूतोंको छूनेमें कौनसी बुराअी है?'

'मुहावरा' और 'कहावत' (लोकोक्ति) में यह फर्क होता है कि पहला 'वाक्यांश' के रूपमें रहता है, दूसरा अेक पूरा वाक्य ही होता है। कहावतें भी हमारे रोजमर्राके व्यवहारमें आती हैं। किसी कहावतका प्रयोग अुस सारी बातका निष्कर्ष (निचोड़) निकालनेके लिये और बातचीतके अन्तमें चमत्कार पैदा करनेके लिये किया जाता है। 'नाच न आये आँगन टेढ़ा', 'मन चंगा तो कठौतीमें गंगा', 'धोबीका कुत्ता घरका न घाटका', 'अधलज गगरी छलकत जाय', 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' ये कहावतें हैं। लीजिये:—

नाच न आये आँगन टेढ़ा—कोअी काम न कर सकनेपर अपनी कमजोरी या अयोग्यता छिपाकर दूसरोंपर दोष मढ़ना। जैसा—चन्द्रशेखर बिना अच्छी तैयारीके परीक्षामें बैठा; जब अुसने अुत्तर पुस्तक लिखना शुरू किया, तो बहाना बनाने लगा कि अुत्तर- पुस्तकका कागज खराब है, स्याही अच्छी नहीं है, कलम ठीक नहीं चलती केन्द्र व्यवस्थापकने अुसके लिये बैठनेकी अनुकूल व्यवस्था नहीं की। अुसका अैसा कहना 'नाच न आये आँगन टेढ़ा' है।

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः— जब कुछ अनिष्ट होनेवाला होता है, तब हमारी अक्ल भी वैसी ही हो जाती है। अुदाहरण—आजकल हिन्दू-मुसलमान आपसमें सिरफुड़ौवल करते हैं, जगह-जगह दंगे हो रहे हैं। हमारा विश्वास है कि अिससे हमारे मुल्ककी और भी बुरी हालत होनेवाली है। अिनको अितना भी होश नहीं कि गृह कलहसे भी कभी कहीं किसी देशकी तरक्की हुअी है? ठीक है—'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।'

अधजल गगरी छलकत जाय- कम योग्यतावाले, अहंकारी या ओछे स्वभावके मनुष्य घमंड बहुत करते हैं और दिखावा भी खूब करते हैं। जैसे—कुमुद तीन बार कोविद परीक्षामें फेल हो चुकी है और अपनेको अैसी बताती है जैसे आप धुरंधर साहित्यिक अथवा 'साहित्यरत्न' हो। सच है—'अधजल गगरी छलकत जाय।'

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरमें

साहित्यकी परख—लेखक-श्री शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशक—अंडिया पब्लिशर्स अिलाहाबाद। मूल्य १॥)।

साहित्यकी परख हिन्दीके सुप्रसिद्ध प्रगतिवादी अलोचक श्री शिवदानसिंह चौहानके निबन्धों अेव भाषणोंका संग्रह है। अिन निबन्धोंमें स्वस्थ समाजवादी यथार्थवादी दृष्टिकोणसे साहित्यका मूल्यांकन करनेकी चेष्टा की गअी है। अच्छा होता यदि पुस्तकमें संकलित कुछ निबन्धोंको भी आजकी परिस्थितिके अनुकूल पुनः लिखा जाता।

आज प्रगतिवाद साहित्यमें अेक शक्तिके रूपमें प्रतिष्ठित हो चुका है। संतोषकी बात है कि अुसके मापदण्डोंको हिंदीके अनेक साहित्यिकोंने स्वीकार कर लिया है। प्रगतिशील आलोचना-पद्धति और जीवन-दर्शनकी लोकप्रियता जैसे जैसे बढ़ती जाती है वैसे वैसे ही प्रगतिशील लेखकोंके दायित्वमें भी वृद्धि होती जा रही है। खेद है कि अिस समय तक भी हिन्दीमें प्रगतिवादपर कोअी अधिकृत पुस्तक नहीं निकल पाअी है। साहित्यिकोंमें काफी मतभेद है जिसका निराकरण आवश्यक है।

साहित्यकी परख अिस दिशामें केवल अेक प्रयास है। आशा है निकट भविष्यमें कोअी ठोस कदम अुठेगा।

निरतिवाद—लेखक श्री. दरबारीलाल सत्यभक्त, प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा सी पी.। मूल्य- ॥)।

स्वतंत्रता प्राप्तिके अुपरान्त देशके समक्ष नित्य नअी समस्याअें अुठ रही हैं। अनेक सुझाव पेश किअे जाते हैं किन्तु सुनिश्चित व्यवहारिक योजनाके अभावमें कार्यक्षेत्रमें नाना तरहकी अुलझनोंका सामना करना पड़ता है जिससे मूल अुद्देश्यसे दूर व्यर्थकी बकवासमें ही हमारा अधिकांश समय नष्ट हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरतिवादमें सत्यसमाजके संस्थापक स्वामी सत्यभक्तजीने देशकी वर्तमान स्थितिपर गम्भीर मनन कर पूंजीवादियों द्वारा नियंत्रित वर्तमान शासनकी अन्याय मूलक व्यवस्थाके परिणाम स्वरूप अुत्पन्न बुराअियोंपर प्रकाश डालते हुअे अुनके निराकरणके हेतु अपना हल पेश किया है। पूंजीवादको मर्यादित कर समाजवादके पोषक तत्वोंके सहयोगसे (दोनोंके सर्वोत्तम अंशोंका समन्वय कर) देशमें अेक नवीन व्यवस्था स्थापित करना निरतिवादका ध्येय है।

पुस्तक अत्यन्त सरल, और सुबोध शैलीमें लिखी गअी है। विचार स्वातन्त्र्यके प्रेमियोंको अिसे अवश्य अपनाना चाहिये।

चक्की—अुपन्यास, लेखक. श्री. मन्मथनाथ गुप्त, प्रकाशक--कल्याण साहित्य मंदिर प्रयाग। मूल्य--३)।

'चक्की' नोआखालीके हृदय द्रावक साम्प्रदायिक हत्याकांडसे सम्बन्धित अुपन्यास है। अिसमें सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री. मन्मथनाथ गुप्तने सजीव और प्रभावोत्पादक शैलीमें धर्मान्ध गुण्डों द्वारा अल्पसंख्यकोंपर होने वाले पाशविक अत्याचारोंका वर्णन किया है। अुपन्यासका कथोपकथन स्वाभाविक है और रेणुकाके चरित्रको कुशलतापूर्वक अंकित किया गया है। अन्त कलापूर्ण और मार्मिक है।

श्री. मन्मथनाथ गुप्तकी कला अभी निर्माणकालमें है। अुनकी भाषामें प्रवाह और शैलीमें प्रौढ़ता है। आशा है अुत्तरोत्तर अिसका विकास होता जायगा और शीघ्र ही गुप्तजी अपने व्यापक क्रांतिकारी जीवनके अनुभवोंपर आधारित कोअी अुच्चकोटिका अुपन्यास हिन्दी संसारको भेंट करेंगे।

रक्ताभ— मासिक पत्र, सम्पादक-मण्डल-यशपाल, मिसला मिश्र, गोकुलचन्द्र रस्तोगी, और आदित्य मिश्र, प्रकाशक-रक्ताभ कार्यालय रकाबगंज लखनअू। वार्षिक मूल्य-६) अेक प्रति ॥)।

'रक्ताभ'के अभी तक ६ अंक निकल चुके हैं। सभी अंकोंकी सामग्री जुटानेमें सम्पादक-मण्डलने काफी परिश्रमका परिचय दिया है। हम पत्रके अुज्ज्वल भविष्यकी कामना करते हैं।

— प्रशान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

विदर्भ नागपुर

नागपुर-विदर्भ प्रान्तके संचालक पंडित हृषीकेश शर्माने प्रान्तके समस्त केन्द्र--व्यवस्थापकों तथा प्रचारकोंसे अेक अपीलमें कहा है कि विदर्भ-नागपुर प्रान्तके समस्त परीक्षा-केंद्र व्यवस्थापकों तथा प्रचारक बन्धुओंको अैसे 'प्रचारक' नामधारी कार्यकर्ताओंसे सावधान रहना चाहिअे जो "राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्य'के नामकी आड़में राष्ट्रभाषा-प्रेमी जनतामें भ्रमपूर्ण बातोंका प्रचार करते हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, गत १९३७ से लगातार ११ वर्षोंसे राष्ट्रभाषाका शुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे प्रचार कर रही है। अिस केन्द्रीय समितिके अन्तर्गत आठ दस प्रान्तीय समितियां हैं जो नियमानुसार अपने-अपने प्रान्तमें राष्ट्रभाषाका प्रचार संगठित रूपसे कर रही है। गत १९३७ से विदर्भ-नागपुर प्रान्तीय समिति भी अपने प्रान्तमें प्रचार कर रही है।

अिस समय हमारे प्रान्तमें १३० राष्ट्रभाषा-प्रचार-केन्द्र हैं, लगभग १०० केन्द्र व्यवस्थापक हैं और ६० प्रमाणित-प्रचारक हैं। गत-वर्ष १९४७ में ६१ केन्द्रोंसे पाँच हजार आठ सौ अिकतालीस (५,८४१ परीक्षार्थी राष्ट्रभाषाका अभ्यास कर परीक्षाओंमें बैठे। यह तो पूरे अेक वर्षकी संख्या हुअी। अभी--अभी गत फर्वरी ४८ की छ माही परीक्षाओंमें ही ६००० से अूपर विद्यार्थी बैठे हैं—अगला सितम्बरका छः माही तो अभी बाकी है!

अिधर खामगाँव, अकोला और अमरावतीमें हमारी वैधानिक जिला प्रचार समितियाँ स्थापित हो गअी हैं। समितिका कार्य और प्रभाव दिनों दिन बढ़ता जा रहा है और अुसकी व्यापकता, लोकप्रियता और सफलता देखकर दो चार अनुशासनहीन कार्यकर्ताओंने (जिन्हें समितिकी सेवाओंसे अलग होना पड़ा) वर्धामें "हिन्दी-साहित्य राष्ट्रभाषा प्रचार सभा" या "राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार सभा" कुछ अैसे ही नामसे अेक संस्था स्थापित की है. और कुछ परीक्षाअें भी चलानेका अुपक्रम किया है। ये लोग कुछ केन्द्रोंमें केन्द्र व्यवस्थापकों और प्रचारक बन्धुओंके पास पहुँचे हैं। अुनमें भ्रमपूर्ण प्रचार किया है। अुनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरसे ४०% या ५०% कमीशन मिलनेका लालच दिखाया है। हमारे पास ऐसा मिथ्या--प्रचार करनेवालोंके बारेमें रिपोर्ट आयी हैं।

प्रांतके समस्त केन्द्र--व्यवस्थापकों तथा प्रचारकोंको चाहिअे कि वे ऐसे अनधिकारी व्यक्तियोंसे सावधान रहें। अुन्हें दूरसे नमस्कार करें और सदैवकी तरह अपनी कार्यसम्बन्धी कठिनाअियोंसे हमें सूचित करते रहें।

आसाम

कर्सियांग:— गत ८ मअीको कर्सियांग राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें पंडित जनार्दन चतुर्वेदीकी अध्यक्षतामें 'टैगोर जयन्ती' मनाअी गअी। सर्व श्री. गंगादयालप्रसाद, कामताप्रसाद गुप्त तथा गौरीशंकर प्रसाद गुप्तने विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरके व्यक्तित्वपर विस्तार-पूर्वक प्रकाश डाला। श्री चतुर्वेदीजीके भाषणके अुपरान्त सभा समाप्त हुअी। जयन्ती--अुत्सवको सफल बनानेका श्रेय श्री मणिलाल गुप्त विशारद को है।

महाराष्ट्र

आमोदा केंद्रका अेक प्रशंसनीय आयोजन—राष्ट्रभाषा शिक्षण शिविरके सिलसिलेमें यहां गत १ मअीसे २८ मअी तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके प्रारंभिकसे लेकर कोविद तकके वर्ग चलाअे गअे। शिविरका कार्य सर्व श्री दे. म चौधरी, रा. बी. डी. पाटील, शं. का. पाटील, तथा डोंगरदास जयराम चौधरीके निरीक्षणमें चलता रहा। व्यवस्था बहुत ही सुंदर थी और स्थानीय लोगोंने तन, मन धनसे अिसे सफल बनानेमें योग दिया था। यावल, रावेर और जलगांवके लगभग ५५० विद्यार्थियोंने शिविरमें राष्ट्रभाषाकी शिक्षा प्राप्त की।

गत २३ मअीको राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके परीक्षा--मन्त्री पंडित रामेश्वर दयाल दुबे, समितिके अुत्साही कार्यकर्ता श्री. देवीदास चौधरीके साथ यहां पधारे। आप लोगोंसे विचार विनिमय कर विद्यार्थियोंको काफी लाभ पहुँचा। श्री. दुबेजी अेवं श्री चौधरीजीने शिविरके कार्यपर सन्तोष प्रकट किया और विद्यार्थियोंको अुत्साह-पूर्वक अध्ययन करनेकी सलाह दी। जलगांव तथा अन्य स्थानोंके कुल २० प्रचारकोंने शिविरमें अवैतनिक रूपसे कार्य किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम दिनका समारोह श्री. घनशाम काशीराम पाटील वाअिस चेअरमैन स्कूल बोर्ड पूर्व खानदेशकी अध्यक्षतामें हुआ। राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री. रा वा. पाटीलने राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर प्रकाश डालते हुअे अेक अुत्साहवर्धक भाषण दिया।

राजपूताना

अजमेरः—सिन्धके हिन्दू शरणार्थी यहां काफी तादादमें आकर बस गअे हैं। सिन्धियोंका हिन्दी प्रेम सदैवसे ही सराहनीय रहा है। सिन्ध राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने अजमेरको केन्द्र बनाकर बिखरे हुअे सिन्धी भाअियोंमें हिन्दी प्रचारका कार्य प्रारम्भ कर दिया है। जोधपुर, अुदयपुर आदि सभी जगह कार्य चला हुआ है। विद्यार्थियोंकी संख्यामें निरंतर वृद्धि होती जा रही है।

अजमेरका कार्य पंडित देवदत्त शर्माके निरीक्षणमें चल रहा है। श्रीमती कृष्णादेवी भी अिसमे सहयोग दे रही हैं। श्री देवदत्तजी प्रवेश, परिचय और कोविदके वर्ग चला रहे हैं। प्रवेशका वर्ग काफी बड़ा हो गया है। अतअेव अुसे तीन भागोंमें विभक्त कर दिया गया है। श्री. मंघारामजी (प्रभाकर) तथा श्री टीकमदासजी (कोविद) श्री देवदत्तजीकी सहायतासे अिन्हें चला रहे हैं। श्रीमती कृष्णादेवी नारी शालामें अध्यापिकाओं और कन्याओंको पढ़ाती हैं।

जोधपुरः—यहां पंडित कालूराम शास्त्री राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य कर रहे हैं। सिन्धियोंकी ओरसे वहां दो हाअीस्कूल तथा कुछ प्राथमरी स्कूल स्थापित हो चुके हैं। शास्त्रीजी अध्यापकों तथा विद्यार्थियोंको हिन्दी पढ़ाते हैं।

अुदयपुरः यहां समितिकी ओरसे श्री. सूर्यकान्तजी प्रचार कार्य कर रहे हैं। लगभग २५० विद्यार्थियोंके पढ़ानेकी व्यवस्था हो चुकी है। अिन्दौर मऊ, जयपुर आदि राजस्थानके प्रमुख स्थानोंमें भी कार्य आरम्भ हो चुका है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाएँ—

समितिकी आगामी परीक्षाएँ १८, १९ सितम्बर ४८ को होंगी। आवेदन-पत्रोंको वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिसप्रकार हैं—

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र	३० जून ४८
सशुल्क साधारण आवेदन-पत्र	२५ जुलाअी ४८
विलम्ब शुल्कके साथ आवेदन-पत्र	१ अगस्त ४८

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षा—

सितम्बर ४८ में होनेवाली रत्न परीक्षाके लिये विलम्ब शुल्क १) रु. के साथ आवेदन-पत्र ३० जून तक स्वीकृत हो सकेंगे।

रत्न केन्द्र-सूची—

गौहाटी, कटक, नागपुर, वर्धा, जलगांव, नासिक, पूना, बम्बअी, सूरत अहमदाबाद, बेजवाड़ा

कोविद लेखन-कार्य—

अब लेखन-कार्य कोविद प्रश्नपत्र ३ के अन्तर्गत न रहकर स्वतंत्र रूपसे रहेगा। प्रश्नपत्र ३ रा १०० अंकका रहेगा। लेखन-कार्यमें भी अुत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

नये केन्द्र —

निश्चित केन्द्रोंके सिवा जहाँ कमसे कम १५ परीक्षार्थी होंगे वहाँ भी केन्द्र स्वीकृत हो सकेगा। लेकिन साधारणतया अुस केन्द्रके तीस मीलके आसपास समितिका कोअी दूसरा स्वीकृत केन्द्र न हो। नये केन्द्रके लिये नियत केन्द्र व्यवस्थापक आवेदन-पत्र भरकर ३० जून तक अपने प्रान्तीय संचालककी सम्मतिसे वर्धा कार्यालयमें पहुँचा देना आवश्यक है।

बातचीत परीक्षा —

बातचीत परीक्षा पहली बार सितम्बर ४८ में होगी।

बातचीत परीक्षा सम्बन्धी नियम यहाँ दिये जाते हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) बातचीत परीक्षामें कोअी भी अहिन्दी भाषी भाअी-बहन बैठ सकेंगे ।

(२) यह परीक्षा वर्षमें दो बार समितिकी प्रचार परीक्षाओंके समयपर ली जावेगी ।

(३) यह परीक्षा अुन्हीं केन्द्रोंमें हो सकेगी जहाँ कोविद केन्द्र होगा ।

बातचीत परीक्षाके लिये कमसे कम १५ परीक्षार्थी होनेपर ही परीक्षाकी व्यवस्था की जा सकेगी ।

(४) बातचीत परीक्षाका शुल्क २) होगा ।

(५) अिस परीक्षाके लिये परीक्षार्थीको आवेदन-पत्र भरना न होगा। आवश्यक शुल्क देकर केन्द्र-व्यवस्थापकके पास अपना नाम-पता आदि दर्ज करा देना होगा ।

(६) परीक्षार्थियोंको कोअी प्रवेश-पत्र नहीं दिया जायगा । परीक्षाकी तारीख व समय केन्द्र-व्यवस्थापकके पास सूचित किया जायगा । अुसके अनुसार परीक्षार्थीको नियत समय और स्थानपर हाजिर रहना होगा ।

(७) परीक्षा-शुल्क किसी भी हालतमें वापस नहीं किया जायगा ।

(८) अिस परीक्षाके पूर्णांक १०० होंगे ।

(९) बातचीत परीक्षामें कमसे-कम ४० अंक पानेवाले परीक्षार्थी अुत्तीर्ण समझे जायेंगे । ५० या ५० से अधिक अंक प्राप्त करनेवाले दूसरी और ६० या ६० से अधिक अंक प्राप्त करनेवाले पहली श्रेणीमें समझे जायेंगे । विशेष योग्यताके लिये ७५ या अुससे अधिक अंक प्राप्त करना होगा ।

(१०) परीक्षा तारीखके अेक माहके पश्चात् परीक्षा-फल केन्द्रोंको भेज दिया जायगा ।

(११) अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके प्रमाण-पत्र डेढ माहके अंदर केंद्र-व्यवस्थापकके पास भेज दिये जायेंगे ।

(१२) बातचीत परीक्षामें नीचे लिखे विषयोंपर परीक्षार्थीसे लगभग १५ मिनट तक बातचीत की जायेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ अंग-प्रत्यंग	१० डाकखाना	१९ पक्षी
२ पोशाक	११ बाजार-मंडी	२० सिक्का
३ घर	१२ वजन-माप	२१ हथियार
४ भोजन	१३ बगीचा	२२ बर्तन
५ गाँव, शहर	१४ फल-फूल	२३ मंदिर
६ पाठशाला	१५ खेती-बारी	२४ सवारियां
७ खेल	१६ अनाज	२५ १०० तक गिनती
८ रिश्तेदार	१७ मौसम	
९ रेलवे स्टेशन	जानवर	

(१३) परीक्षामें परीक्षार्थीके शब्द ज्ञान, अुच्चारण, भाषाकी शुद्धता और भाषाकी धारा प्रवाहिता पर ध्यान दिया जायगा।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मन्त्री

नये केन्द्र

क्रमांक	प्रान्त	केन्द्र
११५०	अुत्कल	कलापथर
११५१	,,	नवरंगपुर
११५२	,,	कंटिगड़िया
११५३	,,	पदमपुर
११५६	,,	बांकी
११६९	,,	कुदिआरो
११८६	,,	खडसाही
११८७	,,	हलदियागढ़
११८८	,,	बोनाओगढ़
११८९	,,	सअँरा
	राजस्थान	
११६०	,,	अिन्दौर
११६१	,,	तिलस्वां
११६२	,,	चांदारूण
११८०	,,	जोधपुर
११८४	,,	देवली कैम्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	प्रान्त	केन्द्र
११८५	,,	ब्यावर
११९२	,,	नसीराबाद
	गुजरात	
११४०	,,	भालेज
११४१	,,	सगडोर
११४२	,,	पीपलाता
११४३	,,	रणु
११४४	,,	जूनाडीसा
११४५	,,	कामली
११४६	,,	नंदीसर
११५४	,,	गढ़
११६३	,,	तेन तलाव
११६४	,,	चंडीसर
११६५	,,	पानवड
११६७	,,	मूली
११७०	,,	सरखेज
११७१	,,	साभराओ
११७२	,,	अुदवाड़ा
११७३	,,	अंचेली
११७४	,,	शिहोर
११७५	,,	माणसा
११७६	,,	अूंटडी
	महाराष्ट्र	
११३७	,,	पारोडे गोवा
११३८	,,	निमगांव जाली
११४७	,,	टेकवाड़ा
११५६	,,	निंभोरा
११५७	,,	जानोरी
११५८	,,	दिंडोरी
११५९	,,	चिखली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	प्रान्त	केंद्र
११७७	,,	ठाने
११७८	,,	खाकुर्डी
११८३	,,	आलंदी
११९०	,,	चिकुर्डे
	विदर्भ--नागपुर	
११४८	,,	मौदा
११६८	,,	खापा
११७९	,,	काकडा
११८१	,,	पांढरी
११८२	,,	शेम्बा बु॥
	आन्ध्र	
११४९	,,	मार्कापुर
	कर्नाटक	
११९१	,,	गदग

नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	केन्द्र
गुजरात	श्री. रमणिकलाल नारदलाल दवे	१२८६	जेतलपुर
महाराष्ट्र	,, विश्वनाथ पुरुषोत्तम जोशी	१२८४	कोल्हापुर
,,	,, सौ० सुमती रास्ते	१२८५	वाअी
,,	,, गणेश विश्वनाथ महशब्दे	१२८९	,,
,,	,, डोंगर जयराम चौधरी	१२९२	शहापुर
,,	,, महादू धनाजी ,,	१२९१	,,
,,	,, म. बा. वाणी	१२९७	रत्नागिरि
,,	,, लक्ष्मीबाअी विष्णुपत आपटे	१२९८	जमखंडी
,,	,, गोविन्द रेवाप्पा अम्मणगी	१२९९	बेलगांव
वि. नागपूर	,, सौ. प्रतिभा वनमाली	१२९०	वर्धा
,,	,, देवकरण देवीदीन नायक	१२९४	नागपूर
अुत्कल	,, रामकृष्ण शास्त्री	१२८७	कटक
,,	,, देवराज पाठी शर्मा	१२८८	पुरी
आन्ध्र	,, भगवत अुल्ला सत्यनारायण	१२९५	गुडिवाड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकोंका आर्डर देनेके साथ-ही-साथ पेशगी रकम नहीं भेजते। हमें उन्हें पेशगीके लिये लिखना पड़ता है और तब कहीं रुपये आनेपर उनके लिये यहाँसे पुस्तकें भेजी जाती हैं। अिससे अेक तो ग्राहकोंको पुस्तकोंके लिये काफी इंतजार करना पड़ता है, दूसरे, सबको परेशानी भी होती है।

अिसलिअे अपने सभी ग्राहकोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे पुस्तकोंका आर्डर देते समय उनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक-चौथाअी पेशगी जरूर भेज दिया करें।

यह नियम काफी हानि उठाकर और दिक्कतोंका अनुभव करके बनाया गया है और अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं की जा सकती; अतः जिन लोगोंके आर्डरके साथ उक्त नियमानुसार पेशगी नहीं आयेगी, उन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

पत्र-व्यवहार करते समय या मनीआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता स्पष्ट लिखनेकी कृपा करें।

—मंत्री

नोट—जिन लोगोंके पास राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पुरानी पुस्तकें बेचनेके लिए हों वे हमसे पत्र-व्यवहार करें।

केन्द्र
जेतलपुर
कोल्हापुर
वाअी
,,
शहापुर
,,
रत्नागिरि
जमखंडी
बेलगाँव
वर्धा
नागपूर
कटक
पुरी
गुडिवाड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. मा. ८२८

पत्रिका द्वारका
'राष्ट्रभाषा' व

कविता-संग्रह

कविता-संग्रह

★ हा बापू ! ★

राष्ट्रभाषाके कवियोंकी श्रद्धांजलि

अिस पुस्तिकामें बापूकी श्रद्धामें समर्पित किये गये अधिक 'फू
नहीं हैं किन्तु वे सब समर्पित हैं अुन फूलोंको जो त्रिवेणी संग
गंगा-यमुना तथा देश-भरकी अन्य नदियोंमें मिलकर देशकी मिट्टीके
एकाकार हो गये।

अिस संग्रहका श्रद्धा-मूल्य कम-से-कम केवल अेक रुपया है।

अिस पुस्तककी बिक्रीसे जो आय होगी वह गांधी-स्मारक कोष
भेज दी जायगी। मूल्य मनीआर्डरसे भेजना चाहिये। वी. पी. न
भेजी जायगी।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, व

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

राष्ट्रभाषा

मई १९४८

श्री. मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख			पृ
१. अमर कामना		...	४
२. भाषा और साहित्य		...	४
३ मेरी प्रयाग यात्रा		...	४
४. हिन्दीपर अंग्रेजीका अवांछनीय प्रभाव		...	४
५. श्री. मैथिलीशरण गुप्त		...	४
६. ब्रह्माकी शरारत		...	४
७. नयी हिन्दी--नयी समस्याएँ		...	४
८. हिन्दुस्तानीकी धांधली	...	...	४
९. हमारी नजरोंमें	...	...	४
१०. राष्ट्रभाषा--संसार	...	...	४
११. कहानी और अुपन्यास	...	...	४
१२. प्रांतीय हलचलें	...	...	४
१३. परीक्षा-विभाग	...	...	४

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओं प्रश्न देख लेना विशेष लाभप्रद होता है ।

प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविदके पिछले प्रश्नपत्र कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं ।

अूपर लिखी चारों परीक्षाओंके अेक अेक समयके प्रश्नपत्रोंके तैयार किये गये हैं । प्रत्येक सेटका दाम पाँच आना है । प्रश्नपत्रोंका सेट समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये

प्रत्येक फुटकर प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है ।

सूचना:—नीचे लिखी पुस्तकें छपकर तैयार हैं ।

(१) गुलदस्ता— ३, (२) कहानी-संग्रह— १, (३) कहानी-संग्रह
(४) कहानी संग्रह— ३, (५) राष्ट्रभाषा दूसरी पुस्तक —

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]
सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, मअी—१९४८ [अंक ७

अमर कामना

श्री. रवीन्द्रनाथ ठाकुर :

जहाँ चित्त भय-रहित हो, सिर जहाँ ऊँचा हो;

ज्ञान जहाँ मुक्त हो;

जहाँ घरकी दीवारें वसुधाको खंडित और क्षुद्र बनाकर दिन-रात अपने प्रांगणमें न रक्खें;

जहाँ वाक्य हृदयसे उच्छ्वासित होकर निकलें;

जहाँ निर्धारित स्रोतमें होकर कर्मधारा अजस्र सहस्र विधिसे चरितार्थ होनेके लिअे प्रत्येक स्थान और दिशामें दौड़े;

जहाँ तुच्छ आचारकी रेगिस्तानी रेतका ढेर विचारके स्रोत-पथको निगल न जाय, और पौरुषके सैकड़ों टुकड़े न कर डाले;

जहाँ नित्य समस्त कर्म, चिन्ता और आनन्दके तुम नेता होओ;

अपने हाथके निर्दय आघातसे हे पिता ! तुम भारतको अुसी स्वर्गमें जागरित करो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और साहित्य

: श्री सन्तप्रसाद शर्मा :

संसार परिवर्तनशील है; क्योंकि वह अुन्नतशील है। दुनियाकी तमाम चीजें परिवर्तित होती रहती हैं। अुलट फेरका ताता निरंतर जारी रहता है। अुसी तरह भाषा और साहित्यके रूप और अुसकी गतिमें भी परिवर्तन होता रहता है। भाषा और साहित्यमें अपरिच्छेद सम्बन्ध है। भाषा हमारे पूर्वजोंकी अर्जित सम्पत्ति है, अुसमें हमारे पूर्वजोंकी अलौकिक ज्ञान प्रतिभा संग्रहीत हैं। अतएव हमें अिस सम्पत्तिकी रक्षा सदैव यत्नपूर्वक करनी चाहिये। देश और कालके प्रभावमें पड़कर भाषा अपनी वेशभूषाको सदैव बदलती आयी है और आगे भी परिस्थिति विशेष में पड़कर बदलती रहेगी। यह परिवर्तन किसी संस्था या व्यक्ति विशेषसे नहीं होता है। देश, काल, परिस्थिति और जनसमुदायकी गति और रुचिके अनुकूलही भाषाके स्वरूपमें परिवर्तन होता आया है।

आर्योंकी जो प्राचीन भाषा शताब्दियोंके परिवर्तनके बाद आधुनिक हिन्दीके रूपमें परिणत हुअी है वह अिसीके फलस्वरूप। जो भाषा सर्व-साधारणसे सम्पर्क नहीं रखती है वह चाहे तो साहित्यकी भाषा रहेगी या शिष्टोंकी। परन्तु सर्वसाधारणसे सम्पर्क नहीं रखनेपर सभी साहित्यिक भाषाअें मृतप्राय हो जाती हैं। हिन्दीकी अुत्पत्ति भाषाके विकासका ही फल है। विद्वानोंकी राय है कि वैदिक युगकी प्रचलित भाषाओंमें अेकने विशेष अुन्नतिकी। वह संस्कृत है। अुसमें श्रेष्ठ साहित्यकी रचना हुअी। बड़े बड़े विद्वानोंके सरस मनोभावोंकी अिसीमें अभिव्यंजना हुअी। विद्वानोंकी भाषा होनेसे संस्कृतकी श्रीवृद्धि अवश्य हुअी, पर अन्य ग्राम्य भाषाओंका प्रचार बढ़ता गया। अन्तमें अुन्हीं ग्राम्य भाषाओंसे संस्कृत दब गअी और वे साहित्यिक रूप धारण कर शिष्टोंकी भाषा बनीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु जो भाषा जनसमुदायकी चीज न होगी वह ज्यादा नहीं टिक सकती। अतः प्राकृत भाषा भी साहित्यिक रूप धारण कर सीमाबद्ध हो गअी। अिसीसे अपभ्रंश भाषाओंकी अुत्पत्ति हुअी। अुन्हींमें अेकसे हिन्दीकी अुत्पत्ति हुअी। आधुनिक हिन्दी साहित्यमें जिस भाषाका प्रयोग होता है वह भी जन साधारणकी भाषा तो नहीं है, लेकिन बहुत ज्यादा अंशोंमें सम्बन्ध रखती है। अभी अुसका कोअी रूप स्थिर नहीं हुआ है।

भाषा और साहित्यपर राजनीति और धर्मका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। भाषाकी अुन्नतिका सबसे बड़ा अवरोधक है पराधीनता। भारत कल तक दासताकी बेड़ीमें बेतरह जकड़ा हुआ था, और यही कारण है कि हिन्दी भाषासे अभी तक पराधीनताका प्रभाव खत्म नहीं हुआ है। भाषा राष्ट्रीयताका चिन्ह है। भाषा अैसी होनी चाहिये जिसमें देशकी समस्त भावनाअें व्यक्त हों। हमें धर्म, अितिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान अथवा कृषिशास्त्रको समझनेके लिअे अन्यत्र नहीं भटकना पड़े, बल्कि सारी की सारी भावनाअें हमारी भाषामें ही वर्तमान हों। भाषा मृत तभी होती है जब वह देशकी सारी भावनाओंको नहीं व्यक्त कर सकती। अुसका क्षेत्र संकुचित हो जाता है और वह या तो सिर्फ साहित्यिक भाषा रहती है या मृत। कोअी भी भाषा समुन्नत और स्वतंत्र तभी होती है जब वह जन समुदायकी भाषा रहते हुअे देशकी सारी भावनाओंको प्रकाशित कर सकनेमें समर्थ हो सके। भाषामें कृत्रिमता नहीं होनी चाहिअे। यूरोपमें भी पहले पहल लैटिन भाषामें ही साहित्यकी रचना होती थी। लेकिन पीछे काल विशेषमें पड़कर वहाँकी भाषाअें अुसी तरह परिवर्तित होती रही हैं। भाषापर धर्मकी भी अमिट छाप है। संसारमें जब-जब किसी नवीन धर्मका प्रचार हुआ तब तब अुस धर्मके साथ किसी न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भाषा विशेषकी अुन्नति हुअी। बौद्ध धर्मके साथ पाली, जैन-धर्मके साथ मगधीकी वृद्धि हुअी। यूरोपमें भी पहले लैटिन देव भाषा हो गअी, लेकिन पीछे जब लूथरने रोमके धर्मराजके विरुद्ध जो आन्दोलन किया अुसके लिअे अुन्होंने जर्मन-भाषाका आश्रय किया। निदान यह हुआ कि आज तक जो भाषाअें लैटिन-भाषासे अुद्गत हुअी अुनके बोलनेवाले रोमन कैथोलिक हैं और जिन जातियों की भाषाका सम्बन्ध जर्मन भाषासे है वे प्रोटेस्टेंट हैं। धार्मिक संस्कारोंके कारण किसी मृतभाषाका प्रभुत्व भी अखंडित बना रहा है। हिन्दीपर संस्कृत-भाषाका जो आधिपत्य है अिसीका कारण है।

धर्म और ज्ञानकी भाषा सदैव लोकभाषा होनी चाहिये। किसी भी भाषाके विरुद्ध जो आन्दोलन चलता रहता है अुनका भी कारण भाषाकी कृत्रिमता ही होती है। सम्प्रति लोगोंकी अिच्छा है कि क्या गद्य और क्या पद्य, दोनोंकी भाषा बोल चालकी भाषा हो। भाषाका स्वरूप स्थिर हो जानेसे अुसके विकासमें विशेष सुविधा होगी।

'नवशक्ति'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी प्रयाग यात्रा

:श्री. जेठालाल जोशी:

प्रयाग हम भारतीयोंका तीर्थराज है। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके कार्यके नाते प्रयागसे मेरा पिछले १८-२० वर्षोंसे परिचय है। अिस बार वर्धा राष्ट्रभाषा परीक्षा-समितिकी बैठक प्रयागमें रखी गअी थी। यात्राकी कठिनाअियोंके बावजूद भी मैं 'तीर्थराज'के दर्शनके लिअे चल पड़ा।

बम्बअीसे भाअी कान्तिलालजी भी जानेवाले थे। अतः मैंने बम्बअी होते हुअे जाना ठीक समझा। यात्रामें अेकसे दो भले। अुन दिनों टिकिटका मिल जाना मानों आधी कठिनाअियोंका हल हो जाना था। हम शामको ७॥ बजे विक्टोरिया टरमीनस स्टेशन पहुँचे। जी० आअी० पी० के डिब्बोंमें प्रवेश होनेके लिअे यात्रियोंको डार्विनकी बन्दरवाली थियरीका पार्ट अदा करना पड़ता है। किसी प्रकार हमने खिड़कियोंके रास्ते डिब्बेमें प्रवेश किया।

मार्गकी हरी-भरी पहाड़ियों, रुपहले झरनों, पनवाड़ियों तथा अमराअियोंने हमारी यात्राको बहुत मनोरम बना दिया था। दूसरे दिन रातके ११ बजे प्रयाग पहुँचे। यहाँके अिक्के रामखेड़ीके रथकी तथा टट्टू अहमदाबादकी अेक्का गाड़ीके छोटे बैलोंकी याद दिलाते हैं। परन्तु चार पूरे आदमियोंको खींच ले जानेका अिनमें साहस होता है।

आज जेठ सुदी १३ का दिन था। चांद बादलोंमें आँख मिचौनी खेल रहा था। हम प्रयागकी सड़कपर चल रहे थे। मुझे सर तेज बहादुर सप्रूका कथन याद आया "अुत्तर भारतकी लिपि तो अुर्दू ही है।" मैं चारों ओर देखता जा रहा था और सोचता जाता था कि यह कथन कहाँ तक ठीक है। साअिन बोर्डोंपर तो 'नागरी' का ही प्राधान्य था। कहीं कहीं तो नागरी और रोमन ही थी। अुस दिनका प्रयाग बिल्कुल राष्ट्रीय झण्डोंका शहर था। बहुत ही कम अैसे मकान थे जिन पर 'तिरंगा चक्रधर' न फहरा रहा हो। आखिर क्यों न होता? हमारे हृदय-सम्राट पं० जवाहरलालजी १० जूनको ही अहमदनगरके किलेसे छूटकर अपनी जन्मभूमिमें लौटे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन भवनमें पहुँचे । यह अिमारत प्रयागकी मशहूर अिमारतोंमें अेक है । श्री. दुबेजी, श्री अनुसूयाप्रसादजी, अुच्चल) श्री विश्वनाथ (कलकत्ता) तथा श्री कडेपुरकरजी महाराष्ट्र) हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे प्रणाम नमस्कारके पश्चात् ब्यालू किया और सभी 'सत्यनारायण कुर्टार' सामने हरी दूबवाले मैदानपर बस्तर बिछाकर सो गअे । प्रयागकी गर्म तो प्रसिद्ध है ही । फिर भी श्री. अनुसूयाप्रसादजीके जगानेपर आँखे खोली देखा कि सूर्य निकल चुका था ।

सभी 'त्रिवेणी' की ओर चल पड़े । गंगा यमुनाके संगम स्थानपर नौका द्वारा पहुँचे । यहाँका दृश्य बडा ही मनोहर है । दोनों नदियोंका शुभ्र नील जल दूरसे ही स्पष्ट दीखता है । यह सम्मिलन हमारी संस्कृतियोंके सम्मिलनके लिअे सदैव ही आदर्श रहा है । यमुनाका त्याग अपूर्व है । यहाँसे यमुना गंगामें लुप्त हो जाती है । हिन्दी-अुर्दू दोनों भाषाओंका अैसा शुभ मिलन कब होगा ?

त्रिवेणीमें खूब स्नान किये । तैरे और गोते लगाये । तत्पश्चात् नौका द्वारा किलेके पास किनारेपर पहुँच कर अक्षय-वटके दर्शन किये ।

यहाँ हम सभी राष्ट्रभाषा परिवारके आत्मीय थे । हमारी बातचीतका विषय था 'तात्कालीन राष्ट्रीय परिस्थिति तथा राष्ट्रभाषा' संध्याको परीक्षा समितिकी बैठक हुअी । बैठक सब प्रकारसे सफल रही । श्रद्धेय टण्डनजीकी अुपस्थिति अेक विशेषता थी । दूसरे दिन सबेरे श्रद्धेय टण्डनजीसे अनके निवास स्थानपर विशेष रूपसे मिले ।

टण्डनजी अेक कमरेमें जाजमपर बैठे हुअे थे । कमरेके चारों ओर किताबें बिछी हुअी थीं । टण्डनजीके आसपास फाअिलें मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रोंका ढेर लगा हुआ था । सामनेकी ओर फोन रखा था । आपके दिव्य चेहरेमें अद्भुत चमक थी । टण्डनजीका व्यक्तित्व राष्ट्र-तेजका अनुपम प्रतीक है । आपकी सरलता स्पष्टवादिता तथा आडम्बरशून्य व्यवहारका आगन्तुकपर स्थायी प्रभाव पड़ता है । चरखेके आप अनन्य अुपासक हैं । अिस अवस्थामें भी आपकी कार्य क्षमता आश्चर्यजनक है । अतिथि सत्कारमें तो आप सच्चे आर्य गृहस्थ हैं । अतिथिकी छोटी बड़ी सभी बातोंका आप बराबर ध्यान रखते हैं । टण्डनजी और हमारी बातचीतका विषय था 'राष्ट्रभाषा और अुसकी समस्या' टण्डनजीने साफ समझाया कि अहिन्दी भाषाभाषी जनता राष्ट्रभाषाकी अुसी शैली, लिपि और शब्दावलीको अपनायगी जो अुसके अधिक नजदीक होगी । राष्ट्रभाषाको सरल बनाना है और जनता तक पहुँचाना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ हमें जवाहरलालजी तथा आचार्य कृपलानीजीसे मिलनेका सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। श्रद्धेय टण्डनजीने ही हमारे मिलनेकी व्यवस्था कर दी थी। हम प्रातःकाल ठीक ८:३० (ता० २६-६-४५ को आनन्द भवन पहुँचे। पंडितजी पिछली रात्रिको ही बम्बईसे लौटे थे। आपके व्यक्तिगत मंत्री श्रीयुत अुपाध्यायजी हमसे बड़े प्रेमसे मिले। हमारी मुलाकात पूर्व निश्चित थी। कुछ ही मिनिटोंमें पंडितजी पधारे आप टेनिसशर्ट और नेकर पहने हुअे थे। आपके मुखपर प्रसन्नता थी और नेत्रोंमें गम्भीर तेज। आपसे कोअी १५-२० मिनिट बातें हुअी। आपकी बातचीतका ढंग बड़ा ही चित्ताकर्षक था। आप गहराअीसे सोचते हैं और बातको साफ साफ कहते हैं। आपने कहा हमें फिजूलकी बहस छोड़ देनी है। हिन्दीमें वह ताकत होनी चाहिये कि वह दुनियांकी अन्य समृद्ध भाषाओंके टक्करमें खड़ी रह सके पारस्परिक सहयोगसे हमें आगे बढ़ना है। आज हिन्दी अुर्दू दोनोंही अपनी प्रारम्भिक अवस्थामें हैं। हिन्दीके शब्द भण्डारको बढ़ानेसे ही अुसकी शक्तिमें वृद्धि होगी। अुसमें अैसी शक्ति होना चाहिये कि वह वैज्ञानिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयोंका भी सुन्दर ढंगसे प्रतिपादन कर सके। अिस क्षेत्रमें अुसमानिया विश्वविद्यालयने कुछ ठोस कार्य किया है। आज प्रत्येकको चाहिये कि वह अपने रोज मर्राके व्यवहारमें आने वाले शब्दोंसे हिन्दीको समृद्ध करें। शब्द गढ़ना किसी खास संस्थाका कार्य क्यों हो? अिसे कोअी भी गढ़ सकता है। अँग्रेजी भाषा अैसे ही तो विकसित हुअी है। अँग्रेजीमें प्रत्येक वर्ष ८ १० हजार नअे शब्द आते है। योरोपीय भाषाओंमें प्रकाशित होनेवाली पुस्तकोंका प्रामाणिक अनुवाद जल्द ही होना चाहिये। अन्तमें पंडितजीने कहा कि हिन्दी तथा अुर्दूमें जो जिसे सीखना चाहे अुसे सीखनेकी अुसे पूरी आजादी और सुविधाएँ देनी चाहिये।

आचार्य कृपलानीजीसे भी हम यहीं मिले। आपसे हिन्दी अुर्दूको लेकर सुन्दर और दिलचस्प बातें हुअीं। आपका हँसता हुआ चेहरा, तथा मस्तानी चाल अेक निर्भीक व्यक्तिके लक्षण हैं। आपकी बातोंमें मधुर कटाक्ष भी रहता है। तपस्वी सुंदरलालजी अिसी समय पंडितजीसे मिलने आये थे। श्री कृपलानीजी और सुंदरलालजी बड़े प्रेमसे मिले। दोनोंने अपने अपने विनोदपूर्ण ढंगसे अेक दूसरेका संबोधन किया। आअिये मौलाना साहब सुन्दरलालजीने कहा। मैं बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाढ़ीका मौलाना हूँ और आप दाढ़ीके रहते हुये भी आचार्यजी हैं। अिसी समय पंडितजी भवनके अुत्तरकी ओर अपनी पुत्रीके साथ टहल रहे थे। सुंदरलालजी अुनसे मिलना चाहते थे "बोले "मै वहाँ जा सकता हूँ" कृपलानीजीने कहा जाअिये न वहाँ कोअी जनाना थोड़े ही है।"

आज चंद्रग्रहण था। हम त्रिवेणी स्नानके लिअे संगमपर पहुँचे। बड़ा अपूर्व दृश्य था। मानव प्रवाह अुमड़ पड़ा था। हजारों लाखों स्त्री--पुरुष मधुर गीत गाते हुअे स्नानको जा रहे थे। स्त्रियाँ नन्हें नन्हें बच्चोंको साथ लिअे हुअी थी। अपार भीड़ थी। अर्ध रात्रिका समय होनेपर भी व्यवस्थाका अुत्तम प्रबन्ध था। दूसरे दिन नगरके और भी स्थान देखे। आनंद भवन, कमला नेहरू अस्पताल, विश्व विद्यालयकी अिमारतें, अिन्डियन प्रेस, महिला विद्या--पीठ आदि देखने योग्य हैं।

आचार्य श्री. नरेन्द्रदेवजी से मैं यहीं मिला। हम दोनोंने टण्डनजीके यहाँ साथ ही भोजन किया था। शामको बम्बअीके लिअे रवाना हुअे। श्रद्धेय टण्डनजी स्टेशन तक पहुँचाने आये। प्रयागके ये मेरे जीवनके ढाअी दिन स्मरणीय थे। हमारी गाड़ी ठीक समयपर चली। थोड़ी ही देरमें तीर्थराज आँखोंसे ओझल हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदीपर अंग्रेजीका अवांछनीय प्रभाव

: श्री. हरिशंकर परसाई :

॥

यह स्वीकार किया जाता है कि अंग्रेजी भाषा और साहित्यके संसर्गसे हमारे साहित्यको बड़ा लाभ पहुँचा है तथा अुसके कुछ अवहेलित अंगोंकी पुष्टि हुअी है, विशेषकर कथा-साहित्य व निबंध साहित्यको बड़ा प्रोत्साहन मिला है और अुनकी अभिवृद्धि हुअी है। परस्पर आदान-प्रदानसे शब्द-भंडार में भी वृद्धि हुअी है तथा पश्चिमी विचारधाराओंसे हमारा परिचय भी अंग्रेजीके माध्यम द्वारा ही हुआ है।

परंतु जहाँ अेक अंग्रेजीके प्रभावसे हमारी भाषा अधिक समृद्धशालिनी हुअी, वहीं दूसरी ओर अुसपर कुछ अवांछनीय प्रभाव पड़े बिना भी न रह सका। अंग्रजी शासनमें अंग्रेजी भाषाका प्रभुत्व रहा और जनसाधारणकी प्रवृत्ति अंग्रेजी बोलने और लिखनेकी ओर हुअी। यह समय ही अैसा था कि भारतीयताको त्याज्य मानकर लोग अंग्रेजी वेशभूषा, आचार-विचार तथा भाषाकी ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुअे। अंग्रेजी वस्त्र पहिने हुअे अेक 'निरक्षर भट्ट' भी अभी तक विशेष सम्मानका पात्र बन जाता था और अभी भी जब तक हम किसीके मुँहसे अंग्रेजीके दो चार शब्द नहीं सुन लेते तब तक अुसके सुसंस्कृत और सुशिक्षित होनेमें संदेह ही बना रहता है।

अिसका परिणाम यह हुआ कि अिस भाषासे सर्वथा अनभिज्ञ आदमी भी मौकेके लिअे अंग्रेजीके दो चार शब्द जेबमें डाले रहता है। 'हिन्दी अिंग्लिश टीचर' नामधारी पुस्तकें रटकर कअी आदमी चलते-फिरते शब्द-कोष अभी भी बने हुअे हैं। अैसी पुस्तक जिसके मुख पृष्ठपर प्रकाशकने ३० दिनमें अंग्रेजी सिखानेकी 'गैरंटी' (अुसीका शब्द) देनेका दुस्साहस किया था; मेरा अेक पड़ोसी प्रतिदिन प्रातःकाल अुठकर वेद-मंत्रोंकी तरह रटता था। यह पुस्तक पद्यमें थी और अेक पद मुझे अभी याद है।

पानी 'वाटर', लाओ 'ब्रिंग'।
'फार' लिअे, महाराजा किंग॥

पद्यका अर्थ और अुद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस अंग्रेजी प्रेमके फलस्वरूप शिक्षित वर्गमें अेक खिचड़ी भाषा प्रचलित हो गअी जिसमें आधे शब्द हिन्दीके तथा आधे अंग्रेजीके होते हैं और हिन्दी व्याकरणके अनुसार ही सब योजना होती है। अैसी अेक सांस्कृतिक बेसिर पैरकी भाषा हमारा शिक्षित समाज बोलने लगा है और अनुकरणके सहारे अल्प-शिक्षित तथा अशिक्षित लोगोंने भी कुछ अंशोंमें अपना लिया है। अेक कोनेसे दूसरे कोने तक आपको शिक्षित आदमी कुछ अिस प्रकारकी भाषा बोलते हुअे मिलेंगे।

"मैं आपसे 'हार्ट टु हार्ट टाक' करना चाहता हूं।" "अुसके 'अीयर्स' को किसीने 'पायजन' कर दिया है।" और "तुम्हारे 'फादर' ने मेरे 'अंकिल' से 'वंडरफुल' बात कही।"

अब अिसे हम कौन सी भाषा कहें? अिसे हम अंग्रेजों द्वारा हमारा सांस्कृतिक नाश ही तो कहेंगे। यह बुराअी हममेंसे प्रत्येकमें न्यूनाधिक मात्रामें पाअी जाती है। पुत्र पिताको अंग्रेजीमें पत्र लिखता है और 'पूज्य पिताजी' की अपेक्षा 'डीयर फादर' में अधिक सम्मान तथा भक्ति देखता है। कुछ हिंदुस्तानी साहबोंने तो यहां तक किया कि अपने बच्चोंको; पिताको 'पापा', माँ को 'मदर' और चाचीको 'आन्टी' संबोधन करना सिखाकर अपना जातिगत कालापन धोकर गौरांग साहब बन जानेका प्रयत्न किया।

कुछ लोग यह कहते हैं कि हमारी भाषामें कुछ प्रचलित शब्दोंका अभाव है अिसलिअे बोधगम्यताकी दृष्टिसे अंग्रेजी शब्दोंका प्रयोग अनिवार्य सा हो जाता है। परन्तु ध्यानसे देखा जाय तो हमारे पास यदि कमी पड़ी तो केवल संज्ञा शब्दोंकी ही पड़ सकती है और अिस प्रकारके प्रचलित संज्ञा शब्द जो हमारी भाषामें घुलमिल गये हैं, सर्वथा ग्राह्य हैं—जैसे टेबिल, मोटर आदि। परन्तु यह क्या है? —"मैं तुम्हारी 'सक्सेस' के लिअे 'गार्ड' से 'प्रे' करूंगा।" क्या हमारे पास 'सफलता' 'अीश्वर' और 'प्रार्थना' सरीखे सरल और सुबोध शब्द नहीं है? हमारी भाषामें क्रिया पदोंकी तो कमी है ही नहीं। यथार्थ बात तो यह है कि बोल चाल की भाषामें अंग्रेजी शब्दोंका बाहुल्य हमारी भाषाकी तथाकथित दरिद्रताके कारण नहीं है बल्कि आत्मप्रदर्शनकी भावनाके कारण है। अंग्रेजी शब्दोंका प्रयोग कर बोलनेवाला समझता है कि मेरी गहरी विद्वत्ता का श्रोतापर प्रभाव पड़ रहा है।

यह तो हुअी बोलचाल की भाषाकी खराबी। शुद्ध साहित्यिक हिन्दीमें भी कुछ विचित्रसे मुहावरे और प्रयोग आ गये हैं जो अंग्रेजीसे शाब्दिक अनुवाद करके ले लिये गये हैं। अिस बातसे कोअी अिनकार नहीं करता कि हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाकी पाचन शक्ति तीव्र होनी चाहिये और अुसे अन्य भाषाओंके शब्द व मुहावरे 'धड़ाकेसे' पचाते जाना चाहिये, तभी तो भाषा जीवित रहेगी अुसकी वृद्धि होगी, अुसका रूप अधिक विस्तृत होगा और वह अधिक बोधगम्य होगी। भाषाकी जठराग्नि प्रचंड होनी चाहिये और अुसे अन्य भाषाओंके शब्दादि निगलनेको प्रस्तुत रहना चाहिये। परन्तु यहाँ सतर्कताकी आवश्यकता है। हम यह देखलें कि हम कहीं सड़ा गला माल तो नहीं निगल रहे हैं? कहीं कंकड़ पत्थरपर ही तो अपनी जठराग्निकी परीक्षा नहीं कर रहे हैं? जो कुछ हम खा रहे हैं वह ठीक पका हुआ भी है या अधकच्चा ही है? अिस प्रकारका भोजन तो अंदर में विकार अुत्पन्न कर देगा। अिसी प्रकारके अधकच्चे प्रयोगों और मुहावरोंकी बात मैं कह रहा हूँ। साहित्यिकोंके मुख और लेखनीसे कुछ अैसे मुहावरे निकलते देखे गये हैं।

"अब हमारा कार्य प्रारम्भ होने जा रहा है।" 'प्रारम्भ होने जा रहा है' अंग्रेजी के 'is going to begin' का शाब्दिक अनुवाद है जो अनावश्यक और बेढंगासा लगता है। "प्रारम्भ होने वाला है" पर्याप्त है और अुसी अर्थको व्यक्त करता है। अेक और अुदाहरण देखिये—

"प्रसन्नताकी बात है आप 'भाग्योदय' पत्रके साथ बाहर आ रहे हैं।"

यह भी 'You are coming out with a journal' का शाब्दिक अनुवाद है मैंने जब यह वाक्य अेक हिंदीके अच्छे ज्ञाताको सुनाया तो बड़े हँसे और बोले पूरी अंगरेजीको ही हिन्दी बनानेमें लगे हैं।" अिस प्रकारके कअी अधकचरे प्रयोग हिन्दीमें आ रहे हैं जिनसे भाषाका स्वरूप बिगड़ ही रहा है। अंग्रेजीके कअी मुहावरे और कहावतें हिन्दीमें आअी हैं और भाषाकी वृद्धिमें सहायक हुअी हैं। परन्तु हम अुत्साह वश अवैज्ञानिक रीतिसे पूरी अंग्रेजी भाषा को हिन्दी बना डालनेके कार्यमें लग जावें अिससे भाषाकी स्वाभाविकता नष्ट होती है।

अंग्रेजी मिश्रित खिचड़ी भाषा तो अब अधिक नहीं चलनी चाहिये' अिसे बंद करनेके लिए प्रयास करना पड़ेगा और समय भी लगेगा क्योंकि जिस रंगको चढ़नेमें डेढ़ सौ वर्ष लग गये वह सहजही कैसे अुतर जावेगा? अिस से हमारा सांस्कृतिक पतन साफ झलकता है। अिससे यह मालूम होता है कि हमारी भाषा लंगड़ी है, अिसलिये पग-पगपर अंग्रेजीका सहारा चाहती है।

'प्रहरी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. मैथिलीशरण गुप्त

श्री. मैथिलीशरण गुप्त हिन्दीके सर्व श्रेष्ठ कवि हैं। खड़ी बोली हिन्दीको लोक प्रिय बनानेमें आपका प्रधान हाथ रहा है। जिस समय हिन्दी-काव्य क्षेत्रमें ब्रजभाषाका साम्राज्य था अुस समय खड़ी बोलीमें सफलता पूर्वक कविता कर आपने यह सिद्ध कर दिया कि खड़ी बोली कविताके अुपयुक्त है और अुसमें भी सुन्दर कविता की जा सकती है।

श्री. मैथिलीशरण गुप्तका जन्म चिरगांव [झांसीमें] हुआ था। बचपनसे ही आपकी प्रतिभाका चमत्कार दिखाअी देने लगा था और आपकी रुचि स्वभावतः साहित्यकी ओर हो चली थी। घरके धार्मिक वातावरणका आपके जीवनमें स्थायी प्रभाव पड़ा। घरपर ही आपने हिन्दीके अतिरिक्त अन्य भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया। साहित्यके प्रति आपका अनुराग क्रमशः विकसित होता गया और आपकी अध्ययनशीलता निरंतर बढ़ती गअी। युवावस्थामें आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीके व्यक्तित्वने आपको बहुत प्रभावित किया और अुनकी प्रेरणासे आपने खड़ी बोलीमें लिखना प्रारम्भ किया।

गुप्तजीकी सबसे लोकप्रिय कविता-पुस्तक अुनकी 'भारत-भारती' है। राष्ट्रीय जागरणके प्रथम चरणमें अिस पुस्तकने जनतामें देश प्रेमके भाव भरनेमें असाधारण कार्य किया। सन् १९२१ में तो यह असहयोगियोंकी बाअिबिल बन गअी थी। 'भारत-भारती'से सोये हुअे भारत-वासिओंको अेक प्रेरक सन्देश प्राप्त हुआ। अिसमें देशके प्राचीन गौरवपर प्रकाश डालनेके अतिरिक्त वर्तमान स्थितिके प्रति अपने कर्तव्यकी ओर सचेत करते हुअे गुप्तजीने भारत वासियोंको भविष्यके लिअे अुत्साहित किया है।

'भारत-भारती'के अुपरान्त आपने हिन्दीको अनेक अुत्कृष्ट काव्य-ग्रंथ दिअे। अिनमें 'द्वापर', 'गुरुकुल', 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'साकेत' मुख्य हैं। 'साकेत' गुप्तजीका अमर महाकाव्य है और अिसका हिन्दीकी प्रगतिमें विशेष स्थान है। अिसपर आपको मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हो चुका है।

गुप्तजी विशुद्ध आर्य संस्कृतिके कवि हैं। प्राचीन आर्य-संस्कृतिकी पुनीत भावनाओंका आपके काव्यमें बड़ा भव्य चित्रण हुआ है। अतीतकी अुज्ज्वल संस्कृतिके प्रति आपकी बड़ी आस्था है और आप प्राचीन भारतके आदर्शोंको आजके युगमें चरितार्थ देखना चाहते हैं।

श्री. मैथिलीशरण गुप्त अेक कुशल अनुवादक भी हैं। आपने 'पलासीका युद्ध' 'मेघनाथ-बध' 'विरहणी ब्रजांगना' आदि कविता पुस्तकोंका हिन्दीमें बंगलासे सुन्दर पद्यानुवाद भी किया है। 'अुमर खय्याम' के अनुवादमें भी आपको पर्याप्त ख्याति मिली है। गुप्तजीकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली है जो संस्कृतमय होनेके बावजूद क्लिष्ट नहीं है। भाषापर आपका असाधारण अधिकार है।

श्री. मैथिलीशरण गुप्तकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अुन्होंने अपनेको सदैव युगकी साहित्यिक प्रगतिके साथ रखा। अिसका मूलकारण आपकी जागरूक अध्ययनशीलता है। अिस समय भी आप अुतने ही नवीन हैं जितने कि आजसे २५ वर्ष पूर्व थे। आपकी प्रतिभाका अनवरत विकास होता रहा है और आज भी आप अपने पुराने अुत्साहसे साहित्य साधनामें लीन हैं। आपकी कअी रचनाअें अिधर प्रकाशित हुअी हैं जिनसे कविकी प्रौढ़ साहित्यिक चेतनाका परिचय मिलता है।

श्री. गुप्तजी नअे हिन्दी कविओंके लिअे अेक ज्वलन्त आदर्श हैं। अुनके काव्यमें आज भी वे गुण वर्तमान हैं जिनसे नवयुवक कवि प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। हम अीश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे अिस महान् कवि—मनीषीको दीर्घ-जीवन प्रदान करें ताकि आप बहुत समय तक राष्ट्रभारतीकी सेवा करते रहें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्माकी शरारत

: श्री रामनरेश त्रिपाठी :

ब्रह्मा स्वर्गमें बैठकर मूर्तियाँ गढ़ा करते हैं। अनगिनती वर्षोंसे वे यही काम करते आ रहे हैं। यही काम करते-करते अब वे बुड्ढे हो चले हैं।

कहा जाता है कि जिसे वे सामने रखकर गढ़ते हैं. वह सुन्दर होता है, और जिसे पीछे, वह कुरूप। दाएँ-बाएँ रखकर गढ़नेसे भी कुछ होता ही होगा।

अुनके चारों ओर मुँह हैं, जब अेक ओर थक जाते हैं, तब दूसरी ओरसे गढ़ने लगते हैं।

जब वे कुछ खास संख्यामें मूर्तियाँ गढ़ लेते हैं, तब अुनमें जीव डाल देते हैं और अुन्हें पृथ्वीकी ओर फेंक देते हैं।

यह अुनका बँधा हुआ काम है, बुड्ढे होनेके कारण अब अुनसे बहुतसी भूलें भी होने लगी हैं। कभी-कभी वे पशुओंके जीव मनुष्यकी मूर्तिमें डाल दिया करते हैं। अिसीसे कोअी मनुष्य गाय जैसा सीधा होता है, और कोअी भैंसे जैसा क्रोधी। कोअी गधे-जैसा मूर्ख और कोअी बंदर-जैसा चालाक। कोअी सिंह-जैसा साहसी और कोअी खरहे जैसा डरपोक; अित्यादि।

यह तो भूलकी बात है। वे जान-बूझ कर अेक शरारत भी करते हैं। जीव डालनेके बाद हर अेक मनुष्यकी मूर्तिको वे अपने मुँहके पास लाते हैं और धीरेसे अुसके कानमें कह देते हैं कि मैं तुझीको सबसे ज्यादा अक्ल दे रहा हूँ।

मनुष्योंमें फूटका मूल कारण यही है। हर अेक अपनेको सबसे ज्यादा बुद्धिवाला समझता है। बुद्धिका अपमान कोअी नहीं सह सकता।

किसीसे काम निकालना हो तो अुसकी बुद्धिकी प्रशंसा करो. काम हो जायगा। काम बिगाड़ना हो तो अुसे गदहा कह दो, काम बिगड़ जायगा।

हर अेकको विश्वास जम रहा है कि ब्रह्माने अुसीको सबसे ज्यादा अक्ल दी है। अिसीसे वह अपनी अेक अलग राय रखता है। मामूली नौकरको भी मार लो, पीट लो, वह सब सह लेगा। पर, जहाँ अुसकी बुद्धिपर आक्रमण किया; वह आपेसे बाहर हो जायगा, और नौकरी छोड़ देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँधीजी अिस रहस्यको जानते थे। वे किसीकी बुद्धिका निरादर नहीं करते थे। कभी अैसा प्रसंग आता था, तो वे चुप रह जाते थे।

यही कारण है कि भिन्न भिन्न राये रखने वाले लोग भी अुनको घेरे रहते थे।

पर अन्तमें वे जरा चूक गअे और चुप न रह सके, बस, ब्रह्माकी शरारतने अुनको पृथ्वीसे वापस बुला लिया।

अब फिर सब लोग छिन्न-भिन्न हो जाअेंगे।

युनिवर्सिटियोंका कोर्स ब्रह्माकी शरारतपर, विजय नहीं पा सकता। बापूभी बैरिस्टर थे, वल्लभभाअी भी हैं; जवाहरलाल अेम० अे० हैं और जिन्ना और राजेन्द्र बाबू भी। और भी कितने ही चोटीके नेता अेम० अ० हैं। सभीको नाप-तौलकर बराबर-बराबर ज्ञान मिला है। फिर अुनमें मतभेद क्यों है?

मतभेदका कारण वही ब्रह्माकी शरारत है।

'युगारम्भ'

व्यक्ति-पूजा ठीक नहीं

जनतंत्रवाद मेरा राजनीतिक आदर्श है। प्रत्येक व्यक्तिका अेक व्यक्तिकी हैसियतसे सम्मान होना चाहिये; किन्तु किसीको देवताकी तरह पूजना ठीक नहीं। यह बड़े दुःख और दुर्भाग्यकी बात है कि मुझे किसी व्यक्तिकी आराधना-अुपासना लोकमतसे विवश होकर करनी पड़े। अिस प्रकारकी पूजा-अुपासनाका कारण जनताकी अज्ञानता है, जिसने अुसके जीवनके अुन कतिपय तथ्योंको नहीं समझा, जिन्हें मैं संयोगसे समझ सका हूं। मैं यह भली भाँति जानता हूं कि सोचने-समझने और आदेश देनेके लिये अेक मुखियाकी आवश्यकता होती है, क्योंकि दायित्वका निर्वाह समूहसे नहीं होता। किन्तु अनुगामियोंको पशुकी तरह नहीं हांकना चाहिये और अुन्हें अपना मुखिया चुननेकी भी पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिये। मेरी समझसे समाजमें वर्ग-विभाजनकी प्रथा भ्रमपूर्ण है; क्योंकि अन्तमें अुसको पशुबलका आधार लेना पड़ता है। मेरा निश्चित मत और अनुभव है कि तानाशाहीका परिणाम पतन होता है। हिंसा नैतिक पतनका ही प्रतीक है। समयने यह सिद्ध कर दिया है कि निर्दयी और पीड़क व्यक्तियोंका अुत्तराधिकार बदमाश और गुन्डे ही पाते हैं।

—आअिन्सटीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी हिन्दी-नयी समस्याएँ

: श्री. वीरेन्द्र त्रिपाठी :

लगता है, जैसे चेतना आदमीके मानसिक विकासको जितनी तेजीसे बढ़ाती है अुसी गतिसे क्रियाकी बढ़ोतरी नहीं होती; तभी न हम देख रहे हैं कि अब हिंदी-साहित्यके पास अनेक अैसे विद्वान हो गअे हैं जो या तो साहित्यालंकार हैं, या वाचस्पति या फिर लिटरेचरके डाक्टर, पर तो भी हिंदी-साहित्यकी प्रमुख और आवश्यकीय समस्याओंकी ओर अुनमेंसे बहुत कमका ध्यान जाता है। हमारे कुछ अलंकार-डाक्टर वादों, रसों और अलंकारोंके पीछे हाथ धोकर पड़े हैं और कुछ कोर्सकी पुस्तकोंके प्रणयनमें। विशेष रूपसे हिंदी-साहित्यके प्रौढ़ लेखक अिस ओरसे प्रायः अुदासीन हैं कि वे नअे लेखकोंके लिअे मार्गदर्शक बनें। हिंदीमें आत्मकथा या जीवनी लिखना, केवल नेताओंके आसपास केन्द्रित है। साहित्यके महारथियोंके विषयमें कोअी भी कलम अठाना गवारा ही नहीं करता। दूसरे हमारे यहाँका चालू प्रकाशित साहित्य (दैनिक, साप्ताहिक और मासिक) अिस ओरसे कतअी निश्चिन्त है कि अुसका भी कोअी दायित्व है पाठकों, लेखकों और समाजके प्रति।

तो हमारे हिंदी साहित्यके सामने तीन प्रमुख समस्याएँ आज दिन भी बनी हुअी हैं। वे हैं :

१—मार्ग-दर्शन २—अुत्तरदायित्व ३—संगठन

संगठन हमारे यहाँ दृष्टिगोचर तो होता है पर अुसका रूप सदैवसे प्रांतीय, जातीय या पारिवारिक रहा है। संघ जैसी किसी शक्तिसे हिंदी अपरिचित है। कहनेको सम्मेलन हैं, समितियाँ हैं, पर अनकी कार्यप्रणालीका लेखा जोखा अितना सीमित और संकुचित है कि अच्छे-अच्छे लेखकोंका भी आपसमें परिचित न होना हिंदीमें बहु-प्रचलित है।

प्रांतीय संगठनमें सदैव अिस बातकी गुंजाअिश रहती है कि केवल आसपासके जिलोंके सिवाय दूर तकका कम्पास न छुआ जाय—केन्द्रके स्थानिक संगठनका अिस प्रकारके सम्मेलनोंमें बोलबाला रहता है तथा कतिपय स्वनाम-धन्य फूंकनेवाले गिरोह ही अिस प्रकार अपना प्रचार करना अेकमात्र कर्तव्य समझते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीय आधारपर संघकी प्रवृत्ति हालमें चली है—हालाँकि आन्दोलन अिस शताब्दीके तीसीसे प्रारम्भ है, प्रगतिशील और रीतिकालीन! रीतिकालीन अिसलिअे कि अभी अुन्होंने अपनी विचारधाराको किसी संस्थाके नामसे सम्बोधित नहीं किया है, ये लोग मन और आत्माकी शान्तिके पोषक हैं तथा जीवनकी व्यथा, वेदना और अतृप्तिका शमन मनमें ही मानते हैं—स्पष्टतः अिनका साहित्य मनका भेदी है।

प्रगतिशील लेखक अेक संस्थाके लेखक हैं—वे नियम और आदर्शोंको परिस्थितियोंके साथ रखकर जीवनका वह अूहापोह अुपस्थित करते हैं जो जीवनके सत्यको शिव और सुन्दर रूपकी ओर प्रतिष्ठापित करे। रीतिकालीन लेखक भी सत्य, शिव और सुन्दरको अपने साहित्यका प्रतीक मानते हैं, पर अुनका साहित्य आदमीकी वासनाओंकी तृप्तिका साधन है; अुन्मूलनका नहीं। क्षणैकके लिअे वेदनामें आनन्दका अनुभव करा देना रीतिकालीन परम्परा है, परन्तु प्रगतिशील स्थापना वेदनाके समूल निवारणमें तथा नयी अनुभूति अुत्पन्न करनेमें है।

अिस प्रकार हिन्दी-साहित्यके मार्गदर्शनका पथ साफसुथरा और अुतना सुगम नहीं जितना कि अेक नौजवान लेखक समझ बैठता है। अधिकांशतः नये लेखक सद्यः पठित रचनाओंको आदर्श मानकर अुसी कूचीसे नये कैनवासपर चित्र बनाने बैठ जाते हैं। अनके सामने केवल अेक संकेत-चित्र होता है—सो भी छाया-मात्रके रूपमें—न तो दिशाओंका बोध, न रङ्गसे पहिचान! भले ही अुनकी रचना सुन्दर हो जाय, पर तो भी साहित्यमें अैसी रचनाओंसे वृद्धि होनेसे रही। अिसलिअे आज हिंदीमें बच्चन नरेन्द्र, अंचल, नैपाली, दिनकर और आरसी जैसे कवियोंके आधारपर लिखित गीतोंकी बाढ़ है-शरत् प्रेमचन्द, यशपाल, नागर आदि कहानी-लेखकोंके पाठकोंका जो सामग्री चाहिअे अुसकी भी आंशिक पूर्ति हो ही रही है, पर हमारे नौजवान लेखकोंका अधिक ध्यान मनकी अतृप्त वासनाओंकी कामनापूर्ति ही की ओर लगता है। आलोचनाके क्षेत्रमें अिससे भी बुरा हाल है। आज भी हमारे लेखक आचार्य शुक्लजीके मत-मतान्तरोंपर विचार प्रकट करते हैं, विदेशी लेखकोंके विचारोंको भ्रष्ट रूपसे बहसमें प्रयुक्त करते हैं। देशकी राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओंकी पृष्ठभूमिमें साहित्यका मूल्यांकन अभी भी हिन्दीमें नहींके बराबर है।

मैंने अपने लेखके प्रारम्भमें जो वाक्य लिखा है वह अिन्हीं बातोंके आधारपर खड़ा है। हमारी चेतनामें आशातीत वृद्धि हुअी है, पर क्रियाशीलता अुसी गतिसे नहीं अुभरी। रीतिकालीन लेखकोंमें व्यक्तिवादकी भावना अितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक प्रखर है कि प्रत्येक लेखकका आदर्श बर्नार्ड शॉ या टी० एस० ओलियट है । लेकिन बात यदि यहीं तक सीमित हो तो भी ठीक है, पर हमारे ये बन्धु तो बर्नार्ड शॉ और ओलियटसे भी चार कदम आगे निकलकर अपनी स्थापनाओंपर गर्व करने लगते हैं । ये आत्मवादी लेखक अपने शरीर और मनको ही ब्रह्मांड मानते हैं और सृष्टि अिनकी दृष्टिमें शून्यसे किसी प्रकार भी कम नहीं । हम यदि चाहें तो अिन रीतिकालीनोंको शून्यवादी, भावनावादी अथवा आंशिक अुच्छृंखलतावादी भी कह सकते हैं । अिनकी प्रत्येक रचनाकी कसौटी है 'रसानुभूति' और 'व्यक्तित्व'का सबलतम परिपाक । समाज और अुसमें बसनेवाले आदमीसे अिनका केवल अिकाओीका नाता है । वे भूल जाते हैं कि व्यक्तिकी संवेदनशीलता प्रतिक्षण परिवर्तित होती है और अुस प्रतिक्षण परिवर्तनका लेखा यदि साहित्यमें अुतार दिया जाय तो वह क्लीव साहित्यका जन्मदाता ही हो सकता है, परुषताके पैमानेमें वह नहीं समा सकता ।

व्यक्तिके मनकी यह प्रमुखता और अुसके द्वारा आरोपित साहित्यक युगद्रष्टा तो माना जा ही नहीं सकता परन्तु अिसके साथ ही साथ यह भी निश्चित है कि अिस प्रकारके साहित्यसे तत्कालीन गवेषणामें भी कोओी सहायता नहीं ली जा सकती । वर्तमान हिंदी साहित्यकी विभिन्न कृतियोंको पढ़कर यदि अुनपर कोओी आलोचक टिप्पणी देना चाहे तो निश्चयतः अुसे अिस बातका अुल्लेख करना पड़ेगा कि संदिग्ध रूपसे अुसकी टिप्पणीको पढ़ा जाय क्योंकि साहित्यपर फेंकी गओी यह विहंगम दृष्टि भ्रमोत्पादक भी हो सकती है ।

अिसलिअे आज हमारे साहित्यकारोंके सामने अिस बातका महत्व सबसे अधिक होना चाहिये कि वे जो कुछ भी लिख लिखा रहे हैं अुनका मूल्य ऐतिहासिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टिकोणसे क्या है ? और किस सीमा तक वे अपनी रचनाओंके साथ सत्य और न्यायका पालन कर रहे हैं। अुनकी रचनाएँ मात्र मन, अहं और अुसकी विकृतिकी प्रतिबिम्ब तो नहीं हैं ! अिस विषय पर हमारे चालू साहित्यके मनीषियोंको भी विचार करना चाहिये और अिसी दृष्टिकोणसे नये लेखकोंका मार्गदर्शन करना चाहिये ।

दूसरी बात मैंने अुत्तरदायित्व विषयक लिखी थी । अिस ओर भी हमारे साहित्यकारोंका अभिरुचि नहीं है । मनमानी करना, अुच्छृंखलता और ही प्रणालीके द्योतक हैं — हिन्दी अिसकी बड़ी शिकार है । संघ या संगठन अिसी अुत्तरदायित्वकी न्यूनतासे सफल नहीं हो पा रहे हैं और अिसी कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँके आलोचकोंमें मतैक्य नहीं, जो देशकी वर्तमान दशाको देखते हुअे हिन्दी साहित्यके लिअे अत्यन्त आवश्यक है।

नयी हिन्दीके सामने ये नयी समस्याएँ आज मुँह बाये खड़ी हैं—यह व्यक्ति और समाजके संघर्षकी पहिली कक्षा है। नयी हिन्दीको यदि व्यक्तिके लिअे नहीं समाजके लिअे जीवित रहना है और राष्ट्रकी सम्मानित भाषा बनाना है तो अुसे व्यक्तिको केन्द्र बनाकरकी जानेवाली रचनाओंकी ओरसे मुँह फेरना ही पड़ेगा। व्यक्तिकी आत्मा समाजकी आत्मा नहीं; व्यक्तिका वातावरण समाजका वातावरण नहीं; व्यक्ति और समाजकी परिस्थितियाँ अेक दूसरेको ढंक नहीं सकतीं—आजकल; क्योंकि संघर्ष जारी है। व्यक्तिको गौण और समाजको प्रमुख मानकर ही, देश काल और अन्य भौतिक परम्पराओंकी अन्नति सम्भव है—अिकाअी जीवनका तत्व अवश्य है पर अिकाअीकी सन्तुष्टि ही समाजकी सन्तुष्टि नहीं।

चेतनाकी बढ़ोतरीके साथ क्रियाकी बढोतरी भी आवश्यक है।

'हंस'

★ पहले बादल फिर पानी ★

दार्शनिक सुकरातको धर्मान्ध जनताही परेशान नहीं करती थी, अनकी पत्नी भी अिस काममें काफी तेज थी। समय असमय वह चिल्लाने लगती और भीड़ अिकट्ठी कर लेती। अेक दिन वह अिसी तरह चिल्ला अुठी तो सुकरात बाहर दरवाजेपर आ बैठे और सड़कपर आने जानेवालोंको देखते रहे।

अिसपर भी वह चिल्लाती रही और सुकरात आजुटे लोगोंकी ओर देखकर मुस्कराते रहे। पत्नीने पतिकी अिस शान्तिको ढीटपन समझा और आग बबूला हो गअी। वह भीतरसे पानीका अेक लोटा भर लाअी और अुसे सुकरातके सिरपर अुड़ेल दिया।

दर्शकोंका ख्याल था, अब वे अपनी पत्नीको कुछ कहेंगे पर सुकरातने मुस्कराकर धीरे से अुनसे कहा—"यह ठीक है, पहले बादल गरजते हैं, फिर पानी बरसता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दुस्तानी" की धान्धली

: भदन्त आनन्द कौसल्यायन :

जब तक हमारी मातृभूमिने १५ अगस्त सन् ४७ का दर्शन नहीं किया था, जब तक अिस महान भूखण्डमें स्वतन्त्रताका सूर्य अुदय नहीं हुआ था, तब तक हम यही समझते थे कि हमारे सिरपर हमारे शासकोंकी भाषा अभी तक लदी है और लदी रह सकती है जब तक कि हमारी स्वतन्त्रताकी घोषणा नहीं हुअी है। जिस दिन हम 'स्वतन्त्र' होंगे अुस दिन हमारे पैरोंमें पड़ी अनेक बेड़ियोंके साथ विदेशी-भाषाकी बेड़ी भी कट जायगी किन्तु स्वतन्त्रताकी घोषणा हुअे पूरा अेक वर्ष होने को आया है और हम अपनी वाग्देवीको, अपनी सरस्वतीको अभी तक स्वतन्त्र भारतके सिंहासनपर नहीं बिठा सके हैं।

यह सत्य है कि अिधर आठ नौ महीनोंमें भाषाके प्रश्नको लेकर जब और जहाँ सीधे-सादे वैज्ञानिक ढंगपर विचार हुआ है, तो देशके लगभग सभी विचारक अिस अेक ही परिणामपर पहुँचे हैं कि देशकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी यथा-शीघ्र घोषित हो जानी चाहिये।

कांग्रेस-पार्टीकी बैठकमें अिस प्रश्नपर विचार हुआ तो अधिकांश सदस्योंका यही मत था कि हिन्दी ही अिस देशकी राष्ट्रभाषा है और देवनागरी ही राष्ट्र लिपि। युक्त प्रान्तीय सरकारने भी जब साम्प्रदायिक दृष्टिसे विचार न कर अेक मात्र राष्ट्रीय दृष्टिसे विचार किया, तो अुसे यह स्पष्ट घोषणा कर देनी पड़ी कि युक्त-प्रान्तकी राजभाषा हिन्दी है। युक्त-प्रान्तके बाद बिहारके लिये तो हिन्दीका राजभाषा होना अेक अितनी साफ और निश्चित बात थी कि वहाँके प्रधान मंत्रीके आश्वासन और स्वीकृतिके कारण बिहारकी व्यवस्थापिका सभा ने अिसकी घोषणा करना भी व्यर्थ समझा।

देशकी अनेक रियासतोंकी राजभाषा हिन्दी है ही, जहाँ नहीं थी वहाँ अिधर निकट अतीतमें अिसकी घोषणा हो गअी है और वे घोषणाअें कार्य रूपमें भी परिणित हो रही हैं।

अलीगढ़ यूनीवर्सिटीमें भी हिन्दीकी अनिवार्य पढ़ाअी आरम्भ हो गअी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान निर्मातृ परिषदके सदस्य पंडित बालकृष्ण शर्मा और सेठ गोविन्ददासजीसे ज्ञात हुआ है कि विधान परिषदके २९४ सदस्योंमेंसे १५३ (+७-ले०) सदस्योंने अेक स्मृतिपत्रपर हस्ताक्षर करके भारत सरकारसे अनुरोध किया है कि हिन्दीको भारतकी राष्ट्रभाषा घोषित किया जाय। आपका कहना है कि, नेहरूजी तथा मौलाना आज़ाद भी अिस "मांगके औचित्य" को स्वीकार कर चुके हैं।

अिन और अैसी ही दूसरी सभी बातोंसे यह प्रायः निश्चित ही लगता है कि निकट भविष्यमें—आगामी जुलाअीमें—विधान परिषदकी जो बैठक होगी अुसमें अुसे हिन्दीके राष्ट्रभाषा होने और देवनागरीके राष्ट्रलिपि होनेकी घोषणा कर ही देनी पड़ेगी।

किन्तु, तस्वीरका दूसरा पहलू भी है और वह महत्वपूर्ण है। हम हिन्दीको राष्ट्रभाषा माननेवाले अुसकी ओरसे अुदासीन नहीं रह सकते।

हम सभी अिस बातको जानते और मानते हैं कि अुर्दू हिन्दीकी ही अेक शैली है और हिन्दुस्तानी तो 'खराब अुर्दू' का ही दूसरा नाम है। जहाँ तक अंग्रेजी को पदच्युत करनेका प्रश्न है हिन्दी, अुर्दू "हिन्दुस्तानी" सभी अेक साथ हैं और साथ रहना चाहिये। अखिल भारतीय पत्रकार संघकी कार्रवाअी "हिन्दुस्तानी" में लिखनेका प्रस्ताव पेश हुआ था, तो हिन्दी, अुर्दू हिन्दुस्तानीवाले अेक ओर थे और सभी अंग्रेजीवाले अेक ओर। आखिर यह भाषाका प्रश्न केवल भाषाका ही प्रश्न नहीं है, अनेक लोगोंके सुरक्षित स्वार्थोंका प्रश्न है और बहुतसे लोगोंकी जाविकाका भी।

लेकिन अिस समय विदेशी शासनके ध्वंसावशेषोंके रहते अंग्रेजीवाले जहाँ अपने लिये चिन्तित हैं वहाँ कुछ आश्वस्त भी हैं। अुनकी नीति है जहाँ हिन्दी हिन्दुस्तानीका विवाद हो वहां हिन्दीका साथ न दे हिन्दुस्तानीका साथ देना और जहाँ हिन्दुस्तानी और अंग्रेजीका विवाद हो वहां हिन्दुस्तानीका साथ न दे अंग्रेजीका साथ देना।

दुर्भाग्य है कि अिधर मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे देशमान्य नेता अुर्दूवालेसे हिन्दुस्तानीवाले और हिन्दुस्तानीवालेसे अब अंग्रेजीवाले हो चले हैं।

यह सही है कि जिस प्रकार कुछ हिन्दुस्तानीवाले अंग्रेजीकी ओटमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी जड़ काटनेपर तुले हुअे हैं अुसी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अंग्रेजीवाले भी हिन्दुस्तानीकी ओटसे हिन्दीपर तीर चला रहे हैं, लेकिन तो भी कुछ ओमानदार "हिन्दुस्तानी" वाले भी है, जो सचमुच न हिन्दीको राष्ट्रभाषा मानते हैं न अुर्दूको राष्ट्रभाषा मानते हैं, किन्तु हिन्दुस्तानीको ही राष्ट्रभाषा मानते हैं।

अिन महानुभावोंके साथ कठिनाअी यह है कि अिनका कुछ भी तय नहीं और अिसलिये यह किसी भी पकड़में आसानीसे नहीं आ सकते।

भाषाके बारेमें 'सर्वोदय' समाजका प्रस्ताव है कि अुसकी भाषा 'हिन्दुस्तानी' है किन्तु 'हिन्दुस्तानी' के ही दो आचार्य पंडित सुन्दरलाल और काका कालेलकरका 'सर्वोदय' शब्दके ही 'हिन्दुस्तानी' होने न होनेके बारेमें मतभेद है।

वर्धाके अनेक आचार्योंकी "हिन्दुस्तानी" आज भी सीधी-सादी हिन्दी है—हिन्दुस्तानी कहकर अुसे बेकार हिन्दीवालोंके मनमें बदगुमानी पैदा की जाती हैं। गान्धी सेवा संघ—जो सर्वोदय समाजका अेक अंग हैं—का अेक निमंत्रणपत्र अिस प्रकार है—

"संघ द्वारा आयोजित रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन शनिवार ता. १३ मार्च १९४८ से सोमवार ता. १५ मार्च १९४८ तक तीन दिन खादी विद्यालय सेवाग्राममें होगा। आप अवश्य आनेकी कृपा करें। सम्मेलनका प्रारम्भ ता० १३ को दिनमें ठीक ढाअी बजे होगा।"

कोअी अिन "हिन्दुस्तानी" वालोंसे पूछे कि अिसमें क्या हिन्दुस्तानी है जो आप अिसे हिन्दी न कहकर "हिन्दुस्तानी" कहते हैं, और कोअी अिन हिन्दी वालोंसे भी पूछे कि अिस 'हिन्दुस्तानीमें ख़ाक "हिन्दुस्तानी" है जो आप ख्वाहमख्वाह अिनसे चिढ़ते हैं?

हमारा ख्याल है कि हिंदी अुर्दूसे पृथक "हिंदुस्तानी" शैली बनाने तथा चलानेका प्रयत्न सम्पूर्ण रूपसे विफल सिद्ध हुआ है। अुत्तर भारतकी भाषा "हिंदुस्तानी" कही जाती थी, वहाँकी लगभग सभी सरकारोंने—पूर्वी पंजाब, युक्तप्रांत बिहार तथा अनेक राज्योंने हिंदीको राजभाषा घोषित कर दिया है। दक्षिण भारतका 'दक्खिनी-हिन्द' भी कुछ दिन तक 'हिन्दुस्तानी'में निकलकर फिर हिंदीमें निकलने लगा है। किन्तु 'दक्खिनी हिंद'की हिंदीका नाम हिंदुस्तानी' हो है। प्रश्न अुठता है कि 'हिंदुस्तानी' शब्दके साथ अितना मोह क्यों? मानस-शास्त्रका अेक मात्र अुत्तर यही है कि हारनेसे हार मानना कठिन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाके स्वरूपकी अपेक्षा दो लिपियोंकी अनिवार्यताका दुराग्रह अधिक स्पष्ट और कड़ा रहा, किन्तु अधर ज्यों ज्यों देवनागरीका आग्रह बढ़ा है; त्यों त्यों अुधर हिंदुस्तानीवालोंने भी अब अपने अुभय-लिपि वादकी व्याख्या करनी आरम्भ कर दी है। काका कालेलकरका अधिर जो वक्तव्य निकला है, असमें अुन्होंने देवनागरीको देशकी प्रधान लिपि स्वीकार किया है और अुर्दूको दूसरे नम्बरकी लिपि। हमारा निवेदन और आग्रह भी तो यही है कि देशकी प्रधान लिपि ही देशकी राष्ट्र-लिपि है, और वह सबको सीखनी चाहिअे असके अतिरिक्त फारसी आदिको जो चाहे सो सीखे। मद्रास हिंदुस्तानी-प्रचार सभाका मद्रास सरकारपर अेक मात्र अधिकार है। अुसकी रीति नीतिसे असंतुष्ट हिंदी प्रेमियोंकी दक्षिणमें कमी नहीं। किन्तु वे असंगठित हैं। मद्रास हिंदुस्तानी प्रचार सभाके प्रयत्नसे मद्रास सरकारने स्कूलोंमें 'हिंदुस्तानी' सिखानेकी व्यवस्था की है। विज्ञप्तिमें लिखा है कि "अुर्दू" और देवनागरी लिपियाँ सिखानेकी व्यवस्था रहेगी। विद्यार्थी अिनमेंसे जो लिपि सीखना चाहेंगे सीख लेंगे।"

हमारा अनुमान है कि हिन्दुस्तानीवालोंने यदि आरम्भमें ही अधिक अुत्साहसे काम न लिया होता और हर राष्ट्रभाषा शिक्षार्थीके लिये दोनों लिपियोंके अनिवार्य ज्ञानकी आवश्यकतापर अनावश्यक जोर न दिया होता तो अुन्हें न तो भारत-व्यापी विरोधका सामना करना पड़ता और न यह भला चंगा "हिन्दुस्तानी" शब्द अितनी अधिक अुपेक्षा और घृणाका पात्र बनता। नेहरूजीकी "हिन्दुस्तानी" शब्दसे घृणा तो पुरानी घृणा है।

जनताकी अनुकूलता प्रतिकूलताकी दृष्टिसे "हिन्दुस्तानी" की स्थिति बड़ी ही दयनीय है। जहाँ कोअी हिन्दी अुर्दूका जानकार न हो, वहीं अिस समय "हिन्दुस्तानी" के लिये कुछ गुंजायश रह गअी है। शेष सब जगहसे अुसे अपना दामन समेटना पड़ रहा है।

अिसलिअे, अब अुसने पीछेके दरवाज़ेसे घुसने के प्रयत्न आरम्भ किये हैं, और अुन्हींकी ओरसे सावधान रहना हिन्दीवालोंका परम कर्तव्य ही नहीं-हिन्दी और हिन्दीवालोंके जीवन मरणका प्रश्न है।

हम जानना चाहते हैं कि विधान-परिषदकी कांग्रेस पार्टीने जब बहुमतसे यह निर्णय कर दिया कि हिन्दी तथा देवनागरी ही राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि है तो फिर अन्य सभी प्रश्नोंकी तरह कांग्रेसके सभी सदस्योंके लिये विधान परिषदमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना अुक्त मत ही देना क्यों अनिवार्य नहीं ठहराया गया ? मान लीजिये कि पार्टीके कुछ सदस्य अन्य पार्टियोंके सदस्योंके साथ मिलकर अपनी ही पार्टीके बहुमतके निर्णयको परास्त करनेमें सफल हो जाते हैं, तो अिससे पार्टीके विनय (डिसिप्लिन) पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? अैसी पार्टीको समझ लेना चाहिये कि वह अपनी जड़े अपने आप खोद रही है।

कांग्रेसकी कार्य समितिने अपनी कार्रवाअीके लिये "हिन्दुस्तानी" को अपनाया है। हम जानना चाहते हैं कि क्या हमारी कांग्रेसकी कार्य-समितिकी कार्रवाअी अभी भी अंग्रेजीमें ही होती रहेगी और यदि वह अंग्रेजीमें ही होती रहेगी तो क्या वह अंग्रेजीमें ही लिखी जाती भी रहेगी। यदि वह 'हिन्दुस्तानी' में लिखी जायगी तो कार्य समिति राष्ट्र लिपिके प्रश्नपर चुप्पी साधे रहकर अधिक दिनों तक समस्त देशको अुल्लू नहीं बनाये रख सकती। अुसे आज या कल भारतकी राष्ट्रलिपि देवनागरी अपनानी होगी और अुसकी घोषणा भी करनी ही होगी।

हमारी अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीने भी अपने बम्बअी अधिवेशनमें राष्ट्रभाषाके प्रश्नको स्थगित रखना ही अुचित समझा। अन्य दूसरे प्रश्नोंपर कांग्रेस कमेटीके अिस अधिवेशनने विचार किया है, केवल राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर ही चुप्पी क्यों ? अुत्तर स्पष्ट है, जिस प्रकार हमारी कांग्रेसकी कार्य समितिके सदस्योंने बिना अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीकी राय लिये पाकिस्तानके प्रश्नपर अपना निर्णय दे दिया था और अुसके बाद अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीको अुस दबावकी परिस्थितिमें अुस निर्णयपर अपनी स्वीकृतिकी मोहर लगानी पड़ी थी, वही स्थिति भाषाके प्रश्नको लेकर फिर पैदा हो जा सकती थी। किसी देशकी राष्ट्रभाषाका प्रश्न पाकिस्तान और 'अिण्डिया-यूनियन'के बटवारेके प्रश्नसे कम महत्वका नहीं है।

हम पूछते हैं, राष्ट्रभाषाके प्रश्नको लेकर यह धांधली कब तक, यह खिलवाड़ कब तक ? क्या विधान-परिषद भी अिस विषयमें कुछ निर्णय न करेगी ?

देशकी परिस्थिति अैसी ही है कि यदि हिंदीवाले सोते ही रह गये, तो विधान परिषद कुछ अैसी बड़ी गलती भी कर सकती है कि सारे राष्ट्रको जाने कब तक पछताते रहना पड़े और हमारी भावी पीढ़ियाँ हमारा नाम भी आदरके साथ न ले सकें।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ हमारी नजरोंमें ❀

'हरिजन सेवक' का नया अंक—

हमें हर्ष है कि 'हरिजन सेवक' ने केवल अेक ही महीनेका विश्राम लिया। सचमुच यदि 'हरिजन सेवक' हमेशा के लिये बन्द हो गया होता तो हमारा साहित्यिक दुर्भाग्य होता। श्री किशोरीलाल मशरूवालाने 'भगवान भरोसे' ही सही 'हरिजन सेवक' के सम्पादनकी जिम्मेदारी अपने कंधोंपर लेकर सचमुच बड़े ही साहसका काम किया है।

'हरिजन सेवक' की बहुत दिनसे यह विशेषता चली आ रही है कि अुसके सम्पादकों को अुसके सम्पादनका कार्य नहीं करना पड़ता। श्री प्यारेलाल जी सम्पादक रहे किन्तु वे अेक प्रकारसे 'हरिजन सेवक' के प्रबन्ध सम्पादक तक न थे। पूज्य बापू और अुनके भी लेख नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद में अनूदित होकर 'हरिजन सेवक' में छपते थे।

श्री मशरूवालाको सम्पादककी पूरी जिम्मेवारी निबाहनी पड़ेगी। यह भार कुछ अितना भारी है कि कोअी भी सहजमें अुनके भाग्यसे अीर्षा न कर सकेगा।

श्री मशरूवाला द्वारा सम्पादित 'हरिजन सेवक' के अिस प्रथम अंक में सरदार वल्लभभाअी पटेलका अेक सन्देश है और दूसरा अेक संदेश है विदर्भ नागपुरके गवर्नर श्री मंगलदास पकवासाका। दोनों मूल रूपसे अंग्रेजीमें लिखे गअे हैं। काश! ये दोनों संदेश देशकी किसी अेक भाषामें होते।

नये स्थापित 'सर्वोदय समाज' के कार्यक्रमोंमें देशकी भाषाओंके विकास और हिन्दुस्तानीके प्रचारको विशेष स्थान दिया गया है।

हमें हार्दिक दुख है कि सेवाग्राम सम्मेलनके बारेमें हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और राष्ट्रीय महासभाके अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसादका जो लेख है, यह भी मूल रूपसे अंग्रेजीमें ही लिखा गया है। यहाँ तक कि राष्ट्रीय सप्ताह मनानेकी आपकी जो अपील है वह अपील भी मूल रूपसे अंग्रेजीमें ही लिखी गअी है। किसी देशके राष्ट्रपति द्वारा अुस देशकी राष्ट्रभाषाकी अुपेक्षाका अिससे बढ़कर अुदाहरण नहीं मिल सकता।

कुछ ही दिन पहले 'हरिजन सेवक'की भाषा साहित्यिकोंकी दृष्टिमें खराब अुर्दू मात्र थी। अब वह बहुत कुछ हिन्दी हो चली है। किन्तु अुसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानी बनानेका प्रयत्न अभी भी सांस तोड़ रहा प्रतीत होता है। श्री मशरूवाला अपने 'भगवान भरोसे' शीर्षक अग्रलेखमें श्री. प्यारेलालजीके बारेमें लिखते हुअे कहते हैं कि 'वे (श्री. प्यारेलाल) पूज्य गांधीजीके हैयातमें सम्पादकके रूपमें अपना नाम रखकर भी अुसकी जिम्मेवारीसे बहुत कुछ मुक्त रह सकते थे।' क्या हम पूछ सकते हैं कि यदि श्री. मशरूवाला हैयातकी जगह 'जीवन' शब्दका प्रयोग करते तो क्या वह किसीकी समझमें न आता! 'जीवन' न सही क्या 'जिन्दगी'से भी काम न चल सकता था? किन्तु न 'जीवन' है न 'जिन्दगी' है, बल्कि दोनोंके स्थान पर है 'हैयात'; और अफसोस यह है कि अुसका प्रयोग भी गलत हुआ है। लिखा गया है हैयात, जब कि सही शब्द 'हयात' है (देखिअे रामचन्द्र वर्माका अर्दू हिंदी कोष) और हयात शब्द स्त्रीलिंग है जब कि 'हरिजन सेवक'के अिस अग्रलेखमें अुसका प्रयोग पुल्लिंगके रूपमें हुआ है। प्रसिद्ध शेर है:—

लाअी हयात, आअी कजा, ले चली चले।
अपनी खुशी न आअे न अपनी खुशी चले॥

काश! यह हिन्दुस्तानी गढ़नेके प्रयत्न अब तो बन्द हों!

—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

युगकी गंगा (कविता-संग्रह) रचयिता श्री. केदारनाथ अग्रवाल प्रकाशक-हिन्दी ज्ञान मंदिर लिमिटेड रुस्तम बिल्डिंग, २९ चर्चगेट, स्ट्रीट फोर्ट बम्बअी। मूल्य १)।

'युगकी गंगा' हिन्दीके प्रख्यात प्रगतिशील कवि श्री. केदारनाथ अग्रवालकी ५१ कविताओंका संग्रह है। पुस्तकके प्राक्कथनमें हिन्दी काव्यके विकासपर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालते हुअे श्री. केदारने लिखा है:—

"...कविके व्यक्तित्वको आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियोंसे निर्लिप्त मानना भूल होगी। वास्तवमें आर्थिक आधार पर ही तो समाजका निर्माण होता है, देशकी राजनीति बनती है और संस्कृतिका अभ्युदय होता है।...हिन्दीका यह युग समाजवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद और मार्क्सवादका युग है।...अब हिन्दीकी कविता न 'रस' की प्यासी है, न 'अलंकार' की अिच्छुक है; और न 'संगीत'की तुकान्त पदावलीकी भूखी है। भगवान अब अुसके लिअे व्यर्थ हैं। आज जिसके कि राजा शासक हैं, पूंजीपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोषक हैं। आज वह चाहती है—किसानकी वाणी, मजदूरकी वाणी और जन-जनकी वाणी। ..... 'जिन्दगीकी भीड़' की अिन कविताओंमें जनताके मोर्चेकी प्रतिध्वनि है।"

निसन्देह अिस कविता-संग्रहसे श्री केदारनाथ अग्रवालने हिन्दीके प्रगतिशील कवियोंमें अपने लिये अेक जगह बना ली है। 'जिन्दगीकी भीड़' की अिन रचनाओंमें संघर्षोन्मुख जनताका सशक्त स्वर सुनाअी देता है।

'युगकी गंगा' कविकी जागरूक चेतनाका प्रतीक है :—

युगकी गंगा
पाषाणों पर दौड़ेगी ही,
लम्बा, अूंचा,
पथको रोके
चट्टानों को तोड़ेगी ही।
युगकी गंगा
सब प्राचीन डुबाअेगी ही,
नयी बस्तियाँ,
शांति निकेतन
नवसंसार बसाअेगी ही।

'रनिया,' 'शहरके छोकरे', 'मजदूर' आदि कविताओंमें निम्नवर्गका मार्मिक चित्र खींचा गया है।

अपनी स्पष्ट सुलझी हुअी विचारधारासे श्री. केदारनाथने हिन्दी पाठकोंका ध्यान बहुत जल्दी अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। अुनकी कविताओंमें ओज है, जीवन है, प्रवाह है। किन्तु कुछ कविताओंमें केवल प्रचार हुआ है और कहीं कहीं तो कवि बिल्कुल नारावादी बन गया है। पुनरावृत्तिके दोषसे भी ये कविताअें सर्वथा मुक्त नहीं हैं।

'युगकी गंगा' का कवि पूर्ण रूपसे युगके साथ है। आशा है भविष्यमें हिन्दी संसारको अुससे और प्रौढ़ रचनाअें प्राप्त होंगी।

भारतीय संस्कृति : त्रैमासिक पत्र : प्रकाशक—श्री. चन्द्रप्रकाश छाजेड़ रतलाम, वार्षिक मूल्य ४) अेक अंकका मूल्य १=)

'भारतीय संस्कृति' भारतीय संस्कृति सदन रतलामका त्रैमासिक पत्र है। अभी तक अिसके कुल तीन अंक निकले हैं और अिन तीनों अंकोंमें साहित्यके जागरूक पाठकोंके लिये ठोस सामग्री है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिकाका सम्पादन हिन्दी संसारके सुप्रसिद्ध विद्वान आलोचक अंर कवि प्रोफेसर प्रभाकर माचवे अत्यंतनिक रूपमें कर रहे हैं। माचवेजीका अध्यवसाय सराहनीय है और अुनके समर्थ साहित्यिक व्यक्तित्वकी पत्रिकामें सर्वत्र छाप है।

हिन्दीके लिये 'भारतीय संस्कृति'का प्रकाशन बिल्कुल अनूठी चीज है। साहित्यकी बहुमुखी प्रगतिका अितना सुन्दर परिचय मिलना अन्यत्र दुर्लभ है। जो कार्य कुछ समय पूर्व 'हंस' द्वारा स्वर्गीय प्रेमचन्द और श्री कन्हैयालाल मुन्शीने किया था अुसीको पूरा करनेका यह विनम्र प्रयास है। अिस तरीके के प्रकाशनसे हिन्दीके अेक बड़े अभावकी पूर्ति हुअी है। आशा है अिस पत्रिका द्वारा हमारी संस्कृतिका अुचित प्रतिनिधित्व होगा। हम अिसे शीघ्रही मासिक रूपमें देखना चाहते हैं।

अग्नि परीक्षा—कहानी संग्रह, लेखक : श्री दरबारीलाल सत्यभक्त प्रकाशक: सत्याश्रम वर्धा, मूल्य—।॥)।

'अग्नि परीक्षा' सुप्रसिद्ध दार्शनिक श्री दरबारीलालजी सत्यभक्त की ६ कहानियोंका संग्रह है सभी कहानियाँ पठनीय हैं और अुनमें श्री सत्यभक्तजीने हमारे समाजकी बुराअियों अेवं अन्धविश्वासपर प्रकाश डालते हुअे धर्मके ठेकेदारोंके वास्तविक स्वरूपको खोलकर रख दिया है। 'टूटी मोटर' तथा 'गंधर्व और अप्सरा' नामक कहानियोंमें जंगली लोगों का चित्र अुपस्थित किया गया है जो बहुत अंशोंमें शहरके लोगोंपर भी सही अुतरता है।

आज हमारी आंखोंके सामने समाजमें जो अज्ञान, अन्धकार, और पाखण्ड नजर आरहा है अुसके निराकरणके लिये मनुष्यका संस्कार होना आवश्यक है। जब तक अंध श्रद्धाकी जगह बुद्धिको नहीं प्रतिष्ठित किया जाता और कोरी भावुकताका स्थान व्यवस्थित चिन्तन नहीं ले लेता तब तक भारतीय समाजमें होनेवाले व्यापक अनाचारका अन्त होना सम्भव नहीं।

पुस्तककी प्रस्तावनामें श्री सत्यभक्तजीने धर्मके सम्बंधमें अपना दृष्टिकोण अुपस्थित किया है जिससे किसी भी विचारशील व्यक्तिका मतभेद नहीं हो सकता।

अगस्त क्रांति और प्रति-क्रांति—लेखक-श्री. मन्मथनाथ गुप्त, प्रकाशक—कल्याण साहित्य-मन्दिर प्रयाग, मूल्य- २॥)।

सन् १९४२ के अगस्त आन्दोलनका देशके स्वतंत्रता-संग्राममें विशेष महत्व है। सदियोंसे पराधीन, शोषित और अुत्पीड़ित जनता क्रांतिकारी भावनाओंसे ओतप्रोत अुन दिनों विदेशी साम्राज्यवादके विरुद्ध संगठित रूपसे टूट पड़ी थी। जनताके अुस अनुपम त्याग, सहिष्णुता और पराक्रमके कारण ही हमें आज स्वतंत्रताका यह दिन देखनेको मिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत पुस्तकमें काकोरी षडयन्त्रके भूतपूर्व अभियुक्त अेवं हिन्दीके सुयोग्य लेखक श्री. मन्मथनाथ गुप्तने अगस्त क्रांतिके स्वरूपपर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालते हुअे क्रांतिकारी तथा क्रांति-विरोधी शक्तियोंका परिचय दिया है। आपके विचारोंसे सहमत होना सबके लिअे सम्भव नहीं है किन्तु आजकी बदली हुअी परिस्थितिमें राजनीतिके विद्यार्थियोंके लिअे पुस्तक बड़े कामकी है।

युग पुरुष—लेखक--कमलापति त्रिपाठी एम० एल० ए० : प्रकाशक-सरस्वती--मन्दिर :जतनवर बनारस। मूल्य--२)।

'युग पुरुष' त्रिपाठीजीके बापू विषयक लेखोंका संग्रह है। सभी लेख बापूके जीवन कालमें लिखे गअे थे और अिनमें बापूके सिद्धान्तोंकी विस्तृत मीमांसा हुअी है। महात्मा गांधीके बहुमुखी व्यक्तित्व अेवं अुनके जीवन-दर्शनसे परिचित होनेके लिअे पुस्तकका अध्ययन आवश्यक है।

कैस लिखें ?— भाग, १ २. ३. लेखक द्वय – श्री. रमेशचन्द्रजी आचार्य, श्री. विष्णुप्रसाद भट्ट, प्रकाशक—आत्माराम प्रिंटिंग प्रेस, खारी बाग, बड़ौदा। प्रत्येक भागका मूल्य ॥-)।

प्रस्तुत पुस्तक नअे हिन्दी सीखनेवालोंके लिअे लिखी गअी है। तीनों भागोंमें विद्यार्थियोंके विकासका ध्यान रखनेके साथ-साथ अभ्यासों-द्वारा अुनकी कठिनाअियोंको हल करनेका प्रयत्न किया गया है। अहिन्दी भाषा-भाषियोंमें हिन्दी प्रचारकी दृष्टिसे पुस्तक विशेष अुपयोगी होगी।

—प्रशान्त

सुरभारती--संस्कृत मासिक-सम्पादक, श्री. गोविन्द वल्लभ शास्त्री, प्रकाशक—सुरभारती कार्यालय, ११६ भूलेश्वर बम्बअी। वार्षिक मूल्य--४), छात्रोंके लिअे २)।

मासिक 'सुरभारती'का प्रथम अंक हमारे सामने है। हर्षकी बात है कि अिसकी पाठ्य--सामग्री जुटानेमें सम्पादक महोदयने सामयिक रुचिका पर्याप्त ख्याल रखा है। नअे संस्कृत प्रेमियोंके लिअे यह पत्रिका विशेष अुपयोगकी है।

आशा है 'पत्रिका' अपने अुद्देश्य 'भारत भारतीय--संस्कृति अेवं सुर भारतीकी सेवा'में पूर्ण रूपेण सफल होगी।

—प्रभात कुमार

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-संसार

काँग्रेस विधानमें हिन्दी अस्वीकृत : श्री. मौलिचन्द्र शर्माका वक्तव्य

काँग्रेस विधानमें देवनागरीके अस्वीकार विषयक काँग्रेस कार्य समितिके निर्णयके सम्बन्धमें श्री. मौलिचन्द्र शर्मा अुपसभापति हिंदी साहित्य सम्मेलनने निम्न आशयका अेक वक्तव्य प्रकाशित किया है ।

काँग्रेस कार्यसमितिके अुस निर्णयने, जिसके द्वारा काँग्रेस विधान समितिके अिस प्रस्तावको अस्वीकृत किया गया कि काँग्रेसकी भाषा देवनागरीमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी हो, अुन भारतीय राष्ट्रवादियोंके हृदयोंपर गहरा आघात पहुँचाया है जो यह विश्वास करने लगे थे कि अब सचमुच काँग्रेसने साम्प्रदायिकताके साथ समझौता करनेकी नीतिका परित्याग कर दिया है ।

क्या हमें यह पूछनेका अधिकार नहीं है कि काँग्रेस कार्य समितिने देवनागरीको स्वीकार करनेमें किस वस्तुका भय था, जब कि वह लिपि पू वैज्ञानिक, सबसे अधिक सुलभ तथा देशमें सबसे अधिक व्याप्त है । देशमें फूट डालनेवाले लोग भारतकी अेकमात्र राष्ट्रभाषा देवनागरीमें लिखित संस्कृतनिष्ठ हिन्दीकी स्थापनाके मार्गमें बाधा डालते हैं, क्योंकि अेक सुदृढ़ संगठित और अेकनिष्ठ राष्ट्रके निर्माण और विकासके पक्षमें सबसे बड़ी शक्ति यही हिंदी होगी । हिन्दी राष्ट्रको वह शक्ति देगी जिससे साम्प्रदायिकता और प्रांतीयताकी मनोवृत्तियोंसे देशको छुटकारा मिल सकेगा । अिसीमें यह क्षमता है कि हमारे अिस प्राचीन और गौरवपूर्ण देशके महान अतीत तथा अिससे भी महत्तर भविष्यके बीच अेक नित्य परम्पराका सम्बन्धकी स्थापना कर सके । अिसीके अुर्वर सांस्कृतिक धरातलपर हमारे राष्ट्रका चैतन्य भविष्य अुगे, बढ़े और फले फूलेगा ।

विश्वकी भाषाओंमें हिन्दीका स्थान

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायनने कानपुर क्राअिस्ट चर्च कालेजकी अेक सार्वजनिक सभामें भाषण करते हुअे अिस बातपर जोर दिया कि हिन्दी भाषाका शब्द भण्डार बढ़ाया जाय ताकि वह वर्तमान समयकी प्रगतिके अनुसार अपना पग बढ़ा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने कहा कि हिन्दीका प्रचार किया जाना चाहिये और संसारकी भाषाओंमें अुसको अुचित स्थान दिया जाना चाहिये। आपने यह स्वीकार किया कि पारिभाषिक, पार्लमेंटरी और शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी अंग्रेजी शब्दोंका अनुवाद करनेमें बड़ी कठिनाओ होती है और यह आशा प्रकटकी कि हिन्दीका शब्द भण्डार बढ़ानेसे यह कठिनाओ शीघ्र ही दूर हो जायगी। आपने कहा कि साहित्यकी अुन्नतिसे भारतीय राष्ट्रकी अुन्नति होगी। वर्तमान शिक्षा-प्रणालीका अुल्लेख करते हुअे आपने कहा कि वह सामूहिक और आयोजित आधारपर होनी चाहिये।

अेक अन्य स्थानमें पत्रकारोंकी सभामें सोवियत रूसके पत्रोंकी स्थितिपर प्रकाश डालते हुअे राहुलजीने कहा कि—

सोवियत रूसमें समाचार पत्र स्वतंत्र तथा अुत्तरदायी दोनों हैं। फिर भी अिसके लिये सावधानी रखी गअी है कि कोअी अैसी बात न होने पावे जिससे महान रूसी क्रांतिके फलस्वरूप प्राप्त हुअी सफलताओंपर पानी फिर जाय।

ज्ञात हुआ है कि राहुलजी अेक हिन्दी कोष तैयार कर रहे हैं, जिसमें विज्ञान अेवं दर्शनकी समस्त शाखाओंके लगभग १॥ लाख शब्द होंगे। यह हिन्दीके लिये बड़ा अुपयोगी सिद्ध होगा।

कर्तव्यके प्रति सजग हो

पटनाकी अेक विशाल सभामें भाषण देते हुअे सुप्रसिद्ध गांधीवादी दार्शनिक आचार्य श्री विनोबा भावेने कहा कि हिन्दी तो राष्ट्रभाषा मान ली गयी है, अतः अुसका किसी भी प्रान्तीय भाषासे विरोध होनेकी सम्भावना ही नहीं रहनी चाहिये। प्रान्तीय भाषाका अपने अपने प्रान्तोंमें अधिकार तो रहेगा ही, हिन्दी तो केवल अन्तः प्रान्तीय व्यवहारकी भाषा है।

हिन्दीवाले यह समझकर कि अुनकी भाषा राष्ट्रभाषा है आलसी बन गये हैं। यह अुचित नहीं, राष्ट्रभाषा होनेके नाते तो हिन्दीका अुत्तर-दायित्व और बढ़ गया है। अतः हिन्दीवालोंको चाहिये कि वे बंगला, मराठी, गुजराती तथा अुड़िया आदिके विशाल साहित्यका भी अध्ययन करें और अुससे अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दीको सजानेमें सहायता लें।

राष्ट्रभाषा हिन्दी हो गयी अिसका यह मतलब कभी न लिया जाना चाहिये कि अन्य भाषाओंको हम तुच्छ समझें। राष्ट्रभाषा हिन्दीके अतिरिक्त अन्य भाषाओंका अध्ययन कर अुसे विकसित करना भी हमारा ही कर्तव्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी आदि सभी संस्कृतकी कन्याएँ होनेके कारण आपसमें अेक दूसरेकी सगी बहनें हैं। अतः अुनका आपसमें मिलना जुलना देशके लिये हितकर होगा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होगी

भारतीय विधान परिषदके सदस्य पं० बालकृष्ण शर्माने कानपुर अधिवेशनके हालमें हिन्दीके कवियों और लेखकोंकी अेक सभामें कहा कि देवनागरी लिपिमें लिखी हिन्दीही देशकी राष्ट्रभाषा होगी! आपने बताया कि भारतीय विधान परिषदके २९४ सदस्योंमें से १५३ सदस्योंने अेक स्मृतिपत्रपर हस्ताक्षर किया है जिसमें भारत सरकारसे यह अनुरोध किया है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित की जाय। आपने यह रहस्योद्घाटन किया कि भारत सरकारके शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद और प्रधान मंत्री पं नेहरूने अिसका अनुमोदन किया है।

आपने आगे कहा कि हिन्दीके राष्ट्रभाषा घोषित होनेके पहले हिन्दी लेखकोंका सबसे बड़ा काम भाषाका शब्द भण्डार बढ़ाना है। आपने सुझाव दिया कि अिस अदृश्यकी प्राप्तिके लिये प्रान्तके भाषा-विशेषज्ञों की अन्य विद्वानोंकी समितियां नियुक्त होनी चाहिये जो प्रचलित शब्द-कोषमें कमसे कम १०,००० नये शब्द जोड़ सकें।

हिन्दीमें शासन और कानून सम्बन्धी कोष

हिन्दीके शासन सम्बन्धी तथा कानूनी शब्दोंका अेक कोष काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा संगृहीत किया जा रहा है। युक्त प्रान्तीय सरकारके सिविल जज श्री. गोपालचन्द्र सिनहाको अुक्त कोषके प्रकाशनमें सहायता करनेका आदेश दिया है, तथा अन्य अैसे सरकारी कर्मचारियोंको जिन्हें शासन तथा कानून सम्बन्धी तुलनात्मक अंग्रेजी अुर्दू शब्दोंके संग्रह करनेका प्रयत्न किया है और अन्य सज्जनोंको भी जो अिस विषयमें रुचि रखते हैं निर्देश किया है कि वे अपने-अपने संग्रहीत शब्दों तथा सुझावोंको सभाके पास भेजें।

श्री. गोपालचन्द्र सिनहा अिस समय प्राचीन स्मृतियों तथा संस्कृत अन्य प्रमुख ग्रंथों और शिलालेखोंमें आअे हुअे समुचित शब्दोंके संग्रह कार्यमें संलग्न है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभाकी अेक अुपसमितिने जिसे यह काम सौंपा गया है यह निश्चय किया है कि प्रांतके कुछ समाचार पत्रोंमें हिन्दीके समकक्ष शब्दोंका प्रकाशन किया जाय जिससे अिस कार्यमें रुचि रखनेवाले सज्जनोंके सुझाव तथा रचनात्मक आलोचन यें प्राप्त ह ₹ कें ।

अलीगढ़ विश्वविद्यालयमें हिन्दी अनिवार्य

अलीगढ़ विश्वविद्यालय कोर्टकी वार्षिक बैठकमें निर्णय किया गया है कि अलीगढ़ विश्वविद्यालयकी सब श्रेणियोंमें हिन्दी अनिवार्य रूपसे पढ़ाअी जाय। अेक हिन्दी विभाग बनानेका भी निर्णय हुआ तथा विश्वविद्यालयका नया नामकरण करनेके बारेमें अेक समिति नियुक्त की गअी।

बैठकके प्रारंभमें महात्मा गांधीके निधनपर अेक शोक-प्रस्ताव सबने खड़े होकर स्वीकृत किया।

हिन्दुस्तानी—राष्ट्रीयताके मार्गमें बाधक

दिल्ली प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी कार्यकारिणीने कअेस कार्य समितिके अभी हालके हिन्दुस्तानी भाषा संबन्धी प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करते हुअे कहा है कि कांग्रेसका हिन्दुस्तानी भाषाको स्वीकार करना और देवनागरी लिपिके प्रश्नको जिसे कांग्रेसकी विधान अुपसमिति तकने स्वीकार कर लिया था अस्वीकार करना, भारतकी राष्ट्रीयता और अेकीकरणके मार्गमें बाधक है और अिससे साम्प्रदायिक भावनाअें दबनेके स्थानमें और अधिक बढ़ेंगी।

सराहनीय कदम

युक्तप्रान्तकी सरकारने देवनागरीमें लिखी जानेवाली हिन्दीको राजभाषा बनानेके सम्बन्धमें जो घोषणा की है—अुसे कार्यान्वित करनेके लिअे यह महत्वपूर्ण पग अुठा रही है। हिन्दी जाननेवाले कर्मचारी ही सभी पदों पर नियुक्त किअे जा रहे हैं।

युक्त प्रान्तीय सरकारने केन्द्रीय सरकारसे प्रार्थना की है कि अुसके लिअे कुछ हिंदी टाअिपराअिटर मशीनोंका प्रबन्ध शीघ्रही किया जाय।

बिहार सरकारने भी देवनागरी लिपिमें लिखी हिन्दीको राजभाषा घोषित किया था। अिस घोषणाको कार्यान्वित करनेके लिअे बिहार सरकारने अेक समिति नियुक्त की है। अुक्त समितिमें सर्वश्री सारंगधर सिंह एम० एल०, लक्ष्मी नारायण सिंह 'सुधांशु' एम० अेल० ए०, बुद्धिनाथ झा 'कैरव', एम० एल०, ए० तथा प्रांतीय साहित्य सम्मेलनके सभापति श्री रामधारी प्रसाद 'विशारद' आदि नियुक्त किअे गअे हैं।

जयपुर सरकारने हिंदीको राजभाषा घोषित करनेके बाद हिंदीमें गजट काशित कर अुसका नाम "राजपत्रक" रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यप्रान्त और विदर्भकी प्रांतीय सरकारने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी 'परिचय', परीक्षाको हिंदी ज्ञानके लिये मान्यता दी है। प्रांतके सरकारी शिक्षा-विभागने भी नागपुर-विदर्भके मराठी आठ जिलोंके हाओस्कूलोंमें ८ वी ९ वी और १० वीं श्रेणियोंमें राष्ट्रभाषाके पाठ्यक्रमको अिस वर्षसे, अपने पाठ्य क्रममें स्थान दिया है।

नागपुर यूनोवर्सिटीने भी अपने अुन प्रोफेसरोंके लिये जिनकी हिं मातृभाषा नहीं है, अुनकी हिंदी योग्यताके लिये 'कोविद' परीक्षाक मान्यता दी है।

मध्यप्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलनने प्रांतीय सरकारसे प्रार्थना की कि वह प्रांतका सारा कार्य अंग्रेजीकी बजाय हिंदी व मराठीमें करे।

अिन्दौर राज्यकी धारा सभाने हिंदी भाषा बिल स्वीकार कर लि है। अिसके अनुसार अब होल्कर सरकार के प्रत्येक विभागमें हिंदी भाषाका प्रयोग होगा।

"बापू-स्मृति-ग्रन्थ"

बापू साहित्य परिषदके व्यवस्थापक सूचित करते हैं कि हमारे यह "बापू-स्मृति-ग्रन्थ" प्रकाशित हो रहा है जिसमें राष्ट्रपिता बापूकी स्मृतिमें सि रूपसे लिखी गअी-सर्व श्री. मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', डा० कुमार वर्मा; 'पन्त' 'बच्चन', स्व० सुभद्राकुमारीचौहान, सियारामशरण सोहनलाल द्विवेदी सुमित्राकुमारी सिनहा, 'मिलिन्द', 'प्रेमी' 'सुमन', श्रीनार चतुर्वेदी, हरिशंकर शर्मा कविरत्न, ठा० गोपालशरण सिंह, 'अंचल', चिरजीत, हरिश्चन्द्र वर्मा, डा० राजेन्द्रनारायण शर्मा और बेधड़क बना आदिके अतिरिक्त हिन्दीके अन्य १०० कवियोंकी कवितायें संग्रहीत हैं।

ग्रन्थका समस्त लाभ केन्द्रके गांधीस्मारक कोषको किया जायगा।

'जय गांधी'के प्रकाशनका आयोजन

हिन्दीके सुप्रतिष्ठित राष्ट्रीय कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी, जय नामसे एक कविता-संग्रह सम्पादित व प्रकाशित करनेमें संलग्न हैं। चीनके प्रतिनिधि कवियोंकी रचनाओंके अतिरिक्त अन्य देशी और वि भाषा-भाषी कवियोंकी रचनाओंके संग्रहकी भी व्यवस्था की जा रही पुस्तकसे होनेवाला समस्त लाभ गांधी स्मारक निधिमें दे दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-÷कहानी और अुपन्यास÷-

: श्री. जमालुद्दीन तुरक 'कोविद' :

कहानी और अुपन्यास साहित्यके प्रमुख अंग हैं। कहानीमें जीवनके अेक अंशका चित्रण होता है पर अुपन्यासमें जीवनकी सम्पूर्ण जटिलताओं तथा घात-प्रतिघातों पर व्यापक रूपसे प्रकाश डाला जाता है। कहानीमें केवल अेक घटना विशेषका वर्णन होता है जब कि अुपन्यासमें जीवनका विस्तृत विश्लेषण।

हिंदी कहानी और अुपन्यासोंका आधुनिक स्वरूप पश्चिमसे प्रभावित हुआ है। आजका कलाकार जीवनसे प्रेरणा ले युगकी सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओंको कलाका विषय बनाता है। जीवनके अिस कोलाहलमें अपने आसपासके सामाजिक वातावरणकी अुपेक्षा करनेसे स्थायी साहित्यकी सृष्टि नहीं हो सकती। वर्तमान कालकी कहानियों तथा अुपन्यासोंमें मानव-चरित्रका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर्याप्त मात्रामें रहता है। आज वही रचना श्रेष्ठ कही जायगी 'जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्यपर हो'।

अुपन्यास कलापूर्ण ढंगसे चित्रित जीवनका विस्तृत चित्र है जबकि कहानी केवल हलकी खींची रेखाअें हैं। छोटा अुपन्यास कहानी नहीं और बड़ा कहानी अुपन्यास नहीं। अुपन्यासमें जीवनकी अनेक गुत्थियोंपर प्रकाश डाला जा सकता है पर कहानीमें अैसा नहीं होता। अेक निश्चित चरम सीमापर प्रायः कहानीका अन्त हो जाता है। अुपन्यासके अंतर्गत कअी प्रसंग आते हैं और पाठकोंको अनेक तरहसे प्रभावित किया जा सकता है। लेकिन कहानीमें यह सम्भव नहीं।

हिंदी कहानी और अुपन्यासके क्षेत्रमें युगांतर अुपस्थित करनेका श्रेय वर्गीय मुंशी प्रेमचंद्रको है। प्रेमचंद्र अेक तपस्वी कलाकार थे। अुनका साहित्य क्रांतिकारी भावनाओंसे ओतप्रोत है। प्रेमचंद्रने कहानी और अुपन्यासों द्वारा नवीन लेखकोंका पथ प्रदर्शन किया। अुनकी रचनाओंमें गहरे अध्ययन और व्यापक अनुभवकी छाप है। वे सही अर्थोंमें अपने युगके प्रतिनिधि थे। खेद है कि अुनकी मृत्युके अुपरांत अुनके जैसा कोअी अन्य कलाकार हिंदीमें अुत्पन्न नहीं हो सका।

प्रेमचंद्रके बादके कहानी और अुपन्यास लेखकोंपर अुनका प्रभाव स्पष्ट दीख पड़ता है। आज नये नये लेखक अुत्पन्न हो रहे हैं। अैतिहासिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी विषयोंपर कहानी और अुपन्यास लिखे जा रहे हैं। भविष्य अुज्ज्वल दिखाअी देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

गुजरात

गुजरातमें राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य तेजीसे चला हुआ है। प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री जेठालाल जोशी अेक कर्मठ और अनुभवी व्यक्ति हैं। आपके व्यक्तित्वके प्रभावमें आकर अनेक अहिन्दी भाषाभाषी हिन्दी सीखनेकी ओर आकर्षित हुअे हैं। आपकी कार्यक्षमता, कर्तव्यपरायणता और लगनशीलता आश्चर्यजनक है।

अिस समय सम्पूर्ण गुजरातमें लगभग २७५ परीक्षा केन्द्र हैं। अिस वर्ष ६८ नअे केन्द्रोंकी स्थापना हुअी है। लगभग २५० प्रमाणित प्रचारक अेवं २०० सहायक प्रचारक राष्ट्रभाषा प्रचारके पुनीत कार्यमें अुत्साहपूर्वक योग दे रहे हैं। अिस वर्ष ७९ नअे प्रमाणित प्रचारक बने हैं।

प्रांत भरमें परीक्षार्थियोंकी संख्यामें अुत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। अिस अल्पकालमें अभी तक लगभग १,३०००० विद्यार्थी बैठे हैं और जनताकी हिन्दी पढ़नेकी जिज्ञासा तीव्र गतिसे बढ़ती जा रही है।

केन्द्रोंमें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव, राष्ट्रीय सप्ताह, गांधी-जयन्ती तथा अन्य साहित्यिक अेवं सांस्कृतिक अुत्सव समारोहपूर्वक मनाए जाते हैं। सामाजिक अुत्सवोंमें बाहरके प्रख्यात विद्वानोंके व्याख्यानोंकी आयोजना की जाती है। सर्वश्री कन्हैयालाल मुन्शी, दादासाहब मावलंकर, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, मोरारजी भाअी देसाअी आदि सज्जनोंके महत्वपूर्ण भाषण अभी तक विभिन्न केन्द्रोंमें हुअे हैं।

कुछ प्रमुख केन्द्रोंमें राष्ट्रभाषा पुस्तकालयोंकी भी स्थापना हुअी है।

कार्यकी सुविधाकी दृष्टिसे सारे प्रान्तको निम्नलिखित ९ हिस्सोंमें विभक्त किया गया है—(१) कच्छ (२) काठियावाड़ (सौराष्ट्र) (३) अुत्तर गुजरात (४) अहमदाबाद (५) खेड़ा (६) बड़ौदा (७) पंचमहाल (८) भरूच और (९) सूरत।

अिनमें अहमदाबाद सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र है। अभी तक राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें अिस केन्द्रसे कुल १४७६२ विद्यार्थी सम्मिलित हुअे हैं। अहमदाबादका राष्ट्रभाषा पुस्तकालयभी सुचारु रूपसे चल रहा है। अिसमें हिन्दी ही की अच्चकोटिकी ८६० पुस्तकें हैं। कुल मिलाकर ३० पत्र-पत्रिकाएं यहां आती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाहपुर (अहमदाबाद)—गत २५ अप्रेलको स्थानीय व्यायाम मंदिरमें उत्तीर्ण छात्रोंको प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। यहां सर्व श्री. वासुदेव शास्त्री और जीवनलाल आचार्य हिन्दी प्रचारमें विशेष दिलचस्पी ले रहे हैं।

धरमपुर (जिला सूरत)—गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री श्री. जेठालाल जोशीके करकमलों द्वारा यहां राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें सफल विद्यार्थियोंको प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

श्री. जेठालाल जोशीने अपने उत्साहवर्धक भाषणमें विद्यार्थियोंको आशीर्वाद देते हुये राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यपर संतोष प्रकट किया। आपने हिन्दी-हिन्दुस्तानीके भेदपर विस्तृत रूपसे प्रकाश डालते हुये उर्दू लिपिकी कठिनाइयोंका उल्लेख किया और कहा कि उर्दू लिपिका चलना असम्भव है। आपने यह भी कहा कि राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचारसे मातृभाषाओंके महत्व पर किसी किस्मका असर नहीं पहुँचेगा। यहांसे कोविदमें ये तीन विद्यार्थी उत्तीर्ण हुये हैं—श्री. प्रवीणचन्द्र, श्री. भोगीलाल और श्री. रामसिंह परमार।

बड़ोदा—गत ३ मार्चको स्थानीय शिशुभारतीमें श्रीमती गंगूबाई पटवर्धनकी अध्यक्षतामें श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान अेवं श्री राजभूषण कानूनगो साहबके निधनपर अेक शोक सभा हुअी। सभामें अेक प्रस्ताव द्वारा अीश्वरसे प्रार्थना की गअी कि वह दिवगत आत्माको शान्ति प्रदान करे।

कलकत्ता (बंगाल) — बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें उत्तीर्ण छात्र छात्राओंका समावर्तनोत्सव पश्चिमी बंगालके भूतपूर्व प्रधानमंत्री डा. पी सी. घोषकी अध्यक्षतामें अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रसिद्ध दार्शनिक डा. कालीदास नागने अपने दीक्षान्त भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुये कहा कि हिन्दीके राष्ट्रभाषा और देवनागरीके राष्ट्रलिपि होनेमें अब किसी किस्मके तर्ककी गुंजाइश नहीं रही है। भारतकी सांस्कृतिक अेकताको अक्षुण्ण रखनेके लिये हिन्दीके राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन होना नितान्त आवश्यक है।

डा. पी. सी. घोषने सभापति पदसे भाषण देते हुये कहा कि बंगालियों को राष्ट्रभाषा सीखनेमें किसी किस्मकी हिचकिचाहटका अनुभव नहीं करना चाहिये। राष्ट्रभाषाका ज्ञान प्राप्त करनेसे बंगालकी साहित्यिक प्रतिष्ठाको किसी किस्मका आघात नहीं पहुँचेगा। आपने भाषणके अन्तमें आपने राष्ट्रभाषाकी अच्छतेके लिये कुछ व्यवहारिक सुझाव भी पेश किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्ध भाषातत्व विशारद डा० सुनीतिकुमार चटर्जीने विभिन्न भारतीय भाषाओंके ऐतिहासिक विकासका अुल्लेख करते हुअे कहाकि भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है और प्रचारके द्वारा यह किसीपर लादी नहीं जा रही है। आपने कहा कि हिन्दी भाषा भाषियोंको अिस बातपर अभिमान होना चाहिये कि अुनकी मातृभाषा राष्ट्रभाषाके पदपर प्रतिष्ठित होने जा रही है। लेकिन अिसे कार्य रूपमें परिणित करनेका श्रेय प्रधानतः अहिन्दी भाषा भाषियोंपर ही है। अिससे हिन्दी भाषा भाषियोंका नैतिक दायित्व बहुत बढ़ जाता है। अुन्हें सक्रिय रूपसे अत्यन्त सहानुभूतिपूर्वक अहिन्दी भाषा-भाषियोंको अपना सहयोग प्रदान करना चाहिये और अिस झूठे ख्यालमें न रहना चाहिये कि राष्ट्रभाषा होनेके नाते अन्य भाषा भाषी झकमार कर हिन्दी सीखेंगे।

दीक्षान्त भाषणके प्रारम्भमें बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अुत्साही मन्त्री श्री रेवतीरंजन सिनहाने प्रांतमें हिन्दीकी प्रगतिपर प्रकाश डाला और अपनी असुविधाओं तथा कठिनाअियोंका अुल्लेख करते हुये जनतासे अपील की कि वह हिन्दी प्रचारमें अपना अधिकसे अधिक रचनात्मक सहयोग प्रदान करे।

अुत्सव बड़े धूमधामसे सम्पन्न हुआ। अुपस्थिति बहुत अधिक थी।

मनमाड़ (महाराष्ट्र)–नासिक, ठाणें और मनमाड़के राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री रेवाशंकर दुबे सूचित करते हैं कि कुछ अनिवार्य कारणोसे मनमाड़में होने वाली अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा परिषद फिलहाल स्थगित कर दी गअी है। राष्ट्रभाषा प्रेमियों अेवं प्रचारकोंको परिषदकी निश्चित तिथिसे बादमें सूचित कर दिया जायगा।

जबलपुर (मध्यप्रान्त) दक्षिण भारतके भूतपूर्व हिन्दी प्रचारक श्री. टी कृष्णास्वामीके कुशल सम्पादकत्वमें 'भाग्योदय' नामक अेक सर्वांग सुन्दर पाक्षिक पत्र यहांसे निकला है। अिसकी कुछ चर्चा 'राष्ट्रभाषा' के मार्च अंकमें की जा चुकी है। अहिन्दी भाषाभाषियों तथा बालकोके लिये यह पत्र विशेष अुपयोगी है। नअे हिन्दी सीखनेवालोंको अिसे अवश्य अपनाना चाहिअे।

मणिपुर (आसाम)–यहां गांवोंमें हिंदी प्रचार हो रहा है। राष्ट्रभाषा हिंदी और राष्ट्रलिपि देवनागरीके प्रति जनताका आकर्षण बराबर बढ़ रहा है। श्री. छत्रध्वज शर्माका कार्य प्रशंसनीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

परीक्षा समितिकी बैठक

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी परीक्षा समितिकी बैठक गत २८ अप्रेलसे १ मअी तक समितिके भवनमें हुअी। बैठकमें श्री. भदन्त आनन्द कौसल्यायन (प्रधान-मन्त्री), श्री. रामेश्वर दयालजी दुबे (परीक्षा-मन्त्री), श्री. जेठालालजी जोशी (गुजरात), श्री. कांतिलालजी जोशी (बम्बअी), श्री हृषीकेशजी शर्मा (विदर्भ-नागपुर), श्री रेवतीरंजनजी सिनहा (बंगाल), श्री. प्र. रा. भूपटकरजी (पूना), श्री डांगरेजी (महाराष्ट्र) तथा श्री. गोपालरावजी अपसींगीकर (हैद्राबाद) प्रभृति सज्जनोंने भाग लिया।

संक्षिप्त कार्रवाअी यहां दी जाती है—

बापूको श्रद्धांजलि

" राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी परीक्षा समिति राष्ट्रभाषा प्रचारके प्रवर्तक एवं राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके संस्थापक राष्ट्रपिता पूज्य बापूके असामयिक महानिर्वाण पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है और अुनका निधन राष्ट्रके लिअे एवं राष्ट्रभाषाके लिये अेक असह्य आघात समझती है। "

परीक्षाओंकी तिथियोंमें परिवर्तन

विभिन्न प्रान्तोंके स्कूलों तथा कॉलेजोंके सत्रोंमें परिवर्तन हो जानेके कारण अब समितिकी परीक्षाअें अप्रेल और सितम्बरके तीसरे सप्ताहमें शनिवार और रविवारको हुआ करेंगी।

बातचीत परीक्षा

दो स्वतन्त्र मौखिक परीक्षाअें चलाना निश्चित हुआ। पहली परीक्षा 'बातचीत' का पाठ्यक्रम तथा नियमादि राष्ट्रभाषाके गत अंकमें प्रकाशित हो चुके हैं। दूसरी परीक्षा 'संभाषण' होगी जिसकी विस्तृत जानकारी अगले अंकमें दी जावेगी।

कोविद केन्द्र

आगामी सितम्बरमें कोविद परीक्षा कुछ स्वीकृत केन्द्रोंमें ही हो सकेगी। स्वीकृत केन्द्रोंकी सूची राष्ट्रभाषाके अगले अंकमें प्रकाशित होगी। कोविदके लिअे अस्थायी केन्द्र वहीं दिये जा सकेंगे जहां हाअीस्कूल हो और कम से कम दस परीक्षार्थी सम्मिलित हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखन कार्य

अब लेखन कार्य प्रश्नपत्र ३ के अंतर्गत न रहकर स्वतन्त्र रूपसे रहेगा और अुसके लिअे पचास अंक होंगे। प्रश्नपत्र तीसरा १०० अंकका होगा। लेखन कार्य संबन्धी अन्य नियम पूर्ववत ही रहेंगे। लेखन कार्यमें भी अुत्तीर्णांक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

श्रेणी

प्रचार परीक्षाओंकी दूसरी श्रेणीके लिये ५० के स्थानपर ४६ अंक रखे गये हैं।

गत परीक्षाओं के प्रमाण पत्र—

सभी केन्द्रों के गत परीक्षा के प्रमाण पत्र और अुपाधि पत्र १५ मअी के बाद भेज जायेंगे।

नये केन्द्र—

निश्चित केन्द्रोंके सिवाय जहाँ कमसे कम १५ परीक्षार्थी होंगे वहाँभी केन्द्र स्वीकृत हो सकेगा। लेकिन साधारणतया अुस केन्द्रके तीन मीलके आस-पास समितिका कोअी दूसरा स्वीकृत केन्द्र न हो। नये केन्द्रके लिये नियत केन्द्र आवेदन पत्र भरकर ३० जून तक अपने प्रान्तीय संचालककी सम्मतिसे वर्धा कार्यालयमें पहुँचादेना आवश्यक है।

आगामी प्रचार परीक्षाअें —

समितिकी आगामी प्रचार परीक्षाअें १८, १९ सितम्बर ४८ को होंगी। आवेदन पत्रोंको वर्धा कार्यालय में पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिस प्रकार हैं—

१ सीधे बैठने के लिये आवेदन पत्र—३० जून ४८
२ परीक्षा आवेदन पत्र सशुल्क २५ जुलाअी ४८
३ विलम्ब शुल्कके साथ आवेदन पत्र—१ अगस्त ४८.

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाअें—

सितम्बर ४८ में राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा होगी। परीक्षा आवेदन पत्र सशुल्क ३१ मअी तक वर्धा कार्यालयमें आ जाना आवश्यक है।

राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाका पाठ्यक्रम पूर्ववत् रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवेदन पत्र —

गत परीक्षाके बचे हुअे कुछ अावेदन पत्र प्रत्येक केन्द्रमें होंगे। केन्द्र व्यवस्थापकोंसे प्रार्थना है कि अुनके सिवाय आगामी परीक्षा के लिये जितने आवेदन पत्रोंकी आवश्यकता हो वर्धा कार्यालयसे मंगालें।

नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	केन्द्र
गुजरात	श्री भूपेन्द्र पार्वतशंकर	१२४८	भड़ोच
,,	,, माणिलाल मूळशंकर पंडया	१२७६	,,
,,	,, मधुसूदन रणछोड़भाअी पुरोहित	१२६०	वरणामा
,,	,, छोटालाल पुरुषोत्तम भट्ट	१२६१	डेभोल
,,	,, चीनुभाअी गीरजाशंकर शुक्ल	१२६२	आणंद
,,	,, दयाशंकर शिवशंकर जोशी	१२६३	अहमदाबाद
,,	,, अमरसिंह जगराम लोधा	१२७८	,,
,,	,, पं. तो. मोलाणे	१२६४	भालोद
,,	,, टीकाराम जैशंकर त्रिपाठी	१२७३	,,
,,	,, रतिलाल ची. भट्ट	१२७४	,,
,,	,, डाह्याभाल नाथालाल परीख	१२७५	पादरा
,,	,, शंकरभाअी बेचर भाअी सुतरिया	१२७७	नडियाद
महाराष्ट्र	,, चु. न. बेण्डाळे	१२५०	सांगवी बुग
,,	,, व. दो. चौधरी	१२५१	फैजपुर
,,	,, व्यंकट रु० ठाकुर	१२५२	शिरूड़
,,	,, राजया निजलिंगया हिरेमठ	१२५४	हलकर्णी
,,	,, रा. सो. पाटिल	१२६५	कोल्हाडी
,,	,, शंकर बाळकृष्ण वाणी	१२६६	जलगाँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

,,	,,	वेडू मनसाराम तळेले	१२६७	,,
,,	,,	भागवत गोविंद चौधरी	१२६८	,,
,,	,,	नाटू भागवत शिंदे	१२६९	,,
,,	,,	अंदूबाअी रडे	१२७०	,,
,,	,,	ना. के. गाडगिळ	१२७१	धुलिया
,,	,,	बंडू रावजी बोडे	१२७२	बामणोद
बम्बअी	,,	गौरी शंकर जोशी	१२५३	बम्बअी
,,	,,	पी. अेस्. श्रीकण्ठन	१२५५	,,
,,	,,	गं. आ. नारकर	१२५६	,,
,,	,,	वा. म. जोशी	१२५७	,,
,,	,,	चिं. स. देशमुख	१२५८	,,
,,	,,	छबालदास ना. मस्त्री	१२५९	,,
अुत्कल	,,	जो. सुब्रह्मण्य शर्मा	१२४९	छत्रपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी १९४८ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं के सर्व प्रथम तथा पुरस्कार-विजेता

परीक्षा	सब प्रान्तोंमें	आसाम	उत्कल	बंगाल	गुजरात	महाराष्ट्र	विदर्भ-नागपूर	बम्बअी
कोविद	२३० श्री० बबन काशीनाथ विप्रदास, पुणें ३२२ १०) सर्व प्रथम पुरस्कार १०) मथुरादास ,,	×	३१९ श्री. लक्ष्मीश्वर शतपथी शर्मा, जयंतपुर × २९७	३०५ श्री अमलेन्दु सरकार, कलकत्ता ८) ३१०	४६४ श्री. चन्दुभाअी जे. भाअी दास बासर, नडियाद × २७२	२३० श्री. बयन काशीनाथ विप्रदास, पुणें + ३२२	९०७ श्री. कमल मोरेश्वर वैद्य, अमरावती × २६२	८५ श्री रतिलाल रविशंकर जोशी, गिरगांव ८) ३००
परिचय	१८४१ श्री० अम्बालाल शिवलाल पटेल, कड़ी ८) २४०	१३५४ श्री. गोविन्द्रप्रसाद दास, गौहाटी × १५२	१४६० श्री. गोपीनाथ साहू कटक × १६९	१४०९ श्री. ज्योतिलाल वसु, कलकत्ता × १६४	१८४५ श्री अम्बालाल शिवलाल पटेल, कड़ी + २४०	४००८ श्री मुकुन्द घनश्याम कुलकर्णी, सोलापुर ५) २१२	४२३७ श्री रूपचन्द सोभागमल खजांची खामगांव ५) २१२	८९३ श्री मोहनलाल हरिभाअी धानकी, दादर ५) १९७
प्रवेश	७२५६ श्री० उम्मेदभाअी लल्लूभाअी पटेल, धर्मज ५) १६५	४१३२ श्री चिदंबरम देशसिंह अिम्फाल × ११४	५३४१ श्री. उपेन्द्रनाथ दास, मेड़ा ३) १४४	४४३७ श्री कल्याणीसेन गुप्त, कलकत्ता ३) १४२	७२५६ श्री. उम्मेदभाअी लल्लुभाअी पटेल, धर्मज + १६५	११०२० श्री इन्दुमति प्रभाकर पेठे, विपलुन ३) १६३	१५७२२ श्री कु० सिन्धु चिमणराव दानी, बुलढाना ३) १५९	१९४९ श्री. राजाराम बाबूराव मालपेकर, गिरगांव ३) १५२
प्रारंभिक	३६८६ श्री. रविशंकर अमथालाल त्रिवेदी, पुणें ३) ६४	४६१५ श्री चादमसिंह, अिम्फाल २) ८०	६७८५ श्री अपर्तिचरण वहैरा, जगतसिंहपुर २) ८९	५८७० श्री. उषादेव सिलचर २) ८२	१८५४ श्री मधुसुदनलाल भाअी शाह, सूरत २) ९२	३९८६ श्री रविशंकर अमथालाल त्रिवेदी, पुणें + ९४	२०५८६ श्री बृजलाल केशवलाल संघानी अकोला २) ८३	२९६८ श्री कु० लीला अच्युत पेंडसे, दादर २) ८७

विशेष :— १. नामके प्रारंभमें क्रमांक, अन्तमें प्राप्तांक और बाअीं ओर पुरस्कार की रकम दी गअी है।

२. + अिन्हें सब प्रान्तोंमें प्रथम होने का पुरस्कार मिला है, अिसलिये प्रान्तीय सर्व प्रथम पुरस्कार नीचे लिखे परीक्षार्थियोंको मिला है।

प्रारंभिक क्रमांक १६८१७ श्री केशव श्रीधर काकतकर, कोल्हापुर, प्राप्तांक ९१, पु २)
प्रवेश ,, ९६८५ श्री छोटालाल माणिकलाल शाह, वेजलपुर (भरुच), प्राप्तांक १६२, पु. ३)
परिचय ,, २५१८ श्री रतिलाल माधवजी नगवाडिया मोरवी, प्राप्तांक २१७, पु. ५)
कोविद ,, ७९० श्री दामोदर यशवन्त रेंभोटकर, येवले. प्राप्तांक ३१९, पु. ८)

३. × ये अपने प्रान्तमें सर्व प्रथम हैं, लेकिन पहली श्रेणीमें न होने से अिन्हें पुरस्कार नहीं मिला।

परीक्षा मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकोंका आर्डर देनेके साथ-ही-साथ पेशगी रकम नहीं भेजते। हमें उन्हें पेशगीके लिये लिखना पड़ता है और तब कहीं रुपये आनेपर उनके लिये यहाँसे पुस्तकें भेजी जाती हैं। अिससे अेक तो ग्राहकोंको पुस्तकोंके लिये काफी इंतजार करना पड़ता है, दूसरे, सबको परेशानी भी होती है।

अिसलिअे अपने सभी ग्राहकोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे पुस्तकोंका आर्डर देते समय उनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक-चौथाअी पेशगी जरूर भेज दिया करें।

यह नियम काफी हानि उठाकर और दिक्कतोंका अनुभव करके बनाया गया है और अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं की जा सकती; अतः जिन लोगोंके आर्डरके साथ उक्त नियमानुसार पेशगी नहीं आयेगी, उन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

पत्र-व्यवहार करते समय या मनीआर्डर भेजते समय अपना पूरा पता स्पष्ट लिखनेकी कृपा करें।

—मंत्री

नोट—जिन लोगोंके पास राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पुरानी पुस्तकें बेचनेके लि हों वे हमसे पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिका तारका
'राष्ट्रभाषा'

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

कविता-संग्रह कविता-संग्रह

★ हा बापू ! ★

राष्ट्रभाषाके कवियोंकी श्रद्धांजलि

अिस पुस्तिकामें बापूकी श्रद्धामें समर्पित किये गये अधिक 'फूल' नहीं हैं किन्तु वे सब समर्पित हैं अुन फूलोंको जो त्रिवेणी संग गंगा-यमुना तथा देश-भरकी अन्य नदियोंमें मिलकर देशकी मिट्टीके अेकाकार हो गये।

अिस संग्रहका श्रद्धा-मूल्य कम-से-कम केवल अेक रुपया है।

अिस पुस्तककी बिक्रीसे जो आय होगी वह गांधी-स्मारक को भेज दी जायगी। मूल्य मनीआर्डरसे भेजना चाहिये। वी. पी. भेजी जायगी।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, व

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

मार्च १९४८

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

	लेख	पृष्ठ
१.	तिरंग	३७७
२.	बुद्ध और गांधीके अंतिम संस्कार	३७९
३.	आपरेशन	३८१
४.	बाबू श्याम सुन्दरदास	३९१
५.	राष्ट्रभाषाकी समस्या	३९३
६.	निर्माण	३९७
७.	महात्मा गांधी—कुछ संस्मरण	३९८
८.	हमारी नजरोंमें	४०२
९.	स्व० सुभद्रा कुमारी चौहान	४०४
१०.	प्रान्तीय हलचलें	४०५
११.	परीक्षा-विभाग	४०९

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है।

प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविदके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं।

ऊपर लिखी चारों परीक्षाओंके अेक अेक समयके प्रश्नपत्रोंके सेट तैयार किये गये हैं। प्रत्येक सेटका दाम पाँच आना है। प्रश्नपत्रोंका सेट मँगाते समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये।

प्रत्येक फुटकर प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है।

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, मार्च – १९४८ [अंक ९

तिरंग

: श्री सुमित्रानंदन पंत :

फहराओ, तिरंग फहराओ !
हिन्द चेतनाके जाग्रतध्वज
ज्योति तरंगोंमें लहराओ !

इन्द्रधनुषसे गर्जन घनमें,
जग पौरुषसे जीवन रणमें
जन स्वतन्त्रताके प्रांगणमें
विजय शिखासे अुठ, छहराओ !

अुठते तुम, अुठते दृग अपलक,
स्वाभिमानसे अुठते मस्तक,
अुठते बहु भुज चरण अचानक,
लोहेकी दीवार गरजती
हमें त्यागका पथ दिखलाओ !

तुम्हें देख जन मन निर्भय हो,
धरतीपर नव स्वर्णोदय हो,
आत्म विजय ही विश्व विजय हो,
जब जब जगमें लोक क्रान्ति हो
तुम प्रकाश किरणें बरसाओ !

भगे अविद्या दैन्य निराशा,
जगे अुच्च जीवन अभिलाषा,
अेक ध्येय हो भूषा भाषा,
प्रेम शक्तिके शान्ति चक्र तुम
जगमें चिर जन मंगल लाओ !

'संगम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

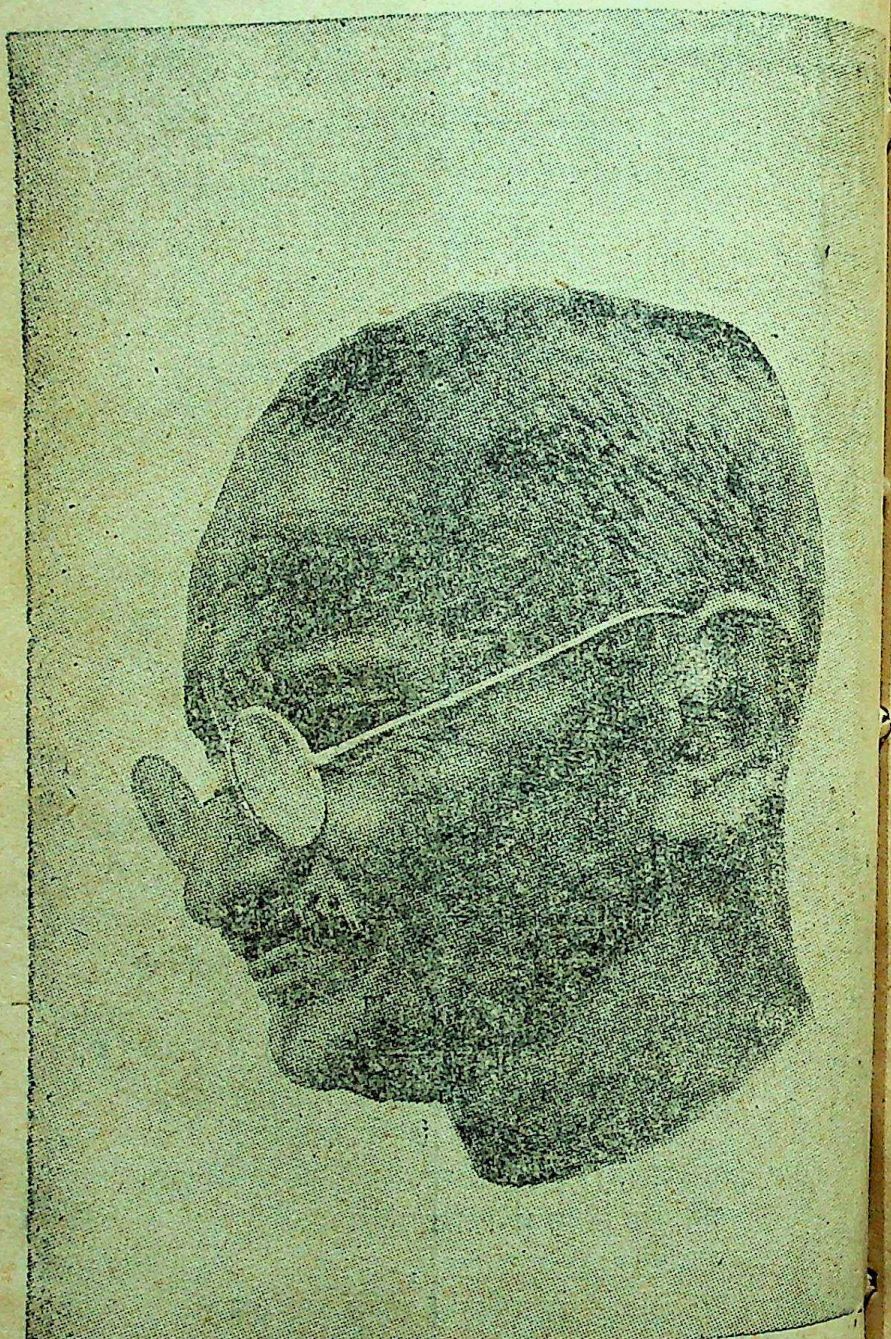

भारतीय जन आन्दोलनके आदिनायक—बापू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्ध और गांधीके अंतिम संस्कार

: भदन्त आनन्द कौसल्यायन :

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित शब्द-सागर ही शायद हिन्दीका सबसे बड़ा कोष है। अुसमें ९३११५ शब्द हैं। किन्तु अितने हजार शब्दोंमें क्या अेक भी शब्द ऐसा है जो अिस देशकी वेदनाकी अुस तीव्रताको व्यक्त कर सके जो अिसे अपने राष्ट्र-पिता—महात्मा गांधीको गंवाकर हुअी?

कहा जाता है कि नाथूराम गोड़से अेक पत्रकार रहा। अिससे हर पत्रकार लज्जित है। सुनते हैं वह ब्राह्मण भी है, अिससे हर ब्राह्मण जमीनमें गड़ा जा रहा है। वह हिन्दू है, यह हर हिन्दूके लिये डूब मरनेकी बात है। वह भारतीय है, भारतमाता अुस कुलकलंकीको जन्म देनेके कारण अनुतप्त है। भारतीयता ही नहीं सारी मानवतापर लगे अभिशापका दूसरा नाम है नाथूराम गोड़से।

हमें लगता है कि जिस प्रकार अिस देशमें कोअी भी रावण कहलाना पसन्द नहीं करता, विभीषण कहलाना पसन्द नहीं करता है। अुसी प्रकार भविष्यमें कोअी अपना नाम नाथूराम भी रखना पसन्द न करेगा।

किन्तु अिस महान पातकका दूसरा पहलू भी है। अिस पातकने महान बापूको और भी महान सिद्ध कर दिया देशमें भभकती हुअी साम्प्रदायिकताकी आगकी शांतिके लिये कदाचित स्वयं राष्ट्रपिताकी बलि अपेक्षित थी। अब तो यह द्वेषाग्नि शांत हो।

बापूके बलिदानके बाद देशमें जो कुछ हुआ है वह सभी कुछ अभूतपूर्व है। बलिदान—दिवससे आज तक अिस महान राष्ट्रने ही नहीं अन्य राष्ट्रोंने भी "हाय बापू" कहकर जितने ठंडे सांस लिये अुतने अिससे पहले काहे को कभी किसी बड़ी से बड़ी विभूतिकी यादमें भी लिये गये होंगे। यमुना तटपरका दाह-करण-संस्कार गंगा, यमुना तथा सरस्वतीके संगममें बापूकी अस्थियोंका प्रवाह और देश भरकी सभी पवित्र नदियोंका बापूकी भस्मका अधिकारी होना हमें भगवान बुद्धके अंतिम संस्कारकी याद दिलाता है। पाली वाङ्मयमें वह अिस प्रकार दर्ज है :—

१. अन्तिम वचन

"तब भगवानने आयुष्मान आनन्दसे कहा— 'आनन्द! शायद तुमको ऐसा हो—(१) अतीत-शास्ता (= चले गये गुरु) का यह अुपदेश है, अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा शास्ता नहीं है। आनन्द! अिसे ऐसा मत समझना, मैंने जो धर्म और विनय विहित किये हैं मेरे बाद वही तुम्हारे शास्ता (=गुरु) हैं। .....
(३) अिच्छा होनेपर संघ मेरे बाद छोटे मोटे भिक्षु नियमोंको छोड़ दे सकता है।

तब भगवानने भिक्षुओंको आमंत्रित किया-'भिक्षुओ! यदि बुद्ध, धर्म संघमें अेक भिक्षुको भी कुछ शंका हो, तो पूछ लो। भिक्षुओ! पीछे अफसोस मत करना—'शास्ता हमारे सम्मुख थे किन्तु हम भगवानके सामने कुछ पूछ न सके।'

किसी अेक भी भिक्षुको कोअी शंका न थी।

तब भगवानने भिक्षुओंको आमंत्रित किया—

'हन्त! भिक्षुओ अब तुम्हें कहता हूं। सभी संस्कार नाशवान हैं। अप्रमादके साथ (=आलस्यरहित होकर) जीवनके लक्ष्यको प्राप्त करो।'—यही तथागतके अंतिम वचन हैं।

२. निर्वाण

तब भगवान प्रथम ध्यानको प्राप्त हुअे। प्रथम ध्यानसे अुठकर द्वितीय ध्यानको प्राप्त हुअे।...चतुर्थ ध्यानसे अुठनेके अनंतर भगवान परिनिर्वाणको प्राप्त हुअे। भगवानके परिनिर्वाण होनेपर निर्वाण होनेके साथ भीषण, लोम हर्षण भूचाल हुआ। देव दुंदुभियां बजीं। अुस समय ब्रह्माने कहा—

'संसारके सभी प्राणी जीवनसे गिरेंगे।
जब कि लोकमें अैसे बल प्राप्त अद्वितीय पुरुष,
'तथागत, शास्ता, बुद्ध परिनिर्वाणको प्राप्त हुअे॥'

अुस समय देवेन्द्र शक्रने कहा—

'अरे संस्कार अुत्पन्न और नष्ट होनेवाले हैं।
जो अुत्पन्न होकर नष्ट होते हैं; अुनका शांत होना ही सुख है।

भगवानके परिनिर्वाण हो जानेपर जो अवीतराग भिक्षु थे, अुनमें कोअी बांह पकड़कर क्रन्दन करते थे, कटे वृक्षके सदृश्य गिरते थे, धरतीपर लोटते थे—भगवान बहुत जल्दी परिनिवृत हो गये। किन्तु जो वीतराग भिक्षु थे वह स्मृति-सम्प्रजन्यके साथ स्वीकार करते थे—'संस्कार अनित्य हैं, (-वियोग न हो) यह कहां मिलेगा!'

तब आयुष्मान अनुरुद्धने भिक्षुओंसे कहा—

'नहीं आवुसो! शोक मत करो, रोदन मत करो।
भगवानने तो आवुसो! यह पहिले ही कह दिया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सभी प्रियोंसे जुदाओ होनी है।'

आयुष्मान अनुरुद्ध और आयुष्मान आनन्दने वह बाकी रात धर्म कथा में बिताओ। तब आयुष्मान अनुरुद्धने आयुष्मान आनन्दसे कहा—

'जावो, आयुस आनन्द! कुसीनारामें जाकर, कुसीनाराके मल्लोंसे कहो—'वाशिष्ठो! भगवान परिनिवृत हो गओ अब जो तुम्हें करना अुचित लगे वह करो।'

"अच्छा भन्ते"! कह आयुष्मान आनन्द कुसीनारामें प्रविष्ट हुओ। अुस समय किसी कामसे कुसीनाराके मल्ल, संस्थागार (=प्रजातन्त्र-सभा-भवन) में जमा थे। आयुष्मान आनन्द वहीं जाकर बोले—

'वाशिष्ठो! भगवान परिनिवृत हो गये अब जो तुम्हें करना अुचित लगे वह करो।'

आयुष्मान आनन्दसे यह सुना तो मल्ल, मल्ल पुत्र, मल्ल वधुअें, मल्ल-भार्यायें दुखित हो क्रन्दन करने लगीं। कोओ केशोंको बिखेरकर रोती थीं, बांह पकड़कर रोती थी, कटे वृक्षकी भांति गिरती थीं, धरतीपर लुंठित विलुंठित होती थीं—बड़ी जल्दी भगवानका निर्वाण हुआ, बड़ी जल्दी सुगतका निर्वाण हुआ, बड़ी जल्दी लोक-नेत्र अन्तर्धान हो गये।'

तब कुसीनाराके मल्लोंने पुरुषोंको आज्ञा दी—'तो भणे! कुसीनाराकी सभी प्रकारकी गंध मालाअें और सभी वाद्योंको जमा करो।'

तब कुसीनाराके मल्ल गंधमाला, सभी वाद्यों और पांच हजार थान-जोड़ोंको लेकर जहां **अुप वत्तन** था, जहां भगवानका शरीर था, वहां गओ। जाकर अुन्होंने भगवानके शरीरको नृत, गीत, वाद्य, माला, गंधसे सत्कार करते पूजते कपड़ेका मंडप बनाते दिन बिता दिया। तब कुसीनाराके मल्लोंके मनमें आया—भगवानके शरीरके दाह करनेको आज बहुत विकाल हो गया। अब कल भगवानके शरीरका दाह करेंगे। अिस प्रकार कुसीनाराके मल्ल सात दिन तक भगवानके शरीरकी सत्कार पूजा ही करते रहे। सात दिनके बाद कुसीनाराके मल्लोंने नगरसे अुत्तर-अुत्तरसे ले जाकर जहां मुकुट-बन्धन नामक मल्लोंका चैत्य था, वहां भगवानका शरीर रखा। तब कुसीनाराके मल्लोंने आयुष्मान आनन्दसे पूछा—

'भन्ते! आनन्द! हम तथागतके शरीरको कैसे करें?'

* १ वर्तमान कुशीनगर-जिला गोरखपुर यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वाशिष्टो ! जैसे चक्रवर्ती राजाके शरीरको करते हैं वैसे ही तथागतके शरीरको करना चाहिये।'

"कैसे भन्ते ! चक्रवर्ती राजाके शरीरको करते हैं।"

"वाशिष्टो ! चक्रवर्ती राजाके शरीरको नअे वस्त्रसे लपेटते हैं; नअे वस्त्रसे लपेटकर धुनी रुअीसे लपेटते हैं। धुनी रुअीसे लपेटकर नअे वस्त्रसे लपेटते हैं। अिस प्रकार लपेटकर तेलकी लोह द्रोणी (=दोन)में रखकर दूसरी लोह द्रोणीसे ढांककर, सभी सुगंधित लकड़ियोंकी चिता बनाकर राजा चक्रवर्तीके शरीरको जलाते हैं; जलाकर बड़े चौरस्तेपर राजा चक्रवर्तीका स्तूप बनाते हैं। हमें भी तथागतका स्तूप बनवाना चाहिये। वहां जो माला, गंध, या चूर्ण चढ़ायेंगे, या अभिवादन करेंगे, या चित्तको प्रसन्न करेंगे, अुनके लिये वह चिरकाल तक हित सुखके लिये होगा।"

तब कुसीनाराके मल्लोंने भगवानके शरीरको कोरे वस्त्रमें लपेटा। कोरे वस्त्रसे लपेटकर धुनी रुईसे लपेटा, धुनी रुईसे लपेटकर कोरे वस्त्रसे लपेटा फिर तांबे (=लोह)की तेलवाली कढ़ाअीमें रख (=चन्दन आदि) सुगंधित काष्ठोंकी चिता बनाकर भगवानके शरीरको चितापर रक्खा।

× × × ×

तब आयुष्मान महाकाश्यपने जहां मल्लोंका मुकुट-बन्धन नामक चैत्य था, जहां भगवानकी चिता थी, वहां पहुँचकर चीवरको अेक कंधेपर कर अंजलिजोड़ तीन बार चिताकी परिक्रमा कर सिरसे वन्दना की। पांच सौ भिक्षुओंने भी अेक कंधेपर चीवरकर हाथ जोड़ तीन बार चिताकी प्रदक्षिणा कर भगवानके चरणोंमें सिरसे वन्दना की।

३. दाहक्रिया

आयुष्मान महाकाश्यप और अुन पांच सौ भिक्षुओंके वन्दना कर लेते ही भगवानकी चिता स्वयं जल अुठी। भगवानके शरीरमें जो झिल्ली या चर्म मांस, नस, या चर्बी थी, अुनकी न राख जान पड़ी न कोयला; सिर्फ अस्थियाँ ही बाकी रह गअी, जैसे कि जलते हुअे घी या तेल की न राख (=क्षारिका जान पड़ती है न कोयला (=मसि)। भगवानके शरीरके दग्ध हो जानेपर मेघने प्रादुर्भूत हो आकाशसे भगवानकी चिताको ठंडा किया। कुसीनाराके मल्लोंने भी सर्वगन्ध मिश्रित जलसे भगवानकी चिताको ठंडा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब कुसीनाराके मल्लोंने भगवानकी अस्थियोंको सप्ताह भर संस्थागारमें रखा। अुनकी पूजा की।

४. स्तूप निर्माण

राजा मागध अजातशत्रु वैदेही पुत्रने सुना-'भगवान कुसीनारामें परिनिर्वाणको प्राप्त हुअे।' राजा मागध अजातशत्रु वैदेही पुत्रने कुसीनाराके मल्लोंके पास दूत भेजा—'भगवान भी क्षत्रिय थे, मैं भी क्षत्रिय हूं; भगवानकी अस्थियोंमें मेरा भी अुचित हिस्सा है। मैं भी भगवानकी अस्थियोंपर 'स्तूप बनाअुंगा और पूजा करूंगा।'

वैशालीके लिच्छिवियोंने सुना०।
कपिलवस्तुके शाक्योंने सुना०।
अल्लकप्पके बुलियोंने सुना०।
रामग्रामके कोलियोंने सुना०।
वेठ दीपके ब्राह्मणोंने सुना०।
पावाके मल्लोंने भी सुना०।

अैसा कहनेपर कुसीनाराके मल्लोंने अुनसंघों और गणोंसे कहा—'भगवान हमारे ग्राम क्षेत्रमें—परिनिवृत हुअे, हम भगवानकी अस्थियोंका भाग नहीं देंगे।'

अुनके अैसा कहनेपर द्रोण ब्राह्मणने अुनसंघों और गणोंसे कहा—'आप सब मेरी अेक बात सुनें। हमारे बुद्ध क्षमावादी थे। यह ठीक नहीं कि अुन अुत्तम पुरुषकी अस्थियां बांटनेमें मारपीट हो, आप सभी अेक मत होकर आठ भाग करें, दिशाओंमें स्तूपोंका विस्तार हो। बहुतसे लोग बुद्धमें प्रसन्न हों।"

'तो ब्राह्मण तू ही भगवानकी अस्थियोंको आठ समान भागोंमें सुविभक्त कर।'

'अच्छा भो!', कह ब्राह्मणने भगवानकी अस्थियोंको आठ भागोंमें बांटकर अुनसंघोंसे निवेदन किया—'आप सब ये कुंभ (घड़ा) मुझे दें, मैं कुंभका स्तूप बनाअुंगा और पूजा करूंगा।

अुन्होंने द्रोण ब्राह्मणको कुंभ दे दिया।

पिप्पलिवनके मौर्योंने सुना०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भगवानकी अस्थियोंका भाग नहीं है। भगवानकी अस्थियां बंट चुकी। यहांसे कोयला ले जाओ।'

वे वहांसे कोयला ले गये।

राजा अजातशत्रुने राजगृहमें भगवानकी अस्थियोंका स्तूप बनाया और पूजा की।

वैशालीके लिच्छिवियोंने भी ०।

कपिलवस्तुके शाक्योंने भी ०।

अल्लकप्पके बुलियोंने भी०।

रामगामके कोलियोंने भी०।

वेठ दीपके ब्राह्मणोंने भी०।

पावाके मल्लोंने भी ०।

कुसीनाराके मल्लोंने भी०।

द्रोण ब्राह्मणने भी कुंभका ०।

पिप्पलिवनके मौर्योंने भी कोयले का ०।

अिस प्रकार चक्षुष्मान (= बुद्ध) का शरीर सुसत्कृत हुआ। देवेन्द्रों, नागेन्द्रों, नरेन्द्रोंसे पूजित तथा श्रेष्ठ मनुष्योंसे पूजित हुआ, अुसे हाथ जोड़कर वन्दना करो, सौकल्पमें भी बुद्ध होना दुर्लभ है।

काश! बापूकी राखपर भी देशके कोने कोनेमें स्तूप बनवा दिये जा सकते !!!

* * * *

अहिंसाकी मर्यादा

अहिंसाके सामने बैरका त्याग होना ही चाहिये, यह महावाक्य है, यानी जहां बैर अपनी आखिरी हद तक पहुँच चुका हो, वहां अिस्तेमालकी जानेवाली अहिंसा भी अूंचीसे-अूंची चोटी तक पहुँची हुअी होनी चाहिअे। आजका वातावरण अितना जहरीला बन गया है कि हम सयाने और अनुभवी लोगोंके वचन याद रखनेसे अिनकार करते हैं। रोज-रोज होनेवाले छोटे-मोटे अनुभवोंको भी नहीं देख सकते। बुराअीका बदला भलाअीसे चुकाना चाहिअे, यह बात सबके मुँहपर होती है। अिसका अनुभव भी होता है। फिर भी हम यह क्यों नहीं देख सकते कि अगर सारी दुनिया बैरसे भरी होती तो अिसका कभीका अन्त हो गया होता? आखिर दुनियामें प्रेम ही बढ़ता है। अुसीसे दुनिया टिकी है और टिकती है।

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

ऑपरेशन

: पं० श्रीचन्द्र अग्निहोत्री :

गर्मीके दिन थे। कमरेमें अमससे जी अकुलाता था। जब तक पंखा झलते, कुछ राहत मिलती, फिर वही हालत। अिसलिये कमरेके बाहर खुले बरामदेमें एक चटाअी डाल और अुसीपर बिस्तर लगा लेट गये। बाहर हवा मिलनेसे जीमें जी आया और थोड़ी देरमें नींद आ गयी।

अचानक नींद खुल गयी। आँखें कड़वा रही थीं, आलस भरा था। समझ में न आया कि आखिर नींद क्यों खुल गयी। थोड़ी देर लेटे रहनेपर ऐसा लगा, जैसे सांस लेनेमें कष्ट हो रहा हो। अुठ बैठे। बैठे रहनेसे कुछ आराम मिलता था। थोड़ी देर बाद फिर लेटे। फिर वही हालत, साँस लेनेमें तकलीफ। करवट बदली, कुछ लाभ नहीं। रात-भर कभी अुठ बैठते, फिर कभी लेट जाते। एक ही दिक्कत, सांस लेनेमें तकलीफ।

कअी दफे अुठते-बैठते देख श्रीमतीजीने जो भीतर ही बच्चेको लिये लेटी पंखा झल रही थीं, पूछा, "क्या बात है? कहीं दर्द हो रहा है क्या?"

"नहीं, कुछ नहीं।" हमने कहा।

"तो क्या खटमल काट रहे हैं?"

"नहीं भाअी, तुम तो खामखा..." झुँझलाकर कहा।

"तो फिर क्या पीरैं जैसी आ रही हैं?" हँसते हुए उन्होंने पूछा।

"बस यही समझो। दाअि-बाअि बुला रखो," कहा और लेट गये।

किसी तरह सबेरा हुआ। नींद न आनेके कारण सिर भारी था, मुख विवर्ण। अुधर आफिस सिरपर। जैसे तैसे नहा-धोकर कुछ खाया और आफिस का रास्ता लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिन बीते, चार दिन बीते, मगर हालतमें कुछ परिवर्तन नहीं। पूरी नींद न आनेके कारण अब न खाना अच्छा लगता था, न कुछ काम। शरीर सारे दिन सुस्त रहता। रात आँखोंपर काटनी पड़ती।

बिस्तरपर लेटे शून्यदृष्टि आकाशकी ओर ताक रहे थे। अितनेमें अुदास पत्नीने पास बैठकर चिन्तित स्वरमें कहा, 'तुम किसी बैदको क्यों नहीं दिखाते? दिन दिन छीजते जाते हो। ऐसी बीमारी तो कभी देखी नहीं।'

दूसरे दिन सबेरे वैद्यराज पं० भुजंगभूषणके पास गये। दो-चार सवाल करने और नाड़ी-परीक्षाके बाद पण्डितजीने बतलाया कि जुकाम बिगड़ गया है, अिसलिए कड़ा हो गया है। दहीको मथकर मठा बनाअिए और एक चोंगी के सहारे उसे सुड़किए। दो-तीन दिनमें कड़ा जुकाम पिघल जायगा। तब झड़ जानेपर बिलकुल अच्छा हो जायगा।

हम लौटे और साथ ही दही भी बाजारसे लेते आये। अेक शरबतवालेसे चोंगी भी मांग लाये। दही मथा गया और हमने कअी बार सुड़का। दो-तीन दिन यही क्रिया जारी रही। आराम तो कुछ न जान पड़ा, हाँ, जुकाम हो गया, सिर-दर्द और भी बढ़ गया। पहले नाकके अेक छेदसे सांस ले लेते थे, अब पण्डितजी के अुपचारके बाद वह भी बन्द हुआ और मुँहसे सांस लेने लगे। हरवक्त ऐसे हाँफते रहते, जैसे कुआरमें धानके खेतमें 'लेव' करनेके बाद भैंसा।

हमारे कष्टमें श्रीमतीजीका खाना-पीना हराम था। जब वैद्यजीकी दवासे भी कुछ लाभ न हुआ, तो अेक दिन सबेरे जब हम बैठे दातून कर रहे थे, अुन्होंने कहा, "सुनते हो, वो रजिया बुंजाड़िन कह रही थी कि मुर्गाहट्टामें कोअी हैं हनीफ साहब, हाथमें बड़ा जस है। अुसके लड़केको दमेकी सिकायत थी। पन्द्रा दिनमें अच्छा कर दिया।"

'हाँ, बैदराजके भी हाथमें तो जस था।'

"तो बैदकी दवासे फायदा न हुआ, तो अब दवा ही बन्द कर दोगे?" बड़े विनीत भावसे पत्नीने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुसके कहनेका ढंग अेसा था कि हमें हकीम साहब तक जाना पड़ा। हकीम साहबने, क्या खाते हैं, से लेकर कितनी बार पाखाने जाते हैं, आदि दर्जनों सवाल किये और तब अेक पुर्जेपर कुछ नाम लिख दिये, जिनमेंसे हम अेक भी बतानेमें असमर्थ हैं। याद अितना ही है कि अुन सारी चीजोंको पानीमें पकायें। जब पकते-पकते पानी चौथाअी रह जाय, तब अुतार लें। अुसमें थोड़ी मिश्री डालकर सुबह-शाम पियें। तेल-खटाअीसे परहेज रखें।

दवा ली और तीन-चार दिन हकीम साहबके बताये मुताबिक करते रहे। इससे यह तो हुआ कि जुकामका बहना बन्द हो गया; मगर सांस लेनेमें कुछ भी अुन्नीस-बीस न हुआ।

हां, खांसी जरूर कुछ आने लगी।

दवासे जो नहीं होता, वह दुआसे हो जाता है; इसपर हमारा भी विश्वास है और धर्मपत्नीजीका हमसे भी अधिक। हमारे कल्याणके लिअे पूजा-पाठ करती ही रहती हैं। जब अुन्होंने देखा, वैद-हकीम हार गये, तब भगवानकी शरण गयीं। कालीजीकी मानता मानी गयी, सत्यनारायणकी कथा मानी गयी, कअी दान दिये गये, अेक भड़ुरीसे हमारी कुण्डलीभी दिखलायी गयी और अुसे जपका संकल्प करा दिया गया। मगर इतनेपर भी दीनदयालके कानमें भनक न पड़ी। हमारा कष्ट ज्यों-का-त्यों।

श्रीमतीजी सत्यनारायण-मन्दिरसे पूजा करके लौटी थीं। हम बैठे बच्चे को जो जाग पड़ा था, खिला रहे थे। अुन्होंने थोड़ा पानी हमारे अुपर छिड़का थोड़ा नाकके अुपर और थोड़ा पीनेको कहा। हमने पी लिया। श्रीमतीजीने डोलची फर्शपर रख दी और पास ही बैठकर बोली, 'देखो, भगवानसे तो अर्जी-फरियाद कर ही रहे हैं, अेक दफे डाक्टरको दिखाओ। मटिया कालिज जाओ। वो क्या कहते हैं।'

'डाक्टर क्या भगवानसे बढ़कर है' मैंने खीझकर कहा। बार-बार निराश होनेके बाद खीझ ही पैदा होती है।

'भगवानसे बढ़कर तो कोई नहीं; मगर फिर भी...'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो क्या भगवानपर आविश्वास करूँ ?'

'तुम्हारा तो सिर फिर गया है। दुनिया पूजा-पाठ, दवादारू सब करती है। तुमको अपनी कुछ फिकिर नहीं।' ममताके साथ-साथ अुनकी वाणीमें व्यथा भी थी।

'कल जायँगे। देख लें अुनकी भी करामात।'

दूसरे दिन मेडिकल कालेज गये। डाक्टरको तकलीफ बतायी। उसने नाकमें टार्च लगाकर देखा और पलक मारते कहा, "हड्डी बढ़ गयी है। आपरेशन कराना पड़ेगा। आअिअे, परसों।"

'आपरेशन ?' हमने धीरेसे कहा। आपरेशनका नाम सुनकर हमारे प्राण कांप रहे थे।

'हाँ, डरनेकी बात नहीं। मामूली आपरेशन होगा। बिलकुल तकलीफ न होगी।'

हम अुठे। पाँव लड़खड़ा रहे थे, मानों शून्य हो गये हों। सिर चकरा रहा था और आँखोंके सामने अँधेरा-सा लगता था। 'आपरेशन' यही अेक शब्द कानोंमे गूँज रहा था। घर पहुँचे। देवीजी लपकी हुअी आयीं—'कहो, क्या कहा डाक्टरने ?'

'आपरेशन होगा नाकका, और क्या कहा डाक्टरने।' हमने नाराज होकर कहा।

नाक का आपरेशन, सुनते ही वह तो अैसे चौंक गयीं, मानों बिजलीका तार छू लिया हो।

'आपरेशन ! आपरेशन !!' अुन्होंने कहा, और अुनकी आंखोंसे दो बूँद आंसू गिर पड़े।

घरमें मातम छा गया। चूल्हा जलाने की कौन कहे, श्रीमतीजीने बच्चे को दूध तक न पिलाया। वह भिनभिनाता रहा।

महरी बर्तन मांजने आयी, देखा, सब मुँह लटकाये बैठे हैं। वह सहम गयी। ठिठकते हुअे पूछा, 'बहू, सब राजी-खुसी तो है देस में ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुसने सोचा, 'जरूर कोअी खत या तार आया होगा।'

बहू चुप मारे बैठी रही।

'बहू, भोजन नहीं बनाया क्या?' महरीने फिर साहस करके कहा।

'देखती नहीं हो महरी। बनाती, तो क्या बर्तन सिरपर बांध लेती?'

श्रीमतीजीका मुँह खुलनेके कारण महरीको कुछ साहस हुआ। पूछा, 'क्या बात है बहू, बताओ ना?'

'क्या बताअूँ,' रुआंसी होकर श्रीमतीजीने कहा, 'अुनकी नाकका आपरेशन होगा।'

महरी चौंक गयी—। 'आपरेशन! नाकका?'

फिर थोड़ी देर खामोशी रही। तब महरीने कहा, 'बहू, पासमें मेहरा डाक्टर हैं। भैयासे तो चीन्ह-पहचान है। अुनको देखायें। वो क्या कहते हैं।'

यह बात श्रीमतीजीको जँच गयी और अुन्होंने महरीसे कहा, 'महरी जीजी, तुम खुद जाओ, और यहीं बुला लाओ। अपने सामने देखायें।'

महरीकी सलाह मान ली गयी थी। अिससे वह बहुत खुश थी। अुठी और थोड़ी देरमें डाक्टर मेहराको ले आयी।

श्रीमतीजीने हमें कुछ कहनेका मौका न दिया। खुद किवाड़ेकी ओटसे सब कह सुनाया।

'देखें राम बाबू' डाक्टर मेहराने हमसे कहा।

हमारी नाक रोशनीकी तरफ ले जाकर अुन्होंने देखा।

'हां, अेक मसा है। मसा हो जाता है नाकमें, तब सांस लेनेमें तकलीफ होती है। बहुत मामूली आपरेशन होगा। करा डालिअे।'

'आपरेशन...डाक्टर साहब' हमने अड़ते हुअे कहा।

'अरे, आपरेशन नामसे आप क्यों घबराते हैं। पता तक न चलेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्सा मुख्तसर । डाक्टर मेहराके समझानेपर तीसरे दिन हम, श्रीमतीजी और अुनके छोटे भाअी मेडिकल कालेज गये । हमारी नाकमें रुअी के कोकेनसे भीगे फाहे घुसेड़े गये और अिसके बाद फाहे निकालकर लोहेका एक पोला डाला गया । अब हमारी रूह कांपने लगी । माथेपर पसीना आ गया । साले साहब हमारे पास ही खड़े थे । अितनेमें डाक्टर साहबने अेक बाल जैसा पतला तार लिया और पोलेके भीतरसे होकर नाकमें डाला ।

रामके धनुष तोड़नेके सम्बन्धमें तुलसदिासने लिखा है—लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े । काहु न लखा रहे सब ठाढ़े । कुछ अैसा ही चमत्कार हुआ । हमने अितना ही देखा कि अेक पतला तार नाकमें डाला जा रहा है । पलक मारने न पाये थे कि डाक्टरने कहा, 'That's all right' और उठ खड़ा हुआ । खूनकी कुछ बूंदें गिरी । अेक नर्सने कांचके प्यालेमें लाल-लाल कोअी दवा पिलायी और हमें छोड़ दिया गया ।

श्रीमतीजी लपकी हुअी आयीं, 'हो गया?'

'और क्या ! तुमने क्या समझा था कि कुछ पहाड़ अुठाना है ?' मन-ही मन भुन्ना रहे थे । अगर जानते, आपरेशन अितना आसान होगा, तो अिन सबसे कहते भी नहीं । और याद आ रहे थे बैदराज भुजंगभूषण तथा हकीम हनीफ साहब ।

'हंस'

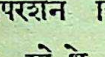

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू श्यामसुन्दरदासजी

: श्री० हृषीकेश शर्मा :

भारतवर्षकी राष्ट्रभाषापर स्वर्गीय बाबू श्यामसुन्दरदासजीका बहुत भारी ऋण है। हिन्दी जिनकी मातृभाषा है वे, और हिन्दीको और नागरीको जिन करोड़ों अहिन्दी-भाषियोंने राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके रूपमें ग्रहण किया है वे, बाबू श्यामसुन्दरदासके ऋणसे कभी अ-ऋण न हो सकेंगे।

बाबूजीने अपने छात्र-जीवनमें ही अपने दो सहपाठी अभिन्न हृदय मित्रोंके साथ हिन्दी-प्रचारका बीड़ा अुठाया और काशीमें 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की। इस सभाकी सारी समृद्धि और कीर्ति स्व. श्यामसुन्दरदासजीकी सच्ची लगन, साधना, त्याग और अटूट अथक परिश्रमका फल है। बाबूजी और कुछ भी न करते, अुनकी 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' ही अुनको अमर बनानेमें समर्थ है। यह सभा भारतवर्षकी अिनीगिनी श्रेष्ठ संस्थाओंमें अेक प्रमुख संस्था है। न सिर्फ अिसी देशमें; बल्कि पाश्चात्य देशोंमें भी अुच्चाति-अुच्च भाषावैज्ञानिकों तथा साहित्यिक विद्वानोंकी मंडलीमें भी अिस संस्थाका अेक सम्मानपूर्ण विशिष्ट स्थान है। राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरीकी आधुनिक अुन्नतिके लिये जितना जबरदस्त जनआन्दोलन अिस सभाने किया है, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागको छोड़कर, अुतना शायद ही अिस देशकी किसी अन्य संस्थाने किया हो। प्रातःस्मरणीय महामना मालवीयजी महाराजके नेतृत्वमें अिस सभाने अदालतों, कोर्ट-कचहरियों, विश्व-विद्यालयोंमें नागरी लिपिको अुचित स्थान दिलवाया है और अिस देशके बड़े बड़े अंग्रेज-शासकों को अपनी हठधर्मिता छोड़कर नागरी लिपिकी अेकमेव अुपयोगिता स्वीकार करनी पड़ी। अैसे थे श्यामसुन्दर!

बाबू साहब आधुनिक युगके हिन्दी-गद्य-लेखकोंमें अेक महारथी थे। युग-प्रवर्तक थे। आपकी रचनाओंमें नवयुगका प्रतिनिधित्व है। आपकी हिन्दी-सेवाओंका क्षेत्र असीम रहा है। अपनी प्रखर प्रतिभा और पांडित्यसे आपने साहित्यके विभिन्न अंगोंका जिस शैलीमें विवेचन किया है अुसका साहित्यिक जगतमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना अेक विशिष्ट स्थान है। आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि आपकी भाषामें शुद्ध तत्सम और तद्भव हिन्दी शब्दोंका ही सुन्दर व्यवहार हुआ है। आपकी शैलीमें विषयके अनुकूल गंभीरता अधिक आगई है अतः साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति आपके प्रतिपादित विषयको समझ नहीं सकता। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीके साथ अिस तेजस्वी अकेले व्यक्तिने हिन्दी साहित्यके विकास और प्रसारमें, नागरी लिपिके सार्वदेशिक प्रचारमें जितना अथक काम किया अुतना सौ साहित्यिक मिलकर भी नहीं कर सकते। स्व. बाबू साहबकी रचनायें—'साहित्यालोचन' 'भाषा-विज्ञान', 'रूपक-रहस्य', 'भाषा और साहित्य', 'गोस्वामी तुलसीदास' आदि भारतवर्षके विश्वविद्यालयोंकी सर्वोच्च कक्षाओंमें पाठ्यपुस्तकें हैं।

हिन्दी भाषा और साहित्यके अिस तपस्वी साधकने अपने जीवनका सारा सत्व राष्ट्रभाषाको अूँचा अुठानेमें अुसके साहित्यको सजाने-सँवारनेमें तथा समर्थ-समृद्ध बनानेमें ही हवन किया।

"संसारकी उन्नति व्यक्तिकी दासतासे प्रारम्भ होकर व्यक्ति-स्वातंत्र्यमें समाप्त हुअी है। यह स्वाभाविक विचार सा बन गया है कि मनुष्य मनुष्यमें विभेद सारहीन है, सब मनुष्य बराबर हैं। कमसे कम इस हद तक मनुष्य स्वयं अपना साध्य है। किन्तु जहाँ तक उत्कर्षका सम्बन्ध है वह राष्ट्रीय दासत्व (राज्य विस्तारका भावना) से चलकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता (अंतर्राष्ट्रीयता) में समाप्त होता है। अर हमें यह समझना है कि राष्ट्र भी मनुष्यकी तरह अपने आपमें स्वयं साध्य है। साथ ही हमें यह बात भी समझनी है कि जिस प्रकार अेक मनुष्य दूसरे मनुष्यपर अपना स्वामित्व सिद्ध नहीं कर सकता, ठीक उसी प्रका कोअी राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्रपर अपना स्वामित्व या अधिकार न्यायपू सिद्ध नहीं कर सकता।

—आनन्द कुमार स्वा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाकी समस्या

: श्री राघवेन्द्र सिंह :

भारतके स्वतंत्र होनेके साथही हमारी राष्ट्रभाषाकी समस्याने भी अत्यन्त महत्वपूर्ण रूप धारण कर लिया है। अपनी असमयकी कठिनाइयोंमें फँस जानेके कारण हमारी सरकारका ध्यान अिस ओर अधिक नहीं जा सका है; किन्तु फिर भी जनतामें अिसकी काफी चर्चा है। इस सम्बन्धमें विभिन्न प्रकारके मत प्रकट किअे जा रहे हैं। ये मत तीन श्रेणियोंमें विभाजित किअे जा सकते हैं—हिन्दुस्तानीके पक्षमें, अंग्रेजीके पक्षमें और हिन्दीके पक्षमें।

भ्रम निवारण

सर्व प्रथम हिन्दुस्तानीके समर्थकोंका भ्रम-निवारण अुचित होगा। हिन्दुस्तानी, वास्तवमें बोली तो जाती है, और यदि लिखी जाती है तो केवल कहानियों और अुपन्यासोंमें। गहन विषयोंमें हिन्दुस्तानी बिलकुल चल ही नहीं सकती। जैसा कि 'लीडर' में माननीय सम्पूर्णानन्दजीने लिखा है, 'हिंदुस्तानी को सरकारी काममें लानेके लिअे और अितिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषयोंमें अुसे चलानेके लिअे हमें नये पारिभाषिक शब्द गढ़ने पड़ेंगे। ये पारिभाषिक शब्द हमें हिंदुस्तानी तो दे नहीं देगी, क्योंकि वह तो हमारे अुठने बैठने, हंसने-बोलने और मोल-भाव करनेकी भाषा है। अिसके लिये हमें या तो संस्कृत, या फारसी अरबी या अंग्रेजीकी शरणमें जाना पड़ेगा। किन्तु अंग्रेजीसे केवल पारिभाषिक शब्द ही लेकर अुन्हे अपनी भाषामें चलानेसे अेक नयी खिचड़ी और बे-सिर-पैर, की भाषा तैयार हो जायगी जिसके लिअे कदाचित कोअी भी भारतीय तैयार न होगा। फिर यदि ये शब्द फारसी-अरबीसे लिअे जांय और आजकी हिंदुस्तानीमें मिलाये जांय तो वह हिंदुस्तानी न रहकर अुर्दूका रूप धारण कर लेगी। बची संस्कृत, अुससे शब्द लेना हिंदुस्तानीको हिन्दी बनाना है। अतएव हिन्दुस्तानीकी तो गति कहीं नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजके खंडित भारतमें, जब कि पंजाब आदि अुर्दू-भाषी प्रान्त पाकिस्तानके अंग हैं, कितने प्रतिशत लोग अुर्दू लिखते, बोलते और समझते हैं? अिससे अुर्दूके पुराने समर्थक भी भली भांति परिचित होंगे। किन्तु यदि अब भी कुछ मुसलमान हठ-बुद्धिसे अुसके समर्थनका राग अलापते रहें तो यही कहना होगा कि रस्सीकी अैंठन अभी तक नहीं गअी। फिर आज तो अुर्दूके वे समर्थक भी हिन्दीके पक्षमें आ गअे हैं जिनके बलपर अुर्दू हिंदुओंकी भी भाषा मानी जाती थी। अिसका कारण स्पष्ट है, किन्तु हमें अुससे कुछ नहीं करना है। वास्तविकता यह है कि जिन हिन्दू घरानोंमें फारसी राज्य करती थी प्रायः अुन सबसे हिन्दीके और प्रेमी निकल रहे हैं। शिक्षा संस्थाओंमें विद्यार्थियोंकी संख्याका हिन्दी-कक्षाओंमें बढ़ते जाना और अूर्दू तथा अंग्रेजीमें घटते जाना ही अिसका प्रमाण है।

अंग्रेजी के समर्थक थोड़े हैं। अधिकांशतः बेसिर-पैरके कारण दे कर वे अुसे राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं। डा० सर हरिसिंह गौड़ने सितम्बर मासके 'सागर यूनीवर्सिटी बुलेटीन' में कुछ ऐसे ही मजेदार कारण दिये हैं। जैसे, "अंग्रेजीका साहित्य अत्यन्त विस्तृत और संसारमें अद्वितीय है", "अुस भाषामें बड़ी प्राण शक्ति है", इस सम्बन्धमें यही कहना है कि अंग्रेजीकी अुन्नतिका कारण ब्रिटेनकी अुन्नतिमें है फिर अुसका साहित्य बहुत पुराना है। जिस हिन्दीको हम राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं वह अभी अपनी प्रारंभिक अवस्थामें ही है; किन्तु अुसके साहित्यकी आजकी प्रगति देखकर सबको यह मानना पड़ेगा कि अुसका भविष्य नितान्त अुज्ज्वल है। जिस दिन भारत विश्व की महान शक्ति हो जायगा और अन्य देशोंका व्यापार अुसके हाथमें आ जायगा तब कोअी हिन्दीके विश्व-भाषा होनेमें संदेह न करेगा। अितना अवश्य कहना है कि अंग्रेजीके समर्थक मूल रूपसे एक भूल करते हैं। वे अपनी दृष्टि केवल अभी तकके शिक्षित वर्गपर रख कर अपने तर्क देते है। अुन्हें यह नहीं सूझता कि अस्सी-पचासी प्रतिशत भारतीयोंको अिस समय शिक्षित बनाना है जो अभी तक किसी भी भाषाके ज्ञानसे अछूते हैं। अुन्हें अंग्रेजी पढ़ाकर विदेशी संस्कृतिका पोषक बनाना, अुचित होगा अथवा हिन्दी पढ़ाकर भारतीय संस्कृतिका पोषक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाना यह एक साधारण सी बुद्धिकी बात है, कुछ लोगोंके मतमें अंग्रेजी अिसलिअे राष्ट्रभाषा बनाअी जानी चाहिअे कि भारतमें भी अंग्रेजी साहित्य प्रचुर मात्रामें रचा गया है। कितना हास्यास्पद तर्क है!

यह तो निश्चित ही है कि और कोअी प्रान्तीय भाषा हिन्दीके सामने राष्ट्रभाषाका पद ग्रहण नहीं कर सकती। अतएव हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होगी। मराठी, बंगला और द्राविड़ भाषाओंमें संस्कृतके शब्द प्रचुर मात्रामें हैं और संस्कृतसे ही लिअे भी जाते है। अतअेव अैसी हिन्दी जिसमें संस्कृत शब्दोंका प्रमुख स्थान हो अुपयुक्त भाषाओंके बोलनेवालोंको अधिक सुगमतासे समझमें आयगी। अिसका यह अभिप्राय नहीं कि हिन्दीमें संस्कृत शब्दोंकी भरमार की जाय। वे शब्द जो भाषामें खप चुके हैं, चाहे वे फारसी, अरबी, अंग्रेजी अथवा अन्य किसी विदेशी भाषाके हों, अब निकाले नहीं जा सकते। अैसा करना तो भाषाको मृतावस्थाकी ओर घसीटना है। अैसे अंग्रेजी शब्द जो बंगला, मराठी अथवा मद्रासीसे लिअे गअे हैं अुनमेंसे अधिकांश हिन्दीमें भी आ चुके होंगे। विभिन्न प्रान्तोंके भारतीयोंकी समान आवश्यकता ही अिसका कारण है।

लिपिका प्रश्न

लिपिके सम्बन्धमें हिन्दुस्तानीवाले कहते हैं कि देवनागरी तथा अुर्दू दोनों लिपियां विद्यार्थियों को सिखाअी जांय। प्रथम तो जब हिन्दुस्तानीके राष्ट्रभाषा होनेका प्रश्न ही नहीं आता तो दो लिपियोंके सिखानेकी आवश्यकता भी नहीं रह जाती। दूसरे अुससे विद्यार्थियोंकी शक्ति और समय बहुत नष्ट होंगे। आजके संघर्षमय युगमें भारतको शक्ति और समयका तानिक भी अपव्यय नहीं होने देना है। अनेक प्रकार के शत्रुओंसे लड़कर, शीघ्रतातिशीघ्र अधिकसे अधिक शक्तिका संचय, स्थापन और बुद्धिके संसारमें अुसे अपना सिर भी तो अूंचा रखना है और साथ ही अिस दौड़में पिछे भी नहीं रहना है।

देवनागरी लिपिके सम्बन्धमें कहा जाता है कि वह अभी तक लाअिनो टाअिप, टेलीग्राफ, टेलीरायटर आदिके क्षेत्रमें नहीं आअी है। यों तो देवनागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिपि बड़ी ही वैज्ञानिक और शुद्ध लिपि है। फिर अुपर्युक्त प्रयोगोंमें अुसे लानेके लिअे अुसमें आवश्यकतानुसार सुधार भी किये जा सकते है। कुछ लोग तो अुसमें बहुत परिवर्तन करना चाहते हैं; किन्तु कुछ विशेषज्ञोंका कहना है कि केवल मात्राओंको बगल में लगानेसे ही कदाचित काम चल जायगा। यदि थोड़े परिवर्तनसे हमारा काम चल सके तो कोअी हानि नहीं। यदि अैसा न हो सके तो आविष्कृत मशीनोंमें वैज्ञानिकोंके श्रमसे आवश्यक सुधार कराये जा सकते हैं। देवनागरी लिपिके सम्बन्धमें यह तो प्रायः सब मानते हैं कि वह अुर्दू लिपिकी अपेक्षा बहुत अधिक शीघ्रता और सरलतासे सीखी अेवं याद रखी जा सकती है।

अिस प्रकार हिन्दीका पक्ष अत्यन्त मजबूत है। अब यदि बंगाल, मद्रास आदिके कुछ लोग अिसका विरोध न करें तो हमारा रास्ता साफ है। अिसका विरोध यदि वे करते हैं तो यही मान कर कि हिन्दी अेक प्रान्तीय भाषा है। तब यदि निराधार ही वे हिन्दीको हटा कर अेक विदेशी भाषाको राष्ट्रभाषा बना कर रखना चाहते हैं (क्योंकि वे जानते हैं कि विशेष कारणोंसे अुनकी प्रान्तीय भाषाअें अिस पदपर नहीं पहुंच सकती) तो अिससे बढ़ कर हठ कोअी न होगा। हिन्दीके राष्ट्रभाषा हो जानेसे प्रान्तीय भाषाओंको तो कोअी हानि पहुंचनेकी नहीं।

'संगम'

हिंदू अेवं मुसलमान दोनोंसे मैं अेक समान ही प्रेम करता हूं। मेरे हृदयमें अेक हिंदूके लिये जो स्थान है वही मुसलमानके लिये भी है। यदि मैं अेसे चीर सकता तो आपको दिखला देता कि अिसमें कोअी अैसा नहीं जो हिंदूके लिअे अलग अेवं मुसलमानके लिअे पृथक रूपसे सुरक्षित हो। प्राचीन संस्कृतिके गुप्त खजानेकी खोज करनेकी चेष्टामें मुझे यह अतुल वरदान प्राप्त हुआ है कि प्राचीन हिंदू संस्कृतिका जो अस्थायी अंश है वही अीसामसीह, बुद्ध, मुहम्मद अेवं जोरदोस्थके अुपदेशोंमें भी है। मैं जानता हूं कि यदि मेरे जीवन कालमें नहीं तो मेरे मरनेके पश्चात निश्चय ही हिंदू मुसलमान दोनों ही प्रत्यक्ष रूपसे देखेंगे कि मैंने साम्प्रदायिक शांतिके लिअे सदैव हृदयसे प्रयत्न किया है।

महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण

: श्री० घनश्याम अस्थाना :

तमाम नींव खुद चुकी, तमाम भीति गिर चुकी,
समाज जीर्ण-शीर्ण—आखिरी असाँस भर रहा !
अशक्त हाँपता हुआ, अधीर काँपता हुआ,
कटी जड़ें समेट—अस्त-व्यस्त सा सिहर रहा !

* * *

परम्परा बिगड़ चुकी, अतीत—रीति सड़ चुकी,
सड़ा-गला समाज—कोढ़ फूट-फूट गिर रहा !
बदल रहा जहान है, अुदय नया विहान है,
नवीन अंतरिक्षमें—नया विहग विचर रहा !

* * *

अतीत भीति तोड़ता, नया प्रवाह मोड़ता,
सजग सतर्क अिन्कलाब—विश्व में निखर रहा !
मशाल झिलमिला अुठी, कि रूढ़ि तिलमिला अुठी,
प्रगाढ़ अंधकार—मुक्तिका चमक शिखर रहा !

* * *

नया गगन, नयी धरा, समूल नव परम्परा,
नयी दिशा, नयी अुषा, समुद्र नव लहर रहा !
प्रकाशमय भविष्य है, सजग सबल मनुष्य है,
अुठा भुजा सशक्त—आज शंखनाद कर रहा !

'आजकल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी—कुछ संस्मरण

: श्री० जेठालाल जोशी :

सन १९२० के असहयोगके दिन। मार्चकी २१ वीं तारीख। भारतमें नवयुगका श्रीगणेश हो चुका था। कांग्रेसके आदेशानुसार सरकारी शिक्षा-संस्थाओंका जनताने बहिष्कार करना शुरू कर दिया था। हमारे हाअी स्कूल (प्रोप्रायेटरी हाअी स्कूल) ने भी सरकारी विश्वविद्यालयसे (बम्बअी यूनीवार्सिटीसे) नाता तोड़ लिया था। आज राष्ट्रीय विद्यालय गुजरात विद्यापीठकी परीक्षाओंका प्रारंभिक दिन था।

मैं मैट्रिकमें था। सभी परीक्षार्थी हमारे स्कूलके तिमंजिले मकान वेलीनटाअी-नकी हवेलीके कमरोंमें बैठे परीक्षा दे रहे थे। शामके ३-४ बजे होंगे। अितनेमें खादीकी टोपी, कुर्ता और धोती पहने अेक दिव्य पुरुष हमारे पाससे गुजरा। वह दोनों हाथोंसे नमस्कार करता हुआ चल रहा था। अुसकी आंखोंमें आनंदसे भरी हुअी दमक थी। यहादिव्य पुरुष और कोअी नहीं हमारे राष्ट्र-पिता पूज्य बापू थे। बापूका यह मेरा प्रथम दर्शन था।

अेक दिन बड़े तड़के अुठा। दैनिक कार्योंसे निवृत्त हो साबरमती सत्याग्रहाश्रम पहुँचा। अुन दिनों बापू 'हृदय कुंज' में बैठते थे। बिना किसी रोक टोकके मैं बापूके कमरेमें घुस गया। बापू खुले बदन सीधे बैठे थे। अुनकी जांघपर नवजीवन (Young India) के प्रूफ थे। बड़ी तल्लीनतासे बापू प्रूफ देख रहे थे। दोनों साप्ताहिकोंके १६-२० पृष्ठ बराबर देख चुकने तक बापूने किसी ओर देखा तक नहीं। सिर तक नहीं हिलाया। मैं बापूकी अेकाग्रताको देखता रहा। कार्य समाप्त होनेपर बापूने अपनी दृष्टि मेरी ओर डाली। मैंने अपनेको धन्य समझा।

अेक रोज अिसी तरह सबरे मैं आश्रम पहुँचा। अुसी हृदय कुंजमें मैं बैठा था कि अेक सज्जन मथुरासे बापूसे मिलने आये। वे पहिले बाहर खड़े थे। अतअेव अुन्होंने समय मांगा और भीतर आये, आकर बापूको अुन्होंने हाथ जोड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणाम किया और बैठ गये। बापू सिर्फ तीन वाक्य बोले; १–सरकार क्या कर रही है? २–लोगोंकी तैयारी कैसी है? ३–मुझसे दिल्लीमें मिलें। आगन्तुक भाअी अिन तीन वाक्योंमें पूरा संदेशा पा अुठ बैठे। मैंने समय और शब्दोंकी शक्ति अपने जीवनमें अुसी रोज पहिचानी।

अेक बार बापू शामको घूमने जा रहे थे। साथमें कुछ साथी भी थे। बातें हो रही थीं, शंका समाधानका यही सुन्दर अवसर माना जाता था। मैं भी साथ साथ चल रहा था। अिसी बीच अेक नीच आदमी आ निकला। वह बापूका नाम ले लेकर रास्ते भर अत्यंत बुरी गालियाँ देता रहा। बापू किसी महत्वपूर्ण विषयपर बातें करते हुअे चल रहे थे। ये गालियां सुनकर मुझे गुस्सा आ रहा था कि अिस दुष्टको गाली बकनेसे रोकूँ। मैंने अुसे डाँटा, परन्तु पूज्य काका साहबने मुझे रोका और कहा–अैसा करनेसे बापूकी अेकाग्रतामें बाधा पहुंचेगी। अिस बातकी बापूको खबर तक नहीं थी। मैंने अुस रोज बापूकी दिव्य शक्ति जानी। बापू अन्य साथियों सहित हृदय–कुंज पहुंचे। वहाँ मेरे अेक देहाती साथी बाहरसे बापूके दर्शनके लिये आये थे। ये साथी कदमें पूरे ६। फीट थे। अिन्होंने बापूको साष्टांग प्रणाम किया, हाथ जोड़े और बिना कुछ बोले खड़े रहे। बापू अिस समय भी निस्पन्द खड़े थे। देहाती भाअीकी बापूपर अपूर्व श्रद्धा थी।

बापू श्रीयुत मगनलाल भाअीके अवसानके बाद मगनलाल भाअीकी कुटीरमें ही रहा करते थे। १९२८ की बात है। कांग्रेसका अधिवेशन कलकत्तामें होना तय हुआ था। राष्ट्रपति पदपर स्वर्गीय श्री मोतीलालजी नेहरू चुने गये थे। अुन दिनों हमारे पं. जवाहरलाल नेहरू नेताजी श्री सुभाषचंद्र बोस तथा डॉ. आलम भारतके लिये पूर्ण स्वाधीनताके हिमायती थे। अिन तीनोंकी दृढ़तासे पंडित मोतीलालजी कुछ चिन्तित थे। अिसी सिलसिलेमें आप पूज्य महात्माजीसे मिलने अहमदाबाद आये हुअे थे। मुझे दोनों राष्ट्र-पिताओंको अेक साथ देखनेका व अुनके मुक्त हास्यको सुननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। बापू पहिलेके समानही हमेशाकी तरह प्रसन्नचित्त चर्खा चला रहे थे और पंडितजी अुत्तराभिमुख अेक तकियेके सहारे बैठे हुअे थे। पंडितजीकी खादीकी शुभ्र पोषाक और सिरके बालोंकी सफेदी मन मोह लेती थी। बातोंके सिलसिलेमें पंडितजीने कहा "यह जवाहर कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानने वाला नहीं। अुसको मनाना मेरे लिये कठिन कार्य है।" बापूने कहा "आप बेफिक्र रहिये। जवाहर तो मेरा पुत्र है। मैं मना लूंगा सचमुच आज हमारे हृदयसम्राट जवाहरलालजी बापूके सच्चे अुत्तराधिकारी सिद्ध हुअे हैं।

बापू अेक बार वर्धा जा रहे थे। सबेरे ७ बजे काठियावाड़ अेक्सप्रेस पकड़नी थी। मैं साबरमती स्टेशन पहुँचा। स्टेशनसे साबरमती आश्रमकी ओर चल पड़ा। सामनेसे बापू सदल बल आते दीख पड़े। मैं रुक गया। यात्राके अवसरपर भी नजदीक पहुँचकर प्रणाम किये। बापू हमेशा आश्रमसे स्टेशन तक पैदल ही आया जाया करते थे। मैं भी साथ चलने लगा। बापूने समय पूछा। मैंने बताया ६ बजकर ५ मिनिट हुअे हैं ओर मेरी घड़ी ५ मिनट आगे है। बापूने व्यंग करते हुअे कहा "क्या घड़ी ५ मिनट आगे रखना पड़ती है। बापूने कहा अभी तो ५ मिनट हैं। गाड़ी पकड़ ही लेंगे। अिसी बीच अेक आश्रम-बालिकाने गुजरातीमें कहा "बापूजी तमारा कान अमारा करतां लाम्बा छे" बापूकी निर्दोष हँसी भी अजीब रही बापूने कहा "हाँ पणसाह छेके हुं गधेडो थी"

अेक दो मित्रोंने कहा "बापू हम आपको हाथपर अुठा लें। बापूने बड़ी विनम्रतासे कहा "अभी तो मैं तुम दो को अकेला अुठाकर चल सकता हूँ। बापू अुस समय साठ वर्ष के लगभग थे। फिर भी अुनकी चाल बड़ी तेज थी। साथियोंको तेज चलनेका प्रयत्न करना पडता था। स्टेशनपर पहुँचे। अेक मिनटमें गाड़ी स्टेशनपर आ पहुँची। अुन दिनों गाड़ी ठीक समयपर आ जाया करती थी। बापू अपने साथियों सहित तीसरे दर्जेके डिब्बेमें चढ़े। पूज्य बा भी साथ थीं। बाके पूछनेपर बापूजीने अपनी काठियावाड़ी घरेलू बोलीमें कहा खडकाअी जाने अहमदाबाद स्टेशने जोई लई शुं"

अेक बार वनिता विश्राम महिला विद्यालयकी मैट्रिककी लड़कियोंके आग्रहसे हम साबरमती आश्रम जानेके लिये रवाना हुअे। अुन दिनों मैं बच्चे नहीं थी। हम सबोंने गाड़ी पकड़ी और साबरमती स्टेशन पहुँचे।

साबरमती स्टेशनसे आश्रम करीब १॥ मीलके फासलेपर है। आश्रम पहुँचे। अुन दिनों बापू अैतिहासिक दांडी यात्राकी तैयारीमें लगे हुअे थे। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री जमनालालजी बजाज व मीरा बहिन वहींपर थे । आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारायणदास भाअी थे । हम सर्वप्रथम सेठ जमनालालजीसे मिले और फिर मीरा बहिनसे । मीरा बहिनने तथा पूज्य बाने लड़कियोंको बड़े प्यारसे खादी पहिननेको कहा । "तुम बापूकी पुत्रियाँ खादी न पहनो यह क्या अच्छा है ?" अब हम बापूके कमरेमें पहुंचे । बापूने अिन बहिनोंको बड़े प्रेमसे पास बिठाया और भोजनके लिये कहा "समय हो गया है यहीं खा लोगी न ?" लड़कियाँ मेरी ओर देखने लगीं । मैंने विनम्रतासे कहा कि ये सभी बहिनें खाना साथ लायी हैं और भोजनालयमें आना चाहती हैं । इसपर बापूने कहा कि सभी बहिनें अपनी अिच्छानुसार भोजनालयमें बैठें । भोजनालयकी व्यवस्था आदर्श व्यवस्था थी । क्या हम अैसी शांतिपूर्ण पवित्र व्यवस्था कभी कर सकेंगे ? ठीक बापूके नजदीक मैं था । बापूके पास अनेक अखबार लाल पैन्सिलसे निशान किये हुअे पड़े थे । बापू परोसनेमें खर्च होनेवाले समयका भी पूरा पूरा अुपयोग करते थे । कुछ समय बाद हम अुठकर बाहर आये । हमारे भाग्यमें बापूके साथ भोजन बदा नहीं था । नहीं तो अितना सुन्दर अवसर बहिनें क्या जाने देतीं ?

आश्रम मेरे और मेरे परिवारके लिये शांतिका धाम था । हम हर रविवारको आश्रम पहुंच ही जाते थे । सप्ताहमें दो चार दिन सायं प्रार्थनामें अवश्य शरीक होना हमारा कार्यक्रम रहा करता था । बापूके ये संस्मरण आत्माको पवित्र बनाये रखनेमें सहायक हों—यही कामना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

—×—

समता—साहित्यिक सांस्कृतिक मासिक पुस्तिका—प्रकाशक श्री० वसन्त पुराणिक, ६०१ गोल बाजार जबलपुर। मूल्य १)।

'समता' का प्रथम अंक हमारे हाथमें है। अिसके सम्पादक-मण्डलमें पंडित नन्ददुलारे वाजपेयीके अतिरिक्त हिन्दीके पांच अन्य प्रतिष्ठित साहित्य-सेवियोंके नाम हैं।

अिधर कुछ वर्षोंसे हिन्दीमें पत्र पत्रिकाओंकी बाढ़सी आ गअी है। अिनमें मासिक-पुस्तकोंका प्रकाशन अेक अत्यन्त शुभ लक्षण है। अिन मासिक-पुस्तकोंमें स्थायी महत्वके साहित्यको ही स्थान दिया जाता है। बम्बअीके 'नया-साहित्य' के प्रकाशनके अुपरान्त ही अिस तरहकी पुस्तकोंकी ओर हिन्दी-जगतका ध्यान आकर्षित हुआ है। 'हिमालय' और 'प्रतीक' के बाद हम 'समता' का स्वागत करते हैं।

'समता' के प्रथम अंकमें अध्ययनशील पाठकोंके अुपयुक्त पर्याप्त सामग्री है। श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरिक्सा और श्री गंगाप्रसाद मिश्रकी कहानियोंमें कलाका परिमार्जित रूप दिखाअी देता है। डाक्टर रामविलास शर्माका लेख अत्यन्त सामयिक और विचारपूर्ण है। कविताओंका संकलन भी अुत्तम हुआ है। श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का लेख 'कारावासमें प्रसूत दो ग्रन्थ रत्न' बहुत लम्बा और अपूर्ण है। अिसमें पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्रके 'कृष्णायन' की तुलना पंडित जवाहरलाल नेहरूके 'डिस्कवरी आव् इंडिया' से की गअी है।

'समता' की सबसे बड़ी कमी अुसमें सामयिक सम्पादकीय टिप्पणियोंका अभाव है। अिसमें केवल दो ही टिप्पणियां है। छै छै सम्पादकोंके होते हुअे यह कमी बहुत खटकती है। आशा है आगामी अंकोंमें अिस ओर ध्यान दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहमानका बेटा—कहानी संग्रह—लेखक—श्री विष्णु प्रभाकर—प्रकाशक नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर। मूल्य २॥)।

'रहमानका बेटा' हिन्दीके प्रतिभाशाली कहानी लेखक श्री. विष्णु प्रभाकरकी 'चुनी हुअी अुन्नीस राजनीतिक कहानियों' का संग्रह है। सभी कहानियां अेक नअे दृष्टिकोणसे लिखी गअी हैं और अुनमें हमारे राजनीतिक और सामाजिक जीवनका जीता जागता चित्र प्रस्तुत किया गया है।

'आदि और अन्त' के बाद यह लेखकका दूसरा कहानी संग्रह है। अिसकी कुछ कहानियोंमें तो मध्यम वर्गकी मानसिक अवस्थाका चित्रण बड़े ही कलात्मक ढंगसे हुआ है। विष्णुजीकी कहानियां हृदयको स्पर्श करती हैं और आजके विषाक्त राजनीतिक वातावरणमें अुनका अेक विशेष सन्देश है।

विष्णुजीने जन साधारणके अुत्थान पतन, सुख दुख और आशा निराशाको ही अपनी कलाका विषय बनाया है। अुनके विचार प्रगतिशील हैं और वे समाजमें आमूल परिवर्तन चाहते हैं।

अिस संग्रहकी 'क्रांतिकारी' 'धरोहर' 'वे दोनों' 'खंडितपूजा' आदि कुछ कहानियां अुच्च कोटिकी हैं।

भाग्योदय-पक्षिकपत्र—सम्पादक-श्री. टी.कृष्णास्वामी-प्रकाशक कृष्णा-बकरा जबलपुर सी. पी. वार्षिक मूल्य, ५॥) अेक प्रति।)

'भाग्योदय' सरल हिन्दीका बालोपयोगी पाक्षिक पत्र है। अिसका प्रकाशन गत माससे प्रारंभ हुआ है। अभी तकके अंकोंसे पत्रका भविष्य अुज्ज्वल प्रतीत होता है। श्री. कृष्णा स्वामी अेक अनुभवी कार्यकर्ता हैं। मद्रासमें रहकर बहुत समय तक आपने अहिन्दी भाषा भाषियोंमें हिन्दीका प्रचार किया है। आशा है आपके सम्पादकत्वमें पत्रकी अुन्नति होगी।

—प्रशान्त

——*——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

हिन्दीकी सुप्रसिद्ध कवियित्री और कहानी लेखिका श्रीमती सुभद्रा-कुमारी चौहानका गत मास अेक मोटर दुर्घटनाके फलस्वरूप देहान्त हो गया। मृत्युके समय उनकी आयु सिर्फ ४३ वर्ष की थी।

श्रीमती चौहानके निधनसे हिन्दी संसारने अेक प्रतिष्ठित साहित्य-सेविकाको खो दिया। उनकी कविताअें बहुत ही लोकप्रिय थीं। 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसीवाली रानी थी' की पंक्तियां आज किसके जबानपर नहीं हैं! 'बालिकाका परिचय' 'राखीकी चुनौती' आदि उनकी प्रसिद्ध कविताअें हैं। हिन्दी संसारने दो बार सेक्सरिया पुरस्कार प्रदान कर सुभद्राजीका सम्मान किया था। 'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' उनके दो कहानी संग्रह तथा 'मुकुल' 'त्रिधारा' 'सीधे साधे चित्र' 'सभाके खेल' अन्य प्रकाशित पुस्तकें हैं।

राजनीतिक क्षेत्रमें श्रीमती चौहानने प्रथम असहयोग आंदोलनके समयसे ही भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। नागपुर झंडा सत्याग्रहके अवसरपर आपकी कर्तव्यनिष्ठा और दृढ़ताको देखकर सभी चकित रह गअे थे। सार्वजनिक कार्योंमें हाथ बंटानेवाली आप महाकोशलकी प्रथम महिला थीं। सन १९४२ में राष्ट्रके आह्वानपर प्रतिकूल पारिवारिक स्थितिके होते हुए भी आपने जेलजीवन स्वीकार किया था।

सुभद्राजीके विचार प्रगतिशील थे। अपनी बड़ी लड़की सुधाका विवाह आपने जातपात तोड़कर मुंशी प्रेमचन्द्रके लड़के अमृतरायसे किया। ईमानदारी और सरलता सुभद्राजीके जीवनकी विशेषता थी।

अिधर कतिपय वर्षोंसे मध्यप्रान्तीय धारासभाकी एक सदस्याके नाते आप महिला स्वातंत्र्य आन्दोलनको शक्ति प्रदान कर रही थीं। असेम्बलीमें उन्होंने हिन्दू स्त्रियोंके तलाकके सम्बन्धमें एक बिल उपस्थित किया था। अपने पाछे आप तीन लड़के और दो लड़कियां छोड़ गअी हैं।

सुभद्राजीकी स्मृतिके प्रति हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

बम्बअी--पूज्य महात्माजीको श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिअे श्री. गोविन्दलालजी की अध्यक्षतामें बम्बअी प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे अेक सभा गत ८ फरवरीको फेलोशिप स्कूलके सभा-भवनमें हुअी जिसमें बापूके सम्बन्धमें अनेक महानुभावोंके भाषण हुअे। सभामें अेक प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ।

'आजाद मंडल हिंदी वर्ग' ताराबाग, लव्हलेनकी ओरसे गत सितम्बर १९४७ में जो विद्यार्थी राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण हुअे थे अुनका प्रमाण-पत्र वितरण सामारंभ २३ जनवरी १९४८ को सुभाष-जयंतीके शुभ अवसरपर श्रीमान कान्तिलाल जोशीकी अध्यक्षतामें बड़ी धूमधामसे मनाया गया।

अध्यक्ष महोदयने अेक जोरदार भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्व तथा नेताजीकी जीवनीपर प्रकाश डाला।

अहमदाबाद—अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सदस्यों और प्रचारकोंकी अेक शोक सभा पूज्य बापू के निधनपर हुअी। सभामें निम्नलिखित शोक प्रस्ताव पास हुआ—अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सदस्यों प्रचारकों तथा विद्यार्थियोंकी यह सभा राष्ट्रपिता पूज्य बापूजीके दुखद अवसान-पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। और अिस अवसरपर परमात्मासे सच्चे दिलसे प्रार्थना करती है कि वह भारतवासियोंको बापूके बताअे मार्गपर चलनेकी शक्ति प्रदान करे।

मॉडल हायस्कूल प्रमाणपत्र वितरणोत्सव श्री पुरातन भाअी बूचकी अध्यक्षतामें हुआ। अिस अवसरपर श्री पुरातन भाअीने अपना भाषण हिन्दीमें दिया। यहाँके विद्यार्थियोंने 'हिन्दी' नामक अेक हस्तलिखित पत्रिका भी प्रकाशित की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचारकोंकी सभाने हिन्दीकी कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहानकी आकस्मिक मृत्युपर शोक प्रकट किया और उनके कुटुम्बियोंके प्रति सहानुभूति प्रकट की।

भावनगर–गत २१ दिसम्बरको श्रीमती शांतिला बहिन त्रिवेदीकी अध्यक्षतामें यहां प्रमाण पत्र वितरणोत्सव हुआ। श्री. दिनकर राय भट्ट तथा प्रिन्सपल लक्ष्मीचंद्र भाअीके अिस अवसरपर भाषण हुअे।

सरभाण–यहां प्रमाणपत्र वितरणोत्सव श्री. सुन्दरमके सभापतित्वमें अुत्साहपूर्वक मनाया गया। श्री. सुन्दरमने अिस अवसरपर अेक छोटा सा भाषण भी दिया।

सोजीत्रा (बड़ोदा)–गत १ जनवरीको अे. व्ही स्कूल राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्रके अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण पत्र प्रदान किअे गअे। प्रमाण पत्र वितरणोत्सव अेम. अेम. हाअी स्कूलके हेडमास्टर श्री. आर. अेस. सहस्त्रबुद्धेके सभापतित्वमें मनाया गया। आपने राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें अेक सारगर्भित भाषण भी दिया।

नसिराबाद–स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओरसे गत ३१ फरवरी को महात्माजीके देहावसानपर श्री० दत्तात्रय शास्त्री जलुलकरकी अध्यक्षतामें अेक विराट सभा हुअी। सभामें महात्माजीकी जीवनीपर सर्व श्री मेहता श्री व्यवहारेजी, डा० नाअिक, देशपांडेजी मोहरीरजी, अखुन्नाभियां कादरीजी आदि सज्जनोंने प्रकाश डाला।

अिन स्थानोंके अतिरिक्त आसाम, बंगाल, महाराष्ट्र गुजरात आदि प्रांतोंके अन्य सभी जगहोंमे महात्माजीके देहानसानपर विराट शोक सभाअें हुअीं। स्थान स्थानपर जनताने पूज्य बापूके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

राष्ट्रभाषा प्रचार चर्चा मंडलकी ओरसे गत २३ जनवरीको यहां सुभाष जयंती बड़ि धूमधामसे मनाअी गअी। श्री. यदुनाथ थत्तेने सुभाष बाबूके जीवनपर अेक प्रभावशाली भाषण दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमलनेर–दैनिक 'लोकमान्य' बम्बईके सम्पादक श्री. गाडगीलकी अध्यक्षतामें यहां 'शिक्षक संघ'का अधिवेशन हुआ जिसमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके समर्थनमें अेक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

जलगांव–स्थानीय साहित्य प्रेमी मंडलके तत्वावधानमें पूर्व खानदेश जिला राष्ट्रभाषा प्रचारक श्रीयुत श्रीराम अट्रावलकरकी अध्यक्षतामें अेक सभा हुअी जिसमें हिन्दीके सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री. भगवतीचरण वर्माकी 'चित्रलेखा' पर श्री. रा. म. गाजरे और श्री. रा. वा. पाटीलके भाषण हुअे।

मनमाड़–प्रचार कार्यको सुव्यवस्थित रूपसे संचालित करनेके अुद्देश्यसे यहां अेक राष्ट्रभाषा परिषदकी तय्यारी हो रही है। स्वागत समितिके सदस्य बननेकी आखिरी तारीख ३१ मार्च है। श्री. रेवाशंकर दुबे परिषदको सफल बनानेके लिअे प्रयत्नशील हैं। विशेष जानकारीके लिअे श्री. दुबेजीसे पत्र व्यवहार किया जाना चाहिअे।

विंचूर–श्री. सरदार भय्या साहबकी अध्यक्षतामें यहां प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया जिसमें सर्व श्रीरण खांबे, मु. ग. भट, और य. रा. सोमवंशीके भाषण हुअे।

सटाणा–यहां राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापना हो चुकी है। पदाधिकारियोंका चुनाव अिस प्रकार हुआ है– श्री. ना. आ पगार, अध्यक्ष श्री. पुं. तु. पाटील, अुपाध्यक्ष मु. ना. जयकृष्णीयां, मंत्री. भा. अ. चान्दोरकर, संचालक. सदस्य–श्री. ना. म. पाटील सटाणा. द. त्र्यं. जोशी सटाणा. श्रीमती केलकर सटाणा. श्रीमती बिडकर सटाणा. श्री. द. क्त. भदाणें सटाणा. मु. का. पाटील नामपूर. निं. ता. भामरे. पंचाक्षरी. ध. ग. पवार अजमीरसौन्दाणें. दे. ज. पाटील मुंजवाड.

विदर्भ

अमरावती–गत १८ जनवरी रविवारको अमरावती जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी दूसरी बैठक अमरावतीमें हुअी। सर्वानुमतिसे प्रांतीय समितिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालक पं. हृषीकेश शर्माने अध्यक्षका स्थान ग्रहण किया। सामीतिके अध्यक्ष आचार्य शंकररावजी लोंढे एम. ए. साहित्यरत्नने पिछली बैठकका विवरण पढ़कर सुनाया। फिर जिला-संगठन, नये केन्द्रोंकी स्थापना, पुस्तकालयकीस्थापना तथा समितिके अन्तर्गत मोर्शी, दर्यापुर, अंजनगांव केन्द्रोंमें अुपसमितियां स्थापित करने आदिका निश्चय हुआ। अमरावती शहर और जिलेमें राष्ट्रभाषा-प्रचार बहुत शीघ्र गतिसे बढ़ रहा है। विदर्भ नागपुरमें अमरावती शहर राष्ट्रभाषा-प्रचारमें सर्वप्रथम है। गत वर्ष ८७० परीक्षार्थी अिस केन्द्रमें, परीक्षाओंमें बैठे थे।

ता. २७ जनवरीको अमरावती शिवाजी आर्टस कालेजकी हिन्दी साहित्य परिषदके तत्वावधानमें छात्रोंकी सभामें श्री हृषीकेश शर्माका जोरदार भाषण हुआ।

अकोला—गत २० जनवरी को अिस केंद्रमें, श्रीमती मनुताअी कन्या-शाला भवनमें, प्रमाणपत्र वितरण अुत्सव देशभक्त श्री दुर्गाताअी जोशी की अध्यक्षतामें मनाया गया। केन्द्र व्यवस्थापक श्री रातिलाल शाहने पं० हृषीकेश शर्मा, विदर्भ नागपुर प्रांतीय रा. भा. प्र. समितिके संचालक को अिस समारोह में भाषण देने तथा अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र वितरण करने आमंत्रित किया था।

दूसरे दिन, दोपहरमें, अकोला सीताबाअी आर्टस कॉलेज हॉलमें, कालेजीय वाग्मंडलके तत्वविधानमें शर्माजी का राष्ट्रभाषाके महत्वपर सांस्कृतिक व्याख्यान हुआ।

रातको ९ बजे, 'राजस्थान-भवनमें' माननीय विदर्भ केसरी श्री ब्रिजलालजी बियाणीके मार्गदर्शनमें, अकोला जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापना होकर पहली बैठक हुअी। अकोलामें प्रांतीय समितिके अन्तरगत जिला रा. भा. प्र. समितिकी स्थापना हो गयी है। आशा है, अकोला शहर और जिलेमें आस-पास राष्ट्रभाषा-प्रचारकी आशातीत प्रगति होगी। यों अिस समय अकोला शहरका नंबर चौथा है। गत परीक्षाओंमें यहां ४५७ परीक्षार्थी बैठे थे। प्रचारक बन्धु वहां बड़ी लगनसे कार्य कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-फल—फरवरी ४८ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षा-फल ३१ मार्चको प्रकाशित होगा।

प्राप्तांक प्राप्त करना—जो अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने प्रश्नपत्रोंके अलग अलग प्राप्तांक मँगना चाहेंगे अुन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। शुल्कके साथ परीक्षाका नाम तथा अपनी क्रमसंख्या अवश्य लिखना चाहिये। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे शुल्क नहीं लिया जावेगा।

पुनर्निरीक्षण—जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण कराना चाहेंगे अुनको २० अप्रैलतक प्रत्येक अुत्तर पुस्तकके लिये आठ आना निरीक्षण शुल्क भेजते हुअे अपना पूरा नाम, क्रमसंख्या और परीक्षा तथा प्रश्नपत्र संख्या देकर प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिये।

निरीक्षणमें केवल अितनाही देखा जायगा कि प्रत्येक प्रश्नके अुत्तरको अंक दिये गये हैं या नहीं, और जोड आदि ठीक है या नहीं।

आगामी 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षा—सितम्बर ४८ में 'राष्ट्रभाषा रत्न' की आगामी परीक्षा होगी। परीक्षा आवेदन पत्र ३१ मअीतक वर्धा कार्यालयमें आजाना चाहिये। रत्न परीक्षामें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अपैल है।

परिवर्तन—(१) परिचय पहला प्रश्नपत्र-पदयमें 'पंचवटीही पुस्तक रहेगी। 'मिलन' हटा दी गयी है।

(२) सितम्बर ४८ की परीक्षाओंमें कोविद परीक्षाका शुल्क ४, की जगह ५) रु. रखना स्वीकृत हुआ है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांत	नाम	क्रमांक	केन्द्र
गुजरात	श्री रामचन्द्र अुपाध्याय 'साहित्यरत्न'--	१२०३	अजमेर
,,	,, नगीनभाअी छबीलदास पारेख	१२०७	वापी
,,	,, मुकुटलाल शिवशंकर रावल	१२०८	राजकोट
,,	,, पटेल कान्तिभाअी पुरुषोत्तमदास	१२०९	बांधणी
,,	,, गनुभाअी मुलजी मकवाणा	१२२१	अहमदाबाद
,,	,, चीमनलाल छगनलाल शिखी	१२२६	भालोद
,,	,, पं० विश्वंभरदासजी	१२२७	चांदोद
,,	,, मूलजीभाअी लल्लुभाअी शाह	१२२८	कोसिंद्रा
,,	,, वैद्य महेन्द्रकुमार मोरारजी पटेल	१२३०	राजपारडी
,,	,, चिनुभाअी लल्लुभाअी शाह 'कलारंजन'	१२३१	प्रान्तीज
महाराष्ट्र	,, अेस० बी० कणवरकर	१२०४	शहापूर
,,	,, बाळकृष्ण गोपाळ पंडित	१२०५	धुलिया
,,	,, दिनकर कौतिक भंगाले	१२०६	हिंगोणे
,,	,, विनायक गोविंद भोंगे	१२२२	अहमदनगर
नागपूर-विदर्भ	,, मधुकर हिरालाल कांळे	१२२३	खामगांव
,,	,, जनन्नाथसिंह बैस	१२२९	अकोला
बम्बअी	,, के० अेस० तंगभाचारी	१२१०	माटुंगा
,,	,, के० नागराजन	१२११	,,
,,	,, पी० आर० शेबन्	१२१२	,,
,,	,, ललिता आर० अय्यर	१२१३	,,
,,	,, बालँबाल आर० अय्यर	१२१४	,,
,,	,, के० अेस् नारायण	१२१५	,,
,,	,, अेस् शिवरामकृष्णन्	१२१६	,,
,,	,, रा० माणिक्कम	१२१७	,,
,,	,, आर० वी० अीश्वर	१२१८	,,
,,	,, सी० वी० सुब्रमण्यन्	१२१९	,,
,,	,, माधव यशंवत भिडे	१२२४	मोहीम
,,	,, शान्तिलाल गोकुलदास पंड्या	१२२५	बम्बअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाएँ

७, ८ फरवरी १९४८ की परीक्षाओंके केन्द्र

और

परीक्षावार परीक्षार्थियोंकी संख्या

भिन्न भिन्न प्रांतोंके केन्द्रोंसे नीचे दिये विवरणके अनुसार आवेदन-पत्र आये:—

प्रान्त	केन्द्रसंख्या	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०	कुल
आसाम	१२	९१६	३७१	१०५	९	०	१४०१
बंगाल	१४	५९६	२०९	२३	६	१	८३५
उत्कल	५३	२४०७	८५०	१९४	३९	०	३४९०
सिंध	४	६२	३५	९	५	०	१११
अन्य	९	८२	६१	२९	३३	०	२०८
गुजरात	२१०	८८९३	५९९०	१९४१	२१९	६	१९७८६
महाराष्ट्र	१५५	६०३२	४५९२	१३३७	३५८	१३	१२३१९
बम्बअी	१६	२०७१	१९६७	७२९	१६१	०	४९२८
विदर्भ--नागपुर	८५	३१६०	२४४९	५३१	१०९	१	६२४९
हैदराबाद	१०	६	१७	४९	५०	१०	१३२
कर्नाटक	७	३९०	१११	२१	२४	०	५४३
फुटकर		१६	३१	१५	१४	०	७६
जोड	५७५	२४६३४	१६६८३	४६८३	१०७०	३१	४७१०१

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंकी संख्या

आसाम

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	शास्त्रि.
१	अमाल	३९१	१६७	४५	६	
६	गौहाटी	२९	१३	८	२	
८	अ० गौहाटी	८	१२	५		
११	चराओबाही	२०				
१३	जलजलो	४५	१०			
१५	जोरहट	७४	२९	१२		
१७	डिब्रूगढ़	११				
२१	नौगांव	२०६	१०४	२६	१	
२२	पलासबाड़ी	२१	१५	६		
२४	पुबथरिया	२१	६	३		
२६	बलमा	१६	३			
२८	रहा	७४	१२			
१२	जोड़	९१६	३७१	१०५	९	

बंगाल

३५	अब्दालीपुर	१४	६	२		
३६	कलकत्ता	२६५	९३	६	१	
३७	अ० कलकत्ता	८१	४४	३		१
३८	कर्सियांग		११	५		
३९	कांथी	३७	२१	६		
४३	गोलग्राम	२३	१			
४६	दार्जिलिंग	१६	१२	१		
४७	दुर्गापुर	२७	१५			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
४८	नंदांग्राम	१४			५	
५०	बेलूरमठ	२६				
५१	मथुरापुर	१५	१			
५२	शांतिनिकेतन	२०				
५३	सरिषा	१७	२			
५४	सिलचर	४१	३			
१४	जोड़	५९६	२०९	२३	६	१

उत्कल

५७	अलनाइट	३२	१०	१		
५८	आस्का	९९	१६	३		
५९	इन्दुपुर	६८	२४			
६०	इरदा	२५	९			
६१	कटक	२०७	१५४	३६	५	
६२	कपिपदा	१९				
६३	कण्टिलो	१५	५			
६६	कुशुपुर	५६	२०	२		
६७	केंद्रापाड़ा	३३	२	४		
६८	कोर्टपार्ड	१४				
६९	खलिकोट	२४				
७०	गुरांडी	२४	१	१		
७१	गोबरा	७०	२५	५		
७२	घंटेश्वर	१४				
७३	चम्पापुर	६	९	५		
७४	चिकटीगढ़	२०	२	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अतिरिक्त
७५	चौद्वार	११	७	४		
७६	छत्रपुर	१६	२८			
७७	जयपुर	६७	१८	२	२	
७८	जयंत्पुर	६०	२८	४	६	
७९	जगतसिंहपुर	८२	२६	८		
८०	जगन्नाथप्रसाद	१३	२	१		
८१	जरडागढ़	६५	९			
८३	जाजपुररोड	३४	१५	१		
८४	ढांगी	३४	१७	६		
८५	ढूरा	२५	८	३		
८६	तिर्तिल	६६				
८८	दोलसाही	३२	२३	३		
९१	प्रतापपुर	३७	५			
९२	पात्रपुर	४३	१७	४	४	
९३	पाटपुर	१७	६			
९४	पार्लाखिमेडी	२८	१५	५		
९५	पुडामारो	२६	११	६		
९६	पुरी	११३	२९	१६	५	
९७	बरहमपुर	१०४	३९	२५	८	
९९	बारिपदा	३५	२८	१०	१	
९९(क)	बालिकुदा	२१				
१००	बालेश्वर	५९	१०	२		
१०१	बागलपुर	६७	९			
१०२	बासुदेवपुर	२०				
१०४	बुगुड़ा	४१	९			
१०५	बुरकेल	१२	९	२		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
१०६	बेलगुंठा	१३				
१०७	बोआरानी	४१	१९	७		
१०८	भद्रक	११२	६०	३		
११०	भेड़ा	१५	४			
११४	राजकनिका	७५				
११५	शेरगढ़	३०	९			
११७	सालीपुर	१२३	५५	८		
११८	सुंदरग्राम	११	३	१		
११९	सोरडा	४०	१२			
११९ (क)	सोर	४७	६	१		
१२०	हिंजलीकाटु	४६	३७	१४	८	
५३	कुल जोड़	२४०७	८५०	१९४	३९	

अन्य-प्रान्त

१२१	अजमेर	८	५	५		
१२३	कुशलगढ़	१२	२०	१२	७	
१२५	केलानिया	५	१			
१२७	जावरा	१५	११	३	५	
१२९	देवली	५	७			
१३३	नीमच	७	१०		७	
१३५	भोपाल	२८	६	१		
१३६	मंदसौर	२	१	४	१७	
१२८ (क)	अलाहाबाद			४		
९	कुल	८२	६१	२९	३६	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्ध

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
१३८	(ख) कराची	५	३	१		
१३८	(ग) कन्धकोट	३०	१२	४		
१३८	(घ) गढ़ी खैरो	२०	१८	३	५	
१३८	(च) गैशहरोफिरोज	७	२	१		
४	कुल जोड़	६२	३५	९	५	

गुजरात

१३९	अंकलेश्वर	१२५	५९	११		
१४२	अड़ास	२३	२४			
१४३	अमरेली	७२	५९	६		
१४४	अविधा	८	२	३		
१४५	अहमदाबाद	१९२५	११४९	३०१	५४	
१४६	अडादरा	३८	१४	१		
१४७	अमोल	२४	१०	२		
१४८	आंकलाव	३७	५	३		
१४९	आगलोड	९	८	२		
१५०	आणंद (शा.)	१४०	९०	१३	१	
१५१	आणंद (पा.)	१२०	५५	१०	४	
१५२	आमोद	३२	३७	६	१	
१५३	आस्ता	१०	१७	४		
१५५	आशी	६६	४			
१५६	अिटोला	१४	७	८		
१५८	अीसंड	१०	५	२		
१५९	(क) अूंझा	४५	१६	१२		
१६०	अुनावा (आ०)	७३	२६	१७		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
१६१	अुनावा (नया)	१७	१	४	७	
१६२	अुमता	२५	२२	५		
१६३	अुमरेठ	१०१	५४	७		
१६४	ओड	१०	९	१		
१६५	ओरणा	१२	१			
१६६	कच्छ (मांडवी)	५९	२१	११		
१६७	कपड़वंज	५८	३७	१४		
१६८	कंजरी	३	४	४		
१६९	कंथारिया	२७	३२	५		
१७१	कड़ी	१०२	६७	३४	३	
१७२	कड़ोद	३०	२८	६	५	
१७३	करजन	९३	२५	४		
१७४	करमसद	२६	१६	३	२	
१७५	कलोल	१५	२१	८		
१७६	कविठा	२०	१५	६	९	
१७७	कठेर	७३	११	२		
१७८	काकनपुर	१७	९			
१८०	कारवन	१४	८	३		
१८१	कोरेली	३३	१२	६	५	
१८२	कालोल (पंच.)	५१	२७	३		
१८४	कासंद्रा	१६	१३	४		
१८६	कुकरवाडा	२२	२१	२		
१८७	कुरचन	२४	३			
१८८	कुवादर	१३	६			
१९०	कोसिंद्रा	२६	२७		४	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
१९१	कोंसंबा	२२	७			
१९४	खडसुपा	७	९	१		
१९५	खानपुर	३९	१२	३		
१९६	खेरवा	११	५	३		
१९८	गणदेवी	६१	१६	५		
२००	गणदेवा	१२	१३	४		
२०१	गणेशपुरा	१६	५	१०		
२०२	गत्राडा	१६	११	९		
२०३	गढ़डा	१७				
२०४	गांगपुर	३१	१६	५		
२०५	गोधरा	२५	२१	५		
२०८	गोत्री	११	५	१		
२११	चराडा	१७	२६	५	५	
२१२	चांगा	४५	१४	५		
२१३	चांदोद	३०	२७	३		
२१४	चाणस्मा	३६	२७	१७		
२१५	चाणसद	२६	१५	१		
२१६	चीखली (सूरत)	१३५	१७			
२१८	चोरंदा	२६	१८	३		
२१९	छत्राल	१५	११	११		
२२०	छाणी	२९	५			
२२० (क)	छोटाउदयपुर	२९	५	३		
२२१	जंत्राल	२२	२२	७		
२२२	झनोर	२३	२५	५		
२२४	जाफराबाद	४	३			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
२२५	जामनगर	३७	३९	१०	४	
२२७	जामखंभालिया	२७	३०			
२२८	जितोडिया	५	८	२		
२२९	जेतपुर	८	८	३		
२३०	जेतलपुर	४६	३३	१५		
२३१	जोशीकुंआ	११	५			
२३२	झुलासन	१३	८	१		
२३४	टिटोदन	२६	२६	१३	७	
२३५	टुंडाव (सिद्धपुर)	२७		२		
२३५	[क] टुंडाव [सया.]	९	४	१		
२३६	टुण्डज	२२	३	१		
२३७	बसरा	२६	२२	५		
२३७	[क] डभोआ	४५	६	१		
२३८	डभासी	४	२०	२		
२३९	डाकोर	६२	३३	१०	६	
२४१	डुमरा [कच्छ]	१०	६			
२४२	तलोद	३०	३०			
२४३	तोरणा	२७	१६	४		
२४४	दावोल	९१	१२	४		
२४५	दुधवाडा	१०	१५	३	५	
२४६	दलोल	१५	१६	२		
८९३	दोहद	३६	१७	२		
२४९	दोरा [भरूच]	१८	२८	२		
२५०	धनसुरा	४	१४	१		
२५१	धर्मज	५८	६८	१६	५	
२५२	धन्धुका	१२	६			
२५३	धर्मज-रणोली	२	८	८		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
२५४	धरमपुर	२२	२६	७		
२५५	धांगध्रा	८	६	२		
२५७	धिनोज	२३	१४	४		
२५८	धोरणपारडी	९		१		
२५९	धोलका	४५	४४	१४	३	
२६०	ध्रेल	३७				
२६१	नडियाद	३५३	२८९	४६	१४	
२६२	नवसारी [पु.]	१२	१४	१	५	
२६२	[क] नवसारी [स्त्री]	१५	३४	४		
२६३	नयाडिसा	२	२३	८		
२६४	नारदीपुर	२२	१०	२		
२६५	नार	४६	७			
२६६	पलसाना	४०	२			
२६७	पाटडी	१४	१२	४		
२६८	पाटन	३०	२५	१०		
२६९	पादरा	३१	२५	१२	२	
२७०	पानसर	६	४	१		
२७१	पारडी	६१	२५	१		
२७२	पालनपुर	१२	२२	१४		
२७३	पालोताना	१०	४			
२७४	पालेज	११	३५	४		
२७५	प्रांतिज	१७	९	३	१	
२७६	पिलवाई	४८	४३	२२	१	
२७७	पिपलाव	२४	२०	६		
२७८	पेटलाद	१७	९	२		
२७९	पोरबन्दर [पु.]	३४	२७	११		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
२८०	पोरबन्दर (स्त्री)	२६	१	१४	९	
२८१	पोलारपुर	१३	२	१		
२८३	बहुचराजी	२१	९	२		
२८५	बलनपरब	२०	२१	१५		
२८८	ब्राम्हणवाड़ा	५	२	३		
२८९	बांधनी	२२	१३	८		
२९०	बांकानेर	१८	१४	२		
२९१	बांसदा	२४	४०			
२९२	बालासिनोर	२६	१६	३		
२९३	बावला	२२	१८	१७		
२९४	बांकरोल	१२	१७	५		
२९५	बुहारी	१६	४			
२९६	बोरसद	५८	५६	७		
२९७	बोदाल	३२	३	३		
२९९	भड़ोंच	१२९	८८	३१	६	
३००	भाण्डु	४	१	२		
३०१	भाटपुर	५२	३५	१४		
३०२	भादरवा	३६	२२	५		
३०३	भावनगर	१२	३०	१२	२	
३०४	भालोद	५४	२१	५	५	
३०५	भुज	३७	१९		२	
३०६	न्यूमंडाला	२३	२	२		
३०७	मणुन्द	१८	१२	१		
३०९	महिज	२५	१६	१२		
३१०	महिसा	२१	५	३		
३११	महुवा	१५	२५	१६	३	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
३१२	महेलोल	८	९	६		
३१३	महेसाना	७६	४५	९	२	
३१४	महोलेल	४८	२२	६		
३१५	[क] मालपुर	२६	१४	३		
३१६	मांडवी	१३	१०	१		
३१८	मानेकपुर	६	३			
३२१	मालवन	२०				
३२२	माढी	७३	३			
३२३	मियासरभाण	२४	१९	१४	१३	
३२४	मोगरी	९	१३			
३२५	मोड़ासा	११७	२७	३		
३२६	मोभारोड	१०	१६	२	४	
३२७	मोर्वी	६	२	२		
३२८	रतनपुर	१३	१८			
३३०	रणापुर	१५	१	७	१	
३३१	रणुंज	६	११			
३३२	राणपुर	७	५	२		
३३३	रामनगर	३७	२७	१३		
३३५	राजपिपला	३२	२८	३		
३३६	राजकोट	१४२	११८	१९	३	
३३७	लसुंद्रा	२४	१२			
३३९	लांघणज	६	२	५		
३४०	लाडोल	२	७	३		
३४१	लिम्बासी	४५	१७	६		
३४२	लिमड़ी	२४	५			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
३४३	लुणावाड़ा	५६	१३	२		
३४४	लोदरा	४०	२८	३		
३४५	वरणामा	२०	१२	१		
३४६	वलासन	३	४	४		
३४७	वघासी	१९	४२	३		
३४८	वड़दला	१२	२	३		
३५०	वड़िया	२९	२२	४		
३५०	वड़ू	५	९	३		
३५०	[क] वहेरा	१४	१३	४		
३५१	वड़ोद	८५	५५	१६		
३५३	वड़ौदा	२०८	१७८	६०	६	
३५३	वढ़वान	९	२			
३५७	वसो	३५	९३	३५	५	
३५९	वाघनिया	१३	५	२	५	
३६०	[क] वापी	१५	५	१		
३६१	वालोड	२४	२८	३		
३६१	[क] वासद	३८	६	२		
३६२	व्यारा	२०	२४	७		
३६३	विसनगर	७३	५१	१५	२	
३६४	वीरसद	४२	४४	१४	५	
३६५	वीरमगांव	४९	२०	१२	४	
३६६	विरोल	१७	१३			
३६७	विद्याण	७	१८	९	५	
३६८	वेजपुर	११	१४			
३६९	वेजलपुर [पंच]	९	११	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
३७०	वेजलपुर	७१	५८	१२	६	
३७१	वेड़ा	१८	२	१		
३७२	शहेरा	८	१३	३		
३७४	शुक्लतीर्थ	१८	१५	७		
३७५	सरढ़व	१२	१८	१०		
३८०	संतरामपुर	२९		१		
३८२	साधली	२८	६०	१		
३८३	साधी	१६	१२	६		
३८४	सावली	२१	१३	५		
३८७	सिनोर	६८	३०	१२		
३८८	सिहोल	९	७	४		
३८९	सुनाव	११	३१	३		
३९०	सूरत	३३६	३९०	११४	१२	
३९३	सोनगढ़	१४	७	३	५	
३९२	सोजीत्रा	७९	२६	९	५	
३९५	हलवद	३	७			
३९६	हलधरवास	२०	११	१		
३९७	हाँसोट	३	९	४		
३९८	हालोल	४०	१२	६		
२१०	कुल जोड़	८५०९,	५५७८,	१५२५		२४७

महाराष्ट्र

४०१	अकलूज	१८	४			
४०३	अकोलनेर	१०	२			
४०४	अट्टावल	५२	२६	२		
४०८	अमलनेर	१११	८०	१३	१४	
४०८(क)	अजमीरसौंदाणे	३१	४	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति
४११	अहमदनगर	३१०	२६८	५८	३०	
४१२	अष्टे	३	१३	१		
४१३	अभोना	८	१९			
४१४	अवसरी खुर्द	२८	१			
४१५	आचेगांव	८	२२	५		
४१७	आटपाड़ी	५	४	२		
४१८	आंबप	३१	६			
४२२	आमोदे	२१	१५	१३	५	
४२३	आंजर्ले	५०	४			
४२५	अचलकरंजी	४६	२	२		
४२६	अस्लामपुर	४	६	१४	४	
४२८	अम्बरगांव	५२	२१	५		
४३३	अुरण	८	८	२		
४३८	ओतूर	७	२५	४		
४३९	औंध	२६		२		
४४६	करमाला	१३	२७	९		
४४८	कलवण	५१	२६			
४४९	कल्याण	९	२	२		
४५२	कसबेसुकेने	१२	४	३		
४५३	कडगांव		१४	११		
४५४	कठारे	६२	१३	६		
४५५	कागल	४१	१३	१		
४५८	कासारे	२९	३	२		
४६२	कांसावली	२५				
४६६	कूकनूर	२७	७	२		
४६७	कुरुन्दवाड़	५	११	३		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
४६९	बुड्डचडे	१००	११			
४७०	कुर्डूवाडी	११	७	३		
४७४	केरेगांव	३०	१९	१०		
४७६	कोल्हापुर	३४४	१९८	५०	१२	
४८०	खरसुंडी	१९		१		
४८३	खिर्डी	९	२७	२२	७	
४८६	खेड़ (पूना)	१३	८	९		
४८८	खोरेपाटन	४२	१	१		
४९२	गुंडेगांव	२४				
४९३	गुलबर्गा	२७	२१	९	६	
४९४	गुहार	१३				
४९९	चांदवड़	३४	१९	२		
५१०	चिनावल	१०	३६	२		
५११	चिपलून	२६	२३	१		
५१३	चोपड़ा	११	२९	६		
५१४	जमखंडी	२०	१५	७	३	
५१६	जलगांव	१०८	८५	४६	२३	
५१७	जलगांव खुर्द	१५	५	२		
५२१	जुन्नर	८	११	८	३	
५२५	ठाणा	१४	३१	८	१	
५२६	(क) ढेकू-खुर्द	१८	१			
५३५	तुपेवाडी	२५				
५३७	त्रंबकेश्वर	१२	८			
५३८	थल	१५	५			
५४०	थोरगव्हान	३२	२०	५		
५४१	दहिवद	१३	२१	४		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अतिरिक्त
५४२	दहिवेल	१२	३१	१		
५४२	(क) दहिगांव	१४		२		
५४३	दापोली	३२	२५	२		
५४७	देवरुख	४१	३	३		
५४८	देवला	१५	९			
५४९	देवलाली कैंप	७४	७०	१३	५	
५५२	धुलिया	१५०	११७	३०	१३	
५५४	नंदुरबार	३९	३७	१८	९	
५५८	नगागोवा	२१	१५	९		
५६०	नसिराबाद	२३	३१	८	५	१
५६१	नगांव	२०	४	१		
५६२	नांदगांव	३४	६५	६	४	
५६४	नानपुर	२८	२९	४	५	
५६८	नारायणगांव	४०	४९	२६		
५६९	नाशिकशहर	५५	३६	१६	६	
५७०	नाशिकरोड	११	२६	५		
५७१	न्हावी	४७	३५	६		
५७३	निवाना	५	८	२		
५७७	(क)नेवासे खुर्द	२२				
५७८	पंढरपुर	७३	६१	७	१	
५८५	पाडलसा	७	१५	२	६	
८५८	पाथर्डी	६७	३७	१७	१	
५९२	पालघर	३३	१९	१		
५९४	पांचगनी		६	७		
६००	पिंप्राळे	४	४	९		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अतिरिक्त
६०१	पिळोदे	७	९	३		
६०३	पिपलगांव (बसवंत)	३१				
६०५	पुणे	४३८	५३०	१५५	६८	
६०८	पेठ	२०	३			
६१०	पोयनाड़	११	३			
६१४	फेकरी	२६	१४	८	६	
६१५	फैजपुर	५९	८१	३५	३	
६१६	फोंडागोवा	१६	१६	९		
६१९	बामणोद	२२	६	१२		
६२०	बारामती	९६	१०१	३०	६	२
६२१	बालचन्द्रनगर	९४	४८	१८		
६२३	बार्शी	१३२	१०४	२३	२	
६३२	बोज	२१	२			
६३३	बोदवड	२	३०	२		
६३६	भानसहिवरा	१५		१		
६३७	मालोद	८१	३३	१७	५	
६३९	भुसावल	२६	१२	७	५	
६४१	मडगांव गोवा	१२८	२९	९	३	
६४२	मनमाड	५३	८६	२५	९	
६४४	ममुराबाद	६	८	१		
६५२	मंगरूळ	७	२			
६५३	मांडल	१७	१०			
६५५	माढ़ा	३९	११	५		
६५५	(क) मातेरवाडी	२४	६	१		
६५६	माधवनगर	५३	३०	६		
६५९	मालगुंडा	१२		३		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
६६२	मालेगांव	५	९	४		
६६३	मांगी	२१				
६६४	मिरज	५८	५४	९	२	
६३५	म्हार्दोळ	२२	७			
६६७	मुंजवाड़	१३	२			
६६९	यावल	४३	३७	१६		
६७०	येवले	४४	५३	१०	४	
६७०	रबकवी	१६				
६७१	रत्नागिरी	१४	१७	१	३	
६७१	रनाला	१४	२७	५		
६७५	राजापूर	४२	५०	१२	८	
६७७	रामदुर्ग	९९	२१	२		
६७८	रावलगांव	१८	१३	१७	२	
६७९	रावेर	३४	३५	९		
६८०	राहुरी	३७	३२	२		
६८१	रुकडी	११	३९	१		
६८२	रोहा	२३	८	१		
६८३	लक्ष्मी दहिवडी	१७	१६			
७८३	वराडसीग	१७	१०	६	५	
६९८	वड़ाली	३०				
७००	वसई (ठाणा)	६६	९५	४३	९	
७०२	वाओ	१६	२४	३		
७०४	वालकी	२०				
७०६	विंचूर	५६	२४	३		
७०९	विरोदा	१०	८	७		
७१०	विवरा	१७	१९	२		
७११	वेंगुर्ला	४५	४५	२१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
७१६	शिरपुर	३८	२३	८		
७१९	शिरसोली	१६	१३			
७२०	शिरुड	२२	२१			
७२३	शेंदुर्णी	४६	५७	१८		
७२८	सटाणा	१८	२०	४		
२२९	सप्तर्षिकवठे	१६	८	२३		
७३०	सांगली	८६	३४	६	६	१
७३१	सांगवी	५	१८	१६	९	
७४३	साक्री	७	१४	४		
७३६	सातारा	११	७६	३५	१९	२
७३८	सातोदकोलवद	३०	३७	६		
७३९	सारोलाकासार	६	१६	२		
७४०	सालवा	१०		५	४	१
७४३	सावदा	३५	३०	१२		
७४४	शिंदखेड़ा	२०	३८			
७४६	सिन्नर	४७	१४			
७४८	सोलापुर	२५६	२८३	६४	९	
७४९	हड़पसर	४०	१२	४		
७५०	हम्बर्डी	५	१२	७		
७५१	हलकर्णी	२५	१२			
७५३	हिंगोणे	७०	५३	२५	१०	
१५७	जोड़	६०३२	४५९२	१३३७	३५८	९

कर्नाटक

७८०	अथनी	२१	१९			
७८१	अनगोल	१५६	१३	४		
७८२	आजरे	८	८			
७८५	बागलकोट	४१	७			

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
७८५	[क] बेलगांव	१	१५		९	
७८८	शहापुर-बेलगांव	१४४	३६	५	५	
७८९	हुबली	१९	१३	१२	१०	
७	कुल जोड	३९०	१११	२१	२४	

विदर्भ-नागपुर

७९०	अंजनगांव (सूर्जी)	४८	३९	१०	५
७९१	अंत्री	५	११	१	
७९२	अकोला	१५३	१३७	२३	३
७९४	अमरावती	३८३	३६९	५३	११
७९५	अमड़ापुर	५	४	१	
७९६	आकोट	८०	४२	४	
७९७	आरमोरी	१०	४	७	
७९८	आर्वी	१९	९	१	
७९८	[क] अलिचपुर	२३	४	१	
७९९	अिटकी	१३	८	२	
७९९	[क] अुमरेड़	३४	३		
८०१	कापुसतलनी	३०	२	२	
८०२	कारंजा	७५	६७	१२	५
८०३	काटोल	८	२०		
८०५	कुही	१९			
८०७	खामगांव	२५२	१०९	३८	५
८०७	[क] गड़चिरोली	१५	५	१	
८०८	घोड़सगांव	५	५	१	
८०९	चान्दा	३५	३८	५	
८११	चांदस	१२	१९	१	
८१३	जरूड	१३	१९	९	
८१३	[क] जयसिंगपुर	६३	१२		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
८१४	बलगांव जामोद	१४	२४	२		
८१५	टाकरखेड़ा	९	५	३		
८१६	डोणगांव	१२	१४			
८१७	तलवेल	२	६	२		
८१८	दर्यापुर	१२३	३१	१		
८१९	दाताल	१७	१६			
८२०	देअुलगांव (माली)	११	६	२		
८२१	देवधाबा	२	७			
८२२	देअुलगांवराजा	९	२			
८२३	धनतोली (नागपुर)	१८०	१३६	१०७		३०
८२४	धमंतरी	१०	१			
८२५	धामनगांव	६६	२७	१		
८२५	[क] धार्णी	२२	४			
८२७	नगरधन	११	१			
८२९	नागरी	१०	१०	४		
८३०	नांदोगोमुख	४२	१७			
८३१	नांदूरा	२१	८			
८३२	नेरपिंगलाई	३१	९			
८३२	[क] परासिया	१३	१			
८३३	पहुरजिरा	१६	१०	५		
८३४	पिंपलगांव (काले)	१८	४			
८३५	पिंपलगांवखुटा	६	१४			
८३६	पौनार	१३	२३	७		
८३७	फत्तेखर्डा	११	८			
८३९	बुरहानपुर	१८	४	२		
८३९	बुलढाना	११५	६३	५		
८४१	बेला	३	४	३		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति०
८४१	[क] बेळोरा	५	५			
८४३	भद्रावती	१३	४	१		
८४४	भंडारा	१५	१२			
८४६	महाल (नागपुर)	१	२३	४		
८४८	मलकापुर	३४	३१	१३	५	
८४९	माटरगांव	६१	२०	२		
८४९	[क] मार्डी	१३	४			
८५०	माधान	१३	१३	२		
८५१	[क] मूल	१५	९			
८५२	मुंडगांव	६	९	७		
८५३	महेकर	२७	७			
८५४	मोर्शी	२९	२४	२	५	
८५४	[क] यवतमल	४७	१५९			
८५५	रामटेक	१७	१४	२		
८५६	रायपुर	१५				
८५८	लोनार	४०	२५	४		
८५९	लाखुरा	१२	५	४		
८६०	वर्धा	२७	१२३	४७	१४	१
८६०	[क] वनोजा	१९	६	१		
८६१	वरुड	२९	४९	९	५	
८६२	वरोरा	१८	१७	१		
८६३	वाशिम	४६	७	३		
८६४	वाडेगांव	२१				
८६७	शिंदी बु॥	१२	३२	१७		
८६८	शिराला	३४	६	६		
८६९	शेगांव	२१	१५	३		
८६९	(क) शेलापुर खुर्द	६५	१	१		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र०	केन्द्र	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	अति.
८७०	शेंदुरजना	१२	७			
८७१	साऊनेर	३२	२७	७		
८७३	सावरा	२३	१४	६		
८७६	साऊर	२२	१९	४		
८७७	शिरसगांव	१३	१२	८		
८७८	सिंदी (स्टे०)	४४				
८७८(क)	सिंदेवाही	३६				
८७९	सेवाग्राम	४	७	१४		
८८०	हिंगनघाट	१९२	१०९	४८	१९	
८५	कुल जोड़	३१६०,	२४४९,	५३१,	१०९,	१

फुटकर

४९२	(क) गुडिवाड़ा			६	६	५
६५२	मंगळूर	६	१५			
७५४	हैदराबाद (द०)		२	१४	७	
८८२	नारायणखेड़			४	२	
८८६	कैकळूर			७		
८८८	मोव्वा				८	
८८९	मंडूरू			९	८	
८९०	बेजवाड़ा			५		
८९२	चंदोळू			४	९	
८९३	जान्ड्रोइ				१०	
८९४	धोलीकुआ	१५	६			
	फुटकर	२	४	२	१२	
१३,	कुल	५९,	४४,	५३,	५१,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिकी दो नयी प्रकाशित पुस्तकें

अुड़ते जुगनू

प्रारम्भिक परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक, सुन्दर रोचक कहानियोंका संग्रह—यह पुस्तक हिन्दीके प्राथमिक विद्यार्थियोंके लिए विशेष रूपसे प्रकाशित की गअी है, सुन्दर साफसुथरी छपाअी । मूल्य केवल ।।) डाक खर्च अलग ।

पाँच अेकांकी

कोविद परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक, सरदार इन्द्रसिंह चक्रवर्ती, ना. सी. फड़के, रामकुमार वर्मा, अिन्दुशेखर और विष्णुके पांच सुन्दर अेकांकी नाटकोंका प्रतिनिधि संग्रह—भूमिका लेखक—प्र. रा. भूपटकर । आकर्षक गेट अप-सुन्दर छपाई, मूल्य केवल १), डाक खर्च अलग ।

—: अवसर न चूकिये :—

फिर अितनी सस्ती पुस्तकें न मिलेंगी

प्रचारके ख्यालसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिस बार हिन्दीके सभी लेखकों और कवियोंकी पुस्तकें अधिकसे अधिक कमीशनपर दे रही है, फौरन ऑर्डर दीजिये । अेक साथ ५०० की पुस्तकें मंगानेवालेको ३० प्रतिशत कमीशन दिया जा सकता है ।

—मंत्री

नोट—यह कमीशन अुन्हीं पुस्तकोंपर दिया जावेगा जो राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिका तारका पत्ता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकोंका आर्डर देनेके साथ-ही-साथ पेशगी रकम नहीं भेजते। हमें उन्हें पेशगीके लिये लिखना पड़ता है और तब कहीं रुपये आनेपर उनके लिये यहाँसे पुस्तकें भेजी जाती हैं। अिससे अेक तो ग्राहकोंको पुस्तकोंके लिये काफी इंतजार करना पड़ता है, दूसरे, सबको परेशानी भी होती है।

अिसलिअे अपने सभी ग्राहकोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे पुस्तकोंका आर्डर देते समय उनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक-चौथाअी पेशगी जरूर भेज दिया करें।

यह नियम काफी हानि उठाकर और दिक्कतोंका अनुभव करके बनाया गया है और अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं की जा सकती; अतः जिन लोगोंके आर्डरके साथ उक्त नियमानुसार पेशगी नहीं आयेगी, उन्हें तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

नोट—जिन लोगोंके पास राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पुरानी पुस्तकें बेचनेके लिये हों वे हमसे पत्र-व्यवहार करें।

—मंत्री

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

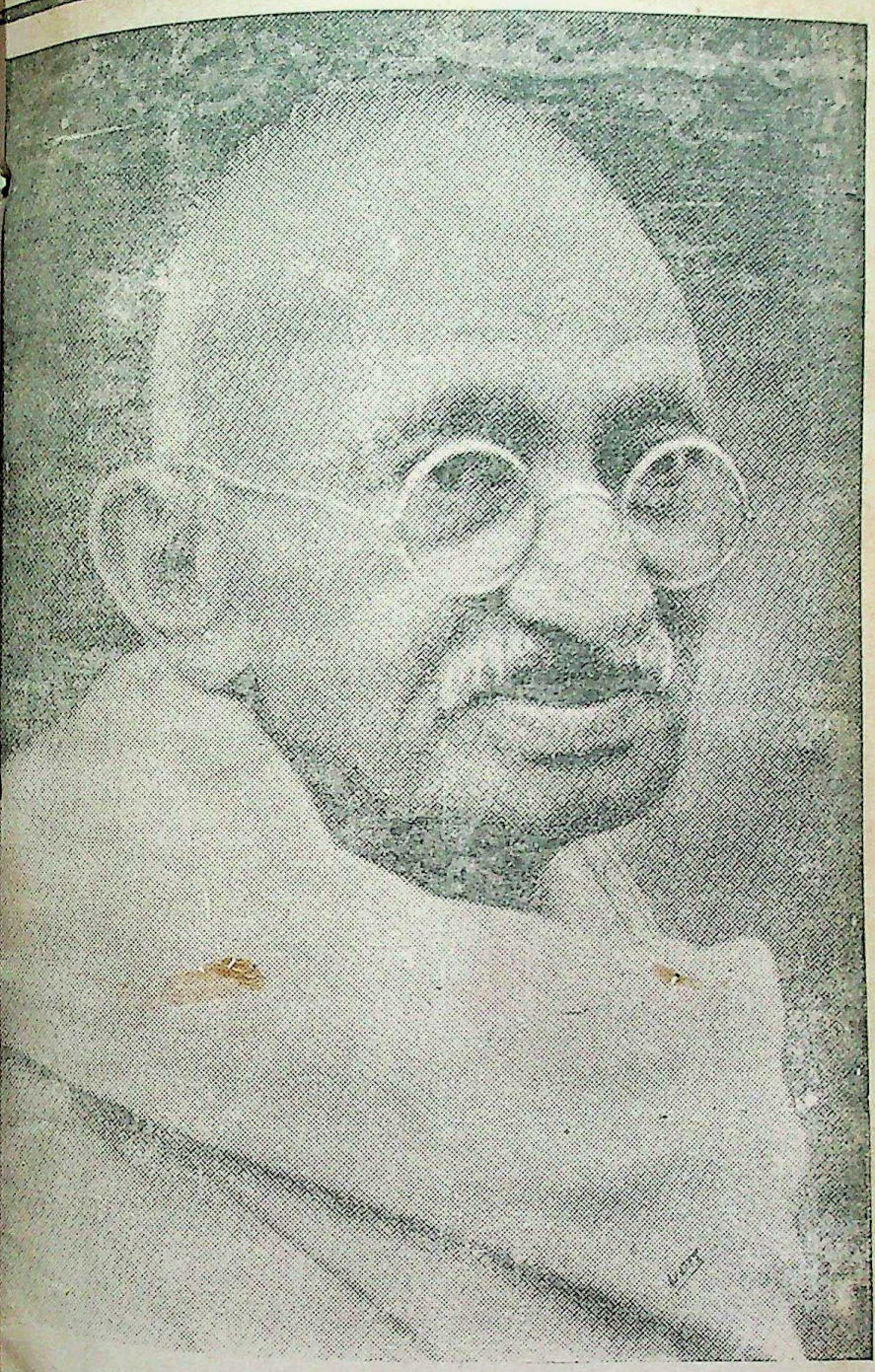

"हाय बापू! आपको मारके केअी क्या पायगा"

— टण्डनजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	पूज्य बापूको श्रद्धांजलि	३४१
२.	हमारे अतिहासपर लगी कालिमा	३४२
३.	युगावतार गांधी	३४४
४.	बापूके संघर्षमय जीवनपर अेक दृष्टि	३४६
५	देवताओंका जन्म	३५०
६.	राष्ट्रभाषाका अपूर्ण साहित्य	३५१
७	दोस्तीका फूल	३५४
८	आप हिन्दी क्यों नहीं लिखते ?	३५६
९.	लहरे तिरंगा अपना	३६३
१०	राष्ट्रभाषाका प्रश्न	३६४
११.	प्रांतीय हलचलें	३६८
१२	परीक्षा विभाग	३७१

सूचना

राष्ट्रभाषाकी प्रचार परीक्षाअें ता. ७-८ फरवरीको होनेवाली थी। कुछही दिन पहले राष्ट्र-पिता महात्मा गांधीकी निर्मम हत्या जैसी अत्यंत दुःखद घटना घटी। सारा देश शोकाकुल हो गया।

बापूको खोकर हमने क्या नहीं खोया है ?

शोककी अैसी गहरी छायामें परीक्षाओंका होना सम्भव न था, फिर भी अधिकांश केन्द्रों ने निश्चित तिथिपर परीक्षाओंकी व्यवस्था करके बड़े ही धैर्यका परिचय दिया है।

जिन कुछ केन्द्रोंमें निश्चित तिथिपर परीक्षा नहीं हो सकी, अुनमें हम पुनः परीक्षा लेने की व्यवस्था कर रहे हैं।

अैसे केन्द्रोंमें अब ता.६-७ मार्च ४८ को परीक्षाअें होंगी।

नये प्रश्नपत्र शीघ्र भेज दिये जायेंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

[वर्ष ७] वर्धा, फरवरी — १९४८ [अंक ४

पूज्य बापूको श्रद्धांजलि

: श्री सुमित्रानन्दन पन्त :

बार बार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारतकी आत्मा तुम कब थे भंगुर तन !
व्याप्त हो गऐ जन मनमें तुम आज चिरंतन !
नव प्रकाश बन, आलोकित कर फिर जगजीवन !
पार कर चुके थे तुम निश्चय जन्म औ' निधन,
अिसीलिये बन सके आज तुम दिव्य जागरन !
श्रद्धानत अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारतकी आत्मा, हे जीवनके जीवन !

'भारत' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अितिहासपर लगी कालिमा

: श्री राहुल सांकृत्यायन :

आज तक भारतमें किसी अपने महान-पुरुषपर अुसके विचारोंकी भिन्नताके लिये अैसा नृशंस कार्य नहीं किया गया था। बुद्धने बहुतसी कड़वी मीठी बातें कहीं, समाजके कोढ़ोंपर गहरा प्रहार किया। किन्तु वह अपना पूरा जीवन बिताकर निर्वाण प्राप्त हुअे। महावीरके विचार तत्कालीन समाजके बहुत अंशोंमें विरोधी रहते हुअे भी किसीने अुनके रक्तमें अपना हाथ नहीं रंगना चाहा। जो घृणित कार्य हमारे सारे अितिहासमें नहीं देखा गया, हमारी संस्कृति जिससे अपरिचित थी अुसीकी कालिमा हमारे अितिहासपर लगाअी गअी।

गान्धीजीकी हत्या अत्यन्त कायरतापूर्ण कृत्य है। अुनका प्राण लेना कोअी कठिन काम नहीं था। वह सर्वथा अरक्षित लाखोंकी भीड़में घूमते थे। अुन्हें अपने जीवनकी परवाह न थी। अुन्होंने अपने सारे जीवनके अेक अेक क्षणका मूल्य चुका लिया था। अुनका स्वप्न-भारतकी स्वतंत्रता-सत्य हो चुका था। वह कृत-कृत्य थे। भार-मुक्त थे। अुनके हत्यारेने अपने अिस जघन्य कामसे क्या लाभ समझा था। हां गांधीजीकी हत्याका पाप केवल गोडसेपर नहीं है। अिसके पीछे बहुत छोटे बड़े लोग हैं, जिनके संकल्पोंकी भनक महीनोंसे हमारे कानोंमें आ रही थी। गांधीजी और देशके राष्ट्रीय नेताओंकी हत्या करके जबरदस्ती राज्य शासनको हाथमें लेनेकी बातें कितने दिनोंसे हमारे वायुमण्डलमें फैली हुअी थी। गान्धीजी अपराधियोंको क्षमा कर सकते थे किन्तु राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमा नहीं कर सकता।

जो नहिं दण्ड करहुं खल तोरा, भ्रष्ट होहि 'सन्मारग' मोरा

गान्धीजीने जीवनके क्षण क्षणका मूल्य तो चुका ही लिया, उन्होंने मृत्युका मूल्य भी बायें जाने नहीं दिया। ७८ वर्षका वह निर्बल शरीर बुद्धके वचनानुसार रस्सीसे बांधकर चलाये जाते शकटकी तरह चल रहा था, कुछ दिन और चल जाता, अुसे तो अेक दिन विश्राम लेना ही था। गांधीजीने असाधारण विश्राम लिया। अुनकी यह मृत्यु भी जीवनकी तरह यशस्वी हुअी। जहां तक अुसका गांधीजीसे सम्बन्ध है। गांधीजी वह महान पुरुष थे जिनका स्थान शताब्दियोंमें भी नहीं पूरा हो सकता। वह वास्तविक अर्थमें हमारे राष्ट्रके पिता थे। भारतके नये जन्ममें अुनका सबसे बड़ा हाथ है। भारत अमर है। अुसके साथ गान्धीजी अमर रहेंगे। गान्धीजीने वह रास्ता दिखलाया है, वह प्रदीप हमारे ह में दिया है, जिससे हम अपना पथ देख सकते हैं। यदि यह न होता तो अुनके सारे जीवनका प्रयत्न निष्फल होता। निर्वाण शय्यापर लेटे बुद्धकी भाँति हमारे राष्ट्रपिता भी चाहते थे—"**अत्तदीपा भवथ, अत्तसरणा भवथ**" आप अपने प्रकाश बनो, आप अपनी शरण बनो।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगावतार गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके देहावसानसे समस्त मनुष्य जातिकी जो अपार क्षति हुअी है अुसकी पूर्ति होना असम्भव है। शताब्दियोंसे शोषित, प्रताड़ित और दलित भारतवासियोंमें जिस युगपुरुषने त्याग, बलिदान और सहिष्णुताकी पुण्य भावनाओंका संचार किया था, वह अब हमेशाके लिअे हमसे बिदा ले चुका है।

अितिहाससे हमें मालूम होता है कि जब जब संसारमें अन्याय पाशविकता और स्वेच्छाचारका प्राधान्य हो जाता है तब तब अुनका अन्त करनेके लिअे कोअी अलौकिक दिव्य शक्ति पृथ्वीपर अवतरित होती है। महात्मा गांधी अिसी तरहके चमत्कारिक पुरुष थे जो मनुष्य जातिको अेक महान संदेश देनेके लिअे विश्वमें आअे थे। अुन्होंने भारतको ही नहीं—समस्त संसारको नअी दृष्टि दी—जीवनको समझनेका अेक नवीन दर्शन दिया। गांधीवाद वही दर्शन है--वह 'मूलतः अेक आध्यात्मिक प्रवृत्ति' है जो सत्य, अहिंसा, प्रेम और दयासे दानवतापर विजय प्राप्त करनेके मार्गको श्रेयस्कर समझती है।

महात्माजी युगावतार थे। राजनीति और धर्मके अद्भुत सामंजस्य द्वारा अुन्होंने अपने जीवन कालमें विश्वके समक्ष भारतीय संस्कृतिका जो ज्वलन्त आदर्श अुपस्थित किया वह अितिहासमें सर्वथा अभूतपूर्व है। सत्याग्रहके अमोघ अस्त्रका अन्वेषण कर आपने यह सिद्ध कर दिया कि निहत्थी निर्दोष जनता भी आत्मशक्तिके प्रयोगसे आततायीका सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकती है।

गांधीजीके नेतृत्वने देशके हर क्षेत्रमें युगान्तर अुपस्थित किया। गांधी विचार धाराका भारतीय जीवनपर अपूर्व प्रभाव पड़ा। अपने जबरदस्त नैतिक बलसे गांधीजीने अत्यन्त अल्पकालमें देशकी काया पलट कर दी और अन्तमें हिन्दुस्तानको स्वाधीनताके अपने पुनीत अुद्देश्य तक पहुँचाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काँग्रेसकी राजनीतिमें गांधीजीके आगमनके पूर्व जनताका कोअी स्थान नहीं था। काँग्रेस अुच्च वर्गके लोगोंके हाथमें थी और सुधारवादी नीतिसे ही काम निकालना चाहती थी। लाल—बाल—पालके नेतृत्वमें सुधारवादी नेताओंके विरुद्ध धीरे धीरे असंतोष बढ़ता जा रहा था। सशस्त्र क्रांतिकारियोंके गुप्त संगठन भी बंगाल, पंजाब, यू० पी० और महाराष्ट्रमें कायम हो चुके थे किन्तु अिन सबका साधारण जनतासे निकट सम्पर्क स्थापित नहीं हो पाया था। आम जनतामें कोअी जागृति नहीं थी। अेक तरहसे गोरी चमड़ीका ही सर्वत्र आतंक छाया हुआ था। पर महात्मा गांधीके भारतीय राजनीतिमें पदार्पण करते ही देशमें अेक जबरदस्त भूचाल आ गया। चहुँ ओर नवीन जीवन दिखाअी पड़ने लगा। पददलित जनता अंगड़ाअी ले अुठ खड़ी हुअी। जो काँग्रेस अभी तक चन्द लोगोंकी आवाज ही बुलन्द करती आयी थी अुसे अब समस्त भारतीय जनताकी आकांक्षाओंको व्यक्त करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। देहातोंमें व्यापक जनजागरण हुआ और राष्ट्रीय भावनाने सारे देशको झकझोर दिया। काँग्रेस संगठनको देशव्यापी रूप देने तथा अुसे जनजनकी आकांक्षाओंका प्रतिनिधि बनानेमें गांधीजीका ही हाथ रहा है।

आज भारतको जो स्वाधीनता प्राप्त हुअी है वह महात्माजीके ही त्याग और तपका परिणाम है। स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिअे अुन्होंने किसी भी बातकी परवाह नहीं की। अुनपर तरह तरहके दोषारोपण किअे गअे—नाना तरहकी बाधाअें रास्तेमें आअीं पर महात्माजी अविचल रहे और बराबर अपने अुद्देश्यकी प्राप्तिमें आगे बढ़ते गअे।

महात्माजीने प्रेमसे संसारको जीतना चाहा। अुनका सारा जीवन सत्य और अहिंसाके प्रयोगका जीवन रहा। जीवनके अंतिम क्षण तक वे अपने सिद्धान्तोंपर अटल रहे। अब वे हमसे बिछुड़ गअे हैं किन्तु संसारको अुन्होंने जो सन्देश दिया वह अमर है। वे अेक महान मिशनको लेकर आअे और अुसीकी पूर्तिमें अुन्होंने अपने प्राणोंका अुत्सर्ग किया। अुनकी शहादत युग युग तक मानव जातिको अनुप्राणित करती रहेगी।

—प्रशान्त

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापूके संघर्षमय जीवनपर अेक दृष्टि

महात्मा गांधी विश्वकी अेक महान् विभूति थे। अुनके निधनसे संसारका अेक सच्चा सन्त हमारे बीचसे सदाके लिये अुठ गया। वे सही मायनोंमें अेक युगप्रवर्तक थे। श्री गोपालकृष्ण गोखलेने ठीक ही कहा था कि "अिस दुनियामें गांधीजीसे अधिक पुनीत, वीर और अुदार आत्मा अवतरित नहीं हुअी है।" महात्मा गांधीने पराधीन भारतवासियोंके हृदयमें आजादीकी लौ जलायी और देशको अपनी त्याग और तपस्यासे आजाद कराया। अैसे युगपुरुषके जीवन का अन्त हमारे ही देशके अेक व्यक्तिके द्वारा हो यह कितनी लज्जाकी बात है!

जन्म और शिक्षा

गांधीजीका जन्म २ अक्टूबर सन् १८६७ को पोरबन्दर (काठियावाड़ गुजरात) में हुआ। अिनके पिता करमचन्द गांधी पहले पोरबन्दर फिर राजकोट और अन्तमें कामेरके दीवान थे। गांधीजीकी प्रारम्भिक शिक्षा राजकोटमें हुअी। १८८७ में मैट्रिककी परीक्षा पास की। अिसके पश्चात् अेक वर्ष तक आपने भावनगर कालेजमें विद्याध्ययन किया। अिनकी रुचि डाक्टरीकी ओर थी किन्तु गुरुजनोंकी अिच्छाका पालन करनेके लिये आप बैरिस्टरी पास करनेके लिये १८८८ में अिंग्लैंड गये। वहां चार वर्ष रहे। १८९१ में पढ़ाअी पूरी हो गअी और आप बैरिस्टर बनकर अपने देशको लौटे और कुछ समय पश्चात् वकालत आरम्भ कर दी।

दक्षिण आफ्रिकाकी यात्रा

पोरबन्दरकी अेक बड़ी फर्मने जिसकी अेक शाखा दक्षिण आफ्रिकामें थी, अेक मुकदमें में सहायता देनेके निमित्त वहाँ जानेके लिये प्रस्ताव किया जिसे स्वीकार कर गांधीजीने प्रथम बार दक्षिण आफ्रिकाकी यात्रा सन् १८९५ में की। वहां जाकर आपने भारतकी दासताके अभिशापका हृदय-द्रावक दृश्य देखा। गोरे लोग भारतवासियोंको कुली समझते और अुनके साथ पशुवत् व्यवहार करते थे। स्वयं गांधीजीको गोरोंने कअी अवसरोंपर बहुत अपमानित किया। फलतः अिन्होंने प्रवासी भारतवासियोंके हितोंकी रक्षाके लिये आन्दोलन चलानेका निश्चय किया। पांच हजार पौंड प्रतिवर्षकी बैरिस्टरीकी आय पर लात मारकर आन्दोलनमें संलग्न हो गये। आपने १८९४ में नेटाल अिन्डियन कांग्रेसकी तथा १९०१ में ट्रान्सवाल अिन्डियन असोसिअेशनकी स्थापना की।

सन् १९०७ में गांधीजीने दक्षिण आफ्रिका आन्दोलनमें सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया जो अेक प्रकारसे १९१४ तक चलता रहा। १९१४ में प्रसिद्ध गांधी-स्मट्स समझौता हुआ और दक्षिण-आफ्रिकाकी सरकारको झुकना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विरोधी काले कानूनोंको वापस लेना पड़ा। अिस आन्दोलनके बीच दो बार गांधीजीकी गिरफ्तारी हुअी और अन्हें जेलका कष्ट तथा यातना सहन करनी पड़ी। किन्तु अिस सब त्याग व आन्दोलनके फलस्वरूप प्रवासी भारतीयोंकी स्थितिमें बहुत कुछ सुधार हो गया और गांधीजी सत्याग्रहकी लड़ाअीमें सफलता प्राप्त कर, श्री गोखलेके आग्रहसे स्वदेश लौट आये।

चम्पारनका आन्दोलन

आपका बम्बअी में धूमधामसे स्वागत हुआ। सारे देशका दौरा करनेके पहले गांधीजीने यहांकी स्थितिका अध्ययन किया। फिर अहमदाबादके निकट साबरमती आश्रमकी स्थापना की और वहीं रहने लगे। १९१७ में आप सार्वजनिक जीवनमें अतरे सबसे पहले गिरमिटिया मजदूरोंके पक्षमें लड़ाअी लड़ी और अुसमें सफलता प्राप्त की। फिर चम्पारनमें मजदूरोंका पक्ष लेकर आन्दोलन प्रारम्भ किया। अधिकारियोंका सारा दमन विफल हुआ और जाँच कमेटी बैठानेके लिये बाध्य होना पड़ा। अिस कमेटीने मजदूरोंके पक्षमें अनेक सिफारिशें की जो कार्यान्वित की गअीं।

सन १९१८ में गांधीजीने अहमदाबादके मजदूरोंका पक्ष लेकर आंदोलन किया और अपने जीवनका पहला अुपवास करके मिल मालिकोंसे मजदूरी बढ़वाअी। तदन्तर खेड़ाके किसानोंके पक्षमें लड़ाअी लड़ी और अुसमें सफलता प्राप्त की। निरन्तर दौड़-धूपके कारण गांधीजी बहुत बीमार पड़ गये और काफी समय तक बिस्तरपर पड़े रहे।

पंजाबका हत्याकांड

बीमारीसे अुठनेके बाद गांधीजीको अेक व्यापक क्षेत्रमें अहिन्सात्मक संग्राम छेड़नेका अवसर प्राप्त हुआ। रोलट अेक्टके विरोधमें आपने सत्याग्रह करनेकी घोषणा की और १० अप्रैल १९१९ को पंजाब जाते समय कोसी स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिये गये जिससे कुछ स्थानोंमें दंगे हो गये अधिकारियोंने दमन-चक्र चलाया और अमृतसरमें जलियानवाला बागका घृणित हत्याकांड घटित हुआ। २० हजार निहत्थे हिन्दुस्तानी जनरल डायरकी गोलियों से भून दिये गये। गांधीजीने ३ दिनका अुपवास किया और सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया।

असहयोग आन्दोलन

१ अगस्त १९२० को असहयोग आन्दोलनका श्रीगणेश हुआ। अली बन्धुओंके नेतृत्वमें चलनेवाले खिलाफत आन्दोलनको भी कांग्रेसने अपना लिया। देशमें अपूर्व जागृति दिखाअी पड़ी और सरकारसे असहयोग करनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुद्देश्यसे बहुतसे लोगोंने सरकारी नौकरियां त्याग दी। वकीलोंने वकालत छोड़ दी, विद्यार्थियोंने सरकारी व अर्धसरकारी स्कूलोंमें पढ़ना छोड़ दिया। कौंसिलों व अदालतोंका बहिष्कार किया गया। विदेशी कपड़ोंका भी बहिष्कार किया गया। अनेक स्थानोंपर विदेशी कपड़ोंकी होली जलाअी गअी। १९२२ में गोरखपुर जिलेमें प्रसिद्ध चौरीचोराकांड घटित हुआ अतएव बारदोलीमें संग्रामकी जो तैयारियाँ की जा रही थी अुन्हें गांधीजीने स्थगित कर दी।

१० मार्च १९२२ को महात्माजी गिरफ्तार कर लिअे गअे और अुन्हें ६ वर्षका कारावास हुआ। जनवरी १९२४ में आपके पेटमें फोड़ा हो गया और ससून अस्पताल (पूना) में आपरेशन हुआ। अिसके बाद ही गांधीजी छोड़ दिअे गअे। अिधर हिन्दुओं व मुसलमानोंके बीच मतभेद बहुत बढ़ गया था। खिलाफत आंदोलनके समय वाली अेकता क्षणिक सिद्ध हुअी। फलतः गांधीजीने हिन्दू मुसलिम अेकताके लिअे २१ दिनका लम्बा अुपवास किया।

दूसरा सत्याग्रह आन्दोलन

१२ मार्च १९३० को बापूकी प्रसिद्ध दाँडी यात्रा आरम्भ हुअी। ५ मअीको आप गिरफ्तार किअे गअे और अनिश्चित कालके लिअे जेलमें बन्द कर दिअे गअे। देशभरमें स्थान स्थानपर नमक कानून तोड़ा जाने लगा। सत्याग्रह पूरे वेगसे आरंभ हो गया और लाखोंकी संख्यामें स्त्री-पुरुष जेलोंमें भर दिअे गअे। ३ माच १९३१ को गांधी अिरविन समझौता हुआ और महात्माजी कांग्रेसकी ओरसे गोलमेज परिषदमें भाग लेनेके लिअे लंदन गअे। जब वे अिंगलैंडसे वापस लौटे, कांग्रेस तथा सरकारमें पुनः युद्ध ठन चुका था। गांधीजीने तत्कालीन वायसराय लार्ड वेलिंग्डनसे मिलकर युद्ध टालना चाहा किन्तु सरकारके दुराग्रहके कारण फिर सत्याग्रह प्रारंभ किया गया। महात्माजी १९३२ में पुनः गिरफ्तार कर लिअे गअे। कांग्रेस गैरकानूनी घोषित कर दी गअी।

आमरण अनशन

२१ सितम्बर १९३३ को सांप्रदायिक निर्णयमें हरिजनोंको पृथक प्रतिनिधित्व देनेके विरोधमें गांधीजीने २१ सितंबर १९३३ को जेलमें आमरण अुपवास प्रारंभ किया जो २६ सितम्बरको भंग हुआ।

जेलसे छूटनेपर गांधीजी हरिजन सेवाकार्यमें संलग्न हो गअे। १९३९ में राजकोटके प्रश्नपर आपने फिर आमरण अनशन किया। दूसरा यूरोपीय युद्ध छिड़नेके बाद १९४१ में आपका व्यक्तिगत सत्याग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभ हुआ। बहुतसे नेता फिर जेलमें भेज दिये गअे किन्तु अन्तमें सरकारने सबको छोड़ दिया। १६४२ में महात्माजीने अंग्रेजोंको भारतसे हटजानेकी सलाह दी और अुसी वर्ष अगस्तमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें अिस आशयका प्रस्ताव भी पास कराया। गांधीजीको नया सत्याग्रह संग्राम चलानेका नेतृत्व सौंपा गया। ६ अगस्तको गांधीजी तथा कांग्रेसके अन्य नेता पुनः गिरफ्तार कर लिअे गअे। देश भरमें विद्रोहसा मच गया। १० फरवरी १६४३ को आगाखां महलमें आपने ३ सप्ताहका अुपवास किया। अिससे हालत बड़ी नाजुक हो गअी किन्तु आप बच गअे। २२ फरवरी १६४४ को जेलमें ही कस्तूरबाका देहान्त हो गया जिससे गांधीजीको बड़ा आघात पहुँचा। ६ मअी १६४४ को आप बिना शर्त रिहा कर दिअे गअे।

साम्प्रदायिक अेकताका प्रयत्न

रिहा होनेके अुपरान्त महात्मा गांधीने हिन्दू मुस्लिम समस्या सुलझानेके लिअे सितम्बरमें श्री जिन्नासे मुलाकातकी पर अिस मुलाकातका कोअी परिणाम न निकल सका। २ अक्टूबरको वर्षगांठके अवसरपर आपको अेक करोड़ दस लाखकी थैली भेंटकी गअी। १६४५ के जूनमें शिमला सम्मेलन हुआ। गांधीजीने अिस अवसरपर कांग्रेसको सलाह देनेका कार्य अपने हाथमें लिया। १६ मअी सन् १६४६ को मअी योजना आअी और देशमें अन्तर्कालीन सरकारकी स्थापना हुअी किन्तु १६ अगस्तके बाद बंगालमें अमानुषिक हत्याकांड प्रारम्भ हुआ। महात्माजीका हृदय अिस हत्याकांडसे सिहर अुठा और वे नौआखालीमें पैदल गांव गांवमें शांतिका प्रचार करनेके लिअे निकल पड़े। लेकिन हिंसाकी आग काबूसे बाहर थी। नोआखालीके बाद बिहारमें साम्प्रदायिक हत्याकांड की पुनरावृत्ति हुअी। मार्च सन् ४७ में गांधीजी बिहार पहुँचे। मगर साम्प्रदायिक दंगोंने देशके अन्य हिस्सोंमें अुग्र रूप धारण कर लिया। पंजाबमें भीषण अशांति मच गअी। दिल्ली वीरान हो अुठी। ८ सितंबर सन् १६४७ को गांधीजी दिल्ली पहुंचे। कौन जानता था कि दिल्लीमें ही गांधीजीको मौत देखनी पड़ेगी! १३ जनवरीको अुन्होंने साम्प्रदायिक शांतिके लिअे अुपवास प्रारम्भ किया। सारे देशमें अिससे हलचल मच गअी। पर नेताओंके आश्वासनपर आपने अुपवास भंग कर दिया। २० जनवरीको गांधीजीकी हत्याकी कोशिश की गअी किन्तु आपने हत्यारेको क्षमा कर दिया। ३० जनवरीको अेक पागल हिन्दूने प्रार्थना सभामें जाते हुअे गांधीजीको गोली मारी। गोली लगनेके पैंतीस मिनिट बाद आपका देहान्त होगया। मृत्युके अंतिम क्षणमें महात्माजीके मुखसे 'राम' निकला।

'भारत'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवताओंका जन्म

: श्री सुदर्शन :

दुनियांके शुरूमें मन्दिर नहीं थे, देवता नहीं थे, भय नहीं था। और लोग शांतिप्रिय थे, और सत्यवक्ता थे, और वीरात्मा थे।

मगर अुनमेंसे अेक आदमी चालाक था, और अेक और आदमी मूर्ख था। और चालाक आदमी सुस्त था, और मूर्खकी बाँहोंमें शिकार मारनेकी और जमीनसे मिट्टी खोदनेकी अथाह ताकत थी।

और अेक बार अैसा हुआ, कि आधी रातके अंधेरेमें दोनोंकी मुलाकात हो गअी।

और दूसरे दिन नदीके किनारे मन्दिर था, मन्दिरमें देवता थे, देवताओंमें न समझमें आनेवाली शक्ति थी।

और वह दोनों आदमी जो आधी रातके अंधेरेमें मिले थे, अब दोपहरके समय मन्दिरमें पहुँचे।

अेकने डरते डरते अपनी मेहनतसे पैदा किअे हुअे फल, और अपने हाथकी बनाअी हुअी मिठाअियाँ देवताओंके सामने रखीं, और नमस्कार करके अुलटे पांव वापस चला आया।

दूसरेने आगे बढ़कर नज़र-भेंट की यह चीज़ें अुठाकर रख लीं, और अिसके बाद पांव फैलाकर वहीं सो गया।

'मराठे' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाका अपूर्ण साहित्य

: श्री शुकदेव नारायण :

भारतकी राष्ट्रभाषा क्या हो, यह प्रश्न अधिक विवादास्पद नहीं रह गया है। आज जनमत हिन्दी राष्ट्रभाषा और देवनागरी राष्ट्रलिपिके पक्षमें है। लेकिन विवादास्पद है राष्ट्रभाषाका साहित्य। अेक अहिन्दी भाषा भाषी सज्जनने जिनका नाम राष्ट्रभाषा हिन्दीके जबरदस्त समर्थकोंमें लिया जा सकता है, कहा था 'हिन्दी भारतकी बहुसंख्यक जनताकी भाषा है पर वह भारतके सुसंस्कृत और शिक्षित लोगोंकी भाषा कदापि नहीं।' कुछ दिन हुअे अेक दूसरे सज्जन कहते सुने गअे "हिन्दीवाले कहते तो हैं कि अंग्रेजीका बहिष्कार करो। पर अंग्रेजी हट जाअे तो हम भारतीयोंके पास पढ़नेके लिअे क्या रह जायगा ? केन्द्रीय सरकारका अेक मंत्री, जो बराबर लिखने और बोलनेमें भारतीय भाषाका प्रयोग करता है–शिक्षण संस्थाओंसे अंग्रेजी तुरत हटानेका समर्थन नहीं करता।

ये सवाल अैसे हैं जिनपर तुरत ध्यान देने और कुछ करनेकी जरूरत है। हम हिन्दीके विरोधमें अुपर्युक्त विचार प्रकट करनेवालोंसे झगड़ भर सकते हैं पर अुनकी जिज्ञासा शान्त नहीं कर सकते। प्राचीन हिन्दीका साहित्य कितना भी गौरवपूर्ण हो, वह आज हमारी आवश्यकताओंको पूरा करनेमें समर्थ नहीं है। आज तो हमारे परिवेशमें क्या हारहा है अिसकी जानकारीके लिअे हमें विदेशी भाषाका आश्रित होना पड़ता है। हमारे खाने पीने, पहिनने ओढ़ने, चलने फिरनेसे लेकर सेवा-सुश्रूषा, आमोद-प्रमोद, जीव-जन्तु, कीट-पतंग, संगी-संघाती सबके बारेमें अधिकारी रूपसे हमें कोअी कहता है तो अंग्रेजी भाषाका माध्यम-लेकर। अिन सबके लिअे हमारे पास कोअी पुस्तक नहीं। राष्ट्रभाषा हिन्दीका साहित्य सुन्दर कथा कहानियों, अुत्कृष्ट अुपन्यास और जीवन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य कविताओंसे भलेही पूर्ण हो, पर आज जो हमारे प्रश्न हैं—अुनपर राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे विचारपूर्ण ग्रंथोंका अेकदम अभाव है।

हमारा ध्यान अन्य प्रान्तीय साहित्योंकी ओर जाता है। विकासवादके सम्बन्धमें दो अेक सुन्दर और प्रमाणित पुस्तकें बंगला साहित्यमें लेखकने देखी हैं। मराठी साहित्यमें भी ऐसी पुस्तकें हैं अिसका अुसे पता है। पर हिन्दीमें मराठीके अेक पुस्तकके अनुवादके अतिरिक्त कोअी भी पुस्तक नहीं है। जन्तु-विज्ञान और वनस्पति--विज्ञानका भी यही हाल है। अिंजीनियरिंग, शल्य चिकित्सा, शरीर शास्त्र आदि की पुस्तकें तो देखने को भी हिन्दीमें नहीं मिलती और अिस तरहकी लम्बी सूची दी जा सकती है।

कुछ दिन हुअे, बंगीय साहित्य परिषदने जोर डाला था कि बंगला भाषा भाषी व्यक्तियोंका ही नहीं अुस क्षेत्रके कुल लोगोंका मानव-विज्ञानकी दृष्टिसे अध्ययन किया जाना चाहिअे और अुसने अिस सम्बन्धमें कुछ कमेटियां भी बनाअी थीं जो पशु, पक्षी और अुद्भिज्जका अध्ययन, नामकरण आदि करेंगी। अुस साहित्यमें कुछ अिस तरहकी पुस्तकें लिखीं भी गअीं।

जहाँ तक अनुवादका संबंध है अुर्दू वालोंने अिस ओर काफी कार्य किया है। सुननेमें आता है कि अेम. अेस. सी. तक में पढ़ाअी जानेवाली कुल पुस्तकें अुर्दूमें अनूदित हो चुकी हैं। हाँ शिकायत है अुनकी भाषा की। अच्छे अुर्दू जानने वालोंके लिअे अुन पुस्तकोंके शब्दों को समझनेमें कठिनाअी होती है।

गुजराती और मराठीके साहित्यमें वैज्ञानिक पुस्तकें बंगला साहित्यकी तरह प्रचुर मात्रामें तो नहीं हैं पर अुस भाषाका जानने वाला गुजरातीसे ही अुन विषयोंका साधारण ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु आज भी हिन्दी साहित्य अुस स्थितिमें है कि आधुनिक ज्ञानके अनेक दरवाजे अुसके विद्यार्थियोंके लिअे बन्द हैं। हम राष्ट्रभाषा का प्रचार तो करते हैं पर हम लोगोंको पढ़नेके लिअे भी कुछ दें! जब अेक अहिन्दी भाषी हिन्दी सीखनेके बाद अिस तरहका कोअी साहित्य ढूंढता है तो सिवाय माथा खुजलानेके हमारे पास क्या जवाब है!

अभी हिन्दीमें अिस किस्मके साहित्यके निर्माणकी बड़ी आवश्यकता है। बच्चोंके लिअे भी हिन्दीमें पढ़ने योग्य पुस्तकें नहीं हैं? भूतोंकी कहानियां और परिस्तानकी सैरको छोड़ दें तो हिन्दीका बाल साहित्य क्या रह जाता है?

सौभाग्यसे आज हिन्दी साहित्य सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अध्यक्ष अैसे व्यक्ति हैं जिनका ध्यान अिस ओर जा सकता है। अिन दोनों (?) संस्थाओंको शीघ्र ही अुपर्युक्त दृष्टिकोणसे साहित्य निर्माणका कार्य हाथमें लेना चाहिअे। अनुवादसे काम सरल और शाघ्र हो सकता है। किसी विदेशीने मुण्डाजातिका विश्वकोष तैयार किया है तो क्या कोअी भारतीय आदिवासियोंका मानव-विज्ञानके दृष्टिकोणसे अध्ययन नहीं कर सकता? जरूरत है लोगोंको खोजकर काममें जुटादेनेकी और अुन्हें कुछ आर्थिक सहायता देनेकी भी। क्या हम हिन्दी-भाषी आशा करें कि हिन्दीकी अुन्नतिमें सहायक संस्थाअें अिस ओर कुछ ठोस कदम अुठाअेंगी?

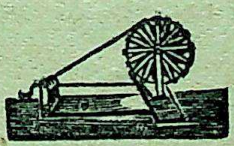

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

दोस्तीका फूल

: श्री नरोत्तम प्रसाद नागर :

राजकोल स्टेटका जिक्र है। दो चीजोंकी वहाँ अधिक पूजा होती थी। अेकतो राजाकी, दूसरे गायकी। अिस कहानीका सम्बन्ध राजासे नहीं, गायसे है।

राजकोल रियासतमें पूजा तो सभी गायोंकी होती थी, लेकिन अुनमेंभी अेकका स्थान सबसे अूँचा था। अिस गायका नाम गोमती था। वह बहुत सीधी थी। न किसीके सींग मारती थी, न कभी दुलत्ती झाड़ती थी। घास-फूस खाकर वह सन्तुष्ट रहती थी और बदलेमें दूध-मक्खन देती थी।

गोमतीके अिस सीधेपनने—और अुसकी अिस विशेषताने कि वह घास-फूस खाकर खूब दूध देती थी—अुसे बहुत अूँचा चढ़ा दिया था। सभी अुसकी पूजा करते थे, भारतीय संस्कृतिके आदर्शके रूपमें अुसे पेश करते थे।

'यही हमारी संस्कृतिका आदर्श है', राजकोल रियासतके माने हुअे विद्वान और बड़े-से-बड़े अधिकारी कहते—'अपनी जान देकर भी यह हमारे शरीरको हृष्ट-पुष्ट करती है!'

यह कहकर राजकोल रियासतके बड़े-बड़े पंडित अपनी दोनों हाथ फेरते, अफसर लोग अपनी मूछोंपर ताव देते।

आखिर आड़े दिन आअे और राजकोल रियासतके ऊपर मँडरानेवाले बादलोंने अमृत वर्षा करनेसे अिन्कार कर दिया। रियासतमें भारी अकाल पड़ा। लोग भूखा मरने लगे। अन्नके अभावमें वे घास-फूस और पेड़-पौधोंकी पत्तियोंके। खाना शुरू किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोमतीको अब कोअी नहीं पूछता था। अुसका न अब कोअी आदर करता था, न मान। वह भी भूखों मरने लगी। बदनका माँस सूखने और हड्डियाँ अुभरने लगीं।

भूखी आँखोंसे गोमती चारोंओर देखती और अुसे कहीं हरियाली नजर न आती--सिवा अेक जगहके।

वह जगह थी रीजेण्ट साहबका बँगला। बँगलेके मैदानमें खूब हरियाली थी और खूब गोभियाँ लगी हुई थीं।

अिस हरियाली और गोभियोंकी रक्षाके लिअे रीजेण्ट साहबने नौकरोंको--राजकोल रियासतके देशी लोगोंको--रख छोड़ा था। अिनमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी। अेक-दो हरिजन भी थे।

सब मिलकर रीजेण्ट साहबके बँगलेकी हरियालीकी रक्षा करते थे।

गोमती अिस हरियालीकी ओर देखती और मन मसोस कर रह जाती। कअी बार मनमें आया, बँगलेमें घुस जाय। मगर रीजेण्ट साहबके देशी नौकरोंकी लाठियोंके सामने अेकाअेक साहस न कर सकी।

अिस तरह अेक दिन बीता, दो दिन बीते--तीन-चार-पाँच--अनेक दिन बीत गये।

आखिर गोमतीके संयमका बाँध टूटा और वह रीजेण्ट साहबके बँगलेमें घुस गयी।

अब वह थी और बँगलेकी हरियाली थी। बँगलेके बाहर, चारों ओर, सूखा-ही-सूखा था।

रीजेण्ट साहबके नौकर अुस दिन नौरोज मनानेमें फँसे थे। ढोलकपर नाच हो रहा था। गोमतीके लिअे अिससे अच्छा अवसर और कब हो सकताथा।

अुसी समय, अेकाअेक, रीजेण्ट साहब कमरेसे बाहर आये। गोमतीको गोभियोंको अुदरस्थ करते देख अुनका पारा अूपर चढ़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुस्सेमें आकर अुन्होंने गोमतीको, अँग्रेजीमें, अनेक गालियाँ दे डालीं। अुसे गोलीसे अुड़ा देनेकी भी धमकी दी।

गोमतीपर रीजेन्ट साहबकी अँग्रेजी गालियोंका कोअी असर नहीं हुआ। वह पूर्ववत् अपना काम करती रही।

साहबका पारा और चढ़ा। आव देखा न ताव, तेजीसे वह आगे बढ़े और जोरसे बूटकी अेक ठोकर गोमतीके जड़ दी।

अपनी ठोकरपर रीजेण्ट साहबको बहुत भरोसा था। अेकबार पहिले भी अेक लड़केके पेटमें अुन्होंने अिसीतरह ठोकर मारी थी और वह वहीं टें बोल गया था।

रीजेण्ट साहबका ख्याल था कि अुनकी ठोकर अिसबार भी अपना वही रंग दिखाअेगी। लेकिन गोमतीपर अुसका अुलटाही असर हुआ। टें बोलना तो दरकिनार, अुसने अुलटकर अैसी दुलत्तियाँ झाड़ीं कि रीजेण्ट साहब चारों खाने चित जा गिरे।

'ओह यू ब्रट....हिन्डोस्टानी जानवर!' रीजेण्ट साहबके मुँहसे झुँझुलाहटसे भरी हुअी आवाज निकली।

जीवनमें पहलीबार अुन्हें अिसतरह चारोंखाने चित होनेका अवसर मिला था—सोभी अेक अैसी गाय-द्वारा जिसके सीधेपनकी ख्याति रियासतभरमें फैली हुअी थी।

'ओह बदमाश कहींकी!' रीजेण्ट साहबने कहा। फिर पूरेजोरसे पुकारा—'अरे कोअी है?'

गायने भी अपने जीवनमें हिंसाका प्रयोग पहली बारही किया था साहबकी पुकार सुनकर अुसके मुँहसे भी आवाज निकली—'मू-अू-अू-अू!'

साहबकी आवाज मददगारोंकी खोजमें बँगलेका चक्कर लगाने लगी। जो कसर रह गअी थी, अुसे गोमतीकी मू-अू-अू ने पूरा कर दिया।

'डार्लिङ्ग....डार्लिङ्ग!' रीजेण्ट साहबकी पत्नी बाहर निकल आअी—'क्या हुआ डार्लिङ्ग?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पतिको अजब अटपटी मुद्रामें घास-फूसमें पड़ा हुआ देखकर मेमसाहबको हँसी आगअी।

मेमसाहबकी यह कोअी नअी आदत नहीं थी। अुस दिन भी, रीजेण्ट साहबकी ठोकर खाकर जब वह लड़का कलाबाजी खागया था, मेमसाहब अपनी हँसीको न रोक सकी थीं।

गोमतीकी दुलत्तियोंके साथ-साथ मेमसाहबकी हँसीके आक्रमणने रीजेण्ट साहबके दिमागके पारेको और भी अूपर चढ़ा दिया।

'यह भी कोअी हँसनेका मौका है!' रीजेण्ट साहबने कहा—'जाकर जल्दीसे मेरा बन्दूक लाओ। अिस मनहूस जानवरको ठिकाने लगाना है!'

'अरे कोअी है!' रीजेण्ट साहबने अपने नौकरोंको बुलाना शुरू किया—'अब्दुल, अिकबाल, मंगू, राजू, कृष्णा—क्या सबके सब मर गये?'

'क्या हुआ, साहब?' चारोंओरसे हिन्दू और मुसलमान ताबेदारोंकी आवाज सुनाअी दी—'हम यह रहे हुजूर!'

गोमतीने भी अितनी आवाजें सुनकर अपने कान खड़े कर लिअे थे। मालूम होता था, वह दूसरा हमला करनेकी तैयारी कर रही है।

मेम साहबकी नजर सबसे पहले गोमतीकी ओर गअी। अुसे फिरसे तैयार होते देख मेम साहबने चिल्लाकर कहा—'जल्दी....जल्दी....जल्दी अुठो वहाँसे....नहीं तो....!'

यह कहते हुअे मेमसाहबने अपनी बन्दूक, जिसे वह भीतरसे ले आअी थी, गोमतीकी ओर तान ली।

'अरे नहीं-नहीं', रीजेण्ट साहबने चिल्लाकर कहा—'अिसे गोली न मारना!'

स्थिति अब तक संभल गअी थी। गोमती भी शान्त, चुपचाप, अेकओर खड़ी थी। रीजेण्ट साहब भी खड़े होगअे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आखिर बात क्या थी!' मेमसाहबने पूछा 'अिस मरियल गायसे तुम कैसे जा फँसे? क्या अुसका दूध निकालनेकी कोशिश कर रहे थे!'

रीजेण्ट साहबके चारोओर नौकर खड़े थे और अुनके कपड़ोंमें लगी घास-फूस तथा मिट्टीको साफ कर रहे थे। साथही पूछतेभी जाते थे--'कहीं चोट तो नहीं लगी, साहब!'

'जरा अुसका ध्यान रखना', गोमतीकी ओर संकेत करते हुअे रीजेण्ट साहबने अपनी पत्नीसे कहा—'अिस समय कितनी शान्त मालूम होती है--मानो कुछ जानतीही नहीं। लेकिन अिसका कोअी भरोसा नहीं। हिन्दुस्तानकी सभी चीजें अैसी होती हैं। अूपरसे ने सीधी-सादी, लेकिन भीतरसे....'

रीजेण्ट साहबकी पत्नीने अपनी बन्दूकको नीचे रख दिया। फि विलायती फूलोंकी अपनी क्यारीमेंसे अेक बड़ासा सफेद फूल तोड़ना आगे बढ़ीं।

'मेरी प्यारी गाय', मेमसाहबने कहा--'यह है मेरा अुपहा जैसी तुम सफेद हो, वैसाही यह फूलभी सफेद है। यह हमारी तुम्ह दोस्तीका फूल है--अैसी दोस्ती जो बहुत दिनों तक कायम रहेगी। ठीक है न?'

गोमतीने अिसका कोअी अुत्तर नहीं दिया। हरियालीसे भरे बँगलेसे निकलकर वह फिर अुस दुनियामें चली गअी जहाँ सूखा फि हुआ था।

'हंस' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप हिन्दी क्यों नहीं लिखते ?

: श्री देवनाथ उपाध्याय एम. ए, साहित्यरत्न :

अब भी जब हम लोग लिखनेके लिये कलम उठाते हैं तो बरबस वह अँग्रेजीकी ओर दौड़ पड़ती है। दफ्तरके बाबुओंको देखिये, सरकारी अफसरोंको देखिये, व्यवसायियोंको देखिये, बीमा कम्पनीके दलालोंको देखिये, सबका हाथ अँग्रेजीकी ओर बढ़ता है। वे कहते हैं—मैं अँग्रेजीमें काम करता आया, हाथ मँज गया है, आसानी होती है, आदि आदि। लेकिन यह सब अपनी कमजोरी छिपानेके लिये अेक बहाना है।

जब हम चिट्ठी लिखते हैं तो वहां भी अँग्रेजी। किसी सरकारी दफ्तरमें या किसी अर्द्ध सरकारी या गैर-सरकारी संस्थामें जब हम अपना पत्र अथवा प्रार्थना-पत्र भेजते हैं तो अँग्रेजीमें ही लिखते हैं। हमारा अभिप्राय यह होता है कि हम अंग्रेजी जानते हैं और देखो अँग्रेजी लिख लेते हैं अिसलिये हमारा तुमसे सान्निध्य है। जो लोग तुम्हारे कार्यालयमें हिन्दीमें प्रार्थना-पत्र भेजते हैं वे तुमसे दूर हैं, वे तुच्छ प्राणी हैं, देखो, मैं तुम्हारा आदमी हूँ—कमसे कम हम तुम अेक भाषामें लिख तो लेते हैं—हमारा काम अुन हिन्दी वालोंके कामसे पहले होना चाहिये। अगर हिंदीमें लिखने की कुछ अिच्छा भी हुअी तो हम कहते हैं कि हिन्दीकी चिट्ठी खत्तेमें पड़ जायगी, कौन है वहाँ हिन्दी जाननेवाला। अँग्रेजीमें लिखें, जल्द सुनवाअी होगी, जल्द जवाब आयेगा।

अपने मित्रोंको जब हम पत्र लिखते हैं तो अँग्रेजीमें ही लिखेंगे। हम यह जानते भी हों कि हमारा मित्र हिन्दी जानता है, फिर भी हम हिन्दी लिखनेमें संकोच करते हैं। सोचते हैं, हमें लिखनेकी आदत नहीं और कौन जाने गलत हिन्दी लिख जाऊँ, हमारा मित्र हँसी अुड़ायेगा, वह कहेगा देखो हजरत हिन्दी लिखने चले हैं, जब हिन्दी नहीं जानते तो लिखा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों ? हम डरते हैं कि हिन्दीकी साधारण गलती भी खटकेगी, अँग्रेजीकी मोटी-मोटी गलतियाँ भी छिप जायेंगी। हिन्दीकी गलती खटकेगी अथवा नहीं, हम अंग्रेजी की गलतियां जरूर छिपाते हैं। किसी शब्दको लिखते समय यदि संदेह हो गया कि यहां 'आओ' या 'ओ' तो हम बड़ी बुद्धिमानीसे कठिनाओंको पार कर जाते हैं। 'आओ' लिखकर ऊपरका बिंदु नहीं देते। अपने मनमें सोचते हैं, यदि यहां 'आओ' चाहिये तो पाठक 'आओ' पढ़ेगा, यदि 'ओ' है तो पाठक 'ओ' पढ़ेगा। हमारी चाल कोओ ताड़ न सकेगा, हम तो घसीटा अँग्रेजी लिखते हैं। हम सोचते हैं कि हिन्दीमें ऐसी कमजोरी नहीं छिपेगी। हमें शब्दकोषके लिये दौड़ना पड़ेगा अुसमें घंटों बीत जायेंगे। काम तो जल्दीका है, अँग्रेजीमें लिखकर ही चलता करें। साथ ही अंग्रेजी की भूलचूक सुधारनेके लिये, अंग्रेजीका शब्दकोष आपके पास है लेकिन हिन्दीका शब्दकोष तो है ही नहीं। वस्तुतः यह आपकी ही कमजोरी है। किसी भी दफ्तरमें जाकर देखिये अँग्रेजीके शब्दकोष बहुतेरे मिलेंगे किन्तु हिन्दीके नहीं। यदि वे भी पर्याप्त संख्यामें अुपलब्ध होते तो आपके यह बहाना करनेकी आवश्यकता ही नहीं रहती।

फिर भी कभी-कभी लाचार होकर अथवा अुत्साहित होकर यदि हम हिन्दीमें पत्र लिख भी देते हैं तो अुसका पता अँग्रेजीमें ही होता है। यदि पता भी हिन्दीमें लिखना पड़े तो कमसे कम पतेपर का जिला अथवा शहर तो हम अँग्रेजीमें अवश्य ही लिखेंगे। शायद हम यह सोचते हैं कि डाकखानेवाले, अँग्रेजीके पतेपर अधिक ध्यान देते हैं और हिंदीके पतेपर कम। अेक समय था जब अैसे भयका कुछ आधार था. किन्तु अब अैसा कोओ भय नहीं और अितना होते हुअे भी, हम हिंदीको अँग्रेजीसे तुच्छ समझें अथवा यह समझें कि दूसरे लोग अँग्रेजीको हिन्दीसे अधिक महत्व देते हैं, तो हमारा हिंदीके प्रति अन्याय होगा। हमें हिंदीकी प्रतिष्ठा करनी है और जब स्वयं सरकारने अिसे सरकारी कारबारकी भाषा मान लिया है, फिर भी डरें, तो हमें लाचार होकर यही कहना होगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदिके प्रति हम घोर अन्याय कर रहे हैं। हम अुसे सम्मानके पदसे नीचे अुतार रहे हैं।

दफ्तरमें काम करनेवाले बाबू कहा करते हैं—मैं अँग्रेजीमें काम जल्दी कर लेता हूँ। मुझे बहुत सुविधा होती है। मैं झर्राटेकी अँग्रेजी लिखता हूँ, साहब खुश हो जाते है, हिन्दीमें काम करनेका दर्रा आते-आते आयेगा। वे अेक ओर अपनी अँग्रेजीकी तारीफ करते हैं, किन्तु साथ ही अपनी हिन्दीकी अयोग्यता प्रदर्शित करते फिरते हैं, किन्तु आश्चर्य है कि अुन्हें अपने अज्ञानपर लज्जा नहीं आती। हिंदी न जानना अुनकी समझमें कोअी कमी नहीं है। अपनी टूटी-फूटी अँग्रेजीकी वे डींग हांकते हैं। यदि आप पता लगावें तो मालूम होगा कि अैसा कहनेवाले अैसे बाबू हैं जो मुश्किल से हाअीस्कूलकी परीक्षा पास हैं अथवा आठवां नवां दर्जा फेल हैं। वे अपनी अँग्रेजीकी योग्यताकी अज्ञानवश प्रशंसा किया करते हैं। बेचारों को अँग्रेजीकी योग्यता कम होनेके कारण अितना ज्ञान नहीं कि वे अपनी त्रुटियोंको समझ सकें? यही कारण है कि वे अपनी गलत और लचर अँग्रेजीको सही और जोरदार कहा करते हैं। हिन्दीका ज्ञान साधारणतः अुनका अच्छा है। अुन्हें अपनी कमजोरीका पता चल जाता है अिसलिअे वे अुसे छिपानेकी कोशिश करते हैं। वे चाहते हैं कि अैसा अवसर न आवे कि अुनकी अयोग्यताकी पोल खुल जाय। बेचारे नहीं जानते कि अुनकी अयोग्यताकी पोल रोज खुलती है और जो लोग अँग्रेजीमें कुछ पहुंच रखते हैं, अिन बाबुओंकी बनाअी हुअी चिट्ठियों पर हँसते हैं। बेचारे बाबूका तो दावा है कि बीसों बरस अुसने कुर्सी तोड़ी है तब तो वह जोरदार अँग्रेजी लिख पाता है। बेशक यदि वह साल दो साल हिन्दीमें काम करे तो वह वस्तुतः बड़ी अच्छी हिन्दी लिखने लगेगा। दफ्तरों में काम करनेवाले जो बाबू कुछ अधिक पढ़े-लिखे हैं वे बहुधा अपनी अँग्रेजीकी अितनी तारीफ नहीं करते। वे जानते हैं कि अँग्रेजी बहुत जटिल भाषा है; बी० अे० अेम० अे० पास कर लेनेसे आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँग्रेजीका विद्वान नहीं हो जाता। वे जानते हैं कि टूटी-फूटी हिन्दी लिखना अच्छा है। अतएव वे हिन्दीकी ओर अधिक आसानीसे आ रहे हैं, किन्तु क्या कहा जाय अिन कम पढ़े बाबुओं को जो भ्रमवश यह समझते हैं कि वे अँगरेजी अच्छी जानते हैं और हिन्दी नहीं जानते।

जब हम किसी सज्जनसे मिलने जाते हैं तो अपना परिचय-पत्र हिन्दीमें न लिखकर अँग्रेजीमें ही लिखते हैं। जब हम गुलाम थे तो अँग्रेज साहबोंकी सुविधाके लिअे हम अुनकी भाषाका अुपयोग करते थे। किन्तु अब वे बातें लागू नहीं। अब वैसे साहब नहीं रह गये। अँग्रेजीमें परिचय-पत्र भेजनेवाले कुछ सज्जन सम्भवतः यह जताना चाहते हैं कि वे अँग्रेजी पढ़े-लिखे हैं, अतअेव विशेष व्यक्तियोंमें से हैं। अुन्हें जानना चाहिअे कि अंग्रेजीके दिन लद गये। केवल अंग्रेजी जाननेके नाते कोअी मनुष्य अपनेको सम्भ्रान्त सज्जनोंकी श्रेणीमें नहीं रख सकता।

हम अपनी अँगूठीपर अंग्रेजीमें नाम लिखाते हैं, अपने मकान या दफ्तरके आगे लगे परिचय-पत्र पर अंग्रेजीमें अपना परिचय लिखाते हैं, यह हमें शोभा नहीं देता। हमें यह भी सोचना चाहिअे कि जिन लोगोंके देखनेके लिअे यह परिचय-पत्र बना है, वे अंग्रेजी भी जानते हैं? स्पष्ट है हिन्दी जानने वालोंकी संख्या अंग्रेजी जाननेवालोंसे कहीं अधिक है, फिर हम थोड़ेसे लोगोंकी सुविधाके लिअे बहुतोंको कष्ट दें, कोअी बुद्धिमानी नहीं। अेक दिन हमने अेक जगह पढ़ा—'डाग्स नाट अलाअुड' —अंग्रेजीमें लिखने वालेका अुद्देश्य था कि वह स्थान कुत्तोंके लिअे वर्जित है। अंग्रेज साहब कुत्ते अधिकतर पालते हैं, अुनकी मेमें भी पालती हैं, अिन साहबों और मेमोंके लिअे तो यह संकेत ठीक था। किन्तु हमारे हिन्दुस्तानी भाअी भी तो कुत्ते पालते हैं, कुछ अैसे भाअी भी हैं जो अँग्रेजी भले न जानें किन्तु कुत्तेका नाम अँग्रेजीमें ही रखते हैं, अैसे भाअियोंकी सुविधाका ध्यान नहीं किया गया था। ठीक अुसी वर्जित स्थान पर दो अेक मरियल कुत्ते बेरोक-टोक घूम रहे थे।

'पंकज' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहरे तिरंगा अपना

: श्री सोहनलाल द्विवेदी :

लहरे तिरंगा अपना !
जिसने सत्य बना दिखलाया,
आजादीका सपना
फहरे तिरंगा अपना !

जिस जयध्वजको पाकर आगे,
सोये भाग्य हमारे जागे,
जिसने दूर किया सदियोंका
रोना और कलपना !
लहरे तिरंगा अपना !

जिस जयध्वजके अरुणाचलमें,
कोटि कोटि जन आकर पलमें,
लड़े अनेकों युद्ध, विजयके लिअे
न पड़ा ठहरना !
फहरे तिरंगा अपना !

वह ध्वज ले अभियान करेंगे,
हम नूतन निर्माण करेंगे,
वह अजेय भारत, जो हो
भूतलके सुखका पलना !
लहरे तिरंगा अपना !

'संगम' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाका प्रश्न

श्री श्यामसुन्दर गुप्त, एम. ए. एल. एल. बी.

हम अपनेसे कुछ प्रश्न पूछें। अिस प्रकार हमें यह बताना बहुत सरल हो जायगा कि स्वतंत्र भारतकी राष्ट्रभाषाका प्रश्न कैसे हल किया जा सकता है।

हमारे सामने कुछ अैसे प्रश्न हैं जिनका अुत्तर सहज ही दिया जा सकता है। राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर जितने भी प्रश्न हैं, अुन सबका अेक अुत्तर है। हिन्दी ही अिस देशकी राष्ट्रभाषा हो सकती है।

प्रश्न निम्नलिखित हैं—

१—क्या अंग्रेजी अिस देशकी राष्ट्रभाषा हो सकती है?

२— यदि नहीं, तो किन कसौटियोंको ध्यानमें रखकर हम राष्ट्रभाषाकी समस्याको हल करेंगे?

३—क्या किसी देशकी राष्ट्रभाषा होनेका गौरव अुसी भाषाको मिलता है जो अुस देशमें सबसे अधिक निवासियों द्वारा बोली और समझी जाती हो? हाँ, तो हिन्दी अिस कसौटीपर कितनी खरी अुतरती है?

४—किसी देशकी राष्ट्रभाषाका प्रश्न अुस देशके पहलेके अितिहास और विशेषतः भाषाके पहलेके अितिहाससे कहाँ तक जुड़ा हुआ है? अिस नाते हिन्दीकी क्या स्थिति है?

५—माना अिस देशकी राष्ट्रभाषा होनेका अधिकार हिन्दीको ही है। तो फिर अिस सम्बन्धमें हिन्दी-प्रेमियोंके कुछ कर्तव्य भी हैं क्या?

६—आप नागरी लिपिके चक्करमें क्यों पड़ते हैं, रोमनको ही स्वीकार कर लीजिये न।

ये सब प्रश्न बड़े आवश्यक हैं। पर सन्तोषकी बात यह है कि अिनके अुत्तर बहुत सरल हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला प्रश्न है—क्या अंग्रेजी अिस देशकी राष्ट्रभाषा हो सकती है? यदि अिस देशके शासक अंग्रेज हो सकते है, यदि अिस देशका भला अंग्रेजोंकी छत्रछायामें हो सकता है तो अंग्रेजी अिस देशकी राष्ट्रभाषा भी हो सकती है। पर अंग्रेजोंके चले जानेसे अंग्रेजीके भी राष्ट्रभाषा होनेके दिन लद गये। हाँ अंग्रेजी शासनने यदि अपने ९० वर्षके शासन-कालमें भारतकी जनताके आधे भागमें भी अँग्रेजी पहुँचा दी होती तो अवश्य अंग्रेजीका पलड़ा बहुत भारी हो गया होता। पर लगभग अेक शताब्दी के समयमें अंग्रेजी हिन्दुस्तानके शहरोंके कुछ व्यक्तियों तक ही पहुँच सकी। अिसका क्या कारण है? अेक तो यह कि भारतकी अपनी भाषाअें हैं जिनके पुराने और नये अितिहास है। अुनमें साहित्य है। अुनमें हमारी सभ्यताके सुनहले और काले पन्नोंपर लेख हैं। अिसलिये यदि हम चाहते हैं कि अिस देशमें जनतन्त्र हो और अिसको बनाने और अूँचा अुठानेमें जनताका हाथ हो तो अंग्रेजी यहाँकी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

अुपरके विवेचनसे यह न समझ लीजियेगा कि अंग्रेजीका हमारे लिये अब कोअी महत्व ही नहीं रह गया। कुछ वर्षों तक अब भी हमें अंग्रेजी भाषा और साहित्यसे बड़ी सहायता मिलेगी। अंग्रेजी भाषा हमारे अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारका माध्यम होगी और अंग्रेजी साहित्य हमारे ज्ञानका स्रोत होगा।

अब हम दूसरे प्रश्नपर आते है। प्रश्न है—राष्ट्रभाषाको किन परीक्षाओंसे पूरा अुतरना होगा? सीधासा अुत्तर है, जिन कमियोंके कारण अंग्रेजी भाषा अितनी सबल होते हुअे भी और अितना समृद्ध साहित्य रखते हुअे भी अिस देशकी राष्ट्रभाषा न हो सकी वे कमी हमारी प्रस्तावित राष्ट्रभाषामें न हों।

देखिये, हिन्दी पश्चिम भारत, अुत्तर भारत, मध्य भारतमें सर्वत्र समझी और बोली जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस तरह अुपर्युक्त दूसरे और तीसरे प्रश्नोंका अुत्तर हिन्दीके पक्षमें "हाँ" हो जाता है।

अब चौथे प्रश्नपर विचार कीजिये। प्रश्न तो अूपर है ही। अुत्तर है कि वह अिसलिये आवश्यक है कि हमारा निर्णय हिन्दी और अुर्दूके बीचमें अुचित हो सके। अुर्दूका व्याकरण और दिन प्रतिदिनके व्यवहार के बहुत कुछ शब्द हिन्दीसे लिये गये हैं। अिसलिये अेक भ्रम पैदा हो सकता है कि अुर्दू भी तो सारे भारतमें अुतनी ही समझी और बोली जाती है जितनी हिन्दी। फिर क्यों न अुर्दू अिस देशकी राष्ट्रभाषा हो? अिस भ्रमका निवारण हमारी सहज समझ कर देगी। सोचिये-मराठी, गुजराती, आसामी; अुड़िया, तामिल तेलगू, मलयालम और कन्नड़ भाषाओंका सम्बन्ध हिन्दीसे है या अुर्दूसे? अुर्दू, अुर्दू अिसलिअे हो जाती है कि अुसमें अरबी, फारसी, तुर्कीके शब्द भर जाते हैं। हिन्दी, हिन्दी अिसलिअे हो जाती है कि अुसमें संस्कृतके शब्द अधिक आ जाते है। अब बताअिये सब भाषायें संस्कृतके निकट हैं या हमारे निकट पश्चिमके पड़ोसियोंकी भाषाओंके।

फिर, भारतके अितिहासके सुनहले पृष्ठ संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश भाषाओंमें लिखे गये नहीं हैं क्या? अुनका कोअी महत्व नहीं है क्या?

हमारा दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं है। अुर्दूके जितने भी शब्द हम हिन्दीमें पचा सकते हैं---पचा लेंगे।

अब पाँचवें प्रश्नपर आअिये। हिन्दी अपने अुचित आसनपर आरूढ़ हो गयी। अुसे हमने राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया। अब हिन्दी प्रेमियोंका अुत्तरदायित्व आरम्भ होता है। हमें अेक बड़े साहित्यका निर्माण करना है, हमें हिन्दी साहित्यको हिन्दका प्रतीक बनाना है। ज्ञानके अपरिमित भण्डारको हिन्दीमें लाना है। यह सब कौन करेगा? हिन्दीके प्रेमी, हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेका दम भरनेवाले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब रहा छठा और अंतिम प्रश्न। वह तो अुतना भी कठिन नहीं जितना राष्ट्रभाषाका प्रश्न अगर तर्कके लिये यह मान भी लिया जाय कि अुर्दू अिस देशकी राष्ट्रभाषा हो सकती थी तो भी राष्ट्रलिपि तो नागरी ही होती। अगर हमारी बातमें कोअी त्रुटि मालूम होती हो तो पूछ देखिये मराठी, गुजराती, गुरुमुखी और बंगला लिपियोंके जाननेवालोंसे पूछ देखिये लिपि शास्त्रियोंसे, पूछ देखिये संस्कृत जाननेवाले दक्षिण भाषा-भाषियों से, पूछ देखिये अपनी भाषाका अभ्यास अ, आ, अि, अी,....और क, ख, ग, घ.... ध्वनियों द्वारा आरम्भ करनेवाले भारतके निवासियोंसे और पूछ लीजिये सात-आठ साल अुर्दू लिपिको पढ़ने लिखनेवाले विद्यार्थियोंसे जो सही अुर्दू लिखने-पढ़नेमें कितनी बार अटकते होंगे।

'आर्यावर्त' से

महात्मा गांधीकी अमरवाणी

'मैं शांतिप्रिय मनुष्य हूँ। परन्तु सत्य अेवं अहिंसाके विरुद्ध जाकर मैं किसी भी कीमतपर शांति खरीदना नहीं चाहता। मैं अैसी शांति नहीं चाहता, जो जड़ पत्थरमें होती है—मृत कब्रमें होती है! मैं तो अैसी शांति चाहता हूँ जो मानवके चेतन हृदयमें बसी हुअी होती है और जो सारे चिंतनशील संसारके तर्क-वाणोंके लिये खुली हुअी होती है, परन्तु साथ ही सभी तरहकी हानिसे अिसलिअे सुरक्षित रहती है; क्योंकि अुसपर सर्व शक्तिमान परमात्माकी शक्तिका प्रभाव है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

बम्बअी

बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाका दूसरा पदवीदान समारम्भ माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टन्डनकी अध्यक्षतामें गत पहली जनवरीको हिन्दी नगरमें हुआ। अिसमें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी फरवरी तथा सितम्बर १९४७ की राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षामें अुत्तीर्ण १११परीक्षार्थियोंको कोविद अुपाधि तथा प्रथम और द्वितीय आनेवाले विद्यार्थियोंको पुरस्कार दिये गये।

प्रारम्भमें सभाके अध्यक्ष राजाबहादुर श्री गोविंदलालजीपित्तीने अुपस्थित व्यक्तियोंका स्वागत किया और अुन्हें राष्ट्रभाषाका महत्व बताया। तदुपरान्त श्री. टन्डनजीने अपने भाषणमें कहा कि १५ अगस्त ४७ के बाद अब यह निर्विवाद है कि देशकी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलनने शुरू से ही राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें अपनी नीति स्पष्ट रखी है। देशके अन्य प्रान्तीय भाषाओंकी हिन्दी बड़ी बहन है। अिसलिये अहिन्दी भाषाभाषियोंके लिये हिन्दी सीखना अधिक सुगम है। आज करीब अेक लाख परीक्षार्थी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओंमें हर साल बैठते हैं। यह सिद्ध करता है कि जनता हिन्दीका राष्ट्रभाषाके रूपमें स्वागत करती है।

श्रीटंडनजीने आगे कहा कि हिन्दी आजसे नहीं बल्कि अनेक शताब्दियोंसे देशकी व्यापक भाषा रही है। प्रांतीय भाषाओं तथा हिंदीके आदान प्रदानका प्रभाव बड़ा हितकर होगा। मैं प्रान्तीय भाषाओं के साहित्यकारोंसे निवेदन करता हूँ कि वे हिन्दीको आगे बढ़ानेमें अपना योग दें।

अपने भाषणके अन्तमें श्रीटंडनजीने बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके कार्यपर संतोष प्रगट किया।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष महापंडित श्री. राहुल सांकृत्यायनने अपने भाषणमें कहा कि भारतवर्षका सारे विश्वमें अेक विशेष स्थान है। हमारा देश प्राचीन कालसे ही शांति का उपासक रहा है। साम्राज्य बढ़ाना कभी अुसका ध्येय नहीं रहा। सेवा भावनासे ही हमने प्राचीन कालमें धर्मप्रचार किया था। बल प्रयोगके सहारे हमारी संस्कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिब्बत, चीन, जापान, श्याम, बर्मा और लंका आदि देशोंमें नहीं फैली थी। नागरी लिपिका तिब्बती लिपिपर भारी प्रभाव पड़ा है। अन्तमें श्री राहुलजीने कहा कि भारतीय प्रान्तीय भाषाओंके स्वरूपको देखते हुअे यह बिल्कुल निर्विवाद है कि हिंदीही संस्कृतके समीप होनेके कारण देशकी राष्ट्रभाषा बन सकती है।

सभाके मंत्री श्री कांतिलाल जोशीने प्रारम्भमें सभाकी स्थापना अेवं कार्यपर संक्षेपमें प्रकाश डाला था। अुन्होंने बतलाया कि सन १९४५ में बम्बअीकी राष्ट्रभाषा परीक्षार्थी संख्या ४२३० थी। सभाको स्थापित हुअे अभी केवल दोही वर्ष हुअे हैं। अितनेही अल्पकालमें यह संख्या १९४७ में बढ़कर ८४०० होगअी। अिस समय सभाके अन्तर्गत बम्बअी शहर तथा अिसके अुपनगरोंमें ६५ राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र चल रहे हैं और करीब १७५ राष्ट्रभाषा प्रचारक सेवा भावसे अिस राष्ट्रीय कार्यमें योग दे रहे हैं।

अन्तमें प्रोफेसर न० र० फाटकने सभामें अुपस्थित सभी सज्जनोंको धन्यवाद दिया।

महाराष्ट्र

कलवण—गत चार जनवरीको कलवणमें डाक्टर जोशीकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। सर्वश्री रेवाशंकर दुबे, वि० ता० शिम्पी तथा गं० ग० कुलकर्णीने अपने भाषणोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर प्रकाश डाला।

यहां तालुका समितिकी स्थापना भी हो चुकी है। श्री रामचंद्र तानाजी पाटील बी० ए० एल० एल० बी० अध्यक्ष और श्री० वि० ता० शिम्पी मंत्री चुने गअे हैं।

श्री रेवाशंकर दुबेने विद्यार्थियों तथा नागरिकोंकी सभामें भी भाषण दिअे।

विदर्भ-नागपुर

हिंगणघाट- गत दिसंबरके तीसरे हफ्तेमें, रविवारको, यहां बड़े अुत्साहके साथ "प्रमाण पत्र--वितरण समारोह" मनाया गया। वर्धासे परीक्षा-मंत्री श्री दुबेजीने पधारकर राष्ट्रभाषा-परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाणपत्र वितरण किअ और राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता और अुसके महत्वपर सुन्दर भाषण दिया। हिंगणघाट केन्द्रमें राष्ट्रभाषा-प्रचारका कार्य संतोष-प्रद अुन्नति कर रहा है। गतवर्ष यहांसे ४६५ परीक्षार्थी बैठे थे।

खामगांव—ता० २५ जनवरी रविवारको, दिनके १० बजे, बुलडाणा जिला राष्ट्रभाषा प्र० समितिके तत्वावधानमें 'प्रमाणपत्र वितरण' समारोह मोहन टॉकीजमें बड़े अुत्साहसे, आचार्य पंधे गुरुजीकी सदारतमें, मनाया गया। वि० ना० प्रांतीय समितिके मंत्री श्री० हृषीकेश शर्माजीने अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र बाँटे। खामगांव शहर और बुलडाणा जिलेमें राष्ट्रभाषा प्रचारमें जो प्रगति हो रही है अुसकी रिपोर्ट जिला-संचालक श्री भंवरलाल सेवकने पढ़कर सुनाअी। गवर्नमैंट हाअीस्कूलके आचार्य सहस्रबुद्धेजी, डॉ० अेकबोटे अेम. अेल. अे., वयोवृध्द नेता डॉ. पारसनीस साहब राष्ट्रकर्मी हेडाअूजी, अम्बूलकरजी, हिन्दीके ममंज्ञ-पंडित श्री नेमाजी (हे. मा. हिन्दी हाअीस्कूल ') आदि सज्जनोके हिन्दीमें भाषण होनेके बाद पं० हृषीकेश शर्माजीका राष्ट्र और राष्ट्रभाषाके महत्वपर ओजस्वी व्याख्यान हुआ। अन्तमें शर्माजीने अिस केन्द्रके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण – पत्र और पुरस्कार प्रदान किअे।

अुसी दिन, खामगांव—गवर्नमैंट हाअीस्कूलमें, शामके ५ बजे, बुलडाणा जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी दूसरी बैठक श्री पंधे गुरुजी (आचार्य तिलक राष्ट्रीय विद्यालय) की अध्यक्षतामें हुअी। पिछली बैठककी कार्यवाही पढ़ी गअी। आयव्ययका अनुमान--पत्र स्वीकृत हुआ। प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके नियम व अुद्देश्योंके अन्तर्गत जिला समितिकी नियमावली बनी और कुछ, थोड़ेसे सुधारोंके साथ वह स्वीकृत हुअी। अिस समितिको म्युनिसिपल कमेटीके अध्यक्ष श्री भाटे वकील, आचार्य सहस्रबुद्धे (ग० हा० स्कूल), आचार्य श्री महाशूरजी, (न्यू० अिं० हा० स्कूल) श्रीमती चाफेकर (आचार्य ग० ग० हा० स्कूल), श्री केलाजा, श्री नेमाजी आदिका अुत्साहपूर्ण सहयोग मिल रहा है। खामगांवमें भी अच्छा राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्य हो रहा है। यों विदर्भ नागपुर प्रान्तमें खामगांव केन्द्रका नंबर पाँचवाँ है। गतवर्ष अिस केन्द्रसे ३६४ परीक्षार्थी बैठे थे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-फल—फरवरी ४८ में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षा-फल ३१ मार्च ४८ को प्रकाशित होगा।

आगामी "राष्ट्रभाषा रत्न" परीक्षा—

सितम्बर ४८ में 'राष्ट्रभाषा रत्न'की आगामी परीक्षा होगी। परीक्षा आवेदन-पत्र ३१ मअी तक वर्धा कार्यालयमें आजाना चाहिअे।

रत्न परीक्षामें सीधे बैठनेके लिअे प्रार्थना-पत्र वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अप्रैल है।

नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त		नाम	क्रमांक	केन्द्र
गुजरात	श्री	अनुसूया कमलशंकर पंडित	११६०	तारकेश्वर
,,	,,	अुषा अनिरुध्द दवे	११६१	बडौदा
,,	,,	पटेल मनुभाअी अम्बालाल	११६६	,,
,,	,,	शंकरलाल कुबेरदास ठाकर	११६७	,,
,,	,,	हसमुख अम्बालाल देसाअी	११६३	अहमदाबाद
,,	,,	जेठालाल सोमचंद शाह	११६४	आणंद
,,	,,	रावजीभाअी नरसिंहभाअी पटेल	११६५	गामड़ी
,,	,,	चमनभाअी काशीभाअी पटेल	१२०१	बाकरोल
महाराष्ट्र	,,	मोतीराम चावदास लोखण्डे	११७६	भालोद
,,	,,	बाबाजी मोतीराम चौधरी	११८०	,,
,,	,,	सांडू मंगू नेहेते	११८६	,,
,,	,,	भास्कर तुलसीराम चौधरी	११७७	बोदवड़
,,	,,	जनार्दन श्रावण ,,	११७८	सांगवी
,,	,,	पोपट गोविन्दा पटेल	११७६	,,
,,	,,	गोपाल देवचंद चौधरी	११८१	हिंगोणे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांत		नाम	क्रमांक	केन्द्र
महाराष्ट्र	श्री	माधव दत्तात्रय भिडे	११८२	बेलगांव
,,	,,	माधव लहानू चौधरी	११८४	खिड़की
,,	,,	कु० रोहणी श्र धर तिलक	१ ८५	पूना
,,	,,	सौ० अिन्दुमती भालचन्द्र खारकर	११८८	,,
,,	,,	विनायक भिकाजी कुलकर्णी	११९९	,,
,,	,,	यशवंत सदाशिव राणे	११८९	बामणोली
,,	,,	तुलसीराम विठू सरोदे	११९२	चिनावल
,,	,,	रघुनाथ गोविन्द नाअिक	१२००	चोपड़े
विदर्भ नागपुर	,,	पुंडलिक शामराव देशमुख	११८७	जलगांव
,,	,,	महेशचन्द्र शास्त्री, विद्याभास्कर	११९८	अकोला
बम्बअी	,,	नरसिंहभाअी बहेचरभाअी मेहता	११८३	बम्बअी
,,	,,	शान्ता मंगेश पत्की	१२०२	,,

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
बंगाल	मथुरापुर	१११९
अुत्कल	असुरेश्वर	१११४
	झारझुगड़ा	१११५
सिंध	कंधकोट	१११७
महाराष्ट्र	अजमीर सौंदाणे	१११०
	नेवासे खुर्द	१११२
आन्ध्र	जाण्ड्रपेट	१११६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिकी दो नयी प्रकाशित पुस्तकें

अुड़ते जुगनू

प्रारम्भिक परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक, सुन्दर रोचक कहानियोंका संग्रह--यह पुस्तक हिन्दीके प्राथमिक विद्यार्थियोंके लिए विशेष रूपसे प्रकाशित की गअी है, सुन्दर साफसुथरी छपाअी । मूल्य केवल ॥) डाक खर्च अलग ।

पाँच अेकांकी

कोविद परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक, सरदार इन्द्रसिंह चक्रवर्ती, ना. सी. फड़के, रामकुमार वर्मा, अिन्दुशेखर और विष्णुके पांच सुन्दर अेकांकी नाटकोंका प्रतिनिधि संग्रह--भूमिका लेखक--प्र. रा. भूपटकर आकर्षक गेट अप- सुन्दर छपाई, मूल्य केवल १), डाक खर्च अलग ।

—: अवसर न चूकिये :—

फिर अितनी सस्ती पुस्तकें न मिलेंगी

प्रचारके ख्यालसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिस बार हिन्दीके सभी लेखकों और कवियोंकी पुस्तकें अधिकसे अधिक कमीशनपर दे रही है, फौरन ऑर्डर दीजिये । अेक साथ ५०० की पुस्तकें मंगानेवालेको ३०) प्रतिशत कमीशन दिया जा सकता है ।

—मंत्री

नोटः—यह कमीशन अुन्हीं पुस्तकोंपर दिया जावेगा जो राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकोंका आर्डर देनेके साथ-ही-साथ पेशगी रकम नहीं भेजते। हमें अुन्हें पेशगीके लिअे लिखना पड़ता है और तब कहीं रुपये आनेपर अुनके लिअे यहाँसे पुस्तकें भेजी जाती हैं। अिससे अेक तो ग्राहकोंको पुस्तकोंके लिअे काफी इंतजार करना पड़ता है, दूसरे, सबको परेशानी भी होती है।

अिसलिअे अपने सभी ग्राहकोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे पुस्तकोंका आर्डर देते समय अुनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक-चौथाअी पेशगी ज़रूर भेज दिया करें।

यह नियम काफी हानि अुठाकर और दिक्कतोंका अनुभव करके बनाया गया है और अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं की जा सकती; अतः जिन लोगोंके आर्डरके साथ अुक्त नियमानुसार पेशगी नहीं आयेगी, अुन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

नोट—जिन लोगोंके पास राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पुरानी पुस्तकें बेचनेके लिये हों वे हमसे पत्र-व्यवहार करें।

—मंत्री

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

पुस्तकालय
कुल काँगड़ी.

श्रद्धेय टण्डनजी

हि० सा० सम्मेलन जिनके बलसे सबल है

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकोंका आर्डर देनेके साथ-ही-साथ [illegible]

५. अुद्बोधन	१०९	१२. कोविदमें बैठनेसे पहिले	[illegible]
६ नागरी प्रचारिणी सभा	११०	१३. प्रान्तीय हलचलें	[illegible]
७. लंकामें हिंदी प्रचार	११३	१४. परीक्षा विभाग	[illegible]

नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	क्रमांक	केन्द्र
राजपुताना	श्री कन्हैयालालजी अनारजी राजपूत	११५४	कुशलगढ़
,,	,, गिरजाशंकर पन्ड्या	११५५	,,
गुजरात	,, पुनमभाअी छगनलाल पन्ड्या	११७३	नडियाद
,,	,, ठाकोरलाल लालाभाअी मिस्त्री	११७४	भरुच
महाराष्ट्र	,, नबीलाल मुहम्मदहुसेन अत्तरवाला	११५६	मिरज
,,	,, हिरामन रूपा चौधरी	११५७	खिडीं
,,	,, रामचन्द्र कृष्णाजी शिंदे	११५८	पुणें
,,	,, सोनूबाअी नारायण पाटील	११५९	जळगांव
,,	,, बलीरामजी तुकाराम नेमाड़े	११६०	सावदा
,,	,, हरिकृष्णदास शंकरदास महेता	११६१	नशिराबाद
,,	,, यशवंत नामदेव महाजन	११६२	,,
,,	,, श्रीधर वाणी	११६३	,,
,,	,, अुत्तमलाल विट्ठलदास मेहता	११६४	,,
,,	,, विश्वनाथ अन्नाजी देशपांडे	११६५	,,
,,	,, रणछोड़ भिकाजी वाणी	११६७	यावल
,,	,, रामदास कौतुक वरांडे	११६८	लासलगांव
,,	,, दत्तात्रय हरि थत्ते	११७०	पुणें
,,	,, नाथू किसन रोखले	११७१	सारोलाकासार
,,	,, रामकृष्ण तात्या सा० हिरे	११७२	अहमदनगर
,,	,, शान्तिलाल कासलीवाल	११७५	मनमाड़
विदर्भ-नागपुर	,, जमालुद्दीन रमजान तुर्रक	११६६	वर्धा
बम्बअी	,, सौ. लीला रामचन्द्र केळकर	११६९	बम्बअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, जनवरी १९४८ [अंक ३

हिन्दी ? उर्दू ? हिन्दुस्तानी ?

: श्री यशपाल :

विदेशी गुलामीका फन्दा अपने समाज और राष्ट्रपरसे दूर कर सकनेके बाद हमारे सामने प्रश्न है समुचित सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनकी व्यवस्था करनेका। अिस सम्बन्धमें विचार करने और विचारोंको परस्पर प्रकट करके सामूहिक प्रयत्न कर सकनेका साधन है हमारी भाषा। अिसलिये यह स्वाभाविकही है कि समाज और राष्ट्रके निर्माणकी समस्याका अवसर आतेही पहला प्रश्न अिस लक्षके मुख्य साधन, स्वयं भाषाके सम्बन्धमेंही हमारे सामने अुठ खड़ा हुआ है।

प्रश्न हमारे सामने भाषाके निर्माण और विकासका अितने अुत्कट रूपमें नहीं है जितना कि भाषाके चुनावका प्रश्न है। हम भाषा विहीन नहीं हैं। भाषा जीव या मनुष्यके अस्तित्वका पहला लक्षण और साधन है अिसलिये अुसका अितना अधिक महत्व भी है। हमारी खास ढंगकी राष्ट्रीय परिस्थितियोंके कारण हमारे समाज और राष्ट्रकी भौगोलिक अिकाअीमें अनेक भाषाओंका प्रयोग होता रहा है। अधिकांश जनता यद्यपि अंग्रेजीसे परिचित नहीं थी परन्तु ब्रिटिश राजसत्ताके बलपर और ब्रिटिश राजसत्ताके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक भारतीय जन-समाजके भागोंके सहयोग, के सहारे हमारे राजनैतिक जीवनमें शासन व्यवस्थामें और जनताके भाग्यका निर्णय करनेवाले क्षेत्रोंमें अंग्रेजीका ही प्राधान्य रहा। अंग्रेजीके अतिरिक्त अिस देशकी भाषाओंका प्रयोग केवल अैसी अवस्था और परिस्थितियोंमें ही सहन किया जाता था, या अुसकी अुपेक्षा की जाती थी, जहाँ शासक वर्ग और सम्मानित वर्गकी भाषा अंग्रेजीके लिअे पैठपाना सम्भव नहीं था। और अिन भारतीय भाषाओंके लिअे नाम था 'वर्नाक्युलर' जिसका शब्दार्थ होता है 'दास-भाषा'। ब्रिटिश सत्ताने देशके भिन्न-भिन्न भागोंके लिये 'वर्नाक्युलर' या दास-भाषाका चुनाव स्थानीय जनताकी सहूलियत और भावनाके विचारसे नहीं किया। अुनके सामने विचार था, अपनी सहूलियतका। शासनका काम चलाने के लिये निम्न श्रेणीके सधे-सधाये सरकारी कर्मचारी लोग जो पहिलेसे देशकी व्यवस्थाका काम चलाते आये हैं, किस भाषा और लिपिमें देश और जनतापर ब्रिटिश अमलदारीको कायम कर सकते हैं? जिस समय देशमें ब्रिटिश अमलदारीका पदार्पण हुआ देशमें पहलेसे एक अव्यवस्था और संघर्ष मौजूद था और वह अव्यवस्था और संघर्ष भाषाके क्षेत्रमें भी था। ब्रिटिश सत्ताने अपनी भाषाको भारतकी मुख्य राजकीय भाषाका आसन देकर अुस कालकी अव्यवस्थित और संघर्षमयी भाषाको 'वर्नाक्युलर' दासोंकी भाषा मान लिया।

अुत्तरी भारतके लिये ब्रिटिश सत्ता द्वारा स्वीकृत वर्नाक्युलर मानी गअी थी—अुर्दू। अंग्रेजोंके अिस चुनावके कारण पढ़ालिखा बननेका साधन, सरकारसे न्याय पानेका साधन अुर्दू बन गअी। जनताका जो अंश अपनी आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक परिस्थितियोंके कारण अंग्रेज़ीसे लाभ नहीं अुठा सकता था अुनके लिये ब्रिटिश राजने अुर्दूका माध्यम निश्चित कर दिया। जनताके लिये यह आसान नहीं था कि जीविका निर्वाह और सरकारी व्यवस्थासे संबंध रखनेके लिये अेक भाषा और लिपि सीखती और अपने सामाजिक जीवनके लिये दूसरी भाषा और लिपि सीखती। परिणाममें अुर्दू कही जानेवाली वर्नाक्युलर (दास भाषा) को प्रोत्साहन मिलता रहा। परन्तु जैसे ब्रिटिश सत्ताका सांस्कृतिक प्रभाव भारतीय जन समाजके जीवनमें बहुत कम प्रवेश कर सका वैसे ही अुनकी चुनी हुअी दास-भाषा भी जनताके जीवनमें गहरी नहीं पैठ पाअी। जनताकी जीवन शक्ति अुसका निरंतर विरोध करती ही रही। अुत्तरी भारतके अेक-अेक प्रान्त या जिलेका अुदाहरण लेकर हम यह बात देख सकते हैं। पंजाबमें अुर्दू या फारसी लिपिका अेकाधिपत्य सरकारी व्यवस्था द्वारा स्थापित कर दिये जानेपर भी पश्चिमी या पूर्वी पंजाबके किसी भी भागकी जनता, न हिन्दू और न मुसलमान ही—अुर्दूको अपना सके। पंजाबकी अुर्दूका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़ पुकारा जाता रहा है। बहुत अंशोंमें वहां अंग्रेजीके साथ केवल अेकमात्र उर्दू या फारसी लिपिका ही प्रयोग होता रहा है, वहाँ साहित्य भी उर्दूमें ही लिखा गया परंतु उर्दूके पंजाबी साहित्यिक भी अपने पारिवारिक जीवनमें भाषाके रूपसे उर्दूको आत्मसात नहीं कर सके। वे उसे अपनाये तो रहे परंतु उसे अपना वैयक्तिक या सामाजिक अंग नहीं बना सके। वही बात युक्तप्रान्त, बिहार तथा दूसरे प्रान्तोंकी जनता और वहाँके साहित्यकोंके विषयमें भी सही रही है। किसी भी स्थानकी जनता उर्दूको जीवनके अंशमें स्वीकार नहीं कर सकी, उसे स्वीकार कर सके थे केवल कुछ परिवार जैसे कि आज भी खोजनेपर ऐसे हिन्दुस्तानी परिवार मिल सकते हैं जो विशेष यत्न करने पर अंग्रेजीको अपनी पारिवारिक भाषाके रूपमें अपना चुके हैं।

आज अेक स्वतंत्र सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनकी व्यवस्थाकी नींव डालनेके लिये विचार करते समय हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि आज अंग्रेजीके लिये जैसी उत्पीड़न और दमनके प्रति विद्रोहकी भावना हमारे हृदयमें है ठीक वैसी ही भावना भारतीय जनतामें उर्दू या शासन सत्ताके आधारपर लादी जानेवाली भाषाके प्रति देशमें उस समय भी रही होगी जब अंग्रेजी सत्ताके आगमन और मुग़ल सत्ताके उखड़नेका समय अेक साथ आ गया था। उस देश और जनताकी संस्कृतिके लिये वह विदेशी भाषा जिसके प्रति जनताकी विरक्ति और विद्रोह था, ब्रिटिश सत्ता की सहूलियतके लिये देश और जनतापर लाद दी गअी, केवल उसी आधारपर वह जनताकी अपनी संस्कृति नहीं मान ली जा सकती। और उसकी प्रत्यक्ष कसौटी यह है कि आज साम्प्रदायिक प्रतिहिंसाके कारण हिन्दी का विरोध करते हुये भी किसी भी प्रान्तके मुसलमान उर्दूको सार्वजनिक रूपसे अपने सामाजिक और पारिवारिक जीवनमें अपनाये हुये नहीं हैं। सीमान्तकी मुसलमान जनता उर्दू नहीं पश्तोका व्यवहार करती है, सिंधकी मुस्लिम जनता सिंधी का, पंजाबकी पंजाबीका, युक्तप्रान्तमें आगराके प्रदेशकी मुस्लिम जनता ब्रजमिश्रित हिन्दीका और अवधकी मुस्लिम जनता अवधीका। उसी प्रकार बिहारमें भोजपुरी और मैथिलीका और पूर्वी बंगालमें ठेठ बंगालीका।

आज जिस समय हम भारतके सर्वसाधारणके लिअे अेक साझी भाषा चुननेके प्रश्नपर विचार करते हैं, हमारे सामने हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानीका प्रश्न उठ खड़ा होता है। यह तीन नाम किन तीन भाषाओंके संकेत हैं?

हिन्दी बोलचालकी एक भाषा है। उसकी अेक लिपि है। भारतके अधिकांश भागोंमें वह समझी जा सकती। यदि हिन्दीमें संस्कृतके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द अधिक न मिला दिअे जाँय तो कोअी भी व्यक्ति जो अुर्दू जाननेका दावा करता है, हिन्दीको बखूबी समझ सकता है।

अुर्दू बहुत सीमातक हिन्दीकी ही तरह बोली जाती है। अिसमें फारसीके शब्द भी रहते हैं और यदि बहुत अधिक फारसी अिसमें न मिला दी जाय तो जो कोअी हिन्दी जाननेका दावा करता है, अुर्दूको बखूबी समझ सकता है। परन्तु अिसकी लिपि फारसी है जो फारस देशकी चीज है। अिस लिपिका प्रयोग हिन्दीकी देवनागरी लिपिकी अपेक्षा देश और जनतामें बहुत कम होता है।

हिन्दुस्तानी देशकी सर्वसाधारण जनताकी भाषा समझी जाती है। सरल हिन्दी अथवा सरल अुर्दू दोनोंकोही हिन्दुस्तानी कहा जाता है। परन्तु नित्य रोजमर्राके लिअे आवश्यक बातोंसे अधिक बातचीत अिस भाषामें नहीं की जा सकती। कोअी गम्भीर विचार विनिमय या साहित्य की रचना अिस भाषामें नहीं की जा सकती। हिन्दुस्तानीमें अैसा प्रयत्न करतेही वह हिन्दी या अुर्दूका विशेष रूप लेने लग जाती है। हिन्दी और अुर्दू दोनों ही लिपियाँ हिन्दुस्तानी लिपि समझी जाती हैं। हिन्दुस्तानीको प्रश्रय देने या स्वीकार करनेका अर्थ दो पृथक-पृथक भाषाओं और लिपियोंको जनतापर लादना है, जैसी कि महात्मा गाँधीकी राय है।

परन्तु प्रश्न यह है कि दो भाषाओंको समान रूपसे स्वीकार करनेकी, दो भाषाओंका समान रूपसे विकास करनेकी कठिनाअीको जनता और जनताकी सरकार किस लाभके लिये अपने सिरपर लादे? यह मानकरभी कि भारतकी बहुत अधिक जनताकी भाषा हिन्दी है, अुर्दूको स्वीकार किये रहने और अुसके लिये भी समान रूपसे विकासका प्रयत्न करते रहनेके प्रस्तावके दो—कारण बताये जाते हैं। अेक कारण है— अल्पमतोंके प्रति न्यायकी भावना और दूसरा कारण है—जनताके सांस्कृतिक धनकी रक्षा करनेका विचार।

अल्पमतोंके प्रति न्यायकी रक्षाका अभिप्राय है, देशकी अथवा अुत्तरी प्रान्तोंकी मुस्लिम जनतासे। अिसी भावनासे प्रेरित होकर महात्मा गांधीने युक्तप्रान्तीय सरकार द्वारा अपने प्रान्तमें हिन्दीको सरकारी भाषा नियत कर देने पर हार्दिक दुख प्रकट किया है। प्रश्न यह है कि युक्तप्रान्तमें हिन्दीको सरकारी भाषा नियत कर देना अन्याय किस प्रकार है? यदि अिसे अल्पमत (मुसलमानों) पर चोट समझा जाय तो किस दृष्टि कोणसे? यह मुसलमानोंके धर्म विश्वास पर चोट है या अुनकी संस्कृतिपर? धर्म विश्वासके नाते यह नहीं कहा जा सकता कि अुर्दू मुसलमानोंकी धार्मिक भाषा है। तुर्किस्तान, अरब, अीरान, चीनके मुसलमान अुर्दू नहीं लिखते-बोलते, अुनके धार्मिक ग्रंथ अुर्दूमें नहीं अरबीमें हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक विश्वासोंका आधार भाषा नहीं हो सकती। विश्वास मनुष्यके मस्तिष्कमें स्थान रखते हैं और अुन्हें मनुष्य अपनी भाषामें प्रकट कर सकता है। जहाँ तक संस्कृतिका प्रश्न है देशकी सर्वसाधारण हिन्दू और मुसलमान जनता अितनी पृथक नहीं है कि अुनकी दो भाषायें हो सकें। पाकिस्तान या देशके बँटवारेके लिये कारण पैदा करनेके लिये जिन्ना साहब साम्प्रदायिक आधार पर दो राष्ट्रों और कौमोंकी बात कह सकते हैं परन्तु प्रान्तोंमें बसने वाली जनताको अेक जाति मानने वाले लोगोंके लिये मुसलमानकी भाषा हिन्दूकी भाषासे अलग समझना युक्ति संगत नहीं जान पड़ता।

अुर्दू मुसलमानों की सांस्कृतिक भाषा मानी जाय, इस बात पर स्वयं मुस्लिम जनता और अुनके नेताओंको ही विश्वास नहीं। पूर्वी पाकिस्तानकी सरकारी भाषा अुर्दू नहीं बँगला निश्चित की गअी है और पश्चिमी पाकिस्तान ने भी पंजाबीकी जगह अुर्दू बोलना आरम्भ नहीं किया और न अुर्दूको अपनी राष्ट्रीय भाषा अैलान किया है। अैसी अवस्थामें न्यायकी रक्षाके लिये युक्तप्रान्ती बिहार अित्यादिमें हिन्दीके साथ अुर्दूको समान भाषा स्वीकार करनेके लिये क्या युक्ति हो सकती है ? सम्पूर्ण सरकारी व्यवस्थाको दो-दो लिपियों और भाषाओंमें चलानेका व्यय और कठिनाअीको किस युक्तिके लिये झेला जाय ?

दो भाषाओं और लिपियोंका प्रश्न संकुचित क्षेत्रका प्रश्न नहीं है। यह केवल सरकारी सूचनाके पर्चे बाँटनेका प्रश्न नहीं है। यह प्रश्न है सम्पूर्ण व्यवस्थाके लिये अुचित परिभाषायें बनानेका, जनताको अुनसे परिचित करानेका और अूँची वैज्ञानिक शिक्षा और साहित्यके विकासका भी। जहाँ तक साक्षरताके प्रचारका प्रश्न है, यद्यपि दो भाषाओंमेंसे किसी भी भाषाका अक्षर ज्ञान प्रायः अेकहीसे प्रयत्नसे प्राप्त हो सकता है परन्तु लिपिकी दृष्टिसे जनताको दो अलग क्षेत्रोंमें बांट कर रखनेसे कौनसा सार्वजनिक हित पूरा हो सकता है ? वास्तविकता और यथार्थकी दृष्टिसे मुस्लिम जनताको अुर्दू लिपि और भाषाके क्षेत्रमें सीमित रखनेका परिणाम स्वयं अुनके मानसिक जीवनकी सीमाओंको संकुचित कर देना होगा। पूर्वी बंगालके पाकिस्तानमें बंगलाको और पश्चिमी पाकिस्तानमें अंग्रेजीको ही सरकारी भाषा निश्चित करनेसे यदि आत्म-निर्णयका अधिकार पानेवाली मुस्लिम जनतापर अत्याचार नहीं हुआ तो युक्तप्रांत, बिहार आदिमें हिन्दीको सरकारी भाषा निश्चित कर देनेमें ही अिन प्रांतोंकी मुस्लिम जनताके साथ अन्याय कैसे समझा जा सकता है ?

सांस्कृतिक दृष्टिकोणसे अिस प्रश्नपर विचार करना अधिक युक्ति-संगत है। सांस्कृतिक दृष्टिसे अुर्दूके लिये भी हिन्दीके समान ही स्वीकृतिकी मांग करने वालोंका कहना है कि अुर्दू केवल मुसलमानोंकी ही भाषा नहीं वह समान रूपसे हिन्दू साहित्यकोंकी भी भाषा है। साहित्य और संस्कृतिको साम्प्रदायिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से स्वतंत्र रखकर अुसपर विचार करना चाहिये। साम्प्रदायिक द्वेषके भावको अेक ओर रख कर यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि अुर्दूका जन्म अेक विदेशी अुत्पीड़नके प्रभावसे हुआ, जिससे कि अिस देशकी जनताकी भाषा और लिपि साहित्यिक अनुभूतियोंके प्रकाशके लिये पर्याप्त नहीं रही थी। तकके लिये यह कहना भी सर्वथा असंगत न होगा कि भारतीय जनतापर अंग्रेजीका प्रयोग लाद दिया जानेपर, जनताके अेक अंशने अंग्रेजीको अपनाया और आज अैसे भी भारतीय लेखक पाये जाते हैं जो अंग्रेजोंके समान ही चुस्त और सही अंग्रेजी लिख सकते हैं। भारतीय लेखकोंने काफी ऊँचे दर्जेकी कविता और साहित्य अंग्रेज़ीमें लिखा है। भारतीयों द्वारा सम्पादित और संचालित अंग्रेजी पत्रोंके मुकाबिलेमें भारतीय भाषाओंके पत्र कूड़ा करकट मात्र हैं और अुनकी पाठक संख्या भी अंग्रेजी पत्रोंका मुकाबला नहीं कर सकती। हमारे राजनैतिक नेता और वैज्ञानिक अपने विचार अंग्रेजीमें अपनी मातृभाषाकी भांति सरलतासे प्रकट कर सकते हैं परन्तु भारतीय भाषा बोलते लड़खड़ाते हैं। अिसलिये भारतके सांस्कृतिक विकासके लिये यह आवश्यक है कि अंग्रेज़ीको भी भारतमें शिक्षाके माध्यम और सरकारी व्यवस्थाके प्रयोजनसे अेक सरकारी भाषा स्वीकार किया जाय। हमारी राजनैतिक प्रगतिका जितना श्रेय अंग्रेजी को है अुतना किसी भारतीय भाषाको नहीं दिया जा सकता। परन्तु अेक विदेशी भाषाकी स्थितिमें हमारी राष्ट्रीय अनुभूति और सामाजिक आत्मा के साथ अंग्रेजी अपनी पृथक स्वतंत्र स्थितिमें मेल नहीं खा सकती। लेकिन अिस बातसे भी अिनकार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजों और अंग्रेजीके सम्पर्कने आधुनिक कालमें हमारे राष्ट्रीय विकास और सांस्कृतिक अुन्नतिमें बहुतसहायता दी है। अैसी अवस्थामें अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ीसे हम जो कुछ ले सकते हैं अुसे हज्म करके स्वयं अंग्रेज और अंग्रेजी बनजानेसे हमें रुकना होगा।

अेक अंश तक अैसीही समस्या अुर्दूके विषयमें भी है। अुर्दू आज हिन्दी-भाषी जनताके लिये अुत्पीड़ककी स्थितिमें नहीं है परन्तु अेक समय वह निश्चय ही हिन्दी भाषी जनताकी अपनी संस्कृतिको दमन करके अुसपर लादी गअी थी। यदि भारतीय भाषा बोलनेवाली जनता आत्मनिर्णयके अधिकारको तर्क संगत सीमा तक प्रयोगमें लानेके लिये, अपने देशमें अेक मात्र अपनी ही भाषाको स्वीकार करना चाहती है तो अिसमें असंगत या अस्वाभाविक क्या है? यदि अुर्दू में हिन्दू या हिन्दुस्तानी लेखक हुये हैं तो यह अुन साहित्यकोंकी नैसर्गिक प्रवृत्तिका चुनाव नहीं कहा जा सकता और न यह अुर्दू की सांस्कृतिक श्रेष्ठताका प्रलोभन ही था। जिस समाजमें अुन साहित्यिकोंने जन्म लिया, जीविका अुपार्जनकी आवश्यकताने अुस समाजके सामने अुर्दू को आवश्यक रूपमें लाकर रख दिया था। अुर्दू को अुन्होंने जीविका अुपार्जनके साधनके रूपमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाया था और अुसी साधनसे (किसी अन्य माध्यमके अभावमें) अुनकी कलात्मक प्रवृत्तिकी अभिव्यक्ति भी हुअी। लेकिन कुछ साहित्यिकोंकी व्यक्तिगत परिस्थितियोंको राष्ट्रके भावी विकास और निर्माणके लिये आधार बना लेना युक्ति संगत नहीं हो सकता।

यदि अुर्दूको विदेशी भाषा न कह कर अिस देशकी ही भाषा और संस्कृतिकी पैदावार समझा जाय तो यह केवल हिन्दीका अपभ्रंश मात्र ही समझी जा सकती है। अपभ्रंशको मौलिक भाषाके समान महत्व देनेकी मांग करना कहां तक युक्ति संगत हो सकती है? और खास कर अुसके लिये अेक पृथक लिपिकी मांग करना? अुर्दू यदि अिस देशकी ही सांस्कृतिक पैदावार है तो अुसके लिये विदेशी लिपिका आधार क्यों दिया गया? अिसका अुत्तर यही है कि बाहरसे आकर अिस देशपर आक्रमण कर अिस देशमें अपनी व्यवस्था कायम करनेकी अिच्छा करने वाले कुछ लोगोंके लिये अिस देशकी लिपि सीखना असुविधाजनक था। अुनकी सुविधाके लिये अिस देशकी भाषाको, जैसा कि वे बोल या समझ सकते थे अुनकी लिपिमें लिखा गया और अुनकी सुविधाके लिये वह लिपि अिस देशकी जनतापर लादी गअी। आज अेक लम्बे संघर्षके बाद जब देशकी जनता आत्मनिर्णयका अधिकार पाकर अपने भविष्य मार्गका निर्णय करने जा रही है, अुस लिपिके प्रति जनताकी क्या भावना होगी?

सबसे अधिक प्रश्न लिपिका ही है। अुर्दूके नामसे भारतीय संस्कृतिके क्षेत्रमें जो कुछ अुत्पन्न हुआ है अुस सबको हम अपनी निधि समझते हैं। अुर्दूकी शुस्ता और चुस्त प्रणालीको हम हिन्दी लिपिमें ले चुके हैं, ग़ालिब, दर्द, जौक, इक़बाल और अकबरके साहित्यको केवल लिपिके परिवर्तनसे हम हिन्दी ही समझते हैं और यह सब हिन्दी लिपिमें परिवर्तित होकर हिन्दी साहित्य जगतमें आदरभी पा रहा है। परन्तु भविष्यमें भी दो लिपियोंके रूपमें एक सार्वजनिक असुविधाका कारण बनाये रखना हमें युक्ति सङ्गत नहीं जान पड़ता। लिपिका प्रश्न हलहो जानेके बाद भाषाके रूपका निश्चय जनताका प्रयोग स्वयं कर लेगा। भाषाका प्रयोग जनता परस्पर भावों और विचारोंको लेने—देनेके लिये करती है। आज दिनकी परिस्थितिमें वैदिक कालके शब्दोंका बहुत अधिक प्रयोग करना या फिरदौसीकी भाषा बोलना जनताको परेशान करना ही है। अैसी भाषा बोलने और लिखने वाले स्वयं ही जनता द्वारा अस्वीकृत हो जायंगे और एक सरल भाषा सार्वजनिक अुपयोगके लिये पैदा होती जायगी जिसमें विचारों और भावोंकी सूक्ष्मताओंको प्रकट करनेकीभी क्षमता होगी। परन्तु अिस प्रश्नपर विचार करनेके लिये हमें अपनी साम्प्रदायिक सङ्कीर्णता और दूसरोंके साम्प्रदायिक चुटीलेपनके भय, दोनोंसे ही मुक्ति लेनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टरके रुपये

: श्री भारतभूषण अग्रवाल :

बहुत दिन हुअे अेक आदमी हमारे होस्टलमें आया। देखनेसे वह दुखी और गरीब मालूम होता था, और आते आते डर-सा रहा था। पर अुसकी आँखोंमें वह दयनीय आर्द्रता नहीं थी जो भिखारियोंमें होती है—और यह भी नहीं लग रहा था कि वह पहले कभी भीख मांग चुका है। पर अिस बार वह निश्चित ही अिसी कामसे आया था। क्योंकि अुसके हाथमें अेक पर्चा था, और जैसे ही वह मेरे दरवाजेपर आया मैं फौरन समझ गया कि अुसकी मंशा क्या है?

यहाँ अेक बात बता दूँ। होस्टलमें आये-दिन अैसे भिखारी आते रहते हैं जो किसी-न-किसी बहाने दया और सहायताकी प्रार्थना करते हैं। विद्यार्थियोंको न जाने क्यों दयाका अवतार और धनका कुबेर समझा जाता है। मैं मानता हूँ कि दो आने पैसे किसी गरीबको दे देना हमारे लिए कोअी बड़ी बात नहीं—और मैं तो अैसा करना चाहता भी हूँ। पर रोज दो आने कोअी नहीं दे सकता, और फिर यह पहचानना भी मुश्किल हो जाता है कि किसे वास्तवमें सहायताकी जरूरत है, और कौन ढोंगी है।

सो अुसपर मैंने अेक कड़ी नजर डाली। और पुस्तकपर दुबारा ध्यान लगाते हुअे बोला: "क्या है?"

अुसने कमरेके बाहर अपने मैलेसे जूते उतारे और धीरे-धीरे काँपता अन्दर आकर अपने हाथका पर्चा मेरी तरफ बढ़ाया।

मैं अिन पर्चोंकी तरकीब भी खूब जानता हूँ। अुनपर मुझे कभी विश्वास नहीं होता। वे अकसर झूठे और बनावटी होते हैं। सो मैंने कहा: "बात क्या है, कहो!"

वह सहम गया, यह मैंने अनुभव किया। पर रहा चुप ही, और कागज थोड़ा और आगे बढ़ाया।

मुझे झल्लाहट आ गअी। खीझकर कहा: "भाग जाओ"—और हाथसे ताड़नका अिशारा कर फिर पढ़ना चाहने लगा कि कागजके छोरपर किये गये दस्तखतपर मेरी दृष्टि पड़ गअी।

मैंने तुरन्त वह कागज अपने हाथमें ले लिया, और वे दस्तखत फिर देखे। निश्चय ही वह डाक्टर रायके थे। अुनका खत मैं पहचानता हूँ। अिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेहको स्थान नहीं था। मैंने ध्यानसे अुस पर्चेको पढ़ा। लिखा था कि 'यह बड़े संकटमें है, बाल-बच्चे भूखे हैं, और आप ही की दयाका अिसे आसरा है। अिसकी सहायता करना हर किसीका फर्ज़ है।' आदि-आदि।

मैं पिघल आया। चुप-चाप आठ आने पैसे दे दिये, और अुस पर्चेपर अपना नाम भी दर्ज कर दिया। अैसा करते बड़ा संतोष हुआ।

वह धीरे-धीरे बोला—"साहब, औरोंसे भी अगर...। बड़ी दया होगी साहब!"

मैं घबराया कि कहीं यह अपना रोना न रोने लगे। झट होस्टलके मॉनीटरसे कहकर अेक नोटिस लिखवाकर दे दिया।

मुझे अुम्मीद है कि अुसे काफी धन मिल गया होगा।

× × ×

अब आज घूमता-घामता मिस्टर जैनके यहाँ जा पहुँचा। वे अफसर हैं, और कोठीमें रहते हैं। मेरे बड़े भाअीके द्वारा मेरी अुनसे मुलाकात है। देखकर बोले: "आओ, भअी, आओ! चाय पियो—"

और चाय आअी। मैं पीने लगा। वे राजनीतिकी चर्चा छेड़ बैठे।

कि क्या देखता हूँ, अेक आदमी अन्दर आ रहा है, पर यह देखकर कि साहब खाली नहीं हैं, लौटा जा रहा है। मुझे लगा कि अिसे पहले कभी देखा है।.....अरे हाँ?..... मैं ज़रा चमक पड़ा। यही तो है जो डाक्टर रायका कागज़ लेकर मेरे होस्टलमें आया था। अुसे यहाँ देखकर मुझे थोड़ा विस्मय हुआ। मैंने मिस्टर जैनको अुसे दिखाते हुअे कहा: "वह कौन है?"

अपनी बातको कटते देखकर अुन्हें जरा बुरा लगा। बोले: 'मेरे यहाँ नौकर था..... हाँ, जवाहरलाल.....'

मैं चौंका। मैंने कहा: "नौकर था! क्या मतलब?"

वे बोले: "अिसमें मतलबकी क्या बात है? क्या वह नौकर नहीं हो सकता?"

मैंने कहा: "हो क्यों नहीं सकता। पर कुछ दिन हुअे वह हमारे होस्टलमें भीख माँगने आया था।"

"अच्छा, तो वह तुम्हारे होस्टलमें भी गया था!" कहकर अुन्होंने अेक घूंट लिया, और थोड़ा हँसते हुअे बोले: "अुसका भी अेक मजेदार किस्सा है।"

मेरी समझमें नहीं आया कि किसीके भीख माँगनेसे क्या मजेदार किस्सा हो सकता है। सो जिज्ञासुभावसे अुनकी ओर देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे बोले : ' बात यह कि करीब तीन महीने हुअे अुसकी बूढ़ी माँ बहु बीमार थी। मुझसे बोला : 'साहब, अुसकी बड़ी बुरी हालत है।' मैंने कहा 'अिलाज कराओ। बोला : 'साहब, मेरे पास रुपये नहीं हैं, पर फिर दे दूँगा।' मैंने सोचा, सहायता करनी ही चाहिये। सो डाक्टर रायको बुला दिया। अुन्होंने खूब अच्छी तरह देखा और बड़ी बड़ी दवाअें दीं। दो-चार अिंजेक्शन भी लगे। पर वह बची नहीं। डेढ हफ़्ते बाद समाप्त।"

मुझे कहानीमें सार मालूम देने लगा। ध्यानसे सुनता रहा। मनमें आया कि अेक बात कहूँ, पर फिर चुप रहना ही अच्छा लगा।

"अब साहब, डाक्टर रायका बिल आया, पैंतीस रुपये। अेक महीना हुआ, छः महीने हुअे। मैंने कहा 'अरे चुन्नी! रुपये कब देगा?' बोला: 'साहब, कहाँसे दूँ।' मैंने कहा: 'तनख्वाहमेंसे काट लूंगा'। बोला: 'साहब, बाल-बच्चे मर जायेंगे। अैसा न कीजिये। मैं दे दूँगा।'

"और कुछ दिन गुजरे। अेक दिन देखता हूँ कि हजरत गायब हैं। अुस दिन रातको तनख्वाहके बारह रुपये मांगे थे। मैंने कहा: 'पहले डॉक्टर रायके रुपये चुका दो।' वह रोया गिड़गिड़ाया, बोला: 'साहब, गाँवमें भानजीका ब्याह है, बड़ी जरूरत है।' वह तो अुस समय मुझे सुबुद्धि आ गयी समझो, नहीं तो ये भी गये थे।" मैंने कहा: "अपने डाक्टर साहबसे कहकर माफ़ क्यों नहीं करा दिये?" वे बोले: "तुम भी कैसी बात करते हो। वे अपने मनमें क्या कहते, अिसमें कितनी हेठी होती?"

मैंने मनमें कहा 'हूँ' बोला: "तो फिर?"

"अब हज़रत, अेक दिन आये कि 'साहब, मुझे अेक दूसरी जगह नौकरी मिल रही है, आप सिर्फ यह लिख दें कि यह आदमी अीमानदार और मेहनती है।' मैंने कहा: 'पहले डॉक्टरके रुपये तो दो' बोला: 'साहब, तनख्वाह रख लीजिये।' मैंने कहा: 'बाकी?' बोला: 'साहब, बाल-बच्चोंपर रहम कीजिये।' तुम तो जानते हो, ये लोग कैसे मक्कार होते हैं। अिस तरह रहम करें तो कै दिन काम चले। मैंने डपटकर कहा—नहीं, रुपये तुम्हें देने ही होंगे, नहीं तो पुलिस...?

वह घबरा गया। रोता हुआ बोला: 'साहब, मैं कहाँसे दूँ।' मैंने कहा: 'अुधार लाओ।' बोला: 'साहब, मुझे कौन अुधार देगा?' मैंने झुँझलाकर कहा: 'तो चोरी करो, भीख मांगो। मैं क्या करूँ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हीं बताओ, मैं क्या करता? वह चला गया। छः-सात दिन बाद आकर रुपये दिये, मैंने टेस्टीमोनियल लिख दिया। पूछा: 'अब रुपये कहाँसे आये?' बोला: 'साहब, अब कुछ मत पूछिये।' मैं तो समझा था कि घरसे गड़े हुए निकालकर लाया होगा। यह तो तुमसे मालूम हुआ कि सचमुच भीख मांगकर लाया था।" मैं तो सोचता रह गया। वे पूछने लगे "क्यों?"

मैंने कहा: "आपको अेक बात और नहीं मालूम। अुसके पास जो सिफारिशी पत्र थे, वह भी तो डॉक्टर रायका लिखा हुआ था।"

वे अुछल पड़े। 'हूँ'—फिर धीरे-धीरे माथेपर बल पड़ आये, और चेहरा क्रोध-पूर्ण हो गया। "अच्छा, अैसी बात। नालायक वहाँ भी पहुँच गया। देखो न, मेरी पोजीशन कैसी खराब कर दी। अुन्होंने क्या सोचा होगा?— कितने मक्कार होते हैं ये लोग। जरा तमीज नहीं।"

मनमें मेरे न जाने क्या-क्या आया, पर बोला नहीं गया।

'प्रतीक' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीका महत्व और राष्ट्रभाषा

: डा. हेमचंद्र जोशी :

हिंदी प्राचीन समयसे सारे भारतकी अंतप्रांतीय भाषा रही है। चार पांच सौ बरस पहले मराठे संत, गुजराती साधु, तथा अन्य प्रदेशोंके महात्मा अपनी प्रांतीय बोलीके साथ साथ हिंदीमें भी भजन बनाते थे। अिससे स्पष्ट हो जाता है कि भारतकी सर्वप्रांतीय भाषा हिंदी थी जिसके द्वारा सब प्रांतवाले आपसमें बातचीत करते थे।

जब शाहजहांनाबादकी छावनीमें अुर्दू (टर्किश शब्द ओर्दू याने छावनी) की नींव पड़ी तो वह भी अेक प्रकारकी हिंदी थी क्योंकि अुसमें अरबी, फारसी और टर्किश भाषाके शब्द दालमें नमकके बराबर थे। असल हालत यह थी कि भारतके निवासियोंको अुस समय अिस बातकी आवश्यकता न थी कि विदेशियोंकी भाषा सीखते, बल्कि अुल्टा विदेशियाका भारतकी सर्वप्रांतीय भाषा सीखनेकी दरकार थी, जिसके बिना अुनका काम नहीं चल सकता था। यही कारण है कि अमीर खुसरो, अकबर आदिको हिंदी सीखनी पड़ी, अमीर खुसरो और अुनके पुत्र अब्दुर्रहीम खां खानखाना हिंदी भाषाके अुन्नायकोंमें गिने जाते हैं। अिनको हिंदी अिसलिए सीखनी पड़ी कि बिना हिंदी सीखे ये भारत-वासियोंसे बातचीत न कर पात और फलतः अिनका रोजमर्राका काम-काज ही बिना हिंदीके न चलता। आवश्यकताने अिन्हें तथा अन्य विदेशियोंको हिंदी सीखनेको बाध्य किया। चूंकि विदेशी मुसलमान अरबी अक्षरोंमें लिखनेके अभ्यस्त थे, अिसलिए अरबी लिपिमें जो हिंदी लिखी गयी अुसे अुर्दू कहा गया। शायर वलीके समकालीन मुल्ला वजहीने अेक पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सबरस' नामकी लिखी। अिसे अंजुमने-तरक्किए-अुर्दूने प्रकाशित किया है। अिसकी लिपि अुर्दू और भाषा सरल हिंदी है। जब अुसने कहा—

बेवफाई न कर खुदासूं डर।
जगहंसाई न कर खुदासूं डर॥

तो अिसे हिंदी कहें या अुर्दू समझमें नहीं आता। अेक दूसरे शायरका शेर पढ़िये—

अगर वह हो बुते हिंदू कमू अरानातको नंगा
भंवरमें देखकर जमुना अुसे गोतेमें जा गंगा॥

यह ठेठ हिंदीका ठाट है।

जब 'सौदा' फरमाते हैं :—

सावनके बादलोंकी तरह से भरे हुए।
यह वह नयन हैं जिनसे कि जंगल हरे हुए॥

तो अिसमें भी 'हिन्दी छुट और किसी भाषाकी पुट' नहीं है।

'मीर' साहब अिसी हिन्दीमें और अुर्दू लिपिमें लिखते हैं—

तेरी चाल टेढ़ी तेरी बात रूखी।
तुझे 'मीर' समझा है या कम किसूने॥

यह क्या है? ठेठ हिन्दी।

अिसी प्रकार जब गालिब कहते ह :—

पूछते हैं वह कि 'ग़ालिब' कौन हैं।
कोअि बतलाओ कि हम बतलांय क्या॥

तो वह भी अपने ख्यालात हिंदीमें जाहिर करते हैं। भला कौन हिंदीदां निम्न बामुहावरा शेरोंकी तारीफ न करेगा:—

'दाग' आंखें निकलते हैं वह।
अुनको देदूँ निकालकर आंखे॥
'दाग' का नाम सुनके वह बोले।
ऐसे अस्सी हजार फिरते हैं॥

अस्तु, मेरा कहनेका मतलब यह है कि अुर्दू अरबी-फारसी लिपिमें हिंदी है। अिसकी अुत्पत्ति मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद' साहबके शब्दोंमें ब्रजभाषासे है। और यह तथ्य शोधसे सत्य निकला है। जिस भाषाकी क्रिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वनाम विभक्ति आदि हिन्दीके हैं भला वह हिन्दीके सिवा क्या हो सकता है ! अिसलिअे स्वभावतः—हिंदुस्तानी या अुर्दूको क्योंकि हिंदुस्तानीमें अुर्दूसे बड़े कठिन शब्द ठूंस दिये गये हैं—जिनका अर्थ भलेभलोंकी समझमें नहीं आता। अुर्दूमें हिंदीके अधिकांश शब्द मिलते यदि कुछ लोग ज़िदसे अिसमें अरबी फारसीके कठिन शब्द न भरते। फलतः हिंदुस्तानी या अुर्दूमें अैसे शब्द आ गये हैं जिन्हें अधिकांश देशवासी नहीं समझते। स्वयं बंगाल गुजरात महाराष्ट्र, आसाम और अुड़ीसाके मुसलमान हिन्दुस्तानीके अरबी-फारसी शब्द नहीं समझ पाते। स्वयं पाकिस्तानमें अुर्दू नहीं चल सकती क्योंकि बंगालके मुसलमान बंगाली बोलते हैं-और अुसी भाषामें लिखते हैं। अिन मुसलमानोंकी संख्या प्रायः तीन करोड़ है। अुधर पंजाबमें मुसलमान पंजाबी बोलते ह और गलत अुर्दू लिखते हैं। सिंधमें सिंधी है जिसकी क्रिया विभक्ति आदि सभी सिंधी है। अतः देखना चाहिअे कि पाकिस्तानमें जो दो आर्य शब्दोंसे बना है अुर्दूको क्या सफलता मिलती है ? (पाक वैदिक शब्द है, यह पाकेन मनसा आदिमें कअी बार आया है ! और स्तान, स्थानका अीरानी अपभ्रंश है)

भारतमें तो हिंदीके अतिरिक्त कोअी भी भाषा राष्ट्रभाषाके रूपमें चल ही नहीं सकती। और अिस हिंदीमें भी अुन शब्दोंका बाहुल्य रहेगा जो भारतके नाना प्रांतोंमें बोली जानेवाली भाषाओंमें समान होंगे, तथा अैसे शब्द संस्कृतसे ही लिये जा सकते हैं। भले ही अिनमें फारसीके अुन शब्दोंका सम्मिश्रण हो जो वैदिक तथा संस्कृतसे मिलते हैं पर और किसी भाषाके नये शब्द अिसमें तभी आयेंगे जब बिना अुनके काम न चले। अैसे कुछ शब्द हमें अंग्रेजीसे लेना पड़ेंगे और जीवित भाषा हिंदीने बहुतायतसे अपनाये भी हैं। अरबी तथा फारसीमें ऐसे वैज्ञानिक और प्रचलित शब्द अंग्रेजी या फ्रेंचसे लिए गये हैं। तब हमें अिनसे शब्द लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टण्डन

श्री मौलिचन्द्र शर्मा

आजसे ५० वर्ष पूर्व सारे उत्तरभारतमें सरकारी दफ्तरों व कचहरियों आदिमें कहीं हिन्दीका नामतक न था। अरबी लदी और फारसीनिष्ठ उर्दू सब जगह प्रतिष्ठित थी। पटनेसे पेशावरतक उसीका चलन था। जहाँ वकील अदालतोंमें वह सजावटी—मुरस्सर—उर्दू बोलते और लिखते थे, जो १००० मेंसे ९९९ देशवासियोंके लिअे अेकदम दुर्बोध थी। सभ्य नागरिक आपसमें मिलते, तो आदाब अर्जसे आरम्भ कर बहुतकरके खुदा हाफिज़पर समाप्त करते। अेक दूसरेके घरबारकी बातचीत पूछते, तो वालिदसाहेब और हमशीरासाहेब, बरखुर्दार अजीज, अजजानकी झड़ी लग जाती। बड़े बच्चोंको उपदेश देते, कि "शीनकाफसे दुरुस्त" जबान बोलना सीखें। त्योहारों और विवाहादि तकमें, गजलें गाना सभ्यताका चिन्ह माना जाता। भाव-भरे पुराने हिन्दी-गीत तो गँवारू समझे जाते थे। आजसे ४० वर्ष पूर्व, बचपनमें जब मैंने मदरसेमें फारसीकी जगह संस्कृत पढ़नेका आग्रह किया तो हमारे मुहल्लेके अनेक सज्जनोंने मेरे पिता तथा अन्यगुरुजनोंको बड़ी सहानुभूतिपूर्वक समझाया, कि लड़केकी जिंदगी बरबाद न करें। बिना फारसी पढ़े उर्दूपर कुदरत हासिल नहीं होती; और बिना उर्दू जाने, क्या बगलमें पोथी दबाकर, कथा बाँचता फिरेगा? परन्तु जब वे न माने और मैं और अनेक लड़कों सहित उर्दू पढ़ने लगा, तो वे दया और आश्चर्य-भरी निगाहोंसे हमें बर्बाद होता देखते, और जब कभी अन्तर उबलही पड़ता, तो हाथ फैलाकर कहते—'बेटे, पछताओगे!'

अैसे घोर समयमें जिन लोगोंने हिन्दी-भाषाकी रक्षा और प्रचारका काम किया उन्होंने अिस राष्ट्रके निर्माणमें कितना बड़ा भाग लिया, यह हमलोग अब आंक सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस क्षेत्रके अनेक कार्यकर्ताओंमेंसे आज जो हमारे बीच वर्तमान हैं, अुनमें सबसे बड़ा नाम है श्री श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डनका। हिन्दी आन्दोलनको नियमितरूपसे अेकाग्रमनसे अपना प्रथम ध्येय बनाकर, संगठित करने और चलाते रहनेका श्रेय, अकेले श्री टण्डनजीको है। सम्मेलन अुनकी अेकनिष्ठ तपस्याका फल है।

हिन्दी-प्रचारका काम तो, अनेक क्षेत्रोंमें, अनेक प्रकारसे चलरहाथा। अुसके पीछे राष्ट्रीय जागरणकी लहर थी। धार्मिक-क्षेत्रमें आर्य समाज और सनातन धर्म सभा आदि हिन्दी और संस्कृतका प्रचार करती थीं। स्कूल, कालेजोंमें भी, संस्कृत-हिन्दीका पठन-पाठन बढ़ रहा था। स्थान-स्थानपर हिन्दी-प्रचारकी संस्थाअें काम कर रही थीं। हिन्दीके समाचारपत्र आदि निकलनेको थे और अच्छी अुन्नति कर रहे थे। कलकत्ता और बम्बअीमें हिन्दीके पत्र और पुस्तक प्रकाशनका काम आरम्भ हो गया था। तुलसी, सूर तथा पुराणों और महाभारतके हिन्दीके अनुवाद सहस्त्रोंकी संख्यामें गांवोंमे फैल रहे थे। फिर भी सार्वदेशिक संगठनके रूपमें हिन्दी-प्रचारका कार्य सम्मेलन द्वारा ही हुआ, और अुसकी चक्की चलानेका कार्य श्री टंडनजीने ही किया है। सम्मेलनका नाम आते ही, श्री टण्डनजीकी भव्य मूर्त्ति आंखोंके सामने आजाती है। वे और सम्मेलन अभिन्न हैं।

टण्डनजीने देशके अुत्थानमें हिन्दीका स्थान पहचाना, और अिसीके लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। आज सम्मेलन जो कुछ है अब तक वह जो कुछ कर सका है, हिन्दी जिस अूँचे स्थान पर पहुँच रही है, अिस सबका बड़ा श्रेय अिन महापुरुषको ही है।

टण्डनजी कर्मयोगी हैं। थोड़ा-सा भी जो अुन्हें जानता है, वह जानता है कि अपने जीवनमें कितनी सादगी, सस्तापन वे बरतते हैं। अुनकी अेक पुरानी लोअी है, जिसे वे जाड़ोंमें ओढ़ते हैं। अुनके कितने घिसे देर हुअी। अब अुन पर सूती गोट लगवा ली गअ है। खादीकी धोती फट जाती है तो अुसकी बंडिअें और रूमाल बनवा लिये जाते हैं। वे अपने अूपर खर्च नहीं करते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुनके भोजनके भी कुछ विचित्र नियम हैं। वे दूध या दूधसे बनी कोअी वस्तु नहीं लेते। कहते हैं—"मैं शाकाहारी हूँ, यह पशुजन्य वस्तु मेरा खाद्य नहीं हो सकती। गौका दूध, गोवत्सके लिए है, मेरे लिअे नहीं।" अतः मक्खन और घी भी वे नहीं लेते! कभी चिकनाअी चाहिअे तो तेल लेते हैं। नमक भी वे नहीं खाते—वह खनिज और पार्थिव है, मनुष्यका भोजन नहीं। चीनी भी वे नहीं लेते। चीनी बनानेमें मीठेके अनेक गुणकारी तत्व नष्ट हो जाते हैं। वह केवल स्वादकी वस्तु है—भोजन नहीं। अतः मीठेकी चाह होने पर, गुड़ या शक्कर लेते हैं। मिर्च, खटाअी, मसाला राजस भोजन है। वे भी त्याज्य हैं। अब सोचिअे, अुनका भोजन कैसा होता होगा। दूध, मक्खन, घी, चीनी, नमक, मिर्च, खटाअी मसाला छौंक सब वर्जित। अुबले हुअे बिना नमक, मसालेके शाक, कभी गुड़का मीठा, सूखे फुलके, सूखे दाल चावल। और यह भोजन वे निरंतर ३० वर्षसे करते आ रहे हैं। अिस तितिक्षाने अुनके मानसमें आर्य दृढ़ता पैदा की है। फल खाकर टण्डनजी प्रसन्न होते हैं। दाख और बादाम भी अुन्हें प्रिय हैं, परन्तु समय पर और थोड़ेसे। चाय वे नहीं पीते जबतक कोई कारण न हो। मैंने अेकदिन "काफी"के लिअे आग्रह किया तो लेली। यह अुनका प्रेम था। कभी औषधिके रूपमें पानभी लेते हैं; परन्तु कत्था-चूना लगाकर नहीं, सादे पत्ते लेकर चबा जाते हैं। देखकर आश्चर्य-सा होता है।

पहनते हैं वे खादी; और जैसा पहलेही बताया, कपड़को वे तबतक नहीं छोड़ते, जबतक तार-तार न हो जाय जूतेभी किरमिचके पहनते हैं। चमड़के लिअे पशुओंकी हत्या की जाती है, अिसी कारण वे चमड़ेका व्यवहार नहीं करते।

टण्डनजी बड़े दृढ़ हिन्दू हैं। वे अुन दुर्बल-हृदय राष्ट्रवादियोंमेंसे नहीं हैं, जिन्हें हिन्दू कहलाते डर लगता है। गंगा-स्नानकर वे बड़े प्रसन्न होते हैं। मैं कअीदिन प्रयाग रहकरभी रोगी होनेके कारण गंगास्नान करने न गया तो टण्डनजीको आश्चर्य हुआ।

वे जाति-पांतिको, हिन्दुओंके पतनका कारण मानते हैं और चाहते हैं कि समाजका साम्यके सिद्धान्तपर पुनः संगठन किया जाअे। कअी बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुनके मनमें यह प्रेरणा आती है कि अब शेषजीवन हिन्दू-समाजके अुद्धारमें लगा दें। यदि हिन्दी अुत्तर-भारतके समाजकी मातृभाषा और देशकी राष्ट्रभाषाके रूपमें प्रतिष्ठापित होजाअे; और अिसकामसे देश अिन्हें निश्चित करदे तो वे निःसन्देह हिन्दू-समाजके नव-संगठनका कार्य अुठावेंगे।

राजनीतिमें अुनका अेक विशेष स्थान है। वे शुद्ध राष्ट्रवादी हैं। अुनकी राष्ट्रीयता किसीके सामने झुकना नहीं जानती। अुन्हें अपने अूपर विश्वास है; और जहाँ अुनकी बुद्धि अेक बातको स्वीकार नहीं करती वहां वे अपना मत दबाकर नहीं रखते। हिन्दीके विषयमें महात्मा गान्धीके विरोधमें खड़े होना अुनके नैतिक साहस और दृढ़ताका अुदाहरण है। अिसी प्रकार मुस्लिम तुष्टि और अहिंसा-सिद्धान्तके राजनीतिमें स्थान-प्रयोगका खुला विरोध कर, अिस समय अुन्होंने, देशका महान अुपकार किया है। अिस वर्षमें कअी बार अ० भा० कांग्रेस कमेटीमें, अुनकी अकेली आलोचनात्मक गूँज का तालियोंकी गड़गड़ाहटसे स्वागत हुआ है। परन्तु जब मतगणनाका समय आया, तब तालियाँ बजानेवालोंके हाथ टण्डनजीके पक्षमें न अुठ सके यही है, तंत्री जीवनकी विडम्बना।

टण्डनजीके लिअे, सार्वजनिक जीवन सेवाका क्षेत्र है। यश-प्राप्तिका साधन नहीं। पिछले दो वर्षोंमें युक्तप्रान्तीय असेम्बलीकी प्रमुखता अुनपर भार-सी रही है। न जाने कितनी बार अुन्होंने अिस मानको अुठा-अुठाकर फेंका है। यदि अुनके स्वच्छन्द जनसेवाके पक्षमें यह व्याघात सिध्द हो, तो अुन्हें यह नहीं चाहिअे। लोकतंत्रके अितिहासमें यह पहला अुदाहरण है, कि सभा-प्रमुख राजनीतिमें भाग लेता रहे। यह अुन्हींका अुदात्त चरित्र है, जिसके कारण यह सम्भव हुआ है, कि अेक ओर कांग्रेसकी—जिसके हाथमें शासन है—करारी आलोचना और दूसरी ओर मुस्लिम लीगका घोर विरोध करते हुअेभी कोअी सारी सभाका—प्रत्येक सदस्यका—विश्वासपात्र रह सके। वे हमारे सार्वजनिक जीवनमें अद्वितीय स्थान रखते हैं।

—साप्ताहिक 'देशदूत' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुद्बोधन

श्री रामावतार 'शुक'

जाग, युग-युगसे अुपेक्षित, जाग !

× × ×

सभ्यताने जुल्म कितने
आज तक तुमपर ढहाये !
सह गये जाने न कैसे,
मूक रह तुम सिर झुकाये !

जाग, जगके अमित शोषण,
द्वेषकी दारुण कहानी !
सभ्यताके दम्भियोंके—
पापकी जलती निशानी !

मानवी अधिकारके क्या तुम न हामी ?
भोगते तबसे अरे जो तुम गुलामी ?
सजग होकर देख जगकी चाल !
जाग युग-युगसे अशिक्षित, जाग ।

जाग युग-युगसे अुपेक्षित जाग ।

प्रति दिवस होती सभायें !
सोचते सब निज दवायें ।
किन्तु तेरा नाम भी तो
हाय, ये लेने न पायें !

सजग हो जा, अब न चुप रह ।
सह चुका तू, अब नहीं सह ।
स्वत्व अपना प्राप्त कर अब ।
जाग, हे युगसे अरक्षित, जाग ।

× × ×

जाग युग-युगसे अुपेक्षित, जाग !

'विश्व-वाणी' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा :
अेक परिचय

:श्री अभिमन्यु :

हिन्दीके वर्तमान पद और गौरवके लिये देशकी जिन संस्थाओंने काम किया है, अुनमें काशी नागरी प्रचारिणी सभाका स्थान सबसे आगे है—काशी नागरी प्रचारिणी सभाकी स्थापना सन् १८९३ में हुअी थी। यह वह समय था जब १८५७ के असफल विद्रोहके लगभग दो पीढ़ी बाद हमारा देश फिर सिर अुठा रहा था। १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेस बनी थी। राष्ट्रीय जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें अेक नअी चेतना आ रही थी। हिन्दी साहित्यके क्षेत्रमें अिस व्यापक जागृतिके प्रतिनिधि स्व० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा भारतेन्दु युगके अन्य गद्य और पद्यकार थे जिनकी रचनाओंके अप्रतिम ओज, प्रवाह और ठेठपन पर आज भी हम गर्व करते हैं।

नागरी प्रचारिणी सभाकी स्थापनाकी प्रेरणा स्वयं भारतेन्दुजीसे मिली थी। भारतेन्दुजी कट्टर राष्ट्रवादी थे, ब्रिटिश सरकारकी जितनी कटु, तीव्र और व्यंग्यमय आलोचना अुन्होंने की अुतनी शायद ही किसी अन्य मृत या जीवित साहित्यिकने की हो। भाषा और साहित्य अुनके लिये राष्ट्रीयताके प्रचारके साधन अगर नहीं थे तो कुछ भी नहीं थे। हिन्दी अुनके लिये स्वाधीनताकी और ब्रिटिश-विरोधकी नयी भावनाके प्रचारका सर्वोत्कृष्ट वाहन थी, अिसीलिये अुसके अुन्नयन और विकासके लिये अुन्होंने अपनी लाखोंकी सम्पत्ति निहायत फक्कड़पनेसे फूँक दी।

अुनकी मृत्युके आठ वर्ष बाद मार्च १८९३ में अुन्हींकी रचनाओंसे अनुप्रेरित क्वींस कालेजके आठवें-नवें दर्जेके कुछ विद्यार्थियोंने नागरी प्रचारिणी सभाकी नींव डाली। अुद्देश्य हिन्दीकी अुन्नति और प्रचार था। सर्वश्री गोपाल प्रसादजी और रामनारायणजी मिश्रके प्रयत्नोंसे जुलाअीमें सभाकी बैठक हुअी जिसमें नियमादि बनाये गये और श्यामसुन्दरदासजी मंत्री नियुक्त हुअे। ये सब सज्जन अुस समय स्कूल कालजमें पढ़ते थे।

सभाका आरम्भ किस छोटे पैमानेपर हुआ था यह अिस बातसे मालूम हो जायेगा कि स्थापनाके समय अुसकी कुल पूँजी अेक रुपया चौदह आना थी और विधानमें कहा गया था कि — "मंत्री बिना प्रबन्ध कर्तृणी सभाकी आज्ञाके दो आना खर्च कर सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० श्यामसुन्दरदास, पं० रामनारायण मिश्र, श्री. शिवकुमारसिंह तथा अनेक अन्य हिन्दी भाषा-प्रेमियोंके सद्प्रयत्नोंसे यही संस्था आज अितनी बड़ी हो गअी है। पिछले ५२ वर्षोंके अपने अितिहासमें राष्ट्र और हमारी भाषाकी अुसने महान सेवा की है। अुसकी स्थापनाके समय तमाम सरकारी दफ्तरों-कचहरियों आदिमें फारसीका बोलबाला था। जनता फारसीको न समझती थी न बोलती थी, न ही अुसके राज्य अुधका कोअी सांस्कारिक या सांस्कृतिक सम्बन्ध था। अिसलिये जनताकी अुन्नति और आगतिका माध्यम होनेके बजाय अुसकी मानसिक चेतनाके विकासकी ओर सामाअिक जीवनमें न्याय-प्राप्तिकी राहमें वह बाधक हो रही थी।

सभाने हिन्दीके प्रचारका बीड़ा अुठाया। हजारों आदमियोंके दस्तखत कराके अर्जियाँ दीं। अुसने ६०,००० हस्ताक्षर अिकट्ठे किये थे। अुसके अनवरत अुद्योगसे सन १९०० से युक्तप्रान्तकी कचहरियों, दफ्तरों आदिमें विशेष रूपसे माल विभागमें हिन्दीको स्थान मिलने लगा स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयोंमें भी हिन्दीका अध्यापन होने लगा। हिन्दीको सुगम, लोकप्रिय और अन्तरप्रांतीय बनानेके लिये सभाके प्रयत्नोंसे अुसकी लिपिमें सुधार हुअे, अुसकी अेक संकेत-लिपि (शार्ट हैंड) का निर्माण हुआ तथा टाअिप-राअिटिंग सिखानेके लिये अेक विद्यालय भी खोला गया प्रचारके लिये 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' 'सरस्वती' तथा 'हिन्दी' के नामसे पत्र-पत्रिकाअें प्रकाशित की गअी। (हिन्दी जगत्में युगान्तर अुपस्थित करनेवाली मासिक 'सरस्वती' का जन्म पहले पहल नागरी प्रचारिणी सभाके ही तत्वावधानमें हुआ था) हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थापनाकी प्रेरणा भी ना० प्र० सभाने ही दी थी, बल्कि साहित्य सम्मेलनका प्रथम अधिवेशन भी (१९१० में) महामना पं. मदन मोहन मालवीयकी अध्यक्षतामें ही हुआ था।

सभाकी ओरसे अबतक लगभग २५० छोटे बड़े ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें कुछ तो जैसे 'शब्द सागर' (विशाल आकारके ४, २६८ पृष्ठ) 'पृथ्वीराज रासो,' (२२ भाग, पृष्ठ संख्या ३, २५४) 'वैज्ञानिक कोश' और हिंदीका बड़ा 'व्याकरण' बहुत ही मूल्यवान हैं। अिनके अतिरिक्त बीसों पुराने अैतिहासिक और अप्राप्त ग्रन्थोंका—हमारी क्लासिक्सका—वर्षोंके परिश्रमसे अुसने प्रकाशन और अुद्धार किया है। देशके विभिन्न प्रान्तों और रियासतोंमें प्राचीन ग्रंथोंके खोज-कार्यके द्वारा सभाके कार्यकर्ताओंने कअी हजार ग्रन्थोंका नाम और पता लगाया है। सभाके पुस्तकालयमें सूचीवार अुनके नाम और पत सुरक्षित हैं; साथ ही १००० से अूपर हस्त-लिखित ग्रन्थ भी रखे हैं। हिन्दीका वर्तमान विशाल भवन सभाके अिसी ठोस कार्यकी नींव पर खड़ा हुआ है।

सभाका कार्य-क्षेत्र अब काफी बड़ा हो गया है। अेक रुपये चौदह आनेकी पूंजीसे आरम्भ होनेवाली संस्थाके पास आज लगभग ६० हजारकी लागतका अेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना दो-मंजिला भवन है। सभाके 'आर्यभाषा पुस्तकालय' में हस्तलिखित पुस्तकोंके अतिरिक्त प्रायः ३०,००० छपी हुअी पुस्तकें हैं। देशमें हिन्दीका यह सबसे बड़ा पुस्तकालय है। पुस्तकालयके साथ-साथ सभाका अेक सुन्दर 'कलाभवन' भी है, जिसके संगठनका श्रेय हिन्दी साहित्यके प्रसिद्ध कलाविद् श्री रायकृष्णदासको है। 'कलाभवन' चित्र, मूर्ति और पुरातत्वके तीन विभागोंमें बँटा हुआ है। अिसमें राजस्थानी, पहाड़ी तथा मुगल शैलियोंकी चित्रकलाके कुछ बहुतही सुंदर नमूने तथा प्राचीन मूर्तियाँ हैं। दूर दूरसे आकर विद्यार्थी अिस सामग्रीका अुपयोग करते हैं।

अिस राष्ट्रीय संस्थाका कार्य प्रचार और प्रकाशकी चकाचौंधसे दूर, चुपचाप चलता रहा है। हिन्दीको आज राष्ट्रीय और अंतर-प्रांतीय भाषा होनेका गौरव प्राप्त है। लेकिन यह कितने लोग जानते हैं कि हिंदीको यह गौरव दिलानेके लिये अुसे समुन्नत और सम्पन्न बनानेके लिये, सभाने कितना कार्य किया है? देशप्रेम और स्वतंत्रताकी भावनाका प्रचार करनेमें जो कार्य राष्ट्रीय काँग्रेसने किया है, वही कार्य हिन्दीको पुष्ट और लोकप्रिय बनानेमें नागरी प्रचारिणी सभाने किया है।

राष्ट्रीय आन्दोलनके आरंभिक दिनोंमें हिंदी हमारी राष्ट्रीयताके प्रचारका मुख्य साधन थी। भारतकी स्वाधीनता और कला-संस्कृति-प्रेमी आत्माको जगानेमें अुसने महत्वपूर्ण कार्य किया है। काँग्रेसके कार्योंसे जिस प्रकार देशकी अनेक पिछड़ी हुअी जातियों और वर्गोंमें जातीय प्रेमकी भावना जगी है, अुसी प्रकार हिंदीके प्रचारसे देशकी अन्य भाषाओंके विकासमें योग दिया है। अिसका अधिकांश श्रेय नागरी प्रचारिणी सभाको है।

'नया साहित्य'से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंकामें हिन्दी प्रचार

: श्री सुशील कुमार साहित्यरत्न :

प्रसन्नताकी बात है कि लंकाकी सरकारने हिन्दीको अेक वैकल्पिक विषयके रूपमें स्वीकार कर लिया है। यहाँकी 'प्राचीन परीक्षा' जिसकी आखिरी अुपाधि है पण्डित में विद्यार्थी सिंहल, पाली, हिन्दी लेकर बैठ सकते हैं। सारे द्वीपमें अब हिन्दी पढ़ाअी जायगी।

यहाँके विश्व-विद्यालयमें भिक्षु सीवली हिन्दी पढ़ाते हैं, आप सिंहलीके अेक प्रसिद्ध विद्वान हैं। श्रीमद्भगवद्गीता, यशोधरा आदि कअी ग्रन्थोंका सिंहल भाषामें अनुवाद किया है। अभी हालहीमें आपने सिंहलीमें "हिन्दी भाषाव" नामसे पुस्तक लिखी है जिसमें हिन्दीके विषयमें बहुत आवश्यक जानकारी दी है। सिंहलके विद्यार्थियोंके लिये यह बहुत अुपयोगी पुस्तक है और आजकल अिसकी खूब बिक्री हो रही है। जनवरी मासेसे विद्यालंकार परिवेणमें भी आप प्राचीन-परीक्षाके विद्यार्थियोंको हिन्दी पढ़ायेंगे।

भिक्षु द. रतनसारने राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक बोधिनीकी सिंहलीमें अर्थ-कथा लिखी है। आप द. भा. हि. प्र. सभाकी पहिली पुस्तककी भी अर्थकथा लिख रहे हैं।

पण्डित तेजराज तिवारी श्री.पेरकुम्बा परिवेणमें हिन्दी पढ़ा रहे हैं। अिस साल वहाँ शिष्योंकी संख्या बढ़ने वाली है।

भाअी गिरीशकुमारजी माहरमें श्री धर्मरतन परिवेणमें हिन्दी पढ़ा रहे हैं। फरवरी ४८ की राष्ट्रभाषा परीक्षामें कुछ शिष्योंको बठानेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये आपने तैयार किया है। अभी तक आपके पास कुल तीन ही शिष्य पढ़ रहे थे किन्तु अगले साल संख्या बढ़ने वाली है क्योंकि कुछ प्राचीनके विद्यार्थी भी शामिल होंगे।

हिन्दी अभी तक केवल बौद्ध केन्द्रों तक पहुँच सकी है। आगे बढ़ानेके लिये बहुत प्रयत्न करना है। भिक्षु लोग अिसमें दिलचस्पी ले रहे हैं यह हर्षकी बात है। विद्यालंकार परिवेण बौद्धोंका सबसे बड़ा केन्द्र है। पहले पहल हिन्दी यहींसे शुरू की गअी। यहाँके आचार्य हिन्दीकी प्रगतिमें रस ले रहे हैं। फरवरीकी अगली परीक्षामें यहाँसे ६ विद्यार्थी बैठ रहे हैं। अिस साल भयंकर बाढ़के आ जानेसे तथा छुट्टियोंके कारण बहुतसे शिष्य परीक्षामें शामिल न हो सके। हिन्दी, पढ़ानेमें माध्यमकी कठिनाअी है, अँगरजी और संस्कृतके माध्यमसे काम चलाया जा सकता है किन्तु अिससे बहुतसे शिष्य लाभ न अुठा सकेंगे। अध्यापकको सिंहलीका ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादू वह जो सिरपर चढ़कर बोले

'दक्खिनी हिन्द' मद्रास सरकारका हिन्दुस्तानीमें प्रकाशित होनेवाला पत्र है। दिसंबरके अंकमें अुसके सम्पादक तथा दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके अेक मान्य कार्यकर्ता श्री रामानन्द शर्माने रैहाना बहन द्वारा बापूको लिखे गये पत्रपर सम्पादकीय लिखा है। हम अुसे अुद्धृत कर रहे हैं। पाठक देखें कि हवाका रुख किधर है। —सम्पादक

श्रीमती रैहाना बहन तैयबजीका बापूको लिखा गया पत्र अत्यंत महत्व-पूर्ण तथा विचारणीय है। प्रत्येक भारतवासीको ठंडे दिलसे अिसपर गौर करना चाहिये। राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपिका प्रश्न दिन-ब-दिन पेचीदा होता जाता है। महात्माजी 'हिन्दुस्तानी'की रट लगाये हुये हैं और शिक्षित जन-मत 'हिन्दी'की ओर ढुलता चला जा रहा है। अुसी प्रकार अधिकांश लोग अब अुर्दू लिपिको राष्ट्र-लिपिके साथ बिठाना नहीं चाहते।

अैसे मौके पर रैहाना बहनका यह पत्र अुज्ज्वल नक्षत्र-सा विचाराकाशके क्षितिजपर आ खड़ा हुआ है, जिसकी ओरसे आँखें फेर लेना मुश्किल है। पत्र लेखिका सुप्रसिद्ध देश-प्रेमी अब्बास तैयबजीकी सुपुत्री हैं। गांधीजी और गांधीवादका जो अद्भुत प्रभाव आपके अन्तर-बाह्यपर पड़ा है, वह जग-जाहिर है। भक्त-हृदय अक्सर भावुकताकी आँधीमें अस्त-व्यस्त होता रहता है, रैहाना बहनका यह पत्र अिस आरोपको एकदम निस्सार साबित कर देता है। आपने जिस नम्रता, जिस व्यग्रता और जिस विचार-शीलतासे अुर्दू लिपिका निराकरण और देवनागरी लिपिका समर्थन किया है, वह अेकबार अुर्दू लिपिके कट्टर समर्थक को भी चौंका देता है।

"……खुदाके लिये आप मुसलमान हिन्दुस्तानियोंको अपने ही मुल्कमें परदेशियोंकी तरह रहनेका प्रोत्साहन न दीजिये !……"

सचमुच बहनका यह अनुरोध देश प्रेमियोंके दिलको हिला देता है। और पाठक जब यह भी जान लेता है कि लेखिका भक्त-प्रवर 'रसखान'की तरह भारतीय संस्कृतिकी सरितामें सिर-से-पैर तक डूबी हुअी है, जिन्हें आचार्य काकासाहब अैसे सत्पुरुष और विचारकका विशेष साहचर्य और सांगत्य प्राप्त है और जो बंबअीकी हिन्दुस्तानी बोर्डमें सेक्रेटरीका भी काम कर चुकी हैं, तब उसके तिलमिलाता अुसका हृदय अेक निर्मल निष्ठाका आधार पा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात तो सही है; संरक्षण और अलगावकी जिद पकड़कर मुसलमानोंने 'पा
स्तान' खड़ा कर लिया और आज वे अधिकांशमें हमारे राष्ट्र-जीवनसे द
दूर जा पड़े हैं। राष्ट्रका बहुमत अुनकी ओर आशंकाकी दृष्टि डालने ल
है। ऐसी हालतमें राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपिका सवाल अिस संकटको अ
भी बढ़ा देता है। सच्चे मुसलमानोंकी अिस दयनीय स्थितिसे रक्षा होनी
चाहिये। अन्यथा सचमुच भारतमें अुनका जीवन दुर्भर हो जायेगा। अु
तो अब सभी तरहके अलग-अलगावसे अलग होकर दूध-चीनीकी तरह रा
जीवनके साथ घुल-मिलकर अेक हो जाना चाहिये, जिससे कहीं कोअी अु
अँगली न अुठा सके।

महात्मा गांधी सूक्ष्म-दृष्टिवाले लोक-नायक माने जाते हैं। लोक-मत
परख अुन्हें अद्भुत रूपसे रहती आअी है। लेकिन हिन्दुस्तानी और
लिपियोंके सवालपर जागृत जनमत अब अुनसे विमुख होता जा रहा
रैहाना बहनके पत्रका जो जवाब अुन्होंने 'हरिजन-सेवक'में दिया
वह अुनके अधिकतर अनुयायियोंके भी गले नहीं अुतरता है—अु
हृदयको नहीं छूता है।

दक्षिणकी हालत और भी विचित्र । बहुतसे प्रचार
प्रेमी, जिन्होंने पहले अत्यधिक अुत्साहके साथ दो लिपियोंका समर्थ
किया था आज कुछ सोच विचारमें पड़ गये हैं। अुनका जो
शिथिल हो गया है।

अैसी हालतमें "बापूजी"का जोर कब तक कायम रहे
कहा नहीं जा सकता। संभव है, हवाका यह रुख अुन्हें भी खामो
कर दे।

अतअेव प्रत्येक विचार-शील व्यक्तिके लिये आज यह आवश्यक हो
है, कि रैहाना बहनके पत्रपर वह गंभीरतासे विचार कर अपना स्पष्ट निर्णय दे

यह सच है कि जन-मतका दावा आज आँसू पोंछनेके ही काम आ
है। शिक्षित-जनता दालमें नमकके बराबर भी नहीं है; और जन-जीवन
आन्दोलन-कारी नेताओंके हाथोंकी कठ-पुतली मात्र है। लिपिके प्रश्न
शिक्षित-वर्गका ही मत मूल्यवान माना जायेगा और यह तो साफ
कि अुर्दू-लिपिके विरोधमें अुसका स्वर अत्यंत तीव्र हो अुठा है।

यह भी सच है कि अुर्दू-लिपि अूपरसे जैसी आसान प्रतीत होती
सीखनेमें वैसी ही मुश्किल बन जाती है। जब तक अरबी-फारसी शब्द
ठीक-ठीक ज्ञान न हो जाय, अिस लिपिका साधिकार प्रयोग नहीं किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। और अुसका भूलना तो अेक अभिशापके ही बराबर है। दस दिन अभ्यास छूटा कि फिरसे 'अलिफ, बे, पे, ते, टे'की रट लगानी पड़ती है!

अिस तरह यह ध्रुव है कि देवनागरीके साथकी दौड़में अुर्दू-लिपिका दम टूट जायेगा।

अिस दिशामें दक्षिणकी स्थिति ध्यानमें रखने लायक है। तामिल लिपिको छोड़कर बाकी तीन—तेलगू, कन्नड़ और मलयालम—लिपियाँ देवनागरी लिपिकी शैलीपर चलती हैं। ध्वनि, शब्द-रचना और अुच्चारणमें विशेष कोअी अन्तर नहीं है। अतः देवनागरी लिपिके अभ्यासमें अुन्हें विशेष तकलीफ नहीं अुठानी पड़ती है। साथ ही संस्कृतिके पारंपरिक प्रचारसे देवनागरी पहलेसे कुछ प्रतिष्ठित भी हो गअी है। अिधर सन् १९१८ से देवनागरी लिपिके द्वारा ही राष्ट्र-भाषाका प्रचार किया गया है। यों जनताकी वह घरेलू चीज बन गअी है। देवनागरी-लिपिके साथ-साथ जब अुर्दू-लिपि अुसके सामने रखी गअी, तब जनता अेकदम झिझक अुठी। कुतूहल वश दो कदम आगे बढ़ी, पर 'अभ्यास'ने अुसे पीछे ढकेल दिया।

दक्षिणके मुसलमानोंमें भी अुर्दू-लिपिका ज्यादा प्रचार नहीं है। देखा तो यह गया है कि मुस्लिम युवक भी अिस लिपिसे कुछ घबराते हैं और देवनागरीको शौकसे अपनाते हैं।

हमारी धारणा है कि अुर्दू-लिपिको दक्षिणमें बहुत कम लोग शौकसे सीख सकेंगे। हाँ, नौकरी आदिका प्रलोभन हो, तो लाचारीसे अुन्हें सीखना ही पड़ेगा। लेकिन राष्ट्र-लिपि तो शौकसे सीखनेकी चीज़ हो; और वह योग्यता देवनागरी लिपिमें ही पाअी जाती है—अुर्दूमें नहीं।

आदमी चाहे तो कअी लिपियाँ आसानीसे सीख सकता है। लेकिन राष्ट्र-लिपि जनतापर खुद अेक बोझ है; अुसके साथ अुर्दू-लिपिको जोड़ देनेसे वह और बोझीली बन जायेगी। अिच्छासे पहाड़ भी अुठाया जा सकता है, पर अनिच्छा अेक सूअीको भी पहाड़ बना देती है। अुर्दू-लिपिके सीखनेमें भारतीय राष्ट्र आज तीव्र अनिच्छा दिखला रहा है—वस्तु-स्थिति यह स्पष्ट बता रही है। अतः 'हरिजन सेवक'में 'बापूजी'के जवाब के बावजूद भी हम रैहाना बहन तैयबजीके तर्कोंको दुहरानेकी धृष्टता करते हैं, और 'बापूजी'से अनुरोध करते हैं कि अुर्दूका आग्रह अब वे छोड़ दें, ताकि राष्ट्रभाषाके प्रचारमें कोअी अड़चन न आये।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतमें अुर्दू लिपिको कोअी स्थान नहीं

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिसे हिन्दी ही हमारी भाषा है

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें राहुलजीका भाषण

—xxx—

अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३५ अधिवेशन अध्यक्षपदसे भाषण देते हुए महापंडित राहुल सांकृत्यायनने कहा कि संघकी राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय लिपि देवनागरी ही होनी चाहिये। अुर्दू भाषा और लिपिके लिये यहाँ कोअी स्थान नहीं। अुर्दू भाषा-भाषी लिपिके लिये नागरीको अपनायें। कुछ राजनीतिक नेता हिन्दुस्तानी नामपर और न जाने किस भलाअीके ख्यालसे अुर्दूको भी यहाँ घुसेड़ना चाहते हैं। लेकिन यह तो निश्चित है कि अिस बातमें अुनका व्यक्ति कोअी काम नहीं करेगा। तर्क पेश किया जाता है कि यहांके अु भाषा-भाषी मुसलमानोंको हिन्दी पढ़नेपर मजबूर किया गया तो बंटा हुआ हिन्दुस्तान कभी फिर अेक न होगा। मानो, अुर्दूको राजभाषा स्वीकार कर लेनेपर अेकता निश्चित है। मेरी समझमें अभी बंटे हुये हिन्दुस्तानमें अेकताकी बात चलानी फजूल ही नहीं हानिकर है। अेकता तभी होगी जब कि दोनों भागोंमें धर्मान्धताका स्थान राष्ट्रीयता और वैयक्तिक स्वार्थका स्थान समाज स्वार्थ लेगा। जिस भाषाके अधिक बोलनेवाले होते हैं वही भाषा राजकीय भाषा मानी जाती है।

राहुलजीने आगे कहा—" अिस वर्षसे हमारा देश अब वह नहीं रहा, जो सदियोंसे चला आ रहा था। जिस वक्त आजका हिंदी-भाषी भारत परतन्त्र हुआ, अुस वक्त हमारा हिंदीका वह रूप गुजरात, कन्नौज, पटनामें बोला और लिखा जाता था, जो सातवीं सदीमें आगे हुआ था और जिसके अमर लेखक सरह, स्वयम्भू, पुष्पदन्त अेवं हरिभद्र आदि थे। आज फिर अपने प्राचीनतम रूप अपभ्रंश हिंदीकी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी हिंदी स्वतन्त्र भारतकी सम्माननीय भाषाका पद प्राप्त कर रही है। हिंदी-भाषा-भाषी प्रांतोंमें हिंदीके सर्वेसर्वा होनेमें कोअी बाधा नहीं डाल सकता। अुसे हिंदी प्रांतोंके न्यायालयों, पार्लियामेंटों और सरकारी शासनपत्रोंकी ही भाषा नहीं बनना है, बल्कि आजके विकसित विज्ञानकी हर अेक शाखाके अध्ययनका माध्यम भी बनना है। मुझे विश्वास है कि हमारी हिन्दी अुसे सहर्ष वहन करेगी।"

लिपिका प्रश्न

राष्ट्र-लिपिके प्रश्नपर विचार करते हुए राहुलजीने कहा—"राष्ट्रभाषा हिंदी स्वीकार करने पर भी कोअी कोअी भाअी रोमन-लिपि स्वीकार करनेके लिये कह रहे हैं। क्या वह अधिक वैज्ञानिक है? वैज्ञानिकका मतलब है, लिपिका अुच्चारणके अधिक अनुरूप होना। लेकिन रोमन लिपिके २६ अक्षर हमारे सारे अुच्चारणोंको प्रगट नहीं कर सकते। नागरी अक्षरोंमें हम अुससे ज्यादा शुद्ध रूपसे किसी भी भाषाको लिख सकते हैं, और बिना चिन्ह दिये चिन्ह देनेपर रोमनमें जितने पेबन्द लगाये जाते हैं, अुससे कम ही चिन्होंको लगा नागरी द्वारा हम दुनियाकी हर भाषाके शब्दोंको अुच्चारणानुसार लिख सकते हैं। अिसलिये जहाँतक अुच्चारणका सम्बन्ध है, हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।

"अिसका यह अर्थ नहीं, कि अुर्दू पढ़नेवालोंके लिये सुविधा न दी जाये। हर अेकको अपनी भाषा और अपनी लिपि पढ़नेका अधिकार होना चाहिये। जो अुर्दू भाषा-भाषी अपनी शिक्षा अुर्दू भाषा द्वारा लेना चाहते हैं, अुन्हें अिसके लिये पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिये। वे स्कूलों ही में नहीं, चाहें तो अलीगढ़ यूनिवर्सिटी तक में अुर्दूको माध्यम रख सकते हैं। लेकिन जो समय सामने आ रहा है, अुसे देखते हुए मैं अुन्हें परामर्श दूंगा कि लिपिके आग्रहको छोड़कर अुर्दूके लिये भी नागरी लिपिको अपनाएं। आखिर पश्चिमी एशियाकी ताजिक और तुर्की भाषाओंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबी लिपिसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने पर हानि नहीं बल्कि बहुत भारी लाभ हुआ है। सोवियतकी ये भाषाएं रूसी लिपिमें लिखी जाती हैं, जो ३२ अक्षरोंकी होनेसे रोमनसे कहीं अधिक वैज्ञानिक है।"

विश्वकी महान भाषा

हिंदीकी महत्ताका अुल्लेख करते हुअे राहुलजीने कहा—"हिंदी भारतीय संघकी राष्ट्रभाषा होगी और अुसके आधेसे अधिक लोगोंकी अपनी भाषा होनेके कारण वह अन्तर्राष्ट्रीय जगतमें अब अेक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी। चीनी भाषाके बाद वही दूसरी भाषा है, जो अितनी बड़ी जनसंख्याकी भाषा है। हिंदीके अूपर अिसके लिअे बड़ा दायित्व आ जाता है। हिंदीको अेक विशाल जन-समूहके राज-काज और बातचीतकी ही चलाना नहीं है बल्कि अुसीको शिक्षाका माध्यम बनना है। फिर आजकलकी शिक्षा सिर्फ कविता, कहानी और साहित्यिक निबन्धों तक ही सीमित नहीं है। विश्वकी प्रत्येक अुन्नत भाषाका साहित्य अधिकतर साअिन्स के ग्रंथोंपर अवलम्बित है। अभीतक तो साअिन्सकी पढ़ाअी अंग्रेजीने अपने सिरपर ले रखी थी, किन्तु अब अंग्रेजोंके साथ अंग्रेजीका राज्य जा चुका है। सरह स्वयम्भूसे पन्त-निराला, महादेवी तकका हिंदी काव्य-साहित्य, बहुत सुन्दर और विशाल है। नाटक छोड़कर सभी अंगोंमें विश्वके किसी भी प्राचीन और नवीन साहित्यसे अुसकी तुलना की जा सकती है। कथा साहित्यमें प्रेमचन्दने जो परंपरा छोड़ी है, वह काफी आगे बढ़ी है। किंतु अब हमें हिंदीमें सारा ज्ञान-विज्ञान लाना होगा।

अधिकारियोंमें हिंदी

राहुलजीने कहा कि अंग्रेजी राज्यने सारे भारतके लिये आअी. सी. अेस. जैसी केन्द्रीय नौकरियोंकी स्थापना की थी। स्वतंत्र भारतके लिये भी अैसे अधिकारियोंकी आवश्यकता है, अिसमें किसीको आपत्ति नहीं हो सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी सरकारने दिल्लीमें अैसा शिक्षणालय खोला है, जिसमें केन्द्रीय अधिकारियोंकी शिक्षा होती है; लेकिन, अभी वहाँ शिक्षाका माध्यम अंग्रेजी है। प्रारम्भिक अवस्थामें यही व्यवहार्य था, लेकिन प्रश्न है—क्या आगे भी हम वहां अंग्रेजीको ही शिक्षाका माध्यम रखना चाहेंगे? मैं नहीं समझता, गुलामीकी अिस आखिरी कड़ीको हमारा देश बर्दाश्त करेगा। केन्द्रीय सेवामें आनेवाले अुमेदवारोंके लिये हिंदीका ज्ञान आवश्यक होना चाहिये, क्योंकि अब अुन्हें शासनका कारभार अंग्रेजीमें नहीं करना है। हो सकता है, हिंदी भाषा-भाषी प्रान्तोंमे जानेवाले अधिकारियोंको अुस प्रान्तकी भाषाकी योग्यता अधिक होनी चाहिये, और अुनके लिये हिंदीकी योग्यता कम होनेसे भी काम चल सकता है। लेकिन यह संक्रांतिकालमें ही आगे चलकर तो केन्द्रीय अधिकारियोंको और शिक्षार्थियोंके लिये हिंदीकी योग्यताकी वही कसौटी होनी चाहिये, जो कि अबतक अंग्रेजीकी मानी जाती रही।

मेरा अभिप्राय यह नहीं है, कि हमें विदेशी भाषाओंका बहिष्कार करना चाहिये। अैसी कूप-मंडूकता नहीं चल सकती। अब हमारा स्वतंत्र देश विश्वका अेक अंग है। दूसरे स्वतंत्र राष्ट्रोंसे हमारा राजनीतिक संबंध स्थापित होता जा रहा है। यह संबंध बहुत महत्वपूर्ण है, और अिसमें अपने प्रथम श्रेणीके मस्तिष्कोंको हमें लगाना है। हम अपने राजदूतों और कौंसिलोंके लिये तत्काल कोअी भी काम चलाअू प्रबन्ध कर सकते हैं, लेकिन अिसके लिये हमें स्थायी कर्मियोंको तैयार करना पड़ेगा। अभी तो आरंभ ही हुआ है, अिसलिये अिस संबंधमें जो हो रहा है, अुसे दोष देनेकी आवश्यकता नहीं। लेकिन योग्य कर्मियोंको तैयार करनेके लिये अुनकी सुव्यवस्थित शिक्षाका प्रबन्ध करना होगा। अंग्रेजीसे भले ही दुनियाके कितने ही मुल्कोंमें काम चल सके, लेकिन केवल अंग्रेजी ज्ञानके सहारे हमारे राज-प्रतिनिधि अंग्रेजी भिन्न भाषा-भाषी देशोंमें अपने कर्तव्यको ठीक तरहसे पालन नहीं कर सकेंगे। अभी हमारे राजनीतिक कर्णधारोंमें अंग्रेजीका ही बोलबाला है और दुनियाकी हरेक चीजको वह अंग्रेजीके चश्मेसे देखते हैं। यह मनोभाव हमारे काममें हानिकारक होगा।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रस्ताव :—

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनने अपने वम्बअ
३५ वें अधिवेशनमें निम्नलिखित ८ प्रस्ताव स्वीकृत किये हैं—

१—यह सम्मेलन अपने पूर्व सभापति साहित्य-वाचस्पति डाक्ट
श्यामविहारी मिश्र, साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध
साहित्यवाचस्पति महामहोपाध्याय डा. गौरीशंकर हीराचंद ओझा तथा साहि
वाचस्पति पं. कामताप्रसाद गुरु और काशीदत्त पाण्डेय, रायकृष्णजी, नृसि
चिन्तामणि केलकर, देवचन्द नारंग, भाओ परमानन्द तथा वैजनाथ केडि
के देहावसानपर हार्दिक दुख तथा अुनके कुटुम्बियोंके साथ सहानुभू
और समवेदना प्रकट करता है।

सभापति द्व

२—यह सम्मेलन सब प्रांतीय साहित्यकारोंसे अनुरोध करता है कि
वे अत्यन्त अुदारताके साथ अपने अपने साहित्यकी अुन्नति करते ह
अुसका अेक अंश हिन्दीको भी प्रदान करते रहें और हिन्दी साहित्य
अिस प्रकार सम्बन्ध स्थापित करें कि राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य प्रांती
भाषाओंका सुन्दर रूपसे संस्कार और विकास हो सके।

प्रस्तावक—श. दा. चित
अनुमोदक - जेठालाल जो

३—यह सम्मेलन भारतीय संघकी प्रांतीय सरकारों एवं विश्व
विद्यालयोंसे अनुरोध करता है कि वे सम्मेलनकी विशारद परीक्षाको
बी. ए. अेवं साहित्यरत्नकी परीक्षाको अेम. अे. के समकक्ष स्वीकार करें
अेतदर्थ यह सम्मेलन परीक्षा समितिको आदेश देता है कि वह इस
सम्बन्धमें अुचित कार्यवाही करे।

प्रस्तावक-प्रभुदयाल अग्निहो
अनुमोदक-सीताराम चतुर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-यह सम्मेलन प्रांतीय सरकारों तथा देशी रजवाड़ोंसे अनुरोध करता है कि वे कालेजों तथा हाअीस्कूलोंके संस्कृत तथा हिन्दी शिक्षकोंके लिये अंग्रेजी भाषाके ज्ञानकी अनिवार्यता न रक्खें।

प्रस्तावक—रामबालक शास्त्री
अनुमोदक—सीताराम चतुर्वेदी

५-पाकिस्तानसे भारतसंघके अन्तर्गत अये हुये बच्चोंकी शिक्षाके लिये यह सम्मेलन प्रत्येक प्रांतकी सरकार, सार्वजनिक हिन्दी संस्थाओं तथा भारतीय रजवाड़ोंसे अनुरोध करता है कि वे अिनको हिन्दी भाषामें शिक्षा दिये जानेकी आयोजना करें।

प्रस्तावक—विश्वम्भरसहाय प्रेमी
अनुमोदक—सौ० कमलाबाअी किबे

६.—यह सम्मेलन प्रयाग और लखनअू विश्वविद्यालयोंको अुनके हिन्दी माध्यम द्वारा परीक्षा लिये जानेके निश्चय पर बधाअी देता है और हिन्दी भाषी क्षेत्रके अन्य सभी विद्यालयोंसे अनुरोध करता है कि वे भी शीघ्र ही अपने यहां शिक्षाके माध्यमके लिये हिन्दी अपनावें।

प्रस्तावक--बलभद्रप्रसाद मिश्र
अनुमोदक- कृष्णदेवप्रसाद गौड़

७—यह सम्मेलन युक्तप्रांतीय सरकारको प्रांतकी राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी घोषित करनेके निश्चय पर बधाअी देता है और बिहार, मध्यप्रांत, दिल्ली, अजमेर मेरवाड़ा, पूर्वी पंजाबकी सरकारों तथा संघकी हिन्दी भाषी रियासतोंसे अनुरोध करता है कि वे अपने क्षेत्रोंमें राज भाषा हिन्दी और राजलिपि देवनागरी घोषित करें।

प्रस्तावक—गोविन्ददास
अनुमोदक—प्रभुदयाल अग्निहोत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८—भारतवर्षसे ब्रिटिश गवर्नमेंटके हटने और देशमें स्वशासन स्थापित होनेका हार्दिक स्वागत करते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन भारतवर्षके विभाजन और तद्जनित नृशंस कर्मों और जन संकटोंपर अपना महान दुख और दुखियोंके साथ अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है अिस विभाजन और पाकिस्तानकी अुत्पत्तिमें सांस्कृतिक परम्पराओंकी पृथकता मुख्य कारण है और अिन परम्पराओंको रूप देनेमें भाषाका बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। देशपर जो आपदा आअी है वह सब हमारे देशवासियोंकी भूलोंका परिणाम है। अुससे शिक्षा लेकर धार्मिक भेदके रहते भी सांस्कृतिक एकताके आधारपर ही हमें भविष्यका संगठित राष्ट्र बनानेका यत्न करना है और अिस सांस्कृतिक एकताकी प्रकृति हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि है।

अतः यह सम्मेलन देशकी विधान परिषद तथा देशके सांस्कृतिक विचारोंका ध्यान अिस ओर खींचता है कि प्रांतीय भाषाओंकी रक्षा और अुन्नति करते हुए हिन्दी भारतकी राष्ट्रभाषा और देवनागरी राष्ट्रलिपि स्वीकार की जाय और सब केन्द्रीय तथा प्रांतीय ऐसे काम जिनका भारतकी एकतासे संबंध है, हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिमें किये जाँय।

प्रस्तावक—पुरुषोत्तम दास टंडन
अनुमोदक—गोविन्ददास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

अेक पग---कविता संग्रह, रचयिता : श्री शील, प्रकाशक—न्यू लिटरेचर २५७ चक अिलाहाबाद, मूल्य १।), पृष्ठ संख्या ८९।

'अेक पग' हिन्दीके अुदीयमान कवि 'शील' जीकी प्रगतिशील कविताओंका संग्रह है। साहित्यमें अिस तरहकी विशिष्ट दृष्टिकोणसे लिखी गअी कविताओंका अेक महत्वपूण स्थान है क्योंकि अैसी कविताअें जनताकी विद्रोही मनोवृत्तिको जाग्रत करनेमें सफल होती हैं।

'शील' जी संघर्षशील जनताके सफल कवि हैं अतअेव वर्तमान समाज व्यवस्थासे असंतुष्ट शोषितों, पीड़ितों और पददलितोंकी रण हुंकारको अुनके काव्यमें बहुत ही सुन्दर और कलात्मक ढंगसे अभिव्यक्ति हुअी है। 'शील' जी स्वयं अेक सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। मजदूर किसानोंके व्यापक जन आन्दोलनोंमें भाग लेकर आपने जो अनुभव प्राप्त किया है अुससे आपको नवीन प्रेरणा मिली है। 'अेक पग' 'शील' जी का तासरा कविता संग्रह है। अिसके पूर्व 'चर्खाशाला' और 'अगड़ाअी' लिखकर आप हिन्दी संसारमें पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

प्रस्तुत पुस्तकमें कविकी ३५ कविताअें संगृहीत हैं। 'जीवनके कठोर सत्यों और अनुभवों' ने ही कविको अिन्हें लिखनेके लिअे प्रेरित किया है। सभीमें आशा और नवयुगका आह्वान है जो कि अुत्पीड़ित जनताको निराशा और पलायनवादी भावनाओंसे मुक्त कर अेक नअी दुनियाके निर्माणका संदेश दे रहा है। 'सुखका सूर्य निकलने वाला, दुखसे भरा अतीत नहीं है' अिस कविता संग्रहमें यही अेक चीज गूज रही है जिसकी अभिव्यक्ति प्रायःहर रचनामें हुअी है। 'कल्पनाके हंस' संग्रहकी अुत्कृष्ट रचना है जिससे कविकी साहित्यिक प्रौढ़ताका परिचय मिलता है। पुस्तककी छपाअी तथा गेट अप अुत्तम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानदीक्षा—प्रकाशक—हिन्दी ज्ञान मंदिर लिमिटेड १९ रुस्तम बिल्डिंग, चर्चगेट स्ट्रीट बम्बअी, पृष्ठ संख्या ११९, मूल्य २)।

ज्ञानदीक्षा बम्बअी विद्यापीठमें दिअे गअे आठ दीक्षान्त भाषणोंका संग्रह है। आचार्य क्षितिमोहन सेन, पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी, पं. माखन लाल चतुर्वेदी, श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन, स्वर्गीय ठाकुर श्री राममनोहर सिंह, श्री रमेशचन्द्र सिनहा, श्री जैनेन्द्रकुमार और डा० वासुदेवशरण अग्रवालके अिन भाषणोंमें हिन्दी साहित्यके सभी अंगोंपर गम्भीरतापूर्वक प्रकाश डाला गया है।

आजका साहित्यकार सामाजिक संघर्षोंसे अपने आपको पृथक न रख सकना। लोक जागरण और नवचेतनाके इस युगमें जनजीवनसे सम्पर्क स्थापित करने तथा जनताकी समस्याओंको कलाके माध्यमसे चित्रित करने से ही शक्तिप्रेरक और विचार अुद्बोधक साहित्यकी सृष्टि हो सकती है। ज्ञानदीक्षामें संगृहीत प्रत्येक भाषण हमें अिस ओर सोचनेको विवश करता है

नवीन हिन्दी प्रेमियोंको अिस पुस्तकका अवश्य अध्ययन करना चाहिअे।

शोध पत्रिका—त्रैमासिक : प्रकाशक—शोध संस्थान अुदयपुर, वार्षिक मूल्य ६), अेक प्रतिका १।)।

'शोध-पत्रिका' प्राचीन साहित्य शोध संस्थान अुदयपुरकी त्रैमासिक पत्रिका है। अिसके सम्पादक मण्डलमें पुरातत्वके ६ प्रतिष्ठित विद्वानोंके नाम हैं। पत्रिकाका अुद्देश्य अितिहास और प्राचीन साहित्य विषयक शोधपूर्ण लेखोंका प्रकाशित करना है। अभी तक अिसके दो अंक निकल चुके हैं। दोनों अंकोंमें अध्ययनशील पाठकोंके अुपयुक्त गंभीर सामग्री संगृहीत की गअी है। आशा है पत्रिका अपने अुद्देश्यमें सफल होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखे—लेखक—सुदर्शन, प्रकाशक—हिन्द किताब्स लिमिटेड २६१,—२६३ हार्नबी रोड बम्बअी, पृष्ठ संख्या -९०, मूल्य १॥)।

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दीके सुप्रसिद्ध कहानी लेखक श्री सुदर्शन रचित 'जगत और जीवनकी कुछ झांकियों' का संग्रह है। सभी झांकियाँ छोटी और भावपूर्ण हैं और अुनमें हमारे मस्तिष्कके लिअे अेक नअी दिशामें सोचनेकी प्रेरणा है। आज देशमें सस्ते चल्तू साहित्यका प्रचार बढ़ रहा है जिन्हें पढ़नेसे पाठकोंका समय व्यर्थ बरबादही होता है। हमें हर्ष है कि 'झरोखे' की रचनाअें चल्तू कहानियां नहीं है। हम पाठकोंसे अिन्हें पढ़नेकी सिफारिश करते हैं।

हिन्दी जगत—मासिक-पत्र : सम्पादक—श्री श्यामसुन्दर गुप्त प्रेम. अे. अेल अेल. बी. प्रकाशक—बम्बअी प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन बम्बअी नं. २, वार्षिक मूल्य २), अेक अंकका ≡)

हिन्दी जगत बंबअी प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका मुख-पत्र है। पत्रका अुद्देश्य हिन्दी-साहित्यके सभी अंगोंकी ठोस सेवा कर भाषाके स्वरूपको अुन्नत और विकसित करना है। आशा है अिस पत्रके प्रकाशनसे बंबअी प्रांतमें हिन्दी-प्रचार आंदोलनको बल मिलेगा। हम पत्रकी अुत्तरोत्तर वृद्धिकी कामना करते हैं।

—प्रशान्त

राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक बोधनी व्याख्या (सिंहल)— लेखक—डी. रतनसार, प्रकाशक—स्वस्तिक यंत्रणालय कोलंबो सीलोन।

सीलोनमें हिन्दी-प्रचारका कार्य तेजीसे चलाहुआ है। यह पुस्तक सीलोनके नअे हिन्दी सीखनेवालोंके लिअे लिखी गअी है। खेद है कि पुस्तकमें अनेक भद्दी भूलें रह गअी हैं। आशा है अगले संस्करणमें अिन भूलोंको सुधारा जायगा।

—अेरत्ने रतनसार

———

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी

कोविदमें बैठनेसे पहिले

: श्री अनिल कुमार :

कोविदकी परीक्षामें अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंकी संख्या अन्य परीक्षाओंमें अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे अधिक होती है। अिसके दो प्रधान कारण हैं। पहिला तो परीक्षार्थियोंको अध्ययन प्रेमी बनानेके अुद्देश्यसे कोविद परीक्षाका मापदण्ड ऊँचा रखा गया है दूसरा परीक्षार्थियोंसे जिस बातकी आशा की जाती है वह कोविद की अधिकांश अुत्तर पुस्तकोंसे पूरी नहीं होती।

कोविदके पाठ्य पुस्तकोंकी कुंजी 'साहित्य-शिक्षा' है। अिसे सरसरी नजरसे पढ़नेसे काम नहीं चल सकता। अिसमें संगृहीत सभी निबंधोंका गम्भीर अध्ययन परीक्षार्थीके लिये आवश्यक है। जैनेन्द्रजीके निबंध 'साहित्य क्या है ?' को अच्छी तरहसे समझ लेनेके अुपरान्त परीक्षार्थियोंको अुनके विचारोंका मनन कर फिर अुन्हें अपनी शैलीमें व्यक्त करना चाहिये। 'साहित्य शिक्षा' में कविता-कहानी, अुपन्यास-नाटक आदि साहित्यके अंगोंका 'क्या' ? 'कैसे' और 'क्यों ?' द्वारा जो दिग्दर्शन कराया गया है अुसके मुख्य ढाँचे अध्ययनके दिनोंमें बनाकर रख लेने चाहिये।

प्रश्नपत्रोंका अध्ययन

प्रथम प्रश्नपत्रमें परीक्षार्थीसे प्राचीन, आधुनिक और अुर्दू पद्योंका साधारण ज्ञान अपेक्षित है। अुर्दू और प्राचीन पद्योंकी भाषा शैली कैसी है ? शैली भाव प्रधान है या शब्द प्रधान ? आदि बातोंका ज्ञान परीक्षार्थीको होना चाहिये। जीवनकी समस्याओंका वर्तमान कविता पर क्या प्रभाव पड़ा ? और किस अुद्देशको लेकर कौन कवि साहित्यमें अुपस्थित हुआ है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसकी पर्याप्त जानकारीके अुपरान्त अुसकी अभिव्यक्तिका प्रश्न परीक्षार्थी के सम्मुख आता है। परिचय तक परीक्षार्थी जो पढ़ते हैं अुसीका अंकन परीक्षामें सर्व साधारण ढँगसे करते हैं। किन्तु 'कोविद' में अितनेसे ही संतोष नहीं किया जा सकता। अधिक अङ्क प्राप्त करनेके लिये परीक्षार्थीको लेखकों तथा कवियोंकी प्रमुख रचनाओंका अुदाहरण भी देना चाहिये। हिन्दी साहित्यके अितिहासके गंभीर अध्ययनकी भी अुससे आशाकी जाती है।

'सं. आत्मकथा', 'कहानी संग्रह,' 'गोदान,' 'शाहजहाँ' और अशोक ये हमेशाके पढ़नेकी पुस्तकें हैं। साहित्य शिक्षामें दी हुअी कहानी, अुपन्यास नाटक आदिकी परिभाषाके आधारपर अिन पुस्तकोंका आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक ढँगसे अध्ययन करें।

दूसरे प्रश्न पत्रमें प्रसंग सहित कठिन गद्यांशोंका भावार्थ पूछा जाता है। अधिकांश विद्यार्थी जटिल वाक्योंके स्थानपर सरल वाक्य लिखकर प्रश्न पूरा करते हैं। किन्तु कोविदके लिये यह काफी नहीं है। परीक्षार्थीको चाहिये कि अुस गद्यांशके लेखकका विस्तृत साहित्यिक परिचय देकर अपने शब्दोंमें अुसके भाव व्यक्त करे और यह भी बताअे कि अुन भावोंका पाठकपर क्या प्रभाव पड़ता है?

तीसरे प्रश्न पत्रका सार लेखन कोविदके विद्यार्थीके लिये नअी चीज है। अतः परीक्षार्थीको अिस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। सार लेखन दिये हुये अपरिमित गद्यखण्डका अेकतिहाअी भाव-लेखन है। पहले दिये हुये गद्यखण्डको खूब पढ़ले। और फिर अुस गद्यखण्डमें देखें कि अुसका मूल आशय क्या है? मूल आशयका पता लगा लेनेके बाद अुसके मुख्य मुख्य वाक्योंको रेखांकित करे जिनका मूल आशयसे खास सम्बन्ध है। अब परीक्षार्थी अुसका सार लिखना शुरू करे। सार लेखनके समय अपने वाक्योंमें अुसके मुख्य वाक्य पहले लिखले बादमें बचे हुये अन्य वाक्योंका भी भाव संक्षेपमें व्यक्त करे। अिसमें अेक बात अधिक स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने योग्य है कि परीक्षार्थी अपनी ओरसे कुछ भी न जोड़े। जो कुछ भी ले मूल गद्यखण्डसे ही ले। यह हुआ सार लेखन! सार लेखनसे विस्तृत विचारोंको संक्षेपमें व्यक्त करनेकी कला प्राप्त होती है।

चौथे प्रश्नपत्रमें साहित्यके अंग प्रत्यंगोंको समालोचनात्मक दृष्टिसे देखनेका ज्ञान अपेक्षित है। हिन्दी साहित्यके संक्षिप्त अितिहासकी और गोदानके लेखक प्रेमचंदजीकी सामान्य जानकारी परीक्षार्थीको होनी चाहिये। विद्यार्थीकी 'गोदान' को समझनेकी दृष्टि यह भी दिखा सके कि प्रेमचंदजी अुसमें (गोदानमें) कहांतक सफल हुअे हैं तथा अुनकी लोकप्रियताके बीज अिस अुपन्यासमें कहाँ और किस तरह निहित हैं?

मौखिक परीक्षा

अंतमें कोविदकी मौखिक तैयारीके विषयमें कुछ बताना अनुचित नहीं होगा। मौखिकमें परीक्षक भाषा शैली और हिन्दीके शुद्धाशुद्ध स्वरोच्चारका अधिक निरीक्षण करते हैं। अतः जो बोलनेमें या अपने विचार किसीके सम्मुख व्यक्त करनेमें लगाते हैं वे अपने घरके किसी अेकान्त कमरेमें साधारण बड़े शीशेके सामने खड़े होकर भाषण करें। अिस तरहके अेकान्तिक अभ्याससे परीक्षार्थीकी भाषामें प्रवाह आयगा और अुसकी वक्तृत्वशक्तिका विकास होगा।

विद्यार्थियोंको अेकान्तमें, कुछ जोर जोरसे श्रेष्ठ विचारोंकी पुस्तकें और कथोपकथनवाले नाटक भी पढ़ने चाहिये। अध्यापक और प्रचारक अेक मास पहलेसे ही हिन्दी वाद-विवाद, मौखिक प्रश्नोत्तरी, चर्चा आदि कार्यक्रम रखकर मौखिक परीक्षाकी तैयारी कर सकते हैं।

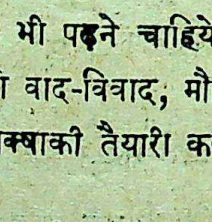

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

महाराष्ट्र

रावेर (पूर्व खानदेश) के राष्ट्रभाषा प्रचारकोंकी अेक बैठक गत १० नवंबरको सावदामें हुअी जिसमें हर केन्द्रके प्रतिनिधि कार्यकर्ताओंको लेकर अेक तालुका समितिकी स्थापना की गअी। नअे केन्द्र खोलनेके प्रश्नपर भी विचार हुआ। निम्नलिखित सज्जन संगठन और कार्यकारी समितिमें लिअे गअे।

संगठन समिति १. श्रीराम अट्टावलकर २. श्री चुनीभाअी रावल ३. श्री रा. वा. पाटील ४. वा. ना. फेगडे, ५. घ. ग. नारखेड़े।

कार्यकारी समिति– १. डॉ. भो नराज अिंगले, २. हे. मा. हायस्कूल सावदा ३. श्री. घ. ग. नारखेडे ४. श्री ना. अं. नारखेडे ५. श्री चां. ग. चौधरी ६. श्री दे. ग. चौधरी ७. रा. वा. वाणी।

गत २ नवंबरको श्री. त्र्यं. शा. चौधरीकी अध्यक्षतामें सांगवीमें तालुका समितिकी स्थापना की गअी।

संगठन समितिमें यावल तालुका समितिके मंत्री श्री. वि. श्रा. चौधरीके अतिरिक्त पू. खा. जिला समितिका स्थायी समितिके चार कार्यकर्ता भी हैं।

कार्यकारी समितिमें निम्नलिखित सज्जन हैं। श्री त्र्यं. शा. चौधरी अध्यक्ष, श्री. वि. ग. पाटील अुपाध्यक्ष, श्री. भा. चा. चौधरी, कोषाध्यक्ष, श्री. वि. क्षा. चौधरी मंत्री और श्री रा. कौ. वराडे सहायकमंत्री,

जलगांव–पूर्वखानदेशके जिला प्रचारक श्रीयुत श्रीराम अट्टावलकरके संपादकत्वमें यहांसे 'अुज्ज्वल' नामक मराठी और हिन्दीका अेक संयुक्त मासिक पत्र निकलने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमलनेर—तालुकोंमें चार नअे केन्द्र खोले गअे हैं। गत दिसंबरको यहां माध्यमिक शिक्षक संघका अधिवेशन हुआ जिसमें राष्ट्र हिन्दीके समर्थनमें अेक प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

कडगांव—श्री दत्तात्रय शास्त्री जळूकरकी अध्यक्षतामें गत दिसंबरको यहां प्रमाण पत्र वितरण समारोह धूमधामसे हुआ। अिस अ पर श्री. बालकृष्ण पुंडिलिक मोहरीर, श्री हरिकृष्णदास शंकरदास तथा श्री क. अ. व्यवहोर गुरुजीने हिन्दी हिन्दुस्तानीके प्रश्न पर यो पूर्वक प्रकाश डाला।

कांदीवाडी—स्थानीय ट्रेनिंग कालेजमें धुलियाके माधव श्री. गजा पाठकने राष्ट्रभाषा वर्ग चलाअे। अनेक विद्यार्थियोंने अिन वर्गोंमें भाग लि

शिरपुर—(पश्चिम खानदेश) श्रीमती अिन्दिराबाअी केतक प्रयत्नसे यहाँ महिलाओंके लिअे राष्ट्रभाषा वर्ग चालू हो गअे हैं।

श्री मोहनलाल शर्माने भी राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य प्रारम्भकर दिया

कल्याण—जिला प्रचारक श्री रेवाशंकर दुबेने श्री पाठकजी, वैशम्पायनजी अेवं अन्य व्यक्तियोंके सहयोगसे कल्याणमें राष्ट्रभाषा प्रच अेक योजना बनाअी है। जल्द ही यहां जोरोंसे कार्य शुरू होने वाला

मनमाड़—यहाँ प्रचार कार्य तेजीसे हो रहा है। जिलेके प्र स्थानोंमें अनेक आकर्षक पोस्टर चिपकाअे गअे हैं जिनमें जनतासे हि सीखनेकी अपील की गअी है।

नासिक और खानदेशसे गत परीक्षाओंमें कुल २५०० वि बैठे हैं। कुछ अैसे प्रचारक भी जो कि समितिकी नीतिसे असंतुष्ट थे जिला समितिके साथ कार्य करने लगे हैं।

स्थानीय राष्ट्रभाषा विद्यालयका कार्य भी सुचारु रूपसे हुआ है। अिस संबंधमें सर्वश्री रेवाशंकर दुबे, खिवराज सेठ, शांत भादलीकर व वेणुबाओं वारसेका प्रयत्न सराहनीय है।

चांदवड—यहाँ जिला प्रचारक श्री रेवाशंकर दुबेकी अध्यक्ष प्रमाण पत्र वितरण समारम्भ अुत्साहपूर्वक मनाया गया। श्री रमण कापड़ियाने राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर अेक भाषण दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री दुबेजीने आजकी समस्याओंको लेते हुअे हिन्दीके प्रश्नपर प्रकाश डाला। श्री जाधवजी तथा अन्य शिक्षकगण हिन्दी प्रचारमें विशेष दिलचस्पी ले रहे हैं।

सातारा – राष्ट्रभाषा विद्यालय साताराकी ओरसे व्याकरणाचार्य पंडित कामताप्रसाद गुरुके निधनपर शोक प्रकट किया गया। अेक शोक प्रस्तावमें अीश्वरसे प्रार्थना की गअी कि वह स्वर्गीय आत्माको शांति दे।

नासिराबाद—स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार चर्चा मण्डलके तत्वावधानमें गत १४ नवंबरको स्वतंत्र भारतके प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूका जन्म दिवस धूमधामसे मनाया गया।

स्वर्गीय मालवीयजीकी पुण्यतिथि भी मण्डलकी ओरसे मनाअी गअी।

मण्डलकी ओरसे प्रमाण पत्र वितरण समारंभके अवसरपर बम्बअी प्रांतके स्थानीय स्वराज्य मंत्री श्री गोविन्दराव वर्तकका भाषण हुआ।

भड़ौंच– गत १७ नवम्बर को राष्ट्रभाषा पुस्तकालय भड़ौंचका अुद्घाटन समारोह माननीय श्री गोविन्द भाअी पटेल अेम अे. पी. अेच डी. की अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री जयंतीलाल न० ध्यानीका अेक ओजस्वी भाषण भी हुआ।

सार (बम्बअी–)गत २२ नवम्बरको श्री बद्रीप्रसादजीके सभापतित्वमें स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रेमियोंकी अेक सभा हुअी जिसमें राष्ट्रभाषाके प्रचारार्थ अेक समितिकी स्थापना हुअी। निम्नलिखित व्यक्ति पदाधिकारी चुने गअे–श्री चांमनलाल व्यास अध्यक्ष, कुमारी वर्षा देवी पंड्या-अुपाध्यक्ष, कुमारी वसन्तिकाह-मंत्री, कुमारी सुजाता देसाअी-सहायक मंत्री, श्री बचुभाअी शाह-कोष ध्यक्ष।

भावनगर (गुजरात)--गत २१ दिसम्बरको शांतिला बहिन त्रिवेदीकी अध्यक्षतामें प्रमाण पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। अुत्सवमें केन्द्र व्यवस्थापक श्री दिनकर रायभट्ट तथा सनातन धर्म हाअिस्कूलके प्रिन्सपल श्री लक्ष्मीचंद्र भाअी सोमानीके भाषण हुअे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

आगामी प्रचार परीक्षाएँ

आगामी प्रचार परीक्षाएँ ता. ७, ८ फरवरी ४८ को होंगी।

	परीक्षाका नाम	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
शनिवार ७।२।४८	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय		प्रश्नपत्र १
रविवार ८।२।४८	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र २	प्रश्नपत्र ३
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	
मंगलवार १०।२।४८	कोविद	प्राचीन पद्य	७॥ से १०॥
बुधवार ११।२।४८	कोविद	अुर्दू	७॥ से १०॥
	परिचय	अुर्दू	७॥ से १०॥

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता, ९।२।४७ सोमवारको सुबह होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्रव्यवस्थापकको अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे

निरीक्षक :

आप आगामी परीक्षाके सभी आवेदन-पत्र भेज चुके हैं। अपने यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंकी नियुक्ति आप कर लें। नियुक्त निरीक्षकोंकी नामावली परिपत्र नं. १३ पर भर कर वर्धा कार्यालय भेजें।

पैंतीससे कम परीक्षार्थीवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रति प्रश्नपत्र के लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा।

परिचयकी मौखिक परीक्षा –

परिचय मौखिक परीक्षाका व्यवस्थाका भार केन्द्र व्यवस्थापकों पर रखा गया है। वेही अिसके लिये परीक्षककी नियुक्ति करें। परीक्षकके लिये किसी योग्य स्थानीय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा।

परिचयकी अिस मौखिक परीक्षककी सारी व्यवस्था आप शीघ्र करें। हम साथमें अिसके लिये प्राप्तांक भरनेके पत्रक भेज रहे हैं। मौखिक परीक्षा समाप्त होतेही आप प्राप्तांक-सूची सील-मुहर करके हमारे पास भेज दें।

परिचय परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक २० रखा गया है।

कोविदकी मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना समयपर अलगसे भेजी जायगी।

विशेष सूचना—

१ कोविद मौखिक परीक्षक कोविद परीक्षार्थियोंका लेखन-कार्य देखकर निबन्धोंकी बहियाँ आपके सुपुर्द करेंगे। आप कोविद मौखिक प्राप्तांक विवरणके साथही अिन बहियोंको कृपया वर्धा कार्यालय भेज दें।

२ कअी केन्द्रोंसे हमें पत्रक नं. ११२ (सक्रिय प्रचारकोंकी जानकारी) भरकर नहीं मिला। अिस सम्बन्धमें केन्द्र व्यवस्थापकोंके पास हमारे पत्रभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचे होंगे। जिन केन्द्रोंने पत्रक भरकर नहीं भेजे हैं वे शीघ्रही भरकर भेजनेकी कृपा करें।

कोविद परीक्षाका लेखन-कार्य--

अबतक कोविद परीक्षार्थियोंने अपना लेखन-कार्य समाप्त किया होगा। प्रत्येक कोविद परीक्षार्थीके लिये आठ निबन्ध कम-से-कम (तीन पृष्ठ) लिखना अनिवार्य किया गया है। अबतक जिन्होंने निबन्ध न लिखे हो, या अधूरे हों वे परीक्षा-तारीख तक समाप्त करें। निबन्धोंकी सूची दिसम्बरके 'राष्ट्रभाषा' अंकमें दी जा चुकी है, उसी श्रेणीके निबन्ध लिखे जायँ।

परीक्षा फल :

फरवरी ४८ की परीक्षाओंका परीक्षा फल मार्च ३१ को प्रकाशित होगा।

परिवर्तन

फरवरी ४८ की परीक्षाओंमें प्रारंभिक और प्रवेशके परीक्षार्थी अपनी उत्तर पुस्तकोंपर अपना पूरा नाम भी लिखेंगे। केन्द्र व्यवस्थापक इस ओर कृपया ध्यान दें कि वे परीक्षार्थियोंसे नाम सुंदर और साफ अक्षरोंमें लिखवा लें।

अेक नयी परीक्षा--

बहुत दिनोंसे अनेक प्रचारक बंधुओं और परीक्षार्थियोंकी माँग थी कि समितिद्वारा अैसे व्यक्तियोंके लिये जो राष्ट्रभाषाका ज्ञान केवल मौखिक रूपसे चाहते हैं अेक परीक्षा चलायी जावे। इस अुद्देश्यको ध्यानमें रखकर परीक्षा-समितिकी गत बैठकमें निश्चय हुआ है कि सितम्बर ४८ से बात-चीत नामक अेक मौखिक परीक्षा चलायी जावे। इस परीक्षाके परीक्षार्थियोंसे दैनिक व्यवहारमें आनेवाले शब्दोंके ज्ञान और सामान्य बातचीत करनेकी योग्यताकी अपेक्षा रखी जावेगी। बातचीत परीक्षाकी नियमावली तथा विस्तृत जानकारी राष्ट्रभाषाके अगले अंकमें दी जावेगी।

प्राप्त
आसाम
बंगाल
"
"
अुत्कल
"
"
"
"
"
"
गुजरात
"
"
"
"
"
"
"
"
"
"
महाराष्ट्र
"
"
"
"
"
"
"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये केन्द्र

	केन्द्र	क्रमांक
प्रान्त	चराहिबाही	१०३४
आसाम	सरिषा	१०१६
बंगाल	वेलुडमठ	१०२२
"	गोलग्राम	१०३३
"	केन्द्रापाड़ा	१०२०
उत्कल	तितोंल	१०२१
"	वासुदेवपुर	१०२३
"	बांगरा	१०२४
"	घंटेश्वर	१०२५
"	जाजपूररोड	१०६२
"	बालिकुडा	१०७६
"	कोठ	१०३५
गुजरात	कुरचण	१०३६
"	ध्रोल	१०३७
"	नार	१०३८
"	गढ़डा	१०३६
"	मोटाकराल	१०६६
"	करली	१०६७
"	नवसारी	१०७२
"	शेणवी	१०७७
"	वापी	१०८५
"	घोलीवु आ	१०८८
"	वासद	१०७६
महाराष्ट्र	ढेकुखुर्द	१०२६
"	मंगरूळ	१०२७
"	जलोद	१०२८
"	नगांव	१०२६
"	दहिवद	१०३०
"	पेठ	१०३१
"	विवरे	१०३२
"	तुपेवाडी	१०४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
महाराष्ट्र	खर्डा	१०४१
,,	पढेगांव	१०४२
,,	चाणक	१०४३
,,	अत्रसरीखुर्द	१०४४
,,	आंजर्ले	१०४५
,,	किनगांव	१०४६
,,	पिंपळगांव बसवंत	१०४७
,,	कजत	१०६०
,,	भानसहीवरा	१०६८
,,	धायरी	१०६९
,,	खड़की	१०७१
,,	विरोदे	१०७५
,,	कवठे	१०८९
,,	वडालीभाअी	१०९०
,,	वैराग	१०९१
,,	तळगांव दाभाडे	१०९२
,,	दहिगांव	१०९३
,,	शेरे	१०९४
,,	निवाणें	१०९५
,,	अुमराळे	१०९६
,,	चिंचणी	१०९८
,,	शिरसोली	१११०
विदर्भ-नागपूर	वनोजा	१०१७
,,	पिंपळगांव काळे	१०१८
,,	वाडेगांव	१०४८
,,	रायपूर	१२४९
,,	धमतरी	१०५०
,,	नेरपिंगळाअी	१०५१
,,	शेंदुर्जनाघाट	१०५२
,,	पिपळखुटा	१०५३
,,	फत्तेखेर्डा	१०५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
विदर्भ-नागपुर	वरोरा	१०५५
,,	माना	१०५६
,,	चांदूर बिस्वा	१०५७
,,	रायपूर	१०५८
,,	नखेल	१०५९
,,	यवतमाळ	१०६१
,,	जवला बु.	१०६३
,,	जानेफल	१०६४
,,	सिहोरा	१०६५
,,	गड़चिरोली	१०८०
,,	आमगांव	१०८१
,,	माडीं	१०८२
,,	कुही	१०८३
कर्नाटक	रबकवी	१०७०
हैदराबाद दक्षिण	नारायणखेड	१०९९
,,	हिंगोली	११००
,,	नेल्लीकुदूर	११०१
,,	अम्बाजोगाअी	११०२
,,	खम्मंमेठ	११०४
आन्ध्र	कैकलूर	११०३
,,	मंडूर	११०६
,,	बेजवाड़ा	११०७
,,	मछलीपट्टम्	११०८
,,	चंदोलू	११०९
मद्रास	मोव्वा	११०५
अन्य (सं. प्रान्त)	प्रयाग	१०७३
,, (बिहार)	झालदा	१०७४

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका

'राष्ट्रभाषा' वर्ष

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकोंका आर्डर देनेके साथ-ही-साथ पेशगी रकम नहीं भेजते। हमें अुन्हें पेशगीके लिअे लिखना पड़ता है और तब कहीं रुपये आनेपर अुनके लिअे यहाँसे पुस्तकें भेजी जाती हैं। अिससे अेक तो ग्राहकोंको पुस्तकोंके लिअे काफी इंतजार करना पड़ता है, दूसरे, सबको परेशानी भी होती है।

अिसलिअे अपने सभी ग्राहकोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे पुस्तकोंका आर्डर देते समय अुनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक-चौथाअी पेशगी ज़रूर भेज दिया करें।

यह नियम काफी हानि अुठाकर और दिक्कतोंका अनुभव करके बनाया गया है और अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं की जा सकती; अतः जिन लोगोंके आर्डरके साथ अुक्त नियमानुसार पेशगी नहीं आयेगी, अुन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

मंत्री

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाष्ट्रभाषा (सम्मेलन-अधिवेशन-अंक)

कालय
काँगड़ी.

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

लेख		पृष्ठ
१.	सत्य	४३
२	हमारी राष्ट्रभाषा	४४
३.	असका भार्या	५०
४	मेरे राष्ट्रभाषा संस्मरण	५४
५.	सोवियत भूमिके अखबार	५८
६	राजका राज़	६२
७.	हाथ जोड़कर अर्ज	६४
८.	रूसमें राहुलजीका पारिवारिक जीवन	६८
९.	दो छोटी कहानियां	७१
१०.	हिन्दीकी अवनति कैसे हो ?	७३
११.	पंडित कामताप्रसाद गुरु	७६
१२	हमारी कठिनाइयां	७७
१३	प्रधान मंत्रीकी ओरसे	७९
१४.	परीक्षा विभाग	८१

अवसर न चूकिये

फिर अितनी सस्ती पुस्तकें न मिलेंगी

प्रचारके ख्यालसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिस बार हिन्दीके सभी लेखकों और कवियोंकी पुस्तकें अधिकसे अधिक कमीशनपर दे रही है। फौरन आर्डर दीजिये। अेक साथ ५०० की पुस्तकें मंगानेवालेको ३०/ प्रतिशत कमीशन दिया जा सकता है।

मंत्री

नोट—यह कमीशन अुन्हीं पुस्तकोंपर दिया जावेगा जो राष्ट्रभाषा परीक्षाओंकी पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]
सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, दिसम्बर— १९४७ [अंक २

सत्य

सत्य संसारका मानसिक धन है। सत्यकी खोजसे श्रेष्ठतर कोअी धन्धा नहीं। अुन्नतिके चमकते हुअे गुंबदका आधार सत्य है, ढांचा सत्य है। सत्य प्रसन्नता की जननी है। सत्य सभ्य बनाता है, श्रेष्ठ बनाता है, पवित्र बनाता है। सबसे अूंची महत्वाकांक्षा जो किसीकी भी हो सकती है वह सत्य-ज्ञानकी है। सत्य आदमीको परोपकार करनेकी अधिक से अधिक सामर्थ्य देता है। सत्य तलवार भी है, ढाल भी है। यह आत्माका पवित्र प्रकाश है। सत्य खोज करनेसे मिलता है, तजर्बे करनेसे मिलता है, तर्क करनेसे मिलता है।

हर आदमीको अुसकी अिच्छा के अनुसार—अुसकी योग्यताके अनुसार खोज करनेकी स्वतंत्रता होनी चाहिये। कोअी विषय अैसा नहीं रहना चाहिये जो अितना अधिक 'पवित्र' माना जाय कि अुसे समझने का प्रयत्न ही न किया जा सके। जो किसी भी खोजीको अिस लोक या परलोकमें दंडका भय दिखाता है वह मानव जातिका शत्रु है। और जो किसी खोजीको "सच्चिदानंद" में लीन हो जानेकी रिश्वत देता है, वह अपने मानव बंधुओंके साथ विश्वासघात करता है।

बिना सच्ची मुक्तिके सच्ची खोज हो ही नहीं सकती—देवताओं और आदमियों के भयसे मुक्ति।

जो भी 'सत्य' लगे अुसे प्रेम करना मानसिक गुण है—बुद्धि की पवित्रता है। यही सच्चा मनुष्यत्व है। यही स्वतंत्रता है।

—श्री आर. जी. अिंगरसोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी राष्ट्रभाषा

: श्री सम्पूर्णानन्द :

थोड़ेही दिनोंमें विधान परिषद्के सामने यह प्रश्न अुपस्थित होगा कि भारतकी राष्ट्रभाषा अर्थात् सरकारी भाषा क्या हो? अुन थोड़से व्यक्तियोंको छोड़कर जो अंग्रेजीके भक्त हैं जनमत प्रायः हिन्दीके पक्षमें है, परन्तु अैसे भी लोग हैं जो यह पद हिन्दुस्तानीको देना चाहते हैं। अिनकी संख्या अधिक नहीं है, परन्तु अिनको महात्माजीका बहुमूल्य अनुमोदन प्राप्त है।

महात्माजीका विरोध करना किसीभी कांग्रेसजनको अभीष्ट नहीं हो सकता, परन्तु कभी--कभी चुप रह जाना समाजके प्रति विश्वासघात करनेके बराबर हो सकता है। महात्माजी स्वयं अिस बातको पसन्द नहीं करते कि अुनको अप्रसन्न करनेके डरसे कोअी सत्यको दबाये। अभी कुछही महीने हुअे मुझे अुनके समक्ष अपने भाषा विषयक विचारोंको व्यक्त करनेका अवसर मिला था। अिस लेखमें अुसी बातको किंचित विस्तारसे कहना चाहता हूं।

अुर्दू शैली राष्ट्र-विरोधी है

सबसे पहले तो मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि मैं हिन्दी अुर्दूको भिन्न भाषाअें नहीं मानता। जिन दो बोलियोंमें अितनी समता हो वे भिन्न भाषाअें नहीं हो सकतीं; अेकही भाषाकी पृथक् शैलियां हो सकती हैं। परन्तु अुर्दू शैली अराष्ट्रीयही नहीं राष्ट्रविरोधी है। अुर्दूके आचार्योंने जिस दिन "मतरुक" के विषैले सिद्धान्त का स्वीकार किया, जिस दिन अुन्होंने भारतीय शब्दोंकी अपेक्षा विदेशी शब्दों को अूंचा स्थान दिया, अुसी दिन अुर्दू हमसे दूर जा पड़ी। आज अुर्दू लेखक भारतीय शब्दोंसे काम लेता भी है तो अुनके वर्णविन्यास और अुच्चारणको भ्रष्ट कर देता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है या अुनके अभिप्रेयके पद को गिरा देता है। वह देश नहीं कह सकता, 'देस' ही कहता है; कभी-कभी 'नगर' और 'नदी' का भी प्रयोग करता है, परन्तु यह समझकर कि अिनका स्थान 'शहर' और 'दरिया' के बराबर नहीं है।

अुर्दू लिखनेवालोंको किसीने बतलायाही नहीं कि भारतमें कभी भीमका भी जन्म हुआ था। अुन्होंने बलवानोंमें केवल रुस्तमका नाम सुना है, मान्धाता, राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, चन्द्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त हर्षवर्द्धनके गौरवकी गरिमा अुनके कान तक पहुंची ही नहीं। वह तो जमशेद, कैखुसन, नौशेरवांका ही यशोगान करता है। प्रणयका सच्चा अुदाहरण तो गुलाब और बुलबुलकी युगल मूर्तिमें मिलता है, परन्तु यदि मानव शरीरधारी प्रेमियोंका नाम लेनाही पड़े तो यूसुफजुलेखां, शीरीं-फरहाद, लैला-मजनूके सामने किसका नाम लिया जाय! भले ही भारतीयोंको अपने दर्शन पर गर्व हो, परन्तु अुर्दूका विद्वान तो अफलातून, अरस्तू, सुकरात, सुबरात, और फीसागोरसको ही जानता है। अुर्दू कविकी यही लालसा है कि वह अुर्दूको रश्के फारसी बना दे और लखनअूकी गलियोंको अिसफहानकी गलियोंमें बदल दे। यदि अैसे विपाक्त सांस्कृतिक भोजन पर पला अुर्दू पाठक भारतको अजनबी देश समझता है तो अिसमें आश्चर्य क्या है? अुसको तो अपने पूर्वजोंसे घृणा करने और परायों अरबों यूनानियों और अीरानियोंके पूर्वजों पर गर्व करना सिखलाया गया है। यह लज्जाजनक स्थिति अुर्दूकी देन है। मैं जानता हूं कि आजकल कुछ अुर्दू लेखक अिस दुरावस्थासे लड़ रहे हैं। भगवान करे वे सफल हों। परन्तु यदि अुनको सफलता मिली तो फिर अुर्दूका अस्तित्व कहां रह जायगा! वह तो हिन्दीसे अभिन्न हो जायगी। दस-पांच अरबी फारसीके शब्द भले ही रह जायें, पर हमको अुनसे कोअी द्वेष नहीं है। हम यह नहीं कहते कि हिन्दीमें विदेशी शब्द न रहें। हां, हमारा यह आग्रह है कि जो शब्द आयें वे हमारे हो जायें, अपने विदेशी व्याकरणके आवरणको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ दें। मुल्क हमारा शब्द है, जिलाभी हमारा है, परन्तु हमारे यहां ममालिक और अजलासको स्थान नहीं मिल सकता। सभी-जीवित भाषाओंको बाहरसे शब्द लेने पड़ते हैं। अेसा माननेका कोअी कारण नहीं है कि भविष्यमें आवश्यकता पड़ने पर भी हम फारसी या अरबीसे शब्द न लेंगे।

हिन्दुस्तानीकी अक्षमता

जो लोग राष्ट्रभाषाके विषयमें गांधीजीका अनुसरण करते हैं अुनका कहना है कि हमारा काम न तो संस्कृतमय हिन्दीसे चल सकता है न अरबी फारसीमय अुर्दूसे। हमको अुस भाषाको अपनाना चाहिये जो अुत्तर भारतमें दिल्लीसे लेकर पटना तक बोली और समझी जाती है। अिसको ये 'हिन्दुस्तानी' कहते हैं। मैं स्वयं अिस भाग्यशाली प्रदेशका निवासी हूं। जहांतक बोलनेका प्रश्न है, यहां कअी बोलियां प्रचलित हैं। मेरठका रहनेवाला मैथिल-ग्रामीणकी बोली सुनकर चकरा अुठता है। परन्तु खड़ी बोली अिस प्रान्तमें प्रायः सर्वत्र समझ ली जाती है। अिसीका नाम 'हिन्दुस्तानी' है। अिसे हिन्दी अुर्दू दोनोंका आधार कह सकते हैं।

सच बात यह है कि अिस हिन्दुस्तानीमें सारे भारतकी तो क्या अपने अुद्भवस्थान युक्तप्रान्तकी सरकारी भाषा होनेकी भी क्षमता नहीं है। यह हाट बाजारमें काम दे सकती है, पर अितनेसे ही राष्ट्रका काम नहीं चलता। राष्ट्रभाषामें दर्शन, राजनीति, विज्ञानके लिये शब्दराशि होनी चाहिये। हिन्दुस्तानीमें तो रेवेन्यू, फाअिनेन्स और अिकानामिक्स जैसे व्यवहारिक शब्दों के लिए भी ठीक-ठाक पर्याय नहीं हैं। मैं काशी विद्यापीठ में लगभग पचीस वर्षों से अध्यापन करता रहा हूं। विद्यापीठने अपने जन्मसे ही अंग्रेजीको शिक्षाके माध्यमके रूपमें परित्याग कर दिया था। हमको हिन्दुस्तानीसे अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय विधान पढ़ानेमें सहायता नहीं मिली। यदि अिस प्रान्तने हिन्दुस्तानी मात्रका सहारा लिया होता तो स्वाधीनता-दिवस १५ अगस्तपर जिन घोषणाओं और प्रतिज्ञाओंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम लिया गया था अुनका यथोचित अनुवाद हो ही नहीं पाता। मुझे अिस बातका विश्वास नहीं है कि कोअी भी व्यक्ति कोरी हिंदुस्तानी अर्थात् अुत्तरी भारतकी साधारण बोलचालकी भाषामें भारतीय विधानको लिखनेमें समर्थ हो सकेगा। मुझे ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तानीके समर्थक अिन कठिनाअियोंको समझते हैं, परन्तु जानबूझकर अिनका सामना करनेसे जी चुराते हैं।

हम संस्कृत नहीं छोड़ सकते

हमको स्पष्ट निर्णय करना है। हिन्दुस्तानीके शब्दभंडारको कहीं न कहींसे भरना है। यह कोअी नहीं कहता कि हम अंग्रेजी या किसी दूसरी पाश्चात्य भाषाको अपना आधार बनायें। तब फिर दो ही मार्ग रह जाते हैं, या तो संस्कृतसे शब्द लिये जायें या अरबी फारसीसे। आर्य परिवारकी भाषा होनेसे फारसी अरबीकी अपेक्षा हमारे अधिक निकट है, फिर भी संस्कृतकी अपेक्षा वह हमसे बहुत दूर है। संस्कृतसे बंगला, गुजराती, मराठी, अुड़िया, आसामी ओतप्रोत हैं, द्रविड़ भाषाओंपर भी संस्कृतकी गहरी छाप है। लंका और स्याम तक संस्कृतसे शब्द लेते है। फिर हम संस्कृतको छोड़कर कहाँ जाय? संस्कृतसे कुछ शब्दोंको हमको तत्सम रूपमें लेना होगा, संस्कृतके धातुओं अुपसर्गों और प्रत्ययोंकी सहायतासे हमको नये शब्द बनाने होंगे। अिस प्रकार अलंकृत होकर ही हिन्दुस्तानी अुन समस्त गम्भीर और जटिल विचारों और अनुभूतियोंको व्यक्त कर सकेगी जो सभ्य और प्रगतिशील समाजोंके सांस्कृतिक जीवनके अविच्छेद्य अंग होते हैं। परन्त संस्कृतमयी हिन्दुस्तानीका ही नाम तो हिन्दी है। अतः हम अिस परिणामपर पहुंचते हैं कि हिन्दीही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।

अिसपर यह आक्षेप किया जाता है कि अैसी हिन्दी सामान्य जनताके लिए दुरूह होगी। यह बात ठीक है, परन्तु यही आक्षेप प्रत्येक अुन्नति भाषापर किया जा सकता है। कितने पढ़े लिखे अंग्रेज अंग्रेजी भाषा में लिखी दर्शन, विज्ञान या अर्थशास्त्रकी पुस्तकोंको समझ सकते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजीके अच्छे कोषोंमें लगभग ५००००० (पांच लाख) शब्द होते हैं परन्तु साधारण बोलचालमें अिनमेंसे लगभग ८००० से ही काम लिया जाता है। हिन्दीको राष्ट्रभाषा माननेके बाद भारतीय नागरिककी वही अवस्था रहेगी जो अन्य देशोंमें नागरिकोंकी होती है। संस्कृतमय हिन्दुस्तानी अर्थात हिन्दी को राजभाषा का पद न देना हो तो वह पद अरबी फारसीमयी हिन्दुस्तानी अर्थात 'अुर्दू'को देना होगा। 'नास्त्येव गतिरन्यथा' कोई बीच का मार्ग नहीं है।

अिसका यह तात्पर्य नहीं है कि हम हठात् प्रत्येक अवसरपर विलष्ट भाषाका प्रयोग करें। अैसा करना भूषण नहीं दूषण है। अुर्दूके आक्रमणकी प्रतिक्रिया स्वरूप कहीं-कहीं लोग संस्कृत शब्दोंका अनावश्यक व्यवहार कर देते हैं, पर यह बात आपही चली जायगी। जिसको, जनताके पास अपने विचार पहुंचाना है वह अैसी भाषासे क्यों काम लेगा जिसे जनता समझ ही न सके ?

लिपिका प्रश्न

भाषाके साथही लिपिका भी प्रश्न आता है। बच्चोंको अुस अवैज्ञानिक लिपिको सीखनेके लिअे बाध्य करना जिसका सम्बन्ध अुर्दूसे है अुनके साथ अन्याय करना है।

यह मानना भूल है कि हिन्दुस्तानी नाम को मान लेने से सारा झगड़ा मिट जायगा। मुख्य प्रश्न भाषा के नाम का नहीं स्वरूप का है। जो लोग आज हिन्दी का विरोध कर रहे हैं अुनका मुँह हिन्दीको हिन्दुस्तानी कह देनेसे बन्द न होगा। अुनको तभी संतोष होगा जब हम हिन्दुस्तानी के नामसे अुर्दूको अपनी भाषा स्वीकार कर लेंगे। और यह हम मान नहीं सकते।

आज प्रत्येक प्रश्न साम्प्रदायिक भूमिकामें ही देखा जाता है। लाख यत्न करनेपर भी हम अुर्दूके या 'हिन्दुस्तानी' के समर्थकों को अिस बातका विश्वास नहीं दिला सकते कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानोंके द्वेषके कारण हिन्दीका समर्थन नहीं करते। वे अिस बातको मान ही नहीं सकते कि देशके अभ्युदयकी कामना ही हमारी प्रेरक है। भले ही हममेंसे अधिक व्यक्ति हिन्दू हों, भले ही हमारी दृष्टिमें भारतीय संस्कृतिके हृदयको ये आदर्श और विचार, अनुप्राणित कर रहे हों जिनको हिन्दू परम्पराओंसे पुष्टि मिलती है, फिर भी हमारी बुद्धि संकुचित नहीं है। हम तर्कसे दूसरोंके द्वेष, आशंका, तथा अविश्वासको नहीं भगा सकते। हमारा अितिहास यह बतलाता है और हमारा आचरण यह सिद्ध कर देगा कि जो हमारे देशको अपना देश मानता है हम अुसको अपना मानते हैं। हम अुसके साथ सांस्कृतिक आदान प्रदान करनेमें नहीं हिचकते, जिस भाषाको तुलसी सूर, भूषण और भारतेन्दुके बराबर ही कबीर, जायसी, रसखान और रहीम ने पुष्ट किया है वह अपने समर्थकोंसे भारतीयताके प्रति अनन्य श्रद्धा तो चाहती है परन्तु किसी भी सम्प्रदायके प्रति बैर और बहिष्कारभाव अुसे सह्य नहीं है।

सच्चा रसज्ञ कौन है ?

अेक अतीव सुन्दर बालक बैठा है।

अुसको देखकर चित्रकारने कहा—'मालूम होता है, जैसे तुम मेरे चित्र के लिअे ही आकर अिस तरह बैठे हो ?'

गंधर्वने कहा—'अिसको देखकर तो गाते ही रहनेको जी चाहता है!'

कविने कहा—'मेरी सारी कविताअें अिस पर न्योछावर हैं!'

अुधरसे ही अेक भीलनी भी जा रही थी। वह अुस बालकको देखते ही बोल अुठी—'अैसा जी करता है कि अिसे गोदमें लेकर फिर कभी न अुतारूं!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

अुसका भाअी

: श्री बसन्त पुराणिक :

अुसका भाअी है तो कौन ? मेरी जिज्ञासा बढ़ती ही रही और अुसकी कभी तृप्ति न हो पाअी। किसी भी विषय की चर्चा छेड़ दीजिए वह तुरन्त कहती "मेरा भैया भी....." । अिसी प्रकार अुसका वाक्य प्रारम्भ होता था।

अेक वक्त भोजन करते समय मैंने यूंही कहा "आज ककड़ीका रायता बड़ा स्वादिष्ट बना है मौसी"। अुसने झट कहा "हां, मेरे भय्याको भी बड़ा अच्छा लगता है ककड़ी का रायता। वह जब यहां आता है तब अेक दिन भी ककड़ी के रायते के बिना भोजन नहीं करता।"

"अेसा ! अच्छा भाअी।" मेरे मुंह से अुद्गार निकले। हर बात में अुसका "मेरा भय्या" आता ही था। अिसलिये अगर मैं हंसता तो अपने को बड़ा अधम समझती। बड़े प्रेम भरे भावसे वह अपने भय्याके गुन बखानती थी। मेरा कोअी भी अनुरोध भरा संकेत अुसकी कोमल भावनाओं पर कुठाराघात सा वित होता।

मेरा और अुसका नाता अेसा कोअी विशेष नहीं था। वह मेरी दूरके नाते से मौसी लगती थी। अुसकी सारी जिन्दगी याने कानपूरमें अेक पुराना मकान। दुनियामें अुसके भाअीके सिवा अुसका सगा कोअी न था। वह भी दूर कहीं नौकरी करता था और हर महीने कुछ रकम अपनी बहिनके निर्वाहके लिये भेज देता। बहन अुसी पर अपना निर्वाह जैसे तैसे कर लेती। परन्तु अुसको गर्व था अपने भाअी के लिये, अितना निश्चित। मां ने बहुत आग्रह किया था अिसलिये अिस वर्ष मौसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ अलाहाबाद चन्द दिनोंके लिअे आ गयी थी। अुसी समय मैंने स्वास्थ्य ठीक न रहनेके कारण आफिससे अेक महीनेकी 'सिकलीव्ह' ले ली थी। बाहर हवा बदलनेके लिये जानेका अिरादा किया। परन्तु कहां जाना यह समस्या थी। मेरे सारे रिश्तेदार अलाहाबादमें थे। मौसीने तुरन्त कहा "बेटा, मेरे साथ कानपुर चलो। मैं गरीब हूँ। दाल रोटी मीठी कर लेना।"

"मौसी अैसा क्यों कहती हो। प्रेमकी दाल रोटी भी तो कहां है! प्रेमसे खिलाअी दाल रोटी हलवा पूरीसे बढ़कर है। मैं जरूर तेरे साथ चलूंगा" मैंने भी बिना संकोच कबूल कर लिया। मौसी कुछ भी कहती पर बड़े अपनत्वसे। अुसके प्रत्येक शब्दमें भोलापन और प्रेम ठूस ठूस कर भरा रहता। मैं अुसके साथ कानपुर चला गया।

गोधूलीका समय था। मैं बाहर बरामदेमें आराम कुर्सीपर पड़ा था। मौसी दहेलीपर बैठी मेरे साथ बातें कर रही थी। बातें करते करते अेकाअेक अुसका कण्ठ रुद्ध हो गया। वह गद्‌गद होकर बोली "कभी कभी मैं विचार करती हूँ कि मन अुदास हो जाता है—और हृदयमें बड़ी ठेस पहुंचती है! मेरा भय्या बिचारा काम करता है और मैं यूँही यहां बैठी बैठी खाती हूँ। मुझे बड़ा बुरा मालूम पड़ता है। मौसीकी आंखोंसे आंसू गिर पड़े।

"अैसा क्यों कहती हो मौसी। तुम्हारे भैयाकी अैसी कौन दो चार बहनें हैं। आखिर तुम अेक ही तो हो ना। अेक बहिनका खर्च भाअीको कहीं ज्यादा थोड़ेही पड़ता है मौसी।" मैंने अूपर नजर अुठाकर देखा तो मौसी आंखें पोंछ रही थी।

अितनेमेंही पड़ोसकी कोअी स्त्री आअी। मौसी अंदर घरमें चली गअी। मैं कुछ सोचता हुआ कुर्सीपर पड़ा रहा। थोड़ी देर बाद मौसी बाहर आअी। 'कौन आया था मौसी,' मैंने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पड़ोसकी जीजीबाओी थी ! पांच रुपये अुधार लिये थे। माँगने आओी थी। पन्द्रह तारीख हो गओी आज। अभी तक मेरे भय्याने पैसे नहीं भेजे।"

"मुझसे क्यों नहीं मांग लिये" मैंने कहा।

"नहीं ! अितनी जल्दीकी क्या बात है ! अैसी कोओी बात जरूरत न थी अुसे। मैं भागे थोड़ी जा रही हूं। पैसे गये चूल्हेमें पर कुशल वार्ताका कोओी पत्र तो भेज दिया होता भय्याने--वह भूले नहीं परन्तु घरमें कोओी अड़चन जरूर होगी।" मौसीने अेक सांसमें चार बातें कह डालीं।

"हां, अेसाही होगा" मैंने कहा।

दूसरे दिन सवेरे मौसीके भैयाका पत्र आया। मौसी पढ़ नहीं सकती थीं। अुसने मुझे ही पढ़नेके लिये दे दिया और अुत्कण्ठा भरे भावसे मेरी ओर देखने लगी। पत्र सुननेके लिये अुसकी तीव्रता बढ़ गओी थी।

"तुम्हारी बहूको लड़की हुओी है। मां और बच्ची दोनों मजेमें हैं। बहूकी माको बुखार आ रहा है। अिस महीनेमें रुपये भेजना सम्भव नहीं--और भविष्यमें भी भेज सकूंगा अैसा सम्भव नहीं जान पड़ता--अतः तू वहां कुछ काम देख। मैं गम्भीर हो गया। पत्र अभी मैंने अुसको पढ़ कर नहीं सुनाया था। मैं चुप था!

"क्या लिखा है मेरे भय्याने— पढ़ो बेटा, पढ़ो" मौसी अधीर थी।

मैंने अेक टुक अुस वृद्धाकी ओर देखा— मेरा गला भर आया। अुस बेचारीको मैं क्या पढ़कर सुनाता--अगर सुनाता तो अुसपर मानों वज्रपात होता। मैं सोचमें पड़ गया। अन्तमें मैंने काम देखनेकी बातको छोड़कर सारा पत्र सुना दिया और पत्रके बाद मनीआर्डर भेज रहा है ये शब्द अपने मनसे जोड़ दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसीका मुख-मण्डल आनन्दित हो अुठा। आंखोंमें आशाकी दीप्ति झलकने लगी। मेरी ओर हंसकर कहने लगी, "कोअी बात नहीं, मेरे भय्याको लड़की हुअी तो बिगड़ाही क्या। मैंने कहा था न मेरा भय्या पत्र लिखनेमें कभी चूकेगा नहीं। घरमें जचकी जो हुअी है।"

"असुविधाके कारण पत्र जल्दी नहीं भेज सका। और देख मैंसेभी वह जरूर भेजेगा। सच, मुझ पर मेरे भय्याका बचपनसे बड़ा स्नेह है!!"

वृद्धाका चेहरा और भी प्रफुल्लित हो गया। आंखोंमें कृतज्ञताका पानी झलक आया। मुझे अुस पर दया आ गअी। मैंने मुंह अेक ओर कर लिया। मेरी आंखमें आंसू भर आये थे।

दूसरे दिन मैं घूमकर घर आया---और तुरन्त ही मौसीसे कहा, मौसी मैं अभी पोस्ट आफिससे चला आ रहा हूँ। तुम्हारा मनीआर्डरभी भुना आया हूँ। जेबसे पांच रुपयके तीन नोट निकाल कर मौसीके हाथ पर धर दिये।

नोट हाथमें लेकर मौसीने कहा "भाअी हो तो अेसा हो।"

मैंने अपने मनमें कहा "सच मौसी"

★ प्रजातन्त्रका अर्थ ★

वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्थामें प्रजातन्त्र सम्भव नहीं और अज्ञान, हिंसा तथा गरीबीके होते हुए यह व्यवहारिक नहीं। प्रजातन्त्रका असली अर्थ सिर तोड़े बिना जनताके जीवनमें परिवर्तन लाना है। वस्तुतः अहिंसा और प्रजातन्त्र तो पर्यायवाची शब्द हैं।

—आचार्य कृपलानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे राष्ट्रभाषा संस्मरण

:श्री जेठालाल जोशी:

२१ वर्ष पहलेकी बात है। मैं सयाजीराव हाअीस्कूल (बड़ौदा) में गया था। मुख्याध्यापक महोदयसे वार्तालापके सिलसिलेमें देशके लिअे अेक सर्व सामान्यभाषाका भ जिक्र आया। मुख्याध्यापक अंग्रेजी और गुजरातीके अच्छे ज्ञाताओंमेंसे थे। अुन्होंने कहा कि देशके पढ़ेलिखे लोगोंकी सर्वसामान्यभाषा अंग्रेजी है, हिन्दीकी कोअी आवश्यकता नहीं। मैंने समझानेकी कोशिश की कि देशका हर आदमी अंग्रेजी नहीं जानता और हर आदमीके लिअे अंतर्प्रान्तीय व्यवहारके लिअे अेक सर्वसामान्यभाषाका जानना जरूरी है और यह सर्व सामान्यभाषा हिन्दीही है। अुसवक्त मेरीबात अुनके ध्यानमें नहीं आयी।

मैंने अुसी रोज दृढ़निश्चय किया कि यह प्रश्न प्रत्यक्ष कार्य करनेसेही हल हो सकता है। मैं अहमदाबाद आया और अपने परम मित्र श्री वेशवजी परमारसे परामर्श करके शहरके प्रधान व्यक्ति (१) स्व० श्री बलवंत राय परमादे रायठाकोर अध्यक्ष अहमदाबाद म्युनीसिपैल्टी (२) श्रीमती विद्याबहन नीलकंठ अध्यक्ष अहमदाबाद म्युनीसिपैल्टी स्कूलबोर्ड (३) श्री डॉ० साहब हरिप्रसादजी देसाओ अध्यक्ष गुजरात साहित्य सभा तथा स्वर्गीय श्रीमान हरिप्रसादजी मेहता अध्यक्ष लोकलबोर्डसे मिला और मेरी हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागकी परीक्षाओंके केन्द्र व्यवस्थापकके रूपमें नियुक्ति करवा करके कार्य सिर्फ तीन परीक्षार्थियोंसे शुरू किया गया। ये तीन विद्यार्थी घरकेही थे। (१) श्री. अुमाशंकर जोशी अम. अ (सम्पादक 'सस्कृति') (२) श्री कालीदास जोशी अेम. अे (प्रधान मंत्री बंबअी राष्ट्रभाषा प्रचार सभा) (३) श्री. भूलेश्वर जोशी। अुन दिनों पूज्य बापूजीकी प्रेरणासे हिन्दी साहित्य सम्मेलनके तत्वावधानमें दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा जोरोंसे हिन्दी प्रचार कार्य कर रही थी। यहां वातावरण मैं गुजरातमें देखना चाहता था। १९२०-२१ के असहयोग आंदोलनके कारण अिस कार्यके लिये भूमिका तो तैयार थी ही, गुजरात विद्यापीठमें हिन्दी अनिवार्य रूपसे पढ़ाअी जाती थी। मैं चाहता था कि प्रत्येक पढ़ा लिखा गुजराती राष्ट्रभाषा हिन्दी अवश्य सीखे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमदाबादके अक प्रोफेसर महोदयने अक बार मेरा हिन्दी प्रचार प्रेम देखकर कहा कि तुम यह सब अपनी रोटीका प्रश्न हल करनेके लिये ही कर रहे हो। देशमें अंग्रेजी जैसी समृद्ध भाषाके रहते हुये हिन्दीकी कहाँ जरूरत है? मैंने अुत्तर दिया कि यदि आप ६००० मील दूरकी अस्वाभाविक विदेशी भाषाके प्रचारार्थ अपनी रोटीका प्रश्न हल करते हैं तो मुझे हिन्दी—अपनी भारतीय भाषाका प्रचार करके अपनी रोटीका प्रश्न हल करनेका हक क्यों न होना चाहिअे? हालांकि अुस वक्त प्रचारार्थ कुछ खुदका खर्च करना पड़ता था।

कुछ ही वर्षों बाद अहमदाबादमें अेक हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी स्थापना हुअी। अुन दिनों हिन्दी हिन्दुस्तानी समानार्थी शब्द थे। अिस सभाके अध्यक्ष माननीय सरदार पटेल थे व मंत्री थे (१) माननीय दादासाहब मावलंकर (२) स्व. श्री बलवंतराम परमादेराय ठाकुर तथा श्री अिन्दुलालजी याज्ञिक। मैं भी अुस सभाका सदस्य बना। व्याख्यान माला शुरू हुअी। मेरे भी दो व्याख्यान हुअ। अेक व्याख्यान श्रीयुत नरहरीभाअी परीखकी अध्यक्षतामें हुआ। विषय था 'राष्ट्रभाषा का स्वरूप'। दूसरा व्याख्यान अुन्हीं प्रोफेसर साहबकी अध्यक्षतामें हुआ जिन्होंने मुझे रोटीका प्रश्न हल करनका ताना मारा था। विषय था 'नवयुग स्रष्टा साहित्यकार श्री. भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र'। अिस अवसरपर अध्यक्षने हिन्दीको राष्ट्रभाषाके रूपमें पहचाना और अुसके प्रचारकी आवश्यकतापर जोर दिया।

१९३७ के जुलाअी अगस्तमें अेक दिन श्रीयुत मोहनलालजी भट्ट मेरे घर आये। मैं अुन्हें अच्छी तरह पहचानता था। वे नवजीवनके व्यवस्थापक थे और हिन्दी नवजीवनके तंत्री श्री मृत्युन्जय प्रसादजी (माननीय डा. राजेन्द्रप्रसादके सुपुत्र) के साथ नवजीवनके लेखोंके अनुवादके सिलसिलेमें मेरे यहाँ दो चार बार आये थे। अिस बार श्रीयुत भट्ट साहबके आनेका कारण दूसरा था। हिन्दी प्रचार समिति वर्धाने अपनी परीक्षाअें शुरूकी थीं और मैं सम्मेलनका मान्य केन्द्र-व्यवस्थापक होनेसे वर्धा समितिका भी केन्द्रव्यवस्थापक माना गया था। भट्ट साहबके आग्रहसे मैंने अिस कार्यको भी पूरी श्रद्धाके साथ करना स्वीकृत किया।

१९३८ में गुजरातमें, हरिपुरा काँग्रेसका अुत्साहप्रद वातावरण था पूज्य काकासाहबका पत्र मिला कि मैं हरिपुरा जाअूँ और गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके लिये अेक नामावली लेता जाअूँ। मैं नामावलीके साथ हरिपुरा पहुँचा। मेरी नामावलीमें, अध्यक्ष पदपर आचार्य डॉ० आनंद शंकर ध्रुव थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिपुरामें समिति तो न बनी परन्तु सेठ जमनालालजी बजाजकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा परिषद हुआ। अिसका बहुत अच्छा प्रभाव रहा।

हरिपुरा काँग्रेससे सारा गुजरात प्रभावित था। अिस काँग्रेस अधिवेशनने राष्ट्रभाषा हिन्दीका अेक विशेष संदेश दिया था। मैं अुस वातावरणसे फायदा अुठाना चाहता था। मैं श्रीमती शारदाबहिन मेहतासे मिला। वे स्वयं भी अखिल हिन्द महिला परिषदकी गुजरात शाखाकी सदस्या बहिनोंके लिये अेक हिन्दीका वर्ग शुरू करवाना चाहती थी। वर्ग शुरू हुआ नगरकी प्रतिष्ठित बहिनें वर्गमें नियमित आने लगीं। राष्ट्रभाषा परिचय अुसी वर्गमें पढ़ाये जानेवाले व्याकरणके पाठोंका छपा हुआ स्वरूप है। परिक्षाअें समाप्त हुअीं परीक्षा फल निकला और हमारा पहला पदवी-दान समारंभ होना तय हुआ। समारंभके अध्यक्ष पूज्य आचार्य डॉ० आनंद शंकर ध्रुव मनोनीत हुअ आचार्य जी स्वास्थ्य ठीक न होनेके कारण न आ सके अतः यह कार्य श्रीयुत नरहरिभाअी परीखके हाथों संपादित हुआ।

१९३६ में पूज्य काका साहबकी अध्यक्षतामें 'गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार' का संयोजन हुआ। काकासाहब सार्वभौम राष्ट्र लिपि नागरीका नारा बुलन्द करते हुअे गुजरातमें घूमे और वहाँ राष्ट्रभाषाके वातावरणका निर्माण किया। काका साहब अपने दौरेके सिलसिलेमें अहमदाबाद भी आये। हमारी ओरसे प्रेमाभाअीहॉलमें सभा रखी गअी। सारा हाल ठसाठस भर गया। जगहकी कमीके कारण कअी लोगोंको निराश हो लौट जाना पड़ा।

१९४२ मअीमें पूज्य बापूजीकी अिच्छानुसार हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी स्थापना हुअी। गुजरातके संचालक श्री नाणावटी भाअीने हमारे नेताओंके जेल चले जानेके अेकाध वर्ष बाद हमारे राष्ट्रभाषा प्रचारके कर्णधारोंकी अनुपस्थितिमें हिन्दुस्तानीका कार्य शुरू करना चाहा। मेरा आग्रह रहा कि यह नया कार्य पूज्य बापू, श्रद्धेय टंडनजी, माननीय राजेन्द्रबाबू तथा काकासाहबके बाहर आने तक रुक जाना चाहिये। श्री नाणावटी भाअीने अपना काम शुरू कर दिया। अुनका निवेदन 'अेक झालं आगम' तथा नमूनेका प्रश्न पत्र हमारे कार्यालयसे ही निकले। मेरे सामने कठिन समस्या थी, मेरा दृढ़ निश्चय था कि जब तक नाणावटी वर्धा समितिका कार्य करते रहें तब तक स्वयं समितिका संगठन नहीं करना है। दोनों संस्थाओंका श्रद्धापूर्वक कार्य करना कठिन प्रतीत होनेसे अुन्होंने वर्धा समितिका काम छोड़ दिया। मैंने अपने संगी साथियोंसे परामर्श करके निर्णय किया कि चालू कार्यसे बिना किसी विद्वेषके सहयोग किया जाय। समस्त गुजरातके कार्यके लिये अब मुझे अेक समितिका होना आवश्यक प्रतीत हुआ। मैंने तथा श्रीयुत परमेष्ठीदासजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैनने मिलकर श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी प्रधान मंत्री राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा को गुजरातमें आनेका निमंत्रण दिया। अुनके सहयोग व प्रेरणासे १ जनवरी १९४४ में सूरत में गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचारका संगठन किया गया।

समितिके प्रथम अध्यक्ष श्रीयुत रामनारायणभाअी पाठक और मंत्री श्री अुमाशंकर जोशी व श्री परमेष्ठीदासजी जैन थे।

नये वर्षके अध्यक्ष माननीय श्री कन्हैयालालजी मुन्शी हुअे और मंत्री श्री मोहनलालजी भट्ट। हिन्दुस्तानीका आन्दोलन जोरों से हो रहा था। प्रान्तीय संचालकका मन भी डगमगा रहा था कि शायद हमारा कार्य समाप्त हो जाय। जनता असमंजसमें पड़ी हुअी थी। प्रान्त द्विधा नीतिकी गड़बड़ीमें था। केन्द्र संख्या व परीक्षार्थी संख्या कम हो गअी थी। हमारे अध्यक्ष माननीय मुन्शीजी तथा समितिकी कार्याध्यक्षा श्रीमती शारदाबहिन मेहताका विशेष आग्रह रहा कि मैं मंत्रीका भार संभालूं। मैं मंत्री बना, मेरे मनमें संघर्ष चल रहा था। अेक तरफ पूज्य बापूका दोनों लिपियोंका आग्रह और दूसरी ओर हृदयमें नागरीके प्रति दृढ़ श्रद्धा। आखिर पूज्य बापूके प्रति श्रद्धा रखते हुअे हृदयके अनुसार कार्य शुरू किया।

मेरे लिये यह परम सौभाग्यकी बात है कि मुझे समस्त गुजरातके प्रत्यक्ष दर्शनका सुयोग प्राप्त हुआ। मैंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवसे देखा कि हमारे कार्यकर्ताओंमें आज जरा भी द्विधा वृत्ति नहीं है। अिन पाँच वर्षोंके अनुभव व प्रयोगने सिद्ध कर दिया है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी ही हो सकती है। आज गुजरातमें २५० परीक्षा केन्द्र हैं और कोअी २५-३० हजार परीक्षार्थी हर साल परीक्षाओंमें बैठते हैं। हिन्दी ही जनताकी भाषा कही जा सकती है।

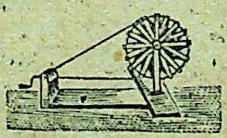

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत भूमिके अखबार

पावेल सत्युकोफ़

ऐसा मालूम होता है कि सोवियतके बाहरके लोग सोचते हैं कि समाचार पत्र केवल तभी 'स्वतंत्र' रह सकते हैं जबकि अनका व्यक्तिका अधिकार हो। दूसरे शब्दोंमें जबकि करोड़पतियोंको इस बातकी खुली आजादी हो कि जनताको सिर्फ वह अुन्हीं चीजोंसे परिचित कराये जो कि अुनके फायदेकी होगी अैसे 'विशेषज्ञों' के अनुसार वह समाचार पत्र जिसका नियंत्रण और संचालन मेहनतकश जनताके आम संगठनों द्वारा होता है 'स्वतंत्र' नहीं है।

हम सोवियतवासियोंका ख्याल है कि सचाअी अिसके सर्वथा विपरीत है। हमारे यहाँ समाचारपत्रोंपर किसी किस्मका व्यक्तिगत आधिपत्य नहीं है। बिना किसी अपवादके अन्य पुस्तकों तथा पुस्तिकाओंकी तरह हमारे यहाँके सभी समाचारपत्र स्टेट, पार्टी, श्रमिक संघों तथा श्रमिकोंके अन्य संगठनों द्वाराही प्रकाशित होते हैं। अुनका अुद्देश्य जनहितकी रक्षा तथा समाजवादी स्टेटकी नीतिको कार्यान्वित करनेके लिअे जनताकी वास्तविक रायको व्यक्त करना है।

'लाभ-शुभ' नहीं

सोवियत रूसके अखबारोंमें लोगोंको अुल्लू बनानेवाले बड़े बड़े सनसनीखेज समाचार नहीं होते। मुनाफाखोरी अुनका ध्येय नहीं है। वे बिल्कुल प्रमाणित खबरें प्रकाशित करते हैं और तथ्योंको बुद्धिवादी ढंगसे पाठकोंके समक्ष रखते हैं। सोवियत जीवनके सभी अुलझे हुअे पहलुओंका विश्लेषण करने तथा निकट भविष्यकी संभावनाओंका दर्शन करानेमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे पाठकोंके बड़े सहायक होते हैं। वे कठिनाअियों और त्रुटियोंको जनतासे छिपाते नहीं हैं किन्तु अुनपर स्पष्ट प्रकाश डालते है। सार्वजनिक अधिकारियोंकी गलतियोंपर पर्दा न डालते हुअे वे अुनकी निर्भीक आलोचना करते हैं। सोवियत विधानने समाचारपत्रोंको पूर्ण स्वतंत्रता दी है।

यही कारण है कि हमारे यहाँके अखबारों और अुनके पाठकोंके आपसी संबंध अितने सुदृढ हैं। श्रमिक सम्मेलनों तथा आम सभाओंद्वारा अनगिनत पत्र तथा प्रस्ताव अखबारोंमें भेजे जाते हैं और अुनका व्यापक प्रकाशन भी होता है। लाखों करोड़ों श्रमिकोंके, सक्रिय राजनैतिक जीवनमें खींचनेवाली सोवियत प्रणालीने अखबारोंकी प्रगति तथा अुनके विकाससंबन्धी समस्याओंके प्रति जनताकी व्यापक दिलचस्पी जागृतकी है। जनता अपनी खुदकी रायको मुद्रित रूपमें देखना चाहती है। समाजवादी चेतनाका संचार कर देशकी आगामी प्रगतिके लिअे जनशक्तिको संगठित करनेमें सोवियतके हजारों समाचार पत्र अेक बड़ी संख्यामें लोकप्रिय संगठनकर्ता तथा प्रचारकका कार्य करते हैं।

५६०० दैनिक पत्र

जारके शासन कालमें रूसमें ७७४ अखबार निकलते थे। ८४ अन्य भाषाओंमें। सब अखबारोंकी कुल २,७००,००० प्रतियाँ छपती थीं। आज हमारे यहाँ ५६०० से अधिक अखबार हैं और अुनकी ३००००,००० कापियां रोज छपती हैं।

अकेले मास्को शहरसे ही २० केन्द्रीय समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। विभिन्न राष्ट्रीय प्रजातंत्रोंकी राजधानियोंसे रूसी भाषाके अतिरिक्त अुनकी अपनी बोलियोंमें अखबार निकलते हैं। प्रत्येक क्षेत्र, प्रदेश, शहर और लगभग हरअेक देहाती जिलेके भी निजी अखबार हैं। ५६०० मुद्रित समाचार पत्रोंके अतिरिक्त सैकड़ों दीवाल पत्र तथा अन्य अुद्योग केन्द्रों संस्थाओं तथा सामूहिक खेतोंके अनेक दूकान पत्रभी हैं। सोवियत समाचार पत्र जनताकी सभी भाषाओंमें प्रकाशित होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी अखबारोंसे अधिक प्रभावशाली तथा व्यापकरूपसे पढ़े जाने वाले राजधानीके केन्द्रीय अखबार हैं। अिनमें कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समितिका पत्र 'प्राव्दा' प्रमुख है।

'प्राव्दा' की स्थापना लेनिन और स्तालीन द्वारा सेंटपीटरबर्ग में की गयी थी। अिसका प्रथम अंक ५ मअी १९१२ को प्रकाशित हुआ था। अेक वर्ष पूर्व अिसके दस हजारवें अंक का अुत्सव मनाया गया था। यह मास्को, लेनिनग्राड, बाकू, ताश्कंद, कुअिबिशेफ़, रोस्टोफ़ और नवोसिबिर्स्कमें साथ साथ प्रकाशित होता है। अिसकी दैनिक खपत बीस लाख है।

आज 'प्राव्दा' पंचवर्षीय योजनाकी खबरोंको प्रमुख स्थान दे रहा है। संपादक, मंत्रीगण, फेक्टरीके डायरेक्टर, पार्टीके नेता तथा विभिन्न प्रजातंत्रोंके सरकारी संगठन विस्तारपूर्वक अिस महान योजनाके महत्व पर प्रकाश डालते हैं। पत्र संवाददाता कार्यकी प्रगतिकी रिपोर्ट देते हैं। पत्रमें व्यवसाय और खेतीकी अुन्नतिके समाचार छपते हैं। वे समाजवादी ढंगसे भौतिक अुत्पत्तिकी होड़के समाचार प्रकाशित करते हैं और पीछे पड़ जानेवालोंकी आलोचना करनेके अतिरिक्त संगठनके तरीकोंपर सुझाव भी देते हैं।

प्रमुख जननेताओंके लेखोंके साथ साथ आम मेहनतकशों तथा सामूहिक खेतिहरोंके लेख भी पत्रोंमें प्रकाशित किअे जाते हैं। 'प्राव्दा' के कार्यालयमें रोजही सैकड़ों पत्र आते हैं और अिस तरीकेसे 'प्राव्दा' अपने पाठकोंको सोवियत जीवनके सभी पहलुओंसे परिचित कराता रहता है।

सोवियत संघके अखबारोंमें अेक 'पार्टीजीवन स्तंभ' भी होता है। अिस स्तंभमें स्थानीय पार्टी संगठनोंपर तथा मार्क्सवाद लेनिनवादके संबंधमें सैद्धांतिक लेख प्रकाशित होते हैं। साहित्य और कलाविषयक समस्यामूलक लेखोंको भी पत्रोंमें प्रचुर स्थान दिया जाता है।

विदेश की खबरें

'अिज़वेस्तिया' सोवियत रूस का दूसरा प्रभावशाली अखबार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसका प्रथम अंक जारके पतनके बाद ही फरवरी १९१७ में प्रकाशित हुआ था। अिस पत्रमें सदैव संघकी सर्वोच्च समिति (पार्लियामेंट) के संबंधमें विस्तृत खबरें प्रकाशित होती हैं। अिसमें सभी कानून और आदेश छपते हैं। संघ प्रजातंत्रोंकी सर्वोच्च समिति तथा प्रादेशिक और शहरी सोवियत विषयक सामग्रीभी अिसमें प्रकाशित होती है।

'अिज़वेस्तिया' का 'विदेश स्तंभ' अखबारका आधा हिस्सा ले लेता है। 'टास' तथा विदेशी अेजेन्सियोंके अलावा अिसमें वैदेशिक संवाद दाताओंद्वारा भेजे गय संवादभी प्रकाशित होते हैं। अुदाहरणार्थ अेडनबर्गके हालहीमें भेजे गअे अमेरिका और फ्रांसके संवाद 'अिज़वेस्तिया' में ही निकले थे।

सोवियत संघके अन्य लोकप्रिय राष्ट्रीय दैनिक 'क्रास्नया ज्वेज़्दा' (लालतारा) 'त्रुद' (श्रम) 'वस्सोमोल्स्काया प्राव्दा' आदि हैं।

विभिन्न प्रजातंत्रों तथा प्रदेशों में प्रकाशित होनेवाले सैकडों अखबारोंमें अनेक अैसे भी अखबार हैं जो कि अपने प्रभाव क्षेत्रोंके बाहरभी दिलचस्पीसे पढ़े जाते हैं। अिनमें 'प्राव्दाअुक्रअिनी' 'गोर्की स्कया कमूना' आदि प्रमुख हैं। स्थानीय समाचारोंके अतिरिक्त अिन पत्रोंमें अंतर्राष्ट्रीय महत्वके समाचारभी प्रकाशित होते हैं। सोवियत जीवनकी झांकीभी अिनमें निकलती है।

तीन हजारसे अधिक जिल्दोंसे हमारे अखबार प्रकाशित होते हैं। ये छोटे आकारके होते हैं और सप्ताहमें दो या तीन बार निकलते हैं।

सभी अखबार पूर्ण रूपसे जनता द्वारा संचालित और नियंत्रित होते हैं। वे लोग बड़ी भारी भूल कर रहे हैं जो यह सोचते हैं कि हमें अपने अखबारोंके जारअे देशकी तथा संसारकी गतिविधिसे परिचित नहीं कराया जाता और अुनमें हम अपने मत प्रकट नहीं कर सकते।

—०*०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज का राज़

प्रभाकर माचवे

आजकल हवामें कअी नारे सुनाअी देते हैं: गांधी कहते हैं—'रामराज' (फिल्म नहीं); सावरकर-संघवाले कहते हैं—'हिंदू राज'; नेहरूकी काँग्रेस कहती हैं—'लोकराज'; समाजवादी कहते हैं—'किसान-मजूर राज' या 'जनताका राज'! आखिर राज आज है किसका, और होगा किसका? अितिहास साक्षी है राज होकर रहेगा श्रमिकोंका ही।

अगर आप अेक गरीब राज़से पूछेंगे कि आज राज किसका है, तो वह निस्संकोच कहेगा कि 'राज बड़े लोगोंका है।' बड़े लोगोंसे मतलब पैसेवालोंसे है। परसों किसी पत्रमें पढ़ा कि अमरीका जैसा लंबा-चौड़ा, अपने आपको प्रजातंत्र कहनेवाला देश अंततः नौ-दस पूँजीपतियोंके हाथमें है, जिनका मुनाफा अिस वर्ष २४ अरब रुपया होने जा रहा है। जी हाँ, फी व्यक्ति अढ़ाअी अरब रुपया मुनाफा! और यहाँ हम अिसी सोचमें हैं कि भारतपर अरब-लीगका आक्रमण होगा या रूसका या तिब्बतका? भारतपर और भारतका हिस्सा पाकिस्तानपर आक्रमण तो कभीका हो चुका है; और वह है अुन्हीं अमरीकी धनकुबेरोंकी वस्तुओंका-शस्त्रास्त्रों, यंत्रों, विलास-वस्तुओंका। 'योरुपके लिअे बस एक गोदाम है हिंद!'

जरा अिस नारावादिता, अिस भावुकता भरी राजनीतिसे अुठकर दुनियाके और अपने देशके आर्थिक पहलूको भी तो देखो! वह रामराज किस कामका, जिसमें सुवर्णमृग ही रामको लुभाता हो; वह हिंदूराज किस मतलबका कि जिसमें शोषक-शोषित दोनोंही हिंदू हों; वह लोकराजका बुर्का भी कै दिन चलेगा कि जिसमें कालाबाजार सफेद टोपी पहिने दिनदहाड़े घूमे प्रतिष्ठित बनकर...?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माना, आजके शासकोंके प्रति जनताके मनमें असंतोष है। फिर भी वे शासक अपने ही हैं न, हमारे ही बनाये हुये। क्या यह उचित समय है कि मूर्तियोंका अदला-बदला किया जाय? क्या यह शांतिकारक है कि मूर्ति बनाते बैठा जाय। समझदार आदमी कहेगा कि ये रास्ते तुम्हारे सामने खुले हैं; गांधीकी राह पसंद हो तो आजके शासकोंका हृदय-परिवर्तन करो (शायद शासक हृदयहीन होता है) समाजवादी राह पसंद हो तो आजके शासनयंत्रमें घुसो, उसमें अपना बहुमत बनाओ, यंत्रकी गतिको मोड़ो या बदलो, साम्यवादी पद्धति चाहते हो तो शासकोंपर जनताका (किसानोंके मोर्चों और श्रमिक-संगठनोंका) जोर डालो, गतिमें मोड़ पैदा हो जायगा—यह सब समझमें आनेवाले तरीके हैं; परन्तु यह क्या वाहियात बात है कि नेहरूकी गद्दीपर डाक्टर खरेको बैठाना या अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर परिषदमें ज़मीदार श्यामाप्रसाद मुखोपाध्यायको श्रमिकोंकी ओरसे रखना।

आजका समय अत्यंत गंभीर और संयत चिंतन का है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ जोड़कर अर्ज

हम बड़े हर्षके साथ रैहाना बहिन तैयबजीके ६ नवम्बरके हरिजन सेवकमें प्रकाशित निम्नलिखित पत्रको अनुवादित कर रहे हैं। रैहाना बहिन तैयबजी किसी समय दो लिपियोंकी पक्षपातिनी थीं किन्तु अब उनका ख्याल है कि अर्दू लिपि लादनेमें सख्त नुकसान है। प्रश्न दो लिपियों अथवा अर्दू लिपिका नहीं। प्रश्न है भाषा और लिपिके बारेमें मजहबी दृष्टिसे विचार करने और न करनेका। अिस पत्रमें रैहाना बहिन तैयबजीने भाषा और लिपि प्रश्नपर राष्ट्रीय दृष्टिसे विचार करनेका प्रयत्न किया है। —सम्पादक

रैहाना बहन तैय्यबजी लिखती हैं—

"१५ अगस्तके बाद दो लिपिके बारेमें मेरे ख़याल बिलकुल बदल गये और अब पक्के हो गये है। मेरे ख़यालसे अब वक़्त आ गया है कि अिस दो लिपिके सवालपर खुल्लमखुल्ला और आम तौरसे साफ साफ चर्चा हो। अिसलिअे अगर आप ठीक समझें, तो अिस ख़तको 'हरिजन' में छापकर अुसपर चर्चा करें।

जब तक हिन्दुस्तान अखंड था और अुसे अखंड रखनेकी अुम्मीद थी, तब तक नागरी लिपिके साथ अुर्दू लिपिको चलाना मैं अुचित-बल्कि ज़रूरी मानती थी। आज हिन्दुस्तान, पाकिस्तान दो जुदे राज्य बन गये हैं (मुसलमानोंकी निगाहमें तो दो जुदे राष्ट्र) हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा: नागरी हिन्दुस्तानकी खास और मान्य लिपि—नागरीके साथ अुर्दूके गँठबंधनकी क्या ज़रूरत है? अिस स्वालपर बराबर विचार करती रही हूँ और अब मेरा दृढ़ विश्वास हो गया है कि हिन्दुस्तानपर अुर्दू लिपि लादनेमें अितना ही नहीं कि कोअी फ़ायदा नहीं बल्कि सख्त नुकसान है। मैं मानती हूँ कि:—

१. हिन्दू-मुस्लिम अैक्य और मैत्री भाषा या लिपिसे नहीं हो सकती—सिर्फ़ सामाजिक मेलजोलसे हो सकती है। यह चीज़ मैं जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखती आयी हूँ। मुसलमान खुद यही कहते आये हैं और अब भी कहते हैं। साथ मिलने-जुलने, रहने-सहने, खाने-पीने, खेलने-कूदने, कामकाज करनेसे ही ऐक्य बढ़ सकता है। अुर्दू लिपि सामाजिक मेलजोलकी जगह कभी नहीं ले सकती।

२. मुसलमानोंको अगर आप वफ़ादार हिन्दुस्तानी बनाना चाहते हैं, तो अुनमें और बाकीके हिन्दुस्तानियोंमें अब कोअी फ़र्क नहीं करना चाहिये। अगर वे हिन्दुस्तानमें रहना चाहते, तो और हिन्दुस्तानियोंकी तरह रहें। हिन्दुस्तानी सीखें, नागरी सीखें। अगर अुर्दूका आग्रह हो तो बेशक अुन्हें अुर्दू सीखनेकी सहूलियतें दी जायँ। मगर, अुन्हें खुश करनेके खातिर हिन्दुस्तानकी सारी जनतापर अुर्दू लिपि क्यों लादी जाय? अिसमें मुझे सख्त अन्याय नज़र आता है और मैं अिसके बिलकुल ख़िलाफ़ हूँ। गैर-मुसलमानोंपर यह अन्याय, कि अुन्हें फ़िजूल अेक अितनी मुश्किल, दोषपूर्ण और हिन्दुस्तानीके लिये निकम्मी---(अुर्दू लिपिमें साहित्यिक हिन्दुस्तानी लिखना महा कठिन है; क्योंकि संस्कृत शब्दोंकी बड़ी तोड़-मोड़ करनी पड़ती है)—लिपि सीखनेमें अपनी शक्ति खर्च करनी पड़ती है; और मुसलमानोंपर यह अन्याय कि अुन्हें अपना दुराग्रह छोड़नेका आप कोअी मौका ही नहीं देते! अुनकी बेजा माँग पूरी करके आप अुनमें और अन्य अल्पसंख्यकोंमें अेक कृत्रिम फ़र्क पैदा कर देते हैं। अिससे गैर-मुसलमानोंको चिढ़नेका हक मिलता है, और मुसलमानोंको अपनी अलग-थलग जमात बनाकर बैठ जानेका मौका मिलता है। (अिस चीज़का नमूना मेरा अपना ख़ानदान देता है) अगर आपने अुर्दू लिपि भी अपनायी, तो मुसलमान सदा हिंदमें परदेशी बनकर रहेंगे-और कामचलाअू जबानोंसे सन्तोष मानकर अपना सारा ही व्यवहार अुर्दूमें करेंगे। यह मेरा अनुभवजन्य, अिसलिअे, दृढ़ विश्वास है। बाकी! गुस्ताखी माफ़—आप लोग मुसलमानोंसे अितने अलग रहे हैं कि आपको अुनके मानसकी बिलकुल खबर नहीं। यही वजह है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान हो गया। और मुझे यक़ीन है कि अगर आपने नागरीके साथ अुर्दूको भी राष्ट्रलिपि बना ली, तो आप हिन्दुस्तानके भीतर अेक दूसरा पाकिस्तान खड़ा कर देंगे।

३. मैं मानती हूं कि जो शक्ति आप लोगोंको अुर्दू लिपिके प्रचारके, हर किताबकी द्विलिपि बनानेकी तजवीजोंमें, कातिब, ब्लॉक्स, और छपाअीकी हजामतोंमें खर्च करनी पड़ती है, सो अब खरे महत्वके कामोंमें लगानी चाहिये। हमें हिन्दुस्तानी भाषा बनानी है, कोष तैयार करने हैं, साहित्य खड़ा करना है। अुर्दू लिपिके आग्रहसे हमारा बोझ चौगुना हो जाता है, काममें रुकावटें पैदा होती हैं और वक्त फ़िजूल बिगड़ता है। अिसमें शक नहीं कि अुर्दू-हिन्दी दोनों जाने बिना हिन्दुस्तानी बनाना अशक्य है। लिहाजा, प्रचारकोंको, लेखकोंको, हमारे प्रचारक-मदरसाओंमें नागरी-अुर्दूका ज्ञान होना जरूरी है। लेकिन आम जनताको अुर्दू लिपिसे क्या गरज! अुसकी जबान हिन्दुस्तानी हो, तो बिलकुल काफ़ी है। पूज्य प्यारे बापूजी, मैंने आप लोगोंकी सारी दलीलें बड़े ध्यानसे सुनी हैं—और अेक भी गले नहीं अुतरती। अिसलिअे आज यह चर्चा कर रही हूँ। हम हिन्दुस्तानियोंका यही सूत्र रहे—हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी, हमारी राष्ट्रलिपि नागरी। बस!

४. अब अेक मुस्लिम हिन्दुस्तानीकी हैसियतसे मेरी विनती है—खुदाके लिअे आप मुसलमान हिन्दुस्तानियोंको अपने ही मुल्कमें परदेशियोंकी तरह रहनेका प्रोत्साहन न दीजिये! वे तो यही चाहते हैं। आप ब्रिटेन और पाकिस्तानका खेल खेलते रहें, और मुसलमान हर जगह बाजियाँ जीतते रहें। बापू, मैं बहुत घबराअी हुअी हूँ। मैं मुसलमान समाजसे वाकिफ़ हूँ। अुनकी महत्वाकांक्षायें मैं जानती हूँ—भले आप जानने या मानेसे अिन्कार करें। खुदाके लिअे मेरी बातपर ध्यान दीजिये।

आम तौरसे हिन्दवासी मुसलमानोंकी 'हिन्दुस्तानी' यानी 'अुर्दू' वे कोअी और 'हिन्दुस्तानी' न जानते हैं, न मानते हैं। आकाशवाणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(रेडियोकी) भाषापर मुसलमानोंकी कड़ुआी टीका यह है कि, "भअी, अिस जबानको तो हम नहा समझ सकते। कितने संस्कृत अल्फाज़ हैं! 'समाज', 'भाषा', 'निर्णय', 'निश्चय' जैसे प्रचलित शब्द भी हमारे वफादार मुसलमान हिन्दुस्तानियोंके लिअे हैं। अगर सारी जनता अुर्दू सीखने लग गअी, तो क्या आप मानते हैं कि मुसलमान अुर्दूके सिवा कुछ भी लिखेंगे-पढ़ेंगे? मैं नहीं मानती। और, मेरे अविश्वासके पीछे हिन्दवासी मुसलमानोंका सारा अितिहास पड़ा हुआ है।

बापू! हाथ जोडकर अर्ज है—सज्जनताके साथ क्या सत्यदर्शन (Realism) नहीं रह सकता?"

पत्थर और मूर्तिकार

अेक पत्थर पथ-चारी मूर्तिकारसे बोला—भाअी, सुनो तो, मैंने बड़ी ठोकरें खाअीं। तुम कलाकार हो अैसा करना तुम्हारे लिये सहज है कि लोग मेरा अपमान न कर पूजा करने लगें। कर सकोगे?

मूर्तिकार हँसकर बोला—अच्छा मैं तुम्हारी मूर्ति बना देता हूँ—सदा पूजे जाओगे। अुमङ्ग भरी दिलसे ललनाअें तुम्हारी पूजा करेंगी; पायल और झांझोंकी झङ्कारमें घिरे रहोगे; आँचलके छोर तुम अुनके माथे लगोगे।

पत्थर बड़ा प्रसन्न हुआ; कहने लगा- कलाकार, धन्य है तुम्हें।

फिर मूर्तिकारने टाँकी चलाअी। पत्थर चिल्लाया—'अरे अङ्ग-भङ्ग करोगे? कष्ट बहुत हो रहा है।'

मूर्तिकारने कहा- देखो मैं अधिक बात नहीं करता। यदि पूजा चाहते हो, तो पहले तुम्हें कुछ भोगना होगा। तपो झुलसो, कटो-छँटो-तब सिंहासन पा सकोगे। पत्थरने कहा—अच्छा भाअी, चलो, लगाअे जा टाँकी।

('प्रारम्भ' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसमें राहुलजीका पारिवारिक जीवन

: भदन्त आनन्द कौसल्यायन :

कुछ बातें तो प्रायः जाननेको मिल जाती हैं, कुछ कभी कभी। अुस दिन कम्युनिस्ट पार्टीकी मीटिंगमें 'जनयुग' सम्पादक श्रीयुत रमेशचन्द्र सिन्हानेजब राहुलजीसे कहा कि राजनीतिक व्याख्यान तो हम आपके सुनेंगे ही, किन्तु यहाँ अिस मीटिंगमें अिकट्ठे हुये आपके संगी-साथी आपके रूसके अपने पारिवारिक जीवनकी बातें जानना चाहते हैं तो सारी अुपस्थित मंडली ध्यानावस्थित होकर राहुलजीकी बातें सुनने लगी। राहुलजीने बताया।

"मैं दो महीने कम तीन वर्ष देशसे बाहर रहा। जब यहांसे गया तो तेहरानमें काफी रुके रहने पड़ा।"

पूछा—तेहरानमें अितने दिन रुके रहनेका क्या कारण था?

"रूसकी सरकार नहीं चाहती थी कि मैं अुस समय रूसमें प्रवेश करूं।"

"तब आपको बुलाया ही क्यों था?"

"बुलाया तो मुझे यूनिवर्सिटीने था। यूनिवर्सिटी और सरकार अलग ही चीज थोड़ेही हैं।"

आगे आपने बताया——

"रूस पहुँचनेपर मेरा पहला काम था—अपने घरका पता लगाना। यामुस-कुककी तरह यात्रियोंकी सहायता करनेवाली अेजेंसीकी मददसे मैं अपने घर पहुँचा। हमारा घर शहरसे बाहर लेनिनग्राडके अुप-नगरमें है—Takachei में।

Takachei कहते हैं जुलाहोंके मुहल्लेको। वहां बहुतसी कपड़े बननेकी मिलें हैं। अिसलिये अुसका नाम है Takachei।

"जिस समय मैं घर पहुँचा तो श्रीमती राहुल सांकृत्यायन कामपर गअी हुअी थी। लड़केके बारेमें पूछा तो वह भी शिशुशालामें गया था। आसपासके लोगोंसे पूछा कि अीगोर (राहुलजीका सुपुत्र) को कोअी पहचानता है या नहीं? अुत्तर मिला—अुसे कौन नहीं जानेगा। अिन्हींकी तरह काला तो है।

राहुलजीका रंग 'काला' नहीं है, किन्तु यूरोपमें और शायद यूरोपीय रूसमें भी जो अेकदम यूरोपियन-रंग नहीं है वह सब काला ही है।

राहुलजी वापिस अपने होटल चले गये। थोड़ी देरमें श्रीमती राहुल सांकृत्यायन तथा अीगोनविच् राहुल होटल पहुँचे और राहुलजीको घर लिवा ले गये।

राहुलजी तथा श्रीमती राहुल सांकृत्यायन दोनों ही लेनिनग्राड यूनिवर्सिटीमें प्रोफेसर हैं।.....राहुलजी संस्कृतके तथा श्रीमती तिब्बतीकी। दोनोंका वेतन ३००० रूबल था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु जब मुद्राकी क्रय शक्ति समान हो तभी तो अिस समानता का कोअी अर्थ होता है। रूसका सामान्य मजदूर वही और अुसी प्रकार का जीवन व्यतीत कर सकता है जैसा यहां ३००) मासिक पानेवाला आदमी।

आप जानना चाहेंगे कि जिस प्रकार हमारे विश्वविद्यालयोंके प्रोफैसरोंके घरोंमें दो दो चार चार नौकर रहते हैं, अुसी प्रकार राहुलजीके यहां भी कोअी नौकर था या नहीं? नहीं।

तब काम। 'मध्यान्हका भोजन तो यूनिवर्सिटीमें ही हो जाता था। सुबह-शामका भोजन घर बनता था,। राहुलजीको केवल बरतन साफ़ करने होते थे।

अपने यहां तो प्रोफेसर क्या कालेजोंके विद्यार्थी तक घरके लिअे सौदा तक लानेके कामको नं० २ काम समझते हैं, रूसमें अैसा नहीं समझा जाता। सभी अपना सौदा-सलफ स्वयं ले आते है और लकड़ियां तक स्वयं चीर लेते हैं। शहरोंमें लकड़ियां चीरनेकी नौबत नहीं ही आती, क्योंकि वहां तो सब काम बिजलीके चूल्होंपर होता है।

राहुलजीकी केवल अेकही सन्तान है····· अिगोन राहुलोविच्। यहांसे जाते समय शायद अुसीका ख्याल करके राहुलजी दो खिलौने लेगये थे····· अेक रामचन्द्रजी तथा दूसरे शिवलिंगकी मूर्ति। रामचन्दजी तो रास्तेमें टूट गये किन्तु शिवलिंगकी मूर्ति जसकी तस बची रही। वहां पहुंचे तो देखाकि अिगोन राहुलोविच् सायं--प्रातः अीसाकी भक्ति करता है। कहां महान् नास्तिक राहुल सांकृत्यायन और कहां अुनका अीसा-भक्त पुत्र। राहुलजीने भी अपने देवताको वहां रख दिया। लड़केने पूछा·····"यह क्या?"

राहुलजीने अुत्तर दिया·····"यह हमारे देवता हैं।" अभी तक बिचारा समझता था कि दुनियामें अेक ही "खुदा" है और वह "अीसा" है, किन्तु अब वह चिन्ता करने लगा कि यह क्या, दुनियामें दो खुदा हैं?

राहुलजीसे प्रश्न करता, तो वह अुसकी जिज्ञासा मिटानेके साथ साथ अुसे अेक अेक कदम नास्तिकताकी ओर बढ़ाते।

मां को चिन्ता होने लगी। वह चाहती थी कि बच्चेपर राहुलजीका अधिक असर न पड़ने पाये।

हम लोगोंको ख्याल है कि रूसमें धर्म बिलकुल नहीं रहा, किन्तु यहां खुद महापंडित राहुल सांकृत्यायनके घरमें "धर्म" छुपा बैठा था। रूसमें तथा अन्य देशोंमें जो बड़ा अन्तर है वह यही है कि वहां किसी भी अेक धर्मको राजाश्रय प्राप्त नहीं है जिन्हे धर्मका शौक है, वे वहां भी अपनी पसीनेकी कमाअी अुनपर खर्च कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखबारोंमें छपा था कि राहुलजीको अपनी पत्नी सहित भारत आने दिया गया। अिस सम्बन्धमें पूछनेपर राहुलजीने कहा……"यह बात अेकदम असत्य है। रूसमें बृटिश अैम्बैसीमें कुछ अंग्रेज थे, जिनपर प्रतिबन्ध लगाया गया था। रूटरने मुझे भी ख्वाहमख्वाह अुनमें शामिल कर लिया। लड़केकी पढ़ाअीका ख्याल कर मैं तो स्वयं अुसकी माताको नहीं लाना चाहता था।"

अपने यहां पढ़ाअी……अक्षरारम्भ……पांच वर्षसे ही शुरू हो जाती है, किन्तु रूसमें सात वर्षसे पहले कभी नहीं। यूं पढ़ाअी वहां तीन ही वर्षसे आरम्भ होती है चित्रोंमें चित्रित की गअी कहानियों द्वारा अक्षरारम्भ करनेसे पहले बच्चा बहुतसी पढ़ाअी पढ़ चुका होता है।"

फीस नहीं, मध्याह्न का भोजन निःशुल्क, पढ़ते समय फेल होनेकी चिन्ता नहीं, पढ़ाअीकी समाप्ति पर बेकार रहनेकी चिन्ता नहीं……जहां ऐसी व्यवस्था हो वहांके विद्यार्थी क्यों न फूलोंकी तरह खिले रहते होंगे और प्रतिभायें भी क्यों न खिल अुठती होंगी?

राहुलजीसे पूछा……आप कब तक यहां रहेंगे?

"अभी दो वर्ष तो लौटनेका विचार नहीं।"

सम्मेलनका सौभाग्य है कि अुसे अिस वर्ष राहुलजी जैसा जन-नायक तथासाहित्य-नायक कर्णधार मिल गया है। सम्मेलनके सामने न धनकी कमी है और न अुसमें समस्याओंकी।

राहुलजीको सहयोग मिला तो हम सम्मेलनके लिअे अुज्ज्वल भविष्यकी आशा और कामना करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो छोटी कहानियाँ

(१)

अबू अल-हीरी एक महान सन्त।

एक भोजमें अबू अल-हीरीको निमंत्रण दिया गया। नियत समयपर सन्त अपने मित्रके दरवाजे पहुँचा। दरवाजेपर पहुँचना था कि मित्रने आकर कहा—"माफ़ कीजिये। मैं आपको भीतर भोजनके लिये नहीं ले चल सकता। आप जा सकते हैं।"

सन्त अबू बिना कुछ कहे नत मस्तक अपने घर चला आया।

अबू अुस्मान पीछे चला और ज्योंही अबू हल-हीरी घर पहुंचा त्योंही अुस्मानने निमंत्रण दिया और चलकर भोजन कर लेनेकी प्रार्थना की।

सन्त अबू ज्योंही अपने मित्रके घर पहुँचे कि दरवाजेपर मित्र आकर खड़ा हो गया और बोला—"माफ कीजिये। मैं आपको भीतर भोजनके लिये नहीं ले चल सकता। आप जा सकते हैं।"

सन्त अबू बिना कुछ कहे नत मस्तक अपने घर फिर चला आया।

अबू अुस्मान अुसे तीसरी बार निमंत्रण दे आया और तीसरी बार फिर अुसे यही कह कर लौटा दिया कि "माफ कीजिये। मैं आपको भीतर भोजनके लिये नहीं ले चल स[illegible] आप जा सकते हैं सन्त अबू फिर घर लौटा।

सन्त अबूके मित्रने अिस प्रकार पांच छः बार अुसे निमंत्रित किया और पांचों छहों बार अुसे यह कहकर लौटा दिया कि मैं आपको भीतर भोजन करने नहीं ले चल सकता। पांचों छहों बार सन्त अबू अल-हीरी मौन नत मस्तक बिना कुछ कहे घर लौटा!

मित्रने सन्त अबू अल-हीरीके सामने हाथ जोड़ते हुअे कहा—"अबू, मैंने अैसा तुम्हारी परीक्षा लेनेके लिअे किया था। मैं देखना चाहता था कि अैसा कर मैं तुम्हारे धैर्यको डिगा सकता हूं या नहीं और तुम्हें क्रोध आता है या नहीं। मैं तुम्हारे अडिग धैर्यकी हजारों बार प्रशंसा करूंगा।

अबू अल-हीरीका तत्काल अुत्तर था—"दोस्त मेरे, अिस तरह प्रशंसा कर मुझे लज्जित न करो। ऐसा तो सभी कुत्ते कर लेते हैं। बुलाने पर हजारों बार तुम्हारे पास चले आवेंगे और झिड़क देनेपर हजारों बार वापस चले जावेंगे।

× × × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

नीचे जमुनाका जल बह रहा है। पास ही पहाड़ियोंपर घना जंगल था। गुरु गोविन्दसिंह एक शिलाखंडपर बैठे शास्त्र चर्चा कर रहे थे। अुनका सम्पत्तिशाली समृद्ध शिष्य कुमार रघुनाथ आया, और गुरु गोविन्दके श्री चरणोंमें प्रणाम करके बोला—"गुरुदेव, मैं अपनी तुच्छ भेंट लाया हूं। यद्यपि यह भेंट आपके सर्वथा अयोग्य है तथापि अिसे स्वीकार कर मुझे कृतकृत्य करें।"

अितना कहकर अुसने गुरुदेवके समीप दो रत्नजटित बहुमूल्य सोनेके कड़े रख दिये। गुरुदेवने अेकको हाथमें अुठा लिया। रत्नोंसे ज्योति निकल रही थी और कड़े दीप्ति भरे चमक रहे थे। गुरुदेव कड़ोंको हाथमें लेकर घुमाने लगे। सहसा अेक कड़ा हाथसे छूटकर जलमें जा गिरा।

"क्या हुआ?"—कहकर कुमार रघुनाथ जलमें कूद पड़ा।

शान्तचित्त गंभीर गुरुदेव शास्त्र चर्चा फिर करने लगे।

संध्या हुअी। रघुनाथ लौटकर गुरुदेवके समीप आया। अुसके तमाम कपड़े भींगे हुअे थे। हाँफते हुअे अुसने गुरुदेवसे पूछा—"यदि आप बता सकें कि कड़ा किधर गिरा है, तो मैं अबभी अुसे निकाल लाअूं।"

गुरुदेवने दूसरे कड़ेको अुठा कर जलमें फेंका और अुंगुलीका निर्देश करते हुअे कहा—"यहाँ।" जमुना पूर्ववत् बह रही थी।

कुमार रघुनाथ निश्चल जमुनाकी ओर देख रहा था।

गुरुदेव शास्त्र चर्चा फिर करने लगे।

'प्रहरी' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी अवनति कैसे हो ?

: श्री ओंकारनाथ वर्मा :

वर्तमान कितने शीघ्र भूतमें परिणित हो सकता है, यह आज हमारी आंखोंके सामने है। कल हम स्वतन्त्रताके पुजारी थे और आज स्वयं स्वतन्त्रता हमारा पद चूम रही है। कल हमारे देशका दम गुलामीके दूषित वायुमंडलमें घुट रहा था और आज आजादीकी खुली हवामें वह चैनसे सांस ले रहा है। कल हम हिन्दीको राष्ट्रभाषाके पदपर सुशोभित देखनेका मधुर स्वप्न देख रहे थे और आज हम अुस स्वप्नको सत्य घटित होते देख रहे हैं। मैं यह पूछता हूँ कि हिन्दीको अिस गौरवपर पहुँचा देनेके बाद हमने अुसकी सेवा ही क्या की है? केवल राष्ट्रकी भाषा बना देनेसे ही तो हिन्दीके प्रति हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता। किसी फक्कड़ भिखारीको राजकीय पोशाकसे अलंकृत कर अुसे राजसिंहासनपर बैठा देनेसे ही वह राजा नहीं हो जाता; राजोचित गुण भी तो चाहिये अुसमें। अैसे तो हुमायूंकी जान बचानेवाला भिश्ती भी अेक दिन हुमायूंकी गद्दीपर बैठा था तो क्या अुसकी भी गणना आज मुगल बादशाहोंमें होती है?

क्या आप सुनकर आश्चर्य प्रकट नहीं करेंगे कि संसारमें अेक अैसा भी राष्ट्र है जो स्वतन्त्र है और जहांके नेतागण अपनी भावनाओं और विचारोंको राष्ट्रभाषामें न व्यक्तकर विदेशी भाषामें करते हैं! अिसका कारण अुनकी असमर्थता है, अज्ञता है। पर, जो हो यह पतनकी पराकाष्ठा है। अुस राष्ट्रका दुर्भाग्य है और वह देश सचमुच अभागा है! वह अभागा देश हमारा हिन्दुस्तान ही है। हिन्दुस्तानके स्वतन्त्रता-संग्रामके सबसे बड़ेमहारथी गांधीजी जो जीवनकी सन्ध्यामें अुतर चुके हैं आज भी 'हिन्दुस्तानी'का ही समर्थन करते हैं, वे अब भी विश्वास करते हैं कि 'हिन्दुस्तानी' ही हिन्दू-मुसलिमके बीचकी चौड़ी खाअीपर पुलका काम करेगी। यही नहीं, अुनके अधिकतर वक्तव्य पहले अंग्रेजी हरिजनमें ही निकलते हैं, तब बादमें अुनका हिन्दी अनुवाद 'हरिजन-सेवक'में छपकर अुच्छिष्टके रूपमें नब्बे प्रतिशत अशिक्षित जनताके सम्मुख आता है। आचार्य कृपलानीसे हम कोअी कृतिकी आशा क्या रखें जबकि वे अेक पंक्ति शुद्ध हिन्दी बोलनेमें भी असमर्थ है। राजगोपालाचारी अपने हृदयके भावोंको वाणीका रूप देनेके लिअे अंग्रेजीका ही दामन थामते हैं। सरदार पटेल हिन्दीके हिमायती होते हुअे भी अुसकी कोअी खास सेवा नहीं कर सके हैं। नेहरूजीकी राजनीतिक कृतियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजीमें ही निकली हैं। अलग अलग वैयक्तिक रूपमें किसको कितको गिनाया जाय। यही रोना तो करीब करीब सभी नेताओंको लेकर है। फिर भी राजेन्द्र बाबू जैसे हिन्दी प्रेमियोंको पाकर हिन्दी बिलकुल निराश नहीं हुआ है।

आज संसारमें मार्क्सवादका बोलबाला है। पर हमारे लिये यह कोओी नयी वस्तु नहीं। मार्क्सके सिद्धान्तोंको हमारे यहाँ बहुत पहले ऋषि मुनि कह गये हैं। आज शेक्सपियर, एन्जिल्स और अरस्तूके नामोंकी धूम मची हुआ है। पर, हमारे यहाँ कालिदास, कौटिल्य और शंकराचार्य प्रभृति विद्वानोंके प्रौढ़ मस्तिष्कसे अिनसे भी बढ़कर अमर और अलभ्य वस्तुअें प्रसूत हो चुकी हैं जो संस्कृत साहित्यके अक्षय भण्डारकी शोभा बढ़ा रही हैं। पर, यहाँ अपने प्राचीन ग्रन्थोंकी गवेषणा और छानबीन करनेका अुत्साह ही किसे है? अंग्रेजीकी रंगीनीका असर जो पड़ चुका है हमारे दिल और दिमाग पर! अंग्रेजीका सुसम्पन्न भन्डार देखकर भारतीयोंमें अपनी हिन्दीको सुसम्पन्न देखनेका हौसला ही नहीं जगा। उसका खोखलापन दूर करनेकी हवसही नहीं पैदा हुआ। यदि हिन्दीकी मातामही संस्कृतका भी अिन्होंने आश्रय लिया होता तो हिन्दीकी यह हालत नहीं हुआ होती जो आज है।

आज हिन्दीको राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन होते देख हम हर्षातिरेकसे पुलकित हो उठते हैं पर, जब अिसके भीतरी खोखलेपनकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो क्षुब्ध हो उठते हैं। साहित्यके जो आवश्यक अंग हैं उनका हिन्दी साहित्यमें सर्वथा अभाव है। हिन्दी साहित्यको पाश्चात्य साहित्यके समानान्तर रखनेमें हम लज्जाका अनुभव करते हैं। फिरभी हम अिसके आवश्यक अंगोंकी पूर्तिके लिये दत्तचित्त नहीं दिखाअी पड़ते हैं। विश्वविद्यालयोंने शिक्षाके माध्यमके लिये हिन्दी भाषाको अपना तो लिया है, पर, उन्हें विकट कठिनाअियोंका सामना करना पड़ रहा है। हिन्दीमें अर्थशास्त्र, दर्शन, विज्ञान राजनीति आदि विषयोंपर उत्कृष्ट कोटिकी कौन कहे साधारणभी पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। अिसका कारण अंग्रेजी शासनमें पले हुये भारतीय विद्वानों और पंडितों की अकर्मण्यता तो है ही साथही भारतीय सरकारकी उपेक्षानीतिभी है। भारतसरकारको चाहिये कि भिन्न भिन्न विषयोंके असाधारण विद्वानोंको समुचित पारिश्रामिक देकर हिन्दी साहित्यके अंगोंकी पूर्तिके लिये उन्हें प्रोत्साहित करे। यदि सरकार द्वारा यह प्रेरणा मिली तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी पाश्चात्य साहित्यका मुकाबला कर सकेगी।

अंग्रेजी शब्द हमारे दैनिक जीवन और रोजमर्रेकी बोलचालके साथ कुछ अैसे हुलमिल गये हैं कि उनसे पीछा छुड़ाना कठिनसा हो रहा है। शहरके सम्पर्क से दूर रहनेवाले गाँवके किसान और मजदूर अवं हमारे घरमें परिवारके लोगोंकी जीभपरभी ये अंग्रेजी शब्द समान रूपसे अधिकार जमाये बैठे हैं। अिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कारण है हिन्दी शब्द भंडारकी कमी। अंग्रेजीके शब्दोंका पर्यायवाची शब्द हिन्दीमें आसानीसे नहीं मिलता है। अतः बाध्य होकर हमें अंग्रेजीके शब्द उधारसे चोरी करनीही पड़ती है। सबसे आवश्यक है कि हिन्दीका अंक अुत्कृष्ट शब्दकोष तैयार किया जाय जो अंग्रेजीसे पल्ला छुड़ानेमें हमारा सहायक हो।

अंक बात और। हिन्दी साहित्यके संवर्धनपर कुठाराघात समाचारपत्रभी करते हैं। हिन्दी साहित्यकी पूर्ति आज कहानी, अुपन्यास, नाटक और कविता आदि कतिपय अंगोंसेही नहीं की जा सकती। आज आवश्यकता है मनोविज्ञान, राजनीति, अर्थ शास्त्र आदि गम्भीर विषयोंपर मौलिक और अनूदित पुस्तकें लिखकर हिन्दी साहित्यके अंगोंकी पूर्ति करना! पर, यहाँ कुछ समाचारपत्रों अेवं पत्र पत्रिकाओंमें अैसी परम्परा चली आ रही है कि उनमें समाचार, कहानी, अुपन्यास, कविता और सस्ते अेवं छिछले लेखोंके अतिरिक्त कुछ रहे ही नहीं। अखबारी दुनियांमें कहानी और कविताओंकीही माँग है। फिर लेखकोंकी रुझान अुधर क्यों न हो? लेखकोंकी जिस चीजकी खपत अधिक होगी वही चीज वे पैदा करेंगे, चाहे वह कलाजन्य हो या न हो। जब माने कहानीकार और कवियोंकी ही पूछ है तो कोअी मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, अर्थशास्त्र या राजनीतिक पंडित क्यों बनने जाय, अतः अखबारी दुनिया अेवं हिन्दी संसारकी ओरसे अिन विविध विषयोंके पंडितोंको प्रोत्साहन मिलना चाहिअे जिससे हिन्दी साहित्यकी अंगपूर्तिमें वे जी जानसे लग जायँ। कहानी, अुपन्यास और कविताओंसे हिन्दीके समाचारपत्र अपना कलेवर बहुत कुछ सजा चुके हैं। आज उन्हें अपनी अभिरुचि और माँग बदलनी पड़ेगी। आज हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी अपने खोखलेपनसे क्षुब्ध होकर सुसम्पन्न होनेकी हमसे माँग कर रही है। वह चिल्ला चिल्लाकर कह रही है कि हमें दिवालिया होनेसे बचाओ। दुखभरी करुण पुकार अब भी हमारे कानोंमें गूंज रही है। क्या अब भी हाथपर हाथ धर कर बैठे रहनेका समय है?

दैनिक 'आर्यावर्त' से

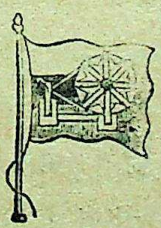

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित कामता प्रसाद गुरु

हिन्दीके प्रकाण्ड विद्वान अवं व्याकरणाचार्य साहित्य वाचस्पति पंडित कामता प्रसाद गुरुका गत १६ नवंबरको ७२ वर्षकी अवस्थामें स्वर्गवास हो गया। आपके निधनसे द्विवेदी युगका अेक महान लेखक उठ गया। अपने जीवन कालमें गुरुजीको अनेक किस्मकी बाधाओंका सामना करना पड़ा किन्तु अिनकी परवाह न करते हुअे आप निरंतर साहित्य साधनामें लीन रहे। आपने अनेक महत्व पूर्ण ग्रंथोंकी रचनाकर हिन्दी का भंडार भरा है। आपकी रचनाओंको आचार्य द्विवेदीजी बिना किसी परिवर्तनके सरस्वतीमें प्रकाशित किया करते थे।

पंडित कामता प्रसाद गुरुकी सबसे महत्व पूर्ण देन अुनका 'हिन्दी व्याकरण' है। हिन्दी व्याकरण आपके लगातार सात वर्षोंके अध्ययन, खोज और परिश्रमका परिणाम है। गुरुजीको अमर बनानेके लिअे यह व्याकरण ही पर्याप्त है। हिन्दीके सभी प्रतिष्ठित विद्वानोंने अेक स्वरसे अिसे अद्वितीय ठहराया है। अिस ग्रन्थपर गुरुजीको मध्यप्रान्तीय सरकारने अेक स्वर्ण पदक भी प्रदान किया था।

हिन्दीके अतिरिक्त गुरुजी अनेक अन्य भाषाओंके ज्ञाता थे। अंग्रेजी, संस्कृत और अुर्दूके अलावा आपने बंगला, अुड़िया और मराठी भाषाओंका भी अच्छा अध्ययन किया था। शिक्षक, लेखक, आलोचक, कवि और सम्पादकके रूपमें आपने हमारे साहित्यकी जो अमूल्य सेवायें है अुसे भुलाया नहीं जा सकता।

खेद है कि गुरुजीका निधन अेक अैसे समयमें हुआ जब कि हिन्दी स्वतंत्र भारतकी राष्ट्रभाषाके रूपमें प्रतिष्ठित होने जा रही है।

हिन्दी भाषा और नागरी लिपि जब तक जीवित रहेगी, तब तक आपका नाम सदैव श्रद्धासे लिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी

हमारी कठिनाअियाँ

: श्रीराम अद्रावलकर :

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी ओरसे राष्ट्रभाषा प्रचारका श्रीगणेश सन् १९३७ में हुआ। मैंने अपनी स्कूली शिक्षाके चार साल बाद पुनः विद्यार्थी-जीवनमें प्रवेश किया। सन १९३७ से १९३९ तक का वह जमाना और आजके राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंका जमाना अिसमें बहुत अन्तर है।

अुस समय परीक्षार्थियोंको प्रोत्साहन देनेवाले तथा अुनकी कठिनाअियोंको हल करनेवाले अध्यापकोंकी बड़ी कमी थी। आज जैसे सहायक पुस्तकोंकी भरमार तथा व्यवस्था अुस जमानेमें नहीं थी।

आज बाजारमें किसी जीवनोपयोगी वस्तुकी कमी अथवा अुसके अभावकी आशंका होतेही हम अुसे प्राप्त करनेकी कोशिश करते हैं। किन्तु अगर वह बाजारमें बिकने लग जाय तो अुसे प्राप्त करनेकी प्रवृत्ति गायब हो जाती है। आजके राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंकी मनः प्रवृत्ति भी अुसी तरहकी है। राष्ट्रभाषा प्रचारके वर्तमान युगमें जहाँ राष्ट्रभाषाके अध्ययनका सवाल है परीक्षार्थी हर छोटी-बड़ी बातके लिअे प्रचारकों और अध्यापकोंपर निर्भर रहते हैं; जैसे राष्ट्रभाषा की शिक्षा-दीक्षा देनेकी गरज केवल राष्ट्रभाषा प्रचारकोंको ही हो। यही कटु सत्य परीक्षार्थियोंकी कठिनाअियोंका कारण है।

राष्ट्रभाषा सीखनेके पूर्व व्याकरणमें मुझे वैसी दिलचस्पी नहीं थी, जैसी कि आज है। व्याकरण भाषाको सौष्ठव प्रदान करता है। 'भाषा मायनस व्याकरण अिक्वल टु झीरो'। यह 'फॅक्टर' आपको मालूम होगा। स्पष्ट है कि भाषा सीखनेके लिअे हमें थोड़ा बहुत व्याकरण, सीखनेकी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा कहती है कि व्याकरण रूपी मेरी जानकी आप अुपेक्षा करते हैं; जाने अनजाने अुसे पैरोंतले कुचलते हैं। भला, मेरा सजीव बने रहना कैसे संभव है? और आपपर मैं प्रसन्न भी क्योंकर होअूँ?

मान लिया कि आप व्याकरण शुद्ध भाषासे परिचित हैं। लेकिन ध्यान रहे, कि भाषाको प्रसन्न करनेके लिअे केवल व्याकरण मात्रसे परिचित होना, पर्याप्त नहीं है। आपको अनुवादसे दोस्ती करनी होगी। पिछले सालके "राष्ट्रभाषा"में 'अनुवादपर अेक नजर' लेख प्रकाशित हुआ था। अुसपर गौर करें। लिफाफा आपके सामने खुला है।

अेक परीक्षार्थीने पूछा---सर, लिफाफा खुल जानेका क्या मायने है? दूसरेने पूछा--खुर्शीदका मायने क्या है? सर (अध्यापक) अपने महत्वके काम काजमें लगे हुअे थे शब्दसागर देखनेका अभ्यास परीक्षार्थीको हो अिस ख्यालसे अध्यापक महाशयने 'मुहावरे और कहावतें' नामक पुस्तक और 'शब्दसागर'अुठाके परीक्षार्थीके सामने रख दिअे।

परीक्षार्थीने कहा---सर.....पण.....

अध्यापक—अरे, सरपण क्या? शब्दसागरमें डुबकी लगाके आवश्यक शब्द ढूंढना अेक कला है। मान लीजिअे आपके पास शब्दार्थ लिखे हुअे हैं; और आपने अुन्हें याद कर लिया है। लेकिन आप जबतक अुनका अुपयोग वाक्योंमें नहीं कर पाते, केवल शब्दार्थ याद कर लेनेका कोअी अुपयोग नहीं है। अनुवाद करना, कविताओंका अर्थ लिखना, पाठोंका सारांश लिखना, अपने शब्दोंमें कहानियाँ और निबंध लिखना आवश्यक है। यही नहीं, अिन्हे अध्यापकसे जँचवा लेना, गलतियाँकी दुरुस्ती समझ लेना और दुरुस्तीके लिये आवश्यक अभ्यास जरूरी है। अिससे हमारी कठिनाअियाँ हल होंगी और आपकी—परीक्षार्थियोंकी कठिनाअियाँ न बढ़ेंगी।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

आप सम्मेलनमें कब पहुँच रहे हैं?

पत्रोंमें और 'राष्ट्रभाषा'में भी अन्यत्र आप हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३५ वें अधिवेशनकी सूचना पढ़ ही चुकें होंगे। महापंडित राहुल सांकृत्यायनके सभापतित्वमें यह सम्मेलन अनेक दृष्टियोंसे बहुत ही महत्वपूर्ण होने जा रहा है। १५ अगस्तको स्वतंत्रताकी घोषणाके बाद राष्ट्रभाषा हिन्दीके सेवकोंका यह प्रथम और सबसे बड़ा सम्मेलन हो रहा है। अिसी सम्मेलनके ठीक बाद जनवरी ४८ में ही राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर हमें अपनी विधान-परिषदके निर्णयकी प्रतीक्षा है। ऐसी परिस्थितिमें यह सम्मेलन सचमुच असाधारण महत्वका हो अुठा है। क्या हम अपने राष्ट्रभाषा परिवारके बन्धुओं—प्रमाणित प्रचारकों, केन्द्र व्यवस्थापकों आदिसे यह आशा करें कि वे भरसक सम्मेलनमें चलनेका प्रयत्न करेंगे? प्रार्थना है कि जो भाअी-बहिन बम्बअी पहुँच रहे हों वे श्री कान्तिलालजी जोशी, मन्त्री राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, फेलोशिप हाअ स्कूल गोवालिया टैंक बम्बअी की मार्फत हमें अपने बम्बअी पहुचनेकी तिथि तथा निवास-स्थान आदिसे सूचित करनेका प्रयत्न करे। सम्भव है हम सम्मेलनके अवसरपर राष्ट्रभाषा कर्मियोंकी एक पृथक कान्फ्रेंसकी योजना कर सकें। अुस समय आपकी यह जानकारी अुपयोगी सिद्ध होगी।

विधान निर्मातृ परिषदसे सानुरोध--निवेदन

२३ नवम्बरको हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष श्री वियोगी हरिजीकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सदस्योंकी एक बैठक हरिजन-बस्ती किंग्सवे दिल्लीमें हुअी। अुसमें अपनी विधान निर्मातृ परिषदके सदस्योंसे सानुरोध सविनय निवेदनके रूपमें एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। आशा है वे अिसकी अवहेलना न करेंगे। प्रस्ताव अिस प्रकार है—

"राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके विभिन्न प्रान्तोंके सदस्योंकी यह बैठक विधान निर्मातृ परिषदसे सानुरोध निवेदन करती है कि वह हिन्दकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरी घोषित कर दे। भाषा तथा अन्य सांस्कृतिक प्रश्नों को साम्प्रदायिक दृष्टिसे देखनेका दुःखद परिणाम राष्ट्रका विभाजन हमारे सामने है। यदि अब भी शुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिसे विचार करके हिन्दीको हिन्दकी राष्ट्रभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और देवनागरीको हिन्दकी राष्ट्रलिपि न स्वीकार किया गया तो समितिको दो
है कि भविष्यमें इसका भी कहीं कुछ दुःखद परिणाम न हो।"

समितिके सदस्य—

१. श्री. वियोगी हरि २. डा. सुनीतिकुमार चटर्जी ३. डा. बाबूराम सक्सेना ४. प्रधान मंत्री ५. प्रबन्ध मन्त्री ६ प्रचार मन्त्री ७. परीक्षा मन्त्री ८. श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ९. श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी १०. श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र ११. श्री माखनलाल चतुर्वेदी १२. श्री बाबा राघवदास १३. श्रीमतीकिशोरी १४ श्री चन्द्रवली पाण्डेय १५. भदन्त आनन्द कौसल्यायन (मन्त्री) १६ श्री वाचस्पति पाठक १७. श्री राजाबहादुर गोविंदलाल शिवलाल १८. श्री कान्तिलाल १९. श्री कालीदासजी २०. श्री मोहनलालजी भट्ट २१. श्री जेठालालजी जोशी २३. श्री भुपटकरजी २३. श्री नाना पाटीलजी २४. सावलेकरजी २५. श्रीमती अनुसूयाबाओ काले २६. श्री हृषिकेश शर्मा २७. श्री राजकिशनजी बोस २८. श्री लिंगराज मिश्र २९. श्री बैजनाथ चतुर्वेदी ३०. श्री रेवती रंजन सिनहा ३१. श्री वाणीकान्त काकाती एम. ए. पी. एच्. डी. ३२. श्री चन्द्रशेखर भट्टाचार्य एम ए ३३. श्री भाश्री प्रतापजी ३४. श्रीराम शर्मा।

—आनन्द कौसल्यायन

नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त		नाम	क्रमांक	केन्द्र
राजपूताना	श्री	सोहनसिंह राठौड 'कोविद'	११५२	कुशलगढ
,,	,,	पुरुषोत्तमलाल त्रिवेदी	११५३	,,
गुजरात	,,	पं. ललित किशोर शर्मा 'चन्द्र'	११३९	चान्दोद
,,	,,	सुलोचना आदितराम ज्ञानी	११४०	अहमदाबाद
,,	,,	बाबुभाओ खेमचंद भावसार	११४१	,,
,,	,,	डाह्याभाश्री शंकरलाल शाह	११५०	,,
,,	,,	हीरालाल नरसिंहराम व्यास	११५१	अमोल.
महाराष्ट्र	,,	कुमुदचन्द्र गोकुलदास शाह	११४२	नंदुरबार
,,	,,	महादेव नारायण साठे	११४३	पुणे
,,	,,	नारायण केशव नेने	११४७	जमखंडी
,,	,,	रामचन्द्र विष्णु लागू	११४८	पुणे
,,	,,	अेकनाथ तुकाराम चौधरी	११४९	भालोद
वि. नागपुर	,,	वसन्तभाश्री पोहरे 'नाना पोहरे'	११४५	वर्धा
,,	,,	केशव नानाजी भिमनवार	११४६	,,
बम्बश्री	,,	आत्माराम रघुनाथ मिरकर	११४४	बम्बश्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ परीक्षा विभाग ❀

आगामी प्रचार परीक्षाएँ

आगामी प्रचार परीक्षाएँ ता. ७, ८ फरवरी ४८ को होंगी।

परीक्षा आवेदन-पत्र शुल्कके साथ वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख १५ दिसम्बर है।

विलम्बसे आये हुअे आवेदन-पत्र ता० २३ दिसम्बर तक स्वीकार किये जा सकेंगे। अैसे प्रत्येक आवेदन-पत्रके साथ ८ आना विलम्ब शुल्क आना आवश्यक है।

आगामी प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

	परीक्षाका नाम	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
शनिवार ७।२।४८	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय		प्रश्नपत्र १

रविवार ८।२।४८	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र २	प्रश्नपत्र ३
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	

मंगलवार १०।२।४८	कोविद	प्राचीन पद्य	७॥ से १०॥
बुधवार ११।२।४८	कोविद	अुर्दू	७॥ से १०॥
	परिचय	अुर्दू	७॥ से १०॥

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता, ६।२।४७ सोमवारको सुबह होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्रव्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा--मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे

निरीक्षक :

आप आगामी परीक्षाके सभी आवेदन-पत्र भेज चुके हैं। यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंकी नियुक्त आप कर लें। निरीक्षकोंकी नामावली परिपत्र नं १२ पर भर कर वर्धा कार्यालय भें

पैंतीससे कम परीक्षार्थीवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रति दिन के लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा।

परिचयकी मौखिक परीक्षा :

परिचय मौखिक परीक्षाकी व्यवस्थाका सारा भार केन्द्र व्यवस्थापक पर रखा गया है। वे ही अिसके लिये परीक्षककी नियुक्ति और तारीख मुकर्रर करें। परीक्षकके लिये किसी योग्य स्थानिय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा। परिचय मौखिक परीक्षा छपे कार्यक्रमके अनुसार साधारण परीक्षाके साथ ही ली जाय।

परिचयकी अिस मौखिक परीक्षाकी सारी व्यवस्था आप शीघ्र करें। हम साथमें अिसके लिये प्राप्तांक भरनेके पत्रक भेज रहे हैं। ये परिचय मौखिक परीक्षकके लिये हैं। मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही ये प्राप्तांक-सूची सील-मुहर करके हमारे पास भेज दें। अिस परीक्षाकी सूचना परिचयके सब परीक्षार्थियोंको दे दें।

परिचय परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और छुटतीका २० रखा गया है।

कोविदकी मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना अलगसे भेजी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविदके परीक्षार्थी ध्यान दें—

प्रश्नपत्र ३ के अन्तर्गत २० अंक आठ निबन्धोंके लेखनकार्यके लिये रखे गये हैं। परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें कोविदके अुपयुक्त निबन्ध लिखेंगे। प्रत्येक निबन्ध कम-से-कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुन्हें अपने हिन्दी शिक्षकसे जँचवाना चाहिये। परीक्षार्थी अिन आठ लेखोंको अपनी क्रमसंख्याके साथ अपने मौखिक परीक्षकको देंगे।

निबन्धोंकी सूची—१ भारत-वर्ष और ग्रामोद्योग २ समयका सदुपयोग ३ आजकी राष्ट्रीय समस्याअें ४ राष्ट्रभाषाका प्रश्न ५ महामानव गान्धी ६ समाचार-पत्र ७ स्त्री शिक्षा ८ आधुनिक शिक्षापद्धति आदि अिसी कोटिके निबन्ध।

केन्द्र-परिवर्तनका नियम—

पूर्णरूपसे हटा दिया गया है। परीक्षार्थी सोच समझकर ही अपना परीक्षा केन्द्र भरें। किसीभी दशामें बादको परिवर्तन न हो सकेगा।

परीक्षा आवेदन-पत्र—

जो परीक्षा आवेदन-पत्र अधूरे होंगे, जिनपर लिखी हुअी परीक्षाकी क्रमसंख्याअें गलत होंगी अथवा जो आवेदन-पत्र अवधिके भीतर न आवेंगे वे अस्वीकृत ही रहेंगे। अस्वीकृत आवेदन पत्रोंकी सूचना शीघ्र न दी जा सकेगी।

पुरस्कार विजेता चार्ट-सुधार—

विदर्भ नागपुर प्रान्तोंमें कोविद सर्व प्रथम परीक्षार्थी श्री पंढरीनाथ विठोबाजी हुलके हिंगणघाट केन्द्रसे परीक्षामें बैठे हैं। गलतीसे चार्टमें चांदा छप गया है।

२ विदर्भ नागपुरमें परिचयमें सर्व प्रथम श्री जगन्नाथ आशन्ना नागुलवारजी आअे हैं। आपको २०५ प्राप्तांक तथा ५) रु पुरस्कार मिला है।

आवश्यक परिवर्तन—

फरवरी ४८ परीक्षाओंमें प्रारंभिक और प्रवेशके परीक्षार्थी अपनी अुत्तर पुस्तकोंपर अपना पूरा नाम भी लिखेंगे। केन्द्रव्यवस्थापक अिस ओर कृपया ध्यान दें कि वे परीक्षार्थियोंसे अपना नाम सुन्दर व साफ अक्षरोंमें लिखवा लें।

परिचयका १ ला प्रश्नपत्र शनिवार २½से५½ तक होगा; २ रा और ३ रा प्रश्न पत्र रविवारको रखा गया है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३५ वें अधिवेशन की तैयारी बम्बअीमें बड़े धूमधामसे हो रही है। अधिवेशनको सफल बनानेके लिअे स्वागत समितिने जो अपील निकाली है उसे हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं—

भाषा किसीभी राष्ट्र, समाज और संस्कृतिकी प्राणवायु है। अब तक भारतकी अपनी राष्ट्रभाषा थी, राजभाषा नहीं थी, किन्तु अब भारत स्वतंत्र होगया है, अंग्रेज जा रहे हैं, अुनके साथ अंग्रेजीको भी जाना पड़ेगा और हमें अंग्रेजीकी जगह लेनेवाली अेक राजभाषा अेवं लिपिकी जरूरत है और वह भाषा और लिपि हमारे देशकी सांस्कृतिक परम्परा, सरलता, स्वाभाविकता तथा अुपयोगिताकी दृष्टिसे हमारी राष्ट्रवाणी हिन्दी अेवं देवनागरीही होसकती है। आज भारतीय विधान सभाके सामने भाषाका प्रश्न प्रस्तुत है, वह हिन्दीके लिअे जीवन-मरणका प्रश्न है। परन्तु दुर्भाग्यसे हमारे राष्ट्रके कुछ अुच्च सूत्रधारोंमें अिस प्रश्नपर सहज बुद्धिभेद पैदा होगया है। अैसी स्थितिमें व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और पक्षको महत्व न देकर अुन्हें चाहिअे कि वे अिस प्रश्नपर देशका लोकमत लेकर ही कोअी निश्चय करें? यही प्रजातन्त्रका अेक मात्र राजमार्ग है। क्योंकि हिन्दीही अिस देशके ३३ कोटि जनगणकी सर्वव्यापक भाषा है और देवनागरी संसारकी सर्वश्रेष्ठ लिपि।

अिस अत्यावश्यक अवसर पर बम्बअीमें अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनका ३५ वां महाधिवेशन होने जारहा है। अतः हिन्दीके राजभाषा होने और राजभाषा होजाने पर, अुसमें वैज्ञानिक, वैधानिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक, व्यावसायिक आदि विभिन्न विषयोंके अुच्च रचनात्मक साहित्यके निर्माण आदिकी विविध दृष्टियोंसे अिस अधिवेशनका बड़ा महत्व है। समय बहुत कम है, कार्य महान है। अतः विराट हिन्दी जगतसे सविनय निवेदन है कि वह अिस सम्मेलन को सब प्रकारसे सफल बनानेमें स्वागत समितिको तन, मन, धन से संपूर्ण सहयोग दे। अधिवेशनके अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साम्यवादी विद्वान महापंडित राहुल सांकृत्यायन चुने गये हैं। राष्ट्रभाषा परिषदके प्रधान डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी (अुद्योग व रसद मंत्री, भारत सरकार) दर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषदके अध्यक्ष आचार्य क्षितिमोहन सेन (शांतिनिकेतन. विश्वभारती) समाजशास्त्र परिषदके सभापति श्री कमलापति त्रिपाठी अेम० अेल० अे०, विज्ञान परिषदके प्रधान डॉ० व्रजमोहन निर्वाचित हुअे हैं। साथमें कवि सम्मेलन, लोकगीत सम्मेलन, अंतर्भाषा-साहित्य सम्मेलन, मनोरंजन, साहित्य -कला-प्रदर्शन, हिन्दी परिषद, पत्रकार परिषद, सिनेमा साहित्यकार परिषद, संस्कृति परिषद, आदि ललित कार्यक्रम भी होंगे।

सर्वश्री डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, पुरुषोत्तमदास टंडन, श्यामाप्रसाद मुकर्जी, आचार्य नरेन्द्रदेव, संपूर्णानंद, पं० बालकृष्ण शर्मा, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, डॉ० अमरनाथ झा, आचार्य क्षितिमोहन सेन तथा बिहार, यू० पी०, सी० पी०, पंजाब बम्बअी अेवं विभिन्न राजस्थानोंके मंत्रीगण, बड़े बड़े विद्वान कलाकार और जननायक अिसमें भाग लेंगे। देशके विभाजनजन्य वर्तमान अशान्त वातावरणमें स्वल्प समय और सीमित साधनोंके होते हुअे भी स्वागतसमिति अिस विराट राष्ट्रके कोटि कोटि हिन्दी प्रेमियोंको सम्मेलनमें सम्मिलित होनेके लिये सादर आमंत्रित करती है। क्योंकि यह स्वतंत्र भारतमें होनेवाला सम्मेलनका सर्व प्रथम अधिवेशन है।

अधिवेशनका कार्यक्रम

अधिवेशनका कार्यक्रम अिस प्रकार निश्चित किया गया है—

२७ दिसम्बर—प्रातः सभापतिजीका जुलूस और झंडावंदन; दुपहरको १ बजेसे स्थायी समिति और विषय निर्वाचिनीकी बैठक और रातको ८ बजे मनोरंजन गोष्ठी।

२८ दिसम्बर—प्रातः ८॥ बजेसे ११॥ बजे तक विषय निर्वाचिनी समिति, २॥ बजेसे ६ बजे तक खुला अधिवेशन, रात्रि ८ बजेसे राष्ट्रभाषा परिषद्।

२९ दिसम्बर—प्रातः ८॥ बजेसे ११॥ बजे तक साहित्य परिषद, २॥ बजेसे ६ बजे तक खुला अधिवेशन, रात्रि ८ बजे लोकगीत।

३० दिसम्बर—प्रातः ८॥ बजे से ११॥ बजे तक समाज शास्त्र परिषद, २॥ बजेसे ६ बजे तक खुला अधिवेशन, रात्रि ८ बजेसे कवि सम्मेलन।

३१ दिसम्बर—८॥ बजेसे ११॥ बजे तक विज्ञान परिषद, १ बजेसे ४ बजे तक दर्शन परिषद, ४ बजेसे ७ बजे तक खुला अधिवेशन रात्रि ९ बजे से स्थायी समिति।

१ जनवरी १९४८ प्रातः ८॥ बजेसे स्थायी समिति और साहित्य संगम।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
बंगाल	बज बज,	१८९
उत्कल	कोटपाड	१६२
	बलांगीर	१६५
गुजरात	अडादरा	१८२
	कुकदरा	१८६
	कोसंबा	१८४
	खानपुर	१८५
	दाबोल	१८१
	घानेरा	१८७
	पलसाना	१७१
	बहेरा	१८८
	बोदाल	१८३
	लोदरा	१६३
	सार्णद	१८०
महाराष्ट्र		
	अथार्णे	१९१
	आमंद्रे	१६७
	कठोरें	१९
	कांसावली	१७३
	कान्हूर	१६४
	कुडचडें	१९२
	खरसुंडी	१७९
	घाटलादर्का	१७६
	जलगांव खुर्द	१६८
	थळ	१६९
	मांगी	१७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	केन्द्र	क्रमांक
महाराष्ट्र	मुंजगडा	९६२
	वालकी	९६१
	शेलापुर	९७७
	सायखड	९७८
विदर्भ (नागपुर)	अनडापुर	९७०
	कोंढाळी	९७५
	सिन्दी	९७४
बंगाल	अुत्तर कलकत्ता	१००९
अुत्कल	जरडागड	१०००
,,	डुरा	१००१
,,	बागलपुर	१०१०
,,	प्रतापपुर	१०११
,,	दोलशाही	१०१२
,,	राजकनिका	१०१६
गुजरात	सन्तरामपुर	९९४
,,	देहगाम	९९५
,,	बोरिया	९९६
,,	लोम्बडी	९९७
,,	आशी	९९८
,,	अमील	९९९
,,	छाणी	१०१४
,,	टुण्डज	१०१५
महाराष्ट्र	हलकर्णी	९९३
,,	पालें	१००७
,,	वेज	१००८
,,	खो पाटण	१०१३
वि. ना.	सावंगा	१००२
,,	आर्वी	१००३
,,	चान्दस	१०१४
,,	भन्डारा	१००५
,,	नगरधन	१००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोजस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका
'राष्ट्रभाषा' ...

★ विशेष सूचना ★

बहुधा अैसा पाया गया है कि लोग पुस्तकों का आर्ड देनेके साथ-ही-साथ पेशगी रकम नहीं भेजते। हमें अुन पेशगीके लिअे लिखना पड़ता है और तब कहीं रुप आनेपर अुनके लिअे यहाँसे पुस्तकें भेजी जाती हैं अिससे अेक तो ग्राहकोंको पुस्तकोंके लिअे काफी इंतजा करना पड़ता है, दूसरे, सबको परेशानी भी होती है।

अिसलिअे अपने सभी ग्राहकोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे पुस्तकोंका आर्डर देते समय अुनकी कुल कीमतका कम-से-कम अेक-चौथाअी पेशगी जरूर भेज दिया करें।

यह नियम काफी हानि अुठाकर और दिक्कतोंका अनुभव करके बनाया गया है और अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं की जा सकती; अतः जिन लोगोंके आर्डरके साथ अुक्त नियमानुसार पेशगी नहीं आयेगी, अुन्हें न तो हम पुस्तकें ही भेज सकते हैं और न पत्रोत्तर।

मंत्री

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

GURUKUL KANGRI SAHARANPUR DELHI 10 - 15

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

राष्ट्रभाषा

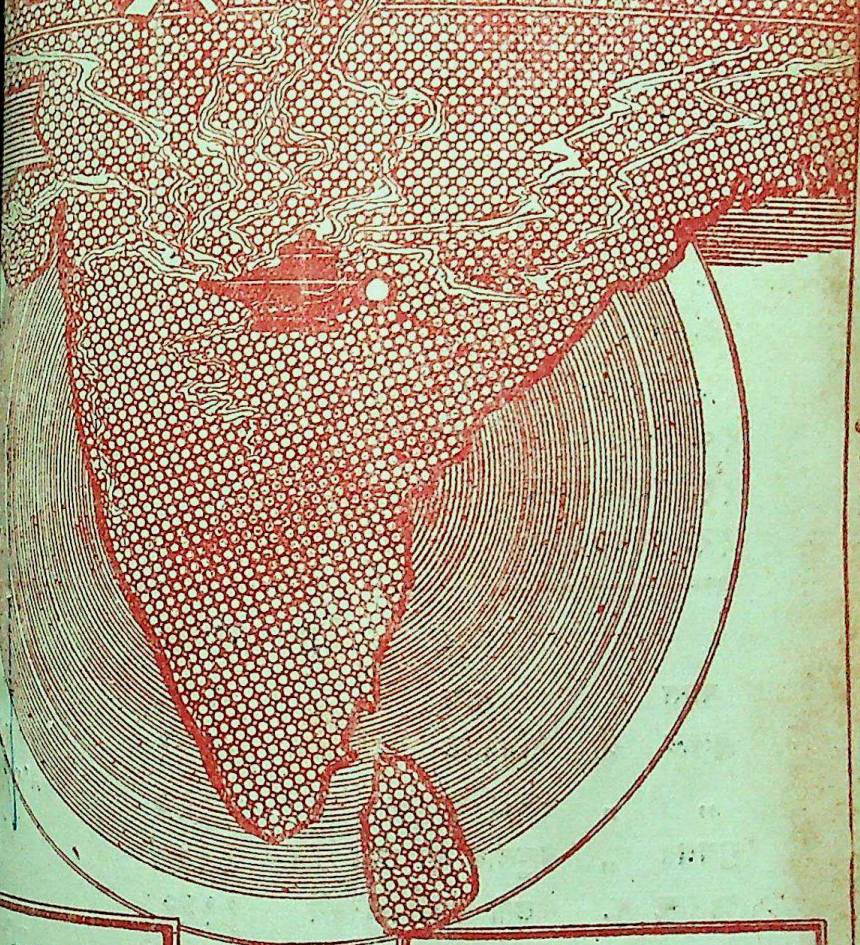

सम्पादक—
[illegible] कौशल्यायन

नवम्बर, १९४०

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

लेख

१. क्रिस्तान
२. बधाओं
३. मेरा पुराना नौकर
४. भारत की राष्ट्रभाषा
५. श्री. नृसिंह चिंतामणि केलकर
६. शहीदोंकी समाधिपर
७. हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही होगी
८. आलोचना
९. प्रधानमंत्रीकी ओरसे
१०. विदेशके हिन्दी पत्र
११. प्रांतीय हलचलें
१२. परीक्षा विभाग

नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त		नाम	क्रमांक
कुरकल	श्री	मजिवेल्लि नीला चलम	११३१
"	"	सय्यद अन्दुल रअफ	११३७
गुजरात	"	बाबुलाल शीवलाल शाह	११३५
महाराष्ट्र	कु.	मालती काशीनाथ कर्वे	११३२
"	श्री	मधुकर स. लोंढे (आगरकर)	११३३
"	"	दौलतराम प. तापडिया	११३६
कर्नाटक	"	श्रीपाद मुकुन्द दाणी	११३८
बम्बई	"	रामसकल शर्मा	११३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ७] वर्धा, नवम्बर—१९४७ [अंक १

अिन्सान ?

श्री नरेन्द्र शर्मा

मैं हिन्दू हूं, तुम मुसलमान, पर क्या दोनों अिन्सान नहीं !
मैं तुम्हें समझता रहा म्लेच्छ, तुम मुझे वणिक औ दहकानी !
सदियों हम दोनों साथ रहे यह बात न अब तक पहचानी
दोनों ही धरतीके जाये हम अनचाहे मेहमान नहीं ! मैं हिन्दू हूं,०—

हैं अलग अलग हम दोनोंके व्यवहार-मान, जीवन-दर्शन;
सांस्कृतिक स्रोत दोनोंके दो करते दो भावोंका सिंचन;
पर दो होकर भी मिल न सके, तो दोनोंका कल्याण नहीं ! मैं हिन्दू हूं,०—

अिस्लाम-पूर्वकी संस्कृतियां, भाषायें, तुमने अपनाअीं ?
अिस्लाम-पूर्वके शाहोंकी गाथायें कवियोंने गाअीं !
फारस तुर्कीको अपनाया क्या अपना हिन्दुस्तान नहीं ? मैं हिन्दू हूं,०—

मैं हिन्दू हूं, बोदा हिन्दू, करता था तुमसे असहयोग !
था छूतभूतसे दबा हुआ पर घुसनेपनका रहा रोग !
मेरी जागृतिका अमृत किंतु होगा तुमको विषपान नहीं ! मैं हिन्दू हूं,०—

तुमको प्यारी हैं खुद्दारी, मुझको विनम्रता आभूषण !
तुम आसमानके अभिलाषी, मुझको प्रिय हैं धरतीके कण !
पर क्या भूमें मिलती न देह ? नभमें खो जाते प्राण नहीं ? मैं हिन्दू हूं,०—

जन-क्रांति जगाने आअी है,-अुठ, हिन्दू ! अुठ ओ मुसलमान !
संकीर्ण भेद-संदेह त्याग, अुठ, महादेशके महाप्राण !
क्या पूरा हिन्दुस्तान न यह ? क्या पूरा पाकिस्तान नहीं ? मैं हिन्दू हूं,०—

—'नया साहित्य' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

बधाई है यू. पी. सरकार को। बधाई है पंत-सरकार को। बधाई है पालीवाल जी जैसे मंत्रियों को। बधाई है सभी हिन्दी-समर्थक पत्रोंको।

कभी कभी दीर्घ-काल तक अस्वाभाविक परिस्थितिमें रहनेके परिणाम-स्वरूप किसी व्यक्ति या समाजको जो यंत्रणा सहन करनी पड़ती है, और स्वाभाविक परिस्थितिमें सांस लेनेका अवसर पा जानेसे अुसे अुस यंत्रणासे जो मुक्ति मिलती है, अुस मुक्तिको ही वह बहुत बड़ी बात समझ लेता है। अन्यथा गङ्गा-यमुनाके तटकी, प्राचीन 'आर्यावर्त' की, बौद्धोंके 'मध्य मण्डल'के अधिकांश प्रदेशकी, अंग्रेजोंके 'युक्तप्रान्त'की राज-भाषा 'हिन्दी' हो, अिस घोषणामें कौनसी विशेष बात है? लेकिन क्योंकि अंग्रेजी-राज्यके परिणाम-स्वरूप अभी कल तक अंग्रेजीका बोलबाला रहा है और क्योंकि हमारे न्यायालयोंमें जनताकी भाषाकी अपेक्षा अर्बी-फारसी शब्दोंसे लदी हुअी दुरूह 'अुर्दू' ही आदृत रही है, अिसलिये आज यू. पी. सरकारके 'देवनागरी लिपिमें लिखी हुअी हिन्दी भाषा'को राजभाषा घोषित कर देने पर अुसे बरबस बधाअी देनेको जी चाहता ही है। बधाअी, अनेक बार बधाअी।

अब यू. पी.के बाद सी. पी. और बिहारका नंबर है। देखें दोनोंमेंसे कौन पहल करता है? हमें दोनोंही प्रान्तोंके मन्त्रीमंडलोंके एक दूसरेसे अधिक हिन्दी प्रेमी होनेमें सन्देह नहीं।

लेकिन अनेक दूसरे महत्वपूर्ण प्रश्नोंकी तरह अिस भाषाके प्रश्नकी भी असली लड़ाअी दिल्लीमें लड़ी जा रही है। प्रान्तोंमें प्रान्तीय-भाषाके रूपमें हिन्दीकी विजय दिल्लीके संघर्षमें सहायक होगी, किन्तु दिल्लीमें हमें जो हिन्दीको राष्ट्रभाषाके पद पर प्रतिष्ठित करना है—अुसमें दुर्भाग्य यह है कि हमें अपने राष्ट्रपुरुष गान्धीजीका ही पूरा आशीर्वाद प्राप्त नहीं। वह प्राप्त है किन्तु पाकिस्तान और हिन्दुस्तानकी तरह बटा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें विश्वास है कि गान्धीने अपने जीवनमें जैसे अन्य अनेक अवसरों पर कांग्रेस अथवा राष्ट्रके निर्णयोंके सामने अपने व्यक्तिगत विचारोंको महत्व नहीं दिया है अुन निर्णयोंको सहर्ष स्वीकार किया है, वैसा ही वे अिस अवसरपर भी अखिलभारतीय विधान परिषदके निर्णयोंको शिरोधार्य कर सकेंगे।

युक्तप्रान्तीय सरकारकी घोषणाको सभीने अेक कण्ठसे सराहा है। वह यदि अच्छी नहीं लगी है तो अेकतो पूज्य गान्धीजीको और दूसरे 'हंबअी क्रानिकल'के सम्पादक सैय्यद ब्रेलवीको।

गान्धीजीने युक्तप्रान्तकी राजभाषाकी चर्चा करते हुये कहा है "सारे हिन्दुस्तानके चौथाअी मुसलमान यू. पी. में भरे हैं। वे अुर्दू बोलते हैं। अगर अुनको वहाँ रहने देना है तो देवनागरी लिपि नहीं होनी चाहिये"। गान्धीजीको किसी बातपर 'किन्तु परन्तु' लगाते डर लगता ही है। तो भी गान्धीजी या कोअी भी यदि युक्तप्रान्तकी बात कहे तो क्या अुसे तब यही नहीं बताना होगा कि युक्तप्रान्तमें कितने मुसलमान हैं? सारे हिन्दुस्तानमें यदि आठ मुसलमान हों और युक्त प्रान्तमें हों केवल २ (दो) तो भी तो यह कथन ठीकही रहता है कि सारे हिन्दुस्तानके अेक चौथाअी मुसलमान संयुक्तप्रांतमेंही बसते हैं। हमें तो जानना है कि पिछली गिनतीके बहुत सदोष होने परभी क्या सारे युक्तप्रान्तमें १४ प्रतिशतसे अधिक मुसलमान बसते हैं? हम यह हिन्दू-मुसलमानकी गिनती करेंही क्यों? हम भाषाका प्रश्न हल करने बैठे हैं न कि किसी मज़हबका। हमारे लिये यह जान लेना पर्याप्त है कि युक्तप्रान्तमें सारी ग्रामीण आबादी बिना किसी भेद-भावके अवधी-ब्रज आदि बोलियां बोलती है और शहरोंके लिखे पढ़े लोग जो कुल आबादीका अेक बहुत छोटा हिस्सा है, वे भी अपने घरोंमें अवधी तथा ब्रज आदि बोलते हैं। हाँ बाहरी व्यवहारमें हिन्दी-अुर्दू। ये अवधी ब्रज आदि बोलियाँ हिन्दीकी उप बोलियाँ मानी जाती हैं– तब किसीभी अैसे प्रान्तकी जिसकी भाषा सम्बंधी स्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त-प्रान्त के समान हो राजभाषा क्या होनी चाहिये ? अेकही अुत्तर हो सकता है। हिन्दी और हिन्दीके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

बापूका यह कथन कि 'युक्तप्रान्तके मुसलमान अुर्दू बोलते हैं' ठीक नहीं है। अुसके आधार पर किये गये निर्णय गलत होंगे ही। बापूके सभी कथन देशकी राष्ट्रीयभावनाके प्रतिनिधि माने जाते हैं। किन्तु हमें क्षमा किया जाय यदि हम बापूके अिस कथनमें कि 'यदि मुसलमानोंको वहाँ रहने देना है तो देवनागरी लिपि नहीं होनी चाहिये" किसी प्रकार की राष्ट्रीयता न देख सकें। यह तो सीधा सादा साम्प्रदायिक कथन है। गान्धीजीके अतिरिक्त यदि किसी दूसरेने अैसा कहा होता तो पाठकोंको लगता कि यह तो मुसलमानोंको अपने देशके विरुद्ध भड़काने जैसी बात है। गान्धीजीके कथनसे भी अैसी बातोंका यही परिणाम हो सकता है।

अपना देश रूस और चीनकी तरह महान् देश है। रूसके सभी जनतंत्रोंकी एक राष्ट्र-लिपि है। मज़हबके हिसाबसे वहां अीसाअी हैं, यहूदी हैं, मुसलमान हैं, बौद्ध हैं—सभी हैं। चीनकी तो राष्ट्र-लिपिही नहीं। सारा राष्ट्र-लेखन एक है। अभागे भारतका सभी कुछ मज़हबके आधार पर बाँटनेका आग्रह किया जा रहा है। मर्मान्तक पीड़ा होती है यह सोचकर कि यह आवाज़ बार बार राष्ट्रपुरुष गान्धीजीकी ओरसेही अुठ रही है और राष्ट्रीयताके नाम पर!

श्री० ब्रेलवी साहबने अपने १८ अक्टूबरके 'बम्बअी—क्रानिकल' में जो अग्रलेख लिखा है वह पूर्व-निश्चित मतके अनुसार 'सीधी भी मेरी और पटभी मेरी'के ढंगके तर्कका बड़ा सुन्दर नमूना है। आप गान्धीजीका नाम लेकर कहते हैं कि "मुसलमानोंको बराबरीके बर्तावका जो गान्धीजीने वचन दिया गया है, अुसका यह आग्रह है कि अुर्दूको सरकारी भाषा स्वीकार किया जाय"। मतलब हुआ कि जहाँभी कहीं अितिहास चक्र मुसलमानोंको ले जाकर छोड़ दे वहाँकी राजभाषा अुर्दू भी अवश्य होनी चाहिये। अभी तो युक्त-प्रांतके लियेही यह बात कही जा रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल भारतके अन्य प्रान्तोंके लियेभी यही बात कही ही जा सकती है। वह कौनसा प्रांत है जिसमें कुछ न कुछ मुसलमान नहीं हैं? श्री० ब्रेलवी के लेखमें हलकी धमकीभी है "बहुमतको ऐसा कुछ नहीं करना चाहिये कि जिससे अल्पमतवालोंके लिये सम्मानपूर्वक रहना कठिन हो जाय"। क्या देशकी राष्ट्र-लिपि स्वीकार करना अथवा किसी प्रान्तकी राज-भाषाको राजभाषा मान लेना किसीभी सच्चे नागरिकके लिये अपमानकी बात हो सकती है! यदि होती है तो हमें कहना पड़ेगा कि अुसकी नागरिकता तथा राज्य भक्ति दोनों सन्दिग्ध हैं।

श्री. ब्रेलवी गान्धीजीके नामके सहारे दो बातें पूरी हुअी देखना चाहते हैं। (१) हिन्दी अुर्दू हिन्दू तथा मुसलमानों दोनोंके लिये अनिवार्य कर दी जाय। अिसका साफ मतलब यह हुआ कि कोअीभी मुसलमान तब तक प्रान्तकी भाषा सीखनेके लिये तैयार नहीं है या तैयार नहीं हो सकता जब तक अुसकी कल्पित भाषा "अुर्दू"को हर गैर मुस्लिम सीखनेके लिये तैयार न हो। हम जानना चाहते हैं कि क्या श्री. ब्रेलवी अिसे किसीभी प्रान्तके गैर-मुस्लिमोंके लिये सम्मानपूर्ण स्थिति समझते हैं?

यदि यह न हो सके तो श्री. ब्रेलवी चाहते हैं (२) कि कमसे कम दोनो लिपियोंको छूट दे दी जाय--दोनों लिपियोंको सरकारी लिपि मान लिया जाय। श्री. ब्रेलवी एक अंग्रेजी अखबारके सम्पादक हैं। अंग्रेजोंने अुर्दु-हिन्दीके झगड़े छपते रहें और अंग्रेजी अखबार बिकते रहें--यही अब तककी अंग्रेजी पत्रकार कलाकी नीति रही है। अन्यथा किसी प्रान्तकी दो दो लिपियोंको राज-लिपि स्वीकार कर लेनेके--और वहभी मजहबी आधारपर-क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं, अिसे हमारी तरह श्री. ब्रेलवी भी कुछ कुछ अवश्य समझ पाते। युक्तप्रान्तीय सरकारके अर्थ-मन्त्री श्री. पालीवालजीने अपने वक्तव्यमें ठीकही कहा है -"दोनों लिपियोंको कायम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना स्टाफ और जनता दोनोंके लिये बहुतही महंगा और कष्टदायक साबित होता....सरकारने साम्प्रदायिक आधार पर नहीं, बल्कि प्रान्तमें निवास करने वाली जनताकी सुविधाको ध्यानमें रखकर हिन्दीको राजकीय भाषाके पद पर प्रतिष्ठित किया है। अिसके अतिरिक्त मैं नहीं सोचता कि हिन्दी और अुर्दूका विभाजन धार्मिक आधार पर किया जाना चाहिये।"

हम दोनों लिपियोंके ज्ञानके पक्षपाती हैं, अुसे अुपयोगी मानते हैं किन्तु अुन्हें स्वीकृत करानेके लिये जो विषैला तर्क अुपस्थित किया जा रहा है अुसके परम विरोधी हैं। यदि देशमें कोअीभी अैसा सम्प्रदाय है चाहे वह हिन्दू हो चाहे गैरहिन्दू हो जो किसीभी अुचित बातको—किसीभी राष्ट्र-हितकी बातको—केवल अिस लिये सुनने और माननेके लिये तैयार नहीं क्योंकि अुसने समझ लिया है अथवा अुसे किसीने समझा दिया है कि यह अुसके "मज़हब"के ख़िलाफ है तो अुस सम्प्रदायसे अथवा अुस सम्प्रदायके वैसे लोगोंसे तो देशकी सरकारको किसी न किसी दिन अुलझना और निपटना होगाही। अच्छा है यथा शीघ्र निपट लिया जाय।

युक्तप्रांत ही गान्धीजीका वह काल्पनिक 'अुत्तर-भारत' है, जहाँके लोग "हिन्दुस्तानी" बोलते हैं। हमें हर्ष है कि युक्तप्रांतकीही सरकारने सर्वप्रथम हिन्दीको राज-भाषाके आसनपर प्रतिष्ठित कर हमारी विधान परिषदके रास्तेको कुछ कुछ साफ कर दिया है।

अुसने अिसे मामलेमें दृढ़ताके साथ साथ जो व्यवहारिक नीति अपनाअी है, वह सर्वथा स्तुत्य है।

आशा है अुसकी कार्य-पद्धति अन्य प्रांतीय सरकारोंके लिएही नहीं हमारी भारतीय सरकारके लिएभी अुपयोगी सिद्ध होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मेरा पुराना नौकर

श्री रवींद्रनाथ ठाकुर

घर-मालकिन हर वक्त मुंह फुलाये रहती है। नौकरके चले जाने पर कभी कभी मुझेभी अुनकी दोचार तीखी चुभती बातें सुननी पड़ती हैं। अगर कोअी चीज खो जाती है तो वे शिकायत करती हैं कि "वह तुम्हारा कलमुंहा कृष्णाही चोर है।"

अुठते बैठते, चलते फिरते, अुसे गालियां देता हूं, बड़ी बकझक करता हूं; पर वह बेअीमान सुनी-अनसुनी कर जाता है। वह रोज जितनी गालियां खाता है, अुतनी तो रोटियां भी नहीं खाता। अुसे किसी बातकी परवाह नहीं है। काम पड़नेपर पुकारता हूं—"अरे ओ बेवकूफ, कहां चला गया रे?" सारा मुहल्ला, आसपास, अड़ौस-पड़ौस खोज डालता हूं क्या मजाल कि कहीं कृष्णाकी परछांअी भी नजर आवे। अुसे कोअी चीज देता-हूं तो तोड़-फोड़कर टुकड़े टुकड़े कर डालता है। तीन देता हूँ तो अेकही बच पाती है। दोपहर हुअी कि अपनी दोनों टांगें पसार कर चारों कोने चित्त, अेक कोनेमें पड़ा हुआ खर्राटे मारता है। शोर मचाता हूं, गालियां देता हूं तो फाटकपर खड़े-खड़े हँसता रहता है। नाकमें दम आ गया है! फिर भी अुस बेहयापर मेरी कुछ अैसी ममता है कि अुसे घरसे निकाल नहीं सकता। कदीम नौकर जो ठहरा!

मालकिन मुंह मटकाकर कहती है—"अब तो मुझसे सहा नहीं जाता। ये लो सँभालो तुम अपना घरबार। रहो अपने मुंडजले कृष्णाको लेकर। अिस बदमाशके मारे घरमें कोअी चीज़ बचही नहीं पाती। और न रुपये-पैसेका पता चलता है। .....और अिस दुनियामें अुसके सिवा तुम्हारे लिये कोअी दूसरा नौकर ही नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुस्सेसे गरम होकर मैंने झपटकर कृष्णाके कान अमेठ दिये। गालियाँ देते हुअे मैंने कहा—" पाजी कहींके, चल, निकल जा घरसे।"

बिना कुछ कहे-सुने, सिर झुकाकर कृष्णा धीरे-धीरे चला गया। मैंने मन-ही-मन कहा—" चलो, अच्छा हुआ। बला टल गअी।" लेकिन दूसरे दिन अुठकर देखता हूं, तो कृष्णा हँसता हुआ सामने खड़ा है। मानो, अुसे न कोअी दुख है, न शिकायत है न कोअी चिन्ता है। निकाल देने परभी न निकला। फिर घुस आया घरमें। क्या करूँ, पुराना नौकर है।

अिस वर्ष दलालीमें कुछ अच्छी रकम हाथ लग गअी थी। सोचा, चलें मथुरा-वृन्दावनकी यात्रा कर आवें। सारा परिवार यात्राके लिये तैयार हो गया। मालकिनको किसी तरह समझा बुझाकर शांत किया; लेकिन अुन्होंने साफ साफ हिदायत कर दी कि वह कलमुंहा कृष्णा हमारे साथ न जा सकेगा। नहीं तो यात्रामें हम चैनसे न रह सकेंगे। मैंने कहा- " ठीक है, कृष्णा नहीं, नवीनचंद्र मेरे साथ जायगा।"

गठरी-पोटली बँधी। स्टेशनपर पहुँचे। गाड़ी आयी। सवार हुअे। गाड़ी चलदी। बर्दवान जंकशन पर जब हमारी गाड़ी पहुँची तो देखता हूं कि कृष्णा हुक्का भरनेके लिअे प्लेटफार्म पर दौड़ धूप कर रहा है। मैंने " धत्तेरेकी " कहकर अपना माथा ठोक लिया। आखिर सहन करनेकी भी कोअी सीमा होती है। मैं जितनाही बड़बड़ाता हूं, अुतनाही वह खुश होता है, वह मेरा पुराना मनमौजी नौकर!

किसी तरह मथुरा होकर वृंदावन पहुँचे। भगवान कृष्णकी राधा लीलाका धाम! चारों तरफसे पंडोंने घेर लिया। राहमें पांच सात मुसाफिरोंसे जान पहचान हो गअी थी। सबने मिलकर धर्मशालामें एक जगह डेरा डाला। सोचा, यहां चैनसे गुजरेगी। लेकिन, कहां ब्रजबाला और कहां ब्रजगोपाल! सारे वृंदावनमें चेचक फैला हुआ था। मुझेभी फफोले अुभर आये। सभी संगीसाथी सपनेकी तरह गायब होगये। मुझे लगा कि अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहीं अपने राम ठंडे हो जायेंगे। दीन-करुण स्वरमें पुकारा--अरे कृष्णा, जरा मेरे पास आकर बैठ जा भाओ ! अिस समय वही मेरा सबसे अपना जान पड़ने लगा। दिन-रात मेरी चारपाओंके पास खड़ा रहता मेरा वह पुराना नौकर।

कृष्णा दिन-रात मेरी सेवा-शुश्रूषा करता और मेरी चारपाओंके पास खड़ा रहता। अुसकी आंखोंमें न नींद थी, न पेटमें भूख। मुझे बार बार दिलासा देता और कहता---"कुछ डर नहीं है बाबूजी, तुम अच्छे हो जाओगे। राजी-खुशी हम घर चलेंगे।"

अुसकी सेवाके बलसे मैं अुठ खड़ा हुआ; लेकिन अुसके बाद अुसे बुखार आने लगा। दो-दिन वह बेहोश रहा। फिर हमेशाके लिये अुसने आँखें बंद करलीं। आजतक मैं अुसे छुड़ाना चाहता था। लेकिन आज वही मुझे छोड़कर चला गया। तीर्थयात्रा करके बहुत दिनों बाद मैं घर लौटा; लेकिन अिसबार नहीं लौटा वह मेरा पुराना नौकर कृष्णा।

अनुवादकः- श्रीधरणीधर, और सुश्री अमलप्रभादेवी बोष.

भारतकी राष्ट्रभाषा

डॉक्टर रघुवीर

विश्वभरमें ऐसे बहुत कम राष्ट्र हैं, जो विस्तार और जनसंख्याकी तुलनामें भारतवर्षके अनुरूप सिद्ध हों और जहां एक ही भाषा बोली जाती हो। चीन एक बड़ा लम्बा-चौड़ा देश है। यह दावा किया जाता है कि इस देशके एक छोरसे दूसरे तक एक ही भाषा लिखी-पढ़ी और बोली जाती है। यह दावा अंशतः ही सत्य है। दक्षिणी और अुत्तरी चीनकी भाषाओंमें पर्याप्त मात्रामें अन्तर है। लिपिही अखिल चीनमें सामान्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनके साहित्यिक समाजका तत्व अत्युच्च है। एक ही लिपिमें लिखित शब्दोंके अुच्चारणमें किसीभी देशमें सर्वत्र समानता नहीं पाअी जाती। यथा, यूरोपके प्रत्येक देशमें १, २, ३, एकही प्रकारसे लिखे जाते हैं, लेकिन प्रत्येक देशमें अुनके अुच्चारण भिन्न हैं। अंग्रेजीमें १ को 'वन', फ्रेंचमें अिसीको 'अन' और जर्मन भाषामें 'इन' अुच्चारित किया जाता है। अिसी प्रकार चीनमेंभी लगभग १२ बोलियां हैं जिनमें प्रत्येक शब्दका भिन्न-भिन्न अुच्चारण है, यद्यपि लिपिकी सामान्यता अुल्लेखनीय है। जहां अेक ओर प्रत्येक-देशके प्रत्येक प्रांतमें अुच्चारण भिन्नता होती है, अुसी समय वहांकी लिपिका सामान्य होना कोअी विशेष बात नहीं है।

रूस अैसा दूसरा विस्तृत देश है, जहां भाषाकी सामान्यता है। सरकारी रिपोर्टके अनुसार सोवियत संघमें ८१ भाषाएँ (?) बोली जाती हैं लेकिन रूसी भाषाही प्रधान भाषा है। रूसी भाषाकी सोवियतमें सार्वभौम मान्यता है।

अितने परभी सोवियत संघकी जनसंख्या भारतसे कम है। भारतके प्रांत प्राकृतिक सीमाओं द्वारा विभक्त नहीं हैं। विन्ध्याचल पर्वतको दक्षिण और अुत्तर भारतकी प्राकृतिक सीमा स्वीकार नहीं किया जा सकता। राम और पौराणिक ग्रंथ रामायणने दक्षिण और अुत्तरके सीमा-बन्धनको आजसे सदियों पूर्व विच्छिन्न कर दिया था। आर्य भाषाअें सुदूर प्रायः द्वीपमें लोक-भाषाओंका रूप ग्रहण कर चुकी थीं। मराठी विन्ध्याको पार कर दक्षिणके अन्तरंग अञ्चलोंमें और सिंहली समुद्र-सीमाकोभी पारकर लंकातक पहुँच गयी थी। दोनों भाषाअेंही विशुद्धतम रूपसे आर्य-भाषाअें थीं। सांस्कृतिक रूपसे दक्षिणी भाषा अुत्तरकी भाषाओंसे अत्यन्त निकटतम सम्बन्ध रखती हैं। अभी पिछले कुछ वर्षोंसे दक्षिणके कुछ भागोंमें अुत्तर-भारत विरोधी भावनाअें अुग्र हो गयी हैं। यह अुग्रता निराधार है। और स्वभावतः वह शीघ्रही अदृश्यभी हो जायगी। अुत्तर-भारतकी ७ प्रधान भाषाअें हैं:- पंजाबी, हिन्दी, बंगाली, आसामी, अुड़िया, मराठी और गुजराती। अुक्त भाषाओंका साहित्य लगभग १ हजार वर्ष प्राचीन है। सभीके पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताका अमूल्य कोष है। गद्य-साहित्य आधुनिक है। अुसका अति द्रुत-गतिसे विकासभी हो रहा है। प्रत्येककी दिशा प्रगतिशीलता है। सातों भाषाओंमेंसे हर अेक भाषाको अपने साहित्यपर गर्व है। शक्ति व सौन्दर्य सम्पन्नतामें कोअीभी अेक दूसरेसे पीछे नहीं हैं। प्रत्येक भाषाका बोलनेवाला अपनी भाषाके प्रति अत्यधिक भक्तिपूर्ण भावनाअें रखता है और अुसकी यह भाषाभक्ति अतीव सतर्क है। जिस भूमि-सीमा पर भाषाओंका संगम होता है, वहांके निवासी प्रकृतिसे सुसंस्कृत होते हैं। हिन्दी और हिन्दी भाषा-भाषियोंकीभी यही दशा है। हिन्दीको कोटि-कोटि अहिन्दी भाषा-भाषी प्राणीभी बोलते हैं और लक्ष-लक्ष नर-नारियोंकी लिपि देवनागरीही है। हिन्दीकी सीमा पंजाबी, गुजराती, मराठी, अुड़िया बंगाली और नैपाली भाषाओंसे आबद्ध है। अिनके अलावा उक्त भाषाओंके बोलने वालोंकीभी संख्या अति पर्याप्त है। बंगालीका आसाम तथा अुड़ीसाके प्रांतोंमें बड़ा प्रभाव है। दूसरे शब्दोंमें यहभी कहा जा सकता है कि बंगालीकाही अुक्त प्रांतोंमें आधिपत्य है।

राजनीतिक दृष्टिसे हिन्दी बिहार, युक्तप्रान्त, पूर्वी-पंजाब मध्यप्रान्त तथा राजपूतानेकी रियासतोंकी लोकभाषा है। मराठी बम्बअी व मध्यप्रान्त (बरार) तक फैली हुअी है। गुजराती बम्बअी प्रान्तके कुछ भागोंतकही सीमित है। आसामी, अुड़िया और बङ्गाली अपने-अपने प्रान्तोंकी भाषाअें हैं। पंजाबीभी पूर्वी पंजाबके कुछ भागोंतकही सीमित है। अिसलिअे हिन्दी विभिन्न अुत्तर भारतकी प्रान्तीय और प्रादेशिक भाषाओंकी सम्बन्ध-ग्रन्थि है। यही कारण है कि हिन्दी अनेक राजनीतिक अिकअियोंकी प्रधान भाषा है। हिन्दी विस्तृततम प्रादेशिक अंचलकी भाषा है। विशुद्ध हिन्दी भाषा-भाषियोंकी संख्या २ करोड़ २२ लाख है। अिनमें बिहारी, अवधी, बुन्देलखण्डी तथा अन्य अुपभाषाअेंभी सम्मिलित हैं। अुक्त अुप-भाषाओंके प्रयोगकर्त्ता पश्चिमी हिन्दीके साहित्य-निर्माणमें स्वतन्त्रतापूर्वक अुसका प्रयोग करते है। यहांतक कि नेपालमें जहांकी भाषा बिल्कुल भिन्न है, हिन्दी जोर पकड़ती जा रही है। पूर्वी पंजाबपरभी हिन्दीकाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वभौम आधिपत्य कुछ दिनोंमें हो जायगा। अंबालाप्रदेश दिल्लीसे शिमला तक फैला हुआ है; वहाँभी भाषा तो हिन्दीही है। साहित्यकोंके लिअे हिन्दी अपने विशुद्ध संस्कृतके तत्सत व तद्भव शब्दोंसे सज्जित रूपमें भुख और दक्षिण भारतकी राष्ट्रभाषाका पद प्राप्त कर सकती है। सीधी-सादी हिन्दी अुत्तर भारतके प्रत्येक अञ्चलके अुपयुक्त है। हिन्दी अैसी भाषा है, जो सैद्धान्तिक, धार्मिक, दार्शनिक और व्यापारिक यहांतक कि वैज्ञानिक और निर्माण-सम्बन्धी समस्त आवश्यकताओंकी पूर्ति कर देगी।

'विश्वमित्र' से

नृसिंह चिन्तामणि केलकर

श्री. अुमाशंकर 'शुक्ल'

गत १४ अक्टूबर को पूना के अेक महान साहित्यिक, सामाजिक कार्यकर्ता व प्रतिभासंपन्न राजनीतिज्ञ की मृत्यु हो गई और पूरा महाराष्ट्र आज अुनके विछोहमें सिसकियां ले रहा है। महात्मा तिलक व जस्टिस रानाडेके बाद तात्यासाहब केलकरही अेक अैसे महान नेता थे जिनपर पूरा महाराष्ट्र गर्व करता था और जिनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्वका सब लोहा मानते थे। जनता अुनमें तिलकके सभी गुणोंका प्रतिबिंब देखती थी। अुन्होंने स्वयं अेक बार कहा था कि तिलकसे अगर मैंने कुछ सीखा है तो अुनकी विचार पद्धति। तिलकके विचारोंको आप जिस सुंदरताके साथ जनताके सम्मुख 'केसरी' के स्तंभों द्वारा रखते थे अुस तरह किसीने नहीं रखा।

निस्वार्थ सेवक

अुन्होंने करीब ५४ वर्षों तक महाराष्ट्रकी निस्वार्थ भावसे सेवाकी और तिलकने जो चेतनता जागृतकी थी, अुसमें अुन्होंने अपनी सेवाओं द्वारा बल प्रदान किया। गोलमेज परिषदमें अुनकी कार्यपटुता अुल्लेखनीय है। आप अंत तक लिखते रहे और लेखनी बराबर चलती रही। वे व्यक्ति नहीं पर अेक शिक्षण-संस्था थे। राष्ट्रोन्नतिके लिये जन्मभर काम करने वाले राष्ट्रधुरीण, साहित्यकी सतत साधना करनेवाले महान साहित्यिक, विधायक कार्यक्रमकी अनेक योजनाओंका निर्माण कर राष्ट्रीय कार्यमें अनेकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नवीन दिशा बताने वाले मार्गदर्शक, लोकमान्य तिलकके राष्ट्रकार्यकी धुरा अुनके पश्चात् पच्चीस वर्षोंतक संभालनेवाले महाराष्ट्रके गौरवशाली तिलकके वारस और महाराष्ट्रको चेतनता प्रदान करनेवाले वीर सुपुत्र केलकरके वियोगमें आज महाराष्ट्रके नरनारी शोकाकुल हैं।

पत्रकार जीवन

आपका जन्म मिरज रियासतमें सन १८७२ में हुआ था। २२ वर्षकी उम्रमें वकालत पास करनेके बाद आप १९४६में केसरी-मराठा संस्थामें प्रविष्ट हुये और अेक साल बाद अुक्त पत्रोंके संपादक हुये। 'केसरी'के रूपमें जो धरोहर तिलकने केलकरको सौंपी थी अुन्होंने अुसे अच्छी तरह संभाला और आज अुसे राष्ट्रके सुपुर्द कर दिया है। 'स्फुट' मासिकका संचालकत्व अिन दिनों आप ही कर रहे थे।

राष्ट्रभाषा हिन्दीकी सेवा

राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रति अिन्होंने जो कार्य किया वह नहीं भुलाया जा सकता। आज महाराष्ट्रमें राष्ट्रभाषा हिन्दीकी जो अुत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है अुसका बहुत कुछ श्रेय आपको दिया जा सकता है। हिन्दी प्रचारसंघके आप अध्यक्ष रह चुके थे। १९३९में पूनामें जो अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अधिवेशन हुआ था अुसका अुद्घाटन आपनेही किया था और अुस समय आपने जो भाषण दिया था, वह हिन्दी में ही दिया था। अितनाही नहीं मराठीका 'साहित्य सम्राट' पद अुनके कितना योग्य है अिसकी जानकारी केलकरने अपने संक्षिप्त भाषणमें हिन्दी वालोंको दे दी थी और अुनकी विद्वताका लोहा माना गया था। हिन्दी साहित्यके अितिहासको पढ़कर, आपने अपने भाषणमें हिन्दी-मराठी साहित्यका तुलनात्मक अितिहास बताया था और हिन्दी तथा मराठी बहनोंका सम्बध अेक दूसरेसे कितना दृढ़ है यह प्रकट किया था। तात्या साहबका अुक्त भाषण अितना महत्वपूर्ण था कि अबोहर अधिवेशनके समय अध्यक्षपदसे भाषण देते हुअे डा. अमरनाथ झाने अुनके भाषणके कुछ अंश आधारके लिअे लिये थे। राष्ट्रभाषा प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति व हिन्दी साहित्य सम्मेलनके कार्यकर्ता अगर हिन्दी प्रचारके लिये पूना जाते तो बिना केलकरसे भेंट किये न लौटते थे क्योंकि अुनके हृदयमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रति अगाध प्रेम था।

प्रभावशाली लेखक

मराठी साहित्यमें स्वर्गीय विष्णुशास्त्रीचिपळूणकरके बाद तात्या साहबकाही नंबर आता है। अिनके समान प्रभावशाली लेखक दूसरा नहीं हुआ। कुछ लोग रानाडे और केलकरकी तुलना करते हैं पर दोनोंमें बहुत अंतर है। रानाडेकी प्रकृति संपूर्णता राजकीय थी तो केलकर जन्मजात रसिक और साहित्यिक थे। महाराष्ट्रकी आजकी लेखनशैली पर तात्या साहबकी साहित्यिक तपस्याका खूब प्रभाव पड़ा है। हिन्दीमें जो स्थान आचार्य महावीरप्रसादद्विवेदीको प्राप्त है वही स्थान मराठीमें केलकरको प्राप्त हुआ है। अुनके समकालीन मराठी लेखक आपटे, राजवाड़े, कोल्हटकर, खाडिलकर, केतकर, गड़करी, बा. ग. जोशी आदि कुछ प्रतिभाशाली लेखक संभव है साहित्य क्षेत्रमें कुछ सफल सिद्ध हों, व मराठी पत्रकारिताके क्षेत्रमें आगरकर, तिलक, परांजपे, खाडिलकर, गोपालराव ओगले अुनके बराबर हों पर साहित्यिक व संपादक अिन दोनों भूमिकाओंमें केलकर सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होंगे। अुन्होंने अपने चालीस वर्षोंके दीर्घ पत्रकार जीवनमें अनेकों पत्रकारोंको तैयार किया जो आज सफलतापूर्वक पत्रकार जगतमें काम कर रहे हैं। अखिल महाराष्ट्रमें अुनके द्वारा सिखाये गये शिष्य वर्गमें अगर अनेकों 'अर्जुन' मिलेंगे तो गुरुकी कृपाका लाभ न मिलते हुअेभी स्फूर्तिबल द्वारा शिक्षा प्राप्त अेकलव्यभी मिलेंगे। तात्यासाहबका जीवन गंगाकी तरह पावन व निर्मल रहा है। अुनकी पवित्र लेखनीसे जो गंगारूपी साहित्यिक धारा प्रवाहित हुअी अुसमें स्नान करनेसे न जाने कितने तर गये और यही केलकरके जीवनकी महानता है। अीश्वर दिवंगत आत्माको शांति दे।

(भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीदों की समाधि पर

श्री सोहनलाल द्विवेदी

जो बढ़े स्वदेशके जवान, हमें याद है,
जो चढ़े स्वदेशके जवान, हमें याद है,
जो अुठे स्वदेशके जवान, हमें याद है,
जो मिटे स्वदेशके जवान, हमें याद है!
सो रही समाधि तले हैं अमर जवानियां।
राष्ट्रध्वजा गाड़ दो, यहां अमर कहानियां॥

वह स्वदेशका स्वतंत्र युद्ध, हमें याद है,
वे दुसह प्रहार, कंठ रुद्ध, हमें याद है,
शशि शत्रु सैन्य, काल क्रुद्ध, हमें याद है,
मौन प्राणके प्रदान शुद्ध हमें याद है,
है स्वराज्यकी शिला, यहीं अमर निशानियां
राष्ट्र ध्वजा गाड़ दो, यहां अमर कहानियां॥

जुल्मके जहां जले चिराग, हमें याद है,
जुल्मके जहां ढले चिराग, हमें याद है,
हाय देशका विदग्ध दाग, हमें याद है.
मृत्युका मसान जलियांबाग, हमें याद है,
सींच रही राष्ट्र यहीं रक्तकी रवानियां।
राष्ट्र ध्वजा गाड़ दो, यहां अमर कहानियां॥

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी ही होगी

समझौते की नीति देश के लिये घातक

युक्त प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पं. बालकृष्ण शर्मा का भाषण

संयुक्त प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सातवें अधिवेशनके अवसर पर काशीमें अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुये हिन्दीके प्रतिष्ठित कवि, पत्रकार एवं विधान परिषदके सदस्य पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने कहा कि हिन्दी अमर है, वह हमारी संस्कृतिका एक अविच्छेद्य अंग है। जब तक भारतीय जन-गणोंके हृदयमें अपनी परम्परा, अपनी सत्य-शिव-सुंदर संस्कृति एवं अपने अुज्जल अतीतके प्रति श्रद्धा, विश्वास अेवं आस्था है, जब तक हमारे हृदयमें बल एवं धैर्य है, जब तक हममें कर्मठताका किंचित मात्र अंश है, तब तक हिन्दी मर नहीं सकती मैं अिस बातका घोर विरोधी हूं कि हिन्दुस्तानी नामक किसी कपोलकल्पित भाषाके सृजनके नाम पर हिन्दीका स्वरूप विकृत किया जाय। प्रश्न सीधा सा है--क्या आज हम राजनीतिक, अर्थशास्त्रीय, वैज्ञानिक, गणित विषयक, ज्योमित शास्त्रीय शब्दोंको संस्कृतसे लेनेको तैयार हैं? अथवा क्या यह नितनव, किंतु सतत प्रयोगोंमें आनेवाले, शब्द अरबी या फारसीसे लिये जायेंगे? मेरे देशकी अैतिहासिक परिपाटी, संस्कृति, जन-रुचि अेवं जन-हित भावनाका यह आदेश है कि वर्तमान आवश्यकता अेवं वर्तमान विचार-धाराको व्यक्त करने वाले अभिनव शब्द संस्कृत अथवा देशी भाषाओंसेही आयें।

नवीन जीने कहा—"भगवान जानते हैं, हिन्दीको राष्ट्रभाषा और देवनागरीको राष्ट्रलिपि स्वीकृत करानेका हमारा यह प्रयत्न साम्प्रदायिक किंवा धार्मिक विद्वेषसे प्रेरित नहीं है। स्मरण रखिये हिन्दी तो अिस देशके हिन्दू-मुसलमानोंकी संयुक्त सम्मिलित भाषा है। हमारी हिन्दी केवल सूर और तुलसीकी ही नहीं है; वह अब्दुलरहीमखानखाना और रसखानकीभी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः अिस बातको सदा हम स्मरण रखें कि हिन्दीका पक्ष समर्थन करते समय हम संकुचित साम्प्रदायिकताको न अपनायें।"

हिन्दुस्तानी कपोल-कल्पित भाषा

आज हमारे देशकी राजनैतिक अेवं सामाजिक परिस्थितियां अत्यन्त तीव्र गतिसे परिवर्तित हो रही हैं। आज तो हमारे सम्मुख यह प्रश्न अुठना ही नहीं चाहिये कि हमारे अिस भारत देशकी राष्ट्रभाषा क्या हो? हिन्दुस्तानी नामक भाषाका हमारे जीवनमें, हमारी अैतिहासिक श्रृंखलामें, हमारी संस्कृतिमें, हमारी जन-रुचिमें कोअी स्थान नहीं है। हिन्दुस्तानी नामक कपोलकल्पित भाषा अेक अैसा अुपहासास्पद प्रयास है जो सांस्कृतिक-सम्मेलनके नाम पर वास्तवमें संस्कृति-सांकर्यको प्रणोदित करता है। प्रश्न यह है कि हम अरबी तथा फारसीके शब्दोंका प्रचलन क्यों सहन करें? हम अिस प्रकारकी विजातीयताको क्यों प्रोत्साहित करें? क्या हमारी भाषामें, हमारी संस्कृत वाणीमें यह क्षमता नहीं है कि वह अभिनव विचारको आत्मसात् कर लेनेके अुपरान्त अुन्हें व्यक्त करे?

भाषाके प्रश्न पर समझौता नहीं

मुझे स्वयं दुख है कि मैं अपने नेता अेवं आराध्यदेव गांधीकी हिन्दुस्तानीवाली बातको अनुचित समझने पर बाध्य हूं। मेरी बुद्धि गांधीकी अिस बातको स्वीकृत नहीं करती। गांधीके विचारोंके विरुद्ध अपना मत प्रतिपादित अेवं प्रकट करना मेरे अैसे जनके लिये कितना कष्टकर है, अिस बातको मेरे वे समानधर्मा ही समझ सकते हैं जिन्होंने गांधीकी अेक मुसकानके लिये अपने सम्पूर्ण यौवनका अुत्सर्ग कर दिया है। मेरे लिये गीताका स्थितप्रज्ञ, संन्यासी, त्रिगुणातीत, भक्त अेवं ज्ञानी कल्पना परेकी वस्तु थे। गांधीके चरण-दर्शन करकेही मैं गीताकारकी तत्सम्बन्धी मान्यताको सम्भव अेवं व्यवहार्य मान सका हूं। गांधी मेरे जीवनमें और मेरे सदृश लक्षावधि जनोंके जीवनमें क्या रहा है और क्या है---यह मैं क्या बताअूं! जो महामानव अनायासही मेरे हृदय-सिंहासन पर प्रतिष्ठित हो गया है, जिसे मैं अपना मुक्तिमंत्रदाता मानता हूं, जिसे मेरी भावना अेवं मेरी बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगावतारके रूपमें स्वीकृत कर चुकी है, जिसके चरणानुगमन करनेका यत्किंचित प्रयास जीवन-सफलताका सन्तोष प्रदान करता है, अुस महापुरुषके विचारसे सहमत न हो सकना मेरे लिये कष्टप्रद अवश्य है। किन्तु आज अिस भाषा विषयक नीतिके सम्बन्धमें मैं गांधीका विरोध करनेके लिये विवश हूं। मैं समझता हूं कि गांधी 'हिन्दुस्तानी'का अुद्घोष कर देशको भ्रांत दिशाकी ओर ले जा रहा है। मेरे लिये, हम सबके लिये, भाषाका विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अिस सम्बन्धमें किसी प्रकारका कोअी समझौता नहीं हो सकता।

हमारा अुत्तरदायित्व

आज हम जिस विभीषिकाका अट्टहास सुन रहे हैं, अुसमें भारतीय संस्कृतिकी संगीत-लहरी मानो विलुप्त हो रही है। दानवताके पाद-प्रहारसे मानवता भूलुठित अेवं निष्प्राणप्राय हो गअी है। हृदयमें वेदना ही नहीं, गहरा व्रणभी है। भारतीय मानवके मन अेवं प्राणोंमें विद्वेष घृणा अेवं बर्बरताका हलाहल बहुत गहरे बैठ गया है। अिसे निकालनेमें कितना समय लगेगा। मानवीय मूल्योंकी पुनः स्थापना कब तक हो सकेगी? हिन्दीके साहित्य स्रष्टा सावधान रहें। वे यदि निष्ठावान् बने रहें, अुन्होंने यदि अिस बर्बरताको प्रश्रय न दिया, वे यदि अिस दानवी वृत्तिसे अभिभूत न हुये और अुन्होंने यदि सत्साहित्य-सृष्टि करनेके अपने सहज स्वभाव-धर्मका पालन किया तो भारतीय मानव निकट भविष्यमेंही अपनेमें नारायणकी झांकी देख सकेगा। अिस समय हिन्दी साहित्यके स्रष्टाओं पर बड़ा भारी अुत्तरदायित्व है। हमारे अिस चिरपुरातन किन्तु नित-अभिनव राष्ट्रकी अुच्चतम भावनाओंकी कलात्मक अभिव्यक्तिका भार अुनके अूपर आन पड़ा है। आजके घनांधकारमें वे ही दीपदान दे सकते हैं। अतः मेरा निवेदन है कि वे अिस समय शाश्वत मूल्यांकन करनेका कार्यभार अपने अूपर लें।

—xxx—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलूचना

श्री रामेश्वर दयाल दुबे अेम. ए. साहित्यरत्न

आलूचनाकी याद अुसके अेक प्रेमीने दिलायी है। अपने पत्रमें अुन्होंने लिखा है---

"आलूचनाकी चिन्ता चिताके रूपमें जलती रहती है और अन्त-करण सावनकी श्याम घटाको देखनेके लिये लालायित रहती है। वह घटा काले रूपी कागज पर स्याही रूपी किरण, अक्षर रूपी बादलको खींचता हुआ १६ कलामें विकसित हो जाय। आशा रूपी मानव अुस आलूचनाको देखने के लिये बेचैन है।"

आलूचनाके अिस प्रतीक्षारत प्रेमीको लेखककी ओरसे अनेक धन्यवाद।

× × ×

ता. ३१ अक्टूबरको परीक्षाफल प्रकाशित हुआ। अिससे पहले परीक्षाफलके सम्बन्धमें दो अेक पत्र परीक्षामंत्रीको मिले हैं---

श्री. परीक्षा मंत्रीजी,

गत साल मैं नापास हो गया था। अिस बार मैंने कड़क मेहनतकी है। मैं अपने मेहनतसे पास हूँगा। तुम्हारी नाक न काटूँगा। परीक्षाफल जल्दी भेजना।"

परीक्षामंत्रीकी नाक सुरक्षित है यह प्रसन्नताका विषय होना चाहिये।

× × ×

अेक दूसरे परीक्षार्थीने लिखा है---

श्री. परीक्षा मंत्रीजी,

हम परीक्षार्थी और हमारे पुढ़ारीकी यह मांगनी है कि अबी हिन्दुस्थान आजाद होगया है अिसी कारण दुकान-होटल परके नोकर-चाकरोंको अेक महीनेका पगार ज्यादा दे गया है। हमारी मांगनी है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे २५ मार्क मिलें अुसे पास कीजिये। और परिचयके परीक्षार्थि
तो पास करनाही चाहिये। परिचय यह तिसरी परीक्षा है। अेसा
किया तो समिति पर विद्यार्थी नाराज होंगे।"

परीक्षामंत्रीको लेखकके सुझाव पर सहानुभूतिपूर्वक विचार
चाहिये, केवल अिस शर्त पर कि पत्र लेखक परिचयका परीक्षार्थी न

× × ×

परीक्षाफल प्रकाशित होतेही कुछ पत्र आये हैं। अेक
लिखा है—

श्री. परीक्षा मंत्रीजी,

परीक्षाफलको पढ़कर मेरेको कीतना आघात लगा जैसे
मक्खी डुब गअी हो। धत्तेरेकी, फीर नापास हो गया। तुमने
ठिक नहीं कीया।

× × ×

अेक दूसरे अनुत्तीर्ण परीक्षार्थीने लिखा है—

परीक्षामंत्री,

अब न मैं तुमको श्री लिखता हूँ और न जी लिखता हुँ। हम तुम
नाराज हैं। तुमने मेरेको नापास कीया। आपसे कहता हूँ कि
क्या करूँ? अब वही पुस्तक पढ़नेको मन नहीं करता। मन तो
है। अब अुसे अुठाने और जलाने वाला कोअि नहीं। तुम आकर
समझाओ।"

किसी स्थानीय प्रचारकको अिस परीक्षार्थीकी सहायता करनी

× × ×

आगामी परीक्षाओंके लिये आवेदनपत्रोंकी मांग आना प्रा
गअी है। अेक भाअीने लिखा है—

श्री. परीक्षामंत्रीजी,

कृपाकरके निचे लिखीये होये पत्ते पर प्रारंभिक परीक्षाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदन पत्र और अुत्तम कपासका पेड़ अेक शेर भेज दें। व्ही. स्विकार होगा।"

परीक्षामंत्रीको चाहिये कि अपने कार्यालयमें गुड़, तेल, खली, भी रखा करें।

× × ×

विभिन्न परीक्षाओंमें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना पत्र आने का भी समय है।

नागपुर के एक साहब का पत्र आया था –

श्री परीक्षा मंत्री जी,

परिचय में सीधे बैठने का शुल्क कितना है?

कार्यालय की ओर से अुन्हें अुत्तर दिया गया

कि— "परिचय में सीधे बैठने वाले से ५) शुल्क लिया जाता है।"

र्यालयमें अिस पत्र के अुत्तर में प्रोफेसर साहब का फिर पत्र आया है जो अिस प्रकार है---

श्री परीक्षा मंत्री जी,

आप का पत्र मिला। जल्दी अुत्तर दिया अिसके लिये धन्यवाद। परिचय में सीधे बैठने के लिये ५) शुल्क लिया जाता है। जानकर प्रसन्नता हुअी। अब कृपया यह सूचित कीजिये की परिचय में टेढ़े बैठने का शुल्क कितना है?"

देखना है परीक्षा मंत्री अिस पत्र का क्या अुत्तर देते हैं।

× × ×

एक विद्यार्थी परिचय में सीधे बैठना चाहता है। अुसने अपने पत्र में न्दीकी योग्यताका ब्योरा अिस प्रकार दिया है।

"मय हिन्दि बोल खुब शकता हूँ लिख नहिं शकता। मगर अिस से क्या, मैंय मुझको संगित भि जानता हुँ। सितार तबला की मेरे को जानकारी हय। परिचय मेंय बैठनै की मंजूरात भी दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन कहेगा कि अिस पत्रका लेखक हिन्दी नहीं लिख सकता फिर सितार-तबला का ज्ञान।

परीक्षा मंत्री को अिनके प्रार्थना पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिये।

× × ×

एक दूसरे सज्जनने कोविदमें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना पत्र भेजा था। कार्यालय अुन्हें कोविदमें बैठने की स्वीकृति न दे सका। अब अुन सज्जन का फिर पत्र आया है—

श्री परीक्षा मंत्री जी,

मेरे को तूम अीजाजत क्यूँ नहीं देते। मेरे को हिन्दी आवड़ती है। मेरा औरत भि हिन्दी जानता है। अगर तूम मेरे को कोविदमें बैठने की अीजाजत नहीं देते। मगर तूम्हारी परीक्षा पास करने में क्या मुश्किल होता है।

पता नहीं परीक्षा मंत्री को अिन्हें कोविद में बैठने की अिजाजत देने में क्या आपत्ति है।

× × ×

एक भाअीने परिचय में बैठने का प्रार्थनापत्र भर कर भेजा है।

मैं सीधे

'हिन्दी की योग्यता' -- के खाने में आपने लिखा है—

"मेरी ससुराल अुत्तर भारत में है" मेरी पत्नी की मातृभाषा हिन्दी है।

योग्यता के इस आधार पर अगर नहीं तो अिनके ससुरालवालों को सीधे बैठने की स्वीकृति अवश्य देनी चाहिये।

× × ×

पुस्तक बिक्री विभाग के लिये जो आर्डर आते है अुनका पालन करना पुस्तक विक्री विभाग के व्यवस्थापक के लिये टेढ़ी खीर है।

एक ग्राहकने लिखा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पाँच एकांकी" पुस्तक की दो प्रतियाँ चाहिये। आपकी २) कीमत मनी आर्डर से भेजी है। कृपया पुस्तकें व्ही. पी. से ही भेजें। वि. पी. जरूर छुड़ाली जावेगी।"

× × ×

एक दूसरे ग्राहक ने प्रारंभिक बोधिनी की ५ प्रतियां गुड्स ट्रेन से मंगाई हैं।

पता नहीं इस भाई ने प्रारंभिक बोधिनी को छोटी सी पुस्तक के बदले क्या समझा है।

× × ×

एक विद्यार्थी का पत्र है---

"प्रिय पुस्तक बिक्री विभाग साहब,

मेरे पते पर नीचे लिखी पुस्तकें मनीआर्डर से भेजे

× × ×

एक परीक्षार्थी ने लिखा है—मै आगामी परिचय की परीक्षा में बैठ रहा हूँ पिछली परीक्षा के प्रश्न पत्रों के लिये साथ में टिकट भेज रहा हूँ। कृपया प्रश्न पत्र भेज दें। आगामी परीक्षा के प्रश्न पत्र भेज दें तो मान्य होंगे।"

प्रश्न यह है कि अगर प्रमाण पत्र ही भेज दिया जाय तो उसे मान्य करें या नहीं?

× × ×

एक व्यक्तिने लिखा है—

"निवेदन है कि सबकीबोली और राष्ट्रभाषा की नीचे लिखी पुस्तकें व्ही. पी. से भेज दें—

(१) सबकी बोली १९३९
(२) ,, ,, १९४०
(३) राष्ट्रभाषा १९४३
(४) मिलने का पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथे नम्बर की "मिलने का पता" कौनसी फाअील है--यह कौन बतावेगा ?

× × ×

राष्ट्रभाषा के परीक्षार्थी 'आलूचना' को नित नूतन बनोये रखने का प्रयत्न करते हैं--यह प्रसन्नता का विषय है।

नीचे लिखे कुछ शद्ध और मुहावरे अर्थ लिखने और वाक्यों में प्रयोग करने के लिये दिये गये थे।

बहलाना, ठड्डामारकर, सिरपर बिजली गिरना, नाकमें दम करना हथियार डालना। परीक्षार्थियोंने अुत्तर अिस प्रकार दिये हैं--

बहलाना--मण्झे पानीकी तरह बहना.

आँखोंसे पानी बहता है।
दिल रो रो कर कुछ कहता ॥

सिनेमाके गीतने विद्यार्थीकी समय पर सहायता की।

× × ×

ठड्डामारकर-यह मराठी आडनाम है। जब मैं रोटकरके घर पहुँचा तो वहाँ ठड्डामारकरजी मिले।

× × ×

हथियार डालना--यारके गलेमें हाथ डालना।

चाँदनी रातमें मैं यारके गलेमें हाथ डालकर घूमता हूँ।

सिर पर बिजली गिरना---

मैं जेवन कर रहा था कि माढ़ी परसे मेरे सिर पर अेक बिल्ली गिरी।

बिजलीकी जगह बिल्ली गिरी यह तो ठीक, मगर गिरी बड़े बेमौके पर।

नाकमें दम करना---

अेक भीकारी सड़क पर पड़ा सो रहा था। अेक कुत्ता आया। अुसने भीकारीकी नाकमें अपनी दुम कर दी, वह घबरा कर अुठ खड़ा हुआ।

परीक्षार्थीके अर्थकी तरह कुत्ताभी अजीब था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अधिवेशन

पिछला अधिवेशन कराचीमें हुआ था कराचीके बाद बम्बअीमें क्रम ठीक ही है।

अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्यसम्मेलनका पैंतीसवाँ वार्षिक अधिवेशन अिस बार दिसम्बरके महीनेमें बम्बअीमें होने जा रहा है। आशा है आगामी स्थायी-समितिके अधिवेशनमें सम्मेलन की तिथियोंका निर्णय हो जायगा।

१५ अगस्तकी स्वातन्त्र्य-घोषणाके बाद देशमें सभी कुछ असाधारण हो रहा है। यह अुत्सवभी कअी दृष्टियोंसे असाधारण होगा। लोग कहते हैं साम्प्रदायिक और राजनीतिक अुथलपुथलके दिनोंमें साहित्यचर्चा कैसी। हां जो साहित्य जीवन-साहित्य नहीं है, अुसकी चर्चा सचमुच बेकार है; किन्तु जिस साहित्यसे देशके राजनीतिक नेता भी प्रेरणा और मार्ग-दर्शन पाते हों, वैसे साहित्यकी सुधबुध न लेना तो अेक राष्ट्रीय अपराध है।

सन् ४७ के अंतिम महीनेका यह बम्बअी अधिवेशन अैसा ही साहित्य-मेला होने जा रहा है।

देशके साहित्य-सेवियोंने अिस वर्ष बहुमतसे महापंडित राहुल सांकृत्यायनको अपना अध्यक्ष चुना है। अुनसे हम सम्मेलनके व्यापक और सुदृढ़ नेतृत्वकी आशा करते ही हैं।

सम्मेलनके अवसर पर होनेवाली अन्य परिषदोंके सभापतियोंके नामोंकी भी घोषणा हो गअी है। वे अिस प्रकार हैं—

साहित्य परिषद—श्री. चन्द्रबली पाण्डे

दर्शन परिषद—श्री. क्षितिमोहन सेन

समाज शास्त्र परिषद—श्री. कमलापति त्रिपाठी

विज्ञान परिषद—डा. ब्रजमोहन

राष्ट्रभाषा परिषद—डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बईके अुत्सवके शानदार होनेमें सन्देह नहीं।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

आगामी २३ नवम्बरको राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी वार्षिक बैठक हरिजन-बस्ती, किंग्सवे दिल्ली में होने जा रही है। सदस्योंको विधिवत् सूचना मिल ही गअी होगी। अुनके ठहरनेकी व्यवस्था हरिजन-बस्तीमें हो सकेगी। मन्त्रीको सदस्योंके दिल्ली पहुँचनेकी पूर्व-सूचना मिलनेसे सुविधा होगी। समितिकी यह बैठक विधान-परिषदके साथ अेक अैसे महत्वपूर्ण समयमें हो रही है, जबकि हमारी विधान परिषद् देशकी राष्ट्रभाषाके प्रश्न पर भी विचार करने जा रही है। आशा है सभी सदस्य अुपस्थित होनेकी कृपा करेंगे।

अधिकृत अुपाधिधारी

अभी तक हिन्दी साहित्य सम्मेलनके साहित्य-रत्न ही सम्मेलनके अधिकृत-अुपाधिधारी हो सकते थे। हर्षका विषय है कि अपनी नअी नियमावलीमें हिन्दी साहित्य सम्मेलनने अपनी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा अुत्तीर्ण स्नातकों को भी अधिकृत अुपाधिधारी बन सकनेकी सुविधा प्रदान की है। आशा है हमारे राष्ट्रभाषा-रत्न अुत्तीर्ण स्नातक अिससे पूरा लाभ अुठायेंगे। सम्मेलन-नियमावलीके अधिकारी अुपाधिधारी सम्बन्धी नियम अिस प्रकार है--

(१) सम्मेलनकी विशारद तथा रत्न और राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी राष्ट्रभाषारत्न परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण अुपाधिधारियोंका अेक रजिस्टर रखा जायगा। जो अुपाधिधारी १०) अेक बार देंगे, अुनका नाम अिस रजिस्टरमें चढ़ाया जायगा, और अिस रजिस्टरमें चढ़े हुअे अुपाधिधारी अधिकृत अुपाधिधारी कहलायेंगे।

अिन अधिकृत अुपाधिधारियोंको स्थायी-समितिकी सदस्यताका अधिकार होगा। नियम अिस प्रकार है--

(२) रा. भा. प्र. समिति की राष्ट्रभाषारत्न परीक्षाओंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तीर्ण अधिकृत अुपाधिधारी जो अुनकी संख्याके दशमांश होंगे, किन्तु सुससे अधिक न होंगे। ये अधिकृत अुपाधिधारी सम्मेलनके वार्षिक अधिवेशनके अवसर पर सभापतिके चुनावमेंभी भाग ले सकेंगे।

जो राष्ट्रभाषा-रत्न स्नातक अधिकृत अुपाधिधारियोंके रजिस्टरमें अपना नाम लिखानेके अिच्छुक हों, वे मन्त्री राष्ट्रभाषा प्रचार समितिसे तद्सम्बन्धी आवेदन-पत्र मंगा लेंगे।

—आनन्द कौसल्यायन

विदेशके हिन्दी पत्र

श्री करुणा कुशलाशयसे राष्ट्रभाषाके पाठक सुपरिचित होंगे। वे कअी वर्षतक सारनाथ, शांतिनिकेतनमें रहे हैं और हजारीबागके जेलखानेमें भी। अुनका यह पत्र अपनी कथा आप कह रहा है --सम्पादक

पूज्यवर गुरुजी, बंकांक (श्याम)

प्रणाम !

आपका ३०.६.४७ का पत्र कुछ दिन पहिले मिल गया। बड़ी प्रसन्नता हुअी। कअी महिनोंसे मैं आपके पास कोअी चिट्ठी लिख न सका। अिसका कारण यह था कि मुझे अपने देशके अनिवार्य भर्तीके अनुसार तीन महिने तक फौजमें रहना पड़ा। आप जानते होंगे कि सब स्यामी युवकोंको अिक्कीसवें वर्षमें दो साल तक फौजी-शिक्षा लेनी पड़ती है चूँकि मैं परदेशमें था अिसलिये स्याम लौटतेही भर्ती होना पड़ा। सौभाग्यवश अफसरोंकी सहायतासे दो साल तककी जगहमें मुझे सिर्फ तीन महिने तक रहना पड़ा, अन्यथा समयकी बड़ी बरबादी हो जाती। फौजसे निकलतेही भारतीय consulatS में फिर काम किया जहां अब तक काम कर रहा हूं। थाअी-भारत कल्चरल लॉजमें संस्कृत पढ़ानेके साथ २ अन्य कार्य्यभी करता हूं। डा. कालीदासनागके अिन्तजामसे और पं. रघुनाथजी शर्म्माके सुप्रबन्धके फलस्वरूप भारतसे अेक बंगाली प्रोफेसर स्वर्गीय स्वामी सत्यानन्द पुरीजीके कार्य्यको जारी रखनेके लिये बंकॉक् जा रहे हैं। आशा है ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान् जल्दही स्याम पहुँचकर लॉजका समस्त शास्त्रीय भार अपने कंधे पर अुठा लेंगे। अिनका नाम शायद प्रोफ़ेसर दासगुप्ता है। डाक्टरनाग लिखते हैं कि ये अच्छे विद्वान्, कर्मठ और विश्वस्नीय हैं। लॉजके प्रति आपने जो अितनी दिलचस्पी और सहानुभूति दिखायी है पं. शर्म्माजी आपको हृदयसे धन्यवाद देते हैं। अुनका कहना है कि अिसके लिये लॉज बराबर आपका आभारी रहेगा। अुनके लिये कोअी योग्य-सेवा हो तो लिखियेगा।

अपने एम. एस. एस. के लिये तो मैं प्रायेण निराश हो गया हूं। अगर मिल जाअे तो मेरे कुशल कर्महीका फल है। मैं जानता हूं आप कितने व्यस्त हैं। आपके अूपर और भार लादना सचमुच मेरे लिये बड़ी लज्जाकी बात है।

स्याममें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति खोलनेका विचार मुझमें पहिलेहींसे था। अिसके सम्बन्धमें मैं पं. शर्म्माजीसे पूरा परामर्श कर आपसे फिर पत्र-व्यवहार करूँगा। अिस वक्त स्यामी लोगोंकी भारतमें दिलचस्पी दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। मुझे आशा है वह समय दूर नहीं है जब हम लोगोंका विचार कार्यरूप धारण कर सकेगा। आप पूरा विश्वास रख सकते हैं कि भारतके अिस करीब ऋणीसे जितनीभी सेवा चाहे किसी प्रकारकी हो—हो सकेगी अुतनी होकरही रहेगी। हां, अुसका साधन तथा बल अधिक नहीं है।

'राष्ट्रभाषा" मिल गयी; बहुत कृतज्ञ हूँ।

लेख लिखना मैं कभी भूल नहीं गया। कामकी अधिकता तथा समयकी कमीसे अब तक आपकी आज्ञाका पालन नहीं हो सका। क्षमा करेंगे। प्रयत्न पूरा करूँगा।

सुमनजी तथा सारनाथके अन्य भाअियोंको मेरा सप्रेम स्मरण।

आपको सादर प्रणाम!

आपका सदा कृतज्ञ शिष्य,

करुणा कुशलाशय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

गुजरात

अहमदाबाद—अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओरसे गत दो अक्टूबर को गांधी जयन्ती बड़े धूमधामसे मनाअी गअी। गांधीजी की जीवनी पर श्री रामचंद्र पंड्या अेम० अे, श्री वैष्णवजी बी. ए, श्री. पुरोहितजी तथा श्री जेठालाल जोशीके प्रभावशाली भाषण हुअे।

श्रीदरियापुर राष्ट्रभाषा वर्गकी ओरसे पंडित रेवाशंकर शुक्लकी अध्यक्षतामें अेक वाद विवादका आयोजन हुआ। सर्व प्रथम दो दो वक्ताओंको पारितोषिक दिअे गअे।

भड़ोंच—गत दो अक्टूबरको पूज्य महात्मा गांधीकी जयन्तिके अुपलक्षमें राष्ट्रभाषा वाद विवाद सभा तथा कुमार साहित्य मंडलके संयुक्त तत्वावधानमें यहाँ भी एक वाद विवादका आयोजन हुआ।

बम्बअी—राष्ट्रभाषा वर्ग आर्यनस्कूलके विद्यार्थियों तथा प्रचारकोंने गत मासमें गांधी जयन्ती मनाअी। स्थानीय प्रचारकों तथा छात्रोंने पूज्य महात्माजीके व्यक्तित्व तथा अुनकी विचारधारा पर सुंदर ढंगसे प्रकाश डाला। एक प्रस्ताव द्वारा अीश्वरसे महात्माजीके दीर्घायु होनेकी प्रार्थना की गअी।

यंगमेन हिन्दू असोसिएशनके राष्ट्रभाषा वर्गमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान करनेके सिलसिलेमें सेठ रामेश्वरलाल नोपानीकी अध्यक्षतामें एक समारोह मनाया गया। अिस अवसर पर पंडित सीताराम चतुर्वेदीने राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा राष्ट्र लिपि देवनागरीके समर्थनमें एक ओजस्वी भाषण दिया।

बम्बअी, प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने अपनी गत ११ अक्टूबरकी बैठकमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके सम्बन्धमें एक प्रस्ताव स्वीकृत कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधानपरिषदसे इस बातका निवेदन किया कि वह हिन्दीको ही राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन करे।

दादर— राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दादरकी एक बैठकमें कार्यकारिणीके सदस्योंका चुनाव हुआ। चुनावका नतीजा इसप्रकार है। अध्यक्ष--श्री. वी. टी. परमार बी. एस्. सी., उपाध्यक्ष--कु० वासंती पाटकर, श्री. वि. रा. कारखानीस, मंत्री--श्री. कान्तीश पंड्या बी.ए., प्रचार मंत्री--श्री. हर्षद भट्ट, प्रबंध--मंत्री--श्री. कु० सुनंदा कलबाग, खजांची--श्री. चन्द्रकान्त वेन्द्रे, सामान्य सदस्य--सर्व श्री. रतिलाल भोजक, मधुसूदन शेजवलकर, मधुकर गरुड़, दत्तात्रेय नाओक, उमाकान्त नारिंगे, परशुराम पुराणिक, कु० ललिता नेरूरकर, कु० सुशीला कर्णिक।

महाराष्ट्र

निवाणें— (नासिक जिला) जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी तरफसे श्री. भा. आ. चांदोरकरजीने गांव-गांवका दौरा प्रारम्भ कर दिया है। निवाणेकी सभामें लगभग चार पांचसौ व्यक्ति उपस्थित थे। श्री. चांदोरकरजीने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। निवाणेंमें काफी विद्यार्थी परीक्षाओंमें बैठने वाले हैं।

बेज, पाले— श्री. वी. ता. शिंपीके प्रयत्नोंके फलस्वरूप यहाँ कअी नअे केन्द्र खोले गये। लगभग चालीस विद्यार्थी अिन छोटे २ गांवोंकी परीक्षाओंमें बैठने वाले हैं।

सराणा:—यहाँके उत्साही प्रचारक श्री. मु. ना. जयकृष्णीयांजीने अपना प्रचारकार्य प्रारम्भ कर दिया है आपके प्रयत्नोंसे लोगोंकी अनेक गलत फहमियां दूर हो रही हैं। आपकी कार्यक्षमता और लगन सराहनीय है।

नसीराबाद—गत पच्चीस अक्टूबरको स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा महाराष्ट्रके महान चिन्तक एवँ तेजस्वी राजनीतिज्ञ श्री.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरसिंह चिन्तामणि केलकरके निधनपर एक शोक सभा की गअी। सभामें एक प्रस्ताव द्वारा श्री केलकरके देहावसानपर खेद प्रकट किया गया तथा अुनके कुटुम्बियोंके साथ संवेदना प्रकट की गअी।

धुलिया—धुलिया जिलेके प्रमुख कार्यकर्ताओंकी एक बैठकमें जिला समिति की स्थापना की गअी। समितिका नाम जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिति होगा और समिति राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके अुद्देश्योंके अनुसार कार्य करेगी। छोटे छोटे लेखकोंको प्रोत्साहन देना व अुनकी रचनाओंके प्रकाशनकी अुचित व्यवस्था करना समितिका मुख्य कार्य होगा। समिति अुपयुक्त स्थानोंमें राष्ट्रभाषा विद्यालयों तथा पुस्तकालयोंकी स्थापना भी करेगी। जिलेकी कार्य समिति चुन ली गअी है।

सिन्नर—यह अेक छोटासा गांव है किन्तु राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य यहाँ जोरोंसे चला हुआ है। कम आबादी होते हुअे भी परीक्षाओंमें लगभग १६० विद्यार्थी बैठे हैं। सर्व श्री. कर्डिलजी, मु. अ. केत्य, दि. रा. जोशी आदि सज्जन अुत्साहपूर्वक प्रचार कार्यमें योग दे रहे हैं। अिस सम्बंधमें कु. बालिनी. वा. ब्रम्ह कोविदका परिश्रम सराहनीय है। प्रचार कार्यसे अवकाश मिलने पर आप स्थानीय महिलाओंको स्वच्छताका पाठ पढ़ाती है। जिला संचालक श्री. रेवाशंकर दुबे नेभी अिस गांवमें आकर कुछ समय तक हिन्दी प्रचार का कार्य किया।

आसाम

पलासबाड़ी—हिन्दी प्रेमी सज्जनोंके प्रयत्नोंसे स्थानीय हाअीस्कूलमें अेक साहित्य-गोष्ठी हुअी। सभापतिका आसन श्री. पंडित कमलाकान्त गोस्वामी अेम. अे. बी. अेल. बी. टी. ने ग्रहण किया। सभामें पंडित धनीराम 'धीरेन्द्र' जी साहित्यालंकारने राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरीके संबंधमें अेक जोरदार भाषण दिया। सर्वसम्मतिसे अिसके बादमें अेक प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ। प्रस्ताव पर श्री. प्रफुल्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रदासजी बी. ए. तथा श्री धर्मेश्वरदासजीने व्याख्यान दिये। [illegible] पतिजीनेभी प्रस्तावके समर्थनमें भाषण देते हुअे फारसी लिपिकी दुरूहता प्रकाश डाला और हिन्दीकी अुपयोगितासे श्रोताओंको परिचित कराया।

राष्ट्रभाषा प्रचारके लिअे सभामें १५ व्यक्तियोंकी अेक कार्यकारि भी गठित हुअी। श्री अवलाकांत गोस्वामी अेम. अे. बी. अेल. बी. सभापति, श्री प्रफुल्लचंद्रदासजी बीअे और पं. धनीराम, धीरेन्द्र साहि लंकार संचालक चुने गअे।

अुत्तर गोहाटी—डाक्टर अुमेशचन्द्र बरदलेजी की अध्यक्ष अुत्तर गोहाटी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की एक बैठक गत २८ सित को हुअी। बैठक में व्याख्यान देते हुअे श्रीतरुणचन्द्रजी ने हिन्दी महत्ता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। बैठक में कार्यकर्ताओं का चुनाव हुआ।

कार्सियांग—यहाँ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हो है। निम्नलिखित व्यक्ति पदाधिकारी चुने गअे हैं। श्री मणिलाल गुट विशारद—सभापति, श्री जे. चतुर्वेदी 'जन' रघुनाथजी विशारद अतुलबिहारी राय बी. अे. राधावल्लभ गुप्त बी अे., वी. डी. शर्मा, शिवकु तिवारी तथा आदित्यप्रसाद गुप्त, सदस्य। समिति वर्धा कार्यालय के अंत कार्य करेगी।

—xxx—

परीक्षा विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाअें—

ता० ७, ८ फरवरी ४७ को होंगी। आवेदन पत्रोंको कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिस प्रकार हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सशुल्क परीक्षा आवेदन पत्र —१५ दिसम्बर ४७
विलम्ब शुल्क सहित „ —२२ „ ४७

केन्द्र व्यवस्थापकोंसे विशेष निवेदन

१. कृपया अपने केन्द्रके सभी आवेदन पत्र अेक साथही रजिस्ट्रीसे भेजें।

२. आवेदन--पत्र अधूरे न हों।

३. आवेदन--पत्रकी खाना पूरी सही हो और प्रमाण-पत्रकी चिट अवश्य चिपकायी जावे।

४. आवेदन पत्रके साथही शुल्क भेजें।

५. आवेदन पत्रोंको निश्चित तारीख तक वर्धा कार्यालय पहुँचावें।

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थनापत्र—

परिचय और कोविदमें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना पत्र भेजनेकी अवधि समाप्त हो चुकी है। अब आने वाले प्रार्थना-पत्रों पर विचार न किया जा सकेगा।

प्रवेश परीक्षामें सीधे बैठनेके लिये अब सीधे बैठनेका प्रार्थना-पत्र भेजकर स्वीकृति प्राप्त करनेकी आवश्यकता नहीं है।

जो परीक्षार्थी चाहे, प्रमाणित प्रचारक और केन्द्र व्यवस्थापककी शिफारिशसे प्रवेशमें सीधे बैठनेकी अनुमति प्राप्त कर सकेंगे।

अैसे परीक्षार्थियोंके लिये अेक विशेष (रंगीन) आवेदन पत्र तैयार किया गया है, अुसे ही भरकर परीक्षा आवेदन पत्रोंके साथ १५ दिसम्बर तक ३) शुल्कके साथ वर्धा कार्यालय पहुँचाना होगा।

प्राप्तांक मँगानेका नियम--

अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने अलग प्रश्नपत्रोंके प्राप्तांक मँगाना चाहेंगे अुन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। परीक्षार्थीको परीक्षाका नाम केन्द्र, तथा क्रमसंख्या लिख भेजना चाहिये। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे शुल्क नहीं लिया जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुल्क माफी--

का नियम पूर्ण रूपसे हटा दिया गया है अिसलिये शुल्क माफीके लिये प्रार्थना पत्र न भेजे जाय।

केन्द्र परिवर्तनका नियम--

पूर्ण रूपसे हटा दिया गया है। परीक्षार्थी सोच समझ कर ही अपना परीक्षा केन्द्र भरें। किसीभी दशामें बादको परिवर्तन न हो सकेगा।

कोविदके परीक्षार्थी ध्यान दें--

प्रश्न-पत्र ३ के अन्तर्गत २० अंक आठ निबन्धोंके लेखन कार्यके लिये रखे गये है। अिस सम्बन्धमें तथा मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक जानकारी राष्ट्रभाषाके अक्टूबर ४७ अंकमें दी गई हैं। परीक्षार्थी वहाँ देख सकते हैं।

फरवरी ४८ का पाठ्य क्रम---

प्रारंभिक परीक्षा— में 'भुडते जुगन्' नामकी एक छोटी सी (कहानी) पुस्तक जोड़ी गई है। पुस्तक वर्धा कार्यालयसे प्राप्त की जा सकती है।

प्रवेश परीक्षा—का पाठ्यक्रम पूर्ववत गत सितम्बरकी भाँति ही रहेगा।

परिचय परीक्षा—के प्रश्न-पत्र १ के अन्तर्गत पंचवटी अथवा मिलन।

(किसी अेकका अध्ययन किया जाय)

कोविद—

प्रश्न-पत्र १—पद्य

(१) जयद्रथ वध	०-१२-०
(२) गुलदस्ता भाग ३	०-१२ ०

प्रश्न-पत्र २--गद्य, नाटक और कहानी

(१) कहानी संग्रह भाग ३	०-१२-०
(२) शाहजहाँ	१-- ८--०
(३) पाँच अेकांकी	१-- ०--०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) हिन्दी गद्य माला १--९--०

प्रश्न-पत्र ३-(शीघ्र वाचन, मुहावरे, व्याकरण, निबन्ध, अनुवाद पूर्णांक ८०) तथा (लेखन-कार्य पूर्णांक २०)

(१) गोदान ४--०--०

(२) आत्मकथा १--०--०

(३) मुहावरे और कहावतें ०--१२--०

(४) संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण १--४--०

प्रश्न-पत्र ४— (हिन्दी भाषा तथा साहित्यका अतिहास, समालोचना और सामान्यज्ञान) पूर्णांक १००

(१) हिन्दी भाषा और लिपि (श्री धीरेंद्र वर्मा) ०--८--०

(२) हिन्दी साहित्यका संक्षिप्त अतिहास ०--१३--०

समालोचना ज्ञानके लिये साहित्य-शिक्षाके नीचे लिखे पाठोंसे सहायता ली जा सकती है।

१. साहित्य क्या है? २. साहित्यका अुद्देश्य,

३. साहित्य और समाज ४. कला और अुसका प्रयोजन,

५. कहानी, ६. अुपन्यास, ७. अुपन्यासका विषय,

८. अैतिहासिक अुपन्यास, ९. नाटक, १०. कविता और कवि

सामान्य ज्ञानके लिये नीचे दिये साहित्यसे सहायता ली जा सकती है—

१--हिन्दुस्तानकी समस्यायें (जवाहरलाल नेहरू) ३-०-०

२--आजकी समस्यायें (राहुल सांकृत्यायन) ०-१२-०

३—हिन्दीके साप्ताहिक समाचारपत्र, मासिक पत्र--पत्रिकायें

समितिका मुख पत्र 'राष्ट्रभाषा'।

नये केंद्र—

नये केंद्र खोलनेके लिये प्रार्थना पत्र १ दिसंबर तक वर्धा कार्यालयमें आजाने चाहिये।

प्रमाण-पत्र

गत परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके प्रमाणपत्र तैयार किये जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथाशीघ्र केंद्रोंको भेज दिये जावेंगे।

परीक्षाओंका शुल्क— अिस प्रकार है—

प्रारंभिक १) प्रवेश २) परिचय ३) कोविद ४)

अतिरिक्त विषय -परिचय उर्दू १) कोविद उर्दू १) कोविद प्राचीन पद्ध

कोविद अुपाधिधारियोंको 'बोध-चिन्ह' —

परीक्षा समितिकी गत बैठकमें निश्चय किया गया है कि कोविद अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको कुछ वर्ष पहले दी जाने वाली पोशाकके स्थान पर अब समितिका बोधचिन्ह दिया जाया करे।

यह बोधचिन्ह रेशमी कपड़े पर होगा। बोध-चिन्ह बीचमें रहेगा कपड़ेका आकार लगभग ४"×५" अिंच रखनेका विचार है। नीचे दिये हुये बोध चिन्हके आकारको कायम रखते हुये, कपड़े का रंग, आकार, बोध चिन्हका रंग तथा अन्य आवश्यक सुझाव चाहिये।

आशा है राष्ट्रभाषा प्रेमी, प्रचारक, विद्यार्थी तथा केन्द्र व्यवस्थापक अिस कार्यमें हमें अपना सहयोग देंगे। यदि ड्राअिंग निकाल कर भेज सकें तो विशेष कृपा होगी।

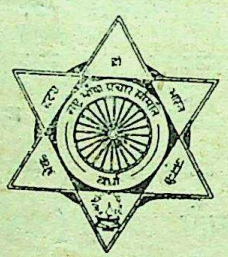

'राष्ट्रभाषा—रत्न' परीक्षा-फल

गत सितम्बर ४७ में रत्न परीक्षा में ३९ परीक्षार्थी सम्मिलित हुये थे। परीक्षा-फल नीचे दिया जा रहा है। अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको हार्दिक बधाई।

राष्ट्रभाषा—रत्न परीक्षा—द्वितीय श्रेणी

१ कुमारी रुकमणी कर्नमल	कराची केंद्र
२ श्री पुरुषोत्तम नानालाल भट	अहमदाबाद "
३ ,, रामचंद्र बाजीराव वाणी	जलगांव "
४ वामन गणेश फाटक	पुणे "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ सौ. शालिनी मोधिद जोगळेकर — बम्बई ,,
६ श्री जनार्दन कृष्णाजी करमळकर — ,, ,,

श्री चन्दुलाल प्रेमचंदभाओी परीख (अहमदाबाद केन्द्र) अिन्हें मौखिक सुविधा प्राप्त हुओी है।

अेक खंडमें अुत्तीर्ण

१ कु. मोहिनी तीर्थदास — कराची केन्द्र
२ ,, दयाकुमारी परसराम — ,, ,,
३ श्री बहेचरभाओी मणीलाल पटेल — अहमदाबाद ,,
४ ,, केशव सीताराम परुळकर — बम्बओी ,,

अवसर न चूकिये
फिर अितनी सस्ती पुस्तकें न मिलेंगी

प्रचारके ख्यालसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिस बार हिन्दीके सभी लेखकों और कवियोंकी पुस्तकें अधिकसे अधिक कमीशनपर दे रही है। फौरन आर्डर दीजिये। अेक साथ ५०० की पुस्तकें मंगानेवालेको ३० ह. प्रतिशत कमीशन दिया जा सकता है।

मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता:
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

समिति की दो नई प्रकाशित पुस्तकें

अुड़ते जुगनू

प्रारम्भिक परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक, सुन्दर रोचक कहानियोंका संग्रह--यह पुस्तक हिन्दीके प्राथमिक विद्यार्थियोंके लिए विशेष रूपसे प्रकाशित की गअी है, सुन्दर साफसुथरी छपाअी । मूल्य केवल ॥) डाक खर्च अलग ।

पाँच अेकांकी

कोविद परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक, सरदार इन्द्रसिंहचक्रवर्ती, ना. सी. फड़के, रामकुमार वर्मा, अिन्दुशेखर और विष्णु के पांच सुन्दर अेकांकी नाटकोंका प्रतिनिधि संग्रह--भूमेका लेखक--प्र. रा. भूपटकर आकर्षक गेट अप--सुन्दर छपाई, मूल्य केवल १), डाक खर्च अलग,

सबकी बोली और राष्ट्रभाषा की पुरानी फाअिलें

सबकी बोली और राष्ट्रभाषाकी पुरानी फाअिलें हमारे यहाँ बिक्रीके लिए तैयार हैं । ये फाअिलें परीक्षार्थियोंके लिए बहुतही अुपयोगी सिद्ध हो सकती हैं । विद्यार्थियोंके कामकी बहुतसी सामग्री अिन फाअिलोंमें एकत्रित हैं जिनका अुपयुक्त अुपयोग नए छात्रोंके हिन्दी सम्बन्धी ज्ञानकी वृद्धिमें सहायक होगा । थोड़ीही फाअिलें अिस समय स्टाकमें हैं । शीघ्रता कीजिए अन्यथा पछताना होगा । मूल्य २), डाक खर्च अलग ।

मुद्रक— सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ६

अक्तूबर १९४७

अंक १२

राष्ट्रभाषा

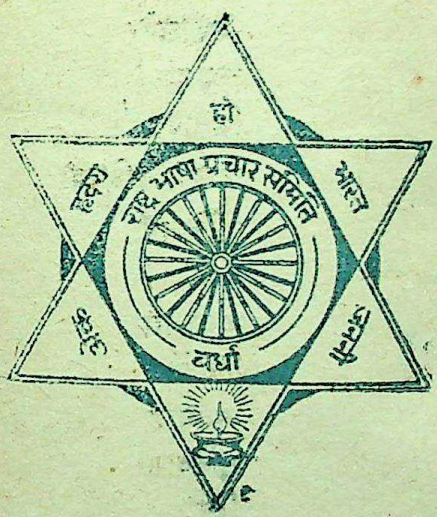

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	केन्द्र
अुत्कल	गुरांडी
अन्य	देवली
गुजरात	बहुचराजी
,,	बडोद
,,	बडिया
,,	मालवण
,,	सूटिया
,,	माढी
,,	गोध्री
,,	टुण्डाव
,,	बाकरोल
,,	कठोर
,,	अुमल्ला
महाराष्ट्र	नामपुर
,,	अकोलनेर
,,	भुसावल
,,	चितापुर
,,	लक्ष्मी दहिवडी
,,	पोतेरेवाडी
महाराष्ट्र	साक्री
,,	माधवनगर
,,	निवार्णे
कर्नाटक	अनगोल
,,	गुडिवाडा
विदर्भ नागपुर	भिसी
,,	नांदा गोमुख
,,	काटोल
,,	माधान
,,	अुमरेड
,,	कोठरी
बि०	अुमरखेड
गिवा	म्हादोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ६] वर्धा, अक्टूबर—१९४७ [अंक १२

–:आज गांधी रो रहा है:–

(श्री. कुमार हृदय)

देख आदम ज़ात ! तेरे सामने क्या हो रहा है ?
आज गांधी रो रहा है।

गोदमें मासूम बच्चे दूध पीते कट रहे हैं।
स्नेह, ममता, प्रेमके सारे विधान अुलट रहे हैं।
हर गली, हर ठौर काले द्वेष-मेघ अुमड़ रहे हैं।
वन्य पशुओंकी तरह मानव अकड़कर लड़ रहे हैं।
सैकड़ों, पथके किनारे भूखसे व्याकुल पड़े हैं।
और वैभवमें सने दो-चार महलोंपर खड़े हैं।
जिंदगीमें कौनसा परस्वार्थ मानव कर रहा है ?
आज अपने नाशपर मानव-पिशाच अुभर रहा है।
अुफ़ कि अपनोंसे मनुज-पथ-भ्रान्त हो—अैसी विषमता !
लांछनोंके भारसे आक्रान्त हो—अैसी विषमता !
आज नर-संहारपर मानव प्रमोद मना रहा है।
रक्त-गीले हाथ, मानव सृष्टि नरक बना रहा है।
आदमी कल्याणमय मनुजत्व आज डुबो रहा है।
आज गांधी रो रहा है।

रो रहा है युग-पुरुष, अुसके न पथ पर चल सके हम।
रो रहा है युग पुरुष, हिंसा न आज कुचल सके हम।
स्वप्न गांधीके न हम सच कर सके अिस ज़िंदगीमें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रो रहा है युग-पुरुष, ये आखिरी दिन बेबसीमें।
युग-पुरुषने जब कहा हममें परस्पर प्रीत होले।
प्रेमसे-सद्भावसे मानव-धरमकी जीत होले।
तब बढ़े अभिमानसे हम भाइयोंपर वार करने।
आदमीयत भूल कर दौड़े कि नर-संहार करने।
चल पड़ा युगका मसीहा सुप्त मानवता जगाने।
चल पड़ा बूढ़ा कबीरा स्नेहकी सरिता बहाने।
चल पड़ा निर्भय अकेला गाँव-गाँव नगर-नगरमें।
चल पड़ा गांधी सफरपर खेत-खेत डगर-डगरमें।
अेक धुन जीवन अभय हो, और मानवता अजय हो।
सृष्टिका मानव-बसेरा प्रीतिमय कल्याणमय हो।
आज गांधी प्रार्थनामें अश्रु-हार पिरो रहा है।
आज गांधी रो रहा है।

(प्रहरीसे साभार)

वर्तमान परिस्थिति और भाषा-समस्या

पीढ़ियाँ जिसका स्वप्न देखती चली गयीं, सदियाँ जिसकी प्रतीक्षामें बीत गयीं, सैकड़ों नीति-कुशल भग्न मनोरथ रह गये, लाखों ने जिसके लिये अपने प्राणोंकी आहुतियाँ दीं--- लाखों बालूके पद-चिन्ह और पानी परकी रेखाकी तरह अपना जीवन-सर्वस्व खो सदाके लिये गुमनाम हो विलीन हो गये। परन्तु जातिने हिम्मत नहीं हारी, वीरोंने और-और आगे बढ़कर जिसके लिये अपनेको बलिवेदी पर चढ़ाया, वह स्वतंत्रता हमारे सामने आयी।

परतन्त्रताकी सारी कड़ियाँ अभी टूटीं नहीं। अबभी सदियों तक हमें दास रखनेवाले अपने मनसूबे को बिलकुल छोड़ नहीं सके हैं। लेकिन हम जानते हैं कि अब ये कड़ियाँ कच्चे धागेसे अधिक सबल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हैं। कच्चे धागेसे सबल धागा बनाया जा सकता, अिसमें संदेह नहीं, लेकिन हमारा जागृत जन वैसा करने देनेके लिये तैयार नहीं हो सकता।

अिसमें सन्देह नहीं कि अिस समय हमारा देश रोमांचकारी भीषण घटनाओंमेंसे गुजर रहा है। आज पंजाब मानव-नृशंसतामें दानवोंको भी मात कर रहा है। देश में हर जगह घृणा और द्वेषकी विषैली हवा फैली हुअी है। जरा-सी कोई बात होते ही क्रूर पैशाचिक कांड शुरू हो जाते हैं। स्वतंत्रता और प्रगतिके विरोधी अैसे मौकेसे फायदा अुठाते बाज नहीं आते। जिनका जीवनही जनताका खून चूसने पर निर्भर था, वे अिस विद्वेषाग्निमें घी डालनेका काम कर रहे हैं। कितनेही इस विषैले वातावरणके प्रभावमें आकर सूझ बूझ खो बैठे हैं; कितनेही हताश-से बन गये हैं। लेकिन, क्या हमें हताश होनेकी जरूरत है? यह सन्धिकाल है। सदियोंके बाद हमने अपनी खोअी हुअी स्वतंत्रता पायी है। जिन कारणोंकी वजहसे हमने अपनी स्वतंत्रता खोयी थी, अुनका दूर करना हमें दास बनानेवाले अपना कर्त्तव्य नहीं समझते थे। दासताके दीर्घ जीवनने, अुसके अनुभवने हमें सूझ जरूर दी; लेकिन सन्धिकालके फैलाये अन्धकारमें अुनका अुतना अुपयोग हम कर नहीं पा रहे। स्वतंत्रता हमारे प्रयत्नों और विश्वकी परिस्थितिके कारण हमारे पास जो आयी है, वह सिर्फ क्षण भर दर्शन देनेको नहीं। सन्धि-युगके अिस अन्धकारको हमें छिन्न-भिन्न करना होगा। धर्मान्धता और जातीय विद्वेषका हटना, निराशाका भंग करना हमारा परम कर्त्तव्य है और अुसे हम पूरा करके रहेंगे।

आजकी हमारी स्वतंत्रता युगों पहले बीती चन्द अिनेगिने लोगोंकी स्वतंत्रता नहीं, यह जन-स्वतंत्रता है। यह जनताके बलसे प्राप्त हुअी है और जनताके हितके लिये है। जगह-जगह जनताको अन्धा बनानेकी कोशिश हो रही है। पुराने अवशिष्ट सामन्त, अुसके पिट्ठू धर्माचार्यही, नहीं, आजके बड़े-बड़े दैलीशाहभी जनता को अपनी तरफसे पथभ्रष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेको तुले हुअे हैं। जनतामें अपने हित-अनहित पहचाननेकी बुद्धि और अुसमें ज्ञान-प्रसार करनेकी आज अनिवार्य आवश्यकता है, जिससे किसान अपने हितके कामको छोड़कर गुमराह न हो प्रतिगामी शक्तियोंके अनुगामी न बनें, बुद्धिजीवी नये संसारके निर्माणका संकल्प छोड़ पुरानेकी पुष्टि करनेमें हाथ बटाने लगे। सबसे अधिक आवश्यक है साधारण जनता---मजूर---किसान जनतामें राजनीतिक सूझ पैदा करना। ज्ञानसे वंचित होना अपने हितअनहितको नहीं पहचाना जनताके लिये सबसे खतरेकी बात है। ज्ञान प्रसारके बहुत-से साधन, जिन्हें साअिन्सने हमारे लिये सुलभ कर दिया है, आज बड़ी शीघ्रतासे मुट्ठी भर बड़े-बड़े थैलीशाहोंके हाथोंमें चले गये हैं दिल्ली, बम्बअी, मद्रास, कलकत्ता, प्रयाग---जहाँ भी नजर दौड़ाअिये, स्वतंत्रत समाचार पत्र खतम-से हो चुके हैं। अिन समाचार पत्रोंका काम ज्ञानका फैलाना नहीं, बल्कि भ्रम और असत्यको शीघ्रता और व्यापक रूपमें फैलाना है।

झूठ और असत्यका प्रचार थैलीशाही अखबारों द्वारा होरहा है, जिनका प्रभाव साधारण जनता पर पड़ता है। जनतांत्रिकताकी रक्षाके लिये जनताका शिक्षित होना पहली आवश्यकता है और सो भी बिना विलम्बके। चींटीकी चालसे चलनेके लिये हमारे पास समय नहीं है। हमें दस या पन्द्रह सालके भीतर अपनी जनताको शिक्षित कर लेना है। स्वतंत्रताने हमें नव निर्माणका अवसर दिया है। नव निर्माणके लिये पुरानी शक्तियोंका ध्वंस आवश्यक है। ये पुरानी शक्तियाँ अपने काममें अभीसे जोर-शोरसे लगी हुअी हैं; वे भ्रम और द्वेष फैलाकर जनताकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेमें तत्पर हैं। हमें जनताको सचेतन और सजग बनानेके लिये होड़ लगाकर दौड़ना होगा। जनताको शत प्रतिशत शिक्षित करना होगा, जिसमें वह अपने हित-अनहितको समझ सके।

सारी जनताको शिक्षित करना हमारे लिये कोअी शौकीनीकी बात नहीं है। यहतो हमारे लिये जीवन और मरणका प्रश्न है। अिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम यदि दस-पन्द्रह वर्षोंमें पूरा करना चाहते हैं, तो मातृभाषाओंको शिक्षा का माध्यम बनाये बिना दूसरा कोई रास्ता नहीं। अपरिचित भाषा सिखलाकर ज्ञान देनेकी शर्त हमें हरगिज नहीं पेश करनी चाहिये। जनताकी बोलियोंको अुच्चारणानुसार लिपि दीजिये और सीध जनबोलियोंमें वैज्ञानिक और दूसरे साहित्यको तैयार कीजिये। इसके लिये सर्वथा अुपर्युक्त लिपि नागरी हमारे पास है।

मातृभाषानुसारी प्रान्तोंसे हिन्दीको कोई हानि नहीं। वह सम्पूर्ण भारत-संघकी अनिवार्य राष्ट्र-भाषा रहेगी। अंग्रेजीको और कितनी ही दशाब्दियों तक भारतीय संघकी भाषा बनाये रखनेका मनसूबा बांधनेवाले वही हो सकते हैं, जो सोचनेकी सारी शक्ति खो चुके हैं। जिस तरह सोवियत संघने समूचे देशमें तीसरे दर्जे (दसवें सालकी आयुसे) संघकी भाषा (रूसीका) पठन-पठन अनिवार्य कर दिया है, वैसे ही हमें अपने यहां हिन्दीको अनिवार्य कर देना है। इसका विरोध करनेवाले संघद्रोही होनेके लांछन से बच नहीं सकते।

सारे भारत-संघकी भाषा हिन्दी नहीं, हिन्दुस्तानी होनी चाहिये जो कि हिन्दी और अरबी दोनों लिपियोंमें लिखी जाय, यह भी कुछ लोग कह रहे हैं और साम्प्रदायिकता नहीं, राष्ट्रीयताके नाम पर! हमें सोचना है कि कहां तक यह व्यवहार्य और राष्ट्रीयता-सम्मत है? पहले हमें साफ समझ लेना चाहिये कि हिन्दुस्तानी कहनेसे एक भाषाका भान जो कराया जाता है, यह बिलकुल गलत है। वस्तुतः वहां अुर्दू-हिन्दी, जिन दो भाषाओंको अेक शब्दकी आड़में लाया जाता है। हिन्दी-अुर्दू चाहे अुनका अुद्गम शताब्दियों पहले अेक रहा हो, और आज भी यदि अरबीके लदे बोझको हटा दिया जाय तो वह एक है, लेकिन इधर तो वे विकसित होकर दो स्वतंत्र भाषाओंमें परिणत हो गयी है। अुर्दू काव्यका पंडित पंतकी कविताको नहीं समझ सकता। वैसे ही हिन्दी साहित्यज्ञ इकबालके काव्योंके रसास्वादनमें असमर्थ है। क्या इन दोनों भाषाओंको भारत-संघकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा स्वीकार कर हम अुसे हिमालयसे कुमारी और कलकत्तासे अमृतसर तक सारे लोगोंके अूपर लादना चहते हैं ? अपनी भाषाओं बंगाली, तेलगू, कन्नाड़ी, मलयालम, तमिल, मराठीके साथ-साथ अुर्दू-हिन्दी दोनों भाषाओं और लिपियां करोड़ो जनताको अनिवार्य-तया पढ़ाना दुःसाध्य और श्रम तथा समयका भारी अपव्यय है। हम संघकी एक लिपि और एक भाषाही अपना सकते है, जो कि अल्पतम समयमें साध्य हो। हिन्दी [नागरी] एकमात्र ऐसी लिपि है, इसमें किसीको विवाद नहीं हो सकता। अरबी लिपि, जिसमें कि अुर्दू लिखी जाता है, अपने बाहरी दोषोंके कारण मुस्लिम मध्य-एशिया और तुर्कीसे हटायी गयी। जिसको शुद्धतापूर्वक लिखनेके लिए अुत्तरी भारतके स्कूलोंकी आठ सालकी शिक्षा भी पर्याप्त नहीं है, अुस लिपिको संघकी अनिवार्य लिपि बताना हठधर्मीके सिवा कुछ नहीं। व्यवहारमें वह चल नहीं सकती। संगीनोंके बल पर अुसे पैंतीस करोड़ जनताको पढ़ाया नहीं जा सकता है।

अब भाषाको लीजिये। सारे भारतके प्रान्तोंकी नब्बे फी सदी जनताके लिये हिन्दीका पढ़ना-लिखना बहुत आसान हैं। हिन्दीमें प्रयुक्त होनेवाले साठ-सत्तर फी सदी संस्कृत शब्द समान है। वे असमिया, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नाड़ी भाषा-भाषियोंके पहले हीसे परिचित हैं। इसके विरुद्ध अुर्दूके साठ-सत्तर फी सदी अरबी-फारसीके शब्द अुनके लिय बिलकुल नये हैं। अुर्दूका अपनाना बहुत महंगा सौदा है। डर है कि कहीं दोनो भाषाओं की अनिवार्य शिक्षाके ख्यालसे हिन्दीको संघकी भाषा मनवाना ही न खटाईमें पड़ जाय। इस झगड़ेसे बचनेके लिये अंग्रेजीको अपनाये रखनेकी बात पन्द्रह अगस्तसे पहले भलेही कही जा सकती थी; लेकिन अब अुसकी बात करना अरण्यरोदनसे बढ़कर नहीं। दोनों लिपियोंके झगड़ेसे बचनेके लिये रोमन लिपिकी भी बात चलानी फजूल है। संसारमें रोमन लिपि भी सार्वभौम नहीं। रूसी लिपिका भी बीस करोड़से अधिक आदमी व्यवहार करते हैं। फिर हमारी नागरी लिपि अुच्चारण-संकेतमें कोई दोष नहीं रखती। रोमनसे भी अधिक साअिन्स-संगत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ मामूली सुधारसे टाईप और प्रेसके लिये भी वह रोमनसे अधिक लघु उपयोगी बन सकती है। कुछ सज्जनोंने अपनी नीम हकीमीका पूर्ण परिचय देते ख घ छ ठ थ ध फ भ को वर्णन लासे निकाल अुनका काम क ग आदि पर चिन्ह लगाकर लेनेका प्रस्ताव किया है। अुन्हें अिसमें क्या फायदा दिखता है, समझमें नहीं आता। चिन्ह लगाकर अक्षर बनाने की आवश्यकता तब होती है जब अुस अुच्चारणके लिये कोअी वर्ण न हो संयुक्त अक्षरोंकी जगह हलंत अक्षर तथा मात्राओं को अ के अूपर लगा, स्वरोंके टाअिपोंको कम करके दूसरे टाअिपों के अूपर लटकनेवाला मात्राओंको संकुचित करके हम हिन्दी लिपि को अधुनिक यन्त्रोंके लिये दुनियाकी सर्व श्रेष्ठ लिपि बना सकते हैं। अब भी यह छापायंत्रोंके लिये अुपयुक्त है, यह तो हिन्दीके मोनो टाअिप और लिनो टाअिप का बहुव्यवहार ही बतला रहा है।

कहा जाता है, अुर्दू भाषा और लिपि को भी यदि सारे भारत की भाषा और लिपि नहीं स्वीकारा गया, यानी पैंतीस करोड़ नर-नारियोंको जबरदस्ती अुर्दू पढ़ाया-लिखाया नहीं गया, तो खण्डित हिन्दुस्तान फिर एक नहीं हो सकेगा। एकता तभी सम्भव है जब भारत पूर्णतया समाजवादी हो जाय। वैसा कहनेवाले अपने हृदयको टटोलकर देखें कि भारत को पूर्ण समाजवादी बनानेके ख्याल के लिये अुनके दिलमें कितना स्थान है। समाजवाद कायम करनेके लिये कटिबद्ध साथियोंसे कहूँगा कि दो-दो भाषाओं और लिपियोंको दो प्रान्तों (युक्त प्रान्त और पूर्वी पंजाब) से बाहर ले जाकर सारे भारतमें फैलाना राष्ट्रीयताके क्षेत्रमें साम्प्रदायिकताकी नींव मजबूत करना है। साम्प्रदायिकताको हमें भुलवाना है। हिन्दू, मुस्लिम, अीसाअी, पारसी धर्म मानना वैयक्तिक बात है। अुसे राष्ट्रीयताके क्षेत्रमें दखल देनेका अधिकार नहीं होना चाहिये। यदि मुस्लिम-साम्प्रदायिकताको संतुष्ट करनेके लिये आप अुर्दूको अपनानेकी जिद कर रहे हैं, तो अीसाअियोंको रोमन लिपिने भला क्या कसूर किया है, जिसमें लाखों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाअिबिल छापी और पढ़ी जा रही हैं? अेक बार अिस सिद्धान्तको मान लेने पर बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्रके भी अुर्दू पक्षपाती वहाँ अुर्दूको प्रान्तीय भाषा माननेके लिये कहेंगे। फिर आप किसे धर्मे कौन-सा तर्क पेश करेंगे?

नागरी लिपिमें लिखी संस्कृतानुसारिणी हिन्दी ही भारत-संघ की एकमात्र भाषा हो सकती है और होकर रहेगी। अंग्रेजी पढ़कर नौकरीके पीछे दौड़नेवालोंको अिसपर नाक-भौं नहीं सिकोड़ना चाहिये, न हो तोबा मचाना चाहिये। भारतकी फिरसे अेकता अिन थोथी हट-धर्मियोंसे नहीं होनेकी। वह शोषणके अन्त और पूर्ण समाजवादकी स्थापनासे ही होगी। हमें अुसके लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये।

तिनका और तूफान

(श्री सुदर्शन)

तिनकेने पेड़से कहा—"मैंने दूरसे तूफान की आवाज सुनी है, और दूरसे अुसे अिस तरफ आते देखा है, और मैं जानता हूँ, मैं अुसके सामने गुम होकर रह जाअूंगा। तू बड़ा है, और मैं तेरे सामने बहुत छोटा हूँ, और बड़ोंका धर्म है कि छोटों की रक्षा करें। क्या तू मुझे आश्रय देगा?"

पेड़ने खुशामदके यह मीठे शब्द सुने, और झूमकर जवाब दिया—"मैंने तुझे आश्रय दिया। मेरे तनके साथ लिपट जा और निश्चित रह। तूफान तुझे जरा नुकसान न पहुँचा सकेगा।"

तिनका पेड़के साथ लिपट गया, और सोचने लगा—"अब मैं अितने बड़े और अितने मजबूत पेड़के साथमें हूँ। अब मुझे तूफानका क्या भय है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तूफानने आकर अुस बड़े पेड़को देखा, और कहा—"या मेरे सामनेसे हट जा, या मेरे साथ चल, या मरने को तैयार होजा। तेरे लिअे और कोअी रास्ता नहीं है।"

पेड़ने तूफान की धमकी को घृणासे सुना, और क्रोधसे कांपकर जवाब दिया—"तू देख, और जान कि मैं अिस जगह बहुत बरसोंसे खड़ा हूँ मेरी जड़े धरतीके दिलमें बहुत गहरी खुदी हुअी है और मेरा फैलाव देखकर दुनिया घमंड की गरदन झुका देती है और तुझमें फिरभी अितनी हिम्मत है, कि मुझे धमकियां दे और मुझे जीतनेके सपने देखे।

"अगर तू चुप—चाप अपने रास्तेपर चला जाता, तो मैं तुझे रोकने की ज़रूरत न समझता, और तुझे अपने अिलाकेसे निकल जानेकी आज्ञा दे देता। मगर अब तूने मेरे अभिमान को ललकारा है। अब मेरा अभिमान तुझे रोकेगा, और तू यहां से वापस जाकर दूसरे तूफानोंसे कहेगा, कि अपने लिये दूसरे रास्ते की खोज करो, यह रास्ता तूफानोंके लिये बंद है।"

सारी रात तूफान और पेड़की लड़ाअी होती रही। सारी रात तिनका डरता काँपता थरथराता रहा कि पेड़ जीत जाये तूफान हार जाये। मगर जब रात बीत गअी, और दिनकी रोशनी जमीन पर फैली, तो तिनकेने देखा कि अुसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुअी। पेड़ अपने गहराव और फैलावके साथ ज़मीन की मिट्टी पर पड़ा था, और तूफान सामने खड़ा गरजता था, और कहता था—"ज़रा अुसका हाल देखो जो अपने आपको बड़ा कहता था। जिसकी जड़ें धरतीके दिलमें गहरी गड़ी थीं। जिसका फैलाव देखकर दुनिया अपने घमंडकी गरदन झुका देती थी।"

अिसके बाद तूफानने तिनके की तरफ़ देखा और कहा—'तू तिनका है। मैं तूफान हूँ। मैं तुझे धमकियां देता अच्छा मालूम नहीं होता। न मैं तुझपर ज़बरदस्ती करना चाहता हूँ, क्योंकि तू मेरे सामने तुच्छ और छोटा है। "मैं तुझसे सिर्फ यह पूछता हूँ, कि तेरा अिरादा क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ! अगर तू अिस लाशके साथ लिपटा रहेगा, तो तेरी जगह आस
की अूंचाअियोंमें होगी ।"

तिनकेने जवाब दिया—"मैं जानता हूँ, तू मुझे मार डालेगा
मगर मुझमें हिम्मत नहीं, कि तेरी ताक़तके सामने खड़ा हो सकूं। मैंने यह देख लिया है, कि जो तेरे सामने खड़ा होता है, वह मिट जाता है ।"

यह कहकर तिनकेने अपने आपको पेड़से अलग किया, और तूफ़ान के पांवमें झुक गया । और दूसरे क्षणमें वह अूंचे आकाशमें अुड़ रहा था । ज़मीन अुसके नीचे थी, और बड़े बड़े भवन अुसके नीचे और अूंचे अूचे मीनार अुसके नीचे थे ।

और तिनकेने देखा कि वह अब भी मरा नहीं, बल्कि जीता जागता है । और अुसने अनुभव किया; कि अब वह तिनका नहीं, तूफ़ान का अेक भाग है, और तूफ़ान अुसके बिना अधूरा है, और तूफ़ान की ताक़त अुसके बिना छोटी है ।

और तूफ़ानने तिनकेके मनकी बात भाँप ली और कहा—"आप आपको धोखा न दे । मैं चाहूँ, तो तुझे ज़मीन पर पटक सकता हूँ, और तुझे खोकर मेरी शक्ति में ज़रा भी कमी न आयेगी ।"

लेकिन अब तिनका अपने आपको समझ चुका था। अुसने मुस्कराकर कहा—"मैं पेड़ नहीं हूं, पेड़की बड़ाअी अुसकी कमजोरी है। तिनका हूँ, मेरी कमजोरी मेरी बड़ाअी है । और मैं अुड़ना जानता हूँ, और अुड़ रहा हूँ, और तेरी सत्ता में यह साहस नहीं, कि जीते जी मुझसे मेरी अुड़ान छीन सके ।

तूफ़ानने तिनके पर अपने क्रोधकी सारी शक्ति खर्च कर दी, मगर वह तिनकेको ज़मीनपर न गिरा सका और तिनका मुस्कराता रहा, और तूफ़ानके तेवरोंके साथ खेलता, और अपने आपको तूफ़ान का मित्र समझता रहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तूफ़ान थक गया, हार गया। और तब उसने समझा, कि उसकी शक्ति तिनकेके सामने बेबस है। और वह सोचता था, जो पेड़को गिरा सकता है, वह तिनकेको क्यों नहीं गिरा सकता ? क्या तिनका पेड़से भी बड़ा है।

अभी समय तूफ़ानने देखा, कि तिनका ज़मीनकी तरफ़ जा रहा है। तूफ़ानने खुशीकी किलकारी मारी, और कहा—तिनके ! मैंने तुझे गिरा दिया।"

मगर दूसरे ही क्षणमें तूफ़ानको ऐसा मालूम हुआ, कि वह आप भी बदल रहा है, और उसकी जवानी समाप्त हो रही है, और उसपर उसका बुढ़ापा आ रहा है।

और जबतक तिनका ज़मीनपर गिरे, तूफ़ान का बुढ़ापा भी समाप्त हो चुका था।

("झरोखे" से) सादर

क्या हिन्दी और उर्दू विरोधी हैं ?

श्री धर्मदेव शास्त्री

हमारे देशमें देश-भाषाके स्वरूप और नामको लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। हमारा दुर्भाग्य यह है कि यहाँ कोई भी प्रश्न साम्प्रदायिक रूप धारण किये बिना नहीं रहता। भाषाका प्रश्न शुद्ध सांस्कृतिक आधार पर ही हल होना चाहिये परन्तु अिसमें भी साम्प्रदायिक रंग चढ़ ही गया है। परिणाम यह है कि आज हिन्दी उर्दूका सवाल हिन्दू-भाषा और मुस्लिमभाषाका रूप धारण कर गया है।

जो भाषा आसानीसे समझमें आ जाती है अुसका ही प्रयोग किया जाय यही हमारा विचार रहा है। किसी भाषाके बिगाड़ने अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनानेका अधिकार किसीको नहीं। हम भाषाके सम्बन्धमें हिन्दी और नागरीके स्वभावतः पक्षपाती हैं परन्तु अिसके साथ ही हमारा हिन्दी प्रेम अुर्दू-विरोधका समानार्थक नहीं। हम तो चाहते हैं, दोनोंको अभय-दान मिले और विकासका सुयोग प्राप्त हो क्योंकि हमारे विशाल देशमें सब भाषाओंकी अुन्नतिका क्षेत्र है।

हमारा यह भी दृढ़ मत है कि हिन्दीकी विरोधी अुर्दू नहीं अपितु हिन्दी-विकासकी महती बाधा तो अंग्रेजी भाषा और अुसकी गद्यशैली ही है, जिनका प्रभाव हिन्दी प्रेमियोंके मस्तिष्क और लेखनी पर पड़ा है।

आज कहनेको तो हिन्दी-साहित्यका प्राचीन हिन्दी-साहित्य और संस्कृत-वाङ्मयके साथ सम्बन्ध है परन्तु सत्य यह है कि संस्कृत शब्दोंके स्वेच्छाचारितापूर्वक प्रयोगके अतिरिक्त वर्तमान हिन्दी साहित्य पर संस्कृत-शैलीकी अपेक्षा अंग्रेजी शैलीका ही अधिक प्रभाव है। आज जो भी साहित्य निर्माण हो रहा है अुसको हम अंग्रेजीका अधिकतर अनुवाद कहें तो असत्य नहीं होगा। अनुवाद अिस रूपमें कि किसी पुस्तक अथवा संदर्भका अनुवाद है। अपितु वाक्य बनाते हुए पहले अंग्रेजीके वाक्य सामने रखकर, अुसकी गद्यशैलीको ध्यानमें रखकर ही प्रायः पुस्तकें आदि लिखी जा रही हैं। विश्वविद्यालयों और कालेजोंके हिन्दी-प्राध्यापक [प्रोफ़ेसरही] आज हिन्दी भाषाके आधार बने हुए हैं और हमें यह कहने दिया जाय कि यह लोग प्राचीन भारतीय साहित्यकी अपेक्षा अंग्रेज़ी साहित्यके अधिक समीप हैं। हमारे विचारसे हिन्दीकी सच्ची सेवा यही है कि हिन्दीकी शैलीको अपने शुद्ध रूपमें प्रतिष्ठित किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-फल--सितम्बर ४७ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षाफल ३१ अक्टूबरको प्रकाशित होगा।

आगामी प्रचार परीक्षाएं आगामी प्रचार परीक्षाएं ता. ७, ८ फरवरी ४८ को होगी।

विभिन्न आवेदन-पत्रोंको वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें इस प्रकार हैं—

परिचय और कोविदमें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र १५ नवम्बर ४७

सशुल्क परीक्षा आवेदन-पत्र १५ दिसम्बर ४७

विलम्ब शुल्क सहित ,, २२ दिसम्बर ४७

अेक केन्द्रसे आने वाले सम्पूर्ण आवेदन-पत्र एक साथही आने चाहिये।

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र--'प्रवेश' परीक्षामें सीधे बैठनेके लिये अब सीधे बैठनेका प्रार्थना-पत्र भेजकर स्वीकृति प्राप्त करनेकी आवश्यकता न होगी।

जो परीक्षार्थी चाहे, प्रमाणिक प्रचारक और केन्द्र-व्यवस्थापककी सिफारिससे प्रवेशमें सीधे बैठनेकी अनुमति प्राप्त कर सकेंगे।

अैसे परीक्षार्थियोंके लिये अेक विशेष [रंगीन] आवेदन-पत्र तैयार किया गया है, अुसे ही भरकर परीक्षा आवेदन-पत्रोंके साथ १५ दिसम्बरतक ३, रु. शुल्कके साथ वर्धा कार्यालय भेजना होगा।

परिचय तथा कोविदमें सीधे बैठनेके लिये परीक्षामंत्रीसे अनुमति प्राप्त करनी अनिवार्य होगी। अिसके लिये परीक्षार्थियोंको प्रार्थना-पत्र १५ नवम्बरतक परीक्षा-मंत्रीके पास भेजकर विशेष स्वीकृति लेनी होगी। कार्यालयसे प्राप्त अपने "स्वीकृति-पत्रको" परीक्षा आवेदन-पत्रके **साथ १५ दिसम्बर तक पुनः भेजना होगा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ नवम्बर के पश्चात परिचय और कोविदमें सीधे बैठने के लिये आये हुये प्रार्थनापत्रोंपर विचार न हो सकेगा।

प्राप्तांक मँगानेका नियम—जो अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने अलग अलग प्रश्नपत्रोंके प्राप्तांक मँगाना चाहेंगे अुन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। परीक्षार्थीको परीक्षाका नाम, केन्द्र तथा क्रम-संख्या लिख भेजना चाहिये। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे शुल्क नहीं लिया जावेगा।

पुनर्निरीक्षण—जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर-पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण करवाना चाहें अुनको ता. २० नवम्बर तक प्रत्येक अुत्तर पुस्तकके लिये आठ आना निरीक्षण शुल्क भेजते हुअे अपना पूरा नाम, परीक्षाका नाम, क्रम-संख्या और प्रश्नपत्र संख्या देकर प्रार्थना पत्र भेजना चाहिये।

निरीक्षणमें केवल अितनाही देखा जायगा कि प्रत्येक प्रश्नके अुत्तरके अंक दिये गये हैं या नहीं और जोड़ आदि ठीक है या नहीं।

शुल्क माफी—शुल्क माफीका नियम पूर्ण रूपसे हटा दिया गया है, इसलिये शुल्क माफीके लिये प्रार्थना-पत्र न भेजे जाँय।

कोविदके परीक्षार्थी ध्यान दें

आगामी परीक्षामें कोविद प्रश्न-पत्र ३ के अन्तर्गत २० अंक आठ निबन्धोंके लेखन-कार्यके लिये हैं। प्रत्येक निबन्ध कम-से कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुन्हें अपने हिन्दी शिक्षकसे जँचवाना चाहिये। परीक्षार्थी अिन आठ लेखों को अपनी क्रम संख्याके साथ अपने मौखिक परीक्षकको देंगे। मौखिक परीक्षक लेखन कार्यके लिये अुनपर योग्य अंक देकर अुन्हें (आठ लेखोंको) वर्धा भेजेंगे)

आगामी परीक्षाओंके लिये निबन्ध विषय दिये जा रहे हैं। अिनके अलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. भारत वर्ष और ग्रामोद्योग, २. समका सदुपयोग
३. आजकी राष्ट्रीय समस्याएँ ४. राष्ट्रभाषाका प्रश्न
५. महामानव गान्धी ६. समाचार पत्र
७. स्त्री शिक्षा ८. आधुनिक शिक्षा पद्धति
मौखिक परीक्षा— कोविद मौखिक परीक्षा

१०० अंककी होगी। अंकोंका विभाजन अिस प्रकार रहेगा—

पठन पुस्तकीय—	१५ अंक
,, हाथ लिखावट—	१५ ,,
कंठस्थ गद्य-पद्य—	२० ,,
वार्तालाप तथा भाषण—	५० ,,

कंठस्थ गद्य-पद्य—परीक्षार्थियोंसे अपेक्षा यह रखी जाती है कि वे पाठ्य पुस्तकोंमेंसे अथवा बाहरकी पुस्तकोंमेंसे दो-चार छोटी छोटी हिन्दी कवितायें और चुने हुअे गद्यांश कंठस्थ कर लें। प्रत्येक कविताकी और गद्यांशकी आठ आठ पंक्तियाँ पर्याप्त समझी जावें।

हमारी नज़रोंमे

टेस—अनुवादक, मधुसूदनदास चतुर्वेदी एम. ए. प्रकाशक मारवाड़ी नवयुवक मंडल हैदराबाद पृष्ठसंख्या ३६०, मूल्य २॥)

अुपरोक्त पुस्तक प्रसिद्ध अंगरेजी अुपन्यासकार टामस हार्डीकी 'Tess of Dervervilb' का हिन्दी अनुवाद है। यह पुस्तक अंगरेजी साहित्य में अपना एक विशेष स्थान रखती है। अतः हिन्दीमें अिसका भाषान्तर कर अनुवादकने हिन्दी साहित्यको अुपकृत किया है।

साथही साथ अनुवाद बड़े स्वभाविक और सरलतासे किया गया है। मूल पुस्तकके कोमल और सहज भावोंकी रक्षा अनुवादकने बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चातुर्यसे की है फिर भी कहीं२ लेखक 'ठेठ-हिन्दी' के लोभ में अुलझ गए हैं और कहीं अनुवाद में कुछ अस्वाभाविकतासी आ गअी है। पर बहुत कम स्थानोंपर अैसा हुआ है। अनुवाद की भाषा में 'शब्दानुवाद' की ओर ध्यान न देकर अनुवादकने अुसे रसहीन नहीं होने दिया है। पुस्तक पढ़ते समय बहुत कम स्थानोंपर यह बोध होता है कि हम अनुवाद पढ़ रहे हैं। मूल पुस्तक के समान ही भाषामें लोच, सरलता, और वाक्य-बद्धता है। आशा है पाठक पुस्तकको अवश्य पढ़ेंगे।

—रंजन

प्रान्तीय हलचलें

महाराष्ट्र

नसीराबाद—ता. १५ अगस्तको नसीराबादमें श्री दत्तात्रय विष्णु जुलूकरजीकी अध्यक्षतामें स्वतंत्रता दिवस बड़े समारोहसे मनाया गया। समिति कार्यालय लता-पताकाओंसे खूब सजाया गया।

राष्ट्रभाषा प्रचार मण्डलकी ओरसे ता. २१ सितम्बरको श्री विष्णु मंदिरमें हिन्दी साहित्यके प्रथम नाट्यकार बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्रका जन्मोत्सव समारोह श्री मिठाराम चौधरीकी अध्यक्षतामें बड़े उत्साहसे मनायागया और अिस अवसरपर 'वादविवाद' प्रतियोगिताभी हुअी। वाद-प्रतियोगितामें नीचे लिखे व्यक्तियोंको पुरस्कार मिला-(१) श्री हरिकृष्ण शंकरदास मेहता (२) मधुसूदन विष्णु (३) श्री बालकृष्ण पुंडलिक मोहरीर। अिसके बाद ता. २७-९-४७ को सौ० अिन्दिराबाअ ने राष्ट्रभाषाके प्रचार-कठिनाअीयों आदि पर अेक व्यवहारिक भाषण प्रचारकोंके सामने दिया।

पूर्वखानदेश—

रा भा. प्र. समिति वर्धाके अुद्देश्यके अनुसार पूर्वखानदेशमें रा. भा. परीक्षाओंका प्रसार और अन्य जरूरी कामोंके लिअे चार व्यक्तियोंकी अेक कार्यकारिणी समिति बनाअी गअी (१) श्री चुनीभाअी रावल (२) श्री. रा. वा. पाटिल (३) वा. ना. फेगड़े (४) श्री अी. अट्टावलकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसी तरह अेक जिला समिति बनानेके लिअे जलगांवमें अेक बैठक हुअी जिसमें समितिके विधान पर चर्चा हुअी। आवश्यक परिवर्तनोंके साथ विधान सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ और नीचे लिखे कार्यकर्ताओंकी अेक कार्यकारिणी समिति बनाअी गअी। १) श्रीहरी कृष्णदास मेहता अध्यक्ष, (२) श्री चुनीभाअी रावल-अुपाध्यक्ष, (३) श्री रा. म. गाजरे-कोषाध्यक्ष, (४) श्री. श्रीराम अष्टावलकर-मंत्री, (५) श्री. के गो. जोशी सं. मंत्री, (६) श्री. रा. वा. पाटील स्था स., (७) वा. ना. फेगड़े-स्था.स.

अिसी प्रकार अमलनेर तालुकामें भी समिति कायम हुअी जिसके अध्यक्ष श्रीदिनकर अनंत जहागीरदार और मंत्री श्रीकेशव गोविन्द जोशी चुने गए।

रावेर.

रावेरमें गणेशोत्सवके अवसर पर राष्ट्रभाषा समितिकी ओरसे अेक प्रहसन किया गया जिसमें राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि देवनागरीके बारेमें चर्चा की गअी। प्रहसन बड़ाही रोचक रहा।

नासिक—जिला नासिकके प्रतिष्ठित सज्जनोंकी अेक बैठक हुअी और जिला समिति बनाअी गअी। अिस समितिका नाम जि. रा. भा. प्रचार समिति रहेगा और समिति राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके अुद्देश्यके अनुसार कार्य करेगा। बैठकमें लेखकोंको प्रोत्साहन देने, राष्ट्रभाषा विद्यालय तथा पुस्तकालयकी स्थापना करने पर विचार हुआ। कार्यकी सहूलियतकी दृष्टिसे समितिने नीचे लिखे विभाग निश्चित किये हैं— [१] राष्ट्रभाषा प्रचार विभाग [२] वाचनालय विभाग [३] लेखन प्रकाशन विभाग [४] जिलानिधि विभाग।

कार्यकारिणमें जिलेके ५३ प्रधान कार्यकर्ता हैं। अिसकी बैठक सालमें चार बार हुआ करेगी। हर वर्ष दूसरे सदस्य चुने जायँगे। अिस वर्षके पदाधिकारी और सदस्यों की सूची नीचे दी जाती है— [१] श्री कु. व महाचल गुरुजी, अध्यक्ष [२] श्री. शांतिभाअी अुपाध्यक्ष [३] श्री. खिवराज सेठ अुपाध्यक्ष [४] श्री. रेवाशंकर दुबे मंत्री, सर्व श्री. का. र वैशम्पायन, रे के. यादों, मु. न. जयकृष्णीयाँ, शि. पी. सारंगपानी, व. र. वर्तक, दे. कृ. शिंदे, सौ. चंचलाबाअी, शाहा, द. वो. पुराणिक सदस्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूना—५-१०-४७ को सवेरे दस बजे पूना हिन्दीविद्यालय प्रमाणपत्र वितरणसमारोह विद्यालयमें सैह्याद्रिके सम्पादक, श्री. दी कोलेजी की अध्यक्षतामें मनाया गया अिस अवसर पर विद्यार्थियोंने भी खेला। विद्यालय के मंत्री श्री. ब. ग. कुलकर्णीने विद्यालयकी रिपोर्ट पढ़कर सुनाअी। तत्पश्चात् अध्यक्षके भाषणके बाद प्रमाण वितरित किये गये।

गुजरात

अहमदाबाद गत १४ सितम्बरको प्रान्तीय और स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितियोंकी अेक बैठक अहमदाबादमें हुई। बैठकमें राष्ट्रभाषा हिंदी राष्ट्र-लिपि देवनागरीके प्रचारकी समस्यापर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया। इससम्बन्धमें एक प्रस्तावभी सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

महेसाणा:—स्थानीय महाराष्ट्रसमाजने अिस वर्ष गणेशोत्सवके निमंत्रणका कार्ड हिन्दीमें छापा। अबतक निमंत्रण कार्ड मराठीमें ही छपा करता था। महाराष्ट्र समाजका यह कदम प्रशंसनीय है।

भरुच—संयुक्त प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदी भरूच पधारे। स्थानीय गवर्नमेंट हाअीस्कूलमें राष्ट्रभाषा हिंदी की वर्तमान प्रगतिपर आपका प्रभावशाली भाषण हुआ।

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने जिसके अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल माणिक मुंशी हैं विधान परिषदके अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसादके पास अेक आवेदन पत्र भेजा है जिसमें अुनसे कहा गया है कि कांग्रेसी सदस्योंके अिस निर्णयको कि हिन्दकी राष्ट्रभाषा हिन्दी और अुसकी राष्ट्रलिपि नागरी हो सबको अपनाना चाहिए।

गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री जैठालाल जोशीने प्रांतके समस्त व्यवस्थापकों और प्रचारकोंसे निवेदन किया है कि (१) सभी केन्द्र व्यवस्थापकोंके पास वार्षिक विवरणका फार्म भेजा जा चुका है। फार्मको भरकर आगामी ३१ अक्तूबर तक प्रान्तीय राष्ट्रभाषा कार्यालयमें भिजवा देना चाहिए। (२) प्रांतीय कार्यालयमें प्रचारक परिचय पत्रभी शीघ्र भेज देना चाहिए तथा पता बदल जानेपर अुसकी सूचना ठीक समयपर प्रांतीय केन्द्रको दी जानी चाहिए। (३) प्रांतमें राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यकी प्रगति तथा तत्संबंधी सभी किस्मकी सूचनाएँ प्रान्तीय कार्यालयके द्वाराही भेजी जानी चाहिए।

बंगाल

कलकत्ता— गत २८ सितम्बरको उत्तर कलकत्तके हिन्दीभाषाभाषी छात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्राओंका प्रीतिसम्मेलन भाषा विज्ञानके पंडित श्रीसुनीति कुमार चट्टोपाध्यायके सभापतित्वमें उत्साहपूर्वक मनाया गया। सम्मेलनमें उत्तीर्ण छात्र-छात्राओंको प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। अंत अवसर पर छात्रोंके हिन्दीमें भाषण भी हुये। छात्रोंके भाषणोंके उपरान्त श्री दिनेशचन्द्र गुह, प्रोफेसर वैजनाथ चतुर्वेदी तथा श्री सीताराम सेकसरियाने हिन्दीप्रचारकी महत्ता एवं उसके प्रसारकी आवश्यकता पर व्याख्यान दिये। श्री सुनीतिबाबूने अंतमें अध्यक्ष पदसे बोलते हुए कहाकि हिन्दी भारतको लोकप्रिय भाषा है। बंगलाको राष्ट्रभाषा बनानेका आंदोलन बिल्कुल असामयिक है।

मध्यभारत

जावरा—गत ५ सितम्बरको राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें जावरा केन्द्रका पंचम प्रमाणपत्र वितरणसमारोह माननीय अम्मेदमलजी कटारियाकी अध्यक्षतामें उत्साहपूर्वक मनाया गया। आपने उत्तीर्ण छात्रोंको प्रमाण पत्र प्रदान किए। अपने भाषणमें आपने राष्ट्रभाषा हिन्दीके महत्वपर प्रकाश डाला। प्रत्येक परीक्षामें सर्व प्रथम उत्तीर्ण होनेवाले छात्रोंको कोविदकी उपाधि प्रदान की गयी तथा पारितोषिक दिए गए।

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रांत	नाम	केन्द्र	क्रमांक
बंगाल	श्री अमल सरकार	कलकत्ता	११२८
"	" किशोरी मोहन दे	गोलग्राम	११२९
"	" दिनेशचन्द्र गुह	कलकत्ता	११३०
गुजरात	श्री वाडीलाल चत्रभुज गांधी	राणपुर	११०१
"	" इन्दुप्रसाद जे. भट्ट	अहमदाबाद	११०२
"	" भाओलाल भवानीदास मामतोरा	मांडवी कच्छ	११०३
"	" दौलतसिंह नरपतसिंह रावलजी	राजपिपला	११०४
"	" रतिलाल आत्माराम पस्तागीआ	सूरत	११०५
"	" गोरधनभाओ फूलाभाओ पटेल	अहमदाबाद	११०६
"	" रमेशचन्द्र पुरुषोत्तमदास पटेल	करमसद	११०७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. मा. ८३८

समितिका मासिक
'राष्ट्रभाषा'

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है।

प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविदके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं।

ऊपर लिखी चारों परीक्षाओंके अेक अेक समयके प्रश्नपत्रोंके सेट तैयार किये गये हैं। प्रत्येक सेटका दाम पाँच आना है। प्रश्नपत्रोंका सेट मँगाते समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये।

प्रत्येक फुटकर प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है।

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ६

अगस्त १९४७

अंक १०

राष्ट्रभाषा

कैसे मुक्तिका मैं गीत गाऊँ

बन्धनोंमें हाय ! कैसे मुक्तिका मैं गीत गाऊँ
माँ तुम्हारी अर्चनामें हाय ! क्या उपहार लाऊँ !
दे सकूँ उपहार प्राणोंका तुम्हारी अर्चना में
दीप आशाका जलाऊँ मुक्तिकी चिर साधनामें।
किन्तु-हा ! शत बन्धनोंमें प्राण हैं आबद्ध मेरे
हस्त-पद हैं जकड़ित, मुझको हैं सदा दीवार घेरे ॥

—प्रो. प्रफुल्लचन्द्र पट्टनायक

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. राष्ट्रभाषा की महत्ता २९३
२. राष्ट्रभाषा और देशका अंग-विच्छेद २९४
३. मौखिक परीक्षा ३००
४. परीक्षार्थियोंके लिये आवश्यक सूचनाएँ ३०३
५. मंदिर ३०५
६. जंजीबारमें हिन्दी प्रचार ३०६
७. प्रधान-मंत्री की ओरसे ३०९
८. दार्जिलिंग अंचलमें हिन्दी ३११
९. हमारी नजरोंमें ३१३
१०. हिन्दीकी आवश्यकता ३१६
११. प्रान्तीय हलचले ३१७
१२. परीक्षा-विभाग ३२६

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक (पेज ३२७ का शेष)

,,	श्री. अनन्त गणेश ओक	चिपलुण	१०७४
,,	,, रामदास सेनू कोष्टी	सावदा	१०७३
,,	कु. नलिनी वासुदेव ब्रह्म	सिन्नर	१०७४
,,	,, प्रभा द्वारकानाथ शास्त्री	पुणें	१०७५
,,	,, गंगु गणेश वाळिम्बे	,,	१०७६
,,	श्री. दुर्गा नारायण होनप	,,	१०७७
,,	,, हरचन्द शिवराम भंगाले	मस्कावद	१०७८
,,	,, निंबा तानाजी भामरे	नामपुर	१०७९
बम्बअी	,, जनार्दन रामचन्द्र जड्बे	गिरगांव	१०८०
,,	,, सॅम्युअेल सत्केल कासूकर	बम्बअी	१०८१
विदर्भ-नागपुर	पं. व्यास नारायण शुक्ल	नांदागोमुख	१०७३
कर्नाटक	श्री. विनायक विश्वनाथ छत्रे	विजापुर	१०६२
,,	,, कृष्णाजी रामचन्द्र परांजपे	बेलगाम	१०७१
मालवा	,, रामचन्द्र 'चन्द्र'	निमच सिटी	१०६१

गतांकके प्रकाशित प्रचारक सूचीमें प्रचारक क्र. १०२२ का नाम श्री. कृष्ण शहाणी छपा था। अुसके बदले कु. कृष्णा शहाणी चाहिये।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक : भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्धा, अगस्त—१९४७ [अंक १०

—: राष्ट्रभाषाकी महत्ता :—

श्री संपूर्णानंद, शिक्षामंत्री, संयुक्तप्रान्त

हिन्दीके साहित्य-गगनके नक्षत्र विश्वसाहित्य ज्योतिपुञ्जोंमें परिगणित होते हैं। संस्कृतको छोड़कर आज भी किसी भी भारतीय भाषाका वाङ्मय-विस्तार या मौलिकतामें हिन्दीके आगे नहीं जाता, इसका अेकमात्र कारण यह है कि शासक चाहे जो हो और अुसकी नीति चाहे जैसी हो, हिन्दी भारतीय जनताके अेक बहुत बड़े भागकी अपनी भाषा है। हिन्दी लेखकोंकी प्रतिभाको भारतीय संस्कृतिकी आत्मा निरंतर स्फूर्ति देती रही है, अुनकी कृतियोंमें करोड़ों भारतीयोंकी आशाओं, आकांक्षाओं, अिच्छा – विधानों की अभिव्यक्ति मिलती है। ....

मैं यह नहीं समझ पाता कि कोअी भी व्यक्ति जिसको भारतीय संस्कृतिसे प्रेम होगा, अिस भाषाको कैसे अंगीकार न करेगा। बंगाला, गुजराती, तेलुगु या तामिळ भी अंशतः भारतीयताको अभिव्यञ्जित करती हैं, परन्तु अैतिहासिक कारणोंने हिन्दीको ही भारतकी सार्वदेशिक भाषा होनेका गौरव प्रदान किया है। पटनासे लेकर दिल्ली तक, हरिद्वारसे लेकर अुज्जैनी तकके प्रदेशमें रामायणकालसे लेकर मुगल साम्राज्यके सूर्यास्त तक भारतीय संस्कृतिका विकास हुआ। यहीं बड़े बड़े चक्रवर्ती राज्यों और साम्राज्योंका अुदय हुआ। देशके कोने कोनेसे खींचकर प्रतिभाशाली व्यक्ति यहाँ आये, यहाँसे विद्वान और शासक सारे देशमें फैले, अिसीलिअे यहाँकी भाषा स्वतः राष्ट्रभाषा बन गयी।

हम अिस भाषाके पुजारी हैं। यों तो देशको पूरा अधिकार है चाहे जिस भाषाको राजभाषा बनाये, परन्तु हमको पूरी आशा है कि यह स्थान मध्यदेशकी अिसी भाषाको प्राप्त होगा। हम अिसके लिअे वर्षोंसे प्रयत्न भी कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा और देशका अंग-विच्छेद

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

यह जो हमारे पश्चिम और हमारे पूर्वमें, देशके दोनों सिरे कलम कर दिया गया है, हम उसके लिये 'विभाजन' जैसे नरम शब्द प्रयोग कर 'आत्म-वञ्चना' नहीं करना चाहते। वह देशका ही अंग-विच्छेद है जैसा आजसे ४२ वर्ष पहले 'बंग-भंग' हुआ था। उस समयकी 'राष्ट्रीयता' आजकी अिस सठियाअी हुअी 'राष्ट्रीयता' अच्छी थी। वह बंग-भंग सहन न कर सकी थी। हमने आज बंग-भंग ही नहीं पंजाब-भंगको भी न केवल सहन किया, बल्कि उसे स्वीकार किया है। ब्रिटिश कूट-नीतिने हमें संसारके सामने देशके अंग-विच्छेदकी मांग करनेवालोंके रूपमें खड़ा किया।

लोग कहते हैं, अन्तमें आत्म-बलकी ही विजय होती है। होती होगी! आज तो कूट-नीतिकी ही विजय हुअी है।

आत्म-विश्लेषण

प्रश्न अुठता है क्यों हुअी? दूसरोंको दोष देना अपनी मूर्खता तथा अपने अपराधको छिपानेका सर्वोत्तम साधन है। अुससे कोअी लाभ नहीं। बापूने अभी दो ही दिन हुये अपनी प्रार्थनामें कहा कि यह प्रस्तुत होनेकी घड़ी नहीं है, यह आत्म-विश्लेषणकी और आत्म-निरीक्षणकी घड़ी है।

हमें लगता है कि आज हमें यह सत्य स्वीकार करना ही चाहिये कि पिछले पच्चीस तीस वर्षसे हम जिस साम्प्रदायिकता रूपी बबूलको जाने-अनजाने सींचते रहे हैं अुसमें 'सम्पूर्ण देशकी सम्पूर्ण स्वतंत्रता' रूपी आम्र-फल कभी लग ही नहीं सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन हमने साम्प्रदायिक चुनाव स्वीकार किया—वह देशके दुर्भाग्यका दिन था।

जिस दिन हमने सम्प्रदाय-विशेषको साथ लेनेके लिये खिलाफत-आन्दोलन जैसे आन्दोलनको अेक राष्ट्रीय आन्दोलनके रूपमें स्वीकार किया, वह देशके परम दुर्भाग्यका दिन था।

जिस दिनसे हम गुलामोंकी राजनीति और राष्ट्रनीतिमें यह 'हिन्दू-मुस्लिम अेकता' का वहम आ घुसा, अुसी दिन विधाताने अिस देशके भाग्यको दुर्भाग्यमें परिणत कर दिया।

हम समझते रहे कि हम 'हिन्दुओं' और 'मुसलमानों' को मिलानेके आन्दोलन कर रहे हैं, किन्तु वे सब 'हिन्दू-चेतना' तथा 'मुस्लिम-चेतना' को पृथक् पृथक् बढ़ानेके आन्दोलन सिद्ध हुये। 'हिन्दू-चेतना' तो नहीं ही बढ़ सकी। दो कारण थे। अेक तो पहले हिन्दुओंकी जाति-पांति-प्रधान समाजिक रचनाके रहते हिन्दू-चेतना बढ़ ही नहीं सकती थी। दूसरे, अिस हिन्दू-मुस्लिम अेकताकी चिन्ता भी मुख्यतः हिन्दू नेताओंको ही रही। परिणाम यही हुआ कि मुस्लिम-चेतना बढ़ी और अैसी बढ़ी कि वह बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।

कांग्रेसकी साम्प्रदायिकता

हिन्दू सभा साम्प्रदायिक संस्था है, किन्तु अुसके अितिहासने अुसे असाम्प्रदायिक सिद्ध किया। अुसकी राजनीति सरकारी नौकरियोंकी छीन-झपटसे आगे न बढ़ सकी। कांग्रेसने समझा और देशने माना कि कांग्रेस 'असाम्प्रदायिक' है। रही भी। अिसके सभी कार्यक्रमोंको जहां-जहां और जिस-जिस मात्रामें यह 'हिन्दू-मुस्लिम अेकता' का वहम प्रभावित करता रहा, अुतने अंशोंमें वह भी साम्प्रदायिक ही सिद्ध हुअी।

व्यक्ति विशेषको अुसके सम्प्रदायकी ओर देखकर अपने घरमें न आने देना साम्प्रदायिकता है, किन्तु व्यक्ति-विशेषको अुसके साम्प्रदायकी ओर देखकर अपने घरमें आने देना भी साम्प्रदायिकता ही है। हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभाकी साम्प्र:ायिकता पहले ढंग की थी, अधिकांशमें अकर्मण्य। कौंसि साम्प्रदायिकता दूसरे ढंग की रही, किन्तु क्रियाशील। जितनी कौंसि मात्रामें वह क्रियाशील रही, अुतनी ही अधिक मात्रामें वह देशका साधन कर सकी।

काश, अिस देशका पिछले ३० वर्षका राष्ट्रीय अन्दोलन सम्मिलित होने और न होनेवालोंके मज़हबोंकी ओरसे सर्वथा अुदा रह सकता!

हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी दार्शनिक पृष्ठभूमि

आजसे पांच वर्ष पहले देशमें बापू की प्रेरणासे जो 'हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा' की स्थापना हुअी, वह हमारी विनम्र सम्मतिमें अिसी तरह की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का परिणाम थी। किसी बोतल पर गलत लेबल लगा होनेसे अुसके अन्दर की दवाओंमें अन्तर नहीं पड़ जाता राष्ट्रीयता का लेबल आखिर कितने दिन तक किसी चीज की रक्षा करेगा।

'स्वराज्य'के लिअे 'हिन्दु-मुस्लिम अेकता, अनिवार्य और 'हिन्दु मुस्लिम अेकता'के लिअे 'हिन्दी-अुर्दू अेकता' अनिवार्य है—यही तो है अिस 'हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा' की दार्शनिक पृष्ठभूमि!

यहां राष्ट्र-भाषाका प्रश्न राष्ट्र-भाषाका प्रश्न नहीं रहा। यह राष्ट्र-साहित्यका प्रश्न राष्ट्र-साहित्यका प्रश्न नहीं रहा। यहां सभी कुछ 'हिन्दु-मुस्लिम-अेकता'की बलिवेदी पर निछावर कर दिया गया, और अेकता भी अैसी जो प्रतिवर्ष किये और तोड़े जाने वाले हिन्दु-मुस्लिम पैक्टोंकी शृंखलाका ही अेक दूसरा नाम।

पत्रोंमें समाचार छपा था कि दिल्ली की 'भंगी बस्तीमें डॉ० राजेन्द्र बाबू और श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल बापूसे हिन्दुस्तानी-प्रचारके बारे बातचीत कर रहे हैं। सोचा था, यह स्वाभाविक है। देशमें अितनी बड़ी अुथल-पुथल किस विचारवान् को, किस हृदयवान् को कुछ सोचने समझने पर मजबूर न करेगी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिनके बाद श्रीमन्नारायण अग्रवालका अेक वक्तव्य पढ़ने को मिला, जिसका शीर्षक अधिकांश हिन्दी-पत्रोंमें "देश की राष्ट्र-भाषा हिन्दी होगी" था। आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। ध्यानसे पढ़ा। अुस वक्तव्यमें श्रीमन्नारायण अग्रवालने हिन्दुस्तानीके बारेमें अपना सन्देह व्यक्त किया था और कहा था कि "यदि पाकिस्तानकी भाषा 'अुर्दू' हो गअी (अुन्हें अिसमें सन्देह है!) तो फिर भारतमें हिन्दीको 'राष्ट्रभाषा' बनानेके आन्दोलनको रोकना कठिन हो जायगा।"

हमने श्रीमन्नारायण अग्रवालके अिस सन्देह का स्वागत किया, क्योंकि सन्देहसे ही ज्ञान पैदा होता आया है। पहले सन्देह, पिछे ज्ञान।

किन्तु इसके बाद अुनका अेक दूसरा वक्तव्य भी पढ़नेको मिला है, जिसमें अुन्होंने हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके मंत्री की हैसियतसे अिस बातकी घोषणा की है कि सभाकी रीति-नीति वही रहेगी जो आज तक रही है।

अैसा लगता है कि पहला वक्तव्य श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालके अपने व्यक्तिगत विचारोंकी ओर निर्देश करता है और अुनका दूसरा वक्तव्य हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके मंत्रीका हैसियतसे किया गया कर्तव्य-पालन है।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके अध्यक्ष माननीय राजेन्द्र बाबू हैं। उनके कभी अिस बारेमें अेक वक्तव्य भी न देनेसे ही 'हिन्दुस्तानीके' बारेमें अुनका अुत्साह स्पष्ट हो जाता है। हां, बापूके व्यक्तित्वके आगे राजेन्द्र बाबूके समान 'यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि' का अितना शानदार अुदाहरण दूसरा है ही नहीं।

बापूका प्रार्थना-प्रवचन

सच्ची बात है, बापू ही हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हैं। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें नहीं रहे—अिसका सम्मेलनको हार्दिक दुःख हुआ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुनके मार्ग-दर्शनसे वह वंचित हो गया, यह अुसकी हानि हुअी; लेकिन तो भी सम्मेलन जैसे-तैसे जीवित है। और हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके यदि आज बापू अपना नाम हटा लें तो कल ही शायद हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके दफ्तरमें ताला पड़ जाये।

अिसलिये अिधर बापूका राष्ट्र-भाषाके प्रश्न पर जो प्रार्थना-प्रवचन हुआ है वह सब कुछ है और बहुत ही महत्वपूर्ण।

अिस प्रार्थना-प्रवचनको हमने कअी बार पढ़ा। अुसमें भावनाकी अैसी और अितनी अधिक पुट है कि जो किसीके भी चिन्तनके लिअे घातक है। बापूके प्रार्थना-प्रवचनके तीन हिस्से हैं। पहले हिस्सेमें अुन्होंने स्वीकार किया है कि हिन्दुस्तानीको लेकर आज देश अुनका साथ देनेको तैयार नहीं है। वह अकेले रह गये हैं। और रवि बाबूके अुस प्रसिद्ध गीतकी भावनाके अनुसार अुन्होंने कहा है कि "यदि तेरी बात सुन कर कोअी साथ नहीं देता तो अकेला चल।" क्या हमें हमारे बापू अितना निवेदन करनेकी आज्ञा देंगे कि राष्ट्रीय कार्यक्रम तो राष्ट्रके साथ देने और न देने पर ही निर्भर करते हैं। हां, अध्यात्मकी सड़क पर आदमी जितना चाहे और जितनी दूर तक चाहे अकेला आगे बढ़ सकता है!

दूसरी बात, बापूने अपने सम्मेलनको छोड़ देनेका कारण बताया है। हमें यह अयथार्थ लगता है। अिन्दौर सम्मेलनके ही समय भाषाके बारेमें यदि बापूकी वही दृष्टि होती जो अिधर चार-पांच वर्षोंसे अुन्होंने अपनाअी है, तो बापू अिन्दौर सम्मेलनके समयसे ही सम्मेलनमें न होते। बापू प्रायः पुरानी बोतलमें ही नयी शराब भरनेके अभ्यासी हैं। अिसलिये वह अपनी भाषा सम्बन्धी अिस नयी रीति-नीतिको अिन्दौर-सम्मेलन तक खींच ले जाना चाहते हैं। बापूकी भाषा सम्बन्धी विचारधारा बापूके लिअे पुरानी रही हो, किन्तु हिन्दी साहित्य सम्मेलनके लिअे वह नयी ही थी। सम्मेलन बिना अपनी परम्पराकी लाज डुबोअे अुसे स्वीकार नहीं कर सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापूके सम्मेलन छोड़नेका यही यथार्थ कारण है। हां, यूं कोअी भी चाहे तो किसी भी बातको अैतिहासिक ढंग पर भी पेश कर ही सकता है।

पासपोर्ट

तीसरी बात हमारी भावनाको भी अितना अधिक व्यक्त करती है कि अुसे छूते डर लगता है। माताअें अपने मृत पुत्रसे चिपटी रहती हैं। अैसा हालतमें कोअी आश्चर्य नहीं कि बापू देशके अिस अंग-विच्छेद को देशका अंग-विच्छेद स्वीकार ही न करें। बापूके यह शब्द कितने हार्दिक हैं—"मेरा राष्ट्र तो हिन्दुस्तानमें भी है, पाकिस्तानमें भी है। मुझे कोअी कहीं नहीं रोक सकता। जिन्ना साहब रोकें। मैं कोअी अलग प्रजा थोड़े ही बन गया हूँ। जिन्ना साहब मुझे कैद करें मैं पासपोर्ट लेनेवाला नहीं हूँ।' अखण्ड भारतके प्रति अिन पंक्तियोंमें अितना मोह है कि प्राणोंमें पैठता चला जा रहा है! किन्तु हे भारतके भाग्य-निर्माता बापू! यदि मनमें यही जलन छिपाये रहे तो अिसे अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें क्यों नहीं व्यक्त किया? यदि कांग्रेसके नेताओंको तुम्हारा--नहीं आपका और केवल आपका---आशीर्वाद न प्राप्त हुआ होता, तो हम शायद अेक बार हार्सी-बाजी फिर जीत जाते। अखिल भारतवर्षीय कांग्रेसकी बैठकमें केवल अेक 'आदमी'ने अकेले चलने का साहस किया था-श्रद्धेय टंडनजीने। काश! आपने वही पक्ष ग्रहण किया होता!

और बापू! अब पासपोर्टके लेने न लेनेसे वस्तु-स्थितिमें अन्तर नहीं आता। सिंहल विदेश है। वहां जानेके लिअे किसी पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं। यदि 'पाकिस्तान' और 'भारत' की सरकार चाहे तो यह अनिवार्य नहीं कि पासपोर्टकी प्रथा आरम्भ की ही जाय। यदि अैसा हो तो किसीको भी पासपोर्ट लेनेकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। और यदि हिन्दुस्तान-भारतसे पाकिस्तानमें जानेके लिये पासपोर्टकी आवश्यकता होगी तो पाकिस्तानसे भारत आनेके लिअे भी 'पासपोर्ट' की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता होगी ही। बापू किसी भी योग्य अधिकारीको अज्ञा देकर आपको भारतमें वीसा लेने और 'पाकिस्तानसे' 'पासपोर्ट' मांगने की वैधानिक क्रिया—फार्मेलीटी—से मुक्त किया ही जा सकता है। जिसकी सरकार भी अितना 'सौजन्य' दिखा ही सकती है। किन्तु क्या अिससे भारत 'अखण्ड' हो जायगा ?

अब वस्तु-स्थिति बदल गअी है। देशमें निश्चित रूपसे परिवर्तन हो गया है। १५ अगस्तको जिस दिन संसार भारत को 'डोमीनियन-स्टेटस' दिया जाना समझेगा अुस दिन देशके अंग-विच्छेदपर पक्की मोहर लग जायगी। तब हमें अपनी राष्ट्रभाषाकी गाड़ी को सुनिश्चित मार्ग पर दृढ़ताके साथ आगे बढाना ही होगा। देश आपसे नये मार्ग-प्रदर्शन की आशा रखता है।

साम्प्रदायिकताकी राह चलनेका परिणाम हम भुगत चुके। अब हमें केवल राष्ट्रीयताकी राह पर चलना होगा।

(हिन्द-समाचार समिति द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

परीक्षोपयोगी

मौखिक परीक्षा

[लेखक—**श्री ओंकार, साहित्यरत्न तथा श्री० गद्रे साहित्यरत्न, पुणे**]

मौखिक परीक्षासे बहुतेरे विद्यार्थी घबड़ाते हैं सही लेकिन वे न घबड़ायें। कुछ दृढ़ता और आत्मविश्वाससे वे काम लें और अिस विषयके संबंधमें नीचे दी हुअी सूचनाओंके अनुसार वे पहलेहीसे तैयार रहें, तो परीक्षाका डर नहीं रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यान्य संस्थाओंके (विशेषतः मातृभाषाकी संस्थाओंसे भिन्नता रखनेवाली संस्थाओं के) अुच्चारणकी जानकारी पहलेसे ही रखना बहुत आवश्यक है। अुसके साथ ५, ६, ८ और ९ अंकोंकी शक्लोंको भी ध्यानमें रखें।

वर्धा समिति द्वारा प्रकाशित 'नेताओंकी कलमसे भाग १ व २ को थोड़े ही दिन पहले दो चार बार पढ़कर हाथके लिखे हुअे अक्षरोंकी तरह तरहकी शक्लोंके नमुनोंसे परिचित रहना चाहिये। विशेष कर आगे दिये हुअे अक्षरोंकी शक्लोंपर अधिक ध्यान दें—

अ, ए, क (क), झ, ण (ण) त (त) र (र) ल, स (स). अुत्तर भारतीय किसी व्यक्तिकी हस्तलिखित चिट्ठी-पत्री कहीं मिले तो अुसे पढ़ लेनेका मौका कभी न छोड़ें।

अुसी तरह जहाँतक हो सके किसी हिन्दी भाषा भाषीका व्याख्यान या हिन्दीके अच्छे चित्रपटकी भाषा सुननेका अवसर न गँमायें। अिससे विशिष्ट शब्दोंके अुच्चारणके ढंग (लहज़ाका) अभ्यास हो जाता है। अ [घर], आ [आदमी], अै [है], औ [और], अँ [हँस], अं [हंस] च [चेर], ज़ [ज़रा], ज [आज], झ [मुझे], ह [जगह, वगैरह, पहला, रहना]

हिन्दी वातावरण स्थायी रूपसे न मिलनेके कारण विद्यार्थीको हिन्दीमें बातचीत करनेका अभ्यास नहीं रहता, अैसी लिये यही ठीक होगा कि वह हिन्दी जाननेवाले किसी व्यक्तिसे या अपने हिन्दी वर्गमें हिन्दीमें ही बोलनेका नियम जारी रखे।

परीक्षाके समय परीक्षक प्रायः जिन विषयोंको लेकर बातचीत जारी रखते हैं वे यों हैं—

१. **व्यक्तिगत जानकारी**:—नाम, अुमर, पढ़ाअी, व्यवसाय आदि २. हिन्दीकी प्रचार संस्थाअें तथा प्रचार-परीक्षाअें ३. हिन्दी, अुर्दू, हिन्दुस्तानी और लिपि-समस्या ४. साहित्यके अंग और साहित्यकार ५. मुहावरें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहावतें और व्याकरण ६. मासिक पत्र-पत्रिकाएं और सामयिक विषय ७. स्थानकी महत्ता और समारोहवृत्त आदि।

हर अेक क्षेत्र तथा विषयका अपना अपना विशिष्ट शब्दसमूह होता है। अुसकी जानकारी पानेकी दृष्टिसे किसी हिन्दी अखबार या मासिक पत्र-पत्रिकाको पढ़ते रहना ठीक होगा।

बातचीतके विषयमें कैसे कैसे शब्द कहाँ और किस तरह प्रयुक्त होते हैं यह जाननेके लिये परीक्षार्थी किसी नाटक या लघुकथाको पढ़ते समय अुसके कथोपकथनपर विशेष दृष्टि रखें।

चाहे मासिक-पत्रिका या और कोअी पुस्तक भी हो अुसे मन-ही-मन न पढ़कर स्पष्ट अुच्चारणके साथ जोरसे पढनेकी आदत डालनी चाहिये।

परीक्षार्थी पाठ्यक्रमकी कोअी भी कविता पहलेसे हो कंठस्थ कर रखें और कोअी कहानी कहनेके लिये भी तैयार रहें।

परीक्षा-स्थानपर ठीक समयके थोडे पहले ही अुपस्थित रहें।

परीक्षाके कमरेमें प्रविष्ट होते ही 'नमस्ते' कहना अधिक अुचित होगा!

परीक्षकके बिना कहे अन्दर जाना या बैठना ठीक नहीं दीखता। बैठना भी हो तो अदबके साथ बैठें। यों देखें तो बहुतेरी बातें महत्त्वकी होनेपर भी मामूलीसी लगती हैं। जैसे - शुरूसे ही अपनी क्रमसंख्या कहनेके लिये तैयार रहें। पढ़ते समय पुस्तक आदि आँखोसे अुचित दूरीपर और हाथमें लिये हुअे ही पढ़ें। डेस्कपर रखकर पढ़ना अुचित नहीं है।

परिक्षकके पासमें रखी हुअी सामग्रीकी ओर, विशेषतया अंकवितरणकी दृष्टीसे बारबार झाँकना, अुनके पास जाना या खडे होना अशिष्टतासूचक होता है। अिसमें परीक्षकके नाराज हो जानेकी बडी संभावना रहती है।

किसी भी अवसरपर भाषा या कृतिसे न अशिष्टता व्यक्त हो, न धृष्टता। अिसी दृष्टिसे परीक्षकको अुद्देश्य करके बोलते समय 'तुम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दका प्रयोग न करके आदरसूचक 'आप' शब्दको ही प्रयुक्त करनेकी विशेष सावधानी रखे।

किसी प्रश्नका अुत्तर देते समय 'हाँ' या 'नहीं' के लिये सिर्फ अपना सिर हिला देना या मुँह बनाना अशिष्टता है। अुसके बदले 'जी हाँ' या 'जी नहीं' कहनेकी बडी आवश्यकता है।

बोलते समय परीक्षार्थी मुँहमें या कुअेंसे न बोले।

परीक्षकके कहे बिना परीक्षाके कमरेसे बाहर न जायँ।

अब भी मौखिक परीक्षाकी तैयारी करनेकी दृष्टीसे परिक्षार्थियोंके सामने काफी कालावधि है। यदि अिन सभी बातोंपर पूरा ध्यान देकर वे अपनी बोलनेकी क्षमता बढ़ानेके प्रयत्नमें लगेंगे तो भी मौखिक परीक्षाका डर बहुत कम होगा। और परीक्षामें वे जरूर यश प्राप्त करेंगे।

(लेखक द्वयकी लिखी 'मौखिक मार्गदर्शिका' से)

परीक्षार्थियोंके लिये आवश्यक बारह सूचनाएँ

(श्री. बहेचरभाअी म. पटेल)

[खुशीकी बात है कि गत फरवरीकी राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंमें काफी विद्यार्थी शरीक हुअे। आशा है कि आगामी परीक्षाओंमें अिससे भी अधिक विद्यार्थी सम्मिलित होंगे। पिछली परीक्षाओंकी अपेक्षा अिस बार कार्यालयमें जो आवेदन-पत्र आये हैं—४२००० से भी अधिक।] —सं.।

परीक्षार्थी अुत्तर-पुस्तकमें अनेक गलतियाँ करते हैं। नीचे लिखी बातों पर वे अवश्य ध्यान दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१] अुत्तर-पुस्तक पर अपनी क्रम संख्या लिखनेमें ग
करते हैं। अुत्तर-पुस्तक पर विद्यार्थीकी क्रम-संख्या छपा होती है, तो भी
गलती करते हैं। क्रम-संख्या ठीक ठीक लिखनी चाहिये।

[२] अुत्तर पुस्तक स्याहीसे ही लिखनी चाहिये। पेंसिलसे
नहीं लिखना चाहिये।

[३] भिन्न-भिन्न प्रश्नोंकी क्रम संख्या भी नहीं लिखते। वह लिखी
चाहिये।

[४] कअी विद्यार्थी हाशियामें लिखते हैं जिससे जाँचने वालेको
काफी कठिनाअी अुपस्थित होती है। हाशियामें न लिखना चाहिये।

[५] मातृभाषाके शब्दोंका अधिक अिस्तेमाल न करना चाहिये।

[६] सुलेखन और सफाअी पर खास ध्यान देना चाहिये।

[७] विराम चिन्होंका अभाव मालूम होत है। साधारण त
पूर्ण-विराम तो अवश्य लगाना चाहिये।

[८] आधा प्रश्न पहले और आधा अंतमें लिखते हैं। वैसा न करना
चाहिअे।

[९] शब्दोंके बीचमें अुचित अन्तर चाहिये।

[१०] अुत्तरमें बे-मतलबकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिये।

[११] प्रायः विद्यार्थी....ब, व, भ, म, है, हैं, की और कि में गलती
करते हैं। अिस प्रकारकी गलतियोंसे बचना चाहिये।

(१२) अुत्तर-पुस्तकका पुनर्निरीक्षण अवश्य कर लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियोंकी लेखनीसे—

मंदिर !

श्री. अुद्धव मेश्राम 'कान्ताग्रज' वर्धा

अैसा कौन महापुरुष न होगा जो तेरा नाम सुनते ही आनंद-विभोर न होता हो ? अैसा कौन भक्त न होगा जिसमें तेरे नामसे दया और स्नेह अुमड़ न आता हो ? और अैसा कौन भाग्यवान पुरुष न होगा जो तेरे आश्रित देवताओंपर तथा तेरे सोपानों पर फूल न चढ़ाता हो ?

तूने कितने ही भक्तों को, कितने ही अुत्साही पुरुषोंको, कितने ही विरहसे व्याकुल वियोगी को, कितने ही प्रणय-प्रणअीताको और कितने ही दूरदेशी यवनों, मुत्सद्योंको सहारा दिया है। किन्तु; अुस भटकने वाली—दीन, दुर्ख, विव्हल, निर्मल अेवं सर्वांग सुंदर जातीको सहारा दिया है ? कितना न्यायहीन निर्दअी है तू !

अुस नन्हें निर्मल निष्पक्ष बालकको देखो अुसकी भोली मूर्ति को देखो। अुसकी स्नेह भरी ममता को देखो। क्या अुसकी आर्त-आवाज को तूँ सुन सका ? क्या अुसकी अन्तर्ज्वालाको तूँ शान्त कर सका ? आह! अुसकी अभिलाषाअें कैसे कराहती होगी ? मातृ-विहीन बालक तेरा आखेट होना चाहता है और तू अुसे दूर.....अपनेसे दूर..... दूर..... ...किसी अज्ञात स्थानमें अुत्तेजित करता है।

तूने किसे सहारा दिया है ? किसे बचाया है ? किसे शान्ति दी है ? दी है अुन कठोर वज्राघातियोंको, अुन अहंकारी मानवोंको, अुन प्राणियोंको जो पर्देमें छिपकर समाजको धोखा देते हैं।

तेरी अीटोंमें भगवानके प्रति कितना आदर है ! परन्तु अुसी भगवानके बनाअे हुअे चेतनोंमें तू अेकको बहुत समीप और अेकको कोसों दूर भगाता है। आखिर अैसा क्यों ?

कहो ! ओ भाग्यवान देवताके आश्रय-दाता कहो ! चुप्पी साधे क्यों बैठे हो ? तुमने ही तो अुस दिन अुस मानव जातिके ढोंगको, अुस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलंक को, सहारा दिया है। क्या तेरा सहारा अुनके लिअे आनिवार्य था! आह! कितना भयंकर है यह पाप, और कितनी लज्जाजनक बात! तुम्हारा दीर्घ कालका बना हुआ नीच आयुष्य क्या अिसी कार्योंमें प्रवृत्त रहता है? क्या तुम्हें लेश मात्र भी दुःख प्रतीत नहीं होता? धिक्कार है तेरे अैसे जीने पर जो स्वयं जीकर दूसरोंको घातक प्रवृत्तिकी ओर अग्रसर करता है। अिष्टमित्रोंमें फूट डालता है, और क्रान्तिके लिअे तत्पर करता है। तेरे अैसे सदनों पर अेक बार नहीं सौ बार धिक्कार है।

तेरी शरण लेनेवाले भगवानके भक्त न जाने किस आशासे तेरे पास आते हैं और न जाने क्या क्या ले जाते हैं!

तेरा नाम कितना सुन्दर और कितना आशाप्रद, मार्ग-दर्शनका प्रतीक है.....मं.....दि.....र। परन्तु तेरे गुण.....आह! तेरे गुण तो..... .....!

ज़ंज़ीबारमें हिन्दी प्रचार

[भाअीजी (**प्रो. रंजन**) के नाम ज़ंज़ीबारसे **श्री. रमा भाअी त्रिवेदी** ने अेक महत्वपूर्ण पत्र भेजा है, जिसके कुछ अंक नीचे दे रहे हैं—]

यहाँ—ज़ंज़ीबारमें—१६००० हिन्दुस्तानी रहते हैं। भारतकी तरह यहाँके हिन्दीओंमें तीन वर्ग हैं,—धनिक, मध्यम और ग़रीब। गरीबोंकी संख्या विशेष है। पूर्व आफ्रिकाके अन्य बड़े बड़े प्रदेशोंके मुकाबिलेमें अिस देशका सम्बन्ध—हिन्दुस्तानसे बहुत पुराना है। किन्तु पहले महायुद्धके बाद अन्य प्रदेशोंका विकास हो रहा है, किन्तु ज़ंज़ीबार पीछे हठ करता है। आर्थिक अेवं अन्य सब बातोंमें।

हिन्दुओंकी संख्या शायद ३५०० है और अन्य सब मुसलमान भाअी हैं। मुसलमान भाअीयोंमें बहोरा, खोजा (अिश्नाअशरी और आगा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाँके अनुयायी) और सुन्नी मुसलमान। हम सब गुजरात, कच्छ और सौराष्ट्रके बाशिंदे हैं। हिन्दके अन्य प्रदेशोंमें रहनेवाले कुटुम्बोंकी संख्या यहाँ करीबन २०-२५ की होगी।

यहाँ शिक्षाकी दशा सामान्य है। लड़के और लड़कियोंको अंग्रेजी-भाषापर—भारतके मुकाबलेमें—अच्छा प्रभुत्व होता है। सामान्य तौर पर सब बच्चे अक्षरज्ञान प्राप्त करते हैं। सीनीयर केम्ब्रीज तक शिक्षाका प्रबंध है फिर उच्च शिक्षाके लिये हिन्द जाते हैं, मगर अभ्यासार्थ हिन्द जानेवालेकी संख्या ४-५ लड़के होती है। बहुतसे लड़के अपना अभ्यास बीचमें ही छोड़कर व्यवसायमें लगते हैं।

कितने भाओ और कितनी बहनें यहाँ हैं उसका अन्दाजा लगानेका कार्य मुश्किल है। मगर यहाँकी सब पाठशालाओंमें मिलकर करीबन २१०० विद्यार्थी-विद्यार्थिनी पढ़ते हैं। पाँच वर्ष तककी उम्रके बालकोंके लिये केवल अेक (आगा खाँके अनुयायीओंने अपनी कौमके बालकोंके लिये शुरू किया हुआ) बाल—मन्दिर है।

राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें:—यहाँ राष्ट्रभाषाका बिलकुल प्रचार नहीं है। आजसे तीन-चार वर्ष पहले मैंने राष्ट्रभाषाका वर्ग शुरू किया था। वर्गके साथ सम्बन्ध बांधनेका प्रयत्न भी हुआ था, मगर युद्धकी वजहसे कुछ न हो सका। मैंने देढ़ वर्ष काम किया, पुस्तकोंकी बहुत तकलीफ थी। मैं खुद किसी जगह पर राष्ट्रभाषा पढ़ा न था जिससे आगेका कार्य दुस्तर लगा और हमारा वर्ग पुस्तकोंकी वजहसे बन्द करना पड़ा। फिर तो मैं साहित्यिक कार्यमें जा गिरा। अब भाओ अविनाशने यह कार्य श्री वीरेन्द्र देसाओ वेदालंकारकी निगरानीके नीचे शुरू किया है।

केनिया, युगान्डा, टान्गान्यीकाके विस्तृत प्रदेश और जंजीबार किसी राष्ट्रभाषा प्रचारककी मार्ग प्रतिक्षा कर रहे हैं। मैंने गत नवम्बरसे फरवरी तक तीनों प्रदेशोंकी यात्रा की थी और पहले भी तीन दफे प्रवास कर चूका हूँ। अिन प्रदेशोंमें राष्ट्रीयताका प्रचार करनेकी पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है। हमारे बहुतसे भाअी भारतीय संस्कृतिसे दूर सुदूर जा रहे हैं, और सांस्कृतिक दृष्टिसे यह दृश्य करुण है।

मैं यहाँ नगण्य साहित्यप्रवृत्ति करता हूँ। आगे "मधुकरी" नामक पत्रिका निकालता था फिर "सिंहनाद" नामक मासिक पत्र निकालने लगा जो अबतक चलता है।

मैं लिख चूका हूँ कि मैंने किनिया, युगान्डा और टान्गान्यीकाका प्रवास किया था। अुक्त प्रवासमें मैंने बहुतसे करुण दृश्य देखे। किनिया और युगान्डाके नेटिव आगे बढ़ रहे हैं (खुशीकी बात है), मगर अुन्हें ख्यालसे श्वेतांग लोग अुनको प्रवासी भारतीय जनताके सामने खड़े करेंगे और आज हमारे और यहाँके नेटिवोंके बीचमें जो थोड़ासा अच्छा बर्ताव नजर आता है वह विलुप्त हो जायगा और हमारी दशा धोबीके कुत्ते जैसी होगी।

अनेक विद्वान, व्यापारी और कार्यकर्ताओंके साथ बहस करके हमने अेक संस्था शुरू करनेका तय किया है। अुसका नाम है "अिन्डो-आफ्रिकन लीटरेरी सोसायटी'। यह संस्था लिमिटेड होगी और अुसकी मिल्कियत ३००००० की होगी। १०० शिलिंगका १ अैसा ३००० शेअर्स निकाले हैं। कार्य शनैः शनैः आगे बढ़ रहा है। यह सोसायटी मुद्रणालयका व्यवसाय करेगी और आफ्रिकन जनतामें अुनकी भाषामें (स्वाहीली भाषा जो पूर्व आफ्रिकाकी राष्ट्रभाषा है) भारतीय साहित्य और संस्कृतिका प्रचार करेगी अेवं भारतीय जनतामें भी साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रचार करेगी।

पूर्व आफ्रिकाकी हिन्दू जनतामें जो वर्षोंसे प्रचारकार्य करते हैं वे पंडित सत्यपालजी सिद्धान्तालंकार अिस संस्थाके साहित्य नियामक हैं।

आपकी सहानुभूति अिस संस्थाके साथ होगी ही। तीन चार महीनेके बाद भारत आनेकी और भारत के विद्वद्जनोंका सहयोग प्राप्त करनेकी अिच्छा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही पलमें आपको तकलीफ़ दी। अनुचित व्यवहार हो गया हो तो क्षमा करें।

यदि मैं आपको कुछ अुपयोगी हो सकूँगा तो मैं अपनेको भाग्यवान् समझूँगा।

मेरी मातृभाषा गुजराती है, मैं किसी गुरुके चरणोंमें बैठकर हिन्दी सीखा भी नहीं हूँ अिसलिये यदि किसी जगह पर अविनय हो गया हो तो क्षमा करें।

प्रत्युत्तर मिलनेकी आशा रख सकता हूँ? हवाअी डाकमें पत्र डालनेसे बहुतसी सुविधाअें मिलती हैं।

आपका कृपाकांक्षि,
रामभाअी त्रिवेदी

प्रधान-मंत्रीकी ओरसे

हिंदी या हिंदुस्तानी?

३ अगस्तके हरिजन-सेवकमें श्रीमती पेरीन बहन कैप्टनकी अेक चिट्ठी छपी है। आप लिखती हैं—

दिल्ली रेडियो पर मुझे यह सुनकर बड़ा दर्द और शर्म मालूम हुअी कि विधान-सभाके कुछ अपने ही लोग हमारी अुस राष्ट्रभाषाको गद्दीसे अुतारना चाहते हैं जिसके लिये हम बरसोंसे लड़ते रहे हैं। सबसे ज्यादा चोट लगाने वाली बात तो यह है कि कांग्रेसके कअी पुराने लोग भी आज जिस तरह अपनी दिमाग खो बैठे हैं कि जिस चीजको अुन्होंने हजारोंसे बनाया, जिसे प्यारसे अपनाया, अुसीको तोड़ने पर अुतारू हो गये हैं। मुझे आशा थी कि हमारे बड़े बड़े नेता तो बुद्धिमानी और राजनीतिसे काम लेंगे .....।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी लम्बी है। हमने अुसके आरम्भकी कुछ पंक्तियाँ भर दी हैं। श्रीमती पेरीन बहन कैप्टनने राष्ट्रभाषाके लिये बहुत कार्य किया है। हमें हार्दिक दुःख है कि वह हिन्दुस्तानीको लेकर कुछ कटुर हो गअी हैं। अभी अुस दिन वे वर्धा आअी थीं। स्टेशन पर भेंट हुअी। मैंने शिकायत की—आज वर्धा आअी और हमारे राष्ट्रभाषा भवनको बिना देखे जा रही हैं।—"मैं तब तक नहीं आअूंगी जब तक हमारा काम पक्की नींव पर खड़ा नहीं हो जाता। तुम्हारे अिस पुराने कामके भी हमारा नया काम जम नहीं पा रहा है।" ये वाक्य अंग्रेजीमें ही कह गये थे। अनुवाद अनुवाद ही होता है। श्रीमतीजीमें विनोदकी कमी नहीं है। आशा है वे हमें अपना स्टेशन पर का यह वाक्य अुद्धृत करनेके लिये क्षमा करेंगी।

हमारा निवेदन है —

[१] राष्ट्रभाषा गद्दी परसे नहीं अुतारी जा रही है। राष्ट्रकी सच्ची राष्ट्रभाषा हिन्दी अंग्रेजीको गद्दी परसे अुतार कर अुसकी जगह लेने जा रही है।

[२] कांग्रेसके पुराने लोगोंने अपना दिमाग नहीं खो दिया है। वे साम्प्रदायिकताकी राह छोड़ कर राष्ट्रीयताकी राह चलने जा रहे हैं।

[३] बड़े बड़े नेताओंने वर्षों "राजनीति" से काम लिया ही है। अुसका परिणाम वे देख चुके। अब वे जो अुचित है वही करने जा रहे हैं।

श्रीमती पेरीन बहन कैप्टनकी यह चिट्ठी अंग्रेजीमें ही लिखी गअी है। 'हरिजन सेवक' में बापूने अुसका जो अुत्तर दिया है, वह भी मूलरूपमें अंग्रेजीमें ही लिखा गया है।

अंग्रेज तो जा रहे हैं। अैसा लगता है कि वे अपनी अंग्रेजीको देशके कुछ सम्मान्य लोगोंके पास धरोहर छोड़े जा रहे हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा डाक-घर

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका बाहरसे जितना सम्बन्ध है, वह पत्र, तार, डाक द्वारा ही है। वर्धामें सबसे अधिक डाक राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी होती है। किन्तु, क्योंकि पिछले वर्ष तक समितिका अपना डाक-घर ही नहीं था, अिसलिये डाकघर भी कैसे होता? अिस वर्ष डाक विभागके अधिकारियोंकी सहानुभूतिसे सिंधी-नगरके लिये अेक पोस्ट-आफिस खुला है और अुन्होंने कृपापूर्वक अुसे समितिके भवनमें ही खोल दिया है। हम अुनके कृतज्ञ हैं। हम चाहते थे कि वे हमारी समितिके ही लिये हमें अेक 'राष्ट्रभाषा डाकघर' दे देते। कुछ विशिष्ट कारणोंसे वे अैसा करनेमें असमर्थ रहे हैं। हम भी आम ही खाना चाहते हैं, पड़े गिनना नहीं। राष्ट्रभाषा प्रचार समितिमें पत्र भेजनेका पता थोड़ा लम्बा हो गया है—

डाक-घर — सिन्धी-नगर,

वर्धा (सी. पी.)।

समितिका कार्यालय स्टेशनसे कुल दस मिनटकी दूरी पर होते हुअे भी वर्धा म्यून्सिपालिटीके बाहर सिन्धी-प्लाट नामके गांवमें पड़ता है।

सिन्धी प्लाटस् नाम किसीको भी जँचता नहीं। अधिकारियोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे सिन्धी-प्लाटस्को सिन्धी-नगर बना दें।

जिस प्रकार अलाहाबादके नाम प्रयाग चलता है, अुसी प्रकार हमें कुछ समय तक सिन्धी प्लाटस् को निजी तौर पर सिन्धी-नगर मान कर काम चलाना होगा।

वर्धा-गंज तथा वर्धाके डाक खानोंनें वर्षों तक हमें जो सहयोग दिया है, अुसके लिये हम अुनके कृतज्ञ हैं। भविष्यमें भी कुछ न कुछ कष्ट तो हम अुन्हें देते ही रहेंगे।

आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार्जिलिंग अञ्चलमें हिन्दी

(ले०-जनार्दन चतुर्वेदी 'जन' रघुनाथपुरी "विशारद" प्रचारक राष्ट्रभाषा
अवं हिन्दी अध्यापक कार्सियांग)

पार्वतीय दार्जिलिंग अञ्चल बंग प्रदेशका प्रमुख स्थान है। यहाँ ग्रीष्मकालमें गतशीत अवं भावी वर्षका बड़ा मनोहर दृश्य दिखाओ पड़ता है यही कारण है कि प्रान्तीय गवर्नर महोदय तथा अन्यान्य धनाढ्य सज्जन यहाँ जलवायु परिवर्तन निमित्त आते हैं। यह भाग मुख्य चार भागों दार्जिलिंग, कर्सियांग, कालिम्पोंग और शिलीगुड़ीमें विभक्त है। यहाँ निवासियोंकी पार्वतीय भाषा (नेपाली) चारों भागोंमें पूर्ण रुपेण है तथा ही अन्यान्य सम्प्रदाय जैसे बंगाली अवं हिन्दी भाषाभाषिके कारण बंगला अवं हिन्दीका स्थान भी अेक शिखर तक है।

अिस अञ्चलमें अंग्रेज भी काफी संख्यामें हैं। अतः अंग्रेजीका काफी प्रचार है। यहाँके शिक्षा विभागीय स्कूल दो हिस्सेमें विभक्त है (१) यूरोपियन स्कूल्स (२) भारतीय स्कूल्स। प्रथमके कतिपय स्कूलों का प्रबन्ध मिशनरी अवं कतिपयका प्रान्तीय सरकारके अधीन है द्वितीयके कतिपयका प्रबन्ध सरकार स्वतः करती है तथा कतिपयको सहायता प्रदान कर जनता द्वारा कराती है। दोनोंके निरीक्षक (अिन्सपेक्टर) पृथक पृथक हैं। भारतीय हाअीस्कूल कलकत्ता विश्वविद्यालयसे सम्बन्धित अवं यूरोपियन स्कूल्स केम्ब्रिज-नियमाबद्ध है। दार्जिलिंगके गवर्नमेन्ट हाअीस्कूलमें प्रान्तीय भाषा नेपाली, हिन्दी, बंगला, अुर्दू तथा तिब्बती को स्थान प्राप्त है पर कर्सियांगके ब्रिटोरिया गवर्नमेन्ट हाअीस्कूल, डाअूहिल ट्रेनिंग कालेजमें नेपालीको छोड़ हिन्दी बंगलाको स्थान है। कालिम्पोंगके स्कूलोंमें दार्जिलिंग कर्सियांग जैसा ही है पर शिलीगुड़ी हाअीस्कूलमें बंगलाको ही प्रमुख स्थान है। कर्सियांगके अन्य हाअीस्कूलों– पुष्परानी राम मेमोरियल, सन्त अलफन्सस, सन्त जोसेफ गर्ल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाली, हिन्दी, बंगला और अुर्दूको भी स्थान है। कार्सियांगमें हिन्दी प्रचारका श्रेय भूतपूर्व हिन्दी अध्यापक सन्त अलफन्सस अेच. आ. स्कूल अेवं वर्तमान हिन्दी शिक्षक गोथल्स मेमोरियल यूरोपियन स्कूल अेवं कार्सियांग म्यूनिसिपल कमिश्नर श्रीयुत मणिलाल गुप्त 'विशारद' को है जिन्होंने कलकत्ता विद्यालयसे पत्र-व्यवहार कर संस्कृतके बदले हिन्दी द्वितीय भाषा रखी जिससे नेपाली छात्र विशेष योग्यतापूर्वक पास किअे। अिस नीतिको विश्वविद्यालय परीक्षामें प्रविष्ट होनेवाले छात्र खूब विस्तृत किअे। प्रमाणस्वरूप आज भी नेपाली मातृभाषा पढ़नेवाले छात्र अधिकांश द्वितीय भाषा हिन्दी ही पसंद करते हैं।

वर्तमान समयमें कलकत्ता विश्वविद्यालयने नेपाली, हिन्दी, बंगला अेवं अंग्रेजी विषयोंको छोड़ शेष सभी विषयोंके प्रश्नपत्रोंको हिन्दीमें लिखनेकी अनुमति प्रदान कर हिन्दीको गौरवान्वित किया है। जिससे नेपाली छात्र अुत्साहित हो हिन्दीकी ओर काफी अग्रसर हो रहे हैं। अिस अञ्चलके सिनेमाने भी हिन्दी खेल दिखाकर काफी प्रचार किया है। हिन्दीकी प्रमुख संस्थाओं जैसे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, हिन्दी विद्यापीठ देवघरकी परीक्षाओंके केन्द्र हैं जहांसे काफी संख्यमें छात्र प्रविष्ट हो सफलता प्राप्त करते हैं। यहाँके पार्वतीय सज्जन हिन्दी बड़े ही प्रेम और श्रद्धासे बोलते समझते तथा पढ़ते हैं। मुझे भी प्रचार-कार्यमें काफी सहायता मिल रही है अतः अिसके लिअे धन्यवाद दिअे बिना नहीं रह सकता।

हमारी नजरोंमें

अजित—ले. श्री. मैथिली शरण गुप्त, प्रकाशक—**साहित्य सदन** चिरगांव, झांसी, पृष्ठ संख्या १०९ मूल्य १।)

गुप्तजीने अपनी अधिकांश कृतियोंमें अतीतको ही चित्रित किया है किन्तु 'अजित' में कविने वर्तमानकी ओर दृष्टि फेरी है। अैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है कि वर्तमान कालकी विषय-समस्याओंने कवि को "आजकी बात" लिखनेको बाध्य किया है। हमारे आये दिनकी समस्याओंको साहित्यमें अधिक से अधिक स्थान मिले– यह वांछनीय भी है।

खंड काव्यका 'अजित' मुख्य पात्र है और आत्मकथाके रूपमें पुस्तक लिखी गअी है। अपने कारावासकी अवधिमें गुप्तजीने जेल-जीवनका निकट से अध्ययन किया था। प्रस्तुत पुस्तकमें जेल-जीवनका ही नहीं भारतके जन-जीवनका भी सुन्दर और स्वभाविक चित्र अुपस्थित किया गया है। पुलिसके अत्याचारोंका शिकार बनकर कैसे अेक भला मनुष्य भी बुरा बन जाता है, "अजितमें" देखा जा सकता है।

गुप्तजीके मतसे देश-दुर्दशाका मूल हेतु अंगरेजोंका दुःशासन है (जो सौभाग्यसे अब समाप्त हो रहा है), शासन की सुव्यवस्था (?) पर अच्छा व्यंग किया गया है—

यही हमारा अहोभाग्य है अिस शासन में।
लेते हैं हम सांस बिना कर दिये पवन में॥

पुस्तककी भाषा सरल और प्रसाद गुण पूर्ण है।

नकुल—

लेखक-**श्री सियाराम शरण गुप्त**; प्रकाशक-**साहित्य सदन** चिरगांव झांसी; पृष्ठ संख्या १०१, मूल्य १॥)

नकुल अेक खंड काव्य है। अुसका आधार महाभारतका वनपर्व है। अपनेसे छोटेके लिये बड़ोंको अपना 'स्व' छोड़ना चाहिये—यही अमर अुपदेश अिस खंड काव्यके द्वारा देनेका प्रयत्न किया गया है। अेक पंक्तिमें कहा जाय तो पुस्तकका सार कविके ही शब्दोंमें अिस प्रकार है—

"वही हमारे लिये बड़े, हमसे जो छोटे"

और अिन छोटोंके लिये कविके कथनानुसार—

छोटेके ही लिये बड़ेसे बड़ा समर्पण।
किया जाय जब, तभी धर्म-धनका संरक्षण॥

सरल सत्य यह तदपि हाय, अुलटे पर मरती।
गरल ग्रहण कर निज विरुद्ध जगती आचरती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना है यदि हमें यहाँ यह पाप निवारण
तो....करना होगा बड़ा त्याग निज सुख जीवीको ।
होना होगा स्वयं समर्पित गाण्डीवी को ॥

पुस्तककी भाषा सरल और सुबोध है : अिस नव रचनाके लिये श्री हरिराम शरण जी हमारी बधाअीके पात्र हैं ।

विनय पीयूष—
लेखक- **महात्मा श्री अंजनीनन्दन शरणजी**; प्रकाशक— **पीयूष धारालय बड़ौदा** ; पृष्ठ सं. ३८० ; मूल्य ५)

गोस्वामी तुलसीदासके समस्त ग्रंथोंमें यद्यपि रामचरित्र मानसका स्थान सबसे अूँचा है तथापि साहित्यिक दृष्टिसे 'विनय पत्रिका' का स्थान अुससे भी अूँचा ठहरता है। ३०० वर्षसे तुलसीके ग्रंथोका अनुशीलन होता आ रहा है। ग्रंथोंकी अनेक टीकायें तैयार की गअी हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी विनय पत्रिकाकी टीका ही है । अिस ३८० पृष्ठके ग्रंथोमें विनय पत्रिकाके केवल अेकसे लेकर २४ पदोंकी व्याख्या अत्यन्त विस्तारके साथ दी गअी है । 'विनय पीयूष' की यह "पहली हिलोर" हैं ।

प्रत्येक पदकी अेक अेक पंक्ति और अुसके अेक अेक शब्दकी व्याख्या बड़े विस्तारसे की गअी है । सन्दर्भके तौर पर अन्यान्य ग्रंथोंसे विविध जानकारी प्रचुर मात्रामें प्रस्तुत की गअी है । 'विनय पत्रिका'के रसास्वादमें घुसनेके लिये अिस ग्रंथका अध्ययन करना ही पड़ेगा ।

'विनय पीयूष'की आगेकी हिलोरोंकी प्रतीक्षा रहेगी ।

आश्रम भजनावली —
सम्पादक- **स्व. नारायण मोरेश्वर खरे**; प्रकाशक-**नवजीवन प्रकाशन मन्दिर** । मूल्य ॥)

आश्रम भजनावलीकी १६ वीं आवृत्ति है । पुस्तककी लोकप्रियता अिसीसे सिद्ध है। सन्तोंके सुन्दर पदोंका यह संग्रह प्रशंसनीय है ।

रा. दुबे

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना—

हिन्दीकी आड़ में

श्री० रमाकान्त पाण्डेय

[गत महीनेकी १२ तारीखको नागपुरमें "माँ" नामसे अेक नाटक खेला गया था। श्री. रमाकान्त पाण्डेय द्वारा भेजी हुअी अुसकी अेक आलोचना प्रकाशनार्थ मिली है। हमें हार्दिक दुःखके साथ अुस आलोचनाका निम्नलिखित अंश प्रकाशित करना पड़ रहा है। यदि नाटकके संचालकोंकी ओरसे अिस सम्बन्धमें कोअी वक्तव्य मिला तो हम अुसे सहर्ष स्थान देंगे। पाठक तब तक कोअी सम्मति न बनावें।—सं]

ख्वाजा अहमद अब्बास का अुर्दू नाटक 'जुबेदा' 'माँ' नामसे किसी अनाम नाट्य मंडली द्वारा, नागपुरकी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी सहायताके लिये शनिवार ता. १२ जुलाअी ४७ को खेला गया। नाटकका अभिनय नागपुरके वी. टी. आई. हॉल में हुआ और अुसकी अधिकांश पात्रियाँ राष्ट्रभाषाके धन्तोली वर्गकी छात्राअें थीं। संचालन और संगठनका भार जबकि श्री. शारदादेवी शर्माके कंधोंपर था और पात्रोंमें अधिकांश अुनकी छात्राअें थीं तब भी अभिनयके लिअे अेक अुर्दूका नाटक चुना गया। लोग 'जुबेदा' नामसे आकर्षित नहीं होंगे, यह सोचकर अुसके नामका हिन्दीमें अनुवाद किया गया 'माँ"! परन्तु नाटककी अुर्दू भाषाका हिन्दीमें अनुवाद करना शायद अुचित नहीं समझा गया। नाटकका विज्ञापनपत्र निकला अंग्रेजी-में और ता. ११ जुलाईके मराठी 'तरुण भारत'के 'चित्रपटांवर ओझरती नजर' नामके स्थाअी स्तंभ में तिसरे पृष्ठपर श्री. बिहारी द्वारा लिखी हुअी नाटककी परिचय-कथा छपी है—नाटकमें हिन्दू परिवारकी 'माँ' का करूण चित्र है। अिसे हरअेक हिन्दू स्त्रीको अवश्य देखना चाहिये!— जबकि वास्तवमें वह अेक मुस्लिम परिवारकी कथा है। लोगोंमें टिकट कटाते हुअे खुले आम प्रचार हुआ कि यह राष्ट्रभाषाकी मददके लिये है, नाटक हिन्दीमें है, अुसका नाम 'माँ' है, और राष्ट्रभाषावालेही अुसे रंगमंचपर ला रहे हैं। परन्तु नाटक आरंभ होनेसे पहले स्टेजपर जाहिर किया गया कि 'नाटक' राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नहीं खेल रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे 'राष्ट्रभाषा'के विश्वासपर टिकिट खरीदनेवालोंको बहुत बड़ा आघात हुआ।

देश या समाजकी आजकी स्थिति और उपस्थित जनताको नाटकके द्वारा न कोअी कला मिली न जीवनकी किसी आवश्यक समस्याका अुद्घाटन ! चाहते तो संचालकोंको हिन्दीमें सब तरहके नाटक मिल जाते परंन्तु हिन्दीके हिमायती शर्मा दम्पतिने न जाने क्या सोचकर अुर्दूका दामन पकड़ा तथा हिन्दीकी आड़में जुबेदाका संचालन किया– समझमें नहीं आता। कमसे कम हिन्दी को तो अुनसे अैसी आशा नहीं थी।

प्रान्तीय हलचलें

बंगाल–

कर्सियांग– १ अगस्त ४७ को हिन्दी प्रेमी सज्जनोंकी अेक गोष्ठी श्री० आदित्यप्रसादजीके वासस्थान पर हुअी। गोष्ठीके सभापति श्री० शिवकुमार त्रिपाठी चीफ आर्गनाअिजर दार्जिलिंग चेम्बर आफ कामर्स थे। नागरी लिपि अेवं भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो, अिस विषय पर श्री० अेम. अेल. गुप्त "विशारद" (यूरोपियन गोथल्स मेमोरियल स्कूलके हिन्दी अध्यापक अेवं कर्सियांग म्यूनिस्पल कमिश्नर) श्री० जे. चतुर्वेदी 'जन' रघुनाथपुरी (प्रमाणित प्रचारक राष्ट्रभाषा अेवं अध्यापक पुष्परानी राय मेमोरियल हाअी अिंगलिश स्कूल) अेवं नवागन्तुक प्रसिद्ध राष्ट्रसेवी, राष्ट्रभाषाके प्रेमी श्री० पं० देवमुनि त्रिपाठी (जनरल सिक्रेटरी, बलिया पश्चिमी मण्डल कांग्रेस कमेटी) के अति ही महत्वपूर्ण भाषण हुअे। अन्तमें सभापति त्रिपाठीजीने जोरदार शब्दोंमें अुर्दू लिपिकी क्लिष्टता बताते हुअे हिन्दीको ही अिस बंग प्रान्तकी सार्वजनिक बोल चाल की भाषा बनानेके लिअे ओजपूर्ण भाषण दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुत्कल—

प्रान्तभरके सभी स्कूलोंके ६ ठे से ९ वें दर्जे तक हिन्दी अनिवार्य रूपसे पढ़ानेकी सुविधाकी दृष्टिसे अुत्कल सरकारने सभी जिलोंके शिक्षकोंको लेकर सात शिक्षा केन्द्र खोले थे। यह शिक्षण मअी, जून दो मासके लिअे था और पाठ्य 'प्रवेश' तक का था। प्रत्येक केन्द्रका विवरण यों है:—

कटक—अिस जिले भरके हाअीस्कूल तथा मिडल स्कूलोंके ११३ शिक्षक स्थानीय रेवेन्सा कालेजके शिक्षण शिबिरमें सम्मिलित हुअे थे। राजस्वमन्त्री मान्यवर श्री. नवकृष्ण चौधुरीजीने अिस केन्द्रका अुद्घाटन किया था और शिक्षणका भार था पंडित श्री. वनमाली मिश्र 'विशारद' तथा श्री. गोविन्दचन्द्रजी मिश्र 'राष्ट्रभाषा रत्न' के अूपर। १०५ परीक्षामें शामिल हुअे थे और १०१ अुत्तीर्ण हुअे।

कटक महिला केन्द्र—अिस केन्द्रमें विभिन्न जिलोंसे १५ शिक्षार्थिनियाँ शामिल हुअी थीं। श्रीमती सरस्वती पाणिग्राहीजी अध्यापनका काम कर रही थी। परिक्षामें १५ मेंसे १४ अुत्तीर्ण हुअीं।

पुरी—यहाँका शिबिर पुरी कालेजमें खोला गया था। पण्डित श्री. नरसिंहजी नन्दशर्मा पढाते थे। प्रिन्सिपल श्री. गिरिजाशंकर रायने अिस केन्द्रका अुद्घाटन किया। ५१ शिक्षक केन्द्रमें आये थे। परिक्षामें ४८ बैठे और ४६ अुत्तीर्ण हुअे हैं।

ब्रह्मपुर—गंजाम जिलेके ५२ शिक्षकोंको लेकर ब्रह्मपुरमें शिक्षक शिबिर खोला गया था। श्रीयुत रामलिंगमजी के द्वारा केन्द्रका अुद्घाटन किया गया था। श्रीयुत रामसुब्बजी भारतीय के अूपर शिक्षा देनेका भार रहा। परिक्षामें ३५ बैठे और ३३ अुत्तीर्ण हुअे।

जयपुर (कोरापुट)— दस शिक्षकोंको लेकर यहाँ स्थानीय हाअीस्कूलमें केन्द्र खोला गया था। जजसाहब श्री. विप्रचरणदासजीके सभापतित्वमें जयपुरके महाराजा साहेब द्वारा अिस केन्द्रका अुद्घाटन मनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। श्री. वासुदेव मिश्र अिस केन्द्रमें शिक्षा देते थे। परिक्षामें ८ पास हुअे और ७ अुत्तीर्ण हुअे हैं।

बालेश्वर–स्थानीय कालेजमें जिलेभरके ४९ शिक्षक ट्रेनिंगके लिअे एकत्र हुअे थे। प्रिन्सिपल श्री. किशोरी मोहनजी द्विवेदीने केन्द्रका अुद्घाटन किया था। प्रचारक श्री नरसिंहदासजी शिक्षा देते थे। परिक्षामें ४५ बैठे और ४२ अुत्तीर्ण हुअे हैं।

सम्भलपुर–सम्बलपुर जिलेके ३४ शिक्षकोंको लेकर सम्बलपुर कालेजमें शिक्षणशिबिर खोला गया था। प्रिन्सिपलजीने अुद्घाटन किया था और पं. लक्ष्मीनारायणजी मिश्र अेम्. अेल्. अे. ने अुद्बोधन भाषण दिया था। यहाँ का अध्यापन कार्य पं. श्रीरामकृष्णजी शास्त्री कर रहे थे। परिक्षामें ३० बैठे थे और २५ अुत्तीर्ण हुअे।

बीच बीचमें हिन्दी जानने वाले सज्जन शिबिरोंमें जा जाकर अपना अपना भाषण देते थे। अिससे शिक्षार्थियोंको काफी फायदा पहुँचा। प्रान्तीय सन्चालक पं. श्री. अनसूयाप्रसादजी पाठकने हर केन्द्रका निरीक्षण किया था। सब केन्द्रोंका कार्य खूब सन्तोषजनक रूपसे चल रहा था।

सिन्ध–

सिन्धप्रान्तका जुलाअीका कार्य-विवरण

इस मासमें मीरपुर खास, टण्डो अलहयार और बदीनमें नअे प्रचारक नियुक्त किये गये जिनका खर्च गांव वालोंने दिया। मीरपुरसे २८४, टण्डो अलहयारसे १७०, और डिग्रीसे २०, रुपये पं. इंद्रदेव फण्डके लिये इकट्ठे किये गये। वर्धा समितिसे भी ५०, रुपये श्री इन्द्रदेव फण्डमें मिले। पं. दौलतरामने हैदराबादके स्कूलोंमें कई व्याख्यान दिये।

श्री. देवदत्तजी प्रातिदिन ९ से २ तक कार्यालयका कार्य करते हैं और शामके ४से रातको ९ तक अध्यापन कार्य करते हैं। अिनकी देखरेखमें ८ और केन्द्र हैदराबाद में चलते हैं। सितंबरकी परीक्षाओंके लिये ४०८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियोंने आवेदन पत्र भरे। कराची नगरमें श्री. सूर्यप्रकाशजी की देख रेखमें १० अध्यापक और अध्यापिकाअें वर्ग चलाती हैं। कुल ९८० विद्यार्थियोंने आवेदन पत्र भरे। सक्खर शहरमें पांच वर्गोंका संचालन श्री. बृहस्पतिजी करते रहे। आगामी परिक्षाओंमें २०५ विद्यार्थी बैठ रहे हैं। श्री. कृपाप्रसादजीने कोटडी --हूसडी और मांझूमें अध्यापन कार्य किया। ३० विद्यार्थियोंने लाभ अुठाया। अिस मास में श्री. परचारामजीने गज्ही खेरो, जेकब-आबाद-मीरपुर (ठुल) और गज्हियासीनमें अध्यापन कार्य किया। कुल ६६ विद्यर्थियोंने लाभ अुठाया। श्री. किशिनचन्दजीने मीरपुर खासमें अध्यापनका कार्य किया। कुल ३६ विद्यार्थियोंने लाभ अुठाया। श्री. अुत्तम रामजीने मीरपुरखासमें ६२ आवेदन पत्र भराये। सामारो और जेकबआबार में विद्यार्थियों को पढ़ाया। कुल ६० विद्यार्थियोंने लाभ लिया।

अन्य—

मालवा—१ अगस्त १९४७ की प्रातः 'मालवा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जावरा' ने बाल जीवन सुधार पाठशालामें हिन्दी-दिवस बडे अुत्साह पूर्वक मनाया। अिसमें 'हमारे राष्ट्रकी भाषा हिन्दी ही होगी' विषयके अन्तर्गत राष्ट्रभाषका महत्व, हिन्दीकी विशेषताअें, राजनैतिक समस्या और आजकी माँग विषयों पर सार गर्भित भाषण हुअे।

गुजरात—

अहमदाबाद—ता. ३-८-४७ रविवारको हँसराज प्रागजी हॉलमें अर्धवार्षिक सामान्य सभा और १९४७ फरवरीकी परीक्षामें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंके प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव अहमदाबादके अग्रगण्य नागरिक श्री माणेकलालके अध्यक्षपदमें हुआ। मुख्य वक्ताने राष्ट्रभाषाका महत्व समझानेके लिये व्याख्यान दिया और फिर राष्ट्रभाषा जूथके प्रधान-मंत्रीने अब तक किये हुअे कार्योंका निवेदन किया।

बादमें सामान्य सभाका कार्य शुरू हुआ और अुसमें कतिपय प्रस्ताव पास हुये जिनमें मुख्य ये हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्युनिसीपालिटीके बारेमें

अहमदाबाद शहरमें बसनेवाले अितर प्रान्तीय लोगोंकी सुविधाके लिये आम रास्तों परके, पोलोंके तथा सर्व साधारणके अुपयोगी स्थानोंके नाम नागरी तथा प्रान्तीय लिपिमें लिखनेकी व्यवस्था करने स्थानीय म्यु. को यह सभा प्रार्थना करती है।

जनताके बारेमें

देश आज़ाद होतेहां अंग्रेजी भाषाके महत्वको क्रमशः राष्ट्रभाषाको महत्व देनेके लिये अन्तर्प्रान्तीय पत्र-व्यवहारमें राष्ट्रभाषाका अधिकसे अधिक प्रयोग करने तथा पता नागरी लिपिमेंही लिखनेके लिये यह सभा जनतासे आग्रह करती है।

वर्धासे संयुक्तिके बारेमें

राष्ट्रभाषा जूथको आज अेक वर्ष पूरा होता है। यह संस्था राष्ट्रभाषाका प्रचार सेवा भावसे करती है। और राष्ट्रभाषा प्रेमियोंकी अेक बडी संख्याका प्रतिनिधित्व रखती है। अुपरांत प्रत्येक परिक्षामें अधिकाधिक संख्यामें परीक्षार्थियोंको बैठाती है। साथहीसाथ राष्ट्रभाष प्रचारके अन्य कार्यभी समय समय पर अिसकी तरफसे किये जाते हैं अुपरोक्त बातोंको लक्षमें लेकर रा. प्र. स. वर्धा अिस संस्थाका अपने साथ सीधा संबंध स्वीकृत करे अैसी यह सभा नम्र प्रार्थना करती है।

ता. कः— पत्रव्यवहार निम्नलिखित पतेपर करनेमें सुविधा रहेगी।

नवनीतशाह, मंत्री, राष्ट्रभाषा जूथ १५२८, वसंत शेरी मांडळीकी पोल, अहमदाबाद

प्रमाण पत्र वितरणोत्सव.

आनन्द— अिस केन्द्रके व्यवस्थापकोंने अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके प्रमाणपत्रोंकी वितरण-विधि की। इस समारंभके सभापति गुजरात प्रा. रा प्रचार समितिके मंत्री श्री. जेठालालजी जोशी थे। समारंभ बड़े अुत्साहसे हुआ। श्री. जोशीजीने प्रासंगिक प्रवचन किया। शहरके प्रतिष्ठित व्यक्ति अुपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रीका दौरा–अिसबार मंत्रीजीने गुजरातके हालोल और कंडा केन्द्रोंका दौरा किया और प्रचारकों और केन्द्र व्यवस्थापकोंसे प्रचारके बारेमें बातचीत की। शामको राष्ट्रभाषासे सम्बन्धित सभाअें रक्खी गई, जिनमें मंत्रीजीने भावी भारतमें राष्ट्रभाषाके स्थान पर प्रकाश डाला। श्री. विष्णु प्रसादजी भट्ट, प्रचारक भरूच भी अिसी सिलसीलेमें राजपीपला केन्द्रको गये और प्रचार सम्बन्धी वार्तालाप किया।

शोक प्रस्ताव–रतनपुर केन्द्रके केन्द्र व्यवस्थापक श्री सोमालाल कालीदास शाहके दुःखद अवसान पर केन्द्रने शोक प्रस्ताव पास किया। श्री सोमालालजी रतनपुरके सार्वजनिक कार्य कर्ता और समाज सेवक थे। अुनके अवसानसे अिस केन्द्रको काफी क्षति हुअी।

भुज (कच्छ)–कच्छके पाटनगर भुजमें राज्यके केलवणी अधिकारी श्री द्विवेदीजीके वरद हस्तोंसे बाल मंदिरमें भुज और सदन वाडी केन्द्र के सफल विद्यार्थीयोंके प्रमाण पत्र प्रदान विधि समाप्त हुआ। केन्द्र व्यवस्थापक श्री सोनीने केन्द्रके विकासका अितिहास सुनाया और प्र. प्रचारक श्री कारकन्दरावजीने राष्ट्रभाषाका महत्व बताया।

महाराष्ट्र

पुणें—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागके आदेशानुसार महाराष्ट्रमें निम्नलिखित केंद्रोंमें ता० १, २ और ३ को 'हिंदी दिन' मनाया गया।

[१] महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणें और हिन्दी प्रचार संघ, पुणेंकी ओरसे नुतन मराठी विद्यालय हायस्कूलमें दि. १-८-४७ को श्री० प्रा० श्रीपाद भाटेजी M. A. की अध्यक्षतामें–प्रमुख वक्ता–श्री. मौलिचंद्रजी शर्मा प्रधान मंत्री, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग और श्री० पं० ग० र० पैशीपायनजी।

[२] बालमुकुंद विद्यालय–रविवार पेठ पुणेंमें श्रीमान् शामसुंदरजी आगरवाल की अध्यक्षतामें प्रमुख वक्ता श्री० श्रीनिवास रामबिलास मुंदडाजी (सा. विशारद) और श्री० प्रा. प्र. रा. भुभटकरजी साहित्य रत्न, श्री० पं. मु. डांगरेजी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३] नूतन मराठी विद्यालय हायस्कूल, पुणेकी ओरसे श्री० भ. ग. कानडेजीकी (सा. विशारद) अध्यक्षतामें प्रमुख--वक्ता श्री० भ. म्यं. पंडित, श्री. वि. द. देवधर, बा. गो. परांजपे।

[४] ता० १-७-४७ को औंध (सातारा) की पाठशालामें श्री० दादोपंत कुलकर्णीजी शिक्षा विभाग प्रमुख संचालकजीकी अध्यक्षतामें प्रमुख-वक्ता श्री० गोपाल नीलकंठ दांडेकरजी और शरयू गुर्जर।

[५] **कऱ्हाडमें** ता. १-८-४७ को श्री० पं. सातवलेकरजीकी अध्यक्षतामें।

[६] **पंढरपुरमें** श्री० अं. गो. कागदेजीने--हिंदी वर्गकी ओरसे ता. १-८-४७ को और ता. २-८-४७ को वी. जे. हायस्कूल और प्राथमिक पाठशालामें हिंदी दिन मनाया।

[७] **हड़पसर** (पुणें) में सहायक समितिकी ओरसे वहाँकी मिडलस्कूलके मुख्याध्यापक श्री० क. वि. अगारजीने अपनी पाठशालामें श्री. म. स. मोरेजी, (महाराष्ट्र प्रांतिक काँग्रेस कमिटीके सदस्य) की अध्यक्षतामें मनाया।

[८] **साखरवाड़ी** (जिला सातारा) के हिन्दी प्रेमी मंडलकी ओरसे ता. १-८-४७ को यहाँके अतिथि गृहमें श्री० के. ग. आपटेजीने 'हिंदी-दिन' मनाया। सभामें निम्नाशयका प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। प्रस्ताव "यह सभा केंद्रीय तथा प्रांतिक सरकारोंसे अनुरोध करती है कि वे कार्यमें सभी विभागोंमें अंग्रेजीके स्थानपर राष्ट्रभाषा हिंदी और राष्ट्रलिपी देवनागरी का ही व्यवहार करें"।

[९] श्री० बा. ग. कुलकर्णीजी संचालक 'पूना हिंदी विद्यालयने अपनी वर्षगाँठके अवसर पर 'हिंदी दिन' ता. १-८-४७ को श्री. पं. धोंडोजीकी अध्यक्षतामें मनाया।

[१०] **सालोद कोळवद**—श्री. बन्हाटेजी हेडमास्टर साहबकी अध्यक्षतामें मराठी पाठशालामें प्रमुख वक्ता—चांगदेव गणपत पाटील भा. प्रचारक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[११] **वींचूर** (जि. नासिक) की पाठशालामें केंद्र व्यवस्थापक[illegible] अध्यक्षतामें।

[१२] **मनमाडमें** श्री० पं. का. र. वैशंपायनजी–काव्यतीर्थ [illegible] अध्यक्षतामें जिला प्रचार समितिकी ओरसे मनाया गया। प्रमुख वक्ता श्री. रेवाशंकर दुबेजी और वेणुबाओी बार्सेजी।

[१३] **सागवी.** (पूर्व खानदेश)-में ता. ३।८।४७ को श्री० वि[illegible] श्रा. चौधराजी (विशारद) तथा उनके सहप्रचारकोंने बड़ी धूमधामसे मनाया।

[१४] **पाडलसा** (पूर्व खानदेश) श्री० विठ्ठल गणु पाटीलजी [illegible] अध्यक्षतामें श्री० गो० चौधरीजीने मनाया।

[१५] **गोमंतक** में भी बड़ी सफलताके साथ हिंदी दिन मनाया गया। वहाँके ओसाओी भाओी भी हिंदी प्रचारमें और सीखनेमें काफी [illegible] लेने लगे हैं।

दौंड पुना "यहाँ श्री. भिमराजी मोगल गिद्दीकरके अध्यक्षतामें [illegible] खान्देशके अनुभवी प्रचारक श्री. गीताविद मा. का. बराटेजी द्वारा १ जुलै [illegible] राष्ट्रभाषा प्रचार वर्ग खोला गया है कि जिसमें प्रारंभिकसे परिचय तक [illegible] पढाओी होती है। और सितंबर १९४७ का परीक्षामें कुल ७२ परीक्षा[illegible] तय्यार किये हैं। और अुनको श्री. भिवरावजी सहयोग दे रहे हैं।'

नशीराबाद–ता. १-८-४७ को एक सभा श्री नन्दकिशोर सुदर्[illegible] लालजी चतुर्वेदीजीकी अध्यक्षतामें हुओी। श्री. व्यवहारे गुरुजी, श्री. बा[illegible] मोहरीर, हरीकृष्णदास मेहताजी, अत्तरदेजीके राष्ट्रभाषा हिन्दी व [illegible] देवनारीके पक्षमें भाषण हुअे। अुसमें सर्व सम्मतिसे निम्न लिखित प्रस्[illegible] स्वीकृत किये गये।

प्रस्ताव–"नशीराबाद पूर्व खानदेशके प्रेमियोंकी यह सभा सर्वानुमतिसे [illegible] यह निश्चय प्रकट करती है कि यदि अिस देशकी राष्ट्रभाषा कोओी [illegible] सकती है तो वह हिन्दी। क्यों कि वह भाषा किसी भी स्वतंत्र [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्ध राष्ट्रकी प्रतिष्ठा बढ़ानेके सर्वथा योग्य है। यह सभा यह भी निश्चय
ती है की देशकी लिपी यदो कोअी हो तो वह देवनागरी। क्योंकि
ह वैज्ञानिक नियमोंके अत्यन्त अनुकुल है। अिसलिये हम भारतकी
केंद्र सरकारसे प्रार्थना करते हैं कि हिन्दी राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी
लिपी अपना कर भारतीय सभ्यता और सांस्कृतिक परंपराकी रक्षा करें।"

विदर्भ नागपूर

खामगांव जिल्हा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति:—की स्थापना ता. २७ जुलाअी को, स्थानीय हिन्दी हाईस्कूल भवनमें, तिलक राष्ट्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री. पन्थे गुरुजीकी अध्यक्षतामें, बुलडाणा जिला हि. भा. प्र. स. का पहला अधिवेशन सफलतापूर्वक हुआ। २१ सदस्यों-मेंसे १० सदस्य अिस बैठकमें अुपस्थित थे अुपस्थित सज्जनोंमें श्रीमान् भाटे साहेब अध्यक्ष म्युनिसिपालिटी, श्रीमती चाफेकर हेड् मिस्ट्रेस गवर्न, हाअि गर्ल्स हाईस्कूल, श्रीयुत सहस्रबुद्धे हेडमास्तर गवर्नमेंट हाअिस्कूल-खामगांव, श्रीयुत महाशूर हे. मा. न्यू अिरा हाअिस्कूल, श्री. नेमाजी हे. मा. हिन्दी हाअिस्कूल, पं. हृषीकेश शर्मा मंत्री, प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्र. समिति अुपस्थित थे। अध्यक्ष पन्धे गुरुजीने गत चार पांच वर्षों में जितना भी राष्ट्र-भाषा प्रचार कार्य अिस जिले में हुआ है संक्षेपमें अुसका दिग्दर्शन कराया। जिला-समिति के अुत्साही मंत्री भंवरलाल सेवकजी अपने निवेदनमें "कैसे कैसे राष्ट्रभाषा प्रेमी, रष्ट्रकर्मी और राष्ट्रीयशिक्षाधुरीण नेता श्री कानडे महाराजजी, डॉ. अेकबोटे अेम. अेल. अे., आचार्य पन्धे गुरुजी, अेडवोकेट श्री. भाटे साहब म्युनिसिपल प्रेसिडेन्ट, तथा अुपर्युक्त शिक्षा-शास्त्री व्यक्ति-योंने अपना हार्दिक सहयोग अिस समितिको देनेका वचन दिया है। अिसपर कृतज्ञता प्रकट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाका-कार्यक्रम

शनिवार ता. ६-९-४७	१०½ से १½	१ ला	प्रश्नपत्र	आधुनिक ग
,, ,,	२½ से ५½	२ रा	,,	गद्य-निबंध
रविवार ता. ७-९-४७	१०½ से १½	३ रा	,,	व्याकरण,
				विज्ञान
,, ,,	२ से ५½	४ था	,,	आधुनिक लि
सोमवार ता. ८-९-४७	१०½ से १½	५ वाँ	,,	प्राचीन पद्य
,, ,,	२½ से ५½	६ वाँ	,,	नाटक तथा
				साहित्य
मंगलवार ता. ९-९-४७	१०½ से १½	७ वाँ	,,	सा० आलोच
				और अितिहास
,, ,,	२½ से ५½	८ वाँ	,,	निबंध और फुट
				कला

परीक्षा-फल-

सितम्बर' ४७ में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परावषाओंका परिणाम फल ३१ आक्टूबरको प्रकाशित होगा।

कोविदमें लेखन-कार्य-

कोविद परीवषार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत अन्तिम तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य है। प्रत्येक लेख कम-से-कम ३ पृष्ठका होना चाहिये।

जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं अुन्हें काफी अंकोंकी हानि अुठानी पडती है। अिसलिये परीक्षार्थीको लेख आवश्य लिखना चाहिये।

आगामी परीक्षाके लिये निबन्धके विषयोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबंध लिख सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. विज्ञान और मानव. २. पराधीन सपने सुख नहीं ३. हमारे गांवोंकी समस्याएं ४. समाज और स्त्री ५. राष्ट्रलिपि और अुसकी योग्यता ६. काम वही कर सकता है जिसके पास समय नहीं. ७. साहित्य और समाज. ८. गरीबोंका भगवान तो रोटी है. ९. जनता जनार्दनका सेवक गांधी. १०. हमारी समाजिक कुरीतियाँ. ११. गांधीजीका रचनात्मक कार्यक्रम १२. समाचार पत्र ।

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रांत	नाम	केन्द्र	क्रमांक
असम	श्री. पं. धनीराम हाजरिका 'धीरेन्द्र'	पलशवाडी	१०५२
गुजरात	,, गजानन शिवनाथ पुरोहित	बडौदा	१०६३
,,	,, रवीन्द्रभाअी गो पटेल	वराड	१०६४
,,	,, जयन्तीलाल कुबेरभाअी अुपाध्याय	रतनपुर	१०६५
महाराष्ट्र	,, दिगंबर रामचन्द्र जोशी	सिन्नर	१०५३
,,	,, विनायक रघुनाथ विरुळकर	रावेर	१०५४
,,	,, रामकृष्ण मनसाराम गाजरे	जलगांव	१०५५
,,	,, हरचन्द दलपत वाघ	,,	१०५६
,,	,, पुना चिंतामन पाटील	,,	१०५७
,,	,, वेणुबाअी बार्से	,,	१०५८
,,	,, दिगंबर धोंडू काळकर	नासिक	१०५९
,,	,, माधव वासुदेव मांडवगणे	,,	१०६०
,,	सौ. विमल वासुदेव महाजन	जलगांव	१०६६
,,	श्री. चमेलीबाअी पाटील	,,	१०६७
,,	,, भास्कर मार्तंड दिक्षीत	,,	१०६८
,,	सौ. आनंदी यादव	अष्टे	१०६९

(शेष कव्हर २ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे

आप आगामी परीक्षाके सभी आवेदन-पत्र भेज चुके हैं। अपने परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये अेक निरीक्षक हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंके नाम और योग्यता साथमें भेजे गये सिफारिश पत्रपर भरकर हमारे पास वापसी डाकसे भेज दें। साथ ही जिनके नामकी सिफारिश करें अुनसे स्वीकृति-पत्र भी भरवाकर भेजें। अिसके लिये भी पत्रक साथ भेजा जा रहा है। निरीक्षकोंकी नियुक्तिकी सूचना समयपर पास पहुँच जायगी।

पैंतीससे कम परीक्षार्थीवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकेंगे।

हर निरीक्षकको प्रति दिनके लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा। प्रवेश परीक्षा आधे दिन ही होती है, अिसलिये अिसके लिये आधे दिन तक ही निरीक्षक नियुक्ति करनी चाहिये। अैसे निरीक्षकको पुरस्कार आठ आना ही दिया जायगा।

परिचयकी मौखिक परीक्षा :

प्रवेशकी मौखिक परीक्षा हटा दी गई है। परिचय मौखिक परीक्षाकी व्यवस्थाका सारा भार केन्द्र-व्यवस्थापकोंपर रखा गया है। वे ही अिसके परीक्षककी नियुक्ति और तारीख मुकर्रर करें। परीक्षकके लिये किसी स्थानीय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा। परिचय मौखिक परीक्षा छपे कार्यक्रम अनुसार साधारण परीक्षाके साथ ही ली जाय।

परिचयकी अिस मौखिक परिक्षाकी सारी व्यवस्था आप करेंगे। हम साथमें अिसके लिये प्राप्तांक भरनेके पत्रक भेज रहे हैं। ये पत्रक मौखिक परीक्षकके लिये हैं। मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही प्राप्तांक-सूची सील-मुहर करके हमारे पास भेज दें। अिस परीक्षाकी सूचना परिचयके सब परीक्षार्थियोंको दे दें।

परिचय परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक २० रखा गया है।

कोविदकी मौखिक परिक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना समयपर अलग भेजी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा जुलाई १९ की कार्यक्रम

आगामी प्रचार परीक्ष

आगामी प्रचार प[illegible] सितम्बर १९४७ को हों गी

	परीक्षा [राष्ट्रभाषा प्रचार समिति] समय	२॥ से ५॥
शनिवार ६।९।४७	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
रविवार ७।९।४७	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र ३	मौखिक
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	
मंगलवार ९।९।४७	कोविद	प्राचीन पद्य, समय ७–३० से १०–३०	
बुधवार १०।९।४७	कोविद	अुर्दू	७–३० से १०–३०
	परिचय	अुर्दू	७–३० से १०–३०

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता० ८।९।४७ [illegible] सवेरे होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. बा. ८२८

व्यवस्थापकोंसे

सभी आवेदन-पत्र भेज चुके हैं।
प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये
नाम और योग्यता साथमें भेजे
राकसे भेज दें।

गत प

आगामी ... नाम बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है।

प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविदके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं।

ऊपर लिखी चारों परीक्षाओंके अेक अेक समयके प्रश्नपत्रोंके सेट तैयार किये गये हैं। प्रत्येक सेटका दाम पाँच आना है। प्रश्नपत्रोंका सेट मँगाते समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये।

प्रत्येक फुटकर प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है।

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

मुद्रक—सुमन वाङ्मयालय, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई १९४७

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

ष ६] वर्धा. —१९४७

रहा

र्स)

राष्ट्रभाषा

हिन्दी साहित्यकारों तथा राष्ट्रभाषा
प्रचारकोंको चाहिये कि वे अपना
कार्य हीन न समझें। वे जो
महान् कार्य कर रहे हैं—
उसके आधार पर
राष्ट्रीय नेता खड़े
हो सकते
हैं—

—श्री वियोगीहरि

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. नया विहान आ रहा
२. वह महान् बौद्ध
३. हिन्दी ही
४. राहुल

आगामी नाम बैठनेवाले
क्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र
देख लेना लाभप्रद होता है।

— परीक्षार्थी ध्यान दें —

परीक्षा फल प्रकाशित होनेके पश्चात् अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे जो पत्र-व्यवहार करते हैं उनमें प्रायः अेक ही बात रहा करती है—"परीक्षा के लिये खूब तैयारी की थी, प्रथम श्रेणीमें पास होनेकी आशा थी। परीक्षकने अवश्य कड़ाअी की है या गलती की है, फिरसे अुत्तर पुस्तकें जाँचे और पास करें।

नियमानुसार पुनः निरीक्षण करनेपर प्रधान परीक्षकका निर्णय प्रायः अिस प्रकार रहा करता है :—

"अंक ठीक दिये गये हैं। जोड़भी ठीक है। भाषा अत्यंत अशुद्ध है।"

अिससे स्पष्ट है कि अनुत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थी अशुद्ध भाषाके कारण ही नापास होते हैं।

अतः परीक्षाकी तैयारीकी अवधिमें भाषा शुद्धिपर विशेष ध्यान देना चाहिये।

— — —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ६] वर्धा, जुलाई—१९४७ [अंक ९

नया विहान आ रहा

श्री कृष्णकुमार विद्यार्थी, बी० ए० (ऑनर्स)

नयी उषा, नयी किरण, नया विहान आ रहा।
नयी विभा है फूटनेको हर दिशा है कह रही।
नवीन चेतना-पुलक लिये हवा है बह रही।
थिरक रही है पात-पात पर नवीन रश्मियाँ।
नवीन हाव-भावसे मचल रही है ऊर्म्मियाँ
कि चेतनाके तारमें नवीन गान छा रहा।
नयी उषा, नयी किरण...

बची हुई रुकावटोंको लात मार फोड़ दो।
मिले जो धारके समक्ष शैल-खण्ड तोड़ दो।
बढ़ो कि बँध-सकी प्रगतिकी धार कब कगारसे।
कि आज खौलते लहूमें नव उफान आ रहा।
नयी उषा, नयी किरण...

न दासताके अंकमें घुटेगी और साँस अब।
न बंधनोंमें बँध सकेगा मुक्तिका प्रयास अब।
वो देख लो खड़ी क्षितिज पै है सजीव कल्पना।
न सिद्धि दूर है, शिथिल न हो जरा भी साधना।
कि आज लक्ष्य बेधने नवीन बाण जा रहा।
नयी उषा, नयी किरण, नया विहान आ रहा।

'किशोर' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह महान् बौद्ध साधक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

किसी का परिचय पहले होता है और दर्शन पीछे। प्रो. धम्मानन्द कोसम्बी का मुझे परिचय पहले मिला और दर्शन पीछे।

सन् १९२७ में जब मुझे सिंहल पहुंच कर वहां कुछ अध्ययन करने की इच्छा थी तब मैं किसी अेक अैसी पुस्तक की खोज में था जिसमें यहांसे सिंहल पहुंचने के मार्ग का वर्णन हो और थोड़ा बहुत सिंहल का भी। मुझे पता लगा कि कोसम्बी जी की लिखी हुअी 'आत्म-परिचय' ठीक अेक अैसी ही पुस्तक है। पुस्तक गुजराती में थी। साबरमती आश्रम अहमदाबाद के मगन भाअी की कृपा से मुझे उसकी अेक प्रति मिली। गुजरातमें घुमते समय मैंने गुजराती की अेक दो पोथियां पढने के बाद उसी अेक पुस्तक को हाथ लगाया। रेल का हर गुजराती भाषा-भाषी पढा-लिखा आदमी मेरा गुरु ही था। कुछ दिन में मैं उस के पर्याप्त पृष्ठ पढ गया। सिंहल पहुंचा तब तक भी वह पुस्तक असमाप्त ही थी। राहुल जी से कहा".....पढा दें।" "बोले .....अपने देश की भाषा पढने के लिये किसी शिक्षककी आवश्यकता नहीं होती। स्वयं पढ लें।" वह पुस्तक मैने जैसे तैसे स्वयं ही समाप्त की। अिस प्रकार मुझे कोसम्बी जी का दर्शन होनेसे भी पहले उन का 'परिचय' मिला जो अिस प्रकार है :—

आजसे ४७ वर्ष पूर्व अेक महाराष्ट्र तरुण ने जिस की आयु अुस समय केवल २३ वर्ष की थी; भगवान बुद्ध के चरित्र से प्रभावित हो उन्हीं की तरह अपनी सहधर्मिणी का त्याग कर अपनी जन्म भूमि कोसम्बी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोआ (पुर्तगाल राज्य) से प्रस्थान किया। सर्व प्रथम वह संस्कृत पढने के लिये ग्वालियार और वहां काशी के अन्य-छेत्रों का अन्न खाते हुअे डेढ दो वर्ष वहां व्याकरण और संस्कृत-साहित्य की पढ़ाअी की। तदनन्तर जीवित बौद्ध धर्म की खोज में नैपाल और बुद्ध-गया। जब दोनों जगह निराशा हुअी तो अेक भिक्षुकी सलाह पाकर अकथनीय त्रास, कष्ट और संकट झेलता हुआ सिहंल पहुंचा। जिस चीज की तलाश थी, वह मिल गअी। कोलम्बो के विद्योदय-परिवेणमें महास्थविर सुमंगलाचार्य से आपने प्रव्रज्या ग्रहण की और उन्हीं की अधीनता में पालिग्रन्थों का अध्ययन आरम्भ किया। सिहंल के बाद वर्मा गये। अेक बार बौद्ध तीर्थों की यात्रा करने के लिये भारत आये, किन्तु फिर वापिस वर्मा चले गये।

आजसे चालिस वर्ष पहले की बंग-भंग' की बात अीतिहासने अेक बार दोहराअी है। किन्तु उस समय के बंग-भंग का राष्ट्रीय-भारतने अैसा विरोध-किया था कि वह रद्द करना पड़ा। वह बंग-भंग राष्ट्रीयताका जनक सिद्ध हुआ था, राष्ट्रीयता का प्रबल-पोषक। आज बंग-भंग की राष्ट्रीय-भारतको स्वयं मांग करनी पडी है। कैसी है यह विडम्बना! उस समय के 'बंग-भंग' के परिणाम स्वरूप बंगाल में राष्ट्रीय आन्दोलन ने जोर पकड़ा तो कलकत्तेमें अेक नेशनल कालेज की स्थापना हुअी थी। कोसम्बी जी उस समय नेशनल कालेज तथा कलकत्ता यूनिवर्सिटी में पालिभाषा के अध्यापक के पद पर रहे।*

यद्यपि कोसम्बी जी बंगाल में रहने लगे थे। किन्तु उन की अिच्छा महाराष्ट्र में बौद्ध-धर्म तथा पालि का प्रचार करने की थी। उस समय उन्हें श्रीमन्त सयाजीराव महाराज गायकवाड़ का तार मिला—

"आप महाराष्ट्र के किसी भी शहरमें रहें। आपको बडौदा सरकारसे मासिक बराबर मिलते रहेंगे। यह सहायता तीन वर्ष चालू रहेगी। तीन वर्ष अेकाध पुस्तक आप बडौदा सरकारके लिये तैयार कर देंगे।"

*उसी समय कोसम्बी जी ने विधिवत पीत-वस्त्र छोड़ श्वेत पहन लिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत सोच विचार कर कोसम्बीजी ने यह प्रस्ताव स्वीकृत किय
अिसके बारेमे अुन्होंने स्वयं लिखा है—

"प्रति मास २५०) की कलकत्ता यूनिवर्सिटीकी नैकरी छोड़
५०) महावारका श्रीमन्त गायकवाड महाराजाका दिया वेतन स्वी
करनेमें मुझे कभी पश्चाताप नहीं हुआ। यह वेतन न स्वी
करता तो डा. वुड्स्से परिचय न होता। पूना आकर रहनेसे
भन्डारकर से निकट सम्बंध स्थापित हुआ और उनके प्रयत्न से बम्ब
यूनिवर्सिटी में पालि को स्थान मिला"

डा. जेम्स अेच. वुडस अमरीका की प्रसिध्द हार्वर्ड यूनिवर्सिटी
प्रोफेसर थे। पालि सीखने के ही उद्देश्य को लेकर उन का और कोस
जी का परिचय हुआ। वह परिचय स्नेह में परिणत हो गया। विसु
मग्ग नामक प्रसिद्ध पालि ग्रन्थों के सम्पादनार्थ उन्होंने कोसम्बी जी
अमरीका बुलाया। अिस ग्रन्थ का सम्पादन और अिस पर आगे चल
पालि भाषामें ही लिखी गअी टीका कोसम्बी जीके जीवनके विशेष-क
भी विशेष है। सयाजीराव महाराजा की स्वीकृती ले कोसम्बी जी १९
अमरीका गये। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में संस्कृत भाषाओंके मुख्य आचार्
लैनमैनके सहयोगमें यह कार्य आरम्भ हुआ। कोसम्बी जी को
परिश्रम करना पड़ा। १९११ के अन्त तक विसुद्धिमग्गका
कार्य हुआ। प्रो. लैनमैनसे कोसम्बी जी की पटी नहीं। वह चाहते
कि लड़े सिपाही और नाम हो सरदारका। कोसम्बी जीने डटकर
किया। जब उसने देखा कि अुस की अिच्छा पूरी नहीं होती तो, उ
जीने अेक बार बताया था, कि अुसने अुन्हें गोली मार देने तक की
दी। छत्रपति शिवाजी महाराज के देश का यह पराक्रमी भी कह
वाला था। कोसम्बीजी १९११ में न्यूयार्क से स्वदेश वापिस लौट

१९११ से १९१८ तक कोसम्बीजी यहां फर्गूसन-कॉ
अध्यापक रहे। डा. वुडस के आग्रह से सन १९१८ में वह फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। प्रो. लैनमैन की कृपा से विसुद्धिमग्गके सम्पादन का कार्य अभी अधूरा ही पडा था, जो कोसम्बीजी को अच्छा न लगता था। श्री वारेनके देहावसानके अनुसार वह छपाया जा सकेगा, यही आशा उन्हें फिर अमरीका ले गई। किन्तु प्रो. लैनमैनके दुराग्रहके कारण चार वर्ष अमरीका में रहने पर भी वह कार्य समाप्त न हो सका। कोसम्बी जीके यह चार वर्ष अमरीकामें बडे कष्टसे बीते।

चार वर्ष बाद जब प्रो. लैनमैन ने नौकरी छोड़ दी तब १९२६ में कोसम्बीजीको फिर अमरीका जाना पड़ा। १९२७ में वह कार्य समाप्त कर भारत लौटे।

१९१० में जब कोसम्बी जी पहली बार अमरीका गये तभी अुन के विचारोंने अेक नअी दिशा ग्रहणकी। अमरीकामें रहकर आपने समाज शास्त्र.....विशेष रूपसे समाजवादके ग्रन्थोंका अध्ययन किया। आपको निश्चय हो गया कि बिना पूंजीवादको नष्ट किये और उसकी जगह साम्यवाद को स्थापित किये सामान्य जनता को सुख नहीं मिल सकता। लेकिन साथ ही वह यह देखते थे कि पाश्चात्य-देशोंमें समाजवाद जड़ नहीं पकड सकता क्योंकि सभी राष्ट्रोंके हाथ हिंसा और अत्याचारसे रंगे हैं। जब तक संसार भरके मज़दूर आपसमें प्रेम-पूर्वक मिलनेके अिस सूत्र को स्वीकार नहीं करते तब तक मनुष्य मनुष्य की हत्या करता ही रहेगा। परन्तु देशाभिमानसे उन्मत्त लोग आपसमें कैसे मिलेंगे?

"१९२० में महात्मा गान्धीके सत्याग्रह-संग्रामके समाचार अेकके बाद अेक अमरीका पहुंचने लगे। सत्याग्रहका आन्दोलन देखनेके लिये अमरीकन रिपोर्टर भारत आये। यहांसे वह कालम पर कालम समाचार वहां भेजते थे। जिन्हें पढकर मैं गद गद हो अुठता और कभी कभी मेरी आंखोंसे आंसू गिरने लग जाते"। अैसी मानसिक स्थितिमें कोसम्बीजी १९२२ में भारत लौटे थे। यहां वह गान्धीजी द्वारा आरम्भ किये गये गुजरात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यापीठकी पुरातत्वमन्दिर-शाखामें पालि भाषाके आचार्यकी हैसियतसे कार्य करते रहे।

१९२७ में जब फिर अमरिका जाकर लौटे तब भी पहलेकी तरह गुजरात विद्यापीठमें ही रहने लगे।

१९२९ में लैनिन-ग्राड रूसमें बौद्ध संस्कृतिके अध्ययनार्थ स्थापित संस्थाका कार्य करनेके लिये आप रूस गये। रूसने आपको पक्का समाजवादी बना दिया। किन्तु रूसका जल-वायु आपको अनुकूल नहीं पड़ा। १९३० के प्रारम्भमें ही आप हिन्दुस्तान वापिस चले आये। यहां पहुंचे तो सारे देशमें सत्याग्रह युद्ध चल रहा था। मार्चमें प्रसिद्ध दान्डी-यात्रा हुई। कोसम्बीजी इस स्वातंत्र्य-संग्राममें कूद पड़े। गांव गांव घूमकर प्रचार करने लगे। शिरोडे [जिला रत्नागिरी] में नमक-सत्याग्रह में हिस्सा लिया। अन्तमें विलेपार्ले, बम्बईकी सत्याग्रह छावनीके डिकटेटर बने। वहींसे पकड़े जानेके बाद हाई-कोर्ट द्वारा शीघ्र ही छोड़ दिये गये।

१९३१ में डा. वुडसके ही आग्रहसे आप चौथी बार अमरीका गये। १९३२ में लौटे। कदाचित् यही आपकी अन्तिम-विदेश यात्रा थी।

१९३४ में आप बनारस आकर रहने लगे। छः महीने हिन्दू-विश्व-विद्यालयके अतिथि रहे। अुसके बाद काशी विद्यापीठ। विद्यापीठके संचालकों ने आपके लिये अेक कमरा बनवा दिया था।

१९३७ में शायद, जब डा. अम्बेडकर ने धर्म-परिवर्तनकी घोषणा की थी, अुसी समय परेल बम्बईमें जहाँ अधिकांश श्रमजीवी लोग रहते हैं, अेक बहुजन विहार [जनताके विहार] की स्थापना हुअी। शायद दो वर्ष आप वहां रहे। बादमें आपने वहां रहना छोड़ दिया।

पिछले आठ दस वर्ष सारनाथ, बनारस, अहमदाबाद, बम्बअी आदि अनेक जगहोंमें ताना-बाना करते ही बीते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कोसम्बी जी को सब से पहले अुस विलेपार्लेके कैम्पमें सत्याग्रह-संग्रामके डिक्टेटरके रूपमें ही देखा। अुसी संग्राममें हिस्सा लेनेके लिये मैं स्वयं सिंहलसे भारत आया था। क्योंकि मैं बिहार प्रान्तमें ही जाकर कुछ कार्य करना चाहता था, अिस लिये याद आता है कि बम्बई में मैंने कोसम्बी जी का व्याख्यान देनेका निमंत्रण भी स्वीकार नहीं किया था। हां, अुनके साथ घूम फिर कर बम्बअीकी स्थितिका खूब अवलोकन किया। जब मैं अुनसे विदा लेने लगा तो अुन्होंने अेक सज्जनसे कहा बौद्ध भिक्षु अपने पास पैसा नहीं रखते। तुम जाओ अिन्हें टिकट लेदो।"

मैं धर्म-संकटमें पड़ गया। मेरे पास पैसा था, । आखिर मैंने हिम्मत करके कहा....."यह भाअी टिकट भले ही ले दें किन्तु मेरे पास पैसा है।"

सुना है कोसम्बी जी जब और जितने दिन भिक्षु रहे पैसा नहीं रखते रहे। भारतमें वह पैसा न रखकर अपने पास कुछ स्टाम्प रखते थे। मैंने कागज के छोटे छोटे स्टाम्पों में और कागज के बड़े बड़े नोटों में विशेष अन्तर न समझ नोट ही रखने शुरू कर दिये। किन्तु, तो भी बहुत समय तक पैसा रखने और न रखने के अन्तर्द्वन्द में मै भी फंसा रहा हूं। कोसम्बी जी ने पीत-वस्त्र छोडकर शीघ्र ही अिस अन्तर्द्वन्द से मुक्ति पाली थी।

फिर याद नहीं अुन्हें कब कहां देखा? शायद अुस समय जब वह हिन्दू-विश्व विद्यालय के अतिथि बनकर रह रहे थे। बाद में तो बहुत दिनों सारनाथ में अुनका सान्निध्य प्राप्त रहा।

वह सारनाथ भर के आचार्य थे। हम सभी अुन से रोज घंटा दो घंटा लेते थे। विसुद्धिमग्ग पढ़ने वालों की तो पूरी अेक मण्डली थी। वह अुन्हें अुपस्थित भी खूब था। पुस्तक देखकर पढने वालों की गलती वह सदृश्य बिना पुस्तक देखे ही किया करते थे। पढ़ाते पढ़ाते कभी कहीं कोअी ठीक सन्देह पैदा हो जाता तो वह जैसे तैसे अुस स्थलको कभी भी लांघने के लिये तैयार न थे। यह कोष और वह कोष, यह संदर्भ-पुस्तक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह संदर्भ-पुस्तकका ढेर लगा देते थे। किसी लेखकने अपनी पुस्तकमें किसी दूसरे ग्रंथका अुल्लेख किया हो तो वह अुसके लिखने मात्र पर विश्वास न कर अुस ग्रंथको मँगाकर देखते थे कि अुस लेखकका लिखना यथार्थ है वा नहीं? अुनका यह अविश्वास कभी कभी बड़ी ही हैरानी का कारण होता था। शिष्य-मंण्डली को प्रतीक्षा में बैठे रहना पड़ता था। अपने प्रत्येक कथन का प्रमाण दिखाना और दूसरे के प्रत्येक कथन का प्रमाण देखना यह अुनके अध्यापनकी विशेषता थी। अिसके बिना तो अुनके साथ पढनेवालोंकी गाड़ी दो कदम आगे नहीं चल सकती थी।

अपने मत में कोसम्बीजी बे-हिसाब आग्रही थे। दुराग्रही कहें, तो अनुचित न होगा। अेक दिनकी बात। भुलाये भूल ही नहीं सकती। मैं अुनके साथ बैठकर अपना जातक अनुवाद दोहराया करता था। वह समाप्त हो गया तो महावंश दोहरानें लगा। अिसीमें मैं रोज अुनके घंटे दो घंटे ले लेता था अिसलिये अिच्छा होने पर भी अुनके पास कोअी ग्रन्थ न पढ़ता था। किन्तु अुन्हीं दिनों न जाने किस कर्मके फल-स्वरूप मुझ पर यह विपत्ति आ पड़ी। रेडियो पर बौद्ध धर्मकी रूप-रेखा शीर्षकसे मेरा अेक छोटासा भाषण हुआ था वह सारनाथसे प्रकाशित होनेवाले धर्म-दूतमें छपने जा रहा था। कोसम्बीजी अुन दिनों धर्म-दूतके सम्पादकके सलाहकार थे। अुनके ख्यालसे मैंने अपने भाषणमें अेक जो बात कही थी वह बराबर नहीं थी। अुन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि अिसमें परिवर्तन कर देना चाहिये। मेरा अपराध यह था कि मुझे कोसम्बीजीकी बात ठीक लगते हुये भी अपनी बात विशेष गलत नहीं लग रही थी। दूसरे वह मेरा स्वतंत्र लेख नहीं था वह तो अेक भाषण में कुछ अयथार्थ कहा था, तो अुसकी रिपोर्ट तो वैसी ही छपनी चाहिये थी। अुसमें मुझे अथवा किसी को भी कुछ परिवर्तन करनेका क्या अधिकार! अिसलिये मैंने अुनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह मेरे भाषणकी रिपोर्ट जैसीकी तैसी छपने दें और जहां मेरा कथन अयथार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वहां सम्पादककी ओरसे टिप्पणी दे दें। अुनका संकोच भी
साब नहीं था। वह कहते थे कि धर्म-दूतमें तुम्हारा भाषण छपे
अुस पर धर्म-दूतके सम्पादककी ओरसे टिप्पणी हो! यह कैसे हो
ता है! वह चाहते थे कि मैं स्वयं ही अपने हाथसे अपने भाषणको
दूं। बड़ी देर तक चर्चा होती रही। मैं अुन्हें जिद्दी समझ
था, किन्तु लगता है कि स्वयं भी कम जिद्दी न था। जब न मैं
की बात मान सका और न अपनी मनवा सका तो अुनके मुँहसे अेक
दुखद बात निकली जो मुझे वज्र के समान लगी। बोले, मैं तुम्हें
नी बात नहीं समझा सकता। अिससे अब यूं हमारी तुम्हारी मैत्री
ी किन्तु अबसे किसी प्रकारका शास्त्रीय-सहयोग (intellectual
ooperation) नहीं रहेगा। मैंने बहुत कहा, अनुनय-विनय के साथ
ा, मिन्नतकी—"मेरा अपराध अितना ही है कि अपनी बातका
ह नहीं छोड़ रहा हूं। अिस छोटे से अपराधके लिये अितना कड़ा
द न दें।" किन्तु अुनके मुंहसे जो बात निकल गअी, वह तो अब
लेख हो गअी थी। मुझे अपना सब पुस्तक-पन्ना अुठाकर कोसम्बीजी
कमरेसे अपनासा मुंह लिये निकल आना पड़ा। मेरी बलवती अिच्छा
कि महावंश अनुवाद प्रकाशित होने पर मैं अुन्हें ही समर्पण करूं।
किन्तु अिस डरसे कि कहीं अुस समर्पणसे वे चिढ़ न जायें और अुन्हें
ख न हो मैंने वह अुन्हें समर्पण न कर अनागारिक धर्मपालको समर्पित
र दिया। जो काम अुनके जीते जी न कर सका, वह अब क्या
ोगा! तो भी अेक महावंश ही क्या मैं अपने सब पालीका लिखना-
ढ़ना आज भी अुनकी कृतज्ञता-पूर्ण स्मृति को समर्पित कर सकता हूं,
रता हूं।

वे बहुत घूमे थे। अुन्होंने बहुत दुनिया देखी थी। पढा-लिखा भी
म नहीं था। और पढा-लिखा था वह विद्या कंठमें थी। अपनी किसी
ी बातको स्पष्ट करनेके लिये वह प्रायः अेक किस्सा कहा करते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुनके कितने ही किस्से याद आ रहे हैं और कोसम्बीजीकी तन्मय मूर्तिकी याद दिला रहे हैं।

बच्चे प्रायः सबको अच्छे लगते हैं, किन्तु कोसम्बीजी कुछ ऐकान्त-प्रिय और अकेले थे कि अुन्हें यह भी पसन्द नहीं था कि अुनकी कुटिया की ओर अधिक आयें जायें। वे अपना अधिकांश स्वयं अपने ही हाथों कर लेते थे। वे जितनी सुघड़तासे रहते थे रहना पसन्द करते थे कि कोअी दूसरा अुनका काम वैसे कर सकता था।

अुनके लिखे ग्रन्थों की संख्या पर्याप्त है। सभीके नाम लेखनी पर आते भी नहीं। गुजराती-मराठीमें लिखा बुद्ध-लीला-सार बहुत जनप्रिय हुआ है। मराठीमें दो खण्डोंमें भगवान्-बुद्ध है, जिसमें कोसम्बीजीकी मौलिक-दृष्टि व्यक्त हुअी है। अुन्होंने अपनी अिस पुस्तकमें बुद्धके बूढे, रोगी और मृत-व्यक्तिको देखकर संसार त्यागने सर्व-विदित और सर्वत्र-प्रचलित बाततकको अस्वीकार किया है। बौद्ध मुनियोंके मांसाहार सम्बंधी किसी अुल्लेखको लेकर पिछले दिनों जैनियोंकी ओरसे बड़ा हो-हल्ला मचाया गया था, किन्तु कोसम्बीजी टससे मस नहीं हुये। बड़ी ही दृढ़ता और वीरता पूर्वक अुन्होंने सारे विरोधका सामना किया। 'अहिंसा आणि हिन्दी संस्कृति' कोसम्बीजीका-अेक और महत्व पूर्ण ग्रन्थ है जिसे लिखकर कोसम्बीजीको भी बड़े संतोषका अनुभव हुआ था। अुस ग्रन्थमें अुन्होंने वैदिक- युगसे लेकर गान्धी युग तक अहिंसाके तात्विक तथा व्यवहारिक रूपका अध्ययन किया है। जो कुछ प्रतीत हुआ, वह लिखने लगे हैं तो फिर कोअी नहीं बचा न बौद्ध-भिक्षु बचें हैं और न गान्धीजी बचे। सुना है अिस ग्रन्थका हिन्दी-अनुवाद श्री प्रभाकर माचवेके पास है, जो अब हम सबका कर्तव्य है कि अुसे प्रकाशित देखें।

अुनकी विशुद्धिमग्ग तथा अभिधम्मत्थसंगहो की पालि टीकायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जहां भी पाली वाङ्मय का गहरा अध्ययन होगा, पढ़ी जायेंगी और बादसे पढ़ी जायेंगी।

चार जून ४७ की दोपहरके बादसे कोसम्बी जी हमारे बीचमें नहीं रहे। नहीं रहे तो अुनकी याद क्यों बनी? तब कहना होगा कि भौतिक-शरीररूपमें नहीं रहे। वह भी तो सेवाग्रामकी टीकरीकी मिट्टीके साथ ही राख-होकर मिला पड़ा है। यह वह रहस्य है जो अुपनिषदके नचिकेतासे लेकर आज तक किसीकी समझमें नहीं आया। दार्शनिक दर्शनकी भाषामें अेक जानकारकी तरह बोल सकता है। किन्तु मन ही मन अुसे भी लगता है कि कुछभी तो नहीं जानता। अुनके बारेमें डा. नायरने लिखा है कि बौद्ध-धर्मकी शिक्षाके मुताबिक अुन्होंने सोचा कि अब अुपवास करके ज़िन्दगी ख़तम करनी चाहिये।" न जाने डा. सुशीला नायरसे किसने कह दिया कि बुद्ध धर्मकी शिक्षा है कि अुपवास करके जीवन समाप्त कर दिया जाय। कोसम्बीजी बौध्द विद्वान थे। किन्तु किसी धर्मका कोअी विद्वान भी जो कुछ करता है, वह क्या सब अुसके अनुकूल ही होता है?

कोसम्बी जी ने अन्न- त्याग द्वारा अपने शरीरका त्याग किया। जीवनके मोहसे बिना छूटे कोई अैसा सहज नहीं कर सकता। किन्तु कौन कह सकता है कि यह मृत्युका मोह नहीं था? सच्ची बात है कि कौसम्बी जी के जीवनमें अेक अैसा अकेला-पन था, कि अुनका सारा ज्ञान भी अुसे परास्त नहीं कर सका था। वे अिधर बरसोंसे अस्वस्थ थे। प्रायः शरीर खुजलाता था और नींद नहीं आती थी। क्या डाक्टरी और क्या प्राकृतिक चिकित्सा वह सब ओरसे निराश हो गये थे अुन्हें विश्वास हो गया था कि अुस शरीरसे वह जो कुछ भी आत्म-हित वा पर-हित कर सकते थे वह हो चुका था। अुन्होंने शरीर- त्यागका पहला प्रयत्न जिला वर्धाके अेक हरिजन-गुरुकुलमें किया था। बापूके बीचमें पड़ जानेके कारण अुन्हें आधे रस्तेसे लौट कर आना पड़ा। तब वह कुछ दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी और बम्बअी की चिकित्साओंके फेरमें रहकर बापूके प्रेम पूर्ण आग्रहको स्वीकार कर सेवाग्राम ही चले आये। अुन्होंने अपना शरीर-त्याग किया।

अेक दिन सूचना पाकर सेवाग्राम गया। बोले कुछ नहीं केवल अिस लिये बुलवाया कि कहीं बाहर चले जायेंगे तो फिर दर्शन न हो।

मेरी आंखें तो नहीं किन्तु मन भर आया। अुन की बात सच्ची हुअी। मैं जब कालिम्पोङ्गसे वापिस वर्धा लौट रहा था, तो कलकत्तेमें पढा कि अब कोसम्बी जी को वर्धा पहुँचने पर न देख सकूंगा।

अुन्हें श्री कमलनारायण बजाज ने १०००) दिये थे। कोसम्बी जी ने बापूको लिखा कि अुसमें और रुपये डाल कर पाली भाषा और बौद्ध धर्मके अभ्यास की अिच्छा रखने वाले योग्य विद्यार्थियोंको छात्र-वृत्ति देकर लंका भेजा जाय।

अिस पर बापू ने लिखा कि पाली भाषा तो लंकामें सीखी जायगी किन्तु बौद्ध धर्म सीखने का क्षेत्र लंका है, अैसा मैं नहीं मानता।

कौसम्बी जी का अुत्तर था "आम और नीम अेक ही जमीनमें बढते हैं, मगर आम का फल अलग होता है नीम का फल अलग।

बापू का आशय बौद्ध-धर्म सीखनेसे बुद्ध की शिक्षाओं को जीवनमें अुतारनेसे है। वह तो किसी देश-विशेषकी बपौती नहीं।

लेकिन हम अिस समय कोसम्बी जी की समाधि पर बैठ कर यह सब चर्चा नहीं कर सकते। हमें शायद करनी भी नहीं चाहिये। हमारा कर्तव्य है कि हम अुन १०००) को बढाकर अेक धर्मानन्द-छात्र वृत्ति स्थापित करें, जिससे कोसम्बी जीकी अन्तिम अिच्छा पूर्ण हो।

बापू ने पांच तारीखकी प्रार्थनामें कहा "वह तो मै करूंगा ही।"

आशा है बापू अेक छोटीसी अपील निकाल कर कोसम्बी जी के प्रेमियोंको अुसमें कुछ दान देनेका अवसर देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होगी

हिन्दुस्तानीकी अुपादेयता समाप्तप्राय

पं० मौलिचन्द्र शर्मा, प्रधान मंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलनने निम्न वक्तव्य जारी किया है :

मेरे अेक वक्तव्यको लेकर हिन्दुस्तानके २० जूनके अंकमें अेक सम्पादकीय लेखमें जो समालोचना की गअी है अुसका मूल्य अुसके पाठकोंके लिये बढ़ जाता यदि अुनकी जानकारिके लिये मेरे आलोच्य वक्तव्यको प्रकाशित करनेकी सम्पादकीय शिष्टता भी बरती जाती। मैं अुसके बारेमें शायद कुछ न कहता, क्योंकि मतभेद तो सभी विषयों पर हो सकता है, परन्तु अिसलिये कुछ लिखना आवश्यक हो गया है कि अुस लेखसे अैसा भ्रम होनेका भय है कि हिन्दीकी मांग साम्प्रदायिक मांग है।

वास्तवमें मेरे वक्तव्यसे अैसा अर्थ किसी प्रकार भी नहीं निकाला जा सकता। हिन्दी शुद्ध राष्ट्रीय वाणी है। अुसे साम्प्रदायिकताके आश्रयकी आवश्यकता नहीं। परन्तु जब राष्ट्र साम्प्रदायिक आततायियोंकी छुरेबाजी, अग्निदाहों और बलात्कारोंसे खिन्न होकर देशके बंटवारेको तैयार हो गया और जब अेक सम्प्रदाय, न्याय, जनमत, औचित्य और आपसदारी, सबको अेक ओर रख खुले दहाडे हिन्दीको दबाता जा रहा है तो अुसकी प्रतिक्रिया अेक जीवित समाजमें होना स्वाभाविक है। चाहे हम और हमारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दीको राष्ट्रीयताका प्रतीक और साम्प्रदायिकताके सम्पर्कसे शुद्ध मानते रहें; परन्तु जब मुस्लिम जनता अुसे हिन्दुओंकी भाषा समझ अुसका बहिष्कार करे तो हम अुन्हें कैसे रोक सकते हैं। जहां जहां मुस्लिमका अधिकार रहा हिन्दीको अपदस्थ रखनेमें कोई कसर अुठा नहीं रखी गई। महात्मा गांधीके अनेक अुद्योगोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद भी क्या मुस्लिम बहुमत वाले प्रान्तोंमें हिन्दी को कोई न्याय मिला? स्वयं कांग्रेस शासित सीमा-प्रान्त तकमें हिन्दी तो क्या हिन्दुस्तानी को भी स्थान नहीं मिला। वहां शुद्ध अुर्दू का ही राज्य रहा और रहेगा।

और अब तो पाकिस्तान राष्ट्र बन रहा है। यह प्रत्यक्ष है कि पाकिस्तानमें अुर्दू ही राष्ट्रभाषा होगी। पाकिस्तानके नेता अपने समाज की दृढताके साधनों को जानते हैं और झूठी झूठी लल्लो चप्पोके फेरमें पड कर अपनी शक्ति कम होने देना नहीं सीखे। न 'हिन्दुस्थान' न अुसके सरीखे अन्य सुख स्वप्न देखने वालोंके कहनेसे वहां हिन्दुस्तानी चलेगी न देवनागरी लिपि अनिवार्य होगी। फिर स्वभावतः यह प्रश्न होता है कि जिन पश्चिमोत्तर प्रान्तोंके लिए (जो मुस्लिम प्रान्त हैं और अिसी कारणसे पाकिस्तानमें शामिल किये गए हैं) मिली जुली और दो लिपियों वाली भाषा चलाने का प्रयत्न किया जा रहा था जब वे ही हमारे पास न रहे तो हमें अब अिस प्रयास की क्या आवश्यकता रही।

रहा यह तर्क कि अब भी हिन्दुस्तानमें अुर्दू भाषी और पाकिस्तानमें हिन्दी भाषी रहेंगे ही, अिसी लिए अेक मिलीजुली भाषा चाहिये ही। परन्तु वह हमें ही चाहिये या पाकिस्तानियोंको भी। यदि वे हिन्दुस्तानी बिना केवल अुर्दूसे अपना काम चला लेंगे तो हमें ही हिन्दी क्यों काटने दौडती है। पाकिस्तानसे जिनका काम पडेगा वे अुर्दू सीखेंगे और अिसी प्रकार पाकिस्तानमें रहने वाले जिन लोगोंको हिन्दुस्तानसे काम पडेगा वे हिन्दी भी सीखेंगे ही। अन्य बाहरी देशोंसे सम्पर्कके लिए हम सब अनेक और भाषाएं सीखेंगे। परन्तु अिसका यह अर्थ तो नहीं कि हम अुन सब भाषाओं और लिपियोंको अपनी राष्ट्रभाषा या राष्ट्रलिपिका स्थान दे दें।

दूसरा तर्क है कि हिन्दी को सरल बनानेके लिए अुसमें अुर्दू मिश्रण होना चाहिए। भाषाके सरल करनेके सिद्धान्तसे मुझे कोई झगडा नहीं। परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि सरल किसे कहते हैं। अुर्दू मिली भाषा अुस देशमें जो अब हिन्दुस्तानमें बच रहा है सरल नहीं होगी। दिल्ली, लखनअूके बीचके थोडेसे नगरोंके कुछ समाजमें अुर्दू समझी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ख्य जाती है। हिन्दी का वह संस्करण जिसमें फारसी, अरबी, शब्दावली ...क हो उर्दू कहलाती है, इसीलिए सम्मेलनने ठीक ही उर्दू को हिन्दी ...एक विशिष्ट शैली माना है; परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि सम्मेलन ...का प्रचार करता है या उसे सरल समझता है। सम्मेलन की दृष्टिमें ...शैली अराष्ट्रीय, अस्वाभाविक, कृत्रिम, दुरूह और सर्वथा अग्राह्य है। ...देशमें वह समझी नहीं जाती। और भविष्यमें उसके समझने वाले पूर्व- ...और पश्चिम-युक्तप्रांतके नगरोंमें भी कम रह जायंगे। वह भाषा ...नहीं है न उसके मेलसे हिन्दी सरल बनेगी। बंगाल, बिहार, ...प्रांत, पूर्व-युक्तप्रांत, राजपूताना, मध्य-भारत, गुजरात, महाराष्ट्र और ...भारतमें तथा पूर्व-पंजाब और पश्चिम-युक्तप्रान्तके भी गांवों में जहां ...का जन बसता है, संस्कृत मूलक तत्सम और तद्भव शब्दावली ...ही सरल है और रहेगी। मैंने पूर्व-पंजाबमें जन्म लिया था और ...लमें वहांके जन साधारण को सूर, तुलसी तथा रहीमके पद गाते ...था। वहांके गांवोंमें निहाल देवी और आल्हा ऊदलके हिन्दी काव्य ...नाटकों का ही अभिनय होता था और होता है। और आज १०० ...वहां उर्दू राजभाषा रहनेके बाद भी गांवों की स्त्रियाँ और पुरुष ...ही के गीत गाते हैं, गालिब की गजलें नहीं। मुझे आश्चर्य है ...कौनसी उर्दू को मिलाकर हमारे मित्र, हिन्दी को सरल बनाना चाहते ...क्या हिन्दुस्तानी? जो हिन्दी भाषा का ही व्यवहार करता है जनता ...नहीं समझा जाता फिर उन्होंने शुद्ध हिन्दीके प्रचलन को अनर्थ ...का साहस कैसे किया? हिन्दी का ऋण क्या हिन्दी वाले ऐसे ...चुकाएंगे?

मैं जोरसे दोहराना चाहता हूं कि अब हिन्दुस्तानमें हिन्दी ही उत्तर ...से कन्याकुमारी तक सारे देश की राष्ट्रभाषा होगी तथा उसकी ...देवनागरी होगी। उर्दूको मिलाकर इसका रूप बिगाड़नेकी अब ...आवश्यकता नहीं। भाषाकी दृष्टिसे तो सदा ही वह अेक अस्वा- ...और असफल प्रयास था, अब उसकी राजनैतिक आवश्यकता भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गओी । हाँ, जो अुर्दू पढेंगे अुनके लिये कोओी रोक नहीं। जो जितनी भाषायें पढे, परन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होगी। यह अधिकार है, यह हमारी मांग है, जो अिस देशकी सरकारको पूरी ही होगी। जनमतको कोओी सरकार या दल बहुत दिन नहीं ठुकरा

जैसे मैंने अपने वक्तव्यमें कहा था अब हमें पुराने समयकी नीतिका दुर्वह बोझा अुतार फेंकना चाहिये और नओी परिस्थितिको नयी नीति निर्माण करनी चाहिये जो अिस बचे खुचे राष्ट्रको बनावे। अंग्रेजोंसे भारत छोड़ो कहनेका प्रश्न अब हल हो चुका, पाकिस्तान सदृश देशसे सुलझना है जिसके कर्णधारों ने पिछले अिस देश में सहस्रों नर-नारी और बालक आततायिओंके भेंट चढायें हैं और जिनके अत्याचारोंसे बचनेको सैकड़ों माननी अ ने कूओंमें कूदकर और स्वयं चितारोहण कर अपने धर्म और भीरू पुरुष समाजकी लाज पर बलि दी है। सारे देशके मुसलमान सब कुछ देखते रहे और किसीने अिन भेडियोंसे संकुल निराश पुकार नहीं सुनी। क्या अिन्हींकी खुशामदके लिये हमें अपनी और अपनी सहस्त्रों वर्ष पुरानी संस्कृतिकी वाहिनी हिन्दीका भी बलि फिर चढानेको कहा जा रहा है।

मैं चकित हूँ कि यह बात क्यों नहीं हमारे मित्रोंको दीखती कि हाथसे ताली नहीं बजती। यदि अुर्दू वाले हिन्दुस्तानी नहीं बनाना तो आप अकेले अपनी भाषा चाहे बिगाड़ लें परन्तु वे तो अुसे भी मानेंगे।

यदि पाकिस्तान भी हिन्दुस्तानी स्वीकार करे तो मैं कहूँगा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मिलकर अेक भाषा बना लें। परन्तु जो देशके दो टुकड़े कर रहे हैं अुनसे कोओी बड़ा ही आशावादी यह करेगा कि वे दो भाषाओंको अेक बनानेमें सहयोग देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राहुलजीका तीसरा पत्र

लेनिनग्राद
१८-५-४७

अभी कुछ दिन हुये बड़ी प्रतीक्षाके बाद राहुलजीका यह पत्र मिला है। इसके एक और भी छोटा पत्र मिला है; जिससे आशा होती है कि शायद राहुलजी इसी जुलाई महीने में अथवा अगस्त में ही भारत पहुँच जाँय। "राष्ट्रभाषा" आपका हार्दिक स्वागत करेगी।

प्रिय आनंदजी,

मैंने अेक या दो पत्र हवाअी डाकसे भेजा किन्तु जवाब नहीं आया। सुना कि अिस बीचमें डाक्टर अुदय नारायण तिवारीके दो पत्र आ जा चुके होंगे। मैं जूनके अंत या जुलाअीके आरंभमें यहाँसे प्रस्थान करूंगा। पहिले स्थल होकर आनेका विचार था, क्योंकि यहाँसे लंदन बराबर जहाज जाया करते हैं, किन्तु सुना कि लंदनमें महीनों ठहरना पड़ेगा, महीनेमें चालीस पौंड खर्च करनेके लिये चाहिये, फिर ७२ पौंड किरायेके भी। अिसलिये यह ख्याल छोड़ देना पड़ा। अब अदेस्सासे आनेका विचार है, यदि वहाँसे अमेरीका या कोलंबोका जहाज मिलनेवाला हुवा तो। स्थलमार्गसे आनेकी निश्चित नहीं। यदि नहीं हुवा तो फिर लंदनका ही रास्ता।

अिस पत्रको मैं अिस वक्त लिख रहा हूँ, जब कि थोडी ही देर पहिले रेडियोने कहा कि लार्ड मौंटबेटन लंदनकी ओर रवाना हो गये। अिस पत्रके आपके पास पहुँचने तक ब्रिटिश सरकारकी योजना भी प्रगट हो गअी रहेगी। अुससे तो निश्चयसा मालूम होता है कि पाकिस्तान होकर रहेगा और अुसके साथ ही यह भी कि बंगाल और पंजाबका भी बंटवारा होगा जो कि बिल्कुल युक्तियुक्त और न्याय्य है। पश्चिमी पंजाब, सिंध और यदि बन पडा तो बिलोचिस्तानके और सीमान्त पश्चिमी पाकिस्तानके रूपमें परिणत होगा, और पूर्वी बंगाल होगा पूर्वी पाकिस्तान। पाकिस्तानमें बहुजन हिताय किसी कार्यके होनेकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कम संभावना है, क्योंकि लीगकी शक्तिका सारा रहस्य साम्प्रदायिक धर्मांधताको अुत्तेजना देनेमें निहित है। स्वतंत्र पाकिस्तानमें भी किसानों मजूरोंके संघर्षको भी अुसी शक्तिके बलपर यदि दबानेकी कोशिश की गअी तो फिर ? और आजके लीग नेतृत्वसे अैसी ही आशा हो सकती है। हाँ, यदि वहाँ वामपक्षने जिसका अभी कहीं पता नहीं— दक्षिण पक्षको धर दबाया तो ज़्यादा अच्छे दिनोंकी आशा है, अन्यथा पाकिस्तानकी लीगी भीतरी नीति होगी, पीडित जनताको मुलम्माके सुधारों और पुलिस-बलपर दबा रखना। और वैदेशिक नीति होगी संयुक्त भारत प्रजातंत्रके अंदर खुरापात फैलाना। संयुक्त भारत प्रजातंत्रके लिये शक्ति समृद्धि विकासका सबसे अधिक मौक़ा है। अुसके पास अपार भौतिक सामग्री है, जनबल है, प्रतिभा है। संस्कृतिने संकीर्ण हृदयता नहीं दी है। अधिकांशतया जरूरत है भारत प्रजातंत्र अपने मुसल्मीन नागरिकोंको बिना भेद-भावके, बिना पाकिस्तानका द्वेषपूर्ण नीतिका ख्याल किये, अपनावे। अुनकी संस्कृतिकी रक्षा और विकासका मौका दे; आर्थिक क्षेत्र में भी। निर्वाचित संस्थाओं और नौकरियोंमें संख्यानुसार स्थान सुरक्षित कर दिये, किंतु पृथक्‌निर्वाचन हर्गिज न करन दिया जाये—पृथक निर्वाचन सदा जहादियोंको पैदा करता रहेगा। अछूतों, अिसाअियों, सिक्खों और दूसरी अिस तरह अल्पमत जातियोंके लिये भी स्थान सुरक्षित रखने होंगे जबतक भारतीय प्रजातंत्र समाजवादी प्रजातंत्र नहीं हो जाता।

जवाहरलालने विधान सभासे प्रजातंत्र (जनतंत्र गण) सम्बन्धी प्रस्ताव पास कर बहुत ही दूरदर्शिताका काम किया। अिसने कितने ही प्रश्नों और राहके काटोंको खत्म कर दिया। हाँ तो हमारा भारत प्रजातंत्र होगा, अनेक प्रजातंत्रों और राजसंघोंका संघ। राजा नवाब अभी दुविधामें पड़े हुअे हैं। वह समझते है प्रजाकी छातीपर दाल दलते वह कयामत तक भगवानके अंश बनकर राज्य करते रहेंगे। यह साफ है कि अुनका अस्तित्व प्रजाकी मर्जीपर है। अुन्हें डरना नहीं चाहिये, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी न किसी रूपमें तबतक बने रहेंगे, जबतक भारतके दूसरे करोड़पति, पूँजीपति। मुझे दिखलाअे पड़ता है, सारी रियासतोंके संघ या अिकाअियाँ हो जायेंगे, जिनमें कुछ संघ भारत प्रजातंत्र संघसे अलग रहनेकी भी कोशिश करेंगे। यद्यपि वह बहुत दिन नहीं चलेगा—आखिर भविष्य-स्वेच्छाचारिता और निरंकुशके हाथोंमें नहीं और विदेशी बंदूकें कभी अुन्हें बचानेकी जोखिम नहीं अुठायेंगी। रियासतोंके अतिरिक्त और सबसे ज्यादा भाग हमारे प्रजातंत्रका आजके सूबे होंगे। सूबोंको अंग्रेजोंने अपने शासन करनेकी सुविधा और विजयके श्रमसे मानमतिके कुनबेकी तरह जोड़ रखा था। भारत प्रजातंत्रमें अिस तरहकी जोड़की जरूरत नहीं। सूबोंको-जिन्हें अब हमें प्रजातंत्र कहना होगा--को भाषाके अनुसार किसे बाँटनेका सिद्धान्त बहुत पहिलेसे माना जा चुका है। और महाराष्ट्र गुजरात, पंजाब (पूर्वी) आसाम, बंगाल (पश्चिमी), ओड़िसा, आन्ध्र तामिल, केरल, कर्नाटकके दस प्रजातंत्र स्वीकार करनेमें किसीको आपत्ति नहीं होगी। विवाद है हिन्दीभाषी महा भूखंडका, तर्क यही कहता है; अिसकी संस्कृति, अितिहास, भाषा, आर्थिक सम्बन्धका ख्याल कर सरस्वतीसे परे कोसी और हिमवानसे (हिमालय) सतपुडा तकका अेक प्रजातंत्र बना दिया जाये। किन्तु यह बात व्यवहार्य नहीं मालूम होता। सर्वार्थमें अेक अंशमें तो अिसके लिये कुछ करना ही होगा, और अिस भूखंडके प्रजातंत्रका अेक अुपसंघ बनना चाहिये। भारतीय प्रजातंत्र संघमें अुसे अिकाअी माननेकी जरूरत नहीं, अुसको अपनी छोटीसी सरकार हो, जिसके पास कुछ आर्थिक कार्य हो। कैसे भी हमें आजके बिहार, मध्यप्रांत, युक्तप्रांतमें बिखरे जनोंका अेक संगठन जरूर करना चाहिये। फिर प्रश्न होगा, हिंदी भाषी भूखंडके कितने प्रजातंत्र होने चाहिये। मैं समझता हूं दस जिलेके अंदरकी सीमाका ख्याल किये बिना वह निम्न होंगे।

१-हिमालय—कमायूँसे कांगडा तकका पार्वत्य भाग।

२- यौधेय—अंबाला और मेरठकी कमिश्नरियाँ। जहाँ यौधेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजातंत्रका उज्वल अितिहास है । आज भी अिस भूखंडने हमें राष्ट्रभाषा प्रदान की। अिसीकी नगरी दिल्ली हमारे प्रजातंत्रकी राजधानी होगी ।

३– व्रज-पंचाल—आगरा और रूहेल खंडकी कमिश्नरियाँ।

४– बुंदेलखंड– बुंदेलखंड कामिश्नरी और मध्यप्रान्तके कुछ बुंदेले ज़िले।

५– महाकोशल—जबलपुर और छत्तीसगढ–कमिश्नारियाँ और कुछ और भाग।

६– अवध––लखनअु, फैजाबाद और अिलाहबाद कमिश्नरियाँ

७– काशी (मल्ल)—बनारस–गोरखपुर कमिश्नरियाँ, बिहारके आरा, छपरा, चंपारन ज़िले ।

८– झार खंड––छोटानागपुर कमिश्नरी और संथाल परगना।

९– मगध—पटना, गयाके जिले और कुछ और भाग

१०– मिथिला––दरभंगा मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर और पुर्णियाँ

पंजाब, अजमेर मेरवाड़ा, दिल्ली, युक्तप्रांत, मध्यप्रांत और बिहार अिन छः प्रान्तोंमें बटे भूभागको छकी जगह दस प्रजातंत्रोंमें रखना बहुत "टुकेड-टुकेड करना" नहीं कहा जाअेगा।

हमारे सारे बीस प्रजातंत्र होंगे, जिनमें करोड़से कम संख्या रखनेवाले अेकाध ही प्रजातंत्र होंगे, तो भी सीमाकी भांति जन-संख्याको निश्चित बतलानेके लिये मेरे पास यहाँ साधन नहीं हैं।

भाषाकी दृष्टिसे देखनेपर मालूम होगा कि रियासतोंको भी भाषानुसार संघ बद्ध करने पर सिर्फ तीन मालवा, मेवाड और मारवाडकी और वृद्धि होगी। बीस प्रजातंत्रोंमें सिर्फ अवध और मगध ही अैसे हैं, जहाँ कोअी रियासत नहीं, बाकी सबमें अेक या अनेक रियासतें हैं। रियासतों को कभी अपने अिन्हीं भाषा संबंधी प्रजातंत्रोंमें सम्मिलित होना होगा, जैसा कि कोचिन के राजाने अपने दूरदर्शितापूर्ण वक्तव्य में कहा, "हम सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाओंसे आदर्शवादिता और दूरदर्शिताकी आशा नहीं रख सकते, अुनमेंसे कितने बेचारे जानते भी नहीं कि यह किस चिडिया का नाम है। और बहुतसे अब तक दूसरोंके हाथोंकी कठपुतली बने रहे हैं। भला ट्रावनकोर की मनोवृत्तिको कौन बुद्धिपूर्वक कहेगा? लेकिन ट्रावनकोर के राजा की समझमें कुछ आवे तब न? जब अंग्रेजोंके लाडले सी.पी वहांसे विदा हों। ट्रावनकोर की हालत सुनकर तो हथुवा राजाकी जमींदारी याद आती है। खैर टिड्डी आसमान नहीं रोक सकती।

भारतके प्रजातंत्र संघके प्रजातंत्रोंके आर्थिक स्त्रोत अुपज और राजधानियों पर दृष्टि डालें :—

	प्रजातंत्र	राजधानी	अुपज
	१ महाराष्ट्र	बंबअी	अन्न, दूध, फल, मछली, वस्त्र-निर्माण, रसायन, जलबिजली, जहाज निर्माण, मशीन
	२ गुजरात	अहमदाबाद	अन्न, दूध, घोडापालन, मछली, वस्त्र-निर्माण.
	३ पंजाब (पूर्वी)	अमृतसर	अन्न, दूध, फल, घोडापालन, वस्त्र, कागज, काष्ट, जलबिजली.
	अुत्तरी प्रजातंत्र संघ	दिल्ली	—
हिंदी भाषी क्षेत्र	४ हिमालय	शिमला	अन्न, फल, भेड, अनवस्त्र, चाय, कागज, काष्ट, खनिज, रासायनिक, जलबिजली.
	५ यौधेय—	दिल्ली	अन्न, दूध, घोडापालन, चीनी, वस्त्र, कागज
	६ ब्रज-पंचाल	आगरा	अन्न, दूध, चीनी, वस्त्र, कागज, काष्ट, पत्थर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषी संघ	७ बुंदेल-खंड	झांसी	अन्न, दूध, वस्त्र, कागज, पत्थर, खनिज
	८ महाकोसल	जबलपुर	अन्न, दूध, फल वस्त्र, कोयला, लोहा, सीमेंट, रसायनिक, कागज
	९ अवध	लखनऊ	अन्न, दूध, वस्त्र, चीनी, कागज
	१० काशी	बनारस	अन्न, दूध, चीनी, रेशम, वस्त्र, कागज, सीमेंट खनिज
	११ झारखंड	राँची	अन्न, दूध, फल, कोयला, लोहा, ताँबा, अबरक, सीमेंट, कागज, रसायनिक, मशिनरी.
	१२ मगध	पटना	अन्न, दूध, वस्त्र, चीनी, पत्थर,
	१३ मिथिला	दरभंगा	अन्न, दूध, फल, चीनी, तंबाकू, कागज, वस्त्र, पत्थर;
	१४ आसम	शिलांग	अन्न, दूध, फल, चाय, लोहा, वस्त्र, पेट्रोल, खनिज, रसायनिक
	१५ बंगाल (पश्चिमी)	कलकत्ता	अन्न, दूध, मछली, नारियल, लोहा, वस्त्र, जूट, कोयला, लोहा, रसायनिक, जलबिजली, जहाज निर्माण, मशीनरी।
	१६ ओड़िसा–	पुरी	अन्न, दूध, मछली, फल, नारियल, कोयला, लोहा, रसायनिक, जल बिजली, मशीनरी, जहाज,
	१७ आंध्र–	बेजवाडा	अन्न, दूध, मछली, नारियल, सीमेंट, पत्थर, तंबाखू, वस्त्र, जहाज
	१८ तामिल–	मद्रास	अन्न, दूध, मछली, नारियल, वस्त्र मशानरी, चीनी, रबड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ केरल— कालीकट —अन्न, फल, मछली, नारियल, चाय, मसाला, रबड, खनिज, जहाज

२० कर्नाटक— बंगलोर —अन्न, दूध, फल, मछली, चीनी, चाय, चंदन, तंबाकू, नारियल, काष्ट, कागज, खनिज, रसायनिक, मशीनरी

रास्ता बहुत तै करना है, हम रास्तेपर चल पड़े हैं। अभी फिर रेडिओ पर ट्रावनकोर के मनहूस दीवान के वक्तव्य का लम्बा उद्धरण सुना। दिल्ली रेडिओको क्यों इस साम्राज्य वादियोंकी जिन्दगी भर नाजबरदारी करनेवाले आदमी की इतनी लंबी लंबी बातें ब्राडकास्ट करना है? क्या इसमें भी कोई रहस्य है? या वल्लभ भाई पटेल को कम्यूनिस्टों के विरुद्ध बोलने से फुर्सत ही नहीं मिलती, कि रेडियो की खोज खबर लें।

आपका

राहुल सांकृत्यायन

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

भारत भरके लिये साहित्यिक पारितोषिक

श्री. शमशेर सिंह नरूला सम्पादक "न्यू लिट्रेचर" ने अपने अंग्रेजी—मासिकके प्रथम वर्षके पांचवे अंकमें अेक अुपयोगी सुझाव रखा है जिसका हम हार्दिक स्वागत करते हैं और अपने सहयोगियोंके विचारार्थ अुसे याहाँ दे रहे हैं।

"संसारके कुछ श्रेष्ठतम साहित्यकी रचना आज भारतमें हो रही है। हमारे देशमें जो ज़ोरदार स्वातंत्र्य आन्दोलन आरम्भ हुअे हैं और अुनसे जो ज्वालामुखी फूट पड़ी है अुसने हमारी भाषाओंको अेक नयी जीवनकी शक्ति प्रदानकी है। भिन्न भिन्न भाषाओं का साहित्य जो हजारों वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराना है, अब अेक नये कार्य-शीलताके युगमें प्रविष्ट हुआ है। देशमें अेक सांस्कृतिक जागरणकी लहर दौड़ गई है। लेकिन, दुर्भाग्य अपने देशके लोगोंमें साहित्यिक सहयोग और यथोचित सूझ-बूझकी कमी कारण अिससे न तो भरतीय व्यक्तित्व ही सम्पूर्णताकी ओर बढ रहा है और न भारतीय-मस्तिष्क ही अूपर अुठ रहा है। साम्राज्यवाद ने ही आदान-प्रदानके लिये अेक विदेशी भाषा लेकर अपने देशके लोगोंके बीचमें दीवारें खड़ी कर दी हैं। हम अंग्रेजी, अमरीकन या फ्रेंच साहित्यसे परिचित रहते हैं किन्तु अपने पड़ौसी-प्रान्तकी भाषामें क्या साहित्य रचा जा रहा है अुससे अपरिचित रहते हैं, और अपने इस अज्ञान पर प्रसन्न भी। अब यह अेक अनिवार्य आवश्यकता हो गअी है कि हम अैसे साधनोंको खोज निकालें जिनसे न केवल अिस बड़े परिवारमें अेक जनपदके लोगोंके विचार दूसरे जनपदके लोगों तक पहुँच सकें, बल्कि सभ्य-संसारकी सभी जातियों को हम अुनकी भेंट दे सकें।

यह स्वीकार करना होगा कि किसी जातिकी शान अुसकी राजनीतिक महत्व और सामरिक बिजयों पर ही निर्भर नहीं करती है। वह कला और साहित्य ही है कि जो संसारके अितिहास या संस्कृतिमें किसी जातिका स्थान निश्चित करती है। अिसके लिये आवश्यक है कि भारतके लेखक अपने छोटे छोटे घरौंदोंको तोड़कर बाहर निकलें। अब अुन्हें अपनी अपनी भाषाओंके छोटे छोटे गिरोहोंमें कैद नहीं रहना चाहिये। नारवेजिन भाषा ने, जिसेके बोलने वालोंकी संख्या केवल ३० लाख है, पिछले पचास वर्षोंमें संसार भर में अपना प्रभाव डाला है। भारतकी लगभग हर भाषा बोलने वालोंकी संख्या अिससे अधिक है और अिन भाषाओंमें जो 'नया-साहित्य' पैदा हो रहा है अुसका मूल्य किसी तरहसे कम नहीं। समय आ गया है तब अुनका प्रभाव जहाँ वह बोली जाती है अुन क्षेत्रोंमें सीमित नहीं रहना चाहिये। अुसे अिस देशकी सीमायें भी लांघनी चाहिये लेकिन, सबसे पहले हमें अपने बीचमें यह निर्णय करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये कि हमारे कौनसे ऐसे लेखक हैं जो बाहरी संसारके ध्यान देने योग्य हैं।

अिस अुद्देशकी पूर्तिके लिये हमारा प्रस्ताव है कि हम अेक वार्षिक "नोबल पुरस्कार" आरंभ करें जो भारतीय भाषाओंके किसी न किसी असाधारण लेखकको प्रति वर्ष दिया जाया करे। किसी वर्ष यह मलयालम के वल्लभोलको मिल सकता है, किसी वर्ष अुर्दूके जोश मलीहाबादी को किसी वर्ष बंगालके ताराशंकर बैनर्जीको, किसी वर्ष पंजाबीके भाअी वीर-सिंहको, किसी वर्ष मराठीके मामा वरेरकरको और कभी हिन्दीके मैथिली-शरण गुप्तको। यह आवश्यक नहीं कि आर्थिक दृष्टिसे यह कोअी भारी रकम हो, लेकिन यह अेक अैसा सम्मान होना चाहिये जो लेखककी ख्याति अुसके अपने प्रान्त अथवा अुसकी अपनी भाषासे बाहर पहुँचा दे। अिस सम्मान-प्रदानको अखिल भारतवर्षीय महत्वका समाचार मानना चाहिये। अिससे भारतको अुसकी अपनी विविधता और अेकता दोनोंकी जानकारी होगी। आज प्रथम दर्जेके कर्तृत्व-शील मस्तिष्क अपने विचारों तथा अपनी भावनाओंको अिन भाषाओंके द्वारा प्रकट कर रहे हैं। जब भारतके लोगोंको अिसकी जानकारी होगी तो वह अपनेमें अेक नये स्वाभिमानको जाग्रत हुआ पावेंगे।"

श्री शमशेर सिंह नरूला ने परस्परके अदान-प्रदानके लिये हम पर अेक विदेशी माध्यम लादनेके कारण बृटिश साम्राज्यवादको कोसा है और ठीक कोसा है। हमें आशा है कि अुनका "न्यू लिटेचर" थोड़े समय तक "कांटे से कांटा" निकालनेका कार्य करनेके अनन्तर भारतीय भाषाओं और साहित्यके अेकीकरणको लेकर राष्ट्रभाषाका 'नया साहित्य' बनकर रहेगा। गत वर्षोंमें भारतमें अंग्रेजीने अपनी चाहे जितनी जड़ जमा ली हो किन्तु स्वतंत्र भारतके लिये वह अेक विदेशी भाषाके अतिरिक्त कुछ न रहेगी।

आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचलें

गुजरात—

प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव—

वसो—श्री जेठालाल जोशी, मंत्री राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुज[रात] की अध्यक्षतामें अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया। जोशीजीने राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता और अुपयोगितापर सुन्दर [भा]षण दिया।

भावनगर—भावनगर स्टेट हाअीस्कूलके प्रिन्सिपाल श्री बुच[रजी] अध्यक्षतामें समारोह हुआ। आपने विद्वत्तापूर्ण प्रवचन किया—[जि]से राष्ट्रभाषाके बारेमें कअी गलत फहमियाँ दूर हुअीं। अब यह केन्द्र प्र[गति] कर रहा है।

धरमपुर—बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री [श्री] कान्तिलालजी जोशीकी अध्यक्षतामें यहाँ परीक्षाओंके प्रमाणपत्रोंका [वि]तरणोत्सव मनाया गया। श्री जोशीजीने अपने भाषणमें 'भावी भा[रत] राष्ट्रभाषाका क्या स्थान होगा'—विषयपर मननीय विचार प्रकट किए तथा इस केन्द्रमें होनेवाले प्रचार कार्यपर संतोष प्रगट किया।

अहमदाबाद—यहाँके प्रचारक मंडलने अपनी अेक सभामें श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझाके दुःखद अवसानपर श्रद्धांजलि अर्पित की। अुसी अवसरपर राज्यकी धारासभाके सदस्य और भारतीय-संघकी विधान परिषदके सदस्य श्री कन्हैयालालजी मुंशीके आकस्मिक अवसानपर शोक प्रदर्शित किया गया।

विदर्भ-नागपुर—

अमरावती—'जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अमरावती'का गठन संगठन हो गया है। अुक्त समितिकी पहली बैठक ता. २२ जून ४७ को श्री. शंकररावजी लेंढे प्रधानाचार्य शिवाजी मराठा हाअीस्कूलकी अध्यक्ष[ता]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार्म हुअी। श्रीमती सौ० विमलाबाअी देशमुख, श्री. भास्कर शास्त्री, श्री. र० ला० काले, श्री. ज० प्र० पुरवार तथा श्री. बिहारीलालजी वर्मा, वकील आदि सदस्य अुपस्थित थे।

अिस बैठकमें इस बातपर विशेष विचार विनमय हुअे कि जिलेमें राष्ट्रभाषाके प्रचारकार्यको किस प्रकार संगठित और व्यापक बनाया जाय। वि. ना. प्रान्तीय समितिके मंत्री श्री शर्माजीने राष्ट्रभाषाके महत्वपर प्रकाश डालते हुअे जिला रा. भा. प्र. स. के संगठनपर जोर दिया। उन्होंने यह भी सूचित किया कि अिसीतरह जा-जाकर वि० नागपुर प्रान्तके प्रत्येक जिलेमें जिला रा. भा. प्रचार समितिकी स्थापना करनी है। यह भी निश्चय हुआ कि जि. रा. भा. प्र. समितिकी नियमावली तैयार कर समितिकी अगली बैठकमें पेश की जाय।

खामगांव—खामगांव बुलढाणा जिलेका सदर मुकाम है। यहाँ जिला रा. भा. प्र. समितिकी स्थापनाके लिये प्रयत्न चालू है। प्रचारक श्री भँवरलालजी सेवकने कअी केन्द्रोंमें भ्रमण किया है और नये परीक्षा-केन्द्र खोले हैं। जुलाअीके अन्तमें जिला संगठनके लिये बैठक होगी।

महाराष्ट्र—

प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव—

खिर्डी—ता. १८-६-४७ को खिर्डी केन्द्रके प्रमाणपत्र वितरण समारोह श्री श्रीराम अट्रावलकरजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। गांवके शिक्षणप्रेमी श्री चांगदेव गणपत चौधरी, श्री हि. रु. चौधरी, हेडमास्टर अंग्रेजी स्कूल, श्री रा. शि. सोनार प्र. प्रचारक आदि सज्जनोंके सहयोगसे केन्द्रका कार्य सुचारुरूपसे चल रहा है। स्थानीय शिक्षक श्री धनराम तापीराम झोपेजीने केन्द्रमें प्रारंभिक, प्रवेश तथा परिचय परीक्षाओंमें प्रथम आनेवालेको अपनी ओरसे पुरस्कार देनेकी घोषणा की।

नशिराबाद—श्री मिठाराम तुकडू चौधरीजीकी अध्यक्षतामें फरवरी की परीक्षामें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंमें प्रमाणपत्र वितरित करनेका समारोह मनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। सभामें श्री व्यवहारे गुरुजी, मेहताजी और श्री चतुर्वेदीजी बातपर जोर दिया कि विद्यार्थी वर्धा समितिकी ही परीक्षाओंमें कअी महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुअे हैं।

अूपर लिखे सज्जनोंके परिश्रमसे नशिराबाद अेक आदर्श राष्ट्र प्रचार केन्द्र है।

सांगवी– (जिला पूर्वखानदेश) के अनुभवी रा० भा० प्रचा श्री० वि० श्रा० चौधरीजी 'सा. विशारद' ने अट्रावल, सातोद-कोठा दो नये केन्द्र खोले हैं। और वहाँ वे परीक्षाके वर्ग चलानेमें मदद भी रहे हैं। अुन्होंने आगामी परीक्षाके लिये ही कुल तीनों केन्द्रोंद्वारा परीक्षार्थी तय्यार किये हैं अुनका कार्य बड़ा ही सराहनीय हैं। वे तरहसे सेवा कर रहे हैं।

बम्बअी–

प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव—

आर्यन स्कूल राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्रके परीक्षार्थियोंका प्रमाण तथा पुरस्कार वितरण समारोह रविवार ता. २९ जून' ४७ को प्रातः राजाबहादुर गोविंदलालजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अध्यक्षने अ भाषणमें बताया कि अुर्दू भाषा तथा फारसी लिपि हमारे लिये कठीन है अिसमें वह स्वाभाविकता नहीं जो हम हिन्दी तथा देवनागरी लिपि पाते हैं। अिसलिये यही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है और अिसका प्रचार करना हमारा परम कर्तव्य है। अिस समारोहमें श्री वियोगी हरि श्रीमती लीलावती मुंशी, श्री कान्तिलाल जोशी तथा कमलेशजी भी उप स्थित थे। श्री वियोगी हरिजीने अिस अवसरपर बहुत सुन्दर अेवं प्रभाव शाली दीक्षांत भाषण दिया।

श्री वियोगी हरिजीका प्रचारकोंसे सम्भाषण—

बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके प्रचारकों तथा सभाकी व्यवस्थापिका सभाके सदस्योंके सामने ता. २८-६-४७ को फेलोशिप स्कूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा-भवनमें अखिल भारतीय हि. सा. सम्मेलनके सभापति श्री वियोगी का बहुतही मार्मिक तथा मननीय भाषण हुआ।

प्रमाणपत्र वितरणोत्सव—

माटुंगा—ता. २२-६-४७ को पोद्दार कॉलेज हॉलमें श्री करुणाशंकर की अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार सभा माटुंगाका प्रमाणपत्र वितरणो- नाया गया। दीक्षान्त भाषणमें श्री कनखेश भारतीयने जिन लोगोंने पत्र पाये उन्हें बधाई देते हुअे कहा कि प्रमाणपत्र पानेसे ही आपका खत्म नहीं हुआ है। अन्य भाअियोंको भी राष्ट्रभाषा सिखाना और कार्यमें सहयोग देना अुनका कर्तव्य है।

परीक्षा विभाग

आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाका कार्यक्रम

ता. ६—९—४७	१०½ से १½	१ ला	प्रश्नपत्र आधुनिक पद्य
,,	२½ से ५½	२ रा	,, गद्य—निबंध
७—९—४७	१०½ से १½	३ रा	,, व्याकरण, भाषा-विज्ञान
,,	२½ से ५½	४ था	,, आधुनिक विचार
८—९—४७	१०½ से १½	५ वाँ	,, प्राचीन पद्य
,,	२½ से ५½	६ वाँ	,, नाटक तथा कथा साहित्य
९—९—४७	१०½ से १½	७ वाँ	,, सा० आलोचना और अितिहास
,,	२½ से ५½	८ वाँ	,, निबंध और पत्रकार कला

पुस्तक-मुहावरे और कहावतें—

मुहावरें और कहावतें प्रवेश, परिचय और कोविदके लिये पाठ्य क्रम है। अिस पुस्तकमें तीनों परीक्षाओंके लिये अलग अलग मुहावरें कहावतें दी गअी हैं। अिस सम्बन्धमें प्रश्न अिसी पुस्तकपर अितिहास होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविदमें लेखन-कार्य

कोविद परिक्षार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत आपकी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य है। प्रत्येक लेख कमसे कम तीन पृष्ठका होना चाहिये। जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं उन्हें काफी अंकोंकी हानि उठानी पड़ती है अिसलिये परीक्षार्थियोंको अवश्य लिखना चाहिये। आगामी परीक्षाके लिये निबन्धोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबंध लिख सकते हैं। अिसके अलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं।

१. विज्ञान और मानव. २. हमारे गावोंकी समस्याअें, ३. समाज और स्त्री, ४. राष्ट्रभाषाका प्रश्न, ५. साहित्य और समाज, ६. स्त्री-शिक्षण ७. जीवन और कला, ८. गांधीजीका रचनात्मक कार्यक्रम, ९. देशका अितिहास केवल अुसके बड़े लोगोंकी जीवनी है, १० ग्रामसुधार, ११. भारतकी समस्याअें, १२. समाचार-पत्र

कोविद-केन्द्र—

जून १९४७ के 'राष्ट्रभाषा' अंकमें कोविद केन्द्र-सूची दी गयी है। अुसमें और ४ कोविद-केन्द्र बढ़ाये गये हैं—

१ नवाबशाह (सिंध) २ पुरी (अुत्कल) ३ जयपुर (अुत्कल) और ४ नशिराबाद (महाराष्ट्र)

—नये केन्द्र—

प्रांत	केन्द्र	क्रमांक
बंगाल	दुर्गापुर	५०१
	हटुगंज	६३१
अुत्कल	आंरदा	५७२
	कुशस्थली	५००
	अिन्दुपुर	६१०
	कुशुपुर	६१५
	भेडा	६१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	केन्द्र	क्रमांक
प्रान्त	मीरपुर माथेलो	४६१
सिन्ध	वागर्जी	५३७
	वेलो	६१८
	बांसडा	४४३
गुजरात	वलासण	४७६
	आस्ता	४७९
	चाणस्द	४८२
	जनोर	६१४
	झोलापुर	५९७
	वेजपुर	६०५
	वढवाण केम्प	६२१
	ओश्वर नगर	६३९
	वीरोल	६४८
महाराष्ट्र	वेलगांव	४५२
	चिनावल	५५२
	नारायणगांव	५६८
	कासेगांव	६०८
	असोस्रा (गोवा)	४६९
कर्नाटक	विजापुर	६०६
	वागलकोट	६०७
	हुवली	६०९
मध्यभी	कोलगांव	४७५
वि. नागपुर	साओर	५२५
	पहुरजिरा	६११
अन्य	जयपुर (राजपुताना)	४५३
	नामली (मालवा)	४६३
	आजोधर (मारवाड)	४८६
	नीमच (मालवा)	४२७
	पिपलौदा ,,	६२८
	तेनाली (मद्रास)	६३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाएँ

आगामी प्रचार परीक्षाएँ ता. ६ और ७ सितम्बर १९४७ को होंगी।

विलम्बसे आये हुअे आवेदन-पत्र

ता. २३ जुलाअी तक स्वीकार किये जा सकेंगे। अैसे प्रत्येक आवेदन-पत्रके साथ ८ आना विलम्ब शुल्क आना आवश्यक है।

आगामी प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम—

	परीक्षाका नाम	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
शनिवार ६।९।४७	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
रविवार ७।९।४७	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र ३	मौखिक
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	
मंगलवार ९।९।४७	कोविद	प्राचीन पद्य, समय ७-३० से १०-३०	
बुधवार १०।९।४७	कोविद	अुर्दू ७-३० से १०-३०	
	परिचय	अुर्दू ७-३० से १०-३०	

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता० ८।९।४७ सोमवारको सबेरे होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

श्री	कृष्ण शहाणी	खडकाना	१०२२
कु.	कृष्णा कों- भंभाणी	"	१०२३
श्री	कृष्णमूर्ति शर्मा	कराची	१०२४
"	प्रभाकर शंकर पटवर्धन	महेसाणा	१०२५
"	भीखुभाओी स्वरुपचंद शाह	सूरत	१०२६
"	चन्द्रकान्ता मणीशंकर व्यास	कडोद	१०२७
"	पुरुषोत्तम भीखाभाओी पटेल	बसो	१०३२
"	सोमाभाई मथुरभाओी सुतार	वीरसद	१०३८
"	केशवलाल नाथाभाओी पटेल	वडदला	१०३९
"	बाबुभाई वेणीभाई पटेल	अहमदाबाद	१०४०
"	भोगीलाल पुरसोत्तमदास भावसार	"	१०४१
"	प्रभातसिंह अुमेदसिंह अिनामदार	वलासण	१०४५
"	मोहनलाल सूरजमल शर्मा	शिरपुर	१०२१
"	प्रमिला गणेश नागपुरकर	पुर्णे	१०२९
"	मोरेश्वर हरी पिंपळखरे	,	१०३१
"	व्यंकटेश विश्वनाथ द्रविड	कोल्हापुर	१०३३
"	कमल वापूजी आंबेकर	पुर्णे	१०३५
श्री	शेख अब्दुल करीम अिमामसो	कासगांव	१०४३
"	यशवन्त महादेव मोहडे	वडाळा मिशन	१०४६
"	श्रीपाद विष्णु हर्डीकर	पांचगणी	१०४७
"	माधव दत्तात्रय कुळकर्णी	बार्शी	१०४९
"	अनन्त दाजी सहस्त्रबुद्धे	नासिक	१०५०
	सौ. सुशीला आगाशे	नासिक	१०५१
श्री	के. सिद्धलिंगण्णा	बागलकोट	१०३४
"	गणेश शंकर नाडगीर	विजापुर	१०३६
"	वीर. गुरु. वस्त्रद	बागलकोट	१०३७
कु.	भारती शर्मा	नागपुर	१०३०
श्री	किशोरीलाल सि० अवस्थी	हिंगणघाट	१०४२
"	कृष्णसिंह माधवसिंह गौर	नागपुर	१०४४
"	विजयस्वरूप भटनागर 'विशारद'	नाथद्वारा	१०२८
"	कोत्तपल्लि वेंकटसुब्बय्या	तेनाली	१०४८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका चि
'राष्ट्रभाषा' के

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष, लाभप्रद होता है।

प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविदके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं।

ऊपर लिखी चारों परीक्षाओंके अेक अेक समयके प्रश्नपत्रोंके सेट तैयार किये गये हैं। प्रत्येक सेटका दाम पाँच आना है। प्रश्नपत्रोंका सेट मँगाते समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये।

प्रत्येक फुटकर प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है।

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

मुद्रक—सुमन कात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

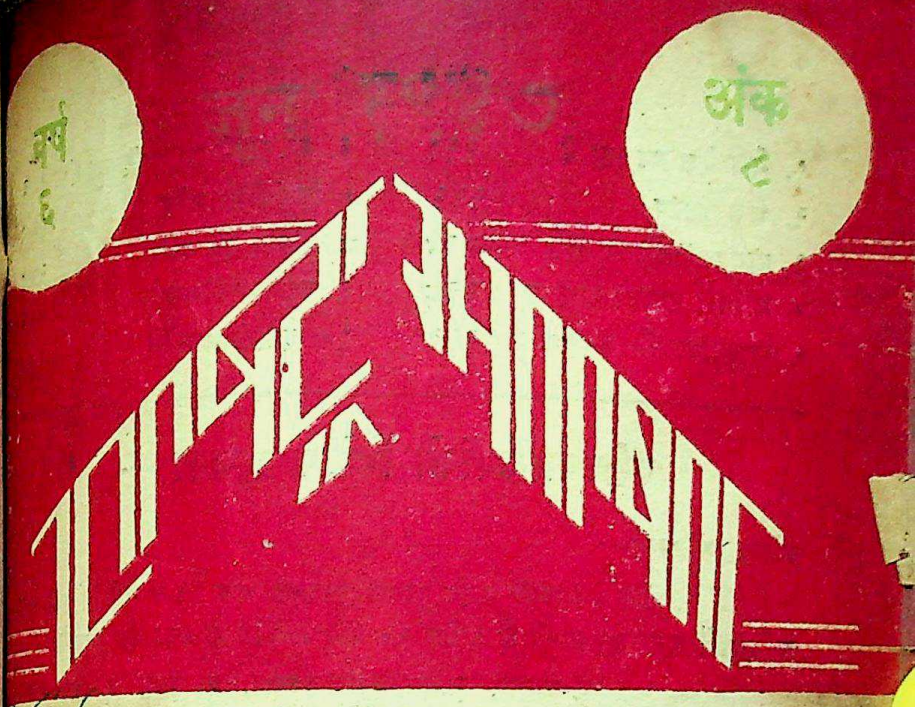

सुनो

यदि दुनियामें तीस करोड़ ईसा,
मुहम्मद, बुद्ध या राम भी
जन्म ले लें तब भी तुम्हारा
उद्धार नहीं हो सकता
यदि तुम स्वयं
अपने अज्ञानको दूर
करनेका प्रयत्न
नहीं करते
हो।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: विषय सूची :—

१. मेरा देश बट रहा है	२२१	६. डा. रघुवीरका साहित्यक-योग	२३१
२. अेक सुझाव	२२३	७. निबंधोंकी जाँच	२३८
३. मानव संस्कृतिका स्रोत	२२४	८. प्रांतीय हलचलें	२३९
४. दक्षिण यात्राके अनुभव	२२८	९. परीक्षा विभाग	२४१
५. राष्ट्रभाषा और मातृभाषा	२३३	१०. हमारी नजरोंमें	२४६
			२४८

परीक्षार्थियोंको विशेष सूचना—

प्रवेश परीक्षा—

१. प्रवेश परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक गुलदस्ता भाग १ से नीचे लिखी हुई **कविताअें हटा दी गअीं हैं**। शेष २० कविताओंमेंसे ही प्रश्न पूछे जाअेंगे—

१. धीरनर, २. बालककी कल्पना, ३. चाह, ४. उठो जागो, ५. तेरी छबि, ६. हमेशा प्रेमकी रट हो जबाँ पर।

२. प्रवेश परीक्षासे **मौखिक परीक्षा हटा दी गअी है**; अब केवल दो लिखित प्रश्नपत्र ही रहेंगे।

परीचय परीक्षा—

परिचय परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक गुलदस्ता भाग २ से नीचे लिखी हुई **कविताअें हटा दी गअी हैं**; शेष २० कविताओंमेंसे ही प्रश्न पूछे जाअेंगे।

१. प्रार्थना, २. प्रियतम, ३. आप बचा लूँ अपने तअीं, ४. परीचय, ५. सरसोंका सौजन्य, ६. कुतुब-मीनार, ७. मेरा निश्चय, ८. जननी, ९. अभिलाषा.

कोविद परीक्षा—

कोविद परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक गुलदस्ता भाग ३ से नीचे लिखी हुई **कविताअें हटा दी गअीं हैं**—

१. कबीरदासजीका तीसरा पद—झीनी झीनी बिनी चदरिया। २. तुलसीदासजीका विजय-रथ, ३. जय जय प्यारा भारत देश, ४. विधवा, ५. जगत् अुबारो, ६. ग्राम, ७. अुर्दू पद्यमेंसे चुने फूल।

—परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ६] वर्धा, जून—१९४७ [अंक ८

मेरा देश बांटा जा रहा है !

अेक बच्चे पर दो माताअें अपना-अपना अधिकार जता रहीं थीं। जब राजा निपटारा न कर सका अथवा सच्ची बातका पता लगानेके लिये ही अुसने कहा—"मैं बच्चेके बीचमेंसे दो टुकड़े करके अेक-अेक हिस्सा दोनोंको दे देता हूँ।" सच्ची माँ बोली—"बच्चेको बीचमेंसे न चीरो। अुसीको दे दो। हुर्योको दे दो।"

आज किसी अेक बच्चेके नहीं, स्वयं भारत 'माँ' के टुकड़े होने जा रहे हैं। अुसके चालीस करोड़ सपूतोंकी आँखोंके सामने! मुस्लीम-लीग प्रसन्न है कि अुसका "पाकिस्तान" अुसे मिल रहा है। काँग्रेस प्रसन्न है 'पंजाब' और 'बंगाल' का भी बटवारा हो रहा है। रियास्तें प्रसन्न हैं कि वह किसी न किसी शासन-व्यवस्थामें सम्मिलित होने और न होनेके लिये स्वतंत्र हैं। और तो और अंग्रेजी ही नहीं, चर्चिल तक प्रसन्न है कि अब अुनकी पांचों अंगुलियाँ घीमें हैं।

भारतको "स्वाधीनता" मिल रही है और अंग्रेजोंके पैर भारतमें और भी जमे जा रहे हैं। ऐसा है यह 'स्वराज्य' जो हमें हमारे बापू कहते हैं कि वह आखिरसे भी पहले मिलनेवाला है!

'अितिहास' ने देशके मानचित्र पर अनेक लकीरें खींची हैं। कुछ और लकीरें खिचनेसे भी मस्तिष्क पर चिंताकी रेखाअें क्यों खिचें? अिसीलिये कि यह बटवारा दो भाअियोंका रजामंदीसे किया हुआ बटवारा नहीं है, यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजोंका किया हुआ बटवारा है जिसके लिये मुस्लिम-लीगने आग्रह किया है और जिसे कांग्रेस-कार्य समितिने मजबूरीसे स्वीकार किया है।

अखिल भारत वर्षीय कांग्रेस महासमिति चाहे तो अिस स्वीकृतिको अस्वीकृतिमें पलट दे सकती है। किन्तु—आशा नहीं।

प्रश्न होता है कि कांग्रेसके अुच्चाधिकारी अिस देश-विभाजनके लिये क्यों मजबूर हो गये हैं? अिसलिये कि वे आज किसीके 'मायाजाल' में फंस गये अुस महा-मन्त्रको जिसकी दक्षता स्वयं अुन्होंने देशको दी है भूल गये हैं। वे 'स्वराज्य' को अंग्रेजोंद्वारा दी जा सकने वाली चीज़ समझने लग गये हैं। हमें तो यह तोता रटन्त याद है कि 'स्वराज्य' दिया नहीं जाता, लिया जाता है किन्तु अुन्हें भूल गया है।

प्रश्न है यदि कांग्रेस कार्य समिति ब्रिटिश योजनाको अस्वीकार करदे तो अंग्रेज क्या करेंगे? अुत्तर है— "अंग्रेजोंको यहाँ बने रहनेका और वहाना मिल जायगा।" तो सिद्ध हुआ कि वस्तवमें अंग्रेज यहाँ बने ही रहना चाहते हैं, किन्तु मजबूरीके कारण ही अुन्हें भारत छोड़कर जाना पड़ रहा है। यदि वे यहाँ बने रहना चाहते हैं तो अुन्हें भारत छोड़कर जानेकी क्या जरूरत? क्या मजबूरी? बापूका कहना है कि "वे हमारे असहयोग आन्दोलन से प्रभावित हो गये हैं। हमने अुन्हें बिना किसी तरहकी हानि पहुँचाये अुनसे केवल असहयोग किया है।" अर्थात, अुनमें हृदय परिवर्तन हो गया है "काश! अत तकके अितिहास ही की तरह हमें भावी अितिहास भी निराश न करे! किन्तु यदि यह हृदय परिवर्तन हुआ है तो अंग्रेज देश छोड़नेसे पहले अुसके टुकड़े टुकड़े क्यों कर डालना चाहते हैं? क्या वे बिना देशको बांटे देशको छोड़ ही नहीं सकते?

अिसका अेक अुत्तर तो स्वयं अंग्रेजों द्वारा दिया जा रहा है। अुन्हें चिन्ता है यदि वह देशको यूं ही छोड़कर चले जायेंगे तो देशके बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक लोग आपसमें खून खच्चर हो जायेंगे। अिसीलिये वे जानेसे पहले देशमें अैसी सुव्यवस्था कर जाना चाहते हैं कि हिन्दुस्तानके लोग "यावच्चन्द्र दिवाकरौ" शान्ति-पूर्वक राज्य करते रहें। हमें यह बात अितनी अधिक अच्छी लगती है कि अिसके झूठे होनेमें तनिक सन्देह नहीं।

दूसरा अुत्तर अिस देशके 'सौजन्य' ने दिया है—"देशके बटवारेमें अंग्रेजोंका क्या कसूर है? वे तो वही कर रहे हैं जो अुन्हें कांग्रेस और मुस्लिम लीग मिलकर करनेको कह रही हैं।" काश! कांग्रेस और मुस्लिम-लीगने मिलकर कहा होता। कुछ मिलकर कहा होता तो आज दूसरा ही रंग होता। दुर्भाग्य तो यही है कि देशके बंटवारेकी मांग मिलकर नहीं की गयी है। देशके बटवारे की मांगे आपसमें पहले बँट कर की गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान ब्रिटेनसे आठ गुना बड़ा है। यदि ब्रिगलैन्डपर भारतका शासन-काल ब्रिगलैन्डके शासन कालसे आठवां हिस्सा भी रहे तो यह कुछ कठिन नहीं है कि वेलूज़ और स्काटलैन्डके लोग ब्रिगलैन्डसे पृथक होनेकी मांग करने लगें। यह तो साम्राज्य-शाहीके बायें हाथका खेल है कि क़लम हमारी रहती है—बात अुनकी लिखी जाती है।

हमें प्रसन्नता है कि बड़े बड़ोंको रतौंदिया हो जानेपर भी सारा राष्ट्र अन्धा नहीं हो गया है। हमें दुःख तो यही है कि हमारा देश बंट रहा है, और देशके अिस बंटवारेको, देशमें घर घर फूटके बीज बिखेर दिये जानेके साम्राज्य-शाही प्रयत्नको हमारे नेतागण 'स्वराज्य दिया जाना' समझ रहे हैं।

किसी जातिका अिससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि अुसके नेतागण देशकी अिस 'बरबादी' को देशकी 'आज़ादी' समझे रहे हैं।

हमें अिसमें तनिक सन्देह नहीं कि राष्ट्र-आत्मा शीघ्रही अिस आत्म घातका बदला लेगी और विद्रोह करेगी। देशका पिछली आधी शताब्दीका स्वातंत्र्य-आन्दोलन वृथा नहीं जा सकता।

—आनन्द कौसल्यायन

अेक सुझाव

मैं चाहता हूँ कि राष्ट्रभाषा प्रेमी भाअी बहनोंका अेक अैसा राष्ट्रभाषा संघ स्थापित हो जो केवल राष्ट्रभाषामें ही पत्र-व्यवहार द्वारा अेक दूसरे प्रान्तकी सांस्कृतिक अेवं सामाजिक ज्ञान प्राप्तिका साधन बने! अिस प्रकारके पत्र-व्यवहारसे हिन्दीमें लिखते और पढ़ते रहनेका अभ्यास बराबर बना रहेगा। साथ ही हमारी अन्तर्प्रान्तीय परिचय अेर जानकारी भी बढ़ेगी।

हमें आशा है कि हमारे राष्ट्रभाषा प्रेमी भाअी बहन अिस सुझावको व्यहारिक रूप देनेवाली अपनी योजनाअें संपादक 'राष्ट्रभाषाके' पतेसे भेजेंगे। अगले अंकमें हम अिस योजनाकी अलग अलग स्थानोंसे आयी हुअी रूप-रेखा पाठकोंके सामने रख सकेंगे।

अेक राष्ट्रभाषा-प्रेमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव संस्कृतिका स्रोत: अेशिया

(अेशिया सम्मेलन का अुद्घाटन भाषण)

पंडित जवाहरलाल नेहरू.

हम लोग आज अितिहासके अेक युगकी समाप्तिपर और दूसरे युगके सिरहाने पर खड़े हैं। मानवीय अितिहास और साधनाके अिन दो युगोंके मध्य-स्थल पर खड़े होकर हम अपने सुदूर अतीत पर दृष्टि डाल सकते हैं और अुस भविष्यकी ओर निहार सकते हैं, जिसका स्वरूप हमारी अपनी आँखोंके आगे ही घड़ा जा रहा है। महानिद्राकी अेक सुदीर्घ अवधिके पश्चात्, अेशिया फिर अेकबार विश्वके मामलोंमें अूंचे स्थानपर आगया है। अगर हमें अितिहासके लाखों वर्ष पीछेके पन्नोंपर निगाह डालें तो हम देखेंगे कि अिस अेशिया महाद्वीपने, जिसके साथ सांस्कृतिक बन्धुत्वका मिश्रका अत्यन्त घनिष्ट नाता था, मानवताके विकासमें अत्यन्त महान योगदान दिया है। यहीं सभ्यताका अरुणोदय हुआ और यहीं मनुष्यने जीवनकी अनन्त संघर्ष-यात्रा आरम्भ की, यहीं मानव-मनने सत्यका अनवरत अन्वेषण शुरू किया और यहीं मानवात्मा अुज्ज्वल दीप्ति-पुंजके समान द्युतिमान होकर सारे संसारको प्रकाशित करने लगी।

यह चेतना-स्रोत अेशिया जिसमेंसे निकल कर संस्कृतिकी महान धाराएं चारों दिशाओंमें प्रवाहित हुअीं, धीरे धीरे जड़ और अपरिवर्तनशील होगया। अन्य राष्ट्र व देश आगे आगये और अुन्होंने अपना नवीन चेतनाओंसे अपना विस्तार किया और संसारके बड़े बड़े भागोंपर अपना आधिपत्य जमा लिया। यह शक्ति सम्पन्न महाद्वीप यूरोपके प्रतिस्पर्धी साम्राज्यवादोंका अखाड़ा-मात्र रह गया और यूरोप मानवीय अितिहास और प्रगतिका केन्द्र बन गया।

अब चित्रपट पर परिवर्तन हो रहा है और अेशिया फिर अपने आपको पहचान रहा है। हम परिवर्तनोंके महान युगमें रह रहे हैं और वह अवस्था आ चुकी है, जब अेशिया अन्य महाद्वीपोंके साथ अपना अुचित स्थान प्राप्त करे।

अिस अैसे महान क्षणमें हम लोग यहाँ अेकत्र हुअे हैं और भारत-वासियोंको अिस बातका गर्व है कि अुन्हें अन्य देशोंके अपने अेशियाअी भाअियोंका स्वागत करनेका, अुनके साथ वर्तमान और भविष्यके सम्बन्धों बातचीत करनेका और पारस्परिक अुन्नति कल्याण और सौहार्दकी बुनियाद रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस प्रकारके सम्मेलनके सम्बन्धमें बहुत लोगोंने सोचा था। असलमें यही आश्चर्यकी बात है कि यह सम्मेलन कअीवर्ष पूर्व नहीं हुआ, पर शायद वह समय भी अिसके लिये सर्वथा अुचित न होता। अुस समय अिस प्रकार की कोअी चीज करनेका प्रयत्न दिखावटी होता और वह संसारकी घटनाओंके साथ मेल न खाता। मौकेकी बात है कि हिन्दुस्तानमें यह सम्मेलन बुलाया गया, पर अिस प्रकारका सम्मेलन करनेका विचार अेशियाके बहुतसे देशों और बहुतसे व्यक्तियोंमें अेक साथ पैदा हुआ। यह प्रेरणा और आत्मज्ञान सब जगह फैल चुका था कि हम अेशियावासियोंके अेक जगह मिलने, अेक साथ रहने और अेक साथ आगे बढ़नेका समय आ गया है। यह कोअी अुड़ती अिच्छा मात्र नहीं थी, बल्कि घटनाओंका अनिरुद्ध प्रवाह था, जिसने हमें अिस ढङ्गसे सोचने को बाधित कर दिया। कारण, हमने हिन्दुस्तानसे जो निमन्त्रण भेजे, अुनकी प्रतिध्वनि हुअी और अेशियाके प्रत्येक देशसे अुसका शानदार प्रत्युत्तर मिला।

अेशियाका अतीत

आज यहाँ अेकत्र होनेके समय अेशियाका सुदीर्घ अतीत हमारे सामने आ खड़ा होता है, हालके सालोंकी मुसीबतें विस्तृत होजाती हैं और हज़ारों स्मृतियां जाग अुठती हैं। पर मैं आपके सामने अिन अतीतके युगोंकी कीर्तियाँ, दुर्दशों या असफलताओंकी चर्चा नहीं करूँगा और न मैं हालके जमानेकी अुन बातोंकी चर्चा करूँगा जिन्होंने हमें अितना अधिक पीड़ित किया है और जो कुछ हदतक अब भी हमारे साथ है। पिछले २० वर्षोंने हमारे पश्चिमी साम्राज्यके अुत्थान और अेशियाके अधिकांश भागोंको गुलाम या अर्ध-गुलाम होते हुअे देखा है। अिन वर्षोंमें बहुत कुछ हुआ है। पर यूरोपियन आधिपत्य, या अेक विशेष रूपसे ध्यान देने योग्य परिणाम शायद यह हुआ कि अेशियाके देश अेक दूसरेसे सर्वथा पृथक और विमुख हो गअे। हिन्दुस्तानका अपने अुत्तर पश्चिम, अुत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्वके देशोंसे सदा सम्पर्क और मेल जोल रहा है। हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश-साम्राज्य शुरू होनेके साथ-साथ वे सम्पर्क टूट गअे और हिन्दुस्तान अेशियाके अन्य देशोंसे पूर्णतया पृथक हो गया। स्थल मार्गकी यात्रा सर्वथा बन्द हो गअी और बाहरी संसार पर निगाह डालनेके लिये हमारी मुख्य खिड़की अिंग्लैंड़को जानेवाले समुद्री मार्गकी ओर ही खुलने लगी। यही दशा अेशियाके अन्य देशोंमें भी हुअी। अुनकी अर्थ-व्यवस्था किसी यूरोपियन साम्राज्यवादके साथ बंधी हुअी थी और हम सदा सब प्रकारके पथ-प्रदर्शन और सहायताके लिये यूरोपकी ओर ही निहारते थे।

अब यह पृथकता और विमुखता समाप्त हो रही है। अिसके कारण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्यवादका लोप हो गया हैं। स्थल मार्ग फिर शुरू हो गये हैं और
मार्गने हमें अेक दूसरेके बहुत निकट ला दिया है।

अिस सम्मेलन और अिस कार्यमें न कोअी नेता है और न कोअी
अनुयायी। अेशियाके सब देश सामान्य कार्यों और यत्नोंके लिये समानता
आधारपर मिल रहे हैं। अिस कार्यमें भारत भी अपना हिस्सा अदा करेगा
भौगोलिक दृष्टिसे अेशियाके देशोंके बीचमें स्थित होनेके कारण भारत वर्षमें
भी अनेक संस्कृतियोंका सम्मिलन होता रहा है, जिन्हें पचाकर भारतने अेक
संस्कृतिका निर्माण किया, जो यहाँसे देश-विदेशोंमें फैली।

आक्रमणात्मक अुद्देश्य नहीं

मैं यह कह देना चाहता हूँ कि हमारा अुद्देश्य आक्रमणात्मक
किसी भी देश या महाद्वीपके विरुद्ध नहीं। हमारा तो यही महान अुद्देश्य है
सारे संसारमें शान्ति और अुन्नतिको प्रोत्साहित किया जाय।

विश्व अितिहासके वर्तमान संकटमें अेशिया महत्वपूर्ण कार्य करेगा
अब अेशियाके देश किसी और देशकी स्वार्थपूर्तिके साधन नहीं बनेंगे। यूरोप
और अमरीकाने मानव अुन्नतिके लिये जो महान कार्य किये हैं अुनके लिये हम
अुनकी प्रशंसा करते हैं, पर पश्चिमने हमें असंख्य युद्ध और भगड़ोंमें
घसीटा है। अभी कल लड़ाअी खत्म हुअी है और अिस परमाणु-युगमें
नये युद्धकी चर्चा सुनायी देती है, अिस परमाणु-युगमें शांति कायम रखने
अेशियाको सफलता पूर्वक कार्य करना है। असलमें तबतक शांति नहीं
सकता, जबतक अेशिया अपना कार्य नहीं करता।

शान्ति सिर्फ तभी हो सकती है, जब राष्ट्र स्वतंत्र हों और मनुष्योंको
जगह सुरक्षा और अवसर मिलें। अिसलिये शान्ति और स्वतंत्रता दोनोंको
अुनके राजनीतिक व आर्थिक दृष्टिकोणोंसे सोचना होगा।

अेक विश्वका आदर्श

हम अैसी जगह पर पहुँच गये हैं जहाँ आकर 'अेक विश्व' का आदर्श
और किसी न किसी प्रकारका विश्व-संघ अनिवार्य मालूम होता है, यद्यपि
मार्गमें बड़े खतरे और बाधाअें हैं। हमें अिसी आदर्श के लिये कार्य करना
चाहिये अिसी लिये हम मित्रराष्ट्रिय संघ जैसी चीज़का समर्थन करते हैं
अिस अेक विश्वके आदर्शको क्रियान्वित देखनेके लिये हम अेशिया वासियोंको
परस्पर सहयोग भी करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रवादिताका स्थान

प्रत्येक देशमें राष्ट्रवादिताका अेक स्थान है और अिसका प्रतिपालन होना चाहिये। पर यह आक्रमणात्मक और अन्तर्राष्ट्रीय अुन्नतिके मार्गमें बाधक नहीं होनी चाहिये। यूरोप और अमरीका की, और हमारे अफ्रिकामें कष्ट पाने-वाले भाअियोंकी ओर अेशिया अपना मित्रताका हाथ बढ़ाता है। अफ्रीकाकी जनताके प्रति हम अशिया वासियोंकी विशेष जिम्मेदारी है। अुन्हें मानवीय परिवारमें अुचित स्थान दिलानेमें हमें मदद करनी चाहिये। जिस स्वतंत्रताकी हम कल्पना कर रहे हैं वह किसी राष्ट्र विशेष या देश विशेष के लिये नहीं, बल्कि वह तो सारी मनुष्य जातिमें फैल जानी चाहिये। वह सर्वत्र सामान्य आदर्शको प्राप्त होनी चाहिये और अुसे अपने विकासके लिये पूर्ण अवसर मिलना चाहिये।

अेशियाके निर्माता

आज हम अेशियाकी स्वतंत्राके अुन महान निर्माताओं सुन यातसेन जगलूल पाशा, अतातुर्क कमाल पाशा व अन्य लोगोंका स्मरण करते हैं। आज हम अुस महान विभूति महात्मा गांधीका स्मरण करते हैं जिसके परिश्रम और प्रेरणा शक्तिने हिन्दुस्तानको अुसकी स्वाधीनताके दरवाजे पर पहुँचाया है।

सारा अेशिया ही परीक्षाओं और कष्टोंसे गुजर रहा है। हिन्दुस्तानमें भी आपको संघर्ष और झगड़ा नज़र आयगा पर हमें अिससे निरुत्साहित नहीं होना है। विशाल परिवर्तनोंके समय यह चीजें अवश्यम्भावी हैं।

अेशियाके सभी राष्ट्रोंमें आज अेक नयी जीवनप्रेरणा और अेक शक्ति-शाली निर्णयात्मक चेतना है। जनता जाग अुठा है और वह अपने जन्मसिद्ध अधिकारकी मांग कर रही है। सारे अेशियामें तीव्र आँधियां चल रही हैं। हम अुनसे भयभीत न हों; बल्कि अुनका स्वागत करें क्योंकि अुनकी मददसे ही तो हम अपने सपनोंका नवीन अेशिया निर्माण कर सकते हैं। आअिये हम अिन नवीन शक्तियोंमें और अुस स्वप्नमें, जो अब वास्तविक रूप धारण करता जा रहा है, दृढ़ श्रद्धा रखें। सबसे बढ़कर हम अुस मानवीय आत्मामें श्रद्धा रखें, जिसका प्रतीक बनकर अेशिया अपने सुदीर्घ अतीत युगोंसे खड़ा रहा।

(विश्ववाणी अेशिया-अङ्कसे अुद्धृत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण यात्राके अनुभव

पं० मौलिचन्द्र शर्मा, प्रधान-मंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन

मैं अभी दक्षिण भारतकी यात्रासे लौट रहा हूँ, यह यात्रा दक्षिण भारतमें हिन्दी प्रचारकी प्रगति और अुसके वर्तमान स्वरूप और भावी विकास और प्रसारकी सम्भावनाको समझ सकनेके लिए की गअी थी। मद्रास केरल और कन्नड़में घूमा और वहाँके हिन्दी कार्यकर्ताओं, हिन्दीकी छात्राओं, कालेजोंके प्रिंसिपलों आदिसे मिला। मैसूर, ट्रावनकोर और कोचीन राज्योंके अनेक अधिकारियोंसे भी विचार विनिमय हुआ। अनेक गोष्ठियां, सार्वजनिक और निजी सभायें आदि भी हुअीं और सबसे बढ़कर ऐसे अवसर भी वहाँके मित्रोंने अुपस्थित किये जब वहाँके साहित्यकों, लेखकों, कवियों आदिने अेकत्रित होकर अपनी भाषाके साहित्यकी प्रगतियोंका परिचय दिया और हिन्दीके विषयोंको बड़े चाव और भावनासे सुना। दक्षिण भारतकी भाषा विषयक स्थितिकी जानकारीकी दृष्टिसे यह यात्रा बहुत ही अुपयोगी रही।

सम्मेलनके पिछले कराची अधिवेशनमें विषय निर्वाचिनी समितिके सामने यह विषय आया था कि सम्मेलन दक्षिण भारतमें राष्ट्रभाषाका प्रचार अन्य अहिन्दी प्रान्तोंकी भाँति आरम्भ कर दे क्योंकि दक्षिण हिन्दी प्रचार सभाने अब फारसी लिपिका ज्ञान प्रत्येक छात्रके लिये अनिवार्य बनाकर हिन्दी प्रचारके बढ़ते हुये प्रवाहमें रोक डाल दी है और ऐसे छात्र छात्राओंके लिये, जो केवल देवनागरी ही द्वारा राष्ट्रभाषाका ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं कोअी परीक्षायें नहीं रह गअी हैं। कुछ कारणोंसे यह प्रश्न स्थायी समितिके निर्णयके लिये रख छोड़ा गया था। स्थायी समिति कुछ निर्णय करे अुससे पहले दक्षिण भारत विषयक पूरी और निर्भ्रम जानकारी प्राप्त करना और भी आवश्यक था। कराचीके बाद मैं सभापति श्री वियोगी हरिजी तथा भदन्त आनन्द कौसल्यायनजीके साथ सिन्ध प्रान्तके दौरे पर चला गया और वहाँसे पंजाबमें कअी जगह हो कर जनवरीके दूसरे सप्ताहमें दिल्ली लौटा और चौथे सप्ताहमें ही दक्षिण भारतके लिये चला गया।

मद्रासमें मैं दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके भवनमें ही ठहरा। वहाँ सौभाग्यसे सब प्रान्तीय मन्त्री और अनेक कार्यकर्ता तथा प्रचारक चारों ओरसे आये हुये थे। अत प्रधान मन्त्री श्री सत्यनारायणके अतिरिक्त और अनेकोंसे मिलना हो गया। मद्रासमें ही यह बात तो स्पष्ट ज्ञात हो गअी कि दक्षिण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतके चार कोनोंसे कार्यकर्ताओं और छात्रोंकी ओरसे यह माँग आयी है कि उर्दूकी अनिवार्यता हटायी जाय। न तो प्रचारक न अध्यापक अर्दू जानते हैं न उन्हें उर्दू जानने की अिच्छा या उत्साह है। जो स्वयं फारसी लिपि नहीं जानते वे पढ़ायेंगे कैसे? परन्तु अिसका ध्यान रखे बिना, मानो कहने मात्रसे कोअी काम हो जायगा, फारसी लिपि अनिवार्य बना दी गअी थी। फलतः फरवरीकी होनेवाली परीक्षाओंमें बैठनेवाले प्रायः आधे छात्रोंने उर्दू लिपि न सीखनेके कारण परीक्षामें न बैठनेका निश्चय कर लिया था। प्रति वर्ष सभा जो तीन परीक्षाएँ लेती है अुनमें प्रायः २० हजार विद्यार्थी बैठते हैं। अुर्दू लिपिके कारण यह स्थिति आ अुपस्थित हुअी कि शायद ही १० हजार विद्यार्थी अिस वर्ष बैठ पावें।

मैंने श्री सत्यनारायणसे बातें कीं, अुनका सौजन्य और सद्भाव अुनके शब्दों और अतिथ्यसे स्पष्ट था। हिन्दुस्तानी नामकी नअी भाषा जो बननेवाली है अुसकी दो लिपियाँ सबको सिखाअी जानी चाहिये, यह महात्मा गांधीका मत अुन्हें मान्य है और अुसे वे दक्षिण भारतमें कार्य रूपमें परिणत करनेमें लगे हुये हैं। कुछ वार्तालापके बाद अुन्होंने कहा कि फारसी लिपिकी अनिवार्यता अेक प्रयोग है, यदि सफल हुआ तो ठीक नहीं तो यह अनिवार्यता हटा दी जायगी। मैंने अुन्हें सुझाया कि सब प्रान्तोंसे फारसी लिपिके विरोधमें अुनके पास आये हुये अुसकी असफलताका पर्याप्त प्रमाण हैं। मैंने अुन्हें कहा कि यदि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा अिस प्रकार अुर्दूको अनिवार्य बना कर हिन्दीके प्रचारमें बाधा अुपस्थित करेगी तो सम्भवतः हिन्दी साहित्य सम्मेलनको अपनी राष्ट्रभाषा परीक्षायें यहाँ प्रचलित करना पड़ेंगी।

अगले दिन मैंने देखा कि अेक सूचना श्री सत्यनारायणजीकी ओरसे प्रकाशित की गअी है कि फारसी लिपिकी पुस्तकोंके अभावके कारण फरवरीमें होनेवाली परीक्षाओंमें अुर्दू लिपि न जाननेवाले छात्र भी बैठ सकेंगे और पास होने पर प्रमाण पत्र पा सकेंगे। अुर्दूके पर्चेमें न बैठनेवाला फेल न होगा, जो अुर्दूका पर्चा भी करेगा अुसे अतिरिक्त नम्बर मिलेंगे। अिस प्रकार फरवरीमें अुपस्थित होनेवाली कठिनाअीसे अुन्होंने यह मार्ग निकाला है परन्तु अुन सरीखे कुशल और पुराने कार्यकर्ताको यह ज्ञान तो हो ही गया कि यह मार्ग तो अेक ही बार काम देगा। अगस्तकी परीक्षाओंमें भी तो छात्र अुर्दू लिपि सीख कर नहीं बैठना चाहेंगे।

हिन्दीका बल अुसकी प्रकृति है। दक्षिणकी सब लिपियाँ देवनागरीके आधार पर निकली हैं। केवल अक्षरोंके रूप भिन्न हैं अन्यथा अुनका स्वर व्यञ्जन वर्ण आदिमें विभाजन-क्रम आदि सब वही है, मात्राअें वही हैं, संयुक्ताक्षर अुसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार बनते हैं। अेक बार अक्षरोंके दूसरे रूप जान लेने पर अेक लिपिका जाननेवाला दूसरी लिपि तुरन्त सीख लेता है, अिसीलिये नागरी सीखना सबसे आसान है। अुर्दू लिपि अेकदम भिन्न है, अुसे देखकर छात्र और अध्यापक दोनों घबराते हैं, और फिर अुसका वहाँकी परम्परामें कोई स्थान नहीं, वहाँके समाजमें कोई अुपयोग नहीं। किसी दक्षिणीकी समझमें यह नहीं आता कि वह अुसे क्यों सीखे, सिवाय अिसके कि महात्माजी चाहते हैं।

अिसी प्रकार हिन्दीका दूसरा बल है अुसकी संस्कृतनिष्ठ शब्दावली। जब भी मैं केरलमें या कन्नड़में बोला, मैंने देखा था कि गूढ़से गूढ़ संस्कृत शब्दको लोग सरलतासे ग्रहण करते थे और साधारणसे अुर्दू शब्द भी अुन्हें दुर्बोध थे, संस्कृत शब्दावली हमारे और अुनके बीच समानता स्थापित करती है। परन्तु मैंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके कार्यालयमें जो हिन्दी मलयालम और हिन्दी कन्नड़ कोष देखे जिन्हें वे प्रचरित करते हैं तो ९० प्रतिशत शब्द अरबी फारसीके पाये। पूछने पर मुझे बताया गया कि हिन्दी शब्दावली तो यहाँके लोग समझते ही हैं, वे शब्द तो देने आवश्यक नहीं हैं। अिसलिये हिन्दी प्रचारके नामसे अरबी फारसीके प्रचारका शुभ कार्य किया जा रहा है। जहाँ फारसी अरबी शब्दावली समझी जाती है वहाँ अुसके प्रचारके लिये यह तर्क है कि लोग अिसे समझते हैं, अिसीलिये यह चलनी चाहिये, जहाँ संस्कृत शब्द समझे जाते हैं वहाँ अिसीलिये फारसी अरबी पढ़ाअी जानी चाहिये कि वह नहीं समझी जाती! हिन्दीकी दोनों कारणोंसे सदा अुपेक्षा की जानी चाहिये! अच्छी विडम्बना है!

जहाँ-जहाँ मैं गया सबने यही कहा कि यह फारसी लिपिका बोझ वे नहीं अुठा सकते और नहीं अुठाना चाहते। अिसके कारण हिन्दी सीखनेसे ही अनेक व्यक्ति विरत हो रहे हैं। अुन्हें अपनी लिपि और बहुत करके रोमन लिपि तो सीखनी ही होती है फिर दो लिपियाँ और सीखनेका संकट कौन मोल ले! अनेक स्थानों पर अध्यापक और अध्यापिकाओंने बताया कि वे स्वयं फारसी लिपि नहीं जानते हैं, पढ़ायें क्यों? अिस सिलसिलेमें एक आश्चर्य जनक आविष्कारकी बात मैंने सुनी। वह यह थी कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाकी ओरसे फारसी लिपि सिखानेकी अेक पुस्तक निकाली गअी है, जिसका नाम है, 'आसान हुरूफ' मानो और हुरूफ कठिन हैं। और अध्यापकोंको लिखा गया है कि अिससे वे फारसी लिपि स्वयं ही सीख लें और साथ साथ छात्रोंको भी सिखाते जायँ।

मुझसे जिम्मेदार व्यक्तियोंने यह भी कहा कि अुन्हें यह आज्ञा है कि वे फारसी न जाननेके कारण किसीको फेल न करें। अतः कुछ भी लिखा कर वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब अिसीलिये पास किये जाते हैं कि यह कहा जा सके कि अितने व्यक्तियोंने हिन्दी लिपि सहित परीक्षा पास की है। मैंने जब यह कहा कि अिसका अर्थ है महात्मा गांधी तथा देशके साथ छल करना, तो अुन्होंने स्वीकार किया कि वे अिस छद्म कार्यसे मुक्त होना चाहते हैं परन्तु हिन्दी प्रचारके जिस कामके पीछे अुन्होंने अपने जीवनके २०, ३० बरस लगा दिये हैं अुसे छोड़कर जायँ भी तो कहाँ? हाँ, यदि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा फारसी लिपिकी अनिवार्यता न हटावेगी, सम्मेलन अपनी परीक्षाअें न चलायेगा तो सम्भवतः अुन्हें यह सब छोड़कर स्वतन्त्र प्रान्तीय संगठन जारी करने पड़ेंगे।

ट्रावनकोरकी राजधानी त्रिवेन्द्रममें मैंने विमेन्स कालेजकी लड़कियोंको सुन्दर हिन्दी गीत दक्षिणी धुनमें गाते सुना। लड़कों और लड़कियोंको हिन्दीमें भाषण करते सुना। अेर्णाकुलम कोचीनकी राजधानीमें मलयालमके साहित्यिकोंकी गोष्ठीमें, जो वहाँके अेक राजकुमारकी ओरसे दी गअी थी, जब मैंने सूर, तुलसी, बिहारी आदिके बाद महादेवी, निराला, पंत और प्रसाद तथा राहुलके साहित्यका कुछ स्वरूप बताया तो अुनमेंसे अनेकने कहा कि अुन्होंने हिन्दी न जानकर बहुत कुछ खोया है। यह अिच्छा कि हिन्दीके अैसे काव्य दक्षिणकी भाषाओंमें अनूदित किये जायँ और मलयालमके काव्य हिन्दीमें अनूदित हों वहाँ प्रकट की गअी और अनेक हिन्दी विज्ञ केरली-भाषियोंने यह कार्य संपादन करनेका विचार भी प्रकट किया।

यही अनुभव मैसूरमें कन्नड़-साहित्य-परिषदके सुन्दर भवनमें अेकत्रित साहित्य गोष्ठीमें हुआ। दोनों भाषाओंमें हिन्दी ही की भांति राष्ट्रीय भावना, किसान और मज़दूर पुकार तथा रहस्यवादी कविताका भी सृजन हुआ है। यह जान कर आश्चर्य नहीं होना चाहिये क्योंकि अेक छोरसे दूसरे छोर तक सारा देश अेक ही प्रकारकी भावनाओंसे प्रेरित हो रहा है।

राज्याधिकारियोंसे मिलनेका फल भी अच्छा रहा। प्राअिमरी स्कूलमें तो मातृभाषाके द्वारा ही शिक्षा दी जानी चाहिये; मिडिल और हाअी श्रेणियोंमें सभी जगह दूसरी अनिवार्य भाषा है अंग्रेजी। अब ट्रावनकोरमें अिसी वर्षसे तीसरी अनिवार्य भाषाके रूपमें हिन्दी अथवा संस्कृत पढ़ाअी जायगी। दस पाँच प्रतिशत छात्र संस्कृत लेंगे, अैसा अनुमान है, शेष हिन्दी। यह सोच कर कि संस्कृतका सारी सामाजिक परम्परामें सर्वोत्तम स्थान है मैंने अिस विकल्पका आदर किया। कोचीन और मैसूरमें भी हिन्दी तीसरी भाषा है परन्तु अनिवार्य नहीं। वहाँ भी ट्रावनकोरका अनुकरण होगा अुसकी आशा है। सब स्थानों पर हिन्दी पढ़ाअीमें सुधारके अनेक सुझाव मैंने दिये और मैं यह जानकर प्रसन्न हुआ कि अुन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारियोंने आभारपूर्वक ग्रहण किया और मुझसे निवेदन किया कि मैं अपने सुझाव नियमपूर्वक लिख भेजूं जिससे वे अनुपर कार्यवाही कर सकें।

मैसूरमें मुझे ऐसा लगा की वहाँ कि सरकार बिना कुछ जनबल पड़े शीघ्र आगे न बढ़ेगी। वहाँकी जनतामें हिन्दीके प्रति भावना है। अुस भावनाको प्रबल रूपसे अपनी सरकार पर प्रकट करना होगा। वहाँ अेक या अनेक हिन्दी साप्ताहिक पत्रोंके लिये भी स्थान है। क्योंकि वहाँ अैसे लोगोंका संख्या अच्छी है जिनकी मातृभाषा हिन्दी है और वे समृद्ध और सब योग्य हैं। हिन्दी समझने वालोंकी संख्या तो और भी अधिक है। वहाँके थोड़ेसे मुसलमानोंका अुर्दू प्रेम प्रशंसनीय है कि दो अुर्दू दैनिक वहाँ चलाते हैं। चाहे वे छोटे-छोटे पन्ने ही हों और चाहे अुनकी बिक्री सैकड़ोंमें ही क्यों न हो? हिन्दी-पत्र-प्रकाशनकी ओर वहाँके लोगोंको ध्यान देना चाहिये।

दक्षिणमें हिन्दी प्रचारके तीन-चार कारण हैं। व्यापारी केन्द्रों और तीर्थ स्थानोंमें हिन्दी पहले ही से अिसलिये चलती है कि अुत्तर भारतीयोंसे बातचीतका यही सार्वभौम साधन है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाका प्रचार पठित समाजके मध्यम वर्गमें हुआ है। मद्रास प्रान्तीय सरकार तथा देशी राज्यों द्वारा अपनी शिक्षा क्रममें हिन्दीका शामिल किया जाना तीसरा बहुत बड़ा प्रचार साधन है। अिसमें अिस समय ट्रावणकोर सबसे आगे है। जहाँ ऊपर लिखे अनुसार शीघ्र ही हिन्दी शिक्षा अनिवार्य हो जायगी और प्रत्येक बालक-बालिकाको छठींसे ग्यारहवीं श्रेणी तक संस्कृत या हिन्दी पढ़ना ही होगी।

चौथा बड़ा प्रबल साधन हिन्दी फिल्में हैं। दक्षिणके सब नगरोंमें हिन्दी फिल्में दिखाअी जाती हैं। कन्या कुमारीसे बहुत ही समीप त्रिवेन्द्रममें भी हिन्दी फिल्में चल रही थीं। मैसूर, बंगलोरमें तो तामिल, तेलगू, कन्नड़ तीनों भाषाओंकी फिल्मोंका अपेक्षा हिन्दी फिल्में दोगुनी मात्रामें प्रदर्शित की जाती हैं। सब स्थानोंपर मैंने गली मुहल्लोंमें लोगोंको फिल्मी हिन्दी गीत गाते जाते सुना। मुझे यह भी अनेक कार्यकर्त्ताओंने बताया कि अनेक लोग हिन्दी अिसी-लिये सीखते हैं कि हिन्दी फिल्में देख और समझ सकें। चलचित्र राष्ट्रभाषा प्रचारका अितना प्रबल साधन है यह वहीं जाकर प्रत्यक्ष होता है। यह देखकर मुझे अैसा लगा कि फिल्मोंकी भाषा विषयक सम्मेलनके प्रस्ताव पर हमें अविलम्ब कुछ कार्यवाही करनी चाहिये जिससे चलचित्रोंकी भाषा अच्छी हिन्दीमें बने।

भारत भूमिके चरणोंको जहाँ रत्नाकर और महोदधि झालोंसे धोते हैं वहाँ कन्याकुमारीके मन्दिरके नीचे समुद्रमें तीर्थ-स्नान करते समय पास खड़े तद्देशीय ब्राह्मणसे हिन्दी सुन मनमें अेक विशेष हर्षका संचार हुआ। सहस्रों वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व अुस पुण्य-तीर्थ परशुराम और अगस्त-से राष्ट्रीय नेताओंने आकर जिस अेक अखण्ड भारतके निर्माणकी नींव डाली थी और मध्य कालीन स्वर्ण युगमें जिस अखण्डताकी संस्कृत और पालीने रक्षित और परिवर्धित किया था, अुसी अेकता अखण्डताका प्रतीक आज हमारी हिन्दी है। अिस महान राष्ट्रके महान अतीतकी गौरवशालिनी राष्ट्रभाषा संस्कृतकी वर-पुत्री हिन्दी अुसीकी तरह हमारे वर्तमानका गर्व और भविष्यकी आशा है।

राष्ट्रभाषा और मातृभाषा*

व्याख्याता—प्राध्यापक विष्णुप्रसादजी त्रिवेदी, अेम. अे.

अनुवादक—श्री. जमाअितराम पंड्या, 'राष्ट्रभाषा विशारद' सूरत

हमारे देशकी सभी प्रादेशिक भाषाअें खास करके अूंचे दर्जेका साहित्य खेलनेवाली भाषाअें हमारी राष्ट्रभाषाअें हैं। ये राष्ट्रकी संपत्ति हैं और आदरकी अधिकारिणी हैं। ये भाषाअें विकसित हैं। अुनको खास हेतु पूर्वक शब्दोंको दूर करके विकसित करनेका कोअी प्रश्न ही अुपस्थित नहीं होता। विशिष्ट अर्थमें राष्ट्रभाषा—सारे देशकी आपसके व्यवहारकी भाषा—"हिन्दुस्तानी" है, यह बात अभी सिद्ध नहीं हुअी है; परन्तु समान, प्रयत्नपूर्वक सिद्ध करनेकी है। इसके लिये सबसे ज़्यादा अनुकूलता हिन्दी-हिन्दुस्तानी भाषाकी भूमिकामें है। हिन्दुस्तानीका स्वरूप और अुसके स्वरूपगत नियमोंको यथोचित समझकर अुन नियमोंके आधार पर हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषाकी हैसियतसे व्यवस्थित, विकसित अेवं व्यापक बनानेकी है। राष्ट्रभाषाका महत्व अुसमें स्थित साहित्यको लेकर गलती कोअी न करे; अैसा महत्त्व अुसको कालक्रमसे प्रायः मिलेगा ही। वैसे अभी तो हिन्दी-हिन्दुस्तानीके साहित्यकी अपेक्षा विशेष अुज्वल, विविध और विपुल साहित्य किसी न किसी साहित्यिक रूपमें देशकी बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओंमें है, यह हमें—राष्ट्रभाषाके अुत्साहकी बाढ़में बह कर—भूलना नहीं चाहिये। राष्ट्रभाषाका महत्व स्वाभाविक है; परन्तु राष्ट्रभाषास्थित मातृभाषाका महत्त्व तो आज अेक प्रकारसे कृत्रिम है।

---

* ता० १-२-४७ को सूरतके राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडलके अंतर्गत राष्ट्रभाषा प्रचार भवन मंदिरके अुद्घाटन प्रसंग पर दिया गया मांगलिक प्रवचन—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाका साहित्य बहुत वैविध्यपूर्ण, विपुल अेवं अुच्च कोटिका हो तो भी राष्ट्रभाषा विकसित मातृभाषाका स्थान नहीं ले सकती। मारवाडी सरीखी मातृभाषा जिसका कि पूरा विकास न हुआ हो, वह विनयन और शिक्षाका पूर्ण वाहन नहीं बन सकेगी; परन्तु अैसे अपवादोंको छोड़ कर विकसित प्रादेशिक भाषाओंके लिये हम कह सकेंगे कि मातृभाषा द्वारा शिक्षाकी जो सरलता और स्वाभाविकता है, वह राष्ट्रभाषामें नहीं आ सकती। राष्ट्रभाषाका स्थान अभ्यासक्रममें अनिवार्य है; परन्तु राष्ट्रभाषाका स्थान दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, सिन्ध आदि प्रान्तोंमें शिक्षाके माध्यमकी हैसियतसे नहीं है, अिस बातका औचित्य हमें ठीक जँच जाना चाहिये। अुच्च शिक्षाके लिये भी वैधभाषाकी हैसियतसे राष्ट्रभाषाका स्थान परप्रान्तीय अध्यापकों तक ही सीमित रखा जाये। १४-१५ सालकी आयु होनेसे पहले विद्यार्थीको मातृभाषा द्वारा अितर भाषाकी शिक्षा दी जाये वह भी अिष्ट नहीं है। अैसा होनेसे मातृभाषाका अेवं राष्ट्रभाषाका अभ्यास भी अधूरा ही रह जायगा।

हमारे देशकी भाषाओंकी अेक असामान्य विशिष्टता है। ऋग्वेदके समयसे लेकर आज तक भाषाओंकी जो धाराअें प्रवाहित हुअी हैं, अुनमें यह विशिष्टता प्रकट हुअी है। पाँच हजार सालके अर्सेमें भाषाविकार नहींवत् ही हुआ है। यह भी अेक अजीब घटना है कि आर्यसंस्कृतसे आज भी मराठी, गुजराती जितनी अलग हो जानी चाहिये थी अुतनी नहीं हुअी है। अुसी प्रकार स्थलविस्तार लक्ष्यमें रखें तो नेपाली और गुजराती या गुजराती और बंगालीका भेद अपेक्षाकृत कम ही है।

समय और स्थलका अितना विस्तार होते हुये भाषाविकार बहुत ही मर्यादित है। अिस आश्चर्यजनक घटनामें भारतीय संस्कृतिकी विलक्षणता ही कारणभूत है। हमारी संस्कृतिकी मूलगत अेकताने भाषाओंको अेक स्वाभाविक जकड़में रखा है। संस्कृतका खूंटा छोड़कर प्राकृत भाषाअें) भाग नहीं गअी हैं। संस्कृतकी वर्षासे प्राकृतने प्रत्येक युगमें नवजीवन प्राप्त किया है।

अिस परिस्थितिके कारण अुत्तर भारतमें किसी न किसी भाषाने सर्वकी बोलिका काम दिया था। अिसमें भी प्रादेशिक राजनीतिक महत्त्व कुछ अंशोंमें निर्णायक होता था। अर्धमागधी, महाराष्ट्री अपभ्रंश आदि भाषाओंमें अुस-अुस समयके राष्ट्रभाषाके ही बहुत कुछ लक्षण दिखाअी देते हैं। अिन भाषाओंका साहित्य देशके अधिकांश भागमें विस्तारित था और अुत्तर भारतकी सभी भाषाओं पर अुसका असर दिखाअी देता है। अपनी भाषाओंके अितिहासके अिन सब लक्षणोंका हमें विनियोग करना है। जो तत्त्व भाषाओंके स्वभावमें निहित हैं अुसका बुद्धिपूर्वक अुपयोग किया जाय तो सारे देशके लिये अेक राष्ट्रभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसीकी बायें हाथका खेल है। हिन्दुस्तानीकी भागीरथी प्रवाहित हुअी है। अुसमेंसे दोनों किनारे लबालब भरी हुअी प्रवाहित गंगा अुत्पन्न करनी है। केवल अुर्दू या केवल हिन्दको चिपके रहनेसे यह स्थिति नहीं अुत्पन्न होगी; अेवं अुसमें मिले हुये फारसी अरबीके अंशोंके बहिष्कारसे भी यह स्थिति नहीं अुत्पन्न होगी। हमारा पूर्वग्रह या अभिग्रह जिस प्रमाणमें कम होगा अुसी प्रमाणमें मुसलमानोंकी देशभक्तिकी शक्ति का दर्शन होगा। अीरानमें अीरानी संस्कृतिके पुनरुत्थानके दर्शन होते हैं, वैसे ही खुद अुर्दू भाषा-भाषियोंमें भी प्राचीन भारतीय संस्कृतिका पुनरुत्थान देखनेकी आशा कम वास्तविक नहीं है।

अेक प्रश्न अैसा भी किया जाता है कि "भाषाका विकास अमुक दिशामें मानपूर्वक साध्य किया जा सकता है? भाषा स्वाभाविक संपत्ति है और अुसका विकास कुदरती ही हो सकता है न?" अिसका अुत्तर यह है कि "प्रकृतिके नियमोंके वशीभूत होकर हम जिस प्रकार प्रकृतिका अुपयोग कर सकते हैं, अुसी प्रकार हम भाषाके स्वभावगत नियमोंको आँच न आने दें तो अपनी आवश्यकता और आदर्शके अनुसार अुसका स्वरूप बनाकर रक्खा कर सकते हैं। हम यदि कुछ थोड़ेसे सांस्कृतिक भेदोंका रोना रो रो कर अलग हो सकते हैं, अनायास अधिकाधिक अलग होते दिखाअी देने लगते हैं; अर्थात् सामूहिक अिच्छासे हम अलग हो सकते हैं तो फिर हम सामूहिक अिच्छासे अेक भी हो सकते हैं। हम अिस दूसरी किन्तु कठिन बातमें दृढ़ श्रद्धा रखें तो हम कुछ ही वर्षोंमें अेक हो जायँगे। अिस स्वप्नको पूरा होते देखना हो तो यह ज़रा भी धुंधला पड़ जावे अैसी प्रवृत्ति हम कभी भी न करें। हमें हिन्दुस्तानीके कलेवर और रूपके प्रयत्नोंमें निरंतर यह दृष्टि रखनेकी है।

हिन्दी और अुर्दू दोनों साहित्यक भाषास्वरूपोंकी हैसियतसे सिद्ध हो चुकी है। अिन भाषाओंको राष्ट्रभाषाका प्रचार बाधक नहीं होगा। संस्कार और शिक्षणकी भाषाओंकी हैसियतसे वे चालू रहेंगी। हम अिन दोनों भाषाओंका सीधा सादा स्वरूप ख़्यालमें रखें तो यह सिद्ध बात है कि 'हिन्दुस्तानी' पन्द्रह करोड़ हिन्दीयोंकी मातृभाषा है और अुसे पच्चीस करोड़ जनता बहुत कुछ समझ सकती है। हमारे देशकी डेढ़सौ दोसौ भाषाओंमें सही महत्त्वकी भाषाअें केवल दस हैं—पाँच अुत्तर भारतकी और पाँच दक्षिण भारतकी। अिन दस भाषाओंमें छः आर्यकुलकी और चार द्रविड़ कुलकी हैं। यदि अिन दस भाषाओंमेंसे किसी अेक भाषाका स्वरूप पच्चीस करोड़की जनता समझ सकती हो, तो यह बात अुसको राष्ट्रभाषा होनेके लिये विधिनिर्मित ही मानी जानी चाहिये। वह त्रिवेणी संगमकी भाषा तो है ही। अिसकी रूप रचना संस्कृतसे, शब्दभंडार संस्कृत, फारसी अेवं अरबीसे और अिसके अुच्चारण संस्कृत, प्राकृत और फारसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिसे आये हैं। द्रविड़—भाषा समूहमें अत्यधिक संस्कृत शब्द संभवित। और अन्वय, रूढ़ प्रयोग और मुकाव आदिमें आर्य और द्रविड़ भाषाओंमें जितना साम्य है अुतना अंगरेजी और द्रविड़ भाषाओंके बीच नहीं है। हमने जितना अंगरेज़ का परिचय भले ही प्राप्त कर लिया हो, तो भी देशकी कोअी भाषा हमारे कंठको अंगरेज़ी जितनी नहीं अखरती। हिन्दी-हिन्दुस्तानीकी श्रुति सुस्पष्ट है अर्थात् अेक ही श्रुतिके अुच्चारणमें—गुजरातीमें जैसा 'ह्र' है वैसा—सूक्ष्म-सूक्ष्म फरक वहाँ है। अेक श्रुतिके लिये जो संज्ञा निश्चित हो अुसी संज्ञासे अुस श्रुतिका ह अुच्चारण हो—किसी अन्य श्रुतिका नहीं हमारी राष्ट्रभाषाका व्याकरण देशकी अन्यान्य भाषाओंसे कमसे कम क्लिष्ट है हिन्दुस्तान व्याकरणके नियम समझ लेनेमें कोअी कठिनाअी नहीं है, क्यों नहीं है।

राष्ट्रभाषाकी हैसियतसे 'हिन्दुस्तानी' हमारी असाधारण संस्कृति संपत्ति है। हम अुसके मूल स्वरूपकी रक्षा करके अुसका विनियोग करें—विकास करें। अिसे समृद्ध बनानेका यश भारतकी सभी भाषाओंको होगा।

पारिभाषिक कोशकर्ता

आचार्य रघुवीर

लेखक—**म. स. बर्वे**, 'साहित्यरत्न'

भारतवर्ष स्वतंत्र होगा—बहुत जल्द पारतंत्र्यकी काल रात समाप्त होगी और स्वातंत्र्यका अुषःकाल होगा। स्वातंत्र्यसूर्यको प्रथम अर्घ्यप्रदान करनेकी प्रतिक्षामें जो ऋषि-मुनि अिस काल-रात्रिमें तपश्चर्यामें लीन हैं, अुनमें से अेक आचार्य रघुवीर हैं।

प्राचीन भारतवर्षमें ज्ञानके साथ-साथ विज्ञानकी भी अुपासना होती रही। ज्ञान और विज्ञान राष्ट्रके "विजयरथ" के दो पहिये हैं। जबसे भारतने विज्ञानकी अुपासनाका त्याग किया—अेक पहिया टूट गया—तबसे हमारा विजयरथ पारतंत्र्यके पंकमें फँसा रहा। भारतवर्षके स्वातंत्र्य-आन्दोलनके आरंभ ही हमारे विद्वानोंका ध्यान अिस टूटे हुअे पहियेकी ओर गया था। अुनको अिस बातका अनुभव भी हुआ था कि जबतक हम अिस पहियेको हमारे "रथ" में जोड़ दें, हमारा "रथ" पारतंत्र्य कर्दमसे बाहर नहीं आअेगा। अुन्होंने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषोंमें विज्ञानकी रुचि तो अुत्पन्न की, पर भारतसे अिस अुपेक्षित विज्ञानमें पश्चिमी राष्ट्रोंने अितनी प्रगति की—विशेषतः गत तीन सौ वर्षोंमें—कि हमारी आंखें चकाचौंध हो गअीं। हमें विज्ञानकी शिक्षाके लिये परभृत होना पड़ा। फिर भी श्री० जगदीशचन्द्र बसु, "निधोनपद्धति" के अविष्कारक पुर्णेके विख्यात श्री० लिमये, श्री० चन्द्रसेखर रमण आदि भारतीय वैज्ञानिकोंने विद्याहरण कर सारे संसारको अेक बार चमकाया। पर अिन अिने-गिने व्यक्तियोंको छोड़ सर्व साधारण जनताकी ओर दृष्टि करें तो क्या दिखाअी देता है? अंधकार!

अिसमें सर्व साधारण जनताका दोष नहीं है। सर्व साधारण जनताके लिये "निजभाषा अुन्नति अहै सब अुन्नतिको मूल" अिसी तत्वका आश्रय लेना चाहिये। कहीं कहीं कुछ कुछ लिया भी गया। हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाभाषी वैज्ञानिकोंने स्वभाषाओंमें वैज्ञानिक परिभाषाविषयक शब्दावलि बनाकर सर्व साधारण जनताके लिये विज्ञानकी शिक्षा सुलभ करनेका प्रयत्न किया है अुदा० मराठी साहित्य परिषदका परिभाषामंडल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, प्रयागके डा० सत्यप्रकाशका परिभाषा मंडल आदि। पर अिनसे कुछ भिन्न प्रकारके प्रयत्न आचार्य रघुवीरके हैं। अुपयुक्त संस्थाओंके प्रयत्न सीमित हैं, आचार्य रघुवीरके असीमित हैं।

आचार्य रघुवीर सुविख्यात भाषाशास्त्री हैं। जब आप विज्ञान प्रधान पश्चिमी राष्ट्रोंमें भ्रमण कर रहे थे तब आपको अिस बातका अनुभव हुआ कि अपने विचारोंको अपनी भाषामें व्यक्त न कर सकना अुन राष्ट्रोंमें लांछनास्पद माना जाता है। भारतीय संस्कृतिमें पले हुये और संस्कृत भाषासे सुसंस्कृत आचार्य रघुवीरके हृदयपर बड़ा आघात पहुँचा। आपने निश्चय कर लिया कि विज्ञानकी प्रत्येक शाखाकी परिभाषा बनाकर अपने राष्ट्रको स्वावलंबी और स्वाभिमानी बनानेका ही आगे चलकर प्रयत्न करूंगा।" अिस कार्यके लिये आपने "अिंटर नैशनल अैकडमी आफ अिन्डियन कल्चर" की स्थापना की और अुसके द्वारा अपना कार्य कर रहे हैं।

विज्ञानकी लगभग छः सौ शाखाअें हैं। अिन सभी शाखाओंकी पारिभाषिक शब्दावलि बनानेका कार्य आचार्य रघुवीरको करना है। आजतक आपने रसायन-शास्त्रकी शब्दावली सिद्ध की है। अिस शब्दावलिसे आपके असीमित कार्यके स्वरूपका बोध होता है। जैसे पंटैशियम=दहातु शब्द लिया तो अन्य परिभाषा विषयक कोशोंमें केवल पंटैशियम ही के लिये शब्द दिया जाता है। आचार्य रघुवीर जिस वस्तुके लिये शब्द देते हैं, अुस शब्दको अुपसर्ग प्रत्यय आदि लगाकर अुस वस्तुसे बननेवाली भिन्न भिन्न वस्तुओंके नाम भी सिद्ध कर देते हैं। अिससे आपकी शब्दावलि सूत्रबद्ध बनी है साथ-साथ असीमित भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात किसी वस्तुसे जो कोअी पदार्थ या कल्पना सिद्ध हो सके अुसके मूल वाचक शब्दको केवल अुपसर्ग, प्रत्यय लगाकर कोअी भी व्यक्ति बिना आयास रघुवीरकी सहायतासे व्यक्त कर सकता है। अितना ही नहीं पुराणोंका अेक विद्यार्थी भी जो शब्द बनाअेगा ठीक अुसी शब्दकी कल्पना बलकंतका विद्यार्थी भी करेगा।

अिस असीम कार्यकी रचना आचार्य रघुवीरने अेक संस्कृतकी दृष्टिपर की है, क्योंकि भारतवर्षीय सभी भाषाअें संस्कृतोत्पन्न हैं; हाँ, द्राविड़ी भाषाअें संस्कृतोत्पन्न तो नहीं हैं, पर संस्कृतसे घनिष्ठ संबंधी हैं। द्राविड़ी भाषाभाषियोंकी धर्म-भाषा संस्कृत ही है। अतः "आसिंधुसिंधु पर्यंता" भारतवर्ष ही क्या स्वयं हिन्दुचीन लंका आदि देशोंके लिये भी अत्यंत अुपयुक्त है। कहते हैं कि भारत वर्षके प्रान्त-प्रान्त अलग-अलग होंगे। पर राष्ट्रभाषाके साथ-साथ आचार्य रघुवीरकी परिभाषा व्यवहृत होनेसे हरअेक प्रान्तमें विज्ञानकी शिक्षा अेकसी होगी और शिक्षा तथा संस्कृतिकी दृष्टिसे भारत अखंड ही रहेगा। राष्ट्रभाषा प्रचारकोंको अिस विचारसे आचार्य रघुवीरके कार्यकी ओर ध्यान देना चाहिये।

नागपुर विश्वविद्यालयने जबसे हिन्दी और मराठी भाषाओंको विश्व-विद्यालयीय शिक्षाका माध्यम स्वीकृत किया है, मध्यप्रांत सरकारने आचार्य रघुवीरको, लाहोरसे आमंत्रित कर विश्वविद्यालयके लिये पारिभाषिक शब्दावली बनानेका कार्य सौंपा है। आचार्य रघुवीरको अब 'अधिवृत' प्रोत्साहन मिला है।

आशा है, भारतीय जनता आचार्य रघुवीरकी परिभाषामें विज्ञानका अध्ययन कर अपने "विजय-रथ" से विज्ञानका पहिया फिरसे जोड़ अुसे आगे बढ़ायेगी।

परीक्षोपयोगी

निबंधोंकी जाँच

(अनिल कुमार)

अधिकांश कोविदके परीक्षार्थी अपनी तैयारीकी अवधिमें निष्क्रिय रहा करते थे। अतः पाठ्य विषयके सम्बन्धमें अपने अर्जित ज्ञानको स्वयम् लिखकर जाँचना आदि बातोंसे परीक्षार्थी बिलकुल बचे रहते थे और अिसमें अुनकी किसी किसी तरहकी हानी भी महसूस नहीं कर पाते थे। अतएव समितिने अुनके लिये परीक्षाकी तैयारीकी अवधिमें कमसे कम आठ लेख या निबंध लिखनेका नियम बना दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस नियमने आलसी परीक्षार्थियोंकी अेक तरहसे मरम्मत ही कर दी। अिसके अनिवार्य रूपसे आठ निबंध लिखना अुनके सिरपर पहाड़का बोझ बन गया। और वह भी न लिखें तो मौखिकके बीस अङ्क पानामें! अजीब मुश्किल है अिन परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण होना भी।

कोविदमें तो परीक्षार्थीकी कड़ी जाँच होती है। परीक्षक परीक्षार्थीके हर अंगोंपर सीधा आघात करता है। जरा भी रहम नहीं करता। अब परीक्षार्थियों को भी अुस योग्य बनाकर कड़ी तैयारीके लिये प्रस्तुत करनेके हेतु समितिके परीक्षक मंडलने यह निबंध लिखानेकी तरकीब सोच निकाली। अिसमें न परीक्षा लेनेवालेका लाभ है न परीक्षकका! है तो परीक्षार्थियोंका ही। पर अिस अनिवार्य नियमके पालनके लिये जो निबंध लिखे जाते हैं वे समितिकी ओरसे आयोजित होनेवाली वार्षिक-हस्तलिखित-हास्य साहित्य प्रदर्शनीमें सर्वोच्च स्थान पाने योग्य होते हैं। हमारे कोविदके परीक्षार्थियोंकी आठ-दस निबंधकी कापियाँ पढ़कर हास्य-अवतार श्री० जी० पी० श्रीवास्तव भी कहने लगेंगे कि "मैंने आज जाना कि वास्तवमें मैं हास्यरसका लेखक नहीं हूँ। ये तो मुझसे कोसों आगे हैं।"

तो लिजिये जनाब, हमारे मेहरबान परीक्षार्थी महोदय अपने—"परीक्षाका भगवान तो रोटी है!" शीर्षक निबंधमें लिख गये हैं—

"बादशाह सिकंदर ग्रीस छोड़कर भारत तक केवल दुनिया पर फतह करने नहीं आया, बल्कि अपने भूखे भाअियोंके लिये कुछ नरम घास खोजने आया था।"

यह रहा अैतिहासिक अनुसंधान बड़े-बड़े भारतीय और योरोपीय अैतिहासज्ञ भी अिस तरहकी अेकदम अद्भुत और नअी खोज कब कर सके! और की भी हो तो व्यक्त करनेकी अुनको हिम्मत ही कब हुअी!

× × ×

दूसरे अेक परीक्षार्थी महानुभाव हैं जिन्हें शायद टाटा, बिड़ला, डालमिया आदि धनपतियों द्वारा अुनकी निजकी रक्षाके लिये तथा दुनियाके आगे अुनकी असली मजबूर हालत पेश करनेके लिये वकील-पत्र मिल चुका है। बुद्धबोधक निबंध 'समाचार-पत्र' में आप लिखते हैं—

"सेठ घनश्यामदास बिड़ला, टाटा; डालमिया मुश्किलसे विज्ञापनके बीसेक तो दाल-रोटी मयस्सर कर लेते हैं।"

गजब कर दिया! किसीने आज तक अैसी जबर्दस्त-मुँहतोड़ वकालत अुद्योगपतियोंकी की नहीं। मजाल है कोअी अिस दल तको अिसी सफाअीके साथ पेश कर दे! सच है भारतके 'धन-कुबेरों' के वकील 'बुद्धि-कुबेर' क्यों न हों!

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोअी तीसरे महाराज वनस्पति शास्त्रज्ञ मिले। अपने-अपने शास्त्रके निबंध—"भारतमें नारीका स्थान" में फरमाया है—

"स्त्री वह जमीन है जिसपर मनुष्य रूपी पेड़ अुगते हैं।"

तथा आगे चलकर आपने अिससे भी अधिक महत्वकी घोषणा कर दी है, जिससे जान पड़ता है कि आपने भूगर्भ-शास्त्रका भी विशेष अध्ययन किया है। आप कहते हैं—

"जिस समाजमें स्त्रियोंका दर्जा अूंचा है अुस राष्ट्रकी कलाअोंमें फौलाद और हृदयमें कमल खिले होते हैं।"

गोया आपके लिये कलाअियाँ भी फौलादकी खदान हैं। काश! हरएक भी 'कमल' की 'तांबे-लोहे' जैसी किसी अुपयोगी धातुकी खदान होती! किन्तु लेखक महोदय केवल भूगर्भशास्त्रज्ञ ही नहीं हैं वरन् वनस्पति शास्त्रज्ञ भी हैं, अतः कमल और फौलादका समन्वय अुचित ही है।

× × ×

चौथे समन्वयवादी व्याकरणाचार्य 'संस्करण' का बहुवचन 'अोरिजनल' और सनसनी खोजके लिये "सेन्सेशन-खेज" शब्द-प्रयोग प्रस्तुत कर गये हैं। अुनकी स्मृतिमें 'हिन्दी-भाषा-कोष' में ये दोनों अभिनव शब्द-प्रयोग अमर रहेंगे।

किसी अन्य विज्ञानवेत्ताने 'टेस्ट ट्यूब' में रखकर साहित्यका स्वाद चखकर देखा है जिसकी अभिव्यक्ति अुनके निबंध—"साहित्य और विज्ञान" में हुअी है—

"अनन्त सुख प्रदान करनेवाला 'किंचित-कडुआ—साहित्य!"

अब और हमारे अेक दोस्त जो संभवतः शरीरशास्त्रवेत्ता लगते हैं, अपने "ताज अथवा ताजमहल" शीर्षक निबंधमें कहते हैं—

"झाँसीकी रानीकी समाधि देखकर वीरोंकी बाहुओंसे खून नहीं अुठता है।"

अिस तरह जब कि कंट्रोलका जमाना है और कम खानेसे कम खून बनता है और आये-दिन नेतागण खूनकी माँग करते ही रहते हैं तब यों बार-बार खूनका वह अुठना खतरेसे खाली नहीं!

हमारे अिन अितिहास, पंजीवाद, वनस्पति, भूगर्भ-शास्त्र, व्याकरण, विज्ञान तथा शारीर आदि शास्त्रोंके विशेषतज्ञ ये सभी निबंधकार परिष्कृत समाजके लिये नया मसाला प्रस्तुत कर सकें तथा निबन्ध शब्दके अर्थानुसार अनिर्बन्ध विचरकर दूरकी कौड़ियाँ ला सकें अिसलिये अुन सबको सधन्यवाद क्षमस्तु!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय हलचलें

असम—

अम्फाल—ता. २४-४-४७ को श्री कनिकर्ण शर्माजी शास्त्रीकी अध्यक्षतामें मणिपुर हिन्दी प्रचार समितिकी कार्यकारिणी समितिकी अेक बैठक हुअी। अुसमें राष्ट्रभाषा-प्रचारको बलवान् बनाने तथा समितिकी बिगड़ती हुअी आर्थिक हालतको सुधारनेके लिये महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुअे।

सिन्ध—

कराची—रा. भा. प्र. समिति, काराचीकी आर्थिक सहायताके लिये ता. २५-५-४७ को केपिटल थियेटरमें 'चेरिटी शो' किया गया। अिससे समितिको ९४५. रु. का लाभ रहेगा। अकेले श्री. गोवर्धनदासजीने १००) के टिकट बेचे।

हैदराबाद—

पं० अिन्द्रदेव स्मारक फंडमें नीचे लिखे स्थानोंसे पैसे अिकट्ठे किये गये हैं—

मांजंद	५९१—४—०
टंडो मुहम्मदखाँ	३३०—०—०
जेमसाबाद	२५१—०—०
सामारो	१८२—८—०
अुबावरो	२०—०—०
हैदराबाद	१००—०—०
तलहाट	७०—८—०
	१५४५—४—०

पं. दौलतरामजी प्रान्तीय संचालकने टंडोमुहम्मदखां मातिली, आदिमें राष्ट्रभाषा-प्रचारार्थ दौरा किया। साथही पं. अिन्द्रदेव स्मारकके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये फंड भी अिकट्ठा किया। हालासे आपने २६०) रु. तथा अन्य स्थानोंसे मिलाकर कुल १५२५) रु. अिकट्ठे किये। अिस कार्यके लिये आप सचमुच अभिनन्दनके पात्र हैं।

श्री परचारामजी तथा श्री बृहस्पतिजीभी भिन्न-भिन्न जगहों पर दौरा कर जी-जानसे राष्ट्रभाषा-प्रचारमें लगे हुअे हैं।

सैदूदेरो--अिस केन्द्रमें श्री परचाराम 'खादिम' की अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र-वितरणोत्सव बड़े समारोहके साथ मनाया गया। अध्यक्षने राष्ट्रभाषा प्रचारके महत्व पर अच्छा प्रकाश डाला। अिस केन्द्रके मन्त्री श्री लक्ष्मणदासजी अुत्साही कार्यकर्ता है। गत फरवरीकी परीक्षामें सर्व-प्रथम आनेवाले भाअीको तथा केन्द्रमें सर्वप्रथम आनेवाले विद्यार्थीको पुस्तक रूपमें पुरस्कार दिया गया।

श्री कृपालदास शर्मा कोटड़ीमें तथा कराचीमें, सूर्यप्रकाशजीकी देखरेखमें १० अध्यापक और अध्यापिकाअें ३३१ विद्यार्थियोंकी तैयारी करा रहे हैं।

गुजरात

बम्बअी प्रान्तके प्रधान-मन्त्री श्री खेर साहबने ता. १२-४ को हिन्दुस्तानी कान्फरन्स बुलाअी थी। कामकाज यह रखा गया था—

(१) हिन्दुस्तानी शिक्षाका मापन्दण्ड

(क) शाला व अध्यापक मन्दिरोंके लिये (ख) कालेजोंके लिये (ग) सामान्य

(२) लिपियोंका प्रश्न

(३) नीचे लिखे क्षेत्रोंमें सरकार क्या करे?

(क) शालाओंमें हिन्दुस्तानी शिक्षणके विषयमें (ख) सरकारी नौकरोंके लिये अनिवार्य करनेके विषयमें (ग) प्रचार संस्थाओंको सहायता देनेके विषयमें

(४) शिक्षक प्राप्त करनेके विषयमें

(क) शालाओंके लिये (ख) शालाओंसे बाहर काम करनेके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम दो बातोंपर काफी चर्चा हुआ। मैट्रीकतक हिन्दुस्तानी शिक्षा अनिवार्य की जाय। अिस विषयपर लगभग सभी थोड़े बहुत अंशोंमें सहमत थे।

लिपियोंके बारेमें साफ रुख रहा कि दोनों लिपियाँ किसी भी हालतमें अनिवार्य न की जायें।

अिस परिषदमें मान्यवर श्री कन्हैयालाल मुन्शी, श्री जेठालाल जोशी, श्री गोविंदलालजी पित्ती, श्री कान्तिलाल जोशी, श्री शंकरराव देव, श्री महामहोपाध्याय पोतदारसाहब, श्री काकासाहब, श्री ब्रेल्वीसाहब आदि कअी प्रमुख सज्जन अुपास्थत थे। देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद भी थोडी देरके लिये पधारे थे। आपने सरल हिन्दीमें अपनी बात स्पष्ट रखी और साफ कहा कि "दोनों लिपियोंकी अनिवार्यताकी कोअी आवश्यता नहीं है। यह तो ज्यादती होगी। सरल राष्ट्रभाषा जानना हरेकके लिये आवश्यक है।"

प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव—

महुवा—ता. ५-६-४७ को श्री कन्हैयालाल देसाअीजीकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव बड़े समारोहके साथ मनाया गया। अिस अवसरपर बड़ोदा रियासत प्रजामंडलके प्रमुख चुनीलाल भी अुपस्थित थे।

महाराष्ट्र :

पुणे—ता० २८ और २९ मअीको नू० म० वि० हाअीस्कूलमें महाराष्ट्रके सभी जिलोंके निष्ठावान प्रमाणित प्रचारकोंकी अेक बैठक हुअी। बैठकके सामने विचारणीय विषय ये थे—[१] महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अधिक प्रातिनिधिक कैसे बने? [२] रा. भा. प्रचार कैसे बढ़े? [३] प्र. प्रचारकोंकी कठिनाअियाँ क्या हैं और वे कैसे हल हो? [४] राष्ट्रभाषा प्रेमियोंका संगठन सुदृढ, सुचारु कैसे बने?

सभाका अध्यक्ष-स्थान श्री श्री. पा. सातवलेकरजीने सर्व सम्मतिसे ग्रहण किया था। अिस सभामें वर्धासे प्रो. रंजनजी भी पधारे थे।

काफी विचार विनिमयके बाद निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे पास हुअे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) महाराष्ट्रमें रा. भा. प्रचारमें अेकसूत्रता, बल तथा अुत्साह लानेके लिये यह सभा जिला समितियोंका संगठन आवश्यक तथा सुविधा मानती है। प्रत्येक जिला समितिके अुस जिलेके प्र. प्रचारक, केन्द्र व्यवस्थापक तथा राष्ट्रभाषा प्रेमी सदस्य होंगे। अिनमेंसे पदाधिकारियोंका चुनाव होगा।

प्रान्तभरके प्रचारकोंका प्रान्तीय समितिमें प्रतिनिधित्व होनेके लिये महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समितिमें प्रत्येक जिला समितिसे अेक अेक प्रतिनिधि लिया जायगा और अधिक दो प्रतिनिधिको ले लेनेका अधिकार प्रान्तीय समितिको होगा।

२ राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार महाराष्ट्र भरमें अच्छी तरहसे हो अिसलिये निम्नलिखित साधन काममें लाये जायँ—

(अ) साधारणतः नवम्बरमें प्रतिवर्ष प्रमाणित प्रचारकोंका वार्षिक अधिवेशन मनाया जाय।

(आ) जब सुविधा हो तब महाराष्ट्र रा. भा. प्रचार समिति प्रान्तीय मुखपत्र शुरू करे।

(अि) नये परीक्षा केन्द्र खोले जायँ और पुराने फिर चालू किये जायँ।

(अी) प्रान्तीय समिति प्रतिवर्ष अपना कार्य विवरण वार्षिक अधिवेशनसे पूर्व प्रकाशित करे।

३. अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंके शुल्कका कमसे कम $\frac{1}{3}$ हिस्सा प्रमाणित प्रचारकोंको देना अुचित है अिसलिये निश्चय हुआ है कि शीघ्रातिशीघ्र प्रान्तीय समिति यह सहायता देना शुरू करे।

विदर्भ-नागपुर—

खामगांव—बुलढाणा जिलेमें श्री अट्रावलकरजीकी खामगांवकी अुत्तम स्थिति खटकती थी अब हमें आशा है कि श्री भवरलाल सेवकजी वहाँके नेता श्री डॉ. अेकबोटे अेम्. अेल.. अे. तथा तिलक राष्ट्रीय विद्यालयके आचार्य श्री पंधे गुरुजीकी प्रेरणा तथा सहयोगसे अपने क्षेत्रके राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्यको वेग देंगे। बुलढाणा जि. रा. भा. प्रचार समितिका संगठन हो रहा है। आगामी जुलाअीमें खामगांवमें जिला समितिका बैठक होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरावती–अमरावती जिला रा. भा. प्र. संगठन हो चुका है। श्री शंकरराव लोंढे अेम्. अ. साहित्यरत्न प्रिन्सिपल (शिवाजी मराठा हाअी-स्कूल) ने समितिके संगठनमें नवचेतना प्रवाहित की है। अमरावती जिला समितिकी बैठक अिसी महीनेके अन्तमें होगी। अमरावती गवर्नमेन्ट हाअीस्कूलकी आचार्या श्री. नलिनी साठे हमारे प्रचार कार्यमें अुत्साहसे अपना सहयोग देती हैं।

मलकापुर–श्री भिकुसा चवरेजी प्र. प्रचारक अपने क्षेत्रमें बड़े अुत्साहसे प्रचार कार्य करते है। अिस बार आपने कुछ सहयोगी मुस्लिम शिक्षकोंको भी प्रचार परीक्षाओंमें बिठाया है।

नागपुर–गत प्रान्तीय समितिकी बैठकमें माननीय श्री वृजलालजी बियाणीने प्रान्तीय समितिकी नियमावली बनानेका भार अपने अुपर लिया था। यह कार्य आपने ता. २१ मअीको प्रान्तीय मंत्रीके साथ बैठकर पूरा किया है।

प्रान्ताध्यक्ष श्री रांकाजीके आदेशसे नागपुर युनिवर्सिटीकी लॉ कॉलेजमें अेक माहके लिये 'हिन्दुस्तानी सेवा दल' का प्रान्तीय शिबिर चला। शिबिरमें प्र. प्रचारक श्री रामचन्द्र हरणगांवकरने अेक माह तक राष्ट्रभाषाकी शिक्षा दी।

नागपुरके विभिन्न स्थानोंपर कोविद तकके राष्ट्रभाषा वर्ग बड़े अुत्साहसे चल रहे हैं। जुलाअीसे स्थानीय स्कूल कॉलेज चालू होनेपर फरवरी तक राष्ट्रभाषा प्रचारकी और भी चहल पहल रहेगी।

हैदराबाद (दक्षिण)

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभाकी कार्यकारिणी समाने अपनी ७-५-४७ की बैठकमें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके लिये निम्न लिखित प्रतिनिधियोंका चुनाव किया है—

१. परीक्षा समिति— **श्री गोपालराव अपसिंगीकर**
अेम. अे., अेल्-अेल्. बी.
विशारद

२ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति— **श्री श्रीराम शर्मा.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा —

सितम्बर' ४७ में होनेवाली रत्न-परीक्षाके लिये विलम्ब शुल्क १) रु. के साथ आवेदनपत्र ३० जूनतक स्वीकृत हो सकेंगे।

आगामी प्रचार परीक्षाएँ —

समितिकी आगामी प्रचार परीक्षाएँ सितम्बर' ४७ के प्रथम सप्ताहमें होंगी। आवेदनपत्रोंको वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिसप्रकार हैं—

साधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र —	३० जून
परीक्षा आवेदनपत्र (सशुल्क)	१५ जुलाअी
विलम्ब शुल्कके साथ आवेदन-पत्र	२३ जुलाअी

कोविदमें लेखन कार्य —

कोविद परीक्षार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य किया गया है। प्रत्येक लेख कम-से-कम ३ पृष्ठका होना चाहिये। जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं अुन्हें काफी अंकोंकी हानि अुठानी पड़ती है। अिसलिये परीक्षार्थियोंको लेख अवश्य लिखना चाहिये। आगामी परीक्षाके लिये निबन्धोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबन्ध लिख सकते हैं। अिसके आलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं।

१ विज्ञान और मानव. २ हमारे गांवोंकी समस्याअें ३ समाज और स्त्री ४ राष्ट्रभाषाका प्रश्न. ५ साहित्य और समाज. ६ स्त्री-शिक्षा. ७ जीवन और कला. ८ गांधीजीका रचनात्मक कार्यक्रम. ९ देशका अितिहास केवल अुसके बड़े लोगोंकी जीवनी है। १० ग्रामसुधार ११ भारतकी समस्याअें १२ समाचार पत्र.

कोविद केन्द्र —

कोविद केन्द्रोंकी सूची अिसी अंकमें दी गयी है। कोविदके परीक्षार्थी केन्द्रका चुनाव सूचीको ध्यानमें रखकरही करें। अिसके अलावा कोविदकी अन्तिम परीक्षा अुन केन्द्रोंमें होगी जिनमें अिस परीक्षाके लिये कमसे-कम पाँच परीक्षार्थी होंगे।

सूचना —

गत परीक्षाके प्रमाण-पत्र भेजे जा चुके हैं। अधिक तर केन्द्रोंसे हमें पहुँच प्राप्त नहीं हुअी है। कृपया पहुँच भेज दें।

प्रत्येक परीक्षार्थी आगामी परीक्षाके लिये भेजे जानेवाले आवेदन-पत्रमें प्रमाणपत्रकी चिट अवश्य चिपका दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षण आवेदन-पत्र—

जो परीक्षा आवेदन-पत्र अधूरे होंगे, जिनपर लिखी हुअी परीक्षाकी क्रमसंख्याअें गलत होंगी अथवा जो आवेदन पत्र अवधिके भीतर न आवेंगे वे अस्वीकृत ही रहेंगे। अस्वीकृत आवेदन-पत्रोंकी सूचना शीघ्र न दी जा सकेगी।

जिन केन्द्रोंने आवेदन पत्र अबतक न मँगाये हों वे शीघ्र कार्यालयसे मँगा लें।

नये केन्द्र —

जहाँ कमसे कम १० परीक्षार्थी हों, वहाँ नया केन्द्र खोला जा सकता है। लेकिन साधारणतया अुस केन्द्रके तीन मीलके आसपास समितिका स्वीकृत कोअी दूसरा केन्द्र न हो। नये केन्द्रके लिये नियत फार्म भरकर ३० जूनतक अपने प्रान्तीय संचालककी सम्मतिसे वर्धा कार्यालय पहुँचाना चाहिये।

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त		केन्द्र	क्रमांक
बंगाल	श्री जनार्दन चतुर्वेदी 'जन' रघुनाथपुरी	करसियांग	१००६
गुजरात	श्री पुनमभाअी रणछोडभाअी पटेल	जोशीकुवा	१००७
महाराष्ट्र	,, बाळकृष्ण चिंतामण जोगळेकर	सातारा	१००४
,,	सौ प्रेमला शांताराम भांगी	वास्को डी गामा	१००५
,,	श्री जमनादास गोपालदास वाणी	नन्दुरबार	१००८
,,	सौ मालती देवी म. मालशे	अहमदनगर	१००९
,,	श्री मुरलीधर शं देशपांडे	ओगलेवाडी	१०१०
,,	श्री,, तारादेवी सहस्त्रबुध्दे	पुणें	१०१६
,,	,, लीलाताअी लक्ष्मण रांजणे	सातारा	१०१७
,,	,, यशवन्त वासुदेव परांजपे	,,	१०१८
,,	,, दत्तात्रय रघुनाथ केळकर	कल्याण	१०२०
,,	,, मोहनलाल सूरजमल शर्मा	शिरपुर	१०२१
२ महाराष्ट्र	,, सिद्दनगौड ह. गोडर	विजापुर	१०१२
,,	,, वासुदेव चिंतामण बस्ती	हुबळी	१०१९
विदर्भ-नागपूर	,, जगन्नाथ तुपकरी "भृङ्ग"	नागपुर	१०११
,,	,, शंकरराव तैलंग	सागर	१०१३
,,	,, बिहारीलालजी वर्मा	मोर्शी	१०१४
,,	,, भाअूराव स० जामोदकर	,,	१०१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये केन्द्र

प्रांत	केन्द्र		क्रमसंख्या
असम —	जलजली		४०९
	झिपाझार		४४०
कुत्कल —	जयंतपुर		३६०
	बेलगुंठा		३६३
सिंध —	धारो ...	...	४१५
	सामारा ...	...	४२१
	मुबारकपुर	...	४२६
	मीरपुर ...	...	४३२
गुजरात —	चुडा ...	...	३६७
	जामखंडबालिया	...	३७३
महाराष्ट्र —	देवळा ...	...	३७९
	अद्रावल ...	...	३८०
	सातोद-कोळवद	...	३८१
	बुधगांव	...	३९२
	हडपसर ...	...	४०८
	वास्को डि गामा	...	४१७
	चिचोंडी	...	४१८
	अकोलनेर	...	४२२
	फोंडा [गोवा]	...	४२३
	कौलापूर	...	४३८
वि० ना० —	इटकी ...	...	३५२
	पौनार ...	...	३९५
	माटरगांव	...	४१६
	मेहेकर	...	४१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविद केन्द्र सूची

कोविदकी परीक्षा साधारणतया नीचे लिखे केन्द्रोंमें होगी। कृपया कोविदके परीक्षार्थी आवेदन पत्र भरते समय आवेदन पत्रमें अन्हींमेंसे किसी एक केन्द्रको भरें।

असम:—

१ अम्फाल
२ गोहाटी
३ नौगांव
४ जोरहट

बंगाल:—

१ कलकत्ता.

उड़ीसा:—

१ ब्रह्मपुर
२ कटक
३ बालेश्वर
४ संबलपुर
५ बारीपदा

कच्छ:—

१ कराची
२ सक्खर
३ शिकारपुर
४ हैदराबाद

गुजरात:—

१ भुज
२ भावनगर
३ राजकोट
४ जामनगर
५ अमरेली
६ पोरबन्दर
७ महुवा
८ कड़ी
९ वीसनगर
१० पिलवाओ
११ अुनावा
१२ अहमदाबाद
१३ धोलका
१४ वीरमगांव
१५ प्रान्तिज
१६ ओडर
१७ नडियाद
१८ आणन्द
१९ करमसद
२० डाकोर
२१ वसो
२२ वीरसद
२३ बड़ौदा
२४ मोभारोड
२५ पादरा
२६ काविठा
२७ गोधरा
२८ दोहद
२९ वेजलपुर
३० भड़ोच
३१ अंकलेश्वर
३२ मिया सरभाण
३३ रणापुर
३४ सूरत
३५ खड़सूपा
३६ धरमपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्रः—

१ अहमदनगर
२ पाथर्डी
३ संगमनेर
४ पेण
५ अुरण
६ महाड
७ कोल्हापुर
८ शहापुर
९ मिरज
१० जमखंडी
११ धुलें
१२ नंदुरबार
१३ जलगांव
१४ फैजपुर
१५ अमळनेर
१६ नवागोवा
१७ मडगांव
१८ वसअी
१९ डहाणू
२० ठाणें
२१ नासिक सिटी
२२ मनमाड़
२३ पुर्णे
२४ बारामती
२५ जुन्नर
२६ रत्नागिरी
२७ राजापुर
२८ सातारा
२९ अुरूण अिसलामपुर
३० सोलापुर
३१ बार्शी
३२ पंढरपुर
३३ गुलबर्गा

बम्बअीः—

१ गिरगांव
२ दादर
३ माटुंगा
४ मालाड़
५ शांताक्रुझ

विदर्भ नागपुरः—

१ अमरावती
२ अकोला
३ खामगांव
४ चांदा
५ धनतोली
६ बुरहानपुर
७ मोर्शी
८ वर्धा
९ यवतमाल
१० हिंगणघाट

परीक्षा—मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नज़रोंमें

जड़की बात—लेखक श्री. जैनेन्द्र कुमार, प्रकाशक हिन्दी मन्दिर प्रयाग। पृष्ठ संख्या २१५, मूल्य २)।

बहुत लोग श्री. जैनेन्द्र और अुनकी कृतियोंसे परिचित हैं, मैं केवल श्री. जैनेन्द्रसे। शायद यह 'जड़की बात' ही अुनकी लिखी पहली किताब है जिसे मैंने पढ़ा है। अभी तक मैंने समय समय पर अुनके लेख ही पढ़े हैं। अिसे भी किसी किताबका पढ़ना नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह 'जड़की बात' भी जैनेन्द्रजीके १२ निबन्धोंका संग्रह ही है।

किन्तु किसी विचारकके अेक लेखको पढ़ना और अुसके अनेक लेखोंको अेकसाथ पढ़ना दो पृथक चीजें हैं। कअी लेखोंको अेक साथ पढ़नेसे पाठक लेखकके अुन सामान्य विचारोंसे परिचित हो जाता है जो भिन्न भिन्न रूपमें अथवा अेक ही रूपमें भिन्न भिन्न स्थलोंपर व्यक्त होते हैं। अिस दृष्टिसे जैनेन्द्रजीके निबन्धोंका यह संग्रह अुन पाठकोंके बड़े कामका है जो जैनेन्द्रजीकी सामान्य-विचारधारासे परिचित होना चाहते हैं और जिन्हें थोड़ा बारीक सोचनेकी आदत और सामर्थ्य है।

अपने अिन निबन्धोंमें जैनेन्द्रजी प्रत्येक साधकके मार्ग-दर्शकके रूपमें प्रकट होते हैं। हमें आशा है कि धर्मके श्रेष्ठ अर्थोंमें यह पोथी प्रत्येक धार्मिक आदमीके बड़े कामकी सिद्ध होगी।

गान्धी-मार्गी लोगोंको यह पोथी अपने विचारोंका समर्थन पढ़नेके लिये पढ़नी चाहिये और समाजवादी लोगोंको अपने विचारोंका विरोध देखनेके लिये। पोथी दोनोंके कामकी है।

—आनन्द कौसल्यायन

सन् बयालिसका विद्रोह—ले. श्री गोविन्द सहाय, प्रकाशक नवयुग साहित्य सदन, अिन्दौर; मूल्य ६॥ रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतके राजनैतिक अितिहासमें सन् १९४२ का विद्रोह अपना अेक विशेष स्थान रखता है। दो सदीसे जमे हुअे अंगरेजी राजको जरसे अुखाड़ फेकनेका जो प्रयत्न भारतके प्रत्येक प्रान्तमें जनता द्वारा हुआ वह अपूर्व था अद्भुत था। नेताओंकी अनुपस्थितिमें शस्त्र हीन जनताने किस प्रकार अपने सीमित साधनों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यशाहीको जड़से हिला डालनेका अथक और अकथ प्रयत्न किया, देशके युवकों और वृद्धोंने बालक और बालिकाओंने स्त्रियों और पुरुषोंने अिस विद्रोहमें किसप्रकार अपने अपार साहस और त्यागका परिचय दिया, बर्बर नौकरशाहीके पैशाचिक अत्याचारोंकी अग्निमें किंचित मोह न करते हुये जनताने किस प्रकार अपनेको झोंक दिया था अिस सबकी कहानी प्रत्येक भारतीयको आदर और श्रद्धाके साथ पढ़नी चाहिये।

प्रस्तुत पुस्तकके ३५० पृष्ठोंमें सन् ४२ के विद्रोहका अितिहास सचाअीके साथ दिया गया है। यद्यपि सन् ४२ के व्यापक विद्रोहका सविस्तर वर्णनकी अपेक्षा अिस अेक पुस्तकसे नहीं की जा सकती, अुसके लिये अनेक विशाल ग्रथोंकी आवश्यकता होगी, फिर भी लेखकने, जो स्वयं अिस क्रान्तिके सैनिक भी हैं, सीमित समयमें जो अपार सामग्री और जानकारी संग्रहीत की है अुसके लिये वे बधाअीके पात्र हैं।

भारतके भावी नेता श्री जयप्रकाश नारायणने दो पृष्ठकी भूमिकामें अिस पुस्तकके मूल्य को सचाअीके साथ आँका है। अुन्होंने ठीक ही लिखा है कि "जो लोग सन् ब्यालिसको आज़ादीका पथ-प्रदर्शक मानते हैं वह अिस पुस्तकको ध्यानसे अध्ययन करेंगे और भविष्यका मार्ग ढूँढ़नेमें अुससे सहायता लेंगे।"

पुस्तककी छपाअी मनोरम और गेटअप सुन्दर है। मूल्य साढ़े छः रुपया कुछ अधिक है।

—रामेश्वर दयाल दुबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिके सदस्य और पदाधिकारी

१. सम्मेलनके सभापति
२. राष्ट्रभाषा परिषदके सभापति
३. कार्यवाहक अुपसभापति
४. प्रधान मंत्री
५. प्रबन्ध मंत्री
६. प्रचार मंत्री
७. परीक्षा मंत्री
८. श्री. पुरुषोत्तमदास टण्डन
९. ,, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी
१०. ,, द्वारकाप्रसाद मिश्र
११. ,, माखनलाल चतुर्वेदी
१२. ,, बाबा राघवदास
१३. श्रीमति किबे
१४. श्री. चन्द्रबली पाण्डेय
१५. भदन्त आनन्द कौसल्यायन (मंत्री)
१६. श्री. वाचस्पति पाठक
१७. श्री. राजाबहादुर गोविंदलाल शिवलाल
१८. श्री. कान्तिलाल
१९. ,, कालीदासजी
२०. ,, मोहनलालजी भट्ट
२१. ,, जेठालालजी जोशी
२२. ,, भूपटकरजी
२३. ,, नाना पाटीलजी
२४. ,, साल्वेलेकरजी
२५. श्रीमति अनुसूयाबाअी काले
२६. श्री. हृषिकेश शर्मा
२७. ,, राजकिशनजी बोस
२८. ,, लिंगराज मिश्र
२९. ,, बैजनाथ चतुर्वेदी
३०. ,, रेवती रंजन, सिनहा
३१. ,, वाणीकान्त काकाती एम. ए. पी. एच्. डी.
३२. ,, चंद्रशेखर भट्टाचार्य एम. ए.
३३. ,, भाअी प्रतापजी
३४. ,, ...
३५. ,, श्रीराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारक
'राष्ट्रभाषा'

राष्ट्रभाषाकी कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

		वार्षिक चन्दा
दैनिक		
आज	बनारस	२५)
संसार	,,	२५)
प्रताप	कानपुर	२५)
हिन्दुस्तान	दिल्ली	२५)
विश्वमित्र	कलकत्ता और बम्बई	२५)
भारत	अिलाहाबाद	२५)
साप्ताहिक		
समाज	बनारस	६॥)
संसार	,,	६॥)
नवयुग	दिल्ली	७॥)
देशदूत	अिलाहाबाद	७॥)
विश्वमित्र	कलकत्ता	७॥)
साप्ताहिक भारत	अिलाहाबाद	५)
मासिक		
विश्ववाणी	अिलाहाबाद	६)
विशालभारत	कलकत्ता	६)
हंस	बनारस	६)
नया-साहित्य	बम्बई	१२)
हिमालय	पटना	

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंक
७

राष्ट्रभाषा

नवभारतका भावी विधान राष्ट्रभाषामें—

"विधान चाहे जो भी स्वरूप ग्रहण करेगा
मैं उसका अनुवाद राष्ट्रभाषामें कराने
जा रहा हूँ जिससे कि स्वतंत्र भावी
भारतका भावी विधान देशकी
राष्ट्रभाषामें उपलब्ध हो सके।
मैं व्यक्तिगत रूपसे चाहता
हूँ कि मूल विधान देशकी
भाषामें ही स्वीकार
किया जाय।"

हस्ताक्षर—बाबू राजेन्द्रप्रसाद

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनताका घोषणा-पत्र

"इस प्रस्तावके द्वारा यह विधान-परिषद भारतको स्वतंत्र अेवं सार्वभौम प्रजातन्त्र घोषित करने तथा भारतके भावी शासनके लिअे विधान बनानेके अपने दृढ़ अेवं गम्भीर निश्चयकी घोषणा करती है। जो प्रदेश ब्रिटिश भारतमें सम्मिलित हैं, जिन प्रदेशों द्वारा भारतीय रियासतोंका निर्माण होता है, जो प्रदेश ब्रिटिश भारत और रियासतके बाहर हैं तथा अन्य अैसे प्रदेश जो स्वतन्त्र सार्वभौम भारतमें सम्मिलित होनेके अिच्छुक हैं— अिन सभी प्रदेशोंको मिलाकर अेक यूनियनका निर्माण होगा।

"अुपर्युक्त प्रदेशोंको, चाहे अुनकी सीमाअें ज्योंकी त्यों बनी रहें या चाहे अुनमें विधान-परिषद द्वारा तथा अुसके पश्चात् विधानके नियमोंके अनुसार परिवर्त्तन हो, स्वायत्त शासन-प्राप्त अिकाअियोंकी स्थिति प्राप्त होगी, जिससे अुन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवशिष्ट अधिकारोंके साथ शासन अवं सरकारके सभी अधिकार प्राप्त होंगे। अुन्हें केवल वे अधिकार नहीं प्राप्त होंगे जो यूनियनको प्रदान किये जायंगे, अथवा जिनका सम्बन्ध यूनियनसे होगा।

"अिस प्रस्तावके अनुसार स्वतन्त्र अवं सार्वभौम भारत, अुसका निर्माण करनेवाले अंगों तथा शासनके सभी अधिकार जनताके हाथोंमें होंगे तथा समग्र भारतीय जनताको सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, कानूनकी दृष्टिमें सभीको समान स्थिति और समान सुअवसर, विचार स्वातन्त्र्य, भाषण स्वातन्त्र्य, धर्म, विश्वास, पूजा-पाठ, पेशा, संगठन और कार्य करनेकी स्वतन्त्रता प्राप्त होगी, बशर्ते कि वह कानून और सार्वजनिक नैतिकताके प्रतिकूल न हो।

"अिस प्रस्तावके द्वारा अल्पसंख्यकों, पिछड़ी जातियों, कबाअिली प्रदेशों, दलित वर्गों तथा अन्य पिछड़े वर्गोंको अुचित संरक्षण प्रदान किये जायंगे। अिस घोषणाके द्वारा न्याय अवं संसारके सभ्य राष्ट्रोंके नियमोंके अनुसार जल, थल और आकाशमें भारतीय प्रजातन्त्रकी सार्वभौमता और अुसकी अखण्डताकी रक्षा की जायगी, जिससे यह प्राचीन भारत भूमि संसारके राष्ट्रोंमें सम्मानित स्थान ग्रहण करेगी तथा विश्वमें शान्तिकी स्थापना अवं मानव जातिकी प्रगतिमें पूर्ण अुच्चित योग प्रदान करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान निर्मातृ परिषदसे अपील—

हिन्दी-भाषी-प्रांत अलग बनाया जाय

: श्री सत्यपाल सिंह अेम० अे० :

राष्ट्रीय महासभा (अिण्डियन नेशनल-काँग्रेस) के दीर्घकालीन आन्दोलन अेवं अन्य असाधारण परिस्थितियोंके फलस्वरूप अंगरेज शासकोंने भारत छोड़नेकी घोषणा कर दी है। घोषणा सशर्त है। शर्त यही है कि भारतवासी स्वयं निर्वाचित विधान-निर्मातृ समिति द्वारा स्वतंत्र भारतका सर्वमान्य विधान बनाअें, जिससे भारतके शासनकी बागडोर शान्तिपूर्वक भारतीयोंको सौंपी जा सके। अिस शुभ कार्यके संपादनकी तिथि जून १९४८ भी निर्धारित कर दी है। अैसी हालतमें विधान-निर्मातृ समितिको जून, १९४८ अी० से बहुत पहले स्वतंत्र भारतके लिअे सर्वमान्य विधान बनाना है। अतअेव विधान-निर्मातृ-समितिके प्रत्येक सदस्यका ही नहीं, वरन प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि वह अपनी शक्ति-भर इस परमावश्यक कार्यमें सहायता करे और सहायता न कर सके तो रुकावट भी न पैदा करे।

भारतका प्रान्तीय विभाजन

भारतके सु-शासनके लिये विधान निर्मातृ-समितिको अुसे स्वाभाविक प्रांतीय विभागोंमें बांटना पड़ेगा। क्योंकि विदेशी शासकों ने भारतको स्वाभाविक प्रांतीय विभागोंमें विभाजित नहीं किया है। यह कार्य विधान-निर्मातृ समिति अपनी अेक विशेष समिति द्वारा संपन्न करायगी। सिद्धांततः यह स्वाभाविक प्रांतीय विभाजन भिन्न-भिन्न जातीय भूमियोंके आधार पर होना चाहिये।

यह संतोषका विषय है कि हमारी राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने भारतका अपना प्रांतीय विभाजन जातीय भूमियोंके प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात भाषाके आधार पर किया है। विधान निर्मातृ समितिके लिये यह पथ प्रदर्शक हो सकता है, किन्तु अिसमें अेक-दो त्रुटियाँ अवश्य हैं, जिनका सुधार सरलतासे हो सकता है।

राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने भारतको अपने संगठनकी सुविधाके लिये आसाम, बंगाल, उत्कल, आंध्र, तामिलनाड, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्ध, पंजाब, दिल्ली, संयुक्तप्रांत, अजमेर, महाकोशल, बिहार, विदर्भ, नागपुर, बम्बई, सीमाप्रांतके प्रान्तोंमें विभक्त किया है। अिस विभाजनमें राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने यहीं भूल की है कि दिल्ली, संयुक्तप्रांत, अजमेर, महाकोशल, बिहार को पृथक-पृथक स्वतंत्र प्रांत स्वीकार किया है जबकि ये पाँचों सम्मिलित रूपमें केवल अेक ही प्रांतकी क्षमता रखते हैं। राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने इन पांचोंकी प्रांतीय भाषा 'हिंदुस्तानी' स्वीकार की है। अिसका सुधार विधान निर्मातृ समितिको करना है। वास्तवमें ये पांचों प्रांत हिन्दी भाषी प्रदेशका निर्माण करते हैं, जिसमें पंजाबके अम्बाला, करनाल, रोहतक, हिसार और जींद रियासत भी सम्मिलित हैं।

ब्रिटिश कैबिनिट मिशनकी घोषणामें हिन्दी-प्रदेश सेक्शन 'अे' में आता है। इससे हिन्दी-प्रदेशके स्वतंत्र निर्माण पर सरलतासे विचार हो सकेगा। सेक्शन 'अे' में हिन्दी प्रदेशके अतिरिक्त तेलगू, तामिल, कन्नड, मलयालम, मराठी, गुजराती, उड़ियाके प्रदेश भी सम्मिलित हैं। अिनका भी स्वतंत्र निर्माण होना है, क्योंकि ब्रिटिश शासनमें मद्रास प्रेसीडेन्सीमें तीन जातीय भूमियों (तेलगू, तामिल मलय) की चोटियां बंधी हैं और बम्बई प्रेसीडेंसीमें, सिन्धके अलग होजाने पर भी गुजराती, महाराष्ट्र अेवं तीन जातियां सम्मिलित हैं।

क्योंकि तामिल, तेलगू, कनाड़ी, मलय, मराठी, गुजरातीके प्रदेशोंको राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने पृथक-पृथक स्वतंत्र प्रांत स्वीकार कर लिया है, तब हिन्दी प्रदेशकी स्वीकृतिके लिये निम्नलिखित विवेचन प्रस्तुत है।

हिंदीकी प्रांतीय (भौगोलिक) सीमाअें

बंगाली, मराठी, गुजराती भाषाओंकी भांति हिंदीकी भी प्रांतीय (भौगोलिक) सीमाअें हैं। कहनेका मतलब यही है कि हिंदी अेक प्रांतीय भाषा है, अुसका निश्चित अेवं सर्वमान्य साहित्यिक स्वरूप है और वह पर्याप्त जनसाधारणकी मातृभाषा है। बंगाली, मराठी, गुजराती भाषाओंकी भांति हिंदीका साहित्य समृद्धशाली है। बंगालीमें जिस प्रकार कवीन्द्र रवीन्द्र, शरत, द्विजेन्द्रलालरायकी रचनाअें, मराठीमें तुकाराम, रामदास, तिलककी रचनाअें और गुजरातीमें गांधीजी मुन्शीकी रचनाअें अमर है; हिंदीमें भी अुसी प्रकार तुलसी, सूर, प्रेमचन्द, प्रसादकी रचनाअें अमर हो चुकी हैं।

वास्तवमें हिन्दीका प्रादेशिक विस्तार बंगाली, मराठी, गुजरातीके प्रादेशिक विस्तारोंसे अधिक है। हिंदी अिस समय पूर्वीय पंजाब, अम्बाला, रोहतक, हिसार, करनाल, दिल्ली, राजस्थान, संयुक्तप्रांत, महाकोशल, मध्यभारत और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहारकी साहित्यिक भाषा है अर्थात वहांकी पाठशालाओं, पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकोंकी भाषा है। अजमेरमें बैठकर म० म० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजपूतानेका इतिहास खंडवामें पं० माखनलाल चतुर्वेदी 'कर्मवीर' का संपादन, बांकीपुर जेल (पटना) में बैठकर देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद आत्मकथाकी रचना, चिरगांवमें बैठ कर मैथिलीशरण गुप्त काव्य की रचना करते हैं और काशी, प्रयाग, लखनऊ, आगराके विश्वविद्यालयोंमें उच्चतम श्रेणी [एम० ए०] में साहित्य शिक्षाकी भाषा हिन्दी है भारतीय भंडार प्रयाग, इंडियन प्रेस प्रयाग, सरस्वती प्रेस काशी, साहित्य सदन चिरगांव, वैदिक मुद्रणालय अजमेर, साहित्य रत्न भंडार आगरा, सस्ता-साहित्य मंडल दिल्ली, श्रद्धानन्द प्रकाशन दिल्ली, गीताप्रेस गोरखपुर, भारती सदन मजफ्फर आदि अनेक प्रकाशन संस्थाओं; कामायनी, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, आत्मकथा [देशरत्न राजेन्द्रबाबू] गोदान, साकेत, सत्यार्थप्रकाश, राजपूतानेका इतिहास, मेरी कहानी [नेहरू] आत्मकथा, रामचरितमानस आदि जैसे ग्रंथरत्न और भारत, सरस्वती, देशदूत, हंस, साहित्य संदेश, जीवन साहित्य, अर्जुन, कल्याण जैसी दैनिक-साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाएं हिन्दीमें प्रकाशित होती हैं। इस प्रकार तनिक भी ध्यान देनेसे यह-स्पष्ट हो सकेगा कि बंगाली, मराठी, गुजरातीकी भांति हिन्दीकी भी निश्चित एवं स्वाभाविक सीमाएं हैं और इन सीमाओंके भीतर हिन्दी सर्वसाधारणकी साहित्यिक भाषा है, यहां यह भी स्मरणीय है कि हिन्दीको अंतप्रान्तीय भाषा भी स्वीकार करनेका आंदोलन चला है। इसी आंदोलनके फलस्वरूप हिन्दीका प्रांतीय महत्व बहुत कुछ क्षीण हो गया है किन्तु बिना प्रांतीय स्वरूपके हिन्दीका अन्तः प्रान्तीय स्वरूप बिना हड्डीके शरीरकी भांति रह गया।

हिंदी का असाधारण प्रांतीय विस्तार क्यों

अपर्युक्त विवेचनसे हिंदीका प्रांतीय विस्तार असाधारण सिद्ध हुआ है। इस असाधारण विस्तारका मुख्य कारण हिन्दीकी बोलियोंके विभागोंका विस्तार है। हिन्दीकी बोलियां हैं—बांगरू, खड़ीबोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, मालवी, राजस्थानी, [हाड़ौती] मेवाड़ी मेवाती, जयपुरी, [मारवाड़ी] इन बोलियोंके विभिन्न विभाग मिलकर साहित्यिक हिंदी का प्रदेश बनाते हैं जिसका विस्तार अम्बालासे लेकर रायपुर तक और भागलपुरसे लेकर जैसलमेर तक है। इन बोलियोंके विभागोंका मानचित्र बीसवीं शताब्दीके प्रमाणोंके आधारपर बनाया गया है। प्रियर्सनने भारतीय भाषाओंके सर्वे नामक ग्रंथमें इसे दिया है यह मानचित्र हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन कालके भारतके मध्यदेशका मानचित्र प्रतीत होता है जब कुरुक्षेत्रपर भारतके भाग्यका निपटारा हुआ था क्योंकि हिंदीकी वर्त्तमान बोलियोंके विभिन्न विभाग मध्यदेशके विभिन्न जनपदीय विभागों (कुरु, शूरसेन, पंचाल, चेदि, कोसल, उत्तर, दक्षिण कोसल, काशी, विदेह, मगध, अवन्ति मत्स्य से पूर्णतः सादृश्य रखते हैं।

अिस प्रकार हिन्दीकी विभिन्न बोलियोंके विस्तारके कारण हिन्दी प्रदेश का विस्तार असाधारण है और दूसरे बंगाली, मराठी, गुजरातीके सम्मिलित विस्तारसे भी अधिक होनेसे वह असाधारण प्रतीत होता है। हिन्दी-प्रदेशके असाधारण विस्तारके कारण हम अुसके पांच पृथक-पृथक् स्वतंत्र खंड स्वीकार नहीं कर सकते। शासन-व्यवस्थाकी सुगमता और सुप्रबन्धके लिअे हम हिन्दी प्रान्तकी बोलियोंके स्वाभाविक अुपभागोंमें विभक्त कर लेंगे। यह तो हमारी आंतरीय समस्या होगी। अिसका अुत्तरदायित्व हम हिन्दी-भाषियोंके अुपर रहेगा। विधान निर्मातृ समितिको तो हिन्दी भाषी प्रदेशको अेक प्रान्त [हिन्दी-प्रान्त] स्वीकार करना है।

चूंकि हिन्दीभाषी प्रदेशको अेक ही स्वतन्त्र प्रान्तके रूपमें स्वीकार कराना है और तत्सम्बन्धी चर्चा आरम्भ नहीं हुअी है, अिसलिअे अिस लेख द्वारा पाठकों, हिन्दी-प्रेमी व लेखकोंका ध्यान अिस ओर आकर्षित किया है। हिन्दी-प्रदेशके प्रान्तीय स्वरूपकी समस्या जटिल है। अिस समस्याका हल अभी अनावश्यक है। तत्सम्बन्धी रुचि रखनेवालोंको विवेचन करनेका निमन्त्रण है। हिन्दी भाषियोंके जागनेकी बेला आचुकी है। अधिक निद्रा हिन्दीयोंको अुनके हकसे वंचित करेगी। स्वत्वके अधिकारी वही होते हैं जो स्वत्वके प्रति जागृत हैं, सावधान हैं और समय आनेपर अुसके लिअे सर्वत्यागको तत्पर रहते हैं। अुड़िया' और सिन्धियों' ने अपने-अपने प्रान्तोंका निर्माण करा लिया है। 'आंध्र' और 'महाराष्ट्र' के लोग भी अपने-अपने आन्दोलनमें संलग्न हैं। 'हिन्दी' क्षेत्र सो ही रहे है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलूचना

श्री रामेश्वर दयाल दुबे

गत परीक्षाके परीक्षार्थियों द्वारा भेजी हुअी आलूचनाकी सामग्री राष्ट्रभाषाके मार्च अंकमें अधूरी ही दी जा सकी थी, अिस अंकमें भी पूरी दी जा सकेगी, अैसी आशा नहीं है।

'पंचवटी' से अेक प्रसंग अर्थ लिखनेके लिये दिया गया था—सीताजीका कथन है:—

" आर्यपुत्र, अुठकर तो देखो, क्या ही सु-प्रभात है आज "

परीक्षार्थीने अर्थ लिखा है—

" है आर्य समाजके पुत्र अुठकर देखो...। "

आशा है आर्य समाजी भाअी अिस अर्थको पढ़कर अवश्य प्रसन्न होंगे।

'मातृभूमि' शीर्षक कविताका भाव लिखते हुअे अेक दूसरे परीक्षार्थीने लिखा है—" मातृभूमि बचपनमें हमको दूध देती है। "

पता नहीं परीक्षार्थीने मातृभूमिको धाय समझा है अथवा गाय?

अेक प्रश्न था—" बापूके प्रति " शीर्षक कविताके आधारपर बताअी गअी बापूकी भिन्न-भिन्न विशेषताओंका वर्णन कीजिये।

पाठ्य पुस्तकमें संग्रहीत 'बापूके प्रति' कविता महात्मा गान्धीपर लिखी गअी है। परीक्षार्थीने अुत्तर यों दिया है:—

" बापकी प्रीति अपनपर कैसी है। माँ की प्रीति अपनपर कैसी है। माँ अपनको पालन करती है और बाप जी बाहरसे अपनके लिये अच्छी अच्छी चिज़े लाकर देते हैं। कभी पपीता, कभी केला, कभी चूड़ा "।

" प्रति " को " प्रीति " में अनायास बदल कर परीक्षार्थीने ज्ञात होता है अपने पिताजीका मीठा परिचय दिया है। काश, परीक्षार्थीके पिताजी अिस अुत्तर पुस्तकको देखते!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपठित पद्यकी कुछ पंक्तियाँ भाव लिखनेके लिये दी गयी थीं।

" पड़े हैं बन्धनमें गजराज।
मुक्त फिरता है श्वान समाज ॥'

अेक गुजराती परीक्षार्थीने भाव यों समझाया है—

" हमारा गुजरात बन्धनमें पड़ा है और समाज मुफ्त शानसे फिरता है लेकिन अब हमारा गुजरात बन्धन तोड़ देगा।"

'गजराज' को 'गुजरात', 'मुक्त' को 'मुफ्त' और 'स्वान' को 'शान' बनानेमें परीक्षार्थीने भले भूल की हो पर अुसकी राष्ट्रीय भावना की कौन प्रशंसा न करेगा।

× × ×

'साहित्य शिक्षा' पाठ्य-पुस्तकके आधारपर अेक प्रश्न पूछा गया था—'सत्यंशिवं सुन्दरम्' से आप क्या समझते है ?"

जिस प्रश्नका अुत्तर पाठ्य-पुस्तकका बिना आधार लिये ही दिया जा सके, परीक्षार्थी अुसका अुत्तर क्यों न दे ?

परीक्षार्थीने लिखा है— "शिव शंकर भगवान संसारके कण-कणमें विद्यमान हैं। वे चाहें तो पलमें सृष्टिको पैदा कर दें, चाहे नष्ट कर दें—अैसे शिव शंकरको मैं बार बार प्रणाम करता हूँ"

परीक्षार्थीके साथ-साथ अिन पंक्तियोंका लेखक भी अुन 'जटाजूटधारी गले नाग कारी वमभोला शिव शंकर' को अनेक बार प्रणाम करता है।

× × ×

समितिके अेक नवीन कार्यकर्ताने प्रारम्भमें अुड़ीसा प्रान्तके 'खड़गप्रसाद' परीक्षा केन्द्रको तथा सिन्धप्रान्तके 'टंडोमुहम्मदखाँ' परीक्षा केन्द्रको किन्हीं स्थानोंका नाम न समझकर व्यक्तियोंका नाम समझा था। प्रवेशके अेक परीक्षार्थीने "सेगाँवका सन्त" को अेक गाँव समझ कर मानों भ्रमसे भ्रमको जन्म दिया है।

× × ×

अेक प्रश्न था—" अख़बार क्यों पढ़ना चाहिये ? "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थीने अुत्तर लिखा है—"अखबार हुमायूंका लड़का था। बड़ा शूर--वीर था। वह मुसलमान था, तभी अुन्हें अपना माथेपर तिलक लगाता था। सूर्यनारायणको पूजा करता था। अिसीलीये अखबार पढ़ना चाहिये।"

परीक्षार्थीका अितिहास ज्ञान स्तुत्य है।

× × ×

"ठुकरा दो या प्यार करो" श्रीमती सुभद्रादेवी चौव्हानकी अेक प्रसिद्ध रचना है जो प्रवेशकी पाठ्य-पुस्तकमें संग्रहीत है। अिस कविताका भाव पूछा गया था। परीक्षार्थीने अुत्तर अिसप्रकार लिखा है—"ठुकरा दो या प्यार करो अिसका मैना अैसा, कि ठाकर मारना और पिछे अुसी चिज़को फीर प्यार करना। पहले कोअी चिज फेंक देना और पिछे अुसके लिये रोना—क्यों क जरुरत पड़ी। अिसलिये फिरसे अुठा लेना और प्यार करना।

काश! श्रीमती सुभद्राजी अपनी कविताके अिस भावको समझ पातीं।

× × ×

अिसी 'ठुकरा दो या प्यार करो' कविताकी दो पंक्तियाँ अर्थ लिखनेके लिये दी गअी थी। पंक्तियाँ ये थीं —

"पूजा और पुजापा प्रभुवर! अिस पुजारिनको समझो।
दान दक्षिणा और निछावर अिसी भिखारिनको समझो।"

परीक्षार्थीने अुत्तर यों लिखा है:—

अेक पुजारी था। वह अपनी स्त्रीको बहुत प्यार करता था। वह कहता है कि मैं अपनी (पत्न) पुजारिनको पूज और पुजापा और प्रभुवर समझता हूँ। तो भिखारा बोला" मैं अपनी (पत्नी) भिखारिनको दान और दक्षिणा और निछावर समझता हूँ।"

परीक्षार्थी क्या समझता है?—यह प्रश्न रह ही गया।

शेष फिर

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराधीनताका पाप

श्री पं० हृषीकेश शर्मा।

पराधीनताका प्लेगसे भी बढ़कर ख़तरनाक महारोग है। राक्षसी-महत्त्वाकांक्षायें रखनेवाले विदेशी विजेता अपनी विजित जातियों-की—प्रजाओंको—बिलकुल निकम्मा बना देते हैं। सुख-शांति और व्यवस्था (लॉ-आर्डर) की आड़में विदेशी-शासक अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपना साहित्य, अपना भेष, अपना भोजन, संसार भरमें श्रेष्ठ बतलाकर पराधीन जातिको विरासतके रूपमें दे देते हैं। अितिहासके पन्ने अिसके साक्षी हैं।

फ़ारस (अीरान) के बादशाह अुन्मत्त हो अुठे थे कमज़ोर राष्ट्रोंको गुलाम बनानेके लिये। अेक बार लिडिया-प्रान्तको अुन्होंने जीत कर अपने साम्राज्यमें मिला लिया। स्वतंत्रताके प्रेमी लिडियावासियोंने कअी बार बादशाहके विरुद्ध बलवा किया। अुस समय फ़ारसका बादशाह साअीरस था, बड़ा स्वेच्छाचारी निरंकुश। अुसने अुस लिडिया-विद्रोहका जड़मूलसे दमन करनेके लिये आज्ञा जारी की—"गला घोंट दो अिन लोगोंका, हत्या कर डालो और विद्रोहियोंको पकड़-पकड़कर गुलामोंकी तरह बेच डालो दुनियाके दूसरे मुल्कोंके बाज़ारोंमें।"

लिडियाके गवर्नरने बादशाहको सलाह दी—"जहांपनाह! अिन बग़ावतियोंको दबानेके लिये आप दूसरा ही तरीका अमलमें लाअिये। अिनको निहत्था कर दें। और अिनके हथियार छीनकर अिन्हें निहत्था बना दें। अैलान कर दें कि आजसे सबके साथ अेकसा बरताव किया जायगा, प्रजामें अमन-चैन और सुख-शान्ति कायम रखनेके लिये हर तरहकी कोशिश सरकारकी ओरसे की जायगी। साथ ही आप अिन विजितोंको अच्छे-अच्छे बढ़िया रेशम और महीन मलमलके वस्त्र पहनानेकी व्यवस्था कर दें। अिनको शराब पीने, नाचने-गानेमें और नाटक-खेल तमाशोंमें सराबोर रखनेके लिये लिडियाके शहर-शहरमें जगह-जगह क्लब और नाटक-घर खोल दें अिनको फ़ारसी भाषा और साहित्य पढ़नेके लिये काफ़ी प्रोत्साहन दें। लिडिया-देशवाले आपके सदियों तक बे-दामके गुलाम बनकर रहेंगे और आपके अिन अुपकारोंको कभी न भूलेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारह वषके अेक छोटेसे युगकी करवटके अन्दर ही लिडियावासियोंकी काया-पलट हो गयी। अपने समाजके प्रति अुनकी विद्रोह-भावना शान्त हो गयी। अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला और साहित्यको वे तुच्छ समझने लगे, विदेशी सभ्यता संस्कृति, कला-साहित्य और विदेशी-भाव-भाषा-भेष और भोजनको अुत्तम समझ अपनी रग-रगमें भरने लगे। थोड़े ही समयमें लिडिया-वासियोंका राष्ट्रीय तेज-ओज नष्ट हो गया। अुनकी जातीयता तीन-तेरह हो गयी। वे अपने देशी अुद्योग-धन्धे छोड़ बैठे, निरुद्यमी, कायर, निकम्मे बन गये। सुख-शान्ति और सुव्यवस्थाके सब्ज बाग़ दिखा-दिखाकर विजेता अीरानियोंने विजित लिडिया-वालोंको शराबी, अैयाश, नाचरंग-पसन्द-और आपसमें लड़ने-झगड़ने विलास-प्रिय बना दिया।

लिडिया-देशवासियोंका नामोनिशान बाकी नहीं रहा! विजेता शासकोंने अपनी विजित लाखों-करोड़ों प्रजाओंको अिसी पॉलिसीके द्वारा सदियों तक अपना दास बनाकर रक्खा है।

धन्य कि जो....

धन्य कि जो आँसूकी कीमत खूँसे यहाँ चुकाते।
धन्य कि जो जलती ज्वालाओंमें भी हैं मुस्काते।
धन्य कि जिनका जीवन बनता जगमें अमर कहानी।
धन्य कि जो मिटते; न किन्तु झुकता मस्तक अभिमानी।
जिनकी चरण निशानी बनती युगपथकी अुजयाली।
जिनका लोहू वीरानोंमें लाता नव हरियाली॥
धन्य कि जिनकी राख-विभूति बनी जगहित कल्याणी।
देती आअी सदा प्रेरणा नरको जिनकी वाणी।
खामोशीमें छिपा हुआ जिनकी प्रचंड तूफान।
बलिकी हुअी पुकार कि दौड़े लिये, शीशका दान॥

श्री अुपेन्द्र

('किशोर' से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ लावण्यके निर्माता !

श्री प्रभाकर माचवे

बंबअीके अुपनगर-विभागमें और अन्यत्र जहाँ-जहाँ समुद्रका पानी चौकोर क्यारियोंमें बाँधकर सुखाया जाता है, वहाँ नमक बनानेवाले बुड्ढे-जवान-बच्चे-औरतें मज़दूर मैंने देखे हैं। बारिशसे पहिले-पहिले, कड़े घाममें लंबे डंडोंसे बँधी बलनीसी झाड़ूसे वे बराबर अुन चौकोर मेंड़ोंके किनारे-किनारे चमकीले, सफेद नमकके ढले जमाकर लेते हैं। पता नहीं कैसे कौशलसे नमक और रेती मिल नहीं पाती !

"पानी पहले जमता है, सूखता है, अुसपर पपड़ी जमती है, अुसके भारीपनके कारण वह तलेकी ओर जाती है, अुसे निकाल लिया जाता है। यह है सोडियम क्लोराअीड"–'वैज्ञानिक बोले हुये'

'यह है नमक जिसपर लगे करके विरुद्ध महात्माजीने सन् ३० में सविनय कानून-भंगका आंदोलन छेड़ा था"—राजनीतिज्ञने अपने ज्ञानका प्रदर्शन किया।

"नमक सब स्वादोंका प्राण है"—कहनेवाला वैद्यराज होगा या कोअी रसोअीका आचार्य महाराज।

मैं सोच रहा था स्वाद तो ठीक, लेकिन ज्यादह नमक हो जानेपर ?

सांभर झील और दूसरी जगहोंपर नमक अिसी तरह कअी लाख श्रमिक बनाते होंगे। कहीं यंत्रोंसे भी पथरीला नमक कटता-पिसता होगा—तभी वह आकर हमारी थालियोंको प्रतिदिन सजाता है। अुस नमक नामक सर्वव्यापी वस्तुको शाकाहारी-मांसाहारीका भेदभाव नहीं, वैसे ही सावधान-असावधान सब ब्राह्मणों और अब्राह्मणोंकी भी वह सावधानीसे सेवा करता है।'

ओ क्षारत्वके प्रणेता, ओ अिस खारे पारावारकी असीमताको ससीम बनाकर, बंधनोंको अपने लिये अभिशाप बनाकर दूसरोंके लिये वरदान बनाने-वाले ! तुम्हारे प्रति मेरी हार्दिक हमदर्दी है। तुम किसी कलाकारसे कम नहीं हो क्योंकि तुम भी लावण्यके निर्माता हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मन्त्रीकी ओरसे

स्थायी-समितिकी ओरसे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके लिये जो नाम आये हैं, वे प्रस्तावित हो चुके हैं। अिस बीचमें प्रान्तीय समितियोंकी ओरसे निम्न लिखित नाम आये हैं—

बम्बअी—	श्री राजाबहादुर गोविंदलाल शिवलाल
,,	,, कान्तिलाल जोशी
गुजरात—	,, कालीदासजी, सूरत
,,	,, मोहनलालजी भट्ट, बड़ौदा
,,	,, जेठालाल जोशी, अहमदाबाद
महाराष्ट्र—	,, भूपटकरजी
,,	,, नाना पाटीलजी
,,	,, दा० सात्वलेकरजी
विदर्भ-नागपुर—	,, अनुसूयाबाअी काले
,,	पं० हृषिकेश शर्मा
अुत्कल—	श्री राजकिशनजी बोस
,,	,, लिङ्गराज मिश्र
बङ्गाल—	,, वैजनाथ चतुर्वेदी
,,	,, रेवती रञ्जन, सिनहा
असम—	,, वाणीकान्त काकाती M. A. Ph. D.
,,	,, चक्रेश्वर भट्टाचार्य M. A.
सिन्ध—	,, भाअी प्रतापजी
हैदराबाद (दक्षिण)—	,, प्रधान मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद

हरिजन सेवकके लेख (२)

'राष्ट्रभाषा' को हरिजन-सेवक से जो शिकायत है, अुन्हें अिन पन्नोंमें दोहराना अच्छा नहीं लगता। तो भी हरिजन-सेवकके भाग ११ के अंक १२ की लेख-सूची ध्यान आकृष्ठ करती ही है। लेख अिस प्रकार हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. दुनियाको अेक करनेका कोशिश कीजिये (अंग्रेजीसे)
२. ज़रूरी काम पहले किये जायें "
३. नोआखाली के बारेमें "
४. अेशियाका पैग़ाम "
५. अुद्योग-धन्धोंकी हिफाज़त "
६. गान्धीजीकी दिल्लीकी डायरी "
७ कलाअिव्हसे केअिन्स तक "

क्या अिस अंकमें कोअी अेक भी लेख अैसा नहीं कि जो 'अंग्रेजीसे' न हो? नहीं, अेक भी नहीं। अेक भाअी जो अंग्रजी और हिन्दी-हिन्दुस्तानी दोनों जानते हैं का कहना है कि वह राष्ट्रभाषा-प्रेमके कारण हा हरिजन (अंग्रेजी) की अपेक्षा 'हरिजन-सेवक' को अधिक महत्व देते रहे हैं। यदि 'हरिजन-सेवक' को अंग्रेजी 'हरिजन' की जूठन पर ही जीना है, तो क्या अुनके लिये यह अधिक अच्छा न होगा कि वह अिन लेखोंको मूल रूपमें अंग्रेजीमें ही पढ़ें? भाषाकी दृष्टिसे तो हरिजन-सेवक' ने किसीको सन्तोष दिया ही नहीं तो फिर 'हरिजन' के अनुवाद-मात्रके लिये 'हरिजन-सेवक' को क्यों पढ़ा जाये? अिसका अुत्तर यही हो सकता है कि 'हरिजन-सेवक' अंग्रेज़ी न जानने वाले अज्ञ भारतीयोंके लिये है, अंग्रेजी जानने वालोंको तो 'हरिजन' ही पढ़ना चाहिये। 'राष्ट्रभाषा' का दुर्भाग्य है, किन्तु अुसकी सम्मतिमें तो हरिजन' राष्ट्रभाषासे अपरिचित अज्ञ भारतियों तथा विदेशियोंके लिये है और जिन्हें 'राष्ट्र-भाषा' का ज्ञान है अुन्हें तो 'हरिजन-सेवक' पढ़ना ही चाहिये?

'हरिजन' के अुर्दू-हिन्दी अेडिशनोंकी तरह कम्युनिस्ट पार्टीके पीपल्ज-वेज, के भी पाँच भाषाओंमें अेडिशन निकलते हैं। किन्तु वे हिन्दी 'जन-युग' के लिये हिन्दीका जानकर स्टाफ रखे हुये हैं। हमें डर है कि 'हरिजन-सेवक' के सम्पादकको 'हरिजन-सेवक' की भाषामें लिखनेकी अपेक्षा अंग्रेजीमें ही लिखनेमें सुविधा होती है। राष्ट्रभाषा' या 'क़ौमी ज़बान' के महत्व पर 'हरिजन-सेवक' में जो कुछ रहता है, वह सब शायद दूसरोंके लिये है।

बिना 'मुहब्बत' के कोअी किसीसे शिकायत नहीं करता किन्तु 'राष्ट्रभाषा' को बापूके 'हरिजन-सेवक' से जो शिकायत है, अब वह निराशाकी सीमामें जा पहुँची है। काश! अब भी कोअी 'राष्ट्रभाषा' की सुने।

फारसी लिपि अनिवार्य नहीं—

दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा जबसे अुभय-लिपि वादी हुअी तबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुसका रास्ता सीधा और साफ नहीं रहा। सभाने अपने नये अुद्देश्यकी पूर्तिके लिये 'सभाकी परीक्षाओंमें फरवरीसे फारसी लिपिको अनिवार्य बनानेकी बात सोची थी।' अब व्यवहारिकताके नाम पर सभाने तै किया है कि सभाकी परीक्षाओंमें जो लोग फारसी लिपिके प्रश्नके साथ अुत्तीर्ण होंगे अुनके प्रमाण-पत्रमें अुक्त बातका अुल्लेख किया जाय।

नया साहित्यसे १००० रु. की ज़मानत—

पिछले अेक वर्षमें 'नया-साहित्य' के सम्पादकोंने हमें छः संग्रह दिये। सभीने अुन संग्रहोंको सराहा—लेखकोंने सहयोग देकर, पाठकोंने खरीदकर। अिस वर्ष सम्पादकोंने सोचा कि क्यों न अब अुसे 'मासिक' रूप दे दिया जाय। जब सरकारसे अुसे 'मासिक' रूपमें निकालनेकी अिजाज़त मांगी गअी तो बम्बअीकी नौकरशाहीने वह अिजाज़त १००० रु० ज़मानतके मूल्यपर देनी स्वीकार की।

किसी साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रसे जमानत और भी जब हमारी जन-प्रिय सरकारें पदारूढ़ हैं!

हम जानना चाहते हैं कि यदि 'नया-साहित्य' अब जमानत मांगने योग्य समझा गया है तो वह पिछले अेक वर्षमें ज़ब्त करने योग्य क्यों नहीं समझा गया।

हिन्दीके हर संस्कृति-प्रेमीको अिस धान्धलीके विरुद्ध आवाज़ अुठानी चाहिये।

राष्ट्रसे अपील!

पत्रोंमें अेम. अे. जिन्ना और मो० क० गान्धी के हस्ताक्षरोंसे 'राष्ट्रसे अपील' प्रकाशित हुअी। अपील अंग्रेज़ी साम्राज्यवादके प्रतिनिधि लार्ड माअुन्टबेटनकी अुपस्थितिमें और शायद अुसकी अिच्छासे ही लिखी गअी है। अपील अंग्रेजीमें ही लिखी गअी है। अपील पर अेम० अे० जिन्नाने अपना नाम रोमन अक्षरोंमें ही लिखा होगा। बापूने अिस 'अपील' पर अपने हस्ताक्षर देवनागरी और फ़ारसी दोनों लिपियोंमें किये।

यह अपील हृदयको स्पर्श नहीं ही करती है। कारण? स्पष्ट है! यह अपील नहीं है, यह अपीलका नाटक है। हम अिसे 'राष्ट्र-आत्मा' की राष्ट्रसे की गअी अपील समझ सकते थे, मान सकते थे यदि यह लार्ड माअुन्टबेटनकी छायामें न की गअी होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापूने कहा है कि लार्ड माउन्टबेटनने अुन्हें देवनागरी-लिपि तथा असेंमें हस्ताक्षर करने दिये क्योंकि वह जानते हैं कि अुन्हें और अुनकी अंग्रेजीको शीघ्र चले जाना है। हम समझते हैं कि हमारी अपेक्षा—हमारे बापू की भी अपेक्षा—लार्ड माउन्टबेटन हमारी आजकी स्थितिको अच्छी तरह समझ रहे हैं।

हमारे लिपियोंके द्वैतवादसे—जो हमारे भीतरी द्वैतवादका परिचायक है—ब्रिटिश साम्राज्यका बाल भी बांका नहीं हो सकता।

हमें डर है कि कहीं हमारा जून १९४८ का सुख-स्वप्न अुसी प्रकार मृषा सिद्ध न हो जिस प्रकार १९२१ में ३१ दिसम्बरकी रातको 'स्वराज्य' प्राप्त होनेका सिद्ध हो चुका है।

जून '१९४८ को भी देश स्वतन्त्र हो सकता है, किन्तु तभी जब वह 'स्वतन्त्रता' की राह चलता दिखाअी दे।

———

पढ़े हुअे ग्रन्थ

श्री आनन्द कौसल्यायन

बौद्धदर्शन—हिन्दीका सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ ?

लगभग छः महीने हुये जब अेक दिन मुझे साहित्याचार्य पंडित बलदेव अुपाध्यायजीकी कृपासे 'बौद्ध-दर्शन' की प्रति मिली तो बड़ी प्रसन्नता हुअी। बादमें समाचार-पत्रोंमें पढ़ा की श्री. डालमियाने पंडितजीको मङ्गलाप्रसाद पारितोषिककी रकमसे भी बड़ी रकमके द्वारा पुरस्कृत कर बौद्ध-दर्शनको १९४६ की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी-पुस्तक घोषित किया है। मुझे लगा कि यह तो 'बौद्ध-दर्शन' और हिन्दी दोनोंकी अेक साथ 'सेवा' हुअी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौद्ध-दर्शन पूरे सवा पाँच सौ पृष्ठोंका मोटा ग्रन्थ है और यह भी नहीं कि किसी कविताकी किताबकी तरह एक एक पृष्ठपर चार चार सतरों वाली दस-दस, बीस-बीस पंक्तियाँ छपी हों-यहाँ सामग्री तो ठोस है ही, वह पुस्तकमें भी ठंस ठंस कर छापी गअी है। पुस्तकका मूल्य ७) बहुतसे प्रकाशकोंके लिये आदर्श मूल्य है।

अिस विवेचनमें पुस्तकका सार नहीं ही दिया जा सकता। स्वयं पुस्तकमें जो विषय-सूची दी गअी है वह ही तेरह पृष्ठोंपर जाकर समाप्त हुअी है तो सारांश क्या दिया जाय? अितना कहना अुचित लगता है कि, अिस ग्रन्थका नाम यदि 'बौद्ध-दर्शन' न होकर 'बौद्ध-धर्म' होता तो अधिक युक्ति युक्त होता, क्योंकि अिसमें बौद्ध दर्शनके संकुचित अर्थोंमें जितने विषयका समावेश होता है अुसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म प्रचार आदि अनेक विषय दिये गये हैं और विस्तार-पूर्वक।

यूरोपमें यूरोपियन अीसाअी लेखकों द्वारा बौद्ध-धर्म पर अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं। अुनमें बौद्ध-धर्मको अीसाअी अैनकसे देखा गया है। साहित्याचार्य पंडित बलदेव अुपाध्यायका 'बौद्धदर्शन' ब्राह्मण अैनकसे देखा गया बौद्ध-दर्शन है।

अेक बात अिसकी प्रशंसामें कहनी ही होगी और वह यह कि अुपाध्याय पंडितजीने 'बौद्ध-दर्शन' को यथा सम्भव अुसके यथार्थ-स्वरूपमें देनेका प्रयत्न किया है और वे अधिकांशमें सफल हुअे हैं। अपने ही विश्व-विद्यालयके वाअिस-चान्सलर सर राधाकृष्णकी तरह लीपा-पोती नहीं की है। हम समझते हैं कि जहाँ तक बौद्ध-दर्शनकी मोटी रूपरेखाकी बात है, वह अिस ग्रन्थके हर पाठकको सही स्पष्ट हो जायगी और पूरे विस्तारसे।

ग्रन्थका आकार ही अुपाध्यायजीके परिश्रमका साक्षी है। अितिहास अुस विषयमें तो कुछ वक्तव्य है ही नहीं। किन्तु अैसा लगता है कि यह संकलन संकलन अधिक है और विश्लेषण कम। पौराणिक 'अैतिहासिक' परम्पराओं और सच्चे 'अितिहास' में बड़ा अन्तर है। अिस ग्रन्थमें अधिकांशमें अितिहासके नाम पर 'अैतिहासिक' परम्पराओंका संग्रह मात्र है। राहुलजीने अपने दर्शन दिग्दर्शनमें अनेक जगहोंपर जिस भौतिक सूझका परिचय दिया है वह अिसमें नहीं है।

हर ग्रन्थका अुद्देश्य कुछ न कुछ प्रचार रहता ही है। लोगोंका कहना है कि राहुलजीके ग्रन्थको पढ़नेसे पाठकको अैसे लगता है कि वह भौतिक वादका महत्व बढ़ानेके लिये लिखा गया है। और ठीक हो सकता है। अुपाध्यायजीके 'बौद्ध-दर्शन' को पढ़नेसे लगता है कि अुसका अुद्देश्य 'वेद-रूपी चार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hardwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसरोवर' से ही हर चीजकी उत्पत्ति सिद्ध कर दिखाना है। उदाहरणके लिये पृष्ठ ६५ पर आप लिखते हैं— महर्षि पतञ्जलिने स्पष्ट कहा है 'दुःखमेव सर्वं विवेकिन योगसूत्र २।१५ विवेकी पुरुषकी दृष्टिमें यह समग्र संसार ही दुःख है। बुद्धकी भी यही दृष्टि थी। यहाँ योग-सूत्रोंका उल्लेख पहले और बुद्धका बादमें जबरन साम्य दिखानेके लिये ही नहीं है, वह बुद्धको प्रायः हर बातमें अबौद्ध-विचार-धाराका ऋषी सिद्ध करनेके लिये भी है। इस ग्रन्थमें यह प्रयत्न इतना अधिक है कि वह दर्शनके इतिहासके विद्यार्थियोंको खटकता ही है। उपाध्याय-जीके 'बौद्ध-दर्शन' के पाठकको एक जगह इतनी अधिक जानकारी उपस्थित कर देनेके लिये उपाध्यायजीके कृतज्ञ होते हुये निष्कर्ष अपने ही निकालने चाहिये। 'निष्कर्ष' के मामलेमें 'बौद्ध-दर्शन' अच्छा मार्ग-दर्शक नहीं है।

हिन्दी-ग्रन्थोंमें प्रूफकी अधिक गलतियाँ होना एक सामान्य दुर्गुण है, तो इसमें भी कमी नहीं हैं।

क्या हम आशा करें कि हिन्दी पाठक इस ग्रन्थका अध्ययन कर उपाध्यायजीके परिश्रमको सफल करेंगे ?

अर्थ-सन्देश—सम्पादकः— भगवतशरण अधोलिय तथा दयाशंकर दुबे। प्रकाशक— गोविंदराम सेकसरिया कामर्स कालेज, वर्धा, वार्षिक मूल्य ६), एक प्रतिका १॥)

हमारे वाङ्मयमें कविता, कहानी-उपन्यास साहित्यके मुकाबलेमें जीवनोपयोगी ठोस साहित्यकी इतनी अधिक कमी है कि हमें कामर्स कालेज, वर्धासे प्रकाशित होनेवाली त्रैमासिक पत्रिका—अर्थ सन्देशका हार्दिक स्वागत करना चाहिये। प्रथम वर्षके प्रथम-अंकका पहला ही लेख है—मातृभाषा द्वारा शिक्षाका प्रारम्भ। इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये 'अर्थ-सन्देश' का आरम्भ हुआ है। जो कुछ दूसरे देशोंके लिये सहज-सिद्ध है, उसे ही हमें तर्कों द्वारा प्रतिष्ठित करना पड़ता है। मातृभाषाको शिक्षाका माध्यम होना चाहिये और वह हो सकती है—यह सहज बात जिन खोपड़ियोंमें नहीं घुसती है 'अर्थ-सन्देश' उनकी चोट सुन तक यह सन्देश पहुँचाना चाहता है।

इसके दो अग्रलेख विधान--सभा और अन्तर्कालीन सरकारके सम्बन्धमें हैं। आर्थिक दृष्टिसे दोनोंकी परिस्थितिका सुन्दर विवेचन हुआ है। शेष विशेष--धोंमें मिलों, खानों तथा अन्य उद्योग--धन्धोंका राष्ट्रीय-करणपर विस्तृत विचार किया गया है। 'अर्थ--सन्देश' कपड़े जैसी जीवनोपयोगी वस्तुओंके अभावकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्याको हल करनेके लिये मिलोंके राष्ट्रीय-करणको अुतना आवश्यक नहीं समझता जितना अुनके विकेन्द्रीकरणको। 'विकेन्द्रीकरणसे बेहतर अिस समस्याका और कोअी अिलाज हो ही नहीं सकता। राजकीय-समाजवाद किंवा सोवियट समुदाय-वादकी बातें चलती हैं, किन्तु अुनकी सारी खूबियाँ हमारे विकेन्द्रीयभूत अुत्पादनमें स्वतः ही सन्निहित हैं' (पृ० ३१) जो व्यक्ति-गत पूंजीवाद अुत्पत्तिके साधनोंपर सामाजिक अधिकारका विरोधी है, अुसके रहते क्या विकेन्द्रीकरण आसानीसे हो सकता है? कहीं हम राजकीय समाजवादकी अपेक्षा विकेन्द्रीकरणको सहज समझकर ही तो अुसे 'बेहतर--अिलाज' नहीं समझ रहे हैं? पिछले २५ वर्षोंके 'विकेन्द्रीकरणों'के प्रयत्नोंका अितिहास हमारे सामने है।

पत्रकी भाषा स्पष्ट है और अर्थवान् है। कहीं कहीं वह अनावश्यक रूपसे 'शास्त्रीयता' की ओर झुकी है, जो विश्वास है शीघ्र ही मंज-संवरकर हिन्दीके हर पाठक तक 'अर्थ-सन्देश' पहुँचानेमें सामर्थ्यवान सिद्ध होगा।

पत्रमें हिन्दीमें अर्थ-शास्त्र साहित्यके अभावपर श्री० भगवानदास केलाके अेक आँख खोल देनेवाला लेख है। हिन्दीके हर पुस्तकालयको चाहिये कि वह अर्थ-शास्त्र साहित्यको अपने यहाँ विशेष रूपसे संग्रह करे। अिस युगमें कोअी भी आदमी यदि समाज-सेवा करना चाहता है तो अुसे अर्थ-शास्त्री भी होना ही पड़ेगा।

हमारे विश्व विद्यालय धीरे-धीरे मातृभाषाको शिक्षाकी माध्यम बनाने पर मजबूर हो रहे हैं। अैसे विद्यालयोंके अर्थ-शास्त्रके विद्यार्थियोंके लिये 'अर्थ-सन्देश' बहुत ही अुपयोगी सिद्ध होगा, अुन्हें परीक्षा रूपी 'वैतरणी' पार करनेमें भी सहायक होगा।

हमने अिस प्रथम-अङ्कसे बहुत कुछ सीखा है। आगामी अङ्कोंकी प्रतीक्षा है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hari

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अितना बड़ा हिन्दीका हिमायती !

१७ अप्रैलको ८४ वर्षकी वृद्धावस्थामें केवल अेक सप्ताहकी बीमारीके बाद सुप्रसिद्ध अितिहासकार पंडित गौरीशंकरजी हीराचन्द ओझाका स्वर्गवास हो गया।

यूं राष्ट्रभाषा हिन्दीको अेकसे अेक बढ़कर त्यागी प्रचारकोंकी सेवायें मिली हैं, किन्तु श्रद्धेय ओझाजीने हिन्दीके लिये जो कुछ किया वह जल्दी कोअी दूसरा नहीं ही कर सकेगा।

(१) अुन्होंने नागरी प्रचारिणी सभाकी त्रैमासिक पत्रिकाका बड़ी ही योग्यता पूर्वक वर्षों सम्पादन किया।

(२) अुन्होंने 'राजस्थानका अितिहास' लिखा।

(३) अुन्होंने 'प्राचीन भारतीय लिपिमाल,' जैसे महान् ग्रन्थकी रचना की।

यह सब लिखा। हिन्दीमें लिखा। हिन्दीमें ही लिखा। सुना है अन्य-भाषाओंमें अनुवाद करने तककी आज्ञा नहीं दी। 'प्राचीन भारतीय लिपिमाला' के बारेमें तो कहा जाता है कि अुसने जर्मन विद्वानोंको हिन्दी पढ़ाअी।

हिन्दी जगतने—

(१) आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अध्यक्ष बनाया।

(२) आपकी 'प्राचीन लिपिमाला' पर मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया।

(३) आपके अभिनन्दनार्थमें 'ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया।

(४) आपको 'साहित्य-वाचस्पति' की अुपाधि प्रदान की। यह सब करके हिन्दी-जगतने अपने आपको ही गौरवान्वित किया। जिन्हें अैसा यशः शरीर प्राप्त हुआ, कौन है जो अुनके चरण-चिन्होंपर न चलना चाहेगा।

पुरातत्व-प्रेमी हिन्दी विद्वानोंके लिये ओझाजीका नाम सदैव अेक प्रकाश-स्तम्भ रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय हलचलें

गुजरात—

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी व्यवस्थापिका सभाकी बैठक ता० २३-२-४७ को हुअी जिसमें आगामी वर्षके लिये ७ हजार रु० का अनुमान पत्र स्वीकृत किया गया। प्रचार कार्यको बल देनेके लिये और अनेक प्रस्ताव अिस बैठकमें पास हुअे।

आगामी दो वर्षोंके लिये पचीस सदस्योंकी समितिका संगठन हुआ है। नीचे लिखे पदाधिकारी चुने गये हैं।

श्री कन्हैयालाल मुंशी (अध्यक्ष), श्रीमती शारदाबहन महेता (कार्याध्यक्ष), श्री डा. हरप्रसाद देसाअी (अुपाध्यक्ष), श्रीमती इंदुमती बहन (कोशाध्यक्ष), जेठालाल जोशी (मंत्री) अिस बैठकमें राष्ट्रभाषा और लिपिके सम्बन्धमें दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये हैं और बम्बअी सरकारके पास कुछ महत्वपूर्ण सुझाव पेश किये हैं।

हिन्दुस्तानी कान्फरन्स और गुजरात

बम्बअी प्रान्तके प्रधानमंत्री मान्यवर श्री खेरसाहबने ता० १२-४-४७ को हिंदुस्तानी कान्फरन्स बुलायी थी। राष्ट्रभाषाके अध्ययन और लिपिके प्रश्नपर विचार करना कान्फरन्सका मुख्य अुद्देश्य था। हिंदुस्तानी शिक्षाका मानदंड और अुसकी सीमापर काफी चर्चा हुअी। मैट्रिकतक हिंदुस्तानीकी शिक्षा अनिवार्य की जाय अिस विषयपर लगभग सभी सहमत थे। लिपिके बारेमें साफ रुख रहा कि दोनों लिपियाँ किसी भी हालतमें अनिवार्य न की जाय। गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल मुंशी तथा मंत्री श्री जेठालाल जोशीने अेक राष्ट्रभाषा और अेक राष्ट्रलिपिकी बात बड़े जोरके साथ रखी।

देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद भी कान्फरन्समें थोड़ी देरके लिये पधारे थे। अपने सरल हिन्दीमें अपनी बातें स्पष्ट रखी। और साफ कहा कि "**दोनों लिपियोंकी अनिवार्यताकी कोअी आवश्यकता नहीं है। यह तो ज्यादती होगी।**"

बम्बअी—

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, दादर— बम्बअी शहर और अुसके अुपनगरोंमें राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य विशेष अुत्साहके साथ हो रहा है। शहरके हरेक हिस्सेमें राष्ट्रभाषा प्रचार सभाअें और मंडल कार्य कर रहे हैं अिनमें राष्ट्रभाषा प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादरका अेक मुख्य स्थान है। दादर विभागमें राष्ट्रभाषाके प्रचार कार्यको व्यवस्थित करनेकी दृष्टीसे अुत्साही प्रचारक श्री कांतिश पंड्या और श्री विनय पचोरेने सभाकी स्थापना जनवरी ४४ में की थी गत तीन वर्षोंमें अिस सभाने बहुत बड़ा कार्य किया है। गत नवंबरमें अिस सभाका वैधानिक संगठन हुआ। कार्य समिति तथा मार्गदर्शक मंडलकी स्थापना हुअी। अिस सभाके वर्तमान अध्यक्ष श्री वी० टी० परमार तथा मंत्री श्री अेम्० अेस० कानबिन्दे हैं। अुपाध्यक्ष श्री मधुसूदन चित्रे, श्री विनय पचोरे तथा खजाञ्ची श्री चंद्रकान्त बिन्दें, प्रबन्धमंत्री श्री परशुराम पुराणिक है।

सभाकी ओरसे आजतक कुल ७०० परीक्षार्थी वर्धा समितिकी परीक्षाओंमें शामिल हो चुके हैं। परीक्षा-फल प्रायः ८० फी सदी रहता आया है। सभाकी ओरसे करीब ५ जगहोंपर केन्द्र चालू है।

अुर्दू लिपिवर्ग और मौखिक राष्ट्रभाषा-वर्गकी भी व्यवस्था सभा करती हैं। सभाका अेक अपना अपना छोटा पुस्तकालय भी है।

अिस सभाके द्वारा राष्ट्रभाषाका विशेष प्रचार--कार्य होनेकी आशा है।

बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाकी ओरसे रविवार ता० ६ अप्रैल ४७ को महावीर जैन विद्यालय हालमें बम्बअी प्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौन्सिलके अध्यक्ष श्री मंगलदासजी पकवासाकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षामें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको अुपाधि-पत्र देनेका समारंभ मनाया गया। प्रान्तीय सभाके मंत्रीने सभाके गत वर्षके कार्य-विवरणका ब्यौरा देते हुअे बताया कि अिस वर्ष राष्ट्रभाषाके प्रचार कार्यमें अच्छी प्रगति रही है। परीक्षार्थियोंकी संख्या ४२३० से बढकर ५४१४ हुअी है।

अध्यक्षने अपने सारगर्भित भाषणमें राष्ट्रभाषाका महत्व प्रगट किया और अिस बातपर जोर दिया कि हमारी राष्ट्रीय सरकारको राष्ट्रभाषाके प्रचारका काम अपने कार्यक्रममें शामिल कर लेना चाहिये।

स्थानीय मेधजी मथुरादास कालेजके प्रिन्सिपल डा० बूलचन्द्रजीने अपने तेजस्वान्त भाषणमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका अभिनन्दन किया और समझाया कि राष्ट्रभाषा सीखनेमें हमारा अुद्देश राष्ट्रीयताके भावको ग्रहण करनेका है। राष्ट्रभाषाके बिना कोअीभी व्यक्ति अपने आपको पूरा नागरिक नहीं कह सकता।

अन्तमें सभाके अुपाध्यक्ष श्रीमती लीलावती मुंशीने सभीकी ओरसे सभीको धन्यवाद दिया और आशा व्यक्त की कि जनताके सहयोगसे सभाका काम अधिक फूले फलेगा। घाटकोपर (बम्बअी अुपनगर) में ता० २७-४-४७ को प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार वितरणोत्सव मनाया गया है। यह अुत्सव श्री रामजी आसर विद्यालयके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक अुत्सवके साथ हुआ। अुत्सवके अध्यक्ष श्री हरिदास द्वारकादास और अग्रगण्य नागरिक श्री चीमनलाल पोपटलाल शाहने प्रसंगोचित व्यक्तव्य दिये।

पं० रत्न विजयजी जैन पाठशालामें विद्यार्थिनी यशोमती चुनीलाल शाहको बम्बअी प्रान्तमें गत प्रवेश परीक्षामें सर्व प्रथम आनेके अुपलक्ष्यमें शाला समितिकी तरफसे अेक चांदीका कटोरा और चम्मच परितोषिकके रूपमें प्रदान किया गया।

सिन्ध

अप्रैल मासमें सिंध प्रान्तमें स्वर्गीय पं० अिन्द्रदेव शर्माका स्मृति दिवस १८ अप्रैलको प्रान्तके विभिन्न स्थानोंपर बड़े अुत्साहके साथ मनाया गया। राष्ट्रभाषाके प्रमुख कार्यकर्त्ताओंने सिंधके जूदा जूदा नगरोंमें दौरा किया और राष्ट्रभाषाके प्रचार कार्यके लिये धन अिकट्ठा किया।

सिंध प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक श्री दौलतरामने भाअी होतचंद्र, मंत्री, जिला कांग्रेसके साथ धरपारकर जिलेमें दौरा किया और पांच नये केन्द्र खोले।

पं० बृहस्पति शर्मा, पं० देवदत्त शर्मा, पं० कृपालदास आदि राष्ट्रभाषा प्रचारकोंने विभिन्न केन्द्रोंमें पहुँचकर राष्ट्रभाषाका सन्देश सुनाया।

कराची—१. कराचीमें राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति कराची द्वारा बहुत अच्छी तरह हो रहा है। समितिके लगनशील प्रचारक श्री सूर्यप्रकाश विद्यालंकारके संपादकत्वमें राष्ट्रभाषा नामका अेक पाक्षिक बुलेटिन प्रकाशित हुआ करता है। जिसमें कराचीके राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यका विस्तृत ब्योरा तथा राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी आवश्यक सूचनाअें प्रकाशित होती है।

कराचीसे फरवरीकी गत परीक्षाओंमें ८३१ परीक्षार्थी सम्मिलित हुअे थे। आगामी परिक्षाओंमें बहुत बड़ी संख्यामें परीक्षार्थी परीक्षामें बैठनेवाले हैं।

२. राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार ७ सालसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, कराची बड़े अुत्साहसे कर रही है। १९४६-४७के साल राष्ट्रभाषा समिति, वर्धाकी दो परीक्षायें हुअीं जिसमें १८३१ परीक्षा आवेदन पत्र भरे गये। १५२२ बैठे, ११९३ छात्र छात्रायें पास हुये। प्रारंभसे अबतक १६ बार राष्ट्रभाषा परीक्षायें हुअी हैं।

कुल फार्म भरे	कुल बैठे	पास हुये
६७२६	५४३०	४४६९

अबतक २ राष्ट्रभाषा रत्न, ४२ राष्ट्रभाषा कोविद, अुपाधि परीक्षा पास हुअे हैं। परीक्षाओं में ९० प्रतिशत सिंधी छात्र छात्राअें बैठती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा पुस्तकालय—

समिति द्वारा ५ सालसे हिन्दी पुस्तकालय चलाया जा रहा है। अिस साल १६७८ रुपयेकी १०२५ चुनी हुअी हिन्दी पुस्तकें खरीदी गअीं। सालमें ४५८४ पुस्तकें पढ़ी गअीं १३१ नये सदस्य बने। अिस समय पुस्तकालयमें २३०० चुनी हुअी नअी सजिल्द पुस्तकें **वाचनालय**, समितिने पत्र पत्रिकाओं पर २३१, खर्च किया।

मासिक हिन्दी	मासिक अंग्रेजी	साप्ताहिक	दैनिक	कुल
४०	०	०	२	५८

पत्र पत्रिकायें आती हैं। करीब ७० आदमी वाचनालयसे लाभ अुठाते हैं। ।

२२७३, रू० की परीक्षा पाठ्य पुस्तकें खरीदी गअीं २९९५, की पाठ्य पुस्तकें बिकीं। ५००० हिन्दी सिन्धी नागरी बालबोध छपवाये गये।

अुत्सव अिनाम— वर्धा राष्ट्रभाषा परीक्षाअें सालमें दो बार होती हैं - अतः दो पारितोषिक वितरणोत्सव मनाये गये। ३६५, का पारितोषिक अुत्तीर्ण परीक्षार्थियों को तथा हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिताके विजेताओंको दिया गया।

अर्थ विभाग—

कुल ७६६३ आय हुअी। ७२०९ खर्च हुआ।

—* दान प्राप्त *—

१५००) म्युनिसिपल कारपोरेशन
५००) पं. जवाहरलाल नेहरू
२५०) सेठ परसराम पारूमल (द्वारा)
२५०) ,, प्यारेलाल वलेच्छा
२०१) ,, सदाजीवनलालजी
१०१) ,, रामप्रसादजी
१०१) ,, मैनेजर. गणेश खोपड़ा मिल्स
१०१) श्रीमती लक्ष्मी देवीजी
१००) सेठ गुलजारीलालजी
१००) ,, देवराजजी
८५) श्रीमती कमला देवीजी
७०) मुन्नालालजी
५१) सेठ चमनलालजी
५१) सेठ देवेन्द्रजी
५८०) परचून दान
८४०) प्रान्तीय समितिसे
१००) म्युनिसिपेलिटीसे पिछले सालका
६०) राधाकृष्ण शास्त्री

शेष आय अन्य विभागोंसे हुअी

भवदीय,
राधाकृष्ण शास्त्री
मन्त्री, रा. भा. प्र. स.

कराची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र—

वामणोद केन्द्रका प्रमाणपत्र वितरणोत्सव— वामणोद खान्देशमें एक अच्छा केन्द्र है। गत फरवरीकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके प्रमाणपत्र वितरणका समारोह ता० २५-४-४७ को श्री कृ०पा० पाटील, राष्ट्रभाषा-रत्नकी अध्यक्षतामें हुआ। जिला प्रचारक श्री अत्रवालकर तथा श्री पीतम्बर अडसू चैधरीके राष्ट्रभाषा विषयपर भाषण हुअे। श्री वौ० रा०बोडे अिस केन्द्रके अुत्साही प्रचारक है

परीक्षा-विभाग

गत परीक्षाओंके प्रमाण-पत्र—

सभी-केन्द्रोको गत परीक्षाके प्रमाण-पत्र व अुपाधिपत्र भेजे जा रहे हैं। यदि किसी केन्द्र व्यवस्थापकको निश्चित समयतक न मिले तो कृपया सूचित करें।

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षा—

सितम्बर' ४७ में राष्ट्रभाषा रत्नकी आगामी परीक्षा होगी। परीक्षा आवेदनपत्र ३१ मअी तक वर्धा कार्यालयमें आ जाना चाहिये।

अिस परीक्षाके लिये विलम्ब शुल्क १) रु. के साथ आवेदन-पत्र ता० ३० जून तक स्वीकृत हो सकेंगे।

आगामी प्रचार परीक्षाअें—

समितिकी आगामी प्रचार परीक्षाअें सितम्बर '४७के प्रथम सप्ताहमें होंगी। आवेदन पत्रोंको वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिसप्रकार हैं—

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र —	३० जून
परीक्षा आवेदन-पत्र (सशुल्क)	१५ जुलाअी
विलंब शुल्कके साथ आवेदन-पत्र	२३ जुलाअी

आवेदन-पत्र :

गत परीक्षाके समयके बचे हुअे कुछ आवेदन--पत्र प्रत्येक केन्द्रमें होंगे। केन्द्र--व्यवस्थापकोंसे प्रार्थना है कि अुनके अलावा आगामी परीक्षाके लिये जितने आवेदन-पत्रोंकी आवश्यकता हो, अुतने वर्धा कार्यालयसे शीघ्र मंगा लें।

कोविदमें लेखन-कार्य :

मौखिक परीक्षाके अन्तर्गतही कोविद परीक्षार्थियोंके लिये अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबादकी अवधिमें आठ लेख कम-से-कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुसे अपने शिक्षकसे जँचवा लेना चाहिये।

नये केन्द्र :

जहाँ कमसे कम १० परीक्षार्थी हों, वहाँ नया केन्द्र खोला जा सकता है। लेकिन साधारणतया अुस केन्द्रके तीन मीलके आसपास समितिका स्वीकृत कोअी दूसरा केन्द्र न हो। नये केन्द्रके लिये नियत फार्म भरकर ३० जूनतक अपने प्रान्तीय संचालककी सम्मतिसे वर्धालय पहुँचाना चाहिये।

भूल-सुधार :

'राष्ट्रभाषा'के गत अंकमें प्रचार परीक्षाओंमें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना पत्र पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अप्रैल छपी है. ३० जून चाहिये थी।

जाँच पारिश्रमिक :

प्रारंभिक और प्रवेश परीक्षाके परीक्षकोंका जाँच पारिश्रमिक यथा समय भेज सके थे किन्तु परिचय तथा कोविदके परीक्षकोंका जाँच पारिश्रमिक भेजनेमें विलंब हुआ। वर्धा और अुसके आसपासके किसी पोस्ट आफिससे हमें पर्याप्त मनीआर्डर फार्म न मिल सके, और अिसलिये हम अुन्हें समयपर न भेज सके थे। अब सभीका जाँच पारिश्रमिक भेजा जा चुका है। जिन्हें अबतक न मिला हो कृपया शीघ्र सूचित करें।

कोविद परीक्षाके लिये केन्द्र :

कोविद परीक्षाके लिये स्वीकृत केन्द्रोंकी सूची राष्ट्रभाषाके अगले अंकमें प्रकाशित कर सकेंगे। केवल अिन्हीं केन्द्रोंमें कोविदकी परीक्षा होगी किन्तु जहाँ कोविदकी परीक्षाके कम-से-कम पाँच परीक्षार्थी होंगे वहाँ हम अस्थायी रूपसे कोविद-केन्द्र दे सकेंगे।

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	प्रचारक-क्रमांक	केन्द्र
सिन्ध	श्री रामप्रसाद त्रिवेदी	९९०	कराची
,,	कु. देवी पहलराजराय हाथीरामाणी	९९७	हैद्राबाद-सिन्ध
,,	श्री रामचन्द दयाराम दादलाणी	९९८	,,
,,	,, किशिनचन्द धर्मदास	९९९	,,
,,	,, परचाराम 'खादिम'	१०००	,,
,,	,, सेवाराम गंगाराम	९८७	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात	,, चंदुलाल छोटालाल पंड्या	९८८	वसो
,,	,, हरिप्रसाद पाठक	९९२	साधी
,,	,, नवनीतराम तु० जोशी	१००१	महुआ
,,	,, जयन्तीलाल म० दवे	१००२	वीरसद
महाराष्ट्र	,, श्रीधर केशव अत्तरदे	९८५	प्रिपाले
,,	,, गोविंद बापुजी चौधरी	९८३	पाडलसा
,,	,, वसन्त अं० पुणतांबेकर	९८९	नासिक
,,	,, दिगंबर रामचन्द्र गुर्जर	९९१	पुर्णे
,,	,, प्रमिलाबाअी गो. कुलकर्णी	९९३	नासिक
,,	,, मोरेश्वर व्यं० दारव्हेकर	९९४	,,
,,	,, रामचन्द्र पंडाकर पटवर्धन	९९५	अहमदनगर
,,	,, रघुनाथ वासुदेव मांडवगणे	१००३	नासिक
द० महाराष्ट्र	,, दामोदर रा० पुराणिक	९८४	बेलगांव
विदर्भ-नागपुर	,, दयाराम पैकुजी रेवतकर	९९६	नागपुर

नये केन्द्र

प्रांत	केन्द्र	क्रमांक
बंगाल—	टिस्टाब्रिज	२९९
	सिलीगुडी	३००
	मंसौग	३०८
अुत्कल—	शेरगढ़	३१०
सिंध—	टंडो-ज़ाम	३१२
	मातिली	३१३
गुजरात—	डभासी	३११
महाराष्ट्र—	आचेगांव	२९५
	कलवण	३०९
	पाटकूल	३३०
	देवगांव	३४२
	विंचूर	३४७
वि० ना०—	बैतूल	३४०
अन्य प्रान्त—	भोपाल	३३३
	मंदसौर (मालवा)	३६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridw

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयोंको विशेष सुविधा

(कवर के ४ थे पेजसे आगे)

...जात शत्रु	१)	नअी दुनियाके मेरे	
...र्सवाद	२।)	अद्भुत संस्मरण	१॥)
...ला अेक अध्ययन	३)	प्रेमाश्रम	६)
...वनकी मुस्कान	२)	पुष्करिणी	२)
...या	१॥)	भैरवी	२॥≡)
...क्षुके पत्र	१॥)	समाजके स्तम्भ	२॥)
...रीके कुछ पन्ने	१)	सोनेका जाल	२।)
...का सवाल	१।)	संन्यासी	४)
...त अिन्कलाबी अितबार	१)		

— पुस्तक विक्री विभाग —

पुस्तकालयोंको विशेष सुविधा-

१००) या १००) से अधिककी पुस्तकें मंगानेपर १५ कमीशन ...जायगा।

२००) या २०० से अधिककी पुस्तकें मंगानेपर १७% कमीशन ...जायगा।

सभी प्रकारकी साहित्यिक, राजनैतिक तथा अन्य अुपयोगी पुस्तकें ...में मिल सकती हैं।

ग्राहकोंको सूचना—

आर्डर देते समय ¼ पेशगी अवश्य भेजें।

अपना पूरा पता [पोष्ट आफिस जिला आदि] साफ साफ ...अक्षरोंमें लिखें।

अगर पुस्तकें रेल पार्सल द्वारा मंगाअी गअी हों तो वैसा स्पष्ट ...करें और स्टेशन तथा रेलवे लाअीनका नाम अवश्य लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिका तारका पता
राष्ट्रभाषा, वर्धा

पुस्तकालयोंको विशेष सुविधा

१२० रु. की पुस्तकें १०० रु. में

नाम पुस्तक	कीमत
विदा	३.
गबन	४.
दादाकामरेड	२।
गढ़ कुंडार	४.
जागरण	३.
पवित्र पापी	३॥.
मंजरी	१॥.
वरमाला	१.
राजनीति-विज्ञान	१॥.
चरित्रहीन	५॥.
चन्द्रशेखर	१॥॥.
आनन्द मठ	१॥.
मनुष्य जीवनकी अुपयोगिता	॥.
मनुष्य ही अपने भाग्यका निर्माता है	॥=.
कविप्रसादकी काव्य साधना	३.
कुछ विचार	२.
पिकनिक	१॥.
रैन बसेरा	१॥.
गांधी अभिनंदन ग्रंथ	१०.
साधनाके पथपर	३.

नाम पुस्तक	कीमत
मौलाना अब्दुल कलाम आजाद	२॥.
विनोबाके विचार भाग १	१॥.
,, ,, भाग २	१॥.
प्रेममें भगवान	१.
अंग्रेजी राज्यके सौ साल	॥=.
आगे बढ़ो	१.
हमारे किसानोंका सवाल	=.
आधुनिक कवि भाग १	२.
,, ,, भाग ३	२.
समालोचना समुच्चय	१॥.
समालोचना तत्व	१॥.
राजनीति शास्त्र	२=.
अम्बपाली	१॥.
देहाती दुनिया	१॥.
मजूरी और पूंजी	॥=.
लेनिनके संस्मरण	१.
अकुल अंतर	२.
अिन्द्रजाल	१.
अेकांत संगीत	१.
गुंजन	१.

[शेष कवरके तीसरे पृष्ठपर]

मुद्रक—सुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी
६
4
21-47

अप्रैल १९४७

अंक ६

राष्ट्रभाषा

अंग्रेजोंके साथ अंग्रेजी भी विदा

सारे भारतके छात्रोंको यह संकल्प कर लेना चाहिये कि वे शिक्षाके माध्यमको हिन्दी-हिन्दुस्तानी करनेका आन्दोलन करें। अंग्रेजोंके साथ अंग्रेजीको भी विदा कर दें। अब विद्यार्थी अपने विश्व-विद्यालयोंसे कह दें कि हम अंग्रेजीके माध्यमसे नहीं पढ़ेंगे।

—श्रीनारायण अग्रवाल

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. तरूणसे (श्री कुमार हृदय) ...१
२. रवीन्द्रनाथ ठाकुर (श्री राहुल सांकृत्यायन) ...१
३. अखिल अेशियाअी सम्मेलन (श्री जानकीशरण वर्मा) ...१६
४. सम्मति और समालोचना (आनन्द कौसल्यायन) ...१६
५. प्रधान मंत्रीकी ओरसेः—अेशिया सम्मेलन और राष्ट्रभाषा: हिन्दीके साथ अन्यायः ...१७
६. प्रान्तीय हलचलें ...१८
७. परीक्षा विभाग ...१८

— परीक्षार्थी ध्यान दें —

परीक्षा फल प्रकाशित होनेके पश्चात् अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे जो पत्र लिखा करते हैं अुनमें प्रायः अेक ही बात रहा करती है—"परीक्षा के लिये खूब तैयारी की थी। प्रथम श्रेणीमें पास होनेकी आशा थी। परीक्षकने अवश्य कड़अी की है या गलती की है। फिरसे अुत्तर पुस्तकें जाँचे और पास करें।

नियमानुसार पुनः निरीक्षण करनेपर प्रधान परिक्षकका निर्णय प्रायःनिम्न प्रकार रहा करता है :—

"अंक ठीक दिये गये हैं। जोडभी ठीक है। भाषा अत्यंत अशुद्ध है।"

अिससे स्पष्ट है कि अनुत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थी अशुद्ध भाषाके कारण ही नापास होते हैं।

अतः परीक्षाकी तैयारीकी अवधिमें भाषा शुद्धिपर विशेष ध्यान देना चाहिये।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ६] वर्धा, अप्रैल–१९४७ [अंक ६

तरुणसे—

—कुमारहृदय

देश बरबाद बुलाता है
नाश आबाद बुलाता है
तरुण चल पड़ो कफ़न ओढे
दूर सैयाद बुलाता है

तुम्हें अतिहास बनाना है
युगोंकी प्यास बुझाना है
जहाँ वैभवकी छाया हो
प्रलयका रास रचाना है

तुम्हें ओमान माँगना है
तुम्हें अिसान माँगना है
तुम्हें धनवानों से–धन से
रक्तका दान माँगना है

प्रलय जलधार गिरे बढ़ चल
प्रलय अंगार गिरे बढ़ चल
समयके आगेके साथी
कुलिश प्रतिवार गिरे बढ़ चल

बहिनका प्यार भूल बढ़ चल
स्नेह-संसार भूल बढ़ चल
क्रान्तिके अग्रदूत बागी
रूप-सिंगार भूल बढ़ चल

हिमालय अभिमानी बनकर
जान्हवी – कल्याणी बनकर
तरुण हुँकार अमर कर दो
क्रान्ति युगकी वाणी बनकर

क़यामत आती हो आये
क़हर आफत चाहे ढाये
तरुण! तेरी गतिकी दृढ़ता
चरण चिन्हों पर युग लाये

देशकी नअी कहानी हो
लहरमें नअी रवानी हो
तरुण तेरे क़दमोंकी धूल
देशकी नअी जवानी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

: राहुल सांकृत्यायन :

भारतका साहित्यिक अितिहास बहुत दूर तक जाता है। कवितामें प्राथमिक प्रयासोंको छोड़ देनेपर भी आधुनिक अर्थोंमें संस्कृतके आदिकवि अीसा-पूर्व दूसरी सदी में हुअे। अीसवी प्रथम शताब्दी महान् कवि और नाट्यकार अश्वघोषका समय है। अगली दो शताब्दियों ने कवि आर्यशूर और नाट्यकार भास पैदा किये। चौथी-पाँचवीं सदीकी सन्धिमें भारतके सर्वश्रेष्ठ कवि और नाट्यकार कालिदास हुअे। अगली दो शताब्दियों-छठी-सातवीं-में दंडी और बाण जन्म; जिन्होंने अपनी प्रतिभाका अेक नये क्षेत्रमें अुपयोग करके गद्यकाव्यमय अुपन्यास लिखे। किन्तु वह शैली अुनके साथ ही खतम सी हो गयी। अभी गद्यसाहित्यके युगके आनेमें देर थी।

भारतके पुराने साहित्यके वर्णनमें मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता। यह सभी मानते हैं कि सदियों तक भारत सिर्फ अेशिया ही नहीं, सारे तत्कालीन सभ्य-जगत्का प्रकाश रहा। तिब्बत, मंगोलिया, अिन्दोचीन, अिन्दोनेशियामें अुसका ज्ञान-प्रसार-सम्बन्धी महान् कार्य तब तक दुनियाका अद्वितीय अुदाहरण रहा, जब तक कि अक्तूबर-क्रान्तिने अिस सम्बन्धके अितिहासके सोर रेकार्डोंको तोड़ नहीं डाला।

किन्तु पिछली सदियोंमें यह भव्य-भूत भारतके लिये घाटेका सौदा हुआ। यह अन्ध-अभिमान और कूपमण्डूकता पतन का कारण बनी। दुरभिमान और कूपमंडूकताको भारतने 'अपना धर्म बना लिया और वह विश्व की दौड़में अधिकाधिक पीछे पड़ता गया; यद्यपि प्रतिभाका अब भी अुसमें अभाव नहीं था, जिसका पता अितिहासके अत्यंधकारमय युगमें भी लगता है। लेकिन अन्धकार बहुत गहरा छाया, अिसमें शक नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवीन्द्र ठाकुर अश्वघोष-कालिदास, दंडी-बाण जैसे भारतके महान कवि थे। साथ ही अुन्होंने युगों के अन्धकारको भारतसे दूर करनेके लिये भारी प्रयत्न किया।

अुनका जन्म अेक धनी ज़मींदार ब्राह्मण-परिवारमें हुआ। किन्तु वह परिवार दूसरे अपने जैसे परिवारोंकी भांती रूढ़िका केन्द्र न था। पश्चिमी जगत्के संपर्कमें आनेपर कितने ही भारतीय दिमागोंमें प्रतिक्रिया हुअी, अिस प्रकाशमें अपने स्वरूपको देखा, और आंखें मूँदनी नहीं चाहीं। राममोहन राय अिन्हीं व्यक्तियोंमें थे। अुन्होंने सामाजिक और धार्मिक सुधारके लिये 'ब्रह्म समाज' की स्थापनाकी। रवीन्द्र के पिता अिस सुधारक समाजके अेक प्रमुख नेता थे। और अपने सद्गुणों और सद्वृत्तिसे वह 'महर्षि' के नामसे प्रख्यात थे। ठाकुर-परिवार संस्कृति और कला-प्रेममें टालस्टाय-परिवार जैसा था। महाकविके भतीजे अवनींद्रनाथ ठाकुर भारतके जीवित चित्रकारोंमें सर्वश्रेष्ठ तथा नव जागरण-कालकी भारतीय चित्रकलाके प्रारम्भक हैं। रवीन्द्रको असाधारण प्रतिभाके साथ साथ अनुकूल परिवारिक वातावरण मिला था। अुस समयके फैशनके अनुसार रवीन्द्रको भी शिक्षा ग्रहणार्थ अिङ्गलेन्ड भेजा गया; किन्तु अुन्हें वहां अच्छा न लगा, और वे शीघ्र ही घर लौट आये। तबसे परिवार और देश ही अुनकी प्रधान कर्मशाला बनी। अिस प्रकार रवीन्द्रके निर्माणमें अंग्रेज़ी शिक्षाका अुतना हाथ नहीं, जितना कि अुनके तीन अग्रयायियों—कवि माअिकेल मधुसूदनदत्त, अुपन्यासकार बंकिमचन्द्र चटर्जी और नाट्यकार द्विजेंद्रलाल राय—की शिक्षाका।

रवीन्द्रके कार्यक्षेत्रमें आनेसे पूर्व ही बंगभाषा अेक अच्छे साहित्यकी बनी थी। रामायणके कथांश को ले मधुसूधनने 'मेघनाद-वध' जैसा सुन्दर काव्य रचा, जिसमें छंदोंके बंधनको शिथिल करनेके साथ-साथ अुन्होंने मुक्त छंदका पहिले-पहिल प्रयोग किया। बंकिमकी प्रौढ़ लेखनीने कितने ही अुच्च कोटिके अुपन्यास लिखे; जिनमें 'आनंदमठ' वर्षोंतक देशभक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरुणोंका वेद रहा, और जिनकी कविता 'वंदेमातरम्' आज भी भारतका राष्ट्र-गीत है। द्विजेन्द्रलाल राय ने कअी अच्छे आधुनिक ढंग के नाटक लिखे। रवीन्द्रमें अपने तीनों अग्रगामियोंके गुण थे और अधिक परिमाणमें। वह महान् कवि थे, महान् अुपन्यासकार और नाट्यकार भी। साथ ही अुनमें और विशेषताअें थीं। वह जातीय दुरभिमान और कूपमंडूकताके भारी विरोधी थे, अभ्यास (?) और नृशंसताके विरुद्ध अुनकी वाणी बड़ी निर्भयताके लड़नेको तैयार थी। अपने अतीत गौरवका योग्य सम्मान करनेमें वह किसीसे पीछे न थे, तभी अुन्होंने गाया—

प्रथम प्रभात अुदय तव गगने,
प्रथम साम-रव तव तपोवने।

अुनकी पैनी दृष्टि, बीती सदियोंको बेधकर देखती थी, और देखती थी आनेवाले भविष्य को भी। वह साफ़ देख रहे थे अुन त्रुटियों और दोषोंको, जो भारतको विश्वमें अपना यथार्थ स्थान लेनेसे रोक रहे हैं, जातीय दुरभिमान और कूपमंडूकताको वह भारतके लिअे भारी अभिशाप समझते थे, और अुन्हें वह किसी तरह भी क्षमा करनेको तैयार न थे।

कविताके क्षेत्रमें अुनका स्थान कितना अूँचा है, अिसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। विदेशी शासकोंके सारे प्रतिबंधों और पक्षपातोंके होते भी विश्वने अुनके कृतित्वको स्वीकार किया, जब कि अिस प्रथम अेशियाअी कविको १९१३ में साहित्यका नोबुल-पुरस्कार दिया गया। रवीन्द्र अुसके बाद भी प्रायः तीन दशाब्दियां हममें रहे, और अपनी चिर-तरुण प्रतिभाके साथ। अुनकी प्रतिभापर आयुका कोअी प्रभाव नहीं पड़ा।

रवीन्द्रके रूपमें भारतने अपने कालिदासको पाया, जिससे डर था कि जातीय दुरभिमानको कहीं और भी न बल मिले। लेकिन अिसके विरुद्ध कवींद्र की लेखनी सदा लोहा लेनेको तैयार थी। अपने अुपन्यासों 'गोरा', 'घर और बाहर' में भारतकी अिस यक्ष्मा पर अुन्होंने खूब प्रहार किया। रवीन्द्रके लिये सारी मानवता अभिन्न थी, और अुसमें सबसे अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड़ित अुनकी सबसे अधिक सहानुभूतिके पात्र थे। मानव भ्रातृभावको क्रियात्मक रूप देनेके लिये अुन्होंने शान्तिनिकेतनमें विश्वभारतीकी स्थापना की, जिसमें कि देशके युवकजन—लड़के लड़कियां—मुक्त वातावरणमें ज्ञान और कला सीख सकें। किन्तु अैसा सांस्कृतिक जीवन सभीके भाग्यमें न था, अिसलिये दीन किसानोंकी अवस्था बेहतर बनानेके लिये अुन्होंने श्रीनिकेतन स्थापित जहाँ किया, अुपज बढ़ानेके लिये वैज्ञानिक खेतीकी प्रयोगात्मक शिक्षा होती है। यह प्रयत्न ज़रूर भारतके लिये, समुद्रके लिये बूँद जैसा था। आप अिसे अुटोपियन—अेक निरा स्वप्नसा कह सकते हैं। रवीन्द्र भी शायद अिससे अपरिचित नहीं थे, तो भी अतिव्यस्त साहित्यिक जीवनके होते भी वह कोअी न कोअी क्रियात्मक पग अुठाना अपना कर्तव्य समझते थे।

यह सोवियत् भूमिमें तब आये थे, जब कि स्तालिनीय पंचवार्षिक योजनाअें आरम्भ नहीं हुअी थीं और अिसलिये वह अुस कायापलटको न देख सके, जिसने पृथ्वीके षष्ठांशको अेक अति समृद्ध, सबल, शिक्षित राष्ट्रमें परिणत कर दिया। रवीन्द्र जैसे क्रान्तिदर्शी कविके लिये पंचवार्षिक योजनाओंका पूर्वरूप भी पर्याप्त था। खंड योजनाओं द्वारा अुस वक्त तक जो निर्माण कार्य हो चुका था, शिक्षाके लिये जो भारी सफल प्रयत्न हो रहा था, सोवियत्की सभी जातियोंमें जो भ्रातृभावका स्रोत बढ़ रहा था, और सबके पीछे जो व्यापक दृष्टि और दृढ मनोबल काम कर रहा था, अिन सबने रवीन्द्रको भारी प्रेरणा और विश्वास प्रदान किया। वह सदा के लिये सोवियत् भूमिके मित्र और प्रशंसक हो गये। अुन्होंने अिस यात्राके समय कितने ही पत्र ['रूसके पत्र'] लिखे। अुस समय चारों ओर सोवियत् विरोधी प्रोपेगंडाका दौरदौरा था। 'रूसके पत्र' अिस झूठे प्रचारको छिन्न-भिन्न करनेमें सफल साबित होने लगे। साम्राज्यवादका धैर्य टूट गया, और भारतकी अंगरेजी सरकारने 'रूसके पत्र' का छापना निषिद्ध कर दिया। रवीन्द्र साम्राज्यवादियोंकी बड़ी बातों और ओछी करतूतोंसे भली भांति परिचित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिभाके साथ अुन्होंने अजब निर्भयता पायी थी। प्रथम महायुद्धके बारेमें बड़े-बड़े दावे किये गये थे—अुसे मानव-स्वतंत्रता और न्यायका युद्ध बतलाया गया; किन्तु युद्धके अन्त होते ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंने अमृतसरमें खूनकी होली खेली, हजारों निहत्थे आदमी जिनमें सैकड़ों स्त्रियां और बच्चे भी थे, मशीनगनोंसे भून दिये गये, महीनों पंजाब क्रूर मार्शल ला के जूअेके नीचे कराहता रहा। अिस साम्राज्यवादी नृशंसताको देख रवीन्द्रने अपने 'सर' की अुपाधि—साम्राज्यवादियोंके सस्ते पिट्ठू खरीदनेके साधन—को अुतार फेंका। किन्तु अिससे क्या कराहती मातृभूमिका दर्द दिलसे दूर किया जा सकता था!? आखिर जल्दी ही वह भी समय आया जब दासताकी बेड़ियोंको तोड़नेके लिये जनताको संघर्षमें कूदनेका आव्हान किया गया। कविने हर्षोत्फुल्ल कण्ठसे—

'जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्यविधाता।'

गाते हुअे नयी शक्तियोंका स्वागत किया।

रवीन्द्र प्रगतिके प्रबल और निर्भय पक्षपाती थे। कअी सालसे जापान महाकविके स्वागत-सम्मानमें अपनेको सबसे आगे रखना चाहता था। जापानी साम्राज्यवादी अुन्हें पूर्वका किपलिङ् बनाना चाहते थे। किन्तु जब जापानकी नग्न नीति चीनके सम्बन्धमें प्रकट हुअी तो कविने निःसंकोच अुसकी निन्दा की। अिस पर जापानी फासिज्मके बंदीजन नागूचीने जब समझानेकी कोशिश की, तो अुन्हें खूब खरा जवाब मिला और रवीन्द्रने पूर्वी साम्राज्यवादका नग्न चित्र खींचकर विश्वके सामने रख दिया। कवीन्द्रका यह अन्तिम युध्द था, थोड़े ही समय बाद आजसे पांच साल पहले वह शक्तिशाली वाणी सर्वथाके लिअे मौन हो गयी, वह वाणी जो सुन्दर काव्य-रचनाकी ही अद्भुत क्षमता नहीं रखती थी, बल्कि जिसने अन्याय-अत्याचारके विरुध्द लड़नेमें कभी संकोच नहीं किया। पिछले पांच वर्षोंमें कितनी बार विश्वने अुस वाणीके अभावको नहीं अनुभव किया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भारतके लिअे रवीन्द्र अेक और भारी महत्व रखते हैं। वह भारतके साहित्यके अितिहासमें अेक नये युगके प्रवर्तक हैं। सिर्फ बंगला भाषा ही के साहित्यमें नहीं, सारी भारतीय भाषाओंके साहित्योंमें, चाहे आप हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मराठी अुड़िया जैसी अुत्तरकी अिन्दो-युरोपीय भाषाओंको लीजिअे, या दक्षिणकी तेलगू, कन्नड जैसी द्राविड़ भाषाओंको। मैं यहाँ सबसे अधिक बोली जानेवाली, तथा बारह सदियोंसे सुन्दर समृद्ध साहित्य रखनेवाली हिन्दी भाषाका अुदाहरण देता हूँ। बीसवीं सदीके द्वितीय दशाब्दमें पहुँचने पर अुसके पथमें कअी समस्याअें अुठ खड़ी हुअी थीं, अैसी समस्याअें जिनको दूर किये बिना वह अेक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती थी। ये समस्याअें थीं शब्दोंके चुनने-सजानेके सम्बन्धमें, छन्द और अलंकारोंके रुढ़िबद्ध सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें, विश्व-साहित्यसे सम्बन्ध स्थापित करनेके सम्बन्धमें। हिन्दीकी अिस समस्याका हल किया 'निराला' और अुनके साथी कवियों 'प्रसाद' और 'पंत' ने। अिस कार्यमें पथप्रदर्शन किया रवीन्द्रकी कविताने। हाँ, पथप्रदर्शनका अर्थ अनुकरण नहीं समझना चाहिये। अनुकरणके बलपर अुच्च साहित्यका निर्माण नहीं हो सकता। हमारे नवयुग-प्रवर्तक कवि हिन्दी कवितामें कुछ त्रुटियोंका अनुभव कर रहे थे, अुन्हें पहिचाननेमें रवीन्द्रकी कविताने सहायता की। फिर अिन्होंने भी अुन्हें दूर करनेका सफल प्रयत्न किया। यही बात दूसरी भारतीय साहित्यिक भाषाओंके सम्बन्धमें है।

रवीन्द्रने सारे आधुनिक भारतीय काव्य साहित्यको अेक नयी दिशा दी जिसमें यद्यपि प्राचीनको तिरस्कारकी वस्तु नहीं समझा गया; तथापि रूढ़ियोंकी संकीर्णता और दुरभिमानके लिअे वहाँ कोअी स्थान न था। प्रगति और विश्व-प्रेम अिस नवीन कवितायुगका प्राण है।

यहाँ दो शब्द अनुवादके बारेमें भी कहना असंगत न होगा। हमारी भाषाओं—हिन्दी-बँगला आदिमें तुर्गनेव, चेखोफ, तालस्ताय, गोर्कीके कितने ही ग्रन्थोंके अनुवाद हुअे हैं, और वे लोकप्रिय भी हैं, किन्तु ये सारे अनुवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसीसे न कर अंग्रेजीसे किये गये। जब अेक भाषासे दूसरीमें अनुवाद करनेमें मूलके भावोंकी रक्षा करना मुश्किल हो जाता है, तो फिर अनुवादसे अनुवाद करनेमें भावोंकी कितनी क्षति होगी, अिसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। कविताके अनुवाद करनेमें तो यह ढंग बहुत ही दोषपूर्ण है। सौभाग्य कहिये या दुर्भाग्य, अभी तक किसी रूसी कविताका अनुवाद भारतीय भाषाओंमें नहीं हुआ। सौभाग्य अिसलिये कहता हूँ कि पुश्किनका अंग्रेजीसे हिन्दीमें अनुवाद करना कैसा होता—अुसमें पुश्किनका चोला धारण कर कोअी दूसरा ही अुपस्थित किया जाता। अैसे अनुवादोंके न होनेका कारण है, हिन्दियोंकी रूसी भाषासे अनभिज्ञता। अिस बारेमें रूसी भाषा भाग्यवान् है कि अुसमें रवीन्द्रके कुछ अनुवाद सीधे बँगलासे हुअे हैं। अंग्रेजीकी अपेक्षा भारतकी अिन्दो-युरोपीय भाषाअें रूसी भाषासे बहुत नजदीक हैं, यह बात शायद सिर्फ पढ़नेकी बात नहीं, बल्कि अनुवादके काममें वह खास महत्व रखती है। लेकिन अब हमारे दोनों देशोंके साहित्यके सीधे दानादानका समय आ गया है। *

['हंस' में सार]

अखिल अेशियाअी सम्मेलन

: श्री जानकीशरण वर्मा :

तारीख २३ मार्चसे २ अप्रैल तक हिन्दुस्तानकी राजधानी दिल्लीमें अेशिया महाद्वीपके प्रमुख देशोंके प्रतिनिधियोंका महासम्मेलन बड़े अुत्साह और समारोहके साथ हुआ।

यह बड़े मार्केकी बात है कि अुसी हिन्दुस्तानने जो अेक समय सारे अेशियाका भूषण था और जिसने अपने ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता और संस्कृतिका प्रकाश दूर देशों तक फैलाया था, अेक बार फिर सदियोंके बाद, अेशियाके

* लेनिनग्राद-विश्वविद्यालयके 'रवीन्द्र-दिवस' पर भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगानेकी चेष्टा की और अिसकी सफलताके लिअे अेशिया-अंतर्गत देशोंके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन किया।

संसारमें शायद ही कोअी अैसा प्रयास पहले हुआ है। यूरोप महादेशके राष्ट्र न सिर्फ अेशिया और अफ्रिका महादेशोंको अपने काबूमें रखना चाहते हैं बल्कि आपसमें ही लड़-झगड़ कर अेक दूसरेकी गर्दन काटनेकी फिक्रमें रहते हैं। अेशियाको छोड़कर और कोअी महादेश अेकता, अेक-देशीयता और विविध राष्ट्रोंकी सामुहिक सहयोगिताका आदर्श अपने सामने नहीं रखता। अुन महादेशोंमें जो बढ़े-चढ़े हैं वे दूसरे महादेशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करनेकी धुनमें लगे रहते हैं। अिसीसे आज संसारकी अैसी दयनीय अवस्था है।

स्वयं अेशियाकी अवस्था अभी शोचनीय है। जो दुर्दशा पराधीनताके कारण अेशियाके अन्दर अेक देश भारतकी है वही कअी और देशोंकी है। सभी दृष्टिसे ये देश गिरे हुअे हैं। अिनमें निरक्षरता और अस्वस्थता जोरोंसे फैली हुअी है। अुन्नतिके सभी साधन विदेशियोंके हाथमें रहनेके कारण अपने लिअे बेकार हो रहे हैं। यहाँके कच्चे मालोंसे पश्चिमके देश वाले लाभ अुठा रहे हैं। यहाँका व्यापार, वाणिज्य अुद्योग-धन्धा, सभी नष्ट-भ्रष्ट और पिछड़ा हुआ है। सचमुच अेशियाकी दुर्गतिका पता हिन्दुस्तानकी बिगड़ी हुअी अवस्थासे चलता है। महादेशकी अैसी दयनीय स्थिति पर सोच-विचार करने और संकटोंको दूर कर अुन्नतिका मार्ग ढूँढ़ निकालनेके लिअे स्वतंत्रताके द्वार पर पहुँचे हुअे हिन्दुस्तानने और देशोंको आमंत्रित किया और अुसीके फल-स्वरूप यह सम्मेलन हुआ। अगर अिसके सहारे अेशियाके देशोंमें आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आवास-प्रवासका सम्बन्ध स्थापित हो जाय तो अवश्य ही यह अेशियाके पुनरुत्थानका अेक महत्वपूर्ण साधन होगा। आशा है कि अिस सम्मेलनमें विविध देशोंसे आये हुअे योग्य व्यक्तियोंकी चेष्टासे यह सहयोग स्थापित हो जायगा, जो अेशियाके लिअे बहुत कल्याणकारी होगा और अुसे आगे बढ़ायेगा; और यह न सिर्फ अेशियाके हितकी बात होगी बल्कि सारे संसारमें सुख-शान्ति बढ़ानेमें सहायक होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस सम्मेलनमें लगभग ३२ देशोंके २५० से अधिक प्रतिनिधि और कअी और देशोंके निरीक्षक और दर्शक सम्मिलित हुअे। हिन्दुस्तानके अलावा अिस सम्मेलनमें सीलोन, बर्मा, स्याम, हिन्दचीन, अिंडोनेशिया, चीन, फिलीपीन, मंगोलिया, तिब्बत, भूटान, नेपाल, अफगानिस्तान, अीरान, मिश्र और फिलिस्तीन, फिर अेशियाओ सोवियट राज्यके अंग आर्मीनिया, अजरबैजान, अुजबेकिस्तान, जार्जिया, कज्जाकिस्तान और ताजाकिस्तान और टर्की तथा तुर्किस्तानका भी प्रतिनिधित्व रहा। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि ये प्रतिनिधि विविध भाषा-भाषी और वेष-भूष धारण किये हुअे थे। अिन सबोंके रंग-बिरंगे और निराली पोशाकोंसे सम्मेलनकी शोभा बढ़ रही थी। फिर भी सब अेक विचारके थे। सभी देशोंसे आये हुअे नेताओं और प्रतिनिधियोंने अेशियाकी अेकता पर जोर दिया और अिनको सुसंगठित करनेके सम्बन्धमें अपने बहुमूल्य विचार बड़ी तत्परता और अुत्साहके साथ प्रकट किये। जैसा कि पंडित जवाहरलाल नेहरूने अपने पहले भाषणमें कहा कि 'बहुत दिनों तक हम अेशियाअी पश्चिमियोंके दर्बारोंमें दरख्वास्त देनेवालेकी हैसियतसे हाजिरी देते रहे हैं लेकिन अब अिस कहानीका अंत होना चाहिये।' और देशोंके प्रतिनिधियोंने भी यह स्पष्ट-रूपसे कहा कि अेशियाको यूरोप और अमेरिकाके राजनैतिक और आर्थिक प्रभुत्वसे मुक्त हो जाना चाहिये।

सम्मेलनका अुद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरूने २३ मार्चको किया था। अुन्होंने कहा कि हमारा किसी भी महादेशसे बैर नहीं है, और न हम किसीके साथ युद्ध करनेकी चेष्टासे अेशियाके देशोंको संगठित करना चाहते हैं। हम तो विश्वकी अेकता और विश्व-शान्तिमें विश्वास रखते हैं। विश्व-शान्तिके लिअे अेशियाकी अेकता बहुत आवश्यक है! संकीर्ण राष्ट्रीयता में हमारा विश्वास नहीं। अपनी स्वाधीनताके साथ हमें दूसरोंकी स्वाधीनताका भी खयाल रखना चाहिये।

सम्मेलनके अधिवेशनोंमें बारी-बारीसे अन्य-अन्य देशोंके नेता सभाध्यक्ष हुअे। पहले दिनके पूर्ण अधिवेशनमें श्रीमती सरोजनी नायडूने सभानेतृका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम किया। अुन्होंने भी मर्मस्पर्शी शब्दोंमें कहा—"हम भाषा, संस्कृति और धर्मके भेद-भावोंको भूल कर अेशियाअी अेकताके महान अुद्देश्यकी पूर्तिके लिये आगे बढ़ें। संसारमें न जन्म है, न मरण। सिर्फ अेक सच्ची बात यही है कि हमें आगे बढ़ना और अूँचे अुठना है, अितना अूँचा कि हम नक्षत्र-लोक तक पहुँच जायँ और आसमानसे चंद्रमाको लाकर अुसे स्वाधीन अेशियाके सीनेमें जड़ दें।"

दो दिनोंके पूर्ण सम्मेलनके बाद प्रतिनिधियोंकी अलग-अलग कमी-टियाँ बनीं और अिन कमीटियोंने विविध विषयोंपर गंभीर विचार किया। अिन कमीटियोंमें निश्चित की गअी सभी बातें अिस महीनेमें ही जानी जा सकेंगी।

बड़े हर्षका विषय है कि विश्व-अेकताके जीते-जागते नमूना महात्मा गांधी भी १ अप्रैलको अिस सम्मेलनमें पधारे और अपने प्रभावपूर्ण भाषणसे विश्व-अेकताका आदर्श प्रतिनिधियोंके सामने रखा।

['तरुण' से]

सम्मति और समालोचना

"समालोचना तो लिखी पड़ी है, तुम्हारे नामसे छप जाय तो कुछ हर्ज है!"

अुनके प्रति मैं श्रध्दावान था और आज भी हूँ। सोचा, मेरा नाम यदि अुनके किसी काम आ जाय, तो क्या हर्ज है? कुछ दिन बाद मैंने "सरस्वती" में अुनके अेक विशिष्ट ग्रन्थकी आलोचना छपी देखी। अुस आलोचनाको मैं समझ सकता था, अितनी तो मेरी योग्यता थी, किन्तु वैसी आलोचना लिख नहीं ही सकता था। आजसे २१-२२ वर्ष पहले अिस प्रकार मैंने पहले-पहले 'समालोचना' की। अुस समय 'समालोचक' रूपमें नाम छपा देखनेकी अिच्छा भी अुस सेवा-भावमें मिली ही रही होगी। शुध्द दूध बजारमें मिलता कहाँ है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबसे सुना है कि 'असफल-लेखक' सफल समालोचक होता है, तबसे समालोचक बननेकी मेरी कभी अिच्छा ही नहीं हुअी। असफल लेखक तो जो चाहे हो ही सकता है, लेकिन, सफल समालोचक तो कोअी अिच्छा मात्रसे नहीं होता।

क्या सचमुच मुझ जैसी सामान्य योग्यता रखनेवाले व्यक्ति 'समालोचक' हो ही नहीं सकते?

काफी समय हुआ। कलकत्तेसे प्रकाशित होनेवाली अेक अंग्रेजी पत्रिकाके कार्यालयमें मैं अूपर बैठा था। नीचेसे मेरे मित्र आये। बोले—अिन दो पुस्तकोंकी 'समालोचना' कर दें। कोअी आठ-आठ सौ पृष्ठके अंग्रेजीके दो बड़े ग्रन्थ। मैंने कहा—कब चाहिये? बोले—अभी। मैं चकित था। निवेदन किया—बिना पुस्तक पढ़े अभी 'आलोचना' करना सीखा ही नहीं। वह पुस्तक अुठा ले गये। नीचे जाकर टाअिप-राअिटर पर बैठ गये। बीस मिनटमें दोनों ग्रन्थोंकी 'समालोचना' तैयार थी। समालोचनामें लेखकके बारेमें लिखा था—'"श्री०.....बड़े प्रसिद्ध लेखक हैं। अुनका यह ग्रन्थ वैसा ही है जैसे ग्रन्थकी अुनसे आशा थी.....अित्यादि।" अैसी 'समालोचना' प्रायः देखनेको मिलती है। अब 'समालोचना' के प्रति यदि किसीकी आदर-बुद्धि अनादर-बुद्धिमें परिणत हो जाय, तो अुसका क्या कसूर?

दो अेक 'समालोचना' अपने भी की हैं, परिश्रम पूर्वक भी। लेकिन, दोनों तीनों बार 'प्रिय' नहीं ही बना रह सका।

अब तो मैं मान बैठा हूँ कि 'समालोचनार्थ' का अर्थ है 'विज्ञापनार्थ'। अुसमें सहायक होनेमें विशेष हर्ज भी नहीं। हां, बीच-बीचमें 'अच्छे ग्रन्थ' और अुनकी 'खरी समालोचना' भी देखनेको मिलती ही है। तब सचमुच तबियत प्रसन्न हो जाती है।

किसी अखबारके सम्पादकसे पूछो कि अुसे बचपनमें अेक चिट्ठी मिलनेसे जो प्रसन्नता होती थी, क्या अब ढेरकी ढेर डाक मिलनेसे भी होती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक डाक अेक ज़हमत लगती होगी। अुसमें बीच-बीचमें पुस्तकें भी रहती ही हैं—रजिस्ट्री द्वारा भेजी हुअी, जिनकी डाकखानेको 'पहुँच' भी पहुँचानी होती है।

हर भले आदमीका पढ़ने-लिखनेका कुछ कार्यक्रम रहता है, रहना चाहिये। सबसे पहले तो ये पुस्तकें अुस कार्यक्रमको अुसी प्रकार छिन्न-भिन्न करती होंगी जैसे जोर—जबरदस्ती टिकट खरीदनेवाले रेलवे स्टेशनोंपर बने बनाये, 'क्यू' को। अब सबसे पहला काम तो सम्पादकका यही होता होगा कि पढ़ने योग्य और न पढ़ने योग्यका निर्णय करे। बाजारमें जो कुछ बिकता है क्या सभी खाने योग्य होता है? तो, हर पुस्तक ही पढ़ने योग्य कैसे हो सकती है? अेक रद्दी पुस्तक पढ़नेका मतलब है अपने आपको अेक अच्छी पुस्तक पढ़नेसे वंचित रखना। कोअी भी पाठक अेक पुस्तकको 'पढ़ने योग्य' और 'न पढ़ने योग्य' दोनों तो समझ ही नहीं सकता। यदि पढ़ने योग्य समझता है तो तुरन्त पढ़ना तो आरम्भ कर ही नहीं सकता। पढ़ना ही किसीका भी अेकमात्र काम नहीं और केवल अुस अेक पुस्तको पढ़ना तो हो ही नहीं सकता। दो अेक दिनमें ही पत्र आता है—"पुस्तक भेजी थी। पहुँची होगी। आपने 'पहुँच' नहीं दी।" मुझे अैसे पत्रका अुत्तर देना डाकखाने पर अविश्वास और अपने पैसेका अपव्यय मात्र लगता है। अुत्तर देना ही होता है।

कुछ ही दिन ठहरिअे। अब 'सम्मति' का नंबर है। क्या बिना पुस्तक पढ़े अैसी 'सम्मति' नहीं दी जा सकती जिससे न तो 'पढ़ना' प्रमाणित हो और न 'न पढ़ना' ही? लेकिन अिससे लाभ क्या? बहुत लोगोंसे यह सधता है, कुछसे नहीं भी सधता॥ अब यदि आपने अब तक बिना पुस्तक पढ़े 'सम्मति' देना नहीं सीखा, तो आपके पास दो ही रास्ते हैं—या तो सब काम छोड़कर पुस्तक पढ़िये, अन्यथा मौन सर्वार्थसाधकंका जप करते हुअे चुप्पी साध जाअिये। अेक दो रिमाअिंडरोंके लिये तो आपको तैयार रहना ही चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आपने जैसे तैसे पुस्तक पढ़ ही ली, तो आपका कर्तव्य है कि 'प्रकाशनार्थ' तथा 'विज्ञापनार्थ' दो चार अच्छे-अच्छे वाक्य अवश्य लिख भेजें। अिसीका नाम 'सम्मति' है। अन्यथा, आप बताअिये कि सैंकड़ों पुस्तकोंके बारेमें जो सैंकड़ों सम्मतियां छपती हैं, क्या अुनमेंसे कोअी अेक पुस्तक भी अिस योग्य नहीं होती, जिसके बारेमें किसीकी भी कोअी खराब 'सम्मति' हो? 'सम्मति' का मतलब ही है 'विज्ञापनार्थ' दो चार अच्छे वाक्य लिख देना।

आप चाहें तो अपनी मित्रतासे हाथ धोनेके मूल्यपर अपनी 'यथार्थ सम्मति' भेजनेका दुःसाहस कर सकते हैं। यदि वह आपके और आपके मित्रके दुर्भाग्यसे 'अच्छी' न हुअी, तो वह प्रकाशित तो कभी होगी ही नहीं, अुसे लिखनेमें आपने जो समय खर्च किया, जो कागज-स्याहीका खर्च हुआ, जो डाक-टिकट लगा, सब व्यर्थ। बड़ा सौभाग्य मानिये यदि आपकी 'सम्मति' आपकी मित्रता रूपी तराजूका पासंग न बने। यदि कहीं किसीने पुस्तकको पढ़ने योग्य ही नहीं समझा, तब तो अुसकी मुसीबत है। लेखक का पत्र आनेपर वह मौन भी साधे रहे, किन्तु साक्षात भेंट होनेपर क्या करेगा? पहला प्रश्न होगा—पुस्तक मिली? कहना ही होगा—"जी हाँ"। "पढ़ी ही होगी?" "नहीं पढ़ी" कहने के लिये साहस चाहिये। बिचारा बहुत करेगा, तो घुमा-फिराकर, सूखी हुअी ज़बानसे अितना ही तो प्रकट कर सकेगा कि समय नहीं मिला। लेकिन, दूसरी बार भेंट होनेपर क्या करेगा? तब यदि कहीं बिचारे ग़रीबने किसी भी डरसे-दुबारा सच न बोल सकनेके ही कारण कह दिया 'हां पढ़ी थी', अथवा यही कह दिया कि 'देखी थी, तो अुसे तुरन्त दूसरे प्रश्नका मुकाबला करना होगा। दूसरा प्रश्न यह होगा कि आपको अमुक स्थल कैसा लगा? अुसे झख मारकर स्वीकार करना ही होगा कि अुस ग़रीबने तो पुस्तकको केवल 'देखा था' और 'देखा था' का मतलब 'पुस्तक पढ़ना' नहीं है।

सुना है किसी युरोपियन विद्वानने स्थाअी रूपसे अेक ही पत्रकी बहुत सी प्रतियां नकल कराकर रखली थीं। किसीकी पुस्तक मिलनेपर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला काम यही करता था कि खाली जगहमें पुस्तकका नाम भरा और लेखक अथवा प्रकाशकके पास, जो भी पुस्तक भेजनेवाला हो, भेज दिया। पत्रमें पुस्तककी पहुँचके आगे अंग्रेजीका यह अभयार्थी वाक्य लिखा रहता था कि "आअी शैल लूज़ नो टाअीम अिन रीडिंग अिट" अर्थात [१] मैं अिस पुस्तकको अविलम्ब पढ़ना आरम्भ करूंगा। [२] मैं अिसके पढ़नेमें अपना थोड़ा-सा समय भी अपव्यय न करूंगा। बिचारेने ठीक ही तो किया था। हिन्दीमें अिस तरहका अभयार्थी वाक्य बना सकना अेक अच्छा साहित्यिक मनोरंजन होगा। पुस्तक पढ़ी जाय अथवा न पढ़ी जाय, पुस्तक आपको अच्छी लगे अथवा न लगे—यह सब गौण है। असली बात यह है कि आप अख़बारमें छापनेके लिये कुछ लिख कर दे सकते हैं या नहीं ?

'सम्मति' की ही बड़ी बहन तो 'समालोचना' है। वह भी किसी 'पत्र' के सम्पादक अथवा अुसके किसी न किसी लेखककी 'सम्मति' ही तो होती है। पत्रमें प्रकाशित होनेमात्रसे ही वह पत्रकी 'सम्मति' अथवा 'समालोचना' समझी जाती है। हां, समालोचना आकारमें सम्मतिसे बड़ी ही होती है।

आज कल प्रायः हर पत्र पर लिखा रहता है कि समालोचनार्थ दो पुस्तकें आनी चाहिये। अेक 'समालोचक' के लिये, दूसरी समाचार-पत्र अथवा सम्पादकके पुस्तकालयके लिये। लेखकों और प्रकाशकोंकी शिकायत प्रायः सुननेको मिलती है कि दो दो पुस्तकें मँगा लेने पर भी 'समालोचना' नहीं की जाती। अिसीलिये अनेक सम्पादक अब 'समालोचनार्थ पुस्तक भेजने' और 'समालोचना कराने' के झंझटसे बचनेके लिअे लेखक वा प्रकाशक को ही लिख देते हैं कि "किसीसे लिखा कर भेज दीजिये, समालोचना छप जायगी।"

सुना है जो अप-टु-डेट प्रकाशक हैं, वह तो पहले ही से पुस्तकके साथ अुसकी 'समालोचना' भेज देते हैं और सम्पादक अुन्हें छापते भी हैं। कहीं-कहीं अेक ही पुस्तककी तीन-तीन समालोचनायें भी कार्यालयोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचती हैं—अेकमें थोड़ी प्रसंशा, दूसरीमें अुससे अधिक और तीसरीमें सबसे अधिक। सम्पादकके विवेककी परीक्षा करनेके लिअे यह अुसी पर छोड़ दिया जाता है कि वह कौनसी 'समालोचना' प्रकाशित करे।

अिन पंक्तियोंका लेखक कोअी 'सम्पादक' तो नहीं, किन्तु अुसका भी नाम अेक 'मासिक' पर 'सम्पादक' के स्थानपर छपता है। बिना नाम छपे भी वह अुस 'मासिक' के लिये अुतनी मजदूरी कर सकता है। अिस-लिये नाम छपने न छपनेसे कुछ आता जाता नहीं। किन्तु सम्पादकको होनेवाले अनुभव बहुत थोड़ी मात्रामें ही सही—कभी कभी अुसे भी होते ही हैं।

'समालोचना' के सिलसिलेमें पहला अनुभव तो अुसे प्रायः रोज़ ही यह होता है कि पुस्तक तो आनन्द कौसल्यायनके पास भेजी जाती है और 'सम्पादक' से आशा की जाती है कि वह अुसकी 'समालोचना' की व्यवस्था करे। किसी भी लेखक या प्रकाशकसे यह आशा करना कि वह अेक पुस्तक तो आनन्द कौसल्यायनके पास भेजे और फिर दो दो पुस्तकें 'सम्पादक' के नाम भेजे आनन्द कौसल्यायनकी ज्यादती नहीं तो क्या है? जब अेक ही पुस्तक भेजनेसे काम चलता हो, तो दो और तीन क्यों खराब की जायें?

यदि पुस्तकें किसीके व्यक्तिगत नामपर आकर 'सम्पादक' के ही नामपर आयें और अेक न आकर दो-दो भी आयें, तब भी क्या समालोचना होनी ही चाहिये? 'हाँ' और 'नहीं'।

(१) यदि सम्पादकको सरसरी नजरसे देखने पर ही पुस्तक अैसी लगे कि वह न पढ़ने योग्य है और न किसीके पास समालोचनार्थ भेजने योग्य है; तो यह आवश्यक नहीं कि किसी अधिकारी विद्वानका समय खराब करनेके लिये अुसके पास पुस्तक भेजी ही जाय। 'प्राप्ति-स्वीकार' की शिष्टाचार निभाया जा सकता है; वह भी समाचार--पत्र द्वारा नहीं, व्यक्तिगत-पत्र द्वारा ही पर्याप्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) यदि समालोचनार्थ पुस्तककी दो प्रतियाँ आयें और पुस्तक समालोचना कराने योग्य लगे, तो, अुनमेंसे अेक प्रति किसी अधिकारी विद्वानके पास भेजकर समालोचना करानेका प्रयत्न अवश्य किया जाय।

[३] यदि समालोचनार्थ अेक ही प्रति आये और अुसे पढ़नेका स्वयं सम्पादकको अवकाश हो, तो अेक ही प्रति आनेपर भी समालोचना क्यों न हो ?

[४] योग्य पुस्तकें किसीने समालोचनार्थ न भी भेजी हों, तो भी अुनकी समालोचना प्रकाशित होनी चाहिये।

[५] समालोचना सम्बन्धी आग्रही पत्र-व्यवहारके प्रति क्षमा-प्रार्थी और क्षमा-शील ही रहना अुचित है।

—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

अेशिया सम्मेलन और राष्ट्रभाषा

अिस महीने दिल्लीमें दस दिन तक जो अेशिया-सम्मेलन हुआ, पता नहीं भावी अितिहासकार अुसके बारेमें क्या कुछ कह सकेगा ? सम्भव है भावी अितिहासकार अुसके बारेमें लिखे कि दिल्लीका अैशिया-सम्मेलन समस्त अेशियाकी अेकताका प्रथम-चरण सिद्ध हुआ, अुस दिन अेशियाने - जागरण-युगमें प्रवेश किया और सम्भव है कि अुसे यह ही कहना पड़े कि वह अधिकांशमें अेशियाके अुन लोगोंका सम्मेलन मात्र था जो अपने अपने देशके सच्चे सांस्कृतिक-प्रतिनिधिगण नहीं थे, जो या तो अुन अुन देशोंके राजनीतिक-नेतागण थे या वे लोग थे जिन्होंने अंग्रेजीके माध्यम द्वारा ही अपने अपने देशकी संस्कृतिके बारेमें कुछ जान-बूझ रखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और जो अितने दरिद्र थे कि केवल अंग्रेजीके माध्यम द्वारा ही अुसे व्यक्त कर सकते थे।

सारे अेशिया सम्मेलनमें हमें अपने देशकी राष्ट्रभाषा और प्रधान भाषा हिन्दीका अेक भी प्रतिनिधि नहीं दिखाअी दिया। यह अेशिया सम्मेलन और राष्ट्रभाषा दोनों पर कड़ी टिप्पणी है।

अेशिया-सम्मेलनमें अेशियाके भिन्न भिन्न देशोंकी भाषाओंमें जो भाषण हुअे वे सब तो या प्रदर्शन-मात्र थे अथवा मनोरंजन-मात्र। हमें लज्जा और घृणाके साथ यह स्वीकार करना पड़ता है कि अेशिया सम्मेलन की वास्तविक भाषा अंग्रेजी ही सिद्ध हुअी।

अंतिम दिन पूज्य बापूने—हमारे अखिल राष्ट्रके बापूने—जो भाषण दिया वह भी अंग्रेजीमें था। बापू 'राष्ट्रभाषा'में कुछ कहकर अंग्रेजीमें बोल सकते थे, किन्तु वे अंग्रेजीमें ही बोले। अितना ही नहीं। अुन्होंने कहा—'मुझे अंग्रेजीमें बोलनेके लिये क्षमा मांगनेकी आवश्यकता नहीं है। अंग्रेजीके साथ यदि किसी भी भाषाकी होड़ है तो वह फ्रेंचकी है या रही है। हमें यह भाषण सुनकर दुःख हुआ। हम समझते हैं अेशियामें फ्रेंचका तो कोअी प्रश्न ही नहीं। अंग्रेजीकी प्रधानता अंग्रेजी साम्राज्यवादका सीधा परिणाम है। सम्भव है अुसकी वही दुर्दशा न हो जो आज भारतवर्षमें फार्सीकी है। फार्सी भी तो यहाँकी राजभाषा रही है! तो अंग्रेजी-साम्राज्यवादके विनाशके बाद न भारतमें और न अेशियाके किसी भी दूसरे देशमें अंग्रेजीका वह पद रहेगा जो अुसे आज प्राप्त है। तब अेशियाकी अेशिया-खण्ड-भाषा कौनसी होगी?

सिंहलमें आज राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार आरम्भ है, बरमामें है, स्याममें है, नेपाल-भोटानमें है, तिब्बतमें भी प्रवेश पा रही है। यदि यह सत्य है कि अेशियाके सारे देशोंका नेतृत्व भारतके भाग्यमें बदा है, और यदि यह सत्य है कि अुस नेतृत्वकी बागडोर हमारे देशके अभिमान पंडित जवाहरलाल नेहरूके ही हाथमें है तो यह भी ध्रुव-सत्य है कि अेशिया-खण्डकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परकी आदान-प्रदानकी भाषा भी वही भाषा होगी जिस हिन्दी-हिन्दुस्तानीमें पंडित जवाहरलालने अपना अंतिम भाषण दिया था। अुस दिन अुन्हें अंग्रेजीमें भी, बोलनेकी आवश्यकता हुअी थी। किन्तु, अेक दिन आयेगा कि अुन्हें अंग्रेजीमें बोलनेकी आवश्यकता न रहेगी।

अजर्बेजान [सोवियत] प्रतिनिधि मण्डलके नेताके मुँहमें घी-शक्कर। अुन्होंने अपने भाषणमें कहा—"काश। मैं आज आप लोगोंके सामने हिन्दी अथवा अुर्दूमें बोल सकता। मुझे आशा है कि भविष्यमें मैं अवश्य ही अिन दोनों भाषाओंमें बोल सकूँगा। हम लोग पड़ौसी हैं। लेकिन अर्सेसे हम लोग आपसमें मिल नहीं सके। अेशिया-सम्मेलनके कारण आप लोगोंके अुपाध्यायों, अध्यापकों व सार्वजनिक अफसरोंसे हमें मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

"कअी सालों तक हमारा देश पिछड़ा हुवा देश रहा। लेकिन विगत २०-२५ वर्षोंमें हमारे देशने काफी अुन्नति की है। अिस समय हमारे यहाँ १७ विश्वविद्यालय हैं। अिस समय हमारे यहां विज्ञान, गणित, जीव-शास्त्र, समाज-विज्ञान, टेक्नीकल विज्ञानकी अनेक सँस्थाअें हैं। १९१४ में हमारे यहां सिर्फ ९७६ स्कूल थे। लेकिन १९४४ में स्कूलोंकी संस्था ३८९८ थी। हमारे देशकी आबादी ३२०००,०० है। हमारे देशके ७२ शहरोंसे ९१ अखबार निकलते हैं। हमारे यहां शिक्षा निश्शुल्क है। हम सब आपसमें भाअीयोंकी तरह रहते हैं।"

अन्तमें आपने कहा "मुझे आशा है कि भारतके आजाद हो जानेके बाद भारत व अजर्बेजानके लोगोंके बीच सांस्कृतिक व मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और बढ़ेंगे।"

२. हिन्दीके साथ अन्याय

रेडियोकी नअी नीतिके बारेमें हम पिछले अंकमें लिखे चुके हैं। यहां हम अुसी सम्बन्धमें हिन्दी साहित्य-सभा, दिल्लीका वक्तव्य प्रकाशित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। हमें हर्ष है कि हिन्दी सभाने भी हमारे विचारोंका समर्थन किया है—

"भारत सरकारके सूचना और प्रसार--विभागने रेडियोकी भाषाके सम्बन्धमें पिछले मास जो निर्णय प्रकाशित किया है अुसपर दिल्ली साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समितिने विचार-विमर्श किया। समितिका मत है कि भारत सरकारकी अिस घोषणासे हिन्दीके साथ न्याय नहीं हुआ। दिल्ली और लाहौरमें हिन्दीको जो अनुपात दिया गया है वह बहुत कम है। हिन्दीका जो स्थान सारे देशमें है, अुसको देखते हुअे अखिल भारतीय प्रसार-केंद्र दिल्लीमें हिन्दीका अनुपात ८० प्रतिशत होना चाहिये था। लाहौर केन्द्रसे देशके जिस भागमें प्रसार होता है वहांके सामाजिक क्षेत्रोंमें हिन्दीका स्थान ५० प्रतिशतसे अधिक है। बम्बअी, कलकत्ता और ढाका हिन्दी अुर्दू और हिन्दुस्तानीको बराबर-बराबर साम्य देनेका निर्णय भी हिन्दीके साथ प्रत्यक्ष अन्याय है। पूर्वी-भारत, गुजरात और महाराष्ट्रमें जहांकी भाषाओंकी शब्दावली और गठन हिन्दीके निकटतर है, राष्ट्रभाषाका यदि कोअी स्वरूप जनता द्वारा मान्य हो सकता है, तो वह हिन्दी ही है। वहांके समाजमें अुर्दूका स्थान नगण्य है। अैसी दशामें हिन्दीके क्षेत्रमें अुर्दू और हिन्दुस्तानीको बराबर भाग देना अुर्दूके प्रति पक्षपात और हिन्दीके प्रति अन्याय है। यदि अहिन्दी भाषी प्रान्तोंमें हिन्दी, अुर्दू और हिन्दुस्तानीका प्रचार करना अभीष्ट था तो पेशावरमें हिन्दीको भी बराबरका स्थान देना चाहिये था। और अितना ही अनुपात हिन्दुस्तानीको भी मिलना चाहिये था। जो निर्णय किया गया है अुसमें अुर्दूके प्रभाव-क्षेत्रमें तो हिन्दी और सरकारकी चाहती हिन्दुस्तानी तकको नाम मात्रका स्थान दिया गया है और जहां हिन्दीका क्षेत्र है वहां अुर्दू और हिन्दुस्तानी, हिन्दीके बराबर बिठायी गअी है। अिस प्रकार दोनों ओरसे हिन्दी पर प्रहार हुआ है।

समितिको यह देखकर और भी भय हुआ है कि हिन्दुस्तानीको जिसके रूपका अभी किसीको पता नहीं और जिसका रेडियोवाला स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारसी, अरबी लदी हुआ अुर्दूसे भिन्न नहीं है— समाचारोंसे बढ़ाकर और प्रकारके प्रसारोंमें भी स्थान दिया गया है। हिन्दुस्तानीके क्षेत्रका यह विस्तार हिन्दीके क्षेत्रपर आक्रमणस्वरूप है। स्त्रियोंके प्रोग्राममें हिन्दुस्तानी जो हिन्दी और अुर्दूसे विलक्षण होगी, क्या होगी? यह रेडियोकी भाषा सुननेवाले अनुमान कर सकते हैं। हिन्दुस्तानीके क्षेत्र विस्तारका यह निर्णय सरकार द्वारा नियुक्त दो परामर्श समितियोंके सर्वसम्मत निर्णयके विरुद्ध किया गया है। पिछली परामर्श समितिमें जो प्रतिनिधि अंजुमन तरक्की अुर्दू और हिंदी साहित्य सम्मेलनकी ओरसे गये थे—दोनों ने एक मत होकर यह चाहा था कि समाचारोंका प्रसार भी हिन्दी और अुर्दू में अलग-अलग किया जाना चाहिये। यह मत बहुमत का था। परन्तु यह तो कभी किसीने मत नहीं दिया कि हिन्दुस्तानी नामकी अब तक अनुत्पन्न भाषा का क्षेत्र समाचारोंसे आगे और भी बढ़ा दिया जाये। इन कारणोंसे यह समिति इस निर्णयका दृढ विरोध करती है।

इस समितिका निश्चित मत है कि समाचारोंका प्रसार हिन्दीमें अवश्य आरम्भ किया जाय। चाहे हिन्दुस्तानी का निर्माण हो या न हो और सारे देशकी राष्ट्रभाषा कोई बने चाहे न बने, परन्तु प्रांतीय-भाषाके रूपमें अन्य प्रांतीय भाषाओंके समान हिंदीमें समाचार-प्रसारका अुसका अधिकार नहीं छीना जाना चाहिये। हिंदुस्तानीकी वेदी पर हिंदीका अिस प्रकार बलिदान हिंदी जगत्को सहय नहीं होगा।

माननीय सरदार पटेलने धारा-सभा में यह स्वीकार किया है कि अुनका निर्णय अुर्दूके पक्षमें झुकता है। अिस अंशमें और जहां तक हिंदुस्तानी को स्थान दिया गया है, अुस अंशमें हिंदीके साथ अन्याय हुआ है। अन्याय किसी भी राजनीतिक नीति या कारणका सहारा लेकर न्याय नहीं बनाया जा सकता। अतः यह समिति सरकारसे बलपूर्वक अनुरोध करती है, कि ये अन्याय दूर किया जाय और हिन्दीको हिन्दके रेडियोमें अुसके अनुरुप स्थान दिया जाय।"

—आनंद कौसल्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय हलचलें

असम—

अम्फाल—धन मंजुरी कालेजके सहायक मंत्री श्री द्विजमणि शर्मा बी॰ ए॰, के सभापतित्वमें अेक सभा हुअी। सभाके प्रमुख वक्ता पं॰ कालीचन्द शास्त्री और श्रीगोपाल मोहरीसिंह थे। अिन्होंने राष्ट्रभाषाके महत्वपर प्रकाश डाला। बादमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको पारितोषिक तथा प्रमाण पत्र बाँटे गये।

गत फरवरीकी प्रचार परीक्षाओंमें मणिपुर रियासतसे २१५ विद्यार्थी सम्मिलित हुअे थे। आगामी सितम्बरकी परीक्षाके लिये भी जोरसे प्रचार हो रहा है। रियासतमें २५ जगह वर्ग खोले जा रहे हैं।

गुजरात—

हिन्दुस्तानी यात्री दल— दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास द्वारा भेजा हुआ हिन्दुस्तानी यात्री दल सूरत तथा अहमदाबादकी हमारी समितीयोंके कार्य कर्ताओंसे मिला। दोनों शहरोंके कार्य कर्ताओंने अपने कार्यकी व्यापकता तथा अुसके प्रति जनताके असीम अनुरागको बतलाया। यात्री दल प्रचार कार्य देखकर बड़े प्रसन्न हुवे। और अुन्होंने भी व्यक्त किया कि सचमुच आपके द्वारा ही जनता तक राष्ट्रभाषाका संदेश पहुँच रहा है।

प्रमाणपत्र वितरणोत्सव— १) **प्रान्तिज**— ता. २९-३-४७ को श्री बकुलचन्द्रजी मामलतदार साहबकी अध्यक्षतामें वितरणोत्सव संपन्न हुआ। अध्यक्षने राष्ट्रभाषाके महत्वको समझाकर नागरिकोंको अिस कार्यमें सहयोग देनेका अनुरोध किया। आपने मंडलके पुस्तकालयको २५) की सहायता भी दी।

२) **धरमपुर** (स्टेट) केन्द्रमें डॉक्टरसाहब श्रीयुत कृष्णरावजी सिरपूरकर अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव बड़े अुत्साहके साथ मनाया गया। अध्यक्ष महोदय विश्वका भ्रमणकर आये हैं। आपने अपने अनुभवोंके आधारपर बताया कि देवनागरी द्वारा राष्ट्रभाषा सीखना हरअेकका परम कर्तव्य है। यहाँके श्री जयराम मालणकर हमारे बड़ेही अुत्साही प्रचारक है। गत सितम्बरकी परीक्षामें समस्त गुजारातमें प्रथम आने वाली बहन श्री शकुंतला हरी अिमानदार यहींकी हैं।

३ **आणंद**— आणंद पायोनियर हाअीस्कूलमें श्री साकरलालजी दवेके हाथों प्रमाणपत्र बाँटे गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ **भाटपुर** (बडौदा) बडौदा राज्यके अेज्युकेशन अिन्स्पेक्टर साहबकी अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरणोत्सव मनाया गया ।

५ **वीरसद**– मंत्री श्री जेठालाल जोशीके हाथों प्रमाणपत्र बाँटे गये ।

प्रचारार्थ सहायता— **महुआ** (नवसारी)के जागीरदार श्री रामचंद्रजी रहने महुआ रा. भा. प्रचार मंडलको १०१) का दान दिया और विश्वास दिलाया कि इसका कार्य आर्थिक कठिनाअीके कारण कभी न रुकेगा ।

वक्तृत्व स्पर्धा- भडोच शहेर भरके लिये श्री बिन्दु शर्माने वक्तृत्व स्पर्धाकी योजनाकी । स्पर्धामें प्रथम आनेवालेको पुरस्कार दिया गया ।

प्रान्तीय समितिके मंत्रीने वीरसद तथा भडोचका दौरा किया । कार्यकर्ताओं तथा नागरीकोंकी सभाओंमें भाषण द्वारा राष्ट्रभाषाके महत्वको समझाया

राष्ट्रभाषा पुस्तकालय-अहमदाबाद— शाहपुर व्यायाम मंदिरके संचालक श्री जीवणलालजी आचार्यके सदप्रयत्नसे श्री शेठजी श्री चीनुभाअी हरिदासके हाथों राष्ट्रभाषा पुस्तकालय खोला गया । अुक्त अवसरपर मंत्री श्री जेठालाल जोशीने प्रसंगोचित भाषण दिया । अुपस्थित महानुभावोंमेंसे नीचे लिखे सज्जनोंने आर्थिक सहायता अुसी वक्त दी:—

५१) शेठजी श्री चीनूभाअी हरिदासजी
२५) ,, ,, वैकुठलाल रतिलाल
२५) ,, ,, भोगीलाल मणिलाल
२५) ,, ,, रमणलाल मूलजीभाअी
१५) श्री ,, रेवाशंकरजी शुक्ल
११) ,, ,, कंचनलाल चुनीलालजी (भरूच)

पोरबन्दर—आर्यकन्या गुरुकुल, पोरबन्दर (काठियावाड) के मुख्याधिष्ठाता श्री चतुरभाअी बा. पटेलकी प्रेरणासे कन्याविद्यालयके कार्यक्रममें क्रमशः कोविद तककी सभी पाठ्य पुस्तकोंको रखा गया है ।

शोक प्रस्ताव—

हिन्दीके महाकवि श्री हरिऔधजी तथा गुजरातके राष्ट्रीय कवि श्री झवेरचंदजी मेघाणी की मृत्युसे राष्ट्रको बड़ी भारी क्षति पहुँची है । गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार समिति तथा राष्ट्रभाषा जूथ (अहमदाबाद) में अिन कविओंकी असामअिक मृत्युपर शोक प्रस्ताव पास हुअे ।

मालवा प्रान्त-जावरा–तीन वर्ष पूर्व यहाँ राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य शुरु हुआ था जो श्री समीरमल डफरिया तथा श्री रतनलाल मग्दके विशेष प्रयत्नसे दिनोंदिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ रहा है। यहाँपर गत महीनेमें पं० जैनमुनि सौभाग्यमलजीकी अध्यक्षतामें चतुर्थ प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव विशेष समारोहके साथ मनाया गया।

विदर्भ-नागपुर प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति—अिस समितिकी वार्षिक बैठक डॉ० भवानीशंकर नियोगीकी अध्यक्षतामें गत ता. १६ मार्च रविवारको राष्ट्रभाषा सेवा मंदिर धनतोलीमें हुअी। जिसमें प्रान्तमें राष्ट्रभाषाके प्रचार कार्यको व्यापक बनानेके लिये समितिके नये संगठन पर विचार-विनमय हुआ।

अ० भा० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाके लिये वि०-नागपुर प्रान्तीय समितिकी ओरसे श्रीमती अनुसूयाबाअी काले और पं० हृषीकेश शर्माको प्रतिनिधिरूपमें भेजनेका निश्चय हुआ।

वार्षिक अुत्सव—रवीवार ता० ३१ मार्चको नागपुर युनिवर्सिटीके कान्वोकेशने हालमें श्री. डॉ. सर भवानीशंकर नियोगीजीकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा सेवा मंदिर नागपुरका चौथा वार्षिक-अुत्सव प्रमाण-पत्र वितरण समारोह बड़े अुत्साहसे मनाया गया। शिक्षा-मंत्री माननीय श्री सं. वि. गोखले साहबने अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार बाँटे। अर्थमंत्री श्री दुर्गाशंकर मेहता साहबने अिस अवसरपर प्रभावशाली मांगलिक भाषण दिया। अिसमें प्रतिष्ठित नागपुर निवासी, राष्ट्रभाषा प्रेमी नागरिकोंके अलावा अन्नमंत्री, श्री आर. के पाटील, आरोग्यमंत्री डॉ. हसन साहब, कृषिमंत्री श्री अग्निभोजजी, नागपुर विश्वविद्यालयके वाअिस चान्सलर पं० कुंजीलालजी दुबेने अपनी अुपस्थितिसे अुत्सवका गौरव बढ़ाया।

सिंध—

पंडित अिन्द्रदेव स्मृति-दिवस—मार्च ४७ में सिन्ध प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी बैठक भाअी प्रतापके सभापतित्वमें हुअी जिसमें निश्चय हुआ कि १८ अप्रैलको राष्ट्रभाषा दिवस मनाया जाय और राष्ट्रभाषा कार्यके लिये १ लाख रुपयेकी अपील की जाय।

अिसके अनुसार पं० दौलतरामजी, श्री कृपालदासजी, पं० सूर्यप्रकाशजी और श्री परचारामजी विभिन्न स्थानोंपर दौरा कर रहे हैं।

बम्बअी—

मालाड—राष्ट्रभाषा-कार्यको सुव्यवस्थित करनेके लिये राष्ट्रभाषा प्रेमियोंकी अेक सभा रविवार ता० ३०-३-४७ को श्री कमलेशजीकी अध्यक्षतामें हुअी। जिसमें अस्थायी कार्यकारिणी समितिका चुनाव हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षा—

सितम्बर ४७ में राष्ट्रभाषा-रत्नकी परीक्षा होगी। परीक्षा आवेदन-पत्र सशुल्क ३१ मअीतक वर्धा कार्यालयमें आ जाना चाहिये।

'रत्न' परीक्षामें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अप्रैल है।

सितम्बर ४७ में होनेवाली राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाका पाठ्यक्रम पूर्ववत् ही रहेगा।

अगामी प्रचार परीक्षाएँ

समितिकी आगामी प्रचार परीक्षाएँ सितम्बर' ४७ के प्रथम सप्ताहमें होंगी।

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र—

वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अप्रैल है, किन्तु अिसके पहले प्रार्थना-पत्र भेजकर वर्धा कार्यालयसे निर्णय प्राप्त कर लेना ज्यादा अच्छा होगा। अैसा करनेसे परीक्षार्थीको अपनी तैयारीके लिये अधिक समय मिल सकेगा।

नये केन्द्र—

जहाँ कहीं कम-से-कम १० परीक्षार्थी हो, वहाँ नया केन्द्र खोला जा सकता है। लेकिन साधारणतया अुस केन्द्रके तीन मीलके आसपास समितिका स्वीकृत कोअी केन्द्र न हो। नये केन्द्रके लिये नियत खास फार्म भरकर ३० जून तक अपने प्रान्तीय संचालककी सम्मतिके साथ कार्यालय, वर्धा पहुँचाना चाहिये।

नये केन्द्र

केन्द्र क्रमांक	नाम	प्रांत
२७८	झांझीबार	अफ्रिका
२३३	सोनाराम	आसाम
२८५	कांथी	बंगाल
२९३	सिलचर	,,
२७०	मांझू	सिंध
२१८	रणोली	गुजरात
२२३	कुकुर वाड़ा	,,
२७२	लाठी	,,
२८६	मालपूर	,,
२८८	विहान	,,
२९०	सलुण	,,
२१९	हिंगोणें	महाराष्ट्र
२२२	हंबर्डी	,,
२४०	मांडल	,,
२४९	त्र्यंबकेश्वर	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र क्रमांक	नाम	प्रांत
२८२	देवळाली कँप	महाराष्ट्र
११६	फागणें	,,
२२१	जलगांव-जामोद	वि० ना०
२७९	नरखेड	,,
२९२	लोनार	,,
२३०	नाथद्वारा	मेवाड़

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	प्रचारक क्रमांक	केन्द्र
अुत्कल	श्री. राजकिशोर महाराणा	९७१	बारिपदा
गुजरात	,, सूरजराम हिम्मतराम अुपाध्याय	९६८	सूरत
,,	,, रमाकान्त शास्त्री	९६९	मोडासा
,,	,, मंजुला कृष्णलाल क्लार्क	९७७	सूरत
,,	,, जीवनलाल बापालाल आचार्य	९७८	अहमदाबाद
,,	,, नटवरलाल अंबालाल पंड्या	९७९	,,
महाराष्ट्र	,, शिवराम श्रावण परीट	९६०	रत्नापिंप्री
,,	,, रामभाअू का० गोरे	९६२	पुणें
,,	,, भास्कर दिनकर पंडित	९६४	,,
,,	,, रामचंद्र कृष्णाजी अुनअुने	९६६	सातारा
,,	,, पंढरीनाथ गणेश कुलकर्णी	९६७	पुणें
,,	,, रमाबाअी भास्कर नात	९७०	सोलापुर
,,	,, शांता गंडभीर	९७२	कोल्हापुर
,,	,, सिदगौडा खोदू	९७३	,,
,,	,, अंबु बाबाजी बावकर	९७४	,,
,,	,, विष्णू दत्तात्रय घोटणे	९७५	,,
,,	,, पंडित सुका चौधरी	९७६	ममुराबाद
बम्बअी	,, कृपाशंकर सिंहजी	९६१	बम्बअी २८
,,	,, मणीलाल त्रिभोवनदास मलकाण	९६३	बम्बअी ४
,,	,, अमरनाथ ज० नाटेकर	९८०	माटुंगा
,,	सौ. सीता क्षीरसागर	९८१	,,
,,	,, राजाराम ग खडके	९८२	,,
,,	,, प्रभाकर रा० कोकील	९८३	,,
विदर्भ-नागपुर	,, भँवरलाल धि. सेवक	९६५	खामगाँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८-९ फरवरी ४७ की राष्ट्रभाषा प्रचार परिक्षाओंके सर्व प्रथम तथा पुरस्कार-विजेता परिक्षार्थी

सब प्रान्तोंमें सर्वप्रथम	असम	बंगाल	उत्कल	सिन्ध	अन्य	गुजरात	महाराष्ट्र	विदर्भ-नागपूर	बम्बई
३८३ २०) कुमारी सुशीला श्रीपाद साठे वाअी (३४५) (पूना) १०) सर्व प्रथम पुरस्कार, १०) मथुरादास पुरस्कार		८ × श्री दिनेशचंद्र गुह एम. ए. कलकत्ता (२६२)	१२ × श्री पूर्णचंद्र मिश्र, पुरी (२१७)	५२ ८) श्री परचाराम चोयथराम खादिम, रौंदेरो ३०४	६६ × श्री रतनलाल प्यारचंद काँठोड, जावरा (२५६)	२१४ ८) श्री कु. सरस्वती बहन जीवनजी पटेल, सूरत (३०८)	३८३ + श्री कु सुशीला श्रीपाद साठे, वाअी (पूना) (३४५)	५३८ × श्री मोरेश्वर विश्वनाथ डोंगरे, वर्धा (२८१)	४३० × श्री कु. लीला लल्लुभाअी कंसारा, गिरगांव २९१
१३८८ ८) श्री. सौ. अिन्दुमती भालचन्द्र खेरकर, पूना (२२५)	२५ × श्री रूपराम भूयाँ पुवथरिया (११८)	२९ × श्री अमलेन्दु सरकार एम. ए कलकत्ता (१३७)	४० × श्री कुमारी नीहार पात्र कटक (१७६)	२५४ ५) श्री हरीसिंह परमानंद मंघनाणी, सुजावळ (१९२)	२७६ × श्री बाबुलाल मिश्रीमल ओसतवाल, जावरा (११५)	८९१ ५) श्री द्वारकानाथ गोविंद पालकर, वसाअी २२१	१३८८ + श्री सौ. अिंदुमती भालचंद्र खेरकर, पूना (२२५)	२२९३ ५) श्री कु. गोदावरी नारायणराव घाटे धन्तोली नागपूर १९५	१७६१ ५ श्री गोपाल आन्नाराव मुळे, सिरगांव (२१२
४४७८ ५) श्री सौ. सुमन दिनकरराव पाटील, कोल्हापूर (१६५)	४२ × श्री तोमचौ सिंह, अिंफाल (११०)	१५१ × श्री महेन्द्रनाथ सेन, कलकत्ता (११५)	१९५ ३) श्री बाबुलाल दोसी, कटक (१३८)	८८४ ३) श्री सौ. कमला श्री नारायणदास बदलाणी लाइकाना (१५८)	१०६२ × श्री जयकृष्ण आशाराम जोशी, अजमेर ११९	२०३८ ३) श्री रमणलाल बापूलाल जोशी, गणेशपुरा (१५६)	४४७८ + श्री सौ. सुमन दिनकरराव पाटील, कोल्हापूर (१६५)	८०१८ ३) श्री कु. अहिल्या सदाशिव दाते धन्तोली (नागपूर) (१५१)	६९५१ ३ श्री कु. यशोमती चुनीलाल शाह, घाटकोपर (१५९
११९२८ ३) श्री राजाराम बहिनाजी तरवडे, वाम्बोरी (९६)	५२९ २) श्री टंकेश्वर मुआँ पुवथरिया (७१)	६३८ २) श्री सौ. मृदुला पैराव कलकत्ता (७२)	८८७ २) श्री कु. सुबाला महापात्र, कटक (८)	३१६७ २) श्री कु. गोधू हंसराज- मल, शाहपुर चाकर (८८)	३५५९ २) श्री कु. मधुकांता शांतिलाल महेता, अजमेर (६०)	७९३२ २) श्री हरीभाअी छोटाभाअी पटेल, वसो (९२)	११६२८ + श्री राजाराम बहिनाजी तरवडे वाम्बोरी (९६)	१६१३३ २) श्री मगनलाल देवजी भाटे हिंगनघाट (८९)	१४४२८ २ श्री के. वेदवती राजन मादुंगा (८५)

विशेषः—[१] **नामके प्रारंभमें क्रमांक, अंतमें प्राप्तांक और ऊपर पुरस्कारकी रकम दी गअी है।**

[२] + अिन्हें सब प्रांन्तोंमें सर्व प्रथम होनेका पुरस्कार मिला है, अिसलिये प्रांतीय सर्व प्रथम पुरस्कार नीचे लिखे परीक्षार्थीयोंको मिला है-[क] कोविद ३४२ श्री गजानन धुंडीराज फडके, पेण प्रा. अंक ३३९ को ८); [ख] परिचय ११९४ श्री कु. कुसुम वासुदेव साळवेकर, जमखंडी प्रा. अंक २१७ को ५); [ग] प्रवेश ५२४९ श्री कु सुलभा गोपाळ सवनीस पूना प्रा. १९२ को ३); [घ] प्रारंभिक ११९२९ श्री कृष्णनाथ माधव धावडे, वाम्बोरी प्रा. अंक ९० को २)।

[३] × ये अपने प्रांतमें सर्व प्रथम हैं लेकिन पहली श्रेणीमें न होनेसे अिन्हें पुरस्कार नहीं मिला।

परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सिंध	१८०	३४	१४६	३९	१०७	[illegible]	१८	[illegible]	×
अन्य	३७	८	२९	२०	९	×	२	७	×
गुजरात	८१२	१९२	६२०	२२९	३९१	१८	७५	२९८	×
महाराष्ट्र	६१०	१५०	४६०	१४५	३१५	१५	६४	२३५	१
बंबअी	४२८	१०५	३२३	९४	२२९	१२	४२	१७५	×
विदर्भ-नागपुर	२५५	८२	१७३	४१	१३२	५	२३	१०४	×
सब प्रांत	२४३०	५९३	१८३७	६२१	१२१६	५४	२२६	९३५	१

राष्ट्रभाषा कोविद

असम	५	१	४	४	×	×	×	×	×
बंगाल	४	×	४	×	४	×	१	३	×
अुत्कल	८	१	७	३	४	×	×	४	×
सिंध	४४	९	३५	१६	१९	१	४	१४	×
अन्य	१६	३	१३	५	८	×	१	७	×
गुजरात	१५१	३९	११२	३८	७३	१	११	६१	×
महाराष्ट्र	१९७	५६	१४१	४३	९८	४	१९	७५	×
बंबअी	९२	२७	६५	२९	३६	×	६	३०	×
विदर्भ-नागपुर	४४	१४	३०	५	२५	×	४	२१	×
सब प्रांत	५६१	१५०	४११	१४४	२६७	६	४६	२१५	×

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयोंको विशेष सुविधा

(कवर के ४ थे पेजसे आगे)

अज्ञात शत्रु	१)	नई दुनियाके मेरे अद्भुत संस्मरण	१॥)
मार्क्सवाद	२।)	प्रेमाश्रम	६)
कला अेक अध्ययन	३)	पुष्करिणी	२)
जीवनकी मुस्कान	२)	भैरवी	२॥=)
रिया	१॥)	समाजके स्तम्भ	२॥)
भिक्षुके पत्र	१॥)	सोनेका जाल	२।)
डायरीके कुछ पन्ने	१)	संन्यासी	४)
रोटीका सवाल	१।)		
सात इन्कलाबी इतवार	१)		

— पुस्तक विक्री विभाग —

पुस्तकालयोंको विषेश सुविधा-

१००) या १००) से अधिककी पुस्तकें मंगानेपर १५% कमीशन दिया जायगा।

२००) या २०० से अधिककी पुस्तकें मंगानेपर १७% कमीशन दिया जायगा।

सभी प्रकारकी साहित्यिक, राजनैतिक तथा अन्य अुपयोगी पुस्तकें यहींसे मिल सकती हैं।

ग्राहकोंको सुचना —

१ आर्डर देते समय ½ पेशगी अवश्य भेजें।

२ अपना पूरा पता [पोष्ट आफिस जिला आदि] साफ साफ नागरी अक्षरोंमें लिखें।

३ अगर पुस्तकें रेल पार्सल द्वारा मंगाअी गअी हों तो वैसा स्पष्ट लिखें और स्टेशन तथा रेलवे लाईनका नाम अवश्य लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ला. ८३८

मासिकका तारका पत्र
राष्ट्रभाषा, वर्धा

SAHARANPUR DELX

पुस्तकालयोंको विशेष सुविधा

१२० रु. की पुस्तकें १०० रु. में

नाम पुस्तक	कीमत
विदा	३.
गबन	४.
दादाकामरेड	२।
गढ़ कुंडार	४.
जागरण	३.
पवित्र पापी	३॥.
मंजरी	१॥.
वरमाला	१.
राजनीति-विज्ञान	१॥.
चरित्रहीन	५॥.
चन्द्र-शेखर	१॥॥.
आनन्द मठ	१॥.
मनुष्य जीवनकी अुपयोगिता	॥.
मनुष्य ही अपने भाग्यका निर्माता है	॥=.
कवि प्रसादकी काव्य साधना	३.
कुछ-विचार	२.
पिकनिक	१॥.
रैन बसेरा	१॥.
गांधी अभिनंदन ग्रंथ	१०.
साधनोंके पथपर	३.

नाम पुस्तक	कीमत
मौलाना अब्दुल कलाम आजाद	२॥.
विनोबाके विचार भाग १	१॥.
,, ,, भाग २	१॥.
प्रेममें भगवान	१.
अंग्रेजी राज्यके सौसाल	॥=.
आगे बढ़ो	१.
हमारे किसानोंका सवाल	=.
आधुनिक कवि भाग १	२.
,, ,, ,, ३	२.
समालोचना समुच्चय	१॥.
समालोचना तत्व	१॥.
राजनीति शास्त्र	२॥.
अम्बपाली	१॥॥.
देहाती दुनिया	१॥
मजूरी और पूंजी	॥=.
लेनिनके संस्मरण	१.
आकुल अंतर	१॥.
अिन्द्रजाल	२॥
अेकांत संगीत	१॥.
गुंजन	२.

[शेष कवरके तीसरे पृष्ठपर]

मुद्रक—सुमन्त वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी १९४७

वर्ष

अंक ४

राष्ट्र भाषा

भारतका स्वतन्त्रता-दिवस

सबक जातियाँ अपना स्वतन्त्रता-दिवस मनाती हैं। लेकिन हमारा स्वतन्त्रता दिवस मनाना सबसे अनूठा है। दूसरी जातियाँ अुस स्वतन्त्रताकी याद मनाती हैं, जो अुन्हें प्राप्त है, हम अुस स्वतन्त्रताकी याद मनाते हैं जो हमें अभी प्राप्त नहीं है। दूसरी जातियाँ प्रसन्नता प्रकट करती हैं, हम प्रतिज्ञा ग्रहण करते हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि

हम जबतक पूर्ण स्वतन्त्र नहीं
हो जाते तबतक चैनसे
नहीं बैठेंगे।

— कृष्ण कृपलानी

राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	गति-गीत	(श्री. भरतव्यास) ...	९५
२.	राहुलजीका दूसरा-पत्र	...	९६
३.	सिंहली आर्य भाषा है	(श्री. सुशीलकुमार, साहित्य-रत्न)	१००
४.	अंसान	(श्री. राजेन्द्र सक्सेना)	१०८
५.	प्रधान-मन्त्रीकी ओरसे		११२
६.	भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट	(श्री. आ. कु. वर्मा)	११५
७.	परीक्षा-विभाग		११६
८.	हमारी नजरोंमें		१२१

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	प्रचारक क्रमांक	केन्द्र
सिन्ध	श्री. लक्ष्मी शिवदासानी	९२४	हैदराबाद
,,	,, पं. श्रीराम भूघरलाल	९२५	टण्डोआदम
,,	,, तेजोराम द्विवेदी	९२६	नवाबशाह
गुजरात	,, लल्लूभाअी ह० राणा	९१९	सूरत
,,	,, जसवन्तसिंह डॉक्टर	९२०	कड़ोद
,,	,, धनंजय छ. शाह	९२१	सूरत
,,	,, नटवरलाल सुथार	९२२	,,
महाराष्ट्र	,, पुंडलीक संपत पाटील	९११	मसुराबाद
,,	,, डोंगरदासजी जी. महाजन	९१२	,,
,,	,, गंगाधर हरी ढोके	९१३	जलगांव
,,	,, शंकरराव निवृत्ति पाटील	९१७	अिस्लामपुर
,,	,, भास्करशास्त्री गुरवा	९१८	थोरगव्हाण
,,	,, सौ. लीलाबाअी साठे	९१६	पुणें
बम्बअी	,, ज. कृ. करमलकर	९१५	बम्बअी
विदर्भ-नागपुर	,, पं० तु० बन्हाटे	९१४	बर्धा
,,	,, बाबूलाल नायक	९२३	,,
,,	,, जमनादास व्यास	९२७	हिंगणघाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ६] वर्धा, फरवरी--१९४७ [अंक ४

गति-गीत

श्री. भरत व्यास

आगे बढे, आगे बढे, आगे बढे क़दम् !
जब तक तुम्हारे आशाकी मंज़िल नहीं आये
जब तक तुम्हारे भाग्यका गुल खिल नहीं जाये
तब तक न लो तुम दम, न लो तुम दम, न लो तुम दम !
आगे बढे, आगे बढे, आगे बढे क़दम् !

पत्थर जो आये सामने, ठोकर से उड़ादो
चट्टान आये बीचमें छातीसे हटादो
सीने पै चलें गोलियाँ औ' सर पै गिरे बम्
आगे बढे, आगे बढे, आगे बढे क़दम् !

तोपोंकी नाल वज्र छातियोंसे तोड़ दो
भालोंकी नोंक सरकी टक्करोंसे मोड़ दो
तुम ही तो अपने भाग्यके विधान हो स्वयम्
आगे बढे, आगे बढे, आगे बढे क़दम् !

हिन्दू हो, मुसलमान हो, यह छोड़ दो अहम्
चलते ही चलो सामने जब तक है दममें दम्
सौगंध तुम्हें रामकी, अल्लाहकी क़सम्
आगे बढे, आगे बढे, आगे बढे क़दम् !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राहुलजीका दूसरा पत्र

[न जाने कितनी प्रतीक्षाके बाद राहुलजीका अेक पत्र जैसे तैसे लेनिनग्राडसे यहाँ पहुँच पाया था। वह पत्र बम्बअीके 'जनयुग' से अुद्धृत होकर अनेकों पत्र पत्रिकाओंमें छप चुका है। अुसके बाद यह दूसरा पत्र मिला है, जो पहले पत्रकी अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है और हिन्दीमें ही है। 'राष्ट्रभाषा' अिसे छाप सकनेमें अपना सौभाग्य समझता है। —सं०]

प्रिय आनंदजी,

आपके पत्रका अुत्तर दे चुका हूँ। जून १९४६ में यहाँसे भारतके लिये प्रस्थान करनेका विचार है, अकेले। पुस्तकोंके लिये समुद्रका रास्ता ही अच्छा होगा, अर्थात् लेनिन-ग्राड, लन्दन, बंबअी। किन्तु अभी निश्चित कुछ नहीं कह सकता। अक्टूबर १९४४ से जून १९४७ तक लेखनीने गोया लम्बी साध ली है। भारत आते ही पहिले ताने-बानेमें पड़ी तीन पुस्तकें लिख डालनी होंगी।

यहाँ अब जाड़ा है। चारों और बर्फ ही बर्फ। घरके भीतर गर्म। काम? युनिवर्सिटीमें तृतीय और पंचम वर्षके छात्र-छात्राओंको **१४ घंटा** पढ़ाना। कुछ स्वयं भी पुस्तकोंका पारायण कर लेते हैं, किन्तु जब ख्याल आता है कि अक्तुम्बर १९४४ से लेखनी विश्राम ले रही है, तो दिल मसोसने लगता है। भारतके पत्र-पत्रिकाओंका दर्शन नहीं। 'जनयुग' के सिर्फ दो अंक मिले। फिर न जाने क्यों बंद? चिट्ठियाँ भी कभी भूली भटकी ही आ जाती हैं। नागपुरसे दो हवाअी-चिट्ठियाँ महीने सवा महीनेमें यहाँ पहुँच गअीं, हिन्दीमें। पहिले तो भारतीय समाचारोंका कोअी पता नहीं, किन्तु पिछले जूनमें रेडियो ले लिया। अिसलिये दिल्ली बराबर सुनता हूं। अुससे यह पता लगता है, कि अम्बाला-पूर्णिया-हिमालय-सतपूराके बीच सिर्फ अुर्दू बोली जाती है। अिससे क्षोभ तो जरूर होता है, किन्तु पिछले कुछ महीनोंसे जो छुरेबाजी कलकत्ता, बंबअी, ढाका.....में चल रही है, अुससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगातार कलेजेमें सुअीसी चुभती रहती है। कभी-कभी रेडियो खरीद लेनेपर अफसोस होता है, किन्तु कबूतरके बिल्लीके सामने आंख मूँदनेसे कुछ नहीं होता। खैर, यह तो दिलकी बात है। दिमाग अिस अवस्थासे निराश नहीं। "जबर्दस्ती अखण्ड-भारत" और "छुरेसे पाकिस्तान" दोनों नारे गलत हैं। जिस तरह दिल्ली-रेडियोको अुर्दूके लिये रिजर्व करनेसे हम कुढ़ते हैं वैसे दूसरे भी अपने सांस्कृतिक तत्वोंकी अवहेलनासे क्षुब्ध हो सकते हैं। फिर यहां सिर्फ दिमागी बात नहीं। साम्प्रदायिक जहादके पिछे आर्थिक स्वार्थ काम कर रहे हैं, यद्यपि साधारण जनताको भरमानेके लिये अुन्हें धार्मिक रूप दिया जाता है। समझमें नहीं आता, "काजीजी शहरके अंदेसे क्यों दुबले?" काँग्रेसी नेता जितना ही 'अखण्ड-हिन्दुस्तानकी बरकत' की बातकर मुसलमानोंसे अिसे जबर्दस्ती मनवानेकी चेष्टा करेंगे, अुतना ही वे शंकित होंगे, और रहे सहे मुस्लिम काँग्रेसजनोंका पक्ष निर्बल होता जायगा। मुस्लिम नाबालिग नहीं हैं, कि अुन्हें सदा अभिभावकके परामर्शकी जरूरत रहे। साथ ही हिन्दू बहुमतवाले किसी भूखण्डका पाकिस्तानी अंश बनना भारी खून खराबीका कारण होगा। युरोपमें अिसे अच्छी तरह देखा गया है।

आप कहेंगे, अिसे लिखनेकी क्या जरूरत। यह तो हमारे सिरपर रात दिन बीत रही है, क्यों न वहाँके बारेमें लिखूँ। यह ठीक है। तो सुनिये। जर्मनोंके चरण जहाँतक पहुंचे अुन्होंने अुसे वीरान कर दिया। अब अिस सारे विरानोंको आबाद करना है। कितना भारी काम है। किन्तु साथ ही सोवियत नर-नारी अिसके लिये कमर कस चुके हैं। लेनिनग्राद्पर जर्मनोंने हजार दिन तक गजब ढाया। तोपों और विमानोंसे बम वर्षा की। कितनी क्षति हुअी होगी! अिसका वहां बैठे भी अनुमान हो सकता है। युद्ध समाप्त हुअे सालसे कुछ ही ज्यादा हुआ है। किन्तु अिस बीचमें हजारों घरोंकी मरम्मत या पुनर्निर्माण हो चुका है। गर्मियों भर दीवारें खड़ी या मरम्मत की जाती रहीं, जाड़ोंमें घरके भीतरसे काम हो रहा है। सबसे बड़ी नेव्स्की सड़कपर सारे मकान दुरुस्त हो चुके हैं। अेकाध ही दीवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अुन गोलियोंके दाग हैं जिनकी वर्षा नागरिकोंपर जर्मन विमान किया करते थे। अैसी और भी बहुतसी सड़कें और मुहल्ले देखे जाते हैं। मगर अिसका यह अर्थ नहीं, कि युद्धके सारे घाव भरे जा चुके हैं। अिसे तो वर्षों लगेंगे, किन्तु नया-निर्माण पहिलेसे कहीं अधिक महान होगा। हाँ, अुत्पादक कार्यों—कारखानों, पनबिजलियों, खेतोंकी ओर सबसे पहिले ध्यान देना जरुरी है। अिस साल भरके भीतर नये निर्माण जिस शीघ्रतासे हो रहे हैं, अुनसे जान पड़ता है कि चौथी पंचवर्षीय योजना समयसे पहिले पूरी होकर रहेगी। और दो पंचवार्षिक योजनाओंको पारकर सोवियटमें लोहा, कोयला, मशीन, अन्न-धनकी अुत्पत्ति प्रतिव्यक्ति संयुक्त राष्ट्रके बराबर होकर रहेगी, अर्थात् संपत्तिका योग-फल अुसके ड्योढ़ेसे ज्यादा। अुद्योग-प्रधान क्षेत्र अब भारत और अिरानकी सीमापर वहाँ तेजीसे बढ़ रहे हैं—ज्वेकिस्तान और अर्मेनियाँ दोनों अुद्योग-प्रधान देश बन रहे हैं।

वस्तुतः आदमीका श्रम पारसमणी है, जिसके छुनेसे लोहा नहीं मिट्टी भी सोना बन जाती है। श्रमको जहाँ मानव मस्तिष्ककी श्रेष्ठ बरकतें—आविष्कारोंसे सहायता प्राप्त हो गअी, वहाँ फिर अुसकी निर्माण शक्ति अपार हो जाती है। अिंग्लैंडकी अंगुलभर भूमिपर भी जर्मनोंने पैर नहीं रखा, किन्तु अिंग्लैन्ड आज जो खड़ा है, वह अमेरिकाके बलपर। अुसकी गर्दन अमेरिकाके हाथमें हैं, जिसके लिये युद्ध सम्बन्धी क्षति दूर की बात रही। सोवियतकी क्षति जितनी हिरानियोंके (?) हाथ हुअी, वैसी यदि किसी दूसरे देशकी हुअी होती, तो टें बोल जाता। आज बीस करोड़ जनोंकी श्रमशक्ति रुपी पारसमणी जो व्यक्तिगत पूंजीकी गलफाँससे मुक्त है—के बल सोवियत अपने पैरोंपर खड़ा ही नहीं है, बल्कि युरोपके कितने ही देशोंको अपने पैरोंपर खड़ा कर रहा है। फिनलैंड, रुमानियाँ, पोलैंड, फ्रांसको पिछले साल कितना अन्न सोवियतने दिया, अिसका शायद भारतको पता नहीं, किन्तु आज कल "त्राहि त्राहि" करते ब्रिटिश-जर्मन-खण्डको जो रोटियाँ यहाँसे जा रही हैं, अुसे सुनकर कितनोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य हुआ होगा। यह सोचते मेरा ख्याल भारतकी ओर जाता है, जहाँ अस्सी करोड़ हाथ हैं, जिनमें अपार पारसमणिकी शक्ति है। अुसके अुपयोगसे हमारा देश कितना सुखी और संवृद्ध हो सकता है? कब हम अिन हाथोंको अेक दूसरेके खूनसे रंगनेकी जगह जीवन सामग्री पैदा करनेमें लगायेंगे? २९ साल पहिले ज़ारके राज्यमें भी भाअीके खूनके साथ भाअीके हाथ रंगे जाते थे। मध्य अेसियाके सुन्नी अीरानी शियोंको लूट कर गुलाम बनाना बिल्कुल अिस्लामी-शरीयतके मुताबिक समझते थे, किन्तु अब वह अिन किस्सोंको आश्चर्यसे अेनीके अुपन्यासमें पढ़ते हैं। अेनीको अपने अुपन्यास "गुलामान" में गुलामोंकी ख़रीद-फरोख्तका दस्ताअेवज़ तक लगाना पड़े, जिसमें लोग समझें कि यह मनढ़गन्त कहानी नहीं, किन्तु 'गुलामान' के पाठकोंमें बहुत कमका अिस पर विश्वास करनेको मन करता होगा। मैंने जब समरकंदके विद्वान सदरुद्दीन अेनीके अुपन्यासों 'गुलामान,' 'दाखुदा,' 'आदीना,' को पढ़ा अुसी समय ख्याल हुआ कि भारत चलकर अिनका अनुवाद करना होगा।

यदि यह पत्र दो मास तक मिल जावें तो कुछ पत्र-पत्रिकायोंको भिजवाअियेगा। अिसके लिये 'जनयुग' को भी लिख दीजियेगा। खास कर वहाँसे निकलते नये मासिकको देखनेके लिये मैं बहुत अुत्सुक हूँ।

मित्रोंमेंसे किसीके पत्र नहीं आये। क्या अुदय नारायण, अमृतराय, महादेवप्रसाद शाह आदिमेंसे किसीको मेरा पत्र नहीं मिला? शरीरसे स्वस्थ्य हैं तीनों जने। हिन्दी जगत और मित्रोंके विशेष समाचारोंसे सूचित कीजियेगा।

स्नेही,

राहुल सांकृत्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहली आर्य भाषा है

लेखकः—श्री० सुशीलकुमार, साहित्य-रत्न

दक्षिण भारतकी, द्रविड़ वंशकी भाषाओंकी अपेक्षा सिंहली हिन्दीके अधिक निकट है। न केवल शब्द ही निकट हैं, बल्कि वर्णमाला बिल्कुल अेक है, वाक्य-रचना समान है, संन्धियाँ तथा व्याकरणके नियम समान हैं।

हिन्दी भाषी लोग द्रविड़ वंशकी भाषाओंका मज़ाक अुड़ाते हुअे कहा करते हैं कि जैसे अेक खाली घड़ेमें कंकड़ डाल दिये जाँय और अुससे जिस प्रकारका शब्द निकले, अुसी प्रकार दक्षिण भारतकी भाषाओंके अुच्चारणको—तमिळ, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि—समझना चाहिये।

लेकिन सिंहलीके विषयमें यद्यपि यह 'सात समुन्दर पार' की भाषा है, आप अैसी राय कायम नहीं रख सकते। अिसकी दुतिया, चतुर्थी और षष्ठी विभक्तिमें 'ट' तथा अैसे ही अेक—आध अुच्चारणके कारण थोड़ासा अन्तर मालूम पड़ता है।

लंका—रेडियोको ध्यानसे सुनिये। गीतका अर्थ आपकी समझमें भले न आये, अुच्चारणमें—जिसको 'टोन' कहते हैं,—अन्तर नहीं मिलेगा। अैसा मालूम पड़ेगा जैसे हिंदुस्तानमें कहीं गाना सुन रहे हैं, सिंहलकी खबरें सुनिये। कितनी कोमल भाषा! और कितने संस्कृत, पालीके शब्द!

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी पाठ्य-पुस्तकोंमें अुर्दूके शब्द भरे पड़े हैं। ये शब्द सिंहली विद्यार्थियोंको खटकते हैं। अुन अुर्दू शब्दोंका पर्यायवाची कोअी संस्कृत शब्द बता दिया जाता है तो वे तुरन्त समझ जाते हैं। खास तौर पर यह बात अूँचे दर्जेके विद्यार्थियोंके विषयमें लागू होती है जो बाबू सम्पूर्णानन्दकी 'समाजवाद' जैसी पुस्तकें और प्रेमचंदके अुपन्यास पढ़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब देखना यह है कि सिंहली भाषामें संस्कृत तथा पाली शब्दोंका कितने अधिक अंशमें प्रवेश कैसे हुआ ? पाली, सिंहल-वासियोंकी धर्मभाषा है। सर्वत्र पढ़ाई जाती है। भिक्षुओंके लिये पाली, अच्छी तरह जानना आवश्यक है। अिसके अतिरिक्त गृहस्थ विद्यार्थी भी बड़ी संख्यामें पाली पढ़ते हैं। यह क्रम आजसे नहीं हजारों वर्षोंसे चला आ रहा है। ४५८-४८० शताब्दीमें संस्कृतके विद्वान बुद्धघोष ने सिंहल आकर त्रिपिटककी सिंहल-टीकाओंके आधार पर पाली टीकाअें लिखी। १५ वीं शताब्दी में संस्कृतके विद्वान रामचन्द्र भारती आये जिन्होंने "भक्तिशतकम्" आदि कअी ग्रन्थ लिखे। १९ वीं शताब्दीमें महावीर स्वामी आये। आज भी कितने ही भारतीय विद्वान लंका आकर पाली पढ़ते हैं।

कहनेका तात्पर्य यह कि आज ही नहीं कितनी ही शताब्दियोंसे लंकाका भारतसे सम्बन्ध है—भाषाका तथा विचारोंका। संस्कृत भाषामें, वैद्यक, काव्य, अर्थशास्त्र आदि कअी विषयोंकी अुच्च पुस्तकें होनेके कारण सिंहलवासियोंने अुसे सादर स्वीकार किया है। आज भी जहाँ—जहाँ पाली पढाअी जाती है वहाँ वहाँ प्रायः हर जगह संस्कृत अवश्य पढ़ाअी जाती है, यही वजह है जो आज हम सिंहलमें संस्कृत शब्दोंकी बहुलता पाते हैं।

संस्कृत और पालीके बहुतसे शब्द अुन्होंने तोड़ मरोड़ कर अपनी भाषाकी प्रकृतिके अनुसार अैसे बना लिये हैं कि जो सुननेमें कुछ भिन्न तथा लिखनेमें भी भिन्न है किन्तु वे सब लिये गये हैं संस्कृत, पालीसे ही, जैसे—

सिंहल	संस्कृत	हिन्दी
लकुण	लक्षण	लक्षण, चिन्ह
लस्सन	,,	दिव्य, अलौकिक
सतर	शास्त्र	शास्त्र
होर, सोर	चौर	चोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहली	संस्कृत	हिन्दी
वेस्स, वहिनवा	वर्षण	वर्षा
दहाय	दश	दस
पोत्	पुस्तक	पुस्तक
अुस	अुच्च	अूँचा
योधया	योद्धा	योद्धा
नुवर	नगर	नगर, शहर
पिरिवर	परिवार	परिवार
विदुली	विद्युत्	बिजली
केस	केश	केश, बाल
परन, पेरेणि	पुराण	पुरान
गिनि	अग्नि	आग
अेता	हस्ती	हाथी
दत	दन्त	दाँत
कन	कर्ण	कान
मअु-पिअु	माता-पित	माँ-बाप

अिस प्रकारके शब्दोंकी संख्या बहुत है। अेक लेखमें सब दिये नहीं जा सकते। अब कुछ अैसे शब्द लें जो थोड़ेसे परिवर्तनके साथ जैसे के तैसे लिये गये हैं। जैसे:—

सिंहली	संस्कृत	हिन्दी
आदरय, अदर,	आदर	आदर, प्यार
आसाव	आशा	आशा
प्रेम, पेम्	प्रेम	प्रेम
प्रिय, पिय	प्रिय	प्रिय
बन्दुण, माजनय	भाजन	भाजन
अपाय, अवा	अपाय	अपाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहल	संस्कृत	हिन्दी
मान	मान	मान
विधिय, विदे	विधि	विधि
पूजाव, पुदा	पूजा	पूजा
गाव	गो	गाय
फल	फल	फल
गुरुवरया, गुरु	गुरुवर	गुरुवर
अधिपति	अधिपति	अधिपति
स्वामी	स्वामी	स्वामी
वचन, वचन	वचन	वचन

सिंहलीमें अुर्दूके शब्द खोजने पर भी नहीं मिलेंगे यहाँके मुसलमान भी यही सिंहली बोलते हैं।

अूपरके शब्दोंमें कहीं कहीं 'य' 'व' का प्रयोग आया है। यही शब्द सिंहलीकी छाप लगाते हैं तथा भाषाकी प्रकृतिको बताते हैं। प्रायः हर शब्दके पीछे यह अक्षर लगाये जाते हैं।

'अच्चरू'—अचार, 'बत'—भात, 'मिरिस'—मिरिच, 'अन्नास'—अनानास, 'भटु'—भाँटा, 'सबन'—साबुन आदि कुछ अैसे शब्द हैं जो खड़ी बोलीसे साम्य रखते हैं।

अब कुछ अैसे शब्द लें जो हैं तो संस्कृतके किन्तु अर्थ बदल गया है। जैसे—

सिंहली	संस्कृत	हिन्दी अर्थ
आडम्बरय	आडम्बर	अभिमान
वासनाव	वासना	सौभाग्य
प्रवृत्तिय	प्रवृत्ति	सन्देश, खबर
याचनाव	याचना	विनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहली	संस्कृत	हिन्दी
नरक	नरक	खराब
वाक्यरचना	वाक्यरचना	लेख
बलात्कार	बलात्कार	§जबर्दस्ती

पालीका सिंहलीपर कअी प्रकारसे असर पड़ा है। पाली व्याकरणकी यह नीति है कि शब्दोंका जितनी नम्रतासे अुच्चारण किया जा सके, किया जाय। दूसरी यह कि कठिनाअीसे अुच्चारण किये जानेवाले अक्षरोंको छोड़ना जैसे—श, ष, क्ष, र आदि।

सिंहलीकी यह नीति पहले थी; आज नहीं। फिर भी शब्दोंका प्रभाव तो पड़ना जरूरी था क्योंकि अुन्हीं शब्दों द्वारा वे रोज धर्मदेशना देते हैं। सिंहलीपर पाली शब्दोंका प्रभाव अिस प्रकार पड़ा है:—

सिंहली	पाली	हिन्दी
गोणा	गोण	बैल
साकच्छा	साकच्छा	विचार-परिवर्तन
अपाय	अपाय	अपाय, नरक
वीर्य	बिरिय	परिश्रम
मानवकया	माणवक	विद्यार्थी
अरमुन	आरम्मण	आलम्बन चित्तका विषय
नहर	नहारू	नस
अैट	अठि	हड्डी
सेम	सेम्ह	श्लेष्म
केल	खेलो	थूक
अस्वया	अस्स	अश्व
पिरिकर	पारिक्खार	परिष्कार

§ हिन्दीमें हम अैसा नहीं कह सकते कि हम आपको बलात्कार करके ले चलेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहल वासियोंके कुछ नाम अिस प्रकार हैं:—

विजय, विजयरत्न, बसनायक, दिसानायक, सेनानायक, नन्दसेन, सुमनदास, पियसेन, पियनन्द, करुनारतन, सिरिसेन, विक्रमसिंह, कुमारसिंह आदि।

भिक्षुओंके नाम:—अुपनन्द, पञ्ञालोक, पञ्ञासिरि, पञ्ञाकित्ति, धम्मकित्ति, पञ्ञाराम, पञ्ञाकर, पञ्ञारतन, सोमालोक, अग्गसिरि, दुआकस्सप आदि।

स्त्रियोंके नाम:—रुक्मिणी, सोमावती, वंसवती, करुनावती, चन्द्रवती, शान्ति, सान्ति, लीला आदि।

कुछ स्थानीय नाम:—टिगरीबण्टा, रामबण्डा, कलुबण्डा।

गांवोंके नाम:—नुगवेल, अम्बिहार, मडपात;

विदेशी प्रभावसे:—सिल्वा, सोअिसा, पीटर, विक्टर आदि।

सिंहलमें 'समास' को समास ही कहते हैं; केवल अुनके नाम भिन्न हैं। वे हैं—१. अव्यय समास, २. विभक्ति समास, ३. विसेसन समास, ४. अन्यार्थ तथा ५. दकारार्थ समास। अिनके कुछ अुदाहरण अिस प्रकार हैं—

१. अव्यय—सु+दन=सुदन (सुजन), अकुसल।

२. विभक्ति:—तन+पा=स्तनपा। मी+पल (=पृथ्वीपाल)। दल+दा=बल्द)। गो+पलु=(गोपालक)। वेड+करू=(कमकर) किरिबत् (खीर-भात) तल+तेल (तिल+तेल)।

३. विसेसन:—सुदु+मल (=श्वेत+पुष्प)। निलु+पुल (=नीलोत्पल)। रुधिरेद (=रक्त-वस्त्र। मिटि+मिनिहा=छोटा आदमी।

४. मत+ने+गज (=मत्त+अनेक+गज=जंगल)। अेरुण+हस (=हंस घुसता है जहाँ=सरोवर)।

दकारार्थ:—मअु+पिअु (=माता+पिता)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णमाला नागरी ही है। सिर्फ दो स्वर विशिष्ट हैं जिनका उच्चारण नागरीमें नहीं लिखा जा सकता। जैसे—

अ को मात्रांश—वृद्धिसे—ॲ; ब्रेन, ॲल

,, ,, —ऍ; क्रैम, ऍत

लिपि गोलाकार क्यों होती है? यह बात स्पष्ट ही है। पहले यह ताड़पत्र पर लिखी जाती थी। भोज-पत्र नहीं मिलता था। चूँकि सीधे लिखनेसे ताड़-पत्र फट जाता है, अिसलिये गोल अक्षर बनाये गये।

अेक समय था जब अुच्चारणमें और लिखनेमें महाप्राण अक्षरोंके लिये जगह नहीं थी। किसी समय यह लिपि पद्य-रचनाके प्रयोजनके लिये बनी थी। जैसे—

शुद्ध सिंहल वर्णमाला:—

क ग ज ट ड ण त द न प ब म य र ल व स ह ळ

अ आ अि अी अु अू अे अै ओ औ अं अः

आजकी सिंहल लिपि सम्पूर्ण है। अिसे 'मिश्र-लिपि' कहते हैं। अव स्वतंत्रतासे रेफ 'र' तथा श, ष का प्रयोग होता है। लोगोंके अुच्चारणमें अभी भी महाप्राणका प्रवेश नहीं हुआ है।

सज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, पुरुष, वचन, लिंग, समास, विभक्ति आदि सबका आधार संस्कृत ही है। सिंहलीके सर्वनाम अिस प्रकार हैं—

सिंहल	हिन्दी
मम	मैं
ओहु, ओ, अुहु	वह, वे
ओव वहन्से, नुम्ब	आप, तुम तू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया

सिंहल	हिन्दी	
कनवा	खाना	वर्तमान
निदिअि, निदागनवा, निदनवा	सोना	वर्तमान
मरनवा	मारना	वर्तमान
गिया	गया	अतीत
नैत्रा	नहाया	अतीत
आवा	आया	अतीत
यायी	जायगा	भविष्य

विशेषण

अुस- गह	अुच्च—गाछ
बुमुयु लियक	ब्राम्हण स्त्री
हतर देनेक	चार जने
निदन—समया	सोता बच्चा

पुरुष

अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष, अुत्तम पुरुष—अ. पु., म. पु., अु. पु.
हतेम, ओबुहु; ओब-ओबल; मम, अपि—वह, वे; तुम, तू; मैं, हम

वचन

अेक-वचन	बहु-वचन	अेक-वचन	बहु-वचन
लमया	लमयी	लड़का	लड़के
मिनिहा	मिनिस्सू	आदमी	आदमी
स्त्री	स्त्रीहु	स्त्री	स्त्रियाँ

लिंग

सिंहल		हिन्दी	
पु.	स्त्री. नपुंसक	पु.	स्त्री.
तुरंग	लता	तुरंग	लता
अुरङ्ग	माला	अुरङ्ग	माला
होर	स्त्री	चोर	स्त्री
मिनिहा	भार्या	मनुष्य	भार्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहली भाषाका भोजपुरी भाषासे जो कि छपरा, चम्पारन (बिहार) बलिया, गोरखपुर (यु. प्रा.) आदि जिलोंमें बोली जाती है, शब्दों तथा व्याकरणका साम्य देख कर आश्चर्य होता है। हम भोजपुरीमें कहेंगे हैं—खाओ, देखी, जाओ अर्थात् खायगा, देगा, जायगा। सिंहलीमें कहेंगे—काओ, देओ, यायी।

सिंहलवासियोंके सामने लिपिकी समस्या है। अुनके अक्षरोंको छापनेमें कठिनाओ होती है। सम्भव है वे धीरे-धीरे रोमन-लिपिकी ओर झुकें। नागरी अपनायें तो अच्छा हो। अेक ही अक्षर होनेसे संस्कृतकी पुस्तकें पढ भी सकेंगे, छाप भी। सबसे बड़ी बात यह होगी कि वे भारतके और निकट आ जायेंगे। अुनकी भाषा भारतके किसी भी प्रान्तमें आसानीसे पढ़ी जा सकेगी। अभी तो वे अपनी ही लिपि पर दृढ हैं।

अिंसान

राजेन्द्र सक्सेना

कुत्तोंके भोंकनेकी आवाजके साथ-साथ बच्चोंके शोरने अेक अजीब समां बाँध दिया। जब पीरु आर खीमी गलीके अन्दर घुसे। पीरु अेक हाथसे सिकन्दर और छमियाके गलेकी जंजीर थामें दूसरेसे डमरू बजा रहा था। खीमी कंधेपर लकड़ीके सहारे झोली लटकाये पीछे-पीछे चल रही थी। पीरु डमरू बजाता रहा और कुत्ते भोंकते रहे। गलीका पूरा चक्कर अब तक वे लगा चुके थे पर कहीं किसीने सिकन्दर और छमियाके करतब देखनेकी अिच्छा प्रकट नहीं की। पीरु और खीमी रुके नहीं। बच्चे निराश होकर गलीमें जा घुसे। दो-चार आवारा और समझदार अब भी अिनके पीछे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गली पार कर पीरु और खीमी सड़क पर आ गये। अेक पेड़के नीचे अश्रय लिया। खीमी हाँफ़ रही थी। अुसके चेहरेकी झुर्रियोंके बीच अेक अजीब थकान अुमर आअी थी। टाटका बिछावन बिछाकर वह लेट गअी। पीरुने अेकबार अपनी बीबीकी तरफ देखा, और फिर सिकन्दर और छमियाको लोहेकी खूँटीसे बाँध दिया।

"आज बस्तीसे कुछ नहीं मिला"--पीरुने धीमी आवाजमें बुदबुदा कर कहा। खीमीने कुछ अुत्तर नहीं दिया। जैसे वह अुसके कंठमें ही रह गया। तभी छमिया दाँत किटकिटा कर अुछली और चित लेट गअी। खीमीने अुस ओर देखा, जैसे मां बच्चेको देखती है। फिर बोली—"भूखी है बेचारी, अिन्हें कुछ डाल दो।" पीरुने सुना और कुछ लेनेकी तलाशमें फिर चल दिया। खीमी अकेली लेटी रही। अुसके कलेजेमें फिर पीड़ा हो रही थी। खीमीको लगा जैसे अुसकी आँखोंके सामने काले डोरोंके जाले बुन रहे हैं और वे क्रमशः अूपर चढकर फिर नीचे अुतर रहे हैं।

पीरु जब पहुँचा—कस्बेके बाजारमें शोर मच रहा था। दूकानें धड़-धड़ बंद हो रहीं थीं। मालूम हुआ, पासके मुहल्लेमें हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया है। पीरुने सुना तो हृदयमें दुःखमयी भावना भर गअी। पीरु खाली हाथ लौट आया। खीमी अब भी चुपचाप पड़ी थी। पीरु कुछ न बोला। झोली टटोल कर अेक मुठ्ठी चने अुसने ज्यों-त्यों कर अिकट्ठा किये और सिकन्दर और छमियाके आगे डाल दिये। वे अुन्हें अेक-अेक कर खा अुठे।

झोलीका सिरहाना लगाकर पीरू लेट गया। वक्त गुज़ारनेकी गर्ज़से अुसने टूटा हुआ आअिना अुठा लिया और अुसमें अपना प्रतिबिम्ब देखने लगा। अुसकी बेतरतीब बढ़ी हुअी दाढ़ीमें चार-छै सफेद बाल जहाँ-तहाँ चमक रहे थे अुन्हें देखकर पीरुको अेक झटका-सा लगा। जैसे वे सूचना दे रहे थे कि पीरुकी अुम्र अब ढल रही है। जिन्दगीका यह आखिरी हिस्सा है। अिसके बाद अुसे पीरुको हमेशाके लिये छोड़ना है। और पीरुका हृदय अुसकी कल्पना-मात्रसे सिहर अुठा। और तब पीरु सोचने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्दगीके गुजरे हुअे दिनों पर। बीते हुअे दिनोंकी स्मृतियां मस्तिष्कमें अुभर आअी। किस प्रकार अुसके माँ-बाप मर गये जमीन और घर करीबी रीश्तेदारोंने छीन लिया। पीरु यतीम और लावारिस रह गया तब अुसके बापके अेक हमदर्द दोस्तने अुसे पनाह दी। पीरुको सब कुछ स्मरण आने लगा। कितने प्यारसे बंसी-चाचाने अुसे पाला था। कभी पीरुमें और अपने गोपालमें कुछ फ़र्क नहीं समझा और सोचने लगा पीरु, तब तो कभी हिन्दू और कभी मुसलमानोंमें झगड़ा नहीं हुआ। दोनों भाअी-भाअीकी तरह रहते थे। दोनोंके दिलोंमें मुहब्बत थी। सब जगह अमन था। कैसी खुश-गुज़ार थी वह जिन्दगी।

पीरुने गर्दन घुमाकर देखा, सिकन्दर और छमिया दोनों गुमसुम पड़े हुअे थे। दोनोंके पेट नहीं भरे थे और भूखकी यंत्रणा साथ-साथ सह रहे थे।। खीमी अब भी चुप लेटी थी।

पीरुका सारा ध्यान अब रखीमी पर केन्द्रित हो गया। कितनी खांविद-परस्त और पाक-दामन है बेचारी। पीरुके साथ-साथ घूमती है, तकलीफ सहती है। पीरु कभी अुसे खुश नहीं रख सका। बच्चोंसे कितनी मुहब्बत है अुसे—पर माँ बननेकी अुसकी अिच्छा पूरी न हो सकी। काश, खुदावन्द करीम अुसकी सूनी गोद भर देता। पीरुकी आँखें डबडबा आअीं।

कुछ देर बाद शोर पास ही सुनाअी पड़ने लगा। पीरु और खीमी अेक साथ चौंक पड़े। देखा अेक भीड़ अुनकी ओर चली आ रही है। 'पकड़ो—मारो' की आवाज़ स्पष्ट सुनाअी पड़ रही थी। बीच-बीचमें 'अल्लाहो—अकबर' का नारा वे लोग लगा रहे थे। पीरुने देखा आगे-आगे अेक आठ-सात वर्षका लड़का भाग रहा है। कुछ लोगोंकी भीड़ अुसका पीछा कर रही है। अिसलिअे कि लड़का हिन्दू है, और वे मुसलमान हैं। यहाँ अिंसान कोअी नहीं है।

लड़का भागते-भागते थक कर चूर हो गया था। पस्त होकर वह पीरुके सामने थक कर गिर पड़ा। बीस कदमके फासले पर भीड़ अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड़ा कर रही थी। पीरुने लड़केको अुठा लिया। लड़का आँखें फाड़-फाड़ कर अुसकी ओर देखने लगा। अिसी बीच भीड़ पास आगअी।

"वह रहा काफिर" अेकने चिल्लाकर कहा।

"हम अिसकी बोटी-बोटी काट डालेंगे" दूसरी आवाज़ आअी।

"यह हरगिज़ नहीं हो सकता, अिस बेगुनाहको मैं नहीं मारने दूंगा।" पीरु तनकर खड़ा हो गया। लड़का अब अुससे चिपट गया।

"छोड़ दो हम अिसका खून करेंगे।" अेक साथ कअी आवाजें आअीं।

पीरु बोला—"अिस मासूमका खून करनेसे तुम्हें क्या हासिल होगा। कौनसी हुकूमत मिल जायगी। देखो अिसकी तरफ। तुम्हारे बच्चेमें और अिसमें क्या फ़र्क है? क्या तुम्हारे औलाद नहीं? अपने कलेजेको काढ कर निकाल सकते हो?"

पीरुके अिस कथनसे निस्तब्धता छा गअी। दूसरे क्षण भीड़में फिर हरकत पैदा हुअी।

"हम नसीहत नहीं सुनना चाहते, यह काफिर है" अेकने कहा।

"देखते क्या हो, काम खत्म करो" दूसरा बोला। अेकने अुछल कर हाथ चलाया। छुरा पीरुकी आंतोंमें खपसे घुस गया। पीरुने लड़केको अपने शरीरसे ढक लिया था। हमलावरका हाथ यकायक रुक गया। पीरु लड़खड़ा कर जमीन पर लुढ़क गया। भीड़ अब लौटने लगी।

शाम होते होते पीरुको होश आया। अस्पतालमें वह चारपाअी पर पड़ा हुआ था। पास ही खीर्मा और अुस लड़केके माता-पिता बैठे थे जिसकी पीरुने जान बचाअी थी। हिन्दू और मुसलमानोंके झुंडके झुंड अुसे देखने आ रहे थे। सबके मुंह पर यही चर्चा थी कि पीरुने अिंसा-नियतका फ़र्ज़ अदा किया है। वह सच्चा मुसलमान है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मन्त्रीकी ओरसे

हमारे आदरणीय अतिथिः—

अिस नये वर्षमें हमें राष्ट्रभाषा—भवनमें अपने जिन महानुभाव अतिथियोंका स्वागत करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ वे हैं गोरखपूर [यू. पी.] के प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी परमहंस बाबा राघवदासजी और कराची-सम्मेलनके अध्यक्ष श्री. वियोगी हरिजी। २४ जनवरीको जब बाबाजी यहाँ पधारे तो अुन्होंने हमारे आग्रह पर राष्ट्रभाषा—भवनके प्राङ्गनमें अपने हाथसे अेक वृक्ष लगा देनेकी कृपा की। हमारे लिये यह वृक्ष राष्ट्रभाषा प्रचार समिति रूपी अुस बड़े वृक्षका प्रतीक रहेगा जिसकी स्थापना अुस समय हुअी थी जिस समय शायद बाबाजी ही हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रचार-मन्त्री थे। हमें विश्वास है कि फलने-फूलनेमें अब अिन दोनों वृक्षोंकी परस्पर होड़ लगी रहेगी।

बाबा राघवदासजीने अिस अवसर पर 'जीवनमें वृक्षोंके स्थान' के बारेमें अेक सुन्दर प्रवचन दिया।

२५ तारीखको वियोगी हरिजी पधारे तो वे अपनी पैदल आनेकी अिच्छाके कारण, आधे भीगे हुअे ही कार्यालयमें पहुँचे। कअी घंटे वे हमारे बीच रहे। वह दिन प्रसादजीका 'दुर्दिन' था। अिस लिये वियोगीजी घूम फिरकर कुछ अधिक देख नहीं सके। हमारे कार्यकर्ताओंको अुन्होंने जो 'दो-शब्द' कहे अुनके लिअे हम अुनके विशेष ऋणी रहेंगे।

यह वियोगीजीकी 'प्राअिवेट विज़िट' थी। तो भी हमें सन्तोष है कि हम अपने अध्यक्षका वर्धामें स्वागत कर सके और वे समितिके कार्यका निरीक्षण करनेके लिये आ सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहित-कुटी:—

२४ तारीखको ही हमारे राष्ट्रभाषा कार्यालयमें अेक बड़ा पुण्य कार्य हुआ। परमहंस बाबा राघवदासजीने अपने हाथों रोहित-कुटीका मुहूर्त किया। गो सेवा संघके मन्त्री श्री. ऋषभदासजी राकाके सुपुत्र—जो अिस संसारमें अेक वर्ष भी नहीं रहा और जाता रहा— श्री रोहितकी पुण्य स्मृतिमें यह कुटी बनने जा रही है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यह कुटी समितिके मन्त्री भिक्षु आनन्द कौसल्यायनको राकाजीका दान होगी।

हमें हर्ष है कि अिस अवसर पर रोहितकी माताजी भी अुपस्थित हो सकी थीं।

भिक्षु रतनसार (सिंहल) ने अिस अवसर पर मङ्गल सूत्रका पाठ किया।

'हिन्दी' 'अुर्दू' या 'हिन्दुस्तानी'

"जहाँ तक 'हिन्दी,' 'हिन्दुस्तानी' और 'अुर्दू' नामोंका सम्बन्ध है, अिस देशकी अिस भाषाके लिअे जिसे बादमें 'खड़ी-बोली' कहा जाने लगा 'हिन्दी' नाम "हिन्दुस्तानी" नामसे तीन सौ बरस पुराना है और 'अुर्दू' नामसे कम-से-कम चार सौ वर्ष पुराना। यद्यपि ये तीनों नाम मुसलमानोंके आनेके बाद और अुन्हींके रखे हुअे हैं। तेरहवीं सदीके अन्तमें फ़ख़रुद्दीन मुबारक ग़ज़नकीने अेक फारसी-हिन्दी डिक्शनरी तैयार की और चौदहवीं शताब्दीके आरम्भमें अमीर खुसरोने अपनी भाषाको 'हिन्दकी' और 'हिन्दी' कहा। कम-से-कम अुस समयसे लेकर अब तक अिस नामका बराबर प्रयोग होता रहा। सोलहवीं शताब्दीसे अिस भाषाके लिये 'हिन्दुस्तानी' नाम भी प्रयुक्त होने लगा। सोलहवीं, सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दीकी बहुतसी पुरानी किताबोंमें 'हिंदुस्तानी' नामका बराबर प्रयोग होता रहा। अिस जबानके लिये जिसे पहले हिन्दुस्तानी कहा जाता था। सतरहवीं सदीमें पहले-पहल 'अुर्दू' नामका प्रयोग आरम्भ हुआ..... ।"

('हमारी जबान' में प्रकाशित पंडित सुन्दरलालजीके लेखसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नये हिन्द' की 'नयी बोली'

प्रयागसे हिन्दुस्तानी कलचर सोसाअिटीकी ओरसे 'नया-हिन्द' नामका जो रिसाला छपता है। अुसका अुद्देश्य हिंन्दी और अुर्दूके बीचकी अेक 'नअी-बोली' तैयार करना है। अिस 'नअी-बोली' के बारेमें अंजुमने तरक्किअे अुर्दूके अख़बार "हमारी-जबान" की राय है—

".....नअी-हिन्दीके 'प्रचारक' सम्भवतः अिसे पसन्द नहीं करेंगे। अुर्दूके पक्षपाती तो निश्चयसे यही कहेंगे कि यह अेक बनी बनाअी जबानको बिगाड़नेका प्रयत्न मालूम होता है। हिन्दुस्तानमें यह 'नयी-बोली' के आविष्कारका आन्दोलन वास्तवमें गान्धीजीने आरम्भ किया था कि वह सारे भारतके लिये अंग्रेजीके स्थानपर अेक मिलीजुली भाषाका काम दे सके। अिसका नाम पहले "हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी" रखा गया था। अब केवल "हिन्दुस्तानी" कहना पर्याप्त समझा जाता है। **अिस आविष्कारका नमूना 'हरिजन सेवक' पत्र है जिसकी लिखाअी अुर्दुमें होती है किन्तु प्रायः शब्द अैसे 'संस्किरती' कि अुर्दू बालोंका तो क्या कहना अच्छे-अच्छे हिन्दी जानने वाले भी बड़ी कठिनाअीसे अिनके अर्थ समझ सकते हैं।** 'नया-हिन्द' वालोंने अिस अधिकतामें कुछ कमी करनेका प्रयत्न किया है। वे शायद अपना क्षेत्र भी अुत्तर-भारत तक ही सीमित रखाना चाहते हैं। हमारी रायमें यदि सदुद्देश्य हो तो पुण्य ही मानना चाहिये, लेकिन तब भी हम 'रिसाले' के संस्थापकोंकी सेवामें कुछ निवेदन करना चाहते हैं—

"सौ डेढ सौ वर्षसे अुर्दू अेक स्थायी साहित्यिक भाषा बन गअी है। व्याकरण और कोषोंने, अुँचे दर्जेके कवियों तथा गद्य-लेखकोंने अिस का ढांचा तैयार कर दिया है और साहित्यिक माप-दण्ड भी। अिसमें ज्ञान-विज्ञानकी हजारों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। सैकड़ों समाचार-पत्र और पत्रिकायें छप रही हैं। अिस हालतमें अुर्दूवाले किसी परिवर्तनको स्वीकार न करेंगे। सम्भव है "नअी" हिन्दीवाले भी यही आपत्ति अुठायें। अैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तमें दोनोंमें तोड़फोड़ करके अेक 'नअी-बोली' प्रचलित करनेमें कैसे ...लता मिल सकती है?"

आनन्द-कौसल्यायन

भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट

श्री. आ. कु. वर्मा

पत्रोंको अधिकारी विद्वानोंके लेख प्राप्त हों, नये लेखकोंकी रचनाओं को स्थान मिले और अुन्हें अुचित पारिश्रमिक प्राप्त हो तथा जनताको साहित्यसे परिचय कराया जाय—यही अुद्देश्य सामने रखकर वर्धाके प्रसिद्ध पत्रकार श्री अुमाशंकर शुक्लजीने 'भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट' की कल्पना की है। यों तो अंग्रेजीमें अिस तरहकी दो चार संस्थाअें भारतमें हैं किन्तु हिन्दीमें अैसी कोअी जीवित संस्था नहीं थी। अिस दिशामें पहले ...के लेखक संघने प्रयत्न किया था किन्तु अुसे सफलता कहाँतक प्राप्त ...यह नहीं कहा जा सकता। हाँ, कानपुरमें शायद 'जयहिन्द प्रेस ...' अिस दिशामें कार्य कर रही है, किन्तु अुसके लेख अिधर पत्रोंमें ...दिखाअी देते हैं।

भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट को स्थापित हुअे अभी सिर्फ चार ही ...ने हुअे हैं; किन्तु अिसने पत्रकार जगतमें अपना अेक स्थान बना लिया ...और हिन्दीके पत्रोंने अिसका सहर्ष स्वागत किया है—यह कम प्रसन्नता ...बात नहीं है। हमारे हिन्दी विद्वानोंकी विचार शैलीका जितना अधिक ...र हो अुतना ही अच्छा। लेखक यह काम नहीं कर सकते। वे तो ...लेख लिखकर किसी अखबारको भेज देंगे—छप जायगा। कुछ लोगोंको ...विचारोंका पता चलेगा और कुछ को नहीं। होना तो यह चाहिये ...जिस तरह अेक खबर भारतके अिस कोनेसे अुस कोने तक समाचार ...अेसोसिअेटेड प्रेस और यूनायटेड प्रेस द्वारा छप जाती है अुसी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर हिन्दी लेखकों और विद्वानोंके विचारोंको भी फैलाया जा सके तो कोअी हानि नहीं है। अगर मान लो राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रधान-मन्त्री भदंत आनंद कौसल्यायन 'राष्ट्रभाषा और रेलें' लेख लिखते हैं तो यह सिर्फ 'राष्ट्रभाषा' में ही न छपकर भारतके तमाम हिन्दी पत्रोंमें छपना चाहिये तभी लोगोंको मालूम हो सकेगा कि राष्ट्रभाषा हिन्दीके साथ कितना अन्याय रेलवे विभाग कर रहा है। यह काम 'भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट' सरीखी संस्थाओंका है।

सिंडिकेटने अैसे विद्वानोंको हिन्दीमें लिखनेको अुत्साहित किया है जो अंग्रेजीमें ही लिखा करते थे और वे हिन्दीमें अिसलिये नहीं लिखते थे कि अुन्हें हिन्दीवाले पारिश्रमिक रूप कुछ देते न थे।

सिंडिकेटने अिस दिशामें अपना कदम बढ़ाया है। सामयिक विषयोंपर सिंडिकेट अधिकारी विद्वानोंसे लेख लिखवाता है और साथ ही साथ अुगते हुअे हिन्दी लेखकोंको प्रोत्साहन भी देता है। अबतक अिस अल्प अवधिमें सिंडिकेटके करीब दो सौ लेख विभिन्न पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं।

आशा है श्री अुमाशंकर शुक्लजीका यह प्रयत्न हिन्दी प्रान्तोंतक ही सीमित नहीं रहेगा। बल्कि शीघ्र ही वे अहिन्दी प्रान्तोंके अुन लेखकों और विचारकों तक भी पहुँचेंगे जो राष्ट्रभाषाका साधारण ज्ञान रखते हुये भी केवल प्रान्तीय भाषाओंमें ही लिखते रहे हैं।

परीक्षा-विभाग

परीक्षा फलः—

फरवरी' ४७ में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षा-फल ३० मार्च' ४७ को प्रकाशित होगा।

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाः—

सितम्बर' ४७ में राष्ट्रभाषा रत्नकी आगामी परीक्षा होगी। परीक्षा आवेदन पत्र ३१ मअीतक वर्धा कार्यालयमें आ जाना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रत्न' परीक्षामें सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना-पत्र वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अप्रैल है।

सितम्बर ४७ में होनेवाली 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षाका पाठ्यक्रम पूर्ववत्‌ही रहेगा।

परीक्षा केन्द्र:—

समितिके स्वीकृत केन्द्रोंके अलावा परीक्षाओंका नया केन्द्र कोअी खोलना चाहे तो खास फार्म भरकर अुसकी परीक्षाकी तारीखसे कमसे कम दो महीने पहले प्रान्तके संचालककी सम्मतिके साथ वर्धा पहुँचाना चाहिये। यह फार्म ३० जून तक वर्धा कार्यालयमें आ जाना चाहिये।

पाठ्यक्रम परिवर्तन:—

आगामी सितम्बरमें होनेवाली प्रचार परीक्षाओंके लिये पाठ्यक्रम अिस प्रकार रहेगा—

पाठ्य पुस्तककी सूची

[केवल सितम्बर ४७ के लिये]

पाठ्य-पुस्तकें:—

१ राष्ट्रभाषा प्रारंभिक परीक्षा

(प्रश्नपत्र १)

पुस्तकें:— १-०-०

अंक १००, समय ३ घंटे

(१) प्रारंभिक बोधिनी (प्रचार समिति, वर्धा) ०—३—०
(२) राष्ट्रभाषाकी पहली पुस्तक (,,) ०—६—०
(३) ,, दूसरी पुस्तक (,,) ०—७—६

अनुवाद—हिन्दीसे मातृभाषामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२-राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षा
(प्रश्नपत्र २)

शुल्कः— १-८-०

प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटेका

पहला प्रश्नपत्रः—गद्य पद्य — पूर्णांक १००

(१) राष्ट्रभाषाकी तीसरी पुस्तक (प्रचार समिति, वर्धा) ०—७—६
(२) गुलदस्ता भाग १ (,,) ०—६—०

दूसरा प्रश्नपत्रः— (कहानी, पत्र, निबन्ध, व्याकरण, मुहावरे तथा अनुवाद) पूर्णांक १००

(१) कहानी संग्रह भाग १ (प्रचार समिति, वर्धा) ०—६—०
(२) सरल रचना और पत्रलेखन (,,) ०—६—०
(३) मुहावरे और कहावतें (,,) ०—१२—०

(मौखिक परीक्षा नहीं रहेगी।)

३ राष्ट्रभाषा परिचय परीक्षा
(प्रश्नपत्र ३ और मौखिक परीक्षा)

शुल्कः— २—८—०

प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटेका

पहला प्रश्नपत्रः—पद्य— पूर्णांक १००

(१) मिलन (श्री रामनरेश त्रिपाठी)
अथवा— (केवल सितम्बर ४७ के लिये)
पंचवटी (श्री. मैथिलीशरण गुप्त) ०—६—०
(२) गुलदस्ता भाग २ (प्रचार समिति, वर्धा) ०—७—६

दूसरा प्रश्नपत्रः—गद्य, नाटक तथा कहानी पूर्णांक १००

(१) चलती हिन्दी (प्रचार समिति, वर्धा) ०—१२—०
(२) रक्षा बन्धन (श्री हरिकृष्ण प्रेमी) १—१—०
(३) कहानी संग्रह भाग २ (प्रचार समिति, वर्धा) ०—९—०

तीसरा प्रश्नपत्रः— निबन्ध, व्याकरण, मुहावरे अनुवाद और पत्र-लेखन

सहायक पुस्तकें :

(१) मुहावरें और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा) ०—१२—०
(२) संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण (श्री कामताप्रसाद गुरु) १—०—०
(३) निबन्ध प्रबोध

(मौखिक परीक्षा ५० अंककी होगी।)

[पुस्तकीय और हस्तलिखित पठन, वाचन २० अंक और मौखिक बातें ३० अंक]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा

(प्रश्नपत्र ४ मौखिक परीक्षा और लेखन कार्य)

कुल अंक:— ४—०—० प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटेका

पहला प्रश्नपत्रः—पद्य पूर्णांक १००

(१) जयद्रथ वध (मैथिलीशरण गुप्त) ०—१२—०

(२) गुलदस्ता भाग ३ (प्रचार समिति, वर्धा) ०—१२—०

दूसरा प्रश्नपत्रः—गद्य, निबन्ध, नाटक और कहानी पूर्णांक १००

(१) हिन्दी गद्यमाला (श्री पदुमलाल बक्शी) १—९—०

हिन्दी गद्यमालामेंसे सिर्फ ये पाठ रहेंगेः—

१. स्मृति ज्ञान कीर्ति, २. वैशाली, ३. तुम हमारे कौन हो ? ४ पंच परमेश्वर, ५. आन्दोलन, ६. हिन्दु धर्म क्या है ?, ७. अबसे सौ बरस बाद, ८. दादा और पोतेकी चिठ्ठी, ९ अहिंसाकी विजय, १० कुत्ते, ११. सदाचार और प्राकृतिक चुनाव ।

(२) कहानी संग्रह भाग ३ (प्रचार समिति, वर्धा) ०—१२—०

(३) शाहजहाँ (श्री. द्विजेन्द्रलाल राय) १—८—०

(४) चुने हुअे अेकांकी (प्रचार समिति, वर्धा)

अथवा..... (केवल सितम्बर ४७ के लिये)

अशोक (श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र) १—८—०

तीसरा प्रश्नपत्रः—(निबन्ध, व्याकरण, मुहावरे, सारलेखन, शीघ्रवाचन, अनुवाद—मातृभाषासे हिन्दीमें) पूर्णांक १००

(१) गोदान (श्री प्रेमचंद; संक्षिप्त संस्करण) ४—०—०

(२) आत्मकथा (गांधीजी; संक्षिप्त संस्करण) १—०—०

(३) मुहावरे और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा) ०—१२—०

(४) संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण (श्री कामताप्रसाद गुरु) १—०—०

चौथा प्रश्नपत्रः—भाषा साहित्यका अितिहास और समालोचना पूर्णांक १००

(१) हिन्दी भाषा और लिपि (श्री धीरेन्द्र वर्मा)

(२) साहित्य शिक्षा (श्री पदुमलाल बक्षी) २—०—०

साहित्य शिक्षामेंसे सिर्फ ये पाठ रहेंगेः—

१. साहित्य क्या है ? २. साहित्यका अुद्देश्य, ३. कला और अुसका प्रयोजन ४. कहानी, ५. अुपन्यासका विषय, ६. अैतिहासिक अुपन्यास, ७. नाटक, ८. कविता और कवि, ९. प्रेमचंदजीकी कला १०. हिन्दीके मर्मी कवि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) राष्ट्रभाषा प्रचार सर्व संग्रह (प्रचार समिति, वर्धा) ०--१५--०

(४) हिन्दी साहित्यका संक्षिप्त अितिहास ०--१०--०

अथवा

(सिर्फ सितम्बर ४७ के लिये)

हिंदी साहित्यका सुबोध अितिहास (श्री गुलाबराय) २--०--०

मौखिक परीक्षा १० अंककी होगी।

(पुस्तकीय व हस्तलिखित पठन, वाचन ३० अंक, लेखन कार्य २० अंक और मौखिक बातें ५० अंक)

लेखन कार्यके लिये २० अंक हैं। परीक्षार्थी अपनी तैयारीकी अवधिमें विभिन्न विषयोंपर तीन-तीन पेजके आठ लेख लिखेंगे। अिन्हें अपने हिन्दी शिक्षकसे समय-समय पर संशोधित कराना होगा। हिन्दी शिक्षक अुनपर अपने हस्ताक्षर करेंगे। अुन लेखोंके आधार पर मौखिक परीक्षक योग्य अंक देंगे।

विशेष सूचना—

प्रमाणित प्रचारकोंसे—

अिस बार हम अुन सभी प्रमाणित प्रचारकोंसे परीक्षकके रूपमें सहायता प्राप्त करना चाहते हैं जो सक्रिय रूपमें राष्ट्रभाषाके प्रचारमें हमारा हाथ बटा रहे हैं। परीक्षक नियुक्ति पत्र भेजे जा चुके हैं। यदि किसीको अबतक न मिला हो तो शीघ्रसे शीघ्र सूचित करें।

परीक्षकोंसे—

अुत्तर पुस्तकोंका बंडल समयपर आपके पास पहुँचेगा। कृपया जाँचकर समयके अन्दर ही भेज दें। निश्चित समयपर परीक्षाफल तभी प्रकाशित किया जा सकता है जब आपका पूरा सहयोग हमें मिले। आशा है वह हमें मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

कुरुक्षेत्र:—रचयिता— **श्री. रामधारी सिंह "दिनकर"।** प्राप्तिस्थान **अुदयाचल, पटना, मूल्य ३॥)।**

कविवर "दिनकर" की यह कृति व्यासके महाभारतकी पुनरावृत्ति न होकर अुनकी अपनी नअी कृति है। अंग्रेजी मुहावरेका अुपयोग कर सकें तो कहना होगा कि 'कुरुक्षेत्र' में 'दिनकर' ने पुरानी बोतलमें अेक दम नअी शराब ढाली है, और गज़बकी।

युद्ध अथवा शान्ति, बाहुबल अथवा आत्मबल, निवृत्ति मार्ग अथवा प्रवृत्ति मार्गका प्रश्न आज सारे विश्वके सामने नये रूपमें आ खड़ा हुआ है। "दिनकर" ने अेक दार्शनिककी सूक्ष्म विचार-धारा और अेक कविकी सरसताका प्रयोग कर अिन सामयिक प्रश्नोंका समाधान करनेका प्रयत्न किया है। पुस्तक समाप्त करते ही तुरन्त फिर पढ़नेकी अिच्छा होती है। अिसमें सन्देह नहीं कि 'दिनकर' को अुन्होंने अपने 'कुरुक्षेत्र' द्वारा प्रकाशकी कुछ किरणोंका दान दिया है—जिसके लिये अुनके काव्यके प्रेमी अुनके कृतज्ञ होंगे।

पुस्तकको बहुत बारीकीसे देखने पर अैसा भी लगता है कि अुसमें कहीं कहीं आत्म-विरोध है। कविने स्वयं अपनी विनम्र भाषामें अिसका ज्ञान कर दिया है। कुरुक्षेत्र न तो दर्शन है और न किसी ज्ञानीके गहरे मस्तिष्कका चमत्कार। वह तो अन्ततः अेक साधारण मनुष्यका शंकाकुल हृदय ही मस्तिष्क पर चढ़कर बोल रहा है। "शंकाकुल हृदय विश्वके सारे ज्ञान-विज्ञानका जनक है। हमें आशा है कि "दिनकर" की यह कृति खूब पढ़ी जायगी और पढ़ी जायगी बारबार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंन्दी-प्रयोग : लेखकः— **श्री० रामचन्द्र वर्मा, साहित्यरत्न ग्रन्थ रत्न-माला कार्यालय, २७ धर्मकूप, वनारस मूल्य १॥)।**

'अच्छी हिन्दी' के बाद श्री वर्म्माजीने भी हिन्दी-वालोंको 'हिन्दीके प्रयोग' दिये हैं, किन्तु यह छोटी पुस्तक बड़ी पुस्तकसे पहले पढ़नेकी है। अिसमें लेखकने 'विद्यार्थियोंकी भाषा' में हिन्दी लेखनसे संबंध रखनेवाली लगभग सभी बातें दे दी हैं और सरल ढंगसे पुस्तक अुन बड़े लोगोंके कामकी भी है जो छोटी-छोटी गलतियोंकी ओरसे अुदासीन रहते हैं।

लाल किलेमें : सम्पादकः—**श्री० रतनलाल जोशी तथा श्री० घनश्यामचन्द्र वन्धु।** प्रकाशकः— **लोक-भारती, जयपुर सिटी, पृष्ठ-संख्या २५०, मूल्य २)।**

१८५७ के बाद भारतीय स्वतंत्रताके लिये भारतके जिन सुपुत्रोंने "आजाद हिन्द फौज" के सैनिकोंकी हैसियतसे प्राण दिये अुनकी अमर गाथा सदाके लिये अमिट हो गअी। अुसी सेनाके तीन अफसरों—शाहनवाज, सहगल और ढिल्लन-पर अंग्रेजी न्यायालयने लाल किलेमें जो मुकदमा चलाया अुसने 'आजाद हिन्द फौज' की ख्यातिको दिग-दिगन्त तक फैला दिया। अिस पुस्तकमें अुसी मुकदमेकी कारवाअीके बहाने 'आजाद हिन्द फौज' का पूरा अितिहास दिया गया है। यह अितिहास अितना अुद्बोधक है कि स्वराज्य-प्राप्तिके बाद भी अपने पूर्वजोंकी अमर कहानीके रूपमें पढ़ा जायगा।

हम सम्पादक-द्वयको यह अुपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित करने-करानेके लिये बधाअी देते हैं और आशा करते हैं कि हिन्दी पाठक अिसे चावसे पढ़ेंगे।

आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका

प्रस्तावित व्याकरण-पाठ्यक्रम

प्रारंभिक

वर्ण-विचारः— 'अ' की बारहखड़ीका प्रयोग, साथ ही साथ पुराने स्वर व्यंजन.

हिन्दी-वर्णमाला, नागरी अंक, स्वर, व्यंजन, अनुस्वार ज़, ड़ और ढ़ के विशेष प्रयोग.

शब्द-विचारः— (परिभाषाएं तथा उदाहरण अपेक्षित नहीं)

१ संज्ञाः—

२ सर्वनामः— शुद्ध रूपमें लिखा जाना अपेक्षित है।

३ क्रियाः— काल, कालके तीन भेद, आज्ञावाचक क्रिया, वाक्योंके काल परिवर्तन अपेक्षित हैं।
कर्ता, कर्म पहचानना।

४ वचनः— दिये हुअे वाक्योंके या शब्दोंके अन्य वचन।

५ लिंगः—

६ कारकः— प्रत्ययोंका शुद्ध लिखा जाना, प्रत्ययके योगके पहले संज्ञा तथा सर्वनामके होनेवाले विकृत रूप।

७ विशेषणः— संज्ञाके लिंग वचन कारकके अनुसार होनेवाले विशेषणके विकार।

८ क्रिया विशेषणः— वाक्योंमें प्रयोग

९ सम्बन्ध बोधकः— ,,

१० समुच्चय बोधकः— ,,

११ विस्मयादि बोधकः— ,,

[विशेषः— प्रारंभिकके लिये व्याकरणका स्वतंत्र पाठ्यक्रम समझना नहीं चाहिये। प्रश्न-पत्रमें परीक्षार्थियोंके शुद्ध लेखन तथा शुद्ध भाषाकी जाँच करनेके लिये अेक प्रश्न पूछा जायगा।]

वाक्य-विचारः— सरल वाक्यका पृथक्करण, वाक्यके भेद— विधान, निषेध, प्रश्न।

परिशिष्टः— १. शुद्ध लेखनके नियम २. विराम चिन्ह (पूर्ण, प्रश्न)
३. कुछ शब्दोंके प्रयोगः—क्योंकि, अिसलिये, कबसे, कबका, यों, ज्यों, जो, कि, तक आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

वर्ण-विचार:— हिन्दी वर्णमाला, अंक, स्वर, व्यंजन, ह्रस्व, दीर्घ, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग।
क़, ख़, ज़, फ़ तथा ड़ ढ़ के प्रयोग।

शब्द-विचार:— परिभाषाएँ अपेक्षित नहीं, उदाहरण अपेक्षित है।

१. **संज्ञा:**— नामवाचक, जातिवाचक, भाववाचक

२. **सर्वनाम:**— पुरुष, निश्चय, संबंध, प्रश्न, अनिश्चय।
पुरुषवाचक पर अधिक ध्यान देना चाहिये।

३. **क्रिया:**— काल, कालके भेद, तीन उपभेद,
वर्तमान सामान्य पूर्ण अपूर्ण
भूत ,, ,, ,,
भविष्यको केवल एक ही भेद माना जाय।
अर्थका दिग्दर्शन, आज्ञावाचक, विधिद्योतक क्रियाएँ
सकना, चुकना, देना, करना, लगना—अन्य
सहायक क्रियाओंके प्रयोग जानना ज़रूरी है।

४ **वचन लिंग:**—

५ **कारक:**— 'ने' को छोड़कर बाकी प्रत्ययोंके प्रयोग

६ **विशेषण:**— संख्या, गुण, सार्वनामिक

७ **क्रिया विशेषण:**— स्थल, काल, रीति

८. संबंध समुच्चय तथा विस्मयादिबोधक अव्ययोंका प्रयोग अपेक्षित है।

९. **पदपरिचय:**—

विशेष:— केवल विकारी शब्दोंके उदाहरण अपेक्षित हैं।

वाक्य-विचार:— सरल वाक्यका पृथक्करण, वाक्यके भेद, विधान, निषेध, प्रश्न, संदेह, अिच्छा।

परिशिष्ट:— १. शुद्ध लेखनके नियम २, विराम चिन्ह [पूर्ण, प्रश्न, स्वल्प, उद्गार, अर्ध] ३ कुछ शब्दोंके प्रयोग बल्कि, कहीं, कहींसे, कहींका, योंतो, योंही, जोकि, या, यातो, ज्यों, ज्योंही, सिवाय, अलावा के मारे, लाना क्रिया, चाहियेका प्रयोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय

वर्ण-विचारः— हिन्दी-वर्णमाला तथा अंक
स्वर ह्रस्व दीर्घ संयुक्त
व्यंजन ,, ,, ,,
अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, बिन्दीवाले अक्षर, वर्णोंके उच्चारणस्थान, शब्दोंके उच्चारण, सन्धि, स्वर और व्यंजन

शब्द-विचारः—

१ संज्ञाः— नाम, जाति, भाव, जातिवाचकसे भाववाचक बनाना।

२ सर्वनामः— सर्वनामके सभी प्रकार

३ क्रियाः— प्रकार, काल, अर्थ, प्रयोग, सहायक क्रियाएं प्रेरणार्थक क्रियाएं, कृदन्त।

४ वचन लिंगः— लिंग पहचाननेके सामान्य नियम।

५ कारकः— सभी प्रत्ययोंके प्रयोग, विभक्ति प्रत्ययकी जगह आनेवाले कुछ संबंध बोधक अव्यय।

६ विशेषणः गुण, सार्वनामिक, संख्या, गणना, क्रम, आवृत्ति।

७ क्रिया विशेषणः— स्थल, काल, रीति, परिमाण

८ संबंध सूचकः—समुच्चय तथा विस्मयादि बोधक अव्यय

९ उपसर्ग तथा प्रत्यय, १० समास, ११ पदपरिचय, पदक्रम।

वाक्य-विचारः— वाक्यके तीन प्रकारः—सरल, संयुक्त, मिश्र।
वाक्य पृथक्करण।

कोविद

वर्ण-विचारः— हिंदी वर्णमाला, अंकोंका संक्षेपमें अतिहास (अक्षरोंका विकास अपेक्षित नहीं।) वर्णमालाका नाम, उसका प्रचार, अन्य भारतीय लिपिओंसे समता आदि। स्वर, व्यंजन, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, बिन्दीवाले अक्षर, वर्णोंका उच्चारणस्थान, स्वराघात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंजनोंके प्रकार, शब्दोंके उच्चारण—
सन्धि, स्वर, व्यंजन, विसर्ग
प्रकृतिके अनुसार शब्दोंके भेद

शब्द-विचार:-

१. **संज्ञा:**— भेद; क्रिया तथा विशेषणसे भाववाचक संज्ञा बनाना
२. **सर्वनाम:**— भेद, प्रश्न तथा अनिश्चय सर्वनामके तुलनात्मक प्रयोग
३. **क्रिया :**— प्रकार, काल, अर्थ, प्रयोग, वाच्य, सहायक, संयुक्त, प्रेरणार्थक क्रियाएं; धातु, क्रियाप्रत्यय, कृत्प्रत्यय, कृदन्त
४. **वचन लिंग:**— परिचयके अनुसार
५. **विशेषण:**— संख्या, गुण, सार्वनामिक; संख्याके भेद—गणना आवृत्ति, क्रम (विस्तार पूर्वक), परिमाण, सादृश्य
६ **क्रिया विशेषण:**-स्थल, काल, रीति, परिमाण, निषेध, स्वीकृति, दिशा
७ संबंध तथा विस्मयादि बोधक अव्यय परिचयके अनुसार
८. **समुच्चय-बोधक:**— सिर्फ दो भेद (संयोजक और वियोजक)
९ पदपरिचय १० तद्धित ११ अुपसर्ग १२ समास
१३ व्युत्पत्तिके अनुसार शब्दके भेद—
तत्सम, तद्भव, देशज, रूढ़
१४ शक्ति या अर्थके अनुसार तीन भेद:—वाच्य, लक्ष्य, व्यङ्ग्य

विशेष : कृदन्त, तद्धित, अुपसर्ग और समासके विषयमें विस्तृत जानकारीकी अपेक्षा है।

वाक्य-विचार:— वाक्यके भेद प्रकार; प्रधान तथा आश्रित वाक्यको पहचानना। वाक्य विश्लेषणमें नीचेकी बातें अपेक्षित हैं। अुद्देश्य विस्तार, अुद्देश्य, कर्म, कर्मपूरक विधेयविस्तार, विधेय।

परिशिष्ट:—
१. शुद्ध लेखनके नियम [सकारण]
२. विराम चिन्ह।
३. अब तक प्रश्नपत्रोंमें जो विशेष प्रश्न पूछे गये हैं अुनको हल करके बताना।
४. भाषा शैलीके कुछ अुदाहरण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन — [illegible] प्रचार समितिसे संचालित

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाएँ

८, ९ फरवरी १९४७ की परीक्षाओंके केन्द्र

और

परीक्षावार परीक्षार्थियोंकी संख्या

भिन्न भिन्न प्रांतोके केन्द्रोंसे नीचे दिये विवरणके अनुसार आवेदनपत्र आये:—

प्रांत	केन्द्रसंख्या	प्रारंभिक	प्रवेश	परिचय	कोविद	कुल
असम	१३	६३७	१४७	२८	५	८१७
बंगाल	४	१५०	७	२	१	१६२
अंध्र	२८	१३८५	३३५	७६	८	१८०४
सिंध	४२	१३८६	५७१	१६८	३४	२११०
अन्य	३	४०	१५	१३	१०	७८
गुजरात	१६३	५४६८	२९०४	८०३	१४९	९३२४
महाराष्ट्र	११३	३७२०	२३९०	६११	१९६	[illegible]
बंबई	१३	१३९६	१२२४	४२८	९१	१७३६
विदर्भ नागपुर	४४	१४४४	७८६	२१४	३९	२५२६
कुटकर	२५	१६४	९२	५१	१०	३१७
केन्द्र ४२३	कुल	१६३९०—	८४९२—	२४३४ —	५५५ —	२७८७१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४७ की परीक्षार्थियोंकी [illegible] तथा परीक्षावार [illegible]

असम

क्रमांक केन्द्र	प्रारं.	प्रवेश	परि.	को.	कुल
केन्द्र २८ के	१५१	७	३३	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१	२१५
[illegible]थपु	१५	१०	३	१	८०
[illegible]	[illegible]	०	१	०	१६
[illegible]	२६	६	०	०	३२
९ क नार्थ गौहाटी	६१	४	०	०	६५
१० नोगांव	१७३	५२	९	२	२३६
११ क पश्चिम गौहाटी	३८	२	०	०	४०
१२ पुबथरिया	१६	१०	१	०	२७
१३ बलमा	१९	८	३	१	३१
१४ रहा	३०	१	०	०	३१
१५ क सरानिया	१७	१	०	०	१८
१६ शिलांग	१०	०	०	०	१०
१७ सिलहट	१५	१	०	०	१६
केन्द्र १३	कुल ६३७	१४७	२८	५	८१७

बंगाल

क्रमांक केन्द्र	प्रारं.	प्रवेश	परि.	को.	कुल
१३४ अन्दालीपुर	०	०	०	२	२
१५१ कालकत्ता	१३४	७	२	१	१४४
१५क चटगांव	१५	०	०	०	१५
१६० दार्जिलिंग	१	०	०	०	१
केन्द्र ४	कुल १५०	७	२	[illegible]	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	केन्द्र					
		१				
		३				
५४	चंपापुर	२२				
५४क	चिकटोगढ़	२७				
५५	चौद्वार	१५	२०			
५५क	छत्रपुर	३४	२			
५६	जगतसिंहपुर	६५	४३			
५६क	जगन्नाथप्रसाद	३१	०	०	०	२४
५९ख	टांगी	२४	०	०	०	१३
६०	नयागढ़	१८	३	०	०	७
६०क	नुआपाड़ा	२७	०	१	०	७
६२क	पाटपुर	२६	०	०	०	७
६२ख	पालखेमुंडी	१०	६	०	०	८
६२ग	पात्रपुर	३२	०	२	०	६४
६२घ	पुड़ामारो	१५	७	०	०	१५
६३	पुरी	३९	२१	९	५	७९
६४	बरहमपुर	१८०	४८	१९	२	२९१
६६	बारीपदा	७४	२७	१	१	१०३
६७	बालेश्वर	०	५	०	०	५
६७क	बुगुड़ा	२३	१	०	०	२१
६७ग	बोअीरानी	७२	९	२	०	८३
६७घ	मद्रक	९२	०	०	०	२३
६९	रसलकोंडा	७५	०	०	०	७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रवेश			कुल
	०	०		३५
	४५	१	०	१२१
	१		०	१६
	१	०	०	३
	२७	१	०	
	३३५	७६	८	१/१४

२४७ की परीक्षाओं के

परीक्षार्थियों की

असम

प्रारं.	प्रवेश
१५१	५३८५

केन्द्र २८

६

१५

सिंध

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
७५ अब्दू	९	११	१	०	२१
७७ कंडियारो	२७	१४	१०	०	५१
७८ कंधकोट	१७	१६	१	०	३४
७९ कराची	५४२	२०१	६७	२१	८३१
८१ कोटड़ी	७	५	१	०	१३
८३ खानपुर	५	२	२	०	९
८७ गड़हीखैरो	५१	१०	४	०	६५
८८ गरहीयासीन	१४	५	०	०	१९
९० चक	२०	१४	३	०	३७
९१ जकोबाबाद	२२	१७	१	३	४४
९१क टंडोअलिहार	२	८	०	०	१०
९२ टंडोआदम	४०	४	१	०	४५
९३ टंडोमुहब्बतखान	७	२	०	०	९
९४ ठारूशाह	९	२	०	०	१९
					११८
					८२
					६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
९७ डहरकी	१४	४	१	०	१९
[illegible]लहार	९	१	०	०	[illegible]
९९ थर्डीमुहब्बत	१८	३	३	०	२४
१०० दरियाखानमरी	३	३	१	०	७
१०१ दादू	१२	५	[illegible]	०	[illegible]
१०३ नौदेरो	१३	७	१	०	[illegible]
१०४ नवाबशाह	७	८	[illegible]	०	१६
१०४ क नरसपुर	१०	०	०	०	१०
१०५ नौशहरोफेरोज	१८	८	०	५	३१
१०६ पीरगोठ	२०	१३	४	०	३७
१०८ मद्देजी	१	२	०	०	३
११२ मिठ्ठी	०	१	५	०	६
११६ मेहराबपुर	२३	२	१	०	२६
११८ रत्तोदेरो	१०	१२	१	०	२३
११९ रुस्तम	११	१०	३	०	२४
१२० लारकाना	१२	६	३	२	२३
१२२ शहादादपुर	३३	१३	४	०	५०
१२३ शहापुरचाकर	१३	७	०	०	२०
१२४ शिकारपुर	१८२	६०	१८	१	२६१
१२५ सकरंड	६	५	०	०	११
१२६ सक्कर	९५	४१	९	२	१४७
[illegible]८ सुजावल	६	२	२	०	१०
[illegible] सैदूदेरो	३	२	२	५	१२
[illegible]हाला नया	४	६	२	३	१५
६७[illegible]नी	१९	४	१	०	२४
६८[illegible]द (सिंध)	७२	३५	१४	३	१२४
[illegible]कुल	१३८६	५७२	१६८	३४	२१६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य

क्र.	केन्द्र	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
१६क	अजमेर	१७	१	०	०	१८
११७	जावरा	२३	१४	१३	१०	६०
केन्द्र २	कुल	४०	१५	१३	१०	७८

गुजरात

क्र.	केन्द्र	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
१४०	अंकलेश्वर	२८	२६	४	०	५८
१४०क	अडास	३७	३	०	०	४०
१०२	अमरेली	३३	२६	२	०	६१
१४७	आविधा	९	१५	६	०	३०
१४८	अहमदाबाद	७०८	३१२	१३१	४४	१२९५
१४९	आकलाव	२१	३	०	०	२४
१५०	आगलोड	७	९	४	०	२०
१५१	आनंद [शा. हा.]	६०	२४	४	३	९१
१५२	आनंद (पा. हा.)	११२	४१	१२	०	१६५
१५४	आमोद	३२	१५	१	०	४९
१५५	आटाला	१०	१४	८	१	३३
१५६	ओडर	३४	१७	४	०	५५
१५७	ओसंड	९	३	७	०	१९
१५९	ओनावा	७४	३१	१०	०	११८
१६०	ओनावा (नया)	१७	९	३	०	६२
१६१	ओमता	६	९	१	०	६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

		६				
१६२	अमरेड	३६	१०	०	६	
१६५	ओड़	१४	५	२	०	३१
१६६	ओरणा	७	७	४	०	१४
१६७	कंजरी	१	५	०	०	
१६८	कंथरिया	२६	९	१	०	७६
१७२		१९	३	८	४	१२४
१७३	कड़ोद	१०	७	०	०	१०
०७६	करजन	१५	९	४	०	१८
७७	करमसद	२९	३१	१२	५	७७
१७९	कल्लोल	३४	१४	७	१	५६
१७९	कविठा	४२	१२	७	०	६१
१७९क	काणपुर	२३	१०	०	१	३३
१८०	कामरेज	२	१	६	०	५०
१८१	कारवण	१५	१	०	०	१६
१८२	कारेली	९	५	०	०	१४
१८३	कोलाल	३९	१९	१	०	५९
१८४	कासर	८	१२	१	०	२१
१८	कोटड़ी कच्छ	७	३	०	०	१०
१८६	खडसूपा	१०९	३६	८	०	१५३
१९०क	खेरवा	२९	२९	१	०	५९
१९१	गड़त्र	२३	२	०		२७
१९२	गणदेवा	८	६	३	०	१७
१९३क	गणेशपुर	९	३	०	०	१२
१९४	गजाड़ा	३१	१७	५	०	५१
१९५		८	०	२	०	१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	पी.	कोविद	कुल
१९७ गोधरा	१५	१८	६	०	३९
१९७क घोडासर	१४	०	०	०	१२
१९९ चराड़ा	२४	१२	१	०	३७
२०० चांगा	२१	१३	१	०	२५
२०१ चांदोद	१३	५	२	१	२१
२०१क चाणसमा	५७	०	०	०	५७
२०२क छत्राल	१८	४	०	०	२२
२०४ जंत्राल	२	५	०	०	७
२०६ जफराबाद	६	२	२	०	१०
२०६क जामनर	८८	६१	०	०	१४९
२०८ जितोड़िया	९	४	१	०	१४
२१० जेतलपुर	५२	२७	२	०	७१
२१० क जोशीकुआ	२०	१०	५	५	४५
२१३ख टिंटोदन	४१	१०	२	०	५४
२१५ ठासरा	९	७	०	०	१६
२१७ डाकोर	३२	१८	२	२	५५
२१७क डांगरवा	२५	०	०	०	२५
२१९ तलोद	२५	६	३	०	३४
२२०क तोरणा	१७	०	०	०	१७
२२२ दूधवाड़ा	९	८	३	०	२०
२२४क देलोल	२१	१	६	०	२८
२२३ दोहद	२९	२४	८	०	७१
२२७ धर्मजरणोली	११	७	१	०	२१
२२८ धरमपुर	१५	७०	२५	०	८०
२२९ धांगध्रा	२३	६	०	०	२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक केन्द्र	प्रांर.	प्रवेश.	परि.	को.	
२३० धिनोज	२७	८	०	०	
२३१ धोरणधारडी	९	९	३	०	३५
२३२ धोलका	६८	२६	९	०	२१
२३४ नड़ियाद	४६	४६	१६	६	१०३
२३६ नवसारी	०	२	२	१	११४
२३७ नयाडीसा	९	१०	८	४	३
२३८ नारदीपुर	२८	८	३	०	३१
२३९ पाटड़ी	१५	१२	२	०	२९
२४० पाटण	२७	११	२	०	२९
२४१ बादरा	५८	३६	११	०	५०
२४२ पालनपुर	६	५	०	०	१०५
२४४ पारडी	४४	२१	३	०	११
२४५ पालनपुर	१५	४	२	०	६८
२४७ पालेज	१२	३	२	०	२१
२४८ पिलवाई	७४	३४	६	०	१७
२४९ पिपलाव	६	१५	२	०	११४
२५२ पोरबंदर (पु.)	१३	१३	२	१	३३
२५३ पोरबंदर (स्त्री)	३७	१३	१६	०	२९
२५४ प्रांतिज	२२	१७	५	५	६६
२५६ बरवाला	८	६	१	०	४९
२५७ बलनपरव	२०	१३	३	०	१४
२६१ बांधनी	२६	१६	२	०	३३
२६१क बांकानेर	१२	१४	३	०	४४
२६३ बालासिनोर	२४	४	०	०	२९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

		प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
	२६६ बावला	७३	३८	१	०	११२
३५	२६८ बुहारी	१६	२	१	०	१९
२१	२७० बोरसद	३९	६	०	०	४५
१०३	२७१ भड़ोच	८८	६१	१४	३	१६६
११४	२७२ भांडू	४	७	३	०	१४
३	२७५ भादरवा	१३	२०	६	०	३९
३१	२७७क भावनगर	६४	३८	२	०	१०४
३९	२७८ भुज	६७	२८	८	०	१०३
२९	२७६ भोलोद	८	३	३	०	१४
५०	२७९क मंडाला	१९	०	०	०	१९
१०५	२८१ मणुंद	१५	७	२	०	२४
११	२८३ महीज	२१	९	०	०	३०
६८	२८५क महुवा	४९	३९	६	८	१०६
२१	२८८क मंहेलोल	३९	८	०	०	४७
१७	२८७ महेलोल	६	५	३	०	१४
११४	२८८ महेसाना	४	२	१	१	८
३३	२९० मांडवी	१०	६	०	०	१६
२९	२९१ माणेकपुर	७	४	०	०	११
६६	२९३ मासररोड़	१४	०	१	०	१५
४९	२९४ मियासरमाण	२५	२८	९	०	७१
१४	२९६क मोगरी	३२	२	१	०	३५
३६	२९९ मीमारोड़	१६	२७	२०	११	७४
४४	३०१ रणापुर	१२	४	३	६	२५
२९	३०२ रणुंज	२८	१	१	०	३०
२८						

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
३०३ रतनपुर	१४	३	१	३	२१
३०५ राजकोट	८४	३५	१७	२	१३८
३०६ राणपुर	४	७	४	०	१५
३०६क रामनगर	७१	२४	६	०	१०१
३०७ रायम	०	०	०	४	४
३०८ राजपीपला	२७	४	३	१	३५
३०९ लसुन्द्रा	३३	२१	०	०	५४
३१० लांघनज	८	१४	२	०	२४
३११ लाडोल	२	९	४	०	१५
३१२क लीम्बासी	१४	०	०	०	१४
३१३ लुनावड़ा	३	५	०	०	८
३१३क वघासी	४८	५	६	०	५९
३१५क वडिया	१२	०	०	०	१२
३१६ वडू	१४	४	३	२	२३
३१७ वडोद	१८	७	४	१	३०
३१८ वडोदा	१८७	१०१	२७	३	३१८
३२२ वल्लभीपुर	५	१	२	०	८
३२२क वसाओ	२६	१३	५	०	४४
३२४ वसो	१९५	७१	२२	१	२८९
३२५क वाघणिया	२९	१४	२	०	४५
३२६ वाघोडिया	२१	०	०	०	२१
३३० वालोड	३१	२२	०	०	५३
३३०क वासणवाड़ा	९	६	०	०	१५
३३१ विसनगर	२९	११	५		४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
३३३ वीरमगांव	३०	१५	२	१	४८
३३३ वीरसद	६२	२५	५	४	९६
३३४ वेजलपुर	२६	१६	१६	०	५८
३३५ वेजलपुर (भड़ोच)	१५	५	७	२	२९
३३६ वेड़ा	६	७	६	०	१९
३३८ शहेरा	२७	४	८	०	३९
३३९ शामपुरा	५०	२०	५	०	७१
३४१ शुक्लतीर्थ	१८	१७	०	०	३५
३४२ सदनवाड़ी	१३	९	०	०	२२
३४३ सरढव	१५	९	१३	०	३७
३४३क सरभोण	१७	१७	२	०	३६
३४४ साधी	२५	१८	४	०	४७
३४६ सावली	२७	१८	०	०	४५
३४७ सिद्धपुर	११	१८	८	०	३७
३४८ सिनोर	३३	२३	६	०	६२
३४९ सिहोल	२	७	३	६	१८
३५१ सूरत	३३४	२८०	६७	८	६८९
३५३ सोजित्रा	२३	१८	४	०	४५
३५४ सोनगढ़	२४	१४	२	०	४०
३५५ हलधरवास	४१	१०	१	०	५२
३५५क हलवद	१२	०	०	०	१२
३५६ हांसोट	१४	१७	६	०	३७
३५७ हालोल	२२	७	४	०	३३
केन्द्र १६३ कुल	५४६८	२९०४	८०३	१४९	९३२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
४७३ नवागोवा	२	१	०	०	३
५३१ मंडगांव	७०	३२	८	१	१११
३६१ मालीनगर अकलूज	२२	११	०	०	३३
३६६ अमलनेर	४२	३८	४	०	८४
३६८ अष्टे	३४	१७	९	५	६५
३७० अहमदनगर	१८५	९७	१६	१२	३१०
३७१ आजरे	६	१०	१	०	१७
३७२ आटपाडी	२	३	०	०	५
३७६ अरणाअिस्लामपुर	३२	३२	९	५	७८
३७८ अुबरखेड़ा	१२	१२	१	०	२५
३८१ अुरण	४३	१६	०	०	५९
३८५क ओतुर	१९	२३	१	०	४३
३८६ औंध	०	१२	१	१	१६
३९२क करमाला	२१	२३	०	०	४४
३९५ कल्याण	५	१०	०	०	१५
३९८ कसबेसुकेना	८	४	२	०	१४
३९९ कागल	२९	२५	४	०	५८
४०६ कुकनूर	७	०	०	०	७
४०७ कुरुंदवाड़	५	१	०	०	६
४०८ कुर्डूवाड़ी	८	४	१	०	१३
४११ केलवामहिम	०	०	०	१	१
४१२ कोपरगांव	९	११	०	०	२०
४१२क कोरेगांव	५४	२९	२	०	८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
४११ कोल्हापुर	१९०	१०५	१९	६	३२०
४१७क खिर्डी	७	४	४	०	१५
४२० खड़गांव	१९	१३	३	०	३५
४२४ गुलबर्गा	४४	२३	८	०	७५
४२५ गुहागर	१२	१२	१	०	२५
४३० क चांदोरी	१५	०	०	०	१५
४३६ चित्तापुर	७	५	३	०	१५
४४० जमखंडी	१९	१५	१२	०	४६
४४१ जयसिंगपुर	१६	६	०	०	२२
४४२ जलगांव	६२	७७	२५	११	१७५
४४५ जुन्नर	३२	३६	१०	०	७८
४४८ ठाणे	०	०	०	५	५
४५२क तलोदादिगर	२२	०	२	०	२४
४५५क तारखेड़े	३९	३	०	०	४२
४५७ थोरगन्हाण	२	१	०	०	३
४५८ डहाणू	२५	१	२	०	२८
४६०क दूधगांव	३०	४	०	०	३४
४६३ देवरुख	१२	६	०	०	१८
४६५ दौंडाअिचा	१७	७	१	०	२५
४६७ धूलिया	८०	७७	११	३	१७१
४६९ नंदुरबार	१४	२८	१०	३	५५
४७१ नटावद	२	१	२	०	५
४७५ नशिराबाद	३२	५	३	५	४६
४७६ नांदगांव	३६	२	४	०	४२
४७८क नायडोंगरी	९	३	०	०	१२
४८० नासिक	३७	३५	२७	१०	१०९
४८७क न्हावी	१६	२	०	०	१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
४८८ पंढरपुर	३	१४	१०	४	३०
४९० पाचोरा	२	५	०	०	७
४९१ पाडलंसा	२९	११	१४	५	५१
४९३क पाथर्डी	४९	६१	५	२	११७
४९७ पालघर	६५	१६	७	०	८८
५०१क पिंप्राले	३४	१०	३	०	४७
५०२ पिलोदे	९	२४	५	०	३८
५०३ पुनताम्बा	१३	१५	०	०	२८
५०४ पूना	३८८	२९८	१११	४०	८३७
५०७ पेन	०	०	०	६	६
५०८ पोयनाड़	१४	५	३	०	२२
५१०क फेऱ्ही	९	३	०	०	१२
५११ फैजपुर	५९	१४	५	२	८०
५१४ बामणोद	३	१	६	०	१०
५१५ बारामती	७१	३४	२	१	१०८
५१५क बालचंद नगर	४५	१२	७	०	६४
५१७ बार्शी	६९	७१	२७	५	१७२
५२३ बोदवड	१२	११	०	०	२३
५३२ मनमाड़	२८	२१	७	३	५९
५३४ ममुराबाद	११	८	२	२	२३
५३७ मसूर	६	५	३	१	१५
५३९ क माढा	१९	४	०	०	२३
५३९ख माधवनगर	४८	१३	१	०	६२
५४२ मालगुंड	०	१९	१	०	२०
५४३ मालपुर	१३	१	०	०	१४
५४६ मिरज	१२	२३	५	२	४२
५४७ मुडी बु.	१	७	०	०	८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
५५२ यावल	१८	१६	५	०	३९
५५३ येवला	८३	३८	३	१	१२५
५५४ रत्नागिरी	७	७	२	३	१९
५५५ रत्नापिंप्री	७	९	२	०	१८
५५५क रनाला	२१	८	२	०	३१
५५७ राजापुर	३४	३३	१५	४	८६
५५८क रामदुर्ग	२८	७	१	०	३६
५५९ रावलगांव	१२	९	३	०	२४
५६० रावेर	३६	२४	०	०	६०
५६२ रुकडी	४२	१८	३	०	६३
५६८ लोणन्द	१०	७	५	०	२२
५६९ लोणावळा	२८	७	२	०	३७
५७३ वराड	२३	१७	२	०	४२
५८० बसअी	७७	३७	२८	१२	१५४
५८१ बाम्बोरी	१६	८	०	०	२४
५८२ वोंअी	१४	७	१	५	२७
५८६ वेगुर्ला	२५	३४	१	०	६०
५८८ शहापुर (बे.)	२६	२४	२	१	५३
५९१क शिरुड	१९	१	०	०	२०
५९६ शेंदुर्णी	११	२६	८	०	४५
५९९ संगमनेर	५४	५३	१०	२	१०९
६००क सप्तर्षिकवठे	५३	३५	१२	०	१००
६०१ सांगली	३०	६	२	०	३८
६०१क सांगीवबुः	३६	१५	१	२	५४
६०३ साक्री	१६	२८	३	०	४७
६०३क साखरपा	३२	०	१	०	३३
६०५ सातारा	२२	१६	१३	११	६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. केन्द्र	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
६०५क सारोला कासार	१६	२	१	०	१९
६०६ साल्वा	५	६	६	०	१७
६०८ सावदा	१९	३	१५	०	३७
६१० सिकंद्राबाद	११	८	०	०	१९
६१२ सोलापुर	३६२	२४४	२९	१३	६४८
६१३ क हंबर्डी	२४	३	१	०	२८
६१४ हिंगणे	७१	३५	०	८	८४
६१४ क हिंगोणे	२२	१	०	०	३
६१५ हैद्राबाद (द०)	९	६	०	०	१५
केन्द्र ११३ कुल	३७२०	२३९०	६११	१९६	६९१७

बबओ

६१९ अंधेरी	३३	६	०	०	३९
अंधेरी(नव गुजरात)	२४	१३	११	०	४८
६१९क कांदेवली	३	६	०	०	९
६२० कालबादेवी.	१९८	११५	४०	०	३५३
६२१ कोट	२०	१५	०	०	३५
६२३ गिरगांव	६६१	३४४	१०६	३९	११५०
६२४ घाट कोपर	१५२	१२२	२१	०	२९५
६२५ दादर	४३७	३३६	१३६	२५	९३४
६२ क मांडवी	२७७	१२	१३	०	३०२
६२८ माटुंगा	२७८	१६८	४८	१९	५१३
६२९ मालाड़	७२	२२	२६	८	१२८
६३२ शांताक्रुज	१३	१५	७	०	३५
६३३ विलेपार्ले	७७	७०	२०	०	१६७
केंद्र १३ कुल	१९९६	१२२४	४२८	९१	३७३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदर्भ नागपुर

	प्रारं.	प्रवेश	परि.	कोविद	कुल
३५ अत्री	३४	२	०	०	३६
३६ अकोला	२०८	५०	२६	१	२८५
३७ अमरावती	१८१	१२८	३४	४	३४७
३८ आकोट	६०	२८	४	०	९२
३० आरमोरी	१३	९	२	०	२४
३क कलमेश्वर	५०	३	०	०	५३
३४ कापुस तलनी	१	३	२	०	६
३५ कारंजा	५६	७७	१९	०	१५२
६क खंडाला	३३	२	०	०	३५
३७ खामगांव	१२९	४०	१७	०	१७६
३० घोडसगांव	७	३	३	०	१३
३१ चांदा	६	६	४	०	१६
३२ चांदुरबाजार	७	८	५	०	२०
३क जरुड	१४	१०	१	०	२५
३३ जलगांव जामोद	२४	०	०	०	२४
३४ टाकरखेड	११	९	४	०	२४
३६ तळवेल	५	३	२	०	१०
३७ दर्यापुर	४	७	९	०	२०
३९ देवुलगांवमाली	६	३	०	०	९
३० देवलगांव राजा	५	५	०	०	१०
४१ धन्तोली	१४०	९४	४२	१५	२९१
४२ धामनगांव	२५	५	१	०	३१
४२ नांदुरा	१७	१०	२	०	२९
४१ महाल नागपुर	१२	३	१	४	२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६६५क नागरी	१२	०	०	०	
६६९ बुरहानपुर	११	८	०	०	
६७१क बेला	२	२१	२	०	
६७२ भद्रावती	५	८	३	०	
६७२क मंगरुल नवघरे	६	१	०	०	
६७३ मलकापुर	११	६	१	०	
६७१ मुन्डगांव	४	८	१	०	
६७७ मोर्शी	१६	२१	८	६	
६७८क रामटेक	१४	१०	०	०	
६७९ लासुरा	८	५	३	०	
६८० वर्धा	६२	५३	२६	६	
६८१ वरुड	५०	९	३	०	
६८३क वाशीम	२२	१८	१	०	
६८४क शिराला	५	४	१	०	
६८९ सावनेर	५	७	०	०	
६९०क सावरा	२२	१	२	०	
६९०ख सावली (वाघ)	१०	२	०	०	
६९०ग शिंदी	१०	२४	२	०	
६९०घ शिरसगांव	२६	०	०	०	
६९२ हिंगनघाट	९५	५२	७	०	
केन्द्र ४४ कुल	१४४३	७८६	२५४	३९	
		फुटकर			
२५	१६४	९२	५१	१०	

मुद्रकः—गोपाळराव पोहरे कंट्रक्टर सत्येश्वर प्रि. प्रे. वर्धा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

अंग्रेजीने हम पर जो जादूका असर डाला वह अभी नष्ट नहीं हुआ है। अुसके कारण हम हिन्दुस्तान की, अुसके ध्येयकी ओर प्रगतिमें रोड़े अटकाते हैं। हम अंग्रेजी सीखनेमें जितने साल बिताते हैं अुतने महीने अगर हिन्दी सीखनेमें बितानेका कष्ट नहीं करते तो जनताके लिये हमारा प्रेम बिलकुल अूपरी है।"

—महात्मा गांधी

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

की

परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थी

सितम्बर १९३७ से फरवरी १९४७ तक

परीक्षा केन्द्र	९१२
प्रमाणित प्रचारक	८७८
सम्बद्ध पुस्तकालय	७७
कुल परीक्षार्थी	३,०९,५६२

[तीन लाख नौ हजार पाँच सौ बासठ]

कार्यक्षेत्र

असम, बंगाल, अुत्कल, सिन्ध, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बअी, विदर्भ-नागपुर और बिलोचिस्तान।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

राष्ट्रभाषाकी कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ

		वार्षिक चन्दा
दैनिक		
आज	बनारस	२५)
संसार	,,	२५)
प्रताप	कानपुर	२५)
हिन्दुस्तान	दिल्ली	२५)
विश्वमित्र	कलकत्ता और बम्बअी	२५)
साप्ताहिक		
समाज	बनारस	९॥)
संसार	,,	६॥)
नवयुग	दिल्ली	७॥)
देशदूत	अिलाहाबाद	७॥)
विश्वमित्र	कलकत्ता	७॥)
मासिक		
विश्ववाणी	अिलाहाबाद	६)
विशालभारत	कलकत्ता	६)
हंस	बनारस	६)
नया साहित्य	बम्बअी	६)
हिमालय	पटना	१२)

प्रबन्ध सम्पादक— हृषीकेश शर्मा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
[illegible] राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी १९४७

अंक ३

राष्ट्र भाषा

चोट खा सहिष्णु वे रहेगा किस भाँति, तीर—
जिसके निषंगमें, करोंमें दृढ़ चाप है;
जेताके विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं, किन्तु,
हारी हुअी जातिकी सहिष्णुताऽभिशाप है।

—'हिमकर'

राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

तू आज मुस्कुराके चल (एम. सरवैया 'मोती')
'ताअी' अेक नजर (चंदूलाल जमादार रा. भा. विशारद)
हिन्दी शब्दोंकी लिंग व्यवस्था ६८
खिचड़ीके चार यार ६१
गत परीक्षाके परीक्षकोंकी रिपोर्टसे ७१
सुलेखन ७२
परीक्षार्थियोंसे ७३
परीक्षार्थियोंके हितकी बातें ७५
"ने" का प्रयोग ७७
मराठी भाषा-भाषी परीक्षार्थी ध्यान दें ७८
राष्ट्रभाषाका [illegible] (श्री वियोगी हरि) ८०
प्रधान मंत्रीकी ओरसे ८३
परीक्षा विभाग ८५

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रांत	नाम	प्रचारक क्रमांक	केन्द्र
गुजरात	श्री. सवूरभाअी जेठाभाअी बारोट	८८७	वडोदा
,,	,, चन्द्रशंकर नर्मदाशंकर शुक्ल	८८९	ओड
,,	,, पुरुषोत्तम मगनलाल जोषी	८९०	शहेरा
,,	,, लक्ष्मीनारायण दलपतराम पाठक	८९१	रतनपुर
,,	,, बालशंकर सामलभाअी जोषी	८९२	,,
,,	,, शिवशंकर धनेश्वर पाठक	८९३	कांकणपुर
,,	,, दीनानाथ जेठालाल महेता	८९९	धोलका
महाराष्ट्र	,, बंडू अुखाराम वाणी	८८८	दहिवेल
,,	,, वामन शिवराम आपटे	८९४	सोलापुर
,,	,, रामचन्द्र गेना शिन्दे	८९५	,,
,,	,, युसफखान महंमदखान पठाण	८९६	,,
,,	,, वसन्त प्रभाकर देशमुख	८९७	पुणे
,,	,, तुकाराम शंकर कुलकर्णी	८९८	वालचंदनगर
,,	,, सदाशिव सिताराम वरपे	९०१	आम्बप
,,	,, दामोदर विष्णु कुलकर्णी	९०२	कोल्हापुर
,,	,, यू. आर. संपतकुमार	९०३	पुणे
,,	,, पांडुरंग सिताराम परांजपे	९०४	जुन्नर
,,	,, सोपान लक्ष्मण ढाके	९०५	वराड
,,	,, रामू दगडू नारखेडे	९०६	,,
बम्बअी	,, चीमनलाल लक्ष्मीराम व्यास	९०७	खार
,,	,, हसमुख अेन. नाणावटी	९०८	विलेपार्ले
,,	,, नाना महादेव सावन्त	९०९	कबालाहील
,,	,, गणेश राखे	९१०	बम्बअी ११
सिन्ध	कु० जमानादेवी निहालचन्द	९००	मिठादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]
सम्पादकः—भदन्त आनन्द कौसल्यायन .

वर्ष ६] वर्धा, जनवरी—१९४७ [अंक ३

तू आज मुस्कुराके चल

—एम० सरवैया 'मोती'—

तू हर कदमको जोश और खरोशसे बढ़ाके चल।
जमींकी क्या बिसात है तू आस्माँ पे छाके चल।
न डर तू मौतसे कभी तू मौतको बुलाके चल।
मुसीबतोंके सामने तू आज मुस्कुराके चल॥

तू देख मरघटोंमें बेगुनाह आज जल रहे।
रकीबके घरोंमें अब लहूके दीप जल रहे।
हयाकी लाश रौंद बेहया हैं आज चल रहे।
लहूके प्यासे हाथमें हैं जम्बीअे मचल रहे॥

बयान दे रही हैं बंगके मकानकी छतें।
बदल रही है मौत जिस जगह पे रोज करवटें।
निकल रही है अश्क बनके आँखसे हैं हसरतें।
पुकारती हैं माँकी-अुफ! लुटी हुअीं वे असमतें॥

हा! माँकी गोदकी अभी कली न खिलने पाअी थी।
वसंतकी सुबह अभी कलीपे मुस्कुराअी—थी।
कैसी मिटेकी हाय—याद आके मनमें बस गअी।
वसंतकी सुबहमें देखिये कली झुलस गअी॥

ये कौमी फूट हैं कि फूट करके रो रहे हैं हम।
कलंकसे कलंकका कलंक धो रहे हैं हम।
हमीं हैं अपनी राहमें जो खार बो रहे हैं हम।
हमीं हैं दोपहरको रात मान सो रहे हैं हम॥

हमारी अन्धी आँख अब टटोलती प्रकाशको।
हृदयको सत्यता भी छोड़ चल बसी है आशको।
पनाह मिल गअी है मस्जिदोंमें जब निराशको।
पिला रहे हैं हम दवा हिला धरमकी लाशको॥

—'लोकमतसे'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ताअी' अेक नजर

दिग्दर्शकः—**चंदूलाल जमादार** रा. भा. विशारद

कहानी वही है जिसमें घटनाओंका तांता न हो। अेक ही घटनाको लेकर अुसकी रचना हो। अिस कसौटीपर कहानी ठीक अुतरती है। हम समाजमें अैसी कितनी ही स्त्रियोंको देखते हैं जो सन्तान अभावके कारण तड़पती हैं। लेकिन अिस कहानीमें अिसी अेक घटनाको अुच्चतम शैलीमें बहाकर पाठकका मन लुभाया है।

अिस कहानीमें दो ही मुख्य पात्र—रामजीदास और रामेश्वरी हैं। 'मनोहर' केवल पोषक पात्र है। किस्सेमें पात्रोंकी विपुलता नहीं है। रामजीदास अेक आदर्श पुरुष हैं। अिस बाबू द्वारा कहानीकारने क्या ही अच्छे गुण प्रगट किये हैं। प्रायः अिसीसे कथा सफलता पाती है। जैसे २ हम कहानी पढ़ते जाते हैं तो 'ताअी' की ओर पाठकके मनमें घृणा अुत्पन्न होती जाती है। लेकिन जब रामेश्वरी बुखारमें चिल्लाती है—"देखो देखो वह गिरा जा रहा है—अुसे बचाओ दौड़ो-मेरे मनोहरको बचालो," तब हम महसूस करते हैं कि "रामेश्वरीका हृदय अेक माताका हृदय बननेकी पूरी योग्यता रखता था; परन्तु अुनका विकास नहीं हुआ था।

हमारे समाजमें रामेश्वरी जैसी कअी स्त्रियाँ मिलती हैं। मालूम होता है कि 'ताअी' शास्त्र वगैरहमें विश्वास रखनेवाली स्त्री थी। लेकिन पति-रामजीदास अिस विचारमें अुसके प्रतिकूल था। अिस कहानी द्वारा स्त्री समाजकी अेक पहेलीको (ताअी द्वारा) जनताके सामने निर्देशित किया गया है।

जब पूरी कहानी पढ़ते हैं तो जान पड़ता है—"मनुष्यका हृदय बड़ा ममत्व प्रेमी है। कैसा ही अुपयोगी और कितनी ही सुन्दर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य अुसको पराअी समझता है, तब अुससे प्रेम नहीं करता। किन्तु कथाका मुख्य सार (Central idea) है और अिसे स्पष्ट करनेके लिये ही 'ताअी' लिखी गअी है।

'मनोहर' की बाल-क्रीड़ासे, तोतली बोलीसे किसकी (**स्त्रीका ?**) जी नहीं ललचाता ! तो भी रामेश्वरी बच्चेसे घृणा करती है। 'मनोहर' ताअीका मन नहीं हरा सका। क्यों कि ताअी, मनोहरको पराया समझती है। मनोहर पतंगके कारण छज्जेसे नीचे गिर रहा है; चिल्लाता है—"ताअी !" अेक क्षणके लिये ताअी रुकी रही—चाहती थी कि बच्चेको मरने दे। तो भी आखिर अुससे रहा नहीं गया। क्योंकि वह भी स्त्री ठहरी न ! तुरंत भतीजेको पकड़ने गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्यमें ममत्वके साथ २ अहंभावना भी रहती है। जब तक अहंभावनाका बल रहता है तब तक ममत्व जाग्रत नहीं होता। अहंभावनाके बोझसे ममत्व दब जाता है। लेकिन अहंभावनाको कुचलनेके वास्ते अेक घटना चाहिये। मनोहरके छज्जेसे गिरनेपर 'ताअी' की अहंभावना भी गिर जाती है; तब भतीजेकी रक्षा करने दौड़ती है।

'ताअी' के चरित्रका विकास बहुतही अच्छे और स्वाभाविक ढंगसे किया गया है लेकिन बीचमें अेक बात खटकती है। कहानीकारने बीचमें जो मनुष्यके स्वभावके बारेमें व्याख्यान दिया है, न रहता तो अच्छा था। अुससे कहानीमें किसी प्रकारकी कमी नहीं रहती।

हिन्दी शब्दोंकी लिंग-व्यवस्था

[अहिंदी भाषी विद्यार्थियोंके लिये हिंदी शब्दोंका लिंग पहचानना कठिन होता है। यहाँ कुछ सामान्य नियम दिये जाते हैं। परीक्षार्थियोंको अिनसे सहायता मिलेगी:— [सम्पादक]

जिन शब्दोंके अर्थसे ही लिंगका भेद स्पष्ट है अुनके विशेषण और अुनकी क्रियाअें अुनके अनुरूप होना चाहिये। 'माता-पिता,' 'गाय-बैल' 'हाथी-हथिनी' 'पुत्र-पुत्री,' 'बालक-बालिका' अिन शब्दोंके अर्थसे ही लिंग स्पष्ट है।

मुख्य कठिनाअी हिन्दीमें बेजान पदार्थोंके सम्बन्धमें अुपस्थित होती है, अथवा कुछ छोटे पशु-पक्षी और कीड़ों-मकोड़ोंके सम्बन्धमें, जिनमें स्त्री-पुरुषका भेद हम साधारण रीतिसे बोल-चालके शब्दोंमें स्पष्ट नहीं करते। 'किवाड़ अच्छा है,' 'दीवार अच्छी है,' कोयल काली है,' अिन वाक्योंमें जो संज्ञा वाचक शब्द हैं अुनके लिंगका अन्तर केवल चलनपर ही निर्भर है।

अिस सम्बधमें नियम स्थिर करना असम्भव नहीं है, हिन्दी भाषामें लिंगका अुद्भव शब्दकी आकृतिकी ओर है। निश्चित नियम तो अिस समय नहीं है किन्तु अुद्भव स्पष्ट है।

अनुसंधान करनेपर यह पता लगता है कि अकारान्त शब्द बहुत अधिक संख्यामें पुलिंग है। अैसे अकारान्त शब्द जो स्त्रीलिंग हों और साथ ही जिनके लिंग अर्थसे स्पष्ट न हों बहुत थोड़े हैं। फिर भी हैं, अिसी प्रकार आकारान्त शब्द अधिक संख्यामें स्त्रीलिंग है। अैसे अीकारान्त शब्द जिनके लिंग अर्थसे स्पष्ट हों और जो पुलिंग हों बहुत ही कम हैं। यह भी पता लगता है कि हमारे कोषमें अकारान्त और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओकारान्त संज्ञा शब्दोंकी ही भरमार है। शेष सब संज्ञा शब्द मिलकर अिन दोनों प्रकार के शब्दोंके लगभग तिहाअी होंगे। यदि आप यह नियम बना दें कि सब अकारान्त शब्द, जिनके लिंग अुनके अर्थसे स्पष्ट नहीं हैं, पुल्लिंग माने जाअें तो भाषाके चलनमें बहुत थोड़ा अंतर पड़ेगा और सुविधा बहुत हो जायगी। अिसी प्रकार अुन अीकारान्त शब्दों-को जिनके अर्थसे लिंग स्पष्ट नहीं हैं स्त्रीलिंग मान लेनेसे सुविधा हो जायगी।

बोलचालमें अिस शैली पर बहुत लोग शब्दोंका प्रयोग करते भी हैं, यद्यपि लिखनेमें वह सचेत हो जाते हैं। 'चाय अच्छा है,' 'लाअिन टूट गया,' 'बाढ़ आगया,' यह कानसे सुने हुअे प्रयोग हैं; और अिस प्रकारका प्रयोग अपने देशके हिन्दी भाषा-भाषी अुच्च कोटिके सज्जनोंको करते सुना है। अिस प्रकारके प्रयोगोंको वैकल्पिक रीतिसे शुध्दमान लेना और व्याकरणमें अिसको प्रविष्ट करना अुचित होगा।

अिसी प्रकार 'मोती अच्छी है' अिस प्रकारके प्रयोगोंको जो बहुत थोड़े होंगे शुध्दमान लेना भाषाकी सरलता और अुसके ज्ञानकी वृद्धिमें सहायक होगा।

अकारान्त और अीकारान्तके बाद हमारे कोषमें आकारान्त शब्दोंकी संख्या है। अिनमें यह देखा जाता है कि पुल्लिंग शब्दोंकी संख्या अधिक है, स्त्रीलिंग शब्दोंसे लगभग दूनी।

अिनके विषयमें यही ठीक होगा, कि नदियोंके नाम और 'किया' प्रत्यय द्वारा छोटापन प्रकट करने वाले शब्द स्त्रीलिंगमें प्रयुक्त होते हैं, जैसे गंगा, जमना, खटिया, माचिया। यह नियम स्थिर मान लिया जाय। शेष अैसे आकारान्त शब्द जिनके लिंग अुनके अर्थसे स्पष्ट नहीं हैं पुल्लिंग माने जायँ। अिस प्रकार का नियम वर्तमान चलनसे हमें बहुत थोड़ा ही खिसकायेगा।

अिन तीन प्रकारके शब्दोंको निकाल देनेके बाद — अर्थात् अकारान्त अीकारान्त और आकारान्त कोषमें संज्ञा शब्दोंका लग-भग सोलहवाँ हिस्सा ही बचेगा। अिकारान्त शब्दोंका झुकाव स्त्रीलिंगकी ओर है। हम अुन सब अिकारान्त शब्दोंको जिनसे अुनका लिंग स्पष्ट नहीं है, स्त्रीलिंग मान सकते हैं।

शेष संज्ञा शब्दोंको पुल्लिंग मान लेनेमें अधिक अड़चन नहीं दिखलाअी पड़ती। अुनका झुकाव पुल्लिंगकी ओर ही अधिक है और वे अपेक्षिक दृष्टिसे बहुत थोड़े हैं।

यह भी यहाँ कह देना अुचित है कि हिन्दीमें व्यञ्जनान्त शब्द माननेकी आवश्यकता नहीं। लिंगकी दृष्टिसे हम अुन सब शब्दोंका अकारान्त की श्रेणीमें रख सकते हैं।

बहुत संभव है कि कुछ अधिक अनुसंधानसे हम और भी नियम स्थिर कर सकें और जिन नियमोंकी यहाँ शिफ़ारिस की गयी है अुनमें परिवर्तन करना अुचित जान पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुदाहरणार्थ-- भाववाचक शब्द जो 'अत' या 'अट' से समाप्त होते हैं सब स्त्री लिंग है। 'अत' से समाप्त होने वाले शब्द प्रायः अरबीके हैं। अिन दोनों प्रकारके शब्दोंके कुछ अुदाहरण लीजिये। फजीहत, तबीयत, अिलमीयत, थकावट, बनावट, घबराहट, आदि।

अिसी तरह 'ता' प्रत्यय जोड़नेसे जो भाववाचक शब्द बनते हैं वे भी स्त्री लिंग होते हैं।

खिचड़ीके चार यार

खिचड़ी किसे नहीं भाती ? पकानेमें कष्ट कम और समय भी कम लगता है। पानीमें दाल, चावल मिलाकर बर्तन चूल्हेपर रख दिया कि पुनः आँख अुठानेकी आवश्यकता शायद ही पड़ती है। बड़ा ही सहज और सरल तरीका है। बायें हाथका खेल है।

और लज्जत ? कुछ पूछिये नहीं ! पूछने-बतानेकी आवश्यकता ही क्या है ? लेकिन हाँ ! बड़े; बूढ़े, युवक, युवतियाँ सभी जानते और मानते हैं कि बगैर यारोंके मज़ा नहीं आता। घीकी हाजिरी तो पहले होनी चाहिये। मूली भी मिल जाती है। पापड़के लिये 'कंट्रोल' है नहीं और आचारको विचारमें न लें तो काम कैसे चले ? कहा जाता है न खिचड़ीके चार यार—घी, मूली, पापड़ और आचार।

मगर खिचड़ी भी तभी अच्छी लगती है जब अुसमें सब चीजोंका अनुपात ठीक हो और अच्छी तरह पकाअी गअी हो।

अिधर कुछ लोग भाषामें भी खिचड़ी पका रहे हैं मगर मज़ा यह, कि खिचड़ी बनाना अुन्हें आता नहीं। अिसलिये अुनकी खिचड़ी मजेदार नहीं होती।

वजह क्या है ? "

बस, अिसी बातका तो रोना है। 'अुस्कू, मेरेकू, वजे, भजे' अिसलिये पसंद नहीं आते कि वे शुद्ध रूपमें नहीं हैं।

खिचड़ीको मैं पसंद करता हूँ। लेकिन अुसमें गंदा घी, खराब मूली, बेहद पुराना पापड़ और सड़ा आचार हो.....तो सारी लज्जत और अिज्जत खाकमें।

हिन्दी—जिसका राष्ट्रभाषाके नाते प्रचार और व्यवहार सारे देशमें करना है, जिसके द्वारा अपने आचार-विचार फैलाने हैं—की लज्जत और अिज्जत दुनियामें कायम रखना हो अुसके (१) वैशिष्ट्य (२) सुगमता (३) स्वाभाविकता (४) शुद्धता (व्याकरण-शुद्धता) आदि गुणोंके साथ सुसंबद्ध, मुहावरेदार हिन्दी काममें लानी चाहिये या नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत परीक्षाके परीक्षकोंकी रिपोर्टसे

[गत परीक्षाके समय परीक्षार्थियोंके सम्बन्धमें कुछ आवश्यक अंश यहाँ दिये जाते हैं। आशा है आगामी परीक्षाके लिये तैयारी करनेवाले विद्यार्थी अिनसे लाभ अुठायेंगे। —]

प्रायः परीक्षार्थी लिपिकी स्पष्टता और सुंदरतापर ध्यान नहीं देते। अनेक परीक्षार्थियोंके अुत्तर पढ़ना ही कठिन हो जाता है। असुंदर लिपिवाले परीक्षार्थी प्रायः फेल हुअे हैं।

दूसरी महत्वकी बात है भाषा शुद्धि। प्रारंभिक और प्रवेश परीक्षार्थियोंकी अशुद्ध भाषा कुछ अंश तक क्षम्य है लेकिन परिचय और कोविदके विद्यार्थियोंको यह बात बिलकुल शोभा नहीं देती। हिज्जे, लिंग, वचन और विभक्ति—अिन बातोंकी ओर विद्यार्थियोंको अवश्य ध्यान देना चाहिये। कोविदके विद्यार्थी तक 'दिन' को अेकदम 'दीन' में बदल देते हैं। पुस्तकोंमें जो व्यक्तियोंके नाम होते हैं, अुन्हें भी ठीक ढंगसे नहीं लिखते। अेक शूर्पणखा शब्द शूर्पणखा, सूरपण खाँ, सूंपणखा आदि अनेक ढंगसे लिखते हैं और शाहजहाँ, मुमजातमहल आदिको भी। अिसी प्रकार अन्य नाम प्राप्त होते हैं। अिसलिये हिज्जोंको ठीक ध्यानमें रखकर लिखना चाहिये।

लेकिन भाषा शुद्धिकी बात तब अुठती है जब प्रश्नका ठीक अुत्तर दिया जाय। कुछ विद्यार्थी प्रश्नके किसी अेक शब्दको अुठाकर ही अुत्तर लिख देते हैं। नतीजा यह होता है कि जो पूछा जाता है, अुसे छोड़कर कुछ और ही लिख बैठते हैं। जैसे पिछली परीक्षाके कअी प्रारंभिक विद्यार्थियोंने 'लालटेन वाली बहन' के बदले 'बहनका प्रेम' कहानी लिख दी। और प्रवेशके विद्यार्थियोंने अब्बुखांकी चांदनीको छोड़कर चांदकी रोशनीके बारेमें लिखा है।

केवल प्रारंभिक और प्रवेशके विद्यार्थी ही अिस प्रकारकी ग़लती नहीं करते परिचय और कोविदके विद्यार्थी भी करते हैं। बिसातीकी विशेषताओंपर प्रकाश डालिये अिस प्रकारके प्रश्नके अुत्तरमें कअी विद्यार्थियोंने लंबी-चौड़ी कहानी दी है। अिसलिये प्रश्नका अुत्तर लिखनेके पहले प्रश्नको अच्छी तरहसे पढ़ना आवश्यक है।

परिचय और कोविदमें गद्य-खंड या पद्य-खंड संदर्भके साथ स्पष्ट करना पड़ता है। परीक्षकोंकी सबसे बड़ी शिकायत अिसी प्रश्नके बारेमें है! गद्य खंडोंका प्रसंग सहित समझाकर अर्थ न लिखकर, अनेक परीक्षार्थी अुन्हें ज्योंका-त्यों लिख दिया करते हैं। अथवा कहीं कहीं सिर्फ अेक दो शब्दोंमें परिवर्तन कर दिया करते हैं। २० से ३० तक अंकके प्रश्नका अुत्तर केवल अेक पंक्तिमें देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसेः—प्र. १ (अ) यह वाक्य शाहजहाँने कहा है।

(ब) यह वाक्य अशोक नाटकमें भवगुप्तका है।

(क) यह वाक्य 'गद्यमाला' में है।

[गद्य खंडका अर्थ लिखते समय यह ध्यानमें रखना चाहिये कि अुसका भाव सरल भाषामें स्पष्ट व्यक्त हो जाय। केवल शब्दोंको बदलकर या गद्य खंड कहाँसे लिया है, लिखना न संदर्भ है न स्पष्टीकरण] कृतज्ञतासे मित्रकुटुम्ब पारिपोषणोचित काव्यप्रसिध्दीजन्य द्रव्यांश अुसके स्वापराधकी कबूली, हार्दिकशोक प्रदर्शित करके मित्र-चरण विनम्र व्यक्तिका चित्रविष्करण तथा मित्र-प्रामाणिकताको आखोंके सामने रखकर अपना काव्य स्वनामसे (अुसके नामसे) प्रसिद्ध किया।"

अूपर लिखी बातोंकी ओर विद्यार्थी अगर अच्छी तरहसे ध्यान दें तो परीक्षामें अुत्तीर्ण होना अुनके लिये आसान होगा।

सुलेखन

सुलेखनसे मेरा मतलब लिपिकी सुंदर लिखावटसे है। आजकल लेखन-कला की जो हत्या हो रही है, वह अेक खेदका विषय है। मध्यकालमें सुलेखनपर बहुत जोर दिया जाता था। लिखनेवाला अिस बातपर विशेष ध्यान देता था कि अुसके अक्षर सुंदर, सुडौल हों, अुसकी लिपि आकर्षक हो। समाजमें भी अैसे लेखनकी बड़ी प्रशंसा होती थी।

और आज ? आज तो अेक अुलटी ही ग़लत फ़हमी फैल गयी है। न जाने कहाँसे यह बात चल पड़ी है कि "बड़े लोगोंका हस्ताक्षर सुंदर होता ही नहीं है।" अिसके सबूतमें दो-अेक आदमियोंके नाम गिना दिये जाते हैं। पर वास्तवमें यह अेक कोरा भ्रम है। अनेकों अैसे बड़े आदमियोंके नाम लिये जा सकते हैं जिनका हस्ताक्षर बहुतही सुंदर हैं। और अगर अिस भ्रमको सत्य मान भी लिया जाय, तो अिसका अर्थ यह नहीं है कि जिनका हस्ताक्षर बुरा है, वे सब बड़े आदमी हैं, और बड़े बननेके लिये हस्ताक्षरका बुरा होना अेक साधन है। जो लोग अपनी लिखावटको अिस लिये बिगाड़ते हैं कि अैसा करनेसे वे बड़े समझे जायँगे, अुनकी अक्ल-पर तो तरस ही आता है।

वास्तवमें बात तो यह है कि जबसे मुद्रण-यंत्रोंका प्रचार हुआ है, लेखन-कलापर ध्यान ही नहीं दिया जाता और शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों ही अिस ओर लापरवाही दिखाते हैं। फल यह हुआ है कि हमारी लिपिका सौंदर्य नष्ट हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। लिखावट, जो अेक कलाके स्थान तक पहुँच गयी थी, अपने स्थानसे नीचे गिर गयी है कुछ लोग तो अैसी बुरी तरह लिखते हैं कि अुनके संबंधमें यह ठीक ही लागू होगा कि–"लिखें आप, बाँचें खुदा।" कुछ तो नागरी लिपिमें भी अपना नाम अैसी घसीटमें लिखते हैं कि अुसका अेक भी अक्षर स्पष्ट नहीं होता। अैसे व्यक्ति-योंके पत्र पढ़नेके लिये अेक नहीं, अनेक व्यक्तियोंकी आवश्यकता होती है।

हम देखते हैं कि यह घसीट लिखनेकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। अिस लिये यह अत्यंत आवश्यक है कि अिस प्रवृत्तिको शीघ्र ही रोका जाय। परीक्षामें बैठने-वाले परीक्षार्थियोंके लिये तो यह अेक बहुत ही खतरनाक आदत है।

सुंदर लिखावटका अर्थ यह है कि शब्दोंका रूप आँखोंको अच्छा लगे। अुन्हें देखते ही पढ़नेकी अिच्छा हो अुठे। परीक्षार्थियोंको तो यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि परीक्षक सबसे पहले सुंदर, सुडौल लिपिसे ही प्रभावित होता है। अुसके बाद भाषाका, शुद्ध भाषाका स्थान आता है। भाव और विषय-प्रतिपादनका स्थान अुसके भी पीछे है।

सुंदर लिखावट लिखने के लिये यह आवश्यक है कि अक्षरों की बनावट पर ध्यान दिया जाय। अक्षर का कौन-सा भाग मोटा और कौन.सा पतला होना चाहिये, यह समझना अत्यंत आवश्यक है। सुलेख लिखने के लिये बाजारमें विशेष लिपि पुस्तकें बिकती हैं। अुनमें सुंदर, सुडौल अक्षर छपे रहते हैं। अिन लिपि–पुस्तकोंसे विशेष सहायता ली जा सकती है अक्षरों को सुडौल बनानेमें अनुपातपर अवश्य ध्यान दिया जाय।

अक्षर बड़े और सुस्पष्ट लिखने चाहिये। अुनमें आकार साम्य होना अत्यंत आवश्यक है। अैसा न हो कि अेक अक्षर बड़ा और दूसरा बिलकुल छोटा हो। अिस बातपर भी ध्यान देना चाहिये कि अक्षर सीधे खड़े हों, टेढ़े-मेढ़े न होने पावें। अक्षरोंके बीच अंतर भी सप्रमाण हो।

दो शब्दों के बीचमें कम-से-कम अेक अक्षरका स्थान छोड़ देना चाहिये। शब्दों को बिलकुल सटाकर न लिखना चाहिये।

दो पंक्तियों के बीचमें अेक पंक्तिकी मोटाअीका अंतर छोड़ देना चाहिये।

विराम–चिन्होंका अुचित प्रयोग भी लिपिको सुंदर बनाता है।

पंक्तियाँ अेकके नीचे दूसरी सीधी आनी चाहिये। हाशिया छोटा-बड़ा होनेसे सारी शोभा मारी जाती है।

राष्ट्रभाषा––परीक्षार्थियोंको अिस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंसे:—

आगामी प्रचार परीक्षाअें बहुत नज़दीक हैं। विद्यार्थी अुनके लिये प्रयत्न कर ही रहे होंगे। यह तो ठीक ही है कि पाठ्य पुस्तकोंका पूर्ण अध्ययन तथा विचारोंको प्रकट करने वाली भाषा और शैलीपर अधिकार, ये ही दो मुख्य बाते हैं जिनकी सहायता-से परीक्षार्थी अधिक अंक प्राप्त करते या कर सकते हैं। परन्तु अिनके अलावा कुछ और अैसी बातें हैं जिनपर ध्यान देनेसे बहुतसे अंक व्यर्थ ही कट जाते हैं! अगर अिन छोटी छोटी बातों पर ध्यान दिया जाय तो बड़ी आसानीसे अधिक अंक प्राप्त किये जा सकते हैं और फलतः विद्यार्थी अूँची श्रेणीमें अुत्तीर्ण हो सकते हैं।

यहाँ कुछ अैसी ही आवश्यक बातोंका जिक्र किया जाता है।

अुत्तर पुस्तक जब परीक्षकके सामने जाती है तब सबसे पहले वह लिखावटसे ही प्रभावित होता है। अगर लिखावट सुन्दर हो अर्थात् अक्षर साफ सुवाच्य और सुन्दर हुअे, शब्द थोड़ी-थोड़ी दूरपर लिखे गये तो अुसका प्रभाव परिक्षकपर अच्छा पड़ता है। अिस लिये परीक्षार्थीको चाहिये कि सुन्दर सुवाच्य लिखावटका ही प्रयोग करें। अक्षर गोल और सीधे होने चाहिये। दो शब्दोंके बीचमें अेक अक्षरके जितना स्थान अवश्य छोड़ना चाहिये।

अुत्तर पुस्तकमें लिखते समय दो तीन अिंचका हाशिया या कोर अवश्य छोड़ा और प्रत्येक पंक्ति कोरको छूती हुअी लिखी जानी चाहिये। अेक प्रश्नके अुत्तरको कंडी-काओं [परिच्छेदों] में बांटना चाहिये। प्रत्येक परिच्छेदकी पहली पंक्ति कोरसे कुछ दूरी पर प्रारंभ करनी चाहिये।

किसी प्रश्नका अुत्तर प्रारंभ करनेके पहले अुस प्रश्नका क्रमांक कोरमें साफ-साफ लिख लेना चाहिये! प्रश्नका क्रमांक डालनेमें भूल करनेसे परिक्षकको प्रायः परेशानी होती है। अतः प्रश्नका क्रमांक डाल लेनेमें विषेश सावधान रहना चाहिये।

क्रमांक डालते समय अेक दूसरी बातका ध्यान रखना आवश्यक है। प्रश्नका क्रमांक अुत्तर पुस्तकके अूपर बिलकुल कोनेमें न लिखना चाहिये। अैसा करनेसे जब सूचणी-पत्र मुख्य अुत्तर पुस्तकके साथ नत्थी किया जाता है तब प्रश्नके अंक भी अुसी में दब जाते हैं। अिसलिये अूपरी कोनेसे कुछ नीचे स्थानपर प्रश्न — क्रमांक डालना चाहिये।

परीक्षार्थीको विराम चिन्होंका ज्ञान भी अवश्य होना चाहिये। प्रायः परीक्षार्थी विराम चिन्हके नियमोंकी अवहेलना किया करते हैं। वे लिखते चले जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं किन्तु अेक वाक्यका अंत तथा दूसरेका आरंभ कहाँसे माना जाय अिसका ध्यान अुन्हें नहीं रहता। कमसे कम मोटे मोटे विराम चिन्होंका प्रयोग तो अुन्हें अवश्य ही करना चाहिये। जैसे विराम (।) अर्ध-विराम (;) स्वल्प विराम (१) अित्यादि

किस प्रश्नका अुत्तर कितनी पंक्तियों अथवा पृष्ठोंमें दिया जाय? यह प्रश्न अक्सर परीक्षार्थियोंके सामने अुठता है। अिसके अुत्तरमें कोअी नियम बताया जा सकता है। किन्तु अितना तो कहा ही जा सकता है कि परीक्षार्थीको चाहिये कि प्रश्न को ध्यानसे पढ़े और व्यर्थके विस्तारसे बचकर ठीक ठीक अुन बातोंका अुत्तर दे जो प्रश्नमें पूछी गयी हैं।

जिस विद्यार्थीकी अपने विषयकी पूरी तैयारी है वह सामान्य तौरपर अितना नियम रखे कि प्रश्नके लिये जितने अंक लिखे हों अुतने ही मिनटके अंदर अुस प्रश्नका अुत्तर पूरा हो जाना चाहिये। अिस नियमके अनुसार १०० अंकके १०० मिनट याने करीब १-२ दो घंटे हो गये। बाकीका पौन घंटा प्रश्न-पत्र पढ़नेमें, जवाब सोचनेमें, और अन्तमें लिखे हुअे जवाबोंपर सरसरी निगाहसे शुद्ध करनेमें खर्च हो जाते हैं। केवल लंबा चौड़ा अुत्तर लिखनेसे परीक्षामें अंक नहीं मिला करते। आवश्यक यह है कि सुंदर और सुबोध भाषामें विषयसे बाहर न जाकर प्रश्नका चाहा हुआ अुत्तर ही लिखा जाय। बार बार अुत्तरमें अुन्हीं बातोंपर दुहराना, जो अेक बार जा चुकी है, समय और अंक, दोनोंको गँवाना है। अिसलिये अुत्तरमें बे-मतलब की पुनरावृत्ति न हो अिसपर ध्यान देना चाहिये।

अुत्तर लिखते समय भाषाकी शुद्धतापर विशेष ध्यान देना चाहिये। छोटे छोटे वाक्य लिखनेसे वाक्योंमें गलती होनेकी संभावना कम रहती है। वाक्यमें शुद्ध ही शब्द लिखे जायँ शब्दोंके लिखनेमें प्रायः ह्रस्व-दीर्घ की गलती हुआ करती हैं। अिस प्रकारकी कमी को दूर करनेके लिये ध्यान पूर्वक भाषाके पढ़नेके पूर्व अभ्यासकी आवश्यकता होती है। फिर भी परीक्षा देते समय अिस ओर ध्यान दिया जा सकता है। प्रश्न पत्रके निश्चित समयमेंसे ५ या १० मिनट अपनी भाषा संबंधी गलतियोंको ठीक करनेके लिये लगाना चाहिये।

लिखते समय कुछ अैसी गलतियाँ प्रायः हो जाती हैं जैसे 'ब' के स्थानपर 'व' या 'व' के स्थानपर 'ब'; अथवा 'में' के स्थानपर 'मे', और 'हैं' के स्थानपर 'है', या 'है' के स्थानपर 'हैं'; 'कि' के स्थानपर 'की' आदि-आदि। अुत्तर पुस्तक रखनेसे पहले अिस प्रकारकी गलतियोंको दूर कर देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन प्रश्नोंमें प्रसंग या संदर्भ पूछा जाता है अुनके अुत्तर देनेमें विशेष सावधानी रखनी चाहिये। प्रसंग बहुत लंबा नहीं होना चाहिये। कभी कभी परीक्षार्थी बहुत लंबा प्रसंग लिखकर अपना अमूल्य समय व्यर्थ नष्ट करते हैं। आवश्यकताके अनुसार प्रसंग दो पंक्तियोंतक लिखा जा सकता है। प्रश्नमें दिये हुअे अुद्धरणके निकटका ही परिचय प्रसंगमें देना चाहिये। प्रारंभसे कथा लिखनेकी आवश्यकता नहीं होती है।

परीक्षार्थियोंके हितकी बातें

परीक्षाके लिये पूरी तयारी कर लेने के बाद कुछ अैसी भी बातें हैं जिनका ध्यान प्रत्येक परीक्षार्थीको रखना चाहिये। अुनमेंसे कुछ ये हैं ——

१. परीक्षाकी अगली रातमें बिलकुल जागरण न कीजिये। जागरण करके अुतरती रातमें पढ़ी हुअी बातें ध्यानमें कम रहती हैं और दूसरे दिन परीक्षाके समय चित्त प्रसन्न न रहनेसे प्रश्नोंके अुत्तर अच्छे नहीं लिखे जाते हैं।

२. परीक्षाके पूर्वदिन नयी नयी बातोंकी अपेक्षा पढ़ी हुअी बातें फिरसे पढ़ जाना या मनमें दुहराना अधिक लाभकारी है।

३. परीक्षाके दिन बिलकुल भूखे भी नहीं रहना, और पेट भरकर भी नहीं खाना चाहिये। जिसमें तेल और घी अधिक हो अथवा गरम मिर्च मसाला पड़ा हो वैसे पदार्थ नहीं खाने चाहिये।

४. धोती या दूसरे कपड़े बहुत तंग नहीं पहनना चाहिये। कपड़ेकी परेशानीसे चित्तकी शांति भंग होती है।

५. प्रश्न-पत्र हाथमें आते ही घबराकर जल्दबाजीसे प्रश्नोंको नहीं पढ़ना चाहिये। अगर हो सके तो सारे प्रश्न-पत्रको दो बार पढ़ लेना अच्छा है।

६. प्रश्नोंके अुत्तर क्रमसे ही देने चाहिये, अैसा कोअी नियम नहीं है। अुत्तरोंका क्रम अपना रुचि और सहूलियतके अनुसार निश्चय किया जाय। जिस प्रश्नका अुत्तर पहले सोचकर हम लिखते हैं वह हम अच्छी तरहसे लिख सकते हैं।

सोचनेमें समय जाता है, अुससे घबराना नहीं चाहिये। अुस समय बुद्धि अुत्तरकी रचना करनेमें व्यस्त रहती है, वह लाभदायी ही है।

७. परीक्षाके लिये बैठनेके पहले थोड़ा-सा पानी पी लेना अच्छा है। अुत्तर लिखते प्याससे परेशानी हो, यह अहितकर है। अिसी तरह जिन्हें आदत है वे शौचादिसे निवृत होकर ही परीक्षा स्थानमें जायें यह भी जरूरी है।

८. जेबमें कोअी कागज आदि रहने न पाये। किसीको संदेहके लिये स्थान ही न रहने देना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ने" का प्रयोग

वाक्य दो तरहके होते हैं– (१) प्रधान-कर्ता और (२) अप्रधान-कर्ता। पहलेमें क्रियाके लिंग, वचन और पुरुष कर्ताकारकके लिंग वचन और पुरुषके अनुसार होते हैं। जैसे-मोहन जलेबी खाता है। अिस अुदाहरणमें 'खाता है' क्रियाका लिंग, वचन और पुरुष 'मोहन' कर्ताके लिंग, वचन और पुरुषके अनुसार है; अिसलिये 'मोहन' यहाँ प्रधान कर्ता है। सीता पुस्तक पढ़ती है, बच्चा दूध पीता है, लड़के हॉकी खेलते हैं, लड़कियाँ गीत गाती हैं, अित्यादि वाक्य प्रधान-कर्ता हैं। अितना हमेशा याद रहे कि प्रधान कर्ताके साथ 'ने' कभी नहीं आता।

'ने' का प्रयोग वर्तमानकाल और भविष्यत कालमें किसी भी हालतमें नहीं होता, वह तो सिर्फ़ सकर्मक क्रियाके भूतकालके (१) सामान्य (२) आसन्न (३) पूर्ण और (४) संदिग्ध, अिन चार प्रयोगोंमें होते हैं।

यहाँ नीचे 'भूतकाल' को भी अच्छी तरह अुदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है— जिस वाक्यमें कर्ताको प्रधानता नहीं दी जाती; बल्कि क्रियाके लिंग, वचन और पुरुषके अनुसार हों अुसे कर्म प्रधान वाक्य समझना चाहिये। अप्रधान कर्ता वाक्यमें ही 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे— 'रामने पुस्तक पढ़ी'। अिस अुदाहरणमें 'पढ़ी' सकर्मक क्रियाके लिंग, वचन और पुरुष 'रामने' कर्ताके अनुसार न होकर 'पुस्तक' कर्मके अनुसार हुअे। अतः अप्रधान कर्ताके साथ ही 'ने' विभक्ति प्रयोग होता है। अिसे कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग भी कहते हैं। जैसे— राम ने रोटी खायी। राधाने आम खाया। महादेवने केले खाये। लड़कोंने गोलियाँ खेलीं। मैंने यह काम किया। गौरीशंकरने पुस्तकें लिखीं। क्रियाके जिस रूपसे बीते हुअे समयमें क्रियाका होना पाया जाय अुसे 'भूतकाल' कहते हैं।

भूतकालके साधारणतः ६ भेद हैं— सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत 'संदिग्ध, और हेतुहेतुमद्भूत।

(१) सामान्यभूत—अिसमें क्रियाकी पूर्णता होती है, कालकी कोअी विशेषता नहीं पायी जाती। जैसे— खाया, पिया, गया, अुठा, लिखा, चला। क्रिया सकर्मक हुअी तो कर्ताके साथ 'ने' लगेगा और क्रियाके लिंग, वचन और पुरुषके अनुसार होंगे। रामने पुस्तक पढ़ी। सीताने आम खाया। मैंने कपड़े धोये। रामदत्त खाया। लड़की सोयी। लड़का रोया। मैं चला।

(२) आसन्नभूतः— यह काल 'वर्तमान काल' से मिला हुआ रहता है। अभी क्रियाका व्यापार हुअे थोड़ा ही समय बीता है। अिस कालमें क्रियाकी पूर्णता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वर्तमानसे अुसकी समीपता पायी जाती है। रामचंद्र आया है। मै चला हूँ। हम सोये हैं। श्यामने रोटी खायी है। लड़कोंने रोटीयाँ खायी हैं। महाजनने आम (बहु०) खाये हैं।

विशेषः— 'सामान्यभूत' में अकर्मक क्रियाके आगे कर्ताके वचन और पुरुषके अनुसार हूँ, है, हैं और हो- लगानेसे आसन्नभूत बनता है, और सकर्मक क्रियाके आगे केवल कर्मके वचनके अनुसार 'है' या 'हैं' तीनों पुरुषोंमें लगता है। अकर्मका अुदाहरण— मै चला हूँ। हम आये हैं। वह सोया है। सीता दौड़ी है। तुम रोया है। तुम चले हो। मैं आयी हूँ (स्त्री) हम आयी हैं (स्त्री)।

सकर्मकका अुदाहरणः— मैंने रोटी खायी है। मैंने रोटियाँ खायी हैं। रामने केला खाया है। सीताने केले खाये हैं। आसन्न भूतकाल (सकर्मक) (ग्रंथ लिखा-लिखे, पुस्तकें लिखीं) कर्मका लिंग, वचन, पुरुष ही क्रियाका लिंग, वचन और पुरुष होता है।

जहाँ कर्मके साथ अुसकी विभक्ति 'को' आती है वहाँ क्रिया हमेशा अेक वचन पुलिंगमें ही रहती है। अिसमें क्रियाके लिंग, वचन और पुरुष न तो कर्ताके अनुसार और न कर्मके अुनुसार होते हैं। जैसे— हमने अुस पागल औरतको देखा। अुसने रोटीयोंको खा लिया। मैंने जलेबियोंको खाया-खाया है-खाया था-खाया होगा। तुमने पुस्तक (पुस्तकों) पढा-है-था- होगा। सिपाहीने चोर (चोरों) को खूब पीटा था। सैनिकोंने शत्रु (ओं) को अच्छी तरह खदेड़ा-है-था होगा। रामने रावणको मारा। अर्जुनने कौरवोंको मारा-अित्यादि।

सकर्मक क्रियाका भूतकाल

भूतकालः— व्याकरणमें साधारणतः क्रियाके रूपको 'काल' कहते हैं। कर्ताके साथ 'ने' आता है।

(३) अपूर्णभूत—अिसमें क्रियाका व्यापार गतकालमें हो रहा था; परन्तु पूरा नहीं हुआ यह सूचित होता है। जैसे-वह रोटी खाता था, सीता रोटी खाती थी, देव आ रहा था, मोहन मुरली बजा रहा था। नौकर जा रहा था। गाड़ी आ रही थी। हम, तुम और वे खाते थे। हम, तुम और वे (स्त्री) खाती थीं। मैं, तुम, और वह (स्त्री) खाती थीं। मैं, तू और वह (स्त्री) खाती थी। अिसमें अकर्मक और सकर्मक के रूप समान होते हैं। वाक्य कर्ता-प्रधान रहता है। अिसलिये 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

(४) पूर्णभूतः— अिससे यह मालूम होता है कि क्रियाका व्यापार होकर बहुत समय बीत चुका है। जैसे, नानकचंद आया था, श्यामने मुरली बजायी थी। नौकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी लाया था। सेना युद्धक्षेत्रमें भेजी गयी थी। सकर्मक पूर्णभूतमें 'ने' का प्रयोग होता है।

(५) संदिग्ध भूत :- क्रिया के जिस रूपमें भूतकाल तो पाया जाय, लेकिन क्रियाके व्यापारकी पूर्णतामें सन्देह हो, अुसके अन्तमें 'होगा' लगाते हैं। जैसे-देखा होगा। चला होगा। आज परीक्षा फल निकला होगा। रूद्रदत्त आया होगा। मोहनने मुरली बजायी होगी। रामने पुस्तक पढ़ी होगी।

(६) हेतुहेतुमद्भूत – यह भूतकालका छठा भेद है। अिसमें अैसी दो बातोंका न होना सूचित होता है, जिनमें दूसरी बात पहलीपर निर्भर रहती है। जैसे अगर आप आ जाते तो काम अवश्य हो जाता (अर्थात आप आये नहीं, काम हुआ नहीं। कामका होना आपके आनेपर अवलम्बित था)। तुम माँगते तो मैं देता। अिसे 'पूर्ण संकेतार्थ' भी कहते हैं। अिसमें 'ने' नहीं लगता।

मराठी भाषा-भाषी परीक्षार्थी ध्यान दें

मराठी भाषा-भाषियोंको हिंदी सीखना अेक मामूली बात है। अुनके लिये, अलग लिपि न होनेके कारण, और अेक अपरिचित वर्णमाला तथा लिपि सीखनेका सवाल ही नहीं अुठता। दोनों भाषाओंने, अत्यंत समृद्ध, अेक ही संस्कृत भाषाकी खदानसे शब्द अुठा लिये हैं। परिणाम यह हुआ कि अुनकी शब्द संपत्तिमें भी विशेष अंतर नहीं पाया जाता। अुसी तरह अुनकी वाक्य रचना भी अेक ही ढंगकी हैं। अिन्हीं कारणोंसे आज महाराष्ट्रमें राष्ट्रभाषाका प्रचार दिन दूना रात चौगुना बढ़ता हुआ दिखाअी देता है।

परन्तु अिसी कारणसे, जब मराठी भाषा-भाषी बोलने या लिखने लगता है तब अधिकसे अधिक गलतियाँ भी कर बैठता है। अुसकी मातृ-भाषासे हिंदी मिली–जुली होनेके कारण जो बातें अुसके लिये वरदान जैसी माल्म होती हैं वही शाप-सी बन बैठती हैं। लिखते समय वह अपनी हिंदीमें मराठी शब्द ठूँस–ठूँस कर भरने लगाता है। हिंदीके कुछ शब्दोंको जो मराठी शब्दोंसे कुछ अलग हैं, अुन्हें भी वह अपने ढंगसे लिखने लगता है। बोलते समय तो सर्वनाम तथा क्रियाओंके रूपोंको छोड़कर सभी शब्द मराठी हीके प्रयोग करता है। फलतः अुसकी भाषामें मराठी-पन आने लगता है। वह भद्दीसी दिखाअी देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हम हिंदी शब्दोंके शुद्ध रूप जानें तथा अुनका अुपयोग करते समय जरा ध्यान रखें तो अिन गलतियोंको आसानीसे टाल सकते हैं। थोड़ा ध्यान देनेसे हम शुद्ध भाषा लिख सकते हैं और अपने श्रोता या पाठकपर अच्छा असर छोड़ दे सकते हैं।

नीचे कुछ अैसे शब्द दिये जाते हैं, जिनको हमारे मराठी भाषाभाषी भाअी हमेशा गलत लिखते हैं।

मालूम	मदद	लोग	हाथ	मज़दूर	बहुत
रूमूली	ताक़त	साग	हाथी	नज़दीक	नहीं
मानत	धंधा	घमंड	हथियार	पसंद	ने
रूहूर	कीमत	जानवर	नौ	टुकड़ा	पूँछ
कि	कोशिश	होशियार	खूब	लड़ाअी	पूछना
ह	पहला	खंभा	भूखा	दूकान	धोना
याही	पुल	लार	पोशाक	दूसरा	सादा

कुछ अैसे शब्द हैं जो दोनों भाषाओंमें अलग-अलग अर्थमें प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे:—

हिंदी शब्द	हिंदीमें अुसका अर्थ	मराठीमें अुसका अर्थ
मीठा	मधुर	नमकीन
पत्र	पत्र	स्वाद
चारा	अुपाय	घास
घास	दूब	कौर
पत्ता	पेड़का पत्र	पता
पन्ना	पुस्तकका पृष्ठ	—
धूप	सूरजका प्रकाश व ताप	सुगंधित धुआँ
ऊन	भेड़ बकरीका रोयाँ	गरम
लट्ठ	बड़ी लाठी	मोटा
मोटा	स्थूल	बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी शब्द	हिन्दीमें अुसका अर्थ	मराठीमें अुसका अर्थ
जाड़ा	शीतकाल	मोटा
बंदर	मर्कट	बंदरगाह
चेष्टा	प्रयत्न	मज़ाक
संसार	दुनिया	गृहस्थी
आपत्ति	अेतराज	संकट
विनय	प्रार्थना	नम्रता
शिक्षा	सीख	दंड, सज़ा
तालीम	शिक्षा	व्यायाम, कसरत
पीठ	पृष्ठ	आटा
अुपहार	भेंट	नाश्ता
घाम	धूप	पसीना
मेला	भीड़	मृत्यु हुअी
भीड़	जन-समूह	मानसिक दबाव

हिन्दीमें थोड़े अैसे शब्दोंमें थोड़ा भी फर्क़ कर डालनेपर अुनका अर्थ बदल जाता है या अर्थहीन हो जाते हैं।

में	मैं	क्यों	क्या	कहा	कहाँ

मराठी और हिन्दीमें शब्द अेक होनेपर भी कुछ शब्दोंके लिंगोंमें भेद पाया जाता है। निम्न लिखित शब्द मराठीमें पुल्लिंगी या नपुंसक लिंगी माने जाते हैं किन्तु हिंदीमें अुनका स्त्रिलिंगमें प्रयोग किया जाता है।

दूकान	मृत्यु	आवाज़	हींग
सरकार	चाय	बर्फ़	गाजर
पुलिस	छत	किरण	दगा
जय, विजय	डेस्क	सामर्थ्य	पुस्तक
देह	अिंजिन	आत्मा	वायु
गंध	लालटेन	महिमा	संतान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाका स्वरूप

[अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके ३४ वें अधिवेशनके अध्यक्ष-पदसे श्री. वियोगी हरिजीने 'राष्ट्रभाषाके स्वरूप' के सम्बन्धमें जो विचार व्यक्त किये उन्हें हम सादर यहां अधृत करते हैं। सं.—]

सबसे पहले मैं राष्ट्रभाषाके स्वरूपके सम्बन्धमें ही कहना चाहता हूँ। सम्मेलनका मत स्पष्ट है। वह हिन्दीको, अुसके प्रचलित रूपमें, राष्ट्रभाषा और नागरी लिपिको राष्ट्र-लिपि मानता है। अुसकी अिस मान्यतामें शुद्ध और पूर्ण राष्ट्रीय दृष्टिकोण रहा है। जहाँतक हिन्दीके बोलनेका सम्बन्ध है, विभिन्न हिन्दीभाषी प्रदेशोंमें भी अुसके अनेक रूप प्रचलित हैं। लिखी भी वह कअी शैलियोंमें जाती है। अेक शैली अुसकी अुर्दू भी है, जिसका चलन विशिष्ट जनोंमें पाया जाता है। स्पष्ट है कि हमने अिस विशिष्ट शैलीको बहिष्कृत नहीं किया है; अैसा करनेकी हमारी कभी मनशा भी नहीं।

हमारे देशमें भाषा कभी वाद-विवादका विषय नहीं बनी थी। अुसपर कभी राज-सत्ता का अंकुश नहीं रहा। मुसलिम शासन-कालमें भी राजभाषा फ़ारसी अुसके फलने-फुलनेमें दखल नहीं दे सकी। राज-भाषा लोक-हृदय और लोक-मस्तिष्क पर थोड़े ही शासन कर सकती है? यह अलग बात है कि हमारे कवियों और लेखकोंने अरबी, फारसी और तुर्कीके अनेक शब्दोंको सद्भावसे, सहज रीतिसे ग्रहण कर लिया। हमारी भाषामें वे घुल-मिल गये, रच-पच गये। अिसमें कोअी साम्प्र-दायिक या राजनीतिक दृष्टि नहीं थी। यह अंगीकार तो 'अयत्नसाधित' हुआ। अिस चीज़के भीतर, अनजताये, प्रेमकी भावना काम करती थी। वे यह सोच-सोचकर नहीं लिखते या कहते थे कि अमुक शब्दको अिसलिये लेना ठीक नहीं कि अुसे अमुक जन-समुदाय नहीं समझ सकेगा। वह भी समझे और यह भी समझे, बल्कि शब्दोंके बँटवारेमें हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफ़ी अुदार भी समझे जायें—अिस नीयतसे हम लिखेंगे और बोलेंगे, तो वह भाषा स्वभावसरल न होकर बनावटी ही होगी। भले हमारी मनशा भाषाको सरल या आमफ़हम बनानेकी हो, पर अपने अिस अस्वाभाविक प्रयत्नमें हम सफल नहीं हो सकेंगे। दो विभिन्न भाषाओंके समानार्थक शब्दोंको अेकसाथ रखनेसे भी भाषाके आमफ़हम बनाने का प्रश्न हल नहीं होगा। साम्प्रदायिक अेक्य साधनकी धुनमें भाषाको जान-मानकर बिगाड़ना किसीभी दृष्टिसे समीचीन नहीं। बेमेल शब्दोंको कान अुमेठ-अुमेठकर जबरदस्ती अैसी जगह बिठाना, जो अुनके लिअे मौजूं न हो, अेक व्यर्थका ही प्रयास है। कभी अिस तरह सरल, सुबोध और सामान्य भाषा बनी है? अिस फेरमें पड़कर भाषाको—हिंदीको भी और अुर्दूको भी—अस्वाभाविक और असुन्दर क्यों बनाया जा रहा है! सरल भाषा तो स्वभावसे ही सुन्दर होती है। जिस भाषामें, जिस शैलीमें सौन्दर्य नहीं, लोच नहीं, चमत्कार नहीं, वह लोक-हृदयको कैसे आकृष्ट कर सकती है!

कबीरने भाषाको 'बहता नीर' कहा है। प्रवाह सहज अर्थात् 'अयत्नसाधित' होता है। पूज्य बापुजीकी भी हिंदी अैसी ही स्वभाव सरल होती है। वे भाषाके नियमोंका भंग जान बुझकर नहीं करते। मगर अुनके 'हरिजनसेवक' की वर्तमान हिन्दी—नहीं, नहीं, हिन्दुस्तानी-को ज़रा आप देखें। अुसमें हिंदीका बेमेल गठ-बंधन किस भौंड़पनके साथ किया जा रहा है! हिंदुस्तानीके नाम पर हिन्दी और अुर्दूका यह भद्दा परिहास अच्छा नहीं। यदि समन्वयके विचारसे राष्ट्र-भाषाको बिल्कुल नये साँचेमें ढाला जा रहा हो, तो मुझे अितना ही कहना है कि समन्वयीकरण में भाषाकी मूल प्रकृतिका हमें पूरा ध्यान रखना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

'राष्ट्र-भाषा का परीक्षांक'

आप चाहें तो अिसे 'विशेषांक' कह सकते हैं; किन्तु है यह 'परीक्षांक' ही। अिसकी विशेषता अितनी ही है कि अिसमें आगामी फरवरी परीक्षामें बैठने वाले विद्यार्थियोंके लिये कुछ अुपयोगी लेख विशेष-रूपसे दे दिये गये हैं।

पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पिछली फरवरी परीक्षा की अपेक्षा अिस परीक्षामें लगभग आठ हजार परीक्षार्थी अधिक सम्मिलित हो रहे हैं। अिसका अर्थ कार्यालयके लिये अधिक कार्य होने पर भी हम अिस संख्या-वृद्धिका केवल अिसलिये स्वागत करते हैं क्योंकि यह हमारे राष्ट्रभाषा प्रचारकोंके परिश्रमका सच्चा सर्टिफिकेट है। तो भी हम अेक प्रार्थना करना ही चाहते हैं कि हमारे राष्ट्रभाषा प्रचारकगण अपने विद्यार्थियों तथा परीक्षार्थियोंकी योग्यता पर--विशेष रूपसे भाषण योग्यता--बढ़ानेकी ओर अवश्य ध्यान दें।

प्रचारका सबसे बड़ा साधन और यथार्थ अुद्देश्य राष्ट्रभाषाके योग्यतम जानकर पैदा करना ही है।

सिंधमें राष्ट्रभाषा-प्रचार

अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका चौतीसवाँ वार्षिक अधिवेशन सिन्धमें राष्ट्रभाषा प्रचारके लिये बड़ा भारी साधन सिद्ध हुआ है। सिन्धकी आज जैसी स्थिति है अुसे देखते हुअे स्वीकार करना पड़ता है कि आज सिन्धमें ही अन्य सभी प्रान्तोंकी अपेक्षा राष्ट्रभाषाका प्रचार-कार्य अधिक हो रहा है। कुछ बातें अैसी हैं कि जो हमारी अिच्छाके अनुकूल न होने पर भी अुन्हें सही स्वीकार करना पड़ता है। हम भाषा और मजहबको अेक दूसरेसे पृथक करके ही देखते हैं और देखना चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। फिर भी यह मानना पड़ता है कि आज दिन सभी प्रान्तोंमें हिन्दीको हिन्दू ही अधिक स्वीकार करते हैं। अुनकी संख्या सिन्धमें अहिन्दुओंकी अपेक्षा कम है और सारे सिन्धकी जन संख्या भी अुसके क्षेत्रफलको देखते हुअे बहुत ही कम। अैसी हालतमें सिन्धसे पाँच-पाँच हजार विद्यार्थियोंका राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षाओंमें सम्मिलित होना अुनके सच्चे राष्ट्रभाषा प्रेमका प्रमाण है।

सिन्ध वासियोंकी भाषा सम्बन्धी स्थिति भी विशेष है। अुनकी अपनी सिन्धी भाषाकी लिपि भले ही कभी देवनागरी रही हो अथवा भले ही भविष्यमें वह देवनागरी हो जाय किन्तु आज तो वह अर्बी-सिन्धी है। अन्य सभी अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तोंकी प्रान्तीय लिपियाँ देवनागरी अथवा देवनागरीका ही रूप होनेसे अुन प्रान्तोंके विद्यार्थियोंको देवनागरी लिपिमें लिखी जाने वाली राष्ट्रभाषा सीखनेमें कुछ आसानी है। सिन्धी विद्यार्थियोंका देवनागरी लिपि और राष्ट्रभाषा सीखना अुनका राष्ट्रलिपि और राष्ट्रभाषाके प्रेमका दूसरा बड़ा प्रमाण है।

सिन्ध (कराची) में जो सम्मेलनका अधिवेशन हुआ अुसमें लगभग खुले अधिवेशन जितनी ही राष्ट्रभाषा-परिषद भी सफल रही। प्रसिद्ध भाषा-तत्वज्ञश्री सुनीति कुमार चट्टोपाध्यायका भाषण काफी लम्बा होनेपर भी विशेष ज्ञान-वर्धक होनेके कारण बड़े मनोयोगसे सुना गया। अधिवेशनके अवसर पर सिन्धी-सम्मेलन और सूफी-समागम—कराची सम्मेलनकी दो अन्य विशेषतायें थीं।

अधिवेशनकी समाप्तिपर कराची-अधिवेशनके मनोनीत अध्यक्ष श्री वियोगी हरिजी, सम्मेलनके प्रधानमन्त्री पंडित मौलिचन्द्र शर्मा, तथा सिन्धमें राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यके अेक स्तम्भ प्रो० मलकानीजी, सिन्ध राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री पंडित देवदत्त शर्मा तथा मैं सिन्धके कुछ प्रधान नगरोंमें हो आये। सभी जगह सार्वजनिक मीटिंगोंके अतिरिक्त कार्यकर्ताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मीटिंग हुई। खूब खुल कर वार्तालाप हुआ और हमें ऐसा लगा कि सिन्धके प्रत्येक बड़े नगरमें राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यको अुसके अुचित महत्वकी दृष्टिसे देखा जा रहा है।

हाँ, पिछले दिनों सिन्ध राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अध्यक्ष भाअी प्रताप अुल्लासके सिन्धसे बाहर रहने और पंडित अिन्द्रदेव शर्माके निधन तथा अन्य कुछ राष्ट्रभाषा प्रेमी कार्यकर्ताओंके भी अिधर अुधर हो जानेसे सिन्ध में कार्य जितना आगे बढ़ जाना चाहिये था अुतना नहीं बढ़ा। अिस बार सम्मेलनने राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सारे कार्यको सुसंगठित और सञ्जीवित होनेमें सहायता दी है।

सिन्धका प्रतिनिधि-नगर तो हैदराबाद सिन्ध ही है किन्तु आधुनिकताकी दौड़में अुसे कराची पीछे छोड़ गया है। हमारी कराची राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अध्यक्ष श्री सेठ परसराम तथा पंडित राधाकृष्णजी तथा सूर्यनारायणजी सभी राष्ट्रभाषा प्रचारके लिये स्वार्थ-त्याग करनेमें किसीको भी अिससे आगे बढ़ने नहीं देना चाहते। हम सभीको कराची समितिका कार्यालय, पुस्तकालय तथा वाचनालय देख कर बड़ी प्रसन्नता हुअी।

अिधर सिन्धकी प्रान्तीय समितिका कार्य बढ़ जाने तथा और अधिक लोगोंके विचारसे यह आवश्यक हो रहा था कि पंडित देवदत्त शर्माका हाथ बटाने वाला कोअी योग्य साथी अुन्हें मिले। हमें हर्ष है कि पंडित हरिरामजीने, जो सिन्धीके बहुत अच्छे व्याख्याता माने जाते हैं, और जिन्होंने कअी वर्ष तक हरिजन-सेवाका कार्य किया है, भविष्यमें अपना सारा समय राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यमें लगाना स्वीकार किया है। हम सिन्ध के बाहरके सभी राष्ट्रभाषाप्रेमी कार्यकर्ताओंसे अुन्हें पूरा सहयोग देनेकी प्रार्थना करते हैं।

यह कहना अनावश्यक है कि अपने केन्द्रीय कार्यालयसे तो अुन्हें पूरा बल और सहयोग मिलेगा ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा भवनके लिये दान—

यद्यपि समितिका कार्यलय अब अपने भवनमें आ गया है तो भी भवन-निर्माणका कार्य तो जारी ही है। अधर राष्ट्रभाषा प्रेसकी अिमारत भी बन चली है और छः नये कमरोंपर छत पड़ने जा रही है।

अिसबारकी सिन्धकी यात्रामें सक्खर निवासी श्रीमान ज. ब. मंघाराम कम्पनीने हमें अेक कमरेके निर्माणार्थ २०००) देनेकी कृपा की है। जिन जिन सज्जनोंने कभी भी, कहीं भी जे. बी. मंघाराम बिस्कुटोंको चखा होगा अुन्हें अिस कम्पनीका परिचय देनेकी आवश्यकता नहीं।

हमें अिस बारकी सक्खर-यात्रामें अिन राष्ट्रभाषा-प्रेमी बन्धुओंका आतिथ्य ग्रहण कर बड़ी प्रसन्नता हुअी। विश्वास है कि अन्य राष्ट्रभाषा भी आपका अनुकरण करेंगे जिससे कार्य द्रुत गतिसे हो सके

—आनन्द कौसल्यायन

परीक्षा विभाग

परीक्षा फल—

फरवरी ४७ में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षा फल ३० मार्च' ४७ को प्रकाशित होगा।

कोविदमें लेखन कार्य—

कोविद परीक्षार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य किया गया है। प्रत्येक लेख कमसे कम ३ पृष्ठका होना चाहिये। जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं अुन्हें काफी अंकोंकी हानि अुठानी पड़ती है। अिसलिये परीक्षार्थियोंको लेख अवश्य लिखना चाहिये। आगामी परीक्षाके लिये निबन्धोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबन्ध लिख सकते हैं। अिनके अलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. विज्ञान और मानव २. पराधीन सपने सुख नाहीं ३. हमारे गांवोंकी समस्याएं ४. समाज और स्त्री ५. राष्ट्रलिपि और अुसकी योग्यता ६. काम वही कर सकता है जिसके पास समय नहीं ७. साहित्य और समाज ८. गरीबोंका भगवान तो रोटी है ९. जनता जनार्दन का सेवक गांधी १० हमारी सामाजिक कुरीतियाँ ११ गांधीजीका रचनात्मक कार्यक्रम १२ समाचार पत्र ।

विद अुत्तीर्णांक—

फरवरी ४७ के लिये कोविद अुत्तीर्णांक ४० की जगह ३५ रखे गये हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्रमें २० अंक प्राप्त करना ही चाहिये।

क्षामें न बैठावें—

प्रत्येक केन्द्रमें सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियोंके 'प्रवेश पत्र' यथा समय केन्द्र व्यवस्थापकोंके पास भेज दिये जावेंगे। किन्हीं कारणोंसे जिन परीक्षार्थियोंके आवेदन पत्र अस्वीकृत हुअे हैं अुनके प्रवेशपत्र नहीं भेजे जावेंगे। केन्द्रव्यवस्थापकोंसे प्रार्थना है कि 'प्रवेशपत्र' के बिना किसी परीक्षार्थीको परीक्षामें सम्मिलित न करें।

नसिरावाद—अेक आदर्श केन्द्र

लगनशील और निष्ठावान कार्यकर्ताओंके सहयोगसे किसी छोटे स्थानमें राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य कितना सुंदर और व्यवस्थित रूपसे हो सकता अिसका अुदाहरण हमारा नसिरावाद केंद्र है। नसिराबाद अेक बड़ा गांव है। किंतु प्रत्येक परिक्षामें अिस केंद्रसे सैकड़ोंकी संख्यामें परीक्षार्थी हैं। अितना ही नहीं परीक्षार्थियोंकी सुविधाके लिये अेक पुस्तकालय वाचनालय भी है। चर्चा मंडल द्वारा विद्यार्थियोंकी वाक् शक्ति बढ़ाने भी प्रबंध किया जाता है।

अिस केंद्रके संचालक श्री॰ नंद चतुर्वेदीजीकी जितनी भी प्रसंशा की जाय थोड़ी है। यह अुनका सौभाग्य है कि अुन्हें निष्ठावान मौन रह कर कार्य करने वाले मिल गये हैं।

नसिराबाद समितिका अेक आदर्श परीक्षा केन्द्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र व्यवस्थापकोंसे:— परीक्षाओंका कार्यक्रम—

	परीक्षाका नाम	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
शनिवार ८।२।४७	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
रविवार ९।२।४७	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र ३	मौखिक
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	
मंगलवार ११।२।४७	कोविद	प्राचीन पद्य, समय ७-३० से १०-३०	
बुधवार १२।२।४७	कोविद	उर्दू ७-३० से १०-३०	
	परिचय	उर्दू ७-३० से १०-३०	

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता० १०।२।४७ सोमवारको सबेरे होगी। प्रवेशकी मौखिक परीक्षा अब नहीं होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अनुसूचना देंगे।

आप आगामी परीक्षाके सभी आवेदन-पत्र भेज चुके हैं। यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंके नाम और योग्यता साथमें गये सिफारिश-पत्रपर भरकर हमारे पास वापसी डाकसे भेज दें। साथ जिनके नामकी आप सिफारिश करें उनसे स्वीकृति-पत्र भी भरवाकर भेजें। अिसके लिये भी छपा पत्रक साथ भेजा जा रहा है। निरीक्षककी नियुक्तिकी सूचना समयपर आपके पास पहुँच जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैंतीससे कम परीक्षार्थीवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रति दिनके लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा। प्रारंभिक परीक्षा आधे दिन ही होती है, अिसलिये अिसके लिये आधे दिन तक ही निरीक्षककी नियुक्ति करनी चाहिये। अैसे निरीक्षकको पुरुस्कार भी आठ आना दिया जा सकेगा।

परिचयकी मौखिक परिक्षा :—

प्रवेशकी मौखिक पराक्ष हटा दी गअी है। परिचय मौखिक परीक्षाकी व्यवस्थाका सारा भार केन्द्र-व्यवस्थापकोंपर रखा गया है। वे ही अिसके लिये परीक्षककी नियुक्ति और तारीख मुकर्रर करें। परीक्षकके लिये किसी योग्य स्थानीय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा। परिचय मौखिक परीक्षा छपे कार्यक्रमके अनुसार साधारण परीक्षाके साथ ही ली जाय।

परिचयकी अिस मौखिक परिक्षाकी सारी व्यवस्था आप शीघ्र करें। मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही आप प्राप्तांक-सूची सील-मुहर करके हमारे पास भेज दें। अिस परीक्षाकी सूचना परिचयके सब परीक्षार्थियोंको दे दें।

परिचय परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक २० रखा गया है।

कोविदकी मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना समयपर अलगसे भेजी जायेगी।

हमारे नये केन्द्र

केन्द्रका नाम	प्रान्त	केन्द क्रमांक
[illegible]गिया आश्रम	असम	१९७
[illegible]न्त निकेतन	बंगाल	१८२
[illegible]स्का	ओरिसा	१९४
[illegible]रंगपूर	,,	१८६
[illegible]दा	गुजरात	१८८
[illegible]भी	,,	१९९
[illegible]री	महाराष्ट्र	२१५
[illegible]	,,	२१३
[illegible]री	वि. नागपूर	२२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ला. ८३८

गत परीक्षाओंके प्रश्न-पत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है। गत प्रश्नपत्रोंके देखनेसे यह ज्ञात हो जाता है कि प्रश्नपत्र किस प्रकारका आनेवाला है।

प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविद परीक्षाके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं। परीक्षाओंके अेक समयके प्रश्नपत्रोंके संच (सेट) तैयार किये गये हैं। प्रत्येक संचका दाम ।–, है। प्रत्येक परीक्षाके फुटकर प्रश्नपत्र भी मिलते हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसा है। प्रश्न-पत्रोंका संच अथवा फुटकर प्रश्नपत्र मँगाते समय आवश्यक मूल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये। 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षाके प्रश्नपत्रोंके संचका दाम ।–, आने है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रबन्ध सम्पादक—हरीकृष्ण शर्मा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
मुद्रक—आनंद कौसल्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ६

दिसम्बर १९४६

अंक २

राष्ट्रभारती

मेरा मंत्र

मेरी सहस्र वाणियोंकी गूँज अेक मंत्र हो.
वतन मेरा स्वतंत्र हो, स्वतंत्र हो, स्वतंत्र हो.
अभी-अभी स्वतंत्र हो, अिसी घड़ी स्वतंत्र हो.
पलक गिरे, पलक अुठे, मेरा वतन स्वतंत्र हो.

—पं. भरत व्यास.

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

बागी	(विक्लेश) ३५	यह भी महान् अभिनिष्क्रमण है	
प्रधान मंत्रीकी ओरसे	३६	(भदन्त आनन्द कौसल्यायन)	४७
मैं पत्रकारोंसे डरता हूँ (श्री मै. श. गुप्त)	३९	देहरादूनसे	५०
हिंदीके दुर्दिन बीत चुके (श्री ना. प्रेमी)	४०	कच्ची तैयारी (अनिल कुमार)	५५
जुम्मा भिस्ती (श्री धूमकेतु)	४२	राष्ट्रभाषा शिविरका अुद्घाटन	६०
तसबीरके दो रुख (श्री शं. के. आडकर)	४५	परीक्षा विभाग	६१

राष्ट्रभाषा प्रेस

राष्ट्रभाषा प्रेस नया होनेके कारण अभी परियाप्त मात्रामें अ, झ, ण, आदि अक्षरोंकी व्यवस्था नहीं हो सकी है। आशा है जनवरी तक हम यह कमी दूर कर सकेंगे।

व्यवस्थापक—

राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रांत	नाम	प्रचारक क्रमांक	केंद्र
गुजरात	श्री दुर्गा वि. त्रिवेदी	८७१	बडौदा
,,	,, नवुभाअी कृष्णाजी कार्लेकर	८७२	,,
,,	,, दयालभाअी केशवभाअी पटेल	८८०	कडोद
महाराष्ट्र	,, दत्तात्रय लक्ष्मण महाजन	८७९	मनमाड
,,	,, मधुसूदन केशवराव अनगल	८८२	पुणें
,,	,, गंगाराम नारायण भंगाले	८८३	थोरगव्हान
,,	,, गोपाल सुका चौधरी	८८४	जलगांव
बम्बअी	,, मधुसूदन आनंदराव चित्रे	८७३	बांद्रा
,,	,, नरभेराम माधवजी ब्रह्मभट्ट	८७४	कालबादेवी
,,	,, शालिनी मोरेश्वर प्रधान	८७२	दादर
,,	,, रामकृष्ण श्रीनिवास प्रभू	८७६	गिरगांव
,,	,, अीश्वरलाल घनश्यामजी व्यास	८७७	बम्बअी
,,	,, कृष्णाजी दादू मेयकर	८८१	माझगाम
,,	,, रामहर्ष रामयश अवस्थी	८८५	घाटकोपर
विदर्भ-नागपुर	सौ. कमल धाबे	८७८	रामटेक
,,	श्री सुखलाल शर्मा	८८६	नागपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ६] वर्धा, दिसम्बर—१९४६ [अंक २

बागी

—विकलेश—

बताओ गोलियोंकी बाढ़ कैसे घाव भूलेंगे ?
बताओ बेड़ियोंकी याद कैसे पाँव भूलेंगे ?
दृगोंसे आग उठती है, जिगरसे दर्द उठता है
भला बरबादियोंकी याद अजड़े गाँव भूलेंगे ?
गवाही खूनकी लेकर खड़ा भगवान है, बागी !

न भूलो मुक्तिके बदले तुम्हें जञ्जीर मिलती है
दिखाकर प्यारका पानी नयनसे पीर मिलती है
बढ़े हैं हाथ 'शकुनी' के लगी सर्वस्वकी बाजी
जुअेमें हारनेवाली तुम्हें तकदीर मिलती है
समझ लो दांव चुकते ही तुम्हें 'वीरान' है, बागी

पहाड़ोंसे अुतरती आ रही है कालकी छाया
समुद्रोंसे मचलती आ रही बंगालकी छाया
गगनके वृत्यको ठुकरा रही हैं ध्वस्त अुल्काअें
चिताकी राखपर बल खा रही कंकालकी छाया
धराके वक्षपर अिठला रहा शैतान है, बागी !

प्रलयको शिंजिनी है, क्रान्तिका रण-राग फूंकेगी
मशालें जल अुठी हैं झोपड़ोंमें आग फूंकेगी
गुलामी रोक रखनेको बहादुर जी नहीं सकते—
वतनकी नौजवानी यों अमनका 'बाग' फूंकेगी
धनुषपर चढ़ चुका पावक-प्रलयका बान है, बागी !

['संसार' से]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे—

हमारा कराची सम्मेलन

मेरठ काँग्रेसके बाद २६, २७, २८, २९ दिसम्बरको कराचीमें अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका पैंतीसवाँ अधिवेशन होने जा रहा है। कराचीमें बड़े अुत्साहसे तैय्यारियाँ हो रही हैं।

अभी अभी पत्रोंमें सम्मेलनके तथा अुसके साथ होनेवाली परिषदोंके अध्यक्षोंके चुनावकी घोषणा हुअी है जो अिस प्रकार हैं—

अधिवेशनके अध्यक्ष	—	**श्री. वियोगीहरिजी**
राष्ट्रभाषा-परिषदके अध्यक्ष	—	**श्री. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या**
साहित्य-परिषदके अध्यक्ष	—	**आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी**
दर्शन-परिषदके अध्यक्ष	—	**श्री. क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय**
समाजशास्त्र-परिषदके अध्यक्ष	—	**श्री. वासुदेव अुपाध्याय**
विज्ञान-परिषदके अध्यक्ष	—	**श्री. चंद्रशेखर वाजपेयी**

सम्मेलनने अिस वर्ष अपने अध्यक्षपदके लिअे सचमुच अेक 'छुपेरुस्तम' को चुना है। श्री. वियोगीहरिजी सम्मेलनके बहुत पुराने मङ्गलाप्रसादपुरस्कार-विजेता हैं और अैसे विजेता जिन्होंने अपना जीता हुआ पुरस्कार फिर सम्मेलनको लौटा दिया कि अुससे बालकोंके लिये 'वीर-साहित्य' प्रकाशित होता रहे।

अिधर कुछ वर्षोंसे वियोगीजीने कवितासे संन्यास ले लिया है। हम अिसका अर्थ अितनाही समझते हैं कि अुन्होंने तुकमें तुक भिड़ाना बन्द कर दिया, क्योंकि अिधर अुन्होंने जो कुछ लिखा वह स्वयं अितना सरस है कि अुसे काव्य ही कहना पड़ेगा। अुनकी अेक प्रसिद्ध कृति है—मेरी हिमाक़त। वियोगीहरिजीके अतिरिक्त किसी दूसरेकी लेखनी वह चीज कागजपर अुतार ही नहीं सकती थी।

हाँ, अिधर वह अपना सारा समय दिल्लीके हरिजन-निवासको ही देते रहे हैं। यह अुनका अेक प्रकारका क्षेत्र-संन्यास ही रहा है। कहीं जाना ही नहीं और यदि कहीं जाना तो केवल 'हरिजन-निवास' के हितमें। हरि और हरिजन अेक हो गये हैं। हम हिन्दीवालोंको बधाअी देते हैं कि वह हरिजी जैसे अेकनिष्ठ तपस्वीको सम्मेलनका अध्यक्ष चुननेमें सफल हो सके।

हमें हर्ष है कलकत्तेसे अिस वर्ष डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या और नातिदूर शान्ति-निकेतनसे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी अध्यक्ष होकर कराची आ रहे हैं। सुनीति बाबू अनेक भाषाओंके होकर भी हिन्दीके हैं और द्विवेदीजी तो हिन्दीके हैं ही। दर्शन-परिषदके अध्यक्ष चट्टोपाध्यायजी वैदिक वाङ्मयके पारंगत विद्वान ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, अेक बड़े ही स्वतन्त्र विचारक हैं। हमें विश्वास है कि अिसबार कराची पहुँचनेवाले सज्जन अिन साहित्य-महारथियोंके दर्शन और मार्ग-प्रदर्शनसे लाभान्वित होंगे।

हम अपने अिस वर्षके अध्यक्षोंका हार्दिक स्वागत करते हैं।

राष्ट्रभाषा और रेलें

जिस प्रकार हमारी राष्ट्रभाषा प्रान्तीय आदान प्रदानका सबसे बड़ा साधन है अुसी प्रकार देशकी रेलें भी। अिसीलिअे यह आवश्यक और स्वाभाविक है कि रेलों द्वारा राष्ट्रभाषाका अधिकाधिक प्रचार हो और वह अुनके अधिकाधिक अुपयोगमें आये। हमें यह देख कर हार्दिक दुःख होता है कि जिस राष्ट्रभाषाका सारे देशमें अितना सम्मान है वही राष्ट्रभाषा रेलवे-कर्मचारियों द्वारा घोर अपमानकी पात्र बनी हुअी है। इस देशके यातायातके अमात्य श्रीयुत आसफ अलीका ध्यान विशेष रूपसे अिस अनाचारकी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। यदि वे चाहें तो अुनकी अेक आज्ञासे रेलवे विभागकी यह त्रुटि दूर हो सकती है। हमें विश्वास है कि रेल-यात्रा करते समय राष्ट्रभाषा हिन्दीकी अिस दुरअवस्थाकी ओर स्वयं अुनका ध्यान गया होगा। अेक ओर अंग्रेजीका हर कौमा, फुलस्टाप दुरुस्त रहता है; दूसरी ओर अुर्दूके अैन, काफमें भी प्रायः किसी प्रकारकी गलती नहीं होती, तीसरी ओर प्रान्तीय भाषायें भी प्रायः ठीक ठीक लिखी रहती हैं, किन्तु शायद राष्ट्रभाषा होनेके ही अपराधके कारण हिन्दीमें लिखी सूचनाओंकी अैसी दुर्गत बनी रहती है कि तोबा ही भली। नवयुग हिन्दी साहित्य विद्यालय, काशीके श्री गोविन्दप्रसाद केजड़ीवालके अेक पत्रसे हम रेलोंकी हिन्दी लिखावटके कुछ नमूने पेश कर रहे हैं। पाठक देखें कि क्या ये नमूने अुनके लिअे, अुनके लेखकी रेलोंके लिअे तथा स्वयं राष्ट्रभाषाके लिअे लज्जाके कारण नहीं हैं?—

(१) द्वितिय श्रेणी (२) यहां पुछिये (३) मर्दाना पैखाना (४) मुसलमानोंके लिअे (५) मोगलसराअें (६) हिन्दूओंके लिअे (७) गाड़ीयोंके लिअे (८) कल्र्क आफिस (९) अपनी रेजकारी और टिकटका जांच करके खिड़की छोड़ो। (१०) ष्टेशनों (११) हरदकाह (१२) ल्रेटफारम (१३) निचे (१४) सत्के (१५) हिन्दु पीनेका पानी (१६) सिर्फ घोड़ो और मवेशीयोंके लिअे (१७) अिस रास्तासे पलेटफार्म नं. ५ पर जाय।

अिस अशुद्ध लिखावटको प्राअिमरी क्लासका कोअी विद्यार्थी शुद्ध कर सकता है, किन्तु आश्चर्य है कि अितना अधिक साधन-सम्पन्न रेलवे विभाग अिन शब्दों और वाक्योंके शुद्ध शुद्ध लिखे जानेकी व्यवस्था नहीं कर सकता।

हम 'राष्ट्रभाषा' के पाठकों तथा अन्य सभी यात्रियोंसे प्रार्थना करेंगे कि यात्रा करते समय अुन्हें जहाँ जहाँ अिस प्रकारकी अशुद्धियाँ पढ़नेको मिलें वे अुनके स्थान निर्देशके साथ हमें लिख भेजें। हम अिन अशुद्धियोंका अेक संग्रह तैय्यार हो जानेपर अपनी राष्ट्रीय सरकारके यातायातके अमात्य श्रीयुत आसफ अलीजीको सादर समर्पित करना चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और दक्षिण-भारत

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके 'हिन्दी प्रचार समाचार' में "हिन्दुस्तानी क्यों" शीर्षक सम्पादकीय छपा है, जिसकी आरंभिक पंक्तियाँ अिस प्रकार हैं—

"राष्ट्रभाषाका नाम हिन्दीसे हिन्दुस्तानी बनाने और आगेसे अपने सभी कार्योंमें 'राष्ट्रभाषा' के लिअे हिन्दुस्तानी शब्द ही काममें लानेके निश्चयसे सभाके अूपर अेक नया कर्तव्य आ पड़ा है। वह कर्तव्य यह है कि अिस वक्त हिन्दी और हिन्दुस्तानी नामको लेकर जो गलत-फहमियाँ फैली हुअी हैं, अुनको दूर करना है और जिन कारणों तथा परिस्थितियोंके प्रभावसे हमने सभाका नाम भी हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके रूपमें परिवर्तित करनेका निश्चय किया है, अुनको खुद समझकर लोगोंके सामने रखना है..."

यदि ये पंक्तियाँ ही अुस 'हिन्दुस्तानी' का नमूना है, जिसका प्रचार भावी 'दक्षिण-भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' करने वाली है, तो हम समझते हैं कि अिसमें किसीके लिअे कोअी भी चौंकने वाली बात नहीं है। हमने हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी या हिन्दुस्थानीका हमेशा समर्थन किया है। किन्तु दक्षिण-भारत हिन्दी (हिन्दुस्तानी?) प्रचार सभाके अिस नये निश्चयके कारण अब दक्षिण-भारतमें राष्ट्रभाषाके लिअे 'हिन्दी' शब्दका व्यवहार न हो सकेगा। लोग कहते हैं नाममें क्या है? यह तो अुससे पूछा जाय जो आज 'हिन्दी' शब्दको त्याज्य कहकर "हिन्दुस्तानी" का ही प्रयोग करनेका आग्रह कर रहे हैं। अिस नोटमें तीन धाराओंकी पिटी-पिटाअी त्रिवेणी वाली बातको "हिन्दुस्तानी" नामकरणका पर्य्याप्त कारण कहा गया है। अिस बनावटी अेकता का परिणाम क्या होगा? 'अुर्दू' 'हिन्दी' का झगड़ा अेक त्रिकोणी झगड़ा बन जायगा, जिसमें अब अेक और नया पहलवान शामिल हो गया है जिसका नाम रहेगा "हिन्दुस्तानी।"

जबसे दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभाने शनैः शनैः "हिंदुस्तानी" की ओर बढ़ना आरम्भ किया है तबसे दक्षिण-भारतके ही कअी राष्ट्रभाषा प्रचारकोंके हमारे पास अैसे पत्र आये हैं जिनसे यह व्यक्त होता है कि दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभाका यह "धर्म-परिवर्तन" दक्षिणके सभी राष्ट्रभाषा प्रेमियोंको मान्य नहीं है। अैसे राष्ट्रभाषा प्रेमियोंने हमें सलाह दी है और हमसे आशा प्रकट की है कि हम दक्षिण भारतको भी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके कार्य्यक्षेत्रके अन्तर्गत ले लें, जिसमें अुन्हें राष्ट्रभाषाका कार्य्य करनेके लिअे अनिच्छापूर्वक "हिंदुस्तानी" में बहनेके लिअे मजबूर न होना पड़े।

दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी सुयोग्य सुपुत्री है और अेक शतीके पूरे चौथे हिस्से तक दक्षिण-भारतमें हिन्दीका प्रचार कर अुसने बहुत पुण्य अर्जन किया है। अुसके अिस कार्यको "हिन्दुस्तानी" की बाढमें वह जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बचाना हर "राष्ट्रभाषा" प्रेमीका कर्तव्य है। हमारा क्षेत्र सीमित रहा है और तदनुसार धर्म भी। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि परिस्थिति बदलनेके साथ हमारा कार्यक्षेत्र थोड़ा विस्तृत नहीं हो सकता।

हम शीघ्र ही अिस सम्बन्धमें यथोचित करनेका विचार कर रहे हैं।

आनन्द कौसल्यायन

मैं पत्रकारोंसे डरता हूँ

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त तथा सुप्रसिद्ध कलाविशेषज्ञ रायकृष्णदास के सम्मानार्थ प्रयागके पत्रकार-संघकी अेक बैठक संघके अध्यक्ष पंडित बलभद्र प्रसाद मिश्रके निवासस्थान पर हुअी। श्री. गुप्तजीने अपने स्वागतके अुत्तरमें कहा—

"मुझे बोलनेका अभ्यास नहीं। मैं सिलेट पर लिखता हूं। मैं पत्रकारोंसे डरता हूं। अेक पादरीको सबसे बड़ी यह सजा दी गअी कि अुसे संसारकी सभी सुविधायें मिलेंगी, पर समाचारपत्र नहीं मिलेंगे। अिससे वह बहुत घबड़ाया। कहते हैं अेक बार अेक पत्रकार स्वर्गके दरवाजे पर पहुंचा। देवताओंने पूछा—आप कहाँसे आये हैं? कैसे आये हैं? पत्रकारने विनम्रतासे कहा—हम थोड़ी सी जगह चाहते हैं। देवताओंने रुखाअीसे अुत्तर दिया—यहाँ जगह नहीं है। आप लौट जाअिये। जब पत्रकार नरकके दरवाजे पर पहुंचा तो यमदूत लोग कुछ अच्छी तरहसे बोले, परन्तु अुन्होंने भी यही अुत्तर दिया कि यहाँ जगह नहीं है। तब पत्रकारने अेक पत्र निकालना शुरु किया। अिस पर स्वर्गके देवता भी अुसे अपने यहाँ जगह देनेको तैयार हो गये और नरकके यमदूत भी। आप लोगोंसे स्वर्गके देवता भी डरते हैं और नरकके यमदूत भी।

"हम सुबह चायके वक्त अखबार पढ़ते हैं और हमें तब संसारकी गतिविधिका पता चलता है। जिस दिन अखबार नहीं मिलता वह दिन रीता मालूम पड़ता है। हम यह जान भी नहीं पाते कि आप लोगोंको किन परिस्थितियोंमें, किन कठिनाअियोंमें काम करना पड़ता है! कभी मालूम पड़ जाता है कि आप लोगोंने किस प्रकार कठिनाअियाँ अुठाकर खबरें प्राप्तकीं। आप लोगोंका कर्तव्य कितना कठिन है! संसारकी गतिविधिका माध्यम आप पत्रकार हैं।

"हम यही मनाते हैं कि हमारी पत्रकारिता बढ़े, आपकी अवस्था सुधरे। कहते हैं कि अभी हमारी पत्रकारिताकी बाल्यावस्था है। पर हमारा देश पराधीन है। जब हमारा देश स्वाधीन होने जा रहा है और हमारी पत्रकारिताकी भी अुन्नति अवश्य होगी। हमारा देश जो स्वतन्त्र होने जा रहा है अुसमें आप लोगोंका भी बड़ा हिस्सा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीके दुर्दिन बीत चुके

[पिछले महीने नागपुरमें ओरिअंटल कान्फ्रेंसके अवसरपर श्रद्धेय नाथूरामजी प्रेमीके प्रेमियों और प्रशंसकोंने अुन्हें अेक प्रेमी-अभिनंदन ग्रन्थ समर्पित कर अपनी कृतज्ञताका परिचय दिया था। अुस अवसर-पर प्रेमीजीने जो हृदयस्पर्शी भाषण दिया वह अिस युगकी विशेष-ताओंमेंसे अेक गिना जायगा। हम अुस भाषणको अविकल रूपमें दे रहे हैं।—सं.]

सम्माननीय सभापति महोदय और बन्धुगण !

मैं दो बातोंसे घबड़ाता हूँ। अेक तो व्याख्यान देनेसे और दूसरे किसी भी तरहके सामुहिक सम्मानसे। अिस आत्म-विश्वासके अभावसे और अपने प्रति तुच्छताकी भावनासे मैं कभी अपना पिंड न छुड़ा सका। जब कभी अैसे मौके आते हैं, मैं भारी संकटमें पड़ जाता हूँ और शक्तिभर अिनसे बचनेका प्रयत्न करता हूँ।

लगभग दो वर्ष पहले जब काशी जैन छात्रसंघने यह अभिनन्दन ग्रँथ भेंट करनेका प्रस्ताव किया तब मुझे चिन्ता हुअी और जब अिसका अनुमोदन स्वनामधन्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी और भाअी यशपालजीने किया और साथ ही बाकायदा प्रयत्न भी शुरू कर दिये तब तो मैं घबरा गया। मैंने प्रार्थना की कि मुझपर दया कीजिये, मैं अिसके योग्य नहीं हूँ। परन्तु चतुर्वेदीजी अैसे कहाँ हैं ? अुनकी नाराजगीसे तो बचा जा सकता है, पर कृपासे नहीं। जब मैंने अधिक विरोध किया तब अुन्होंने यह लिखकर समझाया कि अिस अभिनन्दनमें मैं तो अुपलक्ष्य मात्र हूँ। वास्तवमें अिस बहानेसे अच्छे अच्छे विद्वानोंके लिखे हुअे लेखोंका अेक अच्छा संग्रह तैयार हो जायगा और यह हिन्दीकी अेक बड़ी सेवा होगी, आप घबरायें नहीं। अिसमें आपके सम्बन्धमें कमसे कम लिखा जायगा आदि ....।

अिसके बाद जब ग्रंथ तैयार हो गया तब अुसे देनेके लिये अेक समारोहकी तैयारी की जाने लगी। मैंने लिखा, आपकी आज्ञा हो तो मैं टीकमगढ़ पहुँच जाअूँगा और अिसे ले लूँगा। व्यर्थ ही यह समारोह-संकट क्यों खड़ा करते हो ? परंतु मेरी कोअी सुनवाअी नहीं हुअी और आप जैसे बड़े-बड़े गण्यमान्य पुरुषोंके समक्ष अुपस्थित होने की मुझे धृष्टता करनी पड़ी। अब मैं चाहे जितना कहूँ कि अयोग्य हूँ और यह अपात्र-दान है, परन्तु अिसे कोअी सुनेगा नहीं बल्कि यह मेरा अेक विनय-गुण ही समझा जायगा। अैसी दशामें अब मेरे लिअे शिष्ट-सम्प्रदाय सम्मत अेक ही रास्ता रह जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं अिसे स्वीकार करूं। 'अल्पफल बहुविघात' वाले प्रयत्नसे अेक ही लाभ मुझे दिखलाअी देता है कि मुझ जैसे व्यक्तिको सम्मानित होते देख कर दूसरे लोग भी जो मुझसे अधिक योग्य और पात्र हैं, अुत्साहित हों; अिस मार्गमें आगे बढ़ें और हिन्दीकी कुछ सेवा करें; क्योंकि यह सम्मान अितना बड़ा है कि अिसको पानेका मोह बड़े-से-बड़े स्वार्थीको भी किसी-न-किसी अंशमें निस्स्वार्थ सेवाकी ओर झुका सकता है।

अिस सम्मानसे यद्यपि मैं संकोच और लज्जाका अनुभव कर रहा हूँ, फिर भी यह कहना तो गलत और मायाचारपूर्ण होगा कि अिससे मुझे आत्मपरितोष नहीं हुआ या प्रसन्नता नहीं हुअी। परन्तु अिससे अुत्साहित होकर शायद ही अब मैं कुछ कर सकूं; क्योंकि अेक तो मेरे जीवनका सन्ध्याकाल है, ६५ वर्ष व्यतीत हो रहे हैं और दूसरे, देव ने मुझे अिस योग्य नहीं रखा है कि मुझसे कोअी आशा की जाय।

अब तो मैं आप सब महानुभावों और तमाम हिन्दी संसारको अनेकानेक धन्यवाद ही दे सकता हूँ।

हिन्दीके दुर्दिन तो बीत चुके। अब तो अुसके सुदिन आ रहे हैं और वह अपने अुच्चतम आसन पर बैठने जा रही है। आप लोग जानते हैं कि मध्यप्रदेशकी सरकार ने यह निश्चय कर लिया है कि यहांकी युनिवर्सिटीकी अुच्चसे अुच्च शिक्षा हिन्दी माध्यमके द्वारा दी जायगी और अिसके लिये पाठ्य ग्रंथोंके तैयार करनेका प्रयत्न भी शुरू हो गया है। अन्य प्रान्तोंमें भी अिसका अनुकरण होगा और अिसलिये हिन्दीके सुदिन आ रहे हैं।

मेरे जैसे अेक तुच्छ व्यक्तिका सम्मान भी हिन्दीके सुदिनोंका ही सूचक है। नहीं तो भला केवल हिन्दी जाननेवाले, अंग्रेजी शिक्षासे सर्वथा शून्य, अेक आदमी को अैसा सम्मान प्राप्त हो सकता था? सुदिन आनेकी यह पूर्व सूचना है।

कल ओरियन्टल कान्फ्रेंसके जलसेमें सी० पी० गवर्नमेंटके मंत्री माननीय द्वारिकाप्रसादजी मिश्र और नागपुर युनिवर्सिटीके वाअिस चान्सलर जस्टिस पुराणिक अैसे महापुरुषोंके शायद सबसे पहले हिन्दीमें व्याख्यान हुअे। ये भी तो सुदिनके ही लक्षण प्रतीत होते हैं।

कहा जा रहा है कि अंग्रेज यहांसे जा रहे हैं। जाना तो अुन्हें पड़ेगा ही, परन्तु अुनका सच्चा जाना तभी माना जायगा जब हमारे हृदयोंमें अपनी मातृभाषाका सम्मान बढ़ जायगा और यह विश्वास दृढ हो जायगा कि अंग्रेजीके बिना भी हमारा काम चल सकता है। हमारे परस्परकी बोलचाल, पत्र-व्यवहार आदिमें जो अंग्रेजीका अेकछत्र राज्य दिखलाअी दे रहा है, वह हमारी गुलाम मनोवृत्तिका ही सूचक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे किसानों, मजदूरों और निर्धनोंका तो हमारे नेता कुछ कुछ अनुभव कर रहे हैं, परन्तु अंग्रेजी न जाननेके कारण हमारे यहांके किसान-मजदूरोंके सिवाय प्रत्येक नागरिक और भले आदमीको कचहरियों दूसरे सरकारी आफिसोंमें और रेलवेकी मुसाफिरी में जो अनन्त विडम्बनायें, लांछनायें सहनी पड़ती हैं, अुनका अनुभव अभी तक अुन्हें नहीं हुआ है; क्योंकि वे स्वयं अंग्रेजी जानते हैं और अुन्हें अिनका पता नहीं रहता। जब तक यह पराअी भाषा हमारा पग-पग पर अपमान और तेजोवद्ध करती है; तब तक कैसे कहा जा सकता है कि हम स्वाधीन हैं।

अन्तमें हिन्दीके भविष्यका पूरा भरोसा रखते हुअे मैं फिर आप सबको धन्यवाद देता हूं और आपकी आज्ञाका पालन करता हूं।"

जुम्मा भिश्ती

श्री "धूमकेतु"

आनन्दपुरकी बस्तीके अुस ओर, अेक कोनेमें, तीन छोटी छोटी झोंपड़ियां चलते फिरते राहगीरोंका अपनी ओर ध्यान खींचती हैं। अेक पुराने अिमलीके पेड़ने अुन झोपड़ियोंको ढँक रक्खा है। गटरसे बदबू छूट रही है। धूलके गोले चारों तरफ़ अुड़ रहे हैं। हवाके झोकोंसे झोपड़ियोंकी बेमरम्मत छोटी छोटी खिड़कियाँ—जिनमें फटे पुराने चिथड़े लपेटे हुअे हैं, और टूटे पुराने बाँसोंकी कमचियाँ बंधी हुअी हैं—हमेशा खुली रहती हैं। कभी बन्द नहीं होतीं।

अैसी ही अेक झोपड़ीके अन्दर टूटी चटाअी पर बैठा हुआ जुम्मा भिश्ती हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। बुड्ढा अनुभवी था। अेक ज़माना अिस दुनियामें अच्छी तरह देख चुका था। श्रीमंत पिताके घरमें अुसकी ज़िन्दगी अमन चैनसे गुज़री थी। अब भी अुसे खूब याद है कि जब वह दस सालका था तब अेक दिन, झूमते हाथी पर बैठ कर अपनी दुलहिनको लानेके लिये ससुराल गया था। दहेजमें मिली हुअी कीमती चीज़ोंके साथ अुसे अेक भैंसा भी मिला था। वह अपने भैंसेको 'वेणू' कहता था। अुसकी वह रँगीली दुनियाँ बदल गयी। आज भी अनेक अनुभवोंके बाद दोनों वेणू और जुम्मा झोपड़ीमें अेक साथ रहते हैं। जब लक्ष्मी जुम्मा पर प्रसन्न थी, अुसके कअी दोस्त थे, खूब गुलछर्रे अुड़ाते। दोस्तोंमेंसे किसी अेक साहित्य-रसिक हिन्दू-मित्रने भैंसेका नाम 'वेणू' रख दिया था। तबसे यही नाम अुसका चला आ रहा है। धन और दारिद्र्यके अुतार चढ़ावमें आज जुम्मा भिश्वमंगा है। अिन टूटी फूटी झोपड़ियोंमें अुसका बचा खुचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान, जिसपर अेक युगकी धूल चढ़ी हुअी है, रखा था। अेक झोपड़ीके कोनेमें वेणू बँधा रहता और अेक ओर घासका ढेर। कअी दोस्त आये, गये, गले मिले, पत्ते खेल चुके बैठे; पर किसीने साथ न दिया। सिर्फ जुम्मा और वेणू ही बचपनसे आजतक अखंड संगी-साथी रहे।

वेणूकी पीठपर अेक बड़ी मशक रखकर जुम्मा सुबह पाँच बजते ही निकल जाता। वेणूके गलेमें बँधी हुअी घंटियां धीरे धीरे टुन टुन बजती जातीं। पीछे पीछे जुम्मा अेकाध मस्त गज़ल-गीत गाता चलता। कअी घरोंमें पानी भरकर मालिक और नौकर दिन चढ़ते चढ़ते झोपड़ीमें लौट आते। लौटते हुअे जुम्मा अेक पैसेकी गाजर, मेथी-पालककी भाजी और दो चार टमाटर बाजारसे ले लेता। यही अुसकी रोज़की खरीद-फरोख्त थी। यही अुसका काम और यही अुसकी ज़िन्दगी। कोअी अुसे कुछ काम देता तो साफ अिन्कार कर जाता। अुसके पानीके ग्राहकोंमेंसे कभी कोअी बस्ती छोड़कर चला जाता, तो जुम्मा नया ग्राहक बनानेकी कभी कोशिश न करता। दोपहरसे शाम तक अुसी फटी पुरानी चटाअीपर बैठा वह अपनी गुड़गुड़ी गुड़गुड़ाया करता मानो अिसी गुड़गुड़ाहटके मधुर संगीतमें लीन हो गया हो। वेणू भी मक्खियोंको अुड़ानेके लिये कान फड़फड़ाता आंखें बंद कर सो जाता। स्वामी और सेवक दोपहरसे शामतक अेक दूसरेको देखते देखते दिन गुज़ारते थे।

शामको दोनों टहलने निकलते। नदी किनारे तक जाकर लौट आते और जब कभी काम ज़्यादा न होता तो सबेरे भी वे घूमने निकल पड़ते।

अेक दिन पाँच बजे पौ फटे दोनों निकले। जुम्मा चाहता था वेणू भी कुछ चर ले। लेकिन वेणूको लगा कि बाहर खुले आम अिस तरह खाते फिरना कुलीनताका लक्षण नहीं है। जुम्मा अुसको खानेके लिये प्रेरणा करने लगा। लेकिन वेणू कूदता फांदता दस-गज़ दूर सामने माथा अूंचा कर खड़ा हो गया मानों साफ़ नकारता हो। जुम्मा हार मान गया, कहने लगा—'चल दादा, सीधे घर चलें। वहीं, कुछ खा-पी लेना। लाड-प्यार करानेकी टेव जो तुम्हें पड़ गयी है।'

वेणूकी जीत हुअी। वह फूला न समाया, अपनी पूँछको पीठपर दो तीन दफ़ा घुमाया और जुम्माकी ओर कनखियोंसे देख कर, कान फड़फड़ाकर चल दिया। अपनी जीतके आनन्दमें वह दूसरी ही तरफ़ दौड़ने लगा। जुम्मा ज़ोर ज़ोरसे चिल्लाने लगा "अजी, घर चलें, कब तक दौड़ते रहेंगे?" लेकिन अपनी धुनका जानवर सामनेकी रेल-सड़कपर चढ़ चुका था। जल्दी जल्दीमें वेणूका अेक पैर रेलकी पाँटोंके बीच इस तरह फँस गया। पैरको बाहर निकालनेके लिये अुसने बहुत कोशिश की; लेकिन व्यर्थ! जानवर धमककर नीचे बैठ गया। वह ज्यों ज्यों पैरको पटरीके कब्ज़ेसे निकालने लगा त्यों त्यों वह भीतर ही भीतर धँसता गया। जुम्मा हाँपता हाँपता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलके पाटोंपर जा पहुँचा। अुसने देखा। दौड़कर वेणूका पैर पकड़ा और अपनी सारी ताकत लगाकर अेक साँसमें बाहर खींचनेका प्रयत्न करने लगा। लेकिन नतीजा कुछ न निकला। थोड़ी दूर रेलका सिग्नल झुका हुआ साफ़ साफ़ दीख रहा था। जुम्मापर मानों आसमान टूट पड़ा। अुसके मस्तिष्कमें ज़ोरका चक्कर आया कि 'गाड़ी अुधरसे आ गयी तो ?'

वह मददके लिये सामने आमसड़ककी ओर दौड़ा। दो नौजवान सैर करते अुस ओर आये थे। पागल-सा जुम्मा अुनके पास दौड़ा " अजी बचाअिये... ...ये.... .... मेरा.... ....भैंसा बचाअिये.... कट जायगा ! देखिये वहाँ रेलकी पाँतमें फँस गया है।" दोनों घुमक्कड़, जुम्माने जिस ओर बताया आँखें फाड़कर देखने लगे। दूरसे कुछ काला-सा हिलता हुआ मालूम पड़ा।

" यह क्या है ? "

" मेरा वेणू .... भैंसा .... मेरा सब कुछ "

" अरे ! जा.... .... अुस चौंकीदारके पास दौड़। "

" मेरे-माँ, बाप... .... आप, चलिये हाथका सहारा दीजिये, अुसका पैर निकल जाये... ... प्राण बचाअिये। "

' हम ? तू अुस चौकीदारके पास जा, दौड़"—रेलकी चौकीकी ओर अिशारा करते हुअे चल दिये।

जुम्मा बेचारा चौंकीदारके पास दौड़ा; लेकिन कोठरीके अन्दरसे आती हुअी चक्कीकी आवाज़के सिवा और कोअी वहाँ मालूम नहीं पड़ा। अितनेमें कुछ दूर पर आगगाड़ी सीटी बजाती धड़धड़ करती आ रही थी। जुम्माने चारों तरफ अेक बार निराश दृष्टि फैंकी। कोअी नजर न आया। वह सिग्नलके खंभेकी ओर दौड़ा। जंजीर खींची...कुछ नतीजा न निकला, अुसने अेक बार और जोरसे कोठरीके दरवाज़े पर धक्का मारकर पुकारा।

" कौन है ?"

" चलो...बहन ! सिग्नलका हाथ ज़रा अूँचा खड़ा कर दें। मेरा जानवर कुचल जायगा। "

" यहाँ कोअी नहीं है, जा..." अितना बेदर्दीसे बेफिकरीका अुत्तर अन्दरसे आया। चक्की ज्योंकी त्यों फिर घुमर-घुमर चल रही थी। अब गाड़ीकी आवाज़ भी स्पष्ट सुनाअी पड़ रही थी। " दौड़ो ! दौड़ो ! मेरा जानवर मर जायगा। " जुम्माके पास जितना बल था अुसका अुपयोग करके अुसने फिर अेक बार पुकारा। लेकिन नक्कार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूनमें तूतीकी आवाज़ कौन सुनता ! जुम्माने आसमानकी तरफ देखा। गाड़ीकी आवाज़ बहुत पास सुनाअी पड़ रही थी। जुम्माने हाथकी लकड़ी फेंक दी।

"या परवरदिगार" वह ज़ोरसे चिल्लाया और अेकाअेक अुस ओर झपटा। स्वर्ग गअी हुअी मेहनतके बाद थका हुआ वेणू हाँपता लेटा हुआ था। जुम्मा अुसकी गोदमें जाकर चिपट गया। वेणूने अुसे शान्तिपूर्वक बैठने दिया।

"प्यारे...दोस्त ! मेरी ज़िन्दगीके साथी ! ...वेणू !...हम दोनों साथ हो है...मैं तुझे न छोड़ूँगा" कह कर जुम्मा भैंसेके पैरसे लिपट गया। आती हुअी गाड़ीकी धमक पल-पल बढ़ती जा रही थी। सीटी पर सीटी बज रही थी। जुम्मा वेणूसे सिमटकर अच्छी तरह सट गया। लेकिन गाड़ी नज़दीक आनेसे पहले ही वेणूने अपना सारा बल लगाकर सिर अुछाला और अपने मालिकको रेलकी पाँतोंसे दूर फेंक दिया। वेणूके अूपर से गाड़ी धड़धड़ करती निकल गयी। रक्तकी धाराके प्रवाहसे जुम्माका शरीर भींग गया था। जुम्माने अुठकर देखा खूनसे लथपथ थोड़ेसे माँसके लोथड़ोंके सिवा अुसके प्राणसे प्यारे वेणूका कुछ भी नामोनिशान न रह गया था !

जुम्मा हमेशा पौ फटनेके पहले, अकेला अशान्त-चित्त अुस सड़क परसे फूल लिअे आता दिखाअी पड़ता है और अपने अेक लाडले काले पत्थर पर अुन्हें चढ़ाकर ज़ोरसे वेणू .... वेणू .... वेणू .... तीन बार चिल्लाकर चला जाता है। *

* गुजरातके यशस्वी कहानीकार श्री. धूमकेतुकी अेक कहानीका हिन्दी रूपान्तर। — ह० और धीरु।

तसवीरके दो रुख़

श्री. शं. के, आडकर, सा. रत्न

अुर्दूके प्रसिद्ध कवि मौ. मुहम्मद अिस्माअील मेरठी मरहूमने अपनी अुर्दू की किताबोंमेंसे पहली किताबमें 'लड़का मदरसे जाता है' शीर्षक पाठमें अपने ज़मानेके विद्यार्थीका हाल अिस तरह लिखा है:—

१

देखना क्या जल्दी जल्दी क़दम अुठाता है। कैसे शौक़से चला जाता है कि वक्त पर पहुँच जाये, अैसा न हो कि देर हो जाये। हाथमें किताबोंका बस्ता है। दिलमें यही ध्यान है कि कलका सबक खूब सुनाये। जो पूछें सब बताअे और लड़कोंमें नाम पाये।

अुस्ताद भी अिसे शौक़ीन जानता है। बड़ी खुशीसे पढ़ाता है। यह जमाअत में अव्वल रहता है। अिम्तहानमें सबसे ज्यादा नंबर पाता है। अुस्तादका बड़ा अदब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। बेअिजाज़त बाहर नहीं चला जाता। शरीर लड़के झगड़ते हैं, यह अिनसे अलग रहता है। जो बात पूछो सच सच कह देता है। अिन्हीं आदतोंसे लोगोंमें तारीफें होती हैं।

माँ-बाप भी अिसकी खुशी चाहते हैं। वक्तपर खेलने-कूदनेसे नहीं रोकते। हाँ ठीक है मेहनतके बाद खेलना भी अच्छा है। हाथ पाँव चालाक होते हैं, जी खुश होता है।

बेशक यह लड़का होनहार नज़र आता है। थोड़ी मुद्दतमें अिल्म हासिल करेगा। बड़ी अिज्जत पायेगा। दौलत कमाअेगा। बाप-दादाका नाम करेगा।

२

(तसवीर का पहला रुख़ तो आपने देख लिया। आअिये अब अिस तसवीरका दूसरा रुख़ भी देख लीजिये। अिसमें आजकलके अेक औसत दरजेके और निकम्मे लड़केका हाल लिखनेकी कोशिश की गअी है।)

देखना क्या धीरे धीरे क़दम अुठाता है। बड़ा खिलाड़ी मालूम होता है। न समयका ख़याल है न देरसे मदरसे पहुँचनेकी परवा। हाथमें साअिकल है। दिलमें यही ध्यान है कि कलकी शरारत फिर दुहराअें। अुस्ताद जो पूछें तो किसी सवालका जवाब न दे सके। खिलाड़ी और निकम्मे लड़कोंमें नाम पाये।

अुस्ताद भी अिसे बदमाश जानता है। बड़ी मुश्किलसे पढ़ाता है। यह अपनी क्लासमें हमेशा आखरी रहता है। परीक्षामें सबसे कम नम्बर पाता है। अपने अध्यापकसे हमेशा गुस्ताख़ी करता है। बिना पूछे बाहर चला जाता है। अच्छे लड़के लड़ते-झगड़ते नहीं। अुनको बनाने और चिढ़ानें, मेहनती विद्यार्थियोंको रुलानेमें अिसे बड़ा मज़ा आता है। अैसे अैसे फंदे डालता है कि अक्ल दंग रह जाती है। बात-बातमें झूठ बोलता है। अिन्हीं आदतोंसे चारों ओरसे शिकायतें होती हैं।

माता-पिता भी अिससे डरते हैं। वे अिसे बेवक्त खेलने कूदनेसे नहीं रोक सकते। हाँ ठीक ही तो है। शरारतके बाद खेलना कूदना ही अच्छा है। हाथ-पाँव थकते हैं। नटखटापन अपने आप कम हो जाता है।

अक्सर सोचता हूँ कि अिस लड़केकी काया पलट क्यों कर हो? बेचारा जल्द ही स्कूलकी शिक्षासे छुट्टी पा लेगा। बड़ी मानहानि अुठायेगा। धन-दौलत गँवाअेगा। बाप-दादाकी नाक कटवायेगा, अुनकी अिज्जतकी लुटिया डुबो देगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी महान् अभिनिष्क्रमण है

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

अस दिन मैंने जब अेक मित्रके साथ बापूके भाषा संबन्धी विचारोंकी ही नहीं कुछ दूसरे विचारोंकी भी प्रतिकूल चर्चाकी तो अुन्होंने पूछा—तब आप बापूका इतना आदर क्यों करते हैं ?

"अिसलिये कि सारी दुनियाके विरोध करने पर भी जिस बातको वे स्वयं ठीक समझते हैं, अुसके अनुसार अपना आचरण ढालनेकी अुनमें अनन्त सामर्थ्य है।"

२२, २३ नवम्बरके समाचार-पत्र हमारे लिये क्या समाचार लाये हैं ? बापू अपनी सारी मण्डलीको पीछे छोड़कर केवल श्री. निर्मलकुमार वसु और श्री. परसराम—दो बङ्गला अनुवादक और शीघ्र-लेखक—को साथ लेकर श्रीरामपुर चले गये।···

रामका बनवास और अयोध्या-वासियोंका विलाप अिस श्रीरामपुर-गमनके लिये छोटी चीज़ हैं, मैं कहूंगा मुझे यह घटना राजकुमार सिद्धार्थके महान् अभिनिष्क्रमण तुल्य लगती है।

राम दशरथकी हार्दिक अिच्छासे नहीं, केकयी द्वारा रामके लिये जबरदस्ती दिलाई गअी आज्ञाके फलस्वरूप वन गये थे। रामने पिताके वचनकी रक्षाकी। अिसके बादकी परम्पराने रामको 'पितृभक्त राम' और 'मर्यादापुरुषोत्तम राम' कह कर याद किया।

सिद्धार्थ-कुमारका अभिनिष्क्रमण जाति, जरा, मरणसे मुक्तिका अुपाय ढूंढनेके लिये हुआ था—यह सामान्य परम्परा है; किन्तु सुत्त-पिटकमें अुनके महान् अभिनिष्क्रमण के जो कारण अुनके अपने शब्दोंमें दिया हुआ है वह है 'लोगोंको आपसमें लड़ते देख कर रोते हुअे माता-पिताको छोड़ चल दिया'। सिद्धार्थ परस्पर कट मरने वाले लोगोंके लिये 'सम्यक्-ज्ञान' की तलाशमें निकले थे।

२९ वर्षकी आयुमें गृह-त्याग किया। ३५ वर्षकी आयुमें ज्ञान प्राप्त किया और ३५ से अस्सी वर्षकी आयु तक—पूरे ४५ वर्ष लोक-कल्याणार्थ अुपदेश दिया। वे कहलाये अेक 'बुद्ध' के अुपदेश हैं।

किन्तु, बापू अपने जीवन पथ पर जिस सत्य और अहिंसाकी लाठीके सहारे चलते थे, आज अुन्हें वही टूटती दिखाअी दे रही है। यह अेक "महान् आत्मा" के जीवन की कितनी बड़ी "काल-रात्री" है ! बापूने अपने साथियोंसे विदा लेते समय कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे अपने चारों ओर अतिशयोक्ति और असत्य दिखाओ देता है। मैं सत्य नहीं देख पा रहा हूं। चारों ओर भयानक अविश्वास है। पुरानेसे पुराने मित्र दूर हो गये हैं। सत्य और अहिंसा, जिनकी मैं सौगन्ध खाता हूं और जिन्होंने जहाँ तक मैं समझता हूं, पिछले ६० वर्ष मुझे जीवित रखा है, अब अपूर्ण प्रतीत हो रहे हैं, अब अुनमें वे गुण नहीं दिखाओ दे रहे हैं, जिनका मैं अुन पर आरोप करता रहा हूं।"

बापूका कार्यक्रम क्या रहेगा? बापू, जिनका आतिथ्य संसारके किस देशके लोग अपना सौभाग्य नहीं समझेंगे—किसी "मुस्लिम-लीगी" के यहाँ ठहरना पसन्द करनेकी बात कह रहे हैं। यह पंक्तियाँ लिखी जाते समय तक यह बात पढ़नेको नहीं मिली कि किसी "मुस्लिम-लीगी" ने बापूका 'मेज़बान' बननेकी घोषणा की हो। अब बापू अेक गाँवसे दूसरे गाँव अविश्वासी दिलोंमें विश्वासकी ज्योति जगाते हुअे और नोआखालीके हिन्दू-मुसलमानोंके दिलोंमें दबी हुअी मुहब्बतकी अुस आगको कुरेदते हुअे, जिसे साम्प्रदायिकताकी राखने ढक लिया है, घूमेंगे। न जाने कब तक बापूका यह कार्यक्रम जारी रहेगा?

"अैसा हमने सुना है। भगवान् बुद्ध श्रावस्तीमें अनाथ-पिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे।

अुस समय राजा प्रसेनजित्के राज्यमें भयानक, मारकाटप्रिय, दया-रहित, अङ्गुलिमाल डाकू था, अैसा जिसके हाथ सदैव रक्तसे रंगे रहते थे। अुसने ग्रामोंको, जन-पदोंको तथा बड़े बड़े नगरोंको अुजाड़ डाला था।

तब भगवान् पूर्वान्ह समय चीवर पहन, पात्र ले, श्रावस्तीमें भिक्षाटनके लिये निकले। भोजनानन्तर जिधर अङ्गुलि-माल डाकू रहता था अुधर चले। ग्वालों, किसानों, तथा अन्य राहगीरोंने भगवान्को जिधर डाकू अङ्गुलिमाल था, अुसी रास्ते जाते देखा। वे घबराकर बोले—

"अिस रास्ते मत जाओ श्रमण! अिस रास्ते मत जाओ। अिधर अंगुलिमाल डाकू रहता है। अुसने गाँवके गाँव अुजाड़ दिये हैं। वह मनुष्योंको मार-मार कर अंगुलियोंकी माला बनाता है। श्रमण! अिस रास्तेसे बीस, तीस, चालीस, पचास पुरुष तक अिकट्ठे होकर जाते हैं, वे भी अंगुलिमालके हाथों नहीं बच पाते।"

भगवान् मौन धारण किये चलते रहे।

दूसरी बार भी, तीसरी बार भी ग्वालों, किसानों तथा अन्य राहगीरोंने भगवान्को जिधर डाकू अंगुलिमाल था अुधर जानेसे मना किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् मौन धारण किये चलते रहे।

डाकू अंगुलिमालने भगवान्को आते देखा। वह सोचने लगा—"आश्चर्य है! अद्भुत है! अिस रास्ते दस, बीस, तीस, चालीस, पचास पुरुष तक अिकट्ठे होकर आते हैं, वे भी मुझसे बच नहीं पाते। और यह श्रमण, जैसे मेरा तिरस्कार करता हुआ अकेला चला आ रहा है। मैं अिस श्रमणको क्यों न मार डालूं?"

डाकू अंगुलिमाल ढाल-तलवार लेकर भगवान्के पीछे पीछे चला। बोला—

"श्रमण, खड़ा रह"

"मैं खड़ा हूँ, अंगुलिमाल! तू भी रुका रह।"

"तू चला जा रहा है और कहता है मैं रुका हूँ। मैं रुका हूँ और मुझे कहता है 'रुका रह'। श्रमण! मैं जानना चाहता हूं कि तू कैसे रुका है और कैसे रुका नहीं हूँ?"

"अंगुलिमाल! मैं सारे प्राणियोंके प्रति दया-युक्त और दण्ड-रहित हूँ, अिस लिये रुका हूँ और तू सारे प्राणियोंके प्रति दण्ड-युक्त और दया-रहित है, अिस लिअे 'रुका हुआ' नहीं है।"

डाकू अंगुलिमालका व्यक्तित्व बदल गया। अुसने ढाल-तलवार फेंक करुणामय भगवान् बुद्धकी वंदना की।

अुस दिन तथागतने अेक डाकू—अंगुलिमाल—का दमन किया था। आज दुनियाँकी अुस अंगुलिमाल डाकूसे भी खतरनाक डाकू—मजहबी दीवानों—के बीच घूम रहे हैं। हम नहीं जानते कि नौआखालीमें अब अुनकी संख्या कितनी है?

हां, तथागत जिस मैत्री भावनाकी मूर्ति थे, बापू अुसी मैत्री-भावनाकी, अुसी करुणाकी अथवा अुसके प्रति अपनी भक्तिकी परीक्षा करनेके लिये निकले हैं। यह विचार हमें कुछ सोचने पर मजबूर करता है।

"वैर, वैरसे कभी शान्त नहीं होता; अवैरसे ही शान्त होता है—यही संसारका सनातन नियम है।"

—धम्मपद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहरादूनसे—

डी. अे. वी. कॉलेज
२१ जून १९४६
रातको १० बजे

तुम—आशा हो सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्की

'×××!'

अच्छा पहले यह बात सुनो—आज २१ तारीख है। कदाचित् नहीं, बहुत निश्चित है ता. २३ की सन्ध्याकी 'डून अेक्प्रेस' से हम लोग देहलीके लिअे चल पड़ेंगे। मतलब यह कि आजकी रात और कलकी रात हम देहरादूनके पहाड़ी अञ्चलमें रहेंगे।

पीछे हरे मैदानमें कमरेकी रोशनी पड़ रही है। और अुसमें रातरानी का पौधा महकमें मग्न-सा नज़र आ रहा है। अिस-शब्द प्रवाहके साथही मेरा मन देहरादूनकी मस्त गलियोंमे भटकने को आंदोलित हो रहा है। यहाँकी बहुतेरी गलियाँ रात्रिमें अपनी पड़ोसिन 'रातरानी' की यौवन-सुगंधका पान करनेमें मस्त हो जाती हैं। चलनेवाला पथिक क्षणिक यहाँ थमकर अिसका मजा लिये बिना आगे नहीं बढ़ सकता।

अिसीलिये तुम भी आज अिस नगरकी सैर करलो। किन्तु भाअी, मैं जो कुछ दिखला सकूँगा अुसी परसे तसल्ली कर लेना—यह है मेरी शर्त। राजनीतिकी गंभीरताने सुन्दरताकी गुलाबीको कभी फुरसतसे झाँककर देखने नहीं दिया। वह चौबीसों घंटे सिर पर सवार रहती है, लेकिन शौकने जो दरवाजेके ताले तोड़ दिये—प्रत्येक शाम हमें कुछ न कुछ दिखलाती रही। तो चलिये जनाब बिलकुल पीछे आअिये। कहीं पीछे न पड़ जाअियेगा, नहीं बलाओंके शिकंजोंमें जा गिरेंगे।

देहरादून समुद्र सतहसे अिक्कीस सौ चालीस फीटकी अूँचाअीपर है। अिस अेक वाक्यके लिखते ही बड़े कर्कश स्वरोंसे घंटी बज अुठी। कहती

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है 'सो जाओ !' कम्बख्त जानती नहीं कि दो दर्द-दिल मिला रहे हैं। उसे चलने दो। जब तक 'लाअिट आफ' करोका आर्डर नहीं सुनते तबतक थोड़ा देखलें।

हाँ, तो ऊँचाओंकी बात कह रहा था। अुसके अुत्तर, पश्चिम और पूर्वको ऊँची-ऊँची नीली-काली पर्वतोंकी चोटियाँ क्षितिजके कोरसे मिली हैं। दक्षिणकी ओर भी पहाड़ी है लेकिन बस्तीके पेड़ोंने अुसे ढँक दिया है। यहाँ आये मुझे अेक सप्ताहसे अधिक हुआ। आसपासकी पहाड़ियोंमें हर संध्याको टहलने जाता हूँ। आँखोंको तृप्ति मिल जाती है और मनको सुहारी याद ! अिस पहाड़ी अिलाकेमें नहरोंका जाल बिछा है। ता. २७-५-४६ को संध्याके ५ बजे बादलोंने अपने मोती पृथ्वीको दान दिये थे। बहुत ही सुन्दर दृश्य था वह। सारा हरा मैदान पलभरमें सफेदीसे ढँक गया था। तुम भी अुस नयन-मनोहर, भावनाको अुभारनेवाले दृश्यको देखते तो सच कहता हूँ किसी सुललित कविताका सहज ही निर्माण होता।

मैंने बहुतसे स्थान देखे हैं; आज तककी जीवन-मंजिलमें अैसा स्थान देखा नहीं था। अिसकी सुन्दरता, चहल-पहल, आनेवालोंकी जलक्रीड़ा आदि सब आँखोंसे देखनेकी चीजें हैं। आकाशके नीले रंगमें मिली हुअी धूमिल-हरी--अूँची चोटियाँ आँखोंको सुहावनी लगती हैं। जी चाहता है यहीं किसीकी यादमें हर रात और हर प्रातः बिता दूँ।

यह शहर मिलिटरी महत्वका भी अच्छा स्थान है। ट्रेनिंग स्कूल, कॉलेज वगैरह बहुतसे हैं। अिस कॉलेजको देखो--अिसकी बड़ी अिमारत पूर्व दिशाकी तरफ मुँह किये खड़ी है। दूरसे देखकर विशाल मंदिर या अजायबघर कह सकोगे तुम अिसे। बरामदेमें कमानें बनी हुअी हैं। अूपर लोहेका छत है। अूपरी हिस्सा मंदिरके गोलाकार शिखर-सा है। पाससे देखो—अुसके अूँचे खुले कमानदार द्वारपर, अुसकी बाहरी दीवारपर डी. अे. व्ही. वैदिक कॉलेज लिखा है। अिसके दोनों कोनोंपर दो बड़ी चौड़ी अिमारतें हैं जिनमें स्कूल और कॉलेजके छात्र रहते हैं। अिस कॉलेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मैदानमें दस हजारसे अधिक लोग खड़े रह सकते हैं, अितना विशाल है। अिसके मध्यमें तिरंगाध्वज लहरा रहा है जो २३ के शामतक लहराता नजर आयेगा। मैदानसे अभी कॉलेजकी तरफ देखो। गहरे अंधकारके पर्देपर आड़ी टेढ़ी दीपोंकी पंक्तियां पलकोंसे खेल रही हैं। अैसा लगता है जैसे आकाशसे तारे अुतरकर पहाड़ी अिलाकोंका पाससे निरीक्षण कर आपसमें हँस रहे हैं। अुनकी हँसमुख छबि झिलमिला रही है। यही है 'मसूरी'। अिन तारोंकी जगमगाहटमें तुम्हें ले जा रहा था। अिसी समय कमरेके लट्टूने आँखें बन्द करली—फिर खोल दी। हिदायत मिली है कि विश्रामका समय है, अनुशासन भंग न करो!

भाअी, तुम्हारी जिज्ञासाको तृप्ति नहीं प्रदान कर सका। देखो सैनिक जीवन बितानेकी प्रतिज्ञा की है। अनुशासन द्वारपर खड़ा है। तो अब कल तुम्हें दोपहरमें मिलूँगा। नींदके समय-अेक रात्रिके लिअे जयहिन्द!

[दिन]

देहरादून पहाड़ी-गोदमें खिला हुआ मानवोंका अुत्कर्ष है। कॉलेजके कोनेसे अुत्तरकी ओर केवल दो फर्लांगकी बस्ती है। कॉलेजके कोनेपर तीन चायकी दुकानें, पाँच हलवाअीकी दुकानें और चार रोजाना लगनेवाली वस्तुओंकी दुकानें हैं। अिन चायकी दुकानोंको तुम हॉटेल भी कह सकते हो; लेकिन अिनमें सिवा चायके कुछ मिलेगा नहीं। बहुत सर्दी पड़नेपर अिस चायको लोग बड़ी 'रुखकी नजर' से देखते हैं।

अिन दुकानोंकी सड़क दक्षिणकी तरफ चलकर थोड़ी पश्चिमको मुड़ी है, अिससे दस-बीस कदम चलनेपर आगे बड़ा हरा मैदान दिखाअी देगा। अिसका नाम 'परेड ग्राउंड' है। यह मैदान काफी लम्बा-चौड़ा है। अिसके दो हिस्से बीचके रास्तेने बना दिये हैं। पूर्वी हिस्सेमें मिलिटरी की 'अिन्स्टिटयूट' है और मोटर गॅरेज आदि। शेषमें हॉकी, क्रिकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालीबॉल और फुटबॉल अित्यादि खेलनेके पीचेस हैं। और कअी पगडंडियाँ भी हैं जो अिनमेंसे होकर पश्चिमी मैदानके तरफ बीचकी सड़क लाँघकर आती हैं। पश्चिमी मैदानके अुत्तरी हिस्सेमें अेक बाग है, अुसके किनारे बड़ा मैदान है, अिसीमें यहाँ सार्वजनिक सभाअें सम्पन्न होती हैं। पश्चिमी मैदानके पश्चिमी किनारेसे दक्षिण अुत्तर जो रास्ता है यही 'मसूरी रोड' है। पश्चिमी मैदानके अुत्तर कोनेपर अेक बड़ा हौज बनाया है। चारों तरफ खुबसूरतीके लिये फूलोंके पौधे लगाये हैं। दो चार बैठनेके पत्थरके 'कोच' बनाये गये हैं। अक्सर रातमें यहाँ कुछ सार्वजनिक मोहब्बतके मारे भूले--भटके आँखोंके रास्तेमें आही जाते हैं। अिसीके पासमें अेक सिनेमा घर है जिसका 'चित्रा' नाम है। परिधिमें बहुतही छोटा! अंग्रेजी चित्र लगते हैं अिसमें। अिस 'टॉकीज' की सीधमें पूरबसे पश्चिमतक अंग्रेजी 'साअिन बोर्डों' से सजी हुअी 'पश्चिमी' ढंगकी कअी दुकानें हैं। अिनके आगे मैंने अकसर गोरोंको कारमें आते जाते देखा है। मसूरी रोड की सबसे अच्छी दुकानें हैं। कअी रेस्टूां, कअी होटलें, और कअी फोटो-शालाओंकी चमकती हुअी 'शो-केसेस' से सजी हुअी फैशनेबल दुकानें हैं।

यही मसूरी रोड शहरका प्रमुख मार्केट रोड है। आगे दक्षिणकी तरफ 'चित्रा' के कोनेसे 'पंजाबी-बुलबुलों' की अुड़ती हुअी नज़रसे बचकर आगे बढ़ोगे तो अपनेको रोडके दाँयें तरफ 'ग्रीन रेस्टारन्ट' के सामने खड़े पाओगे। 'रेस्टारन्ट' की 'बिल्डिंग' बहुत छोटी है--अूपर कोअी मंजिल नहीं। हरे रंगसे सजी हुअी, द्वारके पासकी दीवारें भी हरी, लकड़ीका गेट भी हरा और जितने गमले बरामदेमें लटकाअे हैं सब हरे पौधोंके चौखटमें ही। यह सब आँखोंको सुहावना लगता है। अिसकी बगलवाली अंग्रेजी शराबकी दुकान छोड़कर 'ओडियन' टाकिज है। अिससे 'रिजेंट' से छोटा; अिसमें थर्ड क्लास नहीं है।

राहसे आगे चलोगे तो अुसी 'ओडियन' की सीधमें 'पैलेस' टॉकी दिखाअी पड़ेगी। अिसीमें मैंने परसों 'पृथ्वीराज संयोगिता' देखा है। भीतरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजधज 'लाहौरी पेन्टिंग' की बरबस याद दिलाती है। थर्ड क्लासमें सिर्फ तीन बेन्चेस हैं, बाकी सारा आखाड़ा। टॉकीजके बिलकुल आगे युरोपियन सोल्जरोंका डान्स क्लब है। अिसके आगे कुछ अिमारतोंको छोड़नेके बाद दाहिनी तरफ जनरल पोस्ट ऑफिस है। अुसके बगलमें अेक बड़ा सिनेमा-गृह है जिसका नाम मैं भूल रहा हूँ। अिस टॉकीजके आगे टांगा स्टैन्ड है। टांगा स्टैन्डसे लगे हुअे कअी खोमचे हैं जिनमें हर शामको चटपटी चाटके दहीबड़े और 'टीकी' मिलती हैं। यह टीकी आलूकी रोटी है जिसे तुमने कअी बार लाहौरमें चनेके साथ सड़क पर खाया होगा।

यह बड़ा चौराहा है। यहाँसे दक्षिणकी तरफ जो सड़क जाती है वह मेन मार्केट रोड है। अिस पर सब तरहकी दूकानें हैं। यहाँ तक तो आज देखलो। फिर कभी टहलनेके लिये समय मिलेगा तो अवश्य ले चलूँगा।

कल शामको मैं दिल्लीके लिये यहाँसे निकल पड़ूँगा। बड़ी विवशतासे पत्रको विस्तृत कर सका। पाकिटमें बन्द कर अभी डाकमें छोड़ना पड़ेगा तब कहीं परसों तुम अिसे पढ़ सकोगे। डाकखाना यहाँसे सात मिनटके रास्तेपर है। आज ही अंतिम दिवस है शिविरका। अिसीसे क्लाससे फुर्सत नहीं मिल रही है। लेकिन तुम्हारा अुत्तर जो अुत्तरके लिये प्रतीक्षा कर रहा है।

(काँग्रेस समाजवादी शिविर, देहरादूनसे लिखा हुआ अेक मित्रका पत्र।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम्बर ४६ के हमारे नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	नाम
१३	नार्थगौहाटी	श्री. चंद्रनाथ बरुआ
९०१	सुंदरधाम	,, अुपेन्द्रनाथ मिश्र
९००	बुरकेल	,, मोहनदास बाबाजी
९१०	ढांगी	,, भगवन् रथजी
१६	जबपुर	,, गंगाधर पंडाजी
९०५	कांतणपुर	,, धनेश्वर मोरारजी पाठक
९०६	देलोल	,, पुरुषोत्तम जेठालाल पाठक
९०७	मंडाला	,, छीताभाअी भीखाभाअी पटेल
९१२	घोडासर	,, चीमणलाल जे. शाह
५२	महेलिल	,, पुनमभाअी सी. पंड्या
६१	महिसा	,, मणिलाल डा० पटेल
६३	वासणवाडा	,, कानजीभाअी छ. पटेल
११२	चाणस्मा	,, आत्माराम भा० पटेल
१०	तलोदा दिगर	,, पुंडलिक यादव पवार
४४	तलअी	,, विट्ठल भगवान माटे
५७	दुधगांव	,, श्रीपाल देवाप्पा साजणे
५०	तोरखेडे	,, गोविन्द रामचंद्र जोशी
५१	विसेदा	,, लक्ष्मण मकळू चौधरी
७८	न्हावी	,, माधव हिरामण चौधरी
९१	सावदे	,, केशव नाना अरबले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	१०७	गालना	श्री साहेबराव अ० पाटील
	८९५	कसबे सुकणे	,, देवराम कृष्णाजी शिंदे
	८९६	सांगली	,, आबास दादा कारदेगेकर
	८९७	शिरपुर	,, सुखालाल सुरजमल तिवारी
	९०३	पिंप्राळे	,, देवचंद रामा बारके
	९०४	माधवनगर	,, नारायण गोविंद जाधव
	११४	शिरूड	,, कोकीराम गोविंद सोमार
	११६	फागणे	,, बापू केशव पुराणिक
विदर्भ नागपुर	१७	सिरसगांव कस्बा	,, सीताराम सखारामजी बांगे
	२१	सिंदी बु॥	,, लक्ष्मण नारायण नाथे
	२७	सावली (वाघ)	,, गणपतपुरी गोसावी
	३७	शहापूर	,, तोतुसा गुलाबसा जैन
	८९८	चामोर्शी	,, राजाराम सत्यनारायण दुबे
	९००	कलमेश्वर	,, जनार्दन अेकनाथ अमल
	९०२	खंडाळा (मकरध्वज)	,, शंकर पुंजाजी अवचाट
	९०८	शिराला	,, पुंडलिक राघोजी भोपले
	९११	रामटेक	,, राघव गणपत रोटकर
अन्य प्रांत	८९९	नबी देहली	,, अजीतराय छगनराय वैष्णव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंसे—

कच्ची तैयारी

[लेखकः—श्री. अनिलकुमार]

केवल अुत्तीर्ण होना ही परीक्षार्थियोंका अुद्देश नहीं होना चाहिये। अुन्होंको चाहिये कि अुसके लिये निर्धारित पुस्तकोंका ठीक ठीक अध्ययन करें और पाठ्य-विषयको बुद्धिगत कर लें। अितना करने पर जैसे तैसे निकल भागनेकी प्रवृत्ति नहीं अुठेगी। समितिको केवल अुत्तीर्ण होनेवालों की संख्या नहीं बढ़ानी है। अुसको राष्ट्रभाषा हिन्दीके जानकार; अैसे जानकार, जो बिना रुकावटके अुसमें बोल-लिख सकें और व्यवहार कर सकें, समितिके पाठ्यक्रम द्वारा निर्माण करना है। तब केवल पास होकर पिंड छुड़ानेकी वृत्ति परीक्षार्थीको नहीं रखनी चाहिये। अकसर देखा जाता है कि विद्यार्थी परीक्षाकी तैयारीकी अवधिमें पाठ्यक्रम पर सिर्फ अुड़ती नजर डाल लेते हैं। किन्तु अिस तरह वे न भाषा अवगत करनेका हक रख सकते हैं और न पास भर होनेका ही। अहिन्दी भाषियोंको राष्ट्रभाषाके अंग, आकृति और रेखासे परिचित कराना समितिका अुद्देश है। 'कोविद' तक केवल परीक्षाअें अुत्तीर्ण होने पर भी सरल-हिन्दी लिखने और बोलनेकी क्षमता भी कोअी हासिल नहीं कर सका तो अुसका अुत्तीर्ण होना व्यर्थ है। परीक्षाअें जैसे तैसे निकल भागनेकी सीमाअें नहीं हैं। अुन सीमाओंमें निर्धारित विषय-ज्ञान और क्षेत्रका अवलोकन, अध्ययन और मनन करनेके लिअे पाठ्यक्रम होता है। अिस पाठ्यक्रमको हृदयगत कर लेना परीक्षा पास करना है। हमारे अधिकांश परीक्षार्थी प्रति-दिन आसानीकी ओर झुक रहे हैं। बिना मेहनत किये भाषा नहीं सीखी जा सकती। देखा जाता है, अंग्रेजी भाषाका प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करनेके लिये जीवनके दस-दस वर्ष और बहुतसा धन व्यय किया जाता है, किन्तु राष्ट्रभाषा लिखने और समझनेके लिये दस वर्ष तो क्या साल-दो साल भी जमकर प्रयत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया जाता, फिर अुसमें योग्यता कैसे प्राप्त होगी ? अितना सब अिस लिये कहना पड़ता है कि छात्र कच्ची तैयारीसे परीक्षामें सम्मिलित होते हैं और अनुत्तीर्ण होने पर हार कर दूर भागते हैं।

प्रवेशका अेक छात्र 'न्यूटन और बढ़अी' के सबन्धमें कितनी भद्दी भूलें करता है—

" न्यूटन लबकर सोता था। अिस लिये अुनोको आनेके लिये फाटक अुघड़ा रखता था। बिलायाको जाड़ा लगती थी। अेक दिन अुन्होंने बढ़ीयों को बुलाया और दारको दो छेद रखनेके लिये कहा। बढ़ीयाने किवाडको बड़ा भोक पाडा और बोला वहांसे दो बिलाया निकल जायेंगी। अुनोंने अेक छेद पाड़ा और दो बिलाया, अेक अगोदर और दुसरा पीछे आंदरमें घालवा दिया। नुटन पश्चाताप हुआ। "

क्या परीक्षार्थीको अैसी हिन्दी लिखते हुअे पश्चाताप नहीं होता ? यदि नहीं तो अनुत्तीर्ण होनेपर भी पछतानेका कोअी मतलब नहीं। लेकिन फेल होते ही लगे कुड़कुड़ाने ! कोअी भी भाषा हिम्मत हारकर जल्दबाजीसे अुड़ती अुड़ती नजर फिराकर नहीं सीखी जा सकती। निरंतर प्रयास करनेपर क्या नहीं हो सकता ? पर चल-चित्तसे जो पास है वह भी सुरक्षित नहीं रखा जाता।

कुछ लोग सिनेमाकी भाषा और नेताओंके भाषण परीक्षा पास होकर भी नहीं समझ सकते। अिसमें परीक्षाका क्या दोष ? यह अुनकी कच्ची तैयारीका ही दोष है जिससे अुनकी भाषा अितनी कच्ची रह गअी कि वह जनतामें प्रचलित भाषाके घिसे हुअे रूपको नहीं ग्रहण कर सकती। राष्ट्रभाषाके छात्र यदि परीक्षाके बाद चार मास और परीक्षाकी तैयारीकी अवधिमें नियमित अध्ययनशील रहें तो वे दो वर्ष में अुसमें अच्छी योग्यता हासिल कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमकी विशेष तैयारी करानेकी अध्यापकोंकी आदत भाषा शिक्षण पद्धतिका बड़ा खतरनाक रोग है। अिस व्याधिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण छात्रोंके मस्तिष्क भीतर ही भीतर खोखले हो जाते हैं, पर तारीफ यह कि बाहरसे कुछ भी ज्ञात नहीं होता। अुनकी नींव ही कच्ची रह जाती है। कठिन शब्दोंके मतलब, मुहावरे आदि रटना बुरा नहीं किन्तु परीक्षामें रटा हुआ ही पूछा जायेगा और अुसका सही मतलब लिखकर पास हो सकेंगे अिस स्वार्थ बुद्धिसे रटना गलत है। यदि रटा हुआ अंश हमारी अपनी भाषामें ढल जाये तब वह हानि नहीं पहुँचा सकता।

अिसबार 'प्रवेश' के छात्रोंसे कुछ सरल शब्दोंके अर्थ पूछे गये थे। अेक परीक्षार्थीने लिखा था—

बहलाना = बहनका पति
अपनाना = आपल्या आअीचा बाप (नाना)
कामरानी = कामकरनारी बाअी (नौकरानी)
अलबेली = टाअीम
चुरमुर = बारिक
बलैया लेना = बैल घेना

शब्दोंका वाक्योंमें प्रयोग भी कम जायकेदार नहीं।

अलबेली:—बहोतस्या लड़क्या अलबेल्या होत्या हैं।

बहलाना:—नदीमें फत्तर गोटे बहलाते आते हैं।

अकसर सभी परीक्षार्थी अेकही ढर्रेकी गलती करते हैं। 'कामरानी' और 'बलैयालेना' का सही मतलब पाँच प्रतिशतसे अधिक छात्र नहीं लिख सके। शेष सभीने सिस्संकोच कामरानीको 'नौकरानी' बना डाला। हिन्दीका चाहे दम ही निकल जाय, किन्तु परीक्षार्थियोंको तो नौकरानीसे मतलब है। अिन दिनोंमें नौकरानियोंकी माँग अधिक बढ़ गअी है। किन्तु अिस तरहकी भूलें भाषा-शिक्षाकी दृष्टिसे कच्चे अध्यापकोंकी ही हो सकती हैं। अेकसी भूलें और वह भी पचहत्तर प्रतिशतसे अधिक, शिक्षकोंके गलत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ानेका ही परिणाम है। अिस प्रकार अयोग्य अध्यापक छात्रोंकी नींव ही कच्ची बना डालते हैं। प्रांतीय समितियोंको अिसीलिये अध्यापक चुनते हुअे अधिक सतर्कता रखनी चाहिये। तब भरसक अेक सरीखी भूलें परीक्षार्थी नहीं कर सकेंगे और शिक्षकोंकी अयोग्यताका दंड अुनको नहीं भोगना पड़ेगा।

भाषा सम्बन्धी कुछ भद्दी और हास्यास्पद गलतियाँ नीचे दी जाती हैं जो अुनकी कच्ची तैयारीका ही परिणाम लक्षित होता है।

अेक प्रवेशका छात्र अपने अुत्तर पुस्तकके 'शिवाजी' निबंधमें लिखता है—

"अवरंगजेबने अपनी फौज पाठवून दियी। शिवाजीने सबको हारकर लौटा दिया। अवरंगजेब चिढ़ा गया। शिवाजीने बहुत किल्ल बाँधे थे। वहाँ बहुत मजूर काम करे थे। वहाँ अुसको मोहरेका अेक हंडा सपड़ा। अुनके दुस्तके नाम तानाजी, संभाजि, भाजिप्रभू अुनके जिवको जिव देनेवाले थे।"

अेक दूसरा छात्र कविताका सरल हिन्दी (!) में रोचक अर्थ लिख गया है—

"जिस पृथ्वीमें हमको हमारे बापजादा मिले हे भगवन अुनसे हम न्यारे नहीं रह सकते।"

'हरिजन बालककी फरियाद' का भावार्थ कअी विद्यार्थियोंने कअी तरहसे लिखा है अुनमें नीचे दिये हुअे दो विशेष आकर्षक लगे—

(१) "अेक हरिजन बालक मंदिरसे दूर खड़ा रहेला है वह कहेला है तुम्हारा दर्शन बहोत कठीण हो गयेला है।"

परीक्षार्थी शायद वीरगाथा कालीन अपभ्रंश भाषामें सरल गद्य लिख रहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) "हरिजन बालक बोलता है हे प्रभो मैं देवालयके बाहार अभा हुँ. मगर मैं अन्तर कैसा आवु. जर मैं अंदर आया तो मेरे छुनसें तूम मुझपर कोप करेंगे तो हे प्रभो अैसा बुरा छाप क्यौं दिया !"

अिसी तरह किसानके सम्बन्धमें लिखी गअी ये पंक्तियाँ—

(३) "तो तुमच बताओ जो किसान है अुसकू और अुसके बाल बच्चाक् नेसनेका कपड़ा भी अुसके पास नहीं होता तभीवी कुच हरकत नाहीं अुसकाच राज्य होवेगा।"

किसान कंगाल है आर्थिक परिस्थितियोंसे अिधर परीक्षार्थीकी भाषा कंगाल है। संभव है अिसीलिये बेचारोंकी दलील नहीं सुनी जाती हो।

अिन विविध गलतियोंका गट्ठर लेकर किस तरह परीक्षार्थी सीमा बाँध सकेंगे ? अैसी कमजोरीकी [भाषाकी] हालतमें पास होनेकी अिच्छा रखना भी रेतकी दीवार खड़ी करनेका दुस्साहस ही है। कच्ची बनावटके मकानका क्या भरोसा वह किस दिन ढह जायेगा ! अिस लिअे परीक्षार्थी को चाहिये की अपना कदम मजबूत और स्थायी रखें और कच्ची तैयारीसे दूर भागें।

लगातार ६ महीनों तक प्रतिदिन दो घन्टे परीक्षाकी तैयारी करने वाला कोअी भी विद्यार्थी परीक्षाफलकी नामावलीमें अपना नाम अूँचे स्थानपर देख सकता है। जीविकाके लिये व्यस्त रहने पर भी दो घन्टे समय खुशीसे दिया जा सकता है।

प्रान्तीय समितिको सहायता

अिसबार अिलाहाबादमें स्थाअी समितिकी बैठक हुअी जिसमें प्रान्तोंको नीचे लिखी वार्षिक सहायता स्वीकृतकी गअी। असम रू. ३०००, बंगाल रू. २०००, कुरुल रू. ३०००, विदर्भ नागपुर रू. २०००, बम्बअी रू. ४५००, महाराष्ट्र रू. ७०००, गुजरात रू. ७०००, सिंध रू. २५००, सिलोन रू. १०००।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: राष्ट्रभाषा शिक्षण शिविरका अुद्घाटन :—

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके नूतन राष्ट्रभाषाभवनके प्रांगणमें आचार्य भगवत्-शरण अधोलियाकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचारक शिक्षण शिविरका अुद्घाटन तथा प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव बड़े ही समारोह अेवं अुत्साहके साथ संपन्न हुआ। अुक्त अवसर पर प्रांतके अर्थसाचिव माननीय पं० दुर्गाशंकर मेहता अध्यक्ष-स्थान ग्रहण करनेके लिये आनेवाले थे। किन्तु कुछ अनिवार्य कारणोंसे वे अुपस्थित न हो सके। बाहरसे समितिके कअी प्रांतीय संचालक, जिनमेंसे सर्व श्री जेठालालजी जोशी; कांतिलालजी जोशी, रेवतीरंजन सिंह; अनुसूया प्रसाद पाठक पधारे थे। अिनके अतिरिक्त सर्वश्री. विनयमोहन शर्मा, हृषीकेश शर्मा, अनिलकुमार, प्रभुदयाल अग्नीहोत्री, प्रो० अिन्द्रदेव नारायण सिंह, डॉ० रघुवीर, आदि सज्जन भी सम्मिलित हुअे थे।

स्वागत-गानके सुमधुर कार्यक्रमके पश्चात् समितिके प्रधानमंत्री भदंत आनन्द कौसल्यायनने अुपस्थित लोगोंका हार्दिक स्वागत किया। अपने स्वागत-भाषणमें भदंतजीने कहा— राष्ट्रभाषाके बिना कोअी राष्ट्रीय कार्य नहीं हो सकता। जो कार्य पहले पाली और संस्कृतमें होता था वही कार्य आज हिन्दी कर रही है। अंग्रेजी सरकारने अंग्रेजीके प्रसारके लिये बहुत कुछ किया है और जहाँ कोअी नहीं पहुँचता अैसे जंगलोंमें शुद्ध अंग्रेजीमें साअिनबोर्ड लगवाये हैं। समितिने राष्ट्रभाषाका जो कार्य किया है वह सन्तोष-जनक है। समितिकी परीक्षाअें फरवरी और सितम्बर में होती हैं—दोनोंमें कुल मिलाकर करीब ५,० हजार परीक्षार्थी बैठते हैं।

अहमदाबादके श्री. जेठालाल जोशीने शिक्षण शिविरका अुद्घाटन करते हुअे कहा कि हमें जनताकी भाषा तैयार करनी है। गांधीजी कहते हैं कि हमें गंगा यमुनाके मेलसे सरस्वतीका निर्माण करना है किन्तु मेरा ख्याल है कि सरस्वती तो नहीं बनेगी किंतु गङ्गा-यमुनाके मेलसे आगे गङ्गा ही बहेगी।

श्री कपूरचन्द्र जैनने 'बापू' शीर्षक कविता सुनाअी जिसमें रविबाबूके अुस भूखे बंगालका करुण चित्रण किया गया था।

डॉ० रघुवीरने, जो आजकल नागपुर युनिवर्सिटीकी ओरसे अंग्रेजी शब्दोंके बदले देशी पारिभाषिक शब्दोंको बना रहे हैं, अपने भाषणमें बतलाया कि भारतकी सभी भाषाओंके शब्द अेकसे हैं। मैं तो चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान विदेशी शब्दोंको कतअी अुपयोगमें न लावे। अगर कोअी कहे कि 'टैक्स' शब्द प्रयोगमें हम क्यों न लावें— अुस समय मैं यही कहूँगा कि 'टैक्स' की जगह 'कर' अुपयोगमें लाया जाय।

बादमें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव हुआ और अन्तमें अध्यक्ष पदसे बोलते हुअे आचार्य भगवत-शरण अधोलियाने जोरदार शब्दोंमें कहा कि हमें समस्त भारतके लिअे अेक ही भाषाका निर्माण करना है। हमें राजनैतिक पचड़ेमें न पड़कर भाषाकी ओर ध्यान देना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाएँ—

आगामी प्रचार परीक्षाएँ ता. ८, ९ फरवरी १९४७ को होंगी।

परीक्षा-आवेदन-पत्र शुल्कके साथ वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख २० दिसम्बर '४६ है।

विलम्बसे आये हुअे आवेदन-पत्र ता० २७ दिसम्बर तक स्वीकार किये जा सकेंगे। अैसे प्रत्येक आवेदन-पत्रके साथ ८ आना विलम्ब शुल्क आना आवश्यक है।

आगामी प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम—

परीक्षाका नाम	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
शनिवार ८।२।४७ कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
परिचय	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
रविवार ९।२।४७ परिचय	प्रश्नपत्र ३	मौखिक
प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	
मंगलवार ११।२।४७ कोविद	प्राचीन पद्य, समय ७-३० से १०-३०	
बुधवार १२।२।४७ कोविद	अुर्दू ७-३० से १०-३०	
परिचय	अुर्दू ७-३० से १०-३०	

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता० १०।२।४७ सोमवारको होगी। प्रवेशकी मौखिक परीक्षा नहीं होगी। मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविदमें लेखन कार्य—

कोविद परीक्षार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य किया गया है। प्रत्येक लेख कमसे कम ३ पृष्ठका होना चाहिये। जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं अुन्हें काफी अंकोंकी हानि अुठानी पड़ती है। अिसलिये परीक्षार्थिओंको लेख अवश्य लिखना चाहिये। आगामी परीक्षाके लिये निबन्धोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबन्ध लिख सकते हैं। अिनके अलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं।

१. विज्ञान और मानव २. पराधीन सपने सुख नाहीं ३. हमारे गांवोंकी समस्याअें ४. समाज और स्त्री ५. राष्ट्रलिपि और अुसकी योग्यता ६. काम नहीं कर सकता है जिसके पास समय नहीं ७. साहित्य और समाज ८. गरीबोंका भगवान तो रोटी है ९. जनता जनार्दनका सेवक-गांधी १० हमारी सामाजिक कुरीतियाँ ११. गान्धीजीका रचनात्मक कार्यक्रम १२. समाचार पत्र.

कोविद परीक्षाके लिये निश्चित केन्द्र—

कोविद परीक्षाके लिये स्थायी केन्द्र निश्चित हैं। ५ से कम कोविद परीक्षार्थी होनेपर भी अिन केन्द्रोंमें परीक्षा होगी। अिनके अलावा कोविदकी अस्थायी परीक्षा अुन केन्द्रोंमें होगी जिनमें अिस परीक्षाके लिये कमसे कम पाँच परीक्षार्थी होंगे। कोविदके परीक्षार्थी आवेदन-पत्र भरते समय केन्द्रका चुनाव अूपरकी सूचनाको ध्यानमें रखकर ही करें।

केन्द्र--परिवर्तन—

सामान्यतया केन्द्र-परिवर्तन स्वीकार न किया जायगा। विशेष परिस्थितिमें प्रबल कारण सूचित करनेपर परीक्षा मंत्री परीक्षा-केन्द्र-परिवर्तन स्वीकृत कर सकेंगे। अिसके लिये विशेष कारण दिखलाते हुअे अेक रुपया शुल्कके साथ परीक्षा तारीखसे कमसे कम २० दिन पहले परीक्षार्थीको प्रार्थना-पत्र समिति कार्यालय, वर्धा पहुँचाना चाहिये।

मनीआर्डर द्वारा भेजे हुअे परिवर्तन शुल्कके अेक रुपयेकी पोस्टकी रसीदके साथ आवेदन-पत्र अवधिके भीतर न मिलनेपर कोअी कार्रवाअी न की जा सकेगी। आवेदन-पत्रमें स्थानीय कमांक लिखना अनिवार्य होगा।

गत परीक्षाके लिये प्रमाण-पत्र

गत परीक्षाके प्रमाणपत्र भेजे जा चुके हैं। अिसबार प्रारंभिक प्रवेश और परिचयमें प्रमाण पत्रोंके नीचे अेक चिट लगाअी गअी है। प्रत्येक परीक्षार्थी अपनी आगेकी परीक्षाके लिये भेजे जानेवाले आवेदन पत्रपर अवश्य चिपका दें। कार्यालयकी सुविधाके लिये यह व्यवस्था की गअी है। आशा है परीक्षार्थी, प्रचारक तथा केन्द्र व्यवस्थापक आगामी परीक्षाके लिये आवेदन पत्र भेजते समय अिस सूचनाका अवश्य ध्यान रखेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर' ४६ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं के सर्व प्रथम तथा पुरस्कार-विजेता

परीक्षा	सर्व प्रान्तोंमें सर्वप्रथम	असम	उत्कल	सिन्ध	गुजरात	महाराष्ट्र	विदर्भ-नागपुर	बम्बई
	५१२ २०) सौ० सीता रघुनाथ कर्वीरसागर, माटुँगा (३१०) १०) सर्व प्रथम पुरस्कार १०) मथुरादास पुरस्कार	२. × श्री गिरजाकुमार श्री संतोरामदेव शर्मा गौहाटी (२२५)	२१ × श्री देवराज विनायक पाठी, पुरी (२२७)	२६ × श्री राजकुमारी ला. नौरतनदासजी अेलावादी कराची	१५७७ ८) बालशंकर शामलभाअी जोशी, रतनपुर (३०४)	३१० × गोविंद अनन्तदेव पूना (२९१)	४२९ × सौभाग्यमल रतनचंद डागा, वर्धा (२८८)	५१२ + सौ. सीता रघुनाथ कर्वीरसागर, माटुँगा (३१०)
	२५७६ ८) श्री. देवीदास बंसीलाल धरमपुरिया, वर्धा (२२५)	१८ × श्री शक्तिरंजन श्री शिवप्रसाद मिश्र गोलाघाट (१४५)	१०९ × लोकनाथ श्री हरि- हर रथ कटक (१५५)	३४२ ५) रामचंद्र जीवतराम हिंडोराणी, नवाबशाह (२११)	७७० ५) कु० शकुन्तला हरी इनामदार, धरमपुर (२१०)	१३४४ ५) मधुकर कृष्ण नाअिक, कोल्हापुर (२२१)	२५७६ + देवीदास बंसीलाल धरमपुरिया, वर्धा (२२५)	२२१९ ५) कृष्णप्रसाद बालकृष्ण अुपाध्याय, गिरगांव (२०९)
	५९२८ ५) कु० निर्मला गनपतराव मोकदम, वर्धा (१७४)	४ ३) विजयसिंह पुष्करसिंह अिंफाल (१२६)	२७७ ३) राधेश्याम रामेश्वर- लाल बुधिया, कटक (१३६)	९८६ ३) कौशल्याकुमारी रामदास मसंह, रोहड़ी (१६१)	२३८६ ३) पटेल अंबालाल पुरुषोत्तमदास, पालेज (१५५)	५५३५ ३) देवीदास दत्तात्रय कुळकर्णी, सोलापुर (१७१)	५९२८ + कु० निर्मला गनपत- राव मोकदम, वर्धा (१७४)	३५०४ ३) कु० मैनावती नारायण विजयकर, दादर (१५२)
	१३४१८ ३) श्री. भगवान नारायण जाधव, सोलापुर (९३)	३०३ २) बळीरामदास बी. अे. दुलीराम पाठक, टिहू (८६)	१७६१ २) पद्मनाथ रामनाथ नायक, सिलीपुर (७८)	२३०६ २) सुंदर गोविंदराम गोलानी कराची (८९)	५७४२ २) भूपतलाल जगजीवन देसाअी, जेतपुर (९२)	१३४१८ + भगवान नारायण जाधव सोलापुर (९३)	१४०३१ २) सुमंत नारायण पांडे अमरावती (९१)	१५६९० २) कु० जयंती कृष्णराव पेंडुरकर, दादर (८१)

विशेषः—(१) बंगालकी परीक्षाअें स्थगित थी

(२) नामके प्रारंभमें क्रमांक, अंतमें प्राप्तांक और अूपर पुरस्कारकी रकम दी गअी है।

(३) + अिन्हें सब प्रांतोंमें सर्व प्रथम होनेका पुरस्कार मिला है। अिसलिये प्रांतीय सर्व प्रथम पुरस्कार नीचे लिखे परीक्षार्थियोंको मिला है-(क) परिचय २११० कुमारी मालती बाळकृष्ण नागले, वर्धा प्रा० २१५ को ५); (ख) प्रवेश ५७०९ तुकाराम गनपत खुमकर, खामगांव प्रा० १५४ को ३); (ग) प्रारंभिक १८३२ कुमारी नागिणी विष्णुपंत महाजन, पूना, प्रा० ९१ को २)।

(४) × ये अपने प्रांतमें सर्व प्रथम हैं, लेकिन पहली श्रेणीमें न होनेसे अिन्हें पुरस्कार नहीं मिला।

(५) कुमारी निर्मला गनपतराव मोकदम, वर्धा को 'प्रेमलता गोस्वामी स्मृतिपदक' नामक रौप्य पदक मिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

परीक्षा-मन्त्री,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रवेश

प्रांत	कुल परीक्षार्थी	अनुपस्थित	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	१ ली	२ री	३ री	वि० यो०
असम	६९४	१४४	५५०	१००	४५०	५०	११४	२८२
बुक्कल	८८७	२५५	६३२	८६	५४६	७६	१३७	३२५
सिंध	१९१०	४२८	१५६२	३५०	१२१२	२५०	२९०	६४२
गुजरात	५२११	५५३	४६५८	७१३	३९४५	६४०	९३८	२२७७
महाराष्ट्र विदर्भ-नागपुर बम्बअी	४८९१	६३६	४२६५	४०८	३८५७	८२२	९५८	१८७४
	८८९	२०२	६८७	५६	६३१	१५४	१७०	२६१
	१७११	६११	११००	१७४	९२६	२०१	२१७	४५५
सब प्रांत	१६२७३	२८१९	१३४५४	१८८७	११५६७	२१९३	२८२४	६११६

राष्ट्रभाषा प्रवेश

असम	१७७	२४	१५३	८०	७३	२	११	६०
बुक्कल	३१३	७७	२३६	८६	१५०	७	१०	१३३
सिंध	७५९	१२३	६३६	१४९	४८७	३०	१०९	३४६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा आवेदनपत्र—

जो परीक्षा-आवेदनपत्र अधूरे होंगे, जिनपर लिखी हुअी परीक्षाकी संख्याअें गलत होंगी अथवा जो आवेदन पत्र अवधिके भीतर न आवेंगे वे अस्वीकृत होंगे। अस्वीकृत आवेदन पत्रोंकी सूचना शीघ्र न दी जा सकेगी।

परीक्षार्थियोंको विशेष सूचना

प्रवेश परीक्षा—

१. प्रवेश परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक गुलदस्ता भाग १ से नीचे लिखी हुअी **कविताअें हटा दी गअी हैं**, शेष २० कविताओंमेंसे ही प्रश्न पूछे जाअेंगे—

१. धीर नर, २ बालककी कल्पना, ३. चाह, ४. अुठो जागो, ५. तेरी छवि, ६. हमेशा प्रेमकी रट हो जबाँ पर।

२. प्रवेश परीक्षासे **मौखिक परीक्षा हटा दी गअी है**: अब केवल दो लिखित प्रश्नपत्र ही रहेंगे।

परिचय परीक्षा—

परिचय परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक गुलदस्ता भाग २ से नीचे लिखी हुअी **कविताअें हटा दी गअी हैं**: शेष २० कविताओंमेंसे ही प्रश्न पूछे जाअेंगे—

१. प्रार्थना, २. प्रियतम, ३. आप बचा लूँ अपने तअीं, ४. परिचय, ५. सरसोंका सौजन्य, ६. कुतुब-मीनार, ७. मेरा निश्चय, ८ जननी, ९. अभिलाषा,

कोविद परीक्षा—

कोविद परीक्षाकी पाठ्य पुस्तक गुलदस्ता भाग ३ से नीचे लिखी हुअी **कविताअें हटा दी गअी हैं—**

१. कबीरदासजीका तीसरा पद—झीनी झीनी बिनी चदरिया। २. तुलसीदासजीका विजय-रथ, ३. जय जय प्यारा भारत देश, ४. विधवा, ५. जगत् अुबारो, ६. ग्राम, ७. अुर्दू पद्यमेंसे चुने फूल।

—परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

महात्मा गांधी क्या कहते हैं :— "जितना ही [illegible] करता गया उतनी ही मुझे उनकी विशेषताएँ मालूम होती गईं।"

मौलाना आजाद

ले. महादेव देसाई — भूमिका ले. महात्मा गां

मूल्य २॥) डाकखर्च ।≈)

राजनीति शास्त्र

ले. प्राणनाथ विद्यालंकार — मूल्य ३) डाकखर्च ।)

सरल नागरिक शास्त्र

ले. भगवानदास केला — मूल्य ४) डाकखर्च ।)

भारतीय बैंकिंग

ले. द्वारकालाल गुप्त — मूल्य २॥) डाकखर्च ।≈

उर्दू साहित्यका इतिहास

ले. ब्रजरत्नदास — मूल्य २॥) डाकखर्च ।≈

अनन्तके पथपर

ले. हरिकृष्ण प्रेमी — मूल्य २) डाकखर्च ।)

प्रबन्ध सम्पादक—**हृषीकेश शर्मा**, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।
मुद्रक—आनंद कौसल्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५

अक्टूबर

अंक १२

राष्ट्रभाषा

आदमी अपने फर्ज या धर्मका मालिक है। फर्ज अदा करनेसे जो हक़ पैदा होता है वही सच्चा हक़ है; वही शोभा देता है और वही टिकता है।.....
अपने धर्मका पालन करनेकी सहुलियत सब किसीको है। मैं जानता हूँ कि जो अपने धर्मका पालन करता है, हक़ अुसके पीछे दौड़े चले आते हैं।

—मो. क. गान्धी

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	भारतका दुलारा गांधी है ('बिस्मिल' अलाहाबादी)	३१५
२.	साधु (भदन्त आनन्द कौसल्यायन)	३१७
३.	सूर्य चमका (श्री भरतव्यास)	३२४
४.	मुहावरेदार भाषा और मुहावरे (श्री रामेश्वरदयाल दुबे)	३२५
५.	पत्थर और फूल (श्री शं. के आडकर)	३३०
६.	छोटी छोटी बातें (प्रो. रंजन)	३३१
७.	वर्धा कार्यालयसे—	३३६
८.	प्रधान मन्त्रीकी ओरसे (भदन्त आनन्द कौसल्यायन)	३३७
९.	हमारी नजरोंमें	३४०
१०.	हमारे प्रान्तोंकी हलचलें	३४१
११.	परीक्षा-विभाग..... ...	३४२
१२.	हमारे नये प्रमाणित प्रचारक	३४३
१३.	हमारे नये केन्द्र	३४३
१४.	शोक समाचार	३४३

नोट कर लें

१. ग्राहकोंको पत्र लिखते समय अपनी 'ग्राहक-संख्या' अवश्य लिखनी चाहिये, वरना पत्रोंके जवाब देनेमें आवश्यक विलम्ब होता है।

२. प्रचारकोंको चाहिये कि 'राष्ट्रभाषा' संबन्धी पत्र लिखनेपर अपनी संख्या लिखें।

३. राष्ट्रभाषाके लिये जो लेख भेजा जाय वह साफ अक्षरोंमें चौथाओ हाशिया छोड़कर लिखा हो।

४. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य दो रुपये और नमूनेके अंकका तीन आने है। वी. पी. भेजनेका नियम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ५] वर्धा, अक्टूबर–१९४६ [अंक १२

भारतका दुलारा गांधी है

: "बिस्मिल" अिलाहाबादी :

आज़ादीपर मरने वाला, अिस बातफ़ा दम भरने वाला,
दुनियासे नहीं डरने वाला, हर काम नया करने वाला,
अेक अेकको प्यारा गांधी है ।
भारतका दुलारा गांधी है ॥१॥

दुख दर्द गवारा करता है, दुखियोंको अुभारा करता है,
क्या खूब अिशारा करता है, सब काम हमारा करता है,
अेक अेकको प्यारा गांधी है ।
भारतका दुलारा गांधी है ॥२॥

कब किससे वह नफ़रत करता है, दुनियासे मुहब्बत करता है,
यह सबको नसीहत करता है, सच बातसे अुलफ़त करता है ॥
अेक अेकको प्यारा गांधी है ।
भारतका दुलारा गांधी है ॥३॥

आँधीकी तरह चलनेवाला, दीपक बनकर जलनेवाला ।
वह हाथ नहीं मलनेवाला, दुश्मनको नहीं छलनेवाला ॥
अेक अेक को प्यारा गांधी है ।
भारतका दुलारा गांधी है ॥४॥

आज़ादीको हम रोते थे, ग़फ़लतमें पड़े थे, सोते थे ।
यह अुम्र युहीं बस खोते थे, बदनामे जहाँ हम होते थे ॥
अेक अेकको प्यारा गांधी है ।
भारतका दुलारा गांधी है ॥५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोये थे बहुत बेदार किया, अिसने हमको हुशयार किया।
लड़नेके लिये तैय्यार किया, चरखेसे हमेशा वार किया॥
अेक अेकको प्यारा गांधी है।
भारतका दुलारा गाँधी है॥६॥

दुश्मनने भी लोहा मान लिया, खूब अच्छी तरह पहचान लिया।
क्या चीज़ है अिसको जान लिया, अहसान किया अहसान लिया॥
अेक अेकको प्यारा गाँधी है।
भारतका दुलारा गाँधी है॥७॥

दुनियाकी भलाअी करता है, कब किसकी बुराअी करता है।
अेक अेकसे रसाह करता है, यूं दिलकी सफ़ाअी करता है॥
अेक अेकको प्यारा गाँधी है।
भारतका दुलारा गाँधी है॥८॥

चुपचाप सितम सहने वाला, जो सच है वही कहने वाला।
दुनियामें निडर रहने वाला, लहरोंकी तरह बहनेवाला॥
अेक अेकको प्यारा गाँधी है।
भारतका दुलारा गाँधी है॥९॥

वह दिलसे अहिंसा धारी है, अुपदेश अिसीका जारी है।
यह नीत बस अुसको प्यारी है, शुभ चिंतक है हितकारी है॥
अेक अेकको प्यारा गाँधी है।
भारतका दुलारा गाँधी है॥१०॥

दुख दर्दसे यह आज़ाद रहे, खुशहाल रहे दिल शाद रहे।
'बिस्मिल'की दुआ बस याद रहे, यह लाख बरस आबाद रहे॥
अेक अेकको प्यारा गांधी है।
भारतका दुलारा गांधी है॥११॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु

: लेखक-भदन्त आनन्द कौसल्यायन :

अेक साधुके बारेमें यह प्रसिद्ध था कि वह नमकको चीनी बना देते हैं। अेक दिन किसीने पूछा—

"महाराज ! लोग कहते हैं कि आप नमकको चीनी बना देते हैं, क्या यह बात ठीक है ?"

"ठीक क्या है, भाअी ! अेक गृहस्थके यहां भोजन करने गये थे। अुसने खीर बनाअी थी। भूलसे खीरमें चीनीकी जगह नमक पड़ गया। खाते ही मालूम दिया। लेकिन सोचा, जो पड़ना था सो तो पड़ ही गया, अब बोलनेसे क्या लाभ ? शिकायत करनेसे दाताका मन मैला हो सकता है। हम मन मारे खाते रहे और बिना कुछ बोले सारी खीर खा गये।"

"लेकिन, फिर घरवालोंने भी तो खाअी होगी ?"

"हाँ, जब घरवालोंने खाअी तभी तो अुन्हें पता लगा कि खीरमें नमक है। अुन्होंने सोचा—अैसी खीर साधु महाराज कैसे खा गये ? जरूर नमककी चीनी बना ली होगी। तबसे यह बात चल गअी कि हम नमकको चीनी बना देते हैं। हमारा अिसमें कोअी कसूर नहीं।"

(२)

गाड़ीमें दो मुसाफिरोंको और कोअी काम न रहनेसे शास्त्रार्थ छिड़ गया। अेक बोला—"अिन साधुओंको—हराम-खोरोंको कभी कुछ न देना चाहिये। समाजके कुछ भी तो काम नहीं आते।"

दूसरेने कहा—"सभी साधु समान नहीं होते। अनेक साधु अपनी-अपनी श्रद्धाके अनुसार हरि-भजन करते हैं। अुन्हें दान देनेसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुण्य होता ही है और फिर कभी साधु तरह-तरहके अुपदेशोंसे जनताका कल्याण करते हैं। अैसे साधुओंके भरण-पोषणकी चिन्ता तो निश्चय ही धर्म है।"

यह सारी चर्चा गाड़ीमें बैठे अेक हट्टे-कट्टे साधुको सुनाकर ही की जा रही थी और बड़ी देर तक होती रही। साधु चुपचाप बैठा था। चर्चा अितनी अधिक देर तक होती रही कि वह लगभग सभी मुसाफिरोंकी सार्वजनिक चर्चा बन गअी। आखिर चर्चा समाप्त होनेको थी, समाप्त हुअी। जो भाअी साधुओंको कुछ भी देनेके विरोधी थे, वह अेक स्टेशन पर किसी कामसे नीचे अुतरे। बादमें जब चढ़ने लगे तो दरवाजा बन्द करते समय साधुका हाथ दरवाजेके भीतर था। यकायक दरवाजा बन्द कर दिअे जानेसे साधुकी अेक अुँगली दबकर अैसी हो गअी जैस रेलके पहियेके नीचे रखा हुआ पैसा। साधुने अेक नजर अुँगलीको देखा और फिर मुष्टि बन्द करके दांतों पर दांत रख चुपचाप बैठा रहा। जिस किसीकी भी नजर साधुकी अुँगलीकी ओर गअी, अुसीकी चीख निकल गअी और अुसने दांतों तले अुँगली दबाअी। लेकिन साधु था कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं। यदि साधु किसीको कुछ कहता सुनता तो अुन महाशयको भी शायद कुछ कहने सुनने—शायद क्षमा मांगने—का अवसर मिल जाता। लेकिन किसीको अितनी गहरी चोट पहुँचा कर क्या क्षमा-याचना मात्रसे छुट्टी पाअी जा सकती है? अपराधीके लिअे काअी रास्ता न था। थोड़ी ही देरके बाद यात्रियोंने देखा कि वही महाशयजी, जो साधको कुछ भी देना 'पाप' बता रहे थे, कुछ दूध, कुछ मिठाअी, कुछ पूरियां लिअे साधुके सामने हाजिर हैं। महात्मा बोले—"भाअी! शायद तुम ही तो कह रहे थे कि साधुको कुछ भी खिलाना पाप है!"

"महाराज! मैं आपकी साधुता देखकर बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। धन्य हैं आप!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाओ ! अिसमें साधुता क्या है । तुम्हारी गलतीसे लग गओ तो भी चोट ही है, अपनी गलतीसे लग गओ तो भी चोट ही है । चोट लग जानेपर अुसे सहनेके सिवा चारा नहीं । अपनी यह मिठाओ अुठा लो"

"नहीं महाराज ! अिसे ग्रहण कर लें । मुझे संतोष होगा ।"

भाओ ! अैसी तुच्छ बातोंसे प्रभावित होकर अपने सिद्धान्तको छोड़ना अच्छा नहीं ।"

साधुने मिठाओ नहीं ही ग्रहण की ।

(३)

"महाराज, साधु को भी कुछ काम करना चाहिये ।" सेठजीने आधा हंसी में और आधा गंभीरतासे कहा ।

महात्मा सेठजीके बागमें रहते थे । कभी बागसे बस्तीमें जाना होता तो महात्मा कभी सेठजीके तांगे पर न जाते । पैदल ही चलनेका आग्रह रखते । सेठजीकी बात सुनी, तो बोले—"हां, ठीक है ।"

शामको सेठजी बागमें आये तो देखा कि महात्मा १०५ डिग्री बुखार लिये पड़े हैं । सेठजीने घबरा कर पूछा—

"महात्मा ! क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं, आपने कहा था कि साधुको भी काम करना चाहिये । अपने कामचोर तो हैं नहीं । डटकर आठ घंटे कुदाल चलाओ । अभ्यास न होनेसे ज्वर आ गया । और कोओ बात नहीं ।"

साधुके ज्वरने तीन दिन लिये ।

सेठ और साधु साथ साथ चले जा रहे थे । जितना पैदल चल सकते थे मजेमें चले गये । आगे आओ अेक नदी । तैरना सेठ भी जानते थे, किन्तु प्रश्न था जूतोंका । साधु-महाराज तो नंगे पांव थे ही, किन्तु जूतेके भक्त सेठके पांवमें जूते थे । साधु बोले—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप तैरना जानते ही हैं, तैर कर पार हो जायें। जूतोंकी चिन्ता न करें। मुझे अेक तरकीब आती है। मैं आपके जूते अुसपार ले आअूँगा और अेक बूंद न लगने पायेगी।"

भक्त ने सोचा---साधु महात्मा है। न जाने कौन करामत हो। जूते छोड़े और तैर कर पार हो गया।

साधुने भक्तके जूते लिये, अुन्हें कपड़ेसे अपने सिर पर बांधा और स्वयं भी तैर कर अुस पार हो गये।

नदी पार पहुँच कर जब साधुने अपने सिर परसे भक्तके जूते अुतारकर अुसके पांवमें डाले तो भक्त जमीनमें गड़ गया।

(४)

वह महात्मा नदीके तट पर अपने आश्रममें रहते थे। अेक भक्त चने भिगोकर दे जाया करता था। साधुका यही प्रातःकालका जलपान था अेक दिन चने आने पर महात्मा बोले---

"रख दे। जलेबी बन जायेंगे, तब खायेंगे।"

भक्त बैठ गया क्या जाने, महात्मा हैं। कोअी करामत दिखावें।

बड़ी देर हो गअी बैठे-बैठे। दो घंटे बाद महात्मा बोले---"लाओ अब खा लें।"

भक्त बोल अुठा---"महात्मन्! वह तो चने के चने हैं। जलेबी बने ही नहीं।"

साधुने अुत्तर दिया---"मूर्ख कहीं का। पहले भूक अधिक नहीं थी। अुस समय वह चने थे। अब भूक लगी है और कड़ाके की। अब वह जलेबी है।"

कौन जाने किसीने अिन महात्माके बारेमें भी यह प्रसिद्ध कर दिया हो कि वह चनोंकी जलेबी बनाते हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

ट्रेनमें सिविल सर्विसके देशी साहब बहादुर चले जा रहे थे--फर्स्ट क्लासके डिब्बेमें। और अुसीमें थे बर्मा देशके अेक बौद्ध साधु--फुंगी।

चायका समय हुआ तो व्वाय अेक ट्रेमें दूध, चीनी, चाय रखकर ले आया। फुंगी महाराजने पहले मुँहमें थोड़ी चाय अुँड़ेल ली, फिर दूध पी लिया और अुसके बाद चीनीके दो चम्मच लिया। लड़केसे बोले--"ट्रे ले जाओ।"

अिंग्लैन्ड-रिटर्न्ड सिविल सर्वेन्ट साहब बड़े प्रभावित हुअे। ओह! देशमें अभी अैसे सरल-हृदय महात्मा हैं! नाम-धाम पूछने पर पता लगा कि वह रंगूनके अेक बड़े विहारके अध्यक्ष हैं और प्रसिद्ध आचार्य।

अेक दिन सिविल सर्वेंट साहबने बहुतसा फर्नीचर गाडीपर लदवाया आर अुन्हीं आचार्यके विहारमें पहुँचे। देखा--चटाअी पर बैठे शिष्योंको अध्ययन करा रहे हैं। बडी श्रद्धासे जाकर प्रणाम किया। आचार्य बोले--

"अिस गाड़ीमें क्या है?"
"विहारके लिये फर्नीचर।"
"किसको देने को लाया है?"
"आप ही के लिये।"
"तो हमको दे दिया?"
"जी दिया।"
"दे दिया?"
"जी दिया।"
"दे दिया?"
"जी दिया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्यने तीन बार कहलवाया। जब अुसने तीसरी बार भी "जी दिया" कहा, तो आचार्यने किसी अेक आदमी को बुलाकर कहा- "ले जाओ अिसे। हमें अिसकी जरूरत नहीं है।"

आचार्य चटाअी पर ही बैठे पढ़ाते रहे।

(६)

शहरके सेठ साहबकी धर्म-भावनाकी ख्याती थी-आये गये साधुओंको तीर्थ-यात्रा करा देते हैं। अेक दिन अेक साधु पहुँचे और बोले

"सेठ साहब! हरिद्वार जाना है। टिकट ले दें।"

"नहीं।"

"हमें ही नहीं ले देंगे, या किसीको भी नहीं लेकर देते?"

"नहीं लोग टिकट लेकर खा जाते हैं।"

अच्छी बात है, तब तो टिकट लेकर ही जायेंगे।

साधु सेठके दरवाजे पर बैठ गया। बैठा रहा पूरे चौबीस घंटे। सेठ साहब को भी थोडी जिद चढ़ गअी थी। दूसरे दिन लोगोंने कहा- "ले दीजिये सेठ साहब! कलसे बैठा है।"

सेठ बोला-"अच्छा लो अुठो। बताओ तीसरे दर्जेका क्या लगता है?"

"तीसरे दर्जेका टिकट तो हम कल लेते। आज तो अब अिन्टर-क्लासका लेंगे।"

सेठको गुस्सा आ गया। बोला-"अितना नखरा! तब पड़ा रह।"

साधु २४ घंटे और बैठा रहा। लोगोंने कहा-"सेठ साहब! अिन्टर का ही ले दे।"

"अच्छा लो, अिन्टरका लो, जान छोड़ो।"

"अिन्टर का तो कल लेते, आज तो सेकिन्ड का लेंगे।" सेठको ही नहीं, आस-पासके लोगोंको भी गुस्सा आया बोले—"देखो, अुसकी बदतमीजी! बैठा रहने दो बेअीमानको।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधुके मुंह पर गुस्सा क्या, खीझ भी नहीं थी। वह बिना कुछ खाये पिये बैठा रहा। अगले दिन कुछ भक्तोंका मन पसीजा। अुन्होंने कहा "सेठ साहब! बड़ा हठयोगी है। नहीं अुठेगा। अधिक रुपये नहीं लगेंगे। सेकिन्डका ही टिकट लेकर अिस महात्मा की बिदा करें।"

सेठ बोला–"अुठो महात्मन्! सेकिन्ड-क्लासका ही टिकट ले देते हैं।"

'सेठ फर्स्ट-क्लासमें कभी नहीं चढ़े। जब टिकट लेकर देना ही है तो फर्स्ट-क्लासका लेकर दो।'

साधुको बिना कुछ खाये-पीये चौथा दिन हो गया था। अेक दिन और अूपरसे बीत गया। सेठ को डर लगा। कौन हत्या मोल ले। बोला–

"अच्छा! महात्मन्! क्षमा करें। चलें, फर्स्ट-क्लासके टिकटकी ही व्यवस्था करता हूँ।"

"नहीं, तुम्हारा कुछ विश्वास नहीं। अुठ जाने पर करो या न करो यहीं मँगवाकर दो।"

सेठने फर्स्ट-क्लासका टिकट मंगवाया और साधु को देते हुअे कहा–"लीजिये भगवन्।"

साधुने टिकट लेकर फेंक दिया। बोले–'रख अपना टिकट। किसी को कहता था कि साधु बेचकर खा जाते हैं!'

साधुन कम्बल अुठाया और चल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य चमका !

रक्त-रञ्जित हो गअी प्राची दिशा-
स्वाधीनताका जब सुनहला सूर्य चमका !

ज्योति लख़ जगमग "जवाहर" की समुज्वल-
काँचके कुछ तुच्छ टुकड़े गल गये,
कुछ मातृ-भूके क्षण विक्षुब्ध अुबल गये,
कुछ टिमटिमाते क्षुब्ध जुगनू जल गये !

कोटि प्राणोंका समर्पण हो चुका-
स्वाधीनताका तब सुनहला सूर्य चमका !

शुभ "तिरंगी" मांगालिक साड़ी पहनकर,
हँस रही है पूर्वमें अुषा नवेली,
किन्तु सौत विभावरी अिस नव अुदयपर,
वस्त्र काले पहन अकुलाती अकेली, !

अन्त चिर काली निशाका हो चुका,
स्वाधीनताका तब सुनहला सूर्य चमका !

घोर-तमसे मुक्ति पाकर कुछ विहग-दल,
कर रहे हैं सत्य स्वाभाविक कुलाहल,
ज्योति है असह्य अिनको अिसलिये तो,
पर मिड़ाते हैं परस्पर मूढ़ पागल !

रक्त-मय नर-मेघका तर्पण हुआ।
स्वाधीनताका तब सुनहला सूर्य चमका !

रचयिताः—**भरत व्यास**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहावरेदार भाषा और मुहावरे

भाषाका सर्वोत्तम गुण अुसका प्रवाह है। चलती भाषा वह कहलाती है जिसमें शब्दोंका प्रवाह बिलकुल ठीक तरहसे चलता रहे। शब्द सरल भी हो सकते हैं कठिन भी, किन्तु भाषाकी गति ठीक होनी चाहिये।

भाषाकी गति ठीक रखनेके लिये नीचे लिखी मोटी मोटी बातों पर ध्यान देना होता है :—

१. विषयके अनुकूल शब्दोंका चुनाव।

२. व्याकरणके नियमोंके अनुसार अुनका ठीक क्रम।

३. शब्दोंके साथ अुपयुक्त क्रियाओंका प्रयोग।

४. व्याकरण शुद्ध भाषा।

५. विभक्ति, अव्यय, मुहावरा, लोकोक्ति आदिका अुचित स्थान पर प्रयोग।

चलती भाषाको ही मुहावरेदार भाषा कहा जाता है। मुहावरेदार भाषाका यह अर्थ कदापि नहीं है कि अुसमें मुहावरोंकी भर-मार होनी चाहिये। केवल मुहावरे कभी भाषाको मुहावरेदार नहीं बना सकते। मुहावरोंका प्रयोग भी केवल यथास्थान ही होना चाहिये।

मुहावरों अरबी भाषाका शब्द है। मुहावरा अुस गठे हुये वाक्यांश को कहते हैं जो अपना सामान्य अर्थ न जताकर कुछ विलक्षण अर्थ प्रकट करता है। जैसे "नौकर अितना चालाक है कि अपने मालिकको अंगुलियों पर नचाता है।"

'अंगुलियोंपर नचानेका' सामान्य अर्थ लिया जाय तो वह हँसीका विषय होगा और नौकर तथा मालिक दोनोंके लिये कठिन पड़ेगा। किन्तु अिसका लक्षणात्मक अर्थ अितनाही है कि नौकर जैसा चाहता है अपने मालिकसे करवा लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेटमें चूहे कूदना, आंखोंमें आंखें डालना आदि मुहावरोंका लक्षणात्मक अर्थही लिया जाता है सामान्य अर्थ नहीं।

यद्यपि मुहावरेका सामान्य अर्थ नहीं लिया जाता है तथापि अुसमें और अुसके लक्षणात्मक अर्थमें कोअी न कोअी सम्बन्ध अवश्य रहता है। 'अँगलियोंपर नचाना' मुहावराकोही लीजिये। कुछ बाजीगर कठपुतलियोंको हाथमें लेकर अँगुलियोंकी सहायतासे अैसी कुशलतासे अुन्हें नचाते हैं कि जान यह पड़ता है कि कठपुतलियाँ स्वयं नाच रही हैं, वास्तवमें अुसका सूत्र संचालन स्वयं बाजीगर करता है। 'अँगुलियोंपर नचाना' मुहावराका अर्थ अिसीलिये 'अपनी अिच्छानुसार किसीसे काम करा लेना' हो गया है।

मुहावरोंका निर्माण किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं होता। अनेक व्यक्तियोंके द्वारा बहुत दिनों तक अेक वाक्यांश विलक्षण अर्थमें प्रयुक्त होनेके कारण मुहावरा बन जाता है। अिसी लिये भाषाकी प्रारम्भिक अवस्थामें अिनकी संख्या न्यून रहती है। ज्यों-ज्यों भाषाका विकास होता जाता है अिनकी वृद्धि होती जाती है।

मुहावरोंका जन्म स्थान लोक-भाषा, जनभाषा है। अिस लिये मुहावरे जन साधारणकी सम्पत्ति होते हैं। साहित्यमें जहाँ जन साधारणके कथन और संभाषण अपने वास्तविक रूपमें अुपस्थित होते हैं, मुहावरे वहीं मिलते हैं। प्रेमचन्दजी की कृतियोंमें अिसी लिये प्रायः सर्वत्र मुहावरेदार भाषा हमें मिलती है। जिस साहित्यमें सामान्य जनताको नहीं, आदर्श पुरुषों की, कल्पनाके आधार पर अुपस्थित किया जाता है, अुसमें मुहावरे नहीं मिला करते। सूर और तुलसीकी कृतियोंमें अिसी लिये मुहावरोंका अभाव है।

देश की परिस्थिति, लोगोंके कार्यक्षेत्रका प्रभाव मुहावरोंकी सृष्टि और अुनके प्रकार पर पड़ती है। समुद्रके निकट रहनेके कारण अंग्रेजी भाषामें अिसी लिये समुद्र सम्बन्धी मुहावरे अधिक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलचाल और साहित्य, दोनोंके लिये मुहावरों का ज्ञान अति आवश्यक है। अुनके प्रयोगसे भाषामें सजीवता, हृदयग्राहिता और मार्मिकता आ जाती है। मुहावरों द्वारा थोड़े शब्दोंमें बहुत भाव प्रकट किया जा सकता है। मुहावरोंके प्रयोगसे भाषा का सौन्दर्य बढ़ता है और अुसमें अेक प्रकारका चमत्कार अुत्पन्न हो जाता है।

मुहावरेदार कविता (जैसे अुर्दू शायरी) पढ़कर हृदय फड़क अुठता है, कविता शीघ्र कंठाग्र हो जाती है। हिन्दीकी अपेक्षा अुर्दूमें मुहावरोंका प्रयोग अधिक और सुन्दर ढंगसे होता है।

भाषापर अधिकार प्राप्त करनेके लिये मुहावरों पर अधिकार करना अति आवश्यक समझना चाहिये।

मुहावरा और लोकोक्तिका अुत्तर भी यहाँ समझ लेना चाहिये। दोनोंमें समानता यह है कि दोनोंका सामान्य अर्थ नहीं लिया जाता है, लक्षणात्मक अर्थ लिया जाता है। दोनोंमें भेद निम्न लिखित हैं :—

१. मुहावरा वाक्यांश होता है और अिसलिये वह वाक्यसे प्रथक स्वतंत्र रूपमें व्यवहृत नहीं होता।

लोकोक्ति स्वतंत्र वाद्य होता है और अुसका व्यवहार स्वतन्त्र रूपसे होता ह।

२. मुहावरा वाक्यके अर्थ में चमत्कार अुत्पन्न करता है। लोकोक्ति वाक्यके अर्थ में चमत्कार अुत्पन्न नहीं करती। किसी बातके समर्थनमें अुसका प्रयोग होता है।

३. मुहावरा, काल, पुरुष, वचन आदि नियमोंके अनुसार बदलता रहता है जैसे "अुंगली पर नचाना" "अुंगली पर नचाअूंगा" "अुंगली पर नचाओ" आदि।

लोकोक्ति सदैव ज्यों की त्यों रहती है अुसमें कोअी परिवर्तन नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. मुहावरा की अुत्पत्ति लोगों द्वारा बहुत समय तक व्यवहृत किसी वाक्यांश से होती है ।

लोकोक्ति भूतकालकी किसी घटना पर अवलम्बित होती है ।

मुहावरे भी कअी प्रकारके होते हैं । कुछ लोगोंका मत है कि मुहावरेके अन्तमें क्रियाका संज्ञार्थक अर्थात सामान्य रूप होना चाहिये। जैसे 'आँखें छिपाना' 'अुंगलियों पर नचाना' 'हाथ अुठाना' आदि ।

'आँखका तारा' 'अन्धे की लकड़ी' शुद्ध मुहावरे नहीं हैं "मुहावरे दार वाक्यांश" हैं ।

हिन्दीमें कुछ अैसी क्रियायें हैं जिनके बहुत सुन्दर प्रयोग लक्षणात्मक अर्थोंमें होते हैं। अैसी क्रियाओं को 'मुहावरेदार क्रियायें' कहना अुपयुक्त होगा।

'मरना' क्रियाका सामान्य अर्थ 'शरीर परित्याग करना' है किन्तु 'मजनू लैला पर मरता था' वाक्यमें 'मरना' क्रिया अपने लक्षणात्मक अर्थमें प्रयुक्त हुअी है । यहाँ 'मरना'का अर्थ है 'अत्यन्त आसक्त होना'।

मुहावरोंके शब्द नपे-तुले और निश्चित होते हैं । अुनके शब्दोंमें न्यूनाधिक करना, अथवा परिवर्तन करना, कदापि अुचित नहीं । थोड़े हेर-फेरसे अर्थमें बड़ा अन्तर आ जाता है और सारा सौन्दर्य नष्ट हो जाता है ।

"पानी पानी होना अेक मुहावरा है । अिसके स्थान पर पानी होना का प्रयोग बिलकुल अशुद्ध होगा ।

'पानी पानी होना' का अर्थ है..... लज्जासे फिर नीचा करना ।

कलेजा थाम लेना अेक मुहावरा है । अिसक स्थान पर 'कलेजा थाम थाम लेना' का प्रयोग गलत होगा ।

अुसी तरह पानी पानी होना के स्थान पर जल जल होना का प्रयोग करना बिलकुल गलत ही नहीं हास्यास्पद भी है । अिस दृष्टिसे 'अँगुली पकड़कर पहुँचा' पकड़नाके स्थान पर 'प्रकोष्ट पकड़ लेना' मुहावरेका प्रयोग सदोष ही कहा जावेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूँकि मुहावरे कुछ खास शब्दोंमें ही बँधे हुअे होते हैं अिसलिये अेक भाषाके मुहावरेका दूसरी भाषामें अनुवाद नहीं हो सकता। यदि अनुवाद करते समय कोअी मुहावरा सामने आ जाय तो होना यह चाहिये कि अपनी भाषामें अुससे मिलता-जुलता कोअी मुहावरा ढूँढा जाय। यदि वह न मिले, तो अुसका भाव अैसे ढंगसे प्रकट किया जाय जो अपनी भाषाकी प्रकृतिके अनुकूल हो।

मुहावरोंके शुद्ध प्रयोग पर विशेष ध्यान अति आवश्यक है। असावधानीके कारण मुहावरोंके प्रयोगमें अैसी भद्दी भूलें की हैं जो भाषाके सौन्दर्यको तो नष्ट करती ही हैं लेखककी अज्ञानता का भी परिचय देती हैं।

मुहावरोंके कुछ अशुद्ध प्रयोग यहाँ दिये जाते हैं। —

१. 'बस तभीसे पंजाबके गलेमें पराधीनताकी बेडियाँ पड़ गअीं।'
बेड़ियाँ पैरोंमें पड़ती हैं गलेमें नहीं।

२. 'अुससे भिड़ना तलवार की नोक पर चलना है।'
नोंक पर खड़ा भले हो ले, चला नहीं जा सकता। धार पर चलना मुहावरा है।

३. 'जानपर कुरबान होनेवालोंकी कमी न थी।'
जानपर कुरबानका कोअी अर्थ ही नहीं।
'जान कुरबान करने वाले' चाहिये था।

४. 'झूटी बातें बनाना बुरा है'
'बातें बनाना' मात्र पर्याप्त है। 'बातें बनाना'का अर्थ ही है 'झूठी बातें करना।'

५. 'सम्पादकोंका गला घोटनेके लिये सदा अुनके सिरपर दमनकी तलवार लटकती रहती है।' तलवार गला काटती है घोटती नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर और फूल

: लेखकः— शं. के. आडकर :

अेक हराभरा जंगल था। अुसमें अेक बड़ा पत्थर पड़ा था। पत्थर बहुतही खुरदरा और कोयले जैसा काला था।

अुसी पत्थरके पास अेक लता थी। अुसके सफेद फूल हवासे खेलते, पानीसे आँख मिचौनी करते, टहनियोंपरसे नीचेके नालेमें कूदते और पानीपर नौका जैसे तैरते।

अुस पत्थरपर फूल सदा हँसते और अुसकी दिल्लगी करते। मज़ाक अुड़ाते और कहते :—

जरा अिसका डील-डौल तो देखो

लोगोंके रास्तेमें रोड़ा बना पड़ा है। नालेको बहने नहीं देता, बेलोंको अुगने नहीं देता, हरीभरी घासको पनपने नहीं देता, जरा अिसकी सूरत तो देखो, अैसा मालूम होता कि जैसे अभी चेचक निकल आये हो। वर्षा हो, गरमी हो, जाड़ा हो कुछ दाद न फ़रियाद! यह आलसियोंका राजा अपनी जगहपर कायम। न कभी अपनी जगह छोड़ेगा, न कभी बात करेगा। आखिर तू है किस कामका? अिससे बेहतर है कि किसी जलाशयमें जाकर डूब मरे!!

पत्थर बेचारा चुप्पी साध लेता। आखेर वह पत्थर तो था ही।

अिस तरह कअी साल बीत गये। अुस जंगलके पास अेक छोटासा देहात था। वहाँके लोगोंने अेक मंदिर बनाना निश्चय किया। अब मूर्ति बनानेके लिअे पत्थरकी तलाश शुरू हुअी। मूर्तिकार अुसी जंगलमें घूमने-फिरने लगे। अेक मूर्तिकारकी अुस पत्थरपर नज़र पड़ी। वह बहुत खुश हुआ और कहने लगा—

"अिस काले पाषाणकी क्या ही सुंदर मूर्ति बनेगी!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फौरन अुसने मूर्ति बनाना शुरू किया। अब क्या था बेचारे पत्थरपर हथोड़ेकी चोटें पडने लगीं। मूर्तिकारने अुसको तोड़ा मरोड़ा। अुसकी ठिकरियाँ अुड़ने लगीं। अिस आवाज़से बेचारे फूल बहुत घबराये। अुस पत्थरकी यह दुर्गति अुनसे न देखी गअी। अुनको बहुत अफ़सोस हुआ। वे कहने लगे 'अिस आलसीको कितनी जबरदस्त सजा मिली?'

कुछ दिन बाद अस शिल्पीने अुस पत्थरसे अेक मनोरम मूर्ति तैयार की। सिरपर मुकुट, हाथमें कमलका फूल, गदा, हँसमुख, गलेमें फूलोंकी माला। जब मूर्ति बनी तब फूलोंके अचरजका ठिकाना न रहा। अुनको अैसा लगा कि जैसे पत्थरमें छिपी बैठी कोअी लावण्याकृति बाहर आ रही है!

मूर्तिकारने मूर्तिकी पूजा प्रारंभ की। फूल यह सब कुछ देखते रहे। अितनेमें किसीने कुछ फूल तोड़कर अुस मूर्तिपर चढ़ाये और प्रणाम किया।

पत्थर हँसता था। फूल बहुत नाराज थे। अुनको बहुत खेद हुआ। लेकिन बेचारे करही क्या सकते थे? वे गुस्सेमें आकर मूर्तिके सिरपर कूद पड़े और वहीं रूठकर पड़े रहे।

दूसरे दिन मूर्तिकार और गाँवके लोग मूर्तिकी मंदिरमें स्थापना करनेके लिये आगये। अुन्होंने वे कुम्हलाये फूल जमाकर पासके नालेमें फेंक दिये, और नये फूल लाकर धागेमें पिरो दिये। अुनसे माला बनाअी और मूर्तिके गलेमें डाल दी (मूर्तिको पहनायी)। बड़ी धूम-धामसे साज-बाजसे जुलूस के साथ मूर्ति लाकर अुसकी मंदिरमें स्थापना की।

पत्थरपर हँसनेका अब फूलोंको पछतावा हो रहा है। परन्तु अब क्या--?

'अब पछताये होत क्या.....जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत'। अुनको अपनी अिस गलतीपर हररोज पत्थरके चरणोंपर अपना सिर नवाना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी छोटी बातें !

: प्रो. रंजन :

माँ वसुन्धराकी गोदमें कितने हँस हँसकर खेले अवं कितने रो-रोकर विलीन होगये। हास्य और रुदन दोनोंकी व्यापकता और दोनोंका अटूट सम्बन्ध जगतमें सदासे चला आया और आगे भी चलता रहेगा। कोअी हँसनेमें सुखकी सारी विभूति मान अहर्निश हँसनेकी ही चेष्टा किया करता है....पर सफलता अुसके हाथकी वस्तु नहीं। होता वही है जो कोअी जानता भी नहीं। मानव सदाही किन्हीं अदृश्य हाथों दवारा नचाया जाता है। बेचारा पतित भी पतित होना नहीं चाहता और पुण्यात्माका पुण्य भी केवल अुसकी अर्पित वस्तु ही नहीं है अुसमें भाग्यका विधान भी अपना हिस्सा रखता है। हँसने वाले रोनेवालेके पीछे पड़े रहते हैं और जिनके चेहरे पर गम्भीरताका नक़ाब पडा है वे हँसने वालोंको 'अुच्छृंखल' आदि पदवियों भूषित कर संतोष कर लेते हैं। पारस्परिक आलोचनाओंके छींटे कसे जाते हैं लेकिन यह सोचनेकी फ़ुरसत किसे–'दूधका धुला हुवा यहाँ कौन है !' किसीमें कम और किसीमें अधिक–अच्छाअी और बुराअी दोनों सापेक्षिक अवस्थामें तो सभी जगह रहती ही हैं। पर हाँ, बुराअियोंके माप-यंत्र चक्षु भिन्न हुआ करते हैं। न कोअी पूर्ण बुरा है और न किसीने केवल अच्छाअीका ही पट्टा लिखा लिया है। पर छिद्रान्वेषक तो अपने समान गुणोंके अभावमें ही अुसे अपनेसे नीचेका दरजेका समझने लगते हैं। फिर बात अितनी ही नहीं, बहुत सज्जन जिन्होंने स्वयं कभी परिस्थिओंका सामना भी नहीं किया अपना निर्णय देनेमें सबसे आगे तैयार रहते हैं। अैसे निर्णय वेदना और सहानुभूतिसे सर्वदा शून्य होते हैं। अेक सैनिक 'प्रेमोत्सर्ग' को क्या समझे अुसके लिये तो रण-क्षेत्रकी मृत्यु ही वरदान है। सभी अपने अपने मार्गको ही देव तुल्य समझते हैं। अेकको दूसरेका जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्ण ही लगता है—अुसमें अुसे काले धब्बे ही ज्यादा नजर आते हैं। दूसरेके आचरणपर दृष्टि डालते समय अुनकी 'संवेदनात्मक-भावना' तो छुट्टी पर चली जाती है। जिस दुर्बलतामें फँसनेका अवकाश अुन्हें नहीं मिला, अुसी दुर्बलतामें वे जब दूसरोंको फँसते देखते हैं तो अपनी पुण्य और महत्ताको वे और भी अधिक अूँची चोटीपर चढ़ते देखते हैं।

यह संसार है। सभी तो चाहते हैं कि जो धागा अुनके बीचमें जड़ा हुआ है वह सदाही सुरक्षित रहे, अुसे धक्का न लगे भूल यहींपर है मानव जीवनका ताना-बाना अेकही धागेपर नहीं हुआ है बरन् अुसमें अैसे ही अनेक धागोंका अेक विषम तन्तु डाल दिया है। जहाँ अेक दूसरेमें डालने और निकालनेमें कोअी न कोअी डोरा मिलेगाही और कभी कभी टूट भी जाता है। मित्र आशा करते हैं कि अुनकी मित्रतामें कोअी खटकनेवाली बात न हो; माता-पिता सोचते हैं कि अुनका पुत्र जगतमें अुन्हींके संकेतपर नाचे। जहाँ अवस्था विशेषसे कोअी अैसी घटना हुअी कि सारा पूर्व स्नेह अुनकी दृष्टिमें अेक माया-जालसा लगने लगता है। आजकी बुराअी अतीत पर भी हाथ फेकनेसे नहीं चूकती। कैसा सुन्दर निर्णय है ? तमाशबीत भी झट कह अुठेंगे 'मैं अैसा कभी न होने देता।' अपनी समझमें वे और ही सोचते होंगे पर सभामें वषमता और बुद्धि अेकसी नहीं होती। अेक प्रेमपर सब कुछ विश्वका साम्राज्य तक निछावर कर देता है और दूसरे अुसे 'पागल' की अुपाधि देनेमें चुकते नहीं। कौन ठीक रास्तेपर है ? सभी तो मनुष्यही हैं—अीश्वर कोअी नहीं। फिर निर्णय करनेकी बुद्धि भी अलग अलग ही है। अुसके लिये कोअी अीश्वरी-विधान है नहीं न अिस बातमें 'साम्यवाद' ही लागू हो सकता है। फिर दुनिया के निर्णयमें बहुत कुछ अंश तो 'बहुमत' से अुधार लिया जाता है।

मनुष्यका जीवन स्वयं अेक रहस्य वाद है। अुस रहस्यके भीतर बैठकर अन्दरकी फोटो लेना कितने लोग जानते हैं। फिर जहाँ मनुष्यकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पज्ञता ही अुसका निरविवाद गुण हो, वहाँ अेक के दूसरे बारेमे जोरसे बोलनेका साहस अिन्सान कैसे करता है। दीप-शिखा पर अुत्सर्ग होने वाले पतंगोंका मार्मिक भाषामें चित्रण करना सभीका तो नहीं आता। कोअी तो भावकी अुस निस्सीम सम्पतिको लेकर काव्यकी रसमअी दृष्टिसे खड़ी करता है और किसीके लिये वह कोरा पागलपन है। यह सब जानते हुअे भी वे बिचारे वेदान्तके गूढ़ तत्वोंकी समीक्षाकी चिंता कब करते हैं! अुन्हें तो अुठ चलनेमें ही भक्ति और ज्ञानका मजा आता है। फिर अपने जलनेका शिकवा भी तो वे किसीसे करते नहीं सुने जाते।

मनुष्य जो आज है वही कल रहेगा अिसकी भी तो कोअी गारन्टी नहीं। पुण्य-पाप यह तो परिस्थितिओंका नाम है। दुनियामें पाप-पुण्यकी परिभाषाका दूसरा नाम शक्ति और दुर्बलता है। परिस्थितिओंके आगे किसीका चारा नहीं और सबको अुतने अूपर अुठता आता नहीं। कभी मनुष्यकी सारी चेष्टामें, सारे प्रयत्न नियतिकी चट्टानसे टकराकर चूर चूर हो जाते हैं। अुस बिचारेके हाथमें सिवाय निराशाके कुछ रहता नहीं—अुसकी अैसी स्थिति पर भला दुनियाँ न्यायाधीश होकर निर्णय दे सकती है? अपनी स्थितिसे स्वयं अुसे भिड़ना पडता है। निकट खडे हुअे दर्शकोंके लिये तो वह अेक मनोरंजनका विषय हो सकता है, अध्ययनका नहीं—अनुभवका नहीं। अेक तरफ दुनियाँकी चक्करमें वह पिसा जा रहा है दूसरी ओर अपने अपने संबंध निर्वाहका लेखा जोखा लिये लोग सामने खडे हैं, वह किधर देखें और किसका किसका भुगतान करे! यह है संसारके सेवकोंकी संख्या! कौन अिसपर अपना निर्णय देना चाहेगा। आजसे निर्णय देनेवाले अपनी कब्रतक पहुँचते कहाँ पहुचेंगे इसका विश्वास किसे है? कौन कह सकता है कि वैभवसे करने वालों की कब्रपर कोअी अेक आंसू गिरानेवाला तक न हो। वाल्मीकके प्रारम्भिक जीवनके आधारपर अुनके महान् और अतुल आदर्शकी कल्पना

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन कर सकता है ? और न विश्वामित्र की अखंड तपस्याके अन्दर किसीको आसक्तिके अुन काले कणों का आभास मिल सकता था। यह तो संसार है। गुण और अवगुण समान रूपसे प्रत्येक स्थानमें मौजूद हैं। यही तो अिसकी निगुणात्मिक-सत्ताका सर्टीफिकेट है। यहाँ वही सफल ह जो अपने अक संबंधको सुबहसे शाम तक निबाहे चला जाय। अुसके निर्वाहकी कसोटी जगत अुत्सर्ग और बलिदानके रूपमें देखना चाहता है जो अिसे हँस-हँसकर पार कर गया वही सच्चा खिलाड़ी है ! नहीं तो बड़े खिलाडियोंको सब कुछ दाँवपर लगाकरभी हाथ ही फैलाने पड़ते हैं। मेरे विचारसे तो अपना रास्ता अपने दूवाराही निश्चित किया जा सकता है। लेकिन यह होते अपने आचरणका मार्ग बन नहीं सकता कोअी अुसका नकशा भले ही तैय्यार करले पर नकशा तैयार होने ही से तो अिमारत नहीं बन जाती। अुतने से काम भी नहीं चलता....अुस मार्गके बीच पर्वत भी आवेंगे और सागर भी.....

मित्र और जगत दो वस्तुय हैं जिनके कि दृष्टिकोण अेक दूसरेसे भिन्न और विपरीत रहते हैं। जगत बुराओंका निर्णय करते समय अपनेको अूँचे आसनपर बिठाकर करता है। अुसमें कठोर व्यवहार बादका स्थान रहता है, सहानुभूति और महत्व नहीं, अैसे निर्णयमें पशुता अधिक होती है। लेकिन मित्र तो अपनेको मित्रकी स्थितिमें मिलाकर ही सब कुछ कहनेकी हिम्मत करता है। वह तो अपने व्यक्तित्वका मित्रमें पूर्ण सन्निवेश कर देता है। वह दया भी रखता है और सहानुभूति भी। किसका निर्णय श्रेष्ठ होता है। जगत अेक बुराअीसे ही अुसे नीच और अकर्मण्य कहने लग जाता है, और मित्र मित्रको अेक बुराअीमें गिरते देखकर भी भविष्यमें अुससे अच्छाअीकी आशा ही रखेगा। वह अुससे अन्त समय तक निराश नहीं होता।

जगतमें हृदयकी विशेषता और विशालता दूसरे दोषोंको कम और अपने दोषोंको पर्वत करके रखती है। पर अिसके विपरीत लोक भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनियाँमें कुछ कम नहीं होते जिनका कि स्वभाव–'जे परदोष लखहिं सह साखी, परहित घृत जिन्हके मनमाखी'। अेक मित्र हृदय तो कीचड़में पड़े हुअे अपने मित्रको स्नेह और करुणाकी दृष्टिसे ही देखेगा। मित्रता अभ्युदय, अुच्चता और महानताकी ही पुजारीन नहीं वरन पतन, लघुता अवं नीचताके प्रति भी वह सरल रहती है।

प्रेम अेक पूर्व निश्चित योजना नहीं है। वह तो अेक आकस्मिक आक्रमण है। यदि आज कोअी अुसके चुंगलमें नहीं फँसा तो अिसके यह अर्थ नहीं कि वह सदाके लिये ही प्रेमप्रूफ हो गया। फिर कभी कभी अुसका झपट्टा अैसे कसके और तंग रास्तेसे होता है कि अिधर-अुधर हाथ पैर हिलाने तककी गुंजायश नहीं रहती। लाचारीका नाम ही तो हार है। पर कोअी कोअीको पराजय भी तो बड़ी प्रिय होती है। शायद अिसका बंधन भी कुछ अैसा ही होता है। हाँ, अपनी अपनी रुचि और साधनाके अनुसार अुस बंधनको रंग चाहे कोअी दे ले—तभी तो रहस्यवादके कोनेसे भी आखिर निकल ही पड़ा:—

'आज वर दो मुक्ति आवे बन्धनोंकी कामना ले।'

वर्धा कार्यालयसे—

राष्ट्रभाषा–भवन

अभी तक प्रचार समितिका अपना भवन नहीं था। गत वर्ष लगभग ५ अेकड़ जमीन खरीदकर भवन-निर्माणका कार्य प्रारंभ किया गया। अभीतक पूरा मकान नहीं बन पाया है, पर छ कमरे बनकर तैयार हो गये हैं। विजया दशमीके शुभ अवसरपर समिति-कार्यालयके कुछ विभाग अपने नवनिर्मित भवनमें चले गये हैं। अिस शुभ मुहूर्तका कार्यसंपादन कॉमर्स कॉलेजके वाअिस प्रिन्सिपल श्री अधोलियाजीने किया। राष्ट्रभाषाका महत्व और अुनके स्वरूपपर कार्यकर्त्ताओंके बीच आपने अेक सुन्दर भाषण भी दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी नियमावली :

अिधर कुछ समयसे हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी नियमावलीमें परिवर्तनोंकी आवश्यकताकी काफी चर्चा रही। अुदयपुर अधिवेशनने अिस सार्वजनीन आवश्यकताका विचार कर आगामी अधिवेशनसे पूर्व स्थायी समितिको अपेक्षित परिवर्तन स्वीकार कर लेनेका अधिकार दिया। अेक कमिटी बनाअी गअी जिसका काम स्थायी समितिको नियमावलीमें परिवर्तन सुझाना था। कमिटीने अपनी रिपोर्ट पेश करनेमें काफी समय लिया। कार्यकी गुरुता भी अिसका अेक कारण था ही। कमिटीने सुझाये हुअे परिवर्तनों पर स्थायी-समितिकी दो-तीन बैठकोंमें विचार हुआ। प्रत्येक बैठक लगातार दो-दो तीन-तीन दिन जारी रही। बड़ी ही खींचा-तानीके बाद संशोधित नियमावली अपने अन्तिम स्वरूपमें स्वीकृत हुअी।

अिस बारकी नियमावलीमें पिछली नियमावलीसे जो बड़ा अन्तर है, वह यह है कि अिस नियमावलीसे सम्मेलनसे सम्बद्ध अपने प्रान्तीय सम्मेलनोंके लिये जितना हो सके अुतना अधिक शक्तिशाली बनानेका रास्ता खोल दिया है। साधारण सदस्य जो २) देकर सम्मेलनके सदस्य बन जा सकते थे, अब भविष्यमें न बनेंगे। सम्मेलनकी अिच्छा है कि देश भरमें फैली हिन्दी-संस्थायें अपने अपने सदस्य बनायें। सम्मेलन अुन सदस्योंको ही अपने सदस्य मानकर संतोष करेगा।

अिसी प्रकार अभी तक जो जो संस्थाअें सम्मेलनसे अपना सीधा सबंध स्थापित कर लेती थीं, अुन्हें अब अपना संबंध प्रान्तीय सम्मेलनोंसेही स्थापित करना होगा। जिस प्रान्तोंमें प्रान्तीय सम्मेलन न होगा अथवा जो प्रान्तीय सम्मेलन अपने प्रान्तकी संस्थाओंका प्रतिनिधित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेकी जिम्मेदारी न ले सकेगा, केवल अैसे प्रान्तोंकी संस्था–विशेष ही अपवाद स्वरूप सम्मेलनसे सीधा संबंध स्थापित कर सकेगी।

हमें विशेष ध्यान अुन परिवर्तनों पर देना ही है जिनका प्रभाव हमारी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और अहिन्दी प्रान्तोंमें राष्ट्रभाषा प्रचारके कार्यपर पड़नेवाला है। नियमावलीको साधारण दृष्टिसे देखनेसे भी यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्मेलनने अपनी अिस नियमावली द्वारा (१) राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको अहिन्दी भाषी प्रान्तोंकी प्रतिनिधि संस्था बनानेकी ओर अेक बड़ा कदम अुठाया है। (२) अैसी व्यवस्था करनेका प्रयत्न किया है कि, अहिन्दी भाषा-भाषी सम्मेलनमें और अुसकी स्थाअी समितिमें पहलेकी अपेक्षा अधिक भाग ले सकें।

[क] अभी तक रा. भा. प्र. समितिके सदस्योंकी संख्या २१ रहती रही है; अब अुसे अधिक व्यापक बनानेके लिअे सदस्योंकी संख्या बढ़ा कर २१ से ३५ कर दी गयी है। सात सदस्य तो पूर्ववत् 'पदेन' होंगे। पहले 'पदेन' सदस्योंकी संख्या छः थी; अब अुनमेंसे अेक सदस्य (राष्ट्रभाषा प्रचार मंत्री)हटकर दो सदस्य (कार्य वाहक अुप-सभापति और परीक्षा मंत्री) और बढ़ गये हैं। शेष २८ सदस्योंमेंसे स्थायी-समिति केवल ९ सदस्य चुनेगी। बाकी १९ सदस्य–अहिन्दी प्रान्तोंमें संगठित प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितियोंके ही प्रतिनिधि होंगे जिनकी संख्या प्रत्येक प्रान्तमें अिस प्रकार होगी :–

(१) असम	दो	सदस्य
(२) बंगाल	,,	,,
(३) सिन्ध-बलूचिस्तान	,,	,,
(४) बम्बअी	,,	,,
(५) गुजरात	तीन	,,
(६) महाराष्ट्र	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) अुत्कल	दो	सदस्य
(८) विदर्भ-नागपूर	,,	,,
(९) हैदराबाद	अेक	,,

यह ३५ आदमियोंकी समिति अपने सदस्योंमेंसे स्वयं अपना मंत्री चुनेगी।

[ख] स्थायी-समितिमें भी राष्ट्रभाषा प्रचार संस्थाओंको पहलीकी अपेक्षा अधिक प्रतिनिधित्व दिया गया है। अब बंगाल–१, असम–१, अुत्कल–१, विदर्भ-नागपुर–१, बम्बअी–१, सिन्ध–१, किन्तु गुजरात और महाराष्ट्र दो-दो प्रतिनिधि भेज सकेंगे। सम्मेलनने हिन्दी प्रान्तोंका स्थायी-समितिमें जो प्रतिनिधित्व रहता था अुसको बहुत अधिक कसा है, अितना अधिक कि अनेक लोगोंकी शिकायत भी हो सकती है; तो भी सम्मेलन अहिन्दी प्रान्तोंकी ओर अुदार रहा है।

[ग] राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सदस्य मात्र सम्मेलनके सभापतियोंके चुनावमें हिस्सा लेंगे।

[घ] प्रान्तीय रा. भा. प्रचार समितियोंको सम्मेलनके अधिवेशनमें अपनी अपनी समितिकी ओरसे निम्नलिखित संख्यामें प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार रहेगा––

असम–३, बंगाल–३, अुड़ीसा–२, विदर्भ-नागपुर–३, बंबअी–३, गुजरात–६, महाराष्ट्र–६,

हमें आशा है कि अहिन्दी-भाषा-भाषी प्रान्त हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी अिस नअी नियमावलीका अुत्साहसे स्वागत करेंगे और अुससे पूरा पूरा लाभ अुठायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

अीशु ख्रिस्त : ले. किशोरलाल घनश्यामलाल मशरूवाला, अनु. काशीनाथ त्रिवेदी, प्रकाशक: नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; पृष्ट ११०, कीमत १४ आने।

प्रस्तुत पुस्तकमें महात्मा अीसाका जीवन-चरित्र प्रवचन रूपक, और सुभावित बहुत ही सुंदर ढंगसे दिया गया है। अब तक हम अीसाअी मिशनरियोंद्वारा प्रकाशित पुस्तकोंसे अीसा और अुनके धर्मका जो ज्ञान प्राप्त करते थे वह अेक खास शैली और रूढ़ीगत आवरणोंके कारण यथार्थ तक नहीं पहुँच पाता था। आशा है हिन्दी पाठक लेखकके अिस प्रयत्नका योग्य आदर करेंगे।

हलाहल : ले० बच्चन प्रकाशक भारती भंडार लीडर प्रेस, अिलाहाबाद, मूल्य २॥ रुपये।

अिस पुस्तककी कुछ रचनायें 'सरस्वती' में १९३५ अी. में छपी थीं। वास्तवमें बच्चनका कवि-हृदय अिस संग्रहमें अपने यथार्थ रूपमें दिखाअी पड़ता है। भाव और भाषा दोनों की दृष्टिसे यह संग्रह अुत्तम है। आशा है कविता-प्रेमी अिस संग्रहसे काफी आनन्द अुठावेंगे।

अुदय: (मासिक) प्रकाशक ! न्यूज पब्लिकेशन लिमिटेड नया कटरा दिल्ली। वार्षिक मूल्य सात रुपये (पुस्तकालयोंके लिये पांच रुपये) अेक प्रतिका बारह आने।

अिस वर्तमान व्यवसायिक और अुद्योगिक युगमें हिन्दी भाषामें अिस विषयकी मासिक पत्रिका प्रकाशित करके प्रकाशकने हिन्दीकी अेक बहुत बड़ी कमी पूरी की है। अिसमें मुख्यत: व्यापार, वाणिज्य और अुद्योग संबन्धी लेखोंका सुन्दर चयन रहता है। आशा है हिन्दी भाषा भाषी जनता विशेष रूपसे व्यापारी वर्ग हमारे नये सहयोगीको अपनायेंगे।

सु. वा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रान्तोंकी हलचलें

गुजरात :

(१) श्री जेठालालजी जोशी मंत्रीने, जामनगर राजकोट, द्वारका, कोसिन्द्रा, छोटा अुदेपुर, सूरत केन्द्रोंमें प्रचारार्थ दौरा किया।

जामनगर राजके विद्याधिकारी साहबसे राज्यमें हिन्दीको स्थान दिलानेकी दृष्टिसे मिले। विचार-विनिमय हुआ और आशा है कि राज्यमें राष्ट्रभाषाको योग्य सुविधा दी जायगी।

प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव : अहमदाबाद :—

अहमदाबाद आओ. पी मीशन हाअीस्कूलमें श्री ब्राअुन साहबकी अध्यक्षतामें ता. १२-९-४६ को प्रमाणपत्र वितरणोत्सव हुआ।

कोसिन्द्रा—केन्द्रमें पूज्य बापूजीकी जयन्ति श्री जेठालाल जोशीकी अध्यक्षतामें मनाअी गयी। मंत्रीने सबेरे राष्ट्रध्वज-वंदन विधि संपादन की तथा रातको अेक बृहत सभामें "पूज्य बापूके जीवन-कार्य और विश्वको अुनकी अपूर्व देन" पर व्याख्यान हुआ।

प्रचारकोंकी अेक सभामें राष्ट्रभाषाके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया।

सूरत राष्ट्रभाषा प्रचार सप्ताह—शहरभरमें सप्ताहभर सभाअें रखी गअी। वाग्बोधिनी सभा तथा राष्ट्रगीत सम्मेलन योजा गया। वाग्वर्धिनी सभाके अध्यक्ष डाक्टर साहब चंपकलालजी और राष्ट्रगीत सम्मेलनके अध्यक्ष पं. ओंकारनाथजी थे। अिन अवसरोंपर कतिपय विद्वानोंको आमन्त्रित किया गया था।

रा. भा. प्र. समितिकी परीक्षाओंके अवसरपर कौमी दंगेकी लहर अेकाअेक पैदा होनेसे परीक्षार्थियोंको घर पहुँचानेमें जिन सज्जनोंने मददकी है अुनके हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

विदर्भ-नागपूर—

प्रान्तके ३५ केन्द्रोंमे रा. भा. प्र. समितिकी परीक्षाअें हुअी। १५२० परीक्षार्थी प्रविष्ट हुअें।

बम्बअी—

साम्प्रदायिक—झगड़ोंके कारण बम्बअी केन्द्रमें १५-१६ सितम्बरको परीक्षाअें न होकर २८-२९ सितम्बरको हुअी। मंत्री श्री कान्तीलाल जोशी तथा हमारे अनेक राष्ट्रभाषा प्रेमी सज्जनोंको काफी दिक्कतोंका सामना करना पड़ा। अिसके लिअे हम अुनके कृतज्ञ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा-फल :

सितम्बर' ४६में राष्ट्रभाषाकी जो विभिन्न परीक्षाऐं हुअी हैं अुनका परीक्षा-फल ता० ५ नवम्बरको प्रकाशित होगा।

आगामी प्रचार परीक्षाऐं :

आगामी प्रचार परीक्षाऐं फरवरी' ४७के पहले सप्ताहमें होगी। निश्चित तारीख शीघ्र प्रकाशित की जायगी।

विभिन्न आवेदन पत्रोंको वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिसप्रकार हैं :—

सीधे बैठनेके लिअे प्रार्थना-पत्र २० नवम्बर ४६
शुल्क माफी " " २० " ४६
सशुल्क परीक्षा आवेदन-पत्र १५ दिसम्बर ४६

प्राप्तांक प्राप्त करना :

जो अुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने अलग अलग प्रश्नपत्रोंके प्राप्तांक मँगाना चाहेंगे अुन्हें चार आना शुल्क भेजना होगा। शुल्कके साथ परीक्षाका नाम तथा अपनी क्रम संख्या अवश्य लिखना चाहिये। अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंसे शुल्क नहीं लिया जावेगा।

पुनर्निरीक्षण—

जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण करवाना चाहें अुनको २५ नवम्बर तक प्रत्येक अुत्तर पुस्तकके लिये आठ आना निरीक्षण-शुल्क भेजते हुअे अपना पूरा नाम, क्रम संख्या और परीक्षा तथा प्रश्नपत्र संख्या देकर प्रार्थना पत्र भेजना चाहिये। दुबारा जाँचका नियम अब अुठा दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजहबी पागलपनकी बलिवेदी पर

कलकत्तेसे श्री. रेवतीरंजनजीने निम्नलिखित दुःखद समाचार दिया है—

"गत १६ अगस्तको कलकत्तेमें जो "सीधी कार्रवाअी" आरम्भ हुअी उसने हमारे दक्षिण कलकत्तेके राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री. शिवविलास सिन्हाजीकी बलि ले ली। आप कलकत्ता विश्वविद्यालयमें फ्रेंच तथा जर्मन भाषा सीख रहे थे और साथ साथ अत्यन्त संलग्नताके साथ राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य्य कर रहे थे। वे कवि थे, कहानी लेखक थे। जिनसे भी वह अेक बार परिचित हुअे, वह अुन्हें कभी नहीं भूल सका।"

श्री. सिन्हाकी अकाल मृत्यु समस्त 'राष्ट्रभाषा' परिवारके लिये अत्यन्त कष्टदायिनी घटना है। अुनके अपने परिवारके दुःखसे हम अति दुखी हैं। क्या कह कर सांत्वना दें?

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

नाम	प्रचारकक्रमांक	केन्द्र
श्री. शिवप्रसाद बापालाल भट्ट	८४९	भरूच
,, सुधाकर गणेश पारखी	८४६	नासिक
,, वेंकट कृष्णय्या	८४७	पुणे
,, पंढरीनाथ नरहर पाठक	८४८	जुन्नर

हमारे नये केन्द्र

नाम केन्द्र	क्रमांक-केंद्र
बहादरपूर	८६५
रनाला	८६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिके तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

महात्मा गांधी क्या कहते हैं:—

"जितनाही मैं पुस्तकोंका अध्ययन करता गया अुतनीही मुझे अुनकी विशेषताअें मालूम होती गअीं।

मौलाना आज़ादः— [लेखक—महादेव देसाअी]

भूमिका लेखक—महात्मा गांधी

भूतपूर्व राष्ट्रपतिके जीवन चरित्रात्मक संस्मरणः—

मूल्य २॥) डाक खर्च ।=

राजनीतिशास्त्रः— ले. प्राणनाथ विद्यालंकार

राजनीतिशास्त्रपर प्रमाणित ग्रंथ। मूल्य ३) डाक खर्च ॥=

हिन्दी-शब्द संग्रहः— स. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव

फिरसे नया स्टॉक आ पहुँचा है।

अनंतके पथपरः— ले. हरिकृष्ण प्रेमी]

प्रेमीजीकी कविताओंका अेक अुत्तम संग्रह

मूल्य २) डाक खर्च ।=

अुर्दू साहित्यका अितिहासः— ले. व्रजरत्नदास

बहुत दिनोंके बाद नया स्टॉक आ पहुँचा है।

मूल्य २॥) डाक खर्च ।=

भारतीय बैंकिङ्गः— ले. द्वारकालाल गुप्त

भारतीय बैंकिङ्गपर प्रमाणित ग्रंथ मूल्य २॥) डाक खर्च ।=

सरलनागरिकशास्त्र ले. भगवानदासकेला

"नागरिकता नवयुगका नया सन्देश है अिसमें नागरिकशास्त्र पर सम्यक विवेचन है। मूल्य ४) डाक खर्च ॥=

प्रबन्ध सम्पादक—**हृषीकेश शर्मा**, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा।
मुद्रक—गोविंद भास्कर जोशी, भास्कर छापखाना (राठी मार्केट) वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५

सितम्बर

अंक ११

राष्ट्रभाषा

जवाहरकी आवाज :—

"आजादीका दरवाजा खुल गया है, हमारी किस्मत हमें बुला है। आज दिन हमारे देशवासियोंके चेहरेपर फिरसे जवानीकी कूवत क रही है। हिन्दुस्तान तेजीके साथ आगे बढ रहा है।"

"यह किसी अेक पार्टीकी जीत या हार नहीं है। जीतेंगे तो सभी ी और हारेंगे तो सभी हारेंगे। लेकिन अब तो हारनेका सवाल ही नहीं है। कामयाबीकी ओर बढते ही जायेंगे। हमारे मुल्ककी चालीस करोड़ ाकी मुकम्मिल आजादी ही हमारे सामने है।"

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. स्वागत है (प्रो० रञ्जन)
२. लेखनी ले-(श्री भरतव्यास) २८५
३. हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य की समस्या (भदन्त आनन्द कौसल्यायन) २८६
४. श्री महादेवभाई देसाई (श्री ग. वि. भट) २८७
५. हिन्दी राष्ट्रभाषा है पर हमारा कर्तव्य क्या हो ? (सम्पूर्णानन्द) २९१
६. प्रधान मन्त्री की ओरसे (भदन्त आनन्द कौसल्यायन) २९२
७. सिन्ध-प्रान्तमें हिन्दीकी क्या स्थिति है
(मन्त्री सिन्ध प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन) २९७
८. भाषाके भक्त (नन्दचतुर्वेदी) ३००
९. हमारी नजरोंमें ३०१
१०. यह हृदयविदारक समाचार (श्री रञ्जन) ३०४
११. परीक्षा-विभाग..... ... ३०५
१२. हमारे नये प्रमाणित प्रचारक ३०८
१३. हमारे नये केन्द्र ३०८
१४. हमारे प्रान्तो की हलचलें ३०९
१५. आवश्यक सूचना ३११

नोट कर लें

१. ग्राहकोंको पत्र लिखते समय अपनी 'ग्राहक-संख्या' अवश्य लिखनी चाहिये, वरना पत्रोंके जवाब देनेमें आवश्यक विलम्ब होता है।

२. प्रचारकोंको चाहिये कि 'राष्ट्रभाषा' संबन्धी पत्र लिखनेपर अपनी संख्या लिखें।

३. राष्ट्रभाषाके लिये जो लेख भेजा जाय वह साफ अक्षरोंमें चौथाई हाशिया छोड़कर लिखी हो।

४. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य दो रुपये और नमूनेके अंकका तीन आने है। वी. पी. भेजनेका नियम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

सहकारी सम्पादक
श्री शुकदेव नारायण

वर्ष ५] वर्धा, सितम्बर—१९४६ [अंक ११

स्वागत है

राष्ट्रीय आकांक्षा और जनमतके प्रतीक, मध्यकालीन राष्ट्रीय-सरकारके कर्णधार; राष्ट्र गौरवके अिस पुण्य पर्वपर हम भारतके नर-नारी आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। अैसे समय पर जब भारतीय भाग्याकाश में काले बादल मंडरा रहे हैं, आप तथा आपके सहयोगियोंने जन-हितके अिस महान् अुत्तरदायित्वको अपने कंधोंपर लेकर देशका बड़ा हित किया है। हम जानते हैं आपने अिस जिम्मेवारीको लेकर काटोंका ताज पहिना है। आपके रास्ते में भी काटें बिछे हैं, फूल नहीं। पर आपके प्रत्येक कार्य और निश्चयके पीछे अिस देशकी आवाज है, जनताका बल है।

भारतीय स्वाधीनताकी अुज्वल रेखायें अंकित करनेमें आपकी यह अस्थाअी सरकार सफल हो, आजादीके मतवालोंका वह मार्ग प्रशस्त कर सके। अैसी प्रार्थना हम सभी हिन्दुस्तानियोंकी है।

ग़रीबी, अभाव, और निरादरकी कालिमा से अच्छादित देशाकाश अेकबार पुनः गौरव, आजादी और आत्मविश्वासकी प्रकाश-किरणोंसे जगमगा अुठे। और तब शत् शत भारतीय कंठोंका जयघोष विश्वके कोने कोने में पहुँचकर हमारी खोयी हुअी शक्ति, अर्थ और मानको फिर प्राप्त करे।

राष्ट्रीय काँग्रेसके अिस निश्चयको व्यवहारमें लाकर आप सबने चालीस करोड़ जनताके गौरवकी रक्षा की है। अुसका त्राण किया है। अैसे पुनीत और अैतिहासिक अवसर पर जहाँ हमारा मन अेक ओर आपके प्रति कृतज्ञताके भावसे भर जाता है, वहीं दूसरी ओर देशके अुन हजारो लालोंके प्रति श्रद्धाकी अेक लहर अुठकर मनको गद् गद् कर देती है। क्योंकि आज जिस स्वाधीनताके भवनकी हम नींव डाल रहे हैं अुस नींवमें अुन्होंने अपनी हड्डियोंको रखा है।

हम सब हिन्दुस्तानी आपके 'मंत्री मंडल'का केन्द्रमें हार्दिक स्वागत करते हैं।

प्रो. रंजन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखनी ले—

: श्री भरत व्यास :

ओ सुकोमल लेखनी मेरी,रुको मत, गति बढाओ
आजतक जो कुछ लिखा वह भूमिका थी-
गीत तो मेरे अभी प्रारम्भ होंगे
और अब ही से पुजारिन थक चली तुम !
आज मुझको बंदिनी माँका निमंत्रण
आज मुझको राष्ट्रके रण का निमंत्रण
आज मुझको धुली कण–कण का निमंत्रण
आज हे पगली कहाँ विश्राम का क्षण !
आज तो कर्तव्य का मुझको निमंत्रण !

लो सुहागिन शीघ्र अब आलस्य तोड़ो
और यह चिरकाल का मसिपात्र फोड़ो
आज तो अिन आँसुओंमें डूबकर साखि
आज मेरे रक्त से लिखती चलो तुम
आज तुम विस्फोट सी फटती चलोगी
आज तुम चट्टान ली अड़ती चलोगी
आज तुम अन्यायियों की जड़ हिलाती
कम्प सी–भूकम्पसी हिलती चलोगी
आज तुम शिव–सर्पिणी बन रक्त निगलोगी
धधकती सुलगती ज्वाला मुखी बन आग अगलोगी

युगोंके बंधनों, को भस्म करती, क्षार करती
यदि स्वयं भी भस्म हो जाओ नहीं कुछ है असम्भव !
और अबही से पुजारिन थक चली तुम
आज भावों के धुअें–सी स्वास अंतिम छोड़नी है !
आज कागज़ के शरों से–भित्तिकाअें फोड़नी है
लेखनी मेरी शुकी निष्प्राण पिन्जरेमें घिरी तुम
आज तो तव चंचुसे मुझ को शलाका तोड़नी है !
आज मेरी लेखनी तुम रुको मत, गति ही बढाओं !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य की समस्या :—

हम जड़ें न सींच कर पत्ते सींचते हैं

: भदन्त आनन्द कौसल्यायन :

आज दो सितम्बर है। १९४६ है। भारतके अतिहासमें अेक असाधारण दिन। असाधाण जैसा असाधारण नहीं, बहुतही असाधारण। आजके दिन हमारी राष्ट्रीय महासभा ने सबकुछ सोच-समझकर, सब आगा पीछा देखकर ब्रिटिश-सिंहके मुँह में हाथ डाला है। आशा तो है और हमें करनी ही चाहिये कि हमारे जवाहरके हाथ ब्रिटिश-नाहरके दाँत तोड़ने में सफल हो जायंगे, फ़िर भी अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

हमें अेक ओर जहाँ ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी चालबाजियों और दगा-फरेबोंसे लोहा लेना है, वहाँ अुससे भी बड़ा काम है अपने घरकी सुध-बुध लेना।

गरीबी सहना आसान है अमीरी सहना कठिन। सैकड़ों वर्षकी गुलामीके बाद जब हमें स्वतन्त्रताकी हवा अभी जहाँ तहाँ छू ही पाअी है, हमें जागरूक रहना चाहिये कि हम स्वतन्त्रता और अुच्छृङ्खलताके भेदको न भूल जायें। हम स्वतन्त्रताकी ओर बढ़ें किन्तु हमारा आत्म-संयम हमें अुच्छृङ्खल होनेसे बचाये।

हमें अिस मध्यकालीन-सरकारके निर्माणके दिन खुशीके मारे अुछलने कूदनेकी कोअी जरूरत नहीं, लेकिन तब भी यह समाचार कितना बुरा है कि मुस्लिम-लीगके मन्त्री श्री. लियाकतअली खाँ ने मुसलमानोंसे अपील की है कि वह काले झण्डे दिखाकर २ सितम्बर को अपना विरोध प्रदर्शित करें।

यथार्थ-वादके नाम पर हम न जाने पिछले कितने वर्षोंसे भारतीय राष्ट्रीयताकी जड़ोंको सींचनेकी ओरसे अुदासीन रहकर पत्ते ही सींचते रहे हैं, अब तो हम भारतीय राष्ट्रीयताकी जड़ोंमें भी पानी डालना सीखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे शासकोंने हमें जो अितिहास पढाया—अुसमें हर जगह हिन्दु मुसलमान की लड़ाअीकी बात। हमारे देशमें जितनी संस्थायें खड़ी हैं, अुनमें हर जगह हिन्दु-मुसलमानके झण्डे। यह सब कुछ हमारे शासकोंके हितमें है। लेकिन गजब यह है और रोना अिस बात का है कि हमारा सारा चिन्तन आज हिन्दु-मुसलमान भय बनगया है। अपने शासकों की अपेक्षा अिस की अधिक जिम्मेवारी हमारे अपने अूपर ही है।

अिधर कलकत्तेकी दुर्घटनासे बुरी तरह आहत होकर अपने देशकी हिन्दु-मुस्लीम समस्या पर हम जितना ही सोचते हैं तो अन्दर से अेक ही आवाज आती है कि यह हिन्दु-मुसलमानोंको लड़ानेवाले और "हिन्दु" "मुसलमानों" की अेकता करानेवाले--दोनों ही समान रूप से सारी बुराअी की जड़ हैं। दोनों ही हमें हिन्दु-मुस्लिम चिन्तामय बनाते हैं। दोनों से ही हमें हैज़े और प्लेगके कीड़ोंकी तरह बचना चाहिये।

हमें अिस देशके भाग्यमें दो में से अेक चीज अवश्यम्भावी दिखाअी देती है—या तो यह "हिन्दुस्थान" और "पाकिस्तान" में बँटकर रहेगा या यह 'हिन्दु' 'मुसलमान' चिन्तन ही अेकदम मिटकर रहेगा।

हम में से लगभग सभी लोग जाने अनजाने पहली दिशाकी ओर ही लुढकते चले जारहे हैं। सौभाग्य यह है कि समाजका स्वाभाविक विकास हमें दूसरी ओर ले जा रहा है। तो भी हमें जानबूझकर प्रयत्न-पूर्वक दूसरी ही ओर बढ़नेकी आवश्यकता है। अिसीमें अिस देशका शाश्वत कल्याण है।

सब से पहला काम हमें यही करना चाहिये कि जैसे हम "हिन्दु" "मुसलमानों" को लड़ानेवालों से दूर दूर रहना चाहते हैं, अुसी प्रकार हमें "हिन्दु"-मुसलमानों" की "अेकता" का प्रचार करनेवाले अिन महात्माओं से भी बचना चाहिये। दोनों ही अेक ही अपराधके अपराधी हैं। पहले यदि दुष्ट हैं तो दूसरे अल्पज्ञ। क्या देशमें कुछ आदमी भी अैसे नहीं हैं कि जो अपने जीवनमें हिन्दु मुसलमानकी भाषामें सोचने से अेकदम अिनकार कर दें। यदि हैं तो अैसे ही थोड़े से लोग भावी-हिन्दके निर्माता हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी राष्ट्रीय महासभा और मुस्लिम-लीग में जो अिस समय झगड़े का बड़ा कारण है, वह यही है न कि राष्ट्रीय महासभा कहती है कि क्योंकि हम "राष्ट्रीय" हैं अिस लिये हम हिन्दु और मुसलमानों दोनोंका प्रतिनिधित्व करेंगे और मुस्लिम लीग कहती है कि मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व करनेका अेकाधिकार केवल मुस्लिम-लीगका ही होना चाहिये। काँग्रेस ५ हिन्दू + १ मुसलमान रखना चाहती है और मुस्लिम लीगको ५ मुसलमान देनेको तैयार है। साम्प्रदायिक दृष्टिसे परिणाम क्या होता है ? ५ हिन्दू और छः मुसलमान होतेजाते हैं। अछूतों के भी अेक प्रतिनिधिको हिन्दुओंमें गिन लें तो छः हिन्दू और छः मुसलमान हो गये। अब हिन्दु सभाअियोंकी दृष्टिसे यदि पूछें तो क्या हिन्दुस्थानमें हिन्दु मुसलमानों की जन-संख्या बराबर है ? यदि नहीं तो यह कहाँ का बटवारा है कि वायसराय की नअी-सरकार में हिन्दुओं और मुसलमानोंकी संख्या बराबर हो। लेकिन यदि हम राष्ट्रीय दृष्टिसे देखें तो भी यह कहाँकी राष्ट्रीयता है कि हम किसी भी आदमीको अुसके 'हिन्दु' या 'मुसलमान' होनेके कारण काँग्रेस की ओरसे सरकार में लेनेका आग्रह करें।

हमें दुःख के साथ अिस सत्यको स्वीकार करना पड़ता है कि सच्ची "राष्ट्रीयता" अिस देश में है ही नहीं। कहीं है तो चिराग लेकर ढूंढनेपर भी आसानी से नहीं मिलती।

हमारे जीवनका कौनसा पहलू है जिसमें हमारे बडेसे बड़े आदमी आज हिन्दु-मुसलमानकी भाषामें सोचनेपर मजबूर नहीं होते। यदि आप अिन्कार करते हैं तो आप स्वप्न-लोकमें विचरनेवाले समझे जाते हैं, और वे अपनेको समझते हैं यथार्थ-वादी !!!

हमें अिस कीमत पर भी 'हिन्दु' 'मुसलमान' की शब्दावलीमें सोचनेसे अिनकार करना होगा, बार बार अिनकार करना होगा, जान-बूझकर अिनकार होगा — अपने स्वभाव बदल जाने तक अिनकार करते रहना होगा।

लोग 'हिन्दु' 'मुसलमानों' में अन्याय करने वालेकी अपेक्षा 'हिन्दु'-'मुसलमान' में 'न्याय' करने वालेको अच्छा समझते हैं। हमें दोनों को ही बुरा समझना सीखना होगा। भावी भारत अुसी मानवको मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझेगा जो अमनी छाती पर हाथ रख कर कह सकेगा कि वह अपने जांवनके किसी पहलू में भी 'हिंन्दु' 'मुस्लिम, का ख्याल नहीं करता है।

अुदाहरण जीवनके किसी भी पहलूसे ही लिये जा सकते हैं। मैं आजके अिस हिन्दी-अुर्दु-हिन्दुस्थानी आन्दोलनकी ही बात क्यों न कह दूं! पंजाबमें पिछले वर्षोंके हिंदी प्रचारके बावजूद भी अुर्दु-ज्ञाताओंकी ही संख्या अधिक है और वह भी हिन्दुओंमें। और अिधर वर्धामें मुस्लिम लीगके नोटिस-बोर्डपर भी नागरी ही लिखी दिखाअी देती है। तब भी तो साम्प्रदायिक-स्वार्थियोंने अेक ओर हिन्दी हिन्दुओंकी और अुर्दु मुसल्मानोंकी, का प्रचार किया ही है लेकिन अुससे भी बढ़कर भाषाकी अेकताके नये पैगम्बरोंने, 'हिन्दी' 'अुर्दु' को मिला-कर 'हिन्दुस्तानी' बनानेवालोंने 'हिन्दी' हिन्दुओंकी और 'अुर्दु' मुसल्मानोंकीका प्रचार करना आरम्भ किया है। ये दोनों ही सम्प्रदाय-वादी हैं—अेक अपनेको स्वीकार करते हैं, अेक स्वीकार नहीं करते।

यदि हमको कोअी बीमारी हो तो हम बिना यह चिन्ता किये कि औषध देनेवालेका मज़हब क्या है अुसकी बताअी हुअी या दी हुअी औषध ले लेते हैं। यही बात हमें जीवनके हर पहलूमें करनी चाहिये, करके देखनी चाहिये।

अनाथालयोंके लिये हिन्दु लड़कों और यतीम-खानोंके लिये जब मुसल्मान लड़कोंको रेलमें चन्दा मांगते देखता हूं तो सोचता हूं कि हम किस मुंहसे अपने अेक राष्ट्रीय जीवनकी बात करते हैं जब अेक मुहल्लेके अेक नगरके दो अनाथ बच्चे भी अेक अनाथालय या यतीम-खानेमें परवरिश नहीं पा सकते!

कोअी अविश्वासी अश्रद्धालु पूछता है आप अैसी संस्थाओंको 'यतीम-खाने' कहेंगे वा 'अनाथालय'! मेरा अुत्तर है पंजाबमें आर्यसमाज तकके 'यतीम-खाने' हैं और महाराष्ट्रमें 'अनाथ विद्यार्थी-गृहों' की कमी न होनी चाहिये।

हम अपनी भाषाको अपने मज़हबसे अेकदम पृथक रखेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महादेव भाअी देसाअी

: ले. ग. वि. भट एम. ए. बी. टी. :
राष्ट्रभाषा कोविद

श्री. महादेवजीका जन्म सूरत जिलेके बीसा गाँवमें सन १८८९ हुआ था। आपके पिता हरिभाअी देसाअी अुच्च ब्राह्मण कुलके थे। आपका परिवार संपन्न तथा सुशिक्षित था। १९१० में महादेव भाअीनें दर्शनशास्त्र लेकर एम. ए. किया। और अहमदाबादमें वकालत करने लगे।

गांधीके व्यक्तित्वनें अुन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। अुन्होंने गांधीजीको समझा अुनके आदर्शोंका अध्ययन किया और अुसके साथ रहकर शेष जीवन बितानेका निश्चय किया।

गांधीजीनें अुनको अपना 'प्रायवेट सेक्रेटरी' बना लिया। यह काम अुन्होंने कुशलतासे जीवनपर्यंत किया। कहना न होगा कि बापू अुनको अपना पुत्र ही समझते थ।

महादेव भाअी की मृत्युपर श्री. राजगोपालाचारीने ठीक ही कहाथा कि महादेव भाअी की मृत्युसे 'बापू' अनाथ हो गये।

महादेवभाअी अेक अुच्च कोटिके पत्रकार थे। वे सार्वजनिक कार्यके प्रति दायित्वको समझते थे। बारडोलीका अितिहास आजादीकी जीवनी आदि अुनकी प्रसिद्ध रचनाअें हैं।

वे बापुजीके पक्के अनुयायी थे फिर भी वे स्वतंत्र विचारके थ। अुनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। अुनकी वाणीमें वैसा ही बल था।

आज जब हम स्वराज्यके द्वारपर पहुँच रहे हैं। अपनी कुर्बानियोंका फल पाने जा रहे हैं, अिस समय महादेव भाअीका स्मरण हो आना स्वभाविक है। चार वर्ष बीत गये हम अुनको मनही मनसे श्रद्धांजली दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी राष्ट्रभाषा है पर—
हमारा कर्तव्य क्या हो ?

: सम्पूर्णा नन्द :

हिन्दीके साहित्य-गगनके नक्षत्र विश्व-साहित्य–ज्योतिपुञ्जोंमें परिगणित होते हैं । संस्कृतको छोडकर आज भी किसी भी भारतीय भाषाका वाङ्मय विस्तार या भौतिकतामें हिन्दीके आगे नहीं जाता, अिसका अेकमात्र कारण यह है कि शासक चाहे जो हो और अुसकी नीति चाहे जैसी हो, हिन्दी भारतीय जनताके अेक बहुत बडे भागकी अपनी भाषा है । हिन्दी लेखकोंकी प्रतिभाको भारतीय संस्कृतिकी आत्मा निरन्तर स्फूर्ति देती रही है, अुनकी कृतियोंमें करोड़ों भारतीओंकी आशाओं, आकांक्षाओं, अिच्छा-विधानोंकी अभिव्यक्ति मिलती है ।.....

मैं यह नहीं समझ पाता कि कोअी भी व्यक्ति जिसको भारतीय संस्कृतिसे प्रेम होगा, अिस भाषाको कैसे अंगीकार न करेगा । बंगला, गुजराती, पश्तो या तामिल भी अंशतः भारतीयताको अभिव्यञ्जित करती हैं, परन्तु ऐतिहासिक कारणोंने हिंदीको ही भारतकी सार्वदेशिक भाषा होनेका गौरव प्रदान किया है । पटनासे लेकर दिल्लीतक, हरिद्वारसे अुज्जैनी तकके प्रदेशमें रामायण कालसे लेकर मुगल साम्राज्यके सूर्यास्त तक भारतीय संस्कृतिका विकास हुआ । यहीं बड़े बड़े चक्रवर्ती राज्यों और साम्राज्योंका अुदय हुआ । देशके कोनेसे खींचकर प्रतिभा शाली व्यक्ति यहाँ आये, यहाँसे विद्वान और शासक सारे देशमें फैले, अिसी लिये यहाँकी भाषा स्वतः राष्ट्रभाषा बन गयी ।

हम अिस भाषाके पुजारी हैं यों तो स्वतन्त्र होनेपर देशको पूरा अधिकार होगा कि चाहे जिस भाषाको राजभाषा बनाअे, परन्तु हमको पूरी आशा है कि यह स्थान मध्यदेशकी अिसी भाषाको प्राप्त होगा । हम अिसके लिये वर्षोंसे प्रयत्न भी कर रहे हैं ।...

(भाषणके अंश)
'संसार'से अुदधृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री की ओरसे

हरिजन-सेवकके लेख :

जब 'हरिजन-सेवक' अिस बार नये सिरेसे निकला था, तो कुछ लोग अुस में प्रकट विचारों और अुसके द्वारा दी गअी पू. बापू की शिक्षाओं की ओर ध्यान देने से पहले अुसकी भाषाकी ओर देखते थे। शनैः शनैः लोग अभ्यस्त होते जा रहे हैं। हरिजन-सेवकके अनेक अुद्देष्यों में से एक अुद्देष्य है भाषाका हिन्दुस्तानी करण और हिंदुस्तानी का प्रचार। हम 'हिंदुस्तानी' की जिस बात से असहमत हैं अुसे यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं। असहमत होते हुअे भी हम अंग्रेजीके स्थान पर 'हिन्दुस्तानी' को अेक बार नहीं हजार बार पसन्द करते हैं। किन्तु हम देखते हैं की अंग्रेजी तो कुछ अैसी गले मढी और पड़ी है कि हिंदुस्तानीके हजार हिमायती भी 'हिंदुस्तानी'के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभा सकते। २५ अगस्त ४६ का हरिजन हमारे सामने है। आरम्भ में ही गान्धी जी द्वारा लिखी चार टिप्पणियाँ हैं। चारों 'हरिजन-बन्धु' से ली गअी हैं। स्पष्ट है की वह न 'हरिजन-सेवक' के लिये लिखी गअी हैं न 'हिंदुस्थानी, में लिखी गअी हैं। दूसरा लेख अमृतकुंवर का है। वह 'हरिजन' से लिया गया है। स्पष्ट है कि मूल लेख अंग्रजी में लिखा गया है। तीसरा लेख भी अमृतकुंवर का है।। अंग्रेजी 'हरिजन' से ही। चौथा लेख बापूका है हरिजन-बंन्धुसे। पांचवां नोट भी बापूका है-हरिजन बन्धु से ही। छटा लेख प्यारेलालजीका है-हफतेवार ख़त। वहभी 'हरिजन' से ही लिया गया है अर्थात मूल अंग्रेजीमें ही लिखा गया है। बापूद्वारा लिखा गया अग्र-लेख भी 'हरिजन' से लिया गया है अर्थात अंग्रेजी में ही लिखा गया है। अगला नोट 'हरिजन-बन्धु'से। प्यारेलालजीके अगले दोनों लम्बे लेख-जिनमें अेक तो स्वर्गीय महादेव भाअीका संस्मरण है-भी 'हरिजन'से लिये गये और अंग्रेजीमें ही लिखे गये हैं। वालजी गोविन्दजी देसाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अगला लेख 'हरिजन-बन्धु' से। प्यारेलालजीका 'काँग्रेसी वजारतें और नअी तालीम भी' 'हरिजन' से अर्थात अंग्रेजीमें। श्यामलालजीकी अेक छोटीसी सूचना कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके बारे में। वह तक 'हरिजन' से अर्थात् अंग्रेजीमें। बापूका अन्तिम नोट भी 'हरिजन' से अर्थात् अंग्रेजीमें ही। हम यह सब लिखते लिखते अूब गये हैं, पाठक पढ़ते पढ़ते अूब ही गये होंगे। हिन्दी या हिन्दुस्तानी या किसी भी भाषाका शायद कोअी भी अखबार अैसा न होगा जिसके लिये अुसके संपादक भी अेक भी टिप्पणी तक न लिखते हों। 'हरिजन-सेवक' का २५ अगस्तका यह अंक अुसके अैसा ही अखबार होनेका प्रमाण अुपस्थित करता है।

पू० बापू का अंग्रेजी का डराव प्रसिद्ध है। वह यथासम्भव हर किसीसे अपनी ही गुजराती या हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानीमें बातचीत करते हैं। तब वह बापू-वाणी—यदि अुन्होंने वह बातचीत हिन्दी-हिन्दुस्तानीमें की है—सर्व प्रथम 'हरिजन-सेवक' की सम्पत्ति है। वह यथासम्भव बापूके ही शब्दोंमें 'हरिजन-सेवक'में छपनी चाहिये। लेकिन हम देखते हैं कि बापूकी हिन्दीमें—जिसे वह हिन्दुस्तानी कहना पसन्द करते हैं—हुअी बातचीत तक 'हरिजन-सेवक' की अंग्रेजी 'हरिजन'से अनुवाद करनी पड़ती है !!!

पाठक कहेंगे यह बहुत छोटी बात है—हां अेक दिनके जितनी छोटी, लेकिन बताती है कि हवा का रुख किधर है, काश ! बापू का ध्यान अिस ओर जाय और वह 'राष्ट्र-भाषा'के प्रचार और महत्वको बढ़ाने वाली अिस छोटी सी बात की अवहेलना न करें।

संथालों में रोमन लिपि का प्रचार :

श्री. अुदयशंकर शास्त्रीने अुक्त शीर्षक से २६ अगस्त के नवशक्तिमें अेक लेख लिखा है, जिसके अंतिम हिस्से में आँख खोलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली कुछ बातें हैं–".....अिन सन्थाली भाषाकी रीडरोंके समान भाषा की दुर्दशा करने का प्रयत्न किसी ने नहीं किया। गत ४२ की राष्ट्रीय हलचल के कारण अीसाअी मिशनरिओंको खुलकर खेलनेका मौका मिला। सन्थाल परगने में अिस समय लगभग २०० के प्राअीमरी और मिडल तक की पाठशालायें हैं, जिनका निजी तौर से संचालन करनेके लिये अेक अंग्रेजी अिन्सपेक्टर है। और अेक क्रिश्चियन अिन्सपेक्टर भी अुस अिन्सपेक्टर की सहायता करने को है। अिन पाठशालाओं का व्यय प्रायः मिशन की ओरसे किया जाता है। बिहार सरकार की अपनी पाठशालायें भी हैं जो अिनके अतिरिक्त हैं। आर्चर साहब ने अेक फरमान निकाला कि गैर अीसाअी मास्टर बिहार सरकार द्वारा परिचालित तथा मिशनरियों द्वारा परिचारित सन्थाल परगने की पाठशालाओं से निकाल दिये जायें और अुन के स्थान पर क्रिश्चियन मास्टर ही नौकर रखे जायें। फलस्वरूप सन्थाल परगनेसे १०० के करीब वे अध्यापक जो स्वयम् सन्थाल या अुराँव थे, किन्तु क्रिश्चियन नहीं थे निकाल दिये गये। सरकारी अेवम् गैर–सरकारी तौरपर अिस बातका पूरा प्रयत्न किया गया कि क्रिश्चियन अध्यापकोंको प्रोत्साहन दिया जाय और अुन से रोमनके प्रचार में सहायता ली जाँय। .....२२–२३ लाख सन्थालों में रोमनका जो प्रचार हो रहा है वह हिन्दीके लिये कम घातक नहीं है।"

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और अुसका चाहे जितने गुणोंकी आगरी होना भी अुसकी रक्षा नहीं कर सकता, यदि हम अुसके प्रचारके सब सम्भव अुपायोंकी ओरसे अुदासीन रहेंगे। कहावत है कि सत्य जीतता है, लेकिन तभी जब कोअी अुसे जिताते हैं। सन्थाल परगनेमें रोमन-लिपिके मुकाबले यह देव-नागरीको जिताने और अुसके लिये "मिशनरी-भावना" से ही काम करने की आवश्यकता है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा को अिस विषयमें कौन क्या सहयोग दे सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम और पते :

बात छोटी होने पर भी बार बार ध्यान दिलाने की आवश्यकता है। अनेक लोग अपना नाम लिखते समय अपने नामके आरम्भिक रोमन अक्षरोंका ही देवनागरीमें व्यवहार करनेसे आज भी बाज नहीं आते। अुदाहरणके लिये किसीका नाम है राम कृष्ण तो वे देवनागरीमें भी लिखते हैं आर. के। रामका संक्षिप्त आर ! और कृष्ण का के ! हम रा० कृ० क्यों न लिखें ?

अिससे भी बुरा हाल पतोंका है। हमने अभी अभी अपनी डाक खोली है। क्या दिल्ली का 'हिन्दुस्तान', क्या प्रयाग का 'भारत' और क्या पटने का 'आर्यावर्त' सभीके पते अंग्रेजीमें हैं। जुग जुग जिये 'हरिजन-सेवक'। अेक अुसका ही पता देवनागरीमें है।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

आवश्यकता है

अैसे अनुवादकोंकी जो बंगला, मराठी, गुजराती, तेलगू, अंगरेजी, फ्रेंच, जर्मन और रूसका हिन्दीमें सफल अनुवाद कर सकें। अनुवादकको अपने अनुवादकी भाषा और पुरस्कार संम्बन्धी पत्रव्यवहार 'मंत्री प्रकाशन विभाग' राष्ट्रभाषा प्रचार समितिसे करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंध-प्रांतमें हिन्दीकी क्या स्थिति है

सिंध सरकार हिन्दीकी विरोधिनी क्यों है ?

लेखकः—मंत्री सिंधप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

[हिन्दी-साहित्य सम्मेलनका अगला अधिवेशन सिंधकी राजधानी कराची में आगामी दिसम्बरके अंतिम सप्ताहमें होने जारहा है। प्रांतीय सम्मेलनके मंत्रीने इस लेखमें सिंधमें हिन्दीकी स्थितिका वर्णन करते हुअे हिन्दी प्रेमियोंसे अनुरोध किया है कि वह सम्मेलनके अवसर पर अुपस्थित होकर अधिवेशनको सफल बनानेमें योग दें।]

भारतके पश्चिमी छोर को छूता हुआ सिन्ध अेक छोटा-सा प्रान्त है। अिस प्रान्त की जन-संख्या अड़तीस लाख है, जिसमें लगभग तेरह लाख हिन्दू हैं। अिस प्रकार हिन्दू कुल संख्याके ३५% हैं। शेष जन-संख्या मुसलमानों की है। बम्बअी प्रान्तसे विलग हुये सिन्ध को अभी बहुत दिन नहीं हुअे हैं। सन् ३५के विधानके अनुसार यहाँ पर अपनी व्यवस्थापिका सभा की स्थापना हुअी है और प्रान्तीय स्वायत्तशासन प्रारम्भ हुआ है।

भाषा की दृष्टिसे सिंध अेक अहिन्दी प्रान्त है। यहाँ की मूल भाषा सिन्धी है जो अपभ्रंश का ही अेक रूप है। कालान्तर में मुसलमानोंके संसर्ग में आनेके कारण सिन्धी भाषा में अरबी और फारसीके शब्दों का भी प्रचुर समावेश हो गया है। भाषा की लिपि फारसी है जिसकी व्यञ्जनात्मक शक्ति बढ़ानेके लिये अुसमें काफी सुधार और परिवर्तन किया गया है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि अपभ्रंशके शब्दोंकी ध्वनियों को ग्रहण करने में अक्षम्य होनेके कारण ही फारसी लिपिको यह सुधार स्वीकार करना पड़ा है। परन्तु अिस सुधारसे अेक बड़ा लाभ यह हो गया है कि सिन्धी फारसी लिपि की अपेक्षा अधिक सुगम सुलभ हो गअी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजसे सत्तर वर्ष पूर्व अुत्तर-भारतकी अन्य भाषाओंके समान सिंधी भी देवनागरी लिपिमें ही लिखी जाती थी। जनसाधारण—हिन्दू और मुसलमान—समान रूपसे अिसी लिपिका प्रयोग करते थे; किन्तु यहाँपर नवाबोंका शासन होनेके कारण राज-भाषाके लिये फारसीको स्थान मिला हुआ था। धीरे-धीरे राजकर्मचारियोंने—जिनमें अूँचे वर्गके मुसलमान तथा दीवान और आमिल जातिके हिन्दू सम्मिलित हैं—अपनी सुविधाके लिये सिंधी भाषाको फारसी लिपिमें लिखना प्रारम्भ कर दिया। लिपिकी अपूर्णताके कारण अुसमें अनेक सुधार तथा परिवर्तन किये गये और आज अुन्हीं अक्षरोंमें सिंधी भाषा पढ़ी और लिखी जाती है। शिक्षाकी दृष्टिसे सिंध काफी पिछड़ा हुआ प्रान्त है। और यहांकी भाषा भी अभी अविकसित अथवा अर्धविकसित अवस्थामें ही है। अिस प्रान्तकी मुसलमान जनता विशेष रूपसे बहुत अशिक्षित है और जहां जन-संख्यामें हिन्दुओं और मुसलमानोंका अनुपात ३५:६५ है वहाँ शिक्षाकी दृष्टिसे अुनका अनुपात ६५:३५ है।

लगभग १२ वर्ष पूर्व राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापनाके बाद सिंधमें हिन्दीका नियमित प्रचार प्रारम्भ हुआ। अिससे पहले भी श्री हिन्दी साहित्य भवन, श्री मारवाडी विद्यालय आदि संस्थाअें हिन्दीका समुचित प्रचार अेवं प्रसार कर रही थीं, किन्तु अिन संस्थाओंका केन्द्र सीमित था। आज सिंधमें हिन्दी भाषाके लिये जो प्रेम अेवं अुत्साह है वह अत्यन्त सराहनीय है और अुसका अेक बड़ा श्रेय राष्ट्रभाषा-समिति और अुसके कार्यकर्त्ताओंको है।

सिंध-प्रान्तकी सरकारने हिन्दीकी ओर कभी फूटी आँख देखना भी पसन्द नहीं किया और सदासे अुसके साथ विमाता का-सा व्यवहार करती आयी है। अितना होते हुअे भी अिस प्रांतमें हिन्दीका प्रचार जितना तेजीसे हुआ है अुतना शायदही किसी अन्य अहिन्दी प्रान्तमें हुआ होगा। अिसके कअी कारण हैं। यद्यपि अत्यन्त प्राचीन कालसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सिन्ध हमारी सभ्यता और संस्कृतिका केन्द्र रहा है—मोहन जोदड़ोके खँडहर अुसका ज्वलन्त अुदाहरण है—तथापि अपनी जलवायु और स्थितिके कारण कअी सदियों तक यह प्रांत अलग-सा ही रहा है और यहाँके निवासियोंमें हीनताके भाव पैदा हो गअे हैं। हिन्दी भाषाने अुनको पुनः आत्मसम्मान प्राप्त करनेमें सहायता पहुँचाअी है तथा सिन्धका अन्य भारतीय प्रान्तोंसे सम्बन्ध जोड़ा है। अिस समय हमारे देशमें राष्ट्रीयताकी अेक जबर्दस्त लहर आअी हुअी है। भारतवर्षका बच्चा-बच्चा अिस बातको जानता है कि स्वतंत्र भारतमें अेक स्वतंत्र राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता होगी जो अँगरेजीका स्थान ले सके और अिसके लिये हिन्दीसे अधिक अुपयुक्त अन्य कोअी भाषा नहीं है। सिंधमें पाकिस्तानके बढ़ते हुअे प्रभावने तथा लीगी मन्त्रिमण्डलके काले कारनामोंने भी हिन्दीके प्रचारमें बहुत सहायता पहुँचाअी है। यहाँ हम कराची नगरकी म्युनिसिपैलिटी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जो गत पन्द्रह वर्षोंसे हिन्दीके प्रश्न पर सरकारसे लगातार जूझती रही है और जिसने अिस भाषाको प्रत्येक सम्भव सहायता प्रदानकी है।

आज सिन्धके घर घरमें हमको हिन्दी भाषा का सन्देश पहुँचाना है। सिन्ध का कोअी हिन्दू गाँव अथवा नगर अैसा नहीं जहाँ पर राष्ट्र-भाषा हिन्दीके अध्ययनके लिये लगन और अुत्साह न हो। सिन्धके शत-प्रतिशत नागरिक हिन्दी समझ और बोल सकते हैं। यहाँ तक कि बाजारोंमें आजसे कुछ वर्ष पूर्व जो स्थान सिन्धी, गुजराती आदि प्रान्तीय भाषाओं को प्राप्त था वहाँ आज हिन्दीका अखण्ड बोलबाला है। सिन्धकी जनता अिस बातके लिये हृदयसे अुत्सुक है कि वह हिन्दी का समुचित ज्ञान प्राप्त कर धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा अन्य क्षेत्रोंमें अपने अन्य प्रान्तीय भाअीयोंके साथ कदम मिला सके। अिसी कारण अुसने अत्यन्त प्रेमपूर्वक अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को आगामी अधिवेशनके लिये जो २६, २७, २८, २९ और ३० दिसम्बर को होगा, हैदराबादमें निमंत्रित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाके भक्तको

: नन्द चतुर्वेदी बी. अे. बी. टी. :

महात्मा गांधी की आत्म-कथा कल पढ़ रहा था-तभी अेक कवि की वाणी देखी :-'जो तुझे अेक अन्नका दाना दे, अुसे मोहर दे"। तभीसे मैं सोचता आरहा हूँ कि समाज और व्यक्ति का सम्बन्ध युगों-युगों से कड़ियों की तरह गुँथकर अेक दीर्घ आकारवाली श्रृंखलाकी तरह अविभाज्य-अविच्छिन्न होचुका है। वहाँ व्यक्ति केवल अपने ही अपने पेट भरने की कल्पना में रह ही कैसे पाता है? समाजकी जिन शुभ चिंतनाओंका मनुष्य अितना बड़ा भार लिये चल रहा है अुसे अेकही साथ 'नहीं' कहनेकी शक्ति अुसमें आ किस प्रकार जाती है? मैं तो यह कहता हूँ कि समाज यदि अनुदार होकर अपनी कृपाओंके वर्णनोंसे मूंजी भी हो जाय तो, मनुष्य तो फिरभी अेक करोड़ वर्ष तक अुऋण होनेका प्रयत्न करके भी अुऋण नहीं हो सकता।

समाजकी कृपाओंसे अुऋण होनेके प्रयासमें मनुष्यने जितने भी बड़े से बड़े प्रयत्न किये हैं अुन सब प्रयत्नोंमें अत्यन्त महान् अत्यन्त महिमावान प्रयत्न भाषाकी खोज है। मानवके शरीरको अुधरसे अिधर ले जाने वाले वायुयान; जलयान; बाष्पयान भी अमूर्त भाव-भावनाओं को लोकके अेक छोरसे दूसरे छोर तक ले जाने वाले भाषा-यान की बराबरी नहीं कर सकते। प्रकाश और ध्वनिके गतिमान शरीरसे भी अति द्रुति गति है भाषाकी। मानवके बुजुर्गने जिस दिन भी समाजके अुपकारोंके प्रति अंजलि-अर्पितकी होगी अुस दिन समाजका सामूहिक शरीर शत-शत कन्ठसे नरकी महिमा-ऋचाओंका अुच्च स्वरसे पाठ करने लगा होगा। अुस दिनसे आजतक जिस जिसने भी भाषाके शरीर में पुष्टता और प्राण सन्चार करनेके अनवरत परिश्रम किये हैं वे सबके सब धन्य हैं वे मानो सबसे बड़े पुण्यवान सुधारक हैं जो मनुष्यसे बने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्यता रहित समाजमें मनुष्यता लानेका प्रसन्न प्रयास कर रहे हैं। दुनियाके मानवको वे नारायणके सिंहासन तक जानेका हौंसला दे रहे हैं। विश्वके किसीभी अन्धकार युक्त कोने में वे भाषाके दीपकसे धर्मोंके अत्याचार, पाप और अधर्मोंकी निंदनीय कालिमाको प्रकट कर मानवके विचारोंके आदान-प्रदान वाले पथको प्रशस्त कर रहे हैं। अुन सब 'मसीहाओं'के चरणोंमें ये पत्रपुष्प।

हमारी नजरोंमें

नया-हिन्द—एडिटर सर्वश्री छः सज्जन, प्रकाशक हिन्दुस्तानी कलचर सोसाअिटी, अेक अंकका मूल्य दस आना।

पत्रका अुद्देश्य हिंदुस्तानी कलचरका निर्माण और प्रचार तथा साथ साथ हिंदुस्तानी भाषाका निर्माण और प्रचार भी है। सिद्धान्त रूपसे यह न हिन्दीमें छपता है, न अुर्दुमें किन्तु हिन्दुस्तानीमें। हमने अभी तक अिसके जुलाअि तथा अगस्तके दो अंक देखे हैं। दोनोंमें अच्छे की कमी नहीं है, कमी है तो अच्छी भाषा ही किं। 'नया-हिन्द' भारतीय द्वैतवादका आदर्श नमूना है—सब कुछ देवनागरी और फारसी-लिपिमें दोहराया गया है। परिणाम यह हुआ है कि फारसी लिपिमें लिखनी जानेवाली अुर्दु और देवनागरी लिपिमें लिखी जानेवाली अुर्दु (बीच बीचमें कुछ हिन्दी वाक्य भी) देवनागरीमें शुद्ध और अुर्दुमें शुद्ध नहीं लिखे जा सके हैं) 'हिन्दुस्तानी' होकर रह गअी है।

हम समझते हैं कि हिन्दुस्तानी कलचर सोसाअिटी अपनी ओरसे हिन्दु और मुस्लिम कलचर तथा हिन्दी और अुर्दु को मिलाने का ईमानदाराना प्रयत्न कर रही है। अिस लिये अुनके अिस प्रयत्नके ढंगसे बिलकुल असहमत होते हुये भी हम अुनके प्रयत्नकी प्रशंसा करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें विश्वास है कि 'नये दिन'के प्रत्येक अङ्कमें साहित्यिक-मनोरञ्जन की सामग्रीकी कमी न होगी।

मौलाना गान्धी ?—लेखक श्री. रविशंकर शुक्ल, मिलने का पता–गंगा ग्रंथागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ–मूल्य ।।।)

पुस्तक बड़ी नहीं है, किन्तु बड़े काम की। पिछले दिनों हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके मन्त्री श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने विशाल भारतमें 'मौलाना गान्धी'? शीर्षकसे ही अेक लेख लिखा था। अुसमें अुन्होंने हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके दृष्टिकोण को स्पष्ट करने तथा समर्थन करने का प्रयत्न किया था। प्रस्तुत पुस्तक का नामकरण तो अुसी लेखसे लिया ही गया है, किन्तु अिसका पूर्व-पक्ष भी वही लेख है।

श्री. शुक्ल जीने अिस पुस्तकमें भारत भाषा विषयक समस्या पर अधिकांश नअी जानकारी और हिन्दी वालोंके विचार प्रकट किये हैं नये प्रमाणोंके साथ। हम समझते हैं कि जो कोअी भी भारत की भाषा-विषयक समस्याका कोअी तर्क-संगत हल ढूंढना चाहता है, अुसे यह पुस्तक अवश्य पढ लेनी चाहिये–नअी हिन्दुस्तानीके समर्थकों और विरोधियों को विशेष रूपसे। हम अिस पुस्तक का प्रचार चाहते हैं।

वनस्थली-पत्रिका—वनस्थली विद्यापीठ की त्रैमासिक मासिक पत्रिका। सम्पादक–श्री सुधीन्द्र एम्. ए.साहित्य-रत्न-वार्षिक मूल्य ५ रु.

जिसप्रकार शान्ति-निकेतनने 'विश्वभारती' के रूपमें हमें अेक विशिष्ठ पत्रिका दी है अुसी प्रकारका वनस्थली पत्रिकाका यह नवीन आयोजन प्रतीत होता है। प्रथम अंकके प्रथम पृष्ठपर कुमारी शारदा मिश्रका 'नमाज' चित्र सम्पादककी अुदारव्यापक दृष्टिका परिचायक है। पाठक आशा कर सकते हैं कि बालिकाओं की संस्था द्वारा प्रकाशित पत्रिकामें अधिकांश लेख स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी ही होंगे। हमें हर्ष है कि वनस्थली-पत्रिका अिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन की शिकार नहीं है। विश्व की लगभग सारी जानकारी स्त्री-पक्ष तथा पुरुष-पक्ष दोनोंके लिये समानरूपसे अुपादेय है। वनस्थली-पत्रिका द्वारा अुसके संचालक अपने पाठकोंको चतुर्मुख-जानकारी ही नहीं, चतुर्मुखी प्रेरणा भी देनेके लिये प्रयत्नशील प्रतीत होते हैं।

लेखोंमें अेकमात्र श्री विद्या चतुर्वेदी लेखिका रूपमें दिखाअी दीं। वनस्थलीसे निकलनेवाली पत्रिकामें बालिकाओं तथा देवियोंकी लेखनी अधिक अुजागर होनी चाहिये।

पत्रिकामें प्रकाशकका नाम होना भी आवश्यक है।

अजन्ता– हिन्दी प्रचार सभा, (दक्षिण) हैदराबाद की मुख–पत्रिका सम्पादक श्रीराम शर्मा, प्रकाशक श्री. जितेन्द्रनाथ बाघ्रे, साहित्य–मंत्री, अेक अंकका मूल्य ।–)।

पत्रिकाके प्रथम अंक को ही देखकर अैसा लगता है कि हिन्दी प्रचार सभा की यह पत्रिका अपने सुन्दर नामकी लाजको रख सकेगी। थोड़े से पत्रों में ही कहानी, अैतिहासिक लेख, अेकान्की नाटक तथा कविताओं का अैसा संकलन कि सभी प्रकार की सामग्री रहे श्रीराम शर्माके सम्पादन चातुर्य की गवाही देता है। हम 'अजन्ता' की अधिकाधिक अुन्नति की कामना करते हैं।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विशुद्ध राष्ट्रभाषा प्रारंभिक अध्ययन–मूल्य ३ आने।

विशुद्ध राष्ट्रभाषा परिचय–मूल्य ६ आने।

(रचयिता–श्रीराम अट्टावलकर, राष्ट्रभाषा प्रचार प्रकाशन, खामगाँव)

श्री. श्रीराम अट्टावलकर हमारी समितिके अेक लगनशील प्रचारक हैं। आपने अपने अनुभवोंके आधारपर प्रारम्भिक और परिचय परीक्षार्थियोंके लिये गलतियोंके ये दो संग्रह तैयार किये हैं। साथही अुनके विशुद्ध रुपभी दे दिये हैं। परीक्षार्थियोंको ये दोनों पुस्तकें लाभप्रद हैं।

श्री. दे. दा. चौधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह हृदय-विदारक समाचार !

: श्री. रंजन :

लिखते हुअे कलम क्षोभ और शोकसे बार बार थम जाती है। अभी दो महीने पहिलेका अुनका चेहरा आखोंके सामने आकर खड़ा हो जाता है। वे यहाँ आये थे। परीक्षा-समितिकी बैठकमें। स्वप्नमें भी न सोचा था कि भाअी **कमलनारायणजी** का यह पुष्ट शरीर अितनी जल्दी स्वप्नवत हो जायगा। असम प्रान्तके संचालककी हैसियतसे अुन्होंने जिस तन्मयता, लगन और परिश्रमके साथ 'राष्ट्रभाषा' का प्रचार असममें किया है वह कार्य स्वयं ही अुनकी स्मृतिका अेक अमर स्मारक है। अुनके भौतिक अभावकी कल्पना मात्रसे हमारा रोम-रोम सिहर अुठता है। हृदयमें अेक चीखसी अुठती है। विश्वास नहीं होता कि वे अब हमारे बीचमें नहीं हैं। अुन्हें खोकर हमने असमका संचालक ही नहीं खोया है; खोया है अपना अेक भाअी, अेक स्वतंत्र विचारक और राष्ट्रभाषा प्रचारके रास्तेपर चलनेवाला अेक अडिग हमराही।

बन्धु ! तुम चले गअे ! पर भाव रूपमें तुम्हारा अस्तित्व हमारे हृदयमें सदा सर्वदा जीवित रहेगा। राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके हम सभी कर्मचारी आज शोकातुर हैं। दर्शन शास्त्रकी भाषामें 'तुम्हारी आत्माको शांति मिले' कहकर भी हमें स्वयं कौन धीरज बधाँअें। हमारे अिन आसुँओंमें जिस दिवंगत भाअीकी तस्वीर झलकती है अुसे क्या हम फिर देख सकेंगे ? नलिनी बाला बहिन और भाअी कमलनारायणजीकी अुस अबोध बच्चीके जिसने अपने पिताके विचारोंको अभी समझ भी न पाया था, जो भविष्यमें अुनकी राज नैतिक-विचार धाराकी अभिभाज्य और अभिन्न साथी बनने वाली थी, शोकको कौन जाने ? बहिन और बेटी ! तुम धीरज रखना। वे जो कुछ सोचते थे तुम दोनों अुसे पूरा करनेमें ही अुनके प्रति अपने हृदयकी भक्ति पूर्ण श्रद्धांजली देती रहना !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

परीक्षा फल :

सितम्बर '४६ में होने वाली राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंका परीक्षाफल ता. ५ नवम्बरको प्रकाशित होगा।

शुल्क सुरक्षित :

साधारणतया शुल्क वापस नहीं किया जायगा और न आगेके लिये सुरक्षित ही रखा जायगा। लेकिन आकस्मिक बीमारीके कारण परीक्षामें न बैठ सकनेकी सूचना परीक्षा तारीखके बाद केन्द्र व्यवस्थापक द्वारा अेक सप्ताह तक डाक्टरके प्रमाण-पत्रके साथ परीक्षा मंत्रीके पास आनेपर शुल्क आगे की केवल अेक परीक्षाके लिये सुरक्षित रखा जा सकेगा।

आगामी प्रचार परीक्षायें :

आगामी प्रचार परीक्षायें फरवरी ४७ के पहले सप्ताहमें होंगी। निश्चित तारीख शीघ्र प्रकाशित की जायगी।

विभिन्न आवेदनपत्रोंको वर्धा कार्यालयमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीखें अिस प्रकार हैं :—

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना पत्र २० नवम्बर ४६
शुल्क माफी „ „ २० „ ४६
सशुल्क परीक्षा आवेदन पत्र १५ दिसम्बर ४६

सीधे बैठनेके लिये प्रार्थना पत्र :

वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख यद्यपि २० नवम्बर है किन्तु अिससे पहले भी प्रार्थनापत्र भेज कर वर्धा कार्यालयका निर्णय प्राप्त कर लेना ज्यादा अच्छा होगा। अैसा करनेसे परीक्षार्थीको अपनी तैयारीके लिये अधिक समय मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी परीक्षाओंके लिये नये केन्द्र :

निश्चित केन्द्रोंके सिवाय जहां कहीं कमसे कम १० परीक्षार्थी हों, वहाँ नया केन्द्र खोला जा सकता है। अिसके लिये नियत खास फार्म जो प्रान्तीय संचालकसे मिल सकेगा, भरकर प्रान्तीय संचालकके द्वारा ता. ३० नवम्बर ४६ तक समिति कार्यालय वर्धा पहुँचाना चाहिये।

हिंजली कटमें राष्ट्रभाषा शिक्षक शिविर :

गंजाम जिला (अुड़ीसा) के डिस्ट्रिक्ट बोर्डने राष्ट्रभाषाका प्रचार व्यापक करनेके दृष्टिसे पिछले दिनों अेक प्रशंसनीय कार्य किया है। विभिन्न ४९ स्कूलोंसे अेक-अेक शिक्षक भेजकर हिंजलीकट नामक स्थानपर राष्ट्रभाषा शिक्षक शिविर चलाया गया। अिस शिविरका अुद्घाटन अुड़ीसा प्रान्तके शिक्षामन्त्री श्री लिंगराज मिश्रजीके द्वारा हुआ था। अुड़ीसा प्रान्तके सुयोग्य प्रचारक श्री बनमाली मिश्र तथा श्री रघुनाथ पुरोहितकी देखरेखमें यह शिविर तीन मास तक चला। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी ओरसे अेक विशेष परीक्षाकी व्यवस्था की गअी और यह लिखते हर्ष होता है कि परीक्षामें सम्मिलित होनेवाले ४७ शिक्षकों मेंसे ४४ शिक्षक अुत्तीर्ण हुअे। ता. १४-८-४६ को प्रमाण पत्र वितरण समारोह परीक्षा मंत्रीके सभापतित्वमें मनाया गया। अुड़ीसा प्रान्तके प्रधान मंत्री श्री हरेकृष्ण मेहताबने अिस अवसर पर दीक्षान्त भाषण दिया और जनताको सूचित किया कि निकट भविष्यमें अुड़ीसा प्रान्तमें राष्ट्रभाषाका अध्ययन बाध्य विषय बना दिया जायगा।

यह राष्ट्रभाषा शिक्षक शिविर सभी प्रकार सफल रहा। अुड़ीसा प्रान्तके हमारे प्रान्तीय संचालक श्री अनुसूयाप्रसाद पाठककी ही प्रेरणासे अिस शिविरकी योजना बनाअी गअी थी और अिसका संचालन भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुनके द्वारा हुआ। वे निकट भविष्यमें अुड़ीसा प्रान्तके अन्य जिलोंमें भी अिसी प्रकारके शिक्षक-शिविर प्रारम्भ करानेकी दिशामें प्रयत्नशील हैं।

गंजाम जिलाके डिस्ट्रक्ट बोर्डके पदाधिकारी तथा हिंजलीकट हाअिस्कूलके हेडमास्टर, जिन्होंने कष्ट अुठाकर भी शिविरकी सारी व्यवस्था अपने स्कूलमें की थी, धन्यवादके पात्र हैं।

आशा है अिस योजनाका अनुकरण अन्य जिलोंमें और अन्य प्रान्तोंमें भी होगा।

अेक लगनशील प्रचारक :

करीब ९ वर्ष पहले युक्त प्रान्तका अेक अुत्साही युवक अुड़ीसामें राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य करने गया था। त्याग और सेवाकी भावनासे किया हुआ कार्य किस प्रकार सफल होता है अिसका प्रत्यक्ष अुदाहरण बरहाणपुर परीक्षा केन्द्र है। श्री रायसुख भारतीयने बरहाणपुरमें प्रचलित अुड़िया और तेलगु दोनों भाषाओंका अच्छा ज्ञान प्राप्त कर, अपनेको वहाँकी जनतामें सेवाके द्वारा अैसा मिला दिया है कि वे वहाँके श्रद्धा पात्र हो गये हैं।

श्री भारतीयजीने प्रयत्न करके राष्ट्रभाषा मन्दिरके लिये शहरके बीचोंबीच अेक अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। भवन निर्माणके लिये करीब ६०००) रु. भी अिकट्ठे हो चुके हैं। निकट भविष्यमें यह राष्ट्रभाषा मन्दिर तैयार हो जायगा।

अैसे सुयोग्य प्रचारककी सेवा समितिके लिये गौरवका विषय है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हमारे नये प्रमाणित प्रचारक—

प्रांत	नाम	केन्द्र	क्रमांक
गुजरात	श्री. ओश्वरभाओ न. पटेल	शुक्लतीर्थ	८४०
,,	,, मणिभाओ मो. पटेल	लांधनज	८४१
,,	,, शत्कुमार व्यास	अहमदाबाद	८४२
,,	,, ज्ञानचंदजी स्वतंत्र	सूरत	८४३
महाराष्ट्र	कु. प्रमिला केशव गोखले	पुणें	८३६
,,	सौ. अिन्दू देशपांडे	,,	८३७
,,	श्री. रंगनाथ पांडुरंग देशपांडे	,,	८३८
,,	,, गणपत शा. चव्हाण कवठेकर	सप्तर्षी कवठे	८३९
बम्बओ	,, रंगनाथ नारायण विभांडीक	बम्बओ	८४४
,,	सौ. लीला महादेव भागवत	दादर	८४५

हमारे नये केन्द्र

प्रांत	नाम-केन्द्र	क्रमांक-केन्द्र
गुजरात	भावनगर	८५८
,,	कुशलगढ़	८५९
,,	दवाडा	८६२
महाराष्ट्र	खिर्डी	८६०
,,	वालचंदनगर	८६३
,,	अुमरगा पामगा	८६४
विदर्भ-नागपूर	परासिया	८६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रान्तोंकी हलचलें

सिन्ध :

अिस सितम्बरकी परीक्षामें कराची केन्द्रसे १००३ आवेदन-पत्र भरे जा चुके हैं। परीक्षार्थियोंको पढ़ानेके लिअे जगह जगह वर्ग चल रहे हैं।

गुजरात :

गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री श्री जेठालाल जोशीने विभिन्न जगहोंपर दौरा करके राष्ट्रभाषा प्रचार-कार्यका सम्पादन किया।

(१) बलसाड़ा और भावनगरके केन्द्र बन्दसे थे। अिन जगहोंके विद्यालयोंमें जाकर अध्यापक-गण, प्रचारक और केन्द्र व्यवस्थापकसे रा० भा० प्रचार सम्बन्धी बात-चीत की। दोनों जगह पुनः केन्द्र खोलनेकी व्यवस्था की गअी।

(२) भावनगरके दीवानसाहबसे रियासतके विद्यालयोंमें राष्ट्रभाषाको स्थान देनेके सम्बन्धी वार्तालाप हुआ।

(३) राष्ट्रभाषा प्रचार-निमित्त मंत्रीके कअी विद्यालयोंमें भाषण हुअे।

प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सवः— प्रान्तिज (अहमदाबाद)

प्रान्तिज म्युनिसिपल अध्यक्ष श्री जेठालाल धीरजलाल पंड्या की अध्यक्षतामें ता०४-८-४६ को आअी. पी. मिशन स्कूलमें प्रमाण-पत्र-वितरण समारम्भ हुआ। राष्ट्रभाषाके महत्वपर भी व्याख्यान हुअे।

शोकसभा—अहमदाबाद श्री वसन्तरावजी देंगिष्टे तथा श्री रजबअली अिनके कौमी दंगेके अवसरपर अहिंसक वीरता भरे अपूर्व बलिदानपर तथा श्री अिच्छा शंकर त्रिवेदी (कोविद-विद्यार्थी) की क्रूर हमला-खोरों द्वारा हत्या किअे जानेपर शोक प्रदर्शित करनेके लिअे प्रचारकों तथा विद्यार्थियोंकी अेक सभा हुअी। हुतात्माओंके त्यागके प्रति समादर तथा हमलेमें रोमाञ्चक मृत्युपर शोक तथा नृशंस आततायियोंके प्रति घृणा प्रगट की गअी।

पिछले मासमें साहित्य-संदेशके सम्पादक बा. गुलाब रायजी अहमदाबाद पधारे थे। कार्यालयकी ओरसे होनेवाले मिलन समारम्भमें आपको आमंत्रित किया गया था। आपने हिंदी अूर्दू और हिन्दुस्तानीकी वैज्ञानिक व्याख्या समझाअी थी।

स्थानीय हिन्दी प्रेमी श्री रामशरणजी अग्रवालकी ओरसे अुनके स्वर्गीय पिता श्री बाबूलाल अग्रवालकी पुण्य स्मृतिमें २१) रु. का "बाबूलाल अग्रवाल पुरस्कार" प्रदान किया जायगा। अिस पुरस्कारमेंसे ११) का समस्त गुजरातमें 'कोविद' के सर्व प्रथम आनेवाले विद्यार्थीको पुस्तक रूपमें दिया जायगा। १०) रु. का अहमदाबादमें कोविदमें सर्व प्रथम आनेवालेको दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र :

प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सवः—

हमारे अुत्साही प्रचारक श्री अं. गो. कागदेके प्रयत्नसे ८ अगस्तको प्रमाण-पत्र-वितरण समारोह हुआ दे भ. काकासाहेब गाडगीळजी द्वारा प्रमाण-पत्र बाँटे गअे।

जुलाअी महीनेमें वर्धा समितिके श्री प्रो. रजंनजी और कृ. प. पाटिलने पूर्व खानदेशमे दौरा किया। दौरेसे महाराष्ट्र प्रान्तमें समितिकी स्थिति और नीतिके बारेमें जो थोड़ा बहुत भ्रम फैलाथा, वह दूर होगया और आगेके लिअे बड़ी लगन और सचाअीसे काम करनेवाले कअी कार्यकर्ता आगे बढ़े हैं।

अगस्त महीनेमें श्री प्रो. रजंनने दक्षिण महाराष्ट्रका दौरा किया। कोल्हापूर, सातारा, शोलापुर और पूना आदि केन्द्रोमें अुन्होंने जाकर महाराष्ट्र सभाद्वारा पैदा की गअी स्थितिका निरीक्षण किया।

दौरे केन्द्रीय संस्थाओ, स्कूल और कालिजोमें व्याख्यान द्वारा 'राष्ट्रभाषा' और राष्ट्रलिपिके बारेमें समितिकी नीतिका स्पष्टीकरण किया गया।

अुडीसा :

१५ मअीको गंजाम जिलाबोर्डकी तरफसे हिंजली काटुमें ३ मासके लिये जो हिन्दी शिक्षण केन्द्र खोला गया था अुसका अुद्घाटन अुड़ीसाके शिक्षामन्त्री मान्यवर पंडित लिंगराजजी द्वारा हुआ था। अिस कार्यका भार अु० रा० भा० प्र० सभापर था। सभाके प्रधान प्रचारक श्री बनमालीजी मिश्रने ५२ अध्यापकोंको 'प्रवेश' तक शिक्षा दी। केन्द्रके समाप्तिके समय ता० १४।७।४६ को अुड़ीसाके प्रधानमन्त्री श्री हरेकृष्णजी मेहताबने दीक्षान्त भाषण दिया और अ० भा० रा० भा० प्र० समितिके परीक्षामन्त्री श्री रामेश्वर दयालजी दुबेने अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाणपत्र बाँटे। अिस अुत्सवके शुभ अवसरपर अुत्कलके भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथजी दास, जिलाशिक्षा विभागके अधिकारी श्री रामनारायणजी महान्ति आदि कतिपय अग्रगण्य सज्जन अुपस्थित थे। अिस समय रा० भा० प्रचार सम्बन्धी महत्वपूर्ण विचार-विनिमय हुआ जिनमें श्री रामनारायणजी मिश्र द्वारा कालेजकी शिक्षा हिन्दी माध्यम द्वारा होनेका सुझाव बहुत ही महत्वपूर्ण था।

अु० रा० भा० प्र० सभाकी यह योजना है कि ६।७ दर्जेमें हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षकोंका अध्ययन काल तीन मासका और हाअीस्कूलोमें ७।८।९ दर्जोंको पढ़ानेवाले शिक्षकोंका अध्ययन-काल प्रथम वर्षमें ३ मासका और दूसरे वर्षमें ३ मासका रहेगा। यह योजना बहुतही अुपयुक्त सिद्ध हो चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

स्थाओी समितिकी पिछली बैठकके निर्णयके अनुसार वर्धामें रा. भा. समितिकी ओरसे प्रचारक शिक्षण-शिविरका आयोजन किया जारहा है। अिस शिविरमें राष्ट्रभाषा प्रचारके कार्यसे रुचि रखने वाले व्यक्ति ही लिये जायेंगे। शिक्षा शिविर की अवधि तीन मास होगी। अिस थोडे समयमें प्रचार कार्य; बाह्य ज्ञान; साहित्य; समाज शास्त्र और कार्यालय संचालन आदि अुपयोगी विषयों की शिक्षा दी जायेगी। प्रार्थनापत्र भेजने वाले भाओी बहनोंको कमसे-कम कोविद या अुसके समकक्ष कोओी हिन्दी की परीक्षा पास होना चाहिये। अिस शिविरमें प्रत्येक प्रान्तसे २ पुरुष और १ स्त्री-प्रचारक ही लिये जायेंगे। प्रान्तीय-समितियों की शिफारसके आधारपर जिन विद्यार्थियोंका प्रवेश स्वीकृत किया जायगा उन्हें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओरसे २५ रु० मासिक वजीफा भी दिया जायगा। शिक्षण काल समाप्त होनेके बाद प्रचारक केन्द्रीय समिति की ओरसे अपने २ जिलोंमें प्रचार कार्यके लिये नियुक्त किये जा सकते हैं। प्रचारकोंका अनुमानित वेतन योग्यतानुसार ५०) रु० से ७५ रु० मासिक तक हो सकता है।

प्रान्तीय समितियोंसे आग्रह है कि वे अिस ओर विशेष ध्यान दें और अैसे योग्य भाओी और बहिनोंके प्रार्थनापत्र वर्धा कार्यालयमें शीघ्र भेजें। शिविरके शुरू होनेकी निश्चित-तिथि बादमें सूचित की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

समितिके तारका पता
'राष्ट्रभाषा' वर्धा

महात्मा गांधी क्या कहते हैं:—

"जितनाही मैं पुस्तकोंका अध्ययन करता गया अुतनीही मुझे अुनकी विशेषताअें मालूम होती गअीं।"

मौलाना आज़ाद:— [लेखक—महादेव देसाअी]

भूमिका लेखक—महात्मा गांधी

भूतपूर्व राष्ट्रपतिके जीवन चरित्रात्मक संस्मरण:—

मूल्य २॥) डाक खर्च ।=

राजनीतिशास्त्र:— ले. प्राणनाथ विद्यालंकार

राजनीतिशास्त्रपर प्रमाणित ग्रंथ। मूल्य ३) डाक खर्च ॥=

हिन्दी-शब्द संग्रह:— स. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव

फिरसे नया स्टॉक आ पहुँचा है।

अनंतके पथपर:— ले. हरिकृष्ण [प्रेमी]

प्रेमीजीकी कविताओंका अेक अुत्तम संग्रह

मूल्य २) डाक खर्च ।=

अुर्दू साहित्यका अितिहास:— ले. व्रजरत्नदास

बहुत दिनोंके बाद नया स्टॉक आ पहुँचा है।

मूल्य २॥) डाक खर्च ।=

भारतीय बैंकिङ्ग:— ले. द्वारकालाल गुप्त

भारतीय बैंकिङ्गपर प्रमाणित ग्रंथ मूल्य २॥) डाक खर्च ।=

सरलनागरिकशास्त्र ले. भगवानदासकेला

"नागरिकता नवयुगका नया सन्देश है अिसमें नागरिकशास्त्र पर सम्यक विवेचन है। मूल्य ४) डाक खर्च ॥=

प्रबन्ध सम्पादक—हृषीकेश शर्मा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा।
मुद्रक—गोविंद भास्कर जोशी, भास्कर छापखाना (राठी मार्केट) वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५

अगस्त

अंक १०

राष्ट्रभाषा

स्वतन्त्रता आत्माका धर्म है। स्वतन्त्रता है तो आत्मा है। यह तत्व विनाशी होनेसे अुसे किसीका भय नहीं है । जिस शास्त्रका अन्त स्वराज्यमें होता है, वही राजकीय नीति-शास्त्र है। राजनीति देशका वेदान्त है।

—लोकमान्य तिलक

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंकामें हिन्दी प्रचार

: भदन्त आनन्द कौसल्यायन :

आधुनिक लंकाके साथ अपना जो राजनीतिक सम्बन्ध है अुसकी गर्मीमें हम अपने प्राचीनकालसे चले आये धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धको भूल तो नहीं जा रहे हैं ?

भौगोलिक दृष्टिसे लंका भारतका ही टुकड़ा है । असम्भव नहीं प्रागैतिहासिक कालमें यह भारतसे अविच्छिन्न रूपसे सम्बद्ध रहा हो । अब भी क्या है, अेक ३२, ३३ मीलका तुच्छ समुद्र जिसे मामुली जहाजसे दो घंटेमें पार किया जा सकता है, लंकाको भारतसे पृथक करता है ।

लंकाकी आबादी ? हमारे पौराणिकोंकी धारणाके अनुसार भले ही 'लंका निशिचर-निकट निवासा, वहां कहाँ सज्जनकर वासा' हो, किन्तु सिंहलके अपने अितिहासके अनुसार आजके सारे सिंहली प्राचीन भारत-प्रवासी भारतीय ही हैं और भारतीयोंसे कम सज्जन नहीं। कोअी गुजरातसे तो कोअी बंगालसे। दक्षिण-भारतका द्रविड़-प्रदेश तो अुनका पड़ौस ही है । अिसलिये अुत्तर सिंहल अर्थात् जाफनामें तमिल भाषा-भाषियोंकी भी खासी संख्या है । शेष भाषाओंमें नाना देशोंके नाना निवासी शामिल हैं ।

लंकावासियोंका धर्म ? यूं तो अुनका विश्वास है कि स्वयं भगवान् बुद्ध तीन बार लंका पधारे थे, किन्तु आधुनिक अितिहासज्ञ लंकामें बौद्ध धर्मके प्रचारकी कथा अशोकपुत्र महेन्द्र और अशोकपुत्री संघमित्रासे आरम्भ करते हैं । अशोक-पुत्री स्थविरी संघ-मित्रा द्वारा यहाँसे ले जाकर लगायी गयी बोधिवृक्षकी शाखा संसारके सबसे पुराने अैतिहासिक वृक्षके रूपमें आज भी विद्यमान है । यह बोधि-वृक्ष लंकामें बौद्धधर्मके प्रचारका प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आज लंकाके अधिकांश लोग तथागतके धर्मके ही अनुयायी हैं। जो अबौद्ध हैं वे या तो ईसाई हैं या मुसलमान हैं या जाफनाके हिन्दू शैव।

लंका वासियोंकी भाषा? उत्तर भारतके कई लोग लंकाको दक्षिण-भारतके भी दक्षिणमें होनेके कारण वहाँकी भाषाको भी द्रविड़-परिवारकी कोई अेक भाषा समझे बैठे हैं। सिंहल भाषा अेक आर्य-भाषा है जिसमें तमिळ और यूरोपिय भाषायोंके शब्द अिसी प्रकार शामिल हैं जैसे हिन्दीमें अरबी फारसीके। अुसकी लिपि अपनी है—दक्षिण भारतकी लिपियोंसे मिलती जुलती।

पिछले बीस वर्षोंमें लंकाके बहुतसे विद्यार्थी और विहारोंमें रहनेवाले धर्म-प्रेमी भिक्षु हिन्दीकी ओर आकर्षित होते रहे हैं। जो विद्यार्थी स्कूल-कालेजों में ग्रीक-लेटिन तथा फ्रेंच आदि भाषायें पढ़ते हैं वे अपने पड़ौसकी राष्ट्रभाषा हिन्दीके ज्ञानसे अपनेको अधिक दिन वंचित नहीं रख सकते। यदि रखेंगे तो घाटमें रहेंगे। और जहां तक भिक्षुओंकी बात है वह तो सांस्कृतिक कारणोंसे ही हिन्दी सीखना चाहते हैं—कोई कोई भारतमें आकर बौद्ध धर्म-प्रचार कर सकनेके प्रेमसे भी।

मैंने सिंहल-निवासके अेक सप्ताहके भीतर ही अनुभव कर लिया कि सिंहलमें हिन्दी ज्ञान-प्राप्ति की अितनी अिच्छा है कि अिसके आगे अुसके सीखने-सीखानेकी व्यवस्था ही करनेकी ज़रूरत है। हिन्दी-माहात्म बतानेकी आवश्यकता ही नहीं।

अपनी समितिके श्री. सुशीलकुमार 'साहित्य रत्न' मेरे साथ सिंहल गये थे। उन्हें मैं विद्यालंकार कालेजमें 'हिन्दी' पढ़ानेके लिये वहीं छोड़ आया। अुनका पत्र आया है कि अुनके पास अितने थोड़े ही दिनोंमें ९० शिक्षार्थी हिन्दी सीख रहे हैं। अितनी अधिक जगहोंसे बुलावा आरहा है कि वह हर जगह जा ही नहीं सकते। आशा है शीघ्र ही कोई न कोई साहसी हिन्दी-प्रचारक सुशीलकुमारका अनुकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे। भारतकी अनेक शिक्षण-संस्थाओंमें शिक्षार्थी आते रहे हैं। राष्ट्रीय संस्थाओंमें काशीका विद्यापीठ और बोलपुरका शान्ति निकेतन मुख्य हैं। लंकाके प्रसिद्ध विद्यालंकार कालेजके तीन आचार्य्य-गण स्थविरत्रय—ना. धम्मरत्न, को. पञ्ञाकित्ति, ब. सीवली—किसी समय काशी विद्यापीठमें अध्ययन करते थे। यूं तो सभीको उत्तर-भारतमें किन्तु विशेषरूपसे रहने वाले सभी सिंहलवासियोंको आधुनिक सिंहलके लिये हिन्दी-ज्ञानकी आवश्यकता और अनिवार्यता समझमें आई है जिसका परिणाम यह हुआ कि समय समयपर अनेक सिंहल-वासियोंने हिन्दी पठन-पाठन आरम्भ की। सिंहलके अेक समाचार-पत्रमें कुछ दिन तक क्रमशः "हिन्दी-पाठ" छपते रहे।

पिछले दो तीन वर्षोंमें हिन्दी ज्ञानकी यह पिपासा विशेष बलवती हो अुठी है। वैद्यक पढ़नेवालोंको वैद्यक पढ़नेके लिये हिन्दी अुपयोगी मालूम देती है, संगीत सीखने वालोंको संगीत सीखनेके लिये और सिनेमा-प्रेमियोंको फिल्म देखने और समझनेके लिये। लंकाके अंग्रेजी पत्रोंमें भी हिन्दी शकुन्तला फिल्मका विज्ञापन देख मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ।

सिंहल विश्व-विद्यालयमें आचार्य्य रत्नसूर्य्य और आचार्य्य मलल शेखर सदृश्य अनेक हिन्दी प्रेमी विद्वान हैं, जो चाहते हैं कि सिंहल विश्व-विद्यालयमें हिन्दीको अुसका अुचित स्थान मिले। स्थविर सीवलीजी—जो अिस समय विश्व-विद्यालयमें ही कुछ विद्यार्थियोंको हिन्दी पढ़ाते हैं—सिंहलमें हिन्दी प्रचारके लिये हर तरहसे विशेष प्रयत्न-शील हैं।

हममेंसे बहुत ही कम लोगोंको यह मालूम होगा कि कविवर मैथिलीशरणजी गुप्तकी प्रसिद्ध कृति "यशोधरा" का अनुवाद सिंहल भाषामें प्राप्य है। अिस सुन्दर अनुवादका श्रेय भाअी सीवलीजीको ही है। सारे हिन्दी-संसारकी ओरसे अुन्हें बधाअी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी जो मैं सिंहल गया, तो मेरी यात्रामें मुख्य कारण सीवलीजी ही हुए। उन्होंने ही आग्रह किया था कि हिन्दी-प्रचारके हितमें अिस समय सिंहल-यात्रा अुपयोगी होगी।

मुझे यह लिखते प्रसन्नता होती है कि हिन्दी प्रचारके हितमें मैंने लंकामें रहते जो अेक विशेष प्रयत्न किया था, अुसमें मुझे सफलता मिली है। सिंहलमें 'प्राच्य-भाषोपकार समिति' नामकी अेक सरकारी संस्था है जिसका अुद्देश्य संस्कृत, पालि, सिंहल आदि भाषाओंमें अूंची परीक्षायें लेकर सिंहल वासियोंको डिग्री देना है। अिस संस्थाकी सबसे अूंची परीक्षाका नाम है 'पण्डित' परीक्षा। मैंने अिस संस्थाके मन्त्रीसे अेक प्रार्थनापत्र द्वारा और व्यक्तिगत रूपसे अिसकी कार्य-समितिके कुछ सदस्योंसे मिलकर सुझाव रखाथा कि वह हिन्दी भाषाको भी अपने परीक्षाक्रममें स्थान दें। कोलम्बुसे १३-६ का लिखा हुआ पत्र मिला है जो अिस प्रकार है।

अध्यापन कार्य्यालय
१३-६-४६

गौरवयेन् निवेदनय करमि,
स्वामिन् वहंस,

हिन्दी भाषाव पिलिबन्दव तमुन्नानसे अेवू योजनाव अद अेवूव प्राचीन भाषोपकार समाजमे कारक सभा रैसवीमेदी अिदिरिपत् कान लदिन् १९४८ वर्षय सिट हिन्दी भाषावत समागमे विभाग कट अैतुलत करनलेस निश्चय करगन्न लदी। अे सन्दहा अेदेश पत्रय पिळियेल का अेवन लेस अिल्ला बम्ब रैन्देसिरि सीवली स्थवि-ी वहंसेट मा विसिन् लियु मक् अद यवन लदी।

मीट
प्रा. भा. स. नेकम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रका भावार्थ स्पष्ट है। हमने यह पत्र मूल भाषामें हिन्दी और सिंहलका सामीप्य अथवा दूरी देख सकनेके लिये ही दिया है। १९४७ तकका पाठ्य-क्रम तो प्रकाशित हो चुका है। १९४८ के पाठ्य-क्रममें हिन्दी रहेगी।

हम अपने गौरवार्ह महास्थविर पञ्ञासार नायकपाद-यंवहंसे तथा आदरणीय परवहर वञ्जमान स्थविरयंवहंसे आदि सभी के कृतज्ञ हैं जिन्होंने अिस प्रश्नमें विशेष रस लिया।

कुछ हिन्दी-प्रेमियों को सिंहल भाषाका ज्ञान प्राप्त कर लंकाको अपना कार्य-क्षेत्र बनानेकी आवश्यकता है, लंकाको कुछ देनेके लिये ही नहीं, लंकासे बहुत कुछ लेनेके लिये भी।

ये पांच वर्ष !

'गत पांच वर्ष हिन्दुस्तान और विश्वके अितिहासमें भाग्य-निर्णायक रहे हैं। हरअेक हृदय और मस्तिष्कपर अुनकी गहरी छाप पड़ी है। अिन वर्षोंकी दीर्घयातनाकी सही तस्वीर, जिसमें अपूर्व और महान साहस और श्रेष्ठ प्रयत्नोंको वर्णन, दुख, सन्देह और निराशाकी लम्बी रात, मानव सभ्यता, जो अितने अुत्कर्षके बाद भी, किसी आन्तरिक क्षयके कारण नैतिक आधारके अभावसे, अपनी ही बर्बादीपर तुली हुअी है, कौन बना सकता है? अुभरती हुअी जनताके अुमड़ते हुअे जोशको और अुनके अूपर किये गये क्रुर-दमनको कौन भूल सकता है-कौन अिसकी अनुभूति नहीं कर सकता?'

—पं० जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर

: अनुवादकः—प्रभातसिंह अिनामदार :

शहरके रास्तेपर पत्थर बिछे थे। अेक गाड़ी वहाँसे निकली। वह अेक पत्थरको अुखाड़ती गअी। पत्थर बोला, "अन्य पत्थरोंके साथ मैं यहाँ क्यों पड़ा रहूँ? मैं तो स्वतंत्र जीवन बिताअूंगा।"

अेक लड़का निकला। अुसने पत्थर हाथमें लिया। पत्थर विचारने लगा, "सैर करनेकी मेरी अिच्छा हुअी कि यह प्रवास शुरू हुआ। देखो! यह मैं अूड़ा। बहुत सरल बात है। जो मनसे निश्चय किया, वही होता है।"

धड़ामसे पत्थर काँचकी खिड़कीसे टकराया। काँच फुटा। फुटते फुटते काँच चीख़ अुठा, "अरे! जंगली! तूने ये क्या किया?" लेकिन पत्थरने जबाब दिया, "मेरी राहमें तू आया क्यों? जो मेरी राहमें रोड़ा बनकर आता है, अुसपर मुझे चिढ़ होती है। मेरी सहूलियत पहले,—यही मेरा सिद्धान्त है।"

पत्थर मुलायम बिछौनेपर जा गिरा। अुसने विचार किया, "ठीक है, अुड़नेसे मैं थक गया हूँ। अब मैं घड़ीभरके लिये आराम करूँगा।"

नौकर आया। बिछौनेपरसे पत्थरको अुठाकर खिड़कीके बाहर फेंक दिया। पत्थर रास्तेपर, अपनी असल जगहपर आ गिरा। पत्थर अपने दोस्तोंसे कहने लगा, 'अच्छे तो हो न, मेरे दोस्तो! मैं अभी अुस बड़े घरमें मिलने गया था, पर धनवानोंके साथ रहना मुझे अच्छा नहीं लगा। आम जनताके लिये मेरा दिल तरस रहा था, अिसलिये मैं तुम्हारे पास वापस आया हूँ।"×

× 'प्रस्थान'के अेक अंकमेंसे-अनु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुराही फूट गअी

देहरादून
६ जून १९४६

मेरे मानस के प्रिय बिन्दु
'तुम'

आजकी दोपहरी बड़ी लम्बी हो रही है। यह समय अध्ययन के लिये निर्धारित किया हुआ है। दो चार रोज से गर्मी अधिक महसूस हो रही है। अभीसे एक घंटे पहले यहाँ रिमझिम हुअी है। वातावरण में यौवन की खुमारी जाग पड़ी और मैं 'कज्जाक' पढते पढते सो गया था। अभी अुठकर बाहर बड़े लान से चक्कर काटकर आया हूं। देहरादून की अुँची चोटियाँ जो बादलों से ढँक गअी हैं, बहुत सुंदर लग रही हैं। अुनकी तरफ आँखे अनायास खिंच जाती हैं तब सच कहता हूँ मनकी विस्मृति में 'गौरेला' के जामून के दो पेड़, पनघट और गर्च्चीदार छोटा मकान मधुर स्मृतिको झकझोरता है। गीले सुन्दर पुष्पों को निहारता हूँ, किसी पहाड़िन को देहरादून की गलीसे गुजरते देखता हूँ, तब बरबस अेक आभास होने लगता है जैसे तुम मेरे साथ हो। अिधर के वातावरण में, पहाड़ी तराअियों में मैने बहुतसी अनुभूतियों को संजो कर रखा है। मैं देहरादून ता. २४ को आया हूँ। तबसे मुझे तुम्हारी याद आती थी किन्तु आज सुबह पड़ोस में काम करनेवाले छोकरे ने – 'सावन के बादलों.....' वाला गीत गाया; तब मैं अेक क्षण के लिये तुम्हें पाने लगा। और अभी तुम्हें लिख रहा हूँ।

जो कुछ बटोर रखा है, सबका सब अभी नजर नहीं कर सकूँगा। केवल छोटी सी घटना का जिक्र करता हूँ जो मुझे सफर में 'अनमोलरत्न' के सदृश मिली। किसी की भलाअी करना भी संसार में बुराअी है। सुनो, हम जिस डिब्बे में बैठे थे अुनमें अेक काश्मिरी परिवार भी था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें अेक तरुण बालिका थी जो सब पथिकों की नजरों को अधिक प्यासा कर देती थी। अुन्हीं के समीप अेक महाराष्ट्रियन भद्र महिला थी, यही घटना का मध्यबिन्दु है। बैतुल स्टेशन के बाद अेक छोटे स्टेशन पर मैं पानी पीने अुतर रहा था। गौर से देखा वह महिला अपनी सुराही निकाले यह देख रही थी शायद कोअी अुसे नल से भर ला देगा। मैं पानी पीकर डिब्बे के पायदान पर चढने लगा। लेकिन न जाने कौनसी मानवता मुझमें संचारित होकर अुससे कहने लगी —'दीजिये मैं भर लाता हूँ सुराही।'

शीघ्रतामें सुराहीने दम तोड़ दिया। धमसे मेरी विचार शृंखलाअें भी बिखर पड़ी। यहीं सोचने लगा—क्या मुँह ले जाकर कहूँ? मुझे अपनेपर ही क्रोध और झुँझलाहट आने लगी। मैं भलाअी करने गया था—सुराहीको ही तोड़ बैठा। और तब मुझे बहुत ही ग्लानि महसूस हुअी जब यह मालूम हुआ कि वह सुराही दो छोटे बालकोंकी प्यासके लिये खरीदी गअी थी।

मुह छिपाते चढ़ा। महिलाने देखा। मुँहसे कुछ कहा नहीं परंतु मेरे अन्तर्श्रवणने सुना—सुराही फोड़नेका दोष तो अुसीका है। अब बच्चे पानी कैसे पीयेंगे?—मैं जिस भावनासे सुराही नलपर ले गया अुसकी कद्र किसीने नहीं की। सब मेरी तरफ़ बदली हुअी नजरसे देखने लगे। सुराहीकी कीमत छै आने थीं। लेकिन अुस समय अुसकी अनमोल कीमत थी।

मैंने अुस महिलाकी ओर दो घंटे तक देखा नहीं। मनमें सोच रहा था—कितना बड़ा अपराध हुआ मुझसे आज। मैं अुस वक्त दूसरी सुराही किसी भी मूल्यपर खरीदनेके लिये प्रस्तुत था। सभी छोटे-बड़े स्टेशनों पर मैंने बहुतेरा प्रयत्न किया कि सुराही मोल मिले। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मिली नहीं—अंतिम क्षण तक नहीं मिली। मैंने अपराधका दंड लेना प्रारंभ किया। प्रत्येक स्टेशनपर बालिका तथा बालकको जल पिलाकर अपराधको मिटा रहा था।

मेरे अिस अपराधमें किसीकी आँखोंने अपने मनकी सहृदयता दर्शाअी। शायद मुझपर रहम-वर्षा की गअी। और मैंने यह देखा जब मैं स्टेशनपर पानी लेनेके लिये अुतरता-सा अुसे दिखाअी पड़ता था तब वह अपने सुराहीसे पानी अुन बालकोंको देती थीं—और मैं भूला नहीं अुसने मेरे अपराधको महिलाके समक्ष बेदाग साबित करनेका प्रयास किया।—'सुराहीकी मिट्टी कच्ची होती है। हाथमें अुठाकर रखनेसे ही टूट जाती है—'तब मैंने देखा महिला सुराहीकी घटनाको भूलने लगी थी। फिर अुसने सुराहीका जिक्र छेड़ा नहीं। मेरी ग्लानी धीरे धीरे घटने लगी। और मधुर स्मृतियोंके डोरे नये जाल बुनने लगे। मैं खोने लगा था बीती सुखद् घटनामें! हृदयके अन्तर्गत अदृश्य अपनापन खेल रहा था और अुसके नीले नयनोंने अनभूतियोंका नील सागर मेरे मस्तिष्कके आगे फैला दिया। और अुस क्षणको मैंने जो मधुर रससे सुराही भरली अुसको स्मृति मंडारमें रख छोड़ा है। अुसीके मधुर कण तुम्हें भेज रहा हूँ। मुझे लगता है तुम्हारी प्यास अधिक तीव्र न बन अुठे।

शायद पांच-दस मिनिट लेटनेका प्रयास कर रहा हूं।

तुम्हारे यादकी याद

कृष्णकुमार

(काँग्रेस समाजवादी शिबिर देहरादून-से मित्रको लिखा हुआ अेक मित्रका पत्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्यता, दायित्व और पुरस्कार

: श्री. सम्पूर्णानन्द, अर्थ और शिक्षा मंत्री, संयुक्तप्रांत

योग्यता और पुरस्कारके सम्बन्धमें आजकल काफी चर्चा चल पड़ी है और हमारे सामने यह अेक प्रश्नचिन्ह बन गया है। श्री सम्पूर्णानन्दजीने अिस सम्बन्धमें अपने महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये हैं, जो विशेष माननीय हैं।

आजसे कअी वर्ष पहिले मैंने अिस विषयपर दिल्लीके 'हिन्दुस्तानमें' अेक छोटासा निबन्ध लिखा था। आज प्रान्तोंमें अुत्तरदायी सरकारें स्थापित हो गअी हैं सम्भव है। शीघ्र ही केन्द्रमें भी कोअी राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो जाय और कुछ दिनोंके बाद शासन विधानके अनुसार सारे देशमें अुत्तराअी शासन ही अवशिष्ट रह जाय। स्वाधीन भारतके सामने बहुतसे प्रश्न होंगे। अुनमें कर्मचारियोंके वेतन या पुरस्कारके प्रश्नको भी स्थान देना होगा। आज भी अिस प्रश्नका बड़ा महत्व है, किसी न किसी कोनेसे न वेतन पानेवालोंके द्वारा हड़तालकी धमकी सुनाअी देती रहती है। केन्द्रीय सरकारने अिस प्रश्नपर विचार करनेके लिये अेक कमीशन नियुक्त किया है, प्रांतीय सरकारें भी अपने अपने ढंग पर समस्यासे अुलझ रही हैं। लड़ाअीके दिनोंमे महँगी बहुत बढ़ गअी, खानेकी सामग्रीका मूल्य प्रायः दो तीन गुना बढ़ गया। अिस अनुपातसे वेतन बढ़ाना कठिन था। सरकारको यह आशंका थी——और आशंका निराधार नहीं थी——कि यदि वेतन बढ़ा दिया गया तो युद्धके समाप्त होनेपर जब सस्ती हो जायगी तब अुसको घटाना सम्भव न होगा। अिसलिये वेतन बढ़ानेके स्थानमें 'महँगीका भत्ता दिया गया। भत्तेकी दर सबके लिये अेक-सी नहीं हैं। ६०) या अिससे कम मासिक पानेवाले १४) प्रतिमास 'महँगीका भत्ता' के नामसे पाते हैं, अिससे अधिक वेतनवालोंको वेतनका १७·५ प्रति शत 'महँगी भत्ता' के नामसे मिलता है। अब चारों ओरसे यह पुकार अुठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है कि भत्तेको मिला कर स्थायी वेतन बढ़ा दिया जाय । व्यवहारिक दृष्टिसे २००) वालों तकको कम वेतनवाले मान लिया गया है ।

भत्तेका यह विधान न्याय्य नहीं हैं । मँहगीका प्रभाव मुख्यतया भोजन, वस्त्र और घर के किराये पर पड़ता है । जो थोड़ी आमदनीवाला होता है उसकी आयका बहुत बड़ा भाग भोजन, किराया और वस्त्रमें लगता है । ज्यों ज्यों आय बढती है त्यों त्यों अिसका अनुपात घटता है । १५) कमानेवाला खाने कपड़े और किरायेमें १२) व्यय करता होगा परन्तु १५००) पानेवालेके अिन बातोंमें १२००) व्यय नहीं होते । अिसलिये युद्धका कष्ट बड़ी आमदनीवालोंको अपेक्षाकृत कम पड़ता है । पेट्रोल मिलना कठिन हो गया, नौकरोंके वेतन बढ गये, लड़िकयोंके दहेज में अधिक देना पड़ गया, यह सब ठीक है पर अिन चीजोंके बिना जीना सम्भव था, जब कि अन्न न मिलनेका अेकमात्र परिणाम मृत्यु था । किराये पर कंट्रोल था, कपड़ा अलभ्य-सा हो रहा था । अिसलिये पैसा और अिच्छा रहते हुअे भी कोअी धनवान अिस मदमें बहुत रुपया नहीं लगा सकता था । परन्तु खानेकी समस्या कठिन थी । मूल्यपर नियंत्रण था, बड़े बड़े नगरोंमें राशनकी व्यवस्था थी, अिसलिये गरीब अमीर अेक समान हो गये थे । कोअी व्यक्ति चोर बाजारसे कुछ मोल लेता होगा, किसीके घर फल, दूध, घीकी कुछ अधिक खपत होगी परन्तु मुख्य रुपसे कम और अधिक वेतन पानेवालोंको परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के अूपर प्रायः अेक सा व्यय करना पड़ता था और अबतक है । अिसलिये कम वेतनवालोंके अनुपाततः अधिक भत्ता मिलना चाहिये । यदि १५) पानेवाले चपरासीको १४) मिले तो अुसको बहुत सुविधा हो गअी परन्तु ३०, ४०, या ५०) रुपया पानेवाले क्लर्कके लिअे यह भत्ता बहुत कम है ।

अस्तु, यह तो अस्थाअी परिस्थिति है । अेक ओर तो धीरे धीरे कुछ न कुछ सस्ती होगी, दुसरी और वेतन वृद्धि होगी, अिस जगह मैं अिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातोंकी ओर केवल संकेत करना चाहता था। मेरा अुद्देश्य यह है कि हम वेतन के प्रश्नपर गम्भीर विचार करें और अिसके लिये कोअी सिद्धांत निश्चित करें। आजकल या तो कोअी सिद्धांत है ही नहीं या यदि है तो वह भ्रांत और संदिग्ध है।

कदाचित कुछ लोग यह समझते हों कि मनुष्यको अुसकी योग्यताके अनुसार पुरष्कार दिया जाता है। यह भ्रम है। साधारणतः समाज योग्यताका नहीं प्रत्युत कामका पुरस्कार देता है। नाम कुछ भी हो परंतु जो दिया जाता है वह अेक प्रकारसे पारिश्रमिक होता है। विश्वविद्यालयका अध्यापक अिसलिये रुपया नहीं पाता कि वह विद्वान है वरन् अिसलिये कि समाज अैसा मानता है कि वह अध्यापन या शोधके द्वारा समाजकी सेवा कर रहा है और अिस सेवाका मूल्य दिया जाना चाहिये अन्यथा अुससे वंचित होना पड़ेगा। परन्तु सबको बराबर पुरस्कृत नहीं किया जाता। अिससे स्पष्ट है कि समाजकी दृष्टिमें सबकी सेवाओंका महत्व बराबर नहीं है। पुरस्कारोंके न्यूनाधिक्यकी कसौटी सेवाका तारतम्य है पर अिस तारतम्यकी नाप तौल कैसे की जाय?

अैसा कहा जाता है कि जिस काममें अधिक दायित्व हो अुसका पुरस्कार अधिक होना चाहिये। दायित्वोंकी कल्पित सीढ़ी बना ली गअी है और अुसके जोड़की सीढ़ी पुरस्कारोंके लिये खड़ी कर दी गअी है। पहली सीढ़ी कल्पित अिसलिये है कि दायित्वोंकी ठीक ठीक तुलना नहीं की जा सकती। बहुधा जब अेक अधिकारीको दूसरा काम सौंपा जाता तो वह यह कहता है कि मेरा दायित्व बढ़ गया, मुझे अधिक वेतन मिलना चाहिये। अैसा कहनेका क्या अर्थ है? क्या अुसका पहलेवाला काम कम दायित्वका, अर्थात समाज के लिये कम अुपयोगी था? यदि क्लर्क डिप्टी कलक्टर बना दिया जाय तो वह अधिक वेतन मांगेगा, परन्तु क्या समाजका काम क्लर्कोंके बिना चल सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दफ्तरका बाबू अधिक वेतन पाता है परन्तु क्या अुसका दायित्व अुस व्यक्तिसे अधिक है जो लाअिन के किनारे खड़ा होकर रेलको रंगीन झंडी दिखलाता है? कुछ प्रकार के लोग अधिक मिलते हैं ओर कुछ कम, पर कम मिलनेसे ही किसीके दायित्व को कैसे बड़ा मान लिया जाय? अिन्जिनियर कम मिलते हैं पर क्या सड़क बनवाने वाले अिन्जिनियर का दायित्व अुस अिन्जिन चलानेवालेसे अधिक है जो पुलपरसे रोज सैकड़ों मनुष्योंसे भरी गाड़ीको ले जाता है, थानेदार के दायित्व का अंकन किस प्रकार प्रामीण अध्यापक के अूपर किया जाय।

अिस सब कथन का यह तात्पर्य नहीं है कि समाज के प्रति सबका दायित्व बराबर है। राजपुरुष, सेनापति, अिन्जिनियर की जरासी भूल से समाजकी धन-जन-की अपार क्षति हो सकती है। अैसे लोगोंका दायित्व बहुत बड़ा है। परन्तु दायित्वों को तौला नहीं जा सकता। अमुक का दायित्व अमुक से अितना गुना अधिक है कहना मुर्खता है, और अिस निराधार कथन के आधारपर पुरस्कारोंको बिछाना और भी मुर्खता है। समाज को चाहिये कि असंभव को संभव बनाने के प्रयत्न को छोड़कर पुरस्कारोंको दूसरी ही नींवपर स्थित करे।

सबसे पहिले तो यह मान लेना चाहिये कि सभी मनुष्योंकी कुछ मौलिक आवश्यकताअें होती हैं, सबको ही निश्चित मात्रामें भोजन और वस्त्र जैसी चीजें चाहिये। समाजको देश, काल और अपनी आय देखकर अिन आवश्यकताओंकी पूर्तिका मूल्य निर्धारित करना चाहिये, गर्म देशमें और ठंडे देशमें भोजन और वस्त्रका व्यय अेक-सा नहीं होता; धनिक समाजमें बारीक कपड़ा पहिना जा सकता है और पक्के मकान बन सकते हैं, निर्धन समाजमें मोटे कपड़े और कच्चे घरसे काम करना होगा। अिन बातोंको ध्यानमें रखते हुये कुशल वैद्य, अर्थशास्त्री, मनोविज्ञानवेत्ता और राजपुरुष मौलिक पुरस्कारका निर्णय करेंगे जो सबको मिलना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिन मौलिक आवश्यकताओंके अतिरिक्त कुछ व्यक्तिगत आवश्यकताअें भी होती हैं। यदि अुनकी पूर्ति न हो तो जीवन कुछ सूना सूना-सा लगता है। काममें मन नहीं लगता, किसीको गाने बजानेका शौक है, किसीको थियेटर सिनेमाका, किसीको सैर करनेका, किसीको पुस्तक-संग्रहका, किसीको अधिक स्वादु खाना जँचता हैं, कोअी स्त्री आभूषण पसन्द करती है, कोअी साड़ी। अिन बातोंका लिहाज करके वेतनोंमें थोड़ा बहुत अन्तर रखना होगा। यह मान लेना होगा कि जिन देशोंमें शिक्षाकी अधिक आवश्यकता होती है अुनमें लोगोंके शौक अपेक्षाकृत अधिक संस्कृत और मँहगे होंगे। पर अिस प्रकारका अन्तर बहुत बड़ा नहीं हो सकता। अधिकतम वेतन न्यूनतम वेतनसे दस बीस गुनासे अधिक नहीं हो सकता। चपरासीका १५) और वाअिसरायका २५०००) अवैज्ञानिक और अक्षम्य हैं। जहाँतक मैंने सुना है अपनेको समाजवादी न कहते हुअे भी स्वीडिनने कुछ अैसी ही व्यवस्था की है।

यदि बच्चोंके भरण-पोषण पर और शिक्षण तथा बेकारी और बुढ़ापेमें भरणका भार राज अपने अूपर लेले जैसा कि होना चाहिये तो फिर रुपया जमा करनेका प्रलोभन भी नहीं रह जाता।

अिस प्रकार कर्मचारी दस पांच वर्गोंमें बाँटे जा सकते हैं, परन्तु कुछ अैसे लोग होंगे। जिनके कामोंका प्रभाव लाखों समसामयिक मनुष्योंपर ही नहीं वरन् आनेवाली पीढ़ियोंपर भी पड़ेगा। अुदाहरणके लिये वैज्ञानिक शोधकर्ताओं या राजमन्त्रियोंको लीजिये। समाजको अैसी सुविधाअें देनी होंगी जिनमें यह निर्विघ्न रूपसे लोकहितकी बात सोच सकें और अपना काम कर सकें। अिनके लिये अच्छे घर, नौकर, सवारी आदिका प्रबन्ध करना समाजका कर्तव्य है। अैसे व्यक्तिको अपने घरमें झाड़ू लगाने या भीड़से भरे डब्बेमें यात्रा करनेके लिये विवश करना मूर्खता है। अिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम मितव्ययिता नहीं आत्महत्या है। लोकतन्त्रमें यह दोष बतलाया जाता है कि अुसमें विशिष्ट व्यक्तियोंको स्थान नहीं मिलता। सब बराबर हैं कहना अेक सीमातक तो ठीक है परन्तु वस्तुतः व्यक्ति व्यक्तिमें भेद है। यह भेद अितना नहीं है जितना आजकल मान लिया गया है परन्तु अुसके अस्तित्वसे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। जब लोकतन्त्रके नामपर अतिमात्र व्यवहार होने लगता है तभी हिटलर जैसे अतिपुरुषोंको अूपर अुठनेका अवकाश मिलता है। अैसे अवसरों पर जो लोकतन्त्र देश अपनी रक्षा कर पाते हैं अुनकी विजय का अेकमात्र रहस्य यह होता है कि वह लोकतन्त्र को हटाकर अपने विशिष्ट पुरुषों को पूरा अधिकार दे देते हैं। पिछले महायुद्ध का अितिहास अिसके अनेक प्रमाण देगा। जो समाज अुन्नत रहना चाहता है अुसको अपने विशिष्ट व्यक्तियोंसे काम लेना सीखना होगा।

कुछ अैसे भी लोग होते हैं जो पुरस्कार के अिस प्रबन्ध के भीतर नहीं लाये जा सकते। यदि लोग धर्मोपदेष्टाके अुपदेश या किसी महा कलाकार की कलाका रसास्वाद करना चाहते हैं तो अुसका मुँहमाँगा पुरस्कार देना ही होगा। यदि कोअी कुशल चिकित्सक मनुष्य की पीड़ाका लाभ अुठाना चाहता है तो अुसकी फीस देनी ही होगी। परन्तु अेक तो अैसे लोग थोड़े ही होंगे, दूसरे हमको यह आशा करनी चाहिये कि चारों ओरके लोकसंग्रहात्मक वातावरणका अिसपर भी प्रभाव पड़ेगा।

—'संसार' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियोंकी कलमसेः—

दरख्वास्त

श्री. भाऊचन्द प्रधान, कोविद

आज यह पहली बार ही मुझे अेक दरख्वास्त लिखनी पड़ी। मैं कमरेमें बैठा कुछ सोच रहा था। दरवाजा खटखटाते हुअे किसीने बाहरसे आवाज दी–बाबूजी। मेरा ध्यान भंग हुआ। मैं झट बोल अुठा—भीतर आअिये। दरवाजा खोल अेक बूढ़ेने प्रवेश किया। वह दरवाजेके नजदीक ही जमीनपर बैठ गया और हाथ जोड़ कर बोला–आपको अभी फुर्सत है? "जरूर," मैंने कहा। और अुसके मुँहकी ओर ताकने लगा कि वह क्या कहना चाहता है।

वह जिस कामके लिये मेरे यहाँ आया था, कमरेके भीतर बैठते ही सब भूल गया। दो मिनट बाद अुसने मुँह खोला। पर 'अ.....अ' करके ही फिर बंद कर लिया। मैं ताज्जुब में था कि आखिर बात क्या है। वह कुछ बोलना चाहता था पर शब्द भीतर ही भीतर हृदयमें लुप्त हो जाते थे। आखिर मैंने कहा, 'कहिये तो सही, बात क्या है जो आप रुक गये? अुसने कहा, कुछ कष्ट देने आया हूँ अिसीलिये.....।' 'हाँ, हाँ, कहिये' मैंने झट कहा। अुसने आसू गिराते हुअे कहा, 'बाबूजी' आज घरमें मेरा बच्चा मर गया।' अितना सुनते ही मेरा चेहरा पीला पड़ गया। हृदय दुःखसे भर गया। वह कहता गया, 'आप तो जानते ही हैं कि आजकल कण्ट्रोलका जमाना है। मैं कपड़ेकी दुकान में अुसके कफनके लिये गया था। दुकानदार कहता है, 'पर्मिट ले आओ'। मैं रोया, मिन्नतें कीं, सब बेकार। मैंने चौगुणा दाम देनेका वादा किया। तो भी वह न माना। दूकानदार हर बार कहता गया मैं जानता हूँ कि तुम्हारे घरमें क्या हुआ है। पर क्या करूँ कण्ट्रोल है। अगर किसीने पकड़ लिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझलो हमारी दूकान बन्द हो गअी । हमें भी बड़े घरकी हवा खानी पड़ेगी ।

'बाबूजी, मैंने सोचा ठीक ही है। मुझ जैसोंके लिअे अिनके दिलमें हमदर्दी कहाँसे आये । हम ठहरे गरीब, अनपढ़ और वे ठहरे धनी और विद्वान। आखिर मैंने सोचा कि अिससे रोना–धोना बेकार ही है। पत्थर पिघल जायें पर अिनके दिल न पिघलेंगे । सोचा आपके यहाँ जाकर अेक दरख्वास्त लिखवालूँ ; और अिधर आया । अब आपकी ही कृपा.....।' मैंने कागज निकाला। मुझे पता न था कि दरख्वास्त किस तरह लिखी जाती है । बहुत देर सोचता रहा । अगर कह दूँ कि मुझे दरख्वास्त लिखनी नहीं आती है तो अुसके दिलमें चोट लगेगी, और अगर लिखूँ तो कैसे ! मैंने कअी बार अपने स्कूलको धिक्कारा ।

झट मेरी दृष्टि आलमारीमें अेक पुस्तक पर पड़ी–'लेटर राइटिङ्ग' । मैं आनन्दसे फूल अुठा । झट अुसे निकाला और पन्ना अुलटा । पहले ही पन्नेमें लिखा था ' आफिसियल लेटर्स' । मैं अुछल पड़ा । ठीक, अुसीकी नकलसे अेक दरख्वास्त लिख दी । दरख्वास्तके अन्तमें मैंने अुसे अपना हस्ताक्षर करनेको कहा । अुसने कहा, ' मेरे लिये तो काला अक्षर भैंस बराबर है' । 'क्या करूँ, बाबूजी, बचपनमें पढनेसे अिन्कार किया था । अुसीका पाप भोग रहा हूँ' ।

अुसने दरख्वास्त अुठाकर प्रणाम करते हुअे अपना रास्ता पकड़ा । मैंने सोचा यह दुखी है अिसलिये कि पढ़ा नहीं । और मैं–पढ़कर भी दुःखी हूँ कि अेक दरख्वास्त नहीं लिख सकता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी प्रचार परीक्षायें—

आगामी प्रचार परीक्षायें ता. १४–१५ सितम्बर ४६ को होंगी। परीक्षाओंका कार्यक्रम आगे दिया गया है।

आगामी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाका कार्यक्रम—

शनिवार ता. १४-९-४६	१०॥ से १॥.	१ ला	प्रश्नपत्र आधुनिक पद्य
„ „	२॥ से ५॥	२ रा	„ „ गद्य-निबंध
रविवार १५-९-४६	१०॥ से १॥	३ रा	„ व्याकरण, भाषाविज्ञान
„ „	२॥ से ५॥	४ था	„ आधुनिक विचार
सोमवार १६-९-४६	१०॥ से १॥	५ वाँ	„ प्राचीन पद्य
„ „	२॥ से ५॥	६ वाँ	„ नाटक तथा कथा साहित्य
मंगलवार १७-९-४६	१०॥ से १॥	७ वाँ	„ सा. आ. और अि.
„ „	२॥ से ५॥	८ वाँ	„ निबंध और– पत्रकार कला

प्रश्न पत्रोंकी संख्या—

आगामी परीक्षाओंमें प्रवेशके दो और परिचयके तीन प्रश्न पत्र होंगे।

पाठ्य पुस्तक–मुहावरे और कहावतें—

'मुहावरे और कहावतें' आपके पुस्तक प्रवेश, परिचय और कोविदके लिये पाठ्य पुस्तक है। अिस पुस्तकमें तीनों परीक्षाओंके लिये अलग अलग मुहावरे और कहावतें दी गई हैं। अिस सम्बन्धके प्रश्न अिसी पुस्तकपर आधारित होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविदमें लेखन-कार्य—

कोविद परीक्षार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य किया गया है। प्रत्येक लेख कम-से-कम ३ पृष्ठका होना चाहिये।

जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं उन्हें काफी अंकोंकी हानि उठानी पड़ती है। अिसलिये परीक्षार्थियोंको लेख अवश्य लिखना चाहिये।

आगामी परीक्षाके लिये निबन्धके विषयोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबन्ध लिख सकते हैं। अिनके अलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं—

१. विज्ञान और मानव २. पराधीन सपने सुख नाहीं ३. हमारे गाँवोंकी समस्यायें ४. समाज और स्त्री ५. राष्ट्रलिपि और अुसकी योग्यता ६. काम वही कर सकता है जिसके पास समय नहीं ७. साहित्य और समाज ८. गरीबोंका भगवान तो रोटी है ९. जनता जनार्दनका सेवक-गान्धी १०. हमारी सामाजिक कुरीतियाँ ११. गान्धीजीका रचनात्मक कार्यक्रम १२. समाचार-पत्र

परीक्षा फल—

सितम्बर ४६'में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका परीक्षाफल ता० ५ नवम्बर को प्रकाशित होगा।

केन्द्र व्यवस्थापकोंसे—

आप आगामी परीक्षाके सभी आवेदनपत्र भेज चुके हैं। अपने यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंके नाम और योग्यता साथमें भेजे गये सिफारिश-पत्रपर भरकर हमारे पास वापसी डाकसे भेज दें। साथ ही जिनके नामकी आप सिफारिश करें अुनसे स्वीकृति-पत्र भी भरवाकर भेजें। अिसके लिये भी छपा पत्रक भेजा जा रहा है। निरीक्षकोंकी नियुक्तिकी सूचना समयपर आपके पास पहुँच जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैंतीससे कम परीक्षार्थीवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रति दिनके लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा। प्रारंभिककी परीक्षा आधे दिन ही होती है, अिसलिये आधे दिन तक ही निरीक्षककी नियुक्ति करनी चाहिये। अैसे निरीक्षकको पुरस्कार भी आठ आना ही दिया जा सकेगा।

प्रवेश और परिचयकी मौखिक परीक्षा :

प्रवेश और परिचयकी मौखिक परीक्षाकी व्यवस्थाका सारा भार केन्द्र-व्यवस्थापकोंपर रखा गया है। वे ही अिसके लिये परीक्षककी नियुक्ति और तारीख मुकर्रर करें। परीक्षकके लिये किसी योग्य स्थानीय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा। प्रवेशकी मौखिक परीक्षा साधारण परीक्षासे कुछ रोज पहले ही हो जानी चाहिये और प्राप्तांक वर्धा-कार्यालय भेज देना चाहिये। जहाँ आवश्यक हो वहाँ साधारण परीक्षाके साथ भी अिसके लेनेकी व्यवस्था की जा सकती है। परिचयकी मौखिक परीक्षा छपे कार्यक्रमके अनुसार साधारण परीक्षाके साथ ही ली जाय।

प्रवेश और परिचयकी अिस मौखिक परीक्षाकी सारी व्यवस्था आप शीघ्र करें। अिसके लिये प्राप्तांक भरनेके पत्रक भेजे जा रहे हैं। ये प्रवेश और परिचयके मौखिक परीक्षकके लिये हैं। मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही आप प्राप्तांक-सूची सील-मुहर करके हमारे पास भेज दें। अिस परीक्षाकी सूचना सब प्रवेश और परिचयके परिक्षार्थियोंको दे दें।

नियमानुसार प्रवेशकी मौखिक परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक १५ रखा गया है। और परिचय परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक २० रखा गया है।

कोविदकी मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना समयपर अलगसे भेजी जायगी।

परीक्षामें न बैठावें—

प्रत्येक केन्द्रमें सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियोंके 'प्रवेशपत्र' यथा समय केन्द्र-व्यवस्थपकोंके पास भेज दिये जावेंगे। किन्हीं कारणोंसे जिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंके आवेदन पत्र अस्वीकृत होंगे उनके प्रवेशपत्र नहीं भेजे जावेंगे। केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे प्रार्थना है कि 'प्रवेशपत्र' के बिना किसी परीक्षार्थीको परीक्षामें सम्मिलित न करें।

शुल्क सुरक्षित—

साधारणतया शुल्क वापस नहीं किया जायगा और न आगे के लिये सुरक्षित ही रखा जायगा। लेकिन आकस्मिक बीमारीके कारण परीक्षामें न बैठ सकनेकी सूचना **परीक्षा तारीख के बाद केन्द्र व्यवस्थापकद्वारा अेक सप्ताह तक डाक्टर के प्रमाण-पत्र के साथ** परीक्षा मंत्रीके पास आनेपर शुल्क आगेकी केवल अेक परीक्षाके लिये सुरक्षित रखा जा सकेगा।

केन्द्रपरिवर्तनः—

साधारणतया केन्द्र परिवर्तन स्वीकार न किया जायगा। विशेष परिस्थितिमें प्रबल कारण सूचित करनेपर परीक्षामंत्री परीक्षा-केन्द्र परिवर्तन स्वीकृत कर सकेंगे। अिसके लिये विशेष कारण दिखलाते हुये अेक रुपया शुल्क के साथ **२५ अगस्त से** पहले परीक्षार्थीको प्रार्थनापत्र समिति-कार्यालय वर्धामें पहुँचाना चाहिये।

मनीआर्डर द्वारा भेजे हुअे अेक रुपया परिवर्तन शुल्ककी पोष्टकी रसीदके साथ आवेदन-पत्र अवधिके भीतर न मिलनेपर कोअी कार्रवाअी न की जा सकेगी। आवेदन-पत्रमें स्थानीय क्रमांक लिखना अनिवार्य होगा।

केन्द्र परिवर्तन आवेदन-पत्र का नमूना

श्री परीक्षा मंत्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.

प्रिय महाशय,

मैंने _____ केन्द्रसे _____ परीक्षा का आवेदन-पत्र भरा है। मेरी स्थानीय क्रम संख्या _____ है। अब मैं विशेष कारणसे _____ केन्द्र से परीक्षा देना चाहता हूँ। कृपया मेरा केन्द्र परिवर्तन करें। साथमें आठ आने शुल्क (मनिआर्डर) भेज रहा हूँ।

ता० _____ हस्ताक्षर परीक्षार्थी.....

परीक्षार्थी का केन्द्र परीवर्तन किया जाय।

हस्ताक्षर केन्द्र व्यवस्थापक..... ... .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

	परीक्षाका नाम	समय १०½ से १½	समय २½ से ५½
शनिवार— १४-९-४६	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २

रविवार— १५-९-४६	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र ३	
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	

मंगलवार— १७-९-४६	कोविद	प्राचीनपद्य, समय ७½ से १०½
बुधवार— १८-९-४६	कोविद	अर्दू ७½ से १०½
	परिचय	अर्दू ७½ से १०½

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता. १६।९।४६ सोमवारको सवेरे होगी।

प्रवेशकी मौखिक परीक्षा अगर पहले न ली जा सकी हो तो शनिवार ता. १४।९।४६ या रविवार ता. १५।९।४६को सुविधानुसार ली जा सकती है।

मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविद परीक्षाके लिये केन्द्र—

कोविद परीक्षा समिति द्वारा केवल स्वीकृत स्थायी केन्द्रोंमें होगी। अन्य जिस केन्द्रमें ५ या अससे अधिक कोविदके परीक्षार्थी होंगे वहाँ कोविदके लिये अस्थायी केन्द्र स्वीकृत किया गया है।

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	नाम-केन्द्र	क्रमांक-केन्द्र
सिन्ध	नरसपूर	८५१
गुजरात	लीम्बासी	८५०
,,	हलवद	८५२
,,	वेजपूर	८५४
,,	वढवाणशहा	८५५
,,	बाँकानेर	८५६
महाराष्ट्र	सप्तर्षि-कवठे	८५३
विदर्भ-नागपूर	पळसगांव-जाट	८४९
,,	पुसद	८५७
अन्य प्रान्त (मालवा)	मंदसौर	८४८

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	केन्द्र प्रचारक	क्रमांक
बंगाल	श्री संजीव प्रसाद सेन,	चटगांव	८२८
गुजरात	,, गंगा शंकर सी. महेता,	बडौदा	८२४
महाराष्ट्र	,, सदानंद रामकृष्ण आपटे	नासिक	८३०
,,	,, केशव लक्ष्मण शुक्ल	नंदूरबार	८३१
,,	,, नंद सुदर्शन चतुर्वेदी	नालिरावाद	८३३
बम्बअी	,, गोविन्द रामकृष्ण महाजन	बम्बअी	८३३
विदर्भ-नागपुर	,, रतनलाल भैरवलाला काश्यप	नागपुर	८२९
,,	,, रतनलाल बाजोरिया	वर्धा	८३२
,,	,, रामचंद्र विनायक हणगांवकर	नागपुर	८३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंके लिये :

ग़लतियाँ

निर्देशक—विष्णुप्रसाद 'बिंदु'

गलतियाँ अशुद्ध रूपमें:—	गलतियाँ शुद्ध रूपमें:—
(१) हम स्टेशन जाता है ।	(१) हम स्टेशन जाते हैं ।
(२) वो मेरा मित्र है ।	(२) वह मेरा मित्र है ।
(३) मेरा भाअी को मिलो ।	(३) मेरे भाअीको मिलो ।
(४) वह आदमी को भेजो ।	(४) अुस आदमीको भेजो ।
(५) अि पुस्तकका बार आना दिया ।	(५) अिस पुस्तकके बारह आने दिये ।
(६) आजे हडताल हय ।	(६) आज हड़ताल है ।
(७) मेरी कसूर है ।	(७) मेरा कसूर है ।
(८) तुमेरी फर्ज क्या है !	(८) तुम्हारा फ़र्ज़ क्या है ?
(९) मेरी साथ राष्ट्रभाषा में बोलो ।	(९) मेरे साथ राष्ट्रभाषा में बोलो ।
(१०) अिन्दुका आवाज मीठा है ।	(१०) अिन्दु की आवाज मीठी है ।
(११) रमेश ने मार खाया ।	(११) रमेश ने मार खायी ।
(१२) तुम कीधर गया था !	(१२) तुम कहाँ गये थे ।
(१३) मै मेरे घर जाता हुँ ।	(१३) मैं अपने घर जाता हूँ ।
(१४) अुसको फाँसीकी शिक्षा दे गअी ।	(१४) अुसको फाँसीकी सज़ा दी गयी ।
(१५) मेरे में हिम्मत है ।	(१५) मुझमें हिम्मत है ।
(१६) अुसको दो लडका हैं ।	(१६) अुसके दो लड़के हैं ।
(१७) तुमेरी ध्यान में कअी नही आता ।	(१७) तुम्हारे ध्यानमें कुछ नहीं आता ।
(१८) हरेकने सत्य बोलना चाहिअे ।	(१८) हर अेकको सच बोलना चाहिअे ।
(१९) यह लड़की को जाने दो ।	(१९) अिस लड़कीको जाने दो ।
(२०) मृत्यु हो गया किन्तु अुसका आत्या अमर है ।	(२०) मृत्यु हो गअी लेकिन अुसकी आत्मा अमर है ।
(२१) चिडिया को दोआँखें होती है ।	(२१) चिड़ियाकी दो आँखें होती हैं ।
(२२) हम आपको पहचानता है ।	(२२) हम आपको पहचानते हैं ।
(२३) नौ बजे बिस्तर में लोट गया ।	(२३) नौ बजे बिस्तरपर लेट गया ।
(२४) वहाँ बोहोत जने हाज़र थे ।	(२४) वहाँ बहुत जन हाज़िर थे ।
(२५) काग्रेसने ठराव पसार कीया ।	(२५) काँग्रेसने ठहराव मञ्जूर किया ।
(२६) चारे बाजू आग लगी ।	(२६) चारों ओर आग लगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिके तारका पता—
'राष्ट्रभाषा' वर्धा।

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

वर्धा कार्यालयसे

पुस्तक विभाग—

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

—अगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है। गत प्रश्नपत्रोंके देखनेसे यह ज्ञात हो जाता है कि प्रश्नपत्र किस प्रकारका आनेवाला है।

प्रारम्भिक प्रवेश, तथा कोविद परीक्षाके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं। परीक्षाओंके अेक समयके प्रश्नपत्रोंके संच (सेट) तैयार किये गये हैं। प्रत्येक संचका दाम ।-) आने है। प्रत्येक परीक्षाके फुटकर प्रश्नपत्र भी मिलता हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसे है। प्रश्नपत्रोंका संच अथवा फुटकर मँगाते समय आवश्यक मुल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये। 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षाके संचका दाम ॥-) आने है।

नया संस्करण

हिन्दी—मराठी स्वबोधिनी का नया संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण छपकर तैयार है। कीमत बारह आने, डाक खर्च साढे पांच आने।

हमारा नया स्टाक

१ मुकुल	सुभद्राकुमारी चौहान	मूल्य १॥)	डा० ।-
२ त्रिधारा	माखनलाल चतुर्वेदी	मूल्य १)	डा० ।-
३ कभी न कभी	वृन्दावनलाल वर्मा	मूल्य २॥)	डा० ॥-
४ विचार और वितर्क	हजारीप्रसाद द्विवेदी	मूल्य ३)	डा० ॥=
५ डॉ० कोटणीसकी अमर कहानी	राजेश्वर गुरु	मूल्य १।)	डा० ।
६ दुर्गावती	"	मूल्य ।-)	डा० ।

प्रबन्ध सम्पादक—हृषीकेश शर्मा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा।
मुद्रक—गोविंद भास्कर जोशी, भास्कर छापखाना (राठी मार्केट) वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५

जुलाई

अंक १

राष्ट्रभाषा

"भारतका मुख्य सवाल गरीबी है और गरीबी कोरी भावुकतासे नहीं मिटेगी। विजयका सेहरा अुन्हींके सिर बंधता भी है, जो साहससे कार्यक्षेत्रमें बढ़ते हैं। परिणामसे भयभीत रहनेवाले कायरोंके भाग्यमें सफलता कहां? महान वस्तुओंकी प्राप्तिके लिये महान विपत्तियोंसे होकर गुजरना ही पड़ता है। असली चीज़ तो सत्ताका हाथमें आना है।"

—जवाहरलाल नेहरू

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	राष्ट्रभाषा	२२१
२.	विजय किसकी ? [श्री. आचार्य नानाभाऔ भट्ट]	२३१
३.	मानवकी दिशाएँ [श्री. वामन चोरघड़े]	२३६
४.	अुत्कलका प्राचीन साहित्य [अनुसूयाप्रसाद पाठक]	२४१
५.	पुराना नौकर [श्री. हृषीकेश शर्मा]	२४४
६.	मुझे मुहब्बत है [श्री. श्रीकृष्णचंद्र शर्मा]	२४७
७.	हमारी नज़रोंमें	२४९
८.	परीक्षा विभाग	२५०
९.	हमारे नये प्रमाणित प्रचारक	२५१
१०.	हमारे नये केन्द्र	२५१
११.	हमारे प्रान्तोंकी हलचलें	२५२
१२.	राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम	२५३

नोट कर लें

१. ग्राहकोंको पत्र लिखते समय अपनी 'ग्राहक-संख्या' अवश्य लिखनी चाहिये, वरना पत्रोंके जवाब देनेमें अनावश्यक विलम्ब होता है।

२. प्रचारकोंको चाहिये कि 'राष्ट्रभाषा' संबन्धी पत्र लिखनेपर अपनी प्रचारक संख्या लिखें।

३. 'राष्ट्रभाषा' के लिये जो लेख भेजा जाय वह साफ अक्षरोंमें चौथाअी हाशिया छोड़कर लिखा हो।

४. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य दो रुपये और नमूनेके अंकका तीन आने है। वी. पी. भेजनेका नियम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

सहकारी सम्पादक
श्री शुकदेव नारायण

वर्ष ५] वर्धा, जुलाई–१९४६ [अंक ९

राष्ट्रभाषा

है यही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा।
है यही सबकी सुनहली अेक आशा॥
सिंधुसे बंगालतक काश्मीरसे कन्याकुमारी—
अुड़ रही जिसकी ध्वजा है तीन *रंगोंसे सँवारी।
अुठ करोड़ोंके मुँहोंसे फूटती जो अेक वाणी—
और कहते आ रहे जिसमें युगोंसे हम महान।
है वही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा!
दूधके ही साथ मिलकर बन गअी जो रक्त-धारा
आह! अुसको कौन जीते जी करेगा आज न्यारा?
हम हँसे जिसमें कि सुखमें, और दुखमें रो बहे हम,
अग्रसर जिसमें विजयका घोष करते हो रहे हम।
है वही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा।
चन्दने जिसमें हमारे युद्धका इंकार गाया।
सन्त दास कबीरने जिसमें मरम अपना बताया।
बोलती जिसमें कि सिंहलद्वीपकी पदमावती है।
दास तुलसीके पियारे रामसे सीता सती है।
है वही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा।
सूरके गोपालने जिसमें मधुर मुरली सुनाई!
प्रेमकी मीरा दिवानीने दरदकी रट लगाई।

* संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसभरा जिसमें कि मिथिल बीच कोकिल कूक बोला—
देश दक्खिनमें तुकाने भी कि जिसमें कण्ठ खोला
है वही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा !

आज दिल बहला रहा खुसरो सुनाकर कह मुकरनी ।
सन्त दादू और नानक ने अुसीमें ली सुमिरनी ।

आज अिशाकी अमर है केतकीकी वह कहानी,
शेख़, ताज, रहीम और रसखानके रसकी खानी !
है वही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा !

चँद्रिका जिसमें खिली है रसिक केशवकी सँवारी
सात सौ नक्षत्र अुसमें जड गया मोहक बिहारी ।

देवने जिसकी हृदयमें प्रेमसे आराधना की ।
जो बनी है बीन भूषणकी अनूठी साधनाकी ।
है वही प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा ।

भारतेंदु-प्रकाश पा सब अन्धकार अपार भागा,
प्रेमघन-गर्जन सुनाता, फिर अयोध्या-सिंह जागा

अेक अँगुलीसे छिड़ी वीणा अपूर्व सरस्वतीकी
मंत्र-सी थी मुग्ध नगरी नागरी ज्योतिर्मतीकी ।
है वही प्यारी हमारी राष्ट्र भाषा !

मैथिलीके शरणमें ही छोड़ भारत भारतीको,
गा रही जिसमें महादेवी जगाये आरतीको ।

जग नवीन प्रसाद या जिसमें कि युगवाणी सुनेगा ।
होरियोंके तड़पते गोदानकी गाथा सुनेगा ।
है वही, प्यारी हमारी राष्ट्रभाषा !

पूज्य बापूका सुदर्शन-सा जवाहर बोलता है
देश-पुत्र सुभाष जिसमें क्रूर कड़ियाँ खोलता है ।

अेक दिन जिसमें हमारा देश फिर आज़ाद होगा ।
विश्वमें अिस भारतीका गूँजता जयनाद होगा ।
है यही सबकी सुनहली अेक आशा ।

—सुधीन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय किसकी ?

(लेखकः—श्री आचार्य नानाभाई भट्ट)

"क्यों, मातरिश्वा अभी तक नहीं आये क्या ? जातवेदा भी दिखायी नहीं पड़ते ।" अिन्द्रासन पर आरूढ़ होते हुअे देवराज बोले ।

"अग्निदेव तो ये आ रहे हैं; मात्र मातरिश्वा नहीं आये ।" पूषाने नम्रतापूर्वक अुत्तर दिया ।

"जी ! मुझे थोड़ी देर हो गअी; वायुदेव अभी आते ही हैं ।" अग्निने अपना आसन ग्रहण करते हुअे कहा ।

देवराज अिन्द्र अग्निदेवकी ओर देखकर बोले: "आपकी और वायुकी सहायता रही, अिसीसे अबकी हम असुरोंको पराजित कर सके । आपके बिना यह संभव न था ।"

अग्निने अुत्तर दिया: "हमने तो अपनी शक्ति देवराजके चरणोंमें चढ़ा दी है । वैसे, जब असुरोंने घोर कोलाहलके साथ पहली बार आक्रमण किया, तब तो हमने भी सोचा कि अब देवोंका पुण्य क्षीण हुआ !"

"लीजिये, ये वायुदेव पधारे ।" वरूणने द्वारकी ओर दृष्टि डालते हुअे कहा ।

"पधारिये वायुदेव !" अिन्द्रने आसन दिया ।

"क्या चर्चा चल रही है, महाराज ?"

विजयोत्सवके समय और क्या चर्चा हो सकती है ? बात तो हम सबके और विशेषकर आपके पराक्रमकी चल रही है ।"

"अिसमें हमने विशेष कुछ नहीं किया । यदि अैसे समय भी हमारा बल काम न आये, तो फिर अुसका अुपयोग क्या ?"

मातरिश्वाने थोड़े गर्वके साथ कहा । "पूछिये अिन अग्निदेवको अुस महासुरको मारनेमें हमपर क्या बीती थी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस प्रकार देव सभामें चर्चा चल रही थी, अितनेमें द्वारके समीप आकृति दिखायी दी और अिन्द्रका ध्यान अचानक अुस ओर गया।

"वह वहाँ, अुस द्वारपर कौन है ?"

पूषाने देखा, वरुणने देखा, अग्निने देखा, सब देवोंने देखा और सब स्तब्ध हो गअे।

"कौन है वहाँ ?"

सब चुपचाप बैठे रहे। सब मन-ही-मन सहम अुठे।

"अग्निदेव ! हम सबमें आप सबसे अधिक तेजस्वी हैं; अतः जरा जाकर देख आअिये कि वहाँ कौन है।"

"जी, बहुत अच्छा।"

अग्निदेव द्वारके पास पहुँचे, किन्तु कुछ पूछ न सके। यह देख अुस आकृतिने ही पूछा: "तू कौन है ?"

"मैं प्रसिद्ध अग्नि हूँ। मैं जातवेदा हूँ। समस्त अुत्पन्न वस्तुओंको मैं जाननेवाला हूँ।"

"अैसा है ? तो तुझमें बल कितना है ?"

"अिस पृथ्वीमें और अन्तरिक्षमें जितने भी स्थावर-जंगम पदार्थ हैं, अुन सबको जलाकर भस्म करनेकी शक्ति मुझमें है।"

"अच्छा तो ले, अिसीको जला।" कहते हुअे अुस आकृतिने घासका अेक तिनका अुसके सामने रक्खा और कहा :

"स्थावर-जंगम पदार्थोंको चलनेकी चर्चा हम बादमें करेंगे।"

अग्नि तैयार हुआ और तिनकेपर अपने बलका प्रयोग करने लगा। लेकिन तिनका सुलगे तब न ! अग्नि तो अिस छोरपर आवे अुस छोरपर जाय; तिनकेको अुलटे, पलटे; किन्तु एक चिनगारी भी झड़े तो कैसे झड़े ? स्थावर-जंगम पदार्थोंको भस्म करनेकी अुसकी शक्ति आज न जाने कहाँ चली गअी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तमें अग्नि हारा-थका लौट आया। अुसके मुँहपर लज्जाकी लाली छा गअी थी। अुसने सिर नीचा करके कहा: "मैं नहीं जान सका कि वह कौन है।"

सारी सभा निस्तेज बन गअी। जातवेदा न जान सकें, अिससे बढ़कर आश्चर्य और क्या हो ?

"वासुदेव ! वह कौन है, सो आप ज़रा जाकर देख आयेंगे ?" वायुको कहनेकी देर थी। प्रचण्ड वेगसे वह द्वारके पास पहुँचा। किन्तु केवल पहुँचा ही, वहाँ पहुँचकर वह तो स्तब्ध भावसे खड़ा रह गया।

"तू कौन है ?"

"मैं प्रसिद्ध वायु हूँ। मैं मातरिश्वा हूँ आकाशमें विचरण करने वाला।"

"अच्छा ? तो तुझमें क्या बल है ?"

"पृथ्वीपर और अन्तरिक्षमें जितने भी स्थावर-जंगम पदार्थ हैं, अुन सबको अेक पलमें अुड़ा देनेकी शक्ति मुझमें है।"

"तो देखें, अिसको अुड़ाकर दिखा।" कहते हुए आकृतिने घासका वही तिनका वायुके सामने रक्खा और कहा: "स्थावर-जंगम पदार्थोंको अुड़ा देनेकी चर्चा हम बादमें करेंगे।"

वायुको तो अुस तिनके पर अपने बलका प्रयोग करनेमें लज्जा मालूम होती थी—कहाँ वायु, कहाँ तिनका ! वह तो वेगसे तिनकेपर झपटा और अुसे अुड़ानेका भगीरथ प्रयत्न करने लगा; किन्तु तिनका तो हिलता-तक नहीं ! वायु थका और खिसियाना होकर लौट आया।

"मैं अुस आकृतिको नहीं पहचान सका।"

विजयोत्सव मनानेवाले देवोंकी यह कैसी दशा !

"हे अिन्द्र, हे मघवन् ! अब तो आपही अुसे पहचान कर आअिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अग्नि और वायु-जैसे तो वापस आ गये। भला, वह क्या है! कौन है!" अिस प्रकार विचार करते-करते देवराज इन्द्र द्वारकी ओर चले। अुनके पैर धीमे पड़ रहे थे; अुनका श्वास मन्द था; अुनका मन किसी गहरी चिन्तामें लीन हो गया था। आजके विजयोत्सवकी धूम-धामसे मानों वे दूर चले गये थे।

दरवाज़ेके पास जाकर देखा तो वहाँ कोअी न दीखा! "इन्द्रासन-परसे देखी हुअी आकृति कहाँ अदृश्य हो गअी? वह कौन था? कहाँ चला गया?"

देवराज इन्द्र वहीं समाधिमें लीन हो गये; अुनका मन अुस आकाशमें स्थिर हुआ। कुछ देर बाद वहाँ, अुस स्थानपर अुमा प्रकट हुअी। समस्त संसारका सौन्दर्य अुमामें अुतर आया; अुनका शरीर सोनेकी भाँति चमकता था।

द्वारपर अुमाको देखकर देवराजके हृदयमें साहसका संचार हुआ और अुन्होंने पूछा: "कुछ समय पहले यहाँ जो था, वह क्या था?"

देवराजके वदनको प्रफुल्ल करती हुअी अुमा बोलीं: "वे तो परमात्मा थे। ये तुम्हारे अग्नि और वायु स्वयं जिस बलका अभिमान करते हैं, वह बल अुन्हें कहाँसे मिला है? तुम देव और असुर अेकही प्रजापति के पुत्र हो, और असुर तुमसे बड़े भी हैं। फिर भी विजय तुम्हें कैसे मिली, क्यों मिली, सो तुम जानते हो? तुम्हें अिस बातका होश है कि तुममें जो कुछ है, सो परमात्माका है, और तुम स्वयं तो निमित्तमात्र हो, अिसी कारण तुम देव हो, और अिसीसे तुम्हारी विजय है। असुर परमात्माकी परवाह नहीं करते और अिस अभिमानमें मस्त रहते हैं कि वे स्वयं ही सब कुछ हैं। अिसीलिए वे असुर हैं।"

"मेरी समझमें नहीं आया कि परमात्मा आये क्यों और गये क्यों?"

"सुनो! असुरोंको हराकर तुम सब उत्सव मनानेको अेकत्र हुए। तुम तो यही मानने लगे कि तुम्हारी ही शक्तिसे असुरोंका पराजय हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमको भी अपने बलका अभिमान हो गया था, और अग्नि व वायु तो मानों फूलकर कुप्पा ही हुअे जा रहे थे। यह देख परमात्माको तुमपर दया आयी। यदि तुमको भी अभिमान आ जाय, तो तुम भी असुर हुअे या और कोअी ?

"तुम्हें असुर बननेसे रोकनेके लिये, तुम्हारे देवत्वको सुरक्षित रखनेके लिये, तुम्हारे अभिमानको नष्ट करके तुम्हें ठिकाने लानेके लिये और संसारके देवासुर-संग्राममें विजय देवोंकी ही है, यह सिद्ध करनेके लिए परमात्माने वह रूप धारण किया और अग्नि अेवं वायु जैसोंको चमत्कार दिखा दिया। बेटा ! जाओ ! तुम देवोंके राजा हो। जब तक तुममें यह भाव जाग्रत न रहेगा कि तुम सबमें जो शक्ति है, सो परमात्माकी है, जबतक तुम देव हो। जिस क्षण तुम्हें अिसका विस्मरण हो जायगा, अुसी क्षण से तुम असुर हो। अिसमें सन्देह नहीं की देवासुर-संग्राममें आखिर जीत देवोंकी ही है। अितना कहकर अुमा अदृश्य हो गअी और देवराज सभामें लौटे।

सभामें आकर अिन्द्रने देवोंको सारी बात कह सुनाअी। सुनकर अग्नि और वायुको भी होश हुआ, और सबके मनमें क्षणभरके लिये जो असुरावेश आ गया था, वह निकल गया।

अिन्द्रने पूछा : "विजय किसकी ?"

अग्निने कहा : "विजय परमात्माकी।"

अिन्द्रने पूछा : "विजय किसकी ?"

वायुने उत्तर दिया : "विजय परमात्माकी।"

इन्द्रने पूछा : "विजय किसकी ?"

सबने अेक साथ कहा : "विजय परमात्माकी ही, अन्य किसीकी नहीं।" +

३१-५-४६ अनुवादक:— काशिनाथ त्रिवेदी

+ अप्रकाशित 'हिन्दुधर्मकी आख्यायिकायें भाग -१' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानीः--

मानव की दिशाएँ

[श्री. वामन चोरघड़े]

मैं जब नदीपर पहुँचा तब दिन अच्छी तरह निकल आया था। वातावरण प्रसन्न था। प्रवाहकी धारा अविराम छल-छल बह रही थी। पेड़ोंपर पक्षियों के झुंड चहचहा रहे थे।

मैं सीटी बजाता हुआ बहुत देरतक तटपर खड़ा रहा, थोड़ी ही देरमें पासके पहाड़ीके अूपर सूर्यबिम्ब साफ़ साफ़ झलकने लगा। सारी सृष्टि तेजोमय हो गअी। सूर्यकी किरणें पानी पर नाचने लगीं।

मैंने जेबसे चाकू निकाला और दाँत साफ़ करनेके लिये बबूलकी दातुन तोड़ने गया। काँटा न चुभे--अैसी सफाअीसे डाल अपनी तरफ़ खींची और डालको दो अुँगलियोंके बीचमें पकड़कर मैंने ज़ोरसे चाकू मारा। वह गलतीसे अुँगली पर जा लगा। टप्-टप् रक्त बहने लगा। मेरा दिल घबड़ाया। कोअी अुपाय न था। मैंने ज़ोरसे अुँगली दबा ली और नदी-किनारेकी रेतीपर बैठ गया।

"बैं ऽऽ" पीछेसे आवाज़ आअी। मैंने घूमकर देखा, अेक मनुष्य दो भेड़ लेकर आ रहा था। आते ही वह पानीमें घुस गया और अुसने अुन दोनों भेड़ोंको पानीमें ढकेल दिया। बेचारी चिल्लाने लगीं।

अुँगली कट जानेसे मैं बेचैन तो था ही; अूपरसे भेड़ोंका करुण स्वरमें मिमियाना!

मुझे अेक प्रसंग याद आ गया—

अुस दिन भी मैं अिसीतरह अिसी समय रेतीपर बैठा था। अेक अधेड किसान अेक भेड़ लेकर नदीपर आया और अुसने अिसीतरह अुसे पानीमें ढकेल दिया था। मैं यह देख रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेड़के शरीरपरका मुलायम ऊन भींग गया था। किसानने अुस भेड़को मल-मल कर खूब धोया और अुसे बाहर लाकर अपनी धोतीसे पोंछा। थोड़ी देर धूपमें रहनेके बाद भेड़का चिल्लाना बन्द हो गया और वह चलने लगी। अुसके पीछे पीछे किसान जा रहा था।

अुस बारीक रेतीपर भेड़के पैरोंके चिन्ह बन रहे थे और पीछेसे आनेवाले आदमीके पैरोंके चिन्ह अुन्हें मिटाते जा रहे थे। कुछ विचित्रसा लगा मुझे !!

घर पहुँचतेही रामजी पटेलने अुस भेड़की गलेकी रस्सी पकड़ी, आँगनमें खड़े अपने लड़केके हाथमें थमा दी और घरके अन्दर चला गया। आँगनमें अेक तरफ़ बाजेवाले बैठे थे। दूसरी तरफ़ दो-चार पड़ौसी बैठे थे जो चलनेकी जल्दी मचा रहे थे। यह क्या हो रहा है, मेरी समझमें न आया। इतनेमें रामजी घरसे बाहर निकला अुसकी मुठ्ठी लाल रोलीसे भरी थी और दूसरे हाथमें वह मोरपंख लिये था। अुसने वह कुंकुम भेड़के माथेपर लगा दी और रस्सी तोड़कर मोरपंख अुसके गलेमें बाँध दिये। बाजेवालोंसे बाजे बजानेको कह रामजी घरके अन्दर चला गया।

थोड़ी देरमें वह शुचि होकर बाहर आया। पूजाकी थाली अुसने हाथमें ले ली। आटेके बने दियेमें बाती जल रही थी। अुसने अुस भेड़की पंचारती अुतारी। भेड़का मृत्युपूर्वका यह वैभव देखकर मैं बहुत डर गया। रामजीने अपने कपालपर रोलीका टीका लगाया। पत्नीको बुलाया। वह भीतरसे आयी। अुसने पीले वस्त्र पहन रक्खे थे और अुसकी गोदमें चार सालका अेक बच्चा था जिसके शरीरको मैले कपड़ेसे ढाँक रक्खा था, अिसलिये सिर्फ़ अुसके सिरकी छींटकी नयी टोपी दीख रही थी।

आगे आगे बाजेवाले, बीचमें भेड़, अुसके पीछे रामजी पटेल, अुसकी घरवाली और कुछ पड़ौसी, अैसे सब मिलाकर बीसेक आदमी चले। अुस बेचारी भेड़ को क्या पता ! अुसे आज अच्छे गेहूँ खिलाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये थे। अुसका सर्वांग अच्छीतरह धोया गया था। वह अपनी ही धुनमें चली जा रही थी।

फिरसे मैंने देखा। अुस भेड़के गोल गोल छोटे छोटे पैरोंके चिन्ह जमीन पर बन रहे थे और रामजीके पैरोंके चिन्होंद्वारा मिट रहे थे। मुझे कुछ डर-सा लगा।

अेक टूटे-फूटे मन्दिरके पास वे रुके। मन्दिरके द्वारपर नीमकी डगारें तोरणकी तरह बांधी गयी थीं। लकड़ीका अेक त्रिशूल सेंदूरसे रंगा हुआ गाड़ रक्खा था। द्वारकी सीढ़ियोंपर मुर्गीके बच्चे घूम रहे थे।

अन्दर जगन्माता देवी पाषाणरूपमें, अपने सारे शरीरमें सेंदुर पोते बैठी थी। अुसकी आँखोंपर भी सेंदुर पुता था, अिसलिये वह अपने भक्तोंका आडंबर न देख सकी।

रामजी, अुसकी पत्नी, लड़का वगैरेह कुछ लोगोंके भीतर जानेपर देवीकी पूजा की गयी। दही-भात अुसे चढ़ाया गया। अुसपर फूल घर-बरसाये और वस्त्र तथा नारियलसे देवीकी गोद भरी गयी। अुदबत्तीकी तीव्र गन्ध चारोंतरफ फैल रही थी।

सीढ़ीपर फिरते हुअे मुर्गीके बच्चोंमेंसे अेक बच्चा देवीको चढ़ा दिया गया। यहाँतककी विधि पूरी होनेके बाद रामजीकी नजर भेड़पर गयी वह बेचारी आँखे बन्द किये स्थिर खड़ी थी। अुदबत्तीकी अुग्र बास सहन न होनेके कारण कहिये या अीश्वरकी कृपासे मृत्युके पहलेही अुसे मृत्युका ज्ञान हो गया-कहिये, वह अत्यन्त करुण स्वरमें चिल्लायी।

रामजीने अुसे देवीके निकट खड़ा किया देवीको बलि चढ़ानेका सौभाग्य अुसे मिल रहा था। अिसलिये अुस गरीबकी देह सत्कार्यमें खर्च हो रही थी। गरदन कटनेपर रक्तकी धार सीधे देवीके सिरपर गिरे अैसी जगहमें अुसने अुस बलिको खड़ा किया और अत्यन्त भक्तिभावसे देवीकी प्रार्थना की "हे जगन्माता! मेरी भूल-चूक माफ़ कर, यह बच्चा तेरा ही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशल क्षेमसे बढ़ने दे। भूत प्रेतसे अिसकी तू रक्षा करना। यह बलि तुझे दे रहा हूं। सन्तुष्ट होकर अिसे सुखी रख।"

रामजीकी स्त्रीने भी अिसी तरह बिनती की और अुस बीमार बच्चेके ललाटमें भभूत लगा दी। सबके नमस्कार करनेपर रामजीने छुरा अुठाया। अुसने खच्चसे गरदनपर दे मारा। वह बेचारी चिल्ला रही थी। पर अुसकी करुण आवाज़पर वहाँ ध्यान देनेवाला कौन था? दूसरा वार करनेपर रक्तकी धार ज़ोरसे देवीके सिरपर गिरी।

अेक अत्यंत हृदय-विदारक स्वरके बाद अुसका सिर धडसे अलग होकर देवीकी गोदमें आ गिरा। देवीका निर्माण किया हुआ जीव देवीको बलि चढाया गया! चढानेवाला कौन....? देवीका निर्माण किया हुआ जीव....रामजी !!

रामजी प्रसन्न हो अुठा! अब अुसका बच्चा नीरोग हो जायगा वह सुखी होगा—देवी अुसपर संतुष्ट होनेवाली थी—देवीके प्रसादके लिये पडोसियोंको भोजनका निमंत्रण मिलेगा—लोगोंने रामजीको बड़ा देवभक्त ठहराया।

वे सब लोटने लगे। पंचारतीकी खाली थाली लड़केके हाथमें थी, भेड़का धड़ रामजीके हाथमें था जिसमेंसे खून टपक रहा था। अेक तरफ और मेरा ध्यान गया-जिस जमीनपर थोड़ी देर पहले भेड़के पैरोंके चिन्ह बन रहे थे उस जमीनपर अब भेडका रक्त टपक रहा था। रामजीके भी पैरोंके चिन्ह उसी तरह बन रहे थे परंतु पीछेसे आनेवालोंके पैरोंके चिन्हमें मिल रहे थे !!!

× × × ×

नदी तटपरके अुन दो भेड़ोंको देखकर मेरी आँखोंके सामने अुपर्युक्त प्रसंग आ गया। वह आदमी अभीतक उन्हें धो रहा था। मेरी अंगलीसे खून गिरना बंद हो गया था। बेचारोंको अगर मारनाही है तो व्यर्थ धोना क्यों? मुझे गुस्सा आ गया। अिस आदमीने बडी मिन्नत मानी है तभी तो वह दो भेडोंकी बलि दे रहा है। मैं अुससे कुछ कहनेवाला था। अितनेमें अुसने अुन दोनोंको बाहर निकाला मुझे लगा अब वह अून्हें तीक्ष्ण छुरेसे.....!! जरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घबराओ हुओ नजरसे मै अुसकी प्रत्येक कृतिकी तरफ देख रहा था। वह अपने काममें व्यस्त था।

अून भेडोंके शरीरपरका सफेद अून भींग गया था। अूसने अुनका शरीर पोंछा और घरकी तरफ चला। अुसका घर बहुत दूर नहीं था। आंगनमें घुसते ही अुसने अपनी स्त्रीको बुलाया और बड़ासा टाट मांगा। आंगनमें कोई नहीं था। अुसने टाट बिछाया और अुसपर अुन दो भेडोंको बैठाकर खुद भीतर चला गया। अब पंचारती आवेगी, अुसके बाद अेक बीमार बच्चा लेकर अुसकी स्त्री आवेगी ..... पर बाहर कोई नहीं आया। वह घरमें कुछ बोल रहा था:—

"क्यों रोटी बन गयी?"

"अुहूँ"—

"कितनी देर है?"

"अेक घंटा। रोजके समयपर ला दूँगी।"

"मैं घरपर ही हूँ आज, बन जाय तो बुला लेना।" वह बाहर आया। वे भेडें आँखें बंद कर मजेसे धूप खा रही थीं। वह धीरेसे अुनके पास गया। अुनमेंसे अेकको अुठा गोदमें ले लिया और अत्यंत प्रेमसे सहलाने लगा। "अितना प्रेम है तो बलि क्यों दे रहा?" मैं कुछ हैरान होकर तिरस्कारपूर्वक बोला। अुसने अुनके मुँहपरसे हाथ फेर पीठ थपकाओ अुनके शरीर परका अून सूख गया या नहीं, यह देखनेके लिये अूनके अन्दर हाथ फेरा। अून सूख गया था। वह अच्छी तरहसे बैठा। अुसने अपनी जेबमेंसे कैंची निकाली। और अून काटना शुरू किया। वह अपने काममें व्यस्त था। अुसका मुख सतेज, प्रसन्न था।

पर अुसके सामने सेंदूरसे पूती और खूनसे सनी देवी न थी।

प्रत्युत अत्यंत शुभ्र, स्वच्छ और विपुल अूनका ढ़ेर था और देवीके निर्माण किये हुए दो जीव एक दूसरेकी आवश्यकताअें पूरी कर रहे थे !!!*

* श्री चोरघड़ेजीकी अेक मराठी लघुकथाका हिन्दीमें अनुवाद।
अनु०—कु० भारती, 'राष्ट्रभाषा रत्न'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुत्कलका प्राचीन साहित्य

(ले.—अनुसूयाप्रसाद पाठक)

भारतके पूर्व समुद्रके किनारे स्थित अुत्कल ६ जिलोंका अेक छोटासा प्रान्त है। अुसमें जगन्नाथपूरी होनेकी वजहसे पुनीत तो है ही, साथही अुसे अैतिहासिक ख्याति भी प्राप्त है।

अशोकके समय अुत्कल कलिंग नामसे सम्बोधित किया जाता था। जबसे खारवेलने पुष्यमित्रको पराजित कर पटनेसे पारसनाथकी जैन प्रतिमा भुवनेश्वर (अुत्कल) के खण्डगिरिके अूपर रखी अुसी समयसे वह अुत्कल नामसे विख्यात हुआ। यहाँकी भाषा अुत्कली कही जाने लगी। यह संस्कृत और प्राकृतसे पैदा हुअी है। लिपि नागरीका रूपान्तर मात्र है। रूपान्तरका अैतिहासिक कारण यह है कि ताड़पत्रपर लिखनेके समय अक्षरोंको गोल करना पड़ा है। सीधी लकीर खींचनेपर ताड़पत्र फट जानेका डर था। अिस कथनसे सभी अेकमत हैं।

अुत्कल साहित्यका पूर्ण परिचय पानेके लिये साहित्यिकोंको दो भागोंमें बाँट देना जरुरी है। अेक तो शिल्पकार तथा दूसरे काव्य-कार। दोनों भी अपने २ कार्यमें निपुण निकलें हैं। अिन्होंने जड़-चेतनाका अैसा चित्र आँखना शुरु किया कि सौंदर्य मानों साकर रूपेण बैठ गया हो। वन, जंगल, पेड़-पौंधे, और फूलोंका लुभावना रूप आज भी वैसा ही अछूता सा है। पत्थर-पृष्ठपर कमनीयताको प्रस्फुटित करनेवाली नाना प्रतिमाअें आज भी दर्शक देखतें हैं। फिर देखनेको मिलता है माताका प्यार, लोभी मनका प्रेम, दधि मन्थन और माखन चोरी; वस्त्र-हरण और बंशी-टेर; गोपी-विरह और मथुरा-गमन।

जब काली कलमके सहारे साहित्यका स्वरूप निर्माण करनेवाले शिल्पी अुक्त साहित्यके स्वरूपको देखते हैं। तो अुनके हृदयमें अनुपम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावोंको आविर्भाव होता है। भारतके ही नहीं दुनियाभरके यात्री दर्शन करते हैं और अपनी २ भाषाको अिन सुन्दर अलङ्कारोंसे अलङ्कृत करते हैं। अिस दृष्टिसे अुत्कल-साहित्य विश्व-साहित्यके सजानेमें सहायक है, कहना अत्युक्ति नहीं होगी।

शिल्पकारोंके अलावा साहित्यिकोंने काव्यशास्त्रके नियमानुसार लिखनेमें कुछ भी अुठा नहीं रखा है। प्रतियोगितामें कौन पीछे है, कहना आसान नहीं है। फिर भी, आसानीसे यह जाननेके लिये अिनको दो दलोंमें रखना जरूरी है। आदि-युगके तथा मध्य-युगके साहित्यिक। आदि युग १४ वीं से १५ वीं शताब्दितक माना जाता है। यह युग अुत्कल-साहित्यके लिये बहुत ही अुन्नतमय कहा जाता है। अिस युगके प्रधान कवि जिनको पंचसखा भी कहा जाता है—श्री वत्सादास, मार्कण्डदास, बलरामदास, सरलादास, और अतिवड़ जगन्नाथदास। अिन सभी कवियोंने अपनी अनुठी रचनाओंसे अुत्कल-साहित्य-भाण्डारको समृद्ध किया है। अिनमें जगन्नाथ-दास और सरलदास को जो ख्याति प्राप्त हैं, वह अन्योंको नहीं। जगन्नाथ-दास तो अुत्कलके तुलसीदास है। आपकी भागवत आज अुत्कलके घर-घरमें मुखरित हो रही है। अुनकी सरस, सरल और मधुर रचनाकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ अुद्धृत हैं।

बलदेव घेनि[१] संगे । मिलिले वृंदावन लागे[२] ।
शीतक वसन्त परन । वने विजय भगवान ॥
चन्द्रकिरण जनमि । सुन्दर दिशे[३] वनभूमि ॥
× × ×
कृष्ण करानी[४] गीतनाद । हरिले कामिनी विषाद ।
कुन्द मन्दार गन्धसार । शीतल बहुअी समीर ॥

१ लेकर २ पास ३ दीखती है ४ करते है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस प्रकारका काव्य–प्रवाह जब बहने लगता है तो श्रोता और पाठक आनन्द सागरमें डूबने लग जाते हैं। वह अलौकिक आनन्द अिसके द्वारा अनुभवगम्य है।

अिसके बाद १५ से १७ वीं शताब्दिका काल अुत्कल-साहित्यके लिये अंधकारमय था। साहित्य चिन्ता और आनन्द स्रोतमें सूख गया। पुरी, कोणार्क, भुवनेश्वर और विरजा आदि मन्दिरोंकी रक्षा और अिश्वत खतरेमें जान पड़ी। १८ वीं शताब्दि आअी। अुत्कलके सुख-शान्तिके दिन अभी पूर्णतया नहीं आये थे। फिर भी अब वह भय न था। अुत्कलकी प्रकृति नटीका अभिनय शुरू हो गया। ताड़पत्रपर लोहेकी कलमसे अपने दिलके अुमड़ते विचारोंको चुन-चुनकर गूँथने लगे। अिस मध्ययुगमें अुत्कल साहित्य जितना समृद्ध बना शायद अुतना कोअी प्रान्त अिसके मुकाबलेमें नहीं अुतर सका। काव्य, रस अलङ्कारोंसे युक्त सौंदर्य-दर्शनके साथ साथ जाति-भेद शास्त्र विवेचन आश्चर्यमें डाल देता है। यों तो साहित्यके मैदानमें बहुतसे लंगोटा कसे खड़े थे, लेकिन दीनकृष्ण, अभिमन्यु बलदेवरथके सामने अन्य कवि पीछे पड़ जाते हैं। भक्त चरणदासने भी अपनी भक्ति-धारा बहाकर लोगोंको अपनी ओर खींच लिया है। आज भी अुनके पद गाये जाते हैं। लेकिन जिस समय पण्डितोंके सामने लावण्यवती, कोटि ब्रह्माण्डसुन्दि और विदग्ध चिन्तामणि नामक ग्रन्थ रक्खेंगे तो अुस समय बाकी सब हंसमध्यें बको यथा मान होते हैं।

शेषमें मेरा कथन यही है कि अुत्कल साहित्य-सागरमें थाह पाना मेरे लिये बिलकुल वृथा प्रयास है। लेकिन जितना कुछ लिखा और पढ़ा है अुससे मैं भ्रममें हूँ कि क्या लिखूँ और क्या छोड़ूँ। हो सका तो आगे किसी अेक कविका परिचय 'राष्ट्रभाषा' के पाठकोंको दूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

पुराना नौकर

(लेखक—हृषीकेश शर्मा)

पत्नी हर वक्त मुँह फुलाये रहती हैं। नौकरके कारण मुझे भी दो चार कड़ी बातें रोज सुननी पड़ती हैं। घरमें कोओी चीज़ खो जाती है, तो वे कहती हैं—"यह तुम्हारा लुच्चा कृष्णा ही चोर है। अिसीने ली है।"

अुसे गालियाँ देता हूँ। बक-झक करता हूं। डाटता-फटकारता हूँ-धमकाता हूँ। पर वह सुनी-अनसुनी कर जाता है। कोओी असर नहीं होता—चिकने घड़ेका पानी है। रोज़ जितनी गालियाँ वह खाता है, अुतनी रोटियाँ भी न खाता होगा। कोओी काम हुआ तो झटसे पुकार अुठता हूँ "अरे ओ कृष्णा! ओ कृष्णा, ज़रा अिधर तो आ रे! यह तो कर दे।" क्या मजाल। अुसकी छाया भी नहीं दिखाओी पड़ती, सटक जाता है—खिसक जाता है। कामचोर है न? दोपहरको कहीं कोनेमें टांगे पसारकर खर्राटे मारता है। चिल्लाता हूँ, पुकारता हूँ, गालियाँ देता हूँ तो बदमाश दरवाजेपर खड़ा-खड़ा हँसता है। नाकमें दम कर रक्खा है अिसने। हाँ, फिर भी अिसपर थोड़ी-सी ममता है। अिसे बरखास्त नहीं कर सकता। पुराना नौकर जो ठहरा!

घरकी मालकिन मुँह फुलाकर कहती हैं—"तुमने अिसे सिरपर चढ़ा रक्खा है। अब तो मुझसे नहीं सहा जाता। यह सँभालो तुम अपना घर-बार, मैं चली। रक्खो अिसी कलमुँहे कृष्णाको अपने साथ। घरमें कोओी चीज़-वस्त बचने नहीं पाती। आये दिन चोरी हो जाती है। पैसे-रुपयेका पता नहीं लगता। दुनियामें तुम्हें कृष्णाको छोड़, दूसरा नौकर नहीं मिलता!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुस्सा जो आया तो दौड़कर मैंने कृष्णाके कान सितारकी खूँटीकी तरह ज़ोरसे अमेठ दिये। कहा गुर्राकर—"हरामज़ादा, चल, हट जा, निकल मेरे घरसे। अबसे मुँह मत दिखाना।"

कृष्णा नीचा सिर किये, बिना कुछ कहे-सुने चुपचाप अेक ओर चला गया। दूसरे दिन वह हँसता-मुस्कराता मेरे सामने फिर आ खड़ा हुआ। निकालनेसे भी नहीं निकला। लाचारी थी।

अिसी साल दलालीमें अच्छी-सी रकम हाथ लगी। सोचा, तीरथ-यात्रा कर डालें। मथुरा-वृन्दावन चलें। यात्राका दिन ठीक हो गया। सारा कुटुम्ब-कबीला साथ चलनेको तैयार हो गया। पत्नीको किसी तरह समझा-बुझाकर शान्त किया। पर अुन्होंने शर्त रख दी कि कृष्णाको साथमें न ले चलना। मैंने कहा, तुम अिसकी फिक्र मत करो। कृष्णा नहीं, मेरा निवारण मेरे साथ आयगा।

गठरी-पोटली बंधी। असबाब बंधा। सबलोग रेलपर सवार हुअे गाड़ी चल पड़ी। बर्दवान स्टेशनपर जब गाड़ी थमी तो देखता क्या हूँ कि कृष्णा हुक्का भरनेके लिये प्लेटफार्मपर दौड़धूप कर रहा है। मैंने अुसे देख अपना माथा ठोक लिया! जितना ही बकता हूँ, अुतना ही मेरा यह पुराना नौकर खुश होता है। पुराना नौकर है न?

गया, काशी, प्रयाग होते किसी कदर मथुरा वृन्दावन पहुँचे। चारों ओरसे मस्त-मुस्तण्ड चोबे-पंडोंने हमें घेर लिया, साथमें कुछ नअी जान-पहचान हुअे यात्री भी थे। सबने मिलकर अेक धर्मशालामें पड़ाव डाला। आये थे बृन्दावनकी कुंजगलिनमें व्रजबाला और व्रज गोपालका दर्शन करने। सोचा था अमन-चैनसे यात्रा गुज़रेगी। अेक घोर विपत्ति सामने आयी। वहाँ तो चेचककी बीमारी अपने भयंकर रूपमें फैल रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। मुझे भी चेचकके ओले फफोले अुठ आये। संगी-साथी सब सपनेकी तरह गायब हो गअे। मुझे लगा, अब बृन्दावनमें ही अपने रामकी हड्डियाँ जमुनाकी धारमें सिरेंगी। आखिरी साँस लेनेका अन्तिम समय आ गया है। दीन-करुण स्वरमें मैंने पुकारा—"अरे ओ कृष्णा, ज़रा मेरे पास तो आ।" अिस विपन्न दशामें मेरा वही सबसे अधिक निकटका साथी सहायक था। दिन-रात मेरी खटियाके पास वह खड़ा रहता। वह मेरा पुराना नौकर जो था! अुसने मेरी सेवा-शुश्रूषा की। अुसकी आँखोंमें न नींद, न पेटमें भूख-प्यास! बार बार मुझे दिलासा-तसल्ली देता—"बाबू भैया, चंगे हो जाओगे। भगवान तुम्हें जल्द अच्छा करेंगे, हम-लोग राजी-खुशी घर वापस होंगे।"

अुसकी निःस्वार्थ सेवा-शुश्रूषाके बलसे मैं भला-चंगा हो गया। किंतु दूसरे दिन अुसे बड़े ज़ोरका बुखार चढ़ आया। वह लगातार दो दिन बे-होश रहा और आख़िर हमेशाके लिये अुसने आँखें बंद कर लीं। आजतक मैं अपनी पत्नीके नाराज़ीके कारण अुसे छुड़ाना चाहता था; लेकिन आज वह मुझेही छोड़कर चला गया। तीर्थयात्रा कर कअी दिनों बाद मैं घर लौटा। किन्तु अिसबार अकेला ही; मेरे साथ नहीं लौटा मेरा पुराना नौकर प्यारा कृष्णा!×

× श्री गुरुदेव रविबाबूकी अेक बंगला कहानीके आधार पर।

नेताओंकी कलमसे—

मूल्य १ रु., प्रकाशित हो चुका है। नागरी लिखावट भाग १ तथा भाग २ के बदले आगेसे काममें ला सकते हैं। नागरी लिखावट दोनों भागोंको अेकत्रित कर दिया गया है। मूल्य भी कम कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे मुहब्बत है

(ले०- श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा)

मुझे मुहब्बत है अन्धेरी रातोंमें आसमानपर चमकनेवाले अुन नन्हे नन्हे सितारोंसे, जो भूले-भटके मुसाफिरोंको राह दिखाते हैं और अुनके ना-अुम्मीद दिलोंपर अुम्मीदकी रोशनी डालते हैं।

मुझे मुहब्बत है पूनोंके अुस सुंदर चाँदसे, जो अपने पूरे हुस्न और खूबसूरतीपर होता है और जिसकी रुपहली किरणें हर-चीज़को खूबसूरत बनाकर लोगोंके दिलोंपर जादू डालती हैं और अुनको मोह लेती हैं।

मुझे मुहब्बत है सूरजकी अुन सुनहरी किरणोंसे जो सुबहके वक्त अपने हुस्नसे सारी दुनियाको सुनहरा नूर भरपूर देती हैं और पैगामे-बेदारी (जागरणका सन्देश) देती हैं।

मुझे मुहब्बत है सुबहकी अुस ठंडी ठंडी हवासे जो रुक-रुककर चलती है। जो गुलशनमें आकर नन्हीं नन्हीं नाजुक कलियोंको गुदगुदाती है और अुनके कानोंमें कोअी अैसा संदेसा कहती है कि वे खुशीसे खिल अुठती हैं।

मुझे मुहब्बत है अुन रंग-बिरंग फूलोंसे जिनकी खुशबू दुनियांको मुअत्तर (अित्रसे खूब सुवासित) बना देती है और जिनके प्यारे प्यारे सुन्दर रंग आँखोंमें खुब जाते हैं और दिलमें खुशी भर देते हैं।

मुझे मुहब्बत है अुस गहरे सागरसे जिसे देखकर मेरे दिलमें तरह-तरहके ख़यालात आने लगते हैं और मैं बड़ी देरतक सागरसे अुठी हुअी लहरोंकी तरफ़ देखता रहता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे मुहब्बत है नीले आसमानपर आज़ादी व मस्तीसे अुड़नेवाले बादलोंसे जोकि तरह-तरहकी तस्वीरें बना-बना कर हमारे दिलोंमें तरह-तरहके ख़यालात पैदा करते हैं।

मुझे मुहब्बत है अन्धेरी रातके चमकनेवाले अुन खूबसूरत नन्हे नन्हे जुगनुओंसे जो चिनगारियोंकी तरह अिधर अुधर अुड़ते फिरते हैं और अपनी सुन्दरतासे अेक सुन्दर नज़्ज़ारा पैदा कर देते हैं।

मुझे मुहब्बत है अुस शीरीं दहन (मीठे प्यारे मुँहवाले) बुलबुलसे जो किसी फूलपर बैठकर अैसा मस्त गीत अलापता है जिसे सुनकर पागल हो जाता हूं।

मुझे मुहब्बत है अुन जादूभरी आँखोंसे जिनमें मुझे प्रेमकी-झलक दिखाअी देती है, जिनमें अेक प्रेमका संसार बसा हुआ दिखाअी देने लगता है।

मुझे मुहब्बत है कुदरतके अुन खुशनुमा नज़्ज़ारोंसे जिन्हें देखकर मेरे दिलमें अजीबो-गरीब (बहुत अद्भुत) खयालात पैदा होते हैं और मेरा सिर अुस परवरदिगारकी खिदमतमें झुक जाता है, जिसने यह सब कुछ बनाया और मुझे अिस काबिल बनाया कि मैं यह सब देख सकूँ और अुनसे लुत्फ अुठा सकूँ।*

* यह राष्ट्रभाषा हिन्दीकी ही अेक शैली। सुन्दर आसान अुर्दूका नमूना पेश कर रहा हूँ।— ले०

सूचना

जून ४६ की 'राष्ट्रभाषा' में टायटल पेज नं. ३ पर परिचय प्रश्नपत्र ४ गलतीसे छप गया है। परिचयमें ४ था प्रश्नपत्र नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नजरोंमें

[समालोचनार्थ प्रत्येक पुस्तककी दो प्रतियां आनी चाहियें—सं०]

खैयामकी मधुशाला : रूपान्तरकार—बच्चन;—प्रकाशन—भारती मन्डार प्रयाग; कीमत दो रुपये। प्रस्तुत पुस्तक फिट्जजेरल्ड कृत 'रूबाइयात अमर खैयाम' के प्रथम अंग्रेजी अनुवादक पदयबद्ध हिन्दी रूपान्तर है। अनुवाद यद्यपि अंग्रेजीसे हुआ है, फिर भी भाषा और भावमें कहीं विशेष अुलझन नहीं दीख पडती। बच्चनजीकी भाषाका प्रसाद गुण अनुवादमें भी ज्योंके त्यों कायम रहा है। पुस्तकके शुरूमें अेक सुन्दर भूमिका और अन्तमें अेक टिप्पणी भी है। फिट्जजेरल्डकृत अंग्रेजी अनुवाद भी हिन्दीके नीचे दे दिया गया है। अिससे पुस्तककी अुपयोगिता और बढ़ जाती है।

बंगालका काल : लेखक—बच्चन; प्रकाशक-भारती-भंडार, प्रयाग; मूल्य अेक रुपया। बंगालकी भीषण भूखमरीको देखकर बच्चनका कवि हृदय व्याकुल हो अुठता है किन्तु कविकी व्याकुलता अश्रु रूपमें पिघलकर नहीं रह जाती, बल्कि वह रौद्ररूप धारणकर बंगालकी जनताको आह्वान करती है:—

मनसे अब संतोष हटाओ
असंतोषका नाद अुठाओ
करो क्रांतिका नारा अूँचा
भूखो अपनी भूख बढ़ाओ
और भूखकी ताकत समझो
हिम्मत समझो
जुर्रत समझो। कुवत समझो
देखो कौन तुम्हारे आगे। नहीं झुका देता सिर अपना

पुस्तक पढ़ते समय दिल जोशसे भर अुठता है। भाषा चलती और सरल है। किताब पढ़ने लायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षा तिथियोंमें परिवर्तन :

कुछ विशेष कारणोंसे ७, ८ सितम्बर, ४६ को होनेवाली परीक्षाएँ, अुस दिन न होकर ता. १४, १५ सितम्बर ४६ को होंगी । तदनुसार साधारण आवेदनपत्र भेजनेकी अन्तिम तिथि २२ जुलाअी और विलंब शुल्ककी ३० जुलाअी कर दी गयी है ।

कोविदमें लेखन कार्य :

मौखिक परीक्षाके अंतर्गत ही कोविद परीक्षार्थियोंके लिये अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य है । प्रत्येक लेख कमसे-कम तीन पृष्ठका होना चाहिये और अुसे अपने शिक्षकसे जँचवा लेना चाहिये ।

पाठ्यक्रममें परिवर्तन :

आगामी सितम्बरमें होनेवाली प्रचार परीक्षाओंके पाठ्यक्रममें थोड़ा परिवर्तन किया गया है । सितम्बर ४६, के लिये निश्चित पाठ्यक्रम "राष्ट्रभाषा" मार्च, ४६ के अंकमें प्रकाशित किया जा चुका है । पाठ्य-पुस्तक सूची वर्धा कार्यालयसे प्राप्त की जा सकती है ।

कोविद परीक्षाके लिये केन्द्र :

'कोविद परीक्षा' समिति द्वारा केवल स्वीकृत स्थायी केन्द्रोंमें होगी । अन्य जिस केन्द्रमें ५ या अुससे अधिक कोविदके परीक्षार्थी होंगे वहाँ कोविदके लिये अस्थायी परीक्षाकेन्द्र स्वीकृत हो सकेगा । केन्द्र-व्यवस्थापक वर्धा कार्यालयको लिखें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	नाम	प्रचारक क्रमांक	केन्द्र
गुजराथ :	१ श्री कान्तिलाल चुनीलाल शाह	८२२	प्रान्तिज
	२ ,, माणिक्यचन्द्र मेहता	८२३	,,
	३ ,, कीर्तिवदन रतीशंकर मेहता	८२४	,,
महाराष्ट्र :	४ श्री दत्तात्रय श्रीकृष्ण पंचाक्षरी	८२०	नागपुर
	५ ,, दीनानाथ सदाशिव नारखेडे	८२१	सालवा
सिंध :	६ श्री आसूराम लेखराजमल पहिलवाणी	८२५	टंडोआदम
	७ ,, गोरधनदार कुरजी मजीठीया	८२६	कराची

हमारे नये केन्द्र

प्रान्त	नंबर	नाम-केन्द्र	क्रमांक-केन्द्र
बंगाल	१	चटगांव	८३३
ओत्कल	२	रघुनाथपूर	८४३
,,	३	भद्रक	८४६
,,	४	सम्बलपूर	८४७
सिन्ध	५	हूसडी	८३५
,,	६	बनो	८३८
गुजरात	७	सोनासन	८३४
,,	८	जामनगर	८३६
,,	९	खेखा	८३९
,,	१०	बाघणीया	८४०
,,	११	महुवा	८४१
,,	१२	संडेर	८४२
महाराष्ट्र	१३	ओतूर	८४४
विदर्भ-नागपूर	१४	बेला	८४५
सिलोन	१५	केलानिया	८३७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल विशेष परीक्षा (मार्च ४६) के पुरस्कार विजेता—

परीक्षा	क्रमसंख्या	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार रकम
प्रारंभिक	१०७२३	श्री कमलदास गुप्त	८९	२)
प्रवेश	५४९४	श्री यतीशचन्द्र गुप्त	६७	३)

दोनों परीक्षार्थी कलकत्ता केन्द्रके हैं।

कार्यालयसे–

भदन्त आनन्द कौसल्यायन हिन्दी प्रचारके संबंधमें कुछ दिन पहले लंका गये थे। ता० १० जुलाईको अपना कार्य सम्पन्न करने पुनः वर्धा आ गये हैं। वे अपने अनुभव और कार्यके विषयमें राष्ट्रभाषाके अगले अंकमें लिखेंगे।

हमारे प्रान्तोंकी हलचलें

बम्बई :

नशिराबाद पू० खा०)में ता० २३–६–४६ को श्री अत्रे गुरुजीकी अध्यक्षतामें श्री व्यवहारे गुरूजीको हिन्दी विद्यार्थीयोंकी तरफसे ५१) रुपया तथा रा० भा० प्र० समिति, नशिराबादकी तरफसे २१) रुपयोंकी थैलियाँ भेंट की गअी। साथही श्री बा. पु. मोहरीरजीका भी सत्कार किया गया। श्री. मोहरीरजी महाराष्ट्र प्रान्तसे प्रवेश परीक्षामें बैठे हुअे विद्यार्थीयोंमें सर्व प्रथम आये हैं। ये थैलियाँ श्री व्यवहारे गुरुजीने रा. भा. प्रचार-कार्यके लिये भेंट कर दी। २॥ घंटे बाद यह समारोह खत्म हुआ।

वराड [पू. खा.] में ता. १२–५–४६ को श्री. साने गुरुजीकी अध्यक्षतामें प्रमाणपत्र वितरण समारम्भ हुआ। प्रमाण-पत्रोंका वितरण श्री. साने गुरुजी द्वारा हुआ।

बंगाल :

श्री. ललिताप्रसाद शुक्लजीकी अध्यक्षतामें रा. भा. प्र. समिति, वर्धा द्वारा परीक्षामें अुत्तीर्ण छात्र-छात्राओंको प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार वितरणार्थ १० मार्च १९४६ को अेक विशेष समारम्भ हुआ। बंगाल प्रान्तसे प्रथम स्थान अधिकारीको ११) रु. तीन केन्द्रोंमेंसे प्रथम स्थान अधिकारीको ८); द्वितीय स्थान अधिकारीको ५) रु.; और प्रत्येक विभागमें अुत्तीर्ण विद्यार्थीयोंमें सर्व प्रथम छात्र-छात्राओंको १॥) रु. पुरस्कार पुस्तक रूपमें दिया गया। सभामें ५०० लोगोंकी अुपस्थिति थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

	परीक्षाका नाम	समय १०½ से १½	समय २½ से ५½
शनिवार— १४-९-४६	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
रविवार— १५-९-४६	परिचय	प्रश्नपत्र ३	
	प्रवेश	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	प्रारंभिक	प्रश्नपत्र १	
मंगलवार— १७-९-४६	कोविद	प्राचीनपद्य, समय ७½ से १०½	
बुधवार— १८-९-४६	कोविद	अुर्दू ७½ से १०½	
	परिचय	अुर्दू ७½ से १०½	

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता. १६।९।४६ सोमवारको सबेरे होगी।

प्रवेशकी मौखिक परीक्षा अगर पहले न ली जा सकी हो तो शनिवार ता. १४।९।४६ या रविवार ता. १५।९।४६को सुविधानुसार ली जा सकती है।

मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिके तारका पता-
'राष्ट्रभाषा' वर्धा।

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

महात्मा गांधी क्या कहते हैं :—

"जितना ही मैं पुस्तकोंका अध्ययन करता गया अुतना ही मुझे अुनकी विशेषताअें मालूम होती गयीं।"

हिन्दी साहित्यमें प्रेमचन्दजीका नाम अमर है। **प्रेमचन्दजी** अुपन्यास सम्राट माने जाते हैं। आपकी लिखी हुअी किताबोंका **नवीनतम स्टॉक** आ पहुँचा है। शीघ्र मँगवाअिये।

बहुत दिनोंके बाद **'हिन्दी' मराठी स्वबोधिनी** छप चुकी है। शीघ्र मँगवाअिये।

बौद्ध-साहित्य प्राचीन तथा प्रमाणित माना जाता है। बौद्ध-साहित्य 'पाली' में लिखा हुआ है। बौद्ध साहित्यके विद्वान **श्री. राहुल सांस्कृत्यायन** अिन्होंने हिन्दी साहित्यमें बौद्ध साहित्यकी किताबें लिखी हैं निम्न किताबोंको पढ़कर ही आप अुसकी कल्पना कर सकते हैं।

मज्झिम निकाय, (राहुल सांस्कृत्यायन)
मूल्य ६), डाकखर्च १)

विनयपिटक— (राहुल सांस्कृत्यायन)
मूल्य ६), डाकखर्च १)

दीघनिकाय— (राहुल सांस्कृत्यायन
मूल्य ५), डाकखर्च ॥=

समिति प्रकाशित पुस्तकें सस्ता साहित्य मण्डल, वर्धा शाखामें भी मिल सकेंगी।

प्रबन्ध सम्पादक—हृषीकेश शर्मा, राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति वर्धा।
मुद्रक—गोविंद भास्कर जोशी, भास्कर छापखाना (राठी मार्केट) वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५

अप्रैल

अंक ६

राष्ट्र भाषा

—बहुतसे राजनीतिज्ञोंको यह कहनेकी आदत है कि किसी भी देशको स्वतंत्र नहीं होना चाहिये जब तक कि वहाँके लोग अपनी आजादीका अिस्तेमाल करनेके काबिल नहीं हो जाते । यह सिद्धान्त तो अेक कहानीके अुस बेबकूफ पात्र जैसा है जिसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक वह तैरना नहीं सीखेगा तब तक-पानीमें प्रवेश नहीं करेगा ।

—मेकाले

राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	रक्तदान तो धर्म हमारा	(श्री ज्वा. प्र. ज्योतिषी)	१२९
२.	राष्ट्रभाषाका स्वरूप	(डा० राजेन्द्रप्रसाद)	१३०
३.	मैं नहीं रुकूँगा	(श्री महेन्द्र शर्मा)	१३२
४.	अंतिम-तरणी	(र. ना. ठाकुर)	१३३
५.	संपादक सम्मेलन और हिन्दुस्तानीका प्रस्ताव	(श्री. गं. अिंदूरकर)	१३४
६.	रिक्शावाला	(श्री कुमार हृदय)	१३७
७.	तीन कहानियाँ	(श्री खलिल जिब्रान)	१४०
८.	हिन्दी अुर्दूपर बातचीत	(श्री ह. शं. शर्मा)	१४१
९.	प्रारंभिककी गलतियाँ		१४७
१०.	जीवनका रहस्य	(अेक प्रचारिका)	१४९
११.	प्रधान मंत्रीकी ओरसे		१५०
१२.	हमारी नज़रोंमें		१५४
१३.	हमारे प्रान्तोंकी हलचलें		१५७
१४	परीक्षा-विभाग		१६१

नोट करलें

१. ग्राहकोंको पत्र लिखते समय अपनी 'ग्राहक-संख्या' अवश्य लिखनी चाहिये। वरना पत्रोंके जवाब देनेमें अनावश्यक विलम्ब होता है।

२. प्रचारकोंको चाहिये कि 'राष्ट्रभाषा' संबन्धी पत्र लिखनेपर अपनी प्रचारक संख्या लिखें।

३. 'राष्ट्रभाषा' के लिये जो लेख भेजा जाय वह साफ अक्षरोंमें चौथाअी हाशिया छोड़कर लिखा हो।

४. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य दो रुपये और नमूनेके अंकका तीन आने हैं। वी. पी. भेजनेका नियम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

सहकारी सम्पादक
शुकदेव नारायण

वर्ष ५] वर्धा, अप्रैल–१९४६ [अंक ६

रक्तदान तो धर्म हमारा

: श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, अेम. अे. :

क्या बोले वे ? अिनकलाबके बोल न आज जवानी बोले !
और बगावत मौन साधले; यूँ ही अपना मोल न खोले !
समझौतेके काँधोंपर चढ़, क्योंकि आ रही है आजादी,
और अिसलिये रहे सुसंयत युगका यह यौवन अुन्मादी !

तड़प रहे हों कोटि-कोटि जन जब मुट्ठी-मुट्ठी दानेको-
बिकनेपर मजबूर हुअी हो, असमत दो टुकड़े पानेको-
जब आहोंपर भी पहरा हो और कराहोंपर भी बन्धन-
कानूनोंकी काराका हो कैदी जब वाणीका नन्दन-

तब कैसे चुप रहे जवानी ? मौन बगावत क्या आराधे ?
प्रलय ज्वालका स्फोट बोल दो, शान्ति बैठ तब कैसे साधे ?
जिन्हें भरोसा हो, वे बैठें, औ' युगयुग तक करें प्रतीक्षा;
अपने युगने तो हमको दी, केवल महाक्रान्तिकी दीक्षा ?

सत्ताके टुच्चे सिंहासन ! क्या मानापमान ओ मानी ?
तेरे ध्रुवकी अटल पीठ तो तेरी गर्वीली कुरबानी !
तेरे शोणितके कतरेपर, न्योछावर सौ-सौ सिंहासन !
अुठरे ओ मेरे अुन्मादी ! तुझे अुलटना है ये शासन !

रक्तपातपर रोक रहे, पर रक्तदान तो धर्म हमारा !
हम दें अितना रक्त कि डूबे ये शासन हत्यारा !
वे शब्दोंके सुघड़ खिलाड़ी, बैठ अुधर वक्तव्य बघाड़ें,
आ ओ साथी, हम सब मिलकर, अिन महलोंकी नींव अुखाड़ें !

—कर्मवीरसे, सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाका स्वरूप

: देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद :

अिन दिनों हिन्दी अुर्दू तथा हिन्दुस्तानीकी बहुत चर्चा है। अिस संबंधमें मेरे भी अपने कुछ विचार हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि हिन्दीके साहित्यिकोंमें भी अिस प्रश्नको लेकर मतभेद है। मैं अिस मतभेदको बढ़ाना नहीं चाहता। मेरा तो ख्याल है कि अगर सच्चे साहित्यिक अच्छी चीजोंकी रचना करेंगे तो अवश्य ही समाजमें अुसका आदर होगा। सच्ची कलाकी कमी होनेपर तो कोअी भी चीज थोड़े दिनोंके बाद ही विनष्ट हो जायगी। भाषाका मुख्य काम विचारोंको व्यक्त करनेका है। अिसलिये विचारोंको व्यक्त करनेका वह साधन सुन्दर होगा तो अवश्य ही वह अधिकाधिक लोगों द्वारा मान्य होगा। भाषाके स्वरूपके प्रश्नको लेकर आज जो झगड़ा अुठ खड़ा हुआ है अुसमें कुछ विशेष तथ्य नहीं है। हमारी तो धारणा है कि अपने अच्छेसे अच्छे विचारोंको जो साहित्यिक रखना चाहें वे अुन्हें हिन्दी और अुर्दू दोनों ही भाषाओं द्वारा रखनेकी चेष्टा करें। अच्छे कलाकारकी अच्छी कृतियाँ ही भाषाको जीवित रख सकेंगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन भी अिसी महान अुद्देश्यको सामने रखकर अिस प्रश्नपर विचार करे क्योंकि अिसीमें साहित्यका सच्चा कल्याण संभव है। सच्ची बातें लोग अवश्य सुनेंगे, और खराब चीजें तो लाख वार कहनेके बावजूद भी कायम नहीं रह सकेंगी। मैं भाषा विषयक अिस प्रकारके झगड़ोंसे दूर रहना चाहता हूँ। **मैं अिस बातको मानता हूँ कि हिन्दी ही भारतकी राष्ट्रभाषा है।** हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अेक विभाग राष्ट्रभाषा प्रचारका भी है और मेरा विशेष संबंध अुसके अिसी विभागसे रहा है। बल्कि मैं तो समझता हूँ कि मुझे अगर सम्मेलनके सबसे अधिक दायित्वपूर्ण पदपर कभी पहुँचाया गया तो वह भी केवल राष्ट्रभाषा प्रचार संबंधी मेरे कामोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये ही। क्योंकि मैं अपनेको न तो कोअी बहुत बड़ा साहित्यिक समझता हूँ और न मैंने साहित्यकी वैसी महान सेवा ही की है।

सच तो यह है कि राष्ट्रभाषाके प्रचारको मैं राष्ट्रीयताका अेक अंग मानता हूँ। अिसलिये अुसका प्रचार करना मेरा अेक कर्तव्य हो जाता है। मैं समझता हूँ कि अधिक से अधिक लोग जिस भाषाको समझ सकें अुसीका प्रचार होना चाहिये। अिसके लिये हमें अिस बातपर विचार करना होगा कि विभिन्न प्रान्तोंमें अुस भाषाका क्या स्वरूप होना चाहिये। अैसा विचार करते समय आप देखेंगे कि तेलगू–मलयालम आदि दक्षिण प्रांतोंकी भाषामें संस्कृतके शब्दोंका प्राधान्य है। हम संस्कृतके अुन शब्दोंको अुस भाषासे निकाल नहीं सकते। ठीक अिसी प्रकार अुत्तर भारतके कुछ प्रांतोंमें हमें अरबी और फारसीके शब्दोंकी अधिकता देखनेको मिलेगी। अिसलिये अिन सब बातोंपर विचार करते हुअे ही हमें अपनी राष्ट्रभाषाका स्वरूप निर्धारित करना होगा। अब चाहे अुस भाषाका नाम हिंदी, अुर्दू अथवा हिंदुस्तानी कुछ भी क्यों न दें। राष्ट्रभाषा वही भाषा हो सकती है जो प्रचलित शब्दोंका अधिकाधिक समावेश अपने अन्दर कर सके। भाषाके स्वरूप निर्धारणके प्रश्नपर विचार करते समय हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि भाषा बनानेकी चीज नहीं है। वस्तु, काल आदिसे प्रभावित होकर वह स्वयं बनती है और स्वयंभू राष्ट्रभाषा हो सकती है। राष्ट्रभाषाका सुगम होना जरूरी है दुरूह और कठिन हिन्दीको मैं हिन्दुस्तानी नहीं मानता। अेक सच्चा साहित्यिक अपने अुच्च विचारोंके व्यक्तिकरणके साथ ही भाषाके स्वरूपको सुधार सकता है। ठीक अुसी प्रकार अेक खराब लेखक अुसको बिगाड़ भी सकता है। हमें अिस बातको भी नहीं भूलना चाहिये कि साहित्यकी भाषा और बोलचालकी भाषा अलग अलग हुआ करती है। अपनी भाषाको अधिकाधिक बलशाली बनानेके लिये दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओंके पारिभाषिक शब्दोंका ग्रहण बहुत जरूरी है। अिस लिये अपनी राष्ट्रभाषाको अधिकाधिक समृद्ध बनानेके लिये यह आवश्यक है कि हम संस्कृतके शब्दोंको निस्संकोच ग्रहण करें साथ ही अन्य विदेशी भाषाओंके शब्दोंको भी ग्रहण करनेसे नहीं हिचकें। आज अिस बातकी नितांत आवश्यकता है कि बंगाल, पंजाब, मद्रास आदि देशके विभिन्न भागोंमें समझी जानेवाली अेक सरल राष्ट्रभाषाका निर्माण किया जाय। देशके राष्ट्रीय विकास अेवं संगठनके लिये अैसा होना बहुत जरूरी है। बल्कि मेरी तो दृढधारणा है कि अगर भारतवर्षको सच्चा भारतवर्ष बनाना है तो अेक अैसी राष्ट्रभाषाको जन्म देना होगा। मुझे पूरी अुम्मीद है कि सभी साहित्य प्रेमी जन अिस पुण्यकार्यमें अपना पूरा पूरा सहयोग देंगे।

—बौंसी (बिहार)के भाषणसे

मैं नहीं रुकूँगा !

आज मेरी कलम न रोको, मैं सत्यको लिखूंगा। विषमताके व्यवहारोंमें लिप्त मानवको आज जगाअूँगा। व्यवहारोंके थोथे समाजके पुतलोंमें प्राण भर दूँगा। आज मुझे मत रोको—

मैं मुर्दोंमें नवजीवनका दान करूँगा। लेखनीमें जोर रहेगा ज्वाला जलेगी!
आडंबरके ज्ञानमें लग जायगी आग। पूछते हो, क्यों?
आजका मानव समाज मानवके खूनका प्यासा है।
धर्म और आदर्शके आड़में जिंदे मनुष्यको दफनाया जा रहा है।
कालिमाके घोर आवरणमें लिपटे हुअे घर्मांधिकार कर रहे हैं। मानवका
आज लेखा जोखा फिर भी पूछना है, क्यों?
प्रेम और भक्तिके मिस किया जा रहा है—वासनासे खिलवाड़!
यहाँ न्याय और धर्म तुल रहे हैं बनियेकी तराजूमें!
मुझे आज न रोको मैं सत्य कहूँगा!
सत्य और सतीत्वको चाँदीके टुकड़ोंपर नाचते देखा है?
भावनाओंका मोल हो रहा है तांबेके ठीकरों से!
मुझे आज न रोको मैं सत्य लिखूंगा!

लेखक—महेन्द्र शर्मा, अकोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतिम-तरणी

('टैगोर' के अेक पद्यसे अनुवादित)

दिवसावसानमें जब प्रकृतिपर अंधकारका अवगुंठन छा गया, सरिताके अुसपारवाले स्वर्ण-दुकूलसे न जान किस गायकने कार्य-विसर्जन राग अलापा और मेरे प्राण विस्मृतिमें लीन हो गय । सारे संसारके सुखोंको विस्मृतकर नतमस्तक जो आवर्त्तनके पथपर अग्रसर हो रहा है और प्रत्यावर्त्तनका मार्ग पाकर भी नहीं लौटता, अुसे खोजने मैं भाटेके श्रोतके साथ गृहत्यागकर चला जाअूँगा, जिस प्रकार संध्याके आते ही तप्त दिन चला जाता है । किन्तु हृदयमें फिर भी यही शंका है कि अवसानकालकी अंतिम-तरणीमें मुझे कौन खे ले जायेगा !

संध्याकी बेलामें भाटेके श्रोतमें अुसपार अेक पाल दृष्टिगोचर होता है, जो क्रमशः दूर होता जा रहा है । अुसमें बैठे यात्रीको अिस बढ़ते अंधकारमें मेरी दृष्टि कैसे चीन्ह पायेगी ! अस्ताचलके बुझते हुअे प्रकाशके साथ अुसका अस्तित्व भा विलीन होता जा रहा है, जिस प्रकार छाया अपनी प्रतिच्छायाके साथ चली जाती है । फिर भी अपना सारा संबल बटोरकर मैंने अुसका आवाहन किया । किन्तु अपनी पुकारका कोअी प्रत्युत्तर मुझे न मिला । हृदयमें यही आता है कि सांध्य समयकी अंतिम-नौकामें मुझे कौन खे ले जायेगा !

जिसने अपने गृहको न जाने किस त्याग-मुहूर्तमें छोड़कर प्रस्थानकी सीमा पार कर ली है, अैसी परिधिकि जिसके पार न वह दृष्टिगोचर ही होता है, न पकड़ाअी आता है । अुसके और मेरे बीचमें रहनेवाले मनुष्योंको जाने कौन आभाहीन रात्रिमें निद्राके प्रदेशमें भेज देता है । अैसा जहां पुष्प और ऋतु वैभव का कोई आकर्षण नहीं होता, जहां अश्रुविसर्जनपर हास खिल अुठा करता है और जिनके लिये दिनका आलोक अेक पुष्पके जीवनके समान तुच्छ होता है । वही मायावी घाटके अुस किनारे बैठा है । किन्तु मेरे हृदयमें यही आता है कि बुझते दिनकी अंतिम-नैयामें मुझे कौन पार लगा सकेगा !

—कुमारी शारदा वर्मा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक सम्मेलन और हिन्दुस्तनीका प्रस्ताव

: लेखक—श्री गंगाधर अंदूरकर :

१७ फरवरी १९४६, प्रयाग विश्व विद्यालयका विजथानगरम् हाल-हिन्दुस्तान भरके लगभग १२५ प्रमुख संपादक अखिल भारतीय संपादक सम्मेलनके ५ वें अधिवेशनके लिये जमा हुअे थे । संपादकोंमें अधिकता राष्ट्रीय पत्रोंके संपादकोंकी ही थी । अमृत बाजार पत्रिकाके संपादक श्री तुषारकान्ति घोष सम्मेलनके सभापति थे । कुछ अिनेगिने सरकारी दृष्टिकोणके समर्थक कहे जानेवाले संपादक भी थे ।

विषय समितिकी बैठक हो रही थी । लाहौरके किसी अुर्दू पत्रके संपादक श्री नरेन्द्रने अिस आशयका अेक प्रस्ताव अुपस्थित किया कि संपादक सम्मेलनकी कार्यवाही हिंदुस्तानीमें होना वांच्छनीय है । हिन्दीवालोंका दिल बांसो अुछल गया। हिन्दीवाले महात्माजीकी 'हिंदुस्तानी'का भले ही समर्थन न करते हों, किन्तु जहाँ अंग्रेजीको हटानेका सवाल आता है वहाँ हमारे देशकी कोअी भी भाषा हो हम अुसका समर्थन करनेके लिये तैयार हैं । प्रस्तावका समर्थन प्रयाग हिन्दी पत्रकार संघके सभापति तथा हिन्दीके प्रसिद्ध मासिक पत्र विश्ववाणीके संपादक पं. विश्वभरनाथने किया ।

हमें पूरी आशा थी कि प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे नहीं तो कमसे कम बहुमतसे अवश्य पास होगा । जो संपादक लोग वहाँ अेकत्रित थे अुनमेंसे अधिकांश राष्ट्रीयतावादी थे और अपने अपने पत्रोंमें महात्माजीके हिन्दुस्तानी सम्बंधी विचार डबल कालमका शीर्षक देकर छापते थे । कुछने तो महात्माजीकी हिन्दुस्तानीके पक्षमें अपने विचार भी प्रकट किये थे । मेरी रायमें अपने विचारोंकी व्यावहारिक रूप लेते देखकर कौन है जो प्रसन्न न हो !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु, यह सब नहीं हुआ। प्रस्तावका विरोध किया गया। 'राष्ट्रीयपत्रों'के संपादकों द्वारा हिन्दुस्तानीके प्रस्तावका विरोध किया गया। हमारी आशाओंपर तुषारपात हुआ। आश्चर्य यह था कि प्रस्तावका विरोध करते हुअे अेक भी वक्ताने प्रस्तावसे अपना सैद्धान्तिक विरोध नहीं दिखाया। विरोधके कारण लगभग अुसी तरहके बताये गये जिस प्रकार के कारण ब्रिटिश साम्राज्यशाही हिन्दुस्तानकी स्वाधीनता देनेमें देर करके बतलाती है।

हिन्दु–मुसलमानोंके झगड़ोंकी तरह हिन्दी-अुर्दूका झगड़ा सामने आया। देशी नरेशोंके प्रश्नकी तरह संपादक सम्मेलनके कुछ लोग हिन्दुस्तानी नहीं जानते यह प्रश्न भी सामने लाया गया। हिन्दुस्तानी परिपूर्ण भाषा नहीं हैं यह तर्क भी अुपस्थित किया गया। कुछ दिन रुकिये स्वराज्य मिलेगा अिस आश्वासनकी तरह संपादक सम्मेलनके मंत्री श्री साहनीने प्रस्तावक तथा अुसके समर्थकोंको यह मुलावा देनेकी कोशिश की कि राष्ट्रीय सरकार आनेके बाद यह सवाल अपने आप हल हो जायगा, हम लोग अेक साल तक और रुके रहें। सम्मेलनके सभापति श्री तुषारकान्ति घोषने भी मीठे मीठे शब्दोंमें कहा कि प्रस्ताव अव्यावहारिक है, वापस लिया जाय।

मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य तब हुआ जब काँग्रेसके मुखपत्र "नेशनल-हेराल्ड"के संपादक श्री रामाराव मंचपर आये और आपने 'हिन्दुस्तानी'में ही प्रस्तावका विरोध करना शुरू किया। आपने टूटी फूटी हिन्दुस्तानीमें भाषण यह दिखानेके लिये ही किया कि हिन्दुस्तानी गंभीर विचारोंका प्रतिपादन नहीं कर सकती। आपने अन्तमें यह भी कहा कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं बोल सकता। मेरी समझमें नहीं आया कि १० साल यू० पी०में रहनेके बाद भी श्रीरामाराव हिन्दुस्तानी क्यो न सीख सके?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसी सिलसिलेमें प्रयागके हिन्दी दैनिक पत्र भारतके संपादक श्री बलभद्रप्रसाद मिश्रने सभापतिसे पूछा कि क्या सभामें हिन्दुस्तानीमें बोलनेपर प्रतिबन्ध तो नहीं है ? सभापतिने कहा नहीं, किन्तु साथ ही यह भी कहा कि आप चाहें जिस भाषामें बोल सकते हैं किन्तु अपने विचार लोगोंको समझाते हो तो अंगरेजीमें ही बोलना अुचित है। मैं स्वयं हिन्दुस्तानी नहीं समझता।

अिस प्रस्तावको गिरानेके लिये अेक प्रति प्रस्तावभी रखनेकी कोशिशकी गयी। यह प्रस्ताव था हिन्दुस्तानकी सभी भाषाओंमें सम्मेलनकी कार्यवाही की जाय।

यह साफ था कि प्रस्ताव अंगरेजीके विरोधमें था। और प्रस्तावके गिरजानेसे यह भी स्पष्ट होगया कि अंगरेजी पत्रोंके संपादक, चाहे वे राष्ट्रीय पत्रोंके हों या सरकारी पत्रके, अपने वर्गके खिलाफ जानेवाली राष्ट्रीयनीतिका जो साथ नहीं दे सकते। यह ध्यान देनेकी बात थी कि देशीभाषाके पत्रोंके अधिकांश संपादकोंने प्रस्तावके पक्षमें अपने मत दिये थे।

यह स्पष्ट है कि राष्ट्रकी भाषा हिन्दी हो, अुर्दू हो, हिन्दुस्तानी हो; किन्तु अंगरेजी नहीं होगी। अंगरेजी पत्रकार भी अिस बातको भली भांति जान गये हैं। अंगरेज सरकारकी तरह अुन्हें यह भी मालूम होगया है कि अुनका अस्तित्व, अुनकी बड़ी बड़ी तनख्वाहें अब खतरेमें हैं। वे अिससे हिन्दी, अुर्दू हिन्दुस्तानी तीनोंका विरोध करेंगे। अंगरेज सरकारकी तरह वे हिन्दी हिन्दुस्तानीके झमड़ेको महत्व देकर हिन्दीको कभी अुर्दूको बढ़ावा देकर जबतक हो सके अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते हैं।

क्या हम हिन्दी-अुर्दू तथा हिन्दुस्तानीवालोंका भी अिसके प्रति कोअी कर्तव्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक्शावाला

: कुमार हृदय :

ढलती अुमरका सुन्दरलाल रिक्शा चलाता है। अुमर कोअी ३८ बरसकी है अिकहरे बदनका दुबला सुन्दरलाल गरीबीके कारण ४५ बरसका बुड्ढा दिखाअी पड़ता था। अुसने रिक्शा क्यों शुरू किया यह केवल अुसकी बेबसी और परवशताका कारण था। रिक्शा चलाकर जो कुछ भी वह कमाता था, अुसका दो तिहाअी रमजानखाँ पठानको दे देता और अेक तिहाअीमें अपने कुटुम्बका पालन पोषण करता। रिक्शा अुसका नहीं था और अिसीलिये दिनभरकी गाढ़ी कमाअीमें अुसे अधिक-से-अधिक रुपया सवा रुपया मिल पाता। यदि लड़ाअी शुरू न हुअी होती तो वह बीस आनेमें बड़ी खुशीसे अपने कुटुम्बको पाल पोस लेता, पर अिस लड़ाअीकी महंगाअी और धनवानोंकी बेअीमानीने सुन्दरलालकी कमर तोड़ दी।

मअीका महीना। कड़ाकेकी धूप। दोपहरकी भयंकर लू। अूपरकी चिलकतीधूप और नीचेकी गरम धूल! मुश्किलसे सड़कपर अेक दो आदमी चलते दिखाई पड़ते। सुन्दरलाल रिक्शा लिये किसी अनजान प्रतीक्षामें पीपलके पेड़के नीचे खड़ा था। अेक फटी बंडी और घुटने तक फटी धोती—यह सुन्दरलालकी वस्त्र सामग्री थी। दोनों कपड़े पसीनेसे तर थे। यह तो मानी हुअी बात थी कि अुन्हे मैले होना ही चाहिये। नंगे पैर धूल धूसरित बाल, गरीबीकी मैली संस्कारहीन सफेद काली डाँढ़ी। रिक्शासे टिका सुंदरलाल कभी अेक पैर अुठाकर रिक्शेपर रख देता और कभी दूसरा। सुबहसे अभीतक कोअी आमदनी नहीं हुअी थी। निराश खड़ा किसी भाग्यवानके आनेकी बाट जोह रहा था।

अितनेमे अेक अतिस्थूल बड़े पेटवाले सेठजी बगलमें मोटासा बिस्तर दाबे सामनेसे निकले और बड़ी अुपेक्षासे सुन्दरलालसे बोले—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्टेशन ले चलेगा—दो आने दूँगा; यदि गाड़ीपर बिठाल देगा तो तीन आने मिल जायेंगे।" सेठ सारी बातें अितने सपाटेमें कह गये कि बेचारा रिक्शावाला सेठके मुँहकी तरफ ताकता रह गया और जब तक वह संभले और बात करे अुसने देखा कि लक्ष्मी-पुत्र आगे बढ़ गये हैं। सुन्दरलालने रिक्शा दोनों हाथोंसे संभाला और जोरसे पुकारकर कहा "सेठजी! सुनिये तो।" सेठने अहसान सा बतलाते हुअे कहा "चलना हो तो चलो –नहीं तो मैं जाता हूँ–मैं दो आनेसे अेक कौड़ी भी ज्यादा नहीं दे सकता।" अितना कहकर सेठ थोड़ा और आगे बढ़ गये। सुन्दरलालने देखा कि आजका मनहूस दिन शायद दो आनेकी भी आमदनी न कराये! अिसलिये अुसने चिल्लाकर कहा "सेठजी! ठहरिये" अितना कहकर वह सेठके पास रिक्शा लेकर पहुँचा। सेठ रिक्शेपर अिस अभिमानसे बैठे जैसे शायद शाहजहाँ पहले-पहले मयूर सिंहासनपर बैठा हो।

सुंदरलालने २॥ मनका बोझ खींचना शुरू किया। सेठके पास सहानुभूतिके शब्द नहीं थे। प्रोत्साहन वे दे ही नहीं सकते थे। बीच बीचमें डाँट-डपट गालियाँ जरूर सुन्दरलालपर दो तीन पड़ जाती थीं। बेचारा मानव पशु खींचे चला जाता था। पसीनेसे तर फिर भी रिक्शा खींचे चला जाता था। तलवे भुन रहे थे फिर भी रिक्शा आगे ही जाता था। सिर फटा जा रहा था फिर भी रिक्शा खींचे चला जा रहा था। सेठको अिन सब यातनाओंकी क्या परवाह? वह अपनी सुरती, सुपारी और पानके आनन्दमें मस्त था।

स्टेशन ३॥ मील था। सुन्दरलालका गरीब पशु-चोला किसी तरह स्टेशनके करीब पहुँचा। मुश्किलसे अेक फर्लांग भी पूरी बच गअी थी। सेठ चिल्ला रहा था–जल्दी चलो गाड़ी छूट जायगी। यदि गाड़ी न मिली तो अेक पैसा भी न दूँगा। सुन्दरलाल बेतरह थक गया था। पैर अुठाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं अुठते थे। थोड़ा आर आगे बढ़ा कि लड़खड़ाया और धड़ामसे नीचे आ गिरा और साथ ही सेठका २॥ मनका बोझा बेचारेपर आ पड़ा। वह बेहोश हो गया। सेठ गालियाँ देते हुआ अुठा और बिना कुछ कहे स्टेशनकी ओर लदफद भागा।

गाड़ी सीटी देकर रवाना हो चुकी थी। सुन्दरलाल बिना सूचना दिये महा यात्राकी तैयारी कर रहा था। सेठको गाड़ी छूट जानेका रंज था।

"मैं जानता हूँ मेरी जबानकी सख्तीपर लोग अेतराज करेंगे। पर क्या सख्ती बिला सबब है? मैं सचकी तरह सख्त रहूंगा, और अिंसाफकी तरह रू-रियायतसे दूर। मैं अपनी बात न जब्तके साथ सोचूंगा, न बोलूँगा न लिखूँगा। जिसके घरमें आग लगी हो अुससे कहो जब्तके साथ शोर मचाये; जिसकी आबरू लुटती हो अुससे कहो अुसे जब्त के साथ बचाये; मुझे मेरी बातमें जब्त मत सिखाओ! मैं सचाअीपर हूँ: भुलावेमें न डालूँगा, मुआफ न करूँगा, पीछे भी न हटूँगा; और लोगोंको मेरी बात सुननी पड़ेगी। लोगोंकी लापरवाही गहरी है- अितनी कि अुन्हें जगानेके लिये बुत और मुर्दे भी जी अुठनेको मजबूर हो जायँ।

—गुलामी-विरोधी अमरीकन अखबार लिबरेटरके पहले अङ्क से; जनवरी १, १८३१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन कहानियाँ

: ले.—खलिल जिब्रान :

१–लोमड़ी

अभी सूर्योदय हुआ था। लोमड़ीने अपनी परछाईं देखी और वह स्वयं कहने लगी, " आज बिना अूँटके मेरा पेट भरेगा ही नहीं !"

सारी सुबह अुसने अूँट ढूँढ़नेमें बिता दी।

दोपहर हुअी। लोमड़ीने फिर परछाअींकी ओर देखा–

और अपने आप कहने लगी, "चूहेसे भी अब मेरा काम चल सकेगा।'

२–नया सुख

रातकी बात। मुझे अेक नये सुखकी कल्पना सूझी। मैं अुसका पहला अनुभव लेनेको ही था, कि मैंने दो व्यक्तियोंको अपनी तरफ दौड़ते हुअे आते देखा ! अुनमेंसे अेक था देवदूत—और दूसरा शैतान।

हमारे घरके दरवाजेपर ही अुनसे मुलाकात हुअी। निमिषभरमें अुन दोनोंमें युद्ध शुरू हुआ। युद्धका कारण ? मेरे अिस नये सुखके ही बारेमें अुन दोनोंमे वादविवाद चला था।

देवदूत चिल्ला रहा था, "पाप है वह ! बहुत बड़ा पाप !"

शैतान तीखे स्वरमें जवाब दे रहा था, छीः ! वह पुण्य है। अैसा पुण्य और कहाँ !"

३–जोतिःशास्त्रज्ञ

हमने अेक अंधा देखा। वह अकेला ही मंदिरकी छायामें बैठा था। मेरे दोस्तने कहा, "तुमने अुस आदमीको देखा ? अपन दशका सबसे ज्ञानी पुरुष है वह !"

मैं अकेला ही आगे बढ़ा, अुस अंधेके पास जाकर अुसे अभिवादन किया और अुससे बातें करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी देर बाद मैंने कहा, "महाराज, आपमें यह अंधत्व कब आया ?" "मैं जन्मसे ही अंधा हूँ।" अुसने कहा।

मैं बोला, 'आपका ज्ञान हासिल करनेका जरिया कौन सा है ?"

अुसने हँसकर कहा, "मैं जोतिःशास्त्रज्ञ हूँ।"

फिर अपनी छातीपर हाथ रखकर अुसने कहा, "यहाँ भ्रमण करने वाले चाँद सूरज और सितारोंका निरीक्षण किया करता हूँ।"

मराठीसे अनुवादक—म. भु. मुरूमकर, प्र. रा. भा. प्र., अहमदनगर

चयन :

हिन्दी अुर्दूपर बातचीत

: श्री हरिशङ्कर शर्मा :

गत वर्ष मार्च मासमें अछनेरा रेलवे स्टेशनके बाबुओंने कवि-सम्मेलन और मुशायरेका आयोजन किया था। कवि-सम्मेलनका सभापति मैं था और मुशायरेके सद्र थे अुर्दूके मशहूर शायर और अदीब जनाब सीमान साहब अकबरावादी। सम्मेलन और मुहावरेमें शरीक होनेके लिये दूर-दूरके कितने ही कवि और शायर बुलाये गये थे। दोनों जल्सोंकी बड़ी शानसे तैयारियाँ की गअी थीं। पहले दिन मुशायरा था। और दूसरे दिन कवि-सम्मेलन। मुशायरेमें संयोजक महाशयकी अिच्छानुसार कविलोग भी दर्शक या श्रोताके रूपमें सम्मिलित हुअे थे। कवि-सम्मेलनके लिये शायरोंको आग्रहपूर्वक रोकनेकी चेष्टा की गयी परन्तु अेक आधेको छोड़ कर, कोअी भी शायर अुसमें शामिल होनेको राजी न हुआ।

अेक शायर साहब बोले—जनाब, हम लोग आपकी 'कबता समझ नहीं पाते, अिसलिये अुनमें हमें दिलचस्पी ही क्या हो सकती है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे साहबने फ़रमाया—'नहीं साहब, हिन्दी वाले बड़े सकील अलफ़ाज़ (कठिन शब्द) अिस्तेमाल करते हैं; लिहाज़ा हमको अुनकी 'कबता'में कोअी मज़ा नहीं आता।'

तीसरे हज़रत बोले—'अरे म्याँ, हिन्दी भी कोअी ज़बान है। गाँव वालोंकी बोलीको ही हिन्दी कहने लगे हैं।'

अितनेमें बात काटकर अेक हिन्दी-कवि कहने लगे—हम तो आपकी शायरीको समझनेकी कोशिश करते हैं, और कुछ-कुछ समझते भी हैं, परन्तु आप तो हिन्दी-कविता सुनना ही नहीं चाहते। यह कहाँका अिन्साफ़ है।'

अिस साधारण बात-चीतने कुछ गम्भीरताका रूप धारण किया और वह अेक बहस-सी बन गअी। हिन्दीवाले अपना दृष्टिकोण रखने लगे और अुर्दूवाले अपना।

सौभाग्यसे दोनों पक्षोंमें कअी महाशय अुच्च शिक्षा प्राप्त और कालिजोंके अध्यापक भी थे।

अुर्दूके अेक प्रोफ़ेसर साहब बोले—'दरहक़ीक़त बात यह है कि हिन्दीवाले अुर्दूकी बेक़द्री करते हैं; न अुसे बोलते हैं और न लिखते-पढ़ते हैं। अगर हिन्दीवाले अुर्दू जानने लगें तो हिन्दी-अुर्दूका सवाल ही पैदा न हो। दोनों क़ौमें अेक दूसरेके नज़दीकतर आजायँ। कहिये, अिसमें मुबालिग़ा तो नहीं है।'

हिन्दी पक्षके कुछ भावुक लोगोंने गर्दन हिलाकर प्रोफ़ेसर साहबकी ताअीदकी, और कअीने अुनकी अिस 'अद्भुत अन्वेषणा'के लिये दाद भी दी। 'ठीक है, प्रोफ़ेसर साहब, आपका कहना बजा है, वास्तवमें हम लोग अुर्दूकी तरफ़ ध्यान नहीं देते।'

हिन्दीवालोंकी ओरसे प्रोफ़ेसर साहब अपने 'फतवेका, स्वागत देख बड़े हर्षित हुअे और अुनके साथियोंकी खुशीका तो ठिकाना न रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानों अुन्होंने हिन्दीको परास्त कर अुसे सर्वदाके लिये अपना गुलाम बना लिया, और हिन्दीवालोंको गर्दन अुठानेके लिये कोअी गुंजायश नहीं रहने दी।

अभिप्राय यह कि अुर्दूदाँ अिस बातूनी विजयपर गर्वोन्नत थे और हिन्दीवाले अपनी हारसे लज्जित और नतमस्तक।

मैं हिन्दीवालोंकी मण्डलीमें चुपचाप बैठा था। न मुझे किसीके हर्षसे मतलब था न विषादसे सरोकार। सुन सबकी रहा था, कहता कुछ न था।

अेक अुर्दू साहित्यके पण्डित मेरी ओर संकेत करके बोले—'कहिये, जनाब, आप क्यों खामोश हैं, क्या आपको अिस गुत्फगूमें दिलचस्पी नहीं। आपके सब साथी तो अपनी बेकसी और बेबसीपर सेरे तसलीम खम करते हैं, आप भी अपने कुछ खयालातका अिजहार कीजिये।

मैंने बड़े अदबसे अर्ज़ किया—'हज़रत, मैं न आपसे सहमत हूँ, न अपने साथियोंसे। मौजूदा बात-चीतमें मेरा अलग दृष्टि-कोण है, अिसीलिये मैं चुप हूँ।

मेरे शब्द सुनकर दोनों पक्षोंको आश्चर्य हुआ। हिन्दीवाले अुत्सुकता किन्तु अपेक्षासे मेरी ओर देखने लगे। अुर्दूवाले वंग्यात्मक वाणीमें बोले; हाँ, हाँ जनाब आप भी फरमाअिये; जरूर फरमाअिये। आखिर मालूम हो कि आपके पास हमारे प्रोफेसर साहबके खिलाफ क्या क्या दलायत हैं!'

मैंने बड़ी गम्भीरता और दृढ़ताके साथ कहा—'जनाब, आप जरा कचहरियोंमें जाकर पता लगाअिये कि हिन्दी और अुर्दू दोनों भाषाओंको जाननेवाले कितने और किस समुदायके वकील या अहलकार हैं, और केवल अुर्दू जाननेवाले कितने हैं, और अुनका किस समुदायसे सम्बन्ध है। अिसी प्रकार डाक्टर, प्रोफेसर, अिंजीनियर, क्लर्क तथा अन्य लोगोंको देखिये और मालूम कीजिये कि अुर्दू-हिन्दी दोनों भाषाएँ जाननेवाले किस समुदायमें हैं, और केवल अुर्दू जाननेवाले किसमें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरा अनुमान है कि जिस समुदायमें आपको अुर्दू हिन्दी दोनोंके ज्ञाता मिलेंगे वह हिन्दीका पोषक है और जिसमें केवल अुर्दू जाननेवाले, वह अुर्दूका पैरोकार !"

'अिसका मतलब यह हुआ कि हिन्दीके पोषक अुर्दू भी पढ़ते हैं, परन्तु अूर्दूके पोषक हिन्दीसे बिल्कुल दूर रहना चाहते हैं—अुसकी हवा तकसे बचते हैं। फिर भी आप फरमाते है कि हिन्दीवाले अुर्दू नहीं पढ़ते। अब आप ही बताअिये कि हिन्दीवाले अुर्दू नहीं जानते या अुर्दूवाले हिन्दीसे परहेज करते हैं।'

मेरे अिस कथनसे अुर्दूवाले कुछ झेंप-से गये, और हिन्दीवालोंको साहस मिला। वे ज़ोर-ज़ोरसे कहने लगे—'बेशक, बेशक ! हरिजी ठीक कहते हैं। प्रायः सब हिन्दू वकील, डाक्टर, प्रोफेसर, अिंजीनीयर, क्लर्क हिन्दी जानते हैं, परन्तु मुसलमान वकील डाक्टर आदि हिन्दी नहीं सीखते अुसे बुरा समझते हैं।'

अिसपर मैंने अपने साथियोंसे कहा-'हिन्दू-मुसलमान न कहकर मैं तो यहाँ हिन्दी-अुर्दू जाननेवाले कहना ही अधिक पसन्द करूँगा, क्योंकि साम्प्रदायिक प्रश्न अुठाना मेरा अुद्देश्य नहीं है। अिस समय तो भाषापर विचार हो रहा है, हिन्दू-मुसलमानके मसलेपर नहीं।'

मेरी दलील सुनकर अुर्दू-पक्ष बहुत प्रभावित हुआ। मानो अुसके पास मेरी बात काटनेके लिये कोअी युक्ति शेष न थी। प्रोफ़ेसर साहब बोले—'खैर साहब, यह पढ़े-लिखे लोगोंका मसला रहा, वे अुर्दू जानते हैं या नहीं अिसे छोड़िये। मगर यकीनन हिन्दीवाले आम तौरसे अुर्दू अलफाजका अिस्तैमाल नहीं करते, क्या यह अफसोसकी बात नहीं है ! क्या अैसा करना आप लोग ठीक समझते हैं ?'

'प्रोफेसर साहब, पहले मेरी बात मंजूर कीजिये, तब आगेका सिलसिला शुरू होगा। "खैर" कह देनेसे काम नहीं चल सकता।'—मैंने गम्भीरतासे कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर साहबने फरमाया,—'हाँ, मुझे अिस सूरतमें आपकी बात मान लेनेमें कोअी अुज्र नहीं कि आपका पढ़ा-लिखा तबका अुर्दू जानता है, मगर आम लोग अुर्दूसे परहेज़ करते हैं।'

अिसके अुत्तरमें मैंने बड़ी नम्रता किन्तु दृढ़तासे निवेदन किया 'प्रोफेसर साहब, माफ कीजिये, आपका यह खयाल भी ठीक नहीं है। हिन्दीवाले अरबी-फारसीके जितने शब्द बोलते हैं, अुतने अुर्दूवाले हिन्दी-संस्कृतके नहीं बोलते। देखिये, हिन्दीवाले कुपढ़ और अपढ़ तक खाली, ज़रूरी, मज़बूत महल्ला, महल, दरवाज़ा, ग़लती, जिन्दा, लेकिन, रोज, काग़ज, मतलब, महरबानी, वक्त, जवाब अित्यादि सैकड़ों शब्द नित्य बोलते हैं; परन्तु अुर्दूवाले रिक्त, आवश्यक, दृढ, भवन, दूबार, त्रुटि, जीवित, परन्तु, नित्य, पत्र, मस्तिष्क, अभिप्राय, कृपा, समय, अुत्तर, अित्यादि शब्दोंको कभी काममें नहीं लाते। फिर आप फरमाते हैं कि साधारण स्थितिके हिन्दीवाले अुर्दू नहीं बोलते। अब आप ही बताअिये कि सिर्फ़ अुर्दू जानने वाले हिन्दी शब्दोंका कितना अिस्तैमाल करते हैं। अिसी वक्त देखिअे, हम हिन्दीवाले बराबर बोल-चालमें अुर्दू अलफाज अिस्तैमाल कर रहे हैं, परन्तु आप हिन्दी शब्दोंको अपनी जुबानपर भी नहीं आने देते।

'आपको हिन्दी जाननेवाले [illegible], परचूनिये, ताँगेवाले, पनवाड़ी, नाअी, धोबी सभी अैसे मिलेंगे [illegible] बोल-चालमें पचासों अुर्दू-फारसीके शब्दोंको बोलेंगे, परन्तु [illegible] मौलाना, मुन्शी और मिस्टर तक हिन्दी शब्दोंसे बचते हैं, फिर भी आप हिन्दीवालोंको ही दोष देते हैं। यह कितने अफ़सोसकी बात है। प्रोफेसर साहब, डेढ़ घण्टेकी, बातचीतमें आपमेंसे किसीके मुँहसे अेक भी हिन्दी शब्द नहीं निकला। अेक साहबने अेक शब्द बोला सो भी महा अशुद्ध। अर्थात् पवित्रको 'पिअूत्तर' कह कर महा अपवित्र कर डाला।' प्रोफेसर साहबके पास मेरी अिस दलीलका भी कोअी जवाब न था। अुनके साथी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी चुपचाप सुनते रहे, और बातको पी गये। थोड़ी चुप्पीके बाद अेक मौलाना साहब जो अरबी फारसीके विद्वान और अेम० अे० ओ० अेल० थे, बोले—नहीं जनाब, आप लोग प्रोफेसर साहबका मक़सद नहीं समझे। अुनका फरमान यह है कि हिन्दीवाले अुर्दू अदबसे बिल्कुल बेबहरा हैं—अुन्हें अुसकी कतअी वाकफियत नहीं है। मैं समझता हूँ, प्रोफेसर साहबका यह फरमाना बिल्कुल दुरुस्त है। अिसके मुतल्लिक दो राय नहीं हो सकतीं।'

मौलानाकी यह बात सुनकर मुझे हँसी आगयी। मेरे अेक साथी बोले—नहीं जनाब, पहली बातका जवाब तो हो गया, अब आप अेक नया पहलू सामने रख रहे हैं। क्यों है न।....अच्छा....

अभी मेरे साथीकी बात पूरी न हुअी थी कि बीचमें ही मैं बोल अुठा—

'अच्छा, जनाब यह भी सही, हम लोग अुर्दू अदबसे दिलचस्पी रखते हैं या नहीं अिनका फ़ैसला तो अभी हो जायगा। हाथ कंगनको आरसी ही क्या। सुनिअे, हम सब हिन्दीवाले हैं, परन्तु अैसा कोअी नहीं जिसे हाली, अकबर, दाग, ग़ालिब चकबस्त, अिक़बाल, फ़ानी आदिके दो-चार शेर याद न हों। अभी सुनाअे देते हैं। परन्तु क्या आप लोग तुलसीदास, सूरदास रहीम, रसखान, केशव, बिहारी, मैथिलीशरणगुप्त आदिकी दो-अेक पंक्ति भी सुना सकेंगे। मैं समझता हूँ, यह बहस बड़ी दिलचस्प होगी, सुनाअिये।' बात ही बातमें कअी हिन्दीवालोंने अुर्दू शायरी सुनानी शुरू कर दी जिसमें अुर्दूवाले भी मज़ा लेने लगे। परन्तु अब अुर्दूवालोंसे हिन्दी-कविता सुनानेको कहा गया तो सब चुप! किसीको अेक भी दोहा-चौपाअी याद नहीं। फिर क्या था, गम्भीर वायु-मण्डल हास्यमें परिणत हो गया और 'हार-जीत'के नामपर क़हक़हे लगने लगे। हिन्दीवाले बोले—देखा आपने, हम लोग अुर्दू जानते हैं, अुसमें दिलचस्पी लेते हैं, परन्तु आप हिन्दीका अेक शब्द भी नहीं बोल सके—दोहेका अेक चरण भी न कह सके। कहिये प्रोफ़ेसर साहब, अिन्साफ़से कहिये—आपकी शिकायत ठीक है या हमारा दावा दुरुस्त है।'

अितनेमें रेलका वक्त हो गया, हाथ मिलाकर सब लोग हँसी-खुशीसे प्लेट-फार्मपर पहुँचे और अब बात-चीतका रुख बदलकर दूसरा दौर शुरू हुआ।

—कर्म योगसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगीः—

प्रारंभिककी गलतियां

: संग्रहकर्ताः- श्रीराम दादलाणी :

फरवरी '४६ की प्रारंभिक परीक्षाकी अुत्तर पुस्तकें जांचते समय जो मजेदार बातें और गलतियाँ मिली, अुन्हे यहांपर परीक्षार्थियों और प्रचारकोंके लाभार्थ दिया जा रहा है।

प्रश्न १ (अ) शबरीने रामके लिये क्या तैयारी की?

अुत्तर—शबरीने रामके लिये जुंपड़ी साफ की।
जुंपडीमें गार (?) की। ..... पानी छांटा।
शबरीने रामके लीये जंगलमें बोर (?) लाके रखा।
.....जुंपड़ी बराबर की।

प्रश्न (आ) वीर नारीने खतरेका घण्टा क्यों बजाया?

अुत्तर—क्यों कि लाट साहब अन्दर आने लगे। दूसरे अेक परीक्षार्थीने लिखा—वीर नारीकी तरह हम भी घण्टा बजायें और अंगरेजोंकी गुलामीसे छूटें और आज़ाद हिन्दुस्तानमें रहें।

प्रश्न (अि) गायके मरनेपर भी हमें क्या क्या फायदे होते है?

अुत्तर—अुसका गोबर काममें आता है। ..... अुसकी चमरीसे मेरा बूट बनता है। .....गायकी हड्डियोंसे मटी साफ होते ह। .... कायके मरनेके लिये अुसका चमड़ा नीकाल लेते हैं। ..... गायका चमड़ाका कपड़ा बनता है। अुसका सींग जमीन खोदनेके काममें आते हैं।

प्रश्न (अु) गुरुद्वारा और गिरजाघर क्या हैं?

अुत्तर—गुरुद्वारा और गिरजाघर मुसलमानोंके मीसजदों हैं।—गुरुद्वाराके वो रविवारको वां जाता हय और वहाँ बड़ा घंट हम यह बजाता हय और गिरजाघरमें वो लोग गुरुद्वाराकी पूजा करना हय, सब अिसाअी लोग वहाँ जता हय गिरजाघरमें जाता हैं।—गुरुद्वारा अेक गाँव हैं।—गिरजाघर अिसाअियोंका मन्द्र हैं। अिसाअी लोग जुमे जुमेके दिन जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हिन्दू लोग गिरजाघरमें भहगबानकी पूजा करते है और पाठ भी रखते हैं। गुरुद्वारा और गिरजाघर पंजाब हैं। ..... गिरजाघर पारसीयोंका पवित्र स्थान हैं। वह अमृतसरमें है।

प्रश्न २, निम्न लिखित वाक्य बहुवचनमें लिखिये—

(१) घोड़ा मदद करता है। अुत्तर—अमरा तीन घोड़ा अमाराकूँ मदद करता है।

(२) आदमी चिट्ठी लिखता है। अुत्तर—वह आदमी चिट्ठी लिखती है।

(३) पेड़को पानी देना चाहिये। अुत्तर—अुस पेड़को पाणी दो। अेक परीक्षार्थीने यों लिखा हैं—"घोड़ी मदद करति है। तैरते तैरते वही दूर निकल गअी।"

प्रश्न ४, शब्दोंको सार्थक वाक्योंमें प्रयोग करना है। यह भी कोअी प्रयोग है?

दिवाला—यह काम मत करो, नहीं तो दिवाला निकल जायगा।

"जो दिवाल बनाना है वह दिवाला कहलाता हैं।"

"दिवालामें हिन्दु पूजा करते हैं।"

सोच विचार—"मेरा सोच विचार है कि मैं आज रोटी नहीं खाहेगा।" बायो हिन्दूस्तानके वास्ते सोचो बिचारो।"

दुआअें—पोस्ट आफिसमें 'दुआअें' भी आती हैं। —"हम कपड़े क्यों दुआअें?"—

आजाद—मौलाना आजाद कराचीमें आता है।

तनख्वाह—आगसे तनख्वाह निकलता है।

अिजाज़त—धामलोंके अिजाज़तका कोअी आदमी न था।—वह अिजाजत करनेके लिये प्रदेश जाता है।

मुस्तैद—मैं मुस्तैदको जाअूँगा। —मुस्तैदका बहुवचन क्या हैं?

अिन अुदाहरणोंसे स्पष्ट है कि परीक्षार्थी पुस्तक पढ़नेपर ध्यान नहीं देते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियोंकी कलमसे—

जीवनका रहस्य

जब वह छोटी अबोध बालिका-खेलमें व्यस्त-थी, तब किसीने आकर अुसके सब खिलौने छीन लिये, और छिन्न भिन्न कर दिये।

तब अुसके कोमल हृदयपर चोट पहुँचा....

वीणाके तारोंके समान वह बज अुठी—

कअी दिनों बाद, फिर जीवन संग्राममें सफल होकर भी-यश पाकर भी-अुसके मनमें वह याद न आया। वह तरल हंसी हंसने वाली बालिका विचारशील हो गया। अुसके मनमें विद्रोहकी भावना प्रबल हो अुठी थी। अुसी पक्षीकी भांति जिसे लोहेके पिंजरसे निकालकर सोनेके पिंजरेमें रखा जाता है—वह वैसी ही करुणाकी मूर्ति बन गअी।

अुसके मनमें अेक खीझ थी।

फिर कुछ दिन बीते.....

तब अेक बार प्रभातकी वेलामें बहती हुअी तरल घंटियोंके संगीत लहरीके साथ बहता हुआ यह भाव अुसके मनमें अुठा.....

जैसे वीणाके तारोंमें स्वर, वैसे ही प्राणी मात्रके रोम-रोममें विद्रोही भाव भरा रहता है....अवसर पाते ही वह चिल्ला अुठता है--बज अुठता है।

क्या अच्छा है यह बज उठना!

मर्मर आवाजमें किसीने कहा....शायद वह अुसका ही अंतरनाद था!

बज अुठो; मगर कराहो नहीं.....

बज अुठो अेक अलौकिक मधुर गानमें, तारोंके विषम झंकारमें नहीं.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि सुखमें चैन नहीं, अैश्वर्यमें चैन नहीं, यशमें भी चैन नहीं, चैन बाहरी आजादीमें नहीं। अगर है तो मनकी मुक्त अवस्थामें, आत्माकी आजादीमें, दिन रातसे सुख दुखके अूपर अुठनेमें.....

और यह चैन तब सम्भव हैं, जब अिस शरीर रूपी वीणाको बजानेवाली आत्मा अपने मूल स्वरूपको जानले.... तब जैसे अेक कुशल कलाकार वीणाके स्वरोंमें जगतीको विह्वल बना देता है, वैसेही तुम्हारे जीवनसे आनन्द और संगीतकी लहरें फूट निकलेंगी; जो विश्राम और सान्त्वना देंगी.....कअी व्यक्ति और भूले—भटके हृदयोंको। कअी आत्माओंको अेक विकासशील आत्माका सहारा मिल जावेगा और तब;

तुम जीवन कलाकार बन जाओगे.....तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी, फैलेगी और व्याप्त हो जावेगी, समस्त भुवनमें क्योंकि जो जीवनका सार हैं वह तुमने पा लिया।

—अेक प्रचारिका

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

अुत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन :

८, १० मार्चको होनेवाला सम्मेलन २३ मार्च १९४६ को ही हो सका। देर पके सो मीठा हो। सम्मेलनकी कार्रवाअी हिन्दी पत्रोंमें प्रकाशित हो चुकी हैं और अध्यक्ष श्री ब्रजमोहन बिड़लाका भाषण भी। अिस अवसरपर कलकत्तेसे श्री भँवरमल सिंघी, श्री बसन्तलाल मुरारका और श्री सीतारामजी सकसेरिया पधारे थे। हमें अुत्कल प्रान्तके चारों जिलोंमें बड़ी लगनसे कार्य करनेवाले अपने प्रचारक बन्धुओंसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुअी। दो जिलोंमें भी निकट भविष्यमें कार्य संगठित होनेकी आशा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुत्सवके अवसरपर कुछ राष्ट्रभाषा प्रेमी बालकोंने 'रक्षा-बंधन' नाटक किया था। आजकल हर बातमें हिन्दु-मुसलमानकी गंध ढूँढनेवाले पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता होनी चाहिये कि नाटकके पात्रोंमें हिन्दु-मुसलमान सभी विद्यार्थी थे। अुड़िया भाषाभाषी विद्यार्थियोंकी हिन्दीका अुत्कृष्ट नाटक प्रथम बार 'स्टेशज' करनेके लिये बधाअी।

श्री ब्रजमोहन बिड़लाने समितिको ५०००) दान दिये, जो हमें विश्वास है कि अुत्कल प्रान्तमें राष्ट्रभाषा प्रचारके लिये अुनके दानका श्रीगणेश मात्र है।

रेडियोका बहिष्कार :

"अखिल भारत वर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समितिकी बैठकने २४ और २५ मार्चको अपने रेडियो विरोधी आन्दोलनकी गतिविधिपर गम्भीरता पूर्वक विचार किया। रेडियो विभागकी परामर्शदातृ समितिमें सम्मेलनका जो प्रतिनिधि निमंत्रित किया गया है वह भेजा जाय या नहीं और यदि प्रतिनिधि भेजा जाय तो रेडियो बहिष्कार जारी रखा जाय या नहीं? अिसपर स्थायी समितिके सदस्योंने हर पहलूसे विचार किया। अधिकांश सदस्योंका मत था कि अिस सम्बन्धमें जो सरकारी विज्ञप्ति निकली है, वह असन्तोष जनक है। बहिष्कार जारी रहना चाहिये। सम्मेलनके अनुशासनको भंग करके जो लोग रेडियोमें गये हैं अुनकी स्थितिपर भी चर्चा चली। अन्तमें यह तय हुआ कि सरकारी विज्ञप्तिके सम्बन्धमें रेडियो अधिकारियोंसे स्पष्टीकरण मांगा जाय तथा आगामी ५ मअीको रेडियो विरोधी लेखकसंघके अधिवेशनके अवसरपर स्थायी समितिका अेक विशेष अधिवेशन फिर बुलाया जाय, जो सारी स्थितिका अध्ययन करके अपना आगामी कार्यक्रम निश्चित करे। रेडियो बहिष्कार सम्बन्धी अन्तिम निश्चय अुसीमें होगा। हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके मन्त्री श्री श्रीमन्नारायणकी रायमें रेडियोकी भाषा 'हिन्दुस्तानी"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है; अुर्दू है । काका कालेलकरने रेडियोकी हिन्दुस्तानीको अंग्रेज सरकारकी ओरसे हमपर लादी हुअी भाषा और हमारे बीच झगड़ा पैदा करनेवाली भाषा कहा है । जिस "हिन्दुस्तानी के" विरोधमें हिन्दुस्तानीके समर्थक तक हिन्दी साहित्य सम्मेलनके साथ हैं, आश्चर्य है कि सरकार अुस भाषाको "हिन्दुस्तानी' कह कह कर जनताकी आँखमें धूल झोंकनेसे बाज नहीं आती । जनता हिन्दी हिन्दुस्तानीके झगड़ेको ही नहीं समझ पाती है अब अुसे रेडियोकी "हिन्दुस्तानी" और वर्धाकी "हिन्दुस्तानीमें' भी भेद करना पड़ेगा । सर सुलतानने अुस दिन अपने 'हिन्दुस्तानी' पक्षका समर्थन करते हुअे पूज्य गान्धीजीकी ओर अिशारा करके कहा था, "अच्छे अच्छे लोग अुनके साथ हैं ।" हिन्दीवाले वर्धाकी हिन्दुस्तानीसे ही प्रसन्न नहीं है, यह रेडियोकी 'हिन्दुस्तानी' तो खाजमें कोढ़ है । वर्धाकी हिन्दुस्तानी प्रचार सभाको भी आत्महितकी दृष्टिसे रेडियो-विरोधमें हिन्दी साहित्य सम्मेलनके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर खड़े होना चाहिये ।

सिंहली तथा तमिल भाषाओंमें तार :

३१ मार्चके 'भारत'में अुक्त शीर्षकसे अेक समाचार छपा है जो अिस प्रकार है "सिलोनमें यह नियम बन गया है कि तार सिंहली तथा तमिल भाषाओंमें स्वीकृत किये जायेंगे और निर्देशित (?) व्यक्तियोंके पास अुन्हीं भाषाओंमें पहुँचेंगे । सीलोनमें अेक बहुत बड़ी संख्या अैसे लोगोंकी हैं जो अंगरेजी न तो पढ़ सकते हैं न लिख सकते हैं । नये नियमसे अैसे व्यक्तियोंको बड़ा लाभ होगा ।"

यदि जिस समाचारका मतलब केवल यह है कि अबसे सिंहली तथा तमिल भाषाओं (किन्तु रोमन लिपिमें) तार भेजे जा सकेंगे तो अिस समाचारमें कुछ भी नवीनता नहीं है । सिंहल तथा तमिल भाषा (किन्तु रोमन-लिपिमें) वहाँ सदा से तार भेजे जा सकते रहे हैं । भारतमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हिन्दी किन्तु रोमन-लिपिमें तार भेजे जा सकते हैं और भेजे जाते हैं। आवश्यकता है अिस व्यवस्थासे अधिकाधिक लाभ अुठानेकी। तारकी भाषाके लिये हमारा आदर्श तो है देवनागरी वर्णमाला, देवनागरी लिपि, हिन्दी भाषा। किन्तु जब तक देवनागरी वर्णमाला, देवनागरी लिपिको तार विभागमें अुसका यथोचित स्थान नहीं मिलता तब तक हम हिन्दी भाषाको तो आधकाधिक अपनायें।

हमें मालूम करना चाहिये कि क्या सिलोनमें सिंहल लिपि और तमिल लिपिमें तार जा सकते है? यदि सिलोनमें जा सकते हैं तो भारतमें तो देवनागरी-लिपि तुरन्त अपनाअी जा सकती है।

यह युगधर्मका सत्य!

'जीवन-साहित्यने' फिर दर्शन दिये हैं। अिस बार अपने पूर्व-परिचित सम्पादक श्री हरिभाअु अुपाध्यायजीके सम्पादकत्वमें। आपने राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी शीर्षक सामयिकें सम्पादकीयमें हिन्दुस्तानी पक्षका जिस ढंगसे समर्थन किया है, हमें सन्देह है कि स्वयं महात्माजीको अुसपर आपत्ति न हो। आपका कहना है—हिन्दी व हिन्दुस्तानी दोनोंका अेक ही मतलब है। जो माने आज हिन्दुस्तानीके किये जाते हैं वही किसी दिन हिन्दीके किये जाते थे। लेकिन आज अगर हिन्दुस्तानीके नाममें ज्यादा सहूलियत है तो अुसे मान लेनेमें क्या बुराी है!

क्या सचमुच 'हिन्दी'के स्थानपर 'हिन्दुस्तानी' स्वीकार करना नाम मात्रका ही परिवर्तन है! क्या केवल यह सहूलियतकी ही बात है!

आगे आप कहते हैं। लिपिके सवालने ज्यादा जोश पैदा किया है अिसमें शक नहीं कि वैज्ञानिकता व गुण सम्यकताकी दृष्टिसे नागरी लिपि पारसी लिपिसे बढ़ी चढ़ी है।—अेक समय अैसा भी आसकता है जब खुद फारसी लिपिके प्रेमी व हामी भी यह मानने व कहने लगें कि अिससे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी बाकअी श्रेष्ठ है। अतः आज तो युगधर्मके सत्यको अंगीकारकर लेना चाहिये।"

काश, युग-धर्मका सत्य अितनी सस्ती वस्तु न बनता!

वर्धा समितिका नया कार्य्यालय :

कुअेंकी खुदाअी और भवन निर्माणका कार्य्य जारी है। कुअेंमें पत्थर ही पत्थर निकलनेसे पानीके निकलनेमें थोड़ा विलम्ब हुआ है। पानी नजदीक ही दिखायी दे गया है। अभी नव वर्षारंभके दिन समितिके कार्य्यकर्ताओं और दूसरे स्थानीय हित-चिन्तकोंने नअी भूमिमें ही अेक छोटासा अुत्सव मनाया था। आशा है कि अिस वर्षाकालसे पूर्व समितिका आफिस अपने नये मकानोंमें चला जायगा।

—आनन्द कौसल्यायन

हमारी नज़रोंमें

[समालोचनार्थ प्रत्येक पुस्तककी दो प्रतियां आनी चाहिये]

नया रोजगार—रचयिता श्री गोपालप्रसाद व्यास;

प्रकाशक:—नवयुग साहित्य सदन, अिन्दौर मूल्य ३) पृष्ठ सं० ८०।

प्रस्तुत पुस्तक हास्य और व्यंग पूर्ण कविताओंका संग्रह है। विषयकी सामयिकता और हास्यकी सुरुचिपर पूर्णतः ख्याल किया गया है। कविताओंके साथ चित्रोंका चुनाव काफी सुन्दर बन पड़ा है।

हिन्दीमें अैसे विषयकी पुस्तकें बहुत ही कम हैं। जो थोड़ीसी हैं भी, अुनमें सुरुचिका ख्याल कम ही रहा है। अिस ओर प्रयत्न कर श्री व्यासजीने अेक कमीकी पूर्ति की है।

पुस्तककी अधिकांश कवितायें हिन्दुस्तानमें प्रकाशित हो चुकी हैं। अिस संग्रहमें कुल २३ कविताअें हैं। पुस्तककी ३) कीमत बहुत ज्यादा है। छपाअी—सफ़ाअी—सुन्दर है।

—सत्यधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी राजनैतिक समस्याएँ:—ले० प्रो० शान्तिप्रसाद वर्मा, प्रकाशक—नवयुग साहित्य सदन, अिन्दौर : मूल्य ५) पृष्ठ सं० २८२+१०

प्रस्तुत पुस्तकमें वर्त्तमान भारतीय राजनीतिकी प्रमुख प्रवृत्तियोंका वैज्ञानिक विश्लेषण है। पुस्तक चार भागोंमें बँटी है। पहले खण्डमें लेखकने हिन्दू मुस्लिम समस्याका विश्लेषण किया है। मुसलमानोंके अिस देशमें पदार्पणसे आरंभकर हिन्दू-मुस्लिम सम्पर्कके प्रारंभिक और आज तकके सारे प्रयत्नों और अुनकी प्रतिक्रियाओंकी अच्छी तरह छानबीनकी है। मुस्लिम दृष्टिकोण किस तरह बदला और आज यह प्रतिगामी बनकर भारतीय स्वतंत्रताका बाधक हो रहा है, अिसका सुन्दर विवेचन किया गया है। दूसरे भागमें समस्याके राजनैतिक पक्षपर पूर्ण रीतिसे मौलिकताके साथ प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया गया है। तीसरे भागमें समाधानकी दिशा, विभाजनके प्रश्नपर निष्पक्ष विचार प्रकट किये गये हैं। लेखकने विभाजनके मार्गमें जो व्यावहारिक कठिनाअियाँ हैं, अुनका अुल्लेख करते हुअे तत्संबंधी विभिन्न योजनाओंकी अैतिहासिक पृष्ठ भूमि दी है। चौथे भागमें समाधानकी दिशा, संघी शासनमें-वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टियोंसे प्रकाश डाला गया है।

भारतीय राजनैतिक समस्याओंको समझनेके लिये यह पुस्तक अुपयोगी है। अिस विषयमें दिलचस्पी रखनेवालोंको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। पुस्तककी छपाअी सफ़ाअी साधारणतः अच्छी है। पर मूल्य प्रचारकी दृष्टिसे अधिक जान पड़ता है।

—सत्यप्रकाश

जीवनका मूल्य—लेखक श्री रामकिशोर पशिने 'विशारद'
प्रकाशक : शिक्षार्थी साहित्य प्रकाशन, वर्धा;
मूल्य आठ आने; पृ. सं. ४८.

प्रस्तुत पुस्तक श्री पशिनेकी छः कहानियोंका संग्रह है। पुस्तककी प्रस्तावनामें आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवालने लिखा है—'जीवनका मूल्यकी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कओ कहानियां मैं पढ़ गया हूँ। वे मुझे अच्छी लगी हैं। अुनमें भावना है, आदर्श है। वे जीवनको अुठानेवाली हैं। श्री रामकिशोर पाशिने अेक भावनाशील तरुण लेखक हैं। मैं आशा करता हूँ कि अुनकी साहित्यिक रुचि दिन दिन विकसित होती जाअगी।

पुस्तककी विशेष परिचयकी आवश्यकता नहीं हैं। समूची किताब हाथके बने कागजपर छपी है। छपाअी, सफाअी ठीक है।

—शुकदेव नारायण

कर्मयोग—(पाक्षिक) प्रकाशक: गीता मंदिर, आगरा; मूल्य ४) वार्षिक।

गत वसन्त पंचमीसे कर्मयोग प्रकाशित हो रहा है। अबतक पत्रके जितने अंक निकले हैं अुनमें भारतीय संस्कृति-प्रचार और मानवताके अुत्थानका दृष्टिकोण रखकर सामग्रीका चयन हुआ है।

आजके अिस वैज्ञानिक युगमें सांस्कृतिक विचारोंके अत्यधिक परिवर्तन हुअे हैं। आशा है श्री हरिशंकर शर्माके संम्पादकत्वमें यह पत्र अुन्नति करता रहेगा और नयी विचारधाराओंकी अुपेक्षा नहीं करेगा। हम पत्रकी सफलता चाहते हैं।

—शुकदेव नारायण

प्राप्ति स्वीकार:—निम्न पुस्तकें प्राप्त हुअीं— (१) **हिंदुस्तानी प्रदीप** प्रकाशक मु. शं. देशपाण्डे, ओगलेवाड़ी, जि. सातारा मूल्य ॥)

(२) **मैथिली शरण गुप्त**--ले. श्री भीष्मदेव शास्त्री, प्र. मारवाड़ी नवयुवक मण्डल, मारवाड़ी बाजार पो. ब. ११४ हैदराबाद [दक्षिण] पृष्ठ २४, मूल्य।)

(३) **वेदमें कविता**-लेखक डा. आर्येन्द्रशर्मा, प्रकाशक अुपर्युक्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रान्तोंकी हलचलें

असम प्रान्त :

कार्य-विवरण—असमके २२ केन्द्रोमें प्रचार कार्य चल रहा है । अिनमेंसे ३ केन्द्रोंके कार्य-विवरण (जनवरीमें) नहीं मिले । अवशिष्ट केन्द्रोमें कुल छात्रा संख्या ५३७ तथा छात्र संख्या ४१२४ है ।

स्थानीय सहायता—सहायताके तौरपर ७ केन्द्रोंसे कुल ८९।।) प्राप्त हुअे ।

बरपेटा केन्द्र—बरपेटा सरकारी हाअीस्कूलके प्रांगणमें गत २७-१-४६ को श्री. गणेशचन्द्र फुकन अेम. अे. अेल बी. अे. सी. के सभापतित्वमें बरपेटा राष्ट्रभाषा प्रचार सभाका पहला अधिवेशन सफलतासे संपन्न हुआ । सभामें चार सौसे अधिक पुरुष और महिलाअें अुपस्थित थे । गीत, वन्दना, और हिन्दी असमिया दृश्याभिनयसे सभी प्रसन्न हुअे । १९४५ फरवरी सितम्बरकी परीक्षाओंमें जो अुत्तीर्ण हुअे अुनको प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार सौ. पारुल देवी फुकनजीके हाथों वितरण किया गया । प्रचारक श्री रजनीकांतजीने सारे भारतमें प्रचार कैसे फैलता जा रहा है और आरंभसे आजतकका संक्षिप्त अितिहास सुनाया । व्यवस्थापक श्री सोनापति देव शर्माजीने अिसकी तरक्कीके लिये लोगोंसे निबेदन किया । राजकुमार सुरेश्वर गोहाँअीजीने रा० भा० की आवश्यकता बताते हुअे सुन्दर व्याख्यान दिया । आखिरमें सभापतिजीने छोटे बड़े पुरुष महिला निर्विशेषस भी से रा० भा० सीखनेके लिये अपीलकी । समाने फिलहालके लिये श्री० सोनापति देव शर्मा तथा श्री. अिषदेव नवीसजीको यथाक्रम सभापति तथा मंत्री चुना ।

चतिया केन्द्र—गत २०-१२-४६ को श्री० कामाख्याप्रसाद त्रिपाठीजीके सभापतित्वमें रा० भा० परीक्षार्थियोंके प्रमाण-पत्र वितरणके अुपलक्षमें अेक सभा हुअी । राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंने हिन्दी नाटकोंकी कअी दृश्यावृत्ति बड़ी निपुणतासे दिखलायी । दर्शक प्रसन्न हुअे ।

प्रमाण प्रत्र वितरणके बाद समितिने रा. भाषाका प्रचार, आवश्यकतापर भाषण दिया ।

बंगाल प्रान्त :

बंगाल-राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिकी बैठक—बंगालमें राष्ट्रभाषाके प्रचार-कार्यको सुचारू रूपसे चलानेके प्रश्नपर विचार करनेके लिये समितिकी कार्यकारणीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक बैठक गत २० मार्च १९४६ को स्थानीय महाबोधि-सोसाअिटीमें डॉ० सुनीति-कुमार चाटुर्ज्याकी अध्यक्षतामें हुअी । अिस अवसरपर समितिके केन्द्रीय कार्यालयके प्रधान-मंत्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी (पदेन) अुपस्थित थे । प्रचारकोंकी नियुक्ति और आगामी वर्षके बजटपर विचार हुआ । आगामी वर्षके लिये निम्न लिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुअे—

अध्यक्ष— डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या; मंत्री— मोहनसिंह सेंगर; कोषाध्यक्ष— श्री कृष्णचन्द्र कोठारी; आय-व्यय-निरीक्षक— श्री रामचन्द्र सिंधी; (सिंधी-लोढ़ा अेन्ड कं०); सदस्य-महामहोपाध्याय श्री विधुशेखर शास्त्री, श्री वसन्त कुमार चाटुर्ज्या, डॉ० सुकुमार सेन, प्रो० ललिताप्रसाद सुकुल, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्री केदारनाथ चट्टोपाध्याय, श्री सजनीकान्तदास, श्री माखनलाल सेन, श्री प्रभातकुमार गंगोपाध्याय और श्री वैजनाथ चतुर्वेदी; प्रान्तीय केन्द्र-संचालक-श्री रेवती रंजन सिन्हा ।

बंगाल-प्रान्तमें जो महानुभाव हिन्दी सीखना चाहें और अपने क्षेत्रोंमे प्रचार केंद्रोंकी व्यवस्थामें हाथ बँटा सकें, वे कृपया मंत्रीसे (१२०/२ अपर सर्कूलर रोड, कलकत्ता; फोन—ब० ब० ३२८१) पत्र व्ववहार करें ।

अुत्कल प्रान्त :

प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाका १३ वां वार्षिक अधिवेशन ता० २४-३-४६ की शामको अन्नपूर्णा हॉल, कटकमें कलकत्तेके सेठ श्री ब्रजमोहन बिड़लाके सभापतित्वमें मनाया गया । कलकत्तेके सर्वश्री सीताराम सेकसरिया, वसंतलाल मुरारका, भँवरमल सिंधी, तुलसीराम सरावगी, अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी मंत्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन और अुत्कल प्रधान नेता श्री हरेकृष्ण मेहताब, सर्वश्री राजकृष्ण बोस, लक्ष्मी नारायण साहु, श्याम सुन्दर मिश्र, राजा साहेब दर्पण, मोतीलाल पंडित, बाबा रामदास, नित्यानंद कानूनगो, घनश्यामदास बिरानी, श्रीमती सरलादेवी, श्रीमती सरोजनी चौधुरी आदि प्रमुख व्यक्तियोंके अतिरिक्त डेढ़ हजार जनता अुपस्थित थी । स्वामी विचित्रा नन्दनं संगीतकेबाद स्वागत भाषण दिया । प्रान्तीय सभा भवन निर्माणके लिये ५००) का दान देनेवाले श्री. श्यामसुन्दरनाथ सुत्थू, राजासाहेब, दर्पणको धन्यवाद देते हुअे अन्य धनीमानी सज्जनोंसे दानकी अपीलकी । तदुपरांत सभापतिने अपना छपा हुआ भाषण पढ़ा । आपने देशके लिये अेक राष्ट्रभाषाकी नितांत आवश्यकता बताअी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिसके बाद पं. लिंगराज मिश्रने वार्षिक कार्य विवरण पढ़ा। फिर निम्न प्रस्ताव श्री गौर गोपालजीने रखाः--यह सभा आने वाली कांग्रेस सरकारका स्वागत करती है और यह स्मरण कराते हुअे कि गत काँग्रेस सरकारने जो १९३८ में घोषणाकी थी कि १९४२ से अुत्कलके सभी स्कूलोंमें राष्ट्रभाषाकी पढ़ाअी अनिवार्य कर दी जायगी, प्रार्थना करती है कि अिसे अब वह कार्यरूपमे परिणत करे। भदन्त आनन्द कौसल्यायनने अिसका समर्थन करते हुअे सारगर्भित भाषण दिया। श्री वसन्तलाल मुरारका, और श्री सीताराम सेकसरियाके भी भाषण हुअे। अन्तमें प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे पास हुआ।

सभापतिने राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें सर्व प्रथम हुअे परीक्षार्थियोंको पदक प्रदान किया। सभापतिने अुत्कलके विभिन्न संस्थाओंको अेक लाखका दान दिया। प्रान्तीय रा० भा० प्र० समितिको अिसमेंसे ५०००) मिले।

अिस प्रकार यह सम्मेलन बड़े समारोहके साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

गुजरात प्रान्त :

बड़ौदाः--पदवीदान समारंभ-- बड़ौदा केन्द्रका पदवीदान समारंभ ता. १०-२-४६ को श्रीमती महाराणी शान्तादेवीजीकी अध्यक्षतामें बड़ी शानसे मनाया गया। अिस अवसर संवाद समूह गीत नृत्य अित्यादिका भी कार्यक्रम रक्खा गया था।

नड़ियाद प्रमाणपत्र वितरणोत्सव--ता. ९-२-४६ को अिस केन्द्रका प्रमाणपत्र वितरणोत्सव काँग्रेस-नेता श्री डाक्टर हरिप्रसाद देसाअीकी सदारतमें मनाया गया। डाक्टर साहबनें बहुत ही सुन्दर प्रासंगिक भाषण दिया।

अिटोली, समितिकी स्थापना--यहाँके राष्ट्रभाषा प्रचारमें रस लेनेवाले भाअी बहिनोंकी अेक सभा प्रान्तीय संगठन-मंत्री श्री कमलेश भारतीयकी अध्यक्षतामें हुअी। जिसमें स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापना की गअी। श्री चिमनलाल शाह अध्यक्ष, श्री. मंगलभाअी पटेल व श्री. महावीरभाअी शाह अध्यक्य श्री० रणधीरभाअी पटेल, मंत्री तथा श्री. प्रभाकर गुप्त अुपमंत्री चुने गये।

पीलवाअी--प्रमाणपत्र वितरण समारंभ-अिस केन्द्रका प्रमाणपत्र समारभ गु. प्रा. रा. भा. प्र. समितिके मंत्री श्री. जेठालाल जोषीकी अध्यक्षतामें बड़े अुत्साहके साथ मनाया गया।

भरूच--राष्ट्रभाषा प्रचार समिति : अिस वर्षके लिये ओहेदेदार चुने गये हैं:--

अध्यक्ष--श्री हीरालाल नारियलवाला

अुपाध्यक्ष--श्री भानुप्रसाद शास्त्री

सयुक्तमंत्री--श्री हेमलता देसाअी, श्री विष्णु प्रसाद भट्ट 'विंदु'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिने यह भी निश्चय किया कि वह अपनी मुख पत्रिका 'किरण'का प्रकाशन फिरसे शुरू कर दे।

ता. २२-१-४६ को जब बंबअीके वर्तमान प्रधानमंत्री, श्री बालगंगाधर खेर भरूच आये तो अुनसे राष्ट्रभाषा संबंधी चर्चा की गअी।

अहमदाबाद-प्रमाणपत्र-वितरण समारंभ-दी शाहपुर टयुटोरियल हाअीस्कूल राष्ट्रभाषा वर्गका प्रमाणपत्र वितरण समारंभ ता० १०।२।४६ को प्रिन्सिपल श्री. विनायकराव त्रिवेदीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसर राष्ट्रभाषा प्रचारक श्री० नटवरलाल त्रिवेदीने सुन्दर भाषण दिया।

(१) गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके पदाधिकारी अिस वर्षके लिये ये हैं।

अध्यक्ष-श्रीयुत कन्हैयालालजी मुन्शी
अुपाध्यक्ष-श्रीमती शारदा बहन मेहता
कोषाध्यक्ष-श्रीमती अिन्दुमती दीवानजी
मंत्री-श्री जेठालाल जोशी
संगठन मंत्री-श्री कमलेश भारतीय

(२) अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके पदाधिकारी ये हैं।

अध्यक्ष-श्रीमती शारदाबहन मेहता
मंत्री-श्री जेठालाल जोशी
सहमंत्री-रणधीर अुपाध्याय

(३) आणन्दमें अेक राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल आणंदकी स्थापना की गअी है। अुसके पदाधिकारी ये हैं।

अध्यक्ष-श्री केशवलालजी पटेल बी. अे. अेल. अेल. बी.
मंत्री-श्री शंकर भाअी पटेल
,, श्री उमाशंकर डाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा—

सिम्तबर '४६ में राष्ट्रभाषा रत्नकी आगामी परीक्षा होगी। परीक्षा आवदन पत्र ३१ मअी तक वर्धा कार्यालयमें आजाना चाहिये।

'रत्न' परीक्षमें सीधे बैठनके लिये प्रार्थनापत्र वर्धा कायालर्यमें पहुँचानेकी अन्तिम तारीख ३० अप्रैल है।

'राष्ट्रभाषा, रत्न की सम्पूर्ण पाठ्य पुस्तकें तथा सहायक सन्दर्भग्रंथ और रत्न नियमावली व रत्न परीक्षाके पुराने प्रश्नपत्र समितिके पुस्तक बिक्री विभागसे प्राप्त हो सकते हैं।

पाठ्यक्रम परिवर्तन—

आगामी सितम्बर में होनेवाली प्रचार परीक्षाओं के पाठ्य क्रममें थोड़ा परिवर्तन किया गया है। सितम्बर ४६ के लिये निश्चित पाठ्य क्रम 'राष्ट्रभाषा, के गतअंक में प्रकाशित किया जा चुका है। पाठ्य पुस्तकं सूची वर्धा कार्यालयसे प्राप्त की जा सकती है।

गत परीक्षाओंके प्रमाण पत्र—

तैयार किये जा रहे हैं और कार्य पूरा होनेपर यथाशीघ्र केन्द्र व्यवस्थापकों के पास भेज दिये जावेंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
(परीक्षा-मंत्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिके तारका पता–
'राष्ट्रभाषा' वर्धा।

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

महात्मा गांधी क्या कहते हैं:—

"जितना ही मैं पुस्तकोंका अध्ययन करता गया अुतना ही मुझे अुनकी विशेषताअें मालूम होती गअीं।"

कदम कदम बढाअे जा : (गो. प्र. व्यास)

आजादीके जंगमें सिपाही तलवारसे जूझता है और कवि कलमसे। कविकी कलम लाखों सिपाहियोंको तैयार करती है। 'कदम-कदम बढ़ाअे जा' पुस्तक अिस दिशामें बढ़ाया हुआ अेक कदम है–कर्नल सहगल। मूल्य १) पोस्टेज ५ आने।

जो भूल न सका : (भदन्त आनन्द कौसल्यायन)

अिस पुस्तकमें आपको पचासों चुटकियाँ मिलेंगी, पचीसों व्यंग मिलेंगे और मिलेंगे बीसियों भावावेग–सुषुप्त करुणाको चिकोटी काटकर जगानेवाले। अिस पुस्तकका प्रत्येक निबन्ध हमारे रूढ़िगत विचारोंको हटाकर अुसकी जगह प्रगतिशील भावनाओंको जन्म देता है। समाजके मिथ्याचारोंके प्रति अैसा निठुर परिहास भारतीय पाठक शायद ही अन्यत्र पा सकें। मूल्य ३ रु०, डाकखर्च ७ आने मात्र।

हिन्दीशब्द-संग्रह : (संपादित)

यह शब्द–कोष आधुनिक हिन्दी साहित्यमें प्रचलित हिन्दी, संकृत फारसी और साथ ही प्राचीन ब्रजभाषा, अवधी बुंदेलखण्डी अित्यादि शब्दोंका अेक वृहत् संग्रह है। मूल्य ७) रु०; डाकखर्च ११ आने।

भारतीय अनुशीलन : (संपादित)

भारतवर्ष और वृहत्तर भारतका गौरवमय प्राचीन अितिहासका अध्ययन करना हर प्रगतिशील हिन्दुस्तानीका कर्तव्य है। अपना अुज्ज्वल अतीत जानकर ही हम गौरवमय भविष्यका निर्माण कर सकेंगे। मूल्य १६) रु०; डाकखर्च १ रु. ६ आने मात्र।

प्रबन्ध सम्पादक—हृषीकेश शर्मा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा।
मुद्रक—गोविंद भास्कर जोशी, भास्कर छापखाना (राठी मार्केट) वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

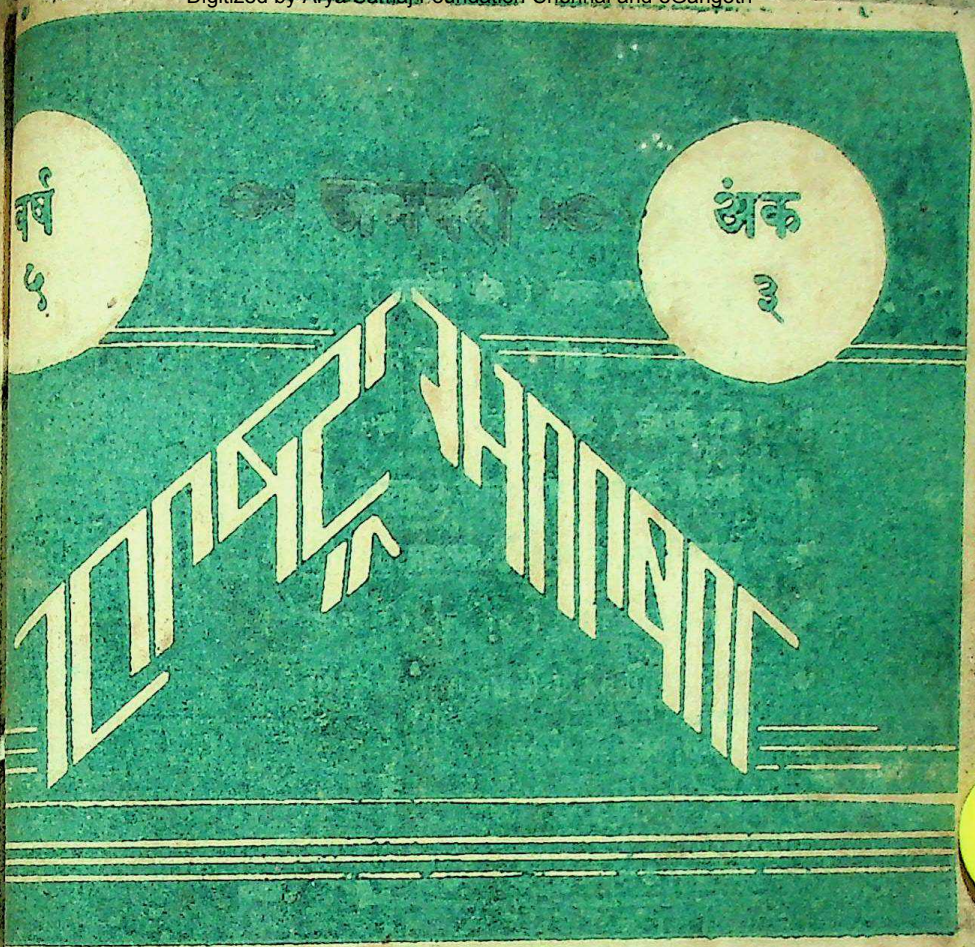

हिंदी राष्ट्रीयताका प्रतीक

मैं अिसलिये हिन्दीका काम करता हूँ कि राष्ट्रीयताके अुत्थानमें हिन्दीके द्वारा मैं सहायक बन सकूँ। यदि मैं यह समझता कि हिन्दीसे साम्प्रदायिकता फैलती है तो हिन्दी साहित्य सम्मेलनके कार्यालयमें आग लगा देता। मुझे संतोष है कि हिन्दी जहाँ गअी वहां अपने साथ राष्ट्रीयता भी लेती गअी है। आजका हिन्दी साहित्य राष्ट्रीयताकी ध्वनिसे भरा है और प्रत्येक हिन्दी लेखक राष्ट्रीयताका ही प्रचार करता है।....हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दीका काम करता है परन्तु अुर्दूका विरोध करना अुसका काम नहीं है। सम्मेलन अुर्दूको हिन्दीकी ही अेक शैली मानता है।

—पुरुषोत्तमदास टण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	तुम आगपर चलो (श्री अंचल)	६९
२.	श्री क. मा. मुंशी (श्री ठाकुरप्रसाद सिंह)	७०
३.	दो झोंपड़े (श्री शिवनारायण उपाध्याय)	७५
४.	बन्दरी टोपी (श्री जनार्दन खड़के)	७८
५.	कहानी का आभास (श्री यदुनाथ थत्ते)	८३
६.	लक्ष्मीका स्वयंवर (प्रा. ना. सी. फडके)	८७
७.	राष्ट्रभाषामें प्रवेश (श्री गंगाधर अनिलकुमार)	८८
८.	प्रधान मन्त्रीकी ओरसे	९०
९.	वर्धा कार्यालय	९३
१०.	परीक्षा विभाग	९४

नोट करलें

१. ग्राहकोंको पत्र लिखतेसमय अपनी 'ग्राहक-संख्या' अवश्य लिखनी चाहिये। वरना पत्रोंके जवाब देनेमें अनावश्यक विलम्ब होता है।

२. प्रचारकोंको चाहिये कि 'राष्ट्रभाषा' संबन्धी पत्र लिखनेपर अपनी ग्राहक संख्या और प्रचारक संख्या-दोनों लिखें।

४. 'राष्ट्रभाषा' के लिये जो लेख भेजा जाय वह साफ अक्षरोंमें चौथाओ हाशिया छोड़कर लिखा हो।

४. 'राष्ट्रभाषा' का वार्षिक मूल्य दो रुपये और नमूने के अंक का तीन आने है। वी. पी. भेजनेका नियम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ५] वर्धा, जनवरी—१९४६ [अंक ३

तुम आगपर चलो

तुम आगपर चलो जवान, आगपर चलो ! तुम आगपर चलो !

१

अब वह घड़ी गयी कि थी भरी वसुन्धरा,
अब वह घड़ी गयी कि शान्ति-गोद थी धरा,
जिस ओर देखते न दीखता हरा-भरा,
चहुँ ओर आसमानमें घना धुँआँ उठा,
तुम आगपर चलो जवान, आगपर चलो,
तुम आगपर चलो !

२

लाली न फूलकी, वसन्तका गुलाल है,
दिनमान है नहीं, प्रचण्ड अग्नि-ज्वाल है;
यह आग से उठी विदग्ध मेघ-माल है,
लो जल रहीं जहानमें नयी जवानियाँ,
तुम ज्वाल में जलो किशोर, ज्वालमें जलो,
तुम ज्वालमें जलो !

३

युगके समाजकी नवीन धारणा बनी,
हैं लुट रहे गरीब और लूटते धनी,
सम्पत्ति हो समाजके न खूनसे सनी,
यह आँच छू रही मनुष्यके शरीरको,
तुम आँचमें ढलो नवीन, आँचमें ढलो,
तुम आँचमें ढलो !

४

अम्बार अेक ओर, अेक ओर झोलियाँ,
संसार अेक ओर, अेक ओर टोलियाँ
मनुहार अेक ओर, अेक ओर गोलियाँ
अिस व्यर्थके विभेदसे मनुष्य रो रहा—
तुम अश्रुमें पलो कुमार, अश्रुमें पलो,
तुम अश्रुमें पलो !

५

तुम हो गुलाब तो जहानको सुवास दो,
तुम हो प्रदीप, अन्धकारमें प्रकाश दो।
कुछ दे नहीं सको, सहानुभूति-आस दो।
निज होंठकी हँसी लुटा, दुखी मनुष्यका,
तुम अश्रु पोंछ लो अुदार, अश्रु पोंछ लो,
तुम अश्रु पोंछ लो !

६

मुस्कान ही नहीं कपोल-अश्रु भी हँसे,
ये हँस रहीं अटारियाँ, कुटीर भी हँसे,
क्यों भारतीय दृष्टिमें न गाँव ही बसे
जलते प्रदीप, अेक साथ अेक पाँतिसे,
तुम भी हिलो-मिलो मनुष्य, तुम-हिलो-मिलो,
तुम भी हिलो-मिलो !

—गोपालसिंह नेपाली—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री क. मा. मुंशी

: श्री ठाकुर प्रसाद सिंह :

राजनीतिने मुंशीके कलाकारको दबाया है या मुंशीके कलाकारने राजनीतिको, यह कुछ आलोचकोंकी चिंताका विषय हो सकता है, पर अिसके अतिरिक्त अेक बात और है जो भूली नहीं जा सकती। वह है अेक ही व्यक्तिके दो रूप। दोनों अेक दूसरेसे ज्वलन्त। दोनों अेक दूसरेके पूरक। दोनों मिलकर अेक व्यक्तिको पूरा कर रहे हैं। मुंशी अपने ही शब्दोंमें 'हूँ' नहीं हैं, 'हो रहा हूँ, निर्मित हो रहा हूँ' ही प्रधान रूपसे हैं। अिसलिय अिस निर्मित होते हुअे व्यक्तिके दोनो गुणोंकी बात कहे बिना, अुसका अबतकका निर्माण सराहा नहीं जा सकता।

पर जो जीवन पार कर आज श्री मुंशी प्रौढ़ताकी ओर बढ़ रहे हैं वह अन्य कलाकारोंकी भाँति अेक निराशाका जीवन नहीं कहा जायगा। अिनकी प्रतिभाकी धाक दोनों क्षेत्रोंने मानी भी है। साहित्यने और राजनीतिने अिन्हें जिन अुचित सम्मानोंसे विभूषित किया है वे अिनकी गुणग्राहकताके साथ साथ कर्मठताके भी सूचक हैं।

सन् १८८७ में भड़ोचके अेक डिप्टी कलक्टरके घर अुत्पन्न होनेसे लेकर आजतक वे लक्ष्मीके लाड़ले रहे हैं। चौदह वर्ष तक मैट्रिक, १९०६ में बी० अे०, १९१० में अेल० अेल० बी०, तथा १९१३ में बंबअी हाअीकोर्टकी अेडवोकेटकी परीक्षा पास करनेवाले अेक युवकको 'निश्चित-अुद्देश्य' माना जा सकता था। जो व्यक्ति धीर चित्तसे अेकके बाद अेक करके अेडवोकेट होनेकी चाहमें पैर बढ़ाता जा रहा हो अुसे अेडवोकेट माननेकी बात अनुचित नहीं थी। कुछ ही वर्षोंके अथक परिश्रमके बाद बंबअीके गिने-चुने अेडवोकेटोंकी पंक्तिमें पहुँचकर मुंशीने, अपना लक्ष्य और भी स्पष्ट कर दिया। पर थोड़े ही दिनोंमें साहित्यकी ओर भी लम्बे डग भरकर अिन्होंने जो चमत्कार अुत्पन्न कर दिया वही अिनके जीवनकी सबसे बड़ी सचाअी है। अेक साथ अितनी अधिक बातें सोचनेवाले मस्तिष्कके सामने किसी क्षेत्रकी दुरूहता देरतक ओट बनाये नहीं रह सकती।

अेक पत्रकारके नाते भी ये अुतने ही प्रमुख माने गये जितने वकालतके क्षेत्रमें और साहित्यनिर्माताके रूपमें। राजनीतिकी अगली सफलताओं तथा विचार प्रौढ़ताकी नींवमें "भार्गव" त्रैमासिकका सम्पादन 'नवजीवन अने सत्य' तथा 'यंग अिण्डिया' का सहकारी सम्पादन भी अपना स्थान रखता है। ये वे ही दोनों पत्र हैं जिन्हें महात्माजीने बादमें चलकर अपने संपादनमें, अपनी नीतिका वाहक बनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबतक वकालतसे अुनकी साहित्य-कला अितनी अुठ चुकी थी कि अुनकी प्रेरणाओंमें देश, प्रान्त और भाषाकी ही प्रधानता मानी जाने लगी। अितनी दूर आनेतक अुनकी कलाके आधार बन चुके थे और जीवनमें अुद्देश्योंको ग्रहण करनेके लिअे कोअी अव्यवस्था नहीं थी। सन् १९२२ तक आते आते अुन्होंने गुजराती साहित्यको अितना दे दिया था कि गुजरातके साहित्यिक समाजने आभार प्रकट करते हुअे अुन्हें अपनी साहित्य-संसदका सभापति बनानेमें गौरव माना। उस पदसे प्रतिवर्ष दिये गये भाषणोंके बीच जिन सत्य साहित्यिक निर्देशोंके दर्शन होते हैं, वे अन्य किसी भी साहित्यमें इतने व्यवस्थित रूपसे प्राप्त नहीं है। इतना देने और करनेके बाद ही आज सबको यह कहनेमें कोअी संकोच नहीं होता कि गांधीजीके पश्चात गुजरातीमें अिनके अितना संजीवनी-दाता हुआ ही नहीं और न तो अितनी प्रचुर कलानिधियां ही किसीने साहित्यको समर्पित की।

सन् १९२६, श्री. मुंशीके जीवनका एक प्रधान वर्ष है। क्योंकि अिसी वर्ष लीलावती सेठको अिन्होंने अपनी जीवनसहचरी बनाया। लीलावती अेकको गुजराती महिला साहित्यकी सबसे उज्ज्वल तारिका के रूपमें सभी जानते और मानते हैं। 'साहित्य-संसद्' के अेक उत्साही कार्यकर्ताके रूपमें भी अिनका अस्तित्व है। घर और बाहर, सब कहीं दोनों समान अूंचाअीपर चमकते रहे हैं। बम्बअीके राजनीतिक जीवनके मूलमें आपका महान स्थान है।

यहाँ तक आते आते श्री मुंशीने अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभाका अधिक विस्तृत परिचय दिया। असहयोग आंदोलन के पूर्व वे होमरूल लीगके सेक्रेटरी थे। महाराज गायकवाड़ने बड़ौदामें जिस विश्वविद्यालय संस्थापनकी जाँच कमेटी बनायी थी अुसके आप सदस्य थे। गुजरातके बोर्ड आफ स्टडीजके चेयरमैन, बम्बअी विश्वविद्यालयकी ओरसे लेजिस्लेटिव सभामें प्रतिनिधि तथा सरकारकी अनिवार्य व्यायाम शिक्षाके चेयरमैनके रूपमें तो आप जाने गये ही पर भारतीय विद्या सभाके संस्थापक हैम सारस्वत-सत्यके पुरोधाके पदसे भी आपका व्यक्तित्व विस्तार पा रहा है। १९३० में वकालत छोड़कर नमक सत्याग्रहमें भाग लिया और ६ महीनेतक जेलमें रहे। लौटते ही आप कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्य बना दिये गये।

अपनी अुन सभी प्रतिभाओंके अगले प्रमाणके रूपमें अुन्होंने बम्बअी प्रान्तके गृहसचिवके रूपमें अपनी सेवाअें सम्मुख रखीं। अुनकी अुस समयकी कार्य्यदक्षताकी प्रशंसा विरोधी भी करते हैं और हिन्दू-मुस्लिम दंगेको दबानेमें जो सफलता अुन्होंने प्राप्त की वह तो और भी प्रसिद्ध हुअी। आजकी राजनीतिमें अुनकी तथा अुनके 'अखण्ड भारत' की क्या स्थिति है यह सबके सन्मुख है और सफलताकी बात कहनेमें शीघ्रता नहीं करनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य सम्बन्धी धारणाएँ

श्री मुंशीने समय समयपर अपने दृष्टिकोण स्पष्ट करनेमें अधिक तत्परताका परिचय दिया है और प्रत्येक अंगोपर अुनके अपने मौलिक विचार भी है। साहित्यके सम्बन्धमें वे कहते हैं–'जो प्रभावोत्पादक और सुन्दर है सिर्फ वही एकमात्र साहित्यकी अुपाधिसे भूषित किया जा सकता है।' साहित्यको वे प्रत्येक व्यक्तिकी चीज न मानते हुये कहते हैं––साहित्यके रहस्यको थोड़े ही लोग समझते हैं और थोड़ेसे सुसंस्कृत रुचिवाले अुसका आनंद पाते हैं।' साहित्यकारकी सफलताको वे अुसके निर्माणकी सफलताके साथ आँकते है। और यह निर्माणकी सफलता तभी संभव है जब कलाकार कथित सत्य और सौंदर्यका केवल आविष्कारक होकर ही न रहे अुसका विस्तारक भी हो।

सौंदर्य और प्रेम

सौन्दर्यके सम्बन्धमें भी अुनके अपने विचार हैं। सौन्दर्य वही है जो व्याख्या विवेचनाके अूपर हो। जिसको लेकर केवल सर्जन ही किया जा सके। निर्माणसे अुत्पन्न आनन्दमें ही जो अपनी अभिव्यक्ति पा सके वही सच्चा सौंदर्य है। अिस सौंदर्यकी नैतिकताकी 'अच्छी' 'बुरी' सीमाओंमें बाँधा भी नहीं जा सकता।

'मेरी अधिकांश कृतियोंका प्रमुख विषय प्रेम ही है। परन्तु अैसा प्रेम नहीं जो छिपे छिपे किया जाय या पुरानी रूढ़ियोंमें बाँध दिया जाकर प्रेमसे अधिक प्रेमका विद्रुप बन गया हो। मेरा प्रेम पवित्रताका ढोंग करनेवाले ठण्डे रक्तवाले भीरुओंके विरोधोंकी छायामें आँसू और रक्तमें अपने पदचिन्ह छोड़ता गया है।...मैंने प्रेमकी भावनाको अुसकी कमजोरी और मजबूती, अुसकी प्यास और चाह, अुसके विप्लव और प्रतिक्रिया, अुसके आत्मसमर्पण और दिव्य आनन्दके भीतर देखा है'। अिसी दृष्टिकोणसे देखनेवाले कलाकारने 'मंजरी' (गुजरातके नाथ) का निर्माण किया है जो आदर्शोंमें परशुरामका वरण करना चाहती है पर समर्पणके क्षण अितनी अुतावली हो जाती है, कि विरक्ति दिखानेपर पद संचालनसे भी नही हिचकती। शाम्बरी को विश्वनाथ का समर्पण या मुंजको मृणालका समर्पण मिला है वह सचमुच कलाकारकी अुपरोक्त घोषणाकी सफलता है।

अितिहासका रोमांस

अितिहास अिनके लिए कल्पना और स्फूर्तिका विषय रहा है। यहाँतक कि सामाजिक अुपन्यासों, कहानियों, नाटकों तथा अन्य निर्माणोंमें भी अिनका अैतिहासिक अुजग रहता है। कल्पनाको आधार देकर अिन्होंने सपनोंके देशोंका अपने ग्रन्थोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात्कार किया है। 'जीर्ण मन्दिर और यात्री' में अिनकी भावनाओंको स्पष्ट देखा जा सकता है। अिस कहानीका दो दृष्टियों से महत्व है। अेक तो कहानी मुंशीदम्पति द्वारा संवाद रूपमें कही गयी है जिससे मन्दिर और यात्रीकी भूमिकामें लीलावती और मुंशीको रखकर नारी और पुरुषके सम्बन्धमें भी अुनके स्पष्टीकरण सुने जा सकते हैं। दूसरा महत्व है अैतिहासिक रोमांसका। मन्दिर नवीन आलंबन-प्रियताकी ओर अिंगित करता हुआ कहता है, "परन्तु यहाँ निवास करनेके पहिले अेक बात सोच लेना। मैं तो खण्डहर हूँ और तू नवीन मन्दिरोंकी मोहकतापर मर मिटने वाला प्रवासी है।"

यात्री कहता है—मन्दिर! जलधि समान तेरे हृदयकी सबको डुबा लेनेवाली विशालताके प्रति मैं यदि अन्याय कर रहा हूँगा तो क्षमा करना। तेरा सागर जैसा हृदय तो अमृत, विष, अनल रत्न सभीको समा लेता है। मैं यह न देख सकूँ तो मेरा क्या अपराध है। विशाल समुद्रमेंसे घड़ा तो अपनी योग्यताके अनुसार ही जलग्रहण करता है... निर्जीव तू सजीव है--द्वन्द्वयुक्त है।'

अिसी अैतिहासिक सजीवता और द्वन्द्वको स्पष्ट करनेके लिअे अुन्होंने जिन पात्रोंको चुना है अुनके विषयमें भी वे कहते हैं–

'मैंने न तो पाठशालाके प्रिय अच्छे लड़के लड़कियोंका चित्रण किया है और न तो धुँधले पीले अस्पष्ट चरित्रोंका ही चित्रण किया। मेरे पात्र लाल, रक्तभरे तेजयुक्त स्त्री या पुरुष हैं जिनमें वासना है, स्वस्थ प्रेम भी है। वे लड़ते-झगड़ते हैं। पाप करते हैं और अेक यथार्थवादीकी भांति जीवनका नाटक करते हैं।'

यह सच है कि मुंशीने अैसे ज्वलन्त पात्रोंकी अेक लम्बी पंक्ति ही हमें सौंपी है जिससे पाया अधिक जा सकता है खोया अेकदम नहीं।

निर्माताओंकी अगली पंक्तिमें

आज पूर्ण विश्वाससे श्री मुंशीको विश्व साहित्यके प्रथम कोटिके कलाकारोंमें खड़ा किया जा सकता है। अैतिहासिक रोमांसोंमें जिन स्काट और डयूमाकी बात वे करते हैं अुन्हींकी पंक्तिमें अिन्हें रखे जानेमें किसीको हिचक नहीं हो सकती।

शरत्, रवीन्द्र, प्रेमचन्दके साथ अिनका नाम कलाकारोंमें आ गया है। नैतिक आधारपर स्पष्ट सिद्धांतवादी कलाकारोंकी महान परम्पराके जीवित कलाकारोंमें अिनका नाम आज सबसे आगे होगा।

कुछ चरित्र

अपने अुपन्यासोंमें अिन्होंने कुछ अद्भुत क्षमताशील चरित्र हमें दिये हैं जिनका नाम देना यहाँ सम्भव नहीं। पर केवल 'मुंजाल'को लेकर ही अिनकी महानताका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता लगाया जा सकता है। मुंजालका अेक ओर अिन्होंने महान राजनीतिज्ञ तथा शक्तिशाली चरित्र अंकित किया है और दूसरी ओर कीर्तिदेव (पुत्र) के मुँहसे कहलवाते हैं:—

"भीड़में सबसे ऊँचे लगनेवाले मुंजाल मेहता अुस ताड़की तरह हैं जो नदीके किनारे सब पेड़ोंसे अूपर खड़ा रहता है। सबके साथ पर सबसे दूर--शून्यकी ओर ताकता हुआ।

वही मुंजाल कहता है:—

"अपनी जन्मभूमिका कीर्तन करना ही मेरा धर्म है। मेरी अिस भूमिके समान भूमि तो स्वर्गलोकमें भी नहीं है।"

मुंजालके अतिरिक्त अिनके स्त्री पात्र भी बड़े दिव्य हैं जिनका यत्र तत्र विवेचन हो चला है।

तत्वदर्शी आनन्द स्वामिको भी हम घोषणा करते सुनते हैं:—

"अेक धर्मके बगैर अेक साम्राज्यकी स्थापना करेंगे तो तुम्हारे मुंजालोंकी मेहनत धूलमें मिल जायगी"

अिनके निर्मित साहित्यकी अेक अपनी ही महत्ता है।

हिन्दीकी ओर

पर अिन सब प्रसन्नताओंका महत्व तब हमारे लिअे और बढ़ जाता है जब हम यह देखते हैं कि श्री मुंशी 'हिन्दी राष्ट्रभाषा' के जबर्दस्त समर्थकोंमें से हैं।

अमर कलाकार 'प्रेमचंद' के साथ मिलकर अुन्होंने अपनी अिस भावनाको 'भारतीय साहित्य परिषद' तथा अिसके माध्यमसे बहुत पहले ही रखा था। अुन दो कलाकारोंका सम्बन्ध चिरस्थायी न हो सका अिसका दुख हिन्दीको कभी न भूलेगा।

राष्ट्रभाषा बिना जाने आप राष्ट्र-सेवक नहीं बन सकते और अिसका अर्थ यह होगा कि स्वराज्य प्राप्ति नहीं होगी।

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो झोंपड़े

(श्रीयुत शिवनारायण उपाध्याय)

गाँवसे बाहर वह जो अधकच्चा कुँआ है न ? अुसकी मैंडपर खड़े होकर देखिये, दूर खेतोंमें आपको दो झोंपड़ियाँ दिखाअी देंगी। दूरसे वे दोनों पास दिखती हैं। परन्तु क़रीब जानेसे मालूम पड़ेगा कि अुनकी दूरी रास्तेकी दूरी है—अुनके बीचसे अेक रास्ता है जो सीधे अेक गाँवसे दूसरे गाँवको चला जाता है। कोअी भी झोंपड़ीमें जाकर नहीं देखता कि अिनमें कौन है ? रातके सन्नाटेमें राहके दोनों ओर दो दीपक टिम टिमाते रहते हैं और दोनोंका प्रकाश अेक होकर किसी भूले पथिकको यह बता देता है—

ये दोनों झोंपड़ियाँ अेक ही परिवारकी हैं। और अिन दोनोंमें सब मिलाकर करीब दस बारह आदमी रहते हैं

आदमी ? या क्या कहा जाय अिन्हें ! आदमीकी कमरमें पूरी धोती भी नहीं है। न शरीर ढँकनेको अंगा ही। स्त्रियाँ भी ठीक वैसी ही हैं। दो झोपड़ियों की स्त्रियोंके पास बाहर जाने लायक अेक नअी साड़ी है जिसे अुन्होंने बड़े प्रयत्नसे मिलजुलकर खरीदा है। ब्याह-शादी जैसे जरूरी अवसरोंपर वे बारी बारीसे पहनी जाती हैं। शेष समयके लिये कुछ घेरदार लहंगे और फटीसी मैली कुचैली धोतीयाँ हैं। जिनको दो आधे आधे टुकड़े जोड़कर तैयार किया गया है। छिपाने लायक अिसमें कोअी बात नहीं है। साड़ीमें जोड़े हुअे दोनों टुकड़े कभी कभी अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं। अुनमेंसे अेक अगर सफेद है तो दूसरा अेकदम काला। फिर भी दोनों अेक होकर अुस झोंपड़ेमें रहनेवाले नारीत्वकी रक्षा करनेके लिये पर्याप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुस घरके या परिवारके मालिकका कहना है कि आजसे चार साल पहले दशहरेके मौकेपर मैने अेक धोती खरीदी थी। तबसे आजतक नया कपड़ा खरीदनेका पर्व ही नहीं आया।

आप जैसोंकी मेहरबानीसे कुछ न कुछ मिल ही जाता है फिर क्या नया और पुराना! तन ढकने भरको मिल गया कि खैर है। असल फिक्र तो रोटीकी है जो पेटसे कम मिले तो काम नहीं चलता।

झोपड़ीसे ही लगा हुआ अिनका अेक खेत है और खेतसे लगे दो बैल और अेक गाय।

साथ ही खेतीकी रखवालीके लिये दो भुखमरे मरियल कुत्ते पड़े रहते हैं .... जिन्हें अलगसे रोटीके टुकड़े नहीं खिलाने पड़ते। वे स्वयं अितने समझदार हैं कि अपने पेटके लिये खुद शिकार कर लिया करते हैं।

रखवालीसे अुनका कोअी सम्बन्ध नहीं है। रखवाली तो महज अिसलिये करते हैं कि अुन्हें दी झोपडियोंका सहारा है, और मालिक अिसलिये रखते हैं कि अुन्हें दो कुत्तोंका है।

अिसकी ज़िंदगी भी अजीब है। जब बारिशके दिन आते हैं तब ये किसान रहते हैं और जब गर्मी आती है तब ये किसान राहके मज़दूर बन जाया करते हैं। बारिशके दिनों, फसल बोना, रखवाली करना, बैल चराना, और जाड़े और गर्मीके दिनोंमें हल चलाना और बाकी समय मज़दूरी करना, यही अिनका जीवन-क्रम है।

मानों दो झोपड़ियोंकी तरह ही अिनका सम्पूर्ण जीवन दो भागोंमें बटकर अेक परिवारकी रक्षाके लिये बहता है। किसी तरह ठेलठालकर मुश्किल से गुजारा चल रहा है। दिन कट रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक दिन अचानक अुस परिवारका अेक मात्र दुलारा लड़का बीमार पड़ गया था। सुनते हैं कि अुस दिन घरमें कुछ नहीं था। वह सुबहसे अनाजकी तलाशमें गया था और सारे दिन घूमनेपर भी पेट पुरता अनाज भी नहीं पा सका था। रात गये घर आया और निराश हो फटे चिथड़ों पर अेक कोनेमें पड़ रहा। तबका बीमार लड़का अब तक—अेक माह होनेको आया—स्वस्थ नहीं हुआ। कभी कभी आसपासके खेतिहर आ जाया करते हैं और रोगीको देखकर सलाह देते हैं कि लड़के की फिकर करो। किसी तरह अच्छा हो जाय, झोंपड़ीका यही दीपक है। झोंपड़ीका मालिक आकाश की तरफ, सिर अुठाकर कहता—लड़के के लिये कुछ अुठा नहीं रखा है, यहां तो मेरे घरका अेक मात्र चिराग है।

अपने बच्चेके लिये जो कोअी जो कुछ कहता वह बूढा अपनी शक्तिभर पूरा करनेका प्रयत्न करता।

अेक दिन शहरके बाबूने सलाह दी कि बाबा, बच्चेको ठीक ठीक दवा क्यों नहीं करते? बिना दवाके कहीं कोअी अच्छा हुआ है! और अुसी दिन किसान गाँवमें गया और कुछ अनाज देकर पैसे अिकट्ठे किये और पासके कस्बेमें जाकर अेक दवाकी दुकानसे दो रुपयेमें अेक शीशी खरीद लाया।

काग खोलकर रंगीन पानी वाली खुराक बीमारको दी। बीमार बड़बड़ाया—बाबा, यह क्या है! दवाअी! कैसी दवाअी! किसकी दवाअी! कहाँसे लाये! कितनेमें लाये! अनाज नहीं मिला और दवा मिल गअी! क्या कहा, दो रुपये....क्यों लाये अिसे दो रुपयेमें। वे तो आठ दिन चलते। सारे घरका पेट पलता, फिर अिससे तो मुझ अकेलेका पेट भी नहीं भरता। किसीका पेट भरता ऐसी दवा तो लाते!

और अुसने अेक हिचकी ली—दूसरी ली और तीसरीमें अिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनियासे बिदा हो गया--अिस दुखद प्रसंगसे और दरिद्रताके अिस साकार चित्रित झोंपड़ेसे और झोपड़ेकी जिन्दगीसे भी---

अिसी बीच चलते हुए राहगीर यह कहते हुए वहाँसे गुजरे कि चलो, युद्ध समाप्त हो गया है, अब तो सब कुछ मिलेगा-गेहूँ, चावल, गुड़, तेल, सब कुछ। यह सुनते ही बूढ़ेने अेक दीर्घ निश्वास लिया—ओह मेरा तो सर्वस्व लुट गया। अब सब कुछ मिले तो अुससे मुझे क्या!

और दो झोपड़ियोंमें रोना-धोना हुआ। कुछ लोग आये और मृतककी दाह क्रिया कर गये—वहीं अुन्हीं झोपड़ों के समीप, अुन्हीं खेतोंमें।

और वे झोपड़ियां आज भी वैसीही खड़ी हैं, लेकिन अुनमेंका अेक चिराग बुझ गया है और दूसरा किसी की याद दिलाया करता है।

बन्दरी-टोपी

(जनार्दन खड़के 'साहित्यरत्न')

स्वदेशी आन्दोलनके दिन! गली गली जुलूस! जहाँ तहाँ नारे! बस्, छोटे-बड़ेके मुँह अेकही बात-'अेक दो, विदेशी टोपी फेंक दो'! वातावरण काफी गरमा गरम!!

आज अन्धेरे मुँह ही शोरोगुल सुनाअी दिया! सुनते ही मैंने कंबल फेंकी। सीधा रास्तेकी ओर दौड़ा और चौराहेपर आ धमका। खड़े खड़े आँखें मलीं और निगाह दौड़ाअी! तो देखता क्या-! अेक बड़ा लम्बा जुलूस! अुफ्! अितना बड़ा जुलूस! मैंने तो भाअी कभी देखा न था! जुलूसमें अनोखा आकर्षण था और था विलक्षण अुत्साह! मैं तो देखते ही आपेसे अुसमें खींचा गया। फिर क्या-! मैं भी लगा चलने जुलूसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ साथ! थोड़ी दूर गया ही था कि सहसा मैं अेक युवकसे पूछ बैठा, "अजी, आज अितना लंबा जुलूस क्यों निकला?"

"क्या तुम अितना भी नहीं जानते कि आज हमारा स्वातंत्र्य दिन है!" युवकने साश्चर्य कहा। मैं लज्जित हुआ। मुझे लज्जित और शर्मिंदा देखकर युवकने सहानुभूतिके शब्दोंमें कहा, "दुःखी न हो भाई, जबतक भारत पराधीन है, तबतक हमारा यह अज्ञान बना ही रहेगा। अुसमें तुम्हारा कोअी कसूर नहीं है। खैर आज आपको सब मालूम हो जायगा।"

सहसा आगे चलनेवाले दो स्वयंसेवकोंके हाथोंमें झोली लटकाते हुअे देखा। अुनकी ओर अंगली अुठाकर मैं बोला, "क्योंजी स्वयं-सेवकोंकी अुस झोलीमें क्या है?"

"अरे भाअी, वही तो आजका महत्वका कार्यक्रम है। अुस झोलीमें हैं विदेशी टोपियाँ। रास्तेसे चलते चलते किसीके सर विदेशी टोपी दिखाअी दी तो अुसे वे स्वयंसेवक झपटकर अुतार लेते हैं और झोलीमें डाल लेते हैं!" वह युवक आगे कुछ कहनेवाला ही था कि बीचमें मैं पूछ बैठा, लेकिन आखिर होगा क्या—? "हाँ, हाँ हाँ, अजी भाअी, वही तो कहनेवाला था! सुनो, आखिर यह जुलूस जायगा गांधीचौक और वहाँ होगी विदेशी टोपियोंकी होली, विदेशी! समझे!"

"होली करनेका मतलब?"

"मतलब यह कि अुसके द्वारा हमारी विदेशीकी मायाको भस्मीभूत करना है। यही होलीकी लपटें हमें स्वदेशीका पुनीत संदेश देंगी।...." युवक अुत्साहसे कहते चल रहा था और मैं ध्यानसे सुनते हुअे!

सहसा जुलूस गांधी चौक आ धमका! जुलूसकी कतारें चाँदके आकारमें खडी हुअीं। बीचोंबीच विदेशी टोपियोंका ढेर लगाया गया। ढेरमें रंगी-बेरंगी टोपियाँ थी! फर-कैप, अिटालियन कैप और हैट् भी थी! ढेरके पास शहर-प्रसिद्ध काँग्रेस नेता श्री. नवलचंद भाअी खड़े थे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके हाथसे ही आज विदेशी मायाको आग लगानेका शुभ कार्यक्रम था !

अुस वक्त सब ओर सन्नाटा छाया था ! सब चुप चाप खड़े अुस ढेरको देख रहे थे ! मानों अुनकी आँखोंसे मालूम होता था कि वे अगला अभिनय देखनेके लिअे कितने अुत्सुक हैं ।

अेक स्वयं-सेवकने मशाल जलाअी और नवलभाअीके हाथ दी । मशालकी लपेटें ऐसी लगती थी कि मानो अग्नि देवता अपनी लाल लाल शत जिव्हाओंसे विदेशी मायाको आत्मसात करना चाहती है । नवलभाअीने अैसी मशाल ढेरमें लगाअी थी कि 'वंदेमातरम्' की ध्वनी हवाको चीरकर दस दिशाओं में जा फैली ! चूँकि अिस ध्वनिके सिवा सब ओर सन्नाटा था, फिरभी नवलचंद भाअीकी न जानेवाली 'खिद खिद' हँसी सबोंके कानोंमें जा पहुँची ! ऐसे वक्त नवलभाअीको हँसते देखकर सचमुच सभीको अचरज हुअा । मैं तो जिज्ञासु था, फिर भला, अिस बातके पता लगाये बगैर मैं कैसे रह सकता !

रातभर माथापच्ची की, लेकिन अुनके हँसनेका कारण समझ में नहीं आया ! आखिर सुबह अुठते ही मैं अुनके घर जा पहुँचा और सीधा सवाल कर बैठा, कि आप कल क्यों हँसे !

"अुससे मतलब !" अुल्टा सवाल करके मुझे अुन्होंने अवाक् बनाया ! लेकिन अितनेसे मैं चुप न रहा ! मैंने कहा, कि बड़े लोगोंकी हंसी भी बड़ी रहस्यपूर्ण होती है ! मैं इस रहस्यको जानना चाहता हूँ !

"अैसा, तो भले आदमी सुनो, अुस वक्त मुझे अपने बचपनका अेक किस्सा याद आया, जो मेरे जीवनमें बड़ा स्थान रखता है ! किस्सा यह है कि—

मेरे पड़ौसमें अेक हैटेड्-बुटेड्-सुटेड् देशी साहब रहते थे ! अुनके घरकी रहन सहन भी अितनी विदेशी ढंगकी थी कि वे मानों अपनेको अंग्रेज ही समझते थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुस वक्त मैं बिलकुल छोटा था। अेक दिनकी बात है कि मैंने अुसके बेटेके शरीरमें अेक हैट देखी। वैसी हैटके लिये मैं पिताजीसे हठ करने लगा। लेकिन पिताजी कांग्रेसी आदमी! भला वे मेरे हठको कैसे निभाते! अुन्होंने मुझे गाँधी-टोपीकी विशेषता कह सुनाअी। लेकिन मेरा ध्यान अुनकी ओर कहाँ था। मैं तो अुस हैटको ही पाना चाहता था! मेरा हठ देखकर पिताजीने कहा "अरे श्याम, तू अितना भी नहीं समझता कि वह टोपी तो लाल मुँहके बंदर पहनते हैं! क्या तू लाल मुँहवाला बंदर है, धत् वह बंदरी टोपी कौन पहनेगा।"

पिताजीके ये शब्द मुझे अुस टोपीसे घृणा करनेके लिये समर्थ साबित हुअे। मुझे अुस दिनसे अुस टोपीसे ऐसी नफरत पैदा हुअी कि मैं पड़ौसके लड़केको 'बंदरी टोपी बंदरी टोपी भूप् भूप्' करके चिढाने लगा। यहाँ तक कि रास्तेसे अैसी टोपी पहने हुअे किसी भी आदमीको देखकर मैं अेकाअेक चिल्ला उठता—'बंदरी टोपी भूप् भूप्। अुन दिनों मैं अपने गाँवसे प्रायमरी स्कूलमें पढ रहा था। अेक दिन कोअी हैट पहने साहब हमारे मदर्से आये। अुन्हे देखते ही अनजानसे मेरे मुंहसे 'बंदरी टोपी भूप् भूप्' शब्द फूट निकले।

मेरी शरारत देखकर साहब घुर्राने लगे। घुर्राकर मेरे जैसे बच्चेका वे कर ही क्या सकते थे। लेकिन अुन्होंने अपना क्रोध अुतारा मास्टर साहबपर। बेचारे मास्टर साहब अुस वक्त तो सटपटा रहे थे; लेकिन साहबके जानेके बाद अुन्होंने वह जमदाग्निरूप धारण किया कि बिना मुझे पूछे पहले तो अेक-दो ऐसी जड़ दी कि मेरा होश ठिकाने लग गया। फिर धमकाते हुये वे कहने लगे, 'हरामजादे, तुझे अैसी शरारत कैसे सूझी!' लेकिन मैं अेक न बोला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शामको मैं घर आया और अेक कोनेमें जाकर सिसक सिसक कर रोते बैठा !

मास्टरने मुझे पीटा था, अिस बातका मुझे दुख न था। डर तो यह था कि न जाने शिक्षक अिस बातको पिताजीसे कहेंगे और पिताजी फिरसे मेरी मरम्मत करेंगे !

पिताजी घर आये। अुन्होंने मुझे पुकारा। मैं चोरकी तरह अुनके सामने खड़ा हुआ। मुझे रोते देख अुन्हें आश्चर्य हुआ। अुन्होंने पूछा, "रोता क्यों ?" मैंने रोते हुअे जबाब दिया कि मास्टरने मुझे जोरजोरसे तमाचे जड़ा है।

"क्यों ?

"मुझसे गल्ती य हुअी कि साहबके सिरपर हैट देखकर मैं बंदरी टोपी ..... भूपभूप ..... चिल्ला अुठा।"

"तो क्या हुआ— ?"

"साहबने मास्टरको डाँटा और मास्टरने मुझे !"

मुझे अपनी गोदमें बैठाते हुअे पिताजी बोले, बेटा अितनीसी बातके लिये रोता है ! अरे आज तो तूने तमाँचे खाये, लेकिन इसी कामके लिये हमें तो तमंचेका शिकार बनना पड़ेगा। मुझे तेरा यह ढाढ़स देखकर आनंद होता है। मैं आशा करता हूँ कि तू अिस चीजको मिटानेके लिये अपना बलिदान देने योग्य बनेगा !"

"बस यही किस्सा मुझे याद आया। अिसी बँदरी टोपीके लिये मुझे शिक्षकने तमाँचे जड़ाये थे, अुसीको अैसी धूलमें लोटते हुअे देख और जलते देख मुझे अेकाअेक हर्ष हुआ। मुझे पिताजीके शब्द याद आये और मैं हँस पड़ा !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थियोंके लिये:

कहानी का अभ्यास

: श्री. यदुनाथ थत्ते, राष्ट्रभाषा रत्न :

राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें शीघ्र-वाचनके लिये "कहानी–संग्रह" के तीन भाग रखे गये हैं। यह ख्यालमें रखना चाहिये कि वही कहानी लोकप्रिय होती है जो सरल हो, मनोरंजक हो और हमारे हृदयको छूनेवाली हो। हम अपने आसपासकी सांसारिक परिस्थितियोंमें अितने ज्यादा व्यस्त हैं कि हमारे पास समयकी कमी है, जीवन-निर्वाहकी गुत्थियोंको सुलझानेमें ही हमारा अधिकांश समय चला जाता है। अिसलिये हम किसी गहन गंभीर विषयके चिंतनमें अपना थका हुआ दिमाग न खपाकर, बोझिल दिलको खुश करनेके लिये सरल, सस्ते और सुन्दर चित्ताकर्षक साहित्यकी शरणमें जाते हैं। और अैसा मनोरंजन दो जगहोंमें बहुत आसानीसे हो जाता है— अेक है सिनेमा-घरमें प्रविष्ट होकर चलती–बोलती कहानी देख आनेमें और दूसरे अपने अुद्विग्न मनको हल्केसे साहित्य-कहानी अुपन्यास अेकांकी आदि-को पढ़कर मनोरंजन कर लेना।

कहानीका निर्माण मानवी अनुभवों और कल्पनाओंके मेलसे होता है। कथावस्तु, पात्र, चरित्र, संघर्ष, घटनाचक्र और मनोव्यापारोंका अन्तरद्वन्द्व कहानीको बहुत अुच्च कोटिका बना देता है। कहानीकी सरलता— भाषा, भाव, शैली और कल्पनाकी— अुसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

कहानीको ज्यादा-से-ज्यादा घंटे दो घंटेके अन्दरही पढ़कर समाप्त हो जाना चाहिये। अुसमें मनुष्यकी जिंदगीके किसी अेक पहलू या मानसिक व्यापारको चित्रित करनेकी पूरी कलापूर्ण क्षमता कहानीकारमें होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानीका विषय अैसा हो, जिसका निर्वाह और विकास अेक संकुचित सीमाके अन्दर भलीभाँति हो जाये! अुसमें अनावश्यक बातें न आवें और न कोअी बात छूट ही जाय। अुसे पढ़ लेनेके बाद हमारी राय कायम हो कि अुसमें जो कुछ कहा गया है, वह ठीक है, अगर कहीं लेखक अिससे ज़्यादा कह देता तो कहानीका सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है।

दूसरी बात, कहानीके अुद्देश्य साधन और परिणाममें परस्पर सामंजस्य होना चाहिये। पाठकको अुत्सुकताके साथ आगे बढ़ा कर ले जानेवाली कहानीमें मनोवैज्ञानिक सत्य अवश्य हो। अुसकी शब्द-सृष्टि और भावसृष्टि बहुत नपी-तुली हो। कहानी अपने लक्ष्यपर आकर समाप्त हो जानी चाहिये। अुसका आरम्भ और अन्त बड़ी विचित्रताके साथ होता है।

संक्षेपमें कहानीकी कुछ विशेषतायें अिस प्रकार हैं :—

१. कहानीमें अेक सत्य होता है। अेक कोअी घटना आत्माकी अेक झलक या मनोवैज्ञानिक सत्यका प्रदर्शन।

२. अगर कहानीमें घटनाका स्थान हमारी तीव्र अनुभूति ले ले तो अैसी कहानियाँ अुच्च कोटिकी होती हैं।

३. कहानीका आधार मनोवैज्ञानिक हो।

४. मनोरंजन करना अुसका अुद्देश्य तो होना ही चाहिये; पर अुसके अन्दर पाठककी मनस्तृप्तिके लिये भावोंको जाग्रतकर अग्रसर करनेकी क्षमता रखनेवाली कोअी ठोस वस्तु भी होनी चाहिये।

५. कोअी कहानी घटनाप्रधान होती है, कोअी चरित्र-प्रधान। चरित्र-प्रधान कहानी ही अुत्तम व अूँचे दर्जेकी समझी जाती है।

६. कहानी का परिणाम सर्वमान्य हो, अुसमें कुछ सूक्ष्मता हो। अुसमें वेग हो, तीव्रता हो और ताज़गी हो, साथ ही अैसा कुछ भी अनावश्यक अुसमें न हो जो दिलको खटके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. अुसकी भाषा सरल, साफ़-सुथरा और सुबोध हो।

८. कहानीमें घटनायें पात्रोंकी मनोगतिके स्वयं अनुकूल हों, वे प्रधानता ग्रहण न करलें।

परीक्षार्थी अिन बातोंको ध्यानमें रखें:—

शीर्षक—प्रवेश, परिचय और कोविद के परीक्षार्थियोंको अनिवार्य रूपसे अेक कहानी लिखनी पड़ती है। परीक्षकोंका अनुभव है कि परीक्षार्थी "शीर्षक" की तरफ़ ध्यान नहीं देते। शीर्षक ही अपने अति संक्षिप्त रूपमें कहानी का सूचक है-सार है।

'प्रवेश' के परीक्षार्थीको कभी कभी कहानीका शीर्षक देनेको कहा जाता है। 'परिचय' और 'कोविद' में अैसे भी प्रश्न पूछे जाते हैं कि अमुक कहानीका अमुक 'शीर्षक' कहांतक ठीक है। कभी कभी शीर्षकहीन छोटासा निबंध या अुसके समक्षकी कोअी शीर्षक-विहीन कविता दी जाती है और तब अुसका ठीक-ठीक शीर्षक बनाकर देना पड़ता है। हम अभ्यास करते समय अपनी कविता-कहानियोंके शीर्षकोंपर ध्यान देंगे तो शीर्षक देनेका काम सरल हो जायगा।

(२) नये शब्द:—हम लोग अपने मनोभावोंको व्यक्त करनेके लिये ही राष्ट्रभाषा सीख रहे हैं। नये नये शब्दोंका भंडार हम अपने दिल व दिमाग़में अच्छी तरह भरते रहें। हमारा शब्द-भंडार जितना ठोस और बढ़ा चढ़ा होगा। हमारी भाषा अुतनी ही समर्थ-सम्पन्न होगी। शब्दोंके अर्थ और भाव अपनी विशेषताको लिये हुअे होते हैं। अुनके प्रयोगका भी ठीक ठीक अभ्यास होना चाहिये। हरेक शब्दसे अुसके अर्थकी निराली छटा अलग अलग व्यक्त होती है। मसलन्—हास, अतिहास, अितिहास, परिहास, अट्टहास और चन्द्रहास। 'हास' सबके साथ सटा हुआ है; किन्तु अुसकी छटामें और अुसके प्रयोगमें ज़मीन—आसमानका फ़र्क है। और अतिहास तथा अितिहास तो कभी मिल ही नहीं सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) मुहावरा और रोज़मर्रा :—यही भाषाकी जान हैं और अुसकी मौरुसी मिल्कियत। कहानीमें मुहावरे आते हैं। परीक्षक अुनका अर्थ और स्व-रचित वाक्योंमें प्रयोग करनेको कहते हैं। मुहावरा व रोज़मर्राका ठीक ठीक अभ्यास होना चाहिये। मुहावरा वाक्यांश बनकर आता है जो अपनी लक्षणा और व्यंजना शक्तिसे साधारण अर्थसे विलक्षण व भिन्न मजेदार अर्थ बतलाता है। जैसे "नौ दो ग्यारह होना" यानी भाग जाना – पहरेदार जाग पड़ा। चोर नौ-दो ग्यारह हो गये। 'रोजमर्रा' प्रति दिनकी चलती बोलीको कहते हैं। अिसका अभ्यास अुस भाषाके बोलनेवाले जिस ढंगसे अुसका प्रयोग करते हैं अुनकी संगतमें रहनेसे होता है।

(४) पात्र और अुनके स्वाभावका चित्रण:—कहानीके पात्रोंके नाम हमें याद रखने चाहिये और तीन चार बार कहानी पढ़कर अुनका चित्रण अुस कहानीमें से निकालना चाहिये।

(५) कथावस्तु या प्लॉट:— कहानीको ज्यों-की-त्यों रट लेना अनावश्यक है। कथावस्तु अेक दो वाक्योंमें ही निकल आती है और कल्पना-प्रसूत होती है। प्रवेश-परिचयके परीक्षार्थीको अेक छोटासा कहानीका ढाँचा भी दे दिया जाता है, अुसपरसे कहानी लिखनी पड़ती है।

(६) आरम्भ:— सिद्ध-हस्त लेखक कहानी या निबन्ध अिस प्रकार लिखते हैं कि अुसका आरम्भ पढ़कर ही हम अुसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।

(७) कहानीका निर्वाह:—अैसा हो कि पाठककी अुत्सुकता अन्त तक बनी रहे। कहानीपर पूछे जानेवाले प्रश्नोंकी कल्पना विद्यार्थी स्वयं करें और अुनके अुत्तर भी लिखकर शिक्षकको दिखायें। कभी कभी अिस प्रकार भी पूछते हैं कि कहानीका कोअी मुख्य पात्र स्वयं कहानी कह रहा हो—अैसे लिखिये।

(८) अन्त भला सो सब भला:—कहानीका अन्त हम अैसी सफ़ाअीके साथ करें कि पाठक बोल अुठे "शाबास! वाह वाह!!",

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० प्रेमचंदजीकी ठाकुरका कुआँ, प्रायश्चित, और भगवती चरण वर्माजीकी बिल्लीवाली कहानी अिसके अुदाहरण हैं।

(९) आलोचना :—'कोविद' और 'राष्ट्रभाषा रत्न' के परीक्षार्थियोंको किसी अेक या दो कहानियोंकी तुलनात्मक आलोचना करनी पड़ती है। जैसे प्रेमचंद और प्रसादकी या जैनेन्द्र और चतुरसेन शास्त्रीकी। प्रवेश और परिचय में यह बन्धन नहीं है।

अिन बातोंपर ध्यान देनेके साथ शब्दोंके प्रयोग पर भी ख्याल रखें जिससे भाव कुभाव न हो जावें, शब्द अपशब्द न हो अुठें और शैली आपकी बद शकल न हो जाय।

लक्ष्मीका स्वयंवर

: श्री प्रा. ना. खी. फडके :

कहते हैं, लक्ष्मीजी कमलसे अुत्पन्न हुअी हैं। किन्तु अिसी अेक बातपरसे यह अनुमान कर लेना गलत होगा कि वह अपने ही गोत्रके कोमलांग कमनीयकान्ति और कोमल शैयापर शयन करनेवाले किसी निरुद्योगी पुरुषको वरेंगी।

अुनकी पसंदगीका आधार अुस पुरुषका स्वगोत्री होना नहीं है। स्वयं अत्यन्त सुन्दर, कोमलांगी और सर्वगुणसम्पन्न होकर भी वह प्रयत्न और पुरुषार्थमें रातदिन संलग्न भिन्न गोत्री पुरुषको ही अधिक चाहती हैं। अुनकी कमल-दल और मायकेके मूल्यवान मोती कभी नहीं भाते। मेहनत मज़दूरीके पसीनेकी बूंदोंसे शोभित मुखवाले अुद्योगी पुरुषसिंह को ही वे खोजती रहती हैं।

आलसियोंपर अुनका प्रसन्न होना असंभव है। अगर वे प्रसन्न हुअी भी तो वे बहुत देर तक अुनके पास नहीं टिकतीं। जो अथक अुद्योगशील हैं अुन्हें, लक्ष्मीदेवी आज नहीं, कल जरूर वरण करेंगी। *

* मराठीसे—अनुवादक श्री पं. तो. चौधरी विशारद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश परीक्षोपयोगी लेखः—

राष्ट्रभाषामें प्रवेश

: श्री गंगाधर अनिल कुमार :

राष्ट्रभाषामें प्रवेश करनेवाले परीक्षार्थिओ ! तुम समितिकी 'प्रवेश' परीक्षामें अिसबार बैठ रहे हो। समितिने सर्व साधारण परीक्षार्थियोंको प्रारंभिकसे छूट देकर राष्ट्रभाषाका श्री गणेश प्रवेशसे ही तुम्हारे जीवनमें कराया है। अतः अिस लेखमें दी हुअी सामान्य बातोंको ध्यानमें रखते हुअे अपने अध्ययनकी नींव मजबूत डालनी चाहिये। जिससे भविष्यमें तुम राष्ट्रभाषाकी विशाल अिमारतके मजबूत खंभे बनकर अुसके बोझको अपने कंधोंपर बाँट सको।

प्रवेशके परीक्षार्थियो ! किसी भी तरहसे रटी हुअी भाषाका अुत्तर पुस्तकमें प्रयोग करना तुम्हारे लिअे अनुचित है। तुम प्रतिदिन जिसे पढ़ते हो अुसीको अपनी कॉपीपर बगैर पुस्तक देखे लिख लिया करो और फिर अपने शिक्षक या प्रचारकको दिखाकर अुनसे अपनी मुख्य-मुख्य भूलें समझ लिया करो। यहाँ अेक बात स्मरण रखनी चाहिअे। वह यह है कि, अपनी भूलोंकी पुनरावृत्ति कॉपीके अगले लेख में कदापि न होने दो। फिर भी दूसरे लेखमें कुछ नअी भूलें होंगी ही। तब अिन नअी भूलोंको भी समझकर फिरसे अिन्हें नहीं दुहरानी चाहिअे। अिस तरह क्रियात्मक अध्ययनसे तुम्हारी आम भूलें अेक अेक करके नष्ट हो जायेंगी और तुम कुछ ही दिनों में सरल व शुद्ध हिन्दी लिखने लगोगे। जो प्रौढ छात्र जीवनके जंजालमें फँसे हैं अुन्हें चाहिअे कि वे निद्राके पहले नित्य अेक घंटा अपनी पाठ्य पुस्तकके कुछ पाठोंको ध्यानसे पढें और सोनेके पहले अेक बार अुनका स्मरण करें। अिस तरह अुनका अध्ययन अुनकी जीवन-चर्याका अेक अंग बन जायगा। जब तक वे राष्ट्रभाषा के छात्र बने रहेंगे तबतक अुनके लिअे यही आवश्यक कार्य है। और जो बालक हैं अुनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये यही आवश्यक है कि कथात्मक पाठें पढ़कर अुसकी कथा अपने बाल-मित्रोंको, सखियोंको या छोटे भाअी-बहनोंको सरल हिन्दीमें जबानी कहकर सुनायें। अिससे संकोची बालक-बालिकायें परीक्षकसे निडर होकर बातें कर सकेंगी और अुनकी मौखिक परीक्षा भी सफल होगी।

'गुलदस्ता' भाग १ की सभी कवितायें शिक्षाप्रद हैं। अिनको पढ़कर स्मरण रखें कि किस कवितासे क्या शिक्षा मिलती है। छोटी छोटी कवितायें जैसे– 'गाँवमें जल प्रलय' 'हिमालय' 'बरसात' आदिको अधिकांश याद कर लेना चाहिये। क्योंकि जो छोटी छोटी कवितायें हैं अुनका आशय पूछते हैं। कवितायें पढ़ते समय अुनके कठिन शब्दोंको मुखाग्र कर लेनेसे अर्थ लिखनेमें बड़ी सुविधा होती है। अधिकांश परीक्षार्थी गुलदस्ताके अंतमें दिये हुये भावार्थसे रटकर अुसीकी भाषाको लिखते हैं। यह भाषा सीखनेकी दृष्टिसे हानिकर है। परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण होना ही मुख्य नहीं; परीक्षार्थीका मुख्य अुद्देश्य भाषा सीखनेका होना चाहिये।

'कहानी संग्रह' में कुल छै कहानीयाँ हैं। ये कहानियाँ बड़ी सुन्दर और रोचक हैं। अिनको पढ़कर कठिन वाक्याशोंका अर्थ समझलेना चाहिअे। कहानीसे मिलनेवाली शिक्षाको ध्यानमें रखकर अुसे अपनी कापीमें अपनी भाषामें संक्षेपमें लिखें। ध्यानमें रहे कि प्रवेशके परीक्षार्थीको परीक्षामें २॥ घंटेमें ही सारे प्रश्नोंके अुत्तर लिखने पड़ते हैं। आधा घंटा तो प्रश्नों को पढ़ने, सोचने और समझनेमें ही चला जाता है। अिसलिअे सुस्त लिखनेवाले परीक्षार्थी तेज लिखनेका अभ्यास करें। अिसके लिअे किसी भी लिखनेकी वस्तुको पहले खूब सोचलें और फिर अुसे साफ़ अक्षरोंमें लिखें। 'सरल रचना व पत्रलेखन' अिस पुस्तकसे परीक्षार्थीको भाषाकी दृष्टिसे काफी सहायता मिल सकती है।

परीक्षार्थियोंको अपनी मातृभाषासे अनुवाद करना सीखना चाहिअे। अनुवादके अंक कभी कभी बड़ी कठिनाअीसे प्राप्त होते हैं। किन्तु जिनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुवाद करनेका कौशल आगया है वे अिसमें बड़ी ही आसानीसे अङ्क प्राप्त करते हैं। मातृभाषामें जो 'खण्ड' अनुवादके लिअे दिया जाता है वह बड़ा ही सरल होता है। अुसे दो-तीन बार लगातार पढ़ें! पढ़नेके बाद सोचें कि अुक्त खण्डका आशय क्या है। अिसके बाद फिर अेक बार पढ़ें और बादमें अुसके आशयको मूल खण्डके ही वाक्योंके ढँगसे सरल शुद्ध राष्ट्रभाषामें लिखें। अनुवादमें सफलताकी अिच्छा रखनेवाले बड़े बड़े वाक्योंकी जगह छोटे छोटे वाक्य रखें। अिसमें अेक भी वाक्य अपनी ओर से न लिखें। अनुवादके लिअे दिअे गअे खंड के वाक्यों का ही हिन्दीकरण करें। शब्द के लिअे प्रतिशब्द लिखनेसे अनुवाद दोषपूर्ण होगा। वाक्योंके लिअे प्रतिवाक्य रखना हानिकारक नहीं।

जैसे-जैसे परीक्षाके दिन निकट आवें वैसेही हिन्दी बोलनेका अधिकाधिक प्रयत्न किया जाय और अपनी पुस्तकको अथवा हिन्दीका कोअी अखबार जोर जोरसे पढ़ें। अितनी तैयारीके बाद आत्मविश्वास के साथ राष्ट्रभाषामें 'प्रवेश' कर सकते हैं। अिसमें प्रवेश कर लेनेपर शीघ्रही आपका राष्ट्रभाषासे परिचय भी करा देंगे।

प्रधान मंत्रीकी ओरसे

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा रजत-जयंती

२४ जनवरी १९४६ से हमारी सहोदर ज्येष्ठ संस्था--दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा--अपने जीवनके २७ वर्ष पूरे होने पर अपनी रजत-जयंती मना रही है। पत्रे या कलेण्डरके हिसाबसे १९१८ से अुसकी वर्षगांठें जोड़नेपर २७ होती हैं; किन्तु रजत-जयन्तीके हिसाबसे हम यह नव वर्षारंभ अुसकी पच्चीसवीं वर्षगांठ ही मानते हैं। हिन्दी प्रचार सभाको यह वर्ष-गांठ फिर फिर आये और पूज्य गान्धीजीकी ही छत्र-छायामें हम अुसकी स्वर्ण-जयन्ती भी मना सकें— यह बलवती मनोकामना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अिन २७ वर्षोंमे दक्षिण-हिन्दियोंने राष्ट्रभाषाके कार्यको जिस प्रेम व लगनके साथ अपनाया और बढाया वह अुत्साह जनक है। आज हिन्दी प्रचार सभाकी भाषावार चार प्रान्तीय-शाखायें हैं। लग भग ५०० समितियाँ स्थानीय कार्यका संगठन करती हैं। वे बहुधा पुस्तकालय तथा वाचनालय संचालन करती है। ६०० केंद्र हैं। १५०० प्रचारक हैं। करीब ५०००० विद्यार्थी हैं। १८००० सालाना परीक्षार्थी हैं। २००० से अधिक सदस्य हैं।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाने अबतक अपने प्रेसमें १६० किताबें भिन्न भिन्न तरहकी छपाअी हैं, जिनकी २०,०००,००० प्रतियाँ रु० १२००,००० कीमतकी खप चुकी है।...."

िस मार्गपर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाने अितनी प्रगतिकी है, यदि वह अुसी पथपर आगे भी बढती रही तो हमें अिसमें सन्देह नहीं कि वह समस्त भारतके हिन्दी प्रेमियोंकी सराहना और सहायताकी पात्र होगी।

किन्तु यह यदि अेक बड़ी यदि है। िस बारेमें हम अिस अवसरपर कुछ नहीं कहना चाहते।

दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभाकी रजत-जयंती मङ्गल-कारिणी हो।

बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा :

हम पिछले किसी अवसर पर बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा के पुनर्जन्मकी चर्चा कर चुके हैं। ७ अक्तूबर की बैठकके निश्चयोंके अनुसार ११ व्यक्तियोंकी अेक विधान-निर्मातृ समिति बन चुकी है। विधानकी स्वीकृतिके बाद अुस विधानके अनुसार कार्यकरिणीकी रचना होने तक यह आवश्यकता अनुभव हुअी है कि अेक अस्थाअी कार्य-कारिणी समिति कार्य करती रहे। हमें यह जानकर प्रसन्नता हुअी है कि निम्नलिखित सज्जनोंने कार्य-कारिणी समितिमें रहना स्वीकार कर लिया है—

श्री. गोविन्दलाल पित्ति (अध्यक्ष); श्री. कान्तिलाल जोशी (मंत्री); श्री. घनश्याम दास पोद्दार; श्री. भागवत; श्री. मुनि जिन विजयजी; श्री. श्यामबहादुरसिंह; श्री. अेच. के. (?) गुण्डुराव (सदस्य);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

पिछले दिनों 'राष्ट्रभाषा' में तो नहीं किन्तु अन्य समाचार-पत्रोंमें विशेष रूपसे महाराष्ट्र के पत्रोंमें महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की पर्याप्त चर्चा हुअी है। हमें दुःख है कि अिसी नामसे कार्य करनेवाली महाराष्ट्र में अेक और संस्था होनेसे कुछ समयतक पाठकोंको भ्रम हो सकता है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके वर्तमान अधिकांश सदस्योंकी नामावलि अिस प्रकार है--

१. प्रो. वा. म. दवडघाव, सेक्रेटरी शि. प्र. मण्डली पुणे-अध्यक्ष।
२. प्रि. श. वा. दांडेकारी प्रिन्सिपॉल अेस. पी. कॉलेज
३. प्रि. के. रा. कानिटकर प्रिंसिपॉल प्रताप कॉलेज अमळनेर।
४. पं. श्री. दा. सातवळेकर, संपादक "पुरुषार्थ" औंध, (सतारा)
५. श्री. नी. वी. किंकर, संपादक प्रोग्रेस ऑफ अेज्युकेशन पुणे—कोषाध्यक्ष
६. प्रो. नानाराव जोग, फर्ग्युसन कालेज
७. श्रीमती सोनुताअी काळे, संघटन-मंत्री

बङ्गाल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

सूचना मिली है कि बङ्गालमें--जैसी हम पिछले अंकमें आशा प्रकट कर चुके हैं--बङ्गाल राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी स्थापना हो गअी है। अध्यक्ष-पद प्रसिद्ध भाषा-शास्त्रज्ञ सनीतिकुमार चाटुर्ज्या सुशोभित कर रहे हैं और सदस्योंमें श्री० विधुशेखर भट्टाचार्य और प्रो. सुकुमार सेन सदृश विद्वान मंडली है। सदस्योंकी नामावलि हम अगले अंङ्कमें प्रकाशित कर सकेंगे। हर्षका विषय है कि "विशाल-भारत" के सम्पादक श्री० मोहन सिंह सेंगर ने अभी समितिके मन्त्रीपदके कर्तव्योंकी जिमेवारी अपने सिरपर ले ली है।

श्री रेवती रञ्जन साहित्यरत्न जैसे हिन्दी-प्रेमी अुत्साह पूर्वक संगठन कार्यमें लगे हैं।

आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धा-कार्यालय

पुस्तक विक्री विभाग—

कमीशन—(१) समिति द्वारा प्रकाशित सभी पुस्तकोंपर प्रमाणित प्रचारक, केन्द्र-व्यवस्थापक तथा पुस्तक विक्रेताओंको १५% कमीशन दिया जायगा। आर्डर कमसे कम १० रु. का होना चाहिये।

(२) प्रचार परीक्षाओंकी बाहरी पाठ्य पुस्तकोंपर ६ १/४% दिया जावेगा।

(३) सामान्य पुस्तकोंपर ऑर्डरके अनुसार कमीशन दिया जायगा।

५) रु. से १५) रु. तक	६ १/४%
१५) रु. से ५०) रु. तक	१०%
५०) रु. से अधिक पर	१२ १/२%

५) से कम के आर्डर पर कोअी कमीशन नहीं दिया जा सकेगा। आवश्यकता पडनेपर अिन नियमोंमें परिवर्तन किया जा सकेगा।

विशेष सूचना:— केन्द्र-व्यवस्थापक, प्रमाणित प्रचारक तथा पुस्तक-विक्रेताओंसे प्रार्थना है कि वे आर्डर देते समय अपना पूरा परिचय दें, अन्यथा अुन्हें साधारण ग्राहकोंका ही कमीशन दिया जायगा।

ग्राहकोंसे प्रार्थना है कि वे अपने ऑर्डर देते समय लगभग अेक तिहाअी पेशगीके साथ अपना पूरा पता, डाकघर, जिला, रेलवे स्टेशन आदि की आवश्यक जानकारी स्पष्ट अक्षरोंमें अवश्य लिख भेजा करें।

सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखा जा सकता है। अिस सूचीपत्रके अलावा भी सैकड़ों नअी पुस्तकें स्टाकमें आ गअी हैं। पुस्तक चुननेमें हमारी सहायता ली जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

परीक्षा फल

फरवरी ४६ में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं का परीक्षाफल ता० २० मार्च ४६ को प्रकाशित होगा।

केन्द्र व्यवस्थापकोंसे—

आप आगामी परीक्षाके सभी आवेदन-पत्र भेज चुके हैं। अपने यहाँके परीक्षार्थियोंकी संख्या देखकर प्रति ३५ परीक्षार्थीके लिये अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक निरीक्षकोंके नाम और योग्यता साथमें भेजे गये सिफारिश पत्रपर भरकर हमारे पास वापसी डाकसे भेज दें। साथ ही जिनके नामकी आप सिफारिश करें अुनसे स्वीकृति-पत्र भी भरवाकर भेजें। अिसके लिये भी छपा पत्रक भेजा जा चुका है। निरीक्षकोंकी नियुक्तिकी सूचना समयपर आपके पास पहुँच जायगी।

पैंतीससे कम परीक्षार्थीवाले केन्द्र भी अेक निरीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

हर निरीक्षकको प्रति दिनके लिये १ रुपया पुरस्कार दिया जायगा। प्रारंभिक और प्रवेश परीक्षा आधे दिन ही होती है, अिसलिये अिसके लिये आधे दिन तक ही निरीक्षककी नियुक्ति करनी चाहिये। अैसे निरीक्षकको पुरस्कार भी आठ आना ही दिया जा सकेगा।

प्रवेश और परिचयकी मौखिक परीक्षा :

प्रवेश और परिचयकी मौखिक परीक्षाकी व्यवस्थाका सारा भार केन्द्र-व्यवस्थापकोंपर रखा गया है। वे ही अिसके लिये परीक्षककी नियुक्ति और तारीख मुकर्रर करें। परीक्षकके लिये किसी योग्य स्थानीय व्यक्तिका चुनाव अच्छा होगा। प्रवेशकी मौखिक परीक्षा साधारण परीक्षासे कुछ रोज पहले ही हो जानी चाहिये और प्राप्तांक वर्धा-कार्यालय भेज देना चाहिये। जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक हो वहाँ साधारण परीक्षाके साथ भी अिसके लेनेकी व्यवस्था की जा सकती है। परिचयकी मौखिक परीक्षा छपे कार्यक्रमके अनुसार साधारण परीक्षाके साथ ही ली जाय।

प्रवेश और परिचयकी अिस मौखिक परीक्षाकी सारी व्यवस्था आप शीघ्र करें। हम साथमें अिसके लिये प्राप्तांक भरनेके पत्रक भेज रहे हैं। ये प्रवेश और परिचयके मौखिक परीक्षकके लिये हैं। मौखिक परीक्षा समाप्त होते ही आप प्राप्तांक-सूची सील-मुद्दर करके हमारे पास भेज दें। अिस परीक्षाकी सूचना सब प्रवेश और परिचयके परीक्षार्थियोंको दे दें।

नियमानुसार प्रवेशकी मौखिक परीक्षके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक १५ रखा गया है। और परिचय परीक्षाके लिये पूर्णांक ५० और अुत्तीर्णांक २० रखा गया है।

कोविदकी मौखिक परीक्षाके बारेमें आवश्यक सूचना समयपर अलगसे भेजी जायगी।

परीक्षामें न बैठावें—

प्रत्येक केन्द्रमें सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियोंके 'प्रवेशपत्र' यथा समय केन्द्र व्यवस्थापकोंके पास भेज दिये जावेंगे। किन्ही कारणोंसे जिन परीक्षार्थियोंके आवेदन पत्र अस्वीकृत हुअे हैं अुनके प्रवेशपत्र नहीं भेजे जावेंगे। केन्द्र व्यवस्थापकोंसे प्रार्थना है कि 'प्रवेशपत्र' के बिना किसी परीक्षार्थीको परीक्षामें सम्मिलित न करें।

शुल्क सुरक्षित—

साधारणतया शुल्क वापस नहीं किया जायगा और न आगे के लिअे सुरक्षित ही रखा जायगा। लेकिन आकस्मिक बीमारीके कारण परीक्षामें न बैठ सकनेकी सूचना **परीक्षा तारीख के बाद केन्द्र व्यवस्थापकद्वारा अेक सप्ताह तक डाक्टर के प्रमाण पत्र के साथ** परीक्षा मंत्रीके पास आनेपर शुल्क आगे की केवल अेक परीक्षाके लिअे सुरक्षित रखा जा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम

	परीक्षाका नाम	समय १०½ से १½	समय २½ से ५½
शनिवार ता० २-२-४६	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	—	प्रश्नपत्र १

रविवार ता० ३-२-४६	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र २	मौखिक परीक्षा
	प्रवेश, प्रारंभिक	ये दोनों परीक्षाएं १०½ से ११½ बजे तक ही होंगी	

कोविदके अतिरिक्त विषयः—प्राचीन साहित्यकी परीक्षा मंगलवार ता० ५-२-४६ को सबेरे ७½ से १०½ तक और परिचय तथा कोविदकी अर्दूकी परीक्षा बुधवार ता. ६-२-४६ को सबेरे ७½ से १०½ तक होगी।

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता. ४।२।४६ सोमवारको सबेरे होगी।

प्रवेशकी मौखिक परीक्षा अगर पहले न ली जा सकी हो तो शनिवार ता. २।२।४६ या रविवार ता. ३।२।४६ को सुविधानुसार ली जा सकती है।

मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है। गत प्रश्नपत्रोंके देखनेसे यह ज्ञात हो जाता है कि प्रश्नपत्र किस प्रकारका आनेवाला है।

प्रारम्भिक प्रवेश, परिचय तथा कोविद परीक्षाके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं। परीक्षाओंके अेक समयके प्रश्नपत्रोंके संच [सेट] तैयार किये गये हैं। प्रत्येक संचका दाम ।-) आने है। प्रत्येक परीक्षाके फुटकर प्रश्नपत्र भी मिलते हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसे है। प्रश्नपत्रोंका संच अथवा फुटकर प्रश्नपत्र मँगाते समय आवश्यक मुल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये। 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षाके प्रश्नपत्रोंके संचका दाम ।-) आने है।

'राष्ट्रभाषा' और 'सबकी बोली' की पुरानी फाअिलें

(१) राष्ट्रभाषा प्रचार आन्दोलनका पूर्ण दर्शन (२) विद्वानोंके राष्ट्रभाषा सम्बन्धी विचार (३) समितिके प्रचार-कार्यका विवरण (४) परीक्षार्थियोंके लिये अुपयोगी बातें (५) सरल शैलीमें कविता, कहानी लेख आदि अिन फाअिलोंमें मिलेंगे।

"सबकी बोली"	दिसम्बर ३९ से नवम्बर ४० तक	२)
"राष्ट्रभाषा"	जुलाअी ४३ से जून ४४ तक	२)
,,	मार्च ४४ से अक्तूबर ४५ तक	१॥)
,,	नवम्बर ४४ से अक्तूबर ४५ तक	२)
	प्रत्येक फाअिल भेजनेका डाक खर्च	।=)

फाअिलोंकी संख्या सीमित ही है। अपनी प्रति शीघ्र मँगा लें। 'सबकी बोली' अथवा 'राष्ट्रभाषा' की फुटकर प्रतिका मूल्य =) है।

मिलनेका पता—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

हिन्दीके कुछ श्रेष्ठ कहानी-संग्रह

पुस्तकें	मूल्य	पुस्तकें	मूल्य
अधूरा चित्र	१।)	चलचित्र	१)
अक्षत	१।)	चगताओंकी कहानियाँ	१।)
अग्नि पूजक	१)	चार कहानियाँ	२॥)
अमृत	१)	चित्र कथा	१॥)
अनुभूति	१।)	चित्रशाला	१॥)
अतीत स्मृति	१।)	चौराहा	१॥।
अनोखी कहानियाँ	१)	ज्वारभाटा	२।)
अंतरकी बात	१।)	ज्वाला	॥।)
अहंवादीकी आत्मकथा	१।)	जीवनके सपने	२।)
अँगारे	१॥)	जिवनकी बुंदे	॥।)
अपहार	१)	जिवन-कण	॥)
अिंट और रोडे	१।)	टालस्टायकी अमर कहानियाँ	१)
अिन्स्टालमेन्ट	१।)	,,	२।)
अुन्मादिनी	१।)	टूटे हुअे दिल	२॥)
कलकी बात	१॥)	तर्कका तूफान	१॥।)
कड़वी मीठी बातें	१)	तरुणी	१)
कलाकी दृष्टी	१=)	तिलस्माती मुंदरी	॥)
कथा कुंज	१।)	तूलिका	१॥)
कानन	१॥)	तुलादान	२।)
किसलय	१॥)	दर्पण	१।-)
गल्पतरंगिणी	१।-)	द्वादशी	१।)
गल्प मंजरी	२॥)	मिलनेका पता—	
गरीबकी आह	॥।))	**राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।**	
गोबरीराम कहानी	१।)		
गल्पावली	१॥।=)		
गल्प मन्दिर	॥।=)		
गीदड़का शिकार	॥।)		
चकरे नलब	१॥।)		
चन्द्रकला	१)		

प्रबन्ध-सम्पादक और प्रकाशकः—
हृषीकेश शर्मा,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
मुद्रकः—**गोविन्द भास्कर जोशी,**
भास्कर छापखाना,
राठी-मार्केट, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५

दिसम्बर

अंक २

राष्ट्रभाषा

स्वाधीनता की घोषणा

....हम हिन्दुस्तानके जन समुदायको पुकारते हैं कि आओ हमारे झंडेके नीचे और हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिये अपना प्रहार आरम्भ करो। हम अुनसे पुकार कर कहना चाहते हैं कि अंग्रेजों....के खिलाफ अपनी आखिरी लड़ाअी अभी शुरू करो और अुसे लगन, दिलेरी तथा अपनी अन्तिम विजयमें पूर्ण विश्वासके साथ तब तक जारी रखो जब तक कि दुश्मन हिन्दुस्तानकी मिट्टीको छोड़कर भाग न जाय तथा हिन्दुस्तानके लोग फिरसे स्वतन्त्र न हो जाँय।

—आजाद हिंद सरकारकी घोषणाका अेक अंश

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१. युग-प्रतीक (श्री अंचल) ३७
२. अेक राष्ट्रभाषा और दो लिपियाँ (श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति) ३८
३. देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद (ह० के० श०) ४०
४. राष्ट्रभाषाके अनन्य सेवक स्व. आगरकरजी (श्री वि. मो. शर्मा) ४३
५. आकाश और पृथ्वी (श्री वि० स० खांडेकर) ४७
६. दिल्लीका लाल किला (श्री ह० के० श०) ४९
७. राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें (श्री रा० च० त्रिवेदी) ५३
८. 'परिचय' के कुछ पवित्र पात्र (श्री जे० जोशी) ५६
९. प्रधान मंत्रीकी ओरसे ५९
१०. पुस्तक परिचय ६१
११. परीक्षा विभाग ६२
१२. हमारे नये प्रमाणित प्रचारक ६४
१३. वर्धा-कार्यालय ६६
१४. हमारे प्रान्तोंका हलचलें ६७

"राष्ट्रभाषा"के ग्राहकोंको सूचना

राष्ट्रभाषाके 'ग्राहक' खत लिखते वक्त खासकर अपनी "ग्राहक संख्या" लिखना भूल जाते हैं। जिससे पत्रोत्तर देनेमें-काफी विलम्ब और परेशानी होती है। अतः अुनसे हमारी प्रार्थना है कि वे पत्र लिखते समय अपने पूरे पतेके साथ साथ 'ग्राहक संख्या' लिखना कभी न भूलें।

व्यवस्थापक
"राष्ट्रभाषा", वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

[राष्ट्रभाषा-प्रचार समितिका मासिक मुखपत्र]

सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

वर्ष ५] वर्धा, दिसम्बर—१९४५ [अंक २

युग-प्रतीक

"श्री अंचल"

किन संघर्षोंके भूखे तुम आज चितापर सेज बिछाते !

लघु जीवनकी प्यास भरी निःशेष अुमंगोंको दफनाकर
छातीके सूखे हाड़ोंमें मरण जमी ज्वाला धधकाकर,
प्रथम क्षिप्त वसुधाके, शोलोंसे जलता ब्रम्हाण्ड अुठाये
आँधी-सा हड़कम्प मचाने, तुम जैसे नवयुग ले आये,
अुगते दिनकरकी किरणों-सी श्वासोंमें जीवनकी धारा
जन जनके चीत्कारें सुनकर रुद्ध गया है कंठ तुम्हारा,
क्षण तूफानों-से बह चलते, क्षण मेघों-से भर-भर आते
किन संघर्षोंके भूखे तुम आज चितापर सेज बिछाते !

'सबका सुख' संदेश तुम्हारा 'सबकी मुक्ति' तुम्हारी वाणी
टूटें मानवकी जंजीरें, स्वप्न तुम्हारे में लोसानी,
'जगतीका सारा कटु प्रलाप तुम पी जानेके अभिलाषी
चैन कहाँ तुमको जीवन भर, तुमतो ज्वालागिरके वासी,
टूट गयी सीमा जिस सागरकी, ज्यों अुसका वेग संभाले
तुम बढ़ते ही जाते शोषणकी प्रतिहिंसासे मतवाले
कौन प्रलय से पहले तुम भूखोंका चिर वैषम्य मिटाते
किन संघर्षोंके भूखे तुम आज चितापर सेज बिछाते !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक राष्ट्रभाषा और दो लिपियाँ

: श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति :

महात्मा गान्धी भारतके हृदय-सम्राट हैं। वे पिछले २५ वर्षोंसे देशका नेतृत्व कर रहे हैं। अुनकी प्रमुख विशेषता यह है कि वे देशके केवल राजनीतिक नेता ही नहीं हैं; बल्कि वे देशके राष्ट्रनेता भी हैं। वे मातृभूमिको केवल राजनैतिक स्वाधीनता ही नहीं दिलाना चाहते; अुनका प्रयत्न है कि भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता और भारतीयताकी भी विजय हो। भारतीय संस्कृति अेवं सभ्यताकी सबसे बड़ी विशेषता अुसकी सहिष्णुता है। अिस सहिष्णुताको अपना कर ही भारतीय अपनी संस्कृति द्वारा दूसरोंके हृदयोंपर अपना सिक्का जमा सकते हैं। "**भारत छोड़ो**" प्रस्तावद्वारा अंग्रेजोंको भारतसे शासकके रूपमें बिदा होनेके लिये कहा गया था। वे भारतमें नागरिक व बन्धुके रूपमें रह सकते हैं। यह 'प्रस्ताव' भी भारतकी-परम्परागत सहिष्णुताकी नीतिका परिणाम है। भारतवर्षमें विदेशी सत्ता, विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृतिकी दासताको हटाकर ही हम वास्तवमें भारतीय संस्कृतिकी विजय कर सकेंगे। विदेशी राजनीतिक सत्ताके अूपर भारतीय संस्कृति तथा भारतीयताकी विजय प्राप्तिके लिये सबसे अधिक बाधा भारतीयोंको साम्प्रदायिक विरोध और आपसी मनमुटाव है। विदेशी राजनीतिक सत्ताको हटानेमें भी यही सबसे बड़ी बाधा है। और विदेशी सांस्कृतिक दासताको छोड़नेमें भी यही सबसे बड़ी बाधा है।

गांधीजीने अिस बाधाको दूर करनेके लिये हिन्दू-मुस्लिम अेकतापर बल दिया है। पाकिस्तानकी समस्या अंग्रेजोंने पैदा की है, हिन्दुओं व मुसलमानोंके तीव्र मतभेद देशमें तीसरी शक्तिकी हस्तीके कारण हैं। हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकताको मजबूत करनेके लिये तथा भारतकी राजनीतिक व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक विजयके लिये दोनों प्रमुख सम्प्रदायोंका अधिकाधिक मेल आवश्यक है। दोनों सम्प्रदायोंकी राजनीतिक अेकताके लिये दोनों जातियोंकी भाषा, लिपि, रहन, सहन, विचारों व संस्कृतिकी भी अेकता जरूरी है। म० गान्धीजी दूसरे रचनात्मक कामोंपर बल देते रहे हैं; अुसीके साथ वे देशकी अेक प्रमुख भाषा हिन्दुस्तानी बनानेपर भी बल देते रहे हैं। देशकी अेक राष्ट्रभाषा देशकी सांस्कृतिक व राजनीतिक अेकताके लिये आवश्यक है। यह राष्ट्रभाषा अैसी होनी चाहिये जिसमें न कड़ी फारसीके शब्द हों और न वह संस्कृतके ही कठिन शब्दोंसे लदी हुअी हो। जहाँतक अिस मौलिक सिद्धान्तको मानने न माननेका प्रश्न है, प्रत्येक समझदार राष्ट्रीय भारतीय अिससे सहमत होगा। परंतु अिसमें विवादकी बात दूसरी आती है। महात्मा गान्धीजीके अेक राष्ट्रभाषाके सिद्धान्तसे चाहे अुसे सरल हिन्दी, सरल अुर्दू या सरल हिन्दुस्तानीका नाम दिया जाय, सिद्धान्ततः तथा व्यावहारिक दृष्टिसे सहमत हुआ जा सकता है, परंतु अेक राष्ट्रभाषाके सिद्धान्तके स्वीकार करनेके साथ दो लिपियोंको अनिवार्य रूपसे सीखनेमें व्यावहारिक व सैद्धान्तिक कठीनअी है।

अुत्तरी भारतमें अेक राष्ट्रभाषा तथा दो लिपियोंका सिद्धांन्त कअी प्रान्तोंमें व्यावहारिक रूपसे प्रचलित हो सकता है; किन्तु अिस सिद्धान्तको दूसरी प्रान्तीय भाषाओं वाले प्रान्तोंकी जनतापर ज़बरदस्ती लादना कुछ कठिन अनुभव होता है। अगर यह बात केवल प्रचारकों व कार्यकर्ताओं-तक ही सीमित होती, तो भी अिसे स्वीकार करनेमें आपत्ति न थी, परन्तु अिसे सारी जनताके लिये सिखानेकी बात शक्ति, समय, धनके अपव्ययके साथ-साथ अव्यावहारिक भी है। जबतक देशमें विदेशी-प्रभुत्व स्थिर है तथा अंग्रेज़ी भाषाका कला-कौशल, इंजीनियरिंग, विविध विज्ञानोंमें तथा व्यावसायिक अुपयोग अवशिष्ट है, तबतक अिस विदेशी भाषाकी गुलामीको हटाना पूर्णतः अभीष्ट होते हुअे भी राजनीतिक दासता हटाना तुरन्त

CC-0. In Public Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभव नहीं है। अिसीके साथ प्रान्तीय भाषाओंके प्रचार व प्रसारका भी पूर्ण स्वाधीनता देनी होगी। अिन दो भाषाओंके व दो लिपियोंके सीखनेको अनिवार्य बनानेकी बात सर्वथा अव्यावहारिक है। अिन प्रान्तोंमें वही लिपि राष्ट्रभाषाके रूपमें प्रचलित रह सकेगी जो प्रान्तीय भाषाओंकी लिपियोंसे ज्यादह समीपता व सान्निध्य रखती होगी। अैसी लिपि देवनागरी ही है। अिसीके साथ सारे देशमें फारसी लिपिको अैच्छिक बनाया जा सकता है। अन्तमें अेक राष्ट्रभाषाके साथ अेक राष्ट्रलिपि ही जीवित रहेगी। अधिक सरल और वैज्ञानिक लिपि होनेसे नागरी लिपि ही अिस दिशामें सफल हो सकती है। महात्मा गांधीजी अेक राष्ट्रभाषा व दो राष्ट्रलिपियोंका तो परीक्षण कर रहे हैं, वह सफल भी होगा; तो भी अन्तमें अधिक सरल अेवं व्यावहारिक लिपि ही जीवित रहेगी।

अिस मासकी विभूतिः—

देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद

६१ वीं जन्म-जयन्ती है। सारा भारतवर्ष आपके लिये शुभकामनायें भेंट करता है—भारतमाताके सच्चे सपूत, सात्विक सेवक और तपस्वी राजेन्द्रप्रसाद दीर्घायु हों। विश्ववन्द्य बापू कहते हैं, राजेन्द्रप्रसाद सच्चे देशभक्त हैं। राजेन्द्रप्रसाद दीर्घायु हों। हमारे राष्ट्रपति मौलाना आज़ाद तहेदिलसे फरमाते हैं—भारतकी सेवाओंमें राजेन्द्रबाबूने अेक और बरस बिताया। मैं हृदयसे अुनके प्रति शुभेच्छाअें व्यक्त करता हूँ। भारत कोकिल श्रीमती सरोजिनी देवी कूकती हैं—निर्भय देशभक्ति, त्याग और सचाअीके बन्धनोंके कारण राजेन्द्रबाबू राष्ट्रके अत्यन्त प्रिय नेताओंमेंसे अेक हैं। अुनकी ६१ वीं वर्षगांठपर मेरी श्रद्धांजलि स्वीकृत हो। हमारे राष्ट्रके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहर कहते हैं—राजेन्द्रबाबूकी वर्षगांठपर मैं अपनी शुभेच्छाएं भेजता हूं। अिस ६१ वें अुत्सवका केवल व्यक्तिगत महत्व ही नहीं; क्योंकि राजेन्द्रबाबू बिहारके नेता और प्रतीक ही नहीं हैं, बल्कि वे स्वाधीनता संग्रामके सर्वोच्च नेताओंमेंसे अेक हैं। वे अेक बड़े नेता ही नहीं; भारतकी अुस सामान्य जनताके प्रतिनिधि भी हैं जिनके लिये अुन्होंने अितना परिश्रम किया है। बहुत कम नेता राजेन्द्र बाबूकी तरह प्रिय माने जाते हैं। अिसलिये अिस अवसरपर अुन्हें और बिहारकी जनताको राजेन्द्र सा देशरत्न नेता पानके सौभाग्यके लिये अपनी शुभ कामनाएं भेज रहा हूं और बधाअी देता हूँ।.....महाराष्ट्री नेता श्री शंकरराव देव कहते हैं—भारतमें राजेन्द्र बाबू जैसे रत्न बहुत कम हैं। नम्रता और ज्ञानके भांडारका जैसे सामंजस्य राजेन्द्र बाबूमें देखनेमें आता है, अन्यत्र वैसा देखनेको नहीं मिलता। मैं राजेन्द्र बाबूकी दीर्घायुकी कामना करता हूँ।

× × ×

सेवा और सौजन्यकी सौम्य मूर्ति देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसादजीको देखकर प्रत्येक भारतवासीका मस्तक अुनके आगे श्रद्धा पूर्वक नत हो जाता है। भारतीयोंके सुख-दुखके समान साथी बाबूजी बड़े ही महान निरभिमान नेता हैं। अुनका साहित्य, अितिहास और अन्तरराष्ट्रीय राजनीति तथा कानूनका पांडित्य बहुत गहरा है। पटना विश्वविद्यालयने अुन्हें डॉक्टर ऑफ लॉ की अुपाधि देकर अपनेको गौरवान्वित समझा। यों आप अेम० अे०, अेल० अेल० बी हैं। कलकत्ता हाअी कोर्टमें अूँचे दर्जेकी वकालत भी की। बड़े बड़े प्रतिभाशाली बंगाली लॉयर आपकी योग्यता और कानून-पांडित्यके कायल थे। और आपकी सत्यनिष्ठा, निस्वार्थता और निष्पक्षपातसे कायल होकर बंगालियोंने बाबू साहबको ही बिहारियों और बंगालियोंके बीच बढ़ते हुअे मनोमालिन्यको मिटानेके लिये मध्यस्थ निर्णायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुना था और अिसके लिये स्व० विज्ञानाचार्य सर जगदीशचंद्र बोसने अेक लाख रुपया राजेन्द्र बाबूके पास निधि रूपमें रख दिया था। बाबूजीके सत्प्रयत्नोंसे दोनों प्रांतोंके लोगोंमें सद्भावना स्थापित हुअी।

राष्ट्रसेवाके लिये अपनी वकालत छोड़ना सच्ची राष्ट्रीयताकी पहली कसौटी है। अुसे आपने छोड़ दिया-सो छोड़ दिया। गत सत्ताअीस-अठ्ठाअीस से आप पू० बापूजीके साथ हैं। गांधीजीकी नज़रोंमें राजेन्द्र बाबू ही सत्य अहिंसाके सच्चे साकार प्रतिनिधि हैं। अिनकी देशके लिये की गयी तपश्चर्या और साधना महान् है। आपमें गांधीवादी सर्वोदय सम्बन्धी अद्भुत रचनात्मक कार्यशक्ति 'परमाणुबम' की तरह केन्द्रित है और जिसका प्रभाव लाखों-करोड़ों पर सीधा पड़ता है।

१९३४ का भयानक भूकम्प बिहारके लिये साढ़ेसाती शनिकी दशाकी तरह अत्यन्त भयंकर होकर आया। सारे भारतमें त्राहि-त्राहि मच गयी। बिहार बहुत बुरी तरह नष्ट भ्रष्ट हो गया। बीमार शरीर, जेलसे कष्टमय जीवन बिताकर लौटे हुअे राजेन्द्र प्रसादने मृतप्राय बिहारको अपनी संजीवन शक्तिसे बचाया। १९३५ में बाबूजी हिन्दुस्थानके राष्ट्रपति बने। अुसवर्ष कांग्रेसका जलसा बंबअीमें बड़े समारोहके साथ आपकी सदारतमें मनाआ गआ। वर्षोंसे आप कांग्रेसकी अखंड और अविभाज्य बहुमुखी सेवा करते ही आ रहे हैं। राजेन्द्रबाबू अजातशत्रु हैं, नेता हैं, विद्वान् हैं, राजनीतिज्ञ हैं, सच्चे अर्थमें गान्धीवादी हैं और भारतमाताके विनम्र सेवक सपूत हैं और सबसे बढ़कर तो वे महामानव हैं। राष्ट्र और राष्ट्रभाषा राजेन्द्र बाबूके बहुत ऋणी हैं। अेक अीमान्दार अिन्सान हैं। देशरत्न पूज्य बाबू राजेन्द्र प्रसाद दीर्घायु हों, शतंजीवी हों, स्वस्थ हों और अपनी आँखोंसे अपने जीवन कालमें ही अपनी प्यारी मातृभूमि भारतको स्वतंत्र देखें!

ह० के० रा०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषाके अनन्य सेवक स्व० आगरकरजी

(संस्मरण और परिचय)

: श्री विनय मोहन शर्मा :

सन् १९२० की बात है। अुस समय मैं मिड्ल क्लासका विद्यार्थी था। मुझे "तुकबन्दी" लिखनेका शौक हो गया था और मैं खंडवासे निकलनेवाले 'सुबोध सिन्धु' में अुन तुकबन्दियोंको छपवाया भी करता था अेक दिन मेरे अध्यापक श्री करन्दीकरजीने--जो वर्धामें ही डिप्टीअिन्स्पेक्टर स्कूलके पदपर कअी वर्ष रह, अब स्वर्गवासी हो गये हैं--मुझसे कहा, "तुम अपनी रचनायें "कर्मवीर" में भेजा करो। वहाँ मेरे मित्र लोंढेजी हैं, सम्पादकीय विभागमें काम करते हैं। मैं अुन्हें पत्र लिख दूंगा। वे अुन्हें छाप दिया करेंगे।" मैं 'कर्मवीर' में अपनी रचनायें भेजने लगा। कभी छप जातीं, कभी नहीं। जब छपतीं तो समझता "लोंढेजीको हमारे मास्टर साहबकी सिफारिशी चिट्ठीकी याद है; जब न छपतीं तो समझता, "लोंढेजी मास्टर साहबकी चिट्ठी भूल गये।"

सन् १९२३ की मअीका महिना था। खंडवा ठहरा हुआ था अुस समय "मध्य भारत" नामक साप्ताहिक पत्र वहाँसे निकल रहा था। और अुसके सम्पादक थे श्री सिद्धनाथ माधव आगरकर। मैंने 'सुबोधसिन्धु' के सम्पादक श्री नारायणराव प्रयागी से मालूम किया कि 'मध्यभारत' के 'आगरकरजी, कर्मवीरके "लोंढेजी" हैं। मैं अुनसे मिलनेका विचार कर ही रहा था कि 'मध्यभारत, बन्द हो गया। और आगरकरजी विषम-ज्वर से बिमार हो अुज्जैन चले गये।

सन् १९२६ में खंडवा में मध्यप्रान्तीय विद्यार्थी-परिषदका अधिवेशन हुआ था। मैं अुस समय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयका छात्र था। परिषद्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कार्यकर्ताओंने मुझे लिखा था कि मैं स्व० लाला भगवानदीनजीको परिषद के सभापतित्वके लिये राजी कर लूं। लालाजीने थोड़ीसी "हाँ-ना" के बाद स्वीकृति दे दी और वे खंडवा आ गये। अुस सिलसिलेमें मैं खंडवा के अपने अेक मित्र श्रीनारायणरावजी के साथ 'कर्मवीर' कार्यालय में गया। जबलपुरका कर्मवीर संभवतः सन १९२४ में बन्द हो गया था और कुछ समयबाद स्व० माधवरावजी सप्रेने दौड़-धूप कर अुसकी योजना की व पं. मखनलालजी और स्व० आगरकरजी पर अुसका संचालन-भार सौंपकर वे स्वयं तटस्थ हो गये थे। वहाँ मैंने सर्व प्रथम श्री आगरकरजी के दर्शन किये। कुछ ही समय के वार्तालापने मेरे हृदय में अुनके प्रति श्रद्धाका भाव भर दिया जो आजतक अक्षुण्ण है। सन १९२८ में बी. अे. पास होनेपर जब मैं अुन्हींके साथ 'कर्मवीर' में काम करने लगा तब मुझे अुनके और भी निकट रहनेका अवसर मिला और सन १९३१ में 'स्वराज्य' साप्ताहिक निकलने पर तो मैं अुनके परिवार का अेक अंग ही बन गया। अुनकी सत्यवादिता आदर्शप्रियता, सादगी, निश्छलता और प्रसिद्धि-आदि सद्-वृत्तियों से वे मेरे मनमें अूँचे अुठते ही गये। अुनके सम्पर्कमें आनेवाले व्यक्ति अुनके अिन्हीं गुणोंके कारण अुनका सम्मान करते थे। पत्रकारके नाते अुन्होंने सदा पीड़ितोंका साथ दिया। अुन्होंने अपने विचारोंको हमेशा निर्भीकता से व्यक्त किया। स्वाभिमान अुनमें कूट कूट कर भरा था। आगरकरजीने संकटोंके बीच भी कभी न किसीके आगे हाथ फैलाया और न सिर झुकाया। राष्ट्रभाषा और राष्ट्र सेवा अुनका व्रत था। देशने जब अपने सैनिकोंका आह्वान किया, वे क्षेत्रमें आगे आये। सन १९१०के स्वदेशी-आन्दोलन के समय, जब देशमें क्रान्ति कारियोंका अुदय हो रहा था, आप ग्वालियर रियासतके अेक कस्बेमें अध्यापक थे। वहाँ वे अेक स्वदेशभक्त दलका संगठन कर चुके थे। वह 'दल' समयके अनुरूपही "क्रान्तिकारी" कार्यक्रमोंपर विचार किया करता था। क्योंकि अुस समय महात्मा गान्धीजीका प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। अतः देश भक्तोंके सामने 'हिंसा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा ही अपनी 'भक्ति' प्रदर्शित करनेका मार्ग खुला हुआ था। अुस समय खुफिया पुलिसकी छायासे आँखमिचौनी खेलता हुआ श्री दांडेकर नामक युवक ग्वालियर रियासत के आगर नामक स्थानमें पहुँचा तो पुलिसकी छायाके बावजूद हमारे आगरकरजीके दलने "मुजरिम" को "लापता" कर दिया। लेकिन जबसे गान्धीजीने देशकी राजनीतिका 'नेतृत्व' ग्रहण किया तबसे आप बराबर अुनके अहिंसात्मक आन्दोलनोंमें ही सक्रिय भाग लेते रहे; पर हिंसाके अपराधियोंको भी वे कम दर्जेका देशभक्त नहीं मानते थे और जब जब अुनपर संकट आता तो खुदको संकटमें डालकर वे अुनकी रक्षा करनेमें कभी नहीं झिझकते थे।

राष्ट्रभाषा हिन्दीके वे अनन्य भक्त थे। अुन्होंने अुसमें मराठी और अंग्रेज़ीकी कअी पुस्तकोंका अनुवाद ही नहीं किया, कअी मौलिक कहानियाँ, प्रहसन आदि भी लिखे। वे होनहार मराठी-भाषी तरुणोंसे 'हिन्दी' में लिखनेका आग्रह करते थे। अिस सम्बन्धमें श्री वसन्त पुराणिक (नागपुर विश्वविद्यालयके कुलपति जस्टिस पुराणिकके भतीजे) ने जबलपुरके 'शुभ चिन्तक'में आगरकरजीके संस्मरण लिखा है—"मैं जब सन १९३८ में स्कूल छोड़कर पं० आगरकरके पास बुरहानपुरसे खंडवा गया था तब मैंने अुन्हें राय के "मार्क्सवाद और हिन्दुस्तान" लेखका अपना मराठी भाषान्तर दिखाया। मैंने चाहा कि पंडितजीसे कुछ सुधार करा लूं और किसी मराठी पत्रमें भेज दूं। पर पंडितजीने कहा कि क्या तुम हिन्दीमें नहीं लिख सकते? अिसे यदि हिन्दीमें लिखोगे तो मैं "स्वराज्य" में प्रकाशित कर दूँगा। मैंने अुनके कहनेसे हिन्दीमें लिखनेका साहस किया और जब मेरा लेख 'स्वराज्य' में छपा तो मेरे हर्षका ठिकाना न रहा।" वे अपने सम्बन्धियों, मराठी-भाषा-भाषी मित्रों आदि सभीसे हिन्दीमें बोलते थे। 'भाषा' के रूपपर अुन्होंने 'स्वराज्य' के अेक अग्र लेखमें विशद चर्चा की थी। श्री किशोरीदासजी वाजपेयीने अपनी "लेखन-कला" में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुसे अुद्धृत किया है—"भाषाका क्षेत्र मनुष्यके परस्पर व्यवहारकी सुविधाका क्षेत्र है। साहित्यकी माधुरी सर्व साधारण तक पहुँच सकनेवाली भाषामें ही दी जानी चाहिये। वास्तविकता यह है कि मनुष्य-प्राणीने जबसे अपने भावोंको प्रकट करनेके लिये भाषाका प्रयोग करना सीखा, तभीसे अुसका यह प्रयत्न रहा है कि जितनी सादगी, सरलता और स्वाभाविक रीतिसे अपने विचार दूसरे मनुष्यके मस्तिष्कपर अंकित कर सकता है, करे। अिसी लिये प्रायः बहुत अूंची कक्षा के समझे जानेवाले कवि—कोविद सरल कल्पनाओंको सरल शब्दोंकी स्वाभाविक सरस्वतीमें जनसाधारणके सम्मुख रखते रहें हैं। अुनके हृदय में अेक टीस (वेदना) होती है, अेक तीव्रतम अिच्छा होती है; अेक प्रेरणा होती है जो अुन्हें सदैव प्रेरित करती रहती है कि दुनियाको कुछ कहें, कुछ समझायें, कुछ बतायें। यही साहित्य है, यही सभ्यता है; यही वह वस्तु है जो भाषा पर आरूढ़ हो जन-गण-मन तक पहुँचती है।"

कितने दुख—दर्दकी बात है, कि सिर्फ ५४ वर्षकी अल्प आयुमें ही राष्ट्र और राष्ट्रभाषाका अेक अनन्य निष्ठावान सेवक हमारे बीचसे अुठ गया। आज अुसके अभावमें हिन्दीकी "पत्रकारता" भी अपने को दरिद्र अनुभव कर रही है। जिस निर्भीकता, अीमानदारी और अेक निष्ठाका परिचय आपने अपने पत्रकार जीवनमें दिया अुसने हिन्दी-पत्रकार जगत्का मस्तक अूँचा ही अुठाया है। पं. बनारसीदासजी चतुर्वेदीके अिन शब्दोंमें तथ्य है जब वे लिखते हैं, कि स्व० आगरकरजी स्व० माधवरावजी सप्रे, पराड़कर गर्दे आदि की परम्परामें थे, जो राष्ट्रभाषा के लिये जिये खपे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश और पृथ्वी

(श्री वि. स. खांडेकर)

आकाश हमेशा पृथ्वीकी ओर तुच्छतासे देखा करता। अपना अरुणोदय कालीन छबीला सुनहरा रंग दिखाकर वह पृथ्वीसे पूछता—"यह प्रेमका रंग तुम्हारे पास कहां?"

विविध रंगोंसे रंगे हुअे सन्ध्याके बादलोंको दिखाकर वह कहता—"पृथ्वी! ये देखो मेरे खिलौने! हैं अैसे तुम्हारे पास?"

रातमें चमकनेवाले तारोंका आकाशको बहुत अधिक घमंड था। वह पृथ्वीका मज़ाक करते ताना मारता "तुम्हारे फूल आज खिलते हैं और कल मुरझा जाते हैं। पर ये मेरे फूल तो देखो, युग-युग से रातमें खिलते आ रहे हैं। कभी नहीं कुम्हलाते।"

× × ×

पृथ्वी भोली थी। आकाश तो केवल आभास मात्र है, यह अुसे मालूम न था। वह सोचती—सचमुच यह जैसा दीखता है वैसा ही होगा। मेरा पानी लूटकर यह बादल बनाता है, सुन्दर खिलौने बनाता है। परन्तु यह मुझसे अुधार लिया हुआ पानी कृतघ्नतासे गालियोंकी गड़गड़ाहट करता है और साथही बिजलीका चाबुक अुठाता है। अिसकी अुसे कल्पना भी नहीं थी। अुसे लगता पानी देकर आकाश मुझपर बहुत बड़ा अेहसान करता है।

सब तारोंको आलसी, सुखस्वार्थी व कृतघ्न आकाशपर गुस्सा आया। वे कहने लगे—"रंगबिरंगे बादलोंकी सुन्दर पोशाक और लाल रंग की अुषा—मदिरा, अिनके सिवा दूसरा कुछ सूझता ही नहीं अिसे! ज़रा पृथ्वीको तो देखो। पेट में आग जलते हुअे भी चाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना पानी वह आकाशको देती है। हृदयको बारबार धक्के लगने पर भी अपनी पीठपर बैठे हुअे प्राणियोंको वह माँकी तरह प्रेम--प्यारसे सँभालती है। अैसी अच्छी पृथ्वीको छोड़ हमारे लिये आकाशसे चिपके रहनेमें क्या रक्खा है। चलो, आकाशके तारे बने रहनेसे पृथ्वीपर पत्थर बनकर रहना बेहतर है!

अेक तारा टूटा। अुल्का गिरी।
दूसरा तारा टूटा। फिर अुल्का गिरी।

शीघ्र ही सारे तारे टूट टूटकर गिरने लगे। धूलमें मिलते हुअे भी वे हँस रहे थे। सब तारे टूटकर गिर पड़े। आकाशका सौन्दर्य लुप्त हो गया। वह पागल हो अुठा। पागलपनमें वह भी नीचे कूद पड़ा।

आकाश टूट पड़ा!

आकाश टूट पड़ा अिसलिये किसीका भी नुकसान न हुआ। किन्तु पृथ्वी और स्वर्ग-दोनोंके बीचका परदा अपने आप अुठ गया।

यह क्रान्ति किसने की--?
अुस पहली अुल्काने!×

× श्री खांडेकरजीकी अेक मराठी लघु कथासे। अनुवादिका-कु. भारती शर्मा, 'राष्ट्रभाषा रत्न'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्लीका लाल-किला

(ह. के. श.)

नवम्बर महीनेकी ५ वीं तारीख से चालीस करोड़ भारतवासियोंकी आँखें अेकसाथ दिल्लीके लाल-किलेपर केन्द्रित हैं। अुस दिन दुनियाको चकित कर देनेवाला अेक बहुत बड़ा सनसनी खेज जंगी मुकद्दमा "आज़ाद हिन्द फौज़ के सिपहसालारोंपर ब्रिटिश-बादशाहके विरुद्ध युद्ध छेड़ने और सलतनतके खिलाफ बगावतका झंडा खड़ा करनेके जुर्ममें अिस लाल किलेमें शुरू हुआ।

दिल्लीके लाल किलेमें ही यह मुकद्दमा क्यों शुरू हुआ? मनमें प्रश्नका अुठना स्वाभाविक है। कहीं भी, कराची, कलकत्ता, कानपुर या लाहौर-पेशावर में या रंगून ही में दस-पांच डरावने डेरे-तम्बू खड़े करके यह तमाशा दुनियांको बड़ी आसानीसे दिखाया जा सकता था।

दिल्लीके लाल किलेमें ही अिस मुकद्दमेके चलानेमें अेक विशिष्टता है। अिसे हम ख्यालमें रखें। दिल्ली के अिस लाल किलेको आजसे कोअी ३०० बरस पहले हिन्दुस्थानके महान बादशाह शाहजहांने बनवाया था। सन् १८५७ में समूचे हिन्दमें ग़दर हुआ। हिन्दुस्थान ने अेकबार फिरसे पूरी तरह आज़ाद हो जानेके लिये अपना दृढ़ निश्चय किया। "मैं ही हिन्दुस्थानका बाक़ायदा बादशाह हूं" अिस तरहकी घोषणा करनेवाले बहादुरशाह पर विदेशी व्यापारी अंग्रेज़ोंने ग़दर मचाने और यूरोपियनोंकी हत्यायें करने-करानेका अिलजाम लगाकर अिसी लाल किलेमें मुकद्दमा चलाया था और फौज़ी न्यायाधीशोंने दिल्लीके अन्तिम मुगलसम्राट, शाहन्शाह शाहजहांकी औलाद, बहादुरशाह को विद्रोही बताकर ज़िन्दगी भरके लिये कठोर कारकी सज़ा दी थी। मानों अंग्रेज सरकार अुसकी और अुसके सम्राट के विरुद्ध जंग छेड़नेवालाको फौज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालतके जरिये सज़ा दिलवानेको ही अिस लाल किलेकी अुपयोग करती है। अैसे अपराधियोंको आजीवन कठोर क़ैद का दण्ड दिया जाता है, यह भी अिस लाल किलेके नाम परसे साफ़ साफ़ झलकता है।

ज़रा ध्यान दें। अिस 'आज़ाद हिन्द सेना' के सरदारोंमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख, हिन्दुस्तान की अिन तीनों ज़बरदस्त कौमोंका मेल है। हिन्दुस्तानके तमाम हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंकी समान रूपसे अेकसी शुभकामना अुनपर केन्द्रित हो गयी है। आज वे न हिन्दू हैं, न मुसलमान हैं और न सिक्ख हैं —किन्तु सच्चे आज़ाद अेकमात्र हिन्दुस्थानी हैं, प्रेमनाथ, शाहनवाज़ और ढिल्लन–ये अुनके शान–शोहरत वाले नाम हैं। अिन नामोंमें जादू है, आकर्षण है। हिमालयसे कन्या-कुमारी तक और कराचीसे गौहाटी तक सारे हिन्दुस्थानमें, नवम्बरकी ५ से १२ तक हिन्दुस्थानके करोड़ों नौजवानोंने "आज़ाद हिन्द सप्ताह" मनाया जिसके जलसों व जुलूसोंमें तीन सालके बच्चोंसे लेकर साठ-सत्तरकी अुम्रके बड़े-बूढ़ोंने हिस्सा लिया। अेक छोरसे दूसरे छोर तक आज़ादीकी बिजलीकी लहरसी दौड़ गयी। अपने मादरे वतनके अिन वीर सपूतोंको बचानेके लिये अेक ज़बरदस्त संगठन भी यहाँ हो चुका है। यह संगठन हम भारतीयोंकी सम्पूर्ण स्वातंत्र्य-भावनाको और हमारे दृढ़ निश्चयोंको साफ़ साफ़ जाहिर कर रहा है।

आखिर यह "आज़ाद हिन्द-फौज़" है क्या बला? अिस फौज़से अंग्रेज क्यों अितना डरते हैं! दुनिया हैरत–हैरान है कि अिटली–जर्मनी और जापान को नेस्तनाबूदकर विजयी बने हुअे बहादुर अंग्रेज़ क्यों अितने परेशान हैं–अिस 'आज़ाद हिन्द फौज़' से! बात यह है कि जापान के साथ अंग्रेजोंकी लड़ाअी छिड़नेसे बहुत पहले––बहुत वर्षों पहले–सुदूर पूर्वी देशों, चीन, जापान और अुसके आसपास के छोटे–बड़े टापुओंमें भारतीय बसते हैं। वहां अुनकी राष्ट्रीय संस्थायें हैं अुनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्वतंत्र संगठन हैं जो भारतकी आज़ादीके लिये तन-मन-धनसे प्रयत्नशील रहे हैं। भारतवर्षके लिये सम्पूर्ण स्वतंत्रताका अिन संगठनोंने हमेशा समर्थन किया है और प्रचार किया है। रासबिहारी बोस अिन संस्थाओं और संगठनोंके अेक शक्तिशाली प्रमुख अगुआ रहे हैं।

१९४१ के दिसम्बरमें अेक अनहोनी अैसी घटना घटी जिसकी कल्पना भी नहीं थी। जापानका जबर्दस्त हमला और ज़ोरदार दबाव बढ़ता ही गया और अुस हौवेसे बेतहाशा घबड़ाकर अंग्रेज़ बेचारे अपनी घर-गृहस्थी लेकर हिन्दुस्तानकी तरफ़ भाग आये। ब्रिटिश सल्तनतका अजेय, अटल, अड्डा सिंगापुर गिरा। सिंगापुरका फौलादी सीमेंट ख़ाक हो गया। अेक अेक करके पूर्वी प्रदेशोंमें अंग्रेज़ निस्तेज होकर परास्त हुअे। सिंगापुरसे रंगून तकका सारा प्रदेश जापानियोंने अंग्रेजोंसे खाली करा लिया। जावा, सुमात्रा, मलाया, सिंगापुर आदि सब अेक अेककर जापानियोंके हाथमें चले गये। अंग्रेज वहां बसनेवाले अपनी रियाया हिन्दुस्थानियोंको और अपनी हिन्दुस्थानी फौजोंको वहीं असहाय अरक्षित हालतमें छोड़कर चले आये। वहां १४ वीं पंजाबी रेजिमेंटमें शाहनवाज और ढिल्लन मौजूद थे। दुश्मन जापानियोंने अिनको पकड़ लिया। बेचारे असहाय हिन्दुस्थानी जपानी सैनिक शक्तिका मुकाबला करनेमें असमर्थ हो गये। मलायाके हिन्दुस्थानियोंको जापानियोंसे बचानेके लिये शाहनवाज और अुसके दोस्त साथी सिक्ख सरदार ढिल्लन, दोनोंने कसम खाकर कमर कसी। अुनकी वह बहादुरान हिम्मत और कुर्बानी और बचावकी कोशिशें ही आज दुनियाके सामने "आज़ाद हिन्द फौज" की सूरतमें आकर खड़ी है।

विदेशियोंकी पराधीनताको तोड़, मुकम्मिल (सम्पूर्ण) आज़ादी हासिल करना ही अपना मंजिलेमक़सद बनाकर सुदूर पूर्वी देशोंके निवासी समस्त भारतीयोंने मिलकर "आज़ाद हिन्द समिति" की स्थापना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अुसमें वे शामिल हुअे। सारे हिन्दुस्थान को अखंड, अविभाज्य और आज़ाद रखना अपना अेकमात्र लक्ष्य अुन्होंने रखा। 'समिति' के अुद्देश्योंमें बिना किसी भेद-भाव के दूरदर्शिता, व्यापकता और राष्ट्रीय दृष्टिकोण की अुदारता को ही प्रधानता दी गयी। हिन्दुस्थानकी 'अिन्डियन नेशनल काँग्रेस'-राष्ट्रीय महासभा-के अनुकूल ही समितिने अपनी स्कीम बनायी। अुसी स्कीम और क्रीडकी बुनियाद को मद्देनज़र रखकर 'आज़ाद हिन्द फौज़' का संगठन किया गया। जापानियों के हमले और दबावको रोककर हिन्दुस्थानकी हिफ़ाज़त करनेको ही अिस फौज़ने मोर्चा तैयार किया।

देश गौरव 'नेताजी' श्री सुभाषचंद्र बोस अिस 'समिति' के मार्ग-दर्शक बने। नेताजीकी संगठन-शक्ति, सहयोग और साहसने "आजाद हिन्द फौज़" में चार चाँद लगा दिये। 'झांसीकी रानीका दल' अेक बलशाली सैन्य दल संगठित हुआ। वीर-नारी केप्टन लक्ष्मी अिस दलकी संचालिका बनी। अिस दलमें ७०-८० इज़ारके लगभग सैनिक हैं। अुन्हें अच्छी तरह पूरी फौजी तालीम दी गयी है। १९४३ में यह आज़ाद हिन्द फौज़ जापानी दबावको आगे बढ़ता हुआ रोककर, मार्चमें हिंदुस्थानकी सीमा-पर आ डटी थी। कोहिमा और अिम्फाल अिसके अन्दर आ गये थे। किन्तु हवाई ताक़तका पूरा बल सामर्थ्य साथमें न होनेसे अिस दलको पीछे हट जाना पड़ा। १९४५ में जापानने रंगून खाली कर दिया। जापानी दुश्मन अपनी दुम दबाकर वहांसे नौ-दो ग्यारह हुअे। जापानियोंके चले जानेके बाद अिस "आज़ाद हिन्द फौज" ने ही रंगूनकी रक्षा की। वहां ज्यादा खूनखराबी; मारकाट और लूटपाट न हो सकी। अन्तमें साथी मित्र राष्ट्रोंने अेड़ी-चोटीका पसीना अेक कर छल-बलसे रंगूनपर कब्जा कर लिया।

हिन्दुस्थानके अिन वीर पुत्रोंके साहसपूर्ण कामकी 'आज़ाद-हिन्द फौज़' की यह नयी कहानी है। ये वीर स्वाभिमानी सपूत स्वप्नमें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानी दुश्मनोंके हाथकी कठपुतली नहीं बने। अपनी प्यारी मातृभूमिकी आज़ादीके लिये ही स्वतंत्रता पूर्वक लड़नेवाले ये वीर-बहादुर हैं। आगे चलकर स्वतंत्र भारतका अितिहास लिखनेवाले स्वनामधन्य लेखक अिन 'आज़ाद हिन्द फौज़' के वीर हिन्द-पुत्रोंका नाम अितिहासके पृष्ठोंपर स्वर्णाक्षरोंमें लिखेंगे। आज अिस 'आज़ाद हिन्द फौज' के प्रति अपना आदर, अभिमान और प्यार बतलाकर भारतीयोंने दुनियाको 'सम्पूर्ण स्वतन्त्रता' का अपना दृढ़ निश्चय जाहिर कर दिया है। होनेवाला फैसला ही भारत के भाग्यका सूचक होगा।

राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें

श्री रामचन्द्र त्रिवेदी

श्री शिवदानसिंहजी चौहानका "चरैवेति, चरैवेति" नामक लेख 'राष्ट्रभाषा' के गत अक्टूबर अंकमें पढ़ा। आपने अिस लेखमें अुठाये गये प्रश्नोंपर पाठकोंके विचार माँगे हैं। मैं 'राष्ट्रभाषा' के अिस अंकमें अपने विचार दे रहा हूँ।

अुपर्युक्त लेखमें श्री शिवदानसिंहजीने राष्ट्रभाषा (पत्र नहीं, भाषा) के सम्बन्धमें राजनैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे विचार करनेका आग्रह किया है और प्रश्न रखा है— 'हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है और देवनागरी ही राष्ट्रलिपि है— जब अिस तरहका नारा दिया जाता है तो वह अेक राष्ट्रभाषा प्रचारकके हृदयमें जो अुत्साह और कर्मकी भावनाअें जगाता है, वैसी भावनाअें क्या भारतवर्षके प्रत्येक मनुष्यके हृदयमें जगती है?' अिसका स्पष्ट अुत्तर है—'नहीं'। क्योंकि भारतवर्षका 'प्रत्येक मनुष्य' तो यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी नहीं जानता कि राष्ट्रभाषा क्या चीज़ है, किस चिड़िया का नाम है! हमारे नारे तो हमारे ही कानोंसे टकरा कर रह जाते हैं। जब जवाहरलालजी नारा लगाते हैं, 'दिल्ली चलो' तो वह आवाज तो आप और मुझ तक ही रह जाती है। खेतमें हल चलानेवाले किसान, अँधेरी कोठरीमें सड़ते हुये मज़दूर तक नहीं पहुँचती। क्या हिन्दुस्तानके प्रत्येक मनुष्यके पास राष्ट्रभाषा पर विचार करनेका समय और योग्यता है? अुसके सामने तो भूखे, नंगे, बिलबिलाते हुअे बच्चे रहते हैं, अुनको जिलाना और खुद जीना-अिसीमें अुसकी सारी जीवन शक्ति खर्च हो जाती है। और यह तो सर्वविदित है कि हिन्दुस्तानके कम से कम ८५ प्रतिशत लोग बेपढ़े-लिखे हैं। अिसलिअे राष्ट्रभाषाका नारा लगानेके पहले हमें लोगोंको साक्षर करना हैं, अुन्हें सिखाना है कि 'र'में 'आ' की मात्रा मिलाने से 'रा' और पेटचीरे आधे 'प' से 'ष' और कालिदास के 'अुट्' का 'ट्' रख देनेसे राष्ट्र बनता है और राष्ट्रका मतलब होता है विशिष्ट सभ्यता, संस्कृति और आदर्श रखनेवाला अेक देश। अिसके बाद जब हम राष्ट्रभाषाका नारा लगायेंगे तो लोगोंकी आँखोंमें ज्वाला होगी, अुत्साहकी चमक होगी।

श्री चौहानजीका दूसरा प्रश्न चौंका देनेवाला है, यदि अधिकांश बलूची, अफगानी, सिंधी, कश्मीरी, पश्चिमी, पंजाबी, आसामी, पूर्वी बंगाली, आदि जातियों में यह भावना (अुत्साह और कर्मकी) नहीं जागती तो अिसका कारण क्या है? श्री चौहानजी शायद यह मानते हैं कि चूँकि ये लोग सिंधी, पंजाबी, आसामी आदि हैं अिस लिये 'राष्ट्रभाषा—हिन्दीका' नारा लगने पर ये अुत्साहोन्मत्त और प्रफुल्लित नहीं होते। किन्तु यह असली कारण नहीं है। असली कारण तो है अिन लोगोंका राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें अज्ञान और अंधकार।

किन्तु अिस प्रश्न में चौंका देनेवाली बात तो यह है कि बलूची, अफगानी, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, आसामी, बंगाली आदि जातियाँ हैं। मैं तो यह जानता हूँ कि ये भिन्न भिन्न जातियाँ नहीं हैं; अिनमें भी हिन्दू,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान, सिख आदि ही रहते हैं ।× भिन्न भिन्न प्रान्तों या भूप्रदेशोंकी सीमायें भिन्न भिन्न जातियोंकी सीमायें नहीं हैं ।

हिन्दी या किसी भी नाम से पुकारी जानेवाली राष्ट्रभाषा प्रान्तोंपर बोझ नहीं बनेगी । राष्ट्रभाषा का निर्माण करनेमें प्रत्येक प्रान्तीय भाषाका हाथ होगा, अब भी है । जो 'सबकी बोली' होगी वही राष्ट्रभाषा होगी । 'प्रचार और राजनैतिक दबावका प्रयोग' कर कोअी खास भाषा सबपर लादी नहीं जायगी । राष्ट्रभाषा तो जरूरतकी चीज़ है, सिंधीको भी अुसे सीखनेकी गरज होगी और बंगालीको भी । राष्ट्रभाषा सीखने मात्रसे प्रान्तवाला अपनी प्रान्तीय भाषा भूल नहीं जायगा । राष्ट्रभाषा और मातृभाषामें विरोध है कहाँ ? जब कोअी भारतमाताकी सेवाका व्रत लेता है तो क्या घरकी माँको घरसे बाहर कर देता है ?

हमें हमेशा याद रखना चाहिये कि हम परमाणु बमके युगमें रह रहे हैं । प्रान्त-प्रान्तमें, प्रान्त और राष्ट्रमें, हिन्दू–मुसलमानमें भेदकी दीवारें खड़ी करना किसी हालतमें आत्मघातसे कम न होगा ।

और फिर पाकिस्तान तो पढ़े-लिखोंका हौवा है । अलीगढ़ अिसका गढ़ है और शहरोंमें फैली हुअी यह अेक हवा है । अिसकी कोई बुनियाद नहीं । अैसे गाँवोंमें जहाँ रेल, मोटर, ताँगा आदि फैशनेबल सवारियोंके आने-जानेकी सुविधा न हो, शायद ही अिस हौवेका नाम सुना गया हो । यह अखबार पढ़नेवाली जनताके पीछे लगा हुआ भूत है ।

अिसलिअे पाकिस्तान-हिन्दुस्थानकी बात हमें यहीं छोड़ देनी चाहिअे । हमारा आपद् धर्म तो यह है कि हम हिन्दीके अिच्छुकोंमें हिन्दीका प्रचार करें और अुर्दू चाहनेवालोंमें अुर्दूका प्रचार करें । धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक तीनों दृष्टिसे यही अुचित होगा ।

× 'जाति' का निर्णय धर्म से नहीं होता बल्कि नस्ल से होता है । —सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तो हमें हिन्दी, हिन्दुस्तानी या अुर्दू तीनोंमें से किसी अेक का आग्रह छोड़कर तीनोंको बढनें देना चाहिये। राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन होनेके लिअे किसी अेकको चुननेकी आज अितनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि जनताको अिनमें से किसी अेकका भी ज्ञान कराना।

हम अब भी चेतें और पहली बातको पहला स्थान दें। बैलके आगे गाड़ी रखनेसे गाड़ी नहीं चलेगी।

परीक्षोपयोगी :

'परिचय' के कुछ पवित्र पात्र

: श्री जेठालाल जोशी, विशारद :

नाटक–साहित्यमें 'रक्षाबन्धन', अेक अुच्च श्रेणीकी कलाकृति है। अुसमें नाटककारने जिन पात्रोंकी सृष्टिकी है वे वास्तविक जगत् के पात्रोंसे कहीं महान् और चिरस्थायी हैं। 'देश ही सर्वोपरि' है अिस भावनाको लेकर जिन्होंने अपना जीवन त्यागमय, सेवामय और समर्पणमय बनाया और अपने आदर्शके लिये प्राणोंका रत्तीभर भी मोह न रक्खा, अुनमेंसे अेक भील राजकुमारी **श्यामा** है। महाराणा रत्नसिंह के कठोर अनुशासन के कारण अिस लड़कीका जीवन हमेशाके लिअे अन्धकारमय हो गया। मेवाड़के प्रति अुसके मनमें काली नागिनकी तरह प्रतिहिंसाकी फुंकार बारबार अुठनेपर भी, श्यामा अेक चारणीद्वारा 'देशसर्वोपरि' का सबक सीख कर अपने मेवाड़के लिये जीवन और जागृतिका सन्देश लेकर, सर्पिणीका चोला छोड़ कल्याणमयी बन जाती है। श्यामा घर-घर घूमकर मेवाड़पर छाये हुये विपत्तिके बादलोंको हटानेकी जी–जानसे कोशिश करती है। आप स्वयंसेविका बनकर अनगिनत वीरोंको मेवाड़की रक्षाके लिये जंगमें जानेके लिये तैयार करती है। अपने जीवनके अेकमात्र आधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विजय' को युद्ध-क्षेत्रमें भेजकर देशसेवाका अुज्ज्वल आदर्श हमारे सामने रखती है। श्यामा 'जौहरव्रत' में महारानी कर्मवतीके साथ शरीक तो होती है, किन्तु वहाँकी क्षत्रिय बालाओंके अुच्च वंशाभिमानके कारण, अुसे अुस रूढ़िगत जौहरव्रतमें सक्रिय भाग लेनेमें जब रुकावट आती है तो वह दूसरा ही जौहरव्रत लेती है। वह अेक ही वारमें अग्नि-कुंडमें गिरकर अपने दुःखोंका अन्त नहीं करना चाहती। वह अपने देशके लोगोंको दाने-दानेके लिये तरसते हुअे देखकर अुनके दुःखकी ज्वालामें रात-दिन तिल तिल जलना ही अपना पवित्र 'जौहरव्रत' मानती है। वह अपने बेटे विजयको बिदा करते समय अपने दृढ़ निश्चयकी सूचना देती है कि जहां वीरोंका कार्य पूरा होता वहांसे हम जैसा तुच्छ देश-सेवकोंका काम शुरू होता है! वह भूखे मेवाड़की अन्नपूर्णा बनना चाहती है। वह मेवाड़को भूखके विरुद्ध, रोगके विरुद्ध और दीनताके विरुद्ध युद्ध ठानना चाहती है और सर्वनाशके बाद बचे हुओंको नवजीवन देकर अेक नवीन मेवाड़का निर्माण करना चाहती है। सच है, अैसी तपस्विनी पवित्र देशसेविकायें ही गिरते हुअे देश और समाजका भाण करती हैं।

हुमायूं 'अिन्सानियत' का—'मनुष्यता' का सच्चा प्रतिनिधि है। सल्तनतके सिंहासनपर रौब-दाबसे बैठनेकी अपेक्षा अपनी अेक धर्म-बहनके हृदयमें स्थान पानेमें कहीं ज्यादा सुख अनुभव करता है और अिसीमें वह अपना अहोभाग्य (खुशकिस्मती) मानता है। वह अेक पक्का मुसलमान है; लेकिन अुसके दिलमें मज़हबी तास्सूब नाम मात्रको नहीं। जब अेक हिन्दू नारी अुसे अपना धर्मबन्धु मानकर राखी भेजती है तो वह अपना सब कुछ भूलकर, अपनी धर्म-बहिन कर्मवतीके रक्षार्थ, अुस राखीका ऋण चुकाने ज़बर्दस्त दुश्मन शेरशाहको आगे बढ़नेसे रोकनेके लिअे मेवाड़की ओर अग्रसर होता है। मेवाड़के दूतके द्वारा वह संदेश भेजता है "हुमायूं तुम्हारी माँके पेटसे पैदा नहीं है तो क्या हुआ, वह तुम्हारे सगे भाअीसे बढ़कर है। मेवाड़की अिज्ज़त अुसकी अिज्ज़त है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुमायूं के विचारमें सल्तनत भले ही चली जाअे, परन्तु वह दुनियासे यह कहते हुअे नहीं सुनना चाहता कि मुसलमान अपनी 'बहिन' की अिज़्ज़त करना नहीं जानते। वह चितौड़की रक्षाके लिअे बहुत बेचैन हो जाता है।

कर्मवती:–'रक्षाबन्धन' की आत्मा है। शरणागतकी रक्षामें, जाति-धर्मकी संकीर्ण साम्प्रदायिकताको ठुकराकर वह समस्त मेवाड़को बलि देनेको तैयार हो जाती है। अपने पतिके दुश्मनके बेटेको वह सगा भाअी मानकर 'राखी' भेजती है। वह प्रेरणा, त्याग और दृढ़ निश्चयकी मूर्ति है। वह समस्त 'रक्षाबन्धन' तारककी सूत्र-संचालिका है। अपनी १२००० वीर क्षत्रियाणी सखियोंके साथ जौहरकी आगमें निर्भय–निःसंशय हो अपनी वीर बलि अुसने दे दी–सिद्धान्त–स्वातंत्र्य के लिये। हुमायूंने अुसकी अमर चिताकी राख अपने सिरपर श्रद्धा–भक्ति से चढ़ाअी। हम भी अिसदेवी को चरण–रजको मस्तकपर रख नमन करें।

लक्ष्मण:–श्री गुप्तजीने 'पंचवटी' की रचना लक्ष्मण के चरित्रकी अुज्वलता को दिखानेके लिये ही की है। आदर्श भ्रातृप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग और सेवापरायणता यही लक्ष्मणका अुज्वल शील है। अुनके सामने अेक मायाविनी सुन्दरीने आकर अुन्हें आदर्शसे भ्रष्ट करना चाहा, पतनकी सारी सामग्री प्रस्तुत है, मध्यरात्रिके अेकान्तमें, ध्यानस्थ लक्ष्मण के सामने अेक सुन्दरी नवयौवना प्रेम–भिक्षा माँगने आयी, वह ज़रा भी विचलित नहीं होते। हिमालयकी तरह अचल रहे। 'पंचवटी' के लक्ष्मण प्रकृति-प्रेमी, स्वावलंबनकी मूर्ति, भाभीके साथ थोड़ासा मज़ाक करनेवाले देवरके रूपमें चित्रित किये गये हैं। भ्राता और भाभीके 'आज्ञा-पालन' धर्मको अुन्होंने खूब निबाहा और अिसीलिये लक्ष्मण जैसा अपना सच्चा संगी–साथी पाकर राम और सीताका वनवास राजमहलों के निवास से भी बढ़ चढ़कर सुखी साबित हुआ।

'परिचय' के परीक्षार्थी पात्रोंका परिचय स्वयं तैयार करें। यहां तो हमने बानगी रख दी है। अपने हिन्दी शिक्षकों को भी दिखाकर ठीक करालें, तो अुनको लाभ होगा। लेखन में भाषा व्याकरण–शुद्ध और सही मानेमें प्रयुक्त होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मन्त्रीकी ओरसे

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी वार्षिक बैठकः

२६ नवम्बरको श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टण्डनकी अध्यक्षतामें समितिकी वार्षिक बैठक हो गअी जो कार्य्याधिक्यके कारण दो दिनों तक जारी रही। समितिने आगामी वर्षके लिये जो निश्चय किये हैं वे केन्द्रीय-कार्यालय तथा प्रचार कार्यके संगठनकी दृष्टिसे बड़े ही महत्व पूर्ण हैं। अफसोस अिस बातका रहा कि २६ नवम्बर ही केन्द्रीय असैम्बलीके चुनावका दिन होनेंसे समितिके दूरसे आनेवाले कुछ सदस्य अुस दिन अुपस्थित न हो सके। कार्यालयसे समितिकी कार्रवाअी सभी सदस्योंके पास पहुँच गअी होगी वा निकट भविष्यमें पहुँच जायगी।

हम श्रद्धेय टण्डनजी के अितरिक्त अपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्री पंडित मौलिचन्द्र शर्मा के विशेष कृतज्ञ हैं कि अुन्होंने अिस वर्षके बजटका ठीक ठीक मेल बैठानेमें बड़ी ही सहायता की।

राष्ट्रभाषा भवनका राष्ट्रपताकाभिवन्दनः

पूर्व निश्चयके अनुसार १५ नवम्बर १९४५ को रा. भा. प्र. समितिके लिये खरीदी गअी नअी भूमिमें राष्ट्रभाषा भवनका राष्ट्रपताकाभिवन्दन किया गया। तार पाकर श्रद्धेय टण्टनजीकी प्रेरणासे प्रसिद्ध अिन्जीनीयर श्री नन्दकिशोर अग्रवालने प्रयागसे वर्धा आनेका कष्ट किया था। अुन्होंने और स्थानीय अिंजीनीयर श्री मामासाहेब घैसास ने मिलकर जमीन और अुसकी स्थितिका विचार कर भवनके बारेमें तमाम आवश्यक ब्योरेका निश्चय किया। शामको चार बजे भवनका राष्ट्रपताकाभिवादन अर्थात् शिलान्यास होना तय था। कार्य समितिकी बैठकके लिये आये हुअे पंडित शुकदेवप्रसाद तिवारी तथा पंडित हृषीकेश शर्मा भी अिस शुभ अवसर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुपस्थित थे। पंडित हृषीकेशजी तो अेक प्रकार से अिस यज्ञके पुरोहित ही रहे। स्थानीय सज्जनोंमें श्री. चिरञ्जीलालजी तथा श्री रांकाजीको नहीं भूला जा सकता जिनके सहयोगसे समितिको नअी भूमि मिली। श्री श्रीरामजीकी 'गोरक्षिणी' में तो समितिका वर्तमान कार्यालय ही है। समितिके सभी कार्यकर्ताओं और हितचिन्तकोंकी अुपस्थितिमें राष्ट्रीय-झण्डेकी वन्दनाकर राष्ट्रभाषा-भवन निर्माणके कार्य्यका श्रीगणेश कर दिया गया।

हमारे मित्र श्री. मगनचन्द्र वेदीजीकी देखरेखमें यह सब कार्य सम्पन्न होगा। आशा है समितिके हितचिन्तक अुन्हें पूरा सहयोग देंगे।

बङ्गाल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिः

सभी प्रान्तोंमें राष्ट्रभाषा प्रचारके कार्यमें बंगाल सबसे पीछे रहा है—अिसका अेक कारण तो बंगालका 'बंगला'का प्रेम और राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रति आशंकाकी दृष्टि भी हो सकता है, लेकिन दूसरा और बड़ा कारण राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य करनेके लिये किसी संगठित प्रान्तीय संस्थाका अभाव ही रहा है। कलकत्तेमें 'पूर्व भारत राष्ट्रभाषा प्रचार, समिति' नामकी संस्था रही सही, किन्तु अुसका मुख्य कार्य अुत्कल और असमको थोड़ी आर्थिक सहायता देना भर रहा। अुस संस्थाको बंगाल के बङ्गला भाषा-भाषियोंका सहयोग नाम-मात्र का ही प्राप्त था। अब बंगालमें राष्ट्रभाषा प्रचारके कार्यको अग्रसर करनेके लिये राष्ट्रभाषा प्रेमियों की सलाहसे 'बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' संगठित करनेका प्रयत्न आरम्भ हुआ है। हमें आशा है कि यह समिति अपने कार्यमें बहुत सफल होगी।

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षा-समितिकी अगली बैठक कलकत्तेमें ही करनेका विचार हो रहा है।

आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक--परिचय

गांधीजीके साथ सात दिनः—ले० लुअीफिशर-अनुवादक पं० सुदर्शन; प्रकाशक: वेरा अेण्ड कम्पनी, पब्लिशर्स लिमिटेड. राअुण्ड बिल्डिंग कालबादेवी रोड, बम्बअी २. पृष्ठ संख्या १२५, मूल्य २); प्रस्तुत पुस्तक लुअीफिशरकी अंग्रेजी पुस्तकका अनुवाद है। गांधीजीके साथ रह लेखकने अुन्हें कैसा पाया-मुख्यतः यही बात पुस्तकमें मिलेगी; फिर भी हिन्दुस्तानकी समस्याओंपर भी काफी प्रकाश पड़ता है। अंग्रेजीमें यह किताब बहुत प्रसिद्ध रही है। पर किताबकी भाषा में गति नहीं है। जहां तहां वाक्य और शब्द अजीब अजीब रूपमें प्रयुक्त हुये हैं—पताके लिये 'पत्ता' 'मुझे फिर भी मिलना' 'मेरी पहली लिखनमें' 'राजकार देश' 'निराज' 'शुरू' हो जायगा। ये थोड़ेसे उदाहरण हैं।

मरूकुञ्जः—लेखक—श्री मथुरादास त्रिकमजी; प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या १८० मूल्य १।)

प्रस्तुत पुस्तक मूल गुजराती पुस्तकका हिन्दी अनुवाद है। लेखक स्वयं क्षय रोगके शिकार हो गये थे। अिस पुस्तकमें अिस रोगके संबन्धमें अपने विचार लेखक ने व्यक्त किये हैं।

पुस्तक छोटे–बड़े ३१ अध्यायोंमें बटी हुअी है और अन्तमें २३ पृष्ठोंमें शस्त्र–क्रिया द्वारा क्षयके चिकित्साके नये तरीकेका वर्णन है। पुस्तकमें बहुत सरल तरीकेसे क्षयके पैदा होनेका कारण, प्रकार, चिकित्सा आदि बातोंको समझाया गया है। व्यक्तिगत अनुभवोंके आधारपर लिखी होनेके कारण यह पुस्तक अत्यन्त अुपयोगी है।

भूल सुधार

नवंबरकी राष्ट्रभाषामें पुरस्कार विजेता सूचीमें गुजरात प्रांतके सर्व-प्रथम परीक्षार्थी श्री दिलीप कुमार विजयशंकर जानी, **अीसंड**, छपा था। लेकिन अीसंड केन्द्रकी जगह **अुनावा आश्रम** चाहिये था।

४ (प्र. सम्पादक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका कार्यक्रम—

	परीक्षाका नाम	समय १०½ से १½	समय २½ से ५½
शनिवार ता० २-२-४६	कोविद	प्रश्नपत्र १	प्रश्नपत्र २
	परिचय	—	प्रश्नपत्र १
रविवार ता० ३-२-४६	कोविद	प्रश्नपत्र ३	प्रश्नपत्र ४
	परिचय	प्रश्नपत्र २	मौखिक परीक्षा
	प्रवेश प्रारंभिक	ये दोनों परीक्षाएँ १०½ से १½ बजे तक ही होंगी	

कोविदके अतिरिक्त विषय:—प्राचीन साहित्यकी परीक्षा मंगलवार ता० ५-२-४६ को सबेरे ७½ से १०½ तक और उर्दूकी बुधवार ता. ६-२-४६ को सबेरे ७½ से १०½ तक होगी।

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता. ४।२।४६ सोमवारको सबेरे होगी।

प्रवेशकी मौखिक परीक्षा अगर पहले न ली जा सकी हो तो शनिवार ता. २।२।४६ या रविवार ता. ३।२।४६ को सुविधानुसार ली जा सकती है।

मौखिक परीक्षाके समयमें अगर परिवर्तन होगा तो केन्द्र-व्यवस्थापक अुसकी सूचना देंगे।

रामेश्वर दयाल दुबे
परीक्षा-मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी प्रचार परीक्षाएँ—

आगामी प्रचार परीक्षाएँ २, ३ फरवरी १९४६ को होंगी।

परीक्षा-आवेदनपत्र शुल्कके साथ वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख १५ दिसम्बर १९४५ है।

प्रश्न पत्रका समय—

प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटेका—प्रारम्भिक और प्रवेश परीक्षाके भी आगामी परीक्षाओंसे प्रश्नपत्रका समय ३ घंटे रहेगा।

कोविद प्रश्नपत्र १ में—

'पथिक' के स्थानपर 'जयद्रथ वध' पुस्तक रखी गयी है। आगामी फरवरीकी परीक्षामें केवल 'जयद्रथ वध' से प्रश्न पूछे जायँगे, 'पथिक'से नहीं।

कोविदमें लेखन-कार्य—

कोविद परीक्षार्थियोंके लिये मौखिक परीक्षाके अन्तर्गत अपनी तैयारीकी अवधिमें आठ लेख लिखना अनिवार्य किया गया है। प्रत्येक लेख कम-से-कम ३ पृष्ठका होना चाहिये।

जो परीक्षार्थी निबन्ध नहीं लिखते हैं अुन्हें काफी अंकोंकी हानि अुठानी पड़ती है। अिसलिये परीक्षार्थियोंको लेख अवश्य लिखना चाहिये।

आगामी परीक्षाके लिये निबन्धके विषयोंकी अेक सूची दे रहे हैं। परीक्षार्थी अिनमेंसे किन्हीं आठपर निबन्ध लिख सकते हैं। अिनके अलावा अन्य विषय भी चुने जा सकते हैं—

१. विज्ञान और मानव २. पराधीन सपने सुख नाहीं ३. हमारे गाँवोंकी समस्याएँ ४. समाज और स्त्री ५. राष्ट्रलिपि और अुसकी योग्यता ६. काम वही कर सकता है जिसके पास समय नहीं ७. साहित्य और समाज ८. गरीबोंका भगवान तो रोटी है ९. जनता जनार्दनका सेवक—गान्धी १०. हमारी सामाजिक कुरीतियाँ ११. गान्धीजीका रचनात्मक कार्यक्रम १२. समाचार-पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय परीक्षामें अुर्दू--

'जिस प्रकार कोविद परीक्षाके पाठ्यक्रममें अतिरिक्त अैच्छिक विषयक रूपमें अुर्दूका प्रश्नपत्र रहता है अुसी प्रकार परिचयमें भी अुर्दूका प्रश्नपत्र रहेगा।' दोनों परीक्षाओंके लिये पाठ्यक्रम अिस प्रकार है--

परिचय-अतिरिक्त अैच्छिक प्रश्नपत्र

पाठ्य पुस्तकें--

१ हिन्दुस्तानी (द. भा. हि. प्र. सभा)
२ नअी किताब हिस्सा २ (जामिया मिलिया)
३ अलीबाबा चालीसचोर (द. भा. हि. प्र. सभा)

पाठ्य पुस्तकें—

१ बापके खत बेटीके नाम (किताबिस्तान, प्रयाग)
२ दस बड़े आदमी (पु. भ. लहेरियासराय)
३ अुर्दू काव्यकी नअी धारा (हिं. अे. प्रयाग)

परीक्षार्थी अपनी अुत्तर-पुस्तकके पन्नेके दोनों तरफ़ अवश्य लिखें।

हमारे नये प्रमाणित-प्रचारक

असम—	१	श्री. अुमाशंकर	सरभोग
बंगाल—	२	,, भुवनेश्वर झा.	कलकत्ता
	३	,, श्रीनिवास शर्मा,	गैंटोक
सिंध—	४	,, आचार्य कपिलदेव,	कराची
	५	,, शांति हेमणदास,	कराची
	६	,, चतुर्भुज वर्मा,	कराची
गुजरात—	७	,, कृष्ण गोपालजी देसाअी,	वालोड़
	८	,, वीरेन्द्र गांधी,	सुरत
	९	,, हरगोविंद गि० जोशी,	सुरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	१०	श्री. अंबाप्रसाद न० शुक्ल,	अहमदाबाद
	११	,, अिच्छाशंकर र० त्रिवेदी,	,,
	१२	,, जयसुखलाल न० शुक्ल	,,
	१३	,, नटवरलाल म० पंडित,	नारदीपूर
	१४	,, रेवाशंकर अु० भट,	अहमदाबाद
	१५	,, कांतिलाल र० पंड्या,	अहमदाबाद
	१६	,, रतिकांत क० भट्ट	,,
	१७	,, कीकूभाअी गो. भगत,	रांदेर
	१८	,, अंबालाल (जयंत) प्र. दवे,	भरूच
महाराष्ट्र–	१९	,, आ० रा० यादव,	अष्टा
	२०	,, जवाहरलाल कापडिया,	चांदवड़
	२१	,, सुंदराबाअी बापट,	पुर्णे
	२२	,, ग० त्र्यं० कांबळे,	,,
	२३	,, सी० न० पटवर्धन	कर्जत
	२४	,, वि० शि० भटगांवकर,	मसूरा
	२५	,, भि० तु० कोळी	थोरगव्हाण
	२६	,, गं० चि० जोशी,	जुन्नर
	२७	,, मो० ना० रजपूत,	अंबरनाथ
	२७ अ	,, मा. का. बच्हाटे,	भुसावल
बम्बअी–	२८	,, के० सी० परूळकर,	माटुंगा
	२९	,, सौ० अिंदिराबाअी गोगटे	,,
	३०	,, म० वा० पटवर्धन,	दादर
	३१	,, कु० शांता अैयार	माटुंगा
	३२	,, य० वा० दणायत	दादर
	३३	,, जयंतिलाल पंड्या,	माटुंगा
	३४	,, व० चि० दंडगवाल,	फोर्ट
वि. नागपूर-	३५	,, अनिलकुमार	नागपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धा--कार्यालय

पुस्तक विक्री विभाग—

कमीशन—(१) समिति द्वारा प्रकाशित सभी पुस्तकोंपर प्रमाणित प्रचारक, केन्द्र-व्यवस्थापक तथा पुस्तक विक्रेताओंको १५% कमीशन दिया जायगा। आर्डर कमसे कम १० रु. का होना चाहिये।

(२) प्रचार परीक्षाओंकी बाहरी पाठ्य पुस्तकोंपर ६ १/४% दिया जावेगा।

(३) सामान्य पुस्तकोंपर ऑर्डरके अनुसार कमीशन दिया जायगा।

५) रु. से १५ रु. तक	६ १/४%
१५) रु. से ५०) रु. तक	१०%
५०) रु. से अधिक पर	१२ १/२%

आवश्यकता पडनेपर अिन नियमोंमें परिवर्तन किया जा सकेगा।

विशेष सूचना:— केन्द्र-व्यवस्थापक, प्रमाणित प्रचारक तथा पुस्तक विक्रेताओंसे प्रार्थना है कि वे आर्डर देते समय अपना पूरा परिचय दें, अन्यथा अुन्हें साधारण ग्राहकोंका ही कमीशन दिया जायगा।

ग्राहकोंसे प्रार्थना है कि वे अपने ऑर्डर देते समय लगभग अक्तिहाअी पेशगीके साथ अपना पूरा पता, डाकघर, जिला, रेलवे स्टेशन आदि की आवश्यक जानकारी स्पष्ट अक्षरोंमें अवश्य लिख भेजा करें।

सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखा जा सकता है। अिस सूचीपत्रके अलावा भी सैकड़ों नअी पुस्तकें स्टाकमें आ गअी हैं। पुस्तक चुननेमें हमारी सहायता ली जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रान्तोंकी हलचलें-

असम प्रान्त :

संचालकका दौरा : अक्तूबरके पहले हफ्तेमें प्रान्तीय संचालकने श्री अमृत डेकाके साथ नौगांव जिलेका दौरा किया। आपने जिलेके विभिन्न केन्द्रोंका निरीक्षण किया। कालियाबरके स्थानीय हायस्कूलमें अेक सभा हुअी। अिस स्कूलके लगभग १५० छात्र राष्ट्रभाषा सीख रहे हैं। यहाँ के केन्द्र व्यवस्थापक श्री पुष्पकान्त खाअुन्द हैं जो वास्तवमें स्थानीय प्रचार आन्दोलनके प्राण हैं। अुसी दिन हाटबरमें भी अेक सभा हुअी।

प्रचारककी सहायता : कलियाबर हायस्कूलके प्रधानाध्यापक श्रीपुष्पकान्त खाअुन्दके प्रयत्नसे तथा स्थानीय जनताके अुत्साहको देखकर स्कूलके पदाधिकारियोंने स्थानीय प्रचारकको १५ रु० मासिक आर्थिक सहायता देनेका निश्चय किया है।

काचमारी केन्द्रका संगठन : स्थानीय समितिकी बैठक हुअी और नये पदाधिकारियोंका चुनाव हुआ और स्थानीय प्रचारकको १० रु. प्रतिमास सहायता देनेका निश्चय हुआ।

तेजपुरमें प्रीति भोज : राष्ट्रभाषाकी परीक्षाओंके खतम होनेपर केन्द्रके प्रचारक और छात्रोंने अेक प्रीति भोजका आयोजन किया। अिस आयोजनमें शहरके कतिपय गण्य-मान्य व्यक्ति भी शामिल हुये। अेक सभाकी गअी जिसमें राष्ट्रभाषाके महत्त्वपर वक्ताओंने भाषण किया।

सूरत : १६।९।४५ को सार्व० गर्ल्स हाअीस्कूल शाखामें श्रीमती लता बहन देसाअीके हाथसे राष्ट्रभाषाकी परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र और पारितोषिक बाँटे गये।

राष्ट्रभाषा प्रचार सप्ताह : गांधी जयन्तीके अवसरपर २९।९।४५ से ३।१०।४५ तक राष्ट्रभाषा प्रचार सप्ताह मनाया गया। अिस अवसरपर राष्ट्रभाषाके महत्त्वपर १० हायस्कूलों तथा १५ मुहल्लोंमें व्याख्यान दिये गये। जिनमें अनेक काँग्रेस कार्यकर्त्ता, प्रोफेसर और अध्यापकोंने भाग लिया।

विदर्भ-नागपुर प्रांत :

प्रांतके मंत्री श्री हृषीकेशजी शर्माने जिला प्रचारकोंसे आगामी राष्ट्रभाषा परीक्षाओंके लिये नये केन्द्र खोलने-खुलवानेके लिये विचार परामर्ष किया। श्री श्रीराम अट्रावलकरजीका कार्यक्षेत्रमें अकोला तथा श्री आनंदरावजीके कार्यक्षेत्रमें यवतमाळ भी शामिल कर दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्छ :

मध्यप्रान्तके प्रसिद्ध काँग्रेस कार्यकर्ता श्री चतुर्भुज भाअी जसाणीके हाथों सरस्वती सदनमें स्थानीय केन्द्रके अुत्तीर्ण छात्रोंको प्रमाणपत्र वितरण किया गया। केन्द्र-व्यवस्थापक श्री प्रभुलालजीने केन्द्रके कार्यका ब्यौरा और प्रचारक श्रीमारकंडरायने राष्ट्रभाषाका महत्व बताया।

सातारा : राष्ट्रभाषा विद्यालय साताराका द्वितीय सम्मेलन श्री भैया शास्त्री वाटवेजीकी अध्यक्षतामें सुसम्पन्न हुआ। वाटवेजीने राष्ट्रभाषापर प्रकाश डालते हुअे कहा कि 'हिन्दी ही राष्ट्रभाषा और देवनागरी ही राष्ट्रलिपि हो सकती है।'

सिर्फ आठ माहसे यह विद्यालय चालू है, किन्तु गत परीक्षामें विद्यालयके २५० छात्र राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंमें शामिल हुअे।

डुमरा : यहाँके केन्द्र व्यवस्थापक तथा राष्ट्रभाषाके परम प्रेमी श्रीयुत गोविंदजी भाअी गोवरधनदास सुन्दरदासका १३।९।४५ को देहान्त हो गया। हम समस्त राष्ट्रभाषा प्रेमी अिस अवसरपर अुनके दुखी परिवारके साथ समवेदना प्रकट करते हैं और आशा करते हैं कि अुनके छात्र अुनके कार्योंको अुन्हींकी तरह लगनसे पूरा करेंगे।

दहकते हुअे अंगारे

स्वाधीनता नन्दनवनसे टपकनेवाला कल्पवृक्षका फल नहीं है। वह तो हमारे श्रमकी खेतीका परिणाम है जिसे प्राणोंका रुधिर सींचकर अुगाना होता है।

× × ×

दीपक स्वयं अन्धकारमें रहकर संसारको अपने प्रकाश से आलोकित कर जाता है। हमारे जीवनकी भी सार्थकता अिसीमें है कि आनेवाले संसार के लिये कुछ दे जावें।

× × ×

अेक सुन्दर भवनका निर्माण हो सके अिस अेक आकांक्षा को लेकर छोटे छोटे कंकर नींवमें दफनाया जाना स्वीकार करते हैं। जो अेक वृहत् राष्ट्रके निर्माण की आकांक्षा रखते हैं, अुन्हें कंकरोंका सन्देश मानना होगा।

× × ×

साधनाके पथ पर क्षण भरकी हार अथवा जीत कैसी ? मिट्टीमें मिलकर बीज जो विशाल वृक्ष दे जाता है, अुसके फूलोंमें अुसके जीवनकी कटुता मिठासका वरदान बनकर संसारको तृप्त करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र

आगामी परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंको गत परीक्षाओंके प्रश्नपत्र देख लेना विशेष लाभप्रद होता है। गत प्रश्नपत्रोंके देखनेसे यह ज्ञात हो जाता है कि प्रश्नपत्र किस प्रकारका आनेवाला है।

प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय तथा कोविद परीक्षाके पिछले प्रश्नपत्र वर्धा कार्यालयसे प्राप्त किये जा सकते हैं। परीक्षाओंके अेक समयके प्रश्नपत्रोंके संच [सेट] तैयार किये गये हैं। प्रत्येक संचका दाम ।-) आने है। प्रत्येक परीक्षाके फुटकर प्रश्नपत्र भी मिलते हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्रका मूल्य दो पैसे है। प्रश्नपत्रोंका संच अथवा फुटकर प्रश्नपत्र मँगाते समय आवश्यक मुल्यके साथ परीक्षाका वर्ष और मास लिख भेजना चाहिये। 'राष्ट्रभाषा रत्न' परीक्षाके प्रश्नपत्रोंके संचका दाम ।-) आने है।

'राष्ट्रभाषा' और 'सबकी बोली' की पुरानी फाअिलें

(१) राष्ट्रभाषा प्रचार आन्दोलनका पूर्ण दर्शन (२) विद्वानोंके राष्ट्रभाषा सम्बन्धी विचार (३) समितिके प्रचार-कार्यका विवरण (४) परीक्षार्थियोंके लिये अुपयोगी बातें (५) सरल शैलीमें कविता, कहानी लेख आदि अिन फाअिलोंमें मिलेंगे।

"सबकी बोली"	दिसम्बर ३९ से नवम्बर ४० तक	२)
"राष्ट्रभाषा"	जुलाअी ४३ से जून ४४ तक	२)
,,	मार्च ४४ से अक्तूबर ४५ तक	१॥)
,,	नवम्बर ४४ से अक्तूबर ४५ तक	२)
	प्रत्येक फाअिल भेजनेका डाक खर्च	।=)

फाअिलोंकी संख्या सीमित ही है। अपनी प्रति शीघ्र मँगा लें। 'सबकी बोली' अथवा 'राष्ट्रभाषा' की फुटकर प्रतिका मूल्य =) है।

मिलनेका पता---

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८

क्या निम्न अुपन्यासोंको आपने पढ़ लिया है ?

पुस्तकें	मूल्य	पुस्तकें	मूल्य
अहंकार	१॥)	काला पहाड़	॥।)
अलका	१॥।)	किस्सा नवीन चांद तारा	१)
अकेला	२॥)	क्रौंच वध	४॥)
अप्सरा	२)	कुबेर	१॥)
अवतार	॥।)	कुमार सुंदर	२)
अपराधिनी	१॥)	कुसुम संग्रह	१॥)
अम्बपाली	१॥।)	कुंकूम	२॥)
अबलाओंका बल	२)	कोकिला	२॥)
अभिसारिका	॥=)	केसर	१॥)
अश्रूपात	१॥)	कैन	१)
अनुरागदीप	२)	कीर्तवालकी करामात	१।)
अनुराधिनी	४॥)	कंगालकी बेटी	॥)
अबला	१।)	खवासका ब्याह	१।)
अशान्त	॥।)	खरा सोना	१)
आँचलका आसरा	१।)	गढ़ कुंडार	३॥)
आत्महत्या	१।)	गंगाजमुनी	५॥)
अुन्माद	१।)	ग्राम संगठन	॥।=)
अुषाकाल (दो भाग)	३॥)	ग्रामीण आदर्श	१॥)
अुन्नतिका मार्ग	१॥)	गोरी	१।)
अेककोना	२।)	गोविंदराम	१।)
कमला	३)	गोद	१।)
कर्म मार्ग	२)	मिलनेका पता--	
कर्म फल	२।)	**राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।**	
कँटीले तार (दो भाग)	।।)		
कहाँ	२॥)		
कसौटी	२॥)		
कँटोल	२)		
कुंडली चक्र	१।)		
कार्ल और अन्ना	॥।)		

प्रबन्ध-सम्पादक और प्रकाशकः—
हृषीकेश शर्मा,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
मुद्रकः—गोविन्द भास्कर जोशी,
भास्कर छापखाना,
राठी-मार्केट, वर्धा

पुस्तकालय 112534

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112534

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar